श्रोतासमाज

सूरदासजी

गोस्वामीश्रीवल्लभाचार्यजी

दशमस्कंधपूर्वार्ध
देवकी
महामाया
देवकी
पूतना
शकटभंजन
यशोदा
यमलार्जुन
बकासुर
अघासुर
धेनुक
गोवर्धन

गोप
नंद
केशी
गोपी
अक्रूर
धनुर्भंग
कुवलयापीड
कंस
गोपी
उद्धव
पांडव
अक्रूर

दशमस्कंध उत्तरार्ध.
द्वारका
कालयवन
मुचकुंद
युद्ध
जांबुवंत
सत्राजित
लक्ष्मणा
शंबर
रति
पौंड्र

श्रीहरिः ।

श्रीसूरदासजीका जीवनचरित्र।

न जानें क्यों हमारे देशके विद्वानोंका ध्यान इतिहासकी ओर तनिक भी न आया ? कि जिसके कारण अनेकानेक प्रसिद्धपुरुषोंके नाम भी नहीं सुननेमें आते सूरदास जीको हुए अभी कुछ बहुत दिन नहीं हुए परंतु इतनेही थोड़ेकालमें भारतवर्षके एक इतने बड़े प्रसिद्ध कविके जीवन चरित्रका पता ठीक ठीक नहीं लगता, यहाँतक यहाँके लोगोंका ध्यान इस ओर कम था कि सूरदासजीके थोड़ेही दिन पीछे गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथ जी महाराजके पुत्र श्रीगोकुलनाथ जीने जो चौरासी वैष्णवोंकी वार्ता लिखी उसमें भी सूरदास जीका चरित्र सुना सुनायाही लिख दिया; यदि उस समय थोड़ा भी परीश्रम किया जाता तो इनका पूरा पता लगजाता परंतु खेद कि इधर तो किसीका ध्यानही न था ॥

सूरदास जीके विषयमें चौरासी वैष्णवोंकी वार्तामें तथा पूज्यपाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जीने जो लिखाहै वह और साहित्य लहरीमें बाबू रामदीन सिंहने जो कुछ छापाहै स्थानान्तरमें प्रकाशित कियाजाताहै यहाँ हम केवल समय का निरूपण करते हैं ॥

सूरदास जीका समय निर्णय करना कुछ बहुत कठिन नहीं है क्योंकि श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुके ये शिष्य थे ("श्रीवल्लभगुरु तत्त्व सुनायो लीला भेद बतायो" सू.सा.सा.११०२) और श्री गोसाई जी (श्रीविट्ठलनाथ जी) के समयमें ये मरे यह तो इनके लेखही से विदित है "थापि गोसाई करी मेरी आठ मद्धे छाप"(भारतेन्दु जी लिखित लेख) श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुका जन्म संवत् १५३५ वैशाख कृष्ण ११ को और अन्तर्ध्यान संवत् १५८७ आषाढ़ शु० ३ को और श्री गोस्वामी विट्ठलनाथ जीका जन्म संवत् १५७२ पौषकृष्ण ९ और अन्तर्ध्यान संवत् १६४२ माघ कृष्ण ७ को हुआ. अब इनका समय संवत् १५३५ से लेकर संवत् १६४२ के बीच १०७ वर्ष के भीतर ही निर्णय होना चाहिये अब विचारना चाहिये कि इन्होंने अल्पायु पाई या दीर्घायु । १ पहिले तो उनके पदोंकी बड़ी संख्या ही उन्हें दीर्घायु बताती है परन्तु मुझे उनकी अवस्था लगभग अस्सी वर्षकी होनेका पक्का प्रमाण मिला है. सूरदासजीने सूरसागर सारावलीको अपनी सरसठ वर्षकी अवस्थामें लिखी है ॥ यथा ॥

गुरू प्रसाद होत यह दरशन सरसठ बरस प्रवीन। शिव विधान तप करेउ बहुत दिन तऊ पार नहिं लीन ॥ १००२ ॥ सुख पर्यंक अंक ध्रुव देखियत कुसुम कन्द द्रुम छाये । मधुर मल्लिका कुसुमित कुंजन दम्पति लगत सोहाये ॥ १००३॥ गोवर्द्धन गीरि रत्न सिंहासन दम्पति रस सुख मान। निविड कुंज जहँ कोउ न आवत रस विलसत सुखखान ॥ १००४ ॥ निशा भोर कबहूं नहिं जानत प्रेममत्त अनुराग। ललितादिक सींचत सुख नैननि जुर सहचरि बड़भाग ॥ १००५॥ यह निकुंजको वर्णन करिदे वेद रहे पचिहारानेति नेति करि कहेउ सहस विधि तऊ न पायो पार१००६

दरशन दियो कृपा करि मोहन नेग दियो वरदान। आगम कल्प रमन तुव ह्वै है श्री मुख कही बखान+॥ १००७॥

सूरसागर सारावलीको सूरदास जीने एक लाख पद बनानेके उपरांत बनाया हैः—

कर्मयोग पुनि ज्ञान उपासन सबही भ्रम भरमायो। श्रीवल्लभगुरु तत्त्व सुनायो लीला भेद बतायो॥ ११०२॥ तादिन ते हरिलीला गाई एक लक्ष पद वन्द। ताको सार सूरसारावलि गावत अति आनन्द॥ ११०३॥ तब बोले जगदीश जगतगुरु सुनो सूर मम गाथ। तू कृत मम यश जो गावैगो सदा रहै मम साथ॥ ११०४॥

सूरदासजीके सवालक्ष पद बनानेकी किम्बदन्ती जो प्रसिद्ध है वह ठीक विदित होती है क्यों-कि एकलाख पद तो श्री वल्लभाचार्यके शिष्य होनेके उपरांत और सारावलीके समाप्त होने तक बनाये इसके आगे पीछे के अलगही रहे॥

अब देखना चाहिये कि यह सारावली कब बनी? इसके अंतमें सूरदास जी लिखतेहैंः—

"सरस समतसर लीला गावै युगल चरण चित लावै। गर्भवास बंदीखानेमें बहुरि सूर नहिं आवै॥ ११०७॥" मुझे सरस सम्वत्सरका शब्द खटका और इसपर मैंने माननीय महामहो-पाध्याय श्रीपंडित सुधाकर द्विवेदीजीसे पूँछा इन्होंने बताया कि सरस नहीं यह शब्द षरस हो-सकता है जिसका अर्थ साठ होता है और पहिले लोग सैकड़ाको छोड़कर प्रायः लिखदिया करते थे इससे संवत् १५६० का अनुमान हुआ, परंतु जो विचारकर देखा तो यह बात सर्वथा असंगत प्रतीत हुई क्योंकि एक तो "सरस सम्बत्सर लीला गावै" से विदित होताहै कि, यह फलस्तुतिहै सम्भवहै इस लीलाहीका नाम सरस सम्बत्सर लीलाहो, क्योंकि गोवर्धनपूजाके प्रसंगमेंभी सूरदास जीने लिखाहै "श्याम कह्यो सूरदास सों मेरी लीला सरस बनाय" दूसरे यह कि, हम ऊपर दिखला चुकेहैं कि सरसठ वर्षकी अवस्थामें यह ग्रंथ बना तो १५६० मेंसे ६७ निकाल दीजिये तो १४९३ बचताहै जो कि श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुके जन्मके बहुत पहिले आता है और यदि श्रीगोसाईं जीके कालमें सूरदासजीकी मृत्यु उनके लेखानुसार मानीजाय तथा सूरदासजीने सम्बत् १६०७ में साहित्यलहरी बनायाहै तबतो सूरदासजीकी अवस्था ११४ वर्षसेभी अधिक हो जातीहै; इससे इसे छोड़कर साहित्यलहरीहीके सम्बतपर ध्यान देना चाहिये॥

साहित्यलहरीमें सूरदासजीने यों सम्बत दियाहैः—

"मुनि पुनि रसनके रस लेष। दशन गौरीनंदको लिखि सुबल सम्बत पेष॥ नंदनंदन मास छैतें हीन त्रितियावार। नंदनंदन जनमतेहैं बाणसुख आगार॥ त्रितिय रिक्ष सुकर्म योग विचारि सूर नवीन। नंदनंदन दासहित साहित्य लहरीकीन॥ १०९॥"

मुनि=सात, रसन=एक, रस=छ, दशन गौरीनंद=एक अर्थात् १६०७ ("अंकानां वामतो गतिः")नंदनंदनमास=वैशाख, अक्षय तृतीया कृत्तिकानक्षत्र सुकर्म योगमें साहित्यलहरी बनाया।

साहित्य लहरीको सूरदासजीने सूरसागरसे दृष्टकूट पदोंको छांटकर संग्रह कियाहै अस्तु अब

+इसको जीवनचरित्रवाले पद "प्रथम ही प्रथजगात" के इनपदोंसे मिलाइये "सातएं दिन आय पदुपति कीन आप उधार दियो चखदै कही शिशु सुनु मांगु वर जो चाइ। हौं कही प्रभु भगति चाहत शत्रुनाश सुभाइ॥ दूसरो ना रूप देखों देखि राधा श्याम। सुनत करुणासिन्धु भाषी एवमस्तु सुधाम॥ प्रबल दक्षिण विप्रकुलते शत्रुहै है नास। अमित बुद्धि विचारि विद्यामान मानै मास॥ नाम राखे मोर सूरजदास सूर सुश्याम। भए अन्तर्धान बीते पाछली निशि याम॥

१६०७ मेंसे सरसठ वर्ष निकाल दीजिये तो १५४० सम्वत्के लगभग उनके जन्मका समय आया और इसके पीछे सम्वत् १६२० के लगभग उनकी मृत्यु मानलेनी चाहिये ॥

सूरसागरके देखनेसे विदित होताहै कि, उस समयमें श्रीगोस्वामि हित हरिवंशजीको और स्वामि हरिदासजीके पूरे अभ्युदय का समयथा और उससमयके सब वैष्णवनमें प्रेमथा सूरदासजी लिखते हैंः—

निशि दिन श्याम सेऊं मैं तोहिं। इहै कृपा करि दीजे मोहिं ॥ नवनिकुंज सुखपुंजमें हरिवंशी हरिदासी जहाँ। हरि करुणा करि राखहु तहां ॥ नित विहार आभार दे (पृष्ठ ३६२ पंक्ति १०) ॥

ऐसा प्रतीत होताहै कि सूरदासजीने श्रीमद्भागवतको शृंखलापूर्वक एक समय में नहीं बनाईथी क्योंकि वार्ता इत्यादि में समय समय पर जो सबपद "खंजन नैन रूप रस माते।" आदि लिखेहैं प्रायः वे सभी इसमें आगयेहैं, और पूरा पूरा भागवतका अनुवाद भी नहीं है बहुतसी कथा छोड़भीदईहै और कई एक उपासनाके अनुसार बढ़ाभीदीहै कुछ और पुराणोंसे भी सहायताली है आप लिखतेहैंः—

"वंदन रज विधि सबे कह्यो विधि दियो ऋषिन्ह बताइ। व्यास त्रिपद बावनपुराण कह्यो सूरसोई गाइ ॥" (पृष्ठ ३६२ पंक्ति २३)

एक सूरदास और हुएहैं वह अपना नाम कवितामें सूरदास मदनमोहन रखतेथे सूरदासजीका नाम भारतवर्ष में ऐसा प्रसिद्ध होगयाहै कि सभी अंधोंको लोग सूरदास कहतेहैं और बहुतसे लोग आप कविता करिके सूरदासजीकी छाप उसमें रखदेतेहैं जिसमें वह कविता प्रसिद्ध होजाय श्रीयुत बाबू अक्षयकुमार दत्तने भ्रमवश अपने बंगला ग्रंथ "भारतवर्षीय उपासक सम्प्रदाय में लिख दियाहै कि जितने अंधे फकीर एकतारा लेकर गाते हुये घूमते फिरते सब सूरदासके सम्प्रदाय में हैं ॥

सूरदासजीका जीवनचरित्र आगे दियेहुये लेखोंसे प्रगट होजायगा अतएव हम यहाँ कुछ अधिक लिखना आवश्यक नहीं समझते ॥

पूज्यपाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रजी लिखित नोट सूरदासजीका।

संसारमें जो लोग भाषाकाव्य जानते होंगे वह सूरदासजीको अवश्य जानते होंगे और उसी तरह जो लोग थोड़ेभी वैष्णव होंगे. वह इनका थोड़ा बहुत जीवनचरित्र भी अवश्य जानते होंगे. चौरासी वार्ता, उसकी टीका, भक्तमाल और उसकी टीकामें इनका जीवन विवृत कियाहै. इन्हीं ग्रंथोंके अनुसार संसारको (और हमकोभी (१) विश्वासथा कि ये सारस्वत ब्राह्मणहैं, इनके पिता का नाम रामदास, इनके माता पिता दरिद्रीथे, ये गऊ घाट पर रहतेथे, इत्यादि. अब सुनिये एक पुस्तक सूरदासजीके दृष्टिकूट पर टीका (टीकाभी सम्भव होताहै उन्हींकीहै, क्योंकि टीकामें जहाँ अलंकारोंके लक्षण दियेहैं वह दोहे और चौपाई भी सूरनामसे अंकितहैं.) मिली है. इस पुस्तकमें ११६ दृष्टिकूटके पद अलंकार और नायिकाके क्रमसेहैं और उनका स्पष्ट अर्थ और उनके अलंकार नायिका इत्यादि सब लिखे हैं. इस पुस्तकके अंतमें कविने अपना जीवनचरित्र दियाहै, जो नीचे प्रकाश किया जाताहै. अब इसको देखकर सूरदासजीके जीवनचरित्र और

(१) कविवचनसुधा प्राचीन पुस्तकावलीकी दूसरी जिल्दमें सूरदासजीका जीवनचरित्र देखो।

वंशको हमलोग औरही दृष्टिसे देखने लगे. वह लिखतेहैं "प्रथम जगात" (२) प्रार्थज गोत्र ?) वंशमें इनके मूल पुरुष ब्रह्मराव (३) हुए जो बड़े सिद्ध और देवप्रसाद लब्धथे. इनके वंशमें भौचन्द (४) हुआ पृथ्वीराजने (५) जिसको ज्वालादेश दिया। उसके चार पुत्र जिनमें पहिला राजा हुवा दूसरा गुणचन्द्र उसका पुत्र शीलचन्द्र उसका वीरचन्द्र यह वीरचंद्र रत्नभ्रमर (रनथम्भौर) के राजा प्रसिद्ध हम्मीर (६) के साथ खेलताथा। इनके वंशमें हरिचन्द्र (७) हुआ उसके पुत्रके ७ पुत्र हुए जिनमें सबसे छोटा (कवि लिखताहै) मैं सूरतचन्द्रथा मेरे ६ भाई मुसल्मानोंके युद्ध (८) में मारे गए। मैं अन्धा कुबुद्धिथा। एक दिन कुंए में गिरपड़ा तो सात दिन तक उस (अन्धे) कुंए में पड़ा रहा किसीने न निकाला सातवें दिन भगवानने निकाला और अपने स्वरूपका (नेत्रदेकर) दर्शन कराया और मुझसे बोले कि वर मांग मैंने वर मांगा कि आपका रूप देखकर अब और रूप न देखूं और मुझको दृढ़भक्ति मिलै और शत्रुओं (९) का नाशहो। भगवान्‌ने कहा ऐसाही होगा तू सब विद्या में निपुण होगा प्रबल दक्षिणके ब्राह्मण (१०) कुलसे शत्रुका नाश होगा और मेरा नाम सूरजदास, सूर, सूरश्याम इत्यादि रखकर भगवान अन्तर्ध्यान होगये। मैं ब्रजमें बसने लगा फिर गोसाईं (११) ने मेरी अष्ट (१२) छापमें थापनाकी इत्यादि। इस लेखसे और लेख अशुद्ध मालूम होते हैं क्योंकि जैसे चौरासी वार्ताकी टीकामें लिखाहै कि दिल्लीके पास सीही गाँवमें इनका दरिद्र माता पिताके घर जन्म हुआ यह बात नहीं आई।यह एक बड़े कुलमें उत्पन्न थे और आगरे वा गोपाचलमें इनका जन्म हुआ हो यह मान

(२) "प्रथजगात"–इस जाति वा गोत्रके सारस्वत ब्राह्मण सुननेमें नहीं आए। पंडित राधाकृष्ण संगृहीत सारस्वत ब्राह्मणोंकी जातिमालामें "प्रथजगात" "प्रथ"–वा "जगात" नामके कोई सारस्वत ब्राह्मण नहीं होते। 'जगा वा जगातिया' तो भाटको कहतेहैं।

(३) ब्रह्मराव नामसे भी सन्देह होताहै कि यह पुरुष या तो राजा रहाहो या भाट।

(४) भौ का शब्द हुआ अर्थमें लीजिए तो केवल चन्द्रनामथा। चन्द्र नामका एक कवि पृथ्वीराज की सभामेंथा। आश्चर्य!!!

(५) पृथ्वीराजका काल सन् ११७६।

(६) हम्मीर चौहान. भीमदेवका पुत्र था। रणथंभौरके किलेमें इसीकी रानी इसके अलाउद्दीन (दुष्ट) के हाथसे मारेजाने पर सहस्रावधि स्त्रीके साथ सती हुईथीं। इसका वीरत्व यश सर्वसाधारणमें हमीर हठके नामसे प्रसिद्ध है।

(तिरिया तेल, हमीरहठ, चढै न दूजीवार) इसीकी स्तुतिमें अनेक कवियोंने वीररसके सुन्दर श्लोक बनाएहैं। मुञ्चति मुञ्चति कोष भजति च भजाति प्रकम्प्य मारिवर्यम्। हम्मीरवीर खड्गेत्यजति च त्यजति समामाशुः। इसका समय सन् १२९०। (एक हमीर सन् ११९२ में भी हुआहै)।

(७) सम्भवहै कि हरिचन्दके पुत्र का नाम रामचन्द्र रहाहो जिसे वैष्णवोंने अपनी रीतिके अनुसार रामदास कर लियाहो।

(८) उस समय तुग़लकों और मुग़लों का युद्ध होताथा॥

(९) शत्रुओंसे लौकिक अर्थ लीजिए तो मुग़लोंका कुल (इससे सम्भव होताहै कि इनके पूर्व पुरुष सदासे राजाओंका आश्रय करके मुसल्मानोंको शत्रु समझते थे या तुग़लकोंके आश्रित थे इससे मुग़लोंको शत्रु समझते थे) यदि अलौकिक अर्थ लीजिए तो काम, क्रोधादि।

(१०) सेवा जीके सहायक पेशवाका कुल जिसने पीछे मुसल्मानोंका नाश किया (अलौकिक अर्थ लीजिए तो सूरदास जीके गुरु श्रीवल्लभाचार्य्य दक्षिण ब्राह्मण कुलकेथे।

(११) "गोसाईं"– श्रीविट्ठलनाथजी-श्रीवल्लभाचार्यके पुत्र।

(१२) अष्टछाप-यथा-सूरदास, कुम्भनदास, परमानन्ददास, और कृष्णदास ये चार महात्मा आचार्य्य जीके सेवक और छीत स्वामि गोविन्दस्वामि, चतुरभुजदास और नन्ददास ये गोसाँई जीके सेवक। ये आठों महाकविथे।

लिया जाय कि मुसलमानोंके युद्धमें इनके भाइयोंके मारेजानेके पीछेभी इनके पिता जीते रहे और एक दरिद्र अवस्थामें पहुँचे गएथे और उसी समयमें सीही गाँवमें चले गये हों तो लड़ मिल सक्ती है। जो हो हमारी भाषा कविताके राजाधिराज सूरदासजी एक इतने बड़े वंशके हैं यह जान कर हमलोगोंको बड़ा आनन्द हुआ। इस विषयमें कोई और विद्वान जो कुछ और विशेष पता लगा सकें तो वहभी उसे पत्र द्वारा प्रकाशित करें॥

प्रथम ही प्रथ जागाते में प्रगट अद्भुत रूप। ब्रह्मराव विचारि ब्रह्मा राखु नाम अनूप॥ पान-पय देवी दियो शिव आदि सुर सुख पाय। कहा दुर्गा पुत्र तेरो भयो अति सुख दाय॥ पार पायन सुरनके पितु सहित स्तुति कीन। तासुवंश प्रशंस में भौ (१) चंद * चारु नवीन॥ भूप

---

* दीपनिर्वाण नामक उपन्यासके पहले भागमें मुन्शी उदितनारायण वर्म्मा ने लिखाहै।

'कविचन्द यथार्थ में एक प्रसिद्ध राजपूत महाकवि पृथ्वीराजके परमबन्धु थे, और पृथ्वीराजके सहवास ही में सर्व्वदा रहते थे। चन्दकवि पुस्तकमें कविचन्द के नामसे लिखे गये हैं। इङ्गलैण्डके सर फिलिप्सिड्नी और सर वाल्टर रयाली के समान वे काव्य विषय में निपुण थे, युद्ध विषय में भी वैसेही दूरदर्शी थे, किन्तु काव्य ही उनके यशका चिह्न है। उनका सकल महाकाव्य राजपूत लोगोंके, विशेषतः पृथ्वीराजके कीर्ति कलाप और शूरता पराक्रम में वर्णन हुआ है। सुतराम समस्त आर्य्यजाति में जैसे रामायण और महाभारत आदरणीय है, ग्रीक (यूनान) लोगों में जैसे होमर आदरणीयहै, राजपूत लोगों में चन्दकवि का काव्यसमूह भी वैसेही आदरणीयहै। किन्तु चन्दकविका कपोल कल्पित काव्य बहुत कमहै, प्रकृत वृत्तान्तका भाग अधिक है,। दुःखका विषय यही है कि उनका समस्त जीवनचरित्र कहींभी नहीं पाया जाता और उनके काव्य समूहका अधिकांश प्रायः प्राचीन हिन्दीभाषामें छन्दोबद्ध है।

चंदकविके विषय में शिवसिंहसरोजमें योंलिखा है:-

चंदकवि प्राचीन बंदीजन संभल निवासी संवत् ११९६ ए. चंदकवि महाराजा बीसल देव चौहान रनथंभौर वालेके प्राचीन कवीश्वरके औलाद में थे संवत् ११२० में राजा पृथ्वीराज चौहानके पास आये मंत्री औ कवीश्वर दोनों पदको प्राप्त हुवा औ पृथ्वीराज रायसा नाम एक ग्रन्थ एक लक्ष श्लोक संख्या भाषा में रचा जिस्में ६९ खंड हैं औ जिस्में पुरानी बोली हिंदुवोंकी है इस ग्रन्थ में चंदकवि ने संवत् ११२० से संवत् ११४९ तक पृथ्वीराज का जीवनचरित्र महाकविताईके साथ बहुत छंदों में वर्णन किया है छप्पय छंद तौ मानो इसी कविके भाग में थीं जैसा चौपाई छंद श्रीगोसाई तुलसीदासके हिस्से में पड़ी थीं इस ग्रंथ में क्षत्रियों की वंशावली और अनेक युद्ध और आबू पहाड़ का माहात्म्य और दिल्ली इत्यादि राजधानियों की शोभा औ क्षत्रियों के स्वभाव चालचलन-व्यवहार बहुत विस्तार पूर्वक वर्णन किये हैं ए कवि केवल कवीश्वरही नहीं थे वरन् नीतिशास्त्र और चारनके काम काजमें महाशूरवीर थे संवत् ११४९ में साथ पृथ्वीराजके एभी मारेगए इन्हींके औलादमें शारंगधर कवि थे जिन्होंने हमीररायसा और हमीरकाव्य भाषामें बनाया है।

शारंगधर कवि बंदीजन चंद कवीश्वर वंशी संवत् १३५७ ए प्राचीन कवि चंद कवीश्वर के वंशमें संवत् १३३० के करीब उत्पन्न हुए थे। और राजा हमीरदेव चौहान रनथंभौर वालेके इहां जो राजा विशालदेवके वंशमें था रहा करते थे इन्होंने हमीररायसा १ और हमीरकाव्य २ ए दो ग्रन्थ महाउत्तम बनाएहैं हमीररायसा राजा हमीरकी प्रशंसामें लिखा है।

दोहा-सिंहगवन सपुरुष वचन, कदलि फरै इक बार। तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी वार॥ १॥

सवैया-तंगन समेत काटि विहित मतंगन सों रुधिर सों रंगरण मंडल सों भरिगो। सारंग सुकवि भनै भूपति भवानीसिंह पारथ समान महाभारत सो करिगो॥ मारे देखि मुगुल तुराबखान ताहि समय काहू अस न जाना काहू नट सों उचरिगो। बाजीगर कैसी दगाबाजी करि हाथी हाथा हाथी हाथा हाथी ते सहादति उतरिगो॥ १॥

चंदकविके विषय में पंडित श्रीमोहनलाल विष्णुलाल पंड्याने पृथ्वीराजरायसा की टिप्पणी में लिखाहै।

चंद बरदई=इस महाकाव्य का ग्रंथकर्त्ता कि जो हिन्दुओं के अंतिम बादशाह पृथ्वीराज जी चौहान का लंगोटिया मित्र और उनके दरबार का कविराज था। वह भट्ट जाति जो आज कल राव करके कहलाते हैं उसके जगात नामक गोत्र का था और उसके पुरुषा पंजाब देशके लाहौर नगरके रहनेवाले थे और उनकी यजमानी अजमेरके चौहानों की थी। उस की जैसी शूरवीरता इस महाकाव्य से विदित होती है उसका मुख्य कारण यही है कि वह पंजाब देश की अद्यावधि

पृथ्वी(२)राज दीनों तिन्है ज्वाला देश। तनय ताके चार कीन्हों प्रथम आप नरेश ॥ दूसरे (३) गुणचंद तासुत शीलचंद सरूप। (४) वीरचंद प्रताप पूरण भयो अदभुत रूप ॥ रंतभार

प्रसिद्ध वीरभूमिके तत्त्वों से उत्पन्न हुआ था और राजपूतानेके हृदयरूपी अजमेर नगरमें बड़ा हुआ था। वह षट भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य, छंद शास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक, मंत्रशास्त्र, पुराण, नाटक और गान आदिक विद्याओं में अच्छा व्युत्पन्न पंडित था। उसके पिताका नाम वेण और विद्या-गुरु का नाम गुरुप्रसाद था। उसकी दो स्त्रियोंके नाम कमला अर्थात् मेवा और गौरी अर्थात् राजोरा और एक लड़की का नाम राजवाई और दश लड़कोंके नाम सूर १ सुन्दर २ सुजान ३ जल्ह ४ वल्ह ५ बलिभद्र ६ केहरि ७ वीरचंद ८ अवधूत अर्थात् योगराज ९ और गुणराज १० थे। इस महाकाव्यके विषयोंको वैसे तो उसने समय २ पर बनाकर कंठ कर रक्खे थे परंतु उनको ग्रंथाकारमें उसने ६० ॥ दिनमें रचा था और अंतको उसने रायसा की पुस्तक अपने लड़के जल्ह नामकको दी थी। इस रायसे के अतिरिक्त उसके रचे और भी कईएक ग्रंथ सुनने में आतेहैं परंतु उनमें सबसे बड़ा ग्रंथ यह रायसा है और अन्य सब ग्रंथ अब बिलकुल नहीं मिलते हैं। उसका सविस्तर जीवनचरित्र और वंशावली जहाँ तक हमारे जानने में ख्यातादि से आई है वह हम इस ग्रंथके समाप्त होने पर छापकर प्रसिद्ध करेंगे।'

फिर लिखा है-

छप्पय-'सम वनिता वर बंदि चंद जंपिय कोमल कल। शब्द ब्रह्म यह सत्य अपर पावन कहि निर्मल॥
जिहित शब्द नहिं रूप रेख आकार व्रन्न नहिं॥ अकल अगाध अपार पार पावन त्रयपुर महिं॥
तिहिं शब्द ब्रह्म रचना करौं गुरुप्रसाद सरसे प्रसन॥ यद्यपि सु उकति चूकौं जुगति तौ कमल वदनि कवितह हसन॥
छंद ॥ १३ ॥ रू० ॥ ८ ॥

८ चंद इस रूपक में अपनी स्त्रीको उसकी शंकाका उत्तर देकर समाधान करता है। शब्द ब्रह्म (सं० शब्दात्मकं ब्रह्म) शब्द का प्रयोग चंद की व्याकरण और वेदान्त विद्याके ज्ञान का द्योतक है। गुरुप्रसाद शब्द यहां श्लेषार्थमें कवि ने प्रयोग किया है क्योंकि ख्यातियों के अनुसार चंद के विद्या गुरु का नाम गुरुप्रसाद था। यद्यपि कुछ विशेष वृत्त नहीं मिलते तथापि यह गुरुप्रसाद नामक पंजाब देशका रहनेवाला एक बड़ा पंडित हुआहै। कवितह चंदकी हिन्दी का निज प्रयोग है और उसका अर्थ कवित्त अर्थात् काव्य रचनेवाले कवि का है। किसी २ पुस्तक में जो वरबंदि, अमल, अबल, त्रयपूर, महि, तिहि और प्रसन्न पाठहैं वे अशुद्ध हैं।'

फिर लिखा है-

"बिहु बाह सूर सज्जे समंत। बेनै विरद बंधे अनंत"॥ छंद ॥ ६२३॥

यह छंद सं० १६४७। १७७० और १८४५ की पुस्तकों में नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी में है।

इस छंदकी अंतकी तुक में "बेनै विरद बंधे अनंत" है कि जिसका अर्थ यह होता है कि वेन ने अनेक विरद बांधे अर्थात् कहे। यह वेन कवि इस महाकाव्यके रचनेवाले चंद का पिता था और वह सोमेश्वर जीके इस समय साथ था। अब तक चंदसे पहिले का कोई काव्य किसी भी कवि का किसीके जानने में नहीं है किन्तु हमने जो एक चंद छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक सं० १६२९ की लिखी शोध की है उसके पीछे मेवाड़राजके महाराणा जी श्री उदयसिंह जी के महाराजकुमार श्री सगतसिंह जीके पंडित विष्णुदास जीने अकबर बादशाहके भाट गंग जीसे अजमेरमें पटोलावायके मुक़ामपर चंदके बाप कवि राव वेनका नीचे लिखा छप्पय अर्थात् कवित्त लिखा था वह हम प्रकाश करतेहैं। इस छप्पयसे वेन ने पृथ्वीराज जीके पिता सोमेश्वर जीको आशीश दी थी-

छप्पय-अटल ठाट महि पाट, अटल तारागढ थानं। अटल नग्र अजमेर, अटल हिंदव स्थानं॥
अटल तेज परताप, अटल लंका गढ़ डंडिव। अटल आप चहुवान, अटल भूमी यश मंडिव॥
संभरी भूप सोमेश नृप, अटल छत्र ओपै सु सर॥ कविराव वेन आशीश दैं, अटल युगां रांजेश कर॥

इसीके साथ उसी पुस्तक में चंदके नागापत्नकरणा का कहा हुआ यह नीचे लिखा दोहा भी लिखाहै:-

दोहा-ले कूंजा नृप पीथुला, सांमत चमू समंद॥ बेन नँदन कनवज्ज गमन, चंद करन कइ दंद॥'

पृथ्वीराज रायसे की प्रथम संरक्षा में लिखाहै-

इसके सिवाय फारसी और जम्मूकी तवारीख भी इस बातकी साक्षी देती है कि चंद हमारे हिन्दुओंके अंतिम बादशाह का परमप्रिय कविराज और सहचर था। यदि हम उन पुस्तकों का मूल उद्धृत करके यहां प्रमाण में प्रवेश करें तो ग्रंथके बहुत बढ़ जानेका भय है। अतएव हम मेजर रैवर्टी साहब की एक टिप्पणी को उद्धृत कर प्रमाणमें इस अभिप्राय से देते हैं कि हमारे पाठकोंको इस विषय का अनुभव एक थोड़ीसी पंक्तियों से ही होजाय। नीचे लिखी थोड़ी सी पंक्तियें केवल

हमीर भूपत संग खेलत आप। तासु वंश अनूप भो हरचंद अति विख्यात ॥ आगरे रहि गोपचल में रहो ता सुत वीर। पुत्र जनमें सात ताके महाभट गंभीर ॥ कृष्णचंद (५) उदारचंद जो रूपचंद सुभाइ। बुधचंद प्रकाश चौथो चंद भै सुखदाइ ॥ देवचंद प्रबोध संश्रुत (६) चंद ताको नाम। भयो सत्तो नाम सूरज चंद मंद निकाम ॥ सो समर करि साहि सेवक गये (७) विधिके लोक। रहो सूरजचंद दृग ते हीन भर वर सोक ॥ परो कूप पुकार काहू सुनी ना संसार। सातयें दिन आइ यदुपति कियो आप उधार॥ दियो (८)चख दै कही शिशु सुनु मांग बर जो चाइ। हों कहों प्रभु भगत चाहत शत्रु नाश सुभाइ ॥ दूसरो ना रूप देखों देखि राधा श्याम। सुनत करुणासिंधु भाषी एवमस्तु सुधाम ॥ प्रबल छद छिन विप्र कुलते शत्रु ह्वैहै वास। अषित (९) बुद्धि विचारि विद्यामान माने मास ॥ नाम राखे मोर सूरजदास, सूर, सुश्याम। भये अंतर्ध्यान वीते पाछली निशि याम ॥ मोहि पनसो (१०) इहै ब्रजकी वसे सुख चित थाप। थपि (११) गोसाईं करी मेरी आठ मध्ये छाप ॥ विप्र प्रथजगात को है भाव भूर निकाम। सूरहै नंदनंद जूको लयो मोल गुलाम ॥ ११८ ॥

अर्थ सुगम—सूर आपन वंश वर्णत है ॥ ११८ ॥

यही नहीं सिद्ध करती हैं कि चंद कवि पृथ्वीराजजीके समयमें हुआथा परन्तु रायसेमें लिखे कतिपय और वृत्तान्त भी कुछ फेरफारके साथ सिद्ध करती हैं।

(मेजर रैवर्टी साहवकृत तवकात नासरी पृष्ठ ४८६)

हिन्दू लोग एक भिन्न वृत्तान्त लिखते हैं कि उसीको अब्बुलफजल ने और जम्मूकी तवारीख वाले ने भी थोड़े से फरक के साथ वर्णन किया है—

यद्यपि फारसी इतिहासवेत्ता लिखते हैं कि रायपिथौरा तलावरी (तराई) पर लड़ाई में मारागया और मुईजुद्दीन दमयक् में एक खोखरके हाथसे मारागया कि जो इसी कामके लिये उतारू हो रहा था, और ऐसेही वृत्तान्त का अवलंब तवकात अकवरी और फरिश्ता के ग्रंथकर्त्ताओं ने किया है, तथापि हिंदू भाटों के मुख जुवानी वर्णनसे, कि जो प्रत्येक नामांकित शाखेकी ख्यातोंके भंडार हैं, और जो पीढ़ियों तक कंठस्थ वृत्तान्त एक दूसरे को उपदेश करते आये हैं, यह वर्णन किया गयाहै कि राव पिथौराके लड़ाईमें कैदहोजाने और गज़नी को ले गये पीछे एक चंद जिसे कोई चांदा करके भी लिखते हैं कि जो राय पिथौराका स्तुति पाठक और विश्वासी सहचर था और कोई २ ग्रंथ कर्त्ता उसे राय पिथौरा का कविराज करके भी लिखतेहैं, वह अपने आपदाग्रस्त स्वामीकी खबर लेनेको ग़ज़नी पहुँचा वह अपने अच्छे प्रयत्नोंके बल से प्रबंध कर सुलतान मुईजुद्दीन की सेवामें प्राप्त हुआ और बंदीगृहमें राय पिथौराके साथ बातचीत करने में भी सफल हुआ। यह दोनों किसी एक युक्ति पर सम्मत हुये और एक दिन चंद ने अपने छलबलके द्वारा सुलतानके मनमें राय पिथौरा की बाणविद्यामें परमकुशलता देखने की नितान्त इच्छा उत्पन्न की और उसको चंदानें इतनी सराही कि सुलतान का मन उसे देखे विना न रहने लगा निदान बंधुआ राजा सन्मुख लाया गया और उससे उसकी बाण विद्याकी परमकुशलता दिखाने की विनती की गई। उसके हाथमें एक धनुष और बाण दिये गये। उसने अपनी स्वीकृत युक्तिके अनुसार जो निशाना सुलतानने नियत कराया था उसे छोड़ कर खास सुलतानके ही बाण मारा कि वह वहीं मरगया और सुलतानके पासवालोंने राय पिथौरा और चंदाको काट कर टुकड़े २ कर डाले।

जम्मू की तवारीखवाला लिखता है कि राय पिथौरा अंधाकार (देखो टिप्पण १ पृष्ठ ४६६) दिया गया था और जब वह बंदीगृह से बाहर लाया गया और उसके निज धनुष और बाण उसे दिये गये। यद्यपि वह अंधाथा तथापि उसने बाण चढा कर और साध कर सुलतानके शब्दके अनुसंधान और चंदा की सूचनाके अनुसार सीधा ऐसा मारा कि वह सुलतान के जाकर लगा। बाकी का वृत्तान्त तदनुसार ही है।

इति श्रीपदकूट सूरदासटीका संयुक्त संपूर्णम्।

टिप्पणी—सरदार कविने कईएक स्थान इस भजन में पाठांतर किया है वह अंक देकर नीचे लिखा है।

(१) शुभमें (२) पृथ्वीराज (३) रंतभौर (४) सुखअवदात (५) कृतचंद (६) षष्ठम (७) साहिसे सब (८) दिव्य (९) अखिल (१०) मनसा (११) श्री सूरदासके विषय में ग्रंथके अन्त में लिखा जायगा।

एकसौ अठारह पदकी टिप्पणीमें लिखा है कि ग्रंथके अंतमें सूरदासके विषयमें लिखा जायगा अतएव यहाँ इस समय मुझे जहाँतक सूरदासके विषयमें लेख मिला है उन सबोंको यहाँ प्रकाश करताहूं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जीने चरितावली और सूरशतक पूर्वार्द्धमें जो लिखा है उसे छोड़ देताहूं। सूरदासके समयसे अनेक कवियोंका समय निर्णय होगा।

रामरसिकावली-महाराज रघुराजसिंह कृतसे-

दोहा-सूरदासजी जग विदित,श्री उद्धव अवतार। कथा पुराणांतर कथित,वर्णन करों उदार॥१॥

चौपाई-जब मथुरामें श्रीनँदलाला। गोपिनको विज्ञान विशाला॥ १॥
सादर करन हेतु उपदेशू। पठयो उद्धव गोकुल देशू॥ २॥
तहँ गोपिन पर प्रेम परेषी। उद्धव बोले ज्ञान विशेषी॥ ३॥
धारि भक्तिहरि निज उरमाहीं। आवत भे पुर मथुरा काहीं॥ ४॥
राखि भाव उर गोपिन केरो। लख्यो संग हरि चरित घनेरो॥ ५॥
तब उद्धवको श्री यदुराया। बदरीनाथ कान्ह पठवाया॥ ६॥
यह सुवासना ऊधवके तब। रही आय ब्रज येक बार कब॥ ७॥
गोपिनको अनूप अनुरागा। हरिलीला जो ब्रज सब जागा॥ ८॥
सो रसनाते वर्णन करहूं। बर संतोष हियेपर धरहूं॥ ९॥
कीन्हें यही बासना काहीं। उद्धव प्रगट भये कलि माहीं॥१०॥
सूरदासते संत शिरोमणि। विरचन सवालाख पदको गुणि॥११॥
करि संकल्प मुदित मनसामें। हरि लीला विभूति हू तामें॥१२॥

दोहा-वरण्यो तिमि गोपीनको,जो यथार्थ अनुराग।विरचि कृष्णपद सूर वदि,सहस पचीस अदाग॥
पूरण कीन्हों सूर प्रण,सूरश्याम जहँ होय।सो पद विरच्यो कृष्णही,जानि लेहु सब कोय॥३॥
महाघोर कलिकाल महँ, जन्म लेब दुख दूर।दृग विकार गुणि याहिते, सूरदास भे सूर॥४॥

चौपाई-जन्महिते हैं नैन विहीना। दिव्य दृष्टि देखहिं सुखभीना॥ १॥
लीन परीक्षा सो तेहि नारी। एक समै अस वचन उचारी॥ २॥
प्रिय मोहिं सकल ग्रामकी वामा। मोसों कहहिं वचन असि वामा॥ ३॥
तू केहि देखन करहि शृँगारा। तेरो पति तो अंध अपारा॥ ४॥
सुनिकै सूर कही यह बानी। आजु शृँगार भली विधि ठानी॥ ५॥
बहु स्त्रिनको लै निज संगा। बैठहु आइ इहां सउमंगा॥ ६॥
भूषण तुव बिगरो जो होई। देहैं हम बताइ सत सोई॥ ७॥
सुनि यह सूरदासकी नारी। सब भूषण निज अंग सँवारी॥ ८॥
बेंदी देत भये नहिं भाला। सूर बोलायो ढिग तब बाला॥ ९॥
तिय भूषन सब अंग निहारी। सूरदास बोल्यो सुप धारी॥ १०॥
बेंदी भाल दियो क्यों नांही। लषि प्रभाव यह सूर तहांही॥ ११॥
कीन्हें सकल लोग जय सोरा। ष्यात बात भै जग सब ठोरा॥ १२॥

दो०–ह्वै विरक्त संसारते, दिव्यदृष्टि हरि ध्यान। सूरदास करते रहे, निशि दिन विदित जहान॥३॥
सूरदास इतिहास बहु, परचै अहैं अनेक। जानि लेहु सब संतजन, कहौं नेक सविवेक॥४॥
कवित्त–कविकुल कोक कंज पाइके किरिनि काव्य विकसे चिनोदित ह्वै नेरे और दूरके। सूखिगो अज्ञानपंक मन्दभो मयंक मोह विषय विकार अन्धकार मिटे कूरके॥ हरिकी विमुखताई रजनी पराई गई मूक भये कुकवि उलूक रस झूकके। छायो तेज पुहुमिमें रघुराज रूर हरिजन जीव मूर सूर उदय होत सूरके॥ १॥ मतिराम* (१) भूषण (२) विहारी (३) नीलकंठ (४) गंग (५) वेनी (६) शंभु (७) तोष (८) चिंतामणि (९) कालिदास (१०) की। ठाकुर (११) नेवाज (१२) सेनापति (१३) शुकदेव (१४) देव (१५) पजन (१६) घनआनंद (१७) घनश्यामदास (१८) की॥ सुंदर (१९) मुरारि (२०) बोधा (२१) श्रीपति हूं (२२) दयानिधि (२३) युगल (२४) कविंद (२५) त्यों गोविंद (२६) केशवदास (२७) की। भनै रघुराज और कविन अनूठी उक्ति मोहिं लगी जूंठी जानि जूंठी सूरदास की॥ २॥ अखिल अनूठी उक्ति युक्ति नाहिं झूठी नेकु सुधाहूं ते सरस सरस को सुनावतो। उद्धत विराग भाग सहित अनेक राग हरिको अदाग अनुराग को सिखावतो॥ जगत उजागर अमलपद आगर सुनट नागर ध्याय सूर-सागर को गावतो। भाषै रघुराज राधा माधवको रास रस कौन प्रगटावतो जो सूर नहिं आवतो॥ ३॥ साह सुन्यो सुरनसे वेगही बुलायो डिल्ली पूछ्यो कौन हो तू सूर कह्यो पूंछो बेटी सों। साह कह्यो जानो कैसे सूर कह्यो जंघ तिल साह पुछवायो सो तुरत एक चेटीसों॥ कन्या कह्यो कहत तुरंत ही शरीर छूटी हठपरे कहि तनु तजि हरि भेटी सों। भनै रघुराज साह सूर पद शिर-नाय पूछ हरिदास मोरि भवभीत मेटीसों॥ ४॥ गोकुल में रास होत राधा जूने मान कीन्हों हरि मान मोरिबे को उद्धवे पठायो है। जानि गुरुमान कह्यो नेसुक कटुक वैन दीनी वृषभानुसुता शाप को पछायो है॥ धारिये मनुज तनु तारिये जगत जाइ सकल सुनाइये जो रास रस भायो है। भनै रघुराज सोई उद्धव अवनी में आइ रसिक शिरोमणि सो सूर कहवायो है॥ ५॥

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'शिवसिंहसरोज' पढ़नेके समय में जिन जिन कवियोंके विषय में कुछ लिखा है उनमें अकबर और गंगके इतिहास पर अपनी राय नाम मात्रको लिखी है उसे नीचे प्रकाश करता हूं।

अकबर।

अकबर बादशाह दिल्ली सं० १५८४में हुए इनके हालात में अकबरनामा१आईनअकबरी२ तब काहत अकबरी ३ तारिख़ अबदुलकादिर बदाऊनी४ इत्यादि बड़ी बड़ी किताबें लिखी गई हैं जिनसे इस महाप्रतापी बादशाह का जीवनचरित्र साफ़ साफ़ प्रगट होताहै इहां केवल हमको उनकी कविता का वर्णन करना अवश्य है सो हमको कोई ग्रंथ इनका नहीं मिला दो चार कवित्त जो मिले हैं सो हमने लिखाहै जहांगीर बादशाहने अपने जीवनचरित्र की किताब तुज़ुक जहांगीरी में लिखाहै कि अकबर बादशाह कुछ पढ़े लिखे न थे परंतु मौलाना अबदुलक़ादिर की किताब से प्रगट है कि अकबर शाह संस्कृत महाभारत को एक रात आपही उल्था कराने बैठे और सुलतान मोहम्मद थानेसरी औ ख़ुदमौलाना बदायूनी औ शेख फ़ैज़ी ने जहां जहां कुछ आशय छोड़ दिया था उसे

* अंकवाले कवियोंका वर्णन आगे किया जायगा।

फिर तर्जुमा होनेको हुकुम दिया इनके समय में नरहरि १ करन २ हाल ३ खानखाना ४ वीरवर ५ गंग इत्यादि बड़े बड़े कवि हुए हैं परंतु खास जे कवि नौकर थे उनके नाम इस कवित्त से प्रगट होंगे।

सवैया–पृथी प्रसिद्ध पुरंदर ब्रह्म सुधारस अमृत अमृत बानी। गोकुल गोप गुपाल गणेश गुणी गुणसागर गंग सुज्ञानी॥ जोध जगन्नज में जगदीश जगामग जैत जगत है जानी। कोर अकब्बर सैन कथी एतने मिलिकै कविता जु बखानी॥१॥

श्रीगोसाईं तुलसीदास तौ दरबार में हाज़िर नहीं हुए ✽ सूरदास जी औ बाबा रामदास उन के पिता गानवालोंमें नौकर थे ·।· जैसा कि आईन अकबरी में लिखाहै केशवदास जी उस समय में इनके मंत्री श्री राजा वीरवरके दरबार में हाज़िर हुये थे जब इन्द्रजीत राजा उडछा बुंदेलखंडी प्रवीन राइ पातुरीके लिये बादशाही कोपमें था।

दोहा–जाको यश है जगतमें, जगत सराहे जाहि। ताको जीवन सफलहै, कहत अकब्बर शाहि॥१॥

गंग।

गंगकवि (गंगाप्रसाद ब्राह्मण एकनौर ज़िला इटावा अथवा बंदीजन दिल्लीवाल) स० १५९५में हुए गंगकविको हम सुनते रहे कि दिल्लीके बंदीजन हैं औ अकबर बादशाहके इहां थे जैसा किसी कविने बंदीजनों की प्रशंसा में यह कवित्त लिखा है!

कवित्त–प्रथम विधाता × ते प्रगट भये बंदीजन पुनि पृथु यज्ञ ते प्रकाश सरसात है।
माने सूत शौनकन सुनत पुराण रहै यशको बखाने महासुख बरसात है॥
चंद चौहानके केदार गोरी साह जूके गंग अकबरके बखाने गुण गात है।
काग कैसे मास अजनास धन भाटनको लूटि धरै जाको खुरा खोज मिटि जातहै॥१॥

परंतु अब जो हमने यांचा तौ विदित हुवा कि गंग कवि एकनौर गांउ जिला इटावाके ब्राह्मण थे जब गंग मरगये हैं औ जैनखां हाकिम ने एक नौर में कछु जुलुम किया तब गंग जीके पुत्र ने जहांगीर शाहके इहाँ यह कवित्त अरजीके तौर पर दिया है।जैनखां जुनारदार मारे एक नौरके। जुनारदार फारसीमें जनेऊ रखनेवालेका नामहै लेकिन् खास ब्राह्मणहींको जुनारदार कहतेहैं खैर जो हो हम को इस बातमें बहुत लिखनेसे कछु मतलब नहीं गंगजी महानकविथे राजा वीरबलने गंगको इस छप्पयमें (भ्रमर भ्रमत) एक लक्ष रुपया इनाम दिया इसी प्रकारसे अकबर, जहाँगीर, वीरवर, खानखाना, मानसिंह सवाई इत्यादि सबोंने गंगको बहुत दान मान दियाहै।

भक्त विनोद–कवि मियांसिंह कृतसे।

दो०-करन विमलमनहरनतम, दमन त्रिविध दुख दोष। भक्ति महातम करहुँकल, कथन ललितप्रदमोष
नाशन कुमतिकृतांतभय, भासन भानु प्रबोध। सुमति विकासन भक्तजन, दलन मदनमदक्रोध
चौपाई–कृष्ण देव जब जनन उबारा। मथुरा लीन ललित अवतारा।
किए कृपालु चरित जस चारू। सो मनहरन विदित संसारू॥१॥
तब यादव इक भक्त प्रवीना। कृष्ण सरोज चरण मन लीना।
सूर नयन बर वंश उजागर। उपज्यो भक्त सृष्ट गुणसागर॥२॥

✽ श्रीतुलसीदासजी का काल यह नहीं है। हरिश्चंद्र ·।· श्रीसूरदास कहीं नौकर न हुए। हरिश्चंद्र सूरदास जीके पद से मिलाना। हरिश्चंद्र।

सखा पुनीत मीत व्रतधारी। मन वच कर्म कृष्ण हितकारी।
जब मथुरा तजि करत पयाना। द्वारावती आय भगवाना ॥ ३ ॥
ते किमि चंचरीक बड़ भागी। सकहिं सरोज चरण प्रभु त्यागी।
भक्ति प्रेम कल नवल उमंगा। आयो दीनदयालु कर संगा ॥ ४ ॥
यद्यपि आनँद भवन प्रसादू। ताके तहाँ सुलभ सब साधू।
पै निवास बृंदावन चारू। विहरन कुंज गलिन मनहारू ॥ ५ ॥
कृष्ण संग नित नवल विलासा। सो न पलक कल बिसरत तासा।
तन मथुरा बृंदावन मनुआं। लग्यो रहत निशि दिवस अननुआं ॥ ६ ॥
करि स्मरन कल कुंजन शोभा। होत प्रबल जिय यादव छोभा।
प्रभु सन बार बार अस वरनी। नम्रत विनय दिवस निशि करनी ॥ ७ ॥
कृपानिकेत जनन सुखदाई। तुव सन कवन दिवस शुभ जाई।
शुचि भंडीर विपिन मनहरना। रविजा कुंज सनख नग धरना ॥ ८ ॥
आन ललित लावण्य तनीके। देहु देव परमप्रिय जीके।
जब लगि जियन नाथ संसारा। सो प्रमोद किमि बिसरन हारा ॥ ९ ॥
अस प्रकार उतकंठित रहना। बृंदाविपिन अहिर निश कहना।
काल पाय तब भक्त उबारा। लिए संग यादव परिवारा ॥ १० ॥

दो०—करिकौतुक करुणायतन, निज विकुंठ कलधाम। गए गमनकरि भवनमुद, रमारमन अभिराम ॥

चौपाई—ते यादव हरिभक्त सुजाना। तहाँपिजोरि युगल निज पाना।
वृन्दावन दरशन अनुरागा। नम्रत विनय करन अस लागा ॥ १ ॥
चलन होहिं तुव दिन सनेहू। कब कृपालु बृन्दावन तेहू।
सो प्ररण्य कल कुंज सुहाए। दीननाथ मोरे मनभाए ॥ २ ॥
विसरत सोन भक्त सुखदाई। एकबार प्रभु देहु दिखाई।
तासु कथन सुनि त्रिभुवनराई। बोले वदन वचन मुसकाई ॥ ३ ॥
सुनहु मीत पूरवततांहीं। मोर गमन वृन्दावन माहीं।
अब न होहिं पय भक्त सुजाना। मैं परिवार सहित निज नाना ॥ ४ ॥
कुंज कुंज राधा युत चारू। तहाँ निवास करहुँ मन हारू।
ते मथुरा वृन्दावन जोही। जन वैकुंठ अधिक प्रिय मोही ॥ ५ ॥
जबते तज्यो मनोहर नगरी। कलित कुंज लीला निज सगरी।
तबते यद्यपि मोर सुहावा। इह वैकुंठ अखिल सुख छावा ॥ ६ ॥
तद्यपि तिहि समान सुखदाई। उपज्यो नाहिं न तनक सुखभाई।
जिमि वाराणशि शंकर काहीं। विदित विश्व प्रिय मानस माहीं ॥ ७ ॥
तजत न तासु देव त्रिपुरारी। तिमि मथुरा मोहिं प्राणन प्यारी।
अजहुँ स्मरण होत मन भाई। ललित बाललीला सुखदाई ॥ ८ ॥

दो०—मृतका भक्षण पूतना, शकट विभंजनमित्र। अर्जुन जयमल मदहरन, अघ वक बदन चरित्र १
कालीपद क्षय करन पुनि, मोह नलन भवदेन। बृंदावन बंसीवजन, चरन चारु वरधेन ॥ २ ॥

धेनुक वधन प्रलंब पुनि, तृणावर्त वश काल। बृंदावन रक्षाकरन, नग नख धरण रसाल॥३॥
रचन रास लीलादि पुनि, वचन सखन सखिसंगकेसि विध्वंसन नंदकल, त्रातन हृदय उमंग॥
दावानल कर शमन पुनि, ग्वालन सन मन चाउ। वन वन विहरन सजन सुन, हनन कंसरिपु राउ ५॥
जननि जनक बंधन मुकत, चरित चारु इत्यादि। जब जब होत स्मरण इह, उपजत हृदय हुलादि

चौपाई–सदा रहत मानस उतकंठा। तजि निज रुचिर धाम वैकुंठा।
पुनि कब वपुष पूर्ववत धारी। अद्भुत करहुँ चरित मनहारी॥ १॥
जे जन भक्ति निरत बड़ भागे। मोर प्रेम पावन रस पागे।
हृदय कुतर्क कपट सब खोई। मोर रुचिर लीला कृत जोई॥ २॥
यथा विधान रास विरचाई। गायन श्रवण करहिं मन लाई।
सो साक्षातविश्व शुभ चारी। मोर स्वरूप भक्त व्रत धारी॥ ३॥
मथुरा धारि जन्म त्रिय जोई। मोर ललित उत्सव पर होई।
सो मोहिं यशुमति मातु समाना। सुनहु आन अब भक्त सुजाना॥ ४॥
जे नर मोर जन्म दिन लेखी। धारि रुचिर व्रत भक्ति विशेषी।
बालरूप मम पूजन करहीं। आवागमन सहज श्रम हरहीं॥ ५॥
करि प्रवेश मथुरापुरि माहीं। जो जन करहिं रटन मोहिं काहीं।
भक्त मोर सो प्राणन प्यारू। ताकर तरन सुमन संभारू॥ ६॥
अब तोहिं जोपि भक्तबड़भागा। मथुरा गमन प्रीति अनुरागा।
तो अब सुनहु कथन कल मोरा। संतत भक्त सृष्ट हित तोरा॥ ७॥
जहि ते तहां सजन तुव जाई। सोउ लेहु सुख कीरति पाई।
अस कहि कृष्ण देव भगवाना। लागे तासु प्रबोधन ज्ञाना॥ ८॥
कलीकाल संध्या अवसाना। मथुरा प्रांत भक्त गुणखाना।
सुभ्रत विप्र वंश उपजाई। मथुरा मोर ललित पुर आई॥ ९॥
मोर जन्म लीला गत पारू। करत करत गायन व्रत धारू।
सोउ अखंड सुयश सुख जोही। होहिं भक्तजन प्रापत तोही॥ १०॥
बहुरि मोर लीला मनभायन। प्राकृत वदन सफुट जब गायन।
कीन तुमहुँ संगीत प्रकारू। सुभ्रत ललित प्रेम रस सारू॥ ११॥
सुनत लोक कलिकाल मझारा। हुइहै भक्ति निरत संसारा।
बढहि मोर चरणन अनुरागा। उधरहिं तुव प्रसाद बड़ भागा॥ १२॥
पै तुव जन्म अंध दृग हीना। जननि जनक अस देखि प्रवीना।

दोहा–पालहिं जन समान कछु,सुत सनेह वश तोहि।आन सक बांधव सुहृद, सो न करहिं हितकोइ॥

चौपाई–केवल जननि करहिं तुव सेवा। अस कहि बदन भक्त द्रुम देवा।
भए विराम कृष्ण घन बरना। तब प्रणाम करि यादव चरना॥ १॥
कलि संध्या कर अंत प्रवीना। सोचन लग्यो भक्ति मन लीना।
सो जब समय आय नियराना। तजि विकुंठ यादव गुणखाना॥ २॥
मथुरा प्रांत विप्र वर गेहा। भा उत्पन्न भक्त हरि नेहा।

जन्म अंध दृग ज्योति विहीना। जननि जनक कछु हर्ष न कीना ॥ ३ ॥
रहे मौन बांधव समुदाई। करहिं प्रीति केवल इक माई।
अष्ट वर्ष कर जानि सुहावा। यज्ञोपवीत जनक तव पावा ॥ ४ ॥
भयो प्रसिद्ध नगर अभिरामा। सूरदास ताकर अस नामा।
अवसर एक मातु पितु संगा। आन लोक पुर प्रेम उमंगा ॥ ५ ॥
कृष्ण जन्म पुरि दरशनलागी। आए सकल सदन निज त्यागी।
करि यात्रा विधिवत अनुरागे। जब निज सदन चलन सब लागे ॥ ६ ॥
सूरदास तब कहत उचारी। मैं अब इहां सदन नगधारी।
कछुदिनकरहुँललितनिजवासा। कृष्णप्रसाद विगत श्रम त्रासा ॥ ७ ॥
तुव निज गवहुँसदनशुभकाहीं। चिंता मोर करहु कछु नाहीं।
सुनिअसजननिजनकतहिवानी। सुत सनेह निज मानसवानी ॥ ८ ॥
रुदन करत अस वचन उचारे। वसत अंध दृग युगल तुम्हारे।
कराहिं कवन भोजन पट दाना। शिशु निदान तुव देश विराना ॥ ९ ॥
कसतजिजाहि सुवनपितु माता। काहु न देखि परत तुव त्राता।
सुनिअसजननिजनकमुखवानी। कृष्ण भरोस सूर जिय मानी ॥ १० ॥

दोहा—बोल्यो अभय प्रसन्न मन,बदनवचन सुखदान।तुवजियकरहुनसोच कछु,मोहिंविदेश असजान

चौपाई—मोरे कृष्ण देव भगवाना। करनहार कल पालन त्राना।
अन्ध दीन बलहीन न कोहीं। पोषन करत देव प्रभु सोहीं ॥ १ ॥
शरन चरन दुख हरन करीके। परे कोटि अस मोर सरीके।
दीनबन्धु जन दीननपाला। दीननाथ प्रभु दीनदयाला ॥ २ ॥
दीनहरन भय दीन उवारन। दीन सुखद दुख दीन निवारन।
अस प्रकार जब दीन सहाए। विदित पुराण वेद श्रुति गाए ॥ ३ ॥
मोरे कसन होहिं तव मय्या। जानि दीन दृग हीन सहय्या।
तब अस सुनत वचन वर ताहू। साधु जठर दाया वश काहू ॥ ४ ॥
बोल्यो सूर मातु पितु काहीं। तुव न करहु चिन्ता जिय माहीं।
हर्षि जाहु सुभ्रत निज गेहू। तुव दृग हीन बाल वर एहू ॥ ५ ॥
मोरे वसहिं सदन सुखमानी। अस कहि गहत संत शुभ पानी।
चल्यो प्रसन्न लेत कल भवने। उत पितु मातु सदन निज गवने ॥ ६ ॥
साधु सनेह प्रीति अवलोकी। भई प्रसन्न मातु गत शोकी।
सूरदास मानस अनुरागा। प्रमुदित वसन संत गृह लागा ॥ ७ ॥
पूरव चरित्र कृष्ण कल गायन। रह्यो सुनत सादर मनभायन।
आपु प्रेम युत भक्ति उमंगा। वैष्णव संत जनन कर संगा ॥ ८ ॥
नृत्य गीत गायन करि चारू। कृष्ण चरित्र विमल मन हारू।
प्रभु अद्भुत लीला जिमि कीनी। आदि उपांत श्रवन करि लीनी ॥ ९ ॥
तासु प्रसाद कृष्ण भगवाना। सो पूरव संचित निज ज्ञाना।

अनुभव भयो विदित सब भास्यो। दैवचरित लीलादि बिलास्यो॥ १०॥
दोहा–भयो छकत उनमत्तवत, प्रेमासवकरिपान। कृष्णचरित पदनवल नित, निज बिरचत रुचिमान १
चौपाई–अस प्रकार कृत नवल सुहाई। भक्त सृष्ठ कल कुंजन जाई।
करि प्रति दिवस मधुर स्वर गायन। भयो कृष्ण पद भक्ति परायन॥ १॥
मथुरा निवसि सुयश सुख लय्यो। सूर विदित सव देशन भय्यो।
निर्मत तास ललित पद पावन। संश्रुति गाय लोक मनभावन॥ २॥
वैष्णव भए भक्ति रसनागर। भक्त प्रधान सुयश वन सागर।
सूरदास हरि गुण गण गाते। जहँ जहँ फिरहिं भक्त मदमाते॥ ३॥
तहँ तहँ भक्ति विवस अनुरागे। पाछे फिरहिं तासु प्रभुलागे।
सूर चरित पाछिल भगवाना। ग्वाल केलि वन धेनु चराना॥ ४॥
निज अनुभव इत्यादि सुहाए। देखत रहत भक्ति सरसाए॥ ५॥
ब्रह्मानंद मगन दिन राती। प्रेम भक्ति कछु कही न जाती॥ ६॥
दो०–एक दिवस मारगचलत, विधुन कूपकल कोय। दृगविहीन चीन्हचो न कछु, लग्यो भक्तच्युत होय
चौपाई–तब भगवान भक्त रखवारे। अद्भुत गोप वेष निजधारे॥
गहत करन कर तुरत मुरारी। भक्त कूप च्युत लीन निवारी॥ १॥
करि कर हरण त्रास कर केरा। सूरस परश लेत जिय हेरा॥
इहकर जानि परत नर नाहीं। करि विचार करुणानिध काहीं॥ २॥
करते लीन पकरि कर संगा। कहि सवचन मन मोद उमंगा॥
अब न तजहुँ बिनु साँच बखाने। तब भगवान वदन मुसकाने॥ ३॥
सूर करन कर करि बरजोरा। चले छुड़ाय भक्त चितचोरा॥
अस जिय जानि दैव चतुराई। ब्रह्मानन्द सूर सुखपाई॥ ४॥
मानत भयो भूरि निज भागा। कर सों कर कृपालु जब लागा॥
गदगद गिरा प्रेम दृग वारी। बोल्यो वदन वचन मनहारी॥ ५॥
बंदहु बार बार प्रभु तोही। जो अस निबल जानि जिय मोही॥
केसी कंस असुर मद गंजा। लीन छुड़ाय सबल कर कंजा॥ ६॥
दो०–काह भयो करते छुटे, कर्णधार भवसिंधु। मनते छूटन कठिन जन, भक्त कुमुद उर इंदु॥ १॥
अवतो बलकरतोरिकर, चले निबल कर मोंहिपै मनते टूटों न जब, तब देखों प्रभु तोहिं॥२॥
चौपाई–सुनि कटाक्ष मय वचन सुहाए। सूरदास कर प्रभु मनभाए॥
हर्षे दीनदयालु भगवाना। कीन स्परस दृगन तिहि पाना॥ १॥
तत्क्षण अंग नयन युग तासा। असल विमल कल ज्योतिप्रकासा॥
पाय दिष्टि अस सूर सुजाना। सन्मुख कृपासिंधु भगवाना॥ २॥
कलित कंजलोचन घनवरना। आनन हृदय भक्ततमहरना॥
चारु लिलाट खोर श्रीखंडन। माल जयंति जनन मनमंडन॥ ३॥
यज्ञोपवीत पीतपट राजा। निज छवि कोटि मदनमद लाजा॥
चितवनि चारु मुनिन मनमोहन। धृत गोपाल वेष वर सोहन॥ ४॥

सूरति विमल बाल बल भय्या। निरत प्रबर परचारन गय्या॥
सूर विलोकि रूप मनहरना। पर्‍यो दंडवत चरणन धरना॥ ५॥
सुमिरि कृष्ण जब शीश उठाया। कीन तुरंत मुग्ध प्रभु माया॥
जानत भयो सूर मनमाहीं। गोप बाल नँदनंदन काहीं॥ ६॥
लग्यो बहुरि अस वदन उचारन। तुमहुँ कूप च्युत कीन निवारन॥
भयो सहाय अंध तकि मोरा। अहो कीन उपकार न थोरा॥ ७॥
वंदहुँ बार बार अब तोहीं। कीन्ह्यो कूप त्रास गत मोहीं॥
अब वृतांत निज देहु सुनावा। कहि ते आव कवन कित जावा॥ ८॥
मोह विवस अस तासु निहारी। बोले गोप वेष गिरिधारी॥
मथुरा बसहुँ गोपसुत भय्या। आवा विपिन चरन हितगय्या॥ ९॥
तोरे देखि भक्त दृग हीना। उहाँ निवरन कूप चुत कीना॥
अब तुमजाहु सदनसुखमाना। मैं इत करहुँ विपिन निजप्याना॥ १०॥

दो०-अस कहिवत्सलभक्त प्रभु, कृष्णदलनदुख क्रूर। द्रुमन ओट करुनायतन,गए कछुकजबदूर १॥

चौपाई-तब दर्शन हित सूर सुजाना। पाछिल चल्यो वेग अकुलाना॥
गवन्यो कहाँ बाल मृदु अंगा। हरण ललित छवि कोटि अनंगा॥ १॥
इत उत फिरहिं विथत मनमाहीं। आवत दृष्टि बाल प्रभु नाहीं॥
अतिशय क्लेश सूर तब पावा। पूछत पथिक देखि जित आवा॥ २॥
को अस बरन श्याम मृदु चारू। वेत्रपाणि गय्यन चरवारू॥
कामर कन्ध माल वन सोहा। देखा तुमहु बाल मन मोहा॥ ३॥
सुनतहि कथन पथिक इहि भाँती। इह कस कहत कवन तोहि भांती॥
इहाँ न काउ धेन वनचारी। जाहु सजन निज सदन सिधारी॥ ४॥
सूर सुनत अस पथिक बखाना। आगल चल्यो विपिन विसमाना॥
खोजत नील जलधवत बरना। गोपबाल कानन मनहरना॥ ५॥
भ्रमत भ्रमत दारुण श्रम पाया। बैठ्यो अंत व्यथित द्रुमछाया॥
तोलौ ढुरयो सूर निशि छायो। भक्त सूर व्याकुल उठि धायो॥ ६॥
जहँ तहँ लग्यो भ्रमन वन माहीं। खोजत गोपबाल मृदुकाहीं॥
गति अनन्य अस भक्त जुड़ाना। भा तद्रूप कृष्ण भगवाना॥ ७॥
पावन भक्ति प्रीति मनमाहीं। तजि न जाहि कानन पुर काहीं॥
तब निशि स्वप्न रूप मृदु सोई। देखे दिवस गोपसुत जोई॥ ८॥
मंदहास युत भक्त सहय्या। बोले वदन वचन सुखदय्या॥
इहाँ न भक्त गोपसुत कोई। मैंहुँ कीन कौतुक कल सोई॥ ९॥
कीन्ह्यो तुमहिं कूप चुत वारन। बनत गोप बन गय्यन चारन॥
ज्योति विमल तुव दृगन प्रकासा। भक्त सृष्ट सब मोर विलासा॥ १०॥
तुव नयनन इन लीन निहारी। मोर स्वरूप भक्त व्रतधारी॥
तुव हित देन दरश मन हारू। इह मैं कीन चेष्ट निज चारू॥ ११॥

दो०-अब मथुरा तुव गवन करि,मोरचरित गुणगान ॥ करि गायन भवपूर्ववत,विचरहु अभयसुजान१

चौपाई–सुनि प्रभुवचन सुखद अभिरामा। सूर दंडवत करत प्रणामा॥
बोल्यो आज धन्य जगदीना। जोहिइन दृगन दरश प्रभु कीना॥ १॥
मुनि योगिन सुर दुर्लभ जोई। मोरे सुलभ आज जग सोई॥
अब न दैव कछु संसृति कामा। एक स्मरण तोर अभिरामा॥ २॥
मोरे हृदय लालसा छाई। विसरहिं सो न भक्त सुखदाई॥
अरु तुम्हार माया बलवाना। करहिं न मोहिं मुग्ध भगवाना॥ ३॥
हे कृपालु कल कमल विलोचन। हृदय भक्त जन सोच विमोचन॥
जिन नयनन अस रूप तुम्हारा। मैं प्रत्यक्ष प्रभु लीन निहारा॥ ४॥
तिनसन जगत विलोकन काहीं। दीनदयालु मोर रुचि नाहीं॥
ताते करहु पूर्ववत मोरे। दृग विहीन वन्दहुँ प्रभु तोरे॥ ५॥
तुव स्वरूप नित दीन सनेहू। देखत रहहुँ दिवस निशि एहू॥
करि अस विनय वदन अनुरागा। भयो विराम सूर बड़भागा॥ ६॥
बोले कृष्ण भक्त चित चोरा। सूर कथन सब सन्तत तोरा॥
होहिं सत्य संशय कछु नाहीं। भाषि वदन अस त्रिभुवन साईं॥ ७॥
भये लुप्त प्रभु भक्त उबार्‍यो। उठे सूर जनु स्वप्न विचार्‍यो॥
युगल अंध लोचन निज पायो। प्रभु पद शीश मनहिं मनभायो॥ ८॥
निज कलिपत पद पावन चारू। लग्यो करन गायन मन हारू॥
उदय अरुण तजि विपिन सिधाए। यमुना तीर भक्त वर आए॥ ९॥
करि स्नान गुण गण प्रभु गाते। मथुरा आय भक्ति मद माते॥
भजन प्रभाव देखि अधिकाई। सादर करहिं लोक सेवकाई॥ १०॥

दो०–सबकर हित जिय मानिनिज,द्विज विरक्त संसाररटन कृष्ण गुणगण निरत,सूर भक्त व्रतधार

चौपाई–अवसर एक मलेक्ष सुहावा। विदित दिलीश लोक सब गावा॥
संयुत भक्ति प्रीति हरषाए। तासु सूर जन लीन बुलाए॥ १॥
आवत देखि भक्त अभिरामा। शाह कीन उठि दंडप्रणामा॥
सादर शुचि आसन बैठारे। भक्ति पूर्वक वचन उचारे॥ २॥
तुव यादव प्रभु लोगन गाए। भक्त कृष्ण भगवान सुहाए॥
मोर प्रश्न कर दीन सनेहू। देहु उतर उर हरहु संदेहू॥ ३॥
सदन मोर प्रभु अगणित भामा। एकते एक सरस अभिरामा॥
तिनहुँ मध्य यादव कुलवारी। ऐहिं कोउ किन भक्त मुरारी॥ ४॥
सुनि दिलीश अस कथन सुहावा। सूर वदन अस वचन अलावा॥
सुनहु धरणिनायक बड़भागी। करहुँ कथन कछु तुव हितलागी॥ ५॥
जिहिते तोर मनोरथ एहा। अबहिं होहि फुर विगत संदेहा॥
इह तुम्हारि संकुल वरनारी। तुमहिं देखि पुनि मोहिं निहारी॥ ६॥
क्रम ते एक एक अस आई। करहिं गमन इत मारग राई॥

तिनहुँ मध्य तव कर त्रिय जोई। सो निज सकुचलाज सब खोई॥ ७॥
मोहिं सन करहिं रुचिर संभाषा। होहिं तुरंत बहुरि मृत तासा॥
साह सुनत अस दीन रजाई। महिषी सुनत सकल चलिआई॥ ८॥
एक एक करि नम्र प्रणामा। चली जात भामिनि निज धामा॥
आई एक सबन ते पाछे। पतिप्रिय रूप ललित गुणआछे॥ ९॥

दो०—निरखत सन्मुख हर्षवश,कहिसि वदन मुसकाय।कहितें कीन आगमनतुव, मोर मर्म कछुपाय॥

चौपाई—देखत कहि सूर तिहि ओरा। शुभ्रे मोहिं मर्म सब तोरा॥
भामिनि सुनत चरण गहि लीने। देखत सबन प्राण तजि दीने॥ १॥
महिषी आन देखि अस तासा। लागी रुदन करन संभाषा॥
साहु व्यथित मानस विसमायो। धरतधीर पुनि वदन अलायो॥ २॥
यन्दहुँ वार वार अब तोहीं। भगवन करहु कथन सब मोहीं॥
को इह रही भवन मम भामा। जहि अस तज्यो वपुप निष्कामा॥ ३॥
तव पूर्वघतहि कथा सुहायन। लागे सूरदास मुखगायन॥
इह मथुरा पुरि वसहि सुहाई। बीर वधू सब लोगन गाई॥ ४॥
हाव भाव कल निरत परायन। कला प्रवीन परम कटु गायन॥
सभा महिंद्र धनक जन जाई। निज प्रभाव गुण लेत रहाई॥ ५॥
काहु धनाढ्य काल शुभ पायो। पाणिग्रहण निज सुवन रचायो॥
इहि कहँ पठ्यो बोलि सन्माना। लाग्यो होन नृत्य कलगाना॥ ६॥
करि निज कला ललित चतुराई। मूर्छित सभा कीन समुदाई॥
तव कोउ आन देशकर राई। इहि नृत गीत देखि चतुराई॥ ७॥
निज पुर गयो लेत हरषाना। पावा तहाँ विविध सन्माना॥
एक दिवस रत नृत्य अगारा। देखि सरुचिर धरणिपतिदारा॥ ८॥
साजि शृंगार आभरण सोहन। ठाढी मनहु मान रति मोहन॥
चारि ओर परिवारत दासी। सेवइ सुखद रूप गुण रासी॥ ९॥
अस प्रभाव दृग देखि सुहावा। तेहि कर हृदय मनोरथ छावा॥
हमहुँ होव इहि सम कस रानी। अस विचारि मानस सकुचानी॥१०॥
इन कर भूप पुण्य संसारा। हमहुँ अधम धिग जनम हमारा॥
पुनि देखिस छित पत पटरानी। देत दान दीनन रति मानी॥११॥

दो०—धन भूषण पट भक्तियुत,करत सकल सेवकाइ।अतिथि संत आवत सदन,भोजन देहुँ जिवाइ॥
हमहुँ करव यदि पुण्य अस,कहत गुणत जियमाहिं।तो पावहुँ संशय नहीं,भूप पतनि पद काहिं

चौपाई—अस प्रकार पावन शुभ तासा। ललित दाम रुचि हृदय प्रकासा॥
तव तहिं दैवयोग कर आई। ज्वररुज उपज प्रवल दुखदाई॥ १॥
पुनि पंचत्वभाव कहँ सोई। प्रापत भई व्याधि सब खोई॥
धर्म दूत रौरव तेहि डारयो। तहाँ भोग निज कृत अगसारयो॥ २॥
सुर पुर गवनि बहुरि हरषाती। अपसर नृत्य गीत कलराती॥

मथुरा भवन भवन भगवाना। जों नृत गीत ललित पुनि गाना॥ ३॥
कीन्हेसि भक्ति प्रेम सरसाए। तेहि परिणाम अमर पुर पाए॥
अरु उपकार देखि नृप रानी। जोतहि हृदय दान रुचिमानी॥ ४॥
ताहि प्रसाद भवन तुव आई। भोगे विविध भोग सुखपाई॥
आजु विदित देखत तुव एहा। मृत वश भई तुरत तजि देहा॥ ५॥
पै यादव वंशी त्रिय जेहू। रही सो दैव रूप सब तेहू॥
कौतुक करन देव पुर त्यागी। आई धरणि कृष्ण अनुरागी॥ ६॥
गवनीं बहुरि अमरपुर काहीं। रही सो मनुज रूप कछु नाहीं॥
अस कहि सूरदास हरषाते। माँगि विदाय भक्ति मदमाते॥ ७॥
तब दिलीश सादर धन दीना। भक्त सृष्ट सुइ कारण कीना॥
हमरे नहिंन द्रव्य कछु कामा। तब दिलीश वर्णन अभिरामा॥ ८॥
धरयो शीश नमृत कर जोरी। विनय वदन कछु कीन न थोरी॥
चले सूर तब होत विदाए। हर्षत कृष्ण ललित पुर आए॥ ९॥
अगणित विमलभक्ति सरसावन। विरचत कृष्ण चरित पदपावन॥
रहे करत गायन संसारा। सकल लोक हित हृदय विचारा॥ १०॥
पदन प्रबंध सूर जन नागर। बाँध्यो जनहु सेतु भवसागर॥
विनु प्रयास कलिकाल मझारा। तेहि प्रसाद उतरत सब पारा॥ ११॥

दो०--सूर सूर सम विदितजग,सकलकविन शिरमौर। सूरश्याम जेहि भक्ति वश, भए भक्त चितचोर१
जो लौं विचरे धरणि तल,पल न विसारे श्याम। भए अंत अलचरणकल,कंजकृष्ण अभिराम२॥

बाबू रघुनाथ सिंह तअल्लुकेदार भदवर ने मुझे १६ दोहे दियेथे उन दोहों में सूरदास के समय-के कवियोंके नाम हैं पर कई एकमें मुझे सन्देह है जो हो वे दोहे नीचे प्रकाश किये जाते हैं।

दो०--सूरदासके समयमें, जोकवि भये महान। उन सबसे बढ़िके सबै, इन्हैं करत सन्मान॥ १॥
ओलिराम अकबर अगर,दासकवी करनेश। चतुरविहारी गोपकवि,घनआनँद अमरेश॥ २॥
आशकरन अजबेस अरु, कादर केशवदास। टोडर गोविंद जैतकवि, चरण चतुर्भुजदास॥३॥
जीवन केशव ताजकवि, होलराय कवि खेम। योधा जोयसी चंदसखि, कृष्णदास कवि क्षेम४
अमृत खानखाना जगन, ऊधोराम कमाल। जमालुद्दीन जगनन्दकवि, गोविंददास जमाल॥५
जमालुद्दीन कल्याण कवि, फैजी ब्रह्म फहीम। अभयराम परसिद्धकवि, विट्ठलविपुल रहीम६
अमरसिंह घनश्यामहूं, दील्ह नरोत्तमदास। चेतनचंद कविन्द भंट, बारक विद्यादास॥ ७॥
छितस्वामी भगवतरासिक, छत्र विहारीलाल। मिश्रगदाधर मानसिंह, लालन मोतीलाल॥८॥
हरीदास हरिनाथकवि,मानराय रघुनाथ। मिश्रगणेश कबीरअरु,लीलाधर कविनाथ॥ ९॥
दामोदर दिलदार कवि,दौलत नागर दास। नंदन हितहरिवंस कवि, सेन नारायणदास॥ १०॥
नीलकंठ नंदलाल कवि,नंददास रसखान। नाभा नरवाहन नरसि, नारायणभट तान॥११॥
निपटनिरंजन इंद्रजित पृथ्वीराज को जान। लक्ष्मीनारायण हरी,बलभद्र को मान॥१२॥

३। ४–अगरदास और अगर कवि।
९१–धीर नरिन्द्रभी इनका नामहै।

विठ्ठलनाथ[96] विशुनाथ[97] कवि, पद्मनाभ[98] परवीन[99]। भगवनदास[100] मनोहरा[101],परमानन्द[102] नवीन[103]॥१३॥
माणिकचंद[104] निहालकवि[105],मुकुंद[106] मुवारक[107] वीर[108]।देव[109] दिनेश[110] नंददान[111] कवि,तेही[112] तोपी[113] न धीर[114]१४
श्रीपति[115] यद्यपि भक्तिमें, न्यून न कछुकलखात।तद्यपिकवितामें कहों,समताकछु न दिखात१५
विद्यापति[116] आदिक कविन, जितने भये सुजान।काव्य भावमें सूरसम, तुलसी[117] ❀ एकप्रमान॥

चौरासीवार्त्ता—बालकृष्णजीसे।

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक सूरदासजी गऊघाट ऊपर रहते तिनकी वार्त्ता।

सो एकसमय श्री आचार्यजी महाप्रभु अंडेलते ब्रजको पाउँ धारे सो कितनेक दिनमें गऊघाट आये सो गऊघाट आगरे और मथुराके बीचा बीच है तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू पांवधारे सो गऊघाट ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभू उतरे तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू स्नान करिके संध्यावंदन करिके पाककरन को बैठे और श्री आचार्य जी महाप्रभूनके सेवकन को समाज बहुत हुतो और सेवकहू अपने अपने श्री ठाकुर जी की रसोई करन लगे सो गऊघाट ऊपर सूरदास जीको स्थल हुतो सो सूरदास जी स्वामीहैं। आप सेवक करते सूरदास जी भगवदीय हैं गान बहुत आछो करते ताते बहुत लोग सूरदासजीके सेवक भयेहुते सो श्री आचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर उतरे सो सूरदास जीके सेवक देखके सूरदास जीसों जाय कही जो आज श्री आचार्य जी महाप्रभू आप पधारे हैं जिनने दक्षिणमें दिग्विजय कियो है सब पंडितनको जीते हैं भक्तिमार्ग स्थापन कियो है सो श्री वल्लभाचार्य यहाँ पधारे हैं तब सूरदास जीने अपने सेवकन सों कह्यो जो तू जायके दूर बैठि जब आप भोजन करिके विराजें तब खबर करियो हम श्री आचार्य जी महाप्रभूनके दर्शनको जांयगे सो वह तनक दूर जाय बैठ्यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू आप पाक करत हुते सो पाक सिद्धि भयो तब श्री ठाकुर जीको भोग समर्प्यो पाछे समयानुसार भोग सराय अनोसर करके महाप्रसाद लेके श्री आचार्य जी महाप्रभू गादी ऊपर विराजे तहां सब सेवकहू पहुँचिके श्री अचार्यजी महाप्रभून के आसपास आय बैठे तब वह सूरदासको सेवक आयो सो सूरदास सों कही जो श्री आचार्यजी महाप्रभू विराजे हैं तब सूरदास जी अपने स्थल ते आय के श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आये तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यो जो सूर आवो बैठो तब सूरदास जी श्री आचार्य जी महाप्रभून को दर्शन करि के आगे आय बैठे तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो सूर कछु भगवत् यश वर्णन करो तब सूरदासने कही जो आज्ञा तब सूरदास जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे एक पद गायो सो पद।

राग धनाश्री—हों हरि सब पतितन को नायक॥ को करि सके बराबर मेरी इते मानको लायक॥१
जोतुमअजोमलसोंकीनी जोपाती लिखपाऊं।होयविश्वास भलोजिय अपने औरहु पतित बुलाऊं२
सिमिट जहां तहां ते सब कोऊआय जुरे एकठौर।अबके इतने आन मिलाऊं बेर दूसरी और॥३
होडा होडी मन हुलास करि करे पाप भरिपेट॥ सबहिनले पाँयन तर परिहों यही हमारी भेट।

'९९—प्रवीनराय पातुरी।

१००—भगवानदास

❀अंक वाले कवियोंका आगे वर्णन किया जायगा।

ऐसी कितनीक बनाऊंप्राणपतिसुमिरनहैभयोआडो।अबकीबेरनिवारलेउप्रभु सूरपतित काटाडो।

फिर दूसरो और पद गायो सोपद।

रागधनाश्री–प्रभुमैं सब पतितनको टीको। और पतित सब द्यौस चारके मैंतो जन्मतहीको॥ १॥

वधिक अजामिल गणिका तारी और पूतनाहीको। मोहिंछांडितुम और उधारे मिटैशूल कैसेजीको

कोऊ न समरथ सेव करनको खैंचकहतहौंलीको।मरियतलाज सूरपतितनमेंकहत सबनमेंनीको

ऐसो पद श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे सूरदासजीने गायो सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो सूरह्वैके ऐसो काहेको घिघियातहै कछु भगवत् लीला वर्णन करि तब सूरदासने कह्यो जो महाराज हों तो समझत नाहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो कि जा स्नान करिआउ हम तोकों समझावेंगे तब सूरदासजी स्नान करिआये तब श्रीमहाप्रभूजीने प्रथम सूरदासको नाम सुनायो पाछे समर्पण करवायो और दशमस्कन्धकी अनुक्रमणिका कही सो ताते सब दोष दूर भये ताते सूरदासजीको नवधाभक्ति सिद्धभई तब सूरदासजीने भगवत् लीला वर्णन करी अनुक्रमणिकाते सम्पूर्ण लीला फुरी सो क्यों जानिये सो दशमस्कन्धकी सुबोधनीजी में मंगलाचरणको प्रथम कारका कियेहैं सो यह श्लोक सूरदासजीने कह्यो सो–श्लोक।

नमामि हृदये शेषं लीलाक्षिराब्धि शायिनं। लक्ष्मी सहस्र लीलाभिः सेव्यमानं कलानिधि॥१॥

और ताही समय श्रीमहाप्रभूनके सन्निधि पद किये सो पद।

रागविलावल–चकईरी चलि चरण सरोवरि जहाँ न प्रेम वियोग। यह पद सम्पूर्ण करिके सूरदासजीने गायो सो यह पद दशमस्कन्धके मंगलाचरणकी कारकाके अनुसार कियो सो यामें कह्योहै जो तहाँ श्री सहस्र सहित नित क्रीडत शोभित सूरदासने या भांति पद किये ताते जानी जो सूरदासको सम्पूर्ण सुबोधनी स्फुरी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने जान्यो जो लीलाको अभ्यास भयो पाछे सूरदासजीने नन्दमहोत्सव कियो सो श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगे गायो सो पद।

राग देवगंधार–ब्रज भयो महर के पूत जब यह बात सुनी।

सो यह श्रीआचार्य जी महाप्रभूनके आगे गायो सो सुनके श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और अपने श्रीमुख ते कहे जो सूरदास मानो निकटही हुते पाछे सूरदासजीने अपनें सेवक किये हुते तिन सबन को नाम दिवायो पाछे सूरदासजीने बहुत पद किये पाछे श्री आचार्य जी महाप्रभून ने सूरदासजी को पुरुषोत्तम सहस्रनाम सुनायो तब सूरदासजीको संपूर्ण भागवत स्फुर्तना भई पाछे जो पद किये सो भागवत प्रथमस्कंधते द्वादशस्कंध पर्यंत (ताई) किये ताते वे सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे परमभगवदीय हैं पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन तीन विराजे पाछे फिर ब्रजको पाँवधारे तब सूरदासजीहू श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ ब्रजको आये।

वार्ता प्रसंग॥ १॥

अब जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु ब्रजको पाँव धारे सो प्रथम श्रीगोकुल पधारे तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके साथ सूरदासजीहू आये तब श्रीमहाप्रभुजी अपने श्रीमुखसों कह्यो जो सूरदासजी श्रीगोकुलको दर्शन करो सो सूरदासने श्रीगोकुलको दंडवत करी सोदंडवत करतमात्र श्रीगोकुलकी बाललील सूरदासजीके हृदयमें फुरी और सूरदासजीके हृदयमें प्रथम श्रीमहाप्रभूनने सकल लीला श्रीभागवतकी स्थापी है ताते दर्शन करत मात्र सूरदासजीको

श्रीगोकुलकी बाललीला स्फुर्तना भई तब सूरदासजीने मनमें विचाऱ्यो जो श्रीगोकुलकी बाललीलाको वर्णन करिके श्रीआचार्यजीके महाप्रभूनके आगे सुनाइये जन्मलीलाको पद तौ प्रथम सुनायो है अब श्रीगोकुलकी बाललीलाको पद गायो सो पद ॥ १ ॥

रागबिलावल–सोभित कर नवनीत लिये । घुटुरुवन चलत रेणुतनुमंडित मुखमें लेप किये ॥१॥ चारुकपोललोललोचनछवि गोरोचनकोतिलकदिये ।लरलटकनमानोमत्तमधुपगनमाधुरीमधुरपिये। कठुलाकंठवज्रकेहरिनखराजतहैंसखिरुचिरहिये। धन्यसूरएकौपलयहसुखकहाभयोसतकल्पजिये ३

यह पद सूरदासने गायो सो सुनिके आप बहुत प्रसन्न भये पाछे औरहू पद गाये तब श्रीमहाप्रभुजी अपने मनमें बिचारे जो श्रीनाथजीके इहां और तौ सब सेवाको मंडान भयो है पर कीर्तनको मंडान नाहीं कियो है ताते अब सूरदासजीको दीजिये तब आप श्रीजीद्वार पधारे सो सूरदासजीको साथ लिये ही सो श्रीनाथजी द्वार जाय पहुँचे तब आप स्नान करिके मंदिरमें पधारे तब सूरदासजीसों कह्यो जो सूरदासजी ऊपर आउ स्नान करिके श्रीनाथजीको दर्शन कर तब सूरदास पर्वत ऊपर जायके श्रीनाथजीको दर्शन कियो तब आपने कह्यो जो सूरदास कछू श्रीनाथजीको सुनावौ तब सूरदासने प्रथम विज्ञप्तिकोपद गायो सो पद–

राग धनाश्री–अब हौं नाच्यो बहुत गुपाल ॥

यह पद संपूर्ण करिके श्रीनाथजीके आगे गायो तब श्रीमहाप्रभुजीने कह्यो जो सूरदास अब तौ तुममें कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या प्रभूनने दूरकीनी ताते कछू भगवत् यश वर्णन करो तब सूरदासने माहात्म्य और लीला ऐसो यश करिके गाय सुनायो सो पद–

राग गौरी–कौन सुकृत इन ब्रजवासिनको ।

यह पद संपूर्ण करिके गायो सो सुनिके श्रीमहाप्रभुजी बहुत प्रसन्न भये सो जैसो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने मार्ग प्रकाश कियो हो ताके अनुसार सूरदासजीने पद किये श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके मार्गको कहा स्वरूपहै माहात्म्य ज्ञानपूर्वक सुदृढ स्नेहकी तौ परम काष्ठाहै और स्नेह आगे भगवानको रहत नाहीं ताते भगवान बेर बेर माहात्म्य जनावतहैं नाम प्रकरणमें पूतना करि शकट तृणावर्त करि गर्गाचार्य करि यमलार्जुन करि वैकुंठ दर्शन करि ऐसे करिके भगवानने बहुत माहात्म्य जतायो परि इन ब्रज भक्तनको स्नेह परमकाष्ठापन्नहै ताते ताही समय तौ माहात्म्य रहे पाछे विस्मृत होय जाय ।

वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥

और सूरदासजीने सहस्रावधि पद कियेहैं ताको सागर कहिये सो सब जगत्में प्रसिद्ध भये सो सूरदासजीके पद देशाधिपतिने सुने सो सुनिके यह विचाऱ्यो जो सूरदासजी काहू रीत (विधि) सों मिलैं तौ भलो सो भगवत् इच्छाते सूरदासजी मिले सो सूरदासजीसों कह्यो देशाधिपतिने जोसूरदासजी मैं सुन्योहै जो तुमने विष्णुपद बहुत कियेहैं जो मोको परमेश्वरने राज्य दियो है सो सब गुणीजन मेरो यश गावतहैं ताते तुमहूं कछु गावो तब सूरदासजीने देशाधिपतिके आगे कीर्तन गायो सोपद ।

राग बिलावल–मनारे तू करि माधव सों प्रीति ॥ यह पद देशाधिपतिके आगे संपूर्ण करिके सूरदास जीने गायो सो यह पद कैसो है जो या पदको अहर्निश ध्यान रहे तो भगवत् अनुग्रहकी सदा सांति रहे और संसारते सदा वैराग्य रहे और कुसंगको सदा भय रहे और भगवदीयके

संगकी सदा चाह रहै और श्रीठाकुरजीके चरणारविंद ऊपर सदा स्नेह रहै देशाधिक ऊपर आसक्ति न होय ऐसो पद देशाधिपतिको सुनायो सो सुनिके देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो सूरदासजी मोको परमेश्वरने राज्यदीनो है सो जब गुणीजन मेरो यश गावत है ताते मेरो यश कछु गावो तब सूरदासजीने यह पदगायो सो पद।

राग केदारा–नाहिं न रह्यो मनमें ठौर ॥ यह पद संपूर्ण करिके गायो सो सुनिके देशाधिपति अकबर पादशाह अपने मनमें विचारचो जो ये मेरो यश काहे को गावेंगे जो इनको मेरो कछु बातको लालच होय तौ गावें ये तो परमेश्वरके जनहैं और सूरदास जीने या पदके अंतमें गायो हो जो"सूर ऐसे दर्शको ए मरत लोचन प्यास"यह गायो हो सो देशाधिपतिने पूछो जो सूरदासजी तुम्हारे लोचन तौ देखियत नाहीं सो प्यासे कैसे मरतहैं और बिन देखे तुम उपमाको देतहो सो तुम कैसे देतहो तब सूरदासजी कछु बोले नहीं तब फिर देशाधिपति बोल्यो जो इनके लोचनहैं सो तो परमेश्वरके पासहैं सो वहाँ देखतहैं सो वर्णन करते हैं तब देशाधिपतिने सूरदासजीके समाधान की मनमें विचारी जो इनको कछु दियो चाहिये पर यह तो भगवदीयहैं इनको काहू बातकी इच्छा नाहीं पाछे सूरदासजी देशाधिपतिसों विदा होयके श्रीनाथजी द्वार आये।

वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥

एक समय सूरदासजी मार्गमें चले जातहैं सो कोऊ चौपड़ खेलते हुते सो वा चौपड़ खेलमें ऐसे लीन हो जो कोऊ आवते जातेकी सुधि नाहीं ऐसे खेलमें मग्नहै सो देखके सूरदासजीके संग भगवदीयहैं तिनसों सूरदासजीने कह्यो जो देखौ वह प्राणी कैसो अपनो जमारो खोवतहै भगवानने तौ मनुष्य देह दीनी है सो तो अपनी सेवा भजनके लिये दीनीहै सो तौ या देह सों हाड़ कूटतहै यामें यह लौकिक सिद्ध नाहीं सो काहेते जो या लोकमें तौ अपयश और परलोकमें भगवानते वहिर्मुखता ताते श्री ठाकुरजीने इनको मनुष्य देह दीनीहै तिनको चौपड़ ऐसी खेलनी चाहिये सो ता समय एक पद सूरदासजीने अपने संगिनसों कह्यो सो पद।

राग केदारो–मन तू समझ सोच विचार। भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार॥१॥ साधु संगति डार पासा फेर रसना सार। दांव अबके परचो पूरो उतरि पहिली पार ॥ २ ॥ बाक सत्रे सुनि अठारे पंचहीको मार। दूरते तजि तीन काने चमकि चौंकि विचार ॥ ३ ॥ काम क्रोध जंजाल भूल्यो ठग्यो ठगनी नार। सूर हरिके पद भजन बिन चल्यो दोउ करझार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासजीने अपने संगके भगवदीयनसों कह्यो सो या पदमें सूरदासजीने कहा कह्यो मन तू समझ शोच विचार। ये तीनों वस्तु चौपड़में चाहिये सोई तीनों वस्तु भगवानके भजनमें चहिये काहेते जो समझ न होय तौ श्रवण कहा करेगौ ताते पहिले तौ समझ चाहिये और शोच कहिये चिन्ता सो भगवानके प्राप्तिकी चिन्ता न होय तौ संसार ऊपर वैराग्य कैसे आवै ताते शोच चाहिये और विचार जो या जीवको विचारहीनहीं तौ संग दुसंगमें कहा करैगो ताते विचार चहिये सो ये तीनों वस्तु होंय तौ भगवदीय होय ताते ये तीनों वस्तु भगवदीयको अवश्य चाहिये और चौपड़मेंहू तीनों वस्तु चाहिये समझ कहैं गनबो न आवै तौ गोट कैसे चलै और शोच अगम जो मेरे यह गोट दाँव पड़े तौ यह चलूं विचार जो वाहीमें तन मन जो ये तीनों वस्तु होंय तौ चौपड़ खेली जाय सो वे सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे परम भगवदीयहैं।

वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥

बहुरि श्रीसूरदासजी श्रीनाथजी द्वार आयके बहुत दिन ताई श्रीनाथजीकी सेवा कीनी बीच बीचमें श्रीगोकुल श्रीनवनीत प्रियाजीके दर्शनको आवते सो एक समय सूरदासजी श्रीगोकुल आये श्रीनवनीत प्रियाजीके दर्शन किये और बाललीलाके पद बहुत सुनाये सो श्रीगुसाईजी सुनिके बहुत प्रसन्न भये पाछे श्रीगोसाईजीने एक पालना संस्कृतमें कियो सो पालना सूरदासजीको सिखायो सो पालना सूरदासजीने श्रीनवनीत प्रियाजी झूलत हुते ता समय गायो सो पद।

रागरामकली।

प्रेषपर्यंकशयनं।

यह पद सूरदासजीने सम्पूर्ण करिके गायो सुनायो श्रीनवनीत प्रियाजीको पाछे या पदके भाव के अनुसार बहुत पद किये सो सुनिके श्रीगोसाईजी बहुत प्रसन्न भये पालनाके भाव अनुसार पद गायो सो पद।

राग विलावल–बाल विनोद आँगनमेंकी डोलनि ॥ मणिमय भूमि शुभग नंदालय बलि बलि गई तोतरी बोलनि ॥ १ ॥ कठुलाकंठ रुचिर केहरिनख ब्रजमाला बहु लई अमोलनि। वदन सरोज तिलक गोरोचन लर लटकन मनु मधु गनि लोलनि ॥२॥ लीन्यो कर परसत आनन पर कछू खाय कछू लग्यो कपोलनि। कहे जन सूर कहालों वर्णों धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥३॥

और पद राग विलावल–गोपाल दुरेहैं माखन खात। देख सखी शोभा जो बढ़ी अति श्याम मनोहर गात ॥ १ ॥ उठि अवलोकि ओट ठाढी ह्वै जिहि विधि नहिं लखिलेत। चकृत नैन चहूँ-दिश चितवत और सवनको देत ॥ २ ॥ सुंदर कर आनन समीप हरि राजत यहै अकार। जनु जलरुह तजि वैर विधीसों लाय मिलत उपहार ॥ ३ ॥ गिरिगिरि परत वदनते ऊपर ह्वै दधि सुतके विंदु। मानहुँ सुधाकन खोरवत प्रियजन विंदु ॥४॥ बाल विनोद विलोकि सूर प्रभु वित भई ब्रजकी नारि। फुरतन वचन वरजिवेको मन गहि विचार विचारि ॥ ५ ॥

रागजैतश्री–कहाँ लगि वरणों सुन्दरताई। खेलत कुँवर कतिक आँगनमें नैन निरखि सुखपाई॥१॥ कुलहे लसत श्यामसुंदरके बहुविधि रंग बनाई ॥ मानउ नव घन ऊपर राजत मघवा धनुष चढ़ाई श्वेत पीत अरु असि तलालमणि लटकनभाल रुराई॥मानहुँ असुरदेवगुरुसों मिलि भूमिजसो समुदाई अतिसुदेशमृदु चिहुर हरत मनमोहनमुखविगराई॥मानहुँमंजुल कंजनऊपर अलि आवलिं फिरिआई दूधदंतछवि कहीनजातकछु अलिपललपझलकाई॥किलकतहँसतदुरितप्रगटतमानोंविदुमेंविपुलताई खंडितवचनदेतपूरणसुख अद्भुतयहउपमाई। घुटुरुनचलत उठतप्रमुदितमन सूरदासबलिजाई ॥ ६॥

रागरामकली–देखो सखी एक अद्भुतरूप। एक अंबुज मध्य देखियत बीस दधिसुत जूप ॥ १ ॥ एकअवलि दोय जलचर उभे अर्क अनूप ॥ पंजचार चढ़िगाहि देखियत कहो कहाँ स्वरूप ॥ २ ॥ शिशुगणमें भईशोभा करो कोउ विचार ॥ सूर श्री गोपालकी छवि राखो यह निरधार ॥ ३ ॥

ऐसे पद सूरदासजीने गाये पाछे फेर श्रीनाथजी द्वार आये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ५ ॥

अब सूरदासजीने श्री नाथजीकी सेवा बहुत कीनी बहुत दिनताई ता उपरांत भगवत इच्छा जानी जो अब प्रभुनकी इच्छा बुलायवेकी है यह विचारके जो नित्यलीला फलात्मक रासलीला जो जहाँ करे हैं ऐसो जो परासोली तहाँ सूरदासजी आये श्रीनाथजीकी ध्वजाको दण्डवत करिके

ध्वजाके साम्हे सन्मुख करिके सूरदासजी सोये परि अंतःकरणमें यह जो श्री आचार्यजी महाप्रभु दर्शन देंयगे अब यह देह तौ थकी ताते अब या देहसों श्रीनाथजीको दर्शन होय तौ जानिये परमभाग्यहै श्री गुसाईंजी को नाम कृपासिंधुहै भक्तनके मनोरथ पूर्णकर्त्ता हैं ऐसे विचारके सूरदासजी श्री गुसाईंजीको चिंतवन करतहैं और श्री गुसाईंजी कैसे कृपासिंधुहैं जैसे सूरदासजी वहाँ स्मरण करतहैं तैसे श्रीगुसाईंजी इनको छिनहूं नाहिं भूलतहैं श्रीनाथजीको शृंगार हो तौ ता समय सूरदासजी मणिकोठामें ठाढे ठाढे कीर्तन करते सो तादिन श्रीगुसाईंजी श्रीनाथ-जीको शृंगार करत हुते और सूरदासजीको कीर्तन करत न देख्यो तब श्रीगुसाईंजीने पूछो जो सूरदासजी नाहीं देखियत सो काहेते तब काहू वैष्णवने कह्यो जो महाराज सूरदा-सजी तौ आज परासोलीकी ओरी जात देखें हैं तब श्रीगुसांईजीने जान्यो जो भगवत् इच्छाते अवसान समय है ताते सूरदासजी परासोली गयेहैं तब श्रीगुसांईजीने अपने सेवकन सों कह्यो जो पुष्टिमार्गको जहाज जात है जाको कछू लेनो होय सो लेउ और जो भगवत् इच्छाते राजभोग आरती पाछे रहत है तौ मैंहूं आवत हों पाछे श्रीगुसांईजी बेरबेर सूरदासजी की खबरि मँगायो करें जो आवै सोई कहै जो महाराज सूरदासजी तौ अचेत हैं कछू बोलत नाहीं ऐसे करत श्रीनाथजीके राजभोगको समय भयो सो राजभोग आरती करिके श्रीगुसांईजी गिरि-राजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे भीतरके सेवक रासदासजी प्रभृत और कुंभनदासजी और श्रीगुसांईजीके सेवक गोविंद स्वामी चतुर्भुजदास प्रभृति और सब श्रीगुसांईजीके साथ आये सो आवतही सूरदासजीसों श्रीगुसांईजीने पूछो जो सूरदासजी कैसे हो तब सूरदासजीने श्रीगुसांई जीको दंडवत करिके कह्यो जो महाराज आये हो महाराजकी बाट देखत हुतो यह कहिके सूरदासजीने एक पद कह्यो सो पद ॥

राग सारंग–देखो देखो हरि जूको एक सुभाय॥अति गंभीर उदार उदधिप्रभु जानिशिरोमणिराय१
राई जितनी सेवाको फल मानत मेरु समान।समझि दास अपराध सिंधुसमबूंदनएको जान॥२॥
वदनप्रसन्नकमलपदसन्मुख दीखतहींहैऐसे ॥ऐसेविमुखहुभयेकृपायामुखकीजबदेखौतबतैसे॥३॥
भक्तविरहकरतकरुणामयडोलतपाछेलागे॥ सूरदास ऐसे प्रभुको कत दीजै पीठ अभागे ॥४॥

यह पद सूरदासजीने कह्यो सो सुनिके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और कह्यो जो ऐसे दैन्य प्रभु अपने सेवकनको दोहिं या दैन्यके पात्र एहीहैं तब वा बेर श्रीगुसांईजीके पास ठाड़ेहुते और चतुर्भुजदासहू ठाढ़े हुते तब चतुर्भुजदासने कह्यो जोसूरदासजीने बहुत भगवत् यश वर्णन कियो परि श्रीआचार्यजी महाप्रभूनको वर्णन नाहीं कियो तब यह वचन सुनिके सूरदासजी बोले जो मैं तौ सब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कोही यश वर्णन कियोहै कछू न्यारो देखूं तौ न्यारो करूं परि तेरे साथ कहतहों या भांति कहिके सूरदासजीनें एक पद कह्यो सो पद ॥

राग विहागरो–भरोसो दृढ इन चरणन केरो॥श्रीवल्लभनख चंद छटा बिनु सब जग मांझ अँधेरो १
साधन और नहीं या कलिमें जासों होत निबेरो॥सूरकहा कहे दुबिधि आंधरो बिनामोलकोचेरो २॥

यह पद कह्यो पाछे सूरदासजीको मूर्छा आई तब श्रीगुसांईजी कहें जो सूरदासजी चित्त की वृत्ति कहां है तब सूरदासजीने एक पद और कह्यो सो पद ॥

राग बिहागरो–बलि बलि बलि हों कुमरि राधिका नंदसुवन जासों रति मानी ॥ वे अति चतुर तुम चतुर शिरोमणि प्रीति करी कैसे होत है छानी ॥ १ ॥ वे जु धरत तन कनक पीतपट सो तो सब

तेरी गति ठानी ॥ ते पुनि श्याम सहजवे सोभा अंवर मिस अपने उर आनी ॥ २ ॥ पुलकित अंग अवहिं ह्वै आयो निरखि देखि निज देह सियानी॥सूर सुजान के बूझे प्रेम प्रकाश भयो विहसानी३

यह पद कह्यो इतनो कहिके श्रीसूरदासजीके चित्त श्रीठाकुरजीको श्रीमुख तामें करुणा रसके भरे नेत्र देखे तब श्री गुसांइजी पूछो जो सूरदासजी नेत्रकी वृत्ति कहां है तब सूरदास जीने एक पद और कह्यो सो पद ॥

राग विहागरो—खंजन नैन रूप रसमाते ॥ अतिशय चारुचपलअनियारे पल पिंजरा न समाते१॥
चलचलजातनिकटश्रवणनकेउलटपलटताटंकफंदाते॥सूरदासअंजनगुणअटकेनातरअवउड़िजाते

इतनो कहतही सूरदासजीने या शरीरको त्याग कियो सो भगवत् लीलामें प्राप्ति भये पाछे श्रीगुसांईजी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आये ताते सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीयहैं ताते (सो) इनकी वार्ताको पार नहीं ताते इनकी वार्ता कहांताईलिखिये।

सीधीहिन्दी—पहिला भागमें गया गवर्नमेन्ट स्कूलके पंडित बलदेव मिश्रने लिखाहै कि सूरदास का घर कृष्णावेना गांवमें देवशर्म्मा ब्राह्मण का बेटा बिलमङ्गल पांड़े इनका नामथा । पहले इनकी चालचलन अच्छी नहींथी। पीछे ये सुधरे और सवालाख भजनका सूरसागर बनाकर बड़े नामी हुए। लोग कहते हैं कि इन्होंने अपनी आंख आपही फोड़ीथी।

'सुगम पंथमें पंडित गणपत लाल चौबे फर्स्ट असिस्टेंट मास्टर स्कूल रायपुरने लिखाहै कि—सूरदास किंबा सूरदास—मदनमनोहर शूरध्वज ब्राह्मण दिल्लीनगरके समीप किसीग्रामके रहनेवाले थे। किसीसमय दिल्लीआये वहाँ एक दिन किसी स्त्रीको कोठेपर खड़ीदेख उसपर मोहित हुए, और कोठेकी ओर इकटक चितै रहे। लोग इनकी दशादेख धिक्कारनेलगे परंतु वह स्त्री घरसे बाहर निकल बोली "विप्रजी क्या आज्ञा होती है" विप्र बोले "क्या सचमुच मेरी आज्ञा पालेगी" वह बोली "निस्सन्देह" मुझे ईश्वर साक्षीहै तबतो वह विप्रके कहनेके अनुसार दो सुइयां ले आई और जब विप्रने कहा कि मेरी छातीपर बैठ इन दोनों सुइयोंको मेरे नेत्रोंमें घुसेड़दे उसने वैसाही किया और तबहींसे सूरदास कहलानेलगे। लोगोंने इनकी बड़ी प्रशंसाकर इनके कहनेके अनुसार मथुरा वृन्दावनमें पहुँचा दिया यहाँपर इन्होंने सवालाख विष्णुपदका एक बहुत बड़ा सूरसागर नामग्रंथ बनाया निदान कुछ कालतक ये अकबर बादशाहकी सभामें रहे और फिर परलोकको सिधारे।

प्राचीन मनुष्योंकी कहावतहै कि,ये उद्धवका अवतारथे वे सब कवियोंमें श्रेष्ठ गिनेजाते हैं यथा दो०—सूर सूर्य्य तुलसी शशी,उड़गण केशवदास।अबके कवि खद्योत सम,जहँ तहँ करहिं प्रकाश।

रामरसिकावलीकी टिप्पणीमें लिखाहै कि 'अंक वाले कवियोंका आगे वर्णन किया जायगा।' परंतु मतिराम कविका वर्णन काव्यरत्नाकरमें लिखा गयाहै अतएव यहाँ उनका कुछ काव्य लिखा जाता है।

(१) मतिराम त्रिपाठी टिकमापुरवाले।

कवित्त—पूरण पुरुषके परम दृग दोऊ जानि कहत पुराण वेद बानियो रतिगई।
कवि मतिराम दिनपति यों निशापतियों दुहुँनकी कीरति दिशान माँझ मढिगई॥
रविके करन भये एक महादानी यह जानि जिय आनि चिंता चित्त मांझ चढ़िगई।
ताहि राज बैठत कुमाऊं श्रीउदोत चंद्र चंद्रमाकी करक करेजेहूंते कढ़िगई ॥ १ ॥

ललितललाम ।

परम प्रवीन धीर धरम धुरीन दीनबंधु सदा जाकी परमेश्वरमें मतिहै ।
दुर्जन बिहाल करि याचक निहाल करि जगतमें कीरति जगाई ज्योति अतिहै ॥
राउ शत्रुशालके सपूत पूत भाउसिंह मतिराम कहै जाहि साहिबी फबतिहै ।
जानपति दानपति हाड़ा हिन्दुवानपति दिल्लीपति दलपति बालाबंद पतिहै ॥ २ ॥
कैसे आसमानसे विमानसे घटासे गज रावरे चलत मानो मेरुसे लहति है ॥
अतल वितल तल हलत चलत दल गज मद राजै दिगदंती चिक्करतिहै ॥
कहै मतिराम शम्भु द्विरद दराज ऐसे जिन्हैं पाइ कविराज आनँद भरतिहै ।
कुंभ छाये षटपद मदनि करद नद कदनि बिलंद गढ़ गरद करतिहैं ॥ ३ ॥

छप्पय ॥

जबलगि कच्छप कोल सहस मुख धरणिभार धर । जबलगि आठौ दिशनि दावि सोहत दिग्गजबर
जबलगि कवि मतिराम सगिरि सागर महिमंडल । जबलगि सुवरण मेरु सबनघन मगन अगनचल
नृप शत्रुशालनंदन,नवल भावसिंह भूपाल मनि।जग चिरंजीव तबलगि सुखितकहत सकल संसार धनि
दो०—भौंह कमान कटाक्ष शर, समरभूमि बिचनैन । लाज तजेहूं दुहुँनके, सलज सुहृदसे बैन ॥१॥
रूपजाल नँदलालके, परिकरि बहुरि छुटैन । खंजरीट मृगमीनसे, ब्रजवनितनके नैन ॥ २ ॥
बानीको बसन कैधौं बातको बिलास डोलै कैधों मुखचंद्र चारु चांदनी प्रकास है ।
कवि मतिराम कैधों कामको सुयश कै पराग पुंज प्रफुलित सुमन सुवास है ॥
नासा नथुनीके गजमोतिनके आभा कैधों रतिवंत प्रगटित हियेको हुलास है ।
सीत करिबेको पिय नैन घनसार कैधों बालाके बदन बिलसत मृदु हास है ॥ ४ ॥

छंदसार पिंगल ।

दाता एक जैसो शिवराज भयो जैसो अब फतेसाहिसी नगर साहिबी समाजुहै।
जैसो चित्तोर धनी राना नरनाह भयो जैसोई कुमाऊं पति पूरो रज लाजु है ॥
जैसे जयसिंह यशवंत महाराज भयो जिनको महीमें अजों बाढ़्यो बलसाजुहै ।
मित्रसाहि नंद सी बुंदेल कुलचंद जग ऐसो अब उदित स्वरूप महाराजु है५ ॥
लछमनही संगलिये जोबन बिहार किये सीता हिये बसे कहो तासों अभिरामको ।
नव दल सोभा जाकी बिकसे सुमित्रे लखि कोशले बसत कोऊ धाम ठामको ॥
कवि मतिराम सोभा देखिये अधिक नित सरस निधान कवि कोविदके कामको।
कीन्होंहै कवित्त एक तामरसहीको यासों रामको कहतकै कहत कोऊ वामको।

रसराज ।

चंदन चढ़ारी नभ चंदन चढ़ारी अंग चंद उजियारी देखि नकराति कैसी है ॥
फंद फंदफबदी गंसीली गांठि गूंदि गूंदि मूंदि मूंदि मुख मंद मंतरात कैसी है ॥
मतिराम मिलन बिहारी तूं प्यारी चलु नितरति बारी आजु जकराति कैसीहै ।
कतरात कैसी बात बतरात कैसी जात सतरात कैसी रात रत रात कैसी है ॥ ७ ॥
चोरकीचोर छिनारछिनारकीसाहुकीसाहुबलीकीबली।ठगकीठगकामुकका मुककीअरुछैलकीछैलछलीकीछली
प्रवीणनकीपरवीणहीजानैमतिरामनजानैकहाधौंचलीउनफोरिदईनथकीमुक्ताउनफेरिकैफूंकी गुलाबकली।
गोपबधूतनतोलतडोलतबोलतबोलजुकोनलभाषैं।ऊरूनितंबनिकीगुरुतापगजातगयंदनिकीगतिनाषै
आगमभोतरुणापनकोमतिरामभनैभईचंचलआंषैं।खंजनकेयुगसावकज्योंउड़िआवतनाफरकावतपाँषै

येरे मतिमन्द चन्द ढिगहै अनन्द तेरो जोपै विरहीन जारिजात तेरे तापते।
तूतो दोपाकार दूजे धरेहैं कलंकउर तीसरे सखानि संग देखो शिर छापते॥
कहै मतिराम हाल जाहिर जहान तेरो वारुणीके वासी भासी राहुके प्रतापते।
बाँधोगयो मथोगयो पियोगयो खारोभयो वापुरो समुद्र ऐसे पूतहींके पापते॥ १॥

(२) शिवसिंहसरोजमें लिखाहै भूपण त्रिपाठी टिकमापुर ज़िले कानपुर सं० १७३८ में हुए। रौद्र वीर भयानक ए तीनों रस जैसे इनकी काव्यमेंहैं ऐसे और कवि लोगोंकी कवितामें नहीं पाए जाते ए महाराज प्रथम राजा छत्रशाल परना नरेशके यहाँ छः महीनेतक रहे तेहि पीछे महाराज शिवराज सुलंकी सतारागढ़ वालेके इहां जाय बड़ा मानपाया औ जव यह कवित्त भूपण जीने पढ़ा (इंद्र जिमि जंभ पर) तव शिवराजने पांच हाथी औ २५ हजार रुपिया इनाम दिया इसी प्रकारसे भूपणने बहुत वार बहुत २ रुपया हाथी घोड़ा पालकी इत्यादि दानमें पाये ऐसे शिवराजके कवित्त बनाए हैं जिनकी वरावर किसी कविने वीरयश नहीं बनाय पाया निदान जव भूपण अपने घरको चले तो परना होकर राजा छत्रशालसे मिले छत्रशालने विचारा अब तो शिवराजने इनको ऐसा कुछ धनधान्य दिया है कि हम उस्का दशवां हिस्सा भी नहीं दे सकते ऐसा शोच विचार करि चलते समय भूपणकी पालकीका वांस अपने कंधे पर धरि लिया ब्राह्मण कोमल हृदय तो होतेही हैं भूपणजी बहुत प्रसन्न ह्वै यह कवित्त पढ़ा। साहूको सराहों की सराहों छत्रशाल को। औ दूसरा यह कवित्त बनाया। तेरी वरछीने वरछीने हैं खलनके। औ दो दोहा बनाय छत्रशालको दे घरमें आए–

दोहा–एक हाड़ा बूंदी धनी, मरद महेवावाल। शालत नौरंगजेवके, ए दोनों छत्रशाल॥ १॥
ए देखौ छत्तापत्ता, ए देखो छत्रशाल। ए दिल्लीकी ढाल ए, दिल्ली ढाहनवाल॥ २॥

भूपणजी थोड़े दिन घरमें रहि बहुत देशान्तरोंमें घूमि घूमि रजवाड़ोंमें शिवराजका यश प्रगट करते रहे जब कुमाऊंमें जाय राजा कुमाऊंके यशमें यह कवित्त पढ़ा (उलदत्त मद अनुमद ज्यों जलधिजल)।

तव राजाने शोचाकि ये कुछ दान लेने आएहैं औ हमने जो सुनाथाकि शिवराजने लाखों रुपया इनको दिया सो सव झूंठहै ऐसा विचार हाथी घोड़े मुद्रा बहुत कुछ भूपणके आगे किया भूपणजी वोले इसकी अब भूख नहीं हम इसलिये इहाँ आएथे कि देखें शिवराजका यश यहाँतक फैलाहै या नहीं–इनके बनाए हुए ग्रंथ शिवराजभूपण १ भूपणहजारा २ भूपणउल्लास ३ दूपणउल्लास ४ ए चारि ग्रंथ सुने जातेहैं कालिदासजूने अपने ग्रंथ हजाराकी आदिमें ७० कवित्त नवरसके इन्हीं महाराजके बनाएहुए लिखेहैं।

(३) विहारीलाल चौबे ब्रजवासी सम्वत् १६०२ हुए ये कवि जयसिंह कछवाहे महाराजे आमेरके इहाँथे जयपुरकी तवारीख देखनेसे प्रगटहै कि महाराजे मानसिंह से जो संवत् १६०२ में विद्यमान थे संवत् १८७६ तक तीनि जयसिंह होगये हैं पर हमको निश्चय है कि ये कवि माहराजे मानसिंह के पुत्र जयसिंहके पास थे जो महागुणग्राहकथे औ दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंहके प्रपौत्र संवत् १७५५ में थे यह बात प्रगट है कि जब महाराजे जयसिंह किसी एक थोरी अवस्था वाली रानी पर मोहित ह्वै रात दिन राजमंदिर में

रहने लगे राज्य के संपूर्ण काज काम बंद होगए तब विहारीलाल ने यह दोहा बनाय राजाके पास तक किसी उपाय से पहुँचाया ।

दो०—नहिं पराग नहिं मधुर रस,नहिं विकास यहिकाल।अली कलीहूं सो विंध्यो, आगे कौन हवाल १

इस दोहा पर राजा अत्यन्त प्रसन्न ह्वै १०० मोहर इनाम दै कहा इसी प्रकार के और दोहा बनावो विहारीलाल ने सातसौ दोहा बनाए औ ७०० अशरफ़ी इनाम में पाया यह सतसई ग्रंथ अद्वितीय है बहुत कवि लोगोंने इसके ढंग पर सतसई बनाकर अपनी कविता का रंग जमाना चाहा पर किसी कविकी सुर्खरुई प्राप्त नहीं हुई यह ग्रंथ ऐसा अद्भुत है कि हमने १८ तिलक तक इसके देखे हैं औ आज तक तृप्ति नहीं है लोग कहते हैं कि अक्षर कामधेनु होते हैं सो वास्तव में इसी ग्रंथके अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं।

सब तिलकों में सूरतिमिश्र आगरे वाले का तिलक विचित्र है औ सब सतसैयों में विक्रमसतसई औ चंदनसतसई इसके लगभग है।

विहारी कवि २ सं० १७३८ इनके महासुंदर कवित्त हजारामेंहैं। विहारी कवि ३ बुंदेलखंडी सं० १८०६ सरस कविता करीहै। विहारीदास कवि ४ ब्रजवासी सं० १६७० इनके पद रागसागरो द्भव राग कल्पद्रुम में हैं।

(४) नीलकंठमिश्र अंतर्वेदी वासी संवत् १६४८ दासजीने इनकी प्रशंसा ब्रजभाषा जाननेमें करीहै।

(५)नीलकण्ठत्रिपाठी टिकमापुर वाले मतिरामके भाई।संवत्१७३०इनका कोई ग्रंथ हमने नहींदेखा।

(६)वेनीकवि प्राचीन असनी जिले फतेपुरवाले । संवत् १६९० ए महान कवीश्वर हुएहैं इनका एक ग्रंथ नायकाभेदमें अति विचित्र देखनेमें आयाहै इनकी कविताई बहुतही सरस ललित मधुरहै।

वेनीकवि २ वन्दीजन वेंती जिले रायबरेलीके निवासी संवत् १८४४ ए कवि महाराजे टिकेत राइ दीवान नवाब लखनऊ के इहां थे औ बहुत वृद्ध ह्वै संवत् १८९२ के करीब मर गए ।

वेनी प्रवीन ३ बाजपेयी लखनऊ के निवासी संवत् १८७६ ए कवि महासुंदर कविता करने में विख्यात हैं इन का ग्रंथ नायका भेद में देखनेके योग्य है।

वेनी प्रगट ४ ब्राह्मण कविंद कवि नरवरी निवासीके पुत्र संवत् १८८० इनकी काव्य महासुंदर है।

(७)एक शंभु कवि का वर्णन काव्यरत्नाकर की टिप्पणी में है उसके सिवाय यहां लिखा है। शंभुनाथ मिश्र कवि सं० १८०३ए महाराज महान कवि भगवंत राइ खीची के यहां असोथर में रहा करते थे शिव कवि इत्यादि सैकरों मनुष्यों को इन्होंने कवि कर दिया कविता में महा निपुण थे रसकल्लोल १ रसतरंगिणी २ अलंकार दीपक ३ ए तीनि ग्रंथ इनके बनाये हुए हैं।

शंभुनाथकवि वंदीजन सं० १७९८ ये कवि सुखदेव के शिष्य थे रामविलास नाम रामायण बहुत ही अद्भुत ग्रंथ बनाया है रामचंद्रिका की ऐसी इस ग्रंथ में भी नाना छंदै हैं।

शंभुनाथकवि त्रिपाठी डौंडिया खेरेवाले सं० १८०९ए महाराज राजा अचलसिंह वैस डौंडिया खेरे के इहांथे राव रघुनाथसिंह के नाम वैतालपचीसी को संस्कृत से भाषा किया है औ मुहूर्त-चिंतामणि ज्योतिषग्रंथ को भाषा में नाना छंदों में बनाया है ए दोनों ग्रंथ सुंदर हैं।

शम्भुनाथमिश्र कवि बैसवारे वाले सं० १९०१ ए कवि राना यदुनाथसिंह बैस खजूरगांवके इहाँथे थोरी अवस्थामें अल्पायु होगया बैस वंशावली औ शिवपुराणका चतुर्थखंड भाषामें बनायाहै।

शम्भुप्रसाद कवि शृंगारमें सुन्दर कवित्तहैं।

(८) तोष कवि सं० १७०५ ये महाराज भाषाकाव्यके आचार्य्योंमें हैं ग्रन्थ इनका कोई हम को नहींमिला पर इनके कवित्तोंसे हमारा कुतुबखाना भराहुवाहै कालिदास तथा तुलसीजीनेभी इनकी कविता अपने ग्रन्थोंमें बहुत सारी लिखीहै।

(९) चिन्तामणि त्रिपाठी टिकमापुर जिले कानपुर वाले सं० १७२९ ए महाराज भाषा साहित्यके आचार्य्योंमें गिनेजातेहैं अन्तर्वेदमें विदितहै कि इनके पिता दुर्गापाठ करने नित्य देवीजीके स्थानमें जातेथे वे देवीजी वनकी भुइआं कहाती हैं टिकमापुरसे एक मैल के अंतर पर हैं एक दिन महाराज राजेश्वरी भगवती प्रसन्न ह्वै चारि मुंड दिखाय बोलीं यही चारों तेरे पुत्र होंगे निदान ऐसाही हुवा कि चिंतामणि १ भूषण २ मतिराम ३ जटाशंकर या नीलकण्ठ चारि पुत्र उत्पन्न हुए इनमें केवल नीलकण्ठ महाराज तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुए शेष तीनो भाई संस्कृत काव्यको पढ़ि ऐसे पंडित हुए कि उनका नाम प्रलय तक बाकी रहैगा इन्हीं के वंश में शीतल औ बिहारी लाल कवि जिनका लाल भोग है संवत् १९०१ तक विद्यमान थे निदान चिंतामणि महाराज बहुत दिन तक नागपुर में सूर्य्यवंशी भोसला मकरंदशाहिके इहांरहे औ उन्हीं के नाम छंदविचार नाम पिंगल बहुत भारी ग्रंथ बनाया औ काव्य विवेक २ कविकुलकल्पतरु ३ काव्यप्रकाश ४ रामायण ५ ए पांच ग्रंथ इनके बनाए हुए हमारे पुस्तकालय में मौजूद हैं इनकी बनाई हुई रामायण कवित्त औ नाना अन्य छंदों में बहुत अपूर्व है बाबू रुद्र साहि सुलंकी औ शाहिजहां बादशाह औ जैनदी अहमद ने इनको हुतब दान दिए हैं इन्होंने अपने ग्रंथों में कहीं कहीं अपना नाम मणिलाल करिकै कहा है।

चिन्तामणि २। ललित काव्य करीहै।

(१०) कालिदास त्रिवेदी बनपुरा अन्तर्वेदके निवासी सं० १७४९ ये कवि अन्तर्वेदमें बड़े नामी गिरामी हुएहैं। प्रथम औरंगजेब बादशाहके साथ गोलकुंडा इत्यादि दक्षिणके देशोंमें बहुत दिन तक रहे तेहि पीछे राजा योगाजीतसिंह रघुवंशी महाराजै जम्बूके इहाँ रहे औ उन्हींके नाम वधूविनोद नाम ग्रन्थ महाअद्भुत बनाया औ एक ग्रन्थ कालीदास हजारा नाम संग्रह बनाया जिस्में सं० १४८० से लेकर अपने समय तक अर्थात् सं० १७७५ तकके कवि लोगोंके एक हज़ार कवित्त २१२ कवि लोगोंके लिखेहैं हमको इस ग्रन्थके बनानेमें कालिदासके हज़ारासे बड़ी सहायता मिलीहै औ एक ग्रन्थ और जंजीरा बन्दनाम महाविचित्र इन्हीं महाराजका हमारे पुस्तकालयमेंहै इनके पुत्र उदयनाथ कविन्द औ पौत्र कवि दूलह बड़े महानकवि हुएहैं।

(११) ठाकुर कवि प्राचीन सं० १७०० ठाकुर कविको किसीने कहाहै कि वे असनी ग्रामके बन्दीजनथे संवत् १८०० के करीब मोहम्मदशाह बादशाहके जमानेमें हुएहैं औ कोई कहताहै कि नहीं ठाकुर कवि कायस्थ बुंदेलखण्डके वासीहैं किसी बुंदेलखण्डी कविका बयानहै कि छत्र-पुर बुंदेलखण्ड में बुंदेला लोग हिम्मति बहादुर गोसाईं के मारने को इकट्ठा हुए थे ठाकुर कविने यह कवित्त (समयो यह बीर बरावने हैं) लिखि भेजा सब बुंदेला चले गए औ हिम्मति बहादुरने ठाकुर को बहुत रुपया इनाम दिया हिम्मति बहादुर संवत् १८०० में थे औ कवि कालिदास

ने हजारा संवत् १७४५ के करीब बनाया है औ उसमें ठाकुरके बहुत कवित्त औ ऊपर लिखा हुवा कवित्त भी लिखा है इस्से हम अनुमान करते हैं कि ठाकुर कवि बुंदेलखण्डी अथवा असनी वाल भाट या कायथ कछु होवै पर ए कवि अवश्य संवत् १७०० में थे इनकी काव्य महामधुर लोकोक्ति इत्यादि अलंकारों से भरी पुरी सर्व प्रसन्नकारी है सवैया इनके बहुत ही चोटीले हैं इन के कवित्त तो हमारे पुस्तकालय में सैकरौं हैं पर ग्रंथ कोई नहीं औ न हमने किसी ग्रंथ का नाम सुना।

ठाकुरप्रसाद त्रिपाठी किशुनदासपुर ज़िले रायबरेली सं० १८८२ ये महान् पंडित संस्कृत साहित्य में महाप्रवीण सारे हिन्दुस्तान में काव्य ही के हेतु फिरि ७२ बस्ते पुस्तकें केवल काव्य की इकट्ठाकीथीं अपने हाथसेभी नानाग्रन्थ लिखेथे औ बुंदेलखण्डमें तौ घर घर कवि लोगोंके इहाँ फिरि फिरि एक संग्रह भाषा कवि लोगोंकी इकट्ठाकीथी रसचन्द्रोदय ग्रन्थ इनका बनाया हुवाहै तत्पश्चात् काशीजीमें गणेश और सरदार इत्यादि कवि लोगोंसे बहुत मेल जोल रहा औ अवधदेशके राजा महाराजाओंके इहाँभी गये जब इनका संवत् १९२४ में देहान्त हुवा तौ इनके चारों महामूर्ख पुत्रोंने १८। १८ बस्ते बाँटिलिये औ कौड़ियोंके मोल बेंचिडाले हमनेभी प्रायः दोसौ ग्रन्थ अन्तमें मोल लियाथा।

ठाकुररामकवि इनके कवित्त शान्तरसमें सुंदरहैं।

ठाकुरप्रसाद त्रिवेदी अलीगंज ज़िले खीरी विद्यमानहैं सतकविहैं।

(१२) निवाजकवि जुलाहा बिलग्रामी सं० १८०४ शृंगारमें अच्छे कवित्तहैं।

निवाज २ ब्राह्मण अन्तर्वेद वाले सं० १७३९ ये कवि महाराजे छत्रशाल बुंदेला परना नरेश के इहाँथे आजमशाहकी आज्ञानुसार शकुंतला नाटकको संस्कृतसे भाषा बनाया एक दोहासे लोगोंको शकहै कि निवाज़कवि मुसलमानथे पर हमने बहुत जांचा तौ १ निवाज मुसलमान और २ हिन्दू पाये गयेहैं।

दो०—तुम्हैं न ऐसी चाहिये, छत्रशाल महराज। जहँ भगवत गीतापढ़ै, तहँ कवि पढ़ै निवाज॥१॥

निवाज ३ ब्राह्मण बुंदेलखंडी सं० १८०१ ये कवि भगवंतराइ खीची गाजीपुर वालेके इहांथे।

(१३) सेनापति कवि वृंदावन बासी १६८० ए महाराज वृंदावनमें क्षेत्र संन्यास लै सारी बैस वहाँहीं व्यतीत किया काव्यमें इनकी प्रशंसा हम कहांतक करैं अपने समयके भामथे काव्य कल्पद्रुम इनका ग्रंथ बहुतही सुंदरहै हज़ारामें इनके बहुत कवित्तहैं।

(१४) सुखदेव मिश्र कंपिला वासी १७२८ ए कवि भाषा साहित्यके आचार्य्योंमें गिने जाते हैं प्रथम राजा अर्जुन सिंहके पुत्र राजाराज सिंह गौरके इहां जाय कविराजकी पदवी पाय वृत्त्यविचार नाम पिंगल सब पिंगलोंमें उत्तम ग्रंथको रचा तत्पश्चात् राजा हिम्मति सिंह बंधलगोती अमेठीके इहां आय छंदविचार नाम पिंगल बनाया फिरि नवाब फाजिलअली खां मंत्री औरंगजेब बादशाहके नाम भाषासाहित्यमें फाजिलअलीप्रकाश नाम ग्रंथ महाअद्भुत रचा ए तीनों ग्रंथोंके सिवाय हमने कहीं लिखा देखाहै कि अध्यात्मप्रकाश १ दशरथराय २ ए दो ग्रंथ औरभी इन्हीं महाराजके किये हुये हैं।

सुखदेव मिश्र कवि २ दौलतपुर जिले रायबरेली वाले। १८०३ ए महाराज महान् कवि

वैसवारेमें होगयेहैं राव मर्दनसिंह वैस डौंडियाखेरेके इहांथे और उन्हींके नाम रसार्णव नाम ग्रंथ नायका भेदमें बहुत सुंदर बनाया है शंभुनाथ इत्यादि कवि इन्हीके शिष्यथे।

सुखदेव कवि ३ अंतर्वेदी वाले। १७९१ ए कवि महाराजै भगवंत राय खीची असोथर वाले के इहांथे कछु आश्चर्य्य नहीं है कि ए महाराज सुखदेव मिश्र दौलतिपुर वाले न होवें।

(१५) देव कवि प्राचीन देवदत्त ब्राह्मण समानेगांव ज़िले मैनपुरीके निवासी सं० १६६१ ये महाराज अद्वितीय अपने समयके भाम मम्मट के समान भाषा काव्यके आचार्य होगयेहैं शब्दों में ऐसी समाई कहां है जिनमें इनकी प्रशंसा की जावे इनके बनाये ग्रंथोंकी संख्या आज तक ठीक ७२ हमको मालूम हुई है तिनमें केवल ११ ग्रंथके नाम जो हमको मालूम हैं लिखे जाते हैं जिन्हें अक्सर हमने भी देखाहै।

१ प्रेमतरंग २ भावविलास ३ रसविलास ४ रसानंदलहरी ५ सुजानविनोद ६ काव्यरसायन पिंगल ७ अष्टयाम ८ देवमायाप्रपंचनाटक ९ प्रेमदीपिका १० सुमिलविनोद ११ राधिकाविलास

देव (काष्ठजिह्वा स्वामी) काश्यस्थ। १९११ ए महाराज पंडित राज पट्शास्त्रके वक्ता प्रथम संस्कृत काशी जीमें पढ़ि दैव योगसे एकबार अपने गुरुसे बादकरि पीछे पछिताय काष्ठकी जीभ मुहँमें डालि बोलना बंद करिदिया पाटीमें लिखिके बातचीत करतेथे उन्हीं दिनों श्रीमन्महाराज ईश्वरीनारायण सिंह काशीनरेशने इनसे उपदेश लै रामनगरमें टिकाया तब ए महाराज भाषामें नाना ग्रंथ विनयामृत इत्यादि बनाए इन्हींके पद आजतक काशीनरेशकी सभामें गाए जाते हैं।

(१६) पजनेशकवि बुंदेल खण्डी १८७२ ए कवि परनामें थे औ मधुप्रिया नाम ग्रंथ भाषा-साहित्यमें अद्भुत बनायाहै इस कविकी अनूठी उपमा अनूठे पद अनुप्रासैं जमक तारीफ़के योग्य हैं पर टवर्ग शृंगार रसमें औ कटु अक्षरोंसे जो अपनी कवितामें भरिदियाहै इसकारणसे इनकी काव्य कवि लोगोंके तीर रूपी जिह्वाकी निशाना हो रही है इनका नखशिख देखने योग्यहै इन्होंने पारसी विद्यामेंभी श्रम कियाथा।

(१७) घनआनंद कवि। १६१५ ए कवि कविलोगोंमें महाउत्तम कवि होगए हैं।

(१८) घनश्याम शुक्ल असनी वाले १६३५ ए कवि कवितामें महानिपुण बांधवनरेशके इहां थे ग्रंथ तौ पूरा हमने कोई नहीं पाया कवित्त २०० तक इनके हमारे पास हैं कालिदासने भी इनके कवित्त हजारामें लिखेहैं।

(१९) सुंदरकविब्राह्मण ग्वालियरनिवासी सं० १६८८ ये महाराज शाहजहां बादशाहके कवि थे पहिले कविरायकी पदवी पाया इनका बनाया हुवा सुंदर शृंगार नाम ग्रंथ भाषासाहित्य में बहुत सुंदर है इन्हीं कविके पदमें यह अगन परा था (सुंदर कोप नहीं सपने) यह कवित्त इस ग्रंथ में है।

सुंदर कवि दादूजीके शिष्य मेवाड़देशके निवासी। इनकी कविता शांतरसमें कुछ अच्छीहै सुंदर सांख्य नाम एक इनका बनाया हुआ ग्रंथभी सुना जाताहै।

(२०) सुंदरकवि बंदीजन असनीवाले रसप्रबोध ग्रंथ बनायाहै।

मुरारिदास ब्रजबासी इनके पद राग सागरोद्भवमें हैं।

(२१) बोधाकवि सं० १८०४ इनके कवित्त बहुतही सुंदर हैं।

बोधकवि बुंदेलखण्डी। सं० १८५५ ऐज़न्।

(२२) श्रीपतिकवि प्रयागपुर ज़िले बहिरायच निवासी सं० १७०० ये महाराज भाषासाहित्यके आचार्योंमें गिनेजातेहैं इनके बनाएहुए काव्यकल्पद्रुम १ काव्यसरोज २ श्रीपतिसरोज ३ ये तीन ग्रंथ विख्यातहैं हमने ये तीनों ग्रंथ नहीं देखे और न इनके कुल और न जन्मभूमिसे हमको ठीक ठीक आगाही है।

(२३) दयानिधिकवि बैसवारेके सं० १८११ राजाअचलसिंह बैसकी आज्ञानुसार शालिहोत्र ग्रंथ बनाया।

(२४) युगलकिशोरभट्ट कैथल वासी सं० १७९५ ए महाराज मोहम्मद शाह बादशाहके बड़े मुसाहिबों में थे इन्होंने संवत् १८०३ में अलंकारनिधि नाम एक ग्रंथ अलंकार में अद्वितीय बनाया है जिस्में ९६अलंकार उदाहरण समेत वर्णन किए हैं उसी ग्रंथ में ए दो दोहा अपने नाम औ सभा के समाचार में कहे हैं।

दोहा–ब्रह्म भट्ट हौं जाति में, निपट अधीन निदान। राजा पद मोको दयो, महम्मद शाह सुजान ॥ १॥
चारि हमारी सभा में, कोविद कविमतिचारु। सदा रहत आनंद बढ़े, रसको करत विचारु ॥ २ ॥
मिश्र रुद्र मणि विप्रवर, औ सुख लाल रसाल। शतं जीव श्रुगुमान हैं, शोभित गुणनि विशाल ॥ ३ ॥

युगलकिशोर कवि २ शृंगाररस में कवित्त नीके हैं।
जुगराज कवि बहुतही सरस काव्य इनकी है।
जुगुल प्रसाद चौबे। इन की बनाई हुई दोहावली बहुत सुंदर काव्य है।
जुगुलदास कवि–पद बनाए हैं।
जुगुलकवि सं० १७५५ इनके बनाएहुए पद अति अनूठे महाललितहैं।

(२५) कविंद (उदयनाथत्रिवेदी) बनपुरा निवासी कविकालिदासजूके पुत्र सं० १८०४ ये कवि अपने पिताके समान महान्‌कवीश्वरहो गुजरेहैं प्रथम राजाहिम्मतिसिंह बंधलगोत्री अमेठी महाराजके इहां बहुत दिनतक रहे औ कवितामें अपना नाम उदयनाथ वर्णन करतेरहे जब राजाके नामसे रसचन्द्रोदयनाम ग्रंथबनाया तब राजाने कविंद पदवीदिया तबसे अपनानाम कविंदकरिके धरतेरहे इस ग्रंथके चारिनामहैं रतिविनोदचंद्रिका १ रतिविनोदचंद्रोदय २ रसचंद्रिका ३ रसचंद्रोदय ४ यह ग्रंथ भाषासाहित्यमें महाअद्भुतहै तेहि पीछे कविंदजी थोरेदिन राजागुरुदत्तसिंह अमेठीके इहां रहि भगवंतराइखीची औ गजसिंह महाराजै आमेर औ राव बुद्धहाड़ा बूंदीवालेके यहां महामान सन्मानके साथ काल व्यतीत करतेरहे और एक कविंद त्रिवेदी बेतीगांव ज़िलेरायबरेलीमें भी महान्‌कवि होगयेहैं।

कविंद २ सखीसुख ब्राह्मण नरवर बुंदेलखंड निवासीके पुत्र सं० १८५४ इन्होंने रसदीपक नाम ग्रंथ बनायाहै।

कविंद ३ सरस्वती ब्राह्मण काशीनिवासी सं० १६२२ ये कविन्दाचार्य्य महाराज संस्कृत साहित्य शास्त्र में अपने समयके भानु थे शाहजहां बादशाहके हुकुम से भाषाकाव्य बनाना प्रारंभ किया औ बादशाही आज्ञानुसार कविंद कल्पलता नाम ग्रंथ भाषा में रचा जिस्में बादशाह के पुत्र दाराशिकोह औ बेगम साहेब की तारीफ़ में बहुत कवित्त हैं।

(२६) गोविंद अटलकवि सं० १६७० इनके कवित्त हजारामें हैं।

गोविंदजी कवि सं० १७५० ऐजन्।

गोविंददासजी ब्रजवासी सं० १६१५ राग सागरोद्भवमें इनकी कविताहै ए कवि नाभाजीके शिष्यथे

गोविंदकवि सं० १७९८ ए कवीश्वर बड़े नामी कवि हो गए हैं इनका बनायाहुवा करुणाभरण ग्रंथ बहुत कठिन और साहित्य में शिरोमणि है।

केशवदास सनाढ्य मिश्र बुंदेलखंडी सं० १६२४ इनका प्राचीन निवास टिहरीथा राजा मधुकर शाह उड़छावाले के इहां आये औ वहां उनका बड़ा सन्मान हुवा राजा इंद्रजीतसिंह ने २१ गांव संकल्प दिये तब कुटुंब सहित उड़छे में रहने लगे भाषा काव्यके तौ भाम मम्मट भरता के समान प्रथम आचार्य्य समुझना चाहिये काहेते कि काव्यके दशो अंग पहिले पहिले इन्होंने कविप्रिया ग्रन्थमें वर्णन किये तेहि पीछे अनेक आचार्य्योंने नानाग्रन्थ भाषामें रचे प्रथम मधुकर शाहके नाम विज्ञानगीता ग्रंथ बनाया औ कविप्रिया ग्रन्थ प्रवीनराइ पातुरीके लिये रचा औ रामचंद्रिका राजा मधुकरशाहके पुत्र इन्द्रजीतके नामसे बनाया और रसिकप्रिया साहित्य औ रामअलंकृतमंजरी पिंगल ए दोनों ग्रन्थ विद्वज्जनोंके उपकारार्थ रचे जब अकबर बादशाहने प्रवीनराइ पातुरीके हाज़िर न होने औ उदूल हुकुमी औ लड़ाईके कारण राजा इन्द्रजीत पर एक करोड़ रुपया जुर्माना किए तब केशवदासजीने छिपकर राजा बीरबर मंत्रीसे मुलाक़ात किया औ वीरबरजूकी प्रशंसामें (दियो करतार दुहूं करतारी) यह कवित्त पढ़ा तब राजा वीरबरने महाप्रसन्न ह्वै जुर्माना माफ़ कराया परन्तु प्रवीणराइको दरवारमें आनेपड़ा।

केशवदास २ सामान्य कविताहै।

केशवराइ बाबू बघेलखंडी सं० १७३९ इन्होंने नायकाभेदमें एक ग्रंथ बहुत सुंदर बनायाहै औ इनके कवित्त बलदेवकविने अपने संग्रहीत ग्रंथ सतकवि गिराविलासमें लिखेहैं।

केशवरामकवि इन्होंने भ्रमरगीत नाम ग्रंथ रचाहै।

बाबू रघुनाथ सिंहके दोहेके अनुसार कवियोंकासमय 'शिवसिंह सरोजसे' निरूपण किया जाताहै।

(१) ओली रामकवि सं० १६२१ कालिदासजीने इनकी काव्य अपने हज़ारेमें लिखाहै।

(२) अकबरका हाल पहले लिखा गयाहै।

(३) अगर कवि सं० १६२६ नीति संबंधी कुंडलिया छप्पय दोहा इत्यादि बहुत बनाएहैं।

(४) अगर दास गलता जयपुर राज्यके निवासी सं० १५९५ इनके बहुत पद रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें हैं ए महाराजे कृष्णदास पय अहारीके शिष्यथे औ इन महाराजके नाभादास भक्तमाल ग्रंथकर्त्ता शिष्यथे।

(५) करनेशकवि बंदीजन असनीवाले सं० १६११ ये कवि नरहरि कविके साथ दिल्लीमें अकबरशाहकी सभामें जाते आते थे इन्होंने कर्णाभरण १ श्रुतिभूषण २ भूपभूषण ३ ये तीनि ग्रंथ बनाये हैं।

(६) चतुरविहारीकवि ब्रजवासी संवत् १६०५ इनके पद राग सागरोद्भवमें बहुतहैं।

(७) गोपकवि सं० १५९० रामभूषण १ अलंकारचन्द्रिका २ ए दो ग्रंथ बनाएहैं।

(९) अमरेशकवि सं० १६३५ इनकी कविता महाउत्तमहै कालीदासजीने अपने हजारामें इनकी कविता बहुतसी लिखीहै।

(१०) आशकरनदास कछवाह राजा भीमसिंह नरवरगढ़ वालेके पुत्र सं० १६१५ पद बहुत बनाए हैं जो कृष्णानंद व्यासदेवके संग्रहीत ग्रन्थमें मौजूदहैं।

(११) अजवेस प्राचीन सं० १५७० ये कवि श्रीराजा वीरभानसिंह जोधपुरके इहाँथे औ उसी देशके रहनेवाले वंदीजन मालूम होतेहैं।

अजवेस नवीन भाट सं० १८९२ ये कवि श्रीमहाराज विश्वनाथसिंह बांधव नरेशके इहाँथे।*

(१२) कादर, [क़ादिरबख्श मुसलमान पिहानीवाल] सं० १६३५ कवितामें निपुणथे औ सैयद इब्राहीम पिहानीवाल रसखानिके शिष्यथे।

(१४) टोड़र, (राजा टोड़रमल खत्री पंजाबी) सं० १५८० ये राजा टोड़रमल अकबर बादशाहके दीवान आला थे इनके हालातमें तारीख फ़ारसी भरी हुई है अरबी फ़ारसी संस्कृत विद्यामें महानिपुणथे श्री मद्भागवतको संस्कृतसे फारसीमें उल्था कियाहै औ भाषामें नीति संबंधी बहुत कवित्त कहे हैं इन महाराजने दो काम बहुत शुभ हिन्दुस्तानियोंके लिए किए हैं एकतौ पंजाब देशमें खत्रियोंके इहां रिवाज तीनि साला मातमको उठाय केवल वार्षिक रसमको नियत किया दूसरे फारसी हिसाब किताबको ईरान देशके माफिक हिन्दुस्तानमें जारी किया सं० ९९८ हिजरीमें शहर लाहौरमें देहान्त हुआ।

(१६) जैतकवि सं० १६०१ अकबर बादशाहके इहांथे।

(१७) चरणदास ब्राह्मण पंडितपुर ज़िला फैजाबाद सं० १५३७ सुरोदय ग्रंथ बनाया।

(१८) चतुर्भुज सुंदर कविता करी है।

चतुर्भुजदास सं० १६०१ रागसागरोद्भवमें इनके बहुत पद हैं ए महाराज करौलीके राजा स्वामी विट्ठलनाथजी गोकुलस्थके शिष्यथे अष्टछापमें इनका भी नाम है।

(१९) जीवन कवि सं० १६०८ इनके कवित्त हजारामें हैं।

(२१) ताजकवि सं० १६५२ हज़ारामें इनके कवित हैं।

(२२) होलरायकवि वंदीजन होलपुर जिले बारावंकी सं० १६४० ए महान कवि अकबरके दरबार तक राजा हरिवंशराइ दिवान कायथ बदरकावासीके वसीलेसे पहुँचे औ एक चक पाइ उसीमें होलपुर नाम ग्राम बसाया एक दिन श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी अयोध्यासे लौटते समय होलपुरमें आए होलरायने गोसांईजीके लोटाकी प्रशंसामें कहा–

दोहा–लोटा तुलसीदासको, लाख टकाको मोल।–तब गोसांईजी बोले–

मोल तोल कछु है नहीं, लेहु राय कवि होल॥ १॥

होलराइने उस लोटाको मूर्तिके समान स्थापन करि उसके ऊपर चबूतरा बांधि पूजन करते रहे हमने अपने आंखसे देखा है कि आज तक उसकी पूजा होती है इस होलपुरमें सिवाय गिरिधर औ नीलकण्ठ इत्यादिके कोई नामी कवि नहीं हुए इन दिनों लछिराम औ संतबकस ए दो कवि अच्छे हैं यह गाँउ आज तक इन्हीं वंदीजनोंके नंबरमेंहै।

(२३) खेमकवि २ ब्रजबासी सं० १६३० रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुममें इनके पदहैं। एक खेमकवि बुंदेलखंडीहैं।

(२४) जोधकवि सं० १६९० अकबरबादशाहके इहांथे।

* १८९२संवत्के अजवेस सूरदासके समयके नहीं हैं।

(२५) जोयसीकवि सं० १६५८ इनके कवित्त हजारामेंहैं।

(२६) चंद्रसखी ब्रजवासी सं०१६३८ इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं।

(२७) कृष्णदास गोकुलस्थ वल्लभाचार्य्यके शिष्य सं० १६०१ इनके बहुत पद राग सागरोद्भवमें लिखेहैं औ इनकी कविता अत्यंत ललित औ मधुरहै ए कवि औ सूरदास औ परमानंददास औ कुंभनदास चारोंश्रीवल्लभाचार्य्यके शिष्यथे कृष्णदासजीकी कविता सूरदासकी कवितासे मिलतीथी एकदिन सूरजी बोले आप अपना कोई ऐसापद सुनावो जो हमारी काव्यमें न मिले तब कृष्णदासजीने चारिपद सुनाये उन सब पदोंमें सूरजीने चोरी अपने पदोंकी साबित किया तब कृष्णदासजीने कहा कालिह हम अनूठे पद सुनावेंगे ऐसाकहि सर्व रात्रि इसी शोचमें नही सोये प्रातःकाल अपने सिरहाने यह पद लिखाहुवा देखि सूरजीके आगे पढ़ा॥ आवत बने कान्ह गोप बालक संग नैचुकी खुर रेनु छुरित अलकावली॥ सूरजी जान गये कि यह करतूति किसी और ही कौतुकीकी है बोले अपने बाबाकी सहायता लीनी है इनकी गिनती अष्टछापमें है अर्थात् ब्रजमें आठ ८ बड़ेकवि हुए हैं जैसा तुलसीशब्दार्थप्रकाश ग्रंथमें गोपालसिंहने ब्योरा अष्टछापका लिखा है इसभांतिसे कि सूरदास१कृष्णदास २ परमानंद३ कुंभनदास ४ एचारों वल्लभाचार्य्यके शिष्य औ चतुर्भुज ५ छीतस्वामी ६नंददास ७ गोविंददास८ ए चारों विठ्ठलनाथ वल्लभाचार्य्यके पुत्रके शिष्य अष्टछाप करिके विख्यात हैं कृष्णदासजीका बनाया हुवा प्रेमरसरासग्रंथ बहुत सुंदर है।

(२८) छेमकवि २ बंदीजन दलमऊके सं०१५८२ए कवि हुमायूं बादशाहके इहां थे।

(२९) अमृत कवि संवत् १६०२ अकबर बादशाहके यहांथे।

(३०) खानखाना नवाब अब्दुलरहीम खानखाना वैरमखांके पुत्र रहीम औ रहिमन छाप है। सं० १५८० ए महाविद्वान् अरबी फारसी तुरकी इत्यादि यामनीभाषा औ संस्कृत ब्रजभाषाके बड़े पंडित अकबर बादशाहकी आंखकी पुतलीथे इन्हींके पिता बैरमकी जवांमरदी औ तदबीरसे हुमायूंको दुबारा दिल्लीका राज्य प्राप्तहुआ खानखानाजी पंडित कवि मुल्लाशायर ज्योतिषी और सब गुणवान मनुष्योंके बड़े कदरदानथे इनकी सभा रातदिन विद्वज्जनोंसे भरी पुरी रहती थी संस्कृतमें इनके बनाए श्लोक बहुत कठिन हैं औ भाषामें नवोरसके कवित्त दोहा बहुतही सुंदरहैं नीति संबंधी दोहा ऐसे अपूर्व हैं कि जिनके पढ़नेसे कभी पढ़नेवालेको तृप्ति नहीं होती फारसीमें इनका दिवान बहुत उमदा है वाकियात बाबरी अर्थात् बाबर बादशाहने जो अपना जीवनचरित्र तुरकी जबानमें आपही लिखाहै उस्को इन्होंने फारसी ज़बानमें तर्जुमा कियाहै ७२ वर्षकी अवस्थामें सन् १०३६ हिजरीमें सुरलोकको सिधारे।

श्लोक—आनीता नटवन्मया तवपुरःश्रीकृष्णया भूमिका। व्योमाकाशखखांबराब्धि वसवस्त्वत्प्रीतये ऽद्यावधि॥ प्रीतिर्यस्य निरीक्षणोहि भगवन्मत्प्रार्थितं देहिमे। नोचेद्ब्रूहि कदापि मानय पुनर्मामीदृशी भूमिका॥ १॥

शृङ्गार सोरठा—भाषा।

पलटि चली मुसक्याय, दुति रहीम उजियाय अति। बाती सी उसकाय, मानो दीनी दीप की॥ १॥
गई आगि उरं लाइ, आगि लेन आई जु तिय। लागी नहीं बुझाय, भभकि भभकि बरि बरि उठै॥२॥

नीति, दोहा—खीरा शिर धरि काटिये, मलिये निमक लगाय।
करुये मुखको चाहिये, रहिमन यही सजाय॥ १॥

फारसी।

शुमार शौक़ नदानिस्ताअमकि ताचंदअस्त, जुज़ ईं क़द्र कि दाम सख़्त आरज़ूमन्द अस्त, नदाना दानम्, वनैदानम् ईंक़दरदानम्, कि पाय तावसरम हचैं हस्तदर वंदस्त,

एक दिन खानखाना ने यह आधा दोहा बनाया—

तारायन शशि रैन प्रति, सूर होंहिं शशि गैन।

औ दूसरा चरण नहीं बना रोज रात्रि को यह आधा दोहा पढा करते थे दिल्लीमें एक खत्रानी ने यह हाल सुनि आधा चरण बनाय बहुत इनाम पाया।

तदपि अंधेरो है सखी, पीव न देखे नैन॥ १॥

(३१) जगनकवि सं० १६५२ शृङ्गाररस में कवित्त चोखे हैं।

(३२) ऊधोराम कवि सं० १६१० इनकी कविता कालीदास जू ने अपने हजारा में लिखी है।

(३३) कमाल कवि (कबीरजू के पुत्र) कायस्थ सं० १६२२ इनकी कविता कालीदास ने हज़ारा में लिखी है।

(३४) जमालउद्दीन पिहानीवाल सं० १६२५ कवि अच्छे थे।

(३५) जगनंद कवि बृंदावनवासी सं० १६५८ इनके कवित्त हजारा में हैं।

(३७) जमाल सं० १६०२ ए कवि गूढ कूट में बहुत निपुण थे इनके दोहा बहुत सुंदर हैं।

(३८) जलालउद्दीन कवि सं १६१५ हजारा में इनके कवित्त हैं।

(३९) कल्याणदास ब्रजवासी कृष्णदास पय अहारीके शिष्य सं १६०७ इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। पुनः कल्याण सिंह भट्ट एक और है।

(४०) फैजी शेख अवल फैज नागौरी शेख मुबारक के पुत्र सं० १५०८ इनको छोटे बड़े विद्वान् भली भांति जानतेहैं कि ए फैजी अरबी फारसी संस्कृत भाषामें महा निपुणथे इनका ग्रंथ भाषामें हमने नहीं पाया केवल दोहरा मिलेहैं ए अकबरके कविथे।

(४१) ब्रह्मकवि राजा बीरबल ब्राह्मण अन्तर्वेदि वाले सं०१५८५इनका नाम प्रथम महेशदासथा ए कान्यकुब्ज दुबे ब्राह्मण ज़िले हमीरपुरके किसी गांवके रहनेवालेथे काव्य पढ़ि लिखि राजा भगवानदास आंबेर नरेश के इहाँ कवि लोगोंमें नौकर होगये राजा भगवानदास इनकी कवितासे बहुत प्रसन्न है अकबर बादशाहको नज़रके तौर इनको देदिया ए कवि काव्यमें अपना नाम ब्रह्म करिकै वर्णन करतेथे अकबर कविताके सिवाय इनमें सब प्रकारकी बुद्धि पाय पूर्व संस्कारके अनुसार प्रथम अपना मित्र बनाय कविराइकी पदवी दिया तेहि पीछे पांच हजारीका मनसब औ मुसाहेब दानिश बरराजे बीरबरका खिताब दिया इनके जीवनचरित्र विचित्र तवारीखोंमें लिखे हैं सन् ९९० हिजरीमें बिजौर इलाके काबुलमें पठानोंके हाथसे समरभूमिमें मारेगए इनका समग्र ग्रंथ तौ कोई हमने देखा सुना नहीं पर इनकी कविताई बहुतही फुटकर हमारे पुस्तकालयमें है सूरदासजीने कहा है।

दोहा।

सुंदर पद कविगंग के, उपमाको बरबीर। केशव अर्थ गंभीर को, सूर तीनि गुण तीर॥

राजा बीरबर ने अकबरके हुकुम से अकबरपुर गांव जिले कानपुरमें बसाय आप भी अपना निवासस्थान उसीको नियत किया और नारे नौल कसबा में इनकी पुरानी इमारतैं बड़ी

आलीशान आज तक मौजूद हैं चौधराई का ओहदा जो बहुधा ब्राह्मणोंको मिला औ गोवध वंद हुवा औ हिंदू मुसल्मानों में वहुत मेलजोल होगया ए सब वातें इन्हीं महाराज की कृपा से हुई थीं।

(४२) फहीम शेख अवदुल फजल फैजीके कनिष्ठ सहोदर सं० १५८० इनके केवल दोहरा हमने पाये हैं ग्रंथ कोई नहीं मिला ए अकवरके वजीर थे।

(४३) अभयराम सं० १६०२ कालिदास जीने इनकी काव्य अपने हजारे में लिखा है।

(४४) परासिद्धकवि प्राचीन सं०१५९० ए महान कवीश्वर खानखानाके इहांथे।

(४५) विट्ठल विपुल २ गोकुलस्थ श्रीस्वामी हरिदासके शिष्य १५८० इनके पद रागसागरोद्भवमेंहैं ए महाराज मधुवनमें वहुधा रहाकरतेथे।

(४६) रहीम कवि ए रहीमकवि खानखानाके सिवाइ दूसरे रहीमहैं कविता इनकी सरसहै काव्यनिर्णयमें दासकविने इनका नाम एक कवित्तमें लिखाहै परंतु दोनों रहीम अर्थात् अवदुलरहीमखानखाना और इनरहीमकी फुटकर काव्यका भिन्न भिन्न करना कठिनहै।

कवित्त सूर केशव मंडन विहारी कालिदास ब्रह्म चिंतामणि मतिराम भूषण सो जानिए।नीलकंठ नीलाधर निपटि नेवाज निधि नीलकंठमिश्र सुखदेव देव मानिये ॥ आलम रहीम खानखाना रसलीनवली सुंदर अनेक गनगनती वखानिए। ब्रजभाषाहेत ब्रजसवकीन अनुमान एते एते कविनकी वाणीहूं ते जानिये ॥ १ ॥

(४७) अमरसिंह हाड़ा जोधपुरके राजा सं०१६२१ ए महाराज अमरसिंह श्रीहाड़ावंशावतंस सूरसिंहके पौत्रहैं जिन सूरसिंहने छः लाख रुपया एक दिनमें छः कवि लोगोंको इनाम दियाथा औ जिनके पिता गजसिंहने राजपुतानेके कविलोगोंको धनाधीश करदियाथा राजा अमरसिंहकी तारीफमें जो वनवारी कविने यह कवित्त कहाहै कि (हाथकी वड़ाई की वड़ाई जमधरकी) सो इसकी वावत टाड साहेवकी किताव टाडराजिस्तानसे हम कछु लिखते हैं प्रगटहो कि राजा अमरसिंह हाड़ा महागुणगाहक औ साहित्यशास्त्रके वड़े कदरदान औ खुदभी महाकविथे इन्हीं महाराजने पृथ्वीराजरायसा चंदकवि कृतको सारे राजपुतानेमें तलास कराय ६९ उनहत्तर खंड तक जमा किया जो अव सारे राजपुतानेमें वड़े वड़े पुस्तकालयोंमें मौजूद है शाहजहां वादशाहके इहां अमरसिंहका मनसव तीन हजारीथा जोकि अमरसिंह वहुधा सैर शिकारमें रहा करतेथे इसलिए एकदफे शाहजहांने नाराज ह्वै कछु जुर्माना किया औ सलावतिखांवख्शी उलमुमालिकको जुर्माना वसूल करनेको नियत किया अमरसिंह महाक्रोधाग्निसे प्रज्वलित दरवारमें आया पहिले एक खंजरसे सलावतिखांका काम तमाम किया पीछे शाहजहां परभी तलवार आवदार झारी तलवार सितूनमें लगी वादशाह तौ भागवचे अमरसिंहने पाँच और वड़े सरदार मुगलोंको मारि आपभी उसीजगह अर्जुन गौर अपने सालेके हाथसे मारेगये विस्तारके भयसे संक्षेपसे लिखाहै

(४९) दील्हकवि सं० १६२५

(५०) नरोत्तमदास ब्राह्मण वाड़ी ज़िले सीतापुरवाले सं० १६०२ सुदामा चरित्त वनायाहै मानो प्रेमसमुद्र वहायाहै।

(५१) चेतनचंद्रकवि सं०१६१६ राजाकुशलसिंहसेंगर वंशावतंसकी आज्ञानुसार अश्वविनोद नाम शालिहोत्र वनाया।

(५४) वारककवि सं० १६५५।

(५५) विद्यादास ब्रजवासी सं० १६५० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं।

(५६)छीतस्वामी ब्रजवासी सं० १६०१इनके पद बहुत रागकल्पद्रुममेंहैं ए महाराज वल्लभाचार्य्यके पुत्र विट्ठलनाथजीके शिष्यथे इनकी गिनती अष्टछापमेंहै।

(५७) भगवत रसिक वृंदावननिवासी माधवदास जीके पुत्र हरिदास जीके शिष्य सं० १६०१ इनकी कुंडलियां बहुत सुंदरहैं।

(५८) छत्रकवि सं० १६२५ विजयमुक्तावली नाम ग्रंथ अर्थात् भारतकी कथा बहुतही संक्षेपसे सूचीपत्रके तौरसे नानाछंदोंमें वर्णन कियाहै।

(६०) गदाधर मिश्र ब्रजवासी सं० १५८० इनके पद राग सागरोद्भवमें हैं इनका बनाया हुवा यह पद 'सखी हौं श्यामके रंग रंगी। देखि बिकाय गई वह मूरति मूरति हाथ बिकी।' देख स्वामी जीव गोसाईं जो उस समय बड़े महात्मा थे गदाधर भट्टसे बहुत प्रसन्न हुए।

(६१) मानसिंह महाराजे कछवाह आमेरवाले सं० १५९२ ए महाराज कवि कोविदोंके बड़े क़द्रदानथे हरिनाथ इत्यादि कवीश्वरोंको एक एक दोहामें लक्ष लक्ष रुपया इनाम दिया इन्होंने अपने जीवनचरित्रकी किताब बहुत विस्तार पूर्व्वक बनायाहै जिस्का नाम मानचरित्रहै उसी ग्रंथमें लिखाहै कि जब राजा मानसिंह काबुलकी ओर अकबरके हुकुमसे चले और अटक नदीपर पहुँचके धर्म्मशास्त्रको विचारि उतरनेमें शोच विचार करने लगे औ अकबर शाहको लिखा तब अकबरने यह दोहा लिखा।–

दोहा–सबै भूमि गोपालकी, तामें अटक कहा। जाके मनमें अटकहै, सोई अटक रहा॥ १॥

यह दोहा पढ़ि मानसिंह अटकपार जाय स्वामिकार्य्यमें बड़ी वीरता करी॥

(६२) लालनदास ब्राह्मण दलमऊ वाले सं० १६५२ ए महाराज बड़े महात्मा हो गुज़रे हैं इनके कवित्त शांतरसमें हैं और हजारामें भी कालीदासने इनका नाम लिखाहै। एक और मोतीलाल कवि हुएहैं।

(६३) मोतीलाल कवि बांसी राज्यके निवासी सं० १५९७ गणेशपुराण भाषामें बनाया। एक और मोतीलाल कवि हुए हैं।

(६४) हरिदास स्वामी वृंदावन निवासी सं० १६४० इन महाराजका जीवनचरित्र भक्तमाला में है इहां केवल हमको काव्यहीका वर्णन करना अवश्य है सो संस्कृत काव्यमें जयदेव कवि से इनकी कविता कम नहीं है औ भाषामें इनके पद सूर औ तुलसीके पदोंके समान मधुर औ ललित हैं इन्होंने बहुत ग्रंथ बनाये हैं पर हमने इनकी कविता केवल वही देखा है जो राग सागरोद्भव रागकल्पद्रुममें है तानसेनको इन्हीं महाराजने काव्य औ संगीत विद्या पढ़ाया था।

(६५) हरिनाथ कवि महापात्र बंदीजन असनीवाले सं० १६४४ ए महान् कवीश्वर नरहरि जूके पुत्र बड़े भाग्यवान् पुरुषथे जहां जिस दरबारमें गये लाखों रुपया हाथी घोड़े गांव रथ पालकी पाय लौटे श्रीबांधवनरेश राजाराम बघेलेकी प्रशंसामे यह दोहापढ़ा।

दोहा–लंका लौ दिल्ली दई, साहि विभीषण काम। भये बघेलो राम सों, राजा राजाराम॥१॥

इस दोहा पर एक लक्ष रुपया इनाम पाया। औ राजा मानसिंह सवाई आमेरवाले के पास ए दोहा पढ़ि दो लक्ष रुपया दान पाया।

दोहा। बलिबोई कीरति लता, कर्ण करी द्वै पात। सींची मान महीप ने, जब देखी कुँभिलात॥१॥

जाति जाति ते गुण अधिक,सुन्यो न अजहूं कान। सेतु बांधि रघुवर तरे, हेला दै नृप मान॥२॥

जब हरिनाथ जू ए रुपया औ सब सामानले घरको चले तो मार्ग में एक नागापुत्र मिला और उसने हरिनाथ जू की प्रशंसामें यह दोहा पढ़ा।

दोहा। दान पाइ दोई बढ़े, की हरि की हरिनाथ। उन बढ़ि ऊंचे पग किये,इन बढ़ि ऊंचे हाथ॥१॥

हरिनाथ ने सब धन धान्य जो पाया था सब इसी नागापुत्रको दे आप रीते हाथ घरको चले आए औ अपनी औ अपने पिताकी कमाई तमाम उमर इसी भाँतिसे लुटाते रहे।

(६६) मानराय बंदीजन असनीवाले सं० १५८० अकबरके यहांथे।

(६७) रघुनाथ राय कवि सं०१६३५ यह कवीश्वर राना अमरसिंह जोधपुरके इहांथे।

(६८) गणेशजी मिश्र सं० १६१५।

(६९) कबीर (कबीरदास) जोलाहा काशीवासी सं० १६१० इनके दो ग्रंथ अर्थात् बीज१ रामैनी २ मेरे पास हैं औ इनके चरित्र तो सब मनुष्यों पर विदित हैं कालीदास जू ने हजारामें इनका नाम भी लिखाहै इसलिये हमने भी लिखदिया।

(७०) लीलाधरकवि सं० १६१५ ए कवि महाराज गजसिंह जोधपुरके इहांथे औ इनका प्रमाण सत कवि करते चले आए हैं।

(७१) नाथ कवि, नाथ कविके नामसे मालूम नहीं होसक्ता कि नाथ कितने हुए हैं जैसे उदयनाथ, काशीनाथ, शिवनाथ,शंभुनाथ,हरिनाथ इत्यादि कवि लोगोंने नाथ करके अपना भोग वर्णन कियाहै जहां तक हमको मालूम हुआ तहांतक हर एक नाथ की कविता अलग अलग वर्णन करी है। नाथकवि ब्रजबासी गोपाल भट्ट ऊंचगांव वाले के पुत्र इनकी काव्य रागसागरोद्भव में षट्ऋतु इत्यादि सुंदर है।

(७२) दामोदरदास ब्रजवासी सं० १६२२ इनके पद रागसागरमें हैं एक और दामोदर कवि हैं।

(७३) दीलदार कवि सं० १६५० हजारामें इनकी काव्य है।

(७४) दौलति कवि सं० १६५१।

(७५) नागर कवि सं० १६४८ हजारामें इनके कवित्त हैं।

(७६) दास (भिखारीदास कायस्थ) अरवल बुंदेलखण्डी सं० १७८० ए महान् कवि भाषासाहित्यके आचार्य्य गिने जाते हैं छंदार्णव नाम पिंगल १ रससारांश २ काव्यनिर्णय ३ शृंगारनिर्णय ४ बागबहार ५ ए पांच ग्रंथ इनके बनाये हुए अतिउत्तम काव्यके हैं।

दास २ वेनीमाधव दास पसका जिले गोंड़ा सं० १६५५ ए महात्मा गोस्वामी तुलसीदास जू के शिष्य उन्हींके साथ रहते रहे हैं औ गोसाईं जी के जीवनचरित्र की एक पुस्तक गोसाईंचरित्र नाम बनाया है संवत् १६९९ में देहांत हुवा।

(७७) नंदनकवि सं० १६२५ ए महाराज सतकवि होगए हैं हजारामें इनका नामहै।

(७८) हितहरिवंश स्वामी गोसाईं वृंदावननिवासी व्यास स्वामीकेपुत्र संवत् १५५९ इनके पिता व्यासजीने राधावल्लभी संप्रदायको चलाया ए देव वंदके रहनेवाले गौड़ब्राह्मणथे हितहरिवंश जी महान्कविथे संस्कृतमें राधासुधानिधि नाम ग्रंथ और भाषामें हित चौरासीनाम ग्रंथ महासुंदर बनायाहै।

(७९) सेनकवि नापति बांधवगढ़के सं० १५६० हजारामें इनके कवित्तहैं एककवि स्वामी रामानंदजीके शिष्यथे।

(८०) नारायणदास कवि सं० १६१५ हितोपदेश राजनीतिको भाषामें छंदबद्ध रचाहै।

(८३) नंदलालकवि सं० १६०१ कवित्त सुंदर हजारामें इनके कवित्तहैं।

(८४) रसखानकवि सैयद इबराहीम पिहानीवाले सं० १६३१ एकवि मुसलमानथे श्रीवृंदावनमें जाय कृष्णचंद्रकी भक्तिभावमें ऐसे डूबे कि फिरि मुसलमानी त्याग करि माला कंठी धारण किए हुए वृंदावनकी रजमें मिलिगए इनकी कविता निपट ललित माधुर्य्यतासे भरीहुई है इनकी कथा भक्तमालमें पढ़ने योग्य है।

(८५) नाभादास कवि नाम नारायणदास महाराष्ट्र दक्षिणी सं० १६४० इनको स्वामी अग्रदास जी ने गलता नाम इलाके आमेरमें लाय अपना शिष्य बनाय भक्तमाल नाम ग्रंथ लिखने की आज्ञाकरी नाभा जी ने११८छप्पय छंदमें इसग्रंथको रचा तेहि पीछे स्वामी प्रियादास वृंदावनीने उस्का तिलक कवित्तोंमें किया तेहि पीछे लालजी कायथ कांधलाके निवासी ने सन् ११५८ हिजरी में उसीका टीका बनाय भक्त उरबसी नाम रक्खा इनदिनों उसी भक्तमालको महारसिक भगवत भक्त तुलसीराम अगरवाल मीरापुर निवासीने ऊर्दूमें उल्थाकरि भक्तमाल प्रदीपन नाम धरा है नाभादासकी विचित्रकथा भक्तमालमें लिखी है।

(८६) नरवाहनजी कवि भौगाँव निवासी सं० १६०० एकवि स्वामी हितहरिवंश जीके शिष्य थे इनके पद बहुत विचित्रहैं कथा इनकी भक्तमालमें है।

(८७) नरसिया कवि अर्थात् नरसीजी जूनागढ़ निवासी सं० १५९०इनके पद राग सागरोद्भवमें हैं।

(८८) नारायणभट्ट गोसांई गोकुलस्थ ऊंचगांव बरसानेके समीपके निवासी सं० १६२० इनके पद रागसागरोद्भवमें हैं ये महाराज बड़ेभक्तथे बृंदाबन मथुरा गोकुल इत्यादिमें जे तीर्थस्थान लुप्तहोगयेथे उन सबको प्रगट करि रासलीलाकी जड़ इन्होंने प्रथम डालीहै।

(८९) तानसेनकवि ग्वालियर निवासी सं० १५८८ एकवि मकरंद पाँड़े गौड़ ब्राह्मणके पुत्रथे प्रथम श्रीगोसाईं स्वामी हरिदासजू गोकुलस्थके शिष्यहै काव्यविद्याको यथावत् सीखा तत्पश्चात् शेष महम्मद गौस ग्वालियरवासीके पासजाय संगीतविद्याके लिये प्रार्थनाकरी शाहसाहेब तंत्रविद्या में अद्वितीयथे बरन् मुसलमानोंने इन्हींको इसविद्याका आचार्य्य सब तवारीखोंमें लिखाहै शाह साहेबने अपनी जीभ तानसेनकी जीभमें लगाय दिया उसीसमयसे तानसेन गानविद्यामें महानिपुण होगए इनकी प्रशंसामें आईन अकबरीमें ग्रंथकर्त्ता फहीमने लिखाहै ऐसा गानेवाला पिछले हजारामें कोई नहीं हुवा निदान तानसेन दौलतिखां शेरखां बादशाहके पुत्रपर आशिकहै उनके ऊपर बहुतसीकविता करी तेहि पीछे दौलतिखांके मरनेपर श्रीबांधवनरेश रामसिंह बघेलाके इहां गए औ वहांसे अकबर बादशाहने अपने इहां बुलाय लिया तानसेन औ सूरदास जीसे बहुत मित्रताथी तानसेन जीने सूरदासकी तारीफमें यह दोहा बनाया।

दो०—किधौं सूरकोशर लग्यो, किधौं शूरकीपीर। किधौं सूरको पदलग्यो, तनमनधुनत शरीर १॥

तब सूरदासजीने यह दोहा कहा।

दोहा। विधना यह जिय जानिकै,शेश न दीन्हे कान। धरा मेरु सब डोल तों, तानसेन की तान२

इनके ग्रंथ रागमाला इत्यादि महाउत्तम काव्यके ग्रंथ हैं।

(९०) निपट निरंजन स्वामी सं०१६५०ए महाराज गोस्वामी तुलसीदासके समान सिद्ध होगए हैं औ इनके ग्रंथोंकी ठीक ठीक संख्या मालूम नहीं होती पुरानी संग्रहीत पुस्तकोंमें सैकरों कवित्त हम इनके देखतेहैं हमारे पुस्तकालयमें शांत सरसी १ औ निरंजन संग्रह २ दो ग्रंथ इन महाराजके बनाये हुए हैं इनकी कवितामें बहुत बड़ा प्रताप यह है कि मनुष्य कैसाही काम क्रोध इत्यादि पाशोंसे बद्ध होवै इनकी वाक्यके श्रवण कीर्त्तनसे निः संदेह मुक्त हो जावे।

(९१) इंद्रजीत त्रिपाठी वनपुरा अंतर्वेदी वाले सं० १७३९ औरंगजेबके नौकरथे।
(९२) पृथ्वीराज कवि सं० १६२४हजारामें इनके कवित्तहैं ए कवि बीकानेरके राजा संस्कृत औ भाषाके बड़े कविथे *।
(९३) लक्ष्मीनारायण मैथिल सं० १५८० ए कवि खानखानाके यहाँथे।
(९४) हरिकवि ए महान् कविथे इन्होंने चमत्कार चंद्रिका नाम ग्रंथ भाषाभूषणका टीका १ औ कविप्रियाभरण नाम ग्रंथ कविप्रियाका तिलक २ विस्तार पूर्वक बनायाहै औ तीनों काण्ड अमरकोश भाषा कियाहै।
(९५) बलिभद्र सनाढ्य उडछेवाले केशवदास कविके भाई सं० १६४२ इनका नखशिख सारे कवि कोविदोंमें महाप्रमाणिक ग्रंथ है औ भागवतपुराणपर टीका बहुत सुंदर किया है।
(९६) विट्ठलनाथ गोकुलस्थ गोसांई वल्लभाचार्यके पुत्र सं० १६२४ए महाराज वल्लभाचार्य्य जीके पुत्र परमभक्तवात्सल्यनेष्ठाके हुएहैं इनके सात पुत्रोंकी सात गादियाँ गोकुलजीमें चली आती हैं इनकी कविता पद इत्यादि बहुतसे रागसागरोद्भवमें हैं।
(९७) विश्वनाथ कवि प्राचीन सं० १६५५
(९८पद्मनाभजी ब्रजवासी कृष्णदास पयहारी गलताजीके शिष्य सं० १५६० इनके पद बहुत रागसागरोद्भवमें हैं अर्थात् कील्ह, अग्रदास, केवलराम, गदाधर, देवा, कल्याण, हठी नारायण पद्मनाभ ये सब कृष्णदासजीके शिष्य, औ महान्कवि हुयेहैं औ अग्रदासके शिष्य नाभादासथे।
(९९) प्रवीनराइ पातुरी उडछा बुंदेलखण्डवासिनी सं० १६४०इस वेश्याकी तारीफमें केशव दास जूने कविप्रिया ग्रंथकी आदिमें बहुत कुछ लिखा है इस्के कवि होनेमें कुछ संदेह नहीं इस्का बनाया हुवा ग्रंथ तो हमको नहीं मिला केवल एक संग्रह मिली है जिसमें इसके सैकरों कवित्त बनाए हुये हैं हमने किसी तवारीखमें लिखा नहीं देखा कि बादशाह अकबरने प्रवीनको बोलाया केवल विदित है कि अकबरने प्रवीनकी प्रवीनताई सुनी दरबारमें हाजिर होनेका हुकुम दिया तो प्रवीनरायने प्रथम राजा इंद्रजीतकी सभामें जाय ए तीनि कूट कवित्त पढ़े (आईहौं बूझन मंत्र) तेहि पीछे जब प्रवीन सभामें बादशाहके गई तो बादशाहसे प्रश्नोत्तर हुए।

बादशाह–युवन चलत तिय देहते, चटकि चलत किहि हेतु।
प्रवीन–मन्मथ वारि मसालको, सैंति सिहारो लेतु॥ १॥
बादशाह–ऊंचे ह्वै सुर वश किये, सम ह्वै नर वश कीन।
प्रवीन–अब पताल वश करनको, ढरकि पयानो कीन॥ २॥
इस्के पीछे जब प्रवीनने यह दोहा पढ़ा।
विनती राय प्रवीनकी, सुनिये शाह सुजान। जूंठी पतरी भखतहैं, बारी बायस स्वान॥ १॥
तब बादशाहने विदाई दई औ प्रवीन इंद्रजीतके पास आई।

(१००) भगवानदास निरंजनी भृत्यहरि सत कवित्तोंमें भाषा किया है। पुनः भगवानदास मथुरा निवासी सं० १५९० राग सागरोद्भवमें इनके पदहैं।
(१०१) मनोहर कवि (राजा मनोहरदास) कछवाहा सं० १५९२ ये महाराज अकबर शाह के मुसाहिब फारसी संस्कृत भाषाके महान् कविथे फारसीमें अपना नाम (तौसनी) करिके वर्णन करतेथे।

---

* मार्कंडे कविने मुझसे यह कवित्त कहाथा–
कवित्त–जबते सुनीहै बेन तवते न मोको चैन पातीपढ़ी नेकु सो बिलंबनालगावेगो। लेके यमदूतसो समस्त राजपूत आज आठघड़ी आगरामें उद्धम मचावैगो॥ कहै पृथ्वीराज प्रिया नेक उर धीर धारो चिरजीव राना ये मलेच्छन भगावेगो। मानको मरादि मान परबल प्रताप सिंह बब्बर लों तडपि अकब्बर पै आवेगो॥

(१०२) परमानंद दास ब्रजबासी वल्लभाचार्य्यके शिष्य सं० १६०१ इनके पद रागसागरोद्भव में बहुत हैं औ इनकी गिनती अष्टछापमें है ।

(१०३) नवीनकवि बहुतही सुंदर कवित्त शृंगाररसके हैं ।

(१०४) माणिकचंद्र कवि सं० १६०८ राग सागरोद्भवमें इनके पद हैं ।

(१०५) निहाल प्राचीन सं० १६३५ ।

(१०६) मुकुंद सिंह हाड़ा महाराजे कोटा सं० १६३५ ए महाराजा शाहजहां बादशाहके बड़े सहायक औ कविताईमें महानिपुण कवि कोविदोंके चाहकथे ।

(१०७) मुबारक सैयदमुबारक अली बिलग्रामी सं० १६४० इनकी काव्य तो विदित है इन का ग्रंथ कोई हमने नहीं पाया कवित्त सैकरों हमारे पुस्तकालयमें हैं ।

(१०८) बीरबर (बीरबर कायस्थ दिल्ली निवासी) सं० १७७७ ए महान्कविथे इनका बनाया हुवा कृष्णचन्द्रिका नाम ग्रंथ साहित्यमें बहुत सुन्दर औ हमारे पुस्तकालयमें मौजूदहै ।

(११०) दिनेशकवि इनका नखशिख बहुतही विचित्रहै ।

(१११) दानकवि शृंगारमें सरस कविताई है ।

(११२) तोषीकवि ।

(११३) तेहीकवि ।

(११४) धीरज नरिंद महाराजे इंद्रजीतसिंह बुंदेला उड़छावाले सं० १६१५ इन्हीं महाराजके इहाँ कवि केशवदासथे औ प्रवीनराइ पातुरीभी इन्हींके सभामें विराजमान्थी इनके समयमें उड़छा बड़ी राजधानीथी । *

(११७) श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी सं० १६०१ ए महाराज सरवरिया ब्राह्मण राजापुर ज़िले परागके रहनेवाले प्रायः संवत् १५८३ के करीब उत्पन्न हुएथे औ सं० १६८० में स्वर्गवास हुवा इनके जीवनचरित्रकी पुस्तक बेनीमाधवदास कवि पुसकाग्रामवासीने जो इनके साथ साथ रहे हैं बहुत विस्तार पूर्वक लिखी है उसके देखनेसे इन महाराजके सब चरित्र प्रगट होतेहैं इस पुस्तकमें ऐसे विस्तार कथाको हम संक्षेप करिकै वर्णनकरैं निदान गोसाईंजी बड़े महात्मा रामोपासक महायोगी सिद्ध होगएहैं इनके बनाये ग्रंथोंकी ठीक ठीक संख्या हमको मालूम नहीं हुई केवल जो ग्रंथ हमने देखे अथवा हमारे पुस्तकालय में हैं उनका ज़िकर किया जाता है प्रथम ४९ कांड रामायण बनाया है इस तफ़सीलसे ।

१ चौपाई रामायण ७ कांड ।२ कवित्तावली ७ कांड।३ गीतावली ७कांड ४ छंदावली।७ कांड ५ बरवै ७ कांड । ६ दोहावली ७ कांड । ७ कुंडलिया ७ कांड । औ सिवाय इन ४९ कांडके १सतसई । २ रामसलाका । ३ संकटमोचन । ४ हनुमतबाहुक । ५ कृष्णगीतावली । ६ जानकी-मंगल । ७ पार्वतीमंगल । ८ कडकाछंद । ९ रोलाछंद । १० झूलनाछंद । इत्यादि औरभी ग्रंथ बनाएहैं अन्तमें विनयपत्रिका महाविचित्र मुक्तिरूप प्राज्ञानंद सागरग्रंथ बनायाहै चौपाई गोसाईं महाराजकी ऐसी किसी कविने बनाय नहीं पाया और न विनयपत्रिकाके समान अद्भुतग्रंथ आज तक किसी कवि महात्माने रचा इस कालमें जो रामायण न होती तो हम ऐसे मूर्खोंका बेड़ा पार

* (११५) श्रीपति कविका वर्णन पहले हुआ है परंतु वह इस दोहेका नहीं है ।

रत्नाकर कविने हमसे कहा है कि श्रीपति कवि अकबर बादशाहके नौकरथे परंतु खुशामदी नथे कईएक कवियोंने मिल-कर अकबर बादशाहके सामने [करो मिल आश अकब्बरकी] समस्या दिये परंतु कविने स्पष्ट बादशाहको फटकारा यह कवि भक्त था वहतो कवितासे स्पष्ट ही मालूम हुआ ।

अबके सुलताँ फुनियान समान हैं बांधत पाग अटब्बर की । तजि एक को दूजो भजै जो कोऊ तब जीभ कटै वह लब्बर की॥ शरणागत श्रीपति श्रीपति की नहिं त्रास जरा कोऊ जब्बरकी । जिनको नहिं आश कछू हरिकी सो करो मिलि आश अकब्बरकी ॥

नहीं लगता गोसांईजी श्रीअयोध्याजी, मथुरा, वृंदावन, कुरुक्षेत्र, पराग, वाराणशी पुरुपोत्तमपुरी इत्यादि क्षेत्रोंमें बहुत दिनतक घूमते रहेहैं सबसे अधिक श्रीअयोध्या, काशी, पराग औ उत्तराखण्ड, वंशीवट, इत्यादि ज़िले सीतापुरमें रहेहैं इनके हाथकी लिखीहुई रामायण जो राजापुरमेंथी वह खण्डित होगई है पर मलिहाबाद में आज तक सम्पूर्ण७काण्ड मौजूद है१पन्ना नहीं है विस्तार भयसे अधिक हालात हम नहीं लिख सक्ते दो दोहा पर इन महाराजका वृत्तांत समाप्त करते हैं। दोहा—कविता करता तीनि हैं, तुलसी केशव सूर*।कविता खेती इन लुनी, सीला बिनत मजूर१ तुलसी रवि सूरज शशी, उड़गण केशव दास। अबके कवि खद्योत सम; जहँ तहँ करत प्रकाश२

इति श्रीसूरदासजीका जीवनचरित्र समाप्त।

*बाबू रघुनाथसिंहने जो दोहे मुझे दियेथे उससे मालूम हुआ कि ११७ कवि सूरदास के समयमें वर्तमान थेइनमें से दो तीन कवि को छोड़ कर सभोंका नाम " शिवसिंह सरोज" में मिलता है पर इस से (शिवसिंहसरोज) जो मैंने समय लिखा है सबका समय सूरदासके समय से नहीं मिलता। सूरदास का समय संवत्१६४०"शिवसिंहसरोज"में लिखा है और सूरदास जीने स्वयं"साहित्यलहरी"नामक पुस्तक में"साहित्यलहरीके"बनानेका समय सं० १६०७ लिखा है।और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि संवत् १६२० के लगभगमें इन्होंने शरीर त्यागा अब यदि सूरदासजीके जन्मसे मरण पर्यंत १२५ वर्ष रखलेते हैं तौ भी संवत् १५०५ से लेकर १६२० तक होता है अब यदि संवत्१७००से अधिक के समय के कवियों को सूरदासजी के सामयिक रघुनाथ सिंह के दोहे और "शिवसिंह सरोज" के अनुसार ठहराया गया है यह यथार्थ में ठीक नहीं है।अब सोचना पड़ाकि बाबूरघुनाथसिंहके दोहे ठीकहैं कि नहीं। यहतो मुक्तकंठसे कहनापड़ेगा कि उस दोहेके अनेक कवियोंका सूरदास का सामयिक होना ठीकहै परन्तु कईएकमें भ्रमहै उसमेंभी यह नहीं कहा जासकताहै कि इसनामके और कवि नहुयेहों परन्तु " शिवसिंह सरोज" से जो मैंने कवियोंका समय प्रकाशकियाहै उसमें अवश्य भ्रमहै।

हरिश्चन्द्रजी ने लिखाहै सूरदासके समयमें तुलसीदासजी नहुए उसका कारण सोचनेसे यह मालूमहोताहै कि नन्ददासजीके भाई तुलसीदासजी पर ध्यान गयाहै क्योंकि वैष्णवोंकी चौरासीवार्तामें लिखाहै कि तुलसीदास और नन्ददास भाईहैं और नंददास का समय सम्वत् १५८५ काहै औरतुलसीदास नन्ददासका भाई गोसाईंचरित्र उर्दूमेंभी लिखाहै। अथवा मीराबाईके समयपर ध्यान गया होगा क्योंकि "भक्तकल्पद्रुम "और" रामरसिकावली" तथा" हरिभक्तप्रकाशिका" में मीराबाई और तुलसीदासकी बातचीत लिखीहै परन्तु मीराबाईका समय तुलसीदासके समयमें मेरी सम्मतिसे नहींहै।

क्योंकि " शिवसिंहसरोज " में मीराबाईके विषयमें यह लिखाहै।

" मीराबाई सं० १४७५ में हुई हमने इनका जीवनचरित्र भक्तमाल तुलसीदास कायस्थकृतमें देखा और तारीख चित्तौर से मिलाया तौ बड़ा फरक पायागया अब हम इनका हाल चित्तौरके प्राचीन प्रबंधसे लिखते हैं ए मीराबाई माड़वार देशमें राना राठौरवंशावतंस में रेतिया देशाधिपतिके यहां उत्पन्न हुईथीं यह रियासत सारे माड़वारके फिरकोंमें उत्तरोत्तर है और मीराबाईका विवाह संवत् १४७० के करीब राना मोकल देवके पुत्र राना कुंभकरन चित्तौर नरेशके साथ हुवा था संवत् १५२५ में ऊदारानाके पुत्रने रानाको मारडाला मीराबाई महास्वरूप वान औ कवितामें अति निपुणा थी रागगोविंद ग्रंथ भाषामें बहुत ललित बनाया है चित्तौरगढमें दो मंदिर करीब महल राना राय मलकेथे एक राना कुंभूका औ दूसरा मीराबाईका सो मीराबाई अपने इष्टदेव श्यामनाथकी उसी मंदिरमें स्थापन करि नृत्य गीत भाव भक्तिसे रिझाया करतीथीं एक दिन श्यामनाथ मीराके प्रेमवश है चौकीसे उतरि अंकमें ले बोले हे मीरा, केवल एतनाहीं शब्द राधानाथके मुँहसे सुनि मीराबाई प्राणत्याग करि रसिकविहारी गिरिधारीके नित्यविहारमें जायमिली इन दोनों मंदिरोंके बनानेमें नव्वेलाख रुपया खर्चहुवाथा।

मीराबाईके विषयमें 'तारीख तुहफए राजस्थान' से मौलवी मुहम्मद उबैदुल्लाह फरहतीने लिखाहै।

"सांगाको इस शिकस्तका निहायत रंजहुवा,वह इसीसालके अन्दर मेवाड़के पहाडी इलाकेमें मौतसे या किसीके जहरदेनेसे इन्तिकाल करगये, और उनके साथ मेवाड़की तरक्की खत्महोगई अगर वह जिन्दह रहते तो दोबारह लड़ाईमें किस्मत आजमाई करते यह महाराणा जोरावर,खूबसूरत और दर्मियानी कदके आदमीथे। इन महाराणाके दो बेटे उनके सामने गुजर चुकेथे,जिनमेंसे बड़े भोजराजके साथ मेड़तिया राठौर जयमलकी रिश्तहदारी बहिन मीराबाई,जिसके फकीरानह भजन अवाममें मशहूरहैं, व्याही गईथी। कर्नेल टाडने गलत तौर पर उसकी शादी महाराणा कुम्भाके साथ लिखदी है, जो साँगा जीके दादाथे। एशियाई मुल्कोंमें जियादह ब्याह करनेसे आदतें खराब और जिस्म ज़ईफ होनेके सिवा, हर एक औरत अपनी औलादकी बिहतरीके वास्ते हर तरहकी तदबीर करना चाहती है, जिससे बहुत खराबियां पैदा होती हैं। इसलिये कर्नेल टाडने खयाल कियाहै कि महाराणा सांगाको उनके खानदानमेंसे किसीने जहर देदिया।"

अब पं० बलदेव मिश्र और पं० गनपतलाल चौबेकी बातपर विशेष ध्यान दियाजाय तो इन्हें शुद्ध भरम होगया है जरा भक्तमालभी पढ़े होते तो सूरदास कितने हुएहैं मालूम होजाता, फिर जिस सूरदासका सूरसागर बनायाहै व्यर्थ उनमें और सूरदासका हाल न लिखते। इति।

श्रीः ।

अथ श्रीसूरसागरकी अनुक्रमणिका ।

अथ दशमस्कन्धपूर्वार्द्ध।

अथ दशमस्कन्ध उत्तरार्ध।

अथ एकादशस्कंध।

अथ द्वादशस्कंध।

इतिश्री सूरसागरकी अनुक्रमणिका समाप्ता॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-मुंबई.

श्रीः ।

अथ

सूरसागर

अथ श्रीसूरदासजीरचित सूरसागर सारावली ।

तथा सवालाखपदके सूचीपत्र ।

राग कल्पद्रुम॥वन्दौं श्री हरिपद सुखदाई॥जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अँधरेको सबकुछ दरशाई॥ बहिरो सुनै गूंग पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई । सूरदास प्रभुकी शरणागत वारम्वार नमो ते पाई ॥ रागिनी काफी तालजति ॥ खेलत यहि विधि हरि होरी हो होरी हो वेद विदित यह वात ॥ टेक–अविगति आदि अनन्त अनूपम अलख पुरुष अविनासी । पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम नित निज लोकविलासी ॥ १ ॥ जहँ वृन्दावन आदि अजर जहँ कुंजलता विस्तार । तहँ विहरत प्रिय प्रीतम दोऊ निगम भृंग गुंजार ॥ २ ॥ रत्न जटित कालिंदीके तट अति पुनीत जहँ नीर । सारस हंस चकोर मोर खग कूजत कोकिल कीर ॥ ३ ॥ जहँ गोवर्द्धन पर्वत मणिमय सघन कंदरासार । गोपिनमंडल मध्य विराजत निशि दिन करत विहार ॥ ४ ॥ खेलत खेलत चितमें आई सृष्टि करन विस्तार । अपने आप करि प्रकट कियोहै हरी पुरुष अवतार ॥ ५ ॥ माया कियो क्षोभ वहु विधि करि कालपुरुष के अंग । राजत तामस सात्त्विक त्रयगुण प्रकृति पुरुषको संग ॥ ६ ॥ कीन्हें तत्त्व प्रकट तेही क्षण सबै अष्ट अरु वीश । तिनके नाम कहत कवि सूरज निर्गुण सबके ईश ॥ ७ ॥ पृथिवी अप तेज वायु नभ संज्ञा शब्द परस अरु गन्ध । रस अरु रूप और मन बुधि चित अहंकार मतिअन्ध ॥ ८ ॥ पान अपान व्यान उदान और कहियत प्राण समान । तक्षक धनंजय पुनि देवदत्त और पौंड्रक शंख द्युमान ॥ ९ ॥ राजस तामस सात्त्विक तीनों जीव ब्रह्म सुखधाम । अट्ठाईस तत्त्व यह कहियत सो कवि सूरज नाम ॥ १० ॥ नाभि कमल नारायणकीसो वेद गर्व अवतार । नाभि कमल में वहुतहि भटक्यो तऊ न पायो पार ॥ ११ ॥ तव आज्ञाभइ यह हरिकी अज करो परमतप आप । तव ब्रह्मा तप कियो वर्षशत दूरिभये सव पाप ॥ १२ ॥ तव दर्शन दीन्हों करुणाकर परमधाम निज लोक । ताको दर्शन देखि भयो अज सब बातन निःशोक ॥ १३ ॥ जहां आदि निजलोक महानिधि रमा सहस संयूत । आंदोलन झूलत करुणानिधि रमासुखद अतिपूत ॥ १४ ॥ स्तुतिकरैं विविध नाना करि परम पुरुष आनन्द । जय जय जय श्रुति गीत गायके पढ़त हैं नानाछंद ॥ १५ ॥ आज्ञा करी नाथ चतुरानन करो सृष्टि विस्तार । होरी खेलन की विधि नीकी रचना रचे अपार ॥ १६ ॥ चौदह लोक करो नानाविधि रचि वैकुंठ पताल । नाना रचना रची विधाता होरीखेल रसाल ॥ १७ ॥ दशहीपुत्रभये ब्रह्माके जिन संच्यो संसार । स्वायंभुवमनु प्रकट तव कीन्हे अरु शतरूपा नार ॥ ॥ १८ ॥ भुवकी रक्षा करन जु कारण धरि वराह अवतार । पीछे कपिलरूप हरि धारयो कीन्हों सांख्य विचार ॥ १९ ॥ दीन्हों ज्ञान आप माताको कीन्हों भवनिस्तार । आठों लोकपाल तव

कीये अपन अपन अधिकार ॥ २० ॥ तेज, अग्नि, यम, मरुत, वरुण औ सूर्य्य चन्द्र यह नाम। मृत्यु, कुबेर, यक्षपति कहियत जहँ शंकर को धाम ॥ २१ ॥ सत्यलोक, जनलोक तपलोक और महर निजलोक। जहँ राजत ध्रुवराज महानिधि निशि दिन रहत अशोक ॥ २२ ॥ जननी आज्ञा पायचले बन पांच वर्ष सुकुमार। ताको आप कृपा हरि कीन्हीं धरि आये अवतार ॥ २३ ॥ पाछे पृथुको रूप हरि लीन्हों नानारस दुहि काढ़े। तापर रचना रची विधाता बहु विधि यत्न नवाढ़े ॥ २४ ॥ रचि नवखण्ड द्वीपसातों मिलि कीन्हों जोरि समाज। बन उपवन पर्वत बहुफूले सब बसन्तको साज ॥ २५ ॥ दानव देव लगे आपसमें कीन्हों युद्ध प्रकार। विविधशस्त्र छूटत पिचकारी चलत रुधिर की धार ॥ २६ ॥ दीन्हे मारि असुर हरिने तब देवन दीन्हीं राज। एकन को फगुवा इन्द्रासन इक पतालको साज ॥ २७ ॥ विद्याधर, गन्धर्व, अप्सरा गानकरत सब ठाढ़े। चारण, सिद्ध पढ़त विरदावलि लै फगुवा सुखबाढ़े ॥ २८ ॥ चन्द्रलोक दीन्हों शशिको तब फगुवामें हरि आप। सब नक्षत्रको राजा दीन्हों शशिमंडल में छाप ॥ २९ ॥ मंगल, बुद्ध शुक्र अरु शनि अरु राहु केतु यह जाना।रवि अरु शशि सबहिनको फगुवा दीन्हों चतुर सुजान। ॥ ३० ॥ अतल वितल अरु सुतल तलातल और महातल जान। पाताल और रसातल मिलि सातों भुवन प्रमान ॥ ३१ ॥ संकर्षणको धाम परमरुचि तहँ राजत निज वीर। शेषनाग ताके तर कूरम बसत महाधन धीर ॥३२ ॥ इलावर्त्त और किम्पुरुषा कुरु और हरिवर्ष केतुमाल। हिरन मैरमनक भद्रासन भरतखण्ड सुखपाल॥३३॥ सातों द्वीप कहे शुक मुनिने सोइ कहत अब सूर।जंबु प्लक्ष, क्रौंच, शाक, शाल्मलि, कुश, पुष्कर भरपूर ॥ ३४ ॥ अपने २ स्थाननपर तब फगुवा दियो चुकाय।जब जब हरि गायाते दानव प्रकट भयेहैं आय॥३५॥तब तब धारि अवतार कृष्णने कीन्हों असुर सँहार। सो चौबीस रूप निज कहियत वर्णन करत विचार॥३६॥प्रथम किये स्वायंभुवमनु नृप अज आज्ञा यह दीन्हीं। भूपर जाय राज तुम करिहौ सृष्टि विस्तार यह कीन्हीं ॥ ३७ ॥ स्वायंभुवमनु अरु शतरूपा तुरत भूमि पर आये। जलमें मगन भये भुवदेखे फिर अजपै चलिआये ॥ ३८॥ जासों आय कही सबही विधि भुवद्रव देखियत नाहीं। तब अति ध्यान कियो श्रीपतिको केशव भये सहाहीं ॥ ३९ ॥ आईछींक नाकते प्रकटे शूकर अति लघु रूप। देखत गजसे होयगये हैं कीन्हों वृहत स्वरूप ॥ ४० ॥ जय जय करत सकल सुर नर मुनि जल में कियो प्रवेश। जाय पताल बाट गहिलीन्हीं धरणी रमानरेश ॥ ४१ ॥ ते भुवकमल कुसुमकी नाईं चले मनहुँ गजराज। कछुडर नाहिन जियमें डरपति अति आनन्द समाज ॥ ४२ ॥ योगी साधु, सनकादिक चारों गये हरिके निज लोक। कीन्हें क्रोधमने जब कीन्हें दियो शाप अति शोक ॥ ४३ ॥ जय अरु विजय असुर योनिनको भये तीन अवतार। तिनमें प्रथम लियो कश्यप गृह दितिकी कोखि मँझार ॥ ४४ प्रथम भयो हिरण्याक्ष महाबल जिन जीते लोकपाल। नारद सीखगयो शूकरपै देखो रूप विकराल ॥४५॥ सहसवर्षलौं जलमें जूझे कियो दनुज संहार। पाछे आय भूमिको थापी कियो यज्ञ विस्तार ॥ ४६ ॥ स्वायम्भुव शतरूपा तनया कहियत तीन प्रमान। आकूती देवहूती और परसूती चतुरसुजान ॥ ४७ ॥ परसूती दई दक्षप्रजापति तिनकी सती सयान। सो दीन्हीं महादेव देवको अति आनंद सुज्ञान ॥ ४८ ॥ तज्यो देह अभिमान पायके बहुरि दक्षगृहजाई। पातिव्रतहि धर्म जब जान्यो बहुरो रुद्र बिहाई ॥४९॥आकूती दई रुचि प्रजापति भये यज्ञ अवतार । इन्द्रासन बैठे सुख विलसत दूर किये भुवभार ॥ ५० ॥

देवहुती कर्दमको दीन्हों तिन कीन्हों तपभारी। विन्दु सरोवर आये माधव किये गरुड असवारी ॥ ५१ ॥ दियो वरदान सृष्टि करिवेको स्तुतिकरी प्रमान। मेरो अंश अवतार होयगो कहि भये अन्तर्द्धान ॥ ५२ ॥ पाछे ऋषि निज तप मनलायो कीन्हों प्रकट विमान। तामें बैठि सकल जग देख्यो कन्यानो सुखदान ॥ ५३ ॥ पाछे कपिलरूप हरि प्रकटे दर्शनकरि मुनिराय। कीन्हों त्याग गये वनको तव ब्रह्म परमपदपाय ॥५४॥ पाछे विविधज्ञान जननीको दीन्हों कपिल दृढ़ाय। सांख्ययोग अरु ज्ञानभक्ति दृढ़ वरणी विविध बनाइ ॥ ५५ ॥ जलको रूप तुरत ह्वै गइ वह हरिके रूप समाय। चले मगनह्वै ब्रह्मध्यान कर गंगासागर न्हाय ॥ ५६ ॥ अजहूंलौं राजत नीरधि तट करत सांख्य विस्तार। सांख्यायनसे वहुत महामुनि सेवत चरण सुचार ॥ ५७ ॥ अत्रै पुत्रभये ब्रह्माके तिन कीन्हों तप जाय। आये तीन देवताके ढिग ब्रह्मा शिव हरिराय ॥ ५८ ॥ तव उन मांग्यो सुत तुमहींसे तीनो प्रकटे आय। अज, शशि,अंश, रुद्र, दुर्वासा, दत्तात्रेय, हरिराय॥५९॥ अनुसूयाके गर्भ प्रकटह्वै कियो योग आराधि। यम अरु नियम प्रमान प्रत्याहार धारण ध्यान समाधि ॥ ६० ॥ आसन कसव सिद्ध योगकर प्रकटकला जगदीश। दीन्हो भोग सहस नृपको वहु करुणानिधि जगदीश ॥ ६१ ॥ कीन्हे गुरु चौवीस सीखलै यदुको दीन्हों ज्ञान। पातंजलिसे मुनिपद सेवत करत सदा अज ध्यान ॥ ६२ ॥ जब सृष्टिनपर किरपा कीन्हीं ज्ञानकला विस्तार।सनक सनंदन और सनातन चारों सनतकुमार॥६३॥ उनसे कह्यो सृष्टि नानाविधि रचनाकरो वनाय।उन नहिं मान्यो तब चतुरानन खीझे क्रोध उपाय॥ ॥ ६४ ॥ शंकर प्रकटभये भ्रुकुटीते करों सृष्टि निर्मान। भूत प्रेत वेताल रचो वहु दौरे विधिको खान ॥ ६५ ॥ पूरण करो कह्यो चतुरानन सृष्टि महादुख दैन। तव शंकर तपस्या को निकसे चितै कमलदल नैन॥६६॥मूरति त्रिया जु भई धर्मकी तिनके हरि अवतार।नारायण जब भये प्रकट वपु तिन मेट्यो भुवभार ॥ ६७ ॥ सहस कवच इक असुर सँहारेउ वहुरि कियो तप भारी। शोच परेउ सुरपति को तव उन पठइ अप्सरानारी ॥ ६८ ॥ बहुत भांति उन कियो परमछल तपमें उनके काज। कछु नाहिं चली ब्रह्मनारायण सुखसमाज तिय साज ॥ ६९ ॥ इक उर्वशी हृदय उपजाई दई शक्रकोताय। ताको देखि देखि जीवतहैं अजहुँ इन्द्र सुख पाय ॥ ७० ॥ स्वायंभुव के द्वितिय पुत्र उत्तानपाद मतिधीर। तिनके ध्रुव बालक जो जाये औ उत्तम गंभीर ॥ ७१ ॥ नृपके पास गये गोदीमें वैठनको सुकुमार। तब लघु मात कह्यो तब वैठो जब मेरे अवतार॥७२॥ सुनि कटु वचन गयो माता पै तब उन ज्ञान दृढ़ायो। हरिकी भक्ति करो सुख नीके जो चाहो सुख पायो॥७३॥पांचवर्षके निकसि चले तव मधुवन पहुँचे आय। विच नारदमुनि तत्त्व वतायो जपैं मंत्र चितलाय ॥७४॥ कछुदिन पत्र भक्ष करिबीते कछु दिन लीन्हों पानी। कछु दिन पवन कियो अनुप्राशन रोक्यो श्वास यह जानी ॥ ७५ ॥ दारुण तप जब कियो राजसुत तब कांप्यो सुरलोक। त्राहि २ हरिसों सब भाष्यो दूर करो सब शोक ॥७६॥तब हरि कह्यो कोऊ जिन डरपो अबहिं तुरत मैं जैहों। बालक ध्रुव वन करत गहन तप ताहि तुरत फलदैहों ॥ ७७ ॥ इतनी कहत गरुड पर चढ़िकै तुरतहि मधुवन आये। कंबु कपोल परसि बालकके वाणी प्रकट कराये ॥ ७८ ॥ स्तुति करी बहुत ध्रुव सब विधि सुनि प्रसन्न भये आप। दीये राज भूमि मण्डलको सब विधि थिरकरि थाप ॥ ७९ ॥ हरि वैकुण्ठ सिधारे पुनि ध्रुव आये अपने धाम। कीन्हों राज तीस पट वर्पन कीन्हें भक्तन काम ॥ ८० ॥ यक्ष प्रबल बाढ़े भुव मंडल तिन मारचो निज भ्रात।

तिनके काज अंश हरि प्रगटे ध्रूव जगत विख्यात ॥ ८१ ॥ बहुत वर्षलौं राज कियो ध्रुव फिर आये निजलोक । सबके ऊपर सदा विराजत ध्रूव सदा निःशोक ॥ ८२ ॥ सनकादिक पुछियो चतुरानन ब्रह्मजीवको बीच । प्रकट हंसवपु धरचो जगत पुर जोपै नीर सुमीच ॥ ॥ ८३ ॥ यह भुवमंडल को रसकाढ़्यो भांति २ निज हाथ । धरि पृथुरूप कियो जगआनँद अखिललोलके नाथ ॥ ८४ ॥ प्रियव्रत वंश धरेउ हरि निजवपु ऋषभदेव यह नाम। कीन्हें काजसकल भक्तनको अंग २ अभिराम ॥ ८५ ॥ कीन्हों गर्व महा मघवाने वर्षा बरषो नाहिं। तब हरि आप मेघह्वै बरषे करी परम सुख छाहिं ॥ ८६ ॥ ज्ञान उपदेश कियो पुत्रन को ब्रह्मावर्त मँझार। पाछे करि संन्यास जगत्में विचरे परम उदार ॥ ८७ ॥ आठो सिद्धि भई सन्मुख जब करी न अंगीकार। जय जय जय श्रीऋषभदेव मुनि परब्रह्म अवतार ॥८८॥ ब्रह्मसभामें यज्ञकियो जब करन वेदउच्चार। प्रकटभये हयग्रीव महानिधि परब्रह्म अवतार ॥ ८९ ॥ चार वेद लैगो शंखासुर जलमें रह्यो छिपाय। धरि हयग्रीव रूप हरिमारचो लीन्हें वेद छुड़ाय ॥ ९० ॥ सत्यव्रत राजा रघुवंशी प्रथम भये मनुवंश। कीन्हों तप बहु भांति परमरुचि प्रकट भये हरिअंश ॥ ९१ ॥ धरि लघुरूप मीनको मोहन आये उनके पानि। तब उन जलमें डारिदियो फिर तब बोले हरि बानि ॥ ९२ ॥ जलके बीच डारि जिन मोको बडे मच्छ डर लाग। यह कहि बृहत रूप हरि धरेउ सत्यव्रत के भाग ॥ ९३ ॥ सतयें दिवस होयगी परलय आवेगी इकनाव। तामें बैठ सप्तऋषि अरु तुम करो भजन ममभाव ॥ ९४ ॥ इतनो कहि हरिनृप देखतही भये जो अन्तर्धान। सातैं दिवस भयो जब परलय तब कीन्हों नृप ज्ञान ॥ ९५ ॥ सबहि अन्नको बीज लियो नृप और लियो ऋषि साथ। बैठो नाव ध्यान हरिको करि दर्शन दीन्हों नाथ ॥ ९६ ॥ बासुकि नाग आय तहँ तत्क्षण बांधी दृढकरि नाव। पूंछ्यो ज्ञान कह्यो सो सब हरि तत्त्व विधान बनाव ॥ ९७ ॥ बहुत काललौं विचरे जलमें तब हरि भये सुशांति। बीस प्रलय विविध नानाकर सृष्टि रची बहुभांति ॥ ९८ ॥ यह हरि मच्छरूप जब लीन्हों कियोचरित विस्तार। जय जय जय श्रीमान महावपु जय जय जगत अधार ॥ ९९ ॥ सुर अरु असुर मथन कीन्हों निधि चौदह रत्न निकार। पर्वत पीठ धरेउ हरि नीके लियो कूर्म अवतार ॥ १०० ॥ हिरण्यकशिपु अति प्रबल दनुज है तपकीन्हों परचण्ड। तब उन बर दीन्हों चतुरानन कीन्हों अमरअखण्ड ॥ १०१ ॥ जप तप गयो तबहिं मघवाने सब संपति गहि लीन्ही। गहे जब कच कामिनि राजाकी तब नारद सिख दीन्हीं ॥१०२॥ याके गर्भ बसतहै हरिजन सुनु सुरपति यह बात। तब तजि दई आप लै आये निज आश्रम विख्यात ॥ १०३ ॥ नित प्रति ज्ञानकथा हंसनसों कहत रहत मुनिराज। सुनि प्रहलाद प्रसन्न कोषिमें अति आनन्द समाज ॥ १०४ ॥ ता पाछे तपकियो असुरबहु फिरि देख्यो निजधाम तब नारद मुनि दई कथा ध्रुव लैआयो है ग्राम ॥ १०५ ॥ पाछे लोकपाल सबजीते सुरपति दियो उठाय। वरुण कुबेर अग्नि यम मारुत सुबस कियो क्षण माय ॥ १०६ ॥ हाहाकार भयो सुरलोकन गये सबै अजपासातब अज ध्यान कियो माधवको बाणी भई अकास॥१०७॥ सकललोक यह देत असुर दुख तऊ न करौं सँहार। जब मेरे जनको दुखदेहै क्षणहिंमें डारौं मार ॥ १०८ ॥ जब प्रह्लाद प्रकट ताके गृह पांच वर्षके भैहैं। आदर बहु कीन्हों राजाने पठन विप्रगृह गैहैं ॥ १०९ ॥ जब वह विप्र पढ़ावै कुछ २ सुनके चित धरिराखै। जब वह जाय तबहिं सबहिनसों राम राम मुखभाखै ॥ ११० ॥ लरिका और पढ़त शालामें तिनहिं करत उपदेश। हरिको भजन करो सबही

मिलि और जगत सुखलेश ॥ १११ ॥ यहि विधि करि उपदेश सबनको किये भजन रसलीन। सण्डामर्के जो पूंछन लाग्यो तब यह उत्तर दीन ॥ ११२ ॥ राम कृष्ण अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज। सोई सार जगतमें कहियत सुनो देव द्विजराज ॥ ११३ ॥ येही बात जगत्में नीकी सोइ पढ़त हम आज। जबहीं विप्र कहेउ जो असुरसों पुत्र पढ़त विनकाज ॥ ११४ ॥ तबहिं असुर प्रह्लाद बुलाये लिये गोद भरिअंक। कहो पुत्र तुम कहा पढ़ौहौ पूँछत कहेउ निशंक ॥ ११५ ॥ श्रवण, कीर्त्तन, स्मरणपाद, रत, अरचन, वंदनदास। सख्य और आत्मा निवेदन, प्रेमलक्षणा जास ॥ ११६ ॥ सुनो पिता हौं यही पढ़चो हूं और बात नहिं जानूं। इनते और मोहिं जो कहियत सो कबहूं नहिं मानूं ॥ ११७ ॥ दीन्हों पटकि भूप धरणीपर कहेउ विप्रसों खीझ। रेमूरख तू कहा पढ़ायो कैसे देउँ तोहिं रीझ ॥ ११८ ॥ जो यह मेरो वैरी कहियत ताको नाम पढ़ायो। देहु गिराय याहि पर्वततें क्षण गत जीव करायो ॥ ११९ ॥ दीन्हों डारि शैलते भूपर पुनि जल भीतर डारो। डारि अग्निमें शस्त्रनमारो नानाभांति प्रहारो ॥ १२० ॥ तऊ न घातभई अंगनकी जहँ तहँ राम बचायो। तब नृप आप शस्त्रकर गहिकै बहुतहि त्रास दिखायो ॥ १२१ ॥ कहां है राम कृष्ण वह तेरो यों कहि गर्जन कीन्हीं। घट घट जल थल व्योम धरणि में व्यापक यह ध्वनिलीन्हीं ॥ १२२ तब लै खड्ग खम्भमें मारो भयो शब्द अतिभारी। प्रकट भये नरहरि वपु धरि हरि कटकट करि उच्चारी ॥ १२३ ॥ पकरिलियो क्षणमांझ असुर बल डारो नखन विदारी। रुधिर पानकरि आंत मालधरि जय जय शब्द उचारी ॥ १२४ ॥ मारो दैत्य दुष्ट इकक्षणमें जय नृसिंह वपुधारे। पुष्पन वृष्टि करत सुर नर मुनि भये भक्त रखवारे ॥ १२५ ॥ रमा निकट नाहिं आवत हरिके ऐसो वपु हरिधारो। अज सनकादि देव नारद मुनि जानत रूप निहारो ॥१२६॥ अपनी अपनी स्तुति करि कै सबहिन येहे सुनायो। गन्धर्व अरु विद्याधर चारण विमल विमल यशगायो ॥१२७॥तब प्रह्लाद आय हरि पद सों शीशनाय यह भाख्यो। जय जय जय जगदीश जगतगुरु मोर अधम प्रण राख्यो ॥१२८॥तुमहीं आदिअखंड अनूपम अशरण शरण मुरारादेव देव परब्रह्म परिपूरण भक्तहेतु अवतार ॥१२९॥ जहँ जहँ भीरपरत भक्तनको तहँ तहँ होत सहाय। स्तुतिकारि मनहर्ष बढ़ायो लेहनजीभ कराय ॥ १३० ॥ तब बोले नरसिंह कृपाकरि सुनहु भक्त मम बात। मन्वन्तर को राजदियो तोहिं धरचो शीशपर हाथ॥१३१॥ निर्गुण सगुणहोय मैं देख्यो तोसों भक्त न पाऊं।जहँ जहँ भीर परत भक्तनको तहां प्रकट हों आऊं ॥ १३२ ॥ सुत प्रह्लाद प्रतिज्ञा मेरी तोको कबहुँ न त्यागूं। जैसे धेनु बच्छको चाटत तैसे मैं अनुरागूं ॥ १३३ ॥ जो मांगों सो देहुं तुरतही नाहिं विलम्ब कछु लाग।तब प्रह्लाद यही वर मांग्यो चरण कमल अनुराग॥१३४॥करि कृपा दीन्हों करुणानिधि अटल भक्ति थिरराज।अन्तर्धान भये हरि तहँते सफलभये सबकाज॥१३५॥नारदरूप जगत उद्धारण विचरत लोकन माय।करि उपदेश ज्ञान हरि भक्तहि अरु वैराग्यदृढाय॥१३६॥स्वायंभुव शतरूपा दोऊ कहियतहैं अवतार।जगको धर्म प्रचार किये भुव भक्त कर्म आचार ॥१३७॥करुणाकर जलनिधिते प्रकटे सुधाकलश लैहाथ।आयुर्वेद विस्तारण कारण सब ब्रह्माण्डके नाथ ॥१३८॥ क्षत्रिय दुष्टवढ़े जो भुवपर लियो कृष्ण अवतार।परशुराम ह्वैके द्विजथापे दूरकियोभूभार॥१३९॥रघुकुलवंश चतुर चूड़ामणि पुरुषोत्तम अवतार। दशरथके गृह जन्म लियो हरि रूपराम सुकुमार ॥ १४० ॥ रावण कुम्भकर्ण असुराधिप बढ़े सकल जगमाहिं। सबहिन लोकपाल उन जीते कोऊ बाच्योनाहिं ॥१४१॥ सकल देव मिलि जाय पुकारे चतुराननके पास। लै शिवसंग चले चतुरानन क्षीरसिन्धु

सुखवास ॥ १४२ ॥ स्तुतिकरि बहुभांति जगाये तव जागे निजनाथ । आज्ञादई जाय कपिकुलमें प्रकटो सब सुर साथ ॥ १४३ ॥ तव ब्रह्मा सवहिनसों भाष्यो सोई सब सुर कीन्हों । सातों द्वीप जाय कपिकुलमें आय जन्म सुर लीन्हों॥१४४॥ अपने अंश आप हरि प्रकटे पुरुषोत्तम निजरूप। नारायण भुवभार हरोहै अति आनन्द स्वरूप ॥१४५॥ वासुदेव यों कहत वेदमें हैं पूरण अवतार। शेषसहसमुख रटत निरंतर तऊ न पावतपार ॥ १४६ ॥ सहसवर्षलों ध्यान कियो शिव रामचरित सुखसार । अवगाहन करिकै सब देख्यो तऊ न पायो पार ॥ १४७ ॥ वितिसमाधि सती तव पूछ्यो कहोमर्मगुरुईश । काको ध्यान करत उरअंतर को पूरण जगदीश ॥ १४८ ॥ तव शिव कहेउ राम अरु गोविंद परमइष्ट इक मेरे। सहस वर्ष लौं ध्यान करत हौं राम कृष्ण सुख केरे ॥ १४९ ॥ तामें रामसमाधि करी अब सहसवर्ष लौं वाम । अतिआनन्द मगन मेरो मन अँग अँग पूरण काम॥१५०॥दाया करि मोको यह कहिये अमर होहुँ जेहि भांति । मोहिं नारद मुनि तत्त्व बतायो ताते जिय अकुलाति ॥१५१ ॥ तव महादेव कृपाकरिकै यह चरितकियो विस्तार । सोब्रह्मांडपुराण व्यासमुनि कियो वदन उच्चार ॥ १५२ ॥ मुनि वाल्मीकि कृपा सातों ऋषि राम मंत्र फल पायो । उलटो नाम जपत अघवीत्यो पुनि उपदेश करायो॥१५३॥रामचरित वर्णनके कारण वाल्मीकि अवतार । तीनों लोक भये परिपूरण रामचरित सुखसार ॥ १५४ ॥ शतकोटी रामायण कीनो तऊ न लीन्हों पार । कह्यो वशिष्ठमुनि रामचन्द्र सो रामायणउच्चार ॥१५५॥ कागभुशुंड गरुड सों भाष्यो रामचरित अवतार।सकल वेद अरु शास्त्र कह्यो है रामचन्द्र यश सार ॥ १५६ ॥ कछु संक्षेप सूर अब वर्णत लघुमति दुर्बल वाल । यह रसना पावनके कारण मेटन भव जंजाल ॥ १५७ ॥ तीनोंव्यूह संगलै प्रकटे पुरुषोत्तम श्रीराम । संकर्षण प्रद्युम्न लक्ष्मण भरतमहासुखधाम॥१५८॥ शत्रुघ्नहि अनिरुध कहियतु है चतुर्व्यूह निज रूप । रामचन्द्र प्रकटे जब गृहमें हरषे कोशलभूप ॥१५९॥ पुष्य नक्षत्र नौमी जु परम दिन लग्न शुद्ध शुभवार । प्रकटभये दशरथ गृह पूरण चतुर्व्यूह अवतार ॥ १६० ॥ अति फूले दशरथ मनहीं मन कौशल्या सुख पायो सौमित्रा कैकयी मन आनँद यह सवहिन सुत जायो॥ १६१ ॥ गुरु वशिष्ट नारदमुनि ज्ञानी जन्मपत्रिका कीनी । रामचन्द्र विख्यात नाम यह सुर मुनि की सुधि लीनी ॥१६२॥ देत दान नृप राज द्विजनको सुरभी हेम अपार । सब सुन्दरि मिलि मंगल गावत कंचन कलश दुवार ॥१६३॥ आये देव और मुनिजन सब दे अशीश सुख भारी । अपने अपने धाम चले सब परम मोद रुचिकारी ॥ १६४ ॥ मनवांछित फल सवहिन पाये भयो सबन आनन्द । वालरूप ह्वैके दशरथसुत करतकेलि स्वच्छन्द ॥ १६५ ॥ घुटुरुन चलत कनक आंगन में कौशल्या छवि देखत । नील नलिन तनु पीत झँगुलिया घनदामिनि द्युति पेखत ॥ १६६ ॥ कवहुँक माखन रोटी लैके खेल करत पुनि मांगत । मुख चुंबत जननी समझावत आय कंठ पुनि लागत ॥ १६७ ॥ कागभुशुंड दरश को आये पांच वर्षलौं देखे । स्तुति करी आपु बर पायो जन्म सफल करि लेखे ॥ १६८ ॥ कृपा करि निज धाम पठायो अपनो रूप दिखाय । वाके आश्रम कोउ बसतहै माया लगत न ताय ॥ १६९ ॥ प्रातकाल उठि जननि जगावत उठो मेरे वारे राम । उठि बैठे दतुवन लै आई करी सुखारी श्याम ॥ १७० ॥ चारौ भ्रात मिल करत कलेऊ मधु मेवा पकवान । जल आचमन जब वहे विप्र ? फिर कीन्हों स्नान ॥ १७१ ॥ करत शृंगार चार भइया मिलि शोभा वरणि न मुखभावै ॥ १?चित्र सुभग चौतनिया इन्द्र धनुप छवि छाई ॥ १७२ ॥ अलकावलि मुक्तावलि

गूंथी डोर सुरंग विराजै। मनहुँ सुरसरी धार सरस्वति यमुना मध्य विराजै ॥ १७३ ॥ तिलक भाल पर परम मनोहर गोरोचन को दीनो। मानो तीन लोक की शोभा अधिक उदय सो कीनो ॥ १७४ ॥ खंजन नैन वीच नासापुट राजत यह अनुहार। खंजन युग मनो लरत लराई कीर वुझावत रार ॥ १७५ ॥ नासाके वेसर में मोती वरण विराजत चार। मनो जीव शनि शुक्र एकह्वै वाढे रविके द्वार ॥ १७६ ॥ कुंडल ललित कपोल विराजत झलकत आभागंड। इन्दी वरपर मनो देखियत रविकी किरण प्रचंड ॥ १७७ ॥ अरुण अधर दमकत दशनावलि चारु चिवुक मुसक्यान। अति अनुराग सुधाकर सींचत दाडिमवीज समान ॥ १७८ ॥ कंठसिरी विच पदिक विराजत वहुमणि मुक्ताहार। दहिनावर्त देत ध्रुव तारे सकल नखत वहुवार ॥ १७९ ॥ रत्न जडित कंकण वाजूवंद नगन मुद्रिका सोहै। डार डार मनु मदन विटपतरु विकच देखि मन मोहै ॥ १८० ॥ कटिकिंकिणि रुनु झुनु सुनि तनकी हंस करत किलकारी। नूपुरध्वनि पग लालि पन्हैया उपमा कौन विचारी ॥ १८१ ॥ भूपण वसन आदि सव रचि रचि माता लाड लडावै। रामचन्द्र की देख माधुरी दर्पण देख दिखावै ॥ १८२ ॥ निज प्रतिविंव विलोक मुकुर में हँसत राम सुख रास। तैसेइ लक्ष्मण भरत शत्रुहन खेलत डोलत पास ॥ १८३ ॥ दशरथ राय न्हाय भोजन को वैठे अपने धाम। लावो वेगि राम लक्ष्मण को सुनि आये सुखधाम ॥ १८४ ॥ वैठे सँग वावा के चारो भैया जेंवन लागे। दशरथ राय आपु जेंवतहैं अति आनँद अनुरागे ॥ १८५ ॥ लघु लघु ग्रास राम मुख मेलत आपु पिता मुख मेलत। वालकेलि को विशद परमसुख सुखसमुद्र नृप झेलत ॥ १८६ ॥ दाल भात घृत कढ़ी सलोनी अरु नाना पकवान। आरोगत नृप चारिपुत्र मिलि अति आनन्दनिधान ॥ १८७ ॥ अचवनकर पुनि जलअचवायो जवनृप वीरा लीनो। राम लपण अरु भरत शत्रुहन सवहिन अचवनकीनो ॥ १८८ ॥ वीराखायचले खेलनको मिलिकै चारोवीर। सखासंग सव मिलेवरावर आये सरयू तीर ॥ १८९ ॥ तीर चलावत शिष्यसिखावतधरनिशानदेखरावत। कवहुँक सधें अश्व चढि आपुन नानाभांति नचावत ॥ १९० ॥ कवहुँक चारभ्रात मिलि अगिआ जात परम सुख पावत। हरिनआदि वहुजंतु किये वध निज सुरलोक पठावत ॥ १९१ ॥ यहि विधि वन उपवन वहुक्रीडा करीराम सुखदाई। वाल्मीकि मुनि कही कृपाकर कछुयक सूर जो गाई ॥ १९२ ॥ भई सांझ जननी टेरतहै कहां गए चाराभाई। भूख लगी ह्वैहै लालन को लावो वेगि वुलाई ॥ १९३ ॥ इतने मांझ चार भैया मिलि आये अपने धाम। मुखचुंवत आरतीउतारत कौशल्या अभिराम ॥ १९४ ॥ सौमित्रा कैकायि सुख पावत वहु विधि लाड लडावत। मधु मेवा पकवान मिठाई अपने हाथ जेंवावत ॥ १९५ ॥ चारों भ्रातन श्रमित जानिकै जननी तव पौढाये। चापत चरण जनानि अप अपनी कछुक मधुर स्वर गाये ॥ १९६ ॥ आई नींद राम सुख पायो दिनको श्रम विसरायो। जागे भोर दौरि जननी ने अपने कंठलगायो ॥ १९७ ॥ विश्वामित्र वडे मुनि कहियत यज्ञकरत निजधाम। मारिच और सुवाहु महासुर विघ्न करत दिनयाम ॥ १९८ ॥ परब्रह्म अवतार जानिकै आये नृपके पास। दशरथ राय वहुत पूजा विधि किये प्रसन्न हुलास ॥ ॥१९९ ॥ भोजन कर जवहीं जुविराजे तव भाष्यो मुनिराय। यज्ञ सकल कीजे मेरो अव दीजै राम पठाय ॥ २०० ॥ तव नृप कह्यो राम हैं वालक मोको आज्ञा कीजै। तव द्विज कह्यो राम रपमेश्वर वचन मान यह लीजै ॥ २०१ ॥ गुरु वशिष्ठ सव विधि समझाये राम लपण सँग दीन्हे।

मारग में अहल्या उद्धारी नावक निज पदछीने ॥ २०२ ॥ विश्वामित्र सिखाई बहुविधि विद्या धनुष प्रकार। मारग में ताडकाजु आई धाई वदन पसार ॥ २०३ ॥ छिनमें राम तुरत सो मारी नेक न लागीवार। दीन्हीं मुक्ति जानि निज महिमा आये ऋषिके द्वार ॥ २०४ ॥ कीन्हें विप्र यज्ञ परिपूरण असुर विघ्नको आये। अग्निबाण कर दहन कियोहै एक समुद्र पठाये ॥ २०५ ॥ जनक विदेह कियो जु स्वयम्वर बहु नृप विप्र बुलाये। तोरन धनुषदेव त्र्यम्बकको काहू यतन न पाये ॥ २०६ ॥ विश्वामित्र मुनि वेग बुलाये सकल शिष्यलैसंग। राम लषण सँगलिये आपने चले प्रेमरसरंग ॥ २०७ ॥ जहँ तहँ उझकि झरोखा झांकत जनक नगरकी नार। चितवनि कृपाराम अवलोकत दीन्हों सुख जो अपार ॥ २०८ ॥ कियो सन्मान विदेह नृपतिने उपवनवासी कीन्हों। देखन रामचले निजपुरको सुख सबहिन को दीन्हों ॥ २०९ ॥ सब पुरदेखि धनुषपुर देख्यो देखे महल सुरंग। अद्भुत नगर विदेह विलोकत सुखपायो सब अंग ॥ २१० ॥ कहत नारिसब जनक नगरकी विधि सों गोद पसार। सीताजूको वर यह चहिये है जोरी सुकुमार॥२११॥ अपने धामफिरे तब दोऊ आये जान भई कछुसांझ। कर दण्डवत परसिपद ऋषिके बैठे उपवन मांझ ॥ २१२ ॥ संध्याभई कृत्य नित करिकै कीन्हों ऋषि परणाम। पौढ़े जाय चरण सेवा द्विज करके अति विश्राम ॥ २१३ ॥ ब्रह्म मुहूरत भयो सवेरो जागे दोऊभाई। कर परणाम देवगुरु द्विजको जल सुस्नान कराई ॥ २१४ ॥ आयेभूप देश देशनके जुरी सभा अतिभारी। तहां बुलाये सकल द्विजनको जनक सभा मंझारी ॥ २१५ ॥ कौशिक मुनि तहँ छविसों पधारे लिये शिष्य सँग सात। चले नित्य आह्निक सबकर द्विज उर आनँद न समात ॥ २१६ ॥ दोनों भ्रात संगमें लीन्हें आये राजदुवार। जहँ बैठे सब भूप ओपसों बाढ्यो गर्व अपार ॥ २१७ ॥ अपने अपने भुज बल तोलत तोरनधनुषपुरार। कछुनहिं चलत खिसायगये सब रहेबहुतपचिहार॥२१८॥ सीता कहत सहेलिनसों पुनि यही कहत रघुनन्द। तब उन कह्यो सकलसुखसागर सो ये परमानन्द ॥२१९॥ वार वार जिय शोचकरत हैं विधिसों वचन उचारी। मन क्रम वचन यहै वरदीजो मांगत गोदपसारी ॥ २२० ॥ एकवार सुरदेवी पूजत भयोदरश सखि मोहिं। तादिनते छिन कल न परतहै सत्य कहतहौं तोहिं ॥ २२१ ॥ सबनृपपचे धनुपनहिं टूट्यो तब विदेह दुखपायो। क्रोध वचनकरि सबसे बोले क्षत्री कोउ न रह्यायो ॥ २२२ ॥ यहसुनि लक्ष्मण भये क्रोधयुत विषम वचन यों बोले। सूरजवंश नृपति भूतलपर जाके बल विन तोले ॥ २२३ ॥ कितकवात यह धनुष रुद्रको सकल विश्वकर लैहौं। आज्ञापाय देव रघुपतिकी छिनकमांझ हठगैहौं ॥ २२४ ॥ सबके मनको देख अँदेशो सीता आरत जानी। रामचन्द्र तबहीं अकुलाने लीन्हों शारंगपानी ॥ २२५ ॥ छिनमें करलैकै जुचढायो देखत हैं सबभूप। डारचो तोर अवात शब्दभयो जैसे कालको रूप ॥ २२६ ॥ सबहीदिशा भई अति आतुर परशुराम सुनि पायो। परशुसम्हार शिष्यसँगलैकै छिनही में तहँआयो॥२२७॥जय जयकार भयो जगतीपर जनकराज अति हरषे। सुर विमान सब कौतुकभूले जयध्वनि सुमनन वरषे ॥ २२८ ॥ जनकराज तब विप्रपठाये वेगवरात बुलाई। दशरथराज बाजि गजलैकै सबहीं सौज तुराई ॥ २२९ ॥ चली वरात विपुल धनलैकै जुरे मनुज नहिंपार। शोभासिंधु करत नहिंआवे वर्णन करत उचार ॥ २३० ॥ गुरु वशिष्ठ मुनि लग्न दियो शुभ शुभनक्षत्र शुभवार। आयेजान नृपति सन्माने कीन्हीं अति मनुहार ॥ २३१ ॥ ब्याह केलि सुख वर्णनकीन्हों मुनि वाल्मीकिअपार। सोसुख सूरकह्यो वह

कीरतिं जगतकरी विस्तार ॥ २३२ ॥ वेदशास्त्र मथकरी व्याहविधि सोइ कीन्हीं नृपराय। राम लषण अरु भरत शत्रुहन चारों दिये विवाय॥२३३॥होम हवन द्विजपूजा गणपति सूरज शक्र महेश। दीन्हों दान वहुत विप्रनको राजा मिथिल नरेश ॥ २३४ ॥ उत्सवभयो परम आनँदको वहुत दायजोदीन्हों। भयेविदा दशरथनृप नृपसों गमन अवधपुर कीन्हों ॥ २३५ ॥ भृगुपतिआय जानि जव रघुपति मिलेधाय शिरनाय। दशरथराय विनय वहु कीन्हीं जियमें अति डरपाय ॥ २३६ ॥ तव मुनि कह्यो धनुष क्यों तोरेउ रुद्र परम गुरु मेरे। रामचंद्र पूरण पुरुषोत्तम नेकनयन जव हेरे ॥ २३७ ॥ लीन्हों अंश खैंचि भृगुपतिको अपनेरूप समायो। करोजाय तप शैल महेंद्रपै मुनि मुनिवर शिरनायो ॥ २३८ ॥ अतिआनन्द अयोध्याआये कियो नगर शृंगार। कदलीखंभ चौक मोतिनके बाँधी वंदनवार ॥ २३९ ॥ कियोप्रवेश राजभवननमें रामचन्द्र सुखराश। अद्भुत भवन विराजत रत्नन सूरजकोटि प्रकाश ॥ २४० ॥ द्वादश वरष विराजे वालक फिर भूभारहरो। कैकेयीके वचन प्रमानकिये नृप तव यह काजकरो ॥ २४१ ॥ वचन समझ नृप आज्ञाकीन्हों देव उपायकरो। रामचन्द्र पितुआज्ञा मानी जियमें वचनधरो ॥ २४२ ॥ यह भूभार उतारन रघुपति वहुत ऋषिन सुखदेन। वनोवासको चले सियासँग सुखनिधि राजिवनैन ॥ २४३ ॥ मारगमें हरि कृपा करीहै परमभक्त इकजान । तहँतेगये जु चित्रकूटको जहां मुनिनकीखान ॥ २४४ ॥ वाल्मीकि मुनि वसत निरंतर राममंत्रउच्चार। ताकोफल यह आजभयो मोहिं दर्शनदियो कुमार ॥ ॥ २४५ ॥ पूजाकर पधराय भवनमें रामचन्द्र परनाम। कियो विविधविधि पूजाकरिकै ऋषिचरनन शिरनाम ॥ २४६ ॥ वहुत दिवसलौं वसे जगतगुरु चित्रकूट निजधाम। किये सनाथ वहुत मुनिकुलको वहुविधि पूरे काम ॥ २४७ ॥ भरतजान जियमें रघुपतिको दुःसह परम वियोग। आयेधायसंग सवलैके पुरवासी गृहलोग ॥ २४८ ॥ विन दशरथ सव चले तुरतही कोशलपुरके वासी। आये रामचन्द्र मुखदेख्यो सवकी मिटी उदासी ॥ २४९ ॥ रामचन्द्र पुनि सवजन देखे पिता न देखनपाये। पूछीवात कह्यो तव काहू मनवहुविधि विलखाये ॥ २५० ॥ वेदरीतिकरि रघुपति सवविधि मर्य्यादा अनुसार। वहुतभांति सव विधि समुझाये भरत करी मनुहार॥२५१॥ गुरु वशिष्ठ मुनि कह्यो भरतसों राम ब्रह्मअवतार। वनमेंजाय वहुतमुनितारे दूरकरैं भुवभार ॥ ॥ २५२ ॥ पुनिनिजविश्वरूप जो अपनो सो हरिजाय देखायो। आज्ञापाय चले निजपुरको प्रभु हिगीत समझायो ॥ २५३ ॥ कछु दिनवसे जु चित्रकूटमें रामचन्द्र सहभ्रात। तहांते चले दंडकावनको सुखनिधि साँवलगात ॥ २५४ ॥ मारगमें वहुमुनिजनतारे अरु विराध रिपुमारे। वंदनकर सरभंग महामुनि अपनेदोषनिवारे ॥ २५५ ॥ दरशन दियो सुतीक्षण गौतम पंचवटी पगधारे। तहांदुष्ट सूर्पनखानारी करिविन नाकउधारे ॥ २५६ ॥ यह सुनि असुर प्रवलदलआये छिनमें रामसँहारे। कीन्हेंकाज सकलसुर मुनिके भुवके भार उतारे ॥ २५७ ॥ मुनिअगस्त्य आश्रम जुगये हरि वहुविधि पूजाकीन्हीं। दिव्य वसन दीने जव मुनिने फिर यह आज्ञा दीन्हीं ॥ ॥ २५८ ॥ दशकंधरको वेगि सँहारो दूरकरो भुवभार। लोपामुद्रा दिव्य वस्त्र लै दीने जनक कुमार ॥ २५९ ॥ शूर्पनखा जव जाय पुकारी नाक कान ले हात। रावण क्रोध कियो अतिभारी अधरफरक अतिगात ॥ २६० ॥ गयो मारीच आश्रमहि तवहीं वानै वहु समझायो। तव मारीच कह्यो दशकंधर विनती वहुत करायो ॥ २६१ ॥ रामचन्द्र अवतार कहत हैं सुनि नारद मुनि पास। प्रकट भये निश्चर मारनको सुनि वह भयो उदास ॥ २६२ ॥ करगहि खड्ग तोर वध

करिहौं सुनि मारिच डरमान्यो । रामचन्द्रके हाथ मरूंगो परम पुरुष फल जान्यो ॥ २६३ ॥ कपट कुरंग रूपधरि आयो सीता विनती कीन्हीं । रामचन्द्र कर शायकलैके मारनकी विधि कीन्हीं ॥ २६४ ॥ मारयो धनुष बाणले ताको लक्ष्मण नामपुकारेव । लक्ष्मण नाम सुनत तहँ आये अवसर दुष्ट विचारेव ॥ २६५ ॥ धरिकै कपट भेष भिक्षुकको दशकन्धर तहँ आयो। हरि लीन्हों छिनमें मायाकरि अपने रथ बैठायो ॥ २६६ ॥ चल्यो भाज गोमायु जंतु ज्यों लैकै हरिको भाग । इतने रामचन्द्र तहँ आये परमपुरुष बड़भाग ॥ २६७ ॥ जब माया सीता नहिं देखी जियमें भये उदास । पूंछनलगे राम द्रुमगन सों बहुत बढी दुखरास ॥ २६८ ॥ मारगमें जटायुखग देख्यो विकल भयो तनुहीन । विनती करी राम मैं तासों बहुत लड़ाई कीन ॥२६९॥ जब तनुतज्यो गृध्र रघुपति तब बहुत कर्म विधि कीनी । जान्यो सखाराय दशरथको अपनी निजगति दीनी ॥ २७० ॥ मारगमें कबंधरिपु मारयो सुरपति काज सँवारयो । पंपापुर हरि तुरत पधारे जलको दोष निवारयो ॥ २७१ ॥शवरी परमभक्त रघुपति की बहुत दिनन की दासी । ताके फल आरोगे रघुपति पूरण भक्ति प्रकासी ॥ २७२ ॥ दीन मुक्ति निजपुरकी ताको तब रघुपति चले आगे।सीता सीता बिलपत डोलत परम विरहसों पागे ॥ ॥ २७३ ॥ रविनन्दन जब मिले राम को अरु भेटे हनुमान । अपनी बात कहा उन हरिसों बालि बड़ो बलवान॥२७४॥सप्ततल भेधन हरि कीन्हों बालि छिनकमें तारो।दीन्हों राज राम रवि नंदन सब विधि काम सँवारो ॥२७५॥ सप्तद्वीप के कपिदल आये जुरी सेन अतिभारी । सीताकी सुधि लेनचले कपि ढूंढत विपिन मँझारी ॥ २७६ ॥ जलनिधि तीरगये सब कपि मिल सुन संपातिकी बानी । लंकबसत सीतारिपु वनमें सब बानर यह जानी ॥ २७७ ॥ रामचरण कर सुमिरन मनमें चले पवनसुत धाय । रामप्रताप विघ्न सब मेटे पैठि नगर सुखपाय ॥ २७८ ॥ धरिलघुरूप प्रवेशकियोकपि लंका नगर मँझार । रामभक्त निज जान विभीषण भेंटेहरि अँकवार ॥ २७९ ॥ तब वाने सबभेद बतायो देखी कपि सबलंक । रामचरण धारिहृदय मुदितमन विचरत फिरत निशंक ॥ २८० ॥ जाय अशोकबाटिका देखी दरशन सीता कीन्ह । कर दण्डवत बहुत विनती कर राम मुद्रिकादीन्ह ॥ २८१ ॥ सब संदेश कह्यो कपि सियप्रति सुनि हियमें धरि राख्यो । राम संदेश कहेउ तब सीता जो बूझो सो भाख्यो ॥ २८२ ॥ लागीभूख चले उपवनमें नानाविधि फल खायो । विटप उखार उजार विपिनको सबहिनको दरशायो ॥ २८३ ॥ सुनि पुकार निश्चर बहु आये कूदि सबन संहारे । इन्द्रजीत बलनिधि जब आयो ब्रह्मअस्त्र उन डारे ॥ २८४ ॥ तासों बँधे दशानन देखत चले पवनसुत धीरारावण बहुत ज्ञान समझायो कथ कथ कथा गँभीर॥२८५॥ चले छुड़ाय छिनकमें तबहीं जारदई सब लंक । कूदिचले गजबनको जयकर ज्यों मृगराज निशंक ॥ २८६ ॥ आये तीर समुद्र मिले कपि मिले आय जहँ राम । सुनि सुनि कथा श्रवण सीताकी पुलकित अति अभिराम॥२८७॥करि कपिकटक चले लंकाको छिनमें बांध्योसेत।उतरगये पहुँचे लंकापै विजयध्वजा संकेत ॥ २८८ ॥ पठये बालिकुमार विनयकरि समझाये बहुबार । चित नहिं धरो कालवश जान्यो फिर आयो सुकुमार ॥ २८९ ॥ अशरणशरण उदार कल्पतरु रामचन्द्ररण धीर । रिपुभ्राताजान्यो जुविभीषण निश्चर कुटिलशरीर ॥ २९० ॥ राखिशरण लंकेशकियो पुनि जब निश्चर सब मारे । मायाकरी बहुत नानाविधि सबको राम निवारे ॥ २९१ ॥ कुंभकर्ण पुनि इन्द्रजीत यह महाबली बलसार । छिन में लिये सोख मुनिवर ज्यों क्षत्री बली अपार ॥ २९२ ॥

कियो प्रसाद शांतना करिकै राजविभीषण दीन्ही। पुनि मंदोदरि अचल आयु दै अभयदान सबकीनी ॥ २९३ ॥ समाधान सुरगणको करिकै अमृत मेघ बरषायो । कृपादृष्टि अवलोकन करिकै हतकपि कटक जियायो ॥ २९४ ॥ निश्चर किये मुक्त सब माधव ताते जिये न कोय । निर्भय किय लंकेश विभीषण रामलषण नृप दोय ॥ २९५ ॥ सीता मिली बहुत सुखपायो धरो रूप निज मायो। पुष्पकयान बैठके नीके चले भवन सुखछायो ॥ २९६ ॥ चले पवनसुत विप्ररूप धरि भरतहि देन बधाई। जानि दूत रघुपतिको प्रमुदित भरतमिले तवधाई ॥ २९७ ॥ सुनत नगर सबहिन सुख मान्यो जहँतहँते चलेधाई । रामचन्द्र पुनि मिले भरतसों आनँद उर न समाई ॥ २९८ ॥ कियो प्रवेश अयोध्या में तब घर घर बजत बधाई। मंगल कलश धराये द्वारे वंदनवार बँधाई ॥ २९९ ॥ राजभवन में राम पधारे गुरु वशिष्ठ दरशायो। शीशनवाय बहुत पूजाकरि सूरजवंशबढ़ायो ॥ ३०० ॥ समाधान सबहिनको कीन्हों जो दर्शनको आयो। कौशल्या कैकयी सुमित्रा मिलि मनमें सुखपायो ॥ ३०१ ॥ बैठे राम राजसिंहासन जगमें फिरी दुहाई। निर्भय राज रामको कहियत सुर नर मुनि सुख पाई ॥ ३०२ ॥ चार मूर्तिधर दरशन आये चार वेद निज रूप। स्तुति करी बहुत नानाविधि रीझे कोशल भूप ॥ ३०३ ॥ शिव विरंचि नारद सनकादिक सब दरशनको आये। रामराज बैठे जब जाने सबहिन मन सुखपाये ॥ ३०४ ॥ लोकपाल अतिही मन हरषे सबसुमनन बरषायो । पुष्पविमान बैठि हरि आये लैकुबेर पहुँचायो ॥ ॥ ३०५ ॥ अति आनन्दभयो अवनीपर रामराज सुखदास। कृतयुग धर्म्म भये त्रेतामें पूरण रमा प्रकास ॥ ३०६ ॥ अश्वमेध बहु यज्ञ किये पुनि पूजे द्विजन अपार। हय गज हेम धेनु पाटम्बर दीन्हेदान उदार ॥ ३०७ ॥ चरित अनेक किये रघुनायक अवधपुरी सुख दीन्हो। जनकसुता बहु लाड लडावत निपट निकट सुख कीन्हो ॥ ३०८ ॥ जोन वसंत बहुतद्रुमफूलैं जनकसुता अनुरागे। प्रेमप्रवाह प्रकट प्रकटायो होरी खेलनलागे ॥ ३०९ ॥ कबहुँकनिकट देखि वर्षाऋतु झूलत सुरँग हिंडोरे। रमकत झमकत जनकसुता सँग हावभाव चित चोरे ॥ ३१० ॥ कबहुँक कमल सरोवर उपवन जनकसुता सँग लीन्हे। नाना जल विहार विहरतहैं सन्तजनन सुखदीन्हे ॥ ३११ ॥ कबहुँक रत्न महल चित्रसारी शरद निशा उजियारी। बैठे जनकसुता सँग विलसत मधुर केलि मनुहारी ॥ ३१२ ॥ कबहुँक अगरधूप नानाविधि लियसुगन्ध सुख कारी । कबहुँक निरतत देवनटीलखि रीझतहैं सुखभारी ॥ ३१३ ॥ राम विहार कहेउ नानाविधि वालमीकि मुनिगायो। वर्णत चरित विस्तार कोटिशत तऊ पार नहिं पायो ॥ ३१४ ॥ सुर समुद्रको बुन्द भई यह कवि वर्णन कह करिहै । कहत चरित रघुनाथसरस्वती बौरी मति अनुसरिहै ॥ ३१५ ॥ अपने धाम पठाय दिये तब पुरवासी सब लोग। जैजैजै श्रीराम कल्पतरु प्रकट अयोध्याभोग ॥ ३१६ ॥ दुष्ट नृपति जब बैठे भुवपर धरि भृगुपतिको रूप। क्षणमें भुवको भार उतारयो परशुराम द्विजभूप ॥ ३१७ ॥ व्यासरूप ह्वै वेद विस्तारे कीन्हें प्रकट पुराणन। नानावाक्य धर्म थापनको तिमिरहरण भुवभारन ॥ ३१८ ॥ बुद्धरूप कलिधर्म प्रकाश्यो दया सबनको मूल। दूर कियो पाखण्डवाद हरि भक्तनको अनुकूल॥३१९॥ कलिके आदि अन्त कृतयुगके है कलकी अवतार। मारि मलेच्छ धर्म्म फिर थाप्यो भयो जग जयजयकार ॥ ३२० ॥ कर्मवाद थापनको प्रकटे पृश्नि गर्भ अवतार। सुधापान दीन्हों सुरगणको भयो जग यश विस्तार ॥३२१॥ असुरनको व्यामोह कियो हरि धरो मोहनीरूप। अमृतपानकराय सुरनको कीन्हें चरितअनूप॥३२२॥

तैसेही भुवभार उतारन हरिहलधर अवतार । कालिंदी आकर्ष कियो हरि मारे दैत्य अपार ॥ ३२३ ॥ गज अरु ग्राह लडेउ जलभीतर तव हरि सुमिरण कीन्हों । छोडिगरुड सुखधाम सांवरो भक्तनको सुख दीन्हों ॥ ३२४ ॥ जब बहु असुर बढ़े पृथ्वीपर कियो अनर्थ विस्तार । सत्यसेन प्रगटे विश्वम्भर सत्य कियोहै अपार ॥ ३२५ ॥ निज वैकुण्ठ बसाय रमापति कियो रमाको हेत । विनती सुनि कमलाकी केशव कीन्हों सुख संकेत ॥ ३२६ ॥ ब्रह्मचर्य्य थापनके कारण धरो विभू अवतार । जहँ तहँ मुनिवर निज मर्य्यादा थापी अघट अपार ॥ ३२७ ॥ अजित रूपह्वै शैल धरो हरि जलनिधि मथवे काज । सुर अरु असुर चकित भये देखत किये भक्तके काज ॥ ॥ ३२८ ॥ जब बलिराजा गये देवपुर लीन्हों स्वर्ग छुडाय । अदिती दुखित भई कश्यप सों विनती करी सुनाय ॥ ३२९ ॥ तव कश्यप मुनि कहेउ पयोव्रत विधिसों करो बनाय । ताकी कोखि जन्म हरि लीन्हों श्रीवामन सुखदाय ॥ ३३० ॥ भादों श्रवण द्वादशी शुभ दिन धरो विप्र हरिरूप । शिव विरंचि सनकादिक आये वन्दनको सुख भूप ॥ ३३१ ॥ यज्ञोपवीत विधोक्त कियो विधि सब सुर भिक्षादीन्हीं । वामनरूप चले हरि द्विजवर बलिकी मनसुधि कीन्हीं॥३३२॥ दण्डकमण्डलु हाथ विराजत अरु ओढ़े मृगछाला । धरि वटुरूप चले वामन जू अम्बुज नयन विशाला ॥ ३३३ ॥ सूरज कोटि प्रकाश अंगमें कटिमेखला विराजै । करी वेदध्वनि नृपद्वारे पै मनहुँ महाघनगाजै ॥ ३३४ ॥ सुनिधायो तवहीं बलिराजा आय चरण शिरनायो । विनती करी बहुत सुखमान्यो आज भयो मन भायो ॥ ३३५ ॥ चलिये विप्र यज्ञशालामें जहँ द्विजवर सब राजैं । आये ब्रह्मसभामें वामन सूरज तेज विराजैं ॥ ३३६ ॥ तव नृप कहेउ कछू द्विज माँगो रत्नभूमि मणिदान । हय गज हेम रत्न पाटम्बर देहौं प्रगट प्रमान ॥ ३३७ ॥ तव बोले वामन यह वाणी सुन प्रह्लाद कुलभूप । बहुत प्रतिग्रह लेत विप्र जो जाय परत भवकूप ॥ ३३८ ॥ तीन पैंड वसुधा हम पावैं पर्णकुटी इक कारण । जब नृप भुव संकल्प कियो है लागे देह पसारन ॥ ३३९ ॥ एक पैंडमें वसुधा नापी एक पैंड सुरलोक । एक पैंड दीजै बलि राजा तव ह्वैहो विनशोक ॥ ३४० ॥ नापो देह हमारी द्विजवर सो संकलिपत कीन्हों । सुनि प्रसन्न वामन यों बोले तैं मोको वश कीन्हों ॥ ३४१ ॥ सदा द्वार तेरे ठाढ़ोह्वै दरशन देहौं तोहिं । मायाकाल कबहुँ नहिं व्यापै सुमिरन करतै मोहिं ॥ ३४२ ॥ सुतल लोकमें थिरकरि थाप्यो जहँ विभूति अति भारी । गहिकै गदा द्वारपर ठाढ़े वामन ब्रह्म मुरारी ॥ ३४३ ॥ स्वर्गलोक दीन्हों सुरपतिको पुनि थिरकर कर थाप्यो । निगम नेति कहि रटत निरन्तर देव शत्रु सब कांप्यो ॥ ३४४ ॥ वामनरूप ब्रह्महरि प्रकटे जिनको यश जग गावै । शेष सहसमुख रटत निरंतर सूर पारकिमि पावै ॥ ३४५ ॥ पुनि बलि राजाहिं स्वर्गलोकमें थापैंगे हरि राय । सर्व भौम अवतार धरैंगे श्रीवामन सुखदाय ॥ ३४६ ॥ पुनि विभुरूप एक हरि लेंगे सकल जगत कल्याण । कपट खण्ड पाखण्ड असुरको थापे भक्त निदान ॥ ३४७ ॥ विष्वकसेन रूप हरिलेंगे कीन्हो शिवको हेत । असुर मारि सब तुरत बिडारे दीन्हें रुद्र निकेत ॥ ३४८ ॥ धर्मसेतु ह्वै धर्म बढ़ायो भुविको धारण कीन्हों । शेषरूप ह्वै धराशीश फिर सब जगको सुख दीन्हों ॥ ३४९ ॥ अन्तर्यामी पालन कारण निज सुधर्म धरि रूप । अन्नदान दै सब जग पोष्यो किये काज सुर भूप ॥ ॥ ३५० ॥ योगपन्थ पातंजलि भाष्यो सोउ क्षीण सब जान्यो । योगीश्वर वपुधरि हरि प्रकटे योग समाधि प्रमान्यो ॥ ३५१ ॥ क्रियापंथ श्रुतिने जो भाष्यो सो सब असुर मिटायो । बृहद्भानु

ह्वैकै हरि प्रकटे क्षणमें फिरि प्रकटायो ॥ ३५२ ॥ यह अनेक अवतार कृष्णके को करिसकै बखान। सोई सूरदासने वरणे जो कहे व्यास पुराण ॥ ३५३ ॥ अंशकला अवतार श्यामके कवि पै कहत न आवै। जहँ जहँ भीर परत भक्तनको तहँ तहँ वपु धरि धावै ॥ ३५४ ॥ मायाकला ईश चतुरानन चतुर्व्यूह धरि रूप । वायु वरुण अरु यम कुवेर शशि मृत्यु अग्नि सुर भूप ॥ ॥ ३५५ ॥ रवि शशि भृगु मरीचि सुरगुरु अरु चार वेद वपु जान। जगको प्रकट करन परजापति प्रकटे कलानिधान ॥ ३५६ ॥ जो जो भूपभये भूमण्डल लोकपाल निजजान। निज महिमा हरि प्रकट करी है विधिके वचन प्रमान ॥ ३५७ ॥ सुर अरु असुर रची हरि रचना सो जग प्रगटहि कीन्ही। क्रीडाकरी वहुत नानाविधि निगम वात दृढ़ चीन्ही ॥ ३५८ ॥ यहि विधि होरी खेलत खेलत वहुत भांति सुख पायो। धरि अवतार जगतमें नाना भक्तन चरित दिखायो ॥ ॥ ३५९ ॥ अंश कला अवतार वहुत विधि राम कृष्ण अवतारी। सदा विहार करत व्रज मण्डल नंदसदन सुखकारी ॥ ३६० ॥ नित्य अखण्ड अनूप अनागत अविगत अनघ अनन्त। जाको आदि कोऊ नहिं जानत कोउ न पावत अन्त ॥ ३६१ ॥ जब हरिलीलाकी सुधि कीन्हीं प्रगट करन विस्तार। श्रीवृषभानु रूप ह्वै प्रकटे पुनि व्रजराज उदार ॥ ३६२ ॥ विद्या ब्रह्म कही यशुमतिसों जाकी कोखि उदार। सोरहकला चन्द्र जो प्रकटे दीन्हों तिमिर विदार ॥ ३६३ ॥ पुनि वसुदेव देवकी कहियत पहिले हरिवर पायो । पूरण भाग्य आय हरि प्रकटे यदुकुल ताप नशायो॥ ३६४ ॥ आठे वुद्ध रोहिणी आई शंख चक्र वपुधारो। कुण्डल लसत किरीट महाध्वनि वपु वसुदेव निहारो ॥ ३६५ ॥ स्तुति करी वहुत नानाविधि रूपचतुर्भुज देख्यो। पीताम्बर अरु श्याम जलद वपु निरखि सफल दिन लेख्यो ॥ ३६६ ॥ तव हरि कहेउ जन्म तुम्हरे गृह तीन वार हम लीनो। पृश्नीगर्भ देव व्राह्मण जो कृष्णरूप रँग भीनो ॥ ३६७ ॥ माँगो सकल मनोरथ अपने मन वांछित फल पायो । शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज अजन जन्म लै आयो ॥ ३६८ ॥ यह भुवभार उतारन कारन हलधरके सँग लायो । क्रीडा करो लोक पावनकर करो भक्त मन भायो ॥ ३६९ ॥ प्राकृत रूप धरो हरि क्षणमें शिशुह्वै रोवन लागे। तव वसुदेव देवकी निरखत परम प्रेम रसपागे॥३७०॥तव देवकी दीन ह्वै भाष्यो नृपको नाहिं पतीजे। अहो वसुदेव जाव लै गोकुल कह्यो हमारो कीजे ॥ ३७१ ॥ तवलै हरिपलना पौढाये पीताम्बर जु उढायो। तव वसुदेव शीश धरि पलना भयो सवन मनभायो ॥ ३७२ ॥ गोकुल चले प्रेम आतुरह्वै खुलि गये कपट कपाट। सोये श्वान पहरुआ सोये सवै मुक्तभई वाट ॥ ३७३ ॥ तव वसुदेव लियो करपलना अपने शीश चढ़ायो। रैन अँधेरी कछु नहिं सूझत अटकर अटकर आयो ॥ ३७४ ॥ शेष सहसफण ऊपर छाये घनकी बूंद वचावें। आगे सिंह हुँकारत आवत निर्भय वाट जनावें ॥ ३७५ ॥ यमुना अति जलपूर वहत है चरणकमल परशायो। मारग दीन्हों राम सिंधु ज्यों नन्दभवन चलिआयो ॥ ३७६ ॥ पहुँचेआय महर मन्दिर में नेक न शंका कीन्हीं। वालक धरि लैकै सुरदेवी सुरति गवनकी कीन्हीं ॥ ३७७ ॥ लै वसुदेव तुरत घरआये काहू जिय नहिंजाने। जव वह रोवन लागी तव सव जागपरे अकुलाने ॥ ३७८ ॥ वालक भयो कह्यो नृपसों जव दौरि कंस तव आयो। करगहि खड्ग कह्यो देवकिसों वालक कहँ पहुँचायो ॥ ३७९ ॥ तव देवकी अधीन कह्यउ यह मैं नहिं वालक जायो। यह कन्या मोहिं वकसवीर तू कीजै मोमन भायो ॥ ३८० ॥ कंस वंशको नाश करत है कहा समुझ रिसयानी। मोको भई अनाहद वाणी ताते डर नहिं

जानी ॥ ३८१ ॥ कन्या मांग लई तव राजा नेकु शंक नहिं आनी । पटकत शिला गई आकाशै कंस प्रतीति न मानी ॥ ३८२ ॥ भइ आकाशवाणी सुरदेवी कंस यहाँ अवआई । तेरो शत्रु प्रकट कहुँ ब्रज में काहु लख्यो नहिं जाई ॥ ३८३ ॥ जैसे मीन करत जलक्रीडा जलमें रहत समाई । त्यों तुवकाल प्रकट इक कतहूं लखि न सकत तेहि कोई ॥ ३८४ ॥ अन्तर्द्धान भई सुरदेवी कंस प्रतीति जो मानी । तव वसुदेव देवकीके गृह कंस गयो यह जानी ॥ ३८५ ॥ क्षम अपराध देवकी मेरो लिख्यो न मेट्यो जाई । मैं अपराधकिये शिशु मारे करजोरे विललाई ॥ ३८६ ॥ पुनि गृहआय सेजपर सोयो नेकु नींद नहिं आवै । देश देशके दूतबुलाये सबहिनमतोसुनावै ॥ ॥ ३८७ ॥ दीनहीन जो असुर चढत बलि करत सकल पुनि तैसो । बूझतनहिं तन भार उतरेउ जलको माखनजैसो ॥ ३८८ ॥ भयो भोर यशुमति गृह आनँद मंगलचार वधाई । जागी महरि पुत्र मुख देख्यो आनँद उर न समाई ॥ ३८९ ॥ जैसे शशि प्रकटत प्राचीदिशि सकल कलाभरिपूर । यशुमतिकोख आय हरि प्रकटे असुर तिमिरकर दूर ॥ ३९० ॥ नन्दराय घर ढोटा जायो महर महासुख पायो । विप्र बुलाय वेदध्वनि कीन्हीं स्वस्ती वचन पढ़ायो ॥ ॥ ३९१ ॥ जातकर्मकर पूजिपितरसुरपूजन विप्र करायो । दोइलख धेनुदई तेहि अवसर वहुतहि दानदिवायो ॥३९२॥ पर्वत सात तिलनको कीन्हों रत्नओघमिलायो । मागध सूत और वन्दीजन ठौर ठौर यश गायो ॥३९३॥ बाजे बजत विचित्र भाँति सों रहचउ घोप सब गाज । सुर सुमनन बरषावत गावत व्योम विमानन साज ॥ ३९४ ॥ वांधत वन्दनवार साथिये द्वारेध्वजा सोहाई । कनक कलश प्रति पौर विराजत मंगलचार वधाई ॥३९५॥ सुरभी वृषभ सिंगारे वहुविधि हरदी तेल लगाई । सुवरण माल विचित्र धातुरँग अँग अँग चित्र बनाई ॥३९६॥ आये गोप भेंट लैलैके भूषण वसन सोहाये । नानाविधि उपहार दूध दधि आगेधरि शिरनाये ॥३९७॥ यशुमतिके गृह पुत्र प्रकटभयो सुनी सकल ब्रजनारी । मंगलसाज सँवार हाथलै घर घर मंगलकारी॥३९८॥अति आतुरह्वै चलीं झुण्डजुरि शिर सुमनन वरसावें । मानों रीझ मधुप धरणी को रस पराग दरशावें ॥ ॥ ३९९ ॥ पहुँची जाय महर मन्दिरमें करत कुलाहलभारी । दरशनकरि यशुमतिसुतको सब लेनलगीं वलिहारी ४०० ॥ नाचतगोप परस्पर सबमिलि छिरकतहैं नवनीत । दूध और दधि और हरदजल सींचतहैं करप्रीत ॥ ४०१ ॥ यशुमतिकोखिसराहि वलैया लेनलगीं ब्रजनार । ऐसोसुत तेरेगृह प्रकट्यो या ब्रजको शृंगार ॥ ४०२ ॥ यशुमति रानी देति वधाई भूषण रत्न अपार । फूलीफिरत रोहिणी मइया नख शिखकर शृंगार ॥ ४०३ ॥ देतअशीशचलींब्रजसुन्दरि जियउपज्योसुखभारी । गृहपूजनसबकियो वेदविधि नंदरायसुखकारी॥४०४॥देशदेशते ढाढ़ी आये मनवांछित फलपायो । कोकहि सकै दशौंधी उनको भयो सबन मन भायो ॥ ४०५ ॥ तादिन ते सगरे या ब्रजमें रमारूप दरशायो । निजकुल वृद्धजानि इकढाढ़ी गोवर्धनते आयो ॥४०६॥ परम उदार महर ब्रजपति जू ढाढ़ी निकट बुलायो । बाजत हुडुक मँजीरा नूपुर नानाभांति नचायो ॥ ॥ ४०७ ॥ झँगा पगा अरु पाग पिछौरी ढाढ़िनको पहिरायो ॥ हरि दरियाई कंठलगाई परदरशात उठायो ४०८ वहुतदान दीन्हें उपनँदजू रतन कनक माणिहीर । धरानन्द धन बहुतहिदीन्हों ज्यों वरपत घन नीर ॥४०९॥ कुण्डल कान कंठ माला दै ध्रुवनँद अति सुखपायो । सीधो बहुत सुर सुरानँदै गाडाभरि पहुँचायो ४१० कर्माधर्मानन्द कहत हैं वहुतहिदान दिवायो । ब्रजरानी ढाढ़िन पहिराई मनवांछित फल पायो ॥ ४११ ॥ चले भवनको दै अशीश दोउ निर्भय कीरति गावै ।

जनि यांचै व्रजपति उदार अति याचक फिर न कहावै ॥ ४१२ ॥ नानाविधिके विविध खिलौना रत्नन अधिक अमोले। ताको लेनगये मथुराको आनक दुन्दुभि बोले ॥ ४१३ ॥ वेगजाव गोकुल तुम अबहीं सुनियतहै उतपात। सुनि व्रजराज तुरत घरआये जियमें अति अकुलात ॥ ॥ ४१४ ॥ प्रथम पूतना कंस पठाई अतिसुन्दर वपुधारचउ। घसिकै गरल लगाय उरोजन कपट न कोउ निहारचउ ॥४१५॥ लिये उठाय श्यामसुंदरको थन गहिकै मुखलीन्हों। लीन्हें खैंच प्राण विष पय युत देह विकल तव कीन्हों ॥ ४१६ ॥ छोंडछोड कहि परी धरणिपर कर चरणन जु पसारा।योजन डेढ विटप वेली सब चूर चूर करडारा॥४१७॥ताको जननी की गति दीन्हीं परमकृपाल गुपाल। दीन्हीं फूंक काठतन वाको मिलके सकल गुवाल ॥ ४१८ ॥ तवहीं नन्दरायजू आये कौतुक सुनि यह भारी। विस्मितभये देवने राख्यो बालक यह सुखकारी ॥ ४१९ ॥ विप्रबुलाय वेदध्वनि कीन्हीं रक्षा बहुत कराई। आरति विविध उतार महरजू मंगल करत बधाई ॥ ४२० ॥ एकदिना हरि लई करोटी सुनिहरषी नँदरानी। विप्रबुलाय स्वस्तिवाचन करि रोहिणि नैन सिरानी ॥ ४२१ ॥ नित मंगल नित होत कुलाहल नितनित बजत बधाई। भादों देव छठिको शुभ दिन प्रकटभये बलभाई ॥ ४२२ ॥ वर्ष दिवस पहिले व्रजमण्डल शेष महा वपु लीन्हों। अपनो धाम जान प्रकटो भुव रूप प्रकट निज कीन्हों ॥४२३॥ कंसनृपतिने शकट बुलायो लेकर वीरा दीन्हों। आय नन्दगृह द्वार नगरमें रूप शकटको कीन्हों ॥ ४२४ ॥ मारीलात श्याम पलनाते परचउ धरणि भहराय। जहँ जहँते दौरे व्रजवासी श्यामहिं लियो उठाय ॥ ४२५ ॥ बच्छपुच्छ लैदियो हाथपर मंगलगीत गवायो। यशुमतिरानी कोखिसिरानी मोहन गोद खिलायो ॥ ४२६ ॥ इकादिन स्तन पानकरावति यशुमति अति बडभागी। वदन पसारि विश्व दिखरायो क्षणइक मुरछा जागी ॥ ४२७ ॥ तृणावर्तविपरीति महाखल सो नृपरायपठायो। चक्रवातह्वै सकल वोपमें रज धुंधरह्वै छायो ॥ ४२८ ॥ चल्यो उठाय गुपाल व्योममें तव हरि कंठ गहायो। पटक्यो शिला खरिकके आगे क्षण निरजीव करायो ॥ ४२९ ॥ गर्गराज मुनिराज महाऋषि सो वसुदेव पठायो। नाम करण व्रजराज महरघर आति आनन्दितआयो ॥ ४३० ॥ नामकरण कीन्हों दोहुन को नारायण समभापे तुम्हरेदुःख मिटावनकारण पूरणको अभिलापे ॥ ४३१ ॥ राम कृष्ण अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज। बहुतहि काज करैंगे तुम्हरे सुनहु महर व्रजराज ॥ ४३२ ॥ एकदिना पलना हरि पौढ़े नन्दमहरके द्वार। नँदरानी गृह कारज लागी नाहिंन लई सँभार ॥ ४३३ ॥ कंसनृपति इक असुर पठायो धरेउ कागको रूप। सन्मुख आय नयनदोउ जोरे देख्यो श्यामको रूप ॥ ४३४ ॥ कंठ चाप बहुबार फिरायो पटक्यो नृपके पास। एक याममें वचन कह्यो यह प्रकटभयो तुवनास ॥ ४३५ ॥ यह कहिकै तनु त्याग कियो उन कंसनृपतिके आगे। भयो उदास सुहात न कुछ ये क्षण सोवत क्षण जागे ॥ ४३६ ॥ एकदिना व्रजराज महरजू और यशोदारानी। घुटुवन चलत श्यामको देखत बोलत अमृतवानी ॥ ४३७ ॥ इतते नन्दमहर बोलतहैं उतते जननिबुलावत। सुन्दरश्याम खिलौना कीन्हों हँसि हँसि मोद बढ़ावत ॥ ४३८ ॥ शशिको देख और हरिठानी कर मनुहार मनावत। मधु मेवा पकवान मिठाई विविध खिलौना लावत ॥ ४३९ ॥ कमलनैनको महर यशोदा जलप्रतिबिंब दिखावत। फेरतहाथ चन्द्र पकरनको नाहिंनहोत लखावत ॥ ४४० ॥ बूढ़ेबाबू दरशन आये लाल चन्द्रमणि दीन्हों। ताको देख और सब छांड़ी भोजनकी सुधि कीन्हों ॥ ४४१ ॥ औटचो दूध कपूर मिलायो प्यावत कनक कटोरे। पीवत देखि रोहिणी यशुमति

डारतहै तृण तोरे ॥ ४४२ ॥ कछु दिन भये संग दोउ बालक बल मोहन दोउ भाई । चोरी करत हरत दधि माखन लीला कहिय न जाई ॥ ४४३ ॥ सब ब्रजनारी उरहन आई ब्रजरानीके आगे । मैं नाहिंन दधिखायो याको शिशुह्वै रोवन लागे ॥ ४४४ ॥ एक दिना ब्रजपतिकी पौरी खेलतहारे ब्रजबाल । माटीखाय वदन दिखरायो चंचल नयन विशाल ॥ ४४५॥ सकल ब्रह्मांड उदरमें देख्यो ब्रज मंडल राताल । नन्द महर यशुदा रोहिणि पुनि धेनु सकल ब्रजग्वाल ॥ ४४६ ॥ हृदय ज्ञान उपज्यो तब यशुमति पूरण ब्रह्म विशेखे । हरि उपजाई माया तब सब बहुरि पुत्र करि लेखे ॥ ॥ ४४७ ॥ एकदिना दधि मथन करतही महर घोषकी रानी । हरि माग्यो माखन नहिं दीन्हों तब मन में रिस ठानी ॥ ४४८ ॥ फोरे भांड़ दही आंगनमें फैल परेउ अति भारी । दौरी पकर देत नहिं मोहन अति आतुर महतारी ॥ ४४९ ॥ जानी विकल बहुत जननी को हरि पकराई दीनी । बहुत दामलै बांधन लागी अंगुरी द्वै भई हीनी ॥ ४५० ॥ व्याकुल भई बँधत नहिं मोहन दया श्यामको आई । ऊखल दाम बँधेहरि जाने गोपी देखन धाई ॥ ४५१ ॥ तोलौं बँधे देव दामोदर जोलौं यह कृत कीन्हीं । देख दुखितह्वै सुत कुबेरके कृपादृष्टि करि दीन्हीं ॥ ४५२ ॥ नारद मुनिको शाप पायके श्याम दई गति ताय । निकसे बीच अटक ऊखलमें श्यामरहे अटकाय ॥ ४५३ ॥ चरण परासि ते पुलकि भये भुव परे वृक्ष भहराय । भयो शब्द आघात स्वर्ग लौं सुनि आये ब्रजराय ॥ ४५४ ॥ स्तुति करि वे गये स्वर्गको अभय हाथ करि दीन्हों । बंधन छोरि नंद बालकको लै उछंग कर लीन्हों ॥ ४५५ ॥ यशुमति जू सों लरैं महर जू तुम क्यों बाँध्यो दाम । गर्गकहेउ मोहि नारायण आये हैं बलश्याम ॥ ४५६ ॥ यशुमति माय धाय उर लीन्हों राई लोन उतारो । लेत बलाय रोहिणी नीके सुंदर रूप निहारो ॥ ४५७ ॥ कबहुँककर करताल बजावत नानाभांति नचावत । कबहुँक दधि माखन के कारण आछी आर मचावत ॥ ४५८ ॥ बड़े गोप उपनन्द बुलाये नंद महर के धाम । कीन्हें मंत्र गोपसब मिलिकै जेहि विधि पूरण काम॥४५९ बहु उत्पात रहत हैं गोकुल नित प्रति कंस पठायो । अंत जाय कहुँ वास करैंगे बालक देव बचायो ॥ ४६० ॥ अब वृन्दावन जाय रहैंगे जहँ बारुध तृण पानी । चले गोप अति ओप विराजैं बोलत होहो बानी ॥४६१॥ यमुना उतर आय वृन्दावन जहां सुखद द्रुम राजैं । गोवर्द्धन वृंदावन यमुना सघन कुञ्ज अति छाजैं ॥ ४६२ ॥ बसे जाय आनंद उमँगसों गइयां सुखद चरावैं । आयो दुष्ट बकासुर जान्यो हरि चित बात धरावैं ॥ ४६३ ॥ करि विचार छिनमें हरि मारो सोवछरा वनआज । तापाछे जो बकासुर आयो घात कियो ब्रजराज ॥ ४६४ ॥ वच्छ चरावत वेणु बजावत गोप सखनके संग । सो देखत चतुरानन आये हरि लीला रसरंग ॥ ४६५ ॥ छाकैं खात खवावत ग्वालन सुन्दर यमुनातीर । ग्वाल मंडली मध्य विराजत हरि हलधर दोउ वीर ॥४६६॥ गाय गोप अरु वच्छ सबै विधि छिनहीमें हरिलीन्हों । सबको रूपभये हरिआपुन नेकविलम्ब न कीन्हों ॥ ४६७ जबहीं गर्वगयो चतुरानन अद्भुत चरितहिंदेख । परोधाय हरिपांय जोरिकर नाथ कृपा करलेख ॥ ४६८ ॥ स्तुतिकरी वेदविधि करिकै चतुरानन बहुभांति । अद्भुत चरित देख माधो को हँसतसकल कलिकाति ॥ ४६९ ॥ गयेधाम अपने विधि सुखसों हरिआज्ञा सुखपाय । वर्ष दिवसलौं सर्वरूप हरि ब्रजवासिन सुखदाय॥४७०॥ धेनु चरावनचले श्यामघन ग्वालमंडलीजोइ । हलधरसंग छाकभरि काँवर करत कुलाहलशोर ॥ ४७१ ॥ क्रीड़ाकरत आप वृन्दावन धेनु समूह नचावत । गोवर्धन पर बेणु बजावत फूलनभेष सँवारत ॥ ४७२ ॥ कालीनाग नाथ हरिलाये

सुरभी ग्वालजिवाये। कनक कमलके बोझ शीशधरि मथुरा कंस पठाये ॥ ४७३ ॥ दावानलको पान कियो सुख गोपनरक्षा कीनी। वर्षा सुऋतु देख वृन्दावन क्रीड़ाकी सुधिलीनी ॥ ४७४ ॥ वेणु बजाय विलास कियोवन धौरी धेनु बुलावत। बरहापीड़ दाम गुञ्जामणि अद्भुत भेप बनावत॥ ॥ ४७५ ॥ प्रातकाल स्नान करनको यमुना गोपि सिधारी। लैंके चीर कदम्ब चढ़े हरि विनवत हैं व्रजनारी ॥ ४७६ ॥ देबरदान संग खेलनको शरद रैनि जब आई। रचिकै रास सबन सुख दीन्हों रजनी अधिक कराई ॥ ४७७ ॥ गोवर्धन धरि सब व्रज राख्यो मघवामान मिटायो। नारायण प्रकटे सबजाने जोइ गर्गमुनिगायो ॥ ४७८ ॥ धेनुक और प्रलम्ब सँहारे शंखचूड वध कीन्हों। करिकै चरण परसप्रभु बनमें व्याल अभयपद दीन्हों ॥ ४७९ ॥ नानाविधि क्रीडा हरि कीन्हीं व्रजवासिन सुखपायो। सबहिन यह मांग्यो विनतीकर हरि वैकुंठदिखायो ॥ ४८० ॥ अभयदान दीन्हों मघवाको नंदरायको राख्यो। वरुणलोकमें गये कृपाकरि विविध वचन उनभाख्यो ॥ ॥ ४८१ ॥ यज्ञ करत ब्राह्मण मथुराकि ओदन श्याम मँगायो। उननहिं दियो नारिपैं पठये तबउन सुनि सुखपायो ॥ ४८२ ॥ पटरस थार सँवार साजसों सबही हरिपै आई। कियो मनोरथ पूरण उनको निर्भय करि जुपटाई ॥ ४८३ ॥ व्योमासुर केशी सब मारे अरु अरिष्ट वध कीनो। क्रीड़ा बहुत करी गोकुलमें भगतनको सुखदीनो ॥ ४८४ ॥ नारद आय कहेउ नृपसों यह कौन नींद तू सोवे। तेरो शत्रु प्रकट गोकुलमें गुप्त न जानत कोवे ॥ ४८५ ॥ यह सब देव प्रकट भये व्रजमें जहँ तहँ ठोरहि ठोर। उग्रसेन वसुदेव देवकी यादव जे सब और ॥ ४८६ ॥ नंदगोप वृपभान यशोदा सबहि गोप कुल जानों। करो उपाय बचो जो चाहो मेरो वचन प्रमानो ॥ ४८७ ॥ यह सुनि कंस सबनको बन्धन दीनोहैं त्यहिकाल। श्रीवसुदेव देवकी निज पितु बन्धन दियो विशाल॥ ॥ ४८८ ॥ फिरि नारद गोकुल ह्वै आये हरि चरणन शिरनाये। स्तुति करी बहुत नानाविधि मधुरे वीन बजाये ॥ ४८९ ॥ हरि कछु इन उत्तर नहिं दीनों फिरगये अपने धाम। बल मोहन सब सखा वृन्द लै क्रीडत गोकुल ग्राम ॥ ४९० ॥ बल अक्रूर कंस यह भाष्यो सुन सुफलकसुत बात। राम कृष्णको लायो मधुपुर विलमकरो जनि जात ॥ ४९१ ॥ तब रथवैठ चले सुफलक सुत संध्या गोकुल आये। पैंडे में हरिचरण धूरिले अपने अंग लगाये ॥ ४९२ ॥ मिले नंद बलदेव रोहिणी और यशोदारानी। पूजा करि पधराय सदन में भोजनकी विधि ठानी ॥ ४९३ ॥ भोजन करि अक्रूर जो बैठे सब वृत्तांत सुनाये। धनुपयज्ञ कीन्हों नृपजूने सबको वेग बुलाये ॥ ४९४ ॥ चले महर व्रजराज साजलैं कौतुक देखन आज। राम कृष्ण दोउ आगे लैंके सकल घोप शिरताज। ॥ ४९५ ॥ मारगमें कालिंदीके तट कीन्हों जल असनान। निज वैकुंठ दिखायो जलमें दीन्हों पूरण ज्ञान ॥ ४९६ ॥ करि वंदन हरिके चरणनको पुनि अक्रूर यह भाख्यो। तुम यदुकुलप्रकटे पुरुपोत्तम भक्तनको प्रणराख्यो ॥ ४९७॥ मथुरा आयरहे उपवनमें नंदराय सब गोप। रामकृष्णके चरण परसते अधिक मधुपुरी ओप ॥ ४९८ ॥ गये नगर देखनको मोहन बलदाऊ ले साथ। पुरकुलवधू झरोखन झांकत निरख निरख मुसक्यात ॥ ४९९ ॥ मारगमें यकरज संहारचो सबहि बसन हरि लीन्हें। बालक मिल्यो सबहि पहिराये सबहिनको सुख दीन्हे ॥ ५०० ॥ आगे मिल्यो सुदामामाली फूल माल पहिराई। निर्भयदान दियो हरि तिनको अविचल भक्ति दृढ़ाई ॥ ५०१ ॥ कुब्जा घसि चन्दनले आई मारग देखन आई। हरि माँग्यो उनलेजु समर्प्यो मन वांछित फल पाई ॥ ५०२ ॥ दियो वरदान भवन आवनको तहांते चले कन्हाई। मथुरानगर देख मनमोहन

फूले हैं दोउभाई ॥ ५०३ ॥ रीझतनारि कहत मथुराकी आपुसमें दैसैन । कोमल गात कौनको ढोटा सुन्दर राजिवनैन ॥ ५०४ ॥ यहबालक सुकुमार सरस वपु असुर प्रबल अतिभारी । कैसेंके वाको मारैंगे शोचतहैं पुर नारी ॥ ५०५ ॥ उपवन आय कियो हरि व्यारू नन्दराय सुख दीन्हों । मधु मेवा पकवान मिठाई जो भायो सो लीन्हों ॥ ५०६ ॥ पौढेजाय दोउ शय्यापर सोवत आई निंद । स्वपनेमें मथुरा फिर देखी जागे बालगोविंद ॥ ५०७ ॥ भयो प्रात नृप फेर बुलायो धनुप यज्ञको देखन । मल्लयुद्ध नानाविधि क्रीडा राजद्वारको पेखन ॥ ५०८ ॥ गये ब्रजराज द्वार भूप तिके बहुउपहार दिवाये । तब नृप कह्यो सकल गोपनसों भलीकरी तुम आये ॥ ५०९ ॥ बैठारे सबमंच ओपसों कौतुक देखन लागे । राम कृष्ण सँगग्वाल मण्डली नगर देख अनुरागे॥ ५१० ॥ तोरेव धनुष टूककरिडारे दोउन आयुधकीने । तासु मारिकारि चूर पहरुआ परममोद रसभीने ॥ ॥ ५११ ॥ मद गजराज द्वार पर ठाढो हरिकहेउ नेकवचाय । उननहिं मान्यो सन्मुख आयो पकरेउ पूंछफिराय ॥ ५१२ ॥ दियो पठाय श्याम निजपुरको मावत सहि गजराज । आगे चले सभामें पहुँचे जहँ नृप सकलसमाज ॥ ५१३ ॥ बडेबडे राजा सब बैठे अरु पुरवासी लोग । अपने अपने भाव सुदेखत मिट्यो सकल मनशोग ॥ ५१४ ॥ मल्लनसवन मल्लसे दीखे नृपनलखे नृपराय । युवतिन सबै काम वपु देखे भेंटनको ललचाय ॥ ५१५ ॥ गोपन सखाभाव करि देखे दुष्ट नृपति कृतदण्ड । पुत्रभाव वसुदेव देवकी देखे नित्य अखण्ड ॥ ॥ ५१६ ॥ विदुष जनन विराट प्रभु दीखे अति मनमें सुखपायो । पूरण तत्त्व देख योगी जन हितसों ध्यान लगायो ॥ ५१७ ॥ यदुकुलके कुल दीपक प्रकटे सब यादव सुखदाई । कंसदेखि निजकाल आपनो बहुतहि क्रोध रिसाई ॥ ५१८ ॥ जब उन कह्यो मल्लक्रीडा तुम करत गोपके संग । वृन्दावनमें हम सुनियत है क्रीड़त हो बहुरंग ॥ ५१९ ॥ अब तुम कंस नृपतिको दिखाओ मल्लयुद्ध करिनीके । कह्यो चाणूर मुष्टि सब मिलिकै जानत हौं सब जीके ॥ ५२० ॥ तब हरिभिरे मल्ल क्रीडाकर बहु विधि दांव देखाये । वर्णन कियो प्रथम संक्षेपन अबहूं वर्णन पाये ॥ ५२१ ॥ मुष्टिकसाथ लरे बलभाई धरेउ बृहदवपुदोउ । छिनही में हरि तुरत सँहारे अतिआनँदमनहोउ ॥ ५२२ ॥और मल्ल मारे शल तोशल बहुतगये सबभाज । मल्लयुद्ध हरि करि गोपनसों लखिफूलेब्रजराज ॥ ५२३ ॥ तब नृपकंस बहुत बिललायो बारबार रिसयाई । बाँधो नन्द हरो गोपन धन कीन्हों कपट दुराई ॥ ५२४ ॥ फागुनवदि चौदशको शुभदिन अरु रविवारसुहायो । नखत उत्तरा आप विचारेउ कालकंसको आयो ॥ ५२५ ॥ यहकहि कूदगये हरि ऊपर जहँ बैठे नृपराय । हरिको देखि खड्ग कर लीन्हों सन्मुख आयो धाय ॥ ५२६ ॥ तब हरिकेश पकरि अपनेकर धरणी मांझ पछारो । ऊपर गिरे आपु तिहुँ पुरको बोझ शीश पर डारो ॥ ५२७ ॥ कचगहि आपु बहुत वह खैंच्यो हरि यमुनालौं आये । करि विश्राम सकल श्रम बीत्यो जब यमुना जल न्हाये ॥५२८॥ बंधन छोर पिता माताके स्तुति करि शिरनायो । तुम हमको पठये गोकुलमें याते लाड लडायो ॥ ५२९ ॥ यशुमति मात और ब्रजपति जू बहुतहि आनँद दीनो । याते टहल करन नहिं पायो कहत श्याम रँगभीनो ॥५३०॥ तब ब्रजराज महरपै आये बल मोहन दोउ भाई।तुम्हरी कृपा कंस मैं मारो कहँ लौं करौं बड़ाई ॥५३१॥रोहिणि यह बोली यशुमतिसों हम तुम्हरे सुखपायो।ज्यों तुम्हरो सुत त्यों मेरो सुत बहुतहि लाड लड़ायो ॥५३२॥ हिल मिल चले सकल ब्रजवासी नंदगांव फिरिआयो । सुबसबसी मथुराता

दिनते उग्रसेन बैठायो ॥ ५३३ ॥ राम कृष्ण घरआये जाने पुरवासिन सुखपायो। मंगलचारभये घर घरमें मोतिन चौक पुरायो ॥ ५३४ ॥ तब हरिमात पिता पै आये दोउ भाइन शिरनायो। बन्धन छोर विनय बहु कीन्हें तुम हम बिन दुखपायो ॥ ५३५ ॥ फिर वसुदेव बसे अपने गृह परम रुचिर सुखधाम। राम कृष्णको लाड लडावत जानत नाँहि दिन याम ॥५३६ ॥ गर्ग बुलाय वेदविधि कीन्हों शुभ उपवीत करायो। विद्या पढ़न काज गुरु गृह दोउ पुरी अवन्ति पठायो ॥ ॥ ५३७ ॥ राजनीति मुनि बहुत पढाई गुरु सेवा करवाये। सुरभी दुहत दोहनी मांगी बाँहपसार देवाये ॥ ५३८ ॥ गुरु दक्षिणा देन जब लागे गुरुपत्नी यह माँग्यो। बालक बह्यउ सिन्धुमें हमरो सो नितप्रति चितलाग्यो ॥ ५३९ ॥ यह सुनि श्याम राम दोऊ मिलि गये जलधिके बीच। परपंचानन शंख तहँ लीन्हों मारि असुर अति नीच ॥ ५४० ॥ यमपुर जाय शंखध्वनि कीन्हों यमराजा चलिआयो। चरणधोय चरणोदक लीन्हों बालक दे शिरनायो ॥ ५४१ ॥ लै बालक गुरु आगे धरिकै राम कृष्ण सुखराशी। आज्ञालै मधुपुरी सिधारे परब्रह्म अविनाशी ॥ ५४२ ॥ क्रीडाकरत विविध मथुरामें अक्रूर भवन सिधारे। स्तुति करी बहुत नानाविधि निर्भयकर शिर धारे ॥ ५४३ ॥ कुबिजाके घर आपु पधारे सबै मनोरथ कीनो। ऊधोभक्त संगलेके अति आनँद भक्तन दीनो ॥ ५४४ ॥ उद्धव भक्त बुलाय संगले हरिइकांत यहभाख्यो। ब्रजवासी लोगनसों मैं तो अन्तरकछू न राख्यो ॥ ५४५ ॥ सुरगुरु शिष्य बुद्धिमें उत्तम यदुकुलकहत प्रमान। मन्त्री भृत्य सखा मों सेवक याते कहत सुजान ॥ ५४६ ॥ मोकूं लाडलडायो उन जों कहँ लगि करैं वडाई। सुनि ऊधो तुम समझत नाहिंन अब देखोगे जाई ॥ ५४७ ॥ वेग जाव ब्रज मों आज्ञात ब्रजवासिन सुखदेहो। चरणरेणु शिरधरि गोपिनकी तुमहुँ अभयपद लेहौ ॥ ५४८ ॥ गोपिन सों विनती करि कहियो नितप्रति मन सुधि करिया। विरह व्यथा बाढ़े जब तनुमें तब तब म्वहिं चितधरियो ॥ ५४९ ॥ पाती लिखी आपकर मोहन ब्रजवासी सबलोग। मात यशोदा पिता नन्दजू बाढ्यो विरह वियोग ॥ ५५० ॥ धौरी धूमरि कारी काजर मेन मजीठी गाय। ताको बहुत राखियो नीके उनपोष्यो पयप्याय ॥ ५५१ ॥ वनमें मित्र हमारे यक हैं हमहींसों है रूप। कमल नयन घनश्याम मनोहर सब गोधनको भूप ॥ ५५२ ॥ ताको पूजि बहुरि शिरनइयो अरु कीजो परणाम। उन हमरो ब्रजसबहि बचायो सबविधि पूरे काम ॥ ५५३ ॥ आज्ञालै ऊधो श्रीपतिकी चलेवेग नँदग्राम। पुष्करमाल उतार हृदयते दीनीसुन्दरश्याम ॥ ५५४ ॥ पीताम्बर अपनो पहिरायो श्रुतिकुण्डलपहिराये। अपने रथ बैठाय प्रीतिसों उद्धव ब्रज पधराये ॥ ५५५ ॥ दिनमणि अस्तभये गये गोकुल नंदरायसों भेंटे। बलमोहन दोउ देख माधुरी परम विरहदुख मेटे ॥५५६॥ मिले नन्द बलराम कृष्ण दोउ हैं नीके यह भाख्यो। मारो कंस भली सब कीन्हीं यादवकुल सब राख्यो ॥ ५५७ ॥ पूजाकरि भोजन करवायो उद्धव संत सरायो। सोवत निशा नेक नाहिं पाये रामकृष्ण गुणगायो ॥ ५५८ ॥ यशुदा विकल बात पूछतिहै नयननननीर प्रवाह। तनमनमें अतिही दुखबाढ्यो अति आतुर जनुदाह ॥ ५५९ ॥ बातें करत शेषनिशिआई उद्धवगये सनान। सुमिरण कर फिर ब्रजमें आये गोपिन देखे आन ॥ ५६० ॥ उद्धव देखि सकल गोपिनने कीन्हों मन अनुमान। रथको देखि बहुत भ्रमकीन्हों धोंआये फिर कान ॥ ५६१ ॥ तब यक सखी कहे सुनरीतू सुफलकसुत फिरि आयो। प्राणगये लै पिंड देनको देहलेन मनभायो ॥ ५६२ ॥ इतने देख कृष्ण अनुचर मुख उद्धव यह सब जानी। उद्धव कियो प्रणाम सबनको विनयकियो

मृदुवानी ॥ ५६३ ॥ भलीकरी तुमआये उद्धव लाये हरिकी पाती । जादिनते हरि गोकुलछांड्यो हमपर विरह वराती ॥ ५६४ ॥ इतनेमांझ मधुप यक देख्यो आय चरण लपटायो । ताको देख कहत उद्धवसों हरि गोकुल विसरायो ॥ ५६५ ॥ रेरे मधुप कि तवके बन्धू चरण परस जिन करि हौ । प्रियाअंक कुंकुम कर राते ताहीको अनुसरिहौ ॥ ५६६ ॥ अधर सुधारस सकृतपानदै कान्ह भये अति भोगी । विजय सखा को सखी कहतहै तासों रहत सँयोगी ॥ ५६७ ॥ तीनलोक नारीको कहियत जो दुर्लभ वलवीर । कमलाहू नित पांयपै लोटत हमतो हैं आभीर ॥ ५६८ ॥ पहिलेही इन हनी पूतना वँधे वलिको दान । शूर्पणखा ताड़का सँहारी श्याम सहज यह वान ॥ ५६९ ॥ याकी कथा सुनी जिन श्रवणन वनविहंग भये योगी । मांगतभीख फिरत घर घरही सुजन कुटुम्ब वियोगी॥५७०॥फिर हरि आय यशोदाके गृह रिंगन लीला करिहैं । मांग्यो चन्द्र आर जव कीन्हीं उन वातन चितधरिहैं ॥ ५७१ ॥ वहुत दनुज संहार श्यामघन व्रजकी रक्षाकरिहैं । यमलार्जुन विटपउपारे कालीको विषहरिहैं ॥ ५७२ ॥ वेणुवजाय रास वन कीन्हों अति आनँद दरशायो । लीला कथत सहसमुख तोऊ अजहूं पार न पायो ॥ ५७३ ॥ महाप्रलयके मेघ पठाये सुरपति कीन्हों कोप । छिनहीमांझ गोवर्धन धारो राखिलिये सव गोप ॥ ५७४ ॥ ऐसे वहुत चरित्र कान्हके वरणि कहत नहिंआवैं । उद्धव तुम नयनन नहिं देखो तातेभेद न पावैं ५७५ ॥ तव उद्धव कहेउ धन्य धन्य तुम धन्य धन्य व्रजनार । तुम्हरे सुवस सदा हरि खेलो व्रजमें करत विहार ॥ ५७६ ॥ तुम्हरी चरण कमल रज कारण तपकीन्हों चतुरानन । रमाशेष पुन किनहु नपायो सो देखियत वृन्दावन ॥ ५७७ ॥ गुल्म लतामें जन्ममांगि तव विधिसों गोद पसारी । उद्धव कहत सदा म्वहिं दीजै चरण रेणु व्रजनारी ॥ ५७८ ॥ एकरूप ह्वै रहे वृन्दावन गुल्मलता कर वास । वज्रनाभ उप देश कियो जिन पूरण केल प्रकास ॥ ५७९ ॥ एकरूप उद्धव फिर आये हरिचरणन शिरनायो । कह्यो वृत्तान्त गोप वनितनको विरह न जात कहायो ॥ ५८० ॥ म्वहिं खोजत षटमास वीतिगये तवहुँ न आयो अंत । व्रजवनितनके नैन प्राणविच तुमहीं श्याम वसन्त ॥ ५८१ ॥ छिन नाहिं दूर श्याम तुम उनसों मैं निश्चय यह कीनों । तुम्हरो रूप देखि गोकुलमें वाढ़्यो नेह नवीनो ॥ ॥ ५८२ ॥ तव हरि कह्यो सुनो उद्धव जू व्रजवासी तन मोर । तिनको सपन कवहुँ नहिं छांडो सत्य कहतहौं तोर ॥ ५८३ ॥ वृन्दावनमें धेनु चरावत गोपसखनके संग । वेनुवजावत मोद वढ़ावत क्रीडा कोटि अनंग ॥ ५८४ अरु गोपिनसों अंगसुअँगकरि नितप्रति करो विनोद । दुष्ट कंस मारन यह आयो सदा यशोदा गोद ॥ ५८५ ॥ कुंज कुंजमें क्रीडा करि करि गोपिनको सुख दैहौं । गोप सखन सँग खेलत डोलौं व्रजतज अंत न जैहौं ॥ ५८६ ॥ मारेउ दुष्ट वहुत जो भूपर धर्मकरो विस्तार । वसुधाभार उतारन कारन यदुकुल लिय अवतार ॥ ५८७ ॥ मित्र एक वन वसत हमारो सो नयनन भरि देख्यो । ताको पूजन नितप्रति करिहौं सो तुम सुवुध विशे ख्यो ॥ ५८८ ॥ नाना रत्न कंदरा कवहूं छिन नाहिं मोहिं भुलावे । क्रीडा करो नित्य कुंजनमें गोपिन को सुखभावे ॥ ५८९ ताहीक्षण अक्रूर वुलाये वल मोहन यह भाख्यो । तुम अव वेगि जाव हस्तिनपुर कमल नयन जिय दाख्यो ॥५९०॥ तव अक्रूर वैठि हरिके रथ हस्तिनपुर जुसिधारे । कुंती मिली युधिष्ठिर अर्जुन भीम विदुर उर धारे ॥५९१॥गांधारी दुर्योधन आदिक भीष्म कर्ण सव भेंटे । वहुत दिनाके ताप सवनके सुफलकसुत सव मेटे ॥ ५९२ ॥ तव यह कहउ नृपतिसों नीके वहुत भांति समुझायो । तवनृप कह्यो नहीं मेरो वश मोह प्रवल

जियछायो॥ ५९४ ॥ तब अक्रूर विचार कियो यह हरि इच्छा जियमानी । करि प्रणाम गये मधुपुर को जहां श्याम सुखदानी ॥ ५९५ ॥ समाचार सबही कहि दीनो बल मोहनहिं सुनायो । सुन वसुदेव देवकी दोऊ बहुतहि दुखजिय पायो ॥ ५९५ ॥ अस्ती अरु प्राप्ती दोउपत्नी कंस राय की कहियत । जरासंधपै जाय पुकारीं महा क्रोध मन दहियत ॥ ५९६॥ तीन वीस अक्षौहिणिलै दल जरासंध तहँ आयो । बल मोहन छिनमांझ संहारे करि विनचमू पठायो ॥ ॥ ५९७ ॥ सत्रह बार फेर फिर आयो हरि सब चमू सँहारी । अबकै फेर दुष्ट बनि आयो हरि कछु बात विचारी ॥ ५९८ ॥ अंतरिक्षते द्वैरथ उपजे आयुध तुरँग समेत । तापर बैठ कृष्ण संकर्षण जीते हैं सब खेत ॥ ५९९ ॥ नारद जाय यवनसों भाष्यो राम कृष्ण दोउ वीर । तोहिं न गनत बसतहैं मथुरा बडे बली रणधीर ॥ ६०० ॥ यह सुनि यवन तुरतही धायो जियमें अति अकुलाय । तीन कोटि भट यवन संगले मथुरा पहुँच्यो जाय ॥ ६०१ ॥ सुन बल मोहन बैठ रहसि में कीनो कछू विचार । मागध मगध देशते आये साजे फौज अपार ॥ ६०२॥ विश्वकर्माको आज्ञा दीन्हीं रची द्वारका आय । निशिको सोये सब मथुरा में जगे द्वारका जाय ॥ ६०३ ॥ हलधर हलमूसल करलीने सभी मलेच्छ सँहारे । मारि फौज सबही मागधकी जरासंध उब्बारे ॥ ६०४ ॥ चले भाज दोउ भाइ उहांते जहँ सोवत मुचुकुन्द । वसन उढायरहे छिपि आपन पूरण परमानन्द ॥ ॥ ६०५ ॥ मारी लात आय जब नृपको तब जाग्यो भहराय । निकसी अग्नि नैनते तासों भस्म भयो तेहि दाय ॥ ६०६ ॥ इतने मांझ आपु हरि आये दरशन दीन्हों भूप । शंख चक्र गद पद्म चतुर्भुज सुंदर श्याम स्वरूप ॥ ६०७ ॥ तब पूछ्यो तुम कौन रूपहौ कौन देव अवतार । अबलों कहुँ देखे नाही मैं तुम अति हौ सुकुमार ॥६०८॥ तब हरि कह्यो जन्म मेरे बहु शेष न पावैं पार । भुवकी रज नभके सब तारे तितने हैं अवतार ॥ ६०९ ॥ अब कहिये द्वापर युग सुन नृप वासुदेव ममरूप । भूतल भार उतारन आयो यदुकुल सुखद स्वरूप ॥ ६१० ॥ तब नृपस्तुति बहु विधि कीन्हों जन्मकर्म गुणगाय । तुमहीं ब्रह्म अखिल अविनाशी भक्तन सदा सहाय ॥ ६११ ॥ नव गुण नवलरूप पुरपोत्तम जै यदुकुल अवतार । जयजयजय वैकुंठ महानिधि कमल नयन सुख सार ॥ ६१२ ॥ वेद पुराण रटतयश जाको तऊ न पावत पार । मैं मुचुकुन्द नृपति कृतयुग को सोवत भये युगचार ॥ ६१३ ॥ अब मोको आज्ञा कछु दीजे जैसे चरणन पाऊं । सदाबसों निजलोक निरंतर जन्म कर्म गुणगाऊं ॥ ६१४ ॥ क्षत्री जन्म बहुत अवकीन्हों ताते मुक्ति न होय । विप्र जन्म धारि मुक्तिहोयगी करि तप साधनसोय ॥ ६१५ ॥ आज्ञालैके चल्यो नृपति वहँ उत्तर दिशा विशाल । करि तप विप्र जन्म जब लीन्हों मिट्यो जन्म जंजाल ॥ ६१६ ॥ तहांते चले श्याम अरु हलधर परवरपन गिरि आये । पर्वत बहुत नमन करि पूजा यह विनती करवाये ॥ ६१७ ॥ नितप्रति मोशिर मघवा बरसत लागत शीत अपार । अगणित पाप महादुख मेटो मांगत यही मुरार ॥ ६१८ ॥ इतने मांझ मगध चलि आयो उन जानी यह बात । पर्वत मांझ गये दोउ भइया उन देखे दृग जात ॥ ६१९ ॥ दीन्हीं अग्नि लगाय चहूंधा उन जानी रिपु हान । राम कृष्ण दोउ कूद पधारे पुरी द्वारका जान ॥ ६२० ॥ भयो आनंद द्वारका में सब घर घर गीत गवाये । करि रिपु हानि समर सब जीत्यो रामकृष्ण घर आये ॥ ६२१ ॥ एक समय नारद मुनि आये नृपति भीष्मके गेह । पूजा करी बहुत नाना विधि नृपति जनाये नेह ॥ ६२२ ॥ लखि रुक्मिणी कह्यो मुनि नारद यह कमला अवतार ।

पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम श्रीवसुदेव कुमार ॥ ६२३ ॥ उनके योग्य यही कन्या है सुनो देव महाराज। तब नृप कह्यउ करों निश्चय यह सफलहोय ममकाज ॥ ६२४ ॥ तब नारदमुनि गये द्वारका कृष्णचन्द्रके पास। विनती करी रुक्मिणीकी सब सुनि हरि भये हुलास ॥ ६२५ ॥ करो वेग कछु विलम्ब न कीजै नारद कहि यह बात। श्रवण सुनत कमलापतिको जियतनु पुलकित सबगात ॥ ६२६ ॥ सुन नारद म्वहिं नींद न आवे करिहौं वेग उपाय। यह कहि चले आपहरि रथचढ़ि शोभा कही न जाय ॥ ६२७ ॥ देश देशके नृपति जुरे सब भीष्म नृपतिके धाम। रुक्म कह्यउ शिशुपालहि देहौं नहीं कृष्णसों काम ॥ ६२८ ॥ यतने मांझ आपु हरि आये सुनी नृपति सबबात। उपवनरहे जान जियमें यह मनमें अति अकुलात ॥ ६२९ ॥ पूजन करन चली देवी को सखी वृंद सबसंग। पूजा करि बोली यह कमला लोक लाज कृत भंग ॥ ६३० ॥ अटल शक्ति अविनाश अधिक बल एक अनादि अनूप। आदि अव्यक्त अंबिका पूरण अखिल लोक तव रूप ॥ ६३१ ॥ कृष्णचन्द्रके चरण कमल में सदा रहो अनुराग। येही पति नित होहिं हमारे जो पूरण मम भाग ॥६३२ ॥ तब उन कहेउ कृष्ण तुम्हरे पति ह्वैहैं अचल सुहाग। चली महावर पाय रुक्मिणी अति पूरण अनुराग ॥६३३॥ तब हरि आय बैठ रथनकि आय मिले बड़भाग। कर गहि बांह लई रथनीके अति आतुर चले भाग ॥६३४॥ मानो नील मेघके सँगमें मिली दामिनी आय। चले तुरत हरि पुरी द्वारका शंख चक्र धारि धाय ॥ ६३५ दुष्ट नृपाति को मान मथन करि चले द्वारकानाथ। जरासंध शिशुपाल आदि नृप पाछे लागे साथ ॥ ६३६ ॥ रथपाछे मिलिशोभित यहि विधि सकल दुष्टकीखान। महासिंह निज भागलेत ज्यों पाछे दौरें श्वान ॥ ६३७ ॥ हल धर आय दुष्टसब मारे असुर नृपति की भीर।भाजि चले शिशुपाल जरासंध अति व्यापित तनुपार ॥ ६३८ ॥ आये नाथ द्वारका नीके रच्यो मांड्यो छाय। व्याह केलि विधि रची सकल सुख सौंज गनी नहिं जाय ॥ ६३९ ॥ ब्रह्मा रुद्र देव तहँ आये शुक नारद सनकादि। दरशन करि मंगल सुखकै सब मेटी विरह जो आदि ॥६४० ॥ चैत्रमास पूनो को शुभदिन शुभ नक्षत्र शुभवार। व्याहि लई हरि देव रुक्मिणी बाढ्यो सुख जो अपार ॥ ६४१ ॥ यक सत्राजित यादव कहिये सूरजदेव उपास। दीन्हीं मणि आदित्य स्यमंतक कोटिक सूर्यप्रकाश ॥ ६४२ ॥ भारभार नित कनकदेतहै नृपति सुनी यहबात। तबउन मांगी इननहिं दीनी बाढ्योबैर अघात ॥ ६४३ ॥ एक दिवस मृगयाको निकस्यो कंठ महामणि लाय। तब उन सिंहमारि गहि लीन्हों ऋच्छ मिल्यो यकताय ॥ ६४४ ॥ जाम्ववान महबली उजागर सिंहमारि मणि लीन्हीं। पर्वत गुफा बैठ अपने गृह जाय सुताको दीन्ही ॥ ६४५ ॥ चर्चा परी बहुत द्वारावति कृष्णचन्द्रकी बात। तब हरि गये शैलकंदरमें अतिकोमल मृदुगात ॥ ६४६ ॥ दिनअट्ठाइस युद्ध कियो जब ऋच्छ भयो बलभंग। तब पगपरेउ बहुत स्तुतिकरि जानि रामपदसंग ॥ ६४७ ॥ तब हरि कहेउ भक्त तू मेरो तोसों करि संग्राम। कीन्हें शुद्ध तात्त्व सब तनुके पूरण कीन्हें काम ॥ ६४८ ॥ जाम्ववती अरपी कन्या भरि मणि राखी समुहाय। करि हरि ध्यान गयो हरिपुरको जहां योगेश्वर जाय ॥ ६४९॥ लै स्यमंतमणि जाम्ववतीसह आय द्वारकानाथ। अति आनंद कुलाहल घर घर फूले अँग न समात॥ ॥ ६५० ॥ आश्विनसुदिनौमीको शुभदिन हरि आये निजधाम। तौलौं वरघरप्रति दुर्गाको पूजन कियो सब गाम ॥ ६५१ ॥ सत्राजित अपनी तनयाको दीन्हें त्रिभुवनराय। सतभामा जुनाम तेहि कहियत शोभाकही न जाय ॥ ६५२ ॥ कीन्होव्याह परमआनँद सों सतभामा सुखरास।

द्वारावती विराजत नित प्रति आनँद करत विलास॥ ६५३॥ इन्द्रप्रस्थ हरि गये कृपाकार पांडव कुलको तार। तहँ कालिन्दी वनमें व्याही अतिसुन्दरि सुकुमार॥ ६५४॥ मित्रविंदा यक नृपति नन्दनी ताको माधव व्याये। सात बैल नाथनके कारण आप अयोध्या आये॥६५५॥सत्या व्याहि वहुत सुख कीन्हो मथ्यो नृपति को मान।आये फेर द्वारका मोहन मंगलकेलि निधान॥६५६॥ भद्रा व्याहि आप जवआये द्वारावती अनन्द। तैसेही लक्ष्मणा विवाही पूरण परमानंद॥ ६५७॥ नरकासुरको मारि श्यामघन सोरह सहस त्रियलाये।एकहिलग्न सवनकर पकरेव एकमुहूर्त्त विवाये॥ यह सुनि नारद अचरज पायो ब्रह्मलोकते धाये। कृष्णचन्द्रके चरण परस करि वीणा मधुर वजाये॥ ६५९॥ तव हरि रीझि कहेउ नारदसों कहौ कहांते आये। तव उन कहेउ दरशको आयो वहुत रूपधरि व्याये॥ ६६०॥ यह कौतुक देखनके कारण मैं आयो जो देखावो। रूप अनंत आदि अविनाशी दरशन प्रेम बढ़ावो॥ ६६१॥ तव हरि कहेउ जाव घर घर प्रति देखोगे सव ठौर। मैंही हौं सव थल परिपूरण मो विन नाहिंन और॥ ६६२॥ तव मुनि चले देख घर घर प्रति परम केलि सुखपायो। नाना क्रीड़ा करत निरन्तर घरघर रूप देखायो॥ ६६३॥ कहुँ क्रीडत कहुँ दामवनावत कहूं करत शृंगार। कहुँ वालकन खिलावत माधव खेलत परम उदार॥६६४॥ कहुँ चौपर खेलत युवतिन सँग पांच सात उच्चार।कहुँ मृगयाको चले अश्वचढ़ि श्रीवसुदेव कुमार॥ ६६५॥ कहुँ कर लेकर शस्त्र सँवारत कहुँ कछु करत विचार। कहुँ कछु वात कहत सवहिन सों कहुँ ध्वनि वेद विचार॥ ६६६॥ कहुँ मिलि यज्ञकरत विप्रनसँग अति आनंद मुरार। नाना दानदेत हय गज भुव ऐसे परम उदार॥ ६६७॥ कहुँ गोदान करत कहुँ देखे कहुँ कछु सुनत पुरान। कहुँ निर्त्तत सवदेख वारवधु कहुँ गँधरव गुणगान॥६६८॥कहुँ जप करत सनातन निज वपु ब्रह्म करत कहुँ ध्यान। कहुँ उपदेश कहूं जैवेको कहूं दृढ़ावतज्ञान॥६६९॥ कहुँभोजन नानारुचि मांगत पटरसके पकवान। आरोगत ब्रजराज सांवरो कहूं करत जलपान॥ ६७०॥ कहुँजागत दरशनदियो मुनिको करि पूजापरणाम। संध्या करत कहूं त्रिभुवनपति स्नान करत कोउ धाम॥ ॥ ६७१॥ कहुँ पौढे कमलाके सँगमें परम रहस्य एकान्त। कहुँव्रत करत कहूं निगमनकोज्ञान कर्मकोअंत॥ ६७२॥ कतहूं श्राद्धकरत पितरनको तर्पणकरि वहुभांति। कहुँ विप्रनको देतदक्षिणा कहुँभोजनकीपांति॥ ६७३॥ कहूं सुगंध लगावत लैकै कहूं अश्व शृंगार। कहुँ गजरथ कहुँ वाजि रथन साजि डोलतहैं गृह द्वार॥ ६७४॥ कहुँ ऊधोसों ब्रजसुख क्रीडा परम प्रेम उच्चार। कहुँ पांडवकी कथा चलावत चिन्ता करत अपार॥ ६७५॥ कहुँ मिलि विप्र कहत सवहिनसों वालक करन सगाई। कहुँ सुतव्याह कहूं कन्याको देत दायजो राई॥ ६७६॥ कहुँ गजराज वाजि शृंगारे तापर चढे जुआप। सँग वलभद्र चमू सव सँग लै चले असुर दल कांप॥ ॥ ६७७॥ कहूं हस्तिनापुर देखनको मनमें करत विचार। कतहूं अर्घ्य देत सूरजको कहुँ पूजत त्रिपुरार॥ ६७८॥ कहुँयक दुर्गादेवि जानिकै जोरि विप्र निज धाम। करतहोम वहु भांति वेदध्वनि सवविधि पूरण काम॥ ६७९॥ प्रथमपुत्रको व्याह जानिकै पूजत कहूं गणेश। कहूं ऋपिनके चरण धोयकै शिरपर धरत नरेश॥ ६८०॥ कहूं व्याहकी केलि परमसुख निरखत मुनि सचुपायो। शेप सहसमुख पार न पावैं कछु इक सूरजुगायो॥ ६८१॥ फिर मुनि आय भवन कमलाके चरण कमल शिरनायो। मैं सव ठौर फिरेउ तुव देखन कतहूं पार न पायो॥ ६८२॥ जित तित देखों तुम परिपूरण आदि अनंत अखंड। लीला प्रकट देव

पुरुषोत्तम व्यापक कोटि ब्रह्मंड ॥ ६८३ ॥ शिव विरंचि सनकादि महामुनि शेष सुरेश दिनेश ॥ इन सबहिन मिलि पार न पायो द्वारावती नरेश ॥ ६८४ ॥ तुम्हरे चरण कमलकी महिमा जानतहैं त्रिपुरारि।प्रकट गंग पावन चरणनते ताहि रहत शिरधारि ॥ ६८५ ॥ पुनि गौतम घरणी जानतहैं नावक शवरीजान । उद्धव विदुर युधिष्ठिर अर्जुन अरु भीषमसुर ज्ञान ॥ ६८६ ॥ हनूमान अरु भक्त विभीषण चरणकमल रज मांगी । सोई कृपा करो करुणानिधि मांगतहौं अनुरागी ॥ ६८७ ॥ यह कहिकै मुनिलोक सिधारे बीणबजाय रिझाय । ब्रह्मलोक पहुँचे छिनहीमें हरि आज्ञाको पाय ॥ ६८८ ॥ पहिलोपुत्र रुक्मिणी जायो प्रद्युम्न नाम धराथो । कामदेव प्रगटे हरिके गृह पहिले रुद्र जरायो ॥ ६८९ ॥ नारद जाय कह्यो शंबरसों तव रिपु वपु धरि आयो । वेग उपाय करो मारनको प्रगट द्वारका जायो॥ ६९० ॥ तंव शंवर भयभीत द्वारका गयो तुरत त्यहि काल । हरिको चक्रदेख रखवारी व्याकुल भयो बिहाल ॥ ६९१ ॥ तब नारदमुनि आय चक्रसों बात करन ठहरायो । इतने मांझ पुत्रले भाज्यो निधिमें जाय दुरायो ६९२ ॥ एक मीनने भक्ष कियो तव हरि रखवारी कीनी । सोई मत्स्य पकरि मोधुकने जाय असुरको दीनी ॥ ६९३ ॥ तब उन कह्यो पाकशालामें अबहीं यह पहुँचाओ । चीरचो उदर पुत्र तव निकस्यो उन जान्यो मम नाओ॥ ६९४ ॥नारद कह्यो यही तव पतिहै याकूं वेग बढाय । जौलौं बडो होय तौलौं यह असुरन मतिहि देखाय ॥६९५॥ सेवा कीनी बडेभये जब समरथ विपुल उदार।महाबली बलराम कृष्ण सुत कीन्हों असुर संहार ॥६९६॥ मारि असुरको आय द्वारका कृष्णचरण शिरनायो।भीतर गये नये रुक्मिणिको सबहिन कंठ लगायो६९७ बर अरु बधू आय जब जाने रुक्मिणि करत बधाई । रति अरु काम प्रकट तादिनते कवि मिलि कीरति गाई ॥ ६९८ ॥यहिविधि केलि करत द्वारावति पूरण परमानंद । महिमा सिंधु कहांलग वरणे सूर जु कवि मति मंद ॥ ६९९ ॥ पुनि अनिरुद्ध भेदनारदकें चित्ररेखा हरिलीन्हों । चारवर्ष अरु चारमासलौं ऊषाको सुखदीन्हों॥७००॥तब हरि जाय संगहलधरलै सब यादव दल जोर।सबै भुजाकरि दूर असुरकी चार हाथ दियछोर ॥ ७०१ ॥ आय रुद्र पक्ष करि ताको युद्ध करन हरिसाथ । छिनमें जीति बधूसुत लैकै आय द्वारकानाथ ॥ ७०२ ॥ पुनि यक दिवस सुधर्मा बैठे यादव सभा अपार । उग्रसेन वसुदेव सात्यकी अरु अक्रूरउदार ॥ ७०३ ॥ इतने मांझ दूत यक आयो सबहिन कहि समुझायो । वासुदेव नृप आज्ञा करके मोको वेगि पठायो ॥ ७०४ ॥ वासुदेव यह कहत वेदमें प्रकट ब्रह्म अवतार । सोतो मैंहीं प्रकट भयो भुव यहि विधि बक्यो अपार ॥ ७०५ ॥ क्षणमें जाय तुरत हरि मारचो दीन्हीं मुक्ति कृपाल । फेर द्वारका तुरत पधारे गरुडचढ़े गोपाल ॥ ७०६ एक दुष्ट ने बहुत कियो तप सो रीझे त्रिपुरार । तब शिवने उन कृत्या दीन्हीं बाढो क्रोध अपार ॥ ७०७ ॥ कृत्याचली जहां द्वारावति हरिजानी यह बात । आज्ञाकरी चक्रको माधव छिन कृत्याकर घात ॥ ७०८ ॥ काशजिाय जराय छिनकमें गये द्वारकाफेर । अति आनन्द परम सुखसों सब दिन बीततरसटेर ॥ ७०९ ॥ पुनि कुरुक्षेत्रगये यादवमिलि किये तीर्थ स्नान । यज्ञ होम करि पितर देवता विप्रनको बहु दान ॥ ७१० ॥ सूरज ग्रहण नृपन बहु जान्यो आय जुरी सब भीर । दर्शन भयो सबनको हरिको मिट्यो ताप तनुपीर ॥ ७११ ॥ भीष्म द्रोण अरु कर्ण युधिष्ठिर भीमार्जुन सहदेव । कुंती नकुल और गान्धारी कृपी विदुर सहदेव ॥ ७१२ ॥ दुर्योधन सब भ्रात

संगलै धृतराष्ट्रहि लै आयो। नारद गौतम वाल्मीकि मुनि हरि दर्शन हित धायो॥७१३॥ भारद्वाज मरीचि अंगिरा अत्रेमुनी अनंत। पुलह पुलस्त्य अगस्त्य कश्यप पुनि अरु सनकादिक संत॥७१४॥ हरिको दर्शन करि सुख पायो पूजा बहु विधि कीन्हीं। अति आनंद भये तन मनमें सौंज बहुत विधि दीन्हीं॥ ७१५॥ ब्रजवासी सब सखा संगके यशुमति अरु ब्रजराज। दर्शनपाय बहुत सुख पायो सफल भये सबकाज॥ ७१६॥ यशुमति मात उछंग लगाये बल मोहनको धाय। बाल भाव जिय में सुधि आई स्तन चले चुचाय॥ ७१७॥ गोपिन देखि कान्हकी शोभा बहुतहि मन सुखपायो। सघन निकुंज सुरत संगम मिलि मोहन कंठ लगायो॥७१८॥ रुक्मिणि कहत कमल लोचन सों राधा हमैं देखायो। जाकी नित्य प्रशंसा तुम करि हम सबहिन कुसुनायो॥ ७१९॥ तब वृषभानुसुता पगधारी रानिन मंडल मांझ। मनो सरस इन्दीवर फूले ता माधि फूली सांझ॥ ७२०॥ देख तेज वृषभानुसुताको सबै भई छवि हीन। अति आनन्द मोद मन मान्यो हमहिं कृतारथ कीन॥७२१॥ तब हरि कह्यो मोहिं राधा विन पल क्षण कछु न सोहाय। सुनो रुक्मिणी कथा घोषकी मोपै कहिय न जाय॥७२२॥ एक दिना वनमें इन मोको अपनो सुधा पिवायो। ताके बल गिरि गोवर्द्धन लै अपने हाथ उठायो॥॥ ७२३॥ अरु काली धेनुक दावानल प्रकट पूतना आई। इनकी कृपा सकल विघ्नको छिनमें दिये नशाई॥७२४॥ भांति भांति करि मोहिं लडायो सघन कुंजमें जाय। ताकी कथा कहों कह तुमसे मोपै कहिय न जाय॥ ७२५॥ रास केलि करि क्रीडा कीन्हीं होरी खेल खिलायो। मटुकि छुड़ाय लियो दधि बरसत तउ कछु मन नाहिं आयो॥ ७२६॥ रत्नजटित पर्यंक द्वारका पौढ़त हैं सुखधाम। तोहू इनको ध्यान करतही बीतत है सब याम॥७२७॥ इन विन मोहिं कछू नाहिं भावै नन्दरायकी आन। सुनो रुक्मिणी लोचनमें ए वसी रहें मम प्राण॥७२८॥ जागत सोवत अरु वन डोलत भोजन करत विहार। ध्यान करत नखशिख इनहींको वासि द्वारका मँझार॥७२९॥ तब मिलिरंग बहुत भांतिनसों कीन्हें विपुल विहार। ब्रजजन चले सकल गोकुलको दीन्हें दान अपार॥७३०॥ चले द्वारका यदुकुल सब मिलि भयो कुलाहल भार। पहुँचे आय द्वारका सन्मुख घर घर मंगलचार॥ ७३१॥ कियो विचार यज्ञको राजा राजसूय जियजानि। कृष्णचन्द्रको बेगि बुलाओ संग सकल पटरानि॥ ७३२॥ आये इंद्रप्रस्थ सब यदुकुल महा महोत्सव मान। जुरेभूप बहु सकल देशके हरिदर्शन जिय जान॥७३३॥ चारों भ्रात चारि दिशि जीतो भारत कही बखान। ठौर ठौरके नृप सब आये लै उपहार प्रमान॥७३४॥ बड़ो यज्ञ राजसूय रचायो जुरे विप्र बहु भारी। महाभाग्य राजा जु युधिष्ठिर जहँ माधव अधिकारी॥७३५॥ सबहिन कह्यो प्रथम पूजा अब कहो कौनकी कीजै। सबमें बडो कौन भूपति है जाहि अर्चना दीजै॥७३६॥ तब सहदेव कह्यो सबहिनसों सुनो नृपति मनलाय। पूजा योग प्रकट पुरुषोत्तम कृष्णचन्द्र यदुराय॥७३७॥ सबहिन कह्यो साधु यह वाणी सुर मुनि मनुज सराई। यक शिशुपाल दुष्ट नृप कहिये सुनतहि उठ्यो रिसाई॥७३८॥ गोकुल नंद अहीर गोप गृह पय पियके यह जीयो। दधि जु चुराय खाय वृन्दावन चरित विषम बहु कीयो॥७३९॥ मातुल मारि बहुत अघकीन्हे कहांलों करों बड़ाई। वृन्दावन गोवर्धन कुंजन लूटी नारि पराई॥॥७४०॥ वन वन गाय चरावत डोलत कांध कमरिया राजै। लकुटी हाथ गरे गुंजमाला अधर मुरलिका बाजै॥७४१॥ ऐसे ख्याल करे इन बहु विधि कहत जु आवे लाज। वेद विदित सुर

काज बिगारे वहँकाये ब्रजराज ॥ ७४२ ॥ यज्ञ करत विप्रन मथुरा में यांचे भीख न दीन्हीं । अर्पण कियो नही देवनको पहिले इनमति कीन्हीं ॥ ७४३ ॥ माखन चोर चोर गोपिनको दूध जु दधि लैखायो । यमुना न्हात गोपकन्यनको लैपट कदम चढ़ायो ॥ ७४४ ॥ काली हरिकी आज्ञा को लै यमुनामांझ बसायो । ताहि निकालदियो क्षणहींमें नेक सकोच न आयो ॥ ७४५ ॥ यक पूतना पयपान करावन प्रेम सहित चलिआई । ताहि लगाय हृदय लपटानो प्राण जो लियो चुराई ॥ ७४६ ॥ जन्महोत इनमात तात को तवहीं वन्धन दीन्हों । यादव जात भाज जित तितको अनत जाय सुख कीन्हों ॥ ७४७ ॥ वेणु वजाय रास इन कीन्हों मधुप गोपकी नारी । परनारीको दोष कछूचित इन नहिं कीन्ह विचारी ॥ ७४८ ॥ दूध दहीके भाजन चाटे नेकहु लाज न आई। माखन चोरि फोरि मथनीको पीवत छांछ पराई ॥ ७४९ छांक खाय जूठन ग्वालिनको कछु मनमें नहिं मान्यो । परदाराके संग आय निशि कुब्जासों सुख मान्यों ॥ ७५० ॥ वहुत प्रीति करि गोपन जाने वहुविधि लाड़ लड़ायो । ताको यत्न कछू नहिं मान्यों मथुरामें चलि आयो ॥७५१॥ जरासन्ध इन वहुत वारही कारि संग्राम पलायो । हमरे डर कर दोऊभाई नगर समुद्र बसायो ॥ ॥७५२॥कालयवनके आगे भाज्यो जाय गुफागहि लीन्हीं । लातमारि मुचुकुन्द जगायो नेकु दया नहिं कीन्हीं॥७५३॥बातैं वहुत याहिकी लंपट सभा मांझ नहिं कहिये।जियमें समुझ अपने सन्मुख मुखते चुपकरि रहिये ॥ ७५४ ॥ अतिशयक्रोध भये पांडवसुत और नृपति हरिदास । राखे वरज सवनको माधव नेक न भये उदास ॥ ७५५ ॥ अतिहीभई अवज्ञा जानी चक्र सुदर्शन मान्यो । करि निज भाव एक कुशतनमें क्षणक दुष्ट शिरभान्यो ॥ ७५६ ॥ परम कृपालु दयालु देवकी नन्दन पावननाम । दीन्हीं मुक्त दयाकरिकै तव दियो लोक निजधाम ॥ ७५७ ॥ जयजयकार भयो वसुधापर राज युधिष्ठिर हरपे । अमृतस्नान कराय वेद विधि कनक कुसुम शिर वरपे॥७५८॥ दीन्हीं सभा वनाय पांडुकी मय मायागत अंत।ताको देख भ्रमे दुर्योधन महा मोह मातिमंत॥७५९॥ जलमें थलमति थलमें जलमति भई नृपतिको जान । अन्ध पुत्र लखि हँसे पवनसुत सुन जियमें रिसमान ॥ ७६० ॥ गयो भवन अकुलाय वहुत जिय क्रोधवंत अभिमानी । ताही दिनते पांडु पुत्रसों वैर विषम गति ठानी ॥ ७६१ ॥ सभा रची चौपर क्रीड़ा करि कपट कियो अति भारी । जीत युधिष्ठिर भइ सव जानी तउ मनमें अधिकारी ॥ ७६२ ॥ युवती धरी जान दुष्टन ने जव द्रौपदी बुलाई । हरिको सुमिरन करत पंथमें दुश्शासन गहिलाई ॥ ७६३ ॥ अहोनाथ ब्रजनाथ नाथनिज यदुकुल के निज नाथ । गोकुलनाथ नाथ सव जनके मोपति तुम्हरे हाथ ॥ ॥ ७६४ ॥ ज्यों गजराज वचायो जलमें नेक विलंव न कीन्हीं । अपनो भक्त वचावन कारण विप अमृत करि दीन्हीं ॥ ७६५ ॥ शवरी गीध और पशु पक्षी सवकी रक्षा कीनी । अव तो सहाय करो तुम मेरी हैं पांवर मतिहीनी ॥ ७६६ ॥ चौपर खेलत भवन आपने हरि द्वारका मंझार । पांसे डार परम आतुर सों कीन्हें अनत उचार ॥ ७६७ ॥ चीर वढ़ाय दियो वहु तेहिक्षण ऐंचत पार न पायो । भीष्म द्रोण अरु कर्ण युधिष्ठिर सव विस्मय मन लायो ॥७६८॥ रहेउ दुष्ट पचि हार दुशाशन कछू नकला चलाई । वैठो आय सभामें पाछे वार वार पछिताई ॥ ७६९ ॥ फिर द्रौपदी भवनमें आई श्री हरि लज्जा राखी । वेद पुराण तन्त्र भारत में कही वहुत विधि भाखी॥ ॥ ७७० ॥ पुनि वनवास दियो पांडवसुत हरि द्वारका में जानी । अक्षय पात्र दिवायो रविपै वडे भक्त सुखदानी ॥ ७७१ ॥ दुर्वासा शापनको आये तिनकी कछु न चलाई । अक्षय कियो कमल

दल लोचन भक्तन भये सहाई ॥ ७७२ ॥ पांडव कुलके सहाय भये हरि जहँ तहँ संगहि डोले। दुर्योधन सों कहेउ दूत है भक्त पक्ष दृढ बोले ॥ ७७३ ॥ पांच गांव पाण्डव को दीजै सुनो नृपति मम वात। और राज सब तुमही करिये निपट जगत विख्यात ॥ ७७४ ॥ प्राची और प्रतीचि उदीची और अवाची मान। इन्द्रप्रस्थ वीचमें दीजै और राज तुव जान ॥ ७७५ ॥ सुनिकै क्रोध भयो दुर्योधन सब पाण्डवको राज। तुमरो कुल सब नाश होयगो कहि जो चले व्रजराज ॥७७६॥ वहुत दुःख दीन्हों पाण्डवको अवलों मैं सहि लीन्हों । लाप भवन वैठार दुष्टने भोजन में विष दीन्हों॥७७७॥वन वन फिरि अर्क तूलन ज्यों वास विराटहि कीन्हों। अन्तहि गुप्त रहे तापुरमें भेद काहु नहिं दीन्हों॥७७८॥जुरे नृपति अक्षौन अठारह भयो युद्ध अतिभारी।रथ हांकत गोविंद अर्जुन को दीन्ह शस्त्र सब डारी॥७७९॥करी प्रतिज्ञा कहेउ भीष्म मुख पुनि पुनि देव मनाऊं।जो तुम्हरे कर शर न गहाऊं गंगासुत न कहाऊं॥७८०॥ चढे प्रवल दल दोउ ओरके विच अर्जुन रथ ठाढो। इत पारथ गंगेय वली उत जुरो युद्ध अति गाढो ॥ ७८१ ॥ दशदिन लरे वली गंगासुत श्याम प्रतिज्ञा जानी। सत्य वचन हरि कियो भक्तको निगम झूंठकर वानी ॥ ७८२ ॥ धरि रथ चक्र श्याम निज करमें जवहिं भीष्म पर डारो। शीतल भई चक्रकी ज्वाला जव शिर तिलक निहारो ॥७८३॥ धन्य धन्य कहि परे आय पग गुणनिधान गंगेव। तव हरि कहेउ विपुल वल तुम्हरो जीति लिये सब देव ॥ ७८४ ॥ तव उन कहेउ चरण आपनमें राख्यो निशि दिन ध्यान। मोरि प्रतिज्ञा तुम राखी है मेटि वेदकी कान ॥ ७८५ ॥ डार शस्त्र शर शय्या सोये हरि चरणन चित लायो। उत्तर दिशि रवि जान देह तजि वहां परमपद पायो ॥ ७८६ ॥ नृपति युधिष्ठिर राजतिलक दै मारि दुष्ट की भीर। द्रोण कर्ण अरु शल्य मुक्तकरि मेटी जगकी पीर ॥ ७८७ ॥ गोविंद आय द्वारका निज गृह अति आनन्द वढ़ायो। घर घर मंगल महा कुलाहल यदुकुल होत वधायो ॥ ॥ ७८८ ॥ शल्य नृपति तपकिय पंचानन तापै यह वर पायो। दियो वनाय नगर गोपुर में काहुन जात लिवायो ॥ ७८९ ॥ आय द्वारका शोर कियो उन हरि हस्तिनापुर जाने। प्रद्युमन लरे सप्त दश दोदिन रंचहार नहिं माने ॥ ७९० ॥ हरि अपसगुन जानि हस्तिनपुर वैठ तुरत रथ धाये। वहुत देशको पावन करि करि सांझद्वारकाआये ॥ ७९१ ॥ कीन्होंयुद्ध आय शाल्वसों उन वहु मायाकीन्हीं। जलमें थल थलमें जल देख्यो श्याम दूरकर दीन्हीं ॥ ७९२ ॥ माया दूर करी नँद नन्दन चक्र दियो शिरडार। क्षणहीं मांझ दुष्टसंहारो भुवकोभार उतार ॥ ७९३ ॥ जय जयकार करत देवांगन वरपत कुसुम अपार। कियो प्रवेश द्वारका मोहन घर घर मंगलचार ॥ ७९४ ॥ राजसूय करवाय श्यामघन जरासंध मरवायो। दन्तवक्र महिपाल महावल विदुरथ प्राण नशायो॥ ॥ ७९५ ॥ वालक मृतक देवकी मांगे सो छिनमें हरिलाये। दीन्हों दरश भक्त नृपवलिको तनुके ताप नशाये ॥ ७९६ ॥ वालक आय देवकी जाने स्तन पान कराये। हरिको शेषपान करिके वे हरिकेपद पहुँचाये ॥ ७९७ ॥ एकदिना यदुनाथ संग सब विप्र मण्डली लीन्हें। मिथिला चले जनक राजा पै दरश कृपाकरि दीन्हें ॥ ७९८ ॥ तहांवसत श्रुतदेव महामुनि सुनि दर्शनको धायो। तव उन कहेउ चलौ मेरे गृह हरि स्वीकार करायो ॥ ७९९ ॥ नृपति कह्यउ मेरे गृह चलिये करो कृतारथ मोय। तादूके हरि आपु पधारे प्रकटधरे वपुदोय ॥ ८०० ॥ देख चरित्र विनोद लालके विस्मितभे द्विजराय। अद्भुतकेलि कृपाकरिकीन्हीं द्विजको ज्ञान दृढ़ाय ॥ ८०१ ॥ वहुत दिवसलों कृपाकरी हरि जनकराय सुखदीन्हों। वहुरि पधारे पुरी

द्वारका यदुकुलमें सुख कीन्हों ॥ ८०२ ॥ बहिन सुभद्रा व्याह विचारो हरि अर्जुन चित धारो । श्रीबलदेव कह्यउ दुर्योधन नीको दुलह विचारो ॥ ८०३ ॥ हरिको भेद पायकै अर्जुन धारि दंडीको रूप । भिक्षाको निजभवन बुलायो श्रीबलभद्र अनूप ॥ ८०४ ॥ नयनन मिलत लई कर गहिकै फाल्गुन चले पराय । सुनि बलदेव क्रोध अति बाढ़यउ कृष्ण शान्त कियो आय ॥ ८०५ ॥ फेर बुलाय व्याह करिदीन्हों विजय बहुत सुखपायो । फिर आये हस्तिनपुर पारथ मघवा प्रस्थ बसायो ॥ ८०६ ॥ एक दिना यककविप्र भक्तमति हरिको सखा कहावे । अतिदारिद्र दुखित जमजाने तब पत्नी समुझावे ॥ ८०७ ॥ जाहु नाह तुम पुरी द्वारका कृष्णचन्द्रके पास । जिनके दरश परश करुणाते दुख दरिद्रको नास ॥ ८०८ ॥ तंदुल मांग दोंचिके लाई सो दीन्हों उपहार । फाटेवसन बांधिकै द्विजवर अति दुर्बल तन हार ॥ ८०९ ॥ आये देव द्वारका हरिपै जाय चरण शिरनायो । हरि भेंटे भ्राताकी नाईं पूजा विविध करायो ॥ ८१० ॥ अपने मुनि आसन बैठारे हँसि हँसि बूझत बात । कहो विप्र हमगये वन्तिका गुरुके सदन विख्यात ॥ ८११ ॥ वनमें वह वर्षा जब आई ताको सुधि करलेहों । गुरुआये आपुनको बोलन मंत्र थकायो मेहों ॥ ८१२ ॥ तादिन की यह कथा तुम्हारी बिसरत नाहिन मोहिं । कीधौं कौन कार्य्यंको आये सो पूंछत हौं तोहिं ॥ ८१३ ॥ कछु हमको उपहार पठायो भाभी तुम्हरे साथ । फाटे बसन सकुच अति लागत काढत नाहिंन हाथ ॥ ८१४ ॥ हरि अपने करछोरि बसनको तंदुल लीन्हें हाथ । मुट्ठीएक प्रथम जब लीन्हें खान लगे यदुनाथ ॥ ८१५ ॥ द्वितयि मुष्टिका लेनलगे जब कमला गहि लियो हात । दियो द्विजहि मघवाको वैभव बाढ़्यो यश विख्यांत ॥ ८१६ ॥ भोर भये उठिचले भवन को हरि कछु इनहिं न दीन्हों । ताको हर्ष शोक निज मनमें मुनिवर कछू न कीन्हों ॥ ८१७ ॥ भलीभई हरि दरशनपायो तनुकोताप नशायो । दुर्बल विप्र कुचील सुदामा ताको कंठ लगायो ॥ ॥ ८१८ ॥ धन्य धन्य प्रभुकी प्रभुताई मोपै वरणि न जाई । शेष सहसमुख पार न पावत निगमनेति कहिगाई ॥ ८१९ ॥ ऐसे कहतगये अपनेपुर सबहिं विलक्षण देख्यो । मणिमय महल फटिक गोपुर लखि कनकभूमि अवरेख्यो ॥ ८२० ॥ पत्नी मिली परमसुख पायो कृष्णचन्द्र आराधे । मघवाको सुख भयो सुदामहिं तऊ कछुक नहिं बाधे ॥ ८२१ ॥ नौलख धेनुदई राजानृग बहुतहिं दान देवायो । कृष्णभक्तिबिन विप्र शापते गिरगिटकी गतिपायो ॥ ८२२ ॥ ताको चरण परशिकै माधव दुःखित शाप छुटायो । कृपाकरी यदुनाथ महानिधि जिन वैकुंठ पठायो ॥ ८२३ ॥ बलदाऊ ब्रजमंडल आये ब्रजवासिनको भेटे । बहुत दिननके विरहताप दुख मिलत क्षणक में मेटे ॥ ८२४ ॥ सघन निकुंज सुभग वृन्दावन कीन्हें विविध विहार । गोपिन संग रासरस खेले बाढ्यो श्रम सुकुमार ॥ ८२५ ॥ कालिन्दीको निकट बुलायो जलक्रीडाके काज । लियो आकरषि एक क्षणमें हरि अति समरथ यदुराज ॥ ८२६ ॥ विविध भांति क्रीडा हरि कीन्हीं ब्रजवासिन सुखदीन्हों । द्वादश वन अवलोक मधुपुरी तीरथको चित कीन्हों ॥ ८२७ ॥ शुभ कुरुक्षेत्र अयोध्या मिथिला प्राग त्रिवेनी न्हाये । पुनि शतरुद्र और चन्द्रभागा गंगाव्यास न्हवाये ॥ ८२८ ॥ निमिषारन आये बलजू जब सकल विप्र शिरनायो । करी अवज्ञा कथा कहत द्विज अपने लोक पठायो ॥ ८२९ ॥ तब द्विज कहेउ कथा कहिके यह हमको सुख उपजायो । हम कापै अब कथा सुनैंगे बलदाऊ समझायो ॥ ८३० ॥ इनको पुत्र होय जो बालक ताको वेग

विठावो। धरेउ हाथ शिर दीन्हीं विद्या नित प्रति कथा सुनावो ॥ ८३१ ॥ पुनि द्विज विनती करि यह भाष्यो असुर एक इहँ आवे। यज्ञ करतमें जानपरत वह आय रुधिर वर्षावे॥ ८३२ ॥ यह सुनिकै बलदेव गुसाईं हल मूशल लियो हात। लियो पकर हल नभ मण्डलते करमूशल सों घात ॥ ८३३ ॥ जयजयकार भयो सुरलोकन देव दुंदुभीवाजै। स्तुति करत बहुतपूजा द्विज अति आनंद समाजै ॥ ८३४ ॥ विनती करी बहुत विप्रनने राम विप्र तुम मारेउ। तीरथ न्हाय शुद्ध तनको करि हरिद्विज वचन विचारेउ ॥ ८३५ ॥ वर्ष दिवसमें अरसठ तीरथ न्हाय करत घरआये। आय प्रभास विप्र बहुजनको बहुतहि दान देवाये ॥ ८३६ ॥ पुन मिथिला यक दिवस पधारे हरि बलदेवगोसांई। गदा युद्ध दुर्योधन सिखयो नानाभेद बताई ॥ ८३७ ॥ पुनि द्वारका पधारे निजपुर अतिआनँद सुखबाढ़्यो। प्रगट ब्रह्म नित वसत द्वारका कलह भूमिको काढ़्यो ॥ ॥८३८॥ दश दश पुत्र एक एक कन्या हरि सबके उपजाई। सुतके सुत नाती पतिनीकी महिमा कहिय न जाई ॥ ८३९ ॥ बड़े बली प्रद्युम्न कहावत कृष्ण अंश अवतार। तिन सब जगजीत्यो तिहुँ लोकन बाढ्यो सुयश अपार ॥ ८४० ॥ अश्वमेध करवाय युधिष्ठिर कुलको दोपमिटायो। करि दिग्विजय विजयको जगमें भक्त पक्ष करवायो ॥ ८४१ ॥ नानाविधि कीन्हीं हरि क्रीड़ा यदुकुल शाप दिवायो। जो ज्यहि लोक छोंडिके आयो ताको तहँ पहुँचायो ॥ ८४२ ॥ ऊधोको कहिज्ञान आपनो निगमन तत्त्व बतायो। कही कथा दत्तात्रय मुनिकी गुरु चौबीश करायो ॥ ॥ ८४३ ॥ कहि आचार भक्त विधभाषी हंसधर्म प्रकटायो। कही विभूति सिद्ध साधनता आश्रम चार कहायो ॥८४४॥ सांख्यतत्त्व गीताहरि कीन्हीं गुणके भेद करायो। ऐलगीत पुनि भिक्षुगीत कहि पूजा विधि दरशायो ॥ ८४५ ॥ सदा वसत हरि पुरी द्वारका बहु विधि भोग विलासी। आदि अनन्त अघट्ट अनूपम हैं अविगति अविनाशी ॥ ८४६ ॥ एकदिना यकविप्र द्वारका वसत सुखद निजधाम। वेदरूप तपरूप महामुनि कृष्ण विप्र यह नाम ॥ ८४७ ॥ बालक दश जुभये वाके जब भूमा लिये मँगाय। चित्तमें यह अनुरक्त विचारत हरि दर्शनकी चाय ॥ ८४८ ॥ दश सुत भयो जानके ब्राह्मण करि पुकार हरिपास। तब हरि कहेउ देवकी गति यह करत काल जग नास ॥ ८४९ ॥ तब अर्जुन यह कहेउ मत्त है नृप नाहिंन भुवभार। मैं अर्जुन गांडिवधनु जाको काल लरों क्षणमार ॥ ८५० ॥ जब सुत भयो कहेउ ब्राह्मणते अर्जुन गये गृहताह। शर पंजर रोप्यो चहुँ दिशिते जहां पवन नहिं जाह ॥ ८५१ ॥ तब सुत गयो देहको लैकै दरशन भयो न ताय। अतिही क्रोध भयो ब्राह्मणको बहुत बक्यो बिलखाय ॥ ८५२ तब अर्जुन ढूंढ़नको निकसे तीनलोक फिरि आयो। कहूं न पायो सुत ब्राह्मणके तब मनमें अकुलायो ॥ ८५३ ॥ कियो विचार प्रवेश अग्निको हरि आये समुझायो। लै निज संग चले पश्चिमको लोकालोक सोहायो ॥ ८५४ ॥ कनकभूमि अरु धामदेनको देखे परम सुहायो। बहुत निविडतम देख चक्र धरि धरेउ हाथ समुझायो ॥ ८५५ ॥ महाकालपुर तुरत पधारे हरिभूमाके पास। तुल्य अग्नि वर अगिन समानी भूमा तेज प्रकाश ॥ ८५६ ॥ कृष्ण तेजको देख सकल सुर तन मन भयो हुलास। अतिहीमन्द तेज भूमाको हरिके तेज प्रकाश॥८५७॥अति आनन्द परस्पर बाढ़्यो जब उन विनती कीन्हीं। भलीभई भुवभार उतारेउ मेरी फिरि सुधि लीन्हीं ॥ ८५८ ॥ लैदशपुत्र द्वारका आये दीन्हें विप्रबुलाय। कीन्हों दुःख दूरि अर्जुनको महिमा प्रकट दिखाय ॥ ८५९ ॥ कीन्हींकेलि बहुत बल मोहन भुवको भार उतारेउ। प्रकट ब्रह्मराजत द्वारावति वेद पुराण विचारेउ ॥ ८६० ॥

एक दिना रुक्मिणि सों माधव करत बात सुखदाई। सुनु रुक्मिणि राधिका बिना मोहिं पल सम कल्प बिहाई॥ ८६१॥ कनकभूमि रचि खचित द्वारका कुंजनकी छबिनाहीं। गोवर्द्धन पर्वत के ऊपर बोलतमोर सुहाहीं॥ ८६२॥ यमुनातीर भीर खग मृगकी मोहिं नितप्रति सुधि आवै। वृन्दा विपिन राधिका मन्दिर नितप्रति लाड़लड़ावै॥ ८६३॥ राति दिवस रस श्रवत सुधामें कामधेनु दरशाई। लूट लूट दधिखात सखनसँग तैसो स्वाद न पाई॥ ८६४॥ पटरस भोजन नानाविधिके करत महलके माहीं। छाकेखात ग्वालमंडलमें वैसो तो सुखनाहीं॥ ८६५॥ जन्मभूमि देखनके कारण मेरोमन ललचावे। धौरी धेनु बुलावन कारण मधुरे वेनु बजावे॥ ८६६॥ रास विलास विविध मैं कीन्हें संग राधिका लीन्हें। कीन्हें केलि विविध गोपिनसों सबहिनको सुखदीन्हें॥ ॥८६७॥ बलमोहन फिर ब्रजहि पधारे ऊधोको सँगलीने। दीन्होंबास चरणरज गोपिन गुल्म लता रस भीने॥८६८॥सदा विलास करत गोकुलमें धन धन यशुमति मात। ज्यों दीपकते दीपक कीन्हों भये द्वारकानाथ॥ ८६९॥ नित प्रति मंगल रहत महरके नितप्रति बजत बधाई। नितप्रति मंगल कलश धरावत नितप्रति वेद पढ़ाई॥८७०॥श्रीवृषभानु रायके आंगन नितप्रति बजत बधाई। नित प्रति मिल सुनि राजमण्डली मंगल घोष कराई॥८७१॥बाल केलि क्रीडत ब्रज आंगन यशुमतिको सुख दीन्हों। तरुण रूप धरि गोपिनके हित सबको चित हरि लीन्हों॥८७२॥ चन्द्रावली गोपकी कन्या चन्द्रभाग गृहजाई। भई किशोर श्याम ने देखी अद्भुत प्रीति बढाई॥ ८७३॥ तब ललिता पूछ्यो नीके कर केहि विधि श्याम मिलाई। अब न परत मोकूं कलक्षणहूं जियमें अति अकुलाई॥ ॥ ८७४॥ तब उन कहेउ शीश गोरसले बेचनके मिस आओ। गोवर्द्धन पर गोविंद खेलत निरख परमसुख पाओ॥ ८७५॥ करि शृंगार चली चन्द्रावलि नख शिष भूषणसाजै। ज्यों करनी गजराज विलोकत ढूंढतहै अतिगाजै॥ ८७६॥ गोवर्द्धनके शिखर चारुपर सखा वृन्द सँग लीन्हें गोपिन देख टेर हरि कीन्हों दान लेन मन कीन्हें॥ ८७७॥ राखो घेरि सकल युवतिनको सखा वृन्दसों भाख्यो। आपु जाय पकरयो कोमल कर दधि अमृत रस चाख्यो॥ ८७८॥ देहो दधि कोदान नागरी गहर न लायोचित्त। तुमरेकाज नित्य हमठाढ़े अरपे अपनो वित्त॥ ८७९॥ वृन्दावनमों धेनु चरावत मांगत गोरस दान। नाना खेल सखन सँग खेलत तुम पायो नृपथान ॥ ८८०॥ अरी ग्वालि मद मत्त वचनकी बोलत वचन विचार। अचलराज गोबर्द्धन मेरो वृन्दावन मंझार॥ ८८१॥जो तुम राजा आप कहावत वृन्दावनकी ठौर। लूट लूट दधिखात सबनको सबै चोरनके मौर॥ ८८२॥ चोरी करत भक्तके चितकी अरु दधि अरु नवनीत। सखा वृन्द सब मीत हमारे बड़ीराज रजनीत॥ ८८३॥ जो तुम राजनीत सब जानत बहुत बनावतबात। जब तुम जन्म लियो मथुरामें आये आधीरात॥ ८८४॥ सुनरी ग्वालिगँवार बातकी बोलत बिना विचार। कमल कोषमें बसत मधुप ज्यों त्यों भुव रहे मुरार॥ ८८५॥ दूध दहीके नात बनावत बातें बहुत गोपाल। गढ़ि गढ़ि छोलत कहा रावरे लूटतहौ ब्रजबाल॥ ८८६॥ जोप्रभु देहधरे नहिं भुवपर दीन अधम को तारे। बढ़े असुर पुहुमी पर खल अति तिन्हैं तुरतको मारे॥ ८८७॥ योग युक्तकर ध्यान लगावत योगसिद्ध कर ज्ञान। नेतिनेति करि निगम बतावत ताहि होत निर मान॥ ८८८॥ योगसांख्य अरु ज्ञान भामिनी माया हृदय विनास। प्रेम भक्त मेरो यशगावे तेहि घट मेरो वास॥ ८८९॥ मुखऊपर कह कहों लायके अन उत्तरको खोर। जब यशुमतिने ऊखल बांधे हमहीं दीन्हेंछोर॥ ८९०॥ बालक निपट अयान ग्वालिनी कछु सुधि जानिनजाय। लैकर

चीर कदमपर बैठ्यो सबहिन हाहाखाय ॥ ८९१ ॥ बहुत भयेहो ढीठ सांवरे मुखपर गारीदेत तुम्हरेडर हम डरपत नाहिंन कहा कँपावतवेत ॥ ८९२ ॥ श्याम सखनसों कहेउ टेरदे घेरो सब अब जाय। बहुत ढीठ यह भई ग्वालिनी मटुकी लेहु छिड़ाय ॥ ८९३ ॥ जाय श्याम कंकणकर लीनो गहि हारावलि तोर। लूट लूट दधिखात सांवरो जहां सांकरीखोर ॥ ८९४ ॥ इन्द्रा वृन्दा और राधिका चन्द्रावलि सुकुमारि। विमल विमल दधिखात सवनको करत बहुत मनुहारि ॥ ८९५ ॥ गहि बहियां ले चले श्याम घन सघन कुंजके द्वार। पहिले सखी सबै रचिराखी कुसुमन सेज सँवार ॥ ८९६ ॥ नाना केलि सखिन सँग विहरत नागर नंदकुमार। आलिंगन चुम्बन परिरंभन भेंटत भरि अँकवार ॥ ८९७ ॥ श्रम जल विंदु इन्दु आनन पर राजत अतिसुकुमार ॥ मानो विविध भाव मिल विलसत मगन सिंधुरससार ॥ ८९८ ॥ कुंजरंध्र अवलोकि सहचरी अपनो तन मन वारे। निरख निरख दंपति नेतन सुख तोर तोर तनडारे ॥ ८९९ ॥ यह अवलोकि देव गंधर्व मुनि वरसत कुसुम अपार। जयजय करत वार नीराजन बोलत जय जयकार ॥ ९०० ॥ गोवर्द्धनकी सघन कंदरा कीनो रैनिनिवास। भोर भये निजधाम चले दोउ अतिआनन्द विलास ॥ ९०१ ॥ नन्दधामहरि बहुरि पधारे पौढरहे निजसैन। यशुमतिमात जगावत भोरहिं जागे अम्बुज नैन ॥ ९०२ ॥ करी मुखारी और कलेऊ कीनो जल असनान। कारि शृंगारचले दोउ भइया खेलनको सुखदान ॥ ॥९०३॥कहुँ खेलत मिल ग्वाल मंडली आंख मीचली खेल। चढ़ा चढ़ीको खेल सखनमें खेलत हैं रसरेल ॥ ९०४ ॥ कहूँ आमरू डार विटपकी खेलत सखन मँझार। कूद कूद धरणी सब धावत दाँवदेत किलकार ॥ ९०५ ॥ भोजन समय जान यशुमतिने लीने दुहुँन बुलाय। बैठ आय यशुमति कि गोदमें आनँद उर न समाय ॥ ९०६ ॥ बहुविधिके पकवान बनाये परसत यशुमति माय। आरोगित बलमोहन दोऊ सुख देखत ब्रजराय ॥ ९०७ ॥ कबहूं कवर खात मिरचनकी लागी दशन टकोर। भाज चले तब गहे रोहिणी लाई बहुत निहोर ॥ ९०८ ॥ भोजन करि नाना विधि दोऊ लीनो मठा सलोनो। अँचवन करि ब्रजराज पधारे बल मोहन सुख मानो ॥ ९०९ ॥ बीरीखाय चले खेलनको बीच मिली ब्रजनार। ले चलि पकर बाँह राधापै सघन कुंजके द्वार॥ ॥ ९१० ॥ राधा सों मिलि अति सुख उपज्यो उन पूंछी इक बात। कहो जु आज रैन कहँ सोये हम देखे तुम जात ॥ ९११ ॥ तब हरि कहेउ सुनो मृगनैनी गाय गई यक दौर। ताको लेन गयो गोवर्धन सोय रहेउँ तेहि ठौर ॥ ९१२ ॥ कंद मूल फल दीने गोधन सो निशिको मैं खायो। भोर भये उठि तेरे आयों चरण कमल परसायो ॥ ९१३ ॥ निजप्रतिविंब विलोकि राधिका हरिनख मंडलमाहँ। द्वितियरूप देखे अवलाको मान बढ्यो तनछाहँ ॥ ९१४ ॥ चली रिसाय कुंज मृग नयनी जहँ अति करत गुंजार। बैठी जाय एकांत भवनमें जहां मानगृह चार ॥ ९१५ ॥ नन्द कुँवर विरहन राधाके विरह भये भरिपूर। बैठे जाय एकांत कुंजमें सखा कियो सब दूर ॥९१६॥ ललिता बोल कही मृदुवाणी कृष्ण विमल दलनैन। विन राधा मोहिं कलनपरत है कहत मधुर मृदु बैन ॥ ९१७ ॥ वेगजाय परि पायँ राधिका विनती करो सुनाय। दरशन देउ सकल दुख मेटो तुम विन रहेउ न जाय ॥ ९१८ ॥ तुम विन खानपान नहिं भावत गोचारन शृंगार। रैन नींद नहिं परत निरंतर संभाषन व्यवहार ॥ ९१९ ॥ करि दंडवत चली ललिता जो गई राधिका गेह। पायँन पर पर बहुत विनय कर सफल करनको नेह ॥ ९२० ॥ वेगि चलो वृषभानुनन्दनी

बोलत नन्दकुमार। तुम विन पल छिन कल न परत है भोजन सुख व्यवहार ॥ ९२१ ॥ नव निकुंज में मिलो श्यामसों भेंटो भरि अंकवार । कुसुमसेजपर करो केलि प्रिय गिरिधर परम उदार ॥ ९२२ ॥ तो विन पियहि कछू नाहिं भावे तोसों पिय आधीन । तोविन श्याम रहत हैं ऐसे जैसे जल विन मीन ॥ ९२३ ॥ कहा सुभाव परचो सखि तेरो यह विनवतहौं तोह । मान करत गिरिवरधर पयसों मानत नाहिन मोह ॥ ९२४ ॥ करि शृंगार सकल व्रज सुंदरि नीलांबर तनुसाज। रैन अंधेरी कछू न दीखत नूपुर ध्वनि जिन वाज ॥ ९२५ ॥ कुवलय दल कुसुमन शय्या रचि पंथ निहारत तोर। सपन जाग अरु शयन सुप्रत तुव वचन सत्यहै मोर ॥ ९२६ ॥ सित अरु पीत यूथिका वेनी गूंथो विविध वनाय। रचो भाल निज तिलक मनोहर अंजन नयन सोहाय ॥ ९२७ ॥ तू छवि सिंधु विहर व्रजनायक क्षुद्र नदी नाहिं भावै। जवते नाम सुन्यो श्रवणन तुव रैनि नींद नाहिं आवै॥९२८॥हरि राधा राधा रटत जपत मंत्र दुरदाम। विरह विराग महायोगी ज्यों वीतत हैं सब याम ॥ ९२९ ॥ कवहुँक किशलय सेज सँवारत तेरेही हित लाल। कवहुँक अपने हाथ सँवारत गूंथत कुसुमन माल ॥ ९३० ॥ तुव विनवट संकेत सदन वन देखत लगत उदास। विरह अग्नि चहुँ दिशिमें धावत फूले दिखत पलास ॥ ९३१ ॥ सारस हंस मोर पारावत बोलत अमृतवान। वैठरहे दुरसदन सघन वन ध्वनि नहिं सुनियत कान ॥ ९३२ ॥ कालिन्दी तट विमल कदमतर करत वदन तुव ध्यान । सुहृदय सखा त्यागि मनमोहन करत मधुर तुव गान ॥ ९३३ ॥ गुंजत श्रवणन मधुप सुनत हैं तुव श्रुति की सुधि आवै । कंचन बरन जात तेरो वपु पीताम्बर पहिरावै ॥ ९३४ ॥ सुनत कोकिला शब्द मधुरध्वनि कमल नयन अकुलात। तेरे बोल करत सुधि जियमें विरह मगन ह्वै जात॥ ९३५॥ तुव नासापुट गात मुक्त फल अधर विंव उनमान। गुंजाफल सबके शिर धारत प्रकटी मीन प्रमान ॥ ९३६ ॥ सिंधु सुतासुत तारिपु गमनी सुन मेरी तू वात। कामपिता वाहन भखको तनु क्यों न धरत निजगात॥ ॥ ९३७ ॥ अलि वाहन पति वाहन रिपुकी तपतवढ़ी तनुभारी। शैल सुतासुत तासुत अँगना सोतैंसबै विसारी ॥ ९३८ ॥ भृंग यूथ चतुरानन तनया ब्रह्मनाद सुरसंग। जलसुत वाहनसो जन धारत विषम लगत विप अंग ॥ ९३९ ॥ चतुराननसुत तासुत वा सुत उदित होन अब आयो । मन्मथ मात तात सुत अथयो सो तो वृथागँवायो ॥९४० ॥ पंकज उर पंकजजिन केरे तेरो अटल सुहाग। सुरपति वाहन तासुत शिरपर मांग भरो अनुराग ॥ ९४१ ॥ कमल पुत्र तासुत कर राजत सोहरि निज कर लीन्हें। सप्त स्वरन उपजाय वजावत रटन राधिका लीन्हें ॥ ९४२ ॥ सुत प्रह्लाद तासु सुत ता पित भ्राता वृथा गँवायो । संज्ञा सुत वपु सदृश वसन तन सो तन लागत छायो ॥ ९४३ ॥ सारंग ऊपर सारंग राजत सारंग शब्द सुनावै। सारंग देख सुने मृगनैनी सारंग सुख दरशावै॥ ९४४ ॥ सारंग रिपु की वदन ओटदै कह बैठी है मौन । ब्रह्म सुता सारंगके धोखे करत सकलव्रज गौन ॥ ९४५ ॥ सारंगसुता देखि सारंग को तेरो अटल सुहाग । सारंग पति तापति ता वाहन कीरत रट अनुराग ॥ ९४६ ॥ दधिसुत वाहन सुभग नासिका दधि सुत वाहन देख्यो। दधिसुत वाहन वचन सुनन तुव अंग अंग अवरेख्यो ॥ ९४७ ॥ शशि को भ्रात कहत ता वाहन कुन्द कुसुम ललचात । खंजन सदृश देख तुव अँखियां तन मनमें अकुलात ॥ ९४८ ॥ मारुत सुरपति रिपुता पतनी ता सुत वाहन वात । श्रवण सुनत अकुलात सांवरो कछुक कही नहिंजात ॥ ९४९ ॥ चतुरानन सुत ता सुत पत्नी ता सुतको जो दास ।

तासुत वाहन पुत्र अंगधरि जलसुत करों प्रकास ॥ ९५० ॥ श्रीवलदेव रास जो कहिये तामें भानु मिलाय। ताकी सुता कहत चतुरानन निगम सदा गुणगाय ॥ ९५१ ॥ सिंधुसुता तव भाग्या विलोकत मनमें रही लजाय। काम पिता माता गुरु ता वपु युवति कोट दरशाय ॥९५२॥ सातो रासमेल द्वादशमें ऐसे वीतत याम। द्वितिय रासमें मिलत सप्तमी सो जानत निजधाम ॥ ९५३ ॥ शैलसुताधारि तारिपु वांधत अंग अंग पिय आज।कोटि यत्न कर सींचत तोऊ मिटत नहीं व्रजराज ॥ ९५४ ॥ वायस अजा शब्द मन मोहन रटत रहत दिन रैन। तारापतिके रिपुपर ठाढ़े देखतहैं हरि नैन॥९५५॥गंगासुत रिपु रिपु शिष मेरी सुनत नहीं सखि काह।नारायण सुत तासुत तासुत लगत विपम विप ताह ॥ ९५६ ॥ जलसुत वाहन देख वदन तुव ब्रह्मसुता अकुलानी। मंगल मात तासु पति वाहन राजत सहश भुलानी ॥ ९५७ ॥ दक्ष प्रजापतिकी तनयापति तासुत नारगई। सिंधुसुतासुत वाहनकी गति देखत विपम भई ॥ ९५८ ॥ अग्नितात तेहि तात अंगना त्यों उनमें तू राखी। वंधु कुसुम द्रुम तारिपुको पति सारंग रिपुकर भाखी ॥ ९५९ ॥ पति पाताल लग्न तनधारन सोसुख भुजा विचारी। प्रथम मथत जलनिधि जो प्रकट्यो सो लागत सवनारी ॥९६० ॥ वंधु कुमुद पति पिता सुता जो तुव यश मधुरेगावै। ब्रह्मसुता सुत पदरज परसत सारंगसुता देखावै ॥ ९६१ ॥ इन्द्रसुतापति भुजा लगन लखि जलसुत हृदय लगावै। इन्द्रसुता तनय पति को सुत ताकें गुने न पावै ॥ ९६२ ॥ धरत कमलमें कमल कमलकर मधुर वचन उच्चार। कमलावाहन गहत कमलसों कमलन करत विचार ॥९६३॥ कालिन्दी पति नैन तासुसुत लागतहैं सवलोग। इन्द्र मात तेहि तात सो सरधत प्रकट देखियत भोग ॥ ९६४ ॥ अंवुज मात तात पतितारिपु ता पति काम विगारे । ताते सुन तू भाननन्दनी मेरो वचन विचारे ॥ ९६५ ॥ तीस भान द्वै मास सकलऋतु सिंधुसुता सन जान । भूपन अंग लसत गुंजावलि और न कछू समान ॥ ९६६ ॥इति दृष्टकूट सूचनिका सम्पूर्ण ॥ कवहुँक सेज रचत वेंदी कर हृदय होम घृत नैन। विप्र भोज वालन तुव देखियत अंगकूस नहिं चैन ॥९६७॥ अव तू वेग विचार वचन मम सुन वृपभानुकुमारि । मिलहो वेग कमलदल लोचन सुन मेरी मनुहारि॥९६८॥गौर वरण ह्वैजात सांवरो ध्यान करत तुव अंग। पुनि ललिता हरिके ढिग आई वैठे सांवलरंग ॥ ९६९ ॥ वेग चलो तुम श्याम मनोहर आपुकाज महँ काज। लेहु मनाय प्राणप्यारीको प्रकट्यो कुंज समाज ॥ ॥ ९७० ॥ ऋतुवसंत अव आय देखियत फूले कुसुम सुरंग । मानो मदन वसंत मिले दोउ खेलतहैं रसरंग ॥ ९७१ ॥ वेगि चलो अव पिया मनावन नेक विलम्व न लाओ। मेरी कही वात नहिं मानत ताको ज्ञान दृढ़ाओ ॥ ९७२ ॥परी पांय अपराध क्षमावत सुनत मिलेगी धाय। सुनत वचन दूतिका वदनमें श्याम चले अकुलाय ॥९७३॥जहँ वैठी वृपभानुनंदनी तहँ आये धरि मौन। परेपांय हरि चरण परसकरि छिन अपराध सलौन॥९७४॥सुनि हरि वचन विलोकत शोभा मानग यो सव छूट। मिले धाय अकुलाय श्यामघन प्रेम काम रस लूट॥९७५॥रच्यो शृंगार श्याम अपने कर नखशिख प्रिया वनायो। शीशफूल वेनी नकवेसर तिलकभाल करवायो ॥९७६॥ युगताटंक चिवुक दशनावलि कर कंकण उरमाल। नूपुर पद कटि छुद्रघंटिका सव शृंगार रसाल ॥ ९७७ ॥ सकल शृंगार करत वर्णनको कृपा यथामति मोर। होत विलम्व मिलनके कारण ताते वर्णत थोर ॥ ९७८ ॥ चले धाय नवकुंज दोउ मिलि किशलय सेज विराजे। परिरंभन सुख रास हास मृदु सुरत केलि सुख साजे ॥ ९७९ ॥ नाना वंध विविध रस क्रीडा खेलत श्याम अपार। रसरस

तत्त्व भेद नहिं जानत दंपति अंग सँभार ॥ ९८० ॥ सुरत सरुद्र मगन दंपति रस झेलत अति सुखझेल । निर्वधि रमन अपरमित अच्युत मनुज माय बहु खेल ॥ ९८१ ॥ नूपुर संचित किंकिनिकी ध्वनि सुनत मधुर किलकार।मदन सिंधु मधुमत्त मधुपगन फूले करत गुंजार ॥९८२ मधुप यूथ मिलि सबन चन्द्रमा तडित लिये आकास । खंजन मीन बजावत गावत निरतत सुख सुविलास ॥ ९८३ ॥ जलद समूह खसत उडुगण गण पै समुद्रके बीच । मकर कपोल बोल मृदु कोकिल अमृत सुधारस सींच ॥ ९८४ ॥ मोहन वेल शृंगार विटपसों उरझी आनँद वेल । कंचन वेल तमालहि लपटी रसिकरंग भरिरेल ॥ ९८५ ॥ युगल कमलसों मिलत कमल युग युगल कमल ले संग । पांच कमल मध्य युगल कमल लखि मनसा भई अपंग ॥ ९८६ ॥ किरण कदम्ब मंजुका पूरण सौरभ उडत अवेश । अगर धूप सौरभ नाशा सुख वरषत परम सुदेश ॥ ९८७ ॥ कुंतद कुमुद बंधूक मिलत पुनि मीन देख ललचात । तापर चन्द्र देख संज्ञासुत तनमें बहुत डेरात ॥ ९८८ ॥ वरना भख करमें अवलोकत केश पास कृतबन्द । अधर समुद्र सदल जो सहसा ध्वनि उपजत सुखफन्द ॥ ९८९ ॥ मुदित मराल मिलत मधुकर सों खंजन मिलत कुरंग । कीर कीर रणधीर मिलत सम रतरस लहर तरंग ॥ ९९० ॥ सुरत समुद्र कहत दम्पतिकै निर्वधि रमन अपार । भयो शेष मनमूढ कहनको राधा कृष्ण विहार ॥ ९९१ ॥ शोभा अमित अपार अखण्डित आप आत्माराम । पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम सबविधि पूरण काम ॥ ९९२ ॥ आदि सनातन एक अनूपम अविगति अल्पअहार । ओंकार अदिवेद असुरहन निर्गुण सगुण अपार ॥ ९९३ ॥ चतुरानन पञ्चानन अरु पुन षटआनन सम जान । सहसानन बहुआनन गावत पार न पाय बखान ॥ ९९४ ॥ सघन कुंजमें अमितकेल लख तनु सुगन्धकी रेल। मधुकर निकट आय पीवत रस सुखद सदारस झेल ॥ ९९५ ॥ मलिनभये रसमान सरोवर मुनि जनमानसहंस । थकित विलोकि शारदा वर्णन करिबे बहुत प्रशंस॥९९६॥ वृंदावन निजधाम परम रुचि वर्णन कियो बढ़ाय । व्यास पुराण सघन कुञ्जनमें जब सनकादिक आय॥९९७॥धीर समीर बहत त्यहि कानन बोलत मधुकर मोर । प्रीतम प्रियाबदन अविलोकत उठि उठि मिलत चकोर॥ ॥ ९९८ ॥ अमित एक उपमा अविलोकत जियमें परत विचार । नाहिं प्रवेश अज शिवगणेश पुनि कितकवात संसार ॥ ९९९ ॥ सहस रूप बहुरूप रूप पुनि एकरूप पुनिदोय । कुमुदकली विगशित अम्बुज मिलि मधुकर भागीसोय॥१०००॥नलिन पराग मेघ माधुरि सों मुकुलित अम्ब कदम्ब । मुनिमन मधुप सदा रस लोभित सेवत अज शिव अम्ब॥१००१॥गुरु प्रसाद होत यह दरशन सरसठ बरष प्रवीन । शिवविधान तपकरेउ बहुत दिन तऊ पार नाहिं लीन ॥१००२॥सुख पर्य्यंक अंक ध्रुव देखियत कुसुम कन्द द्रुम छाये । मधुर माल्लिका कुसमित कुञ्जन दम्पति लगत सोहाये ॥ १००३ ॥ गोवर्द्धन गिरि रत्न सिंहासन दम्पति रस सुखमान । निविड कुञ्ज जहँ कोउ न आवत रस बिलसत सुखखान ॥१००४॥ निशाभोर कबहूं नहिं जानत प्रेम मत्त अनुराग। ललितादिक सींचत सुखनैनन जुर सहचरि बडभाग ॥१००५॥ यह निकुञ्जको वर्णन करिदे वेद रहे पचिहार । नेतिनेतिकर कहेउ सहस विधि तऊ नपायो पार ॥ १००६ ॥ दरशन दियो कृपा करि मोहन वेग दियो वरदान । आगम कल्परमण तुव ह्वैहै श्रीमुख कही बखान ॥ १००७ ॥ सो श्रुतिरूप होय ब्रजमण्डल कीनो रास विहार । नवल कुञ्जमें अंश बाहु धरि कीन्हीं केलि अपार ॥ ॥ १००८ ॥ पुनि ऋषि रूप राम वर पायो हरिसे प्रीतम पाय । चरण प्रसाद राधिका देवी उन

हरिकंठ लगाय ॥ १००९ ॥ वृन्दावन गोवर्धन कुञ्जन यमुना पुलिन सुदेश । नित प्रति करत विहार मधुररस श्यामा श्याम सुवेश ॥ १०१० ॥ निरखि निरखि सुख दम्पतिको यह कविकुल सब पचिहारे। भूषण खसे सुरत वश दोऊ केशन आपु सँवारे ॥ १०११ ॥ ललिता ललित वजाय रिझावत मधुर वीन कर लीने। जान प्रभात राग पञ्चम पट मालकोस रसभीनें ॥१०१२॥ सुर हिंडोल मेघ मालव पुनि सारँग सुर नट जान। सुर सांवत भूपाली ईमन करत कान्हरो गान ॥ ॥ १०१३ ॥ ऊंछ अडानेके सुर सुनियत निपट नायकी लीन। करत विहार मधुर केदारो सकल सुरन सुख दीन ॥ १०१४ ॥ सोरठ गौडमलार सोहावन भैरव ललित वजायो । मधुर विभास सुनत वेलावल दम्पति अति सुखपायो ॥ १०१५ ॥ देवगिरी देशाकदेव पुनि गौरी श्री सुखरास। जैतश्री अरु पूर्वी टोडी आसावरि सुखरास ॥ १०१६ ॥ रामकली गुनकली केतकी सुर सुघराई गाये। जैजैवन्ती जगत मोहनी सुरसों वीन वजाये ॥ १०१७ ॥ सूआसरस मिलत प्रीतमसुख सिन्धुवीर रसमान्यो। जान प्रभात प्रभाती गायो भोर भयो दोउ जान्यो ॥ १०१८ ॥ जागे प्रात निपट अलसाने भूषण सब उलटाने । करत शृंगार परस्पर दोऊ अति आलस शिथिलाने ॥ ॥ १०१९ ॥ जालरंध्रह्वै सहचरि देखत जन्म सफल करि लेखे। जान प्रभात उछंगन दम्पति लेत प्राण रसपेखे ॥ १०२० ॥ औख्यो दूध कपूर मिलायो लै ललिता तहँ आई । पहिले श्यामाको अँचवायो पाछे पिवत कन्हाई ॥ १०२१ ॥ करि शृंगार सघन कुञ्जनमें निशिदिन करत विहार। नीराजन वहुविधि वारतहैं ललितादिक व्रजनार॥१०२२॥कवहुँक केलि करत यमुना जल सुन्दर शरद तड़ाग। कवहुँक मधुर माधुरी झूलत आनँद अति अनुराग ॥१०२३॥ प्रथम वसन्त पञ्चमी शुभदिन मंगलचार वधाये।पञ्चानन जारचो मन्मथसो प्रकट भयो फिरि आये॥१०२४॥यशुमति मात वधाई बाँटत फूली अंग न समाई। उबटि न्हवाय श्यामसुन्दरको आभूषण पहिराई॥१०२५॥ घर घरते आई व्रज सुन्दरि मंगल साज सँवारे। हेम कलश शिर पर धरि पूरण काम मन्त्र उपचारे ॥१०२६ ॥अविर गुलाल अरगजा सोधी लीन्हों सौज बनाय। मनमें किये मनोरथ बहु विधि मिलवत सब मनभाय ॥ १०२७ ॥ भीर जानि सिंह पौर त्रियनकी यशुमति भवन दुराई। ढूंढ सकल त्रिय दौरमात को पकर बाँह ले आई ॥ १०२८ ॥ केसर चन्दन और अरगजा शीश महर के नाये। जो जो विधि उपजी जाके जिय सोइ सोइ भांति कराये ॥ १०२९ ॥ फगुआ दियो महर मन भायो यशुमति परमउदार। पकर लिये घनश्याम मनोहर भेटे भरि अंकवार ॥ १०३० ॥ पहिली जान वसंत पंचमी यशुमति वहुत खिलाये। केसर चोवा और अरगजा श्याम अंग लपटाये ॥ १०३१ ॥ तापाछे गोपिनने छिरके कनक कलश भरिडारे । मानो शीश तमाल अमृत घन सरस सुधा निधरारे ॥ १०३२ ॥ चन्दन चोवा मथत हाथ कर नील जलद तनु अरप्यो। मानो प्रकट करी अपने चित पियको प्राण समरप्यो ॥ १०३३ ॥ किये मनोरथ नाना विधिके मेवा बहु विधि लाई। सो हरिने स्वीकार कियो सब निरखि परम सुखपाई ॥ १०३४ ॥ सुवल सुवाहुतोक श्रीदामा सकल सखा जुरि आये । रत्न चौक में खेल मचायो सरस वसन्त वधाये ॥ १०३५ ॥ करत परस्पर गोप ग्वाल मिलि क्रीडा अति मन भाई । सुरँग अवीर गुलाल उडावत रह्यो गगन सब छाई ॥ १०३६ ॥ फगुआ देन कह्यो मनभायो सबै गोपिका फूली। कंठ लगाय चलीं प्रीतमको अपने गृह अनुकूली ॥ १०३७ ॥ करतआरती विविध भांतिसों यशुमति परम सुहाई। सखावृन्द सब चले यमुन तट खेलत कुँवर कन्हाई ॥ १०३८ ॥ बैठे जाय सघन

कुंजनमें यमुनातीर गोपाल । सखी एक तहँ आय निकटही बोली वचन रसाल ॥ १०३९ ॥ वृन्दाबन फूल्यो नँदनंदन सघन कुंज बहु भांत । हरि प्रतीत मुकुलित द्रुम पल्लव मुखरित मधुकर पात ॥ १०४० ॥ ठौर ठौर झिल्ली ध्वनि सुनियत मधुर मेघ गुंजार । मानो मन्मथ मिलि कुसुमाकर फूले करत विहार ॥ १०४१ ॥ अपनो सब गुण तुम्हैं दिखावन स्मर वसन्त मिलि आयो । मधुर माधुरी मुकुलित पल्लव लागत परम सुहायो ॥ १०४२ ॥ गोवर्द्धन के शिखर सुभगपर फूले कुसुम पलास । सहज सुरत सुख देत संयोगिन बिरहिन करत उदास ॥ १०४३ ॥ पुहुप पराग परस मधुकर गन मत्त करत गुंजार । मनो कामि जन देख युवति जन विषयाशक्ति अपार ॥ १०४४ ॥ वीथिन विपिन विलोकि विविध मन मण्डित कुसुमित कुंज । मनहुँ हेम मंडपिका मुखरिति कल्पलता रस पुंज ॥ १०४५ ॥ वेगचलो वृन्दावन नायक राधा मारग जोवत । हिल मिल खेलो मन्मथ क्रीडा क्यों बसंत दिन खोवत ॥ १०४६ ॥ सुनत । वचन ललिताके मोहन तुरत चले उठिधाय । कियो वसंत खेल वृन्दावन अद्भुत फागु मचाय ॥ १०४७ ॥ लता लता बन बन कुंजनमें खेलत फिरत बसन्त । मनहुँ कमलमण्डलमें मधुकर बिहरतहैं रसमन्त ॥ १०४८ ॥ उत श्यामा इत सखा मण्डली उत हरि इत ब्रजनार । मनो तामरस पारस खेलत मिल मधुकर गुञ्जार ॥ १०४९ ॥ खेल बसंत बहुत सुख मान्यो हर्षे गोपी ग्वाल । विहँसिगये ब्रजराजभवनसब चञ्चलनैनविशाल ॥ १०५० ॥ होरीडांडी दिवस जानके अतिफूले ब्रजराज । बैठेसिंहद्वारपै आपुन जुरिके गोपसमाज ॥ १०५१ ॥ विप्र बुलाय वेदविधि करिकै होरीडांडीरोप । आनन्दे सब गोप मण्डली मन्मथ कियो प्रकोप ॥ १०५२ ॥ परिवा प्रथम दिवस होरी को नन्दराय गृहआई । सकल सौंज गोपीकर लेके खेलनको मनभाई ॥ १०५३ दुइज दुहूँ दिशिते होरीमचि सुरंग गुलाल उड़ायो । मनो अनुराग दुहुँनके अन्तर सबहिन प्रकट करायो ॥ १०५४ ॥ तीज तरुणि मिलि पकरे मोहन गहिकर अञ्जन दीनों । मत्त मधुप बैठ्यो अम्बुज पर सुखरत है सुरभीनों ॥ १०५५ ॥ चम्पकलता चौथदिन जान्यो मृगमद शीर लगायो । मनहुँ नील जलधरके ऊपर कृष्णागर लपटायो ॥ १०५६ ॥ पांचै प्रमदा परमप्रीति सों केसर छिड़की घोर । मनहुँ सुधानिधि वर्षत वनपर अमृत धार चहुँओर ॥ १०५७ ॥ छठि छरागनी गाय रिझावत अति नागर बलवीर । खेलत फाग संग गोपिनके गोपवृन्दकी भीर ॥ १०५८ ॥ सातें रिजि सुगन्ध सब सुन्दरि लेआई उपहार । बल मोहन को हँसत खेलावत रीझ भरत अँकवार ॥ १०५९ ॥ आठें अति आतुर अबला प्रिय चुम्बन दीन्हों गाल । नाना विधि शृंगार बनाये बेंदा दीन्हों भाल ॥ १०६० ॥ नवमी नौसत साजि राधिका चन्द्रावलि ब्रजनार । हो हो करत पलास कुसुम रँग बर्षतहैं जो अपार ॥ १०६१ ॥ दशमी दशौ दिशा भईं पूरित सुरँग सबीर गुलाल । मनु प्रीतम मिलिवेके कारण फूले नयन विशाल ॥ १०६२ ॥ एकादशी एक सखि आई डारच्यो सुभग अबीर । एकहाथ पीताम्बर पकरयो छिरकत कुमकुम नीर ॥ १०६३ ॥ द्वादशि मची दुहूंदिशि होरी इत गोपी उत ग्वाल । इत नायक बल मोहन दोऊ उत राधा नवलाल ॥ १०६४ ॥ तेरस तरुणी सब मिलके यह कीन्हों कछुक उपाय । तोक सुबल मधु मंगल बोल्यो सबहिन मतो सुनाय ॥ १०६५ ॥ चौदशि चहूं दिशा सों मिलिके गठ जोरो गहि भोर । मन मोहन पिय दूलह राजत दुलहिन राधा गोर ॥ १०६६ ॥ देखि कुहू कुसुमाकर फूल्यो मधुप करत गुंजार । चन्द्रावलि केसर ले आई छि

रके नन्दकुमार ॥ १०६७ ॥ शुक्लपक्ष परिवा पुरुषोत्तम क्रीडा करत अपार । हलधर संग सखा सब लीन्हें डोलत गृह गृह द्वार ॥ १०६८ ॥ द्वैज दाम कुसुमन की गूंथी अपने हाथ सँवार। दई पठाय भानुतनया को पहिरत घोपकुमार ॥१०६९॥ तीज तरुणि सब गावत आई नन्दराय दरबार । पकरे आय श्यामनट सुंदर भेटत भरि अँकवार ॥ १०७० ॥ चौथ चहूं दिशिते सब धाये सखा मण्डलीधाय। इतते आई कुँवरि राधिका होरी अधिक मचाय ॥ १०७१ ॥ पंचमि पंच शब्द करि साजे सजि वादित्र अपार। रुंज मुरज ढफताल बांसुरी झालर को झंकार ॥ १०७२ ॥ बाजतवीन रबाव किन्नरी अमृत कुण्डली यंत्र। सुरसुर मण्डल जलतरंग मिल करत मोहनी मंत्र ॥ १०७३ ॥ विविध पखावज आवज संचित विच विच मधुर उपंग । सुरसहनाई सरस सारँगी उपजत तानतरंग ॥ १०७४ ॥ कंसताल कटताल बजावत शृंग मधुर मुहचंग । मधुर खंजरी पटह प्रणव मिल सुख पावत रतभंग ॥ १०७५ ॥ निपटन केरी श्रवणन धुनि सुनि धीरन रहे ब्रजबाल। मधुर नाद मुरलीको सुनके भेंटे श्याम तमाल ॥ १०७६ ॥ छठिको षटरस सरस बनायो हरि भोजन करवायो । नानाविधि पकवान बनायो जेवल अति सुख पायो ॥ १०७७ ॥ सातें सखि मिलि बारी लाई आरोगे ब्रजराज । आठें दिशा सकल मिल ठाढ़ो दूर करी सब लाज॥ ॥ १०७८ नवमी नवसत साजि राधिका हरिसों खेलत फाग । दशमी दशहू दिशा परिपूरण बाढ्यो अति अनुराग ॥ १०७९॥ एकादशी राधिका मोहन दोउ मिलि खेलनलाग । बैठेजाय सघन कुंजनमें जहँ सहचरि बडभाग ॥ १०८०॥सघन कुंजमें डोल बनायो झूलत हैं पियप्यारी। ललितादिक बीरी जो खवावत नानाभांति सँवारी॥१०८१ अति सुगंध घसलाय अरगजा छिरकत सांवलगात। हरि बारी प्यारी हरि छिरकत शोभा वरणि न जात॥१०८२॥द्वादश दिवस दुहूं दिश माच्यो फागुसकल ब्रजमांझ । आलिंगन सबदेत श्यामको लखै न धुन्धरमांझ ॥ १०८३ ॥ तेरस भामिनि पियो अधररस अति आनन्दअघाय। चहुँदिशिते गहिके गठ जोरी कीन्हों सखियन आय ॥१०८४॥पून्यो सुखपायो ब्रजबासी होरी हर्ष लगाय। परमराग अनुराग प्रकटभयो अतिफूले ब्रजराय ॥ १०८५ ॥ यशुमतिमाय लाल अपनेको शुभदिन डोल झुलायो । फगुवादियो सकल गोपिनको भयो सबन मनभायो॥१०८६॥यमुनाजल क्रीड़त ब्रजवासी संगलिये गोविंद । सिंहद्वार आरती उतारत यशुमति आनँदकंद ॥ १०८७ ॥ यहि विधि क्रीड़त गोकुलमें हरि निज वृन्दावन धाम। मधुवन और कुमुदवन सुन्दर बहुलावन अभिराम ॥ १०८८ ॥ नन्दग्राम संकेत खिदरवन और कामबनधाम। लोहवन माठ वेलवन सुन्दर भद्रवृहद वन ग्राम॥ १०८९ ॥ चौरासी ब्रजकोश निरन्तर खेलतहैं बलमोहन। सामवेद ऋग्वेद यजुरमें कहेउ चरित ब्रजमोहन ॥ १०९० ॥ व्यास पुराण प्रकट यह भाष्यो तंत्र ज्योतिषिन जान्यो । नारदसों हरि कहेउ कृपाकर अमृत वचन परमान्यो ॥ १०९१ ॥ सनकादिकसों कहेउ आपु हरि निजवैकुण्ठ मँझार । व्यासदेव शुकदेव महामुनि नृपसों कियो उचार॥१०९२॥नारायण चतुरानन सों कहि नारद भेद बतायो।ताते सुनिके व्यास भागवत नृप शुकदेव जतायो ॥१०९३॥ शेष कहेउ जो सांख्यायनसों सुनिकै सनत्कुमार । कहेउ बृहस्पति पुनि मैत्रेसों उद्धवकियो विचार ॥ १०९४ ॥ ऐसे विविध प्रमाण प्रकटबहुलीला करि ब्रजईश। सोई श्रीशुकदेव महामुनि प्रकटकही राधीश ॥ १०९५ ॥ वृन्दावनहरि यहि विधि क्रीडत सदा राधिकासंग। भोर निशा कबहूं जानतहैं सदा रहत यक रंग ॥ १०९६ ॥ सघनकुंजमें खेलत गिरिधर मथुराकी सुधिआई। राखे बरजि राधिकारानी अब न सकोगेजाई ॥ १०९७ ॥

राखों कंठलगाय लालको पलक ओट नहिं करिहौं । युग कुच बीच भुजा दोउन मिल सदा प्रेमरँग भरिहौं ॥ १०९८ ॥ सदा एकरस एक अखंडित आदि अनादि अनूप । कोटिकल्प बीतन नहिं जानत विहरत युगल स्वरूप ॥ १०९९ ॥ संकर्षणके वदन अनलते उपजी अग्नि अपार । सकल ब्रह्मांड तुरत तेजसों मानो होरी दई पजार ॥ ११०० ॥ सकल तत्त्व ब्रह्मांड देवपुनि माया सब विधि काल । प्रकृति पुरुष श्रीपति नारायण सबैहैं अंश गोपाल ॥ ११०१ ॥ कर्म योग पुनि ज्ञान उपासन सबही भ्रम भरमायो । श्रीवल्लभ गुरुतत्त्व सुनायो लीलाभेद बतायो ॥ ११०२ ॥ तादिनते हरिलीलागाई एक लक्ष पदबन्द । ताको सारसूरसारावलि गावत अति आनन्द॥११०३ अथ श्रीनाथजीके वरदान ॥ तब बोले जगदीश जगतगुरु सुनो सूर ममगाथ । तूकृत ममयश जो गावै गो सदारहै ममसाथ ॥ ११०४ ॥ खेलत यहि विधि हरि होरी हो होरी हो वेद विदित यह बात । ॥ * ॥ धरि जिय नेम सूर सारावलि उत्तर दक्षिण काल । मन वांछित फल सबही पावें मिटे जन्म जंजाल॥११०५॥सीखै सुनै पढ़ै मनराखै लिखै परम चितलाय।ताके संग रहतहौं निशि दिन आनँद जन्म विहाय ॥ ११०६ ॥ सरस संमतसर लीलागावें युगल चरण चितलावें । गर्भवास बंदीखाने में सूर बहुरि नहिं आवें ॥ ११०७ ॥

इति श्रीसूरदासजीकृत सम्मतसरलीला तथा सवालाखपदकेसूचीपत्रसमाप्त ॥

श्रीराधाकृष्णचंद्रायनमः

श्रीगणेशायनमः।

अथ सूरसागर।

प्रथमस्कंध ।

रागविलावल ॥ चरण कमल वंदौं हरि राई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधेको सव कछु दरशाई ॥ वहिरो सुनै मूक पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई । सूरदास स्वामी करुणामय वार वार वन्दौं तेहि पांई ॥ १ ॥ राग कान्हरा । भक्त अंग ॥ अविगत गति कछु कहत न आवे। ज्यों गूंगे मीठे फलको रस अंतर्गतही भावे ॥ परमस्वाद सवही जु निरंतर अमित तोष उपजावे ॥ मन वाणीको अगम अगोचर सो जानै जो पावे ॥ रूप रेख गुण जाति जुगति विनु निरालम्ब मन चकृत धावे। सब विधि अगम विचारहिं ताते सूर सगुण लीला पद गावे ॥२॥ भक्तवत्सलअंग। रागमारू ॥

वासुदेवकी बड़ी बड़ाई ॥ जगतपिता जगदीश जगत गुरु अपुन भक्तकी सहत ढिठाई ॥ भृगु को चरण अग्नि उर अंतर बोले वचन सकल सुखदाई। शिव विरंचि मारनको धाए सो गति काहू देव न पाई ॥ विनु बदले उपकार करतहैं स्वारथ विना करत मित्राई। रावण अरिको अनुज विभीषण ताको मिले भरतकी नाई ॥ वकी कपट करि मारन आई सो हरिजू वैकुंठ पठाई। विनु दीनेही देत सूर प्रभु ऐसे हैं यदुनाथ गुसाई ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ करणी करुणासिंधुकी कछु कहत न आवै। कपट हेतु परशे बकी जननी गति पावै ॥ वेद उपनिषद यश कहै निर्गुणहिं बतावै। सोइ सगुण होय नंदकी दावरी बँधावै ॥ उग्रसेनकी आपदा सुनि सुनि बिलखावै। कंस मारि राजा कियो आपुन शिरनावै ॥ जरासंधकी वंदीकाटी नृप कुल यश गावै। असमय वन निगले पिता ताको शाप नशावै ॥ उधरे सोक समुद्र ते पांडव गृह लावै। जैसे गैया वच्छको सुमिरत उठि धावै ॥ वरुण फांस ते व्रजपतिहिं छिन माहिं छुड़ावै। दुखित गयंदहि जानिकै आपुन उठि धावै ॥ कलि में नामा प्रगटियो ताकी छानि छवावै। सूरदासकी वीनती कोउ लै पहुँचावै ॥ ४ ॥ राग मारू। ऐसी कौन करी है और भक्त काजै! जैसे धरैं जगदीश जिय माहिं लाजै ॥ हिरन कश्यप बढ़्यो उदय अरु अस्त लौं ग्रस्यो प्रह्लाद चित चरण लायो। भीरके परे ते धीर सब हिन तज्यो खंभते प्रगट कर जन छुड़ायो ॥ ग्रस्यो गज ग्राह लै चल्यो पातालको कालके त्रास मुख नाम आयो। छांडि सुखधाम अरु गरुडतजि सांवरो पवनके गवन ते अधिक धायो ॥ कोपि कौरव गहे केश जब सभा में पांडुकी बधू यश नेकु गायो। लाजके साज में हुती ज्यों द्रौपदी बढ्यो तनु चीर नहिं अंत पायो ॥ रोरके जोर ते सोर घरनी कियो चल्यो द्विज द्वारका जाय ठाढ्यो॥जोरि अंजलि मिले छोरि तंदुल लये इन्द्रके विभव ते अधिक बाढ़्यो ॥ शक्रको दान विन मान ग्वालिन कियो गह्यो गिरिपान यश जगत छायो। यहै जिय जानिकै अंध भव त्रास ते सूर कामी कुटिल शरण आयो ॥ ५ ॥ राग रामकली। जहां जहां सुमिरे हरि जेहि जेहि विधि तहां तैसे उठि धाये हो। दीनबंधु हरि भक्त कृपानिधि वेद पुराणनि गाये हो ॥ सुत कुवेर के मत्त मगन भए विप रस नैना छाये हो। मुनि शराप ते भये जमल तरु तेहि हित आपु बँधाये हो॥वस्त्र कुचैल दीन द्विज देखत ताके तंदुल खाये हो। सम्पति दई वाकी पत्नीको मन अभिलाष पुराये हो॥जब गज गह्यो ग्राह जल भीतर तब हरि नाम पुकार्‍यो हो। गरुड छांड़ि आतुर ह्वै धाये सो तत्काल उबार्‍यो हो ॥ कलानिधान सकल गुणसागर गुरु धौं कहा पढ़ाये हो ॥ तेहि उपकार मृतक सुत यांचे सो यमपुर ते ल्याये हो ॥ तुम मोसे अपराधी माधव कितेक मुक्ति पठाये हो। सूरदास प्रभु भक्त वछल तुम पावन नाम कहाये हो ॥ ६ ॥ राग धनाश्री ॥ प्रभुको देखो एक सुभाई। अति गंभीर उदार उदधि सरि जान शिरोमणि राई ॥ तिनका सों अपने जन को गुण मानत मेरु समान। सकुचि समुद्र गनत अपराधहिं बूंद तुल्य भगवान ॥ वदन प्रसन्न कमल ज्यों सन्मुख देखत हौं हो जैसे। विमुख भये अकृपिण निमिष हूं फिर चितयो तो तैसे ॥ भक्त विरह कातर करुणामय डोलत पाछे लागे। सूरदास ऐसे स्वामीको देहिं सु पीठ अभागे ॥७॥ राग नट ॥ हरि सों ठाकुर और न जन को। जेहि जेहि विधि सेवक सुख पावै तेहि विधि राखत तिनको ॥ भूखे बहु भोजन जु उदर को तृषा तोय पट तन को। लग्यो फिरत सुरभी ज्यों सुत सँग उचित गमन ग्रह वनको ॥ परम उदार चतुर चिंतामणि कोटि कुवेर निधनको॥राखत हैं जनकी परतिज्ञा हाथ पसारत कणको॥संकट परे तुरत उठि धावत परम सुभट निज प्रणको॥ कोटिककरैं एक नहिं मानै सूर महा कृतघनको॥८॥

राग धनाश्री। हरिसों मीत न देखौं कोई। अंतकाल सुमिरत तेहि अवसर आनि प्रतीक्षो होई॥ ग्राह गहे गजपति मुकरायो हाथ चक्रलै धायो। तजि वैकुंठ गरुड़ तजि श्री तजि निकट दासके आयो॥ दुर्वासाको शाप निवारचो अंवरीष पंति राखी। ब्रह्मलोक पर्यंत फिरचो तहँ देव मुनी जन साखी॥ लाखागृहते जरत पांडुसुत बुधि वल नाथ उवारे। सूरदास प्रभु अपने जनके नाना त्रास निवारे॥९॥ राग धनाश्री॥ राम भक्तवत्सल निज वानो। जाति गोत कुलनाम गनत नहिं रंक होयकै रानो॥ ब्रह्मादिक शिव कौन जात प्रभु हौं अजान नहिं जानो॥ महता जहां तहां प्रभु नाहीं सो द्वैता क्यों मानो॥ प्रगट खंभ तै दई दिखाई यद्यपि कुलको दानो। रघुकुल राघो कृष्ण सदाही गोकुल कीनो थानो॥ वरणि न जाय भजन की महिमा वारम्वार वखानो। ध्रुव रजपूत विदुर दासी सुत कौन कौन अरगानो॥ युग युग विरद यहै चलि आयो भक्तन हाथ विकानो। राजसूय में चरण पखारे श्याम लये कर पानो॥ रसना एक अनेक श्याम गुण कहँलौं करों वखानो। सूरदास प्रभुकी महिमा है साखी वेद पुरानो॥१०॥ राग विलावल॥ काहूके कुल तन न विचारत। अविगत की गति कहि न परतुहै व्याध अजामिल तारत॥ कौन धौं जाति अरु पांति विदुरकी ताहीके प्रभु धारत। भोजन करत तुष्ट घर उनके राज मान भंग टारत॥ ऐसे जन्म करमके ओछे ओछेही अनुसारत। यहै सुभाव सूरके प्रभुको भक्त वछल प्रण पारत॥११॥ राग सारंग॥ गोविंद प्रीति सवनकी मानत॥ जेहिं जेहिं भाय करी जिन सेवा अंतर्गत की जानत॥ शवरी कटुक वेर तजि मीठे भापि गोद भरि लाई। जूँठेकी कछु शंक न मानी भँक्ष किये सतभाई॥ संतन भक्त मित्र हितकारी श्याम विदुरके आये। अतिरस वाढ़ो प्रीति निरंतर साग मगन ह्वै खाये॥ कौरव काज चले ऋपि शापन साग पत्रही अघाये। सूरदास करुणानिधान प्रभु युग युग भक्त वढ़ाये॥ १२॥ राग रामकली॥ शरण गये को को न उवारचौ। जव जव भीर परी संतन को चक्रसुदर्शन तहां संभारचौ। भयो प्रसाद जु अंवरीप को दुर्वासाको क्रोध निवारचौ। ग्वालन हेतु धरचौ गोवर्धन प्रगट इन्द्र को गर्व प्रहारचो॥ कृपाकरी प्रह्लाद भक्त को खंभ फारि उर नखन विदारचो। नरहरि रूप धरचो करुणाकरि छिनक माहिं हरनाकुश मारचो। ग्राह ग्रसत गजको जल बूड़त नामलेत वाको दुख टारचो। सूरश्याम विनु और करैको रंगभूमिमें कंस पछारचो॥ १३॥ राग केदारा। जनकी और कौन पत राखै। जाति पांति कुल कानि न मानत वेद पुराणनि साखै॥ जेहिकुल राज द्वारका कीनो सो कुल शापत नाश्यौ॥ सोइ मुनि अंवरीप के कारण तीन भुवन भ्रमि त्रास्यौ॥ जाको चरणोदक शिव शिर धरचो तीन लोक हितकारी। तिन प्रभु पांडुसुतनके कारण निजकर चरण पखारी॥ वारह वरस वसुदेव देवकी कंस महा डर दीन्यों। तिन प्रभु प्रह्लादहिं सुमिरत ही नर हरि रूप जु कीन्यो॥ जग जानत यदुनाथ जिते जन निज भुज श्रम सुख पायो। ऐसो को जो शरण गये ते कहत सूर इतरायो॥ १४॥ राग रामकली॥ और न काहू जनकी पीर। जव जव दीन दुखी भयो तव तव करी कृपा वलवीर॥ गज वल हीन विलोकि दशौ दिशि तव हरि शरण परचो॥ करुणासिंधु दयालु दरश दै सव संताप हरचो॥ गोपी गाइ ग्वाल गो सुत हित सात दिवस गिरि लीनो। मागध हन्यो मुक्त नृप कीने मृतक विप्र सुत दीनो॥ श्री नृसिंह वपु धरचो असुर हित भक्त वचन प्रति पारचो। सुमिरत नाम द्रुपदतनयाको पट अनेक विस्तारचो॥ मुनि मद मेटि दास व्रत राख्यो अंवरीप हितकारी। लाखा गृहमें शत्रु सैनते पांडव विपति निवारी॥ वरुण फांस व्रजपति मुकरायो दावानल दुख टारचो। घर आए वसुदेव

देवकी कंस महाखल मारचौ ॥ श्रीपति युग युग सुमिरनके वश देव विमल यश गावैं। अशरण शरण सूर यांचतहै को जो सुरति करावैं॥ १८॥ राग केदारा ॥ ठकुरायत गिरिधर जूकी सांची॥ कौरव जीति युधिष्ठिर राजा कीरति तीन लोक में माची॥ ब्रह्म रुद्र डर डरत कालके काल डरत भ्रुव भंग की आंची। रावण सों नृप जात न जान्यो माया विषम शीश धरि नाची॥ गुरुसुत आनि दये यमपुरते विप्र सुदामा कियो अयाची। दुःशासन कर बसन छुड़ावत सुमिरत नाम द्रौपदी बांची॥ हरि चरणार्विंद तजि लागत अनत कहूं तिनकी मति कांची। सूरदास भगवंत भजत जे तिनकी लीक चहूं युग खांची॥ १६॥ भक्त महिमा। राग सारंग॥ हरिके जन सवते अधिकारी। ब्रह्मा महादेवते को बड़ तिनके सेवक भ्रमत भिखारी याचक पै याचक कहा याचे सो याचै सो रसना हारी। गणिका पूत सोभ नहिं पावत जिन कुल कोऊ नहीं पितारी॥ तिनकी शाप देखि हरनाकुस रावण कुटुंब समेत भे ख्वारी। जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पाली विभीषण सु अजहुँ राजारी॥ शिला तरी जल माहिं सेतु बँधि वलि वहि चरण अहल्या तारी। जे रघुनाथ शरण तकि आये तिनकी सकल आपदा टारी॥ जिन गोविंद अचल ध्रुव राख्यो रवि शशि दै प्रदक्षिणा हारी। सूरदास भगवंत भजन बिनु धरनी जननि बोझ कत मारी॥ १७॥ राग सारंग॥ जापर दीनानाथ ढरे। सोइ कुलीन बड़ो सुन्दर सोइ जिनपर कृपा करे॥ राजा कौन बड़ो रावणते गर्वहिं गर्व गरे। रांकव कौन सुदामाहू ते आपु समान करे॥ रूपव कौन अधिक सीताते जन्म वियोग भरे। अधिक कुरूप कौन कुबिजाते हरि पति पाइ बरे॥ योगी कौन बड़ो शंकरते ताको काम छरै। कौन विरक्त अधिक नारदसों निशि दिन भ्रमत फिरै॥ अधम सुकौन अजामिलहूते यम तहँ जात डरै। सूरदास भगवंत भजन बिन फिर फिर जठर जरै॥ १८॥ राग देवगंधार॥ जाको मनमोहन अंग करैं। ताको केश खसै नहिं शिरते जो जग बैरै परै॥ हिरनकशिपु परिहार थक्यो प्रल्हाद न नेकु डरै। अजहूं तौ उत्तानपाद सुत राज्य करत न मरै॥ राखी लाज द्रुपदतनयाकी कोपित चीर हरै। दुर्योधन को मान भंग करि बसन प्रवाह भरै॥ विप्र भक्त नृग अंध कूप दियो बलि पढ़ि वेद छरै। दीन दयालु कृपालु कृपानिधि कापै कह्यो परै॥ जो सुरपति कोप्यो ब्रज ऊपर कहिधौं कछु न सरै। राखे ब्रज जन नंदके लाला गिरिधर विरद धरै॥ जाकी विरद है गर्वप्रहारी सो कैसे विसरै। सूरदास भगवंत भजन करि शरण गहे उधरै॥ १९॥ राग केदारा॥ जाको हरि अंगीकार कियो। ताके कोटि विघ्न हरि हरिकै अभय प्रताप दियो॥ दुर्वासा अंवरीष सतायो सो हरि शरण गयो। परतिज्ञा राखी मनमोहन फिरि तापै पठयो॥ निकसि खंभते नाथ निरंतर अपनो राखि लियो। बहुत शासना दई प्रलहादहिं ताहि निसंक कियो॥ मृतक भये सब सखा जिवाये विष जल जाइ पियो। सूरदास प्रभु भक्तवछल हैं उपमा कौन दियो॥२०॥ राग बिलावल॥ कहा कमी जाके राम धनी। मनसानाथ मनोरथ पूरण सुखनिधान जाको मौज घनी॥ अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष फल चार पदारथ देत छनी। इन्द्र समान जाके हैं सेवक मो बपुरेकी कहा गनी॥ कहा कृपणकी माया कितनी करत फिरत अपनी अपनी। खाइ न सकै खरच नाहिं जानै ज्यों भुअंग शिर रहत मनी॥ आनँद मगन राम गुण गावै दुख संताप की कारि तनी॥ सूर कहत जे भजत रामको तिनसों हरि सों सदा बनी॥ २१॥ माया वर्णन। राग केदारा॥ विनती सुनो दीनकी चित्त दै कैसे तव गुण गावै। माया नटिनि लकुटि करलीने कोटिक नाच नचावै॥ दर दर लोभ लागि लवै डोलति नाना स्वांग करावै। तुमसों कपट करावति प्रभु जू मेरी बुद्धि भ्रमावै॥ मन अभिलाष तरंगनि

करि करि मिथ्या निशा जगावै। सोवत स्वप्ने में ज्यों सम्पति त्यों दिखाय बोरावै ॥ महा मोहिनी मोह आत्मा मन करि अघहि लगावै। ज्यों दूती परवधू भोरिकै लै परपुरुष दिखावै ॥ मेरे तो तुमहीं पति तुम गति तुम समान को पावै। सूरदास प्रभु तुमरी कृपा विनु को मों दुख विसरावै॥ ॥ २२ ॥ राग सोरठ ॥ हरि तेरी माया कौन विगोयो। सौ योजन मर्याद सिंधु की पल में राम विलोयो ॥ नारद मगन भये माया में ज्ञान बुद्धि वल खोयो। साठ पुत्र अरु द्वादश कंन्या कंठ लगाये जोयो ॥ शंकर को चित हरचो कामिनी सेज छोड़ि भुव सोयो। जारि मोंहिनी आठ आठ कियो तव नख शिखते रोयो ॥ सौ भैया राजा दुर्योधन पल मों गरद समोयो। सूरज दास कांच अरु कंचन एकहि धगा परोयो ॥ २३ ॥ राग सारंग ॥ तुमरी माया महावली जिन जग वश कीनों। नेकु चितै मुसुकाइ सवन को मन हरि लीनो ॥ कछु कुल धर्म न जानई वाके रूप सकल जग राच्यो। विनु देखे विनहीं सुने ठगत न कोऊ वाच्यो॥सुनि याके उत्पातते शुक सनकादिक भागे। लोक लाज सव छुटि गई काम क्रोध मद जागे॥ अकथ कथा याकी हरी कहि कहत न आई। छैलनके सँग यों फिरै जैसे तनु सँग छाई ॥ इहि विधि इन डहके सबै जल थल जिय जेते। चतुर शिरोमणि नंदके अरु कहा कहों केते ॥ पहिरे राती चूनरी शिर श्वेत उपरना सोहै। कटि लहँगा लीलो वन्यो झोको जो देखि न मोहै ॥ चोली चतुरानन ठग्यो अमर उपरना राते। अतरौटा अवलोकि कै सव असुर महा मद माते ॥ योग युगति विसरी सबै उठि धाए संग लागे। नेक दृष्टि तहँ परि गई शिव शिर टोना लागे ॥ वहुत कहां लौं वर्णियो पर पुरुष न उवरन पावै। भरि सोवै सुखनींद में तहाँ जाइ जगावै ॥ एकनि को दरशन ठग्यो एकनि सँग सोवै। एकनि लै मन्दिर चढ़ै इक विरचि विगोवै ॥ यहि लाजनि मरिए सदा सव कहत तुमारी। सूरश्याम यहि वरजिकै मेटहु कुल गारी ॥ २४॥ राग विहागरा ॥ हरि तेरो भजन कियो न जाइ। कहा कहूं तेरी प्रवल माया देति लहर वहाइ ॥ जवै आऊं साधु संगति कछुक मन ठहराइ। ज्यों गयंद अन्हाइ सरिता वहुरि वहै सुभाइ ॥ वेप धरि धरि हरचो परधन साधु साधु कहाइ। जैसे नटुवा लोभ कारण करत स्वांग वनाइ ॥ करौं यतन न भजौं तुमको कछुक मन उपजाइ। सूर हरिकी प्रवल माया देति मोहिं लुभाइ ॥ २५ ॥ माधव जू मन माया वश कीनो। लाभ हानि कछु समुझत नाहीं ज्यों पतंग तनु दीनो ॥ गृह दीपक छन तेल तूल तिय सुत ज्वाला अति जोर। मैं मतिहीन मर्म नहिं जान्यों परचों अधिक करि दौर॥ विवश भयों नलिनीके शुक ज्यों विनु गुन मोहिं गह्यो। मैं अज्ञान कछू नहिं समुझो परदुख पुंज सह्यो ॥ वहुतक दिवस भए या जग में भ्रमत फिरचो मतिहीन। सूरश्याम सुंदर जो सुमिरै क्यों होवै गति दीन ॥ २६ ॥ अविद्या वर्णन। मलार ॥ माधव जू यह मेरी इक गाई। अव आजु ते आपु आगे दै लै आइए चराई ॥ है अति हरिहाई हटकत हूं वहुत अमारग जाती। फिराति वेद वन ऊख उखाराति सव दिन अरु सव राती ॥ हितकै मिलै लेहु गोकुलपति अपुने गोधन मांह। सुख सोऊं सुनि वचन तुम्हारे देहु कृपा करि वांह ॥ निधरक रहौं सूरके स्वामी जन्म न जाऊं फेरि। मैं ममता रुचि सों रघुराई पहिले लेउँ निवेरि ॥ २७ ॥ रागधनाश्री ॥ कितक दिन हरि सुमिरन विनु खोये। परनिंदा रसनाके रसमें अपने पर तर वोये ॥ तेल लगाइ कियो रुचि मर्दन वस्त्रहिं मलि मलि धोये। तिलक वनाइ चले स्वामी ह्वै विषमनि के मुख जोये॥कालवलीते सव जग कंपत ब्रह्मादिक हूं रोये।सूर अधम की कहौं कौन गति उदर भरे परि सोये ॥ २८ ॥ तृष्णा वर्णन। केदारा ॥ माधव जू नेकु हटको गाइ। निशि वासर यह भरमाति

इत उत अगह गही नहिं जाय ॥ क्षुधित बहुत अघात नाहीं निगम द्रुमदल खाइ । अष्ट दश घट नीर अचवै तृषा तउ न बुझाइ ॥ छहूं रस हूं धरत आगे वहै गंध सुहाइ। और अहित अभक्ष भक्षति गिरा वरणि न जाइ ॥ व्योम धर नद शैल कानन इते चर न अघाइ। ढीठ निठुर न डरति काहू त्रिगुण है समुहाइ ॥ हरै न खल बल दनुज मानव सुरनि शीश चढ़ाइ। रचि विरंचि मुख भौंह छबीले चलति चितहिं चुराइ ॥ नील खुर जाके अरुन लोचन श्वेत सींग सुहाइ। दिन चतुर्दश खेत खूंदति सु यह कहा समाइ ॥ नारदादि शुकादि मुनि जन थके करत उपाइ। ताहि कहु कैसे कृपानिधि सकत सूर चराइ ॥ २९ ॥ विनती अंग। राग केदारा ॥ वन्दों चरण सरोज तुम्हारे। सुन्दर श्याम कमल दल लोचन ललित त्रिभंगी प्राणपति प्यारे ॥ जे पद पद्म सदा शिवके धन सिंधुसुता उरते नहिं टारे । जे पद पद्म परशि जल पावन सुरसरि दरश कटत अघ भारे ॥ जे पद पद्म परशि ऋषिपत्नी बलि नृग व्याध पतित बहु तारे। जे पद पद्म रमत वृन्दावन अहि शिर धरि अगणित रिपु मारे ॥ जे पद पद्म परशि ब्रज भामिनि सर्वस दै सुत सदन बिसारे ॥ जे पद पद्म रमत पंडव दल दूत भये सब काज सँवारे। सूरदास तेई पद पंकज त्रिविधि ताप दुख हरन हमारे ॥ ३० ॥ धनाश्री ॥ हरि जू तुम ते कहा न होई । रंक सुदामा कियो इन्द्र सम पांडव हित कौरव दल खोई ॥ पतित अजामिल दासी कुबिजा तिनहूंके कलिमल सब धोई। बोलै गूंग पंगु गिरि लंघै अरु आवै अंधा जग जोई ॥ बालक मृतक जिवाय दिये द्विज जो आये दरबारे रोई। सूरदास प्रभु इच्छा पूरण श्री गुपाल सुमिरत सब कोई ॥ ३१ ॥ राग सोरठ ॥ अबके राखि लेहु भगवान। हम अनाथ बैठे द्रुम डरिया पारधि साधे बान ॥ जाके डर भाज्यो चाहत है ऊपर ढुक्यो सचान। दुवौ भांति दुख भयो आनि यह कौन उबारै प्रान ॥ सुमिरत हीं अहि डस्यो पारधी कर छूटे संधान। सूरदास शर लग्यो सचानहिं जय जय कृपानिधान ॥ ३२ ॥ राग विहागरा ॥ हृदय की कबहुँ न जरन घटी । बिनु गोपाल बिथा या तनुकी कैसे जात कटी ॥ अपनी रुचि जितही तित खैंचति इन्द्रिय ग्राम गटी। होति तहीं उठि चलति कपट लगि बांधै नयन पटी ॥ झूठो मन झूठी यह काया झूठी आर भटी। अरु झूठनि के बदन निहारत मारत फिरत लटी ॥ दिन दिन हीन छीन भइ काया दुख जंजाल जटी ॥ चिंता गई अरु भूख भुलानी नींद फिरत उचटी ॥ मगन भयो माया रस लम्पट समझत नाहिं हटी। तापर मूड़ चढ़ी नाचति है मीचति नीच नटी ॥ खैंचत स्वाद श्वान पातर ज्यों चातक रटत ठटी। सूर जलधि सिंचै करुणानिधि निज जन जरनि मिटी ॥ ३३ ॥ राग केदारा ॥ अबके नाथ मोहिं उधारि। मगनहीं भव अम्बुनिधि में कृपासिंधु मुरारि ॥ नीर अति गंभीर माया लोभ लहरति रंग। लये जाति अगाध जल में गहे ग्राह अनंग ॥ मीन इन्द्रिय अतिहि काटति मोट अघ शिर भार। पग न इत उत धरन पावत उरझि मोह सिवार ॥ काम क्रोध समेत तृष्णा पवन अति झकझोर। नाहिं चितवनदेत तिय सुत नाम नौका ओर ॥ थक्यो बीच बिहाल विह्वल सुनो करुणा मूल । श्याम भुज गहि काढ़ि लीजै सूर ब्रज के कूल ॥ ३४ ॥ राग सारंग ॥ माधव जू मन हठि कठिन पर्यो। यद्यपि विद्यमान सब निरखत दुःख शरीर भर्यो ॥ वारबार निशि दिन अति आतुर फिरत दशो दिशि धाये। ज्यों शुक सेंवर फूल विलोकत जात नहीं बिन खाये ॥ युग युग जन्म मरन अरु बिछुरन सब समुझत मति भेव। ज्यों दिनकर उलूक नहिं मानत परी आनि यह टेव ॥ हौं कुचील मतिहीन सकल विधि तुम कृपालु जग जान। सूर मधुप निशि कमल

कोश वश करो कृपा दिन भान ॥ ३५ ॥ राग धनाश्री ॥ आछो गात अकारथ गारचो । करी न प्रीति कमल लोचन सों जन्म जुवा ज्यों हारचो ॥ निशि दिन विषय विलासनि विलसत फूटि गई तव चारचो । अव लाग्यो पछतान पाइ दुख दीन दईको मारचो ॥ कामी कृपण कुचील कुदरशन कौन कृपा करि तरचो । ताते कहत दयालु देव मुनि काहे सूर विसारचो ॥ ३६ ॥ राग सारंग । माधव जू मन सव ही विधि पोच । अति उन्मत्त निरंकुश मैगल चिंता रहित अशोच ॥ महा अमूढ अज्ञान तिमिरमें मग्न होत सुख मानि । तेली केर वृषभ ज्यों भरम्यों भजत न सारँगपानि । गीध्यो ढीठ हेम तस्कर ज्यों अति आतुर मतिमंद । लुब्धौ आनि मीन आमिष ज्यों अवलोक्यो नहिं फंद ॥ ज्वाला प्रीति प्रगट सन्मुख हटि ज्यों पतंग तनु जारचो । विषय अशक्त अमित अघ व्याकुल तव हम कछु न सँभारचो ॥ ज्यों कपि शीत हुताशन गुंजा सिमटि होत लवलीन । त्यों शठ वृथा तजत नहिं कवहूं रहत विषय आधीन ॥ सेंवर फूल सुरँग शुक निरखत मुदित होत खग भूप । परशत चोंच तूल उघरत मुख परत दुःख के कूप ॥ और कहां लौं कहौं एक मुख या मनके कृत काज । सूर पतित तुम पतित उधारन गहो विरद की लाज ॥ ३७ ॥ मेरो मन मतिहीन गुसाँईं । सव सुखनिधि पद कमल छांडि श्रम करत श्वान की नाईं ॥ फिरत वृथा भाजन अवलोकत सूने सदन अज्ञान । तिहिं लालच कवहूं कैसेहूं तृप्ति न पावत प्रान ॥ जहँ जहँ जात तहीं भय त्रासत असमलकुटि पद आन । कौर कौर कारण कुवुद्धि जड़ किते सहत अपमान ॥ तुम सर्वज्ञ सकल विधि पूरण अखिल भुवन निजनाथ । तिन्हैं छांडि यह सूर महाशठ भ्रमत भ्रमनिके साथ ॥ ३८ ॥ राग गौरी ॥ करुणामय तेरी गति लखि न परै । धर्म अधर्म अधर्म धर्म करि अकरन करन करै ॥ जय अरु विजय कर्म कहा कीनो ब्रह्म शराप दिवायो । असुर योनि ता ऊपर दीनी धर्मउ छेद करायो ॥ पिता वचन खंडे सो पापी सो प्रह्लाद हिं कीनो । निकसे खंभ वीच ते नरहरि ताहि अभयपद दीनो ॥ दान धर्म वहु कियो भानुसुत सो तुव विमुख कहायो । वेद विरुद्ध सकल पंडवसुत सो तुम्हरो मन भायो ॥ दशहिं करत विरोचन को सुत वेद विमल विधि कर्मा । सो छलि वांधि पताल पठायो कौन कृपानिधि धर्मा ॥ द्विज कुल पतित अजामिल विषयी गणिका नेह लगायो । सुत हित नाम लियो नारायण सो वैकुंठ पठायो ॥ पतिव्रता जालंधर युवती सो पतिव्रत ते टारी । दुष्ट पुश्चली अधम सु गणिका सुवा पढावत तारी ॥ मुक्त हेतु योगी श्रम कीनो असुर विरोधहिं पावै । अविगत गति करुणामय तेरी सूर कहा कहि गावै ॥ ३९ ॥ राग सारंग ॥ अविगत गति जानी न परै । मन वच अगम अगाध अगोचर केहि विधि वुधि संचरै ॥ अति प्रचंड पौरुष वल पाये केहरि भूख मरै । विन आशा विन उद्यम कीने अजगर उदर भरै ॥ रीते भरै भरे पुनि ढौरै चाहै फेरि भरै । कवहुँक तृण वूड़े पानी में कवहूं शिला तरै ॥ वागर ते सागर करि राखै चहुँ दिशि नीर भरै । पाहन वीच कमल विकसाही जलमें अगिनि जरै ॥ राजा रंक रंक ते राजा ले शिर छत्र धरै । सूर पतित तरिजाइ तनक में जो प्रभु नेकु ढरै ॥ ४० ॥ राग केदारा ॥ अपनी भक्ति देहु भगवान । कोटि लालच जो दिखावहु नाहिनै रुचि आन ॥ जरत ज्वाला गिरत गिरि ते सुकर काटत शीश । देखि साहस सकुच मानत राखि सकत न ईश ॥ कामना करि कोपि कवहूं करत क्रूर पशु घात ॥ सिंह सावक जात गृह तजि इन्द्र अधिक डरात ॥ जा दिना ते जन्म पायों यहै मेरी रीति । विषय विष हठि खात नांहीं टरत करत अनीति ॥ थके किंकर यूथ यमके टारे टरत न नेक ।

नरक कूपनि जाइ यमपुर परचो वार अनेक। महा माचल मारिवेको संकुच नाहिन मोहिं। परचो हौं प्रण किये द्वारे लाज प्रण की तोहिं॥ नाहिनै काचो कृपानिधि करौ कहा रिसाइ। सूर तबहुँ न द्वार छाँड़ै डारिहौ कढराइ॥ ४१॥ राग धनाश्री॥ जनके उपजत दुख किन काटत। जैसे प्रथम अषाढ़ के वृक्षनि खेतहर निरखि उपारत॥ जैसे मीन किलकिला दरशत ऐसे रहो प्रभु डाटत। पुनि पाछे अघ सिंधु बढ़त है सूर खार किन पाटत॥ ४२॥ राग कान्हरा॥ कीजै प्रभु अपने विरद की लाज। महापतित कबहूं नहिं आयो नेकु तुम्हारे काज॥ माया सबल धाम धन वनिता बांध्यो हौं इहि साज। देखत सुनत सबै जानत हौं तऊ न आयो बाज॥ कहियत पतित बहुत तुम तारे श्रवणनि सुनी अवाज। दई न जात खार उतराई चाहत चढ़न जहाज॥ लीजै पार उतारि सूर को महाराज ब्रजराज। नई न करन कहत प्रभु तुम सों सदा गरीबनेवाज॥ ४३॥ राग विलावल॥ महाप्रभु तुम्हें विरद की लाज। कृपानिधान दान दामोदर सदा सँवारत काज। जब गज ग्राह चरण धरि राख्यो तब तुम्हें नाथ पुकाऱ्यो। तजिकै गरुड चल्यो अति आतुर पकरि चक्र कर माऱ्यो॥ निशि निशिही ऋषि लए सहसदश दुर्वासा पग धाऱ्यो। तत्कालहिं तब प्रगट भये हरि राजा जीव उबाऱ्यो। हरनाकुस प्रह्लाद भक्त को बहुत शाशना जाऱ्यो। रहि न सके नरसिंह रूप धरि गहि कर असुर पछाऱ्यो॥ दुःशासन गहि केश द्रौपदी नगन करन को लाए। सुमिरत ही तत्काल कृपानिधि वसन प्रवाह बढ़ाये॥ मागधपति बहु जीति महीपति कछु जिय में गर्वाए। जीत्यो जरासंध रिपु माऱ्यो बल करि भूप छुड़ाए॥ महिमा अति अगाध करुणामय भक्त हेतु हितकारी। सूरदास पर करौ कृपा अब दरशन देहु मुरारी॥ ४४॥ रागधनाश्री॥ शरण आये की लाज उर धरिये। सध्यो नहिं धर्म शील शुचि तप व्रत कछू कहा मुख लै तुम्हें विनय करिये॥ कछू चाहौं कहौं सोचि मनमें रहौं कर्म अपने जानि त्रास आवै। यहै निज सार आधार मेरे अहै पतितपावन विरद वेद गावै॥ जन्म ते एकटक लागि आशा रही विषय विष खात नहिं तृप्ति मानी। जो छिया छरद करि सकल संतनि तजी तासु मति मूढ रस प्रीति ठानी॥ पाप मारग जिते तेव कीने तिते बच्यो नहिं कोइ जहँ सुरति मेरी। सूर अवगुण भरचो आइ द्वारे परचो तकी गोपाल अब शरण तेरी॥ ४५॥ प्रभु मेरे गुण अवगुण न विचारो। कीजै लाज शरण आये की रवि सुत त्रास निवारो॥ योग यज्ञ जप तप नहिं कीयो वेद विमल नहिं भाष्यो। अति रस लुब्ध श्वान जूठनि ज्यों कहूं नहीं चित राख्यो॥ जिहि जिहि योनि फिरचो संकट वश तिहि तिहि यहै कमायो। काम क्रोध मद लोभ ग्रसित भये विषम परम विष खायो॥ जो गिरिपति मासि घोरि उदधि में लै सुरतरु निज हाथ। ममकृत दोष लिखैं बसुधा भर तऊ नहीं मित नाथ॥ कामी कुटिल कुचील कुदरशन अपराधी मतिहीन। तुम समान और नहिं दूजो जाहि भजौं है दीन॥ अखिल अनंत दयालु दयानिधि अविनाशी सुखरास। भजन प्रताप नाहिं मैं जान्यों परचो मोह की फांस॥ तुम सर्वज्ञ सबै विधि समरथ अशरण शरण मुरारि। भवी समुद्र सूर बूड़त है लीजै भुजा पसारि॥ ४६॥ राग सारंग॥ तुम हरि सांकरेके साथी। राग सा[illegible]कार परम आतुर है दौरि छुड़ायो हाथी॥ गर्भ परीक्षित रक्षा कीनी वेद उपनिषद साखी। वारवार [illegible]य द्रुपदतनया के सभा माँझ पत राखी॥ राज रवनि गाई व्याकुल है दै दै सुत को विन खाये॥ [illegible]धु हति राजा सब छोरे ऐसे प्रभु परपीरक॥ कपट स्वरूप धरचो जब कोकिल नृप परी आनि यह टी। कठिन परी तबहीं तुम प्रगटे रिपु हति सब सुखदानी॥ ऐसे कहौं कहां लौं

गुण गण लिखत अंत नाहिं पइयै । कृपासिंधु उनहींके लेखे मम लज्जा निर्वहियै ॥ सूर तुम्हारी ऐसी निवही संकटके तुम साथी। ज्यों जानो त्यों करौ दीन की वात सकल तुम हाथी॥ ४७॥ तुम विनु सांकरे को काको । तुम विनु दीनदयालु देवमणि नाम लेवँ धौं ताको ॥ गर्भ परीक्षित रक्षा कीनी हुतो नहीं वश ताको । मेरी पीर परम पुरुपोत्तम दुख मेट्यो दोउ धांको ॥ हा करुणा मम कुंजर टेरचो रह्यो नहीं वल जाको। लागि पुकार तुरत छुट कायो काटचो वंधन वाको ॥ अंवरीपको शाप देन गयो वहुरि पठायो ताको।उलटी गाढ़ परी दुर्वासा दहत सुदर्शन जाकों ॥ निधरक ह्वै पंडवसुत डोलें हुतो नहीं डर काको।चारो वेद चतुर्मुख ब्रह्मा यश गावत हैं ताको। छोरी वंदि विदा करि राजा राजा होइ कि रांको।जरासंधको जोर उधेरचो फारि कियो द्वै फांको॥ सभा माँझ द्रुपदी राखी पति पानिय गुण है जाको। वसन ओट करि कोट विश्वंभर परन नपायो झांको॥ भीर परे भीपम प्रण राख्यो अर्जुनको रथ हांको। रथते उतर चक्र कर लीनो भक्त वछल प्रण ताको ॥ गोपीनाथ सूरको स्वामी है समुद्र करुणाको। नरहरि हरि हरनाकुश मारचो काम परचो हो वांको ॥ ४८ ॥ राग कान्हरा ॥ तुम्हरी कृपा गुपाल गुसाईं मैं अपने अज्ञान न जानत। उपजत दोप नयन नहिं सूझत रविकी किरनि उलूक न मानत ॥ सव सुखनिधि हरि नाम महातम पायो है नाहिन पहिंचानत। परम कुवुद्धिं तुच्छ रस लोभी कौड़ी वदले मगरज छानत॥ शिवको धन संतनको सर्वस महिमा वेद पुराण वखानत। इते मान यह सूर महाशठ हरि नग वदलि महाखल आनत॥ ४९॥ राग विलावल ॥ अपुने जान मैं वहुत करी। कौन भांति हरि कृपा तुम्हारी सो स्वामी समुझी न परी॥ दूरि गयो दरशनके ताईं व्यापक प्रभुता सव विसरी मनसा वाचा कर्म अगोचर सो मूरति नाहिं नैन धरी ॥ गुणविनु गुणी स्वरूप रूप विनु नामलेत श्री श्याम हरी । कृपासिंधु अपराध अपरमित क्षमो सूरते सव विगरी ॥ ५० ॥ तुम गोपाल मोसों वहुत करी। नर देही दीनी सुमिरनको मो पापीते कछु न सरी॥ गर्भवास अति त्रास अधो मुख तहां न मेरी सुधि विसरी ।पावक जठर जरन नहिं दीनों कंचन सी मेरी देह धरी ॥ जगमें जन्मि पाप वहु कीने आदि अंत लौं सव विगरी । सूर पतित तुम पतित उधारन अपने विरद किलाज धरी॥५१॥राग धनाश्री॥ माधवजू जो जनते विगरै।तउ कृपालु करुणामय केशव प्रभु नहिं जीय धरैं ॥ जैसे जननिं जठर अंतर्गत सुत अपराध करै। तउ पुनि जतन करै अरु पोपै निकसे अंक भरै॥ यद्यपि मलय वृक्ष जड़ काटत कर कुठार पकरै । तऊ सुभाव सुगंध सुशीतल रिपु तनु ताप हरै॥ ज्यों हल गहि धर धरत कृपी वल वारि वीज विथुरै। सहि सन्मुख त्यों शीत उष्णको सोई सफल करै ॥ द्विज रस जानौ दुखित होइ वहु तौ रिस कहाकरै । यद्यपि अंग विभंग होतहै लै समीप सँचरै॥ कारण करण दयालु दयानिधि निज भय दीन डरै। इहि कलिकाल व्याल मुख ग्रासित सूर शरन उवरै ॥५२॥ राग कान्हरा ॥ दीनानाथ अव वार तुम्हारी । पतित उधारन विरद जानिकै विगरी लेहु सँवारी॥ वालापन खेलतही खोयो युवा विपय रस माते। वृद्ध भये सुधिं प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते॥सुतनि तज्यो तिय तज्यो भ्रात तजि तन त्वच भई जु न्यारी। श्रवणन सुनत चरण गति वाकी नैन भये जलधारी पलित केश कफ कंठ विरोध्यो कल न परी दिन राती। माया मोह न छाड़ै तृष्णा ए दोऊ दुख दाती ॥ अव या व्यथा दूरिकरिवेको औरन समरथ कोई। सूरदास प्रभु करुणा सागर तुमते होइ सु होई॥ ५३॥ राग आसावरी ॥ पतित पावन जानि शरन आयो । उदधि संसार शुभ

नाम नौका तरन अटल स्थान निज निगम गायो ॥ व्याध अरु गीध गणिका अजामेल द्विज चरण गौतमनारि परश पायो । अंत औसर अर्ध नाम उच्चार करि सुनत गज ग्राहते तुम छुड़ायो ॥ अबल प्रह्लाद बलदेत मुखही वचत दास ध्रुव चरण चित शीश नायो । पांडुसुत विपत मोचन महादास लखि द्रौपदी चीर नाना बढ़ायो ॥ भक्तवत्सल कृपानाथ अशरण शरण भार भूतल हरन यश सुहायो । सूर प्रभु चरन चित चेत चेतन करत ब्रह्म शिव शुक आदि शेष गायो ॥ ५४ ॥ राग आसावरी ॥ श्रीनाथ शारंगधर कृपाकर दीनपर डरत भव त्रासते राखिलीजै । नाहिं जप नाहिं तप नाहिं सुमिरन भक्ति शरण आयेनकी लाज कीजै ॥ जीव जलधर जिते भेष धरि धरि तिते रचे लघु दीर्घ वहु अचल भारे । मुशल मुद्गर हनत त्रिविध कर्मनि गनत मोहिं दंडत धर्म दूत हारे ॥ वृपभ केशी मल्ल धेनुक अरु पूतना रजक चाणूरसे दुष्ट तारे । अजामिल गणिक ते कहा मैं घट कियो तुम जु अव सूर चितते विसारे ॥ ५५ ॥ कबहूँ नाहीं गहर कियो । सदा स्वभाव सुलभ सुमिर न वश भक्तनि अभय दियो ॥ गाय गोप गोपी हित कारण गिरि कर कमल लियो । अघ अरिष्ट केशी कालीनथ दावानलहिं पियो ॥ कंस वंश वधि जरासंध हति गुरुसुत आनि दियो । कपंत सभा द्रुपदतनयाको अंबर अक्षय किया ॥ सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो । काकी शरण जाउँ करुणामय नाहिन और वियो ॥ ५६ ॥ राग सारंग ॥ ताते तुमरो भरोसो आवै । दीनानाथ पतित पावन यश वेद उपनिषद गावै ॥ जो तुम कहौ कौन खल तारचो तौ हौं वोलों साखी । पुत्र हेतु हरिलोक गयो द्विज सक्यो न कोऊ राखी ॥ गणिका कियो कौन व्रत संयम शुक हित नाम पढ़ावै । मनसा करि सुमरचो गज वैरी ग्राह परमगति पावै ॥ वकी जु गई घोष में छल करि यशुदाकी गति दीनी । और कहत श्रुति वृपभ व्याधकी जैसी गति तुम कीनी ॥ द्रुपदसुताहि दुष्ट दुर्योधन सभा माहिं पकरावै । ऐसो कौन और करुणामय वसन प्रवाह बहावै ॥ दुखित जानिकै सुत कुबेरके तिहि लगि आप बँधावै । ऐसो कौन क्रूर जन कारन दुख सहि भलो मनावै ॥ दुर्वासा दुर्योधन पठयो पंडव अहित विचारी । सुमिरत तीनो लोक अघाए न्हात भज्यो कुस डारी ॥ देवराज मघ भंग जानिकै वरस्यो व्रज पर आई । सूर श्याम राखे सव निज कर गिरि लै भए सहाई ॥ ५७ ॥ राग धनाश्री ॥ दीनको दयालु सुन्यो अभय दान दाता । सांची विरुदावलि तुम जगतके पितु माता ॥ व्याध गीध गणिका गज इहि में को ज्ञाता । सुमिरत तुम तबहिं आये त्रिभुवन विख्याता ॥ केशी कंस दुष्ट मारि मुष्टिक कियो घाता । अपने ध्रुव राज काज केतक यह वाता ॥ तीन लोक विभव दियो तंदुल के खाता । सर्वसु प्रभु रीझि देत तुलसीके पाता ॥ गौतमकी नारि तारी नेकु परश लाता । और कुटिल तारि तारि काहे गर्वाता ॥ मांगत है सूर त्याग जिहि तन मन राता । अपुनी प्रभु भक्ति देहु जासों तुम नाता ५८ राग मारू ॥ सो कहा जु मैं न कियो जो पै सोइ सोई चित धरि हो । पतित पावन विरद सांच कौन भांति करिहो ॥ जव ते जग जन्म पाय जीव है कहायो । तवते छुट अवगुण इक नाम न कहि आयो ॥ साधुनिंदक साधु लंपट कपटी गुरु द्रोही । जितने अपराध जगत लागत सव मोही ॥ गृह गृह गृह द्वार फिरचो तुमको प्रभु छाड़ें । अंध अंध टेक चलै क्यों न परे गाड़ें ॥ कमलनैन करुणामय सकल अंतर्यामी । विनय कहा करै सूर क्रूर कुटिल कामी ॥ ५ ॥ ९ ॥ राग सारंग ॥ कौन गति करहु मेरी नाथ । हौंतो कुटिल कुचील कुदरशन रहत विपमके साथ ॥ दिन बीतत

मायाके लालच कुल कुटुंब के हेत। सारी रैन नींद भरि सोवत जैसे पशू अचेत॥ कागज धरानि करै द्रुम लेखनिं जल सायर मसि घोर। लिखैं गणेश जन्म भर ममकृत तऊ दोष नहिं ओर। गज गणिका अरु विप्र अजामिल अगनित अधम उधारे। अपथ चाल अपराध करे मैं तिनहूं ते अति भारे॥ लिखि लिखि मम अपराध जन्मके चित्रगुप्त अकुलाय। भृगु ऋषि आदि सुनत चकृत भये यम सुनि शीश डुलाय॥ परम पुनीत पवित्र कृपानिधि पावन नाम कहायो। सूर पतित जब सुन्यो विरद यह तब धीरज मन आयो॥ ६०॥ राग केदारा॥ मेरी कौन गति ब्रजनाथ। भजन विमुखरु शरण नाहीं फिरत विषयिन साथ॥ हौं पतित अपराध पूरण जरयो कर्म विकार। काम क्रोधरु लोभ चितवन नाथ तुम्हैं विसार॥ उचित अपनी कृपा करिहौ तबै तौ बनिजाइ। सोइ करहु जो चरण सेवै सूर जूठनि खाइ॥ ६१॥ राग धनाश्री॥ सोइ कछु कीजै दीनदयाल। जाते जन छिन चरण न छांडै करुणासागर भक्तिरसाल॥ इन्द्रिय अजित बुद्धि विषयारत मनकी दिन दिन उलटी चाल। काम क्रोध मद लोभ महा भय अहनिश नाथ भ्रमत वेहाल॥ योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत इन में एको अंक न भाल। कहा करूं किहि भांति रिझाऊं हौं तुमको सुन्दर नंदलाल॥ सुनि समरथ सर्वज्ञ कृपानिधि अशरण शरण हरण जग जाल। कृपानिधान सूरकी यह गति कासों कहै कृपण यहि काल॥ ६२॥
॥ राग गूजरी॥ कृपा अब कीजिए बलि जाउं। नाहिं मेरे और कोउ बलि चरण कमल विनु ठाउं॥ हौं असोच अकृत अपराधी सन्मुख होत लजाउं। तुम कृपालु करुणानिधि केशव अधम उधारन नाउँ॥ काके द्वार जाइहौं ठाढो देखत काहि सुहाउं। अशरण शरण नाम तुमरो हौं कामी कुटिल सुभाउं॥ कलकी और मलीन बहुत मैं सैंतै मेंत विकाउं सूर पतित पावन पद अंबुज क्योंसो परिहरि जाउं॥६३॥ राग सारंग॥ दीनदयालु पतित पावन प्रभु विरद भुलावत कैसो। कहा भयो गज गणिका तारी जो जन तारो ऐसो॥ जो कबहूं नर जन्म पाइ नहिं नाम तुम्हारो लीनो। काम क्रोध मद लोभ मोह तजि अंत नहीं चित दीनो॥ अकरम अबुध अज्ञान अवाया अनमारग अनरीति। जाको नाम लेत अघ उपजै सो मैं करी अनीति॥ इन्द्री रस वश भयो भ्रमत रह्यो जोइ कह्यो सो कीनो। नेम धर्म व्रत तप नहिं संयम साधु संग नहिं चीनो॥ दरश मलीन दीन दुर्बल अति तिन कैसे दुख दामी। ऐसो सूरदास जन हरिको सब अधमनि में नामी॥ ६४॥ राग देवगंधार॥ मोहिं प्रभु तुम सों होड़ परी। नाजानों करिहौ जु कहा तुम नागर नवल हरी॥ होती जिती रह्यो पति ताहू में तें सबै गरी। पतित समूहनि उद्धरिवेको तुम जिय जक पकरी॥ मैं जू राजिव नैननि दुरिदुरि पाप पहार दरी। पावहु मोहिं कहो तारन को गूढ गँभीर खरी॥ एक अधार साधु संगतिको रचि पचि कै सँचरी। सोचि सोचि जिय राखी अपनी धरनि धरी॥ मोको मुक्त विचारत हो प्रभु पूंछत पहर घरी। श्रम ते तुम्हैं पसीना ऐहै काति यह जकनि करी॥ सूरदास विनती कहा विनवै दोषनि देह भरी। अपनो विरद सँभारहुगे तब यामें सब निवरी॥
॥ ६५॥ राग धनाश्री॥ कब तुम मोसों पतित उधारयो। पतितनि में विख्यात पतितहौं पावन नाम तुम्हारयो॥ बड़े पतित पासंगहु नाहीं अजामिल कौन विचारयो। भाजै नरक नाम सुनि मेरो यमनि दियो हठ तारो॥ क्षुद्र पतित तुम तारि रमापति जिय जु करौ जिन गारो। सूर पतित को ठौर कहूं नींह है हरि नाम सहारो॥ ६६॥ तुम कब मोसों पतित उधारयो। काहे को प्रभु विरद बुलावत विन मसकत को तारयो॥ गीध व्याध गज गौतम की तिय उनको कहा

निहोरो। गणिका तरी आपनी करनी नाम भयो प्रभु तोरो ॥ अजामील तो विप्र तुम्हारो हुतो पुरातन दास। नेक चूक ते यह गति कीनी फिर वैकुंठहि वास॥ पतित जानि तुम सब जन तारे रह्यो न काहू खोट। तौ जानौं जो मोहिं तारिहौ सूर कूर कवि ठोट॥ ६७॥ ॥ पतित पावन हरि विरद तुम्हारो कौने नाम धरयो। हौंतौ दीन दुखित अति दुर्बल द्वारे रटत परयो॥ चारि पदारथ दए सुदामा तंदुल भेंट धरयो। द्रुपदसुताकी तुम पति राखी अंबर दान करयो॥ संदीपन सुत तुम प्रभु दीने विद्या पाठ करयो। सूर कि बिरियां निठुर भये प्रभु मोते कछु न सरयो ॥ ६८॥ राग धनाश्री ॥ आजु हौं एक एक करि टरिहौं। कै हमहीं कै तुमहीं माधव अपुन भरोसे लरिहौं॥ हौं तो पतित अहौं पीढिन को पतितै ह्वै निस्तरिहौं। अब हौं उघरि नचन चाहत हौं तुम्हें विरद बिनु करिहौं॥ कत अपनी परतीत नशावत मैं पायों हरि हीरा। सूर पतित तबहीं लै उठिहै जब हँसि देहौ बीरा॥ ६९॥ राग नट॥ कहावत ऐसे दानी। चारि पदारथ दये सुदामहि अरु गुरुको सुत आनी॥ रावणके दश मस्तक छेदे शर गहि सारँग पानी। बिभिपन को तुम लंका दीनी पूर बली पहिचानी॥ विप्र सुदामा कियो अयाची प्रीति पुरातन जानी। सूरदास सों कहा निठुर भए नैनन हू की हानी॥ ७०॥ राग धनाश्री॥ मोसों बात सकुच तजि कहिये। कत भरमावत हौ तुम मोको कहु काके ह्वै रहिये॥ कैधौं तुम पावन प्रभु नाहीं कै कछु मोमैं जोलो॥ तोहौं अपनी फेरि सुधारों वचन एक जो बोलो॥ तीनो पनमें और निवाही इहै स्वांगको काछे। सूरदासको यहै बड़ो दुख परत सबनके पाछे७१॥राग सारंग॥प्रभुहौं बड़ी बेरको ठाढ़ो। और पतित तुम जैसे तारे तिनहीं में लिखि गाढो॥युग युग यहै विरद चलि आयो टेरि कहत हौं याते। मरियत लाज पांच पतितन में होव कहौं घटकाते॥ कै प्रभु हार मानिकै बैठहु कै करो विरद सही। सूर पतित जो झूठ कहत है देखौ खोजि वही॥ ७२॥ प्रभु हौं सब पतितन को टीको। और पतित सब दिवस चारिके हौं जन्मत वाहीको॥ वधिक अजामिल गणिका तारी और पूत नाहीको। मोहिं छांड़ि तुम और उधारे मिटै शूल क्यों जीको॥ कोउ न समरथ अघ करिबेको खैंचि कहतहौं लीको। मरियत लाज सूर पतितनिमें हमहूंते को नीको॥ ७३॥ हौंतो पतित शिरोमणि माधो। अजामील बातनहीं तारयो सुन्यो जो मोते आधो॥ कै प्रभु हार मानिकै बैठहु कै अबहीं निस्तारौ। सूर पतितको और ठौर नहिं है हरि नाम सहारो॥ ७४॥ माधो जू और न मोते पापी। घातक कुटिल चवाई कपटी महा क्रूर संतापी॥ लंपट धूत पूत दमरीको विषय जाप को जापी॥ भक्ष अभक्ष अपेय पान करि कबहुँन मनसा धापी। कामी विवस कामिनीके रस लोभ लालसा थापी। मन क्रम वचन दुसह सबहिन सों कटुक वचन आलापी॥ जेतिक अधम उधारे तुम प्रभु तिनकी गति मैं नापी। सागर सूर भरयो बिकार जल पतित अजामिल बापी॥ ७५॥ राग कान्हरा॥ हरिहौं सब पतितन पतितेश। और न सर करिवेको दूजो महा मोह मम देश॥ आशाके सिंहासन बैठ्यो दंभ छत्र शिरतान्यो। अपयश अति नकीब कहिं टेरयो सब शिर आय समान्यो॥ तंत्री काम क्रोध निज दोऊ अपनीअपनी रीति। दुविधा दुंदुभि है निशि बासर उपजावति विपरीति॥ मोदी लाभ खवास मोहके द्वारपाल अहंकार। बात अहं ममताहै मेरी मायाको अधिकार॥ सेवक तृष्णा भ्रमत टहल हित लहत न छिन विश्राम। अनाचार सेवक सों मिलिकै करत चवावन काम॥ बाज मनोरथ गर्व मत्त गज असत कुसत रथ सूत। पाइक मन बानैत अधीरज सदा दुष्ट मति दूत॥ गढ़ वै भये नरकपति मोसों दीने रहत किवार। सेना

साथ बहुत भांतिन की कीने पाप अपार ॥ निंदा जग उपहास करत मग वंदी जन यश गावत। हठ अन्याय अधर्म सूर नित नौवत द्वार वजावत ॥७६॥ राग धनाश्री ॥सांचो सो लिख धार कहावै। काया ग्राम मसाहत करिके जमा वांधि ठहरावै ॥मन्मथ करै कैद अपनीमें जान जहतिया लावै । मांडि मांडि खरिहान क्रोध को फोता भजन भरावै ॥ वट्टा काट कसूर भर्म को फरै तलै लै डारै । निश्चय एक असल पै रावै टरे न कवहूं टारै ॥ करि अवारजा प्रेम प्रीतिको असल तहां खतियावै । दूजी करै दूरि करि दाई तनक न तामें आवै ॥ मुजमिल जोरै ध्यान कूल का हँसो तहँ लै राखै । निर्भय रूपै लोभ छांडि कै सोई वारिज राखै ॥ जमा खर्च एकै करि समझै लेखा समुझि वतावै । सूर आप गुजरान मुहासिव लै जवाव पहुँचावै ॥ ७७ ॥ प्रभु जू मैं ऐसो अमल कमायो । साविक जमा हुती जो जोरी मिनजालिक तल लायो ॥ वासिलवाकी स्याहा मुजमिल सव अधर्म की वाकी । चित्रगुप्त होत मुस्तौफी शरण गहूं मैं काकी ॥ पांच मुहरिरै साथ करि दीने तिनकी वडी विपरीत । जिम्मे उनके मांगै मोते यह तो वड़ी अनीत ॥ पांच पचीस साथ अगवानी सव मिलि काज विगारे । नेकु जु सूतै विसरि गई सुधि मो तजि भए निनारे ॥ वड़ो तुम्हार वरामद हू को लिखि कीनो है साफ । सूरदास को यह मुहासवा दस्तक कीजै माफ ॥ ७८ ॥ राग सारंग ॥ प्रभु हो सव पतितनको राजा । निंदा परमुख पूरि रह्यो जग यह निसान तव वाजा ॥ तृष्णा देशरु सुभट मनोरथ इन्द्रिय खड्ग हमारे । मंत्री काम कुमति दैवे को क्रोध रहत प्रतिहारे ॥ गज अहंकार वढ़्यो दिग विजयी लोभ छत्र करि शीश । फौज असत संगति की मेरी ऐसो हौं मैं ईश ॥ मोह मई वंदी गुण गावत मागध दोप अपार । सूर पापको गढ़ दृढ़ कीनो मुहकमलाइ किंवार॥७९॥राग धनाश्री॥हरि हौं सव पतितन को रावा।कोकरि सकै वरावरि मेरी सो धौं मोहिं वताव ॥ व्याध गीध अरु पतित पूतना तिन में वढ़ि जो और । तिन में अजामेल गणिकापति उन में मैं शिरमौर ॥ जहँ तहँ सुनियत यहै वड़ाई मो समान नहिं आन ।अव रहे आजु कालिके राजा मैं तिनमें सुलतान ॥ अवलौं तो तुम विरद वुलायो भई न मोसों भेट। तजौ विरद कै मोहिं उधारो सूर गही कसि फेट ॥ ८० ॥ राग सारंग ॥ हरि हौं सव पतितन को नायक । को करि सकै वरावरि मेरी और नहीं कोउ लायक ॥ जैसो अजामेलको दीनो सो पाटौ लिखि पाऊं । तो विश्वास होइ मन मेरे औरो पतित वुलाऊं ॥ यह मारग चौगुनो चलाऊं तो पूरो व्यापारी । वचन मानि लै चलौं गांठि दै पाऊं सुख अति भारी ॥ यह सुनि जहां तहां ते सिमिटे आइ होइ इक ठौर । अव कै तौ अपनी लै आयौ वेर वहुर की और ॥ होड़ा होड़ी मनहि भावते किये पाप भरि पेट । सवै पतित पाँइन तर डारौ इहै हमारी भेट ॥ वहुत भरोसो जानि तुम्हारो अघ कीनो भरि भाडो । लीजै वेगि निवेरि तुरंतहि सूर पतित को टाडो ॥ ८१ ॥ राग धनाश्री ॥ मोसों पतित न और गुसाँई । अवगुण मोते अजहुँ न छूटत भली तजी अव ताँई॥जन्म जन्म मोहीं भ्रमि आयो कपि गुंजा की नाई ॥ परशत शीत जात नहिं क्योंहू लैलै निकट वनाई ॥ मोह्यो जाइ कनक कामिनि सों ममता मोह वढ़ाई । जिह्वा स्वाद मीन ज्यों उरझ्यो सूझत नहि फंदाई ॥ सोवत मुदित भयो स्वप्ने में पाई निधि जु पराई । जागि परयो कछु हाथ न आयो यह जग की प्रभुताई ॥ परशे नाहिं चरण गिरिधरके वहुत करी अन्याई । सूर पतितको ठौर और नाहिं राखि लेहु शरणाई ॥८२॥ हरि हौं महा पतित अभिमानी । नर पापिन सों वैठि विपम रत भाव भगति नहिं जानी ॥ निशि दिन दुखित मनोरथ करि करि पावत हूं तृष्णा न वुझानी । शिर

पर काल नीच नहि चितवत आयु घटत ज्यों अँजुरी पानी ॥ विमुखनि सों रति जोरत दिन प्रति साधुन सों न कहूं पहिचानी ॥ तिहि बिनु रहत नहीं निशि वासर जिहि सब दिन रस विषय बखानी ॥ माया मोह लोभ नाहिं जामें ऐसो वृन्दावन रजधानी । नवल किशोर जलद तनु सुन्दर विसरचो सूर सकल सुखदानी ॥ ८३ ॥ माधव जू मोहिं काहेकी लाज । जन्म जन्म योंही भरमान्यो अभिमानी वे काज ॥ जल थल जीव जिते जग जीवन निरख दुखित भये देव । गुण अवगुण की समुझि न शंका परी आइ यह टेव ॥ सर्वस खाइ रह्यो घर बैठ्यो करचो न कछू विचारी । सूर श्वानके पालनहारे आवत है नित गारी ॥ ८४ ॥ राग सारंग ॥ माधव जू सो अपराधी हौं । जन्म पाइ कछु भलो न कीनो कहो सु क्यों निवहौं ॥ सबसों रीति कहत यमपुर की गज पिपीलिका लों । पाप पुण्यको फल दुख सुख है भोग करौ जुइगों ॥ मोको पंथ बताओ सोई नरक कि स्वर्ग लहों । काके बल हौं तरौं गुसाईं कछु न भक्ति मो मों ॥ हँसि बोले जगदीश जगत्पति बात तुम्हारी यों । करुणासिंधु कृपालु कृपानिधि भजो शरण को क्यों । बात सुने ते बहुत हँसोगे चरण कमल की सों । मेरी देह छुटत यम पठये जितक दूत घर मों ॥ लैलै सब हथियार आपुने सान धराये त्यों । जिनके दारुण दरश देखिके पतित करत म्यों म्यों॥दांत चबात चले मधुपुर ते धाम हमारे को । ढूंढि फिरे घरकोउ न बतावै श्वपच कोरिया लों ॥ रिस भरि गए परम किंकर तब पकरचो छुटि न सकों । लैलै फिरे नगरमें घर घर जहां मृतक हौं हौं ॥ ता रिसते हौं बहुतक मारचो कहँ लौं बरणि कहौं । हाय हाय मैं परचो पुकारचो राम नाम न बकौं ॥ ताल पखावज चले बजावत समधी सो भोकों । सूरदासकी भली बनीहै गजी गई अरु पों ॥ ८५ ॥ राग कान्हरा ॥ थोरो जीवन बहुत न भारो । कियो न साधु समागम कबहूं लियो न नाम तुमारो ॥ अति उन्मत्त मोह माया वश नहिं कफ वात विचारो । करत उपाव न पूंछत काहू गनत न खाये खारो ॥ इन्द्री स्वाद विवस निशि वासर आप अपुनपो हारचो । जल उनमेद मीन ज्यों बपुरो पांउ कुहारो मारचो ॥ बांधी मोट पसारि त्रिविध गुण कहू न बीच उतारचो । देख्यो सूर विचारि शीश परि तब तुम शरण पुकारचो ॥ ८६ ॥ राग धनाश्री ॥ अब मैं नाच्यों बहुत गुपाल । काम क्रोध को पहिरि चोलना कंठ विषयकी माल ॥ महामोहको नेपुर बाजत निंदा शब्द रसाल । भरम भये मन भयो पखावज चलत कुसंगत चाल ॥ तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि दे ताल । मायाको कटि फेंटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल ॥ कोटिक कला कांछि देखराई जल थल सुधि नाहिं काल । सूरदास की सबै अविद्या दूरि करो नंदलाल ॥ ८७ ॥ ऐसी करत अनेक जन्म गये मन संतोष न आयो । दिन दिन अधिक दुराशा लाग्यो सकल लोक भरमायो ॥ सुनि सुनि स्वर्ग रसातल भूतल तहीं तहीं उठि धायो । काम क्रोध मद लोभ अग्नि ते काहु न जरत बुझायो ॥ स्रक चंदन वनिता विनोद सुख यह जर जरन वितायो । मैं अज्ञान अकुलाइ अधिक लै जरत मांझ घृत नायो ॥ भ्रमि भ्रमि हौं हारचो हिय अपने देखि अनल जग छायो । सूरदास प्रभु तुम्हरि कृपा बिनु कैसे जात नशायो ॥ ८८ ॥ बादिहि जनम गयो सिराइ । हरि सुमिरन नहिं गुरुकी सेवा मधुवन वस्यो न जाइ ॥ अबकी बेर मनुष्य देह धरि भजो न आन उपाइ । भटकत फिरचो श्वान की नाईं नेक जूठ के चाइ ॥ कबहुँ न रिझये लाल गिरिधरन विमल विमल यश गाइ ॥ प्रेम सहित पग बांधि घूंघुरु सक्यो न अंग नचाइ ॥ श्री भागवत सुन्यो नाहिं श्रवणनि नेकहुँ रुचि उपजाइ । अनन्य भक्ति नरहरि भक्तनिके कबहूं धोए

पाइ ॥ कहा कहौं जो अद्भुत है वह कैसे कहूं बनाइ । भव अंबोधि नाम नव नौका सूरहिं लेउ चढ़ाइ ॥ ८९ ॥ राग गौरी ॥ माधव जू तुम कत जिय विसरचो । जानत सब अंतरकी करणी जो मैं कर्म करचो ॥ पतित समूह सबै तुम तारे हुते जु लोग भरचो । हौं उनसे न्यारो करि डारचो इहि दुख जात मरचो ॥ फिरि फिरि योनि अनंतनि भरम्यो अब सुख शरण परचो । इहि अवसर कत बांह छुड़ावत इहि डर अधिक डरचो ॥ हौं पापी तुम पतित उधारन डारे हो कत देत । जो जानत यह सूर पतित नाहिं तौ तारो निज हेत ॥ ९० ॥ राग केदारा ॥ जो पै तुमही विरद विसारचो । तो कहो कहां जाउँ करुणामय कृपण कर्मको मारचो ॥ दीनदयालु पतितपावन यश वेद बखानत चारचो । सुनियत कथा पुराणनि गणिका व्याध अजामिल तारचो ॥ राग द्वेष विधि अविधि अशुचि शुचि जिन प्रभु जिते सँभारचो । कियो न कहूं विलम्ब कृपानिधि सादर सोच निवारचो ॥ अगणित गुण हरि नाम तुम्हारे अजा अपुनपो धारचो । सूरदास प्रभु चितवत काहे न करत करत श्रम हारचो ॥ ९१ ॥ राग सारंग ॥ जैसे और बहुत खल तारे । चरण प्रताप भजन महिमा सुख को कहि सकै तिहारे ॥ दुःखित गीध दुष्ट मति गणिका नृगै कूप उधारे । विप्र बजाइ चल्यो सुतके हित काटि महाअघ भारे ॥ व्याध दुरद गौतमकी नारी कहो कौन व्रत धारे । केशी कंस कुवलिया मुष्टिक सब सुख धाम सिधारे॥उरजनिको विष बांटि लगायो यशुमति की गति पाई । रजक मल्ल चाणूर दवानल दुख भंजन सुखदाई ॥ नृप शिशुपाल महा पद पायो सर औसर नहिं जाने । अब बक तृणावर्त धेनुक हति गुण गहि दोष न माने ॥ पंडुवधू पटहीन सभामें कोटिन बसन पुजाए । विपति काल सुमिरत छिन भीतर तहीं तहीं उठि धाए ॥ गोप ग्वाल गो सुत जल त्रासत गोवर्धन कर धारचो । संतत दीन महा अपराधी काहे सूर विसारचो ॥ ९२ ॥ राग केदारा ॥ बहुरि की कृपाहू कहा कृपाल । विद्या मन जन दुखित जगत में तुम प्रभु दीनदयाल ॥ जीवत यांचत कनकनि निर्धन दर दर रटत विहाल । तनु छूटे ते धर्म नहीं कछु जौ दीजे मणिमाल ॥ कहा दाता जो द्रवै न दीनहिं देखि दुखित कलिकाल । सूरश्याम को कहा निहोरो चलत वेदकी चाल ॥ ९३ ॥ कौन सुनै यह बात हमारी । समरथ और न देखों तुम विनु कासों विथा कहौं बनवारी ॥ तुम अवगत अनाथके स्वामी दीनदयालु निकुंज विहारी । सदा सहाय करी दासनि को जो उर धरी सोई प्रतिपारी ॥ अब केहि शरण जाउँ यादवपति राखि लेहु बलि त्रास निवारी । सूरदास चरणनिके बलि बलि कौन गुसाते कृपा विसारी ॥ ९४ ॥ राग कल्याण ॥ जैसे राखहु तैसहि रहौं । जानत दुख सुख सब जनके तुम मुख करि कहा कहौं ॥ कबहुँक भोजन लहौं कृपानिधि कबहूं भूख सहौं । कबहुँक चढौं तुरंग महागज कबहुँक भार बहौं ॥ कमल नयन घनश्याम मनोहर अनुचर भयो रहौं । सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधि तुम्हरे चरण गहौं ॥ ९५ ॥ राग धनाश्री ॥ कब लगि फिरि है दीन भयो । सुरत सरित भ्रम भँवर परचो तन मन परचत न लह्यो ॥ वात चक्र तृष्णा प्रकृति मिलि हौं तृण तुच्छ गह्यो । उरझ्यो विवस कर्म तरु अंतर श्रम सुख शरण चरचो । सूर करन वर रच्यो जु निज कर सो कर नाहिं गरचो ॥ ९६ ॥ तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी । जेहिके वश अनमिष अनेक गण अनुचर आज्ञाकारी ॥ बहत पवन भरमत दिनकर दिन फनपति शिर न डुलावै । दाहक गुण तजि सकत न पावक सिंधु न सलिल बहावै॥ शिव विरंचि सुरपति समेत अब सेवत प्रभु पद चाये । जो कछु करन चहत सो कीजत करत है

अति अकुलाये ॥ तुम अनादि अविगत अनंत गुण पूरण परमानंद । सूरदास पर कृपा करौ प्रभु श्री वृन्दावन चन्द ॥ ९७ ॥ राग मल्हार ॥ तुम तजि कौन नृपति के जाऊं । काके द्वार जाइ शिर नाऊं पर हथ कहां विकाऊं ॥ ऐसो को दाताहै समरथ जाके दए अघाऊँ । अंतकाल तुमरो सुमिरन गति अनत कहूं नहिं जाऊँ ॥ रंक अयाची कियो सुदामा दियो अभयपद ठाऊं । कामधेनु चिंतामणि दीनो कल्प वृक्ष तरू छाऊं ॥ भव समुद्र अति देखि भयानक मनमें अधिक डराऊँ । कीजे कृपा सुमिरि अपनो प्रण सूरदास वलि जाऊं ॥ ९८ ॥ राग मारू ॥ मेरी तौ गति पति तुम अंतहि दुख पाऊँ । हौं कहाइ तिहारो अव कौनको कहाऊँ ॥ कामधेनु छांड़ि कहा अजा जा दुहाऊं । हय गयंद उतरि कहा गर्दभ चढि धाऊँ ॥ कंचन मणि खोलि डारि कांच गर वँधाऊँ । कुंकुमको तिलक मेटि काजर मुख लाऊँ ॥ पाटंवर अंवर तजि गूदर पहिराऊँ । अंवको फल छांडि कहां सेवर को धाऊँ ॥ सागरकी लहर छाँडि खार कत अन्हाऊँ । सूर कूर आंधरो मैं द्वार पर्यो गाऊँ ॥ ९९ ॥ राग आसावरी ॥ श्याम वलराम को सदा गाऊँ । श्याम वलराम विनु दूसरे देव को स्वप्न हू माहिं हृदय न लाऊं ॥ यहै जप यहै तप यम नियम व्रत यहै यहै मम प्रेमफल यहै पाऊँ ॥ यहै मम ध्यान यह ज्ञान सुमिरन यहै सूर प्रभु देहु हौं यहै चाऊं ॥ १०० ॥ राग देवगंधार ॥ मेरो मन अनत कहां सुख पावै । जैसे उड़ि जहाजको पक्षी फिर जहाज पर आवै ॥ कमलनैनको छांड़ि महातम और देव को धावै । परमगंग को छांडि पियासो दुर्मति कूप खनावै ॥ जिन मधुकर अंवुज रस चाख्यो क्यों करील फल खावै । सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै ॥ १०१ ॥ राग सारंग ॥ तुम्हारी भक्ति हमारे प्रान । छूटि गये कैसे जन जीवत ज्यों पानी विनप्रान ॥ जैसे मगन नाद सुनि सारंग वधत वधिक तनु वान । ज्यों चितवे शशि ओर चकोरी देखत ही सुखमान ॥ जैसे कमल होत परि फूलित देखत दरशन भान । सूरदास प्रभु हरि गुण मीठे नित प्रति सुनियत कान ॥ १०२ ॥ राग धनाश्री ॥ जो हम भले बुरे तौ तेरे । तुम्हैं हमारी लाज वड़ाई विनती सुन प्रभु मेरे ॥ सव तजि तुम शरणागत आयो निज कर चरण गहेरे । तुम प्रताप वल वदत न काहू निडर भये घर चेरे ॥ और देव सव रंक भिखारी त्यागे वहुत अनेरे । सूरदास प्रभु तुमरि कृपाते पायो सुख जु घनेरे ॥ १०३ ॥ राग विलावल ॥ हमे नँदनंदन मोल लिये । यमके फंद काटि मुकराए अभय अजात किये ॥ भाल तिलक श्रवणनि तुलसी दल मेटे अंक विये । मूँडे मूड़ कंठ वनमाला मुद्रा चक्र दिये ॥ सव कोउ कहत गुलाम श्यामको सुनत सिरात हिये । सूरदास कों और वड़ो सुख जूठनि खाइ जिये ॥ १०४ ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ । हरि चरणाविंद उरधरौ ॥ हरि की कथा होइ जव जहां । गंगा हू चलि आवै तहां ॥ यमुना सिंधु सरस्वति आवै ॥ गोदावरी विलंव न लावै ॥ सर्व तीर्थको वासा तहां । सूर हरि कथा होवे जहां ॥ १०५ ॥ श्री भागवत वर्णन निमित्त ॥ राग सारंग ॥ श्री सुख चारि श्लोक दिये ब्रह्मा को समुझाइ ॥ ब्रह्मा नारदसों कहे नारद व्यास सुनाइ ॥ व्यास कहे शुकदेव सों द्वादश स्कंध वनाइ ॥ सूरदास सोई कहै पद भाषा करि गाइ ॥ १०६ ॥ व्याससों शुक उत्पत्ति ॥ राग विलावल ॥ व्यास कह्यो जो शुक सों गाई । कहौं सु सुनो संत चित लाई ॥ व्यास पुत्र हित वहुत कियो । तव नारायण यह वर दियो ॥ ह्वै है पुत्र भक्त अति ज्ञानी । जाकी जग में चलै कहानी ॥ यहै हृदय हरि कियो उपाई । नारद मुनि संशय उपजाई ॥ तव नारद गिरिजापै गये । तिनसों यहि विधि पूंछत भये ॥ मुंडमाल शिव ग्रीवा जैसे । मोसों वरणि सुनावो तैसे ॥ उमा कही मैं तो नहिं जानी । अरु शिवहू मोसों न वखानी ॥ नारद कह अव पूँछहु जाई । विनु पूछे नहिं देइ वताई ॥

उमा जाइ शिवको शिरनाई । कह्यो सुनो विनती सुरराई ॥ मुंड़माल कैसे तव ग्रीवा । ताकी मोहिं वतावहु सींवा ॥ शिव तव बोले वचन रसाल । उमा आहि यह सुनि मुँड़माल ॥ जब जब जन्म तुम्हारो भयो । तव तव मुंडमाल मैं लयो ॥ उमा कहयो शिव तुम अविनाशी । मैं तुम्हरे चरणनि की दासी ॥ मेरे हित इतनो दुख भरत । मोहिं अमर काहे नहिं करत ॥ तव शिव उमा गये ताठौर । जहाँ नहीं द्वितिया कोउ और॥सहसनाम तहां तिन्हैं सुनावौ । जाते आप अमर पद पावौ॥तहां हुतो इक शुकको अंग । तिन यह सुन्यो सकक परसंग॥ताको शिव मारन को धायो । तिन उड़ि अपुनो आप बचायो॥उड़त उड़त शुक पहुँच्यो तहां।नारि व्यासकी बैठी जहा॥शिवहू ताके पाछे धाए । पै ताको मारन नहिं पाये॥व्यासनारि तव हीं मुख बायो । तव तनु तजि मुख माहिं समायो ॥ द्वादश वर्ष गर्भ में रह्यो ॥ व्यास भागवत तव तिहि कह्यो॥बहुरो जब यदुपाति समुझायो । तेरी माता बहु दुख पायो ॥ तू जेहि हित वाहर नाहिं आवै । सो हमसों कहि क्यों न सुनावै ॥ प्रभु तुव माया मोहिं सतावत । ताते हौं वाहर नहिं आवत ॥ हरि कह्यो अब न व्यापि है माया । तव वह गर्भ छांड़ि जग आया ॥ माया मोह ताहि नहिं दह्यो । सुन्यो ज्ञान सो सुमिरन रह्यो ॥ जैसे शुकको व्यास पढायो । सूरदास तैसे कहि गायो ॥ १०७ ॥ श्री भागवत वक्ता श्रोता प्रस्ताव वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ व्यासदेव जब शुकहि पढ़ायो । सुनिकै शुक सो हृदय वसायो ॥ शुक सों नृपति परीक्षित सुन्यो । तिन पुनि भली भांतिकै गुन्यो ॥ सूत शौनकनि सों पुनि कह्यो विदुर मैत्रेय सों पुनि लह्यो ॥ सुनि भागवत सवनि सुख पायो । सूरदास सो वरणि सुनायो ॥१०८ ॥ सूत संवाद ॥ राग बिलावल ॥ सूत व्यास सों हरि गुण सुने । बहुरो तिन निज मनमें गुने ॥ बहुरौ नैमिपार पै आयो । तहां ऋषिनको दरशन पायो ॥ ऋषिन कह्यो हरि कथा सुनावहु । भली भांति हरिको गुण गावहु ॥ प्रथम कह्यो तिन व्यास अवतार । सुनो सूर सो अब चित धार ॥ ॥ १०९ ॥ व्यास अवतार वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन । करौ हरि चरणाविंद उर धरौ ॥ व्यास जन्म भयो जा परकार । कहौं सो कथा सुनौ चितधार ॥ सत्यवती मच्छोदरि नारी । गंगातट ठाढी सुकुमारी ॥ पराशर ऋषि तहां चलि आए । विवश होइ तिनके मद घाए । ऋषि कह्यो ताहि दान रति देहि । मैं वर दीन्यो तोहिं सुलेहि ॥ तू कुमारिका बहुरौ होई । तोको नाउँ धरै नहिं कोई ॥ मेरो कह्यो न जो तू करि है । देउँ शराप महादुख भरि है ॥ सत्यवती शाप भय मान । ऋषिको वचन कह्यो परिमान ॥ व्यासदेव ताके सुत भये । होत जन्म बहुरो वन गये ॥ योजनगंधा माता करी । मच्छ वास ताकी तव हरी ॥ देखो काम प्रताप अधिकाई । वश कियो पराशर ऋषिराई ॥ प्रवल शत्रु आहै यह मार । याते सुनौ चलौ संभार ॥ या विधि भयो व्यास अवतार । सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥११०॥श्री भागवत आदि तरण कारण॥राग बिलावल भयो भागवत चारि प्रकार । कहौं सुनो सो अब चितधार ॥ सतयुग लाख बर्षकी आई । त्रेता दशसहस्र कह गाई ॥ द्वापर सहस एक रहि गई । कलियुग शत संवत रहि गई ॥ सोऊ कहन सुनन को भाई । कलि मर्याद कही नाहिं जाई ॥ ताते हरि करि व्यास अवतार । करी संहिता वेद विचार ॥ बहुरि पुराण अठारह गाए । पै तोऊ शांती नाहिं पाए ॥ तव नारद तिनके ढिग आय । चारि श्लोक कहे समुझाय ॥ ए ब्रह्मा सों कहे भगवान । ब्रह्मा मोसे कहे बखान ॥ सोई अब मैं तुम सों भाषे । कहौं भागवत इहि हिय राषे ॥ श्री भागवत सुनै जो कोई । ताको हरि पद प्रापति होई ॥ ऊंच नीच व्योरो न वड़ाई । ताकी साषी मैं सुनि भाई ॥ जैसे लोहा कंचन

होई। व्यास भई मेरी गति सोई॥ दासीसुत ते नारद भयो। दुःख दासपनको मिटि गयो॥ व्यासदेव तब करि हरि ध्यान। कियो भागवत को व्याख्यान॥सुनै भागवत जो चित लाई। सूर सुहरि भजि भव तरि जाई॥ १११ ॥ राग सारंग ॥ कह्यो शुक श्री भागवत विचार। जाति पांति कोऊ पूछत नहिं श्रीपतिके दरबार॥ श्रीभागवत सुनै जो हित करि तरै सु भव जलधार। सूर सुमिरि गुण रटि निशि वासर राम नाम निज सार ॥ ११२ ॥ नाम माहात्म्य वर्णन॥ राग कान्हरा॥ बड़ी है राम नामकी ओट। शरण गये प्रभु काढ़ि देत नहिं करत कृपाके कोट॥ बैठत सभा सबै हरि जूकी कौन बड़ो को छोट। सूरदास पारसके परसे मिटत लोहके खोट॥११३॥ राग धनाश्री॥ सोई भलो जु रामहिं गावै। श्वपच प्रसन्न होइ बड़ सेवक विनु गुपाल द्विज जन्म न भावै॥ वाद विवाद यज्ञ व्रत साधे कतहूं जाइ जन्म डहकावै। होइ अटल जगदीश भजन में सेवा तासु चारि फल पावै॥ कहूं ठौर नहिं चरण कमल विनु भृंगी ज्यों दशहूं दिशि धावै। सूरदास प्रभु संत समागम आनंद अभय निसान बजावै॥ ११४ ॥ राग सारंग॥ काहूके वैर कहा सरै। ताकी सर वारि करै सु झूठो जाहि गुपाल बड़ो करै॥ शशि सन्मुख जो धूर उड़ावै उलटि तिसीके मुख परै चिरिया कहा समुद्र उलीचै पवन कहा पर्वत टरै॥ जाकी कृपा पतित होइ पावन पग परसत पाहन तरै। सूर केश नहिं टारि सकै कोउ दांत पीसि जो जग मरै ॥ ११५ ॥ राग केदारा॥ है हरि भजन को परवान। नीच पावै ऊंच पदवी बाजते नीशान ॥ भजनको परताप ऐसो जल तरै पाषान। अजामिल अरु भील गणिका चढ़े जात विमान ॥ चलत तारे सकल मंडल चलत शशि अरु भान॥ भक्त ध्रुवको अटल पदवी रामके दीवान॥ निगम जाको सुयश गावत सुनत संत सुजान। सूर हरिकी शरन आयो राखि ले भगवान ॥ ११६ ॥ भगवान विदुर गृह भोजन करन वर्णन ॥ राग बिलावल॥हरि हरि हरि सुमिरो सब कोई। ऊंच नीच हरि गिनत न दोई॥विदुर गेह हरि भोजन पाये। कौरवपतिको मन नहिं ल्याये॥ कहौं सुकथा सुनौ मन लाई। सूर श्याम भक्तनि मन आई॥ ११७॥ भए पांडवनिके हरि दूत। गये जहां कौरव पति धूत॥ उनसों जो हरि वचन सुनाये। सूर कहत जो सुनि चित लाए ॥ ११८ ॥ सुनि राजा दुर्योधन हम तुमपै आये। पांडुसुवन जीवित मिले दै कुशल पठाए॥क्षेम कुशल अरु दीनता दण्वडत सुनाए कर जोरे विनती करी दुर्बल सुखदाए॥ पांच गांव पांचौ जना करि किरपा दीजै। ए तुमरे कुल वंशहैं हमरी सुनि लीजै॥ उनकी हमसों दीनता कोउ कहि न सुनावो। पांडु सुतनि अरु द्रौपदीको मारि कढ़ावो॥ राजनीति जानो नहीं गो सुत चरवारे। पीवहु छाँछ अघाइकै कब केरे वारे॥ गई गाँउके बेटला मेरे आदि सहाई। इनकी हम लज्जा नहीं तुम राज बड़ाई॥ भीषम द्रोण कर्ण सुनै कोउ मुखहु न बोलै। ए पांडव क्यों काढ़िए धरणी डग डोलै॥ हम कछु लेन न देन हैं ए बीर तुम्हारे। सूरदास प्रभु उठि चले कौरवसुत हारे ॥ ११९ ॥ उद्धव प्रति वचन ॥ धनाश्री ॥ उद्धव चलो विदुर के जाइये। दुर्योधनके कौन काज जहां आदर भाव न पाइयै॥ गुरु मुख नहीं बड़े अभिमानी कापै सेव कराइयै। टूटी छानि मेघ जल बरषै टूटे पलँग बिछाइयै॥ चरण धोइ चरणोदक लीनो त्रिया कहै प्रभु आइयै। सकुचति फिरति जु वदन छिपावै भोजन कहा मँगाइयै॥ तुमतो तीनि लोकके ठाकुर तुमते कहा दुराइयै। हमतौ प्रेम प्रीतिके गाहक भाजी शाक चखाइयै॥ हँसि हँसि खात कहत मुख महिमा प्रेम प्रीति अधिकाइयै। सूरदास प्रभु भक्तनि के वश भक्तन प्रेम बढ़ाइयै ॥ १२० ॥ हरि ठाढे रथ चढ़े दुवारे। तुम

दारुक आगे ह्वै देखहु भक्त भवन किधौं अनत सिधारे ॥ सुनि सुंदरि उठि उत्तर दीनो कौरव सुत कछु काज हँकारे । तहँ आये यदुपति कहियतहै कमल नयन हरि हितू हमारे ॥ तिहिको मिलन गयो मेरो पति ते ठाकुरहैं प्रभू हमारे । सूर प्रभू सुनि संभ्रम धाए प्रेम मगन तन वसन विसारे ॥१२१॥ प्रभुजू तुमहो अंतर्यामी । तुम लायक भोजन नहिं गृह में अरु नाहीं गृह स्वामी॥ हरि कह्यो साग पत्र जो मोहिं प्रिय अमृत या सम नाहीं । वारंवार सराहि सूर प्रभु शाक विदुर घर खाहीं ॥ १२२ ॥ भगवान दुर्योधन संवाद । राग सोरठ ॥ क्यों दासीसुतके पांव धारे । भीषम कर्ण द्रोण मंदिर तजि मम गृह तजे मुरारे ॥ सुनियत दीन हीन वृपली सुत जाति पांतिते न्यारे ॥ तिनके जाइ कियो तुम भोजन यदुवंशी सव लाजनि मारे ॥ हरिजू कहें सुनो दुर्योधन सोइ कृपण मम चरण विसारे । वेई भक्त भागवत वेई राग द्वेप ते न्यारे॥ सूरदास प्रभु नंदनँदन कहें हम ग्वालन जुठिहारे ॥ १२३ ॥ राग सारंग ॥ हमते विदुर कहाहै नीको । जाके रुचिसों भोजन कीनो सुनियत सुत दासीको ॥ द्वै विधि भोजन कीजै राजा विपति परे कै प्रीती । तेरी प्रीति न मोहिं आपदा यहै वड़ी विपरीती ॥ ऊंचे मंदिर कौन काजके कनक कलश जु चढ़ाये । भक्त भवन में मैं जु वसतहौं यद्यपि तृण करि छाये । अंतर्यामी नाम हमारो हौं अंतरकी जानो । तदपि सूर भक्तवत्सलहौं भक्तन हाथ विकानो ॥ १२४ ॥ हरि तुम क्यों न हमारे आए । पटरस व्यंजन छांड़ि रसोई साग विदुर घर खाये ॥ ताकी छुगिया में तुम वैठे कौन वड़ापन पायो । जाति पांति कुलहूते न्यारो है दासीको जायो ॥ मैं तुहि कहौं अरे दुर्योधन सुन तू वात हमारी । विदुर हमारो प्राण पियारो तू विपया अधिकारी ॥ जाति पांतिहौं सवकी जानौं वाहिर छाक मँगायो । ग्वालनिके सँग भोजन कीनो कुलके लाज लगायो ॥ जहँ अभिमान तहां मैं नाहीं यह भोजन विप लागे । सत्य पुरुप वैठे घटहींमें अभिमानीको त्यागे ॥ जहँ जहँ भीर परे भक्तनको तहां तहां उठि धाऊं । भक्तनके हौं संग फिरत हौं भक्तन हाथ विकाऊं ॥ भक्तवछल हैं विरद हमारो वेद स्मृती हूं गाये । सूरदास प्रभु यह निज महिमा भक्तन काज वढ़ाये ॥ १२५ ॥ द्रौपदी सहाय ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरो सव कोई । नारि पुरुप हरि गनत न दोइ ॥ द्रुपदसुताकी राखी लाज । कौरवपतिको पारयो ताज ॥ कहौं सु कथा सुनो चित लाई । सूरश्याम भक्तन वनिआई ॥ १२६ ॥ कौरव पांसा कपट वनाये ॥ धर्मपुत्रको युवा खिलाये ॥ तिन हारयो सव भूमि भंडारी । हारी वहुरि द्रौपदी नारी ॥ ताको पकरि सभामें लाये । दुःशासन करि वसन छुड़ाये ॥ तव वह हरिसों रोइ पुकारी । सूर राखि मम लाज मुरारी ॥ १२७ ॥ राग सारंग ॥ अव कछु नाहीं नाथ रह्यो । सकल सभामें वैठि दुशासन अम्वर आनि गह्यो ॥ हारयो सव भंडार भूमि अरु अव वनवास लयो । एकै चीर हुतौ मेरे पर सो इन हरन चह्यो ॥ हा जगदीश राखि यहि अवसर प्रगट पुकारि कह्यो । सूरदास उमँगे दोउ नयना वसन प्रवाह वह्यो ॥ १२८ ॥ राग विलावल ॥ जेती लाज गोपालहि मेरी ॥ तितनी नाहिं वधू हौं जाकी अंवर हरत सवन तन हेरी ॥ पति अति रोप मारि मन महियां भीपम दई वेद विधि टेरी । हा जगदीश द्वारका स्वामी भई अनाथ कहत हौं टेरी ॥ वसन प्रवाह वढ़यो जव जान्यो साधु साधु सवहुन मति फेरी । सूरदास स्वामी यश प्रगटयो जानी जनम जनमकी चेरी ॥ १२९ ॥ राग धनाश्री ॥ निवहो वाँह गहेकी लाज । द्रुपदसुता भापत नँदनन्दन कठिन भई है आज ॥ भीपम कर्ण द्रोण दुर्योधन वैठे सभा विराज । तिहिं देखत मेरो पट काढत लीक लगी तुम

काज ॥ खंभ फारि हरिनाकुस मारचो ध्रुव नृप धरचो निवाज॥ जनकसुता हित हत्यो लंकपति बांधो साइर गाज ॥ गद्गद सुर आतुर तनु पुलकित नैननि नीर समाज। दुखित द्रौपदी जानि प्राणपति आये खगपति त्याज॥ पूरे चीर बहुरि तनु कृष्णा ताके भरे जहाज। काढि काढि थाक्यो दुःशासन हाथनि उपजी खाज॥विकल अमान कह्यो कौरवपति पारचो शिरको ताज। सूर प्रभू यह रीति सदाही भक्त हेतु महाराज ॥ १३० ॥ राग बिहागरा ॥ ठाढ़ी कृष्ण कृष्ण यों बोले। जैसे कोई विपति परे ते दूरि धरचो धन खोले ॥ पकरचो चीर दुष्ट दुःशासन विलख बदन भई डोलै। जैसे राहु नीच ढिग आये चंद्र किरन झक झोलै ॥ जाके मीत नन्दनन्दनसे ढकि लई पीत पटोलै। सूरदास ताको डर काको हरि गिरिवरके ओलै॥ १३१ ॥ राग धनाश्री ॥ तुमरी कृपा बिनु कौन उबारै। अर्जुन भीम युधिष्ठिर सहदेव सुमति नकुल बल भारै ॥ केश पकरि लायो दुःशासन राखौ लाज मुरारे । नाना बसन बढ़ाइ दियो प्रभु बलि बलि नंददुलारे ॥ नग्न न होति चकित भयो राजा शीश धुनै कर सों कर मारे। जापै कृपा करैं करुणामय को ताकी दिशि सकै निहारे॥जो जो जन निश्चय करिसेवै हरि प्रभु अपनो विरद संभारे॥सूरदास प्रभु अपने जनको उरते नेकु न टारै ॥१३२॥सूत वचन शौनकनि प्रति ॥ राग बिलावल ॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरणार्विंद उर धरौ ॥ हरि पंडवको ज्यों दियो राज। अरु पुनि गयो राज्य ज्यों त्याज ॥ बहुरो भयो परीक्षित राजा । तिनको शाप विप्र सुत साजा ॥ सुनि हरि कथा मुक्ति सो भयो। सूत शौनकनि सों सो कह्यो ॥ कहौं सो कथा सुनो चित धार। सूर कहै भागावत अनुसार ॥ १३३ ॥ भीष्मोपदेश युधिष्ठिर प्रति ॥ राग बिलावल ॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरणार्विंद उर धरौ॥भारत युद्ध होइ जब बीता। भयो युधिष्ठिर अति भयभीता ॥ कुरु कुल हत्या मोते भई। धौं अब कैसे करिहै दई ॥ करौं तपस्या पाप निवारौं। राजछत्र नाहीं शिर धारौं॥ लोगन तिहि बहुविधि समझायो। पै तिहि मन संतोष न आयो ॥ तब हरि कह्यो टेक परिहरौ। भीष्म पितामह कहै सुकरौ ॥ हरि पांडवरण भूमि सिधाए। भीषम देखि बहुत सुख पाए ॥ हरि कह्यो राज्य न करत धर्मसुत । कहत हते भये भ्रात भ्रात सुत ॥ गुरुहत्या मोते ह्वै आई। कहौ सुछूटै कौन उपाई ॥ राजधर्म भीषम तब गायो। दान आपदा मोक्ष सुनायो ॥ पै नृपको संदेह न गयो। तब भीषम नृप सों पुनि कह्यो ॥ धर्मपुत्र तू देखि विचार। कारन करनहार करतार ॥ नरके किए कछू नहिं होई। करता हरता आपुहि सोई ॥ ताको सुमिरि राज्य तुम करौ। अहंकार चित ते परिहरौ ॥ अहंकार किये लागत पाप। सूरश्याम भजि मिटै संताप ॥ १३४ ॥ राग धनाश्री ॥ करी गोपालकी सब होई। जो अपनो पुरुषारथ मानत अति झूठोहै सोई॥ साधन मंत्र यंत्र उद्यम बल यह सब डारहु धोई। जो कछु लिखि राखी नँदनंदन मेटि सकै नहिं कोई ॥ दुख सुख लाभ अलाभ समुझि तुम कहतहिं मरत हौं रोई। सूरदास स्वामी करुणामय श्याम चरण मन पोई ॥ १३५ ॥ राग कान्हरा ॥ होत सुजो रघुनाथ ठटी। पचि पचि रहे सिद्ध साधक मुनि तऊ बढ़ी न घटी ॥ योगी योग धरत मन अपने औ शिर राखि जटी । ध्यान धरत महादेव अरु ब्रह्मा तिनहूं सों न छटी ॥ जपि तपि तपसी आराधन कर चारो वेद रटी। सूरदास भगवंत भजन बिनु कर्म रेख न कटी ॥ १३६ ॥ राग सारंग ॥ भावी काहू सों न टरै। कहां वह राहु कहां वह रवि शशि आनि संयोग परै ॥ मुनि वशिष्ठ पंडित अतिज्ञानी रचि पचि लग्न धरे। तात मरन सिय हरन राम वन वपु धारि विपति भरे॥रावण जीति कोटि तेतीसो त्रिभुवन राज्य करै। मृत्यु बांधि

कूप में राखै भावीवश सिगरै ॥ अर्जुनके हरि हितू सारथी सोऊ वन निकरै । द्रुपदसुता के राजसभा दुःशासन चीर हरै ॥ हरिश्चद्रसो को जग दाता सो घर नीच चरै । जो गृह छांड़ि देश बहु धावै तऊ वह संग फिरै ॥ भावीके वश तीनि लोकहै सुर नर देह धरै । सूरदास प्रभु रची सु ह्वैहै को करि सोच मरै ॥१३७॥ राग कान्हरा॥ ताते सेइए यदुराई । संपति विपति वि- पति सों संपति देह धरेको यहै सुभाई ॥ तरुवर फूलै फलै परिहरै अपने कालहि पाई । सरवर नीर भरै पुनि उमड़ै सूखे खेह उड़ाई ॥ द्वितिय चंद्र बाढ़त ही बाढ़ै घटत घटत घटि जाई । सूरदास संपदा आपदा जिनि कोऊ पतिआई॥१३८॥ मलार ॥ इहि विधि कहा घटैगो तेरो । नंदनँदन करि घर को ठाकुर आपुन ह्वै रहु चेरो ॥ कहा भयो जो संपति बाढी कियो बहुत घर घेरो । कहुँ हरि कथा कहूं हरि पूजा कहुँ संतनिको डेरो ॥ जो वनितासुत यूथ सकेलै हैं गै रथनि घनेरो । सब तजि सुमिरण सूर श्याम गुण यहै सांच मत मेरो ॥ १३९ ॥ भारत वर्णन राग सारंग ॥ भक्तवछल श्री यादवराई । भीषमकी परतिज्ञा राखी अपुनो वचन फिराई ॥ भारत माहिं कथा यह विस्तृत कहत होय विस्तार । सूर भक्त वत्सलता वरणौं सर्व कथाको सार ॥ १४० ॥ अर्जुन दुर्योधनको गवन कृष्ण गेह ॥ भक्त वत्सलता प्रगट करी । सत संकल्प वेद की आज्ञा जनके काज प्रभु दूरि करी ॥ भारतादि दुर्योधन अर्जुन भेटन गए द्वारकापुरी । कमल नैन बैठे सुखशय्या पारथ पाइ तरी ॥ प्रभु जागे अर्जुन तन चितयो कब आये तुम कुशल घरी । ता पाछे दुर्योधन भेटहि शिर दिशते मन गर्व धरी ॥ दुहूं मनोरथ अपनो भाष्यो तब श्री पति बातें उचरी । युद्ध न करौं शस्त्र नहिं पकरौं एक ओर सेना सिगरी ॥ हरि प्रभाव राजा नहिं जान्यों कह्यो सेन मोहिं देहु हरी । अर्जुन कह्यो जानि शरणागत कृपा करौ ज्यों पूर्व करी । निज पुर आइ राई भीषम सों कही जु बातें हरि उचरी।सूरदास भीषम परतिज्ञा शस्त्र लिवाऊं पैज करी॥१४१॥ दुर्योधन वचन भीष्म प्रति ॥ राग धनाश्री ॥ मैं तोहि पूछौं भूतलराई । सुनौं पितामह भीषम मम गुरु कीजे कवन उपाई ॥ उत अर्जुन अरु भीम पंडुसुत दोउ करवार गहे गंभीर । इत भगदत्त द्रोण भूरिश्रव तुम सेनापति धीर । जे जे जात परत ते भूतल ज्यों ज्वालागत चीर । कौन सहाय जानियत नाहिंन होत वीर निर्वीर । जब तोसों समुझाइ कही नृप तब तैं करी न कान।पावक कि रण दहत सबहीं दल तूल सुमेरु समान।अवगत अविनाशी पुरुषोत्तम हांकत रथकी क्यान।अचरज कहा पार्थ जो वेधे तीन लोक इक बान । अजहूं समुझि कह्यो करि मेरो कहत पसारे बाहँ । कहो ताहिको सरिवर पूजे प्रभु पारथ दोउ माहँ । अबतो सूर शरण तकि आयो सोइ रजायसु दीजै । जिहिते रहै शस्त्र प्रण मेरो वहै मतो कछु कीजे ॥ १४२ ॥ भीष्म प्रतिज्ञा ॥ राग मलार आज जो हरिहि न शस्त्र गहाऊं ॥ तौलौं हौं गंगा जननी को संतनसुत न कहाऊं ॥ स्यंदन खंड महारथ खंडों कपिध्वज सहित ढुलाऊं । इती न करों शपथ मोहिं हरिकी क्षत्रिय गतिहि न पाऊं॥ पांडवदल सन्मुख ह्वै धाऊं सरिता रुधिर बहाऊं ॥ सूरदास रणभूमि विजय विन जियत न पीठि दिखाऊं ॥ १४३ ॥ राग मारू ॥ सुरसरि सुवन रणभूमि आये । बाणवर्षा लगे करन अति क्रोध ह्वै पार्थ औसान तब सबै भुलाये । कह्यो करि कोप प्रभु अब प्रतिज्ञा तजो नहीं तो भरत रण हम हराए । सूर प्रभु भक्तवत्सल विरद आनि उर ताहि या विधि वचन कहि सुनाये ॥ १४४ ॥ भगवत वचन अर्जुन प्रति ॥ राग विलावल ॥ हम भक्तनके भक्त हमारे।सुन अर्जुन परतिज्ञा मेरी यह व्रत टरत न टारे।भक्तैकाज लाज जिय धरिकै पाँइ पयादे धाऊं।जहँ जहँ भीर परै भक्तनको तहँ तहँ

जाइ छुडाऊँ॥ जो मम भक्त सों वैर करत है सो निज वैरी मेरो। देखि विचारि भक्त हित कारण हांकत हों रथ तेरो॥ जीते जीत भक्त अपने की हारे हारि विचारों। सूरदास सुनि भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन जारों॥ १४५॥ राग सारंग॥ गोविंद कोपि चक्र कर लीनो। छांड़ि आपनो प्रण यादवपति जनको भायो कीनो॥ रथते उतरि अवनि आतुर ह्वै चले चरण अति धाए। मनु शंकित भूभार वहुत ह्वै चलत भए अकुलाए॥ कछुक अंगते उड़त पीतपट उन्नत वाहु विशाल। स्वेद स्रोन तनु शोभा कन छवि घन वर्षत जनु लाल॥ सूर सुभुजा समेत सुदर्शन देखि विरंचि भ्रम्यो। मानो आनि सृष्टि करिवेको अंबुज नाम भज्यो॥१४६॥ राग मलार॥ मेरी प्रतिज्ञा रहै कि जाउ। इत पारथ कोप्यो है हम पर उत भीषम भटराउ॥ रथते उतरि चक्र धरि कर प्रभु सुभट हि सन्मुख आए। ज्यों कंदर ते निकसि सिंह झुकि गज यूथनिपर धाए॥ आइ निकट श्रीनाथ विचारी परी तिलक पर दीठि। शीतल भई चक्रकी ज्वाला हरि हँस दीनी पीठि॥ जय जय जय चिंतामणि स्वामी शंतनुसुत यों भाखै। तुम विनु ऐसो कौन दूसरो जो मेरो प्रण राखै॥ साधु साधु सुरसरीसुवन तुम मैं प्रण लागि डराऊं। सूरजदास भक्त दोनों दिशि कापर चक्र चलाऊं॥ १४७॥ अर्जुन भीष्म संवाद। राग धनाश्री॥ कहो पितु मोसों सोइ सतभाव। जाते दुर्योधन दल जीतों किहि विधि कवन उपाव॥ जब लगि जी अंतर घट मेरे को सरिवर करि पावै। चिरंजीव जौलौं दुर्योधन जियत न पकराहिं आवै॥ कौरव छाँड़ि भूमिपर कैसे दूजो भूप कहावै। तो हम कछु न वसाई पार्थ जो श्रीपति तोहि जितावै॥ अव मैं शरण तुमैं तकि आयो हमैं मंत्र कछु दीजै। नातर कुटुंब सैन संहारिकर कौन काजको जीजै। द्रुपदकुमार होइ रथ आगे धनुष गहो तुम वान। ध्वजा बैठि हनुमत कलगाजै प्रभु हांके रथ जान। केतिक जीव कृपण मम वपुरो तजै काल हू प्रान। सूर एकही वाणा वेडारे श्रीगोपाल की आन॥ १४८॥ भीष्म देह त्याग। राग सारंग॥पारथ भीषमसों मति पाई। कियो सारथी शिखंडि आई॥ भीषम ताहि देखि मुख फेरचो। पारथ युद्ध हेतु रथ प्रेरचो॥ कियो युद्ध अतिही विकरार। लागी चलनि रुधिरकी धार॥ भीषम शरशय्यापर परचोपै दक्षिणायन लगि नहिं मरचो॥हरि पांडव समेततहँ आए॥सूरज प्रभु भीषम मनभाए॥१४९॥ राग सारंग। हरिसों भीषम विनय सुनाई। कृपा करी तुम यादवराई॥ भारतमें मेरो प्रण राख्यो। अपनो कियो दूरिकर नाख्यो॥तुम विनु प्रभु ऐसीको करै। जो भक्तनके वश अनुसरै॥तुम दर्शन सुर नर मुनि दुर्लभ। मोको भयो सो अति ही सुलभ॥ दूरि नहीं गोविंद वह काल। सूर कृपा कीजै गोपाल॥ १५०॥ गोविंद अब न दूरि वह काल। दीनानाथ देवकीनंदन भक्तवत्सल गोपाल॥ मैं भीषम तुम कृष्ण सारथी किये पीत पट लाल। वहुत सनाह समर शर वेधे कनकवेल ज्यों ताल॥ तुमरे चरणकमल मम मस्तक कत ताको शर जाल। सूरदास जन जानि आपनो देहु अभयकी माल॥ १५१॥ राग मल्लार॥ वा पट पीतकी फहरान। कर धरि चक्र चरणकी धावनि नहिं विसरति वह वान॥ रथते उतरि अवनि आतुर ह्वै कच रजकी लपटान। मानों सिंह शैलते निकस्यो महामत्तगज जान॥ जिन गुपाल मेरो प्रण राख्यो मेटि वेदकी कान। सोई सूर सहाय हमारे निकट भए हैं आन॥ १५२॥ राग सारंग॥ भीषम धरि हरिको उर ध्यान। देखत हरिके तजे परान॥ तासु क्रिया करि सवगृह आए। राजा सिंहासन वैठाए॥ हरि पुनि द्वारावती सिधाए। सूरदास हरिको गुण गाए।॥ १५३॥ अथ भगवान्‌को द्वारका गमन॥ राग बिलावल॥ धर्मपुत्रको दै हरि राज। निज पुर चलिवेको कियो साज॥ तव कुंती विनती उच्चारी। सुनौ कृपा करि कृष्ण मुरारी॥ जब जब हमको विपदा परी। तव तव प्रभु सहाय तुम करी॥ तुमते विमुख

राज्य किहि काम।सूर बिसारहु हमें न श्याम ॥ १५४ ॥ अथ कुंतीकी विनय ॥ राग कान्हरा । प्रभु जू विपदा भली विचारी। धिक यह राज्य विमुख चरणन ते कहति पंडुकी नारी॥ लाक्षामंदिर कौरव विरच्यौ तहँ राखे वनवारी। दुर्योधनकी सभा द्रौपदी अंबर दए उवारी॥ अतिथि ऋपीश्वर शापन आए शोक भयो जिय भारी। स्वल्प शाकते तृप्त किए सब कठिन आपदा टारी॥ परतिज्ञा प्रह्लादकि राखी थी नरहरि वपुधारी। सोई सूर सहाय हमारे संतनको हितकारी ॥ १५५ ॥

अथ विदुरको उपदेश राजा धृतराष्ट्र गांधारी माति वन गमन राजा युधिष्ठिरको वैराग्य वर्णन ।

राग विलावल॥कुरुपति ज्यों वनगमन कियो।धर्मसुवन विरक्त ज्यों भयो।वरणि सुनाऊं ता अनुसार॥ सूत कही जैसे परकार ॥ भारतादि कुरुपत्तिकी सथा। चली पांडवनकी जब कथा ॥ विदुरकह्यो मत करो अन्याई। देहु पांडवन राज्य बटाई ॥ कुरुपति कह्यो धान मम खाइ। पंडुसुतनकी करत सहाइ ॥ याको भ्रांते देहु निकारी। बहुरि न आवै मेरे द्वारी॥विदुर शस्त्र सब तहीं उतारी। चल्यो तीर्थनि मुंड उघारी ॥ भारतके बीते पुनि आयो। लोगन सब वृत्तांत सुनायो ॥ तब पूंछो कुरुपति है कहां। कह्यो पंडुसुत मंदिर जहां॥राजा सेवा भलि विधि करत। दिन प्रति सुख संपति तहँ भरत ॥ विदुर कह्यो देखो हरिमाया। जिन इह सकल लोक भरमाया॥ जिह हरि कृपा करचो सो छूटचो। इन माया सब लोगनि लूटचो ॥ इहिके पुत्र एकसौ भए। तिने विसारि सुखी ए हुए॥अब मैं उनको ज्ञान सुनाऊं । जिहिं तिहिं विधि वैराग्य उपाऊं॥ बहुरो धर्मपुत्र पै आयो। राजा देखि बहुत सुख पायो॥ करि सन्मान कह्यो आ भाई। करी हमारी बहुत सहाई ॥ लाक्षागृहते जरत उवारेअरु वालापनते प्रतिपारे॥ कौन कौन तीरथ फिरि आए।विदुर सकल वृत्तांत सुनाए॥ बहुरि कह्यो हरि सुधि कछु पाई। कह्यो न कछू रह्यो शिरनाई॥ बहुरो कौरवपति ढिग आए। पूछे समाचार सतभाए॥ कह्यो युधिष्ठिर सेवा करत। ताते बहुत अनंदित रहत ॥ कह्यो पुत्रसुधि आवत कबहीं। कह्यो भाविएके वश सबहीं॥ विदुर कह्यो शत पुत्र तिहारे। पंडव सुतनिकलंक संहारे॥ तिनके गृह तुम भोजन करत। अरु पुनि कहत सुखै हम धरत ॥ धिक् तुम धिक् या कहि वे ऊपर । जीवत रहिहो कौलौं भूपर ॥ श्वान तुल्य है बुद्धि तुम्हारी । जूठन काज सहत दुख भारी॥ द्रौपदिके तुम बसन छिनाए। इन तुम राज बहुत दुख पाए॥ इनके गृह रहि सुख तुम मानत। अति निलज्जको लाज न आनत॥ जीवन आश प्रबल तुम लेखी। साक्षात सो तुममें देखी काल अग्नि सबही जग जारत।तुम कैसे जीवन न विचारत ॥ आयु तुम्हारी गई सिराइ। वन चलि भजो द्वारकाराइ॥कुरुपति कहयो अंध हम दोई।वनमें भजन कौन विधि होई।।विदुर कहै सेवा मैं करिहौं।सेवा करत नेक नहिं टरिहौं।अर्धनिशा ताको लै गयो।प्रात भए नृप विस्मय भयो॥ बूड़सुए कै कहुँ उठि गये। तिनके ताप नृपति बहु तए॥वहां जाइ कुरुपति बल योग।दियो छांड़ि तनुको संयोग॥ गांधारी सहगामिनि कियो। विदुरभक्त तीरथ मग लियो॥ इहि अंतर नारद इहँ आयो। नृपको सब वृत्तांत सुनायो॥ नृपके मन उपजो वैराग। भजो सूर प्रभु अब सब त्याग ॥१५६॥

अथ हरि वियोग पांडवनको उत्तर गमन॥राग सारंग॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो।हरि चरणार्विंदउर धरौ। हरि वियोग पांडव तजि राज।गमन कियो परीक्षित राज ॥ कहौं सुकथा सुनौ चितधार। सूर कहयौ भागवत अनुसार ॥ १५७ ॥ रागाविलावल॥ राजासों अर्जुन शिरनाई। कहयो सुनौ विनती महाराई ॥ बहुदिन भे हरिसुधि नहिं पाई। आज्ञा होइ तौ देखहुँ जाई॥ यह कहि पारथ हरिपुर गए। सुन्यौ सकल यादव क्षय भए॥ अर्जुन सुनत नयन जलधार। परचो धरणि पर खाइ पछार ॥ तब दारुक

संदेश सुनायो । कह्यो हरिजू जो गीता गायो ॥ सो स्वरूप मम हृदये आन । रहियो सदा करत मम ध्यान ॥ तब अर्जुन मन धीरज धारि।चल्यो संगलै जे नर नारि॥तहँ भिल्लनिसों भई लराई । लूटे विन सब श्याम सहाई ॥ अर्जुन बहुत दुखित तब भए । इहँ अपसगुन होत दिन नए ॥ रोवैं वृषभ तुरंग अरु नाग । श्याल दिवस निशि बोलैं काग ॥ कंपै भुव वर्षा नहिं होई । भए सोच चित यह नृप जोई ॥ इहि अंतर अर्जुन फिरि आयो । राजाके चरणन शिरनायो ॥ राजा ताको कंठ लगाई । कह्यो कुशल हैं यादवराई ॥ बल वसुदेव कुशल सब लोइ । अर्जुन यह सुनिदीनि रोइ ॥ राजा कह्यो कहा भयो तोहि।तू क्यों कहि न सुनावै मोहि ॥ काहू असत्कार तोहिं कियो।कै कहि दानन द्विजको दियो ॥ कै शरणागत को नहिं राख्यो । कै तुमसों काहू कटु भाख्यो ॥ कै हरिजू भए अन्तर्ध्यान । मोसों कहि तू प्रगट बखान ॥ तब अर्जुन नैनन जल डारि । राजासों किय वचन उचारि ॥ सूरज प्रभु वैकुंठ सिधारे । तेहिविन को मम काज सँवारे ॥ १५८ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि बिनु को पुरवै मेरो स्वारथ।मुंडहि धुनत शीश करमारत रुदन करत नृप पारथ । थाके हस्त चरणगति थाकी अरु थाक्यो पुरुपारथ । पांच बाण मोहिं शंकर दीने तेऊ गए अकारथ ॥ जाके संग सेतुबन्धकीनो अरु जीत्यो महाभारथ।गोपी हरी सूरके प्रभु विन वटत न प्राण पदारथ ॥ १५९ ॥ राग विलावल । यह सुनि राजा रोइ पुकारे । भीमादिक रोये पुनि सारे ॥ रोवत सुनि कुंती तहां आई । कह्यो कुशल हैं यादवराई ॥ अर्जुन कह्यो सबै लरि मुए।हरि विनु सब अनाथ हम हुए ॥ कुंती प्राण तजे धरि ध्यान । जीवन मरन उतै भल जान।राज्य परीक्षित को नृप दीना।वज्रनाम मथुरापति कीना।द्रुपदसुता समेत सबभाई । उत्तर दिशा गए हर्षाई ॥ योग पंथ करि उन तनु तजे। सूर सबै ते हरिपद भजे ॥ १६० ॥ अथ श्री भगवान् परीक्षित गर्भ रक्षा, जन्म वर्णन ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ । हरि चरणाविंद उर धरौ ॥ हरि परीक्षितै गर्भ मँझार । राखि लियो निज कृपा अधार । कहौं सु कथा सुनौ चितलाई । जो हरि भजै रहै सुख पाई॥भारत युद्ध वितत जब भयो । दुर्योधन अकेल तहँ रह्यो ॥ अश्वत्थामा तापै जाइ । ऐसी भांति कह्यो समुझाइ ॥ हमसों तुमसों बाल मिताई । हमसों कछु न भई मित्राई ॥ अब जो आज्ञा मोको होई । छांड़ि विलंब करों अब सोई ॥ राज्य गयेको दुःख न सोई।पांडव राज भयो जो होई ॥ उनके मुएहीय सुख होई।जो करि सकौ करौ अब सोई ॥ हरि सर्वज्ञ बात यह जान । पांडु सुतनि सों कह्यो बखान ॥ आज सरस्वति तट रहो सोई । पै यह बात न जानै कोई ॥ पांडव हरिकी आज्ञा पाइ । तजि गृह रहे सरस्वति जाइ ॥ काहू सों यह कहि न सुनाई । वहां जाइ सब रैन बिताई । अश्वत्थामा तब इहां आए । द्रौपदीसुत तहां सोवत पाए ॥ उनको शिर लै गयो उतारि । कह्यो दुर्योधन आयो मारि ॥ विनदेखे ताको सुख छयो । देखेते दूनो दुख भयो ॥ ए बालक तैं वृथा जु मारे । पुनि कुरुपति तजि प्राण सिधारे ॥ अश्वत्थामा भय करि भग्यो।इहां लोग सब सोवत जग्यो।द्रौपदि देखि सुतन दुख पायो । अर्जुनसों यह वचन सुनायो॥अश्वत्थामा जब लगि मारों । तब लगि अन्न न मुखमें डारों ॥ हरि अर्जुन रथपर चढ़ि धाये । अश्वत्थामापै चलि आये ॥ अश्वत्थामा अस्त्र चलायो । अर्जुनहू ब्रह्मास्त्र पठायो ॥ उन दोनों से भई लराई । तब अर्जुन दोउ लए बुलाई ॥ अश्वत्थामाको गहि लाए । द्रौपदी शीश मुठी मुकराए ॥ याके मारे हत्या होई । मूयो जिवत न देख्यो कोई ॥ अश्वत्थामा बहुरि खिसाई । ब्रह्मअस्त्रको दियो चलाई ॥ गर्भ परीक्षित जारन गयो । तब हरि ताहि जरन नहिं दयो ॥ रूप चतुर्भुज गर्भ मँझार । ताको तासों लियो उबार ॥ जन्म परीक्षित को जब भयो । कह्यो चतु-

भुंज अव कहँ गयो ॥ पुनि जव हरिको देखों जोई । पाइ संतोप सुखी होउँ सोई । राजा जन्म समय को देखि । मनमें पायो हर्ष विशेखि ॥ गर्भ परीक्षित रक्षा करी । सोई कथा सकल विस्तरी ॥ भी भगवान कृपा जिहि करै । सूर सो मारे काके मरै ॥ १६१ ॥ अथ परीक्षित राजाको कलियुग दंड । ऋपि शाप । राग सारंग ॥ हरि हरि भक्तनको शिरनाऊं । हरि हरि भक्तनके गुण गाऊं ॥ हरि हरि भक्त एक नाहिं दोई । पै इह जानत विरला कोई ॥ भक्त परीक्षित हरिको प्यारो । गर्भ माह होतो जव वारो ॥ ब्रह्म अस्त्रते ताहि वचायो । युग युग विरद यहै चलि आयो॥वहुरि राज्य ताकहँ जव भयो । मिस दिग्विजय चहूँ दिशि लयो ॥ सकल प्रजा सु धर्म रत देखे । ताके मन वहु हर्प विशेखे ॥ कुरुक्षेत्रमें पुनि जव आयो । गाय वृपभ तहँ दुःखित पायो ॥ तासु वृपभ के पग त्रिय नाहीं । रोवत गाय देखके ताहीं ॥ वृपभ धर्म पृथ्वीसो गाइ । वृपभ कह्यो तासों या भाइ ॥ मेरे हेतु दुखी तू होत । कै अधर्म तुमपर अच्छोत ॥ गो कह्यो हरि वैकुंठ सिधारे । शम दम उनहीं संग पधारे॥ तप संतोप दया अरु गयो । ज्ञान यमादिक सव लय भयो॥ यज्ञ साध ना कोऊ करै । कोऊ धर्म न मनमें धरै ॥ अरु तुमको विन पाँइन देखि । मोहिं होतहै दुःख विशेखि ॥ इह अंतर राजा शुद्र आयो । वृपभ गऊको पाँव चलायो ॥ ताहि परीक्षित खड्ग उठाइ । वहुरो वचन कह्यो या भाइ ॥ तू को कौन देशहै तेरो । कै छल गह्यो राज्य सव मेरो ॥ या विधि नृपति परीक्षित कह्यो । पै वासों उत्तर नहिं लह्यो ॥ कह्यो वृपभ सों को दुखदाई । तासु नाम मोहिं देहु वताई ॥ इंद्र होइ ताहूको मारों । तुमरो यह संताप निवारों ॥ वृपभ कह्यो तुम ऐसेइ राव । पै मैं लेंव कौन का नाँव ॥ कोउ कह हरिइच्छा दुख होई । द्रितिया दुखदायक नहिं कोई ॥ कोउ कह कर्म दुःखके दाता । काहू दुख नहिं देत विधाता ॥ कोउ कह शत्रु होत दुखदाई । सुतौ मैं न कीनी शत्राई ॥ काके नाउँ वताऊं तोको । दुखदायक अरिष्ट सम मोको ॥ लहत आपने दुख दातार । तुमही देखो करियविचार॥तव विचारि करि राजा देख्यो॥शूद्र नृपति कलियुग करि लेख्यो॥वृपभ धर्म अरु पृथ्वी गाइ । इनको भयो इहाँ दुखदाइ ॥ ताहि कह्यो तुम वडा अधर्मी । तो समान नहिं और कुकर्मी॥क्षमा दया तप पग तैं काट्यो । छांडि देश मम यह कहि डाट्यो ॥ तिन कह्यो मोमें एक भलाई । तुमसों कहों सुनो चितलाई ॥ धर्म विचारत मनमें होई । मनसा पाप न लागत कोई । राज तुह्मारो है सव ठौर । तुम विनु नृपति न द्रितिया और॥जौन ठौर मोहिं आज्ञा होई । ताहि ठौर रैहौं मैं जोई ॥ हो हरि विमुखरु वेश्या जहां सुरापान वधिकन गृह तहां ॥ जूवा खेलत जहां जुवारी । ए पांचों हैं ठौर तुमारी ॥ पांचौ होइँ नृपति ए जहां । मोको ठौर वता वहु तहां ॥ तव नृप याको कनक वतायो । कनक मुकुट लखि सो लपटायो॥इक दिन राव अखेटै गयो । तावन माहँ पियासो भयो ॥ ऋपि समीकके आश्रम आयो । ऋपि हरिपदको ध्यान लगायो ॥ राजा जल ता ऋपि सों मांग्यो । ताको मन हरिपदसों लाग्यो ॥ राजाको उत्तर नहिं दियो । तव मनमाहिं क्रोध नृप कियो॥यह सव कलियुगको परभावाजो नृपके मन भयो कुठाव ॥ ऋपिकी कपट समाधि विचारी । दियो भुजंग मृतक गर डारी ॥ ऋपि समाधि महँ त्योंहीं रह्यो । शृंगीऋपि सों लरिकन कह्यो ॥ शृंगीऋपि तव कियो विचार । प्रजा दुःख कर नृपति गुहार ॥ नृपति दुःख कहिए किहि जाई॥दियो शाप तोहिं तक्षक खाई॥दैकरि शाप पितापै आयो॥देख्यो सर्प पितागर नायो॥रोवन लाग्यो सु मृतक जान । रुदन करत छूट्यो ऋपि ध्यान ॥ सुत सों कह्यो कहा भयो तोहिं । कहि न सुनावत निज दुख मोहिं ॥ शृंगीऋपि सव कहि समझायो । नृप

भुजंग सो ग्रीवा नायो ॥ यह अपराध वडो उन कीनो । तक्षक डसन शाप मैं दीनो ॥ ऋषि कह्यो बहुत बुरो तुम कीनो । जो यह शाप नृपतिको दीनो ॥ तुव शरापते मरि है सोई । यह अपराध मोहिं सब होई ॥ सुख सोवत राज थाके सब । दुख पैहैं सो सकल प्रजा अब ॥ ताकी रक्षा हरिजू करी । हरि अवज्ञा तुम अनुसरी ॥ इहां राजा मनमें पछताई । मैं यह कियो बडा अन्याई ॥ जाके हृदय बुद्धि यह आवै । ताको फल सो भलो न पावै ॥ ऋषि शिष्यको भेज्यो समझाई । नृप सों कह तुम ऐसे जाई ॥ ममसुत शाप दियो या भाई । सप्तम दिन तोहिं तक्षक खाई ॥ शृंगी-ऋषि यह किय विन जाने । होत कहा अवके पछताने ॥ ताते तुम उपाव सो करो । जाते भव सागरको तरो ॥ नृप सुनि लाग्यो करन विचार । सप्तम दिन मरिवो निर्धार ॥ यज्ञ दान करि सुर पुर जैये । तहां जाइके सुख बहु लहिये ॥ वहुरि कह्यो सुरपुर कछु नाहिं । पुण्य क्षीण तिहिं ठौर गिराहिं॥ताते सुत कलत्र सब त्याग । गहों एक हरिपद अनुराग ॥ वहुरि कह्यो अब हो कहा त्याग खोयो जन्म विषय सुख लाग ॥ सूर न हरि पदसों चित लायो । इत उत देखत जन्म गँवायो ॥ ॥१६२ ॥ वैराग्य उपदेश परीक्षित मन मति । राग धनाश्री ॥ इत उत देखत जन्म गयो । इस माया झूठीके कारण दुहुँ दृग अंध भयो ॥ जन्म कष्टमें पाय दुखित भये अति दुख प्राण सह्यो वेत्रिभुवनपति विसरि गए तुहि सुमिरत क्यों न रह्यो॥श्रीभागवत सुनौ नहिं श्रवणनि वीचहि भटक पयो । सूरदास कहि सब जग पूज्यौ युग युग भक्त जियो ॥ १६३ ॥ राग सारंग ॥ जन्म सिरानो अटके अटके । राज काज सुत पितुकी डोरी विन विवेक फिरचो भटके ॥ कठिन जु ग्रंथि परी मायाकी तोरी जात न झटके । ना हरिभजन ना संत समागम रह्यो वीचही लटके । ज्यों बहु कला काच दिखिरावै लोभ न छूटत नटके । सूरदास शोभा क्यों पावै पिय विहीन धन मटके ॥ ॥ १६४ ॥ जन्म सिरानो ऐसे ऐसे । कै घर घर भ्रमत यदुपति विन कै सोवत कै वैसे ॥ कै कहुं खान पान रसनादिक कै कहुँ वाद अनैसे । कै कहुं रंक कहूं ईश्वरता नट वाजीगर जैसे ॥ चेत्यो नहीं गयो टरि अवसर मीन विना जल जैसे । यह गति भई सूरकी ऐसी श्याम मिलैं धौं कैसे ॥ १६५ ॥ राग देवगंधार ॥ विरथा जन्म लियो संसार । करी न कवहूं भक्ति हरिकी मारि जननी भारि ॥ यज्ञ जप तप नाहिं कीनो अल्पमति विस्तारि॥प्रगट ब्रह्म दुरचो नहीं तू देखि नैन विसारि ॥ वल अविद्या ठग्यो सव जग जन्म जूवा हारि । सूर्य हरिको सुयश गावहु जाहि मिटि भव भार ॥ १६६ ॥ राग सोरठ ॥ काया हरिके काम न आई । भाव भक्ति जहँ हरियश सुनयो तहां जात अलसाई । लोभातुर है काम मनोरथ तहां सुनत उठि धाई । चरण कमल सुंदर जहँ हरिको क्यों हू न जात नवाई ॥ जव लगि श्याम अंग नहिं परसत आंखें जोगि रमाई । सूरदास भगवंत भजन तजि विषय परम विष खाई ॥ १६७ ॥ राग धनाश्री ॥ सबै दिन गए विषयके हेत । तीनोपन ऐसेही बीते केश भए शिर श्वेत ॥ आंखिनि अंध श्रवण नहिं सुनियत थाके चरण समेत । गंगाजल तजि पियत कूपजल हरितजि पूजत प्रेत ॥ रामनाम विन क्यों छूटोगे चंद ग्रहे ज्यों केत । सूरदास कछु खर्च न लागत रामनाम सुख लेत ॥ १६८ ॥ राग सारंग । जो तू रामनाम चित धरतौ । अवको जन्म आगलो तेरो दोऊ जन्म सुधरतौ ॥ यमको त्रास सवै मिटि जातो भक्त नाम तेरो परतौ । तंदुल घृत सँवारि श्यामको संत परोसो करतो ॥ होतो नफा साधु की संगति भूल गांठते टरतौ । सूरदास वैकुंठ पैठिमें कोउ न फेंट पकरतौ ॥ १६९ ॥ राग मलार ॥ दोमें एकोतो न भई । ना हरि भजे न गृह सुख पावै वृथा विहाइ गई ॥ ठानी हुती और कछु मन

में औरै आनि हुई। अविगतगति कछु समुझि परत नहिं जो कछु करत दई॥ सुत सनेह तिय सकल कुटुंब मिलि निशि दिन होत खई। पद नख चंद चकोर विमुख मन खात अँगार भई॥ विषय विकार दावानल उपजी मोह बयार वई। भ्रमत भ्रमत वहुते दुख पायो अजहुँ न टेव गई॥ कहा होत अवके पछताने होनी शिर वितई। सूरदाससेये न कृपानिधि जो सुख सकल मई॥ १७०॥ राग सारंग॥ एह सब मेरिये कुमति। अपनेही अभिमान दोष दुख पावत हों मैं अति॥ जैसे केहरि उझक कूपजल देखे आप मरत। कूप परयो पुनि मर्म न जान्यो भई आय सुई गत॥ जों गज फटिक शिला में देखत दशनन जाइ अरत। जो तू सूर सुखहि चाहत है तौ क्यों विषय परत॥ १७१॥ राग केदार॥ झूठहि लगि जन्म गँवायो। भूल्यो कहां स्वप्नके सुखको हरिसों चित न लगायो॥ कवहुँक बैठ्यो रहँसि रहसिकै ढोटा गोद खिलायो। कवहुँक फूलि सभामें वैठ्यो मूँछनि ताव दिवायो॥ टेढी चाल पाग शिर टेढी टेढे टेढे धायो। सूरदास प्रभु क्यों नहिं चेतत जब लगि काल न आयो॥ १७२॥ राग केदारा॥ जगमें जीवतहीको नातो। मन विछुरे तनु छार होइगो कोउ न वात पुछातो॥ मैं मेरी कवहूं नहिं कीजे कीजे पंच सुहातो। विषय असक्त रहत निशि वासर सुख सीरो दुख तातो॥ साँच झूठ करि माया जोरी आपुन रूखो खातो॥सूरदास कछु थिर नहिं रहई जो आयो सो जातो॥ १७३॥ राग धनाश्री॥ कहा लाइ तैं हरि सों तोरी। हरिसों तोरि कौनसों जोरी॥ शिरपर धरि न चलेगो कोऊ अनेक जतन करि माया जोरी। राज पाट सिंहासन वैठे नील पदम हूं सों कहै थोरी॥ मैं मेरी करि जन्म गँवावत जब लगि नहिं परत यमकी डोरी। धन जोवन अभिमान अलप जल कहैं कूर आपुनी वोरी॥ हस्ती देखि वहुत मन गर्वित ता मूरखकी मति है थोरी। सूरदास भगवंत भजन विनु चले खेलि फागुनकी होरी॥ १७४ विचारतही लागे दिन जान। सजल देह कागज ते कोमल किहि विधि राखे प्रान॥ योग न यज्ञ ध्यान नहिं सेवा संतसंग नहिं ज्ञान। जिह्वास्वाद इंद्रियन कारन आयु घटत दिन मान॥ और उपाय नहींरे वोरे सुनि तू यह दे कान। सूरदास अब होत विगूचन भजिले सारंगपान॥ १७५॥ अव मैं जानी देह बुढ़ानी। शीश पाउँ धर कह्यो न मानत तनुकी दशा सिरानी॥आन कहत आनै कहि आवत नाक नैन वहै पानी। मिटिगई चमक दमक अंग अंगकी दृष्टि अरु मति जु हिरानी॥ नारी गारी विन नहिं वोले पूत करे कलकानी। घरमें आदर कादर कोसों खीझत रैनि विहानी॥ नाहिं रही कछु सुधि तन मनकी भई है वात पुरानी। सूरदास अब होत विगूचन भजिले सारंगपानी॥ १७६॥ चित्त बुद्धिको संवाद। राग देवगंधार॥ चकई री चलि चरण सरोवर जहां न प्रेम वियोग। निशि दिन राम रामकी भक्ती भय रुज नहिं दुख सोग॥ जहां सनकसे मीन हंस शिव मुनिजननख रवि प्रभा प्रकाश। प्रफुल्लित कमल निमिष नहिं शशि डर गुंजत निगम सुवास॥ जिहि सर सुभग मुक्ति मुक्ताफल सुकृत अमृतरस पीजै। सो सर छांडि कुवुद्धि विहंगम इहां कहा रहि कीजै॥ छलमी सहित होत नित क्रीडा सोभित सूरजदास। अब न सुहात विषय रस छीलर वा समुद्र की आस॥ १७७॥ राग देवगंधार॥ चलि सखि तिहि सरोवर जाहि। जिहि सरोवर कमल कमला रवि विना विकसाहि॥ हंस उज्वल पंख निर्मल अंग मलि मलि न्हाहि। मुक्ति मुक्ता अंवुके फल तिन्हैं चुनि चुनि खाहि॥अतिहि मगन महा मधुररस रसन मध्य समाहिं। पद्म वास सुगंध शीतल लेत पाप नशाहिं॥सदा प्रफुल्लित रहै जल विनु निमिष नहिं कुम्हलाहि। देखि नीर जो छिल छिलो अति समुझि कछु मन माहिं॥ सघन

गुंजत वैठि उनपर औरैं हैं विरमाहिं । सूरक्यों नहिं चलो उडि तहां वहुरि उडिवो नाहिं ॥ १७८ ॥ राग रामकली ॥ भृंगीरी भजि चरण कमल पद जहँ नहिं निशिको त्रास । जहां विधु भानु समान प्रभानख सो वारिज सुखरास ॥ जिहिं किंजल्क भक्ति नव लक्षण काम ज्ञान रस एक । निगम सनक शुक नारद शारद मुनिजन भृंग अनेक ॥ शिव विरंचि खंजन मनरंजन ॥ छिन छिन करत प्रवेश । अखिल कोश तहां वसत सुकृतजन प्रगट श्याम दिनेश ॥ सुनि मधुकरी भरमतजि निर्भय राजिववरकी आश । सूरज प्रेमसिंधुमें प्रफुल्लित तहां चलि करे निवास ॥ १७९ ॥ मन बुद्धिको संवाद ॥ राग देवगंधार ॥ सुवा चलि ता वनको रस पीजै । जा वन राम नाम अमृतरस श्रवणपात्र भरि लीजै॥को तेरो पुत्र पिता तू काको घरनी घरको तेरो। काम कराल श्वानको भोजन तू कहै मेरो मेरो॥बड़ी वाराणसि मुक्तिक्षेत्रहै चलि तोको दिखराऊं। सूरदास साधुनकी संगति बड़ो भाग्य जो पाऊं॥१८०॥ अथ मन प्रबोध ॥ रे मन सुमरि हरि हरि हरि। शत यज्ञ नाहीं नाम सरिवर प्रीति करि करि करि॥हरिनामहरिण्याक्ष विसारयो उठयो वरि वरि वरि। प्रह्लाद हित जिन असुर मारयोताहि डरि डरि डरि॥गृध्र गणिका व्याधके अघ गये गरि गरि गरि॥चरण अंवुज वुद्धि भाजन लेहु भरि भरि भरि॥द्रौपदीकी लाज कारण दाव पारि पारि पारि॥पंडुसुतके विघ्न जेते गए टरि टरि टरि॥कर्ण दुर्योधन दुःशाशन शकुनि अरि अरि अरि। सुतहित अजामिल नाम लीनो गयो तरि तरि तरि॥चार फलके दानिहैं प्रभु रहे फरि फरि फरि। सूर श्रीगोपालके गुण हृदय धरि धरि धरि॥१८१॥ राग केदारा करि मन नंदनंदन ध्यान। सेवि चरण सरोज शीतल तजि विषय रस पान ॥ जानु जंघ त्रिभंग सुंदर कलित कंचन दंड। काछनी कटि पीत पट द्युति कमल केसर खंड ॥ जनु मराल प्रवाल छोना किंकिणी कल राव। नाभि हृदय रोमावली अलि चारु सहज सुभाव ॥ कंठ मुक्तामाल मलयज उर वनी वनमाल। सुरसरी शशि तीर मानो लता श्याम तमाल॥ वाहु पाणि सरोज पल्लव धरे मृदु मुख वेणु। अति विराजति वदन विधुपर सुरभि मंडित रेणु॥ अधर दशन कपोल नासा परमसुंदर नैन। चलत कुंडल गंड मंडल मनो निरतन मैन ॥ कुटिल कच भ्रुव तिलक रेखा शीश शिखी शिखंड। मदन धनु मनो शर संधाने देखि घनकोदंड ॥ सूर श्रीगोपाल की छवि दृष्टि भरि भरि लेही। प्राणपतिकी निरख शोभा पलक परन न देहिं ॥ १८२ ॥ भजि मन नंद नंदन चरण। परम पंकज अति मनोहर सकल सुखके करण॥ सनक शंकर ध्यान ध्यावत निगम अवरन वरन। शेष शारद ऋषिसुनारद संत चिंतत चरण॥ पद पराग प्रताप दुर्लभ माले हित करण। परशि गंगा भई पावन तिहूं पुर घर घरन ॥ चित्त चिंतन कराति कीराति अघहरत तारन तरन। गये तरि ले नाम केते पतित हरि पुर घरन॥जासु पदरज परशि गौतम नारि गति उद्धरण। तासु महिमा प्रगट केवट धोइ पग शिर धरण॥ सोइ पद मकरंद पावन अरुनहीं सर वरण। सूर भजि चरणाविंदनि मिटै जामन मरण ॥ १८३ ॥ रेमन समुझि सोच विचारि। भक्ति विनु भगवंत दुर्लभ कहत निगम पुकारि॥ ढारि पासा साधु संगति केरि रसना सारि। दांव अवके परयो पूरो कुमति पिछली हारि॥ राखि सत्रह सुनि अठारह चोर पांचो मारि। डारिदे तू तीन काने चतुर चौकनि हारि॥ काम क्रोध मद लोभ मोह्यो पग्यो नागरि नारि। सूर श्री गोविंद भजन विनु चले दोउ कर झारि॥ १८४ ॥ ॥ राग सारंग ॥हो मन रामनामको गाहक। चौरासीलख जिया योनि में भटकत फिरत अनाहक॥ भक्ति हाट वैठि तू स्थिर ह्वै हरि नग निर्मल लेहि॥काम क्रोध मद लोभ मोहतू सकल दलाली

देहि। करि हियाव सोसो जलादि यह हरिके पुर लेजाहिं। घाट वाट कहुँ अटक होइ नहिं सव कोउ देहि निवाहिं। और वनजमें नाहीं लाहा होत मूलमें हानि। सूरस्वामिको सौदो सांचो कहो हमारो मानि॥ १८५॥ राग केदारा॥ रे मन रामसों करि हेत। हरिभजन की वारि करिले उवरे तेरो खेत॥मन सुआ तनु पिंजरा तिहि माहिं राख्यो चेत। काल फिरत विलाव रतन धरि अव धरी तुम लेत॥ सकल विषय विकार तजि तू तरै सायर सेत। सूर भजि गोपाल गुणको गुरु वताए देत॥ १८६॥ राग कान्हरा॥ मन वच क्रम मन गोविंद सुधि करि। शुचि रुचि सहज समाधि साजि शठ दीनवंधु करुणामय उर धरि॥ मिथ्यावाद विवाद छांडिदे काम क्रोध मद लोभै परिहरि। चरणप्रताप आनि उर अंतर और सकल सुख या सुख तर हरि॥वेदन कह्यो स्मृतिहू भाष्यो पावन पतित नाम निज नरहरि। जाको सुयश सुनत अरु गावत पाप वृन्दजैहैं भजि भर हरि॥ परमउदार श्याम घन सुंदर सुखदायक संतन हित कर हरि। दीनदयाल गोपाल गोपपति गावत गुण आवत ढिग ढर हरि॥अति भयभीत निरख भवसागर घन ज्यों घेरि रह्यो घट घर हरि। जव यमजाल पसार परैगो हरिविनु कौन करैगो घर हरि॥अजहूं चेत मूढ चहुँ दिशते कालअग्नि उपजत झुकि झर हरि। सूर काल वलिव्याल ग्रसत है श्रीपति शरन परत क्यों न कर हरि॥१८७॥ तिहारो कृष्ण कहत कहा जात। विछुरे मिलन वहुरि कव ह्वैहै ज्यों तरुवरके पात॥ शीत पित्त कफ कंठ निराधे रसना टूटे वात। प्राण लए जन जाइ मूढ़माति देखत जितनी नात॥ छिन इक माहिं कोटि युग वीतत नरकी केतक वात। इह जग प्रीति सुवा सेमर ज्यों चाखत ही उड़जात॥ जवलगि यमको फंद परयो नहिं चरणन चित्त लगात॥कहत सूर वृथा यह देही इतो कहा इतरात॥१८८॥ दिन दश लेहु गोविंद गाइ। छिन न चेतत चरण अंवुज वाद जीवन जाइ॥दूरि जवलों जरा रोगरु चलत इंद्री भाइ। आपुनो कल्याण करिलै मानुपीतनु पाइ। रूप यौवन सकल मिथ्या देखि जिन गरवाइ। ऐसेही अभिमान आलस काल ग्रसिहै आइ॥ कूप खनि कत जाइरे नर जरत भवन वुझाइ। सूर हरिको भजन करिलै जन्म मरण नशाइ॥ १८९॥ ॥राग धनाश्री॥मन तोसों केतिकही समुझाई। नंदनंदनके चरण कमल भजि तजि पखंड चतुराई॥ सुख संपति दारा सुत हय गय हठे सवै समुदाइ। क्षणभंगुर ए सवै श्याम विनु अंत नाहिं सँग जाइ॥ जन्मत मरत वहुत युगवीते अजहूं लाज न आई। सूरदास भगवंत भजन विनु जैहै जन्म गँवाई॥ ॥ १९०॥ राग मलार॥ अव मन मगन हो राम दुहाई। मन वच क्रम हरिनाम हृदय धरि जो गुरु वेद वताई। महाकष्ट दशमास गर्भवसि अधोमुख शीश रहाई। इतनी कठिन सही तू निकस्यो अजहूं न तू समुझाई॥ मिटि गए राग द्वेष सव तिहिके जिन हरि प्रीति लगाई। सूरदास प्रभु नामकी महिमा पतित परमगति पाई॥ १९१॥ राग आसावरी॥ वौरे मन रहन अटल कर जाना। धन दारा सुत वंधु कुटुंव कुल निरखि निरखि वौराना॥जीवन जन्म अलप सपनोसो समुझि देखि मन माहीं। वादर छांह धूम धौराहर जैसे थिर न रहाही। जव लगि डोलत वोलत चितवत धन दारा हैं तेरो॥निकसत हंस प्रेत कहि भजिहैं कोउ न आवै नेरो॥मूरख मुग्ध अज्ञान मूढ़-मति नाहीं कोऊ तेरो॥जो कोऊ तेरो हितकारी सो कहे कढू सवेरो॥घरी एक सज्जन कुटुंव मिलि वैठे रुदन कराही। जैसे काग कागको मूये कांकां कहि उड़ि जाहीं॥ कृमि पावक तेरो तन भक्षिहैं समुझि देखि मन माहीं। दीनदयालु सूर हरि भजिले यह औसर फिरि नाहीं॥ १९२॥ ॥ राग गौरी॥ तेदिन विसरि गये इहां आये। अति उन्मत्त मोह मद छाक्यो फिरत केश वगराए। जिन दिवसनिते जननि जठरमे रहत वहुत दुख पाए। अति संकटमें भरत भटालौं मलमें मूड़

गड़ाए। बुध विवेक बल हीन छीन तन सबही हांथ पराए। तिहि न करत चित अधम अजहुँलौं जीवत जाके ज्याए॥कहिधों साथ कौन है तेरे खान पान पहुँचाए।सूर सुमृग ज्योंवाण सहत नित विषय व्याधके गाए॥१९३॥राग धनाश्री॥रे मन निपट निलज्ज अनीति। जियतकी कहिको चलावै मरत विषया प्रीति॥श्वान कुब्ज कुपंगु कानो श्रवण पुच्छवा हीन।भगन भाजन कंठ कृमि शिर कामिनी आधीन॥निकट आयुध धरे वंधक करत तीक्षण धार।अजानापकमग्न क्रीड़त चढ़त वारंवार॥ देह छिन छिन होत छीनी दृष्टि देखत लोग।सूर स्वामीसों विमुख ए सती केसे भोग॥१९४॥राग गौरी॥ वौरे मन समुझि समुझि कछु चेत।इतनो जन्म अकारथ खोयो श्याम चिकुर भए श्वेत॥तबलगि सेवाकर निश्चय करि जब लगि हरवा खेत।सूरदास भरम जिन भूलो करि विधनासे हेत॥१९५॥ राग धनाश्री॥ रे शठ विन गोविंद सुख नाहीं।तेरो दुःख दूर करिवेको ऋद्धि सिद्धि फरि जाहीं॥ शिव विरंचि सनकादिक मुनिजन उनकी गति अवगाहीं। जगत्पिता जगदीश शरण विनु सुख तीनोंपुर नाहीं॥ और सकल मैं देखे झूठे वादरकीसी छाहीं। सूरदास भगवंत भजन विनु दुख कवहूं नहिं जाहीं॥१९६॥राग कान्हरा॥ मन तोसों कोटिकवार कही। समुझ न चरण गहत गोविंदके उर अघ शूल सही॥ सुमिरन ध्यान कथा हरि जूकी यह एको न भई। लोभी लंपट विषयनसों हित यह तेरी निवही॥ छांडि कनकमणि रत्न अमोलक कांचकी किरच गही। ऐसी तू है चतुर विवेकी पय तजि पियत मही॥ ब्रह्मादिक रुद्रादिक रवि शशि देखे सुर सवही। सूरदास भगवंत भजन विनु सुख तिहुँ लोक नहीं॥१९७॥राग परज॥ मनारे माधव सों कर प्रीति। काम क्रोध मद लोभ मोह तू छांड़ि सबै विपरीति॥ भौंरा भोगी वन भ्रमै, मोद न मानै ताप। सब कुसुमिनि मिलि रस करै, कमल बँधावे आप॥ सुनि परमित पिय प्रेमकी, चातक चितवत पारि। घन आशा सब दुःख सहै, अंत न याचै वारि॥ देखो करनी कमलकी, कीनो जलसों हेत। प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो सूख्यो, सरहि समेत॥ दीपक पीर न जानई, पावक परत पतंग। तनुतो तिहि ज्वाला जरचो चित न भयो रस भंग॥मीन वियोग न सहिसकै; नीर न पूंछे वात। देखि जु तू ताकी गतिहि, रति न घटै तन जात॥प्रीति परेवाकी गनो चाहन चढत अकाश। तहँ चढ़ि तीय जु देखिये; परत छांड़ उरश्वास॥ सुमर सनेह कुरंगकी पवन न राच्यो राग। धरि न सकत पग पछमनो, सरसन सुख उर लाग॥ देखि जरनि जड़ नारिकी, जरत प्रेतके संग। चिता न चित फीको भयो, रची जु पियके रंग॥ लोक वेद वरजत सवै नयनन देखत त्रास।चोर न जिय चोरी तजै, सरवस सहै विनास॥सव रसकोरस प्रेमहै, विषयी खेलै सार। तन मन धन यौवन खिसै, तऊ न मानै हार॥ तैं जु रत्न पायो भलो, जान्यो साधु समाज॥ प्रेम कथा अनुदिन सुनी, तऊ न उपजी लाज॥सदा संघाती आपनो, जियको जीवन प्रान। सो तू विसरचो सहजही, हरि ईश्वर भगवान॥ वेद पुराण स्मृति सवै, सुर नर सेवत जाहि। महामूढ अज्ञानमति, क्यों न सँभारत ताहि॥खग मृग मीन पतंग लौं, मैं शोधे सब ठौर।जल थल जीव जिते तिते, कहौं कहां लगि और॥ प्रभु पूरण पावन सखा, प्राणनहूंको नाथ। प्राण दयालु कृपालु प्रभु जीवन जाके हाथ॥ गर्भवास अति त्रासमें, जहां न एको अंग। सुनि शठ तेरो प्राणपति, तहां न छांड्यो संग॥ दिना राति पोषत रहै, ज्यों तंबोली पान।वा दुखते तोहिं काढकै, लै दीनो पयपान॥ जिन जड़ते चेतन कियो, रचि गुण तत्त्व विधान। चरण चिकुर कर नख दिए, नैन नासिका कान॥अशन वसन बहु विध दिये,औसर औसर आनि।मात पिता भय्या मिलै,नई रुचइ पहिचानि॥

सजन कुटुंब परिजन बढ़े, सुत दारा धन धाम। महामूढ़ विषयी भयो, चित आकर्ष्यों काम ॥ खान पान परिधान रस, यौवन गयो वितीत। ज्यों मिट परि परतीय वश, भोर भये भय भीत ॥ जैसे सुखही मन बढ्यो, तैसे बढ्यो अनंग। धूम बढ्यो लोचन खस्यो, सखा न सूझ्योसंग ॥ जम जान्यो सब जग सुन्यो, बाढ़्यो अयश अपार। बीच न काहू तब कियो, जब दूतनि काढ़्यो बार॥ कह जानो कहँया मुवो, ऐसे कुमति कुमीच। हरिसों हेतु बिसारिके, सुख चाहत है नीच ॥ जो पै जिय लज्जा नहीं, कहा कहों सौवार। एकहु अंक न हरि भजे, रेशठ सूर गँवार ॥ १९८ ॥ राग कल्याण॥ धोखेही धोखे डहकायो। समुझि न परी विषयरस गीध्यो हरिहीरा घर मांह गँवायो ॥ ज्यों कुरंग जल देखि अवनिको प्यास न गई चहूं दिशि धायो। जन्म जन्म बहु कर्म कियेहैं तिनमें आपुन आपु बँधायो ॥ ज्यों शुक सेमर सेव आश लगि निशि वासर हठ चित्त लगायो। रीतो परयो जबै फल चाख्यो उड़ि गयो तूल तावरो आयो ॥ ज्यों कपि डोरी बांध बाजिगर कन कनको चौहटे नचायो। सूरदास भगवंत भजन बिनु काल व्यालले आप डसायो ॥ १९९॥ राग धनाश्री ॥ जन्म गँवायो ऊआबाई ॥ भजे न चरण कमल यदुपतिके रह्यो बिलोकत छाई ॥ धन जोवन मद ऐंड़ो ऐंड़ो ताकत नारि पराई। लालच लुब्ध श्वान जूठनि ज्यों सोऊ हाथ न आई ॥ रंच कांच सुख लागि मूढ़मति कंचन राशि गँवाई ॥ सूरदास प्रभु छांड़ि सुधारस विषय परम विष खाई ॥ २०० ॥ भक्ति कब करिहो जन्म सिरानो। बालापनमें खेलत खोयो तरुणापै गरबानो ॥ बहुत प्रपंच करे मायाको तऊ न पेट अघानो। जतन जतन करि माया जोरै लेगये रंक न रानो ॥ सुत वित वनिता मोह लगायो झूठे भरम भुलानो। लोभ मोहमें चेत्यो नाहीं सुपने ज्यों डहकानो ॥ वृद्ध भये कफ कंठ निरोध्यो शिर धुनि धुनि पछतानो। सूरदास भगवंत भजन बिनु यमके हाथ बिकानो ॥२०१॥ मन रामनाम सुमिरन बिनु बाद जनम खोयो। रंचक सुख कारणते अंतकाल बिगोयो॥साधुसंगति भक्ति बिना तन अकारथ जाई। ज्ञानी ज्यों हाथ झारि चले छूटकाई॥ सुत दारा देह गेह संपति सुखदाई। इनमें कछु नाहिं तेरी काल अवधि आई॥ काम क्रोध लोभ मोह मनमें तू जोयो॥गोविंद गुण चित बिसारि कौन नींद सोयो॥सूर कहै शुचि विचारि भ्रम भूल्यो अंधा। राम नामले तजिकरि और सकल धंधा॥२०२॥राग कल्याण॥भक्ति बिनु बैल बिराने ह्वैहो। पाँउ चारि शिर शृंग गुंग मुख तब कैसे गुण गैहो॥चारि पहरदिन चरत फिरत वन तऊ न पेट अघैहो॥ टूटे कंध सुफूटी नाकनि कोलों धौं भुस खैहो ॥ लादत जोतत लकुट बाजिहै तब कहँ मूंड दुरैहो॥ शीत घाम घन विपति बहुत विधि भार तरे मरिजैहो ॥ हरि संतनको कह्यो न मानत कियो आपुनो पैहो। सूरदास भगवंत भजन बिनु मिथ्या जन्म गँवैहो ॥ २०३ ॥ राग सारंग। छाँड़ि मन हरि बिमुखनको संग। जिनके संग कुबुद्धि उपजतिहै परत भजनमें भंग ॥ कहा होत पयपान कराये विष नाहिं तजत भुजंग। कागहि कहा कपूर चुगायो श्वान न्हवाये गंग ॥ खरको कहा अरगजालेपन मर्कट भूषण अंग। गजको कहा न्हवाये सरिता बहुरि धरै खहि छंग॥ पाहन पतित बांस नहिं बेधत रीतो करत निखंग। सूरदास खल कारी कामरि चढ़त न दूजो रंग॥२०४॥ राग सोरठ ॥ रेमन जन्म अकारथ खोइस। हरिकी भक्ति कबहुं नहिं कीनी उदर भरयो पर सोइस॥ निशि दिन रहत फिरत मुँह बांधे अहंकार करि जन्म बिगोइस। गोड़ पसार परयो दोउ-निके अबके कीये कहा होइस ॥ काल यमनिसों आनि बनैहै देखि देखि मुख रोइस। सूरश्यामबिनु कौन छुड़ावै चले जाहु भाइ पोइस ॥ २०५ ॥ तबते गोविंद क्यों न सँभारे।

भूमि परेते सोवन लाग्यो महाकठिन दुखभारे ॥ अपने पिंड पोषिवे कारण कोटि सहस जिय मारे। इन पापिनते क्योंहुन उवरोगे दामनगीर तिहारे॥ आप लोभ लालच के कारण कहूं न पाप तिहारे। सूरदास यम कंठ गहेते निकसत प्राण दुखारे ॥ २०६ ॥ राग धनाश्री ॥ रेमन मूरख जन्म गँवायो। करि अभिमान विषयरसगीध्यो श्याम शरण नहिं आयो॥ यह संसार सुवा सेंवर ज्यों सुंदर देखि लुयो। चाखन लाग्यो रुई उड़ि गई हाथ कछू नहिं आयो॥ कहा होत अवके पछताये पहिले पाप कमायो। कहत सूर भगवंत भजन विनु शिर ध्वनि ध्वनि पछतायो॥२०७॥ राग मारू ॥ औसर हारचो रे तैं हारचो। मानुपजन्म पाइ नर वौरे हरिकोभजन विसारचो॥ रुधिर वुंदते साजि कियो तन सुंदर रूप सँवारचो। जठर अग्नि अंतर ऊरधमुख जिन दश मास उवारचो॥ जवते जन्म लियो जगभीतर तवते प्रभु प्रतिपारचो। अंध अचेत मूढ मतवारे सो प्रभु क्यों न सँभारचो॥ पहिरि पितंवर करि आडंवर यह तनु ठाठ शृंगारचो। काम क्रोध मद लोभ त्रियारति वहु विधि काज विगारचो॥ मरन विसारि जीवन स्थिर जान्यो वहु उद्यम जिय धारचो। सुत दाराको मोह अचय विष हरि अमृतफल डारचो॥ झूंठ सांच करि माया जोरी रचि पचि भवन उसारचो। कालअवधि पूरण भई जादिन तिनहूं त्यागि सिधारचो॥ प्रेत प्रेत तेरो नाम परचो जव जेवरि बांधि निकारचो। जा सुतके हित विमुख गोविन्दते प्रथमहि तिन मुख जारचो॥ भाई वंधु कुटुंव सहोदर सव मिलि यहै विचारचो। जैसे कर्म लहो फल तैसे तिनुका तोरि उचारचो॥ सतगुरुको उपदेश हृदय धारि जिन भ्रम सकल निवारचो। हरिभज विलम्व छांड़ि सूरज प्रभु ऊंचे टेरि पुकारचो॥२०८॥ राग विलावल ॥ या विधि राजा करि विचार। राज साज सवहीको डार। जीरणपट कुपीन तनु धारि। चल्यो सुरसरी तीर उधारि ॥ पुत्र कलत्र देखि सव रोवे। राजा तिनके ओर न जोवे॥ राजा चलत चले सव लोग। दुखित भये सव नृपति वियोग॥ नृपति सुरसरीके तट आये। कियो स्नान मृत्तिका लगाये॥ करि संकल्प अन्न जल त्याग्यो। केवल हरिपदसों अनुराग्यो॥ अत्रि वसिष्ठादिक तहँ आये। नारदादि मुनि वहुरि सिधाये॥ धन्यभाग्य तुम दर्शन पायो। मम उधार कारण तुम आयो॥ तुम देखत हरि सुमिरन होई। और प्रसंग चले नाहिं कोई॥ आज्ञा होइ करौं अव सोई। जाते मेरि शुद्धगति होई॥ कोउ कह तीरथ सेवन करो कोउ कह दान यज्ञ विस्तरो॥ काहू कहै मंत्र जप करना। काहू कछु काहू कछु वरना॥ राजा कह्यो सप्त दिन माहीं। छुति इहिको मोहिं सूझत नाहीं ॥ इहि अंतर शुकदेव तहां आये। राजा देखि तुरत उठि धाये॥ करि दंडवत कुशासन दीनो। पुनि सन्मान ऋषिन सव कीनो॥ शुक को रूप कह्यो नहिं जाई। शुक हिय रह्यो कृष्णरस छाई॥ शुककी महिमा शुकही जाने। सूरदास कहि कहा वखानै॥ २०९ ॥ हरिके जनकी अति ठकुराई। महाराज ऋषिराज राजहूं देखत रहे लजाई॥ निर्णय देश राज्य करि ताको लोगन मन उत्साह। काम क्रोध मद लोभ मोह ए भये चोरते साह ॥ दृढ विश्वास कियो सिंहासन तापर वैठे भूप। हरियशविमलछत्र शिर ऊपर राजत प्रेम अनूप ॥ हरिपदपंकज पियो प्रेमरस ताहीके रँगरातो। मंत्री ज्ञान न औसर पावे कहत वातसकुचातो॥ अर्थ काम दोऊ रहैं द्वारे धर्म मोक्ष शिर नावे। वैठि विवेक विचित्रपौरिया समय न कवहूंपावै॥ अष्ट महासिधि द्वारे ठाढीं करजोरे डरलीने। छरीदार वैराग्य विनोदी हिरकि वाहरे कीने॥ माया काल कछू नहिं व्यापै यह रस रीति जु जानी। सूरदास यह सकल समग्री गुरुप्रतापै पहिचानी ॥ २०७ ॥ शुक नृप ओर कृपा करि देख्यो। धन्य भाग्य तिन अपनो

लेख्यो। विनती करी चरण शिरनाई। सप्त दिवस सभ मेरी आई॥ तऊ कुटुंबको मोह न जात। पुनि धनलोभ आइ लपटात॥जानि बूझि मैं होत अजान। उपजत नाहीं मनमों ज्ञान। अरु तनु छूटत वहु दुख होई॥ताते सोच रहे नहि कोई॥विना त्वचा सुमिरन क्यों होई॥आज्ञा होइ करों अव सोई॥शुक कह्यो तन धन कुटुंब विहाई। हरिपद भजौ न और उपाई। आयु भग्नघट जलसी छीजै॥अह निश हरि हरि सुमिरन कीजै॥ नृप पट्वांग पूर्व इक भयो। सुतौ द्वैघरीमें तरिगयो॥तेरी सप्त दिवसहै आई। कहौं भागवत सुनचितलाई॥ सुनि हरि कथा धरौ हरि ध्यान। जग सब जानो स्वप्न समान॥ या विधि जो हरिपद उर धरिहौ। निस्संदेह सूर तव तरिहौ॥ २११ ॥ हरि यश कथा सुनौ चित लाई। जों पट्वांग तर्यो गुण गाई॥ नृप पट्वांग भयो भुव माहीं। ताके सम द्वितिया जग नाहीं॥ इक दिन इन्द्र तासु घर आयो। राजा उठिकरि शीश नवायो॥ धन मम गृह धन भाग्य हमारो। जो तुम चरण कृपा करि धारो॥ अब मोको जो आज्ञा होई। आयसुमान करौं सब सोई इन्द्र कह्यो मम करो सहाई। असुरनसों भइ मोहिं लराई॥ इन्द्रपुरी पट्वांग सिधाये। नाम सुनत सो सकल पराये। सुरपतिसों नृप आज्ञा मांगी। उन कह्यो लेहु कछू वर मांगी॥ नृपति कह्यो कहो मेरी आय। वर लेहौं पुनिं शीश चढ़ाय॥ दोइ मुहूरति आयु बताई। नृप बोल्यो तब शीश नवाई॥तुरंत देहु मोहि घर पहुँचाय। तरों जाइ तहँ हरिगुण गाय॥ एक मुहूरतमें फिरि आयो। एक मुहूरत हरिगुण गायो॥हरि गुण गाय परमपद लह्यो॥सूर नृपति सुनि धीरज गह्यो॥२१२॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवर श्रीसूरदास कृते प्रथमः स्कंधः समाप्तः॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर.

द्वितीयस्कंध।

राग बिलावल। हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरिचरणारविंद उर धरौ॥ शुकदेव हरिचरणन चित लाई। राजा सों बोल्यो या भाई॥तुम कह्यो सप्तदिवस मम आय। कहो हरिकथा सुनौ चितलाय॥ चिंता छांडि भजो यदुराई। सूर तरो हरिके गुण गाई॥ १॥ राग सारंग॥ जो सुख होत गोपालहि गाये। सो नहिं होत जप तपके कीने कोटिक तीरथ न्हाये॥ दिये लेत नहिं चारिपदारथ चरण कमल चित लाये। तीनि लोक तृण सम करि लेखत नंदनँदन उर आये॥ वंशीवट वृन्दावन यमुना तजि वैकुंठको जाये। सूरदास हरिको सुमिरन करि बहुरि न भव चलि आये॥ २॥ राग केदारा॥ सोइ रसना जो हरिगुण गावै। नैननिकी छवि यहै चतुरता ज्यों मकरन्द मुकुन्दहि धावै॥ निर्मल चित तौ सोई सांचो कृष्ण विना जिय और न भावै। श्रवणनिकी जु यहै अधिकाई सुनि रसकथा सुधारस प्यावै॥ करतेई जो श्यामहि सेवै चरणनि चलि वृन्दावन जावै। सूरदास जैये बलि ताके जो हरिजूसे प्रीति बढ़ावै॥ ३॥ राग सारंग॥ जबते रसना राम कह्यो। मानो धर्म साधि सब बैठ्यो पढिवेमें धौं कहा रह्यो॥ प्रगट प्रताप ज्ञान गुरु गमते दधिमथि घृतलै तज्यो मह्यो। सारको सार सकल सुखको सुख हनूमान शिव जानि कह्यो॥ नाम प्रतीत भई जा जनकी लै आनन्द दुःख दूरि दह्यो। सूरदास धन धन वे प्राणी जो हरिको व्रतलै निवह्यो॥४॥ अनन्यभक्तिमहिमा। राग सारंग॥ गोविंद सों पति पाइ कहा मन अनत लगावै। गोपाल भजन विनु सुख नहीं जो चहुँ दिश धावै॥ पतिको व्रत जो धरै त्रिया सो सोभा पावै। आन पुरुषको नाम लेत तिय पतिहि लजावै॥गणिकाते उपजै सुपूत कौनको कहावै। बसत सुरसरीतीर मंदमति कूप खनावै॥जैसे श्वान कुलालके पाछे उठि धावै। आन देव हरि तजि भजै सो जन्म गँवावै॥ फलकी आशा चित्त धारि जो वृक्ष बढावै। महामूढ सो मूल तजि शाखा जल नावै॥ सहज भजै नंदलालको सो सब शुचि पावै। सूरदास हरिनाम लिये दुख निकट न आवै॥ ५॥ राग कान्हरा॥ जाको मन लाग्यो नँदलालहिं ताहि और नहिं भावै हो। ज्यों गूंगो गुरखाइ अधिकरस सुख सवाद न बतावै हो॥ जैसे सरिता मिलै सिंधुको बहुरि प्रवाह न आवै हो। ऐसे सूर कमल लोचनते चित नहिं अनत डुलावै हो॥ ६॥ राग बिहाग॥ जो मन कबहुँक हरिको जांचै। आन प्रसंग-उपासना छांडै मन वच क्रम अपने उर सांचै॥निशि दिन श्याम सुमिरि यश गावै कल्पन मेटि प्रेमरस पाचै। यह व्रत धरै लोकमें विचरै सम करि गनै महामणि कांचै॥ शीत उष्ण सुख दुःख नहिं मानै हानि भये कछु सोच न राचै। जाइ समाइ सूर वा निधिमें बहुरि न उलटि जगतमें नाचै॥७॥ राग सारंग॥ कह्यो

शुक श्रीभागवत विचारि।हरिकी भक्ति विरद है युग युग आनधर्म दिनचारि ॥ चिंता तजौ परीक्षित राजा सुन सुखसाखि हमारि । कमल नयनकी लीला गावत कटत अनेक विकारि ॥ सतयुग सत-त्रेता तप कीनो द्वापर पूजा चारि । सूर भजन कलि केवल कीजै लज्जा कानि निवारि ॥ ८ ॥ रागविलावल॥गोविन्द भजन करो इहि वारा।शंकर पार्वती उपदेशत तारक मंत्र लिख्यो श्रुति द्वारा॥ अश्वमेध यज्ञ जो कीजै गया वनारस अरु केदारा।रामनाम सरि तऊन पूजै जो तनु गारो जाइ हिवारा॥ सहसवार जो वेनी परसौ चन्द्रायण सौंवारा।सूरदास भगवंत भजन विनु यमके दूत खरेहैं द्वारा॥९॥ ॥ राग केदारा ॥ है हरि नामको आधार । और इहि कलिकाल नाहीं रह्यो विधि व्यवहार ॥ नारदादि शुकादि मुनि मिलि कियो वहुत विचार । सकल श्रुति दधि मथित काढ्यो इतोई घृतसार ॥ दशो दिशते कर्म रोक्यो मीनको ज्यों जार । सूर हरिको सुयश गावत जाहि मिटे भव भार ॥ १० ॥ ॥ अथ नाममहिमा ॥राग विलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरो सब कोई । हरि हरि सुमिरत सब सुख होई ॥ हरि समान द्वितिया नहिं कोई।हरि चरणनि राखो चित गोई॥श्रुति स्मृति सब देखो जोई । हरि सुमि-रत होई सो होई ॥ हरि हरि हरि सुमिरो सब कोई । विन हरि सुमिरन मुक्ति न होई॥कोटि उपाय करै जो कोई । हरि हरि हरि सुमिरो सब कोई ॥ शत्रु मित्र हरि गिनत न दोई । जो सुमिरे ताकी गति होई ॥ हरि हरि हरि सुमिरो सबकोई । हरिके गुण गावत सबकोई ॥ राव रंक हरि गिनत न दोई । जो गावै ताकी गति होई ॥ हरि हरि हरि सुमिरचो जिन जहां । हरि तिहिं दरशन दीनो तहां ॥ हरि विनु सुख नहिं इहां न वहां । हरि हरि हरि सुमिरो जहां तहां । हरि हरि हरि सुमिरो दिनरात । नातर जन्म अकारथ जात । सौ वातनिकी एकौ वात ॥ सूर सुमिरि हरि हरि दिन रात ॥ ११ ॥ जन्म जन्म जव जव जिहिं जिहिं युग जहां जहां जन जाइ । तहां तहां हरि चरण कमल रति जो दृढ़ होइ रहाइ॥श्रवण सुयश सारंग नाद विधि चातक विधि मुख नाम । नैन चकोर संत संतति शशि करि अर्चन अभिराम ॥ सुमति स्वरूप सचे सर घालो उर अंबुज अनुराग । नित प्रति अलि जिम गुंज मनोहर आवत प्रेम पराग ॥ औरौ सकल सुकृत श्रीपति हित तन मन रहत सुप्रीति । नाक निरै सुख दुख न सूरप्रभु जिहिके भजन प्रतीति ॥ ॥ १२ ॥ अथ हरिविमुख निंदा ॥ राग सारंग ॥ अचंभो इन लोगनिको आवै।छांड़े स्वान अमीरस फलको माया विपफल भावै ॥ निंदत मूढ़ मलय चंदनको राख अंग लपटावै । मान सरोवर छांड़ि हंस तट काग सरोवर न्हावै ॥ पगतर जरत न जानै मूरख घर तजि घूर बुझावै । चौरासीलख योनि स्वांग धरि भ्रमि भ्रमि यमहिं हँसावै ॥ मृग तृष्णा आचार युक्त जल तासँग मन ललचावै । कहत जु सूरदास संतनि मिल हरियश काहे न गावै ॥ १३ ॥ भजन विनु कूकर शूकर जैसो । जैसे घर विलाव के मूसा रहत विषय वश तैसो ॥ वकी वकुला अरु गीध गीधनी आइ जन्म लियो वैसो । उनहूंके यह सुत दाराहैं इन्हें भेद कहो कैसो ॥ जीव मारिके उदर भरतहै तिनके लेखे ऐसो।सूरदास भगवंत भजन विनु ज्योंव ऊंट खर जैसो ॥१४॥ भजन विनु जीवत जैसे प्रेत । मलिन मंदमति डोलत घर घर उदर भरनके हेत ॥ मुख कटु वचन नित्त प्रति निन्दा सगुन सुयश सुखलेत । कवहूं पाप करै पावत धन गांठि धूत तहां देत ॥ गुरु ब्राह्मण संतजन सज्जन जात न कवहुँ निकेत । सेवा नहिं भगवंत चरणकी भवन नीलको खेत ॥ कथा नहीं गुणगीत सुयश हरि साधत देव अचेत । ताकी कहा कहों सुनि सूरज वूड़त कुटुंब समेत ॥ १५॥ जिहितनु हरि भजवो न कियो । सोतनु शूकर श्वान मीन ज्यों इहि सुख कहा जियो ॥जो जगदीश

ईश सवहूंको ताहि न चित्त दियो। प्रगट जानि यदुनाथ विसारै आशामद जु पियो॥ चारि पदारथको प्रभुदाता तिनै न मिलौ हियो। सूरदास रसना वश अपने टेरि न नाम लियो॥ १६॥ ॥ अथ सत्संग महिमा॥ राग केदारा॥ जादिन संत पाहुने आवत। तीरथ कोटि स्नान करैं फल जैसो दरशन पावत॥ नेह नयो दिन दिन प्रति उनको चरण कमल चित्त लावत। मन वच क्रम और न नहिं जानत सुमिरत औ सुमिरावत॥मिथ्यावाद उपाधि रहित ह्वै विमल विमल यश गावत। बंधन कर्म कठिन जे पहिले सोऊ काटि वहावत॥ संगति रहै साधुकी अनुदिन भव दुख दूरि नशावत। सूरदास या जन्म मरण ते तुरत परमगति पावत॥ १७॥ अथ भक्ति साधन। राग धनाश्री॥ हरि रसतो कवहूं जाइ लहियै। गये सोच आये नहिं आनँद ऐसो मारग गहियै॥ कोमल वचन दीनता सवसों सदा अनंदित रहियै। वाद विवाद हर्ष आतुरता इतो दंड जिय सहियै॥ ऐसी जो आवै या मनमें यह सुख कहँ लौं कहिये। अष्ट सिद्धि नव निद्धि सूरप्रभु पहुँचे जो कछु चहियै॥ १८॥ राग धनाश्री॥ जोलौं मन कासना न छूटै। तौ कहा योग यज्ञ व्रत कीने विनु कन तुस को कूटै॥ कहा स्नान किये तीरथके अंगभस्म जट जूटै। कहा पुराणन पढे जु अठारह ऊर्ध्व धूमके घूटै॥ जग सोनाकी सकल वड़ाई इहिते कछू न खूटै। करनी और कहै कछु औरै मन दशहू दिश लूटै॥ काम क्रोध मद लोभ शत्रु हैं जो इतनो सुनि छूटै। सूरदास तवहीं तम नाशै ज्ञान अग्नि झर फूटै॥ १९॥ राग विलावल॥ भक्तिपंथको जो अनुसरै। सुत कलत्र सो हित परिहरै॥ अशन वसन की चित्त न करै। विश्वंभर सम जगको भरै॥ पंगु जाके द्वारे पर होई। ताको पोषत अह निशि सोई॥ जो प्रभुके शरणागत आवै। ताको प्रभु क्यों करि विसरावै॥ मात उदरमें रस पहुँचावत। वहुरि रुधिरते क्षीर वनावत॥ अशन काज प्रभु वनफल करै। तृषा हेतु जल झरना झरै॥ पात्र स्थान हाथ हरि दीने। वसन काज वल्कल प्रभु कीने॥ शय्या पृथ्वी करि विस्तार। गृह गिरि कंदर करे अपार॥ ताते चिंता सकल तयाग। सूरश्याम पदकरि अनुराग॥ २०॥ भक्तिपंथको जो अनुसरै। सो अष्टांग योगको करै॥ यम नियमासन प्राणायाम॥ करि अभ्यास होइ निष्काम॥ प्रत्याहार धारना ध्यान। करै जु छांड़ि वासना आन। कर्म क्रम करि करै समाधि। सूरश्याम भजि मिटै उपाधि॥ २१॥ राग धनाश्री॥ सवै दिन एकैसे नहिं जात। सुमिरत ध्यान कियो करि हरिको जवलगि तन कुशलात॥ कवहूं कमला चपला पाइके टेढ़े टेढ़े जात। कवहुँक मग मग धूरि टटोरत भोजन को विलखात॥ या देहीके गर्व वावरो तदपि फिरत इतरात।वाद विवाद सवै दिन वीते खेलत ही अरु खात॥हौं वड हौं वड वहुत कहावत सूधे कहत न वात। योग न युक्ति ध्यान नहिं पूजा वृद्ध भये अकुलात॥ वालापन खेलतही खोयो तरुणापन अलसात। सूरदास औसरके वीते रहिहो पुनि पछतात॥ २२॥ राग सारंग॥ गर्व गोविंदहि भावत नाहिं। कैसी करी हिरण्यकशिपुसों प्रगट होइ छिन माहिं॥ जग जानी करतूत कंसकी नरकासुर मारयो पलमाहिं। ब्रह्मा इंद्रादिक पछताने गर्व धारि मन माहिं॥ यौवन रूप राज धन धरती जान जलदकी छाहिं। सूरदास हरि भजो गर्व तजि विमुख अगतिको जाहिं॥ २३ राग कान्हरा॥ विषया जात हरष्यो गात। ऐसे अंध जानितैं मूरख जे परत्रिय लपटात॥ वरजिरहे सब कहे न मानत करि करि जतन उड़ात। परे अचानक त्यों रसलंपट तनु तजि यमपुर जात॥ यहतो सुनी व्यासके मुखतें परदारा दुखदात॥ रुधिर मेद मल मूत्र कठिन कुच उदर गंध गंधात। तन धन यौवन ताहित खोवत नरककी पाछे वात॥ जो नर भले चहत तो सो तजि

सूर प्रभू गुण गात ॥ २४ ॥ अथ आत्मज्ञान ॥ राग नट ॥ जौलौं सतस्वरूप नहिं सूझत । तौलौं मृगमद नाभि विसारे फिरत सकल वन बूझत॥अपनो ही मुख मलिन मंदमति देखत दर्पण माहिं । ता कालिमा मेटवे कारण पचत पखारत छाहिं ॥ तेल तूल पावक पुट भरि धरि बनै न विना प्रकाशत । कहत वनाइ दीपकी वतियां कैसे धौं तम नाशत ॥ सूरदास यह गति आये विनु सव दिन गने अलेखे । कहा जाने दिनकरकी महिमा अंध नयन विनु देखे ॥ २५ ॥ अपुनपो आपुनही विसरयो।जैसे श्वान कांच मंदिरमें भ्रमि भ्रमि भूसि मरयो॥हरि सौरभ मृग नाभि वसतहै द्रुम तृण सूंघि मरयो । ज्यों सपने में रंक भूप भयो तस करि अरि पकरयो॥ज्यों केहरि प्रतिविंव देखिके आपुन कूप परयो । ऐसे गज लखि स्फटिक शिला में दशननि जाइ अरयो ॥ मर्कट मुट्ठि छांड़ि नहिं दीनी घर घर द्वार फिरयो ॥ सूरदास नलनीको सुवटा कहि कौने जकरयो ॥ २६ ॥ अथ विराट् रूप वर्णन ॥ राग केदारा ॥ नैननि निरखि श्यामस्वरूप । रह्यो घट घट व्यापि सोई ज्योतिरूप अनूप । चरण सप्त पाताल जाके शीश है आकाश । सूर चंद्र नक्षत्र पावक सर्व तासु प्रकाश ॥ २७ ॥ अथ आरती । हरिजूकी आरती वनी । अति विचित्र रचना रचि राखी परति न गिरा गनी ॥ कच्छप अध आसन अनूप अति डांडी शेषफनी । मही सराव सप्तसागर घृत वाती शैल घनी॥रवि शशि ज्योति जगत परिपूरण हरत तिमिर रजनी । उड़त फूल उडगन नभ अंवर अंजन घटा घनी ॥ नारदादि सनकादि प्रजापति सुर नर असुर अनी । काल कर्म गुण अरुण अंत कछु प्रभुइच्छा रचनी ॥ यह प्रताप दीप सुनिरंतर लोक सकल भजनी । जाके उदित नचत नाना विधि गति अपनी अपनी ॥ सूरदास सव प्रकृति धातुमय अति विचित्र सजनी ॥ २८ ॥ अथ नृपविचार । रागगूजरी ॥ श्रीशुकके सुनि वचन नृप लाग्यो करन विचार । झूठे नाते जगतके सुत कलत्र परिवार ॥ चलत न कोऊ सँग चलै मोरि रहैं मुख नार । आवत गाढे कामह-रि देखो सूर विचार ॥ २९ ॥ राग गूजरी हरि विनु कोऊ काम न आयो । इस माया झूठी प्रपंच लगि रतनसों जन्म गवायो ॥ कंचनकलश विचित्र२ करि रचि पचि भवन वनायो । तामें ते तिहि छिन ही काढ्यो पलभर रहनि न पायो ॥ हौं तेरे ही संग जरोंगी यह कहि त्रिया धूति धन खायो। चलत रही चित चोरि मोरि मुख एक न पग पहुँचायो ॥ बोलि बोलि सव बोलि मित्रजन लीनो सो जिहिं भायो । परयो काज अंतकी विरियां तिनिही आनि वँधायो ॥ आशा करि करि जननी जायो कोटिक लाड लडायो । तोरि लयो कटिहूंको डोरा तापर वदन जरायो ॥ पतितउधारन गणिका तारन सो मैं शठ विसरायो । लियो न नाम नेकहूं धोखे सूरदास पछतायो ॥ ३० ॥ राग देवगंधार ॥ सकल तजि भजि मन चरण मुरारि । श्रुति स्मृति मुनि जन भाषत मैं हूं कहत पुकारि ॥ जैसे स्वप्ने सोइ देखियत तैसे यह संसारि । जात विलै है छिनक मात्रमें उघरत नैन किवारि ॥ वार वार कहत मैं तोसों जन्म न जूवा हारि । पाछे भई सुभई सूरजन अजहूं समुझि सँभारि ॥ ३१ ॥ राग गूजरी ॥ अजहूं सावधान क्यों न होई । माया विषम भुजंगनिको विष उतरयोनाहिं न तोई॥कृष्ण सुमंत्र जियावन मूरी जिन जग मरत जिवायो । वारंवार निकट श्रवण नि ह्वै गुरु गारुड़ी सुनायो ॥ भौतिक देह जीय अभिमानी देखत ही दुख लायो । कोउ कोउ उवरयो, साधु संगति जिन राम जीवन पायो ॥ जाग्यो मोह मयूर प्रति छूटे सुयश गीतकेगाये । सूर मिटे अज्ञान मूर्छा ज्ञान मूलके खाये ॥ ३२ ॥ नृपको वचन शुकदेव प्रति । नमो नमो करुणा निधान । चितवत कृपाकटाक्ष तुम्हारी मिटिगयो तम अज्ञान ॥ मोहनिशाको लेश रह्यो नहिं भयो विवेक

विहान। आतमरूप सकल घट दरश्यो उदय कियो रवि ज्ञान ॥ मैं मेरी अब रही न मेरे छुटचो देह अभिमान। भावै परो आजुही यह तनु भावै रहो अमान॥मेरे जिय अब यहै लालसा लीला श्रीभगवान। श्रवण करौं निशि वासर हित सों सूर तुम्हारी आन॥३३॥ अथ शुकदेववचन। राग सारंग ॥ कह्यो शुक सुनो परीक्षितराव । ब्रह्म अगोचर मन वाणीते अगम अनंत प्रभाव ॥ भक्तन हित अवतार धारि जो करि लीला संसार। कहौं ताहि जो सुनै चित्त दे सूरतरै सो पार ॥ ३४ ॥ अथ नारद ब्रह्मा संवाद॥रागविलावल ॥ नारद ब्रह्माको शिरनाई। कह्यो सुनो त्रिभुवनपतिराई ॥ सकल सृष्टि यह तुमते होई। तुमसम द्वितिया और न कोई ॥ तुम हो धरत कौनको ध्यान। यह तुम मोसों कहो बखान ॥ कह्यो कर्ता हर्ता भगवान। सदा करत मैं तिनको ध्यान ॥ नारदसों कह्यो विधि या भाई । सूरकह्यो त्योंही शुक गाई ॥ ३५ ॥ अथ चतुर्विंशति अवतार वर्णन ॥ रागधनाश्री ॥ जो हरि करै सो होइ कर्ता नाम हरी। ज्यों दर्पण प्रतिबिंब त्यों सब सृष्टि करी ॥ आदि निरंजन निराकार कोउ हुतो न दूसर। रचो सृष्टि विस्तार भई इच्छा इक औसर ॥ त्रिगुण तत्त्वते महातत्त्व महातत्त्वते अहंकार। मन इंद्रिय शब्दादि पंची ताते किये विस्तार॥शब्दादिकते पंचभूत सुन्दर प्रगटाये। पुनि सबको रचि अंड आपमें आप समाये॥तीनलोक निजदेहमें राखे करि विस्तार।आदि पुरुष सोई भयो जो प्रभु अगम अपार ॥ नाभिकमलते आदिपुरुष मोको प्रगटायो। खोजत युग गए बीति नालको अंत न पायो ॥ तिन मोसों आज्ञा करी रचि सब सृष्टि उपाई । स्थावर जंगम सुर असुर रचे सबै मैं आई ॥ मच्छ कच्छ वाराह बहुरि नरसिंह रूप धरि। वामन बहुरो परशुराम पुनि राम रूप करि ॥ वासुदेव सोई भयो बुध भयो पुनि सोई । सोई कल्की होइहै और न द्वितिया कोई ॥ ए दश हैं अवतार कहौं पुनि और चतुर्दश। भक्तवच्छल भगवान् धरे वपु भक्तनिके वश ॥ अज अविनाशी अमर प्रभु जन्मै मरै न सोई । नटवर कलाकरत सकल बूझै विरला कोई॥ सनकादिक पुनि व्यास बहुरि भए हँसरूप हरि । पुनि नारायण ऋषभदेव बहुरयो धन्वंतरि ॥ नारद दत्तात्रेय हरि यज्ञ पुरुष वपु धारि॥ कपिल मोहनी पृथु हयग्रीव सुध्रुव उद्धारि॥ भूमिरेणु कोऊ गनै और नक्षत्रन समुझावै । कह्यो चहै अवतार अंत सोऊ नहिं पावै ॥ सूर कहौ क्यों कहि सकै जन्म कर्म अवतार। कहै कछुक गुरुकृपाते श्रीभागवत अनुसार ॥ ३६ ॥ ब्रह्मा उत्पत्ति चतुःश्लोक मति। राग विलावल ॥ ब्रह्मा यों नारदसों कह्यो। जब मैं नाभिकमलते भयो॥ खोजत नाल कितो युग गयो। तउ मैं कछू मर्म ना लह्यो ॥ भई आकाशवाणी तिहिं वार। तू ए चारि श्लोक विचार॥ इनै विचारिते ह्वैहै ज्ञान । ऐसी भांति कह्यो भगवान ॥ ब्रह्मा जो नारदसों कही। व्यास सोई नारदसों लही ॥ व्यास कही मोसों विस्तार। भयो भागवत या प्रकार ॥ सोई मैं अब तोसों भाखों। तेरे हृदय न संशय राखों॥ मूल भागवत को एइ चार। सूर भली विधि इन्हें विचार॥ ३७॥ अथ चतुःश्लोकी श्री मुख वाक्य। राग कान्हरा ॥ पहिले होहिं हों तब एक।अमल अकल अज भेद विवर्जित सुनि विधि विमल विवेक ॥ सो हौं एक अनेक भांति करि शोभित नाना भेष। ता पाछे इन गुणनि गाएते हौं रहिहौं अवशेष॥ झूठीहै सांची सी लागति मम माया सो जानि। रवि शशि राहु संयोग विना ज्यों लीजत है मन मानि। ज्यों गज स्फटिक मध्य न्यारो वासि पंच प्रपंच विभूत॥ ऐसे मैं सबहुनते न्यारो मणि ग्रंथित ज्यों सूत ॥ पहिले ज्ञान विज्ञान द्वितिया पद तृतीय भक्तिको भाव। सूरदास सोई समष्टि करि व्यष्टि दृष्टि मन लाव॥३८॥

इति श्रीकविवर सूरदासकृते श्रीमद्भागवते सूरसागरे द्वितीयःस्कंधः समाप्तः ॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर.

तृतीयस्कंध।

अथ शुकवचन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ। हरि चरणारविंद उर धरौ ॥ शुकदेव हरिचरणन चितलाई। राजासों बोल्यो या भाई ॥ कहौं हरिकथा सुन चित लाई। सूर तरौ हरिके गुण गाई ॥ १ ॥ उद्धव विदुर संवाद। कृष्णज्ञान संदेश मैत्रेय निकट बतावन। राग बिलावल ॥ जब हरिजू भए अंतर्ध्यान। कहि उद्धवसों तत्त्व ज्ञान ॥ कह्यो मैत्रेयसों समुझाई। यह तुम विदुरहि कहियो जाई। बद्रिकाश्रम दोऊ मिलि आए। तीरथ करत गए अकुलाए ॥ उद्धव विदुर तहां मिलि गए। दोऊ कृष्ण प्रेम वश भए ॥ उद्धव कह्यो हरि कह्यो जो ज्ञान। कहिहैं तुम्हें मैत्रेय आन ॥ यह कहि उद्धव आगे चले। विदुर मैत्रेय बहुरो मिले ॥ जो कछु हरिसों सुनियो ज्ञान। कह्यो मैत्रेय ताहि बखान ॥ सोइ मोहिं दियो व्यास सुनाई। कहो सो सूर सुनो चितलाई ॥ २ ॥ अथ विदुर जन्म वर्णन ॥ विदुर सुधर्मराइ अवतार। ज्यों भयो कहौं सुनो चित्तधार मांडव्य ऋषि जब शूली दयो। तब सो काठ हरयो ह्वै गयो ॥ माँडव्य धर्मराजपै आयो। क्रोधवंत यह वचन सुनायो ॥ कौन पाप मैं ऐसो कियो। जाते मोकूं शूली दियो ॥ धर्मराज कह सुन ऋषिराई। क्षमा करौ तौ देउँ सुनाई ॥ बाल अवस्थामें तुम धाई। उडत भंभीरी पकरी जाई ॥ ताहि शूल परशूली दियो। ताको बदलो तुमसों लियो ॥ ऋषि कहै बाल दशा अज्ञान। भयो पाप मोते बिन जान ॥ बालापनको लगत न पाप। ताते देउँ मैं तुम्हें शराप ॥ दासीसुत तू ह्वैहै जाई। सूर विदुर भयऊसो आई ॥ ३ ॥ अथ सनकादिकावतार ॥ ब्रह्मा ब्रह्मरूप उर धारि। मनसों प्रगट कियो सुत चारि ॥ सनक संनंदन सनत कुमारि। बहुरि सनातन नाम ए चारि ॥ ए चारों जब ब्रह्मा किये। हरिको ध्यान धरयो तिहिं हिये ॥ ब्रह्मा कह्यो सृष्टि विस्तारो। उन यह वचन हृदय नहिं धारो ॥ कह्यो यहैं हम तुमसों चहैं। पांच वरसके नितही रहैं। ब्रह्मा सों यह वर तिहि पाई। हरि चरणन चित राख्यो लाई ॥ शुकदेव कह्यो जैसे प्रकार। सूर कहै ताही अनुसार ॥ ४ ॥ अथ रुद्र उत्पत्ति वर्णन। सनकादिकनि कह्यो नहिं मान्यो। ब्रह्मा क्रोध बहुत मन आन्यो ॥ तब इक पुरुष भौंहते भयो। होत समय तिहि रोवन ठयो ॥ ताको नाम रुद्र विधि राख्यो। ताको सृष्टि करन को भाख्यो ॥ तिन बहु सृष्टि तामसी करी। सो तामस करि मन अनुसरी ॥ ब्रह्मा मनसों भली न भाई। सूर सृष्टि तब अवर उपाई ॥ ५ ॥ अथ सप्तऋषि चार मनु उत्पत्ति वर्णन ॥ ब्रह्मा सुमिरन करि अभिराम। प्रगट किये ऋषि सप्त अभिराम। भृगु मरीचि अंगिरा वसिष्ठ ॥ अत्रि पुलह पुनि भयो पुलस्त्य।

पुनि दक्षादि प्रजापति भये। स्वयंभू आदि चार मनु भये॥ इनते उपजी सृष्टि अपार। सूर कहां लौं करै विस्तार॥ ६॥ अथ सुर असुर उत्पत्ति वर्णन॥ राग विलावल॥ ब्रह्मा ऋषि मरीचि निर्मायो। ऋषि मरीचि कश्यप उपजायो॥ सुर अरु असुर कश्यपके पुत्र। भ्रात विमात आपमें शत्रु॥ सुर हरिभक्त असुर हरि द्रोही। सुर अति क्षमी असुर अति कोही॥ उनमें नित उठि होइ लराई। करैं सुरन की कृष्ण सहाई॥ तिन हित जो जो किए अवतार। कहौं सूर भागवत अनुसार॥ अथ वाराह रूप वर्णन। राग विलावल॥ ब्रह्माते स्वयंभू मनु भयो। तासों सृष्टि करनको कह्यो॥ तिन ब्रह्मासों कहो शिरनाई। सृष्टि करौ सुरहै किहि भाई॥ ब्रह्मा हरिपद ध्यान लगायो। तव हरि वपु वराह धरि आयो॥ ह्वै वराह पृथ्वी जव लायो। सूरदास शुक त्योंही गायो॥ ८॥ राग धनाश्री॥ हरि गुण कथा अपार पार नहिं पाइये। हरि सेवत सुख होइ हरी गुण गाइये॥ ब्रह्मपुत्र सनकादि गये वैकुंठ एक दिन। द्वारपाल जय विजय हुते वरज्यो तिहिको पुन॥ शाप दियो तव क्रोध ह्वै असुर होउ संसार। हरि दर्शनको जात क्यों रोक्यो विना विचार॥ हरि तिनसों कह्यो आइ भली शिक्षा तुम दीनी। वरज्यो आवत तुम्है असुर बुद्धी इन कीनी॥ तिन्हैं कह्यो संसारमें असुर होउ अव जाइ। तृतियहि जन्म विरुद्ध करि मोसों मिलिहौ आइ॥ कश्यप की दिति नारि गर्भ ताके दोउ आए। तिनके तेज प्रताप देवतनि वहु दुख पाए॥ गर्भ माहिं शत वर्ष रहि प्रगट भए पुनि आइ। तिन दोउनको देखिके सुर सव गए डराइ॥ हरिण्याक्ष इक भयो हरिण्यकशिपु भयो दूजो। तिनके वलको इंद्र वरुण कोऊ नहिं पूजो॥ हरिण्याक्ष तव पृथ्वी को ले राख्यो पाताल। ब्रह्मा विनती करि कह्यो दीनवंधु गोपाल॥ तुम विन दुतिया और कौन जो असुर सँहारै। तुम विनु करुणासिंधु कौन पृथ्वी उद्धारै। तव हरि धरि वाराह वपु ल्याए पृथ्वी उठाइ। हिरण्याक्ष लेकर गदा तुरतहि पहुँच्यो आइ॥ असुर कोप ह्वै कह्यो वहुत तुम असुर संहारे। अव लेहौं वह दांव छांड़िहौं नहिं विन मारे॥ यह कहिकै मारी गदा हरिजू ताहि सँभारि। गदा युद्ध तासों कियो असुरन मानी हारि॥ तव ब्रह्मा करि विनय कह्यो हरि ताहि संहारचो। तुम तौ लीला करत सुरन मन परो धकारो॥ मारचो ताहि विचारि हरि सुर मुनि भयो हुलास। सूरदासके प्रभु वहुरि कियो वैकुंठ निवास॥९॥ अथ कपिल देवमुनि अवतार वर्णन॥ राग विलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमरनि करो। हरिको ध्यान सदा हिय धरो॥ ज्यों भयो कपिलदेव अवतार। कहौं सो कथा सुनौ चित धार॥ कर्दम पुत्र हेतु तप कियो। तासु नारि हूं इक व्रत लियो॥ हरिसों पुत्र हमारे होई। और जगत सुख हूं पुनि होई॥ नारायण तिनको वर दियो। मोसों और न कोई वियो॥ मैं लेहौं तुम गृह अवतार। तप तजि करो भोग संसार॥ दुहुँ तव तीरथ माहिं न्हवायो। सुंदर रूप दुहूं जन पायो॥ भोग समग्री जुरी अपार। विचरन लागे सुख संसार॥ तिनके कपिल देव सुत भये। परम भाग्य मानि तिहिं लये॥१०॥ अथ कर्दम प्रसंग। राग विलावल॥ कर्दम कह्यो तिन्हैं शिरनाई। आज्ञा होइ करौं तप जाई॥ अभय अछेद रूप मम जान। जो सव घटहै एक समान॥ मिथ्या तनुको मोह विसारि। जाइ रह्यो भावै गृह दारि॥ करत इंद्रिय नि चेतन जोई॥ मम स्वरूप जानो तुम सोई॥ तनु अभिमान जाको नश जाई॥ सो नर रहै सदा सुख पाई॥ जव मम रूप देह तजि जाई। तव सव इंद्री सक्त नशाई॥ ताको जानि मग्न ह्वै रहै। देह अभिमान ताहि नहिं दहै॥ और जो ऐसी जानै नाहीं। रहै सो सदा काल भय माहीं॥ यह सुनि कर्दम वनहि सिधाए। वहां जाय हरिपद चित लाए॥ हरि स्वरूप सव घट पुनि जान्यो। उंख

माहिं ज्यों रस है सान्यो ॥ जोयो तिनि आतम रस सार । ऐसी विधि जान्यो निरधार ॥ यों लखि गहि हरिपद अनुराग । मिथ्या तनुको कीनो त्याग ॥ तनुहि त्यागिकै हरि पद पायो नृप सुनि हरि स्वरूप उर लायो ॥ ११ ॥ अथ देवहूति माताको प्रश्न कपिल मुनिसों ॥ इहां कपिल सों माता कहो । प्रभु मेरो अज्ञान तुम दहो ॥ आतमज्ञान देहु समुझाई । जाते जन्म मरण दुख जाई ॥ कह्यो कपिल कहों तुमसों ज्ञान । मुक्त होइ नर ताको जान ॥ मुक्ति त्रिविधके लक्षण कहौं । तेरे सब संदेहै दहौं ॥ मम सो रूप जो सब घट जान । मग्न रहै तजि उद्यम आन ॥ अरु सुख दुख कछु मन नहिं ल्यावै । माता सों नर मुक्ति कहावै ॥ और जु मेरो रूप न जानै । कुटुंब हेत नित उद्यम ठानै ॥ जाको इहि विधि जन्म सिराई । सो नर मरिकै नरक सिधाई ॥ ज्ञानी संगति उपजै ज्ञान । अज्ञानी सँग हो अज्ञान ॥ ताते साधु संग नित करना । जाते मिटै जन्म अरु मरना ॥ स्थावर जंगम में मोहिं जानै । दयाशील सब सों हित ठानै ॥ सत संतोष दृढ करै समाध । माता ताको कहिये साध ॥ काम क्रोध लोभ परिहरै । द्वंद्व रहित उद्यम नहिं करै ॥ ऐसे लक्षण हैं जेहि माहीं । माता तिनको साधु कहाहीं ॥ जाको काम क्रोध नित व्यापै । अरु पुनि लोभ सदा संतापै ॥ ताहि असाधु कहत कवि सोई । साधु भेष धरि साधु न होई ॥ संत सदा हरिके गुण गावैं । सुनि सुनि लोग भक्ति को पावैं ॥ भक्ति पाइ पावैं हरि लोक । तिन्हैं न व्यापै हर्ष न सोक ॥ देवहूति कह भक्ति सुकहिये । जाते हरिपुर बासा लहिये ॥ १२ ॥ भक्ति प्रश्न ॥ अरुसुभक्ति कीजै किहिं भाई । सोऊ मोको देहु बताई ॥ माता भक्ति चारि परकार । सत रज तम गुण सुधा सार ॥ भक्ति एक पुनि बहुविधि होई । ज्यों जल रंग मिलि रंगसुहोई । भक्ति सात्विकी चाहत मुक्त । रजोगुणी धन कुटुंबअनुरक्त ॥ तमोगुणी चाहै या भाई । ममवैरी क्योंही मरजाई ॥ सुधा भक्ति मोक्ष को चाहै । मुक्तिहूंको नाहीं अवगाहै । मन क्रम वच मम सेवा करै ॥ मनते भव आशा परिहरै ॥ ऐसो भक्त सदा मोहिं प्यारो । इक छिन जाते रहौं न न्यारो ॥ ताके मैं हित मम हित सोई । जासम मेरो और न कोई । त्रिविध भक्ति मेरे है जोई ॥ जो मांगै तिहिंदेहुँ मैं सोई ॥ भक्त अनन्य कछू नहिं माँगै ॥ ताते मोहिं सकुच अति लागै ॥ ऐसो भक्त जानि है जोई । जाके शत्रु मित्र नहिंहोई ॥ हरिमाया सबजग संतापै । ताको माया मोह न व्यापै ॥ १३ ॥ हरि माया प्रश्न । कपिल कहा हरिको निजरूप । अरु पुनि माया कौन स्वरूप ॥ देवहूति जब याविधि कह्यो । कपिलदेव सुनि अति सुख लह्यो ॥ कह्यो हरिके भय रवि शशि फिरै । वायु वेग अतिशय नहिं करै ॥ अगिनि रहै जाके भय माहीं । सो हरिमाया जा वश माहीं ॥ मायाको त्रिगुणातम जानो । सत रज तम ताको गुण मानो ॥ तिन प्रथमे महतत्व उपायो । ताते अहंकार प्रगटायो ॥ अहंकार कियो तीन प्रकार। मनते ऋषि मनसा तरुचार ॥ रजगुणतेइंद्रिय विस्तारी । तम गुण ते तन्मात्रा सारी ॥ तिनते पांच तत्त्व प्रगटायो । इहि सबको इक अंड बनायो ॥अंड सुजड़ चेतननहिं होई । तब हरिपद माया मन पोई ॥ ऐसी विधि विनती अनुसारी । महाराज विनुशक्ति तुम्हारी ॥ यह अंडा चेतन नाहिं होई । करौ कृपा हरि चेतन सोई॥तामें शक्ति आपुनी धरी । चच्छ्वादिक इंद्री विस्तरी ॥ चौदह लोक भये तामाहिं । ज्ञानी तिहि वैराट कहाहिं ॥ आदि पुरुष चैतन्य को कहत । जोहै तिहूं गुणनते रहित॥जड़ स्वरूप सब माया जानो । ऐसो ज्ञान हृदयमें आनो ॥ जबलगिहै जियको अज्ञान । चेतनको सो सकै न जान ॥ सुत कलत्र को अपनो मानै । अरु तिनसों ममत्व बहु ठानै ॥ जोकोइ सुख दुख सपने जोई । सत्य मानले तिनको सोई ॥ जब

जागै तब सत्त न मानै। ज्ञान भए त्योहीं जगजानै ॥ चेतन घट घट है या भाई। ज्यों घट घट रवि प्रभा लखाई ॥ घट उपजो बहुरो नशि जाई । रविनितरहै एकही भाई ॥ जा तनकोंहै जन्म रु मरना। चेतन पुरुष अमर अज वरना ॥ ताको ऐसो जानै जोई। ताके तिनसों मोह न होई ॥ जबलौं ऐसो ज्ञान न होई । वर्ण धर्म को तजै न सोई ॥ संतन की संगत नित करै। पापकर्म मनते परिहरै ॥ अरु भोजन सो इहि विधि करै। आधा उदर अन्न सों भरै ॥ आधेमें जल वायु समावै। तब तिहिं आलस कवहुँ न आवै ॥ और जु परालब्ध सों आवै। ताहीको सुखसों बरतावै॥ बहुतेको उद्यम परिहरै । निर्भय ठौर बसेरोकरै ॥ तीरथहूमें जो भय होई । ताहूको तू परिहरै सोई ॥ वहुरो धरै हृदय महँ ध्यान । रूप चतुर्भुज श्यामसुजान ॥ प्रथमै चरण कमलको ध्यावै । तासु महातम मनमें ल्यावै ॥ गंगा परसि उनहिंको भई। शिव शिवता इनहींसो लही ॥ लक्ष्मी इनको सदा पलोवै । वारंवार प्रीति को जोवै । जंघनको कदली समजानै । अथवा कनक थंभ सम मानै ॥ उर अरु ग्रीव वहुरि हिय धारै। तापर कौस्तुभमणिहि विचारै॥भृगुलता लक्ष्मी तहँजानी। नाभि कमल चित धारै ध्यानी॥मुख मृदुहास देख सुख पावै। तासों प्रेम सहित मन लावै ॥ नैन कमलदलसे अनियारे। दरशत तिनै कटे दुख भारे ॥ नासा कीर परम अतिसुंदर। दरशत ताहि मिटै दुखद्वंदर ॥ कूप समान श्रौन दोउ जानै। मुख को ध्यान इसी विधि ठानै ॥ केसर तिलकरेख अति सोहै। ताके पटतर को जगको है ॥ मृगमद विंदा तामें राजै। निरखत ताहि काम सत लाजै ॥ जटित मुकुट पीतावंर सोहै । जो देखे ताको मन मोहै। श्रवणनि कुंडल परम मनोहर। नखशिख ध्यान धरै यों उर धर॥ क्रम क्रम करि यह ध्यान वढावै। मन कहुँ जाय फेरि तहँ आवै ॥ ऐसे करत मगनहोइ सोई ॥ वहुरो ध्यान सहजही होई ॥ चितवत चलत न चितते टरै ॥ सुत त्रिय धनकी सुधि विसमरै ॥ तव आतम घट घट दरशावै। मग्नहोइ तन मन विसरावै ॥ भूंख प्यास ताके नहिं व्यापै । सुख दुख तिनको नहिं संतापै ॥ जीवनमुक्ति रहै या भाई। ज्यों जल कमल अलिप्त रहाई ॥ १४ ॥ देवहूतीप्रश्न सुगम उपाय राग विलावल ॥ देवहूति यह सुनि पुनि कह्यो। देह ममत्व ढेर मुहिरह्यो ॥ कर्दम मोहन मनतें जाई। ताते कहिए सुगम उपाई॥कपिल कह्यो तोहिं भक्ति सुनाऊं। अरु ताको वेवरो समुझाऊं॥ मेरी भक्ति चतुर विधि करै। सुने सुने ते सव निसतरै ॥ जो कोउ दूरि चलनको करै। क्रम क्रम करि डग डग पग धरै ॥ इक दिन सुवँहाँ पहुँचे जाई। त्योंमम भक्त मिलै मोहिं आई ॥ चलत पंथ कोउ थाक्यो होई। कहै दूरि डारि मरिहै सोई ॥ जोकोउ ताको निकट वतावै । धीरजधरि सुठिकाने आवै ॥ तमोगुणी रिपु मरनो चाहै ॥ रजोगुणी धन कुटुंबअवगाहै ॥ भक्त सात्वकी सेवै संत। लखै तवै मूरति भगवंत ॥ मुक्ति मनोरथ मनमें ल्यावै। मम प्रसादते सो वह पावै । तिगुण मुक्तिहूको नहिं चहै। मम दरशन हीते सुख लहै ॥ ऐसो भक्त सुमुक्त कहावै । सोवहुरचौ चलि भवनहि आवै ॥ क्रम क्रम ही करि सब गति होई। मेरो भक्त नष्ट नाहिं होई ॥ १५ ॥ हरिते विमुख होहि नर जोई। मरिके नरक परत है सोई॥तहां जातना बहुविधि पाँवै । पुरपवीर्यमिलि तिय गर्भ आवै॥ मिलि रज वीरज ऐसी होई। द्वितियमास शिर धारै सोई॥तीजे मास हस्त पग होवै। मास चौथि कटि अंगुरी सोवै॥प्राणवायु पुनि आय सभोवै। ताको इत उत पवन चलावै। पंचम मास हाड़ वल पावै। छठे मास इन्द्री प्रगटावै॥सप्तम चेतनता लहै सोई। अष्ट मास संपूरण होई। नीचे शिर अरु ऊंचे पांई। जठर अग्नि को व्यापै ताई। कष्ट बहुत सो पावै जहां। पूर्व जन्म

सुधि आवै तहां॥ नवम मास पुनि विनती करै। महाराज यह दुख ममटरै॥ ह्यांते जो मैं बाहर परौं। अहर्निश भक्ति तुम्हारी करौं॥ अरु मोपै प्रभु किरपा कीजै। भक्ति अनन्य आपुनी दीजै॥ अरु यह ज्ञान न चिततें टरै। बार बार यों विनती करै॥ दशम मास पुनि बाहर आवै। तब यह ज्ञान सकल विसरावै॥ बालापन दुख बहुविधि पावै। जीभ विना कहि कहा सुनावै॥ कबहूं विष्टामें रहजाई कबहूं माखी लागै आई॥ कबहूं जुवां देइ दुखभारी। तिनको सो नाहिं सकैनिवारी॥ पुनि जब पट वर्षको होई। इत उत खेलन चाहत सोई॥ माता पिता निवारै जबहीं। मनमें दुख पावै सो तबहीं माता पिता पुत्र तेहि जानै। वह उनसे तब नातो मानै॥ वरसैं दश व्यतीत जब होई। बहुरि किसोर होय पुनि सोई॥ सुंदरनारी ताहि विवाहै। अशन वसन बहुविधि सो चाहै॥ विना भाग सो कहँते आवै। तब वह मनमें बहु दुख पावै॥ पुनि लक्ष्मी हित उद्यम करै॥ अरु जब उद्यम खालीपरै॥ तब वह रहै बहुत दुखपाई॥ कहँ लौं कहौं कह्यो नहिं जाई॥ बहुरो ताहि बुढ़ापो आवै। इन्द्री शक्ति सकल मिट जावै॥ कानन सुनै आँखि नहिं सूझै। बात कहै सो कछु नहिं बूझै॥ खैवेको जब नाहिंन पावै। तब बहु विधि मनमें पछतावै॥ पुनि दुख पाइ पाइ सो मरै। विनुहरि भक्ति नरकमें परै॥ नरक जाइ पुनि बहु दुख पावै। पुनि पुनि योंहीं आवै जावै॥ तऊ नहीं हरि सुमिरण करै। तातें बार बार दुख भरै॥ १६॥ भक्त महिमा॥ भक्त सकामीहूं जो होई। क्रम क्रम करिकै उधरै सोई॥ शनै शनै विधि पावै जाई। ब्रह्म संग हरिपदहि समाई॥ निष्कामी वैकुंठ सिधावै। जन्म मरन तिहि बहुरि न आवै॥ त्रिविधि भक्ति अब कहौं सुनु सोई। जातेंहरिपद प्रापति होई॥ एक कर्मयोग को करै॥ वर्ण आश्रम धरि निस्तरै॥ अरु अधर्म कबहूं नहिं करै। ते नर याही विधि निस्तरै॥ एक भक्ति योग को करै। हरि सुमिरन पूजा विस्तरै॥ हरि पद पंकज प्रीति लगावै। क्रम क्रम करि हरिपदहि समावै। ते हरिपद को याविधि पावै॥ क्रम क्रम करि हरिपदहि समावै॥ एक ज्ञान योग विस्तरै। ब्रह्म जानि सबसों हित करै॥ कपिलदेव बहुरो यों कह्यो। हमैं तुमैं संवाद जुभयो॥ कलियुगमें यहि सुनिहै जोई। सो नर हरिपद प्रापति होई॥ १७॥ देवहूति हरिपदप्राप्ति। देवहूति ज्ञानको पाई। कपिलदेवको कह्यो शिरनाई॥ आगे मैं तुमको सुतमान्यो अब मैं तुमको ईश्वर जान्यो॥ तुम्हरी कृपा भयो मुहिं ज्ञान। अब न व्यापिहै मोहिं अज्ञान॥ पुनि बनजाइ दियो तनु त्याग। गहिकै हरिपदसों अनुराग॥ कपिलदेव सांख्य जो गायो। सो राजा मैं तुम्हें सुनायो॥ याहि समुझि जु रहे लवलाई। सूर बसै सो हरिपुर जाई॥ १८॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवर श्रीसूरदास कृते तृतीयस्कंधः समाप्तः॥ ३॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर.

चतुर्थस्कंध।

(राग विलावल) हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौं।हरि चरणारविन्द उर धरौं।।कहौं अव दत्तात्रेय अवतार। राजा सुनौ ताहि चित्त धार।। अत्रि पुत्र हित वहु तपकियो। तासु नारिहूं यह व्रतलियो ।। तीनो देव तहां मिलिआयो तिनसों ऋषि यह वचन सुनायो।।मैं तो एक पुरुषको ध्यायो।अरु एकहि सों मैं चित लायो।। अपने आवनको कहो कारण। तुमहौ सकल जगत निस्तारण ।। कह्यो तुम एक पुरुष जो ध्यायो । ताको दरशन काहू पायो ।। ताकी शक्ति पाइ हम करैं। प्रतिपालो वहुरो संहरैं।। हम तीनोंहैं जग करतार। मांग लेहु हमसों वर सार ।। कह्यो विनय मेरी सुनि लीजे। ज्ञान मान पुत्र मोहिं दीजे ।। विष्णु अंश दत्त अवतरे। रुद्र अंश दुर्वासा ढरे ।। ब्रह्म अंश चंद्रमा भयो । अत्रि अनुसूयाको सुख दयो ।। यों भए दत्तात्रेय अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार ।। १ ।। शुकदेव वचन ।। हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौं। हरि चरणाविंद उर धरौं ।। शुकदेव हरि चरणन चित्त लाई। राजा सों वोल्यो या भाई ।। कहौं हरिकथा सुनौ चित लाई। सूर तरचो हरिके गुण गाई ।। २ ।। यज्ञ पुरुष अवतार वर्णन ।। दक्षके उपजीं पुत्री सात। तिनमें सती नाम विख्यात ।। महादेव को सो पुनि दई। यज्ञ दक्षके में सो मुई। तहां कियो हरि यज्ञ अवतार ।। सूर कह्यो भागवत अनुसार ।। ३ ।। ।।हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरणाविंद उर धरौ ।। कहौं अव यज्ञ पुरुष अवतार। राजा सुनौ ताहि चित धार ।। सती दक्षके पुत्री भई। दक्ष सुमहादेवको दई ।। ब्रह्मा महादेव ऋषि सारे। एक दिन वैठे सभा मझारे ।। दक्ष प्रजापति हूं तहां आए। करि सन्मान सवनि वैठाए ।। काहू समाचार कछु पूछे। काहूसे वहुरो उन पूछे ।। शिवकी लागी हरिपद तारी। ताते नहिं शिव आंख उघारी ।। महादेव वैठे रहि गए। दक्ष देखिके तिहि दुख तए ।। महादेवको भाषत साधु। मैं तो देखो वहुत असाधु ।। यज्ञ भाग ताको नहिं दीजै। मेरो कह्यो मान करि लीजै ।। नन्दी हृदय भयो सुनि ताप। दियो ब्राह्मणको तिन शाप ।। श्रुति पढ़िकै तुम नहिं उद्धरि हौ। विद्या वेंचि जीविका करिहौ ।। भृगु तव कोपहोय तहँ कह्यो। तैं शराप सवहुनको दयो ।। महादेव हित जो तप करिहै। सोऊ भव जलते नहिं तरिहै ।। दक्ष प्रजापति यज्ञ रचायो। महादेवको नहीं वुलायो ।। सुर गंधर्व जे नेवति वुलाये। ते सव वधू सहित तहां आए ।। सती सवनि तिन्ह आवत देखी। शिवसों वोली वचन विशेखी ।। चालिए दक्ष गेह हम जाहीं। यद्यपि हमैं वोलायो नाहीं ।। मोको तो यह अचरज आयो। उन हमको कैसे विसरायो ।। गुरु पितु गृह विनु वोले जैये। यहै नीति नाहीं सकुचैये ।। शिव कह्यो तुम भली नीति

सुनाई। पै वह मानतहै शत्रुताई। वहां गये ते होइ अपमान। तौ यह भली बात नहिं जान॥ दुर्जन वचन सुनत दुख जैसो। बाणलगे दुख होय न तैसो॥ मम सतराई हृदये आन। करिहै तेरोऊ अपमान॥ भये अपमान वहांतू मरिहै। जो मम वचन हृदय नहिं धरिहै॥ सती कह्यो मम भगनिनिसात। सबै वोलाई हैंहै मात॥ मोहूंको अब आज्ञा दीजै। महाराज अब विलंब न कीजै॥ वारंवार सती जब कह्यो। तब शिव अंतर्गत यों लह्यो॥ सती सदा मम आज्ञाकारी। कहत जु या विधि वारंवारी॥ देखत है कछु होवनहारी। सो काहू पै जाइ न टारी॥ गणन समेत सती तहँ गई। तासों दक्ष बात नहिं कही॥ सती जानि अपनो अपमान। शिवको वचन कियो अनुमान॥ कह्यो वहां अब गयो न जाई। बैठ गई शिर नीचे नाई॥ शिव आहुतिकि बेर जब आई। विप्रन दक्ष पूंछियो जाई॥ शिवनिन्दा कहि तिनसों भाष्यो। मैं तुमही पहिलेहि कहि राख्यो॥ मेरो वचन मान करि लेहू। शिव निमित्त आहुति मत देहू॥ तब ह्वै क्रोध सती तिहि कही। तैं शिवकी महिमा नहिं लही। महादेव ईश्वर भगवान। शत्रु मित्र वाहि एक समान॥ तैं अज्ञान जो करि शत्रुताई। उनकी महिमा तैं नहिं पाई॥ पिता जानि तोको नहिं मारों। अपनोही मैं आप संहारों॥ योगधारणाकरि तनुत्यागो। शिवपद कमल माहिं अनुराग्यो॥ बहुरि हिमालय के अवतरी। समयांतर हर बहुरो बरी॥ ह्यां शिवगणनि उपद्रव कियो। तब भृगुऋषि उपाय यह ठयो॥ आहुति यज्ञकुंडमें डारि। कह्यो पुरुष उपजै बल भारि॥ पुरुष कुंडते प्रगट जुभए। भृगुके निकट चले सब गए॥ भृगु कह्यो करत यज्ञको नास। इनको ह्यांते देहु निकास॥ शिवके गण तिहि बहुतै मारे। ते गण शिवते जाइ पुकारे॥ शिव ह्वै क्रोध इक जटा उपारी। वीरभद्र उपज्यो बल भारी॥ वीरभद्रको तहां पठायो। तासों इहि विधि कहि समुझायो॥ दक्ष शिरकाटि कुंडमें डारी। आवौ वेगि न करौ अवारी॥ वीरभद्र दक्षको मार्यो। अरु भृगु ऋषिको केश उपार्यो॥ हाथ पाँय बहुतनके काटे। आइ नवायो शिवहिं ललाटे॥ तब सुर ऋषि ब्रह्मापै जाय। दियो सकल वृत्तान्त सुनाय॥ कह्यो ब्रह्मा शिवनिन्दा जहां। बुरो कियो तुम बैठे तहां॥ ब्रह्मा तिहिलै शिवपै आये। शिव प्रणाम करि ढिग बैठाये॥ शिवको सवन कियो परमान। भोलानाथ लियो सो मान॥ ब्रह्मा शिवको वचन सुनायो। दक्ष तुम्हारो मर्म न पायो॥ जैसो कर्यो सो तैसो पायो। अब वाको तुम फेरि जिवायो॥ शिव कह्यो मेरे नाहिं शत्रुताई॥ सती मुई यह मनमें आई॥ अब जो तुमरी आज्ञा होई। छांड़ि विलंब कीजिए सोई॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र तहँ आए। भृगु ऋषिकेश आपुने पाए॥ घायल सब नीके ह्वै गए। सुर ऋषि सबके भाए भए॥ दक्ष शीश कुंडमें जर्यो। ताके बदले अज शिर धर्यो॥ महादेव तेहि फेरि जिवायो॥ दक्षजानि यह शीश नवायो॥ विप्रन यज्ञ बहुरि विस्तार्यो। वेद भली विधि सों उचार्यो॥ यज्ञपुरुष प्रसन्न जब भए। निकसि कुंडसे दरशन दए॥ सुंदर श्याम चतुर्भुज रूप। ग्रीवा कौस्तुभमाल अनूप॥ उठिकै सबहुन माथो नायो। दक्ष बहुरि यह विनय सुनायो॥ मैं अपमान रुद्रको कियो। तब मम यज्ञ साँग नहिं भयो॥ अब मोहिं कृपा कीजिए सोई। फिर दुर्बुद्धि न ऐसी होई॥ बहुरो भृगुऋषि स्तुति कीनी। महाराज ममबुद्धि भइ हीनी॥ दियो क्रोध करि शिवहि शराप। करो कृपा जुमिटै यह दाप॥ पुनि शिव ब्रह्मा स्तुति करी। यज्ञपुरुष वाणी उच्चरी॥ दक्षतैं कियो शिवहि अपमान। ताते भई यज्ञकी हान॥ विष्णु रुद्र विधि एकहि रूप। इन्हैं जान मतैं भिन्न स्वरूप॥ जाते यह प्रगट भइ आई। ताको तू मनमाहिं धिआई॥ यों कहि पुनि वैकुंठ

सिधारे। सुर गंधर्व गये पुनि सारे ॥ या विधि भयो यज्ञ अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥४॥ अथ संक्षिप्त यज्ञपुरुष अवतार कथा। राग मारू ॥ यज्ञ प्रभु प्रगट दरशन दिखायो। विष्णु विधि रुद्र मम रूप ए तीनि हूं दक्षसों वचन यह कहि सुनायो ॥ दक्ष रिसि मानि जब यज्ञ आरंभ कियो सबनको सहित पत्नी हँकारचो। रुद्र अपमान कियो सती तब जिय दियो रुद्रके गणनि ताको सँहारचो ॥ बहुरि विधि जाइ क्षमवाइ कै रुद्रको विष्णु विधि रुद्र तहां तुरत आये। यज्ञ आरंभ मिलि ऋषिन बहुरो कियो शीश अज राखिकै दक्ष जिवाए॥कुंडते प्रगट यज्ञपुरुष दरशन दयो श्यामसुंदर चतुर्भुज मुरारी। रूप प्रभु निरखि दंडवत सबहिनि कियो सूर ऋषि सबनि स्तुति उचारी ॥५॥पार्वती विवाह वर्णन॥ सती हिए धरि शिवको ध्यान नाम पार्वति ह्वै अवतरी। पार्वती वर प्रापत भई। तबहिं हिमाचल तासों कही ॥ तेरो कासों कीजै व्याह। तिन कह्यो मेरो पति शिव आह ॥ कह्यो हिमालय शिव प्रभु ईश। हमको उनसों कैसी रीस ॥ पार्वती शिव हित तप करचो। तब शिव आइ तहां तिहि वरचो ॥ पार्वती विवाह व्यवहार। सूरकह्यो भागवत अनुसार ॥६॥ ध्रुव कथा। राग विलावल॥स्वयंभू मनुके सुत भए दोई। तिनकी कथा कहौं सुन सोई ॥ उत्तानपाद इक नृप को नाम। द्वितिय प्रियव्रत अति अभिराम ॥ उत्तानपादके ध्रुवसुत भए। हरि जू ताको दरशन दए ॥ बहुरि दियो ताको स्थान। जहां प्रदक्षिण दे शशी भान ॥ कहौं सुकथा सुनो चितधार। सूर कह्यो भागवत अनुसार ॥ ७ ॥ ध्रुव वरदेन अवतार वर्णन ॥ राग विलावल हरि हरि हरि हरि सुमरन करो। हरि चरणार्विन्द उर धरो ॥ कहौं अब ध्रुव वर देन अवतार। राजा सुनो ताहि चितधार ॥ उत्तानपाद पृथ्वीपति भयो। ताको यश तीनों पुर छयो ॥ नाम सुनीति बड़ी तिहि नारि। सुरुचि दूसरी ताकी नारि ॥ भये सुरुचिते उत्तम वार। सुनीति नारिकै ध्रुव कुमार ॥ राजा को सुसुरुचिसों नेह। वसै सुनीत दूसरी गेह ॥ इक दिन नृपति सुरुचि गृह आए। उत्तम कुँवर गोद बैठाए ॥ ध्रुव खेलत खेलत तहँ आए। गोद बैठिवेको पुनि धाए॥ राजा त्रियडर गोद न लीनो। ध्रुव कुमार रोइ तब दीनो ॥ तबहि सुरुचि ध्रुवको समुझायो। तैंगोविंद चरण नहिं ध्यायो ॥ जो हरिको सुमिरन तू करतो। मेरे गर्भ जानि अवतरतो ॥ राजा तब तोहिं लेतो गोद। तबहिं गोदमें करतो मोद॥अजहूं तू हरिपद चित लाई। होहिं प्रसन्न तोहिं यदुराई ॥ वचन सुरुचि बाण सम लागे। ध्रुव आयो मातापै भागे ॥ माता ताको रोदन देखि। दुख पायो मन माँह विशेखि ॥ कह्यो पुत्र तोको केहि मारचो। ध्रुव अति दुखित वचन उच्चारचो ॥ माता ताको कंठ लगायो। तब ध्रुव सब वृत्तांत सुनायो॥कह्यो सुत सुरुचि सत्य यह कह्यो। विनु हरिभक्ति पुत्र मम भयो॥अजहूं जो हरिपद चित लैहो। सकल मनोरथ मनको पैहो॥जिन जिन हरि चरणन चितलाए।तिन तिन सकल मनोरथ पाए ॥ पितृ तुव ब्रह्मा तप कियो। हरि प्रसन्न होय तिहि वर दियो ॥ तिहिको सर्व जगत् विस्तार। जाकी नाहीं पारावार ॥ बहुरि स्वयंभू मनु तप कीनो। ताहूको हरिजू वर दीनो॥ताको भयो बहुत परिवार। नर पशु कीट गनत नहिं पार॥तूहू जो हरिहित तप करिहै। सकल मनोरथ तेरो पुरिहै ॥ ध्रुव एहि सुनि बनको उठिचले। पंथमाहिं तेहि नारद मिले ॥ देख्यो पांच बरसको बाल। वचन सुरुचि नहिं सक्यो सँभाल॥अब मैंहूं याको दृढ़ देख्यौं दृढ़विश्वास बहुरि उपदेशौं ॥ ध्रुवसे कह्यो क्रोध परिहरौ। मैंजो कहौं सो चितमें धरौ ॥ मेरेसंग राजा पै आवौ। दे आवौं तोहि राज्य धन गावो ॥ भक्तिभावको जो तोहिं चाह। तोसों नहिं ह्वै है निर्वाह ॥ बहुतक तपसी पचि पचि मुए। पै तिहि हरि दरशन नहिं हुए ॥ मैं हरिभक्त नाम

मोहिं नारद। मोसों कहो सु अपनो हारद॥ राजा पास कहों सो जाई। लेहै मान नृपति सत भाई॥ ध्रुव विचार तव मनमें कियो। सुमिरत नारद दरशन दियो॥ जब मैं भक्ति इयामकी करिहौं। नहिं जानत जु कहा मैं पैहौं॥ कह्यो सो नारद करो सहाई। करो भक्ति हरिकी चित लाई॥ तुम नारायण भक्त कहावत। काहेको तुम मोहिं फिरावत॥ तव नारद ध्रुवको दृढ़ देखि। कह्यो देउँ मैं ज्ञान विशेखि॥ मथुरा जाय सुसुमिरन करो। अरु हरिध्यान हृदयमें धरो॥ मथुरा जाइ सोई उन कियो। तव नारायण दरशन दियो॥ ध्रुव स्तुति कीनी वहु भाई। तब हरि जू वोले मुसुकाई॥ ध्रुव जो तेरी इच्छा होई। मांग लेहु मोसों अब सोई॥ प्रभु मैं तुमरो दरशन लह्यो। मांगनको पाछे कहा रह्यो॥ हरि कह्यो राज्य हेतु तप कियो। ध्रुव प्रसन्न होइ मैं तोहिं दियो॥ अरु तेरे हित कियो स्थान। देहि प्रदक्षिण जहँ शशि भान॥ ग्रह नक्षत्र हूं त्योंही फिरै। तू भव अटल न कवहूं टरै॥ अरु पुनि महाप्रलय जब होई। मुक्तिस्थान पाइहौ सोई॥ यह कहि हरि निज लोक सिधारे। ध्रुव निजपुरको पुनि पग धारे॥ जब ध्रुव पुरके बाहर आये। लोगन नृपको जाइ सुनाये॥ उनके कहे न मनमें आई। तव नारद कह्यो नृपसों जाई॥ ध्रुव आयो हरिसों वर पाई। राजा ताहि जाहि मिलि धाई॥ नृप सुनि मन आनन्द वढ़ायो। अंतः पुरमें जाइ सुनायो॥ पुनि नृप कुटुंव सहित तहँ आये। नगर लोग सब सुनि उठि धाये॥ ध्रुव राजाके चरणन परयो। राजा कंठ लगाइ हित करयो॥ पुनि सुसुरुचिके चरणनपरयो। तासों वचन ध्रुव उच्चरयो॥ तुम उपदेश मैं हरिहि धियायो। यह उपकार न जात मिटायो॥ पुनि माताके पाँइन परयो। माता ध्रुवको अंकम भरयो॥ ध्रुव नृप सिंहासन वैठाए। नृपतप कारण वनहिं सिधाये॥ सप्तद्वीप राज्य ध्रुव कियो। शीतल भयो मातको हियो॥ यों भयो ध्रुव वर देन अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ ८॥ राग आसावरी॥ ध्रुव विमाता वचन सुनि रिसायो। दयाल कृपाल गोपाल करुणामई मातुसों सुनि तुरत शरन आयो॥ वहुरि जव वन चल्यो पंथ नारद मिल्यो कृष्ण निज धाम मथुरा वतायो। मुकुट शिर धरे वनमाल कौस्तुभगरे चतुर्भुज इयाम सुंदर धियायो॥ भये अनुकूल हरि दियो तेहि तुरत वर जगत करि राज पद अटल पायो॥ सूरके प्रभुकी शरन आयो जुनर करि जगत भोग वैकुंठ सिधायो॥ ९॥

पृथु अवतार वर्णन। राग विलावल॥ धारि पृथु रूप हरि राज्य कियो। विष्णु की भक्ति परवती जगमें करी प्रजाको सुख सकल भांति दियो॥ वेन नृप भयो वलवंत जव पृथ्वी पर ऋपिनसों कह्यो जप तपनिवारो। होइ तिहिको पतन शाप ताको दयो मारिकै ताहि जगदोपढारयो॥ भयो प्रगट आराज तव सव ऋपिन मंत्र करि वेनकी जांघको मथन कीनो जांघके मथे ते पुरुप परगट भयो इयाम तिहि भीलको राज्य दीनो॥ वहुरि जव ऋपिन भुजदक्षको मथ कियो लक्ष्मी सहित पृथु दरश दीयो। पहिरि आभरन पुनि राज्य लागे करन आनि सव प्रजा दंडवत कीयो॥ वहुरि वंदी जननि आय स्तुति करी इन्द्र अरु वरुन तुम तूल नाहीं। कह्यो नृप विना प्राक्रम न स्तुति करौ विना किए मूढ़ सुनि हर्प जाहीं॥ करो भगवानको यश सदा गुणीजन जो जगत सिंधुते पार तारैं। किये नरकी स्तुति कौन कारज सरै करै सु आपनो जन्म हारैं॥ कह्यो तिन तुम्हैं हम मनुप जानत नहीं जगतपितु जगतहित देह धारयो॥ करोगे काजजोकियो न काहू नृपति किए जस जाय हमदोप सारो॥ वहुरि सव प्रजामिलि आय नृपसों कह्यो विनाआजीविका मरत सारी। नृप धनुप वाण धरि पृथ्वी पर कोप कियो तिन गऊरूप विनती उचारी॥

बेनके राज्यमें ओपधी गिलगई होइहै सकल किरपा तुम्हारी । पर्वतनि जहां तहां रोकि मोकों लियो देहु करि कृपा एक दिशा टारी ॥ धनुप सों टारि पर्वत कियो एक दिश पृथ्वी सम करी प्रजा सब बसाई । सुर ऋपिन नृपति यों पृथ्वी दोहन करी आपुनी जीविका सबन पाई ॥ बहुरि नृप यज्ञ निन्यानवे करी शतयज्ञको जबहिं आरंभ कीनो । इन्द्र भय मान हय गहन सुतसों कह्यो सो न लै सक्यो तब आप लीनो ॥ नृपति सुतसों कह्यो जाइ हयल्याव अब इंद्र तिहि देखि हय छांड़ दीनो । नृप कह्यो सुरनके हेतु मैं यज्ञ करत इन्द्रमम अश्व किहि काज लीनो ॥ ऋषिन कह्यो तुव शतम्‌यज्ञ आरंभ लखि इन्द्रको राज्य हित कँप्यो हीयो। नृप कह्यो इन्द्रपुरकी न इच्छा मुझे ऋपिन तब पूर्ण आहुती दीयो॥यज्ञ पुरुप कह्यो कुंडते निकसि यज्ञ पूर्ण भयो इन्द्र जिमि बर कछू मांगि लीजे । पृथु कह्यो नाथ मेरे न कछु शत्रुता अरु न कछु कामना भक्ति दीजै ॥ यज्ञपुरुप गए वैकुंठ धामै जबै नौति नृप प्रजाको तब हँकारो । तिन्हैं संतोषि कह्यो देहु मांगे मुझे विष्णुकी भक्ति सब चित्त धारो॥सुनत यह बात सनकादि आए तहां मानदै कह्यो मोहिं ज्ञान दीजै । कह्यो यह ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यहै निरखि हरि रूप मुख नाम लीजे ॥ पुनि कह्यो देहु आशीश मम प्रजाको सबै हरि भक्ति नित चित्त धारे। कृपा तुम करी मैं भेद को मन धरी नहीं कछु वस्तु ऐसी हमारे ॥ बहुरि सनकादि गए आपुने धामको नृपति सब लोग हरिभक्ति लाए । सूरप्रभु चरित अगनित न गने जाँय कछु यथा मति आपुने कहि सुनाए ॥ १० ॥ पुरंजन कथा वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करों । हरि चरणारविंद उर धरों ॥ कथा पुरंजन की अब कहौं। तेरे सब संदेहै दहौं॥ प्राचिनबर्हि भूप इक भए । आयु प्रयंत यज्ञ तिहि ठए ॥ ताके मन उपजी गिल्यान। मैं कीनी बहु जियकी हान ॥ यह मम दोष कवनविधि टरै। ऐसी भांति सोच मन करै ॥ इहि अंतर नारद तहँ आए । नृपसों यों कहि वचन सुनाए॥ मैं अबहीं सुरपुर ते आयो। मग में अद्भुत चरित लखायो॥ यज्ञमाहिं जो पशु तुम मारे। ते सब ठाढे शस्त्रनिधारे॥जोहतहैं ये पंथ तुम्हारो। अब तुम अपनो आप सँभारो॥नृपकह्यो मैं ऐसोइ कियो। यज्ञकाजमैं तिहि दुख दियो॥रसनाही को कारज सारचो। मैं यों अपनो काज बिगारचो॥अब मैं यहै विनय उच्चरौं। जो कछु आज्ञाहोइ सो करौं॥कह्यो कहौं एक नृपकी कथा।उन जो कियो करो तुम तथा ॥ताहि सुनो तुम भली प्रकार। पुनि मनमें देखो जु विचार॥ता नृपको परमातम मित्र। इक छिन रहै नहीं सो अत्र॥खान पान सो सब पहुँचावे। पै नृप तासों हित न लगावै॥ नृप चौरासि लक्ष फिरि आयो। तब एहि पुर मानुष तनु पायो ॥पुरको देखि परमसुख लह्यो। रानीसों मिलाप तहां भयो॥ तिन पूँछ्यो तुम काकी अही। उन कह्यो मम सुमिरन नहिं रही ॥ पुनि कह्यो नाम कहा है तेरो। कह्यो न आवै नामं मोहिं मेरो॥ तन पुरंजीव पुरजनि राव। कुमति तासु रानीको नाव॥ आंख नाक मुख मूलद्वार। मूत्र शौच नव पुरको द्वार॥ लिंग देह नृपको निज गेह। दश इन्द्रियदासीसों नेह॥ कारण तन सुसैन स्थान । तहां अविद्या नारि प्रधान॥ कामादिक पांचो प्रतिहार। रहैं सदा ठाढ़े दरबार॥ संतोषादि न आवै पावै। विपयी भोग आइ हरषावै॥ जा द्वारे पर इच्छा होय। रानी सहित जाइ नृप सोइ॥तहां तहांको कौतुक देखि। मनमें पावै हर्ष विशेखि॥ इन्द्री दासी सेवा करै। तृप्ति न होइ बहुरि विस्तरै॥ यहि इन्द्रीको यहै सुभाइ। तृप्ति न होइ किं तोई खाइ॥ निद्रावश जो कबहूं सोवै। मिलि अविद्या सों सुधि बुधि खोवै॥ उनमत ज्यों सुख दुख नहिं जाने । जागे वहै रीति पुनि ठानै॥ संत दरश कबहूं जो होई। जग सुख मिथ्या जानै

सोई ॥ पै कुबुद्धि ठहरान न देइ । राजाको अंकम भरिलेइ ॥ राजा पुनि तब क्रीडा करै । छन भर हू अंतर नाँहि धरै ॥ जब अखेट पर इच्छा होइ । तब रथ साजि चलै नृप सोइ ॥ जा द्वारे नृप इच्छा करै । ताही द्वार होइ निःसरै ॥ चक्षादिक इन्द्री दर जानो । रूपादिक सब वचन प्रमानो ॥ मन मंत्री सो रथ हँकवैया । रथमें पुण्य पाप दोउ पहिया ॥ अश्व पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच । विषय अखेटक नृप मनरांच ॥ राजा मंत्रीसों हितमानै । ताके दुख सुख दुख सुख जानै ॥ नरपति ब्रह्म अंश सुखरूप । मन मिलि परचो दुःखके कूप ॥ ज्ञानी संगति उपजै ज्ञान । अज्ञानी सँग होइ अज्ञान ॥ मंत्री कहै अखेट सो करै । विषय भोग जीवनि संहरै ॥ निशिभय रानी पै फिर आवै । सोवतसो तिहि बात सुनावै ॥ आजु कहा उद्यम करि आए । कहै वृथा भ्रमि भ्रमि श्रम पाए ॥ कालिह जाय अस उद्यम करौं । तेरे सब भंडारनि भरौं ॥ सब निशि याही भांति विहाई । दिन भये बहुर अखेटक जाई ॥ तहां जीव नाना संहरै । विषय भोग तिहि को हत करै ॥ विषय भोग कबहूं न अघाई । यों हीं नृप नित आवै जाई ॥ एक दिन नृप निज मंदिर आयो । रानीसों अह निशि मन लायो ॥ ताके पुत्र सुता बहु भए । विषय वासना नाना सुये । कान लागिके अस कह्यो जाइ । जरा काल कन्या पुर आइ ॥ कह्यो प्रिया अब कीजै सोई । देखे नृपति कहा धौं होई ॥ देह शिथिल भई उव्यो न जाई । मानो दीनों कोट गिराई ॥ कह्यो प्रिया अब कीजे सोइ । देखो नृपति काह धौं होइ ॥ पुनि ज्वर दो दीनी पुर लाई । जरन लगे पुर लोग लोगाई ॥ कह्यो प्रिया अबकीजै सोई । देखो नृपति काहधौं होई ॥ मरन अवस्थाको नृप जानै । तौहू धरे न मनमें ज्ञानै ॥ मम कुटुंबकी कहा गति होई । पुनि पुनि मूरख सोचे सोई ॥ कालभए तिहि पकर निकारचो । सखा प्राणपति तऊ न संभारचो ॥ रानीही में मनरहिगयो । मरि विदर्भकी कन्या भयो ॥ बहुरो तिन सतसंगति पाई । कहौं सु कथा सुनौ चित लाई ॥ मेघ ध्वज सों भयो विवाह । विष्णु भक्ति को तिहि उत्साह ॥ ता संगति नव सुत तिन जाये । श्रवणा दिक मिलि हरि गुण गाये ॥ या विधि तिहि निज आयु बिताई । पूर्व पाप सब गए विलाई ॥ मरण अवस्था जब नजिकाई । ईश सखाके मन यह आई ॥ बहुत जन्म इन भ्रम भ्रम कीनो । पै इन मोकों कबहुं न चीनो ॥ तब दयालु ह्वै दरशन दीनो । कबहुं मूढ तैं मोहिं न चीनो ॥ विषय भोग हीमें पगरह्यो । जान्यो मोहिं और कहुँ योग ॥ मैंतो निकट सदाही रहौं । तेरे सकल दुख नको दहौं ॥ यह सुनिकै तिहि उपज्यो ज्ञान । पायो पुनि तिहि पद निर्वान ॥ यह कहि नारद नृपसों कही । तेरीहू तैसी गति भई ॥ मैं जु कहों सो देखि विचार । बिन हरि भजन नहीं निस्तार ॥ हरिकी कृपा मनुष्य तनु पावै । मूरख विषय हेतु सुगँवावै ॥ तिन अंगनको सुनो विवेक । खरची लाख मिलै नाँहि एक ॥ नैन दरश देखनको दिये । मूरख लखि परनारी जिए ॥ श्रवण कथा सुनिवेको दीने । मूरख परनिंदा हित कीने ॥ हाथ दए हरि पूजा हेत । तिहिं कर मूरुख पर धन लेत ॥ पग दए तीरथ जैवे काज । तिनसों चलि वित करत अकाज ॥ रसना हरि सुमिरन को करी । ताकर परनिन्दा उच्चरी ॥ यह सुनि नृप कीनो उनमान । मे हुई नृपति न दूसर आन नारद जू तुम कियो उपकार । डूबत मोहि उतारचो पार ॥ नृपति पाइ पुनि आतमज्ञान ॥ राज्य छांड़ि करि गए उद्यान । यह लीला जो सुनै सुनावै ॥ सूर हरि कृपा ज्ञानको पावै । शुकज्यों राजाको समुझायो । मैहूंता अनुसार सुनायो ॥ ११ ॥ राग नया ॥ अपुनपो आपुन हीमें पायो । शब्दहिं शब्द भयो उजियारो सतगुरु भेद बतायो ॥ जों कुरंग नाभी कस्तूरी ढूंढ़त

फिरत भुलायो । फिरि चेत्यो जब चेतन ह्वै करि आपुनही तउ छायो ॥ [राजकुंआर कंठे मणि भूषण भ्रम भयो कह्यो गँवायो ॥ दियो बताइ और सत जन तब तनुको पाप न शायो । सपने माहिं नारिको भ्रम भयो बालक कहूं हिरायो । जागि लख्यो ज्योंको त्योंहीहैं ना कहुँ गयो न आयो । सूरदास समुझे की यह गति मनही मन मुसकायो । कहि न जाइ या सुख की महिमा ज्यों गूंगो गुर खायो ॥ १२ ॥

इति श्रीमद्भागवते-सूरसागरे श्रीसूरदास कृते चतुर्थःस्कंधः समाप्तः ।

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर.

पंचमस्कंध।

राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि चरण न शुकदेव शिरनाइ। राजा सों बोल्यो या भाई॥ कहौं हरि कथा सुनौ चित धार। जाते तरो उदधि संसार ॥ ज्यों भयो ऋषभदेव अवतार । कहौं सुनो सो अवचितधार शुक वरण्यो जैसे परकार । सूर कह्यो ताही अनुसार ॥ १ ॥ ऋषभदेव अवतार वर्णन ॥ राग बिलावल । ब्रह्म स्वयंभू मनु उपजाया । ताते जन्म प्रियव्रत पायो॥प्रियव्रतके अग्नीध्र भयो । नाभि जन्म ताही ते लयो॥नाभि नृपति सुत हित जग कियो । यज्ञपुरुष तव दरशन दियो ॥ विप्रन स्तुति वेद सुनाई । पुनि कह्यो सुन त्रिभुवनके राई ॥ तुम सम पुत्र नाभिके होई । कह्यो मो सम जग और न कोई॥ मैं हर्त्ता कर्त्ता संसार । मैं लैहों नृप गृह अवतार॥ऋषभदेव तव जन्मे आई। राजाके मन भये वधाई॥बहुरो ऋषभ बड़े जब भए। नाभि राज्य दे वनको गए॥ ऋषभ राज परजा सुख पायो॥ यशताको सब जगमें छायो॥इन्द्र देखि ईर्षा मन लायो।करिके क्रोध न जल वरखायो॥ऋषभदेव तबहीं यह जानि। कह्यो इन्द्र यह कहा मन आनि॥निजवल योग नीर वरषायो।प्रजा लोग अतिही सुख पायो। ऋषभ राज मन सब उत्साह। कियो जयंतीसों पुनि व्याह॥तासों सुत निनानवे भए। भरतादिक सब हरि रंग रए॥तिनमें नव नव खंड अधिकारी।नव योगेश्वर ब्रह्म विचारी॥असी और इक द्विज व्रत लियो। ऋषभ ज्ञान सबहिनको दियो ॥ दृष्टमान नाश सब होई। साक्षी व्यापक नशै न सोई॥ ताहीसों तुम चित्त लगावहु। ताको सेवि परमगति पावहु॥संत संग सेवो हरि चरना। ताते संत संग नित करना॥बहुरो देकर भरतहिं राज। ऋषभ ममत्व देह को त्याज॥उनमतकी ज्यौं विचरन लागे। अशन वसनकी सुरतित त्यागे ॥ कोउ खवावै तो कछु खाहीं । नातरु बैठेई रहि जाहीं ॥ मूत्र पुरीष अंग लपटावै। सुगंध वास दश योजन जावै ॥ अष्ट सिद्धि बहुरो तहँ आई। ऋषभदेवपै सुख न लगाई ॥ राजा रहत हुतो तहांएक। भयो सावगीऋषिको देख ॥ वेद पुराने तजि न अन्हावे। प्रजा सकलको यहै सिखावै ॥ अबहूं श्रावग ऐसो करै। ताही को मारग अनुसरै ॥ अंतः क्रिया रहित नहिं जानै। बाहर क्रिया देखि मन मानै ॥ वरण्यो ऋषभ देव अवतार। सूरदास भागवत अनुसार ॥ २ ॥ जड़ भरत कथा वर्णन। राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणार्विंद उर धरो ॥ ऋषभ देव जब वन को गए। नव सुत नवो खंड नृप भए ॥ भरत सुभरत खंडको राव। करै सदाहि धर्म अरु न्याव ॥ पालै प्रजा सुतनकी नाईं । पुरजन वसैं सदा सुख पाई ॥ भरतहुदे पुत्रनको राज। गये वनको तज राजसमाज ॥ तहाँ करी नृप हरि की सेवा भए प्रसन्न देवन को देवा ॥ एक दिवस गंडकि तट जाई। करनलग्यो सुमिरन चित लाई ॥ गर्भ

वती हरिनी तहां आई। पानी सो पीवन नहिं पाई ॥ सुनी सिंह भय मान अवाजि। मारि फलांग चली वह भाजि ॥ कूदत ताको तनु छुटि गयो। ताके छौना सुंदर भयो ॥ भरत दया ता ऊपर आई। ल्याये आश्रम ताहि लिवाई ॥ पोपे ताहि पुत्र की नाई। खाइ आप तब ताहि खवाई ॥ सोवैं जब तब ताहि सोआवैं। तासों क्रीड़त अति सुख पावैं ॥ सुमिरन भजन बिसरि सब गयो एक दिन मृगछोना कहिं गयो ॥ ताके मोह भरत सब भयो। सब दिन विरह अग्नि अति तयो ॥ संध्या समय निकट नहिं आयो। ताके ढूंढन हित उठि धायो ॥ पग को चिह्न पृथ्वी पर देखि कह्यो पृथ्वी जहां धन पग रेखि ॥ बहुरो देख्यो शशिकी ओर। तामें दख्यो श्यामता कोर ॥ कहन लगो मम सुत शशि गोद। तासेती शशि करत विनोद ॥ ढूंढत २ बहु श्रम पायो। पै मृगछौना नहिं दरशायो ॥ मृगको ध्यान हृदय नहिं गयो। भरत देहतजिकै मृग भयो ॥ पूरब जन्म ताहि सुधि रही। आप आप सों तब यह कही ॥ मैं मृगछौना में चित दयो। ताते मैं मृगछौना भयो ॥ अब काहू से संग न करौं। हरि चरणाविंद उर धरौं ॥ संग मृगनिहूं को नहिं करै। हरे घास हू सो नहिं चरै ॥ सूखे पातरु तिनके खाई। या विधि डारचो जन्म बिताई ॥ मृग तनुतजि ब्राह्मण तनु पायो। पूर्व जन्म तहां सुमिरन आयो ॥ मन में यहै बात ठहराई। होय असंग भजों यदुराई ॥ पिता पढ़ावै सो नहिं पढ़ै। मनमें रामनाम नित रढ़ै॥ पिता तास कालवश भयो। भ्रातनिहू श्रम बहु विधि ठयो ॥ पैसो हरि हरि सुमिरतर है। और कछू विद्या नहिं गहै ॥ जड़ स्वरूपसो जहँ तहँ फिरै। अशन बसनकी सुधि नहिं धरै ॥ जैसो देहि सु तैसो खाई। नहिं तो भूखोई रहि जाई ॥ कृपिरक्षक भाइन तब कीनो। उन तहाँ हरिचरण-न चित दीनो ॥ तहँ हीं अन्न देहिं पहुँचाई। जो न देहिं भूखो रहिजाई ॥ भीलराव निज लोगनि कह्यो। मैं कालीसों यह प्रणगह्यो ॥ तुव प्रसाद मम गृह सुत होई। नरबलि देहुँ भयो बर सोई ॥ तुम काहू धन दै लै आवहु। मेरे मनकी आश पुजावहु ॥ ते खोजत खोजत तहँ आए। जहां जड़ भरत कृषी में छाए।देख्यो भरत तरुण अति सुंदर। स्थूल शरीर रहित सब द्वंदर ॥ निज नृप पास बांधि लै आए। नृपतेहि देखि बहुत सुख पाए ॥ विप्रन कह्यो ताहि अन्हवावहु। याके अंग सुगंध लगावहु ॥ तिहि देवी मंदिर लै गए। खड्ग रावके कर तिहिं दए ॥ जब राजा तिहिं मारन लाग्यो। देवी काली मन धग धाग्यो ॥ हरि जन मारे हत्या होई। ज्यों नहिं मरै करों अब सोई ॥ देवी निकसि रावको मारचो। भरत साथ यह वचन उचारचो ॥ जाने विना चूक यह भई। मैं उनसों ऐसी नहिं कही ॥ विप्रन वेद धर्म नहिं जान्यो। ताते उन ऐसो वलि ठान्यो ॥ यह सुनि ह्वांते भरत सिधायो। राजासों शुक कहि समुझायो ॥ नहीं त्रिलोकी ऐसो कोई। भक्तनको दुख दैसकै जोई ॥ ज्यों शुक नृपको कहि समुझायो। सूरदास त्योंहीं करिगायो ॥ ३ ॥ जड़ भरतरहूगण गोष्ठ वर्णन॥राग बिलावल॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो॥नृपति रहूगणके मन आई। सुनिए ज्ञान कपिलसों जाई॥चढ़ि सुख आसन नृपति सिधायो। तहां कहार एक दुख पायो॥ भरत पंथ पर देख्यो खरचो। वाके बदले ताको धरचो ॥ तिनसों भरत कछू ना कह्यो। सुख आसन कांधे पर गह्यो ॥ भरत चले पथ जीवनिहार। चलै नहीं ज्यों चलैं कहार ॥ नृपति कह्यो मारग समआह॥चलत न क्यों तुम सूधो राह॥कह्यो कहारनि हमैं न खोरि॥नयो कहार चलत पग झोरि ॥ कह्यो नृपति मोटो तू आहि। बहुत पंथ हू आयो नाहिं ॥तू जो टेढो टेढो चलत। मरिबेकी नहिं भय हिय धरत ॥ ऐसी भांति नृपति बहु भाखी। सुनि जड़भरत हृदयमें राखी ॥ मन मन

लाग्यो करन विचार । हर्ष शोक तनुको व्यवहार ॥ जैसो करै सो तैसोलहै । सदा आत्मा न्यारो रहै ॥ नृप कह्यो मैं उत्तर नाहिं पायो । मेरो कह्यो न मनमें ल्यायो ॥ नृप दिशि देखि भरत मुसुकाये । बहुरो याविधि कहि समुझाए ॥ तुम कह्यो तैंहै बहुत मोटायो । और बहुत मारग नाहिं आयो ॥ टेढ़ो टेढ़ो क्यों तू जात । सुनौ नृपति मोसों यह बात ॥ जिय कर कर्म जन्म बहु पावै । फिरत फिरत बहुते श्रम आवै ॥ अरु अजहूं न कर्म परिहैर । जाते इहिको फिरिबोटैर । तनु स्थूल अरु दूवर होइ । परमआत्मकोएनही दोइ ॥ तनु मृथा क्षण भंगुर जानो । चेतनजीवं सदा थिर मानो ॥ जीवको सुख दुख तनु सँग होई । जोरविजोर तनके संग सोई ॥देह अभिमानी जीवहिं जानै । ज्ञानी जीव अलिप्तकरि मानै ॥ तुम कह्यो मरिवेको तोहि चाह । सब काहूको है यह राह ॥ कहा जानि तुम मोसों कह्यो । यह सुनि ऋषि स्वरूप नृप लह्यो ॥ तजि सुखपाल रह्यो गहि पाइ । मैं जान्यो तुमहो ऋषिराइ ॥ भृगु कै दुर्वासा तुम होहु । कपिलकै दत्त कहो तुम मोहु ॥ कबहूं सुर कबहूं नर होई । कबहू राव रंक जिय सोई ॥ जीवं कर्म कार बहु तनु पावै । अज्ञानी तिहि देखि भुलावै ॥ ज्ञानी सदा एक रस जानै । तनके भेद भेदनहिंमानै ॥ आत्म सदा अजन्म अविनासी । ताको देह मोह बड़ फासी ॥ ऋषभ पुत्र भरत ममनाम । राज्य छांड़ि लियो वन विश्राम । तहँ मृगछौना सों हित भयो । नरतनु तजिकै मृगतनु लह्यो॥अब मैं जन्म विप्रके पायो । सबतजि हरि चरणन चित लायो ॥ ताते ज्ञानी मोहन करै । तनु कुटुंब सों हित परिहरै ॥ जबलगि भजै न चरण मुरारी।तब लगि होइ न भवजल पारी॥भव जल में नर बहु दुख लहै । पै बैराग तबहुँ नाहिं गहै ॥ सुत कलत्र दुर्वचन जुभाषै । तिन्हैं मोहवश मन नाहिं राखै ॥ जो वैवचन और कोउ कहैं । तिनको सुनिकै सहिनाहिंरहै ॥ पुत्र अन्याय करै बहु तेरे । पिता एक अवगुण नहिं हेरै ॥ और जुएक करै अन्याई । तिन बहु अवगुण देइ लगाई ॥ इक मन अरु ज्ञानेन्द्री पांच । नरको सदा नचावैंनाच ॥ ज्यों मग चलत चोर धनहरै । त्यों एक सुकृत धनहीं परिहरै ॥ तस्कर ज्यों सुकृती धन लेही । अरु हरि भजन करन नहिं देही॥ ज्ञानी इनसों संग न करै।तस्कर जानि दूरि परिहरै॥नृप यह सुनि भरतै शिरनाई बहुरि कह्यो या भांति सुनाई ॥ नर शरीर सुर ऊपर आहि । कहै ज्ञान कहिए कहँताहि ॥ ताते तुमको करत दंडौत । अरु सब नरहूं को परनौत ॥ शुक कह्यो सुन यह नृपति सुजान । लेहु ज्ञान तजि देह अभिमान ॥ जो यह लीला सुनै सुनावै । सोऊ ज्ञान भक्ति को पावै ॥ शुकदेव ज्यों दियो नृपति सुनाइ । सूरदास कह्यो पाही भाइ ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्भागवते सूरसागरे कविवर श्रीसूरदासकृते पंचमःस्कंधः समाप्तः ।

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर.

षष्ठस्कन्ध.

॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरनकरो।आधे पल कहुँ जिन विस्मरो॥शुक हरिचरणन को शिरनाइ। राजा सों बोल्यो या भाइ। कहौं हरि कथा सुनौ चित लाइ। सूरतरयो हरिके गुण गाइ ॥ १ ॥ अजामिल उद्धार वर्णन। रागबिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो॥हरिचरणारविंद उर धरो ॥हरि हरि कहत अजामिल तरयो ॥ ताको यश सब जग विस्तरयो ॥ कहौं शुक कथा सुनो चितलाइ। कहै सुनै सो नर तरि जाइ ॥ अजामिल विप्र कनौज निवासी। सो भयो वृपलीके गृहवासी॥ जाति पाँति तिन सब बिसराई। भक्ष अभक्ष मिलै सो खाई ॥ ता वृपलीके दशसुत भए । पहिले पुत्र भूलि तिन गए ॥ लघु सुत नाम नरायण धरयो । तासों हेतु अधिक करि करयो ॥ काल अवधि जब पहुँची आई। तब यम दीने दूत पठाई ॥ नारायण सुत नाम उचारयो । यमदूतनि हरि गुणनि निवारयो ॥ दूतन कह्यो बड़ो यह पापी। इनतो पाप किए हैं धापी। विप्र जन्म इन जूवे हारयो। काहेते तुम हमैं निवारयो। गुणनि कह्यो इन नाम उचारयो। नाम महातम तुम न विचारयो॥जान अजान नाम जो लेई। हरि तिहि वैकुंठ वासा देई ॥ बिन जाने कोउ ओपधि खाई। ताको रोग सकल नशि जाई ॥ त्यों जो हरि बिनु जाने कहै। सो सब अपने पापनि दहै ॥ अग्नि बिना जाने कोउ गहै। तातकालसो ताको दहै ॥ दोउ पुरुपको नाम एक होइ। एक पुरुपको बोलै कोइ॥ दोऊ ताके ओर निहारैं। हरि हूँऐसो भाव विचारै ॥ हांसीमें कोउ नाम उचारै। हरि जू ताको सत्य विचारै।मैंहूं करि कोउ लहै जुनाम। हरि जू देहिं तिन्हैं निज धाम ॥ जावनके हरि शब्द सुनावै। तावनते मृग जाहि परावै ॥ नाम सुनत यों पापपराहीं। पापी हूं वैकुंठसिधाहीं ॥ यह सुनि दूत चले खिसिआई। कह्यो तिन्हि धर्मराजसों जाई॥ अबलौं हम तुमहीं को जानत। तुमहींको दंडदाता मानत ॥ आज गह्यो हम पापी एक। तिन भय मानत हमको देख ॥ नारायण सुत हेत उचारयो । पुरुप चतुर्भुज हमैं निवारयो ॥ उनसों हमरो कछु न बसायो। ताते तुमको आनि सुनायो ॥ औरो दंडदाताको उ आही। हमसों क्यों न बतावै ताही॥ धर्मराज करि हरिको ध्यान। निज दूतनसों कह्यो बखान॥ नारायण सबके करतार। पालत अरु पुनि करत संहार ॥ तासम द्वितिया और नकोई । जब चाहै पुनि साजै सोई ॥ ताको जब उन नाम उचारयो। तब हरि दूतन तुमैं निवारयो॥हरिके दूत जहां तहँ रहैं। हम तुम उनकी सुधि नाहिं लहैं ॥ जो जो मुख हरि नाम उचारै। हरि गन तिहिं तिहिं तुरत उधारै॥नाम महातम तुम नाहिं जानौ॥नाम महातम सुनो बखानौ॥ज्यों त्यों कोउ हरि नाम ऊचरै॥निश्चय करि सो तरै पै तरै ॥ जाके गृहमें हरि जन जाई। नाम कीर्तन करै सो गाई॥

यद्यपि वै हरि नाउँ न लेहीं।तद्यपि तिहि हरि निज पद देहीं।कैसोइ पापी क्यों नहिं होई।राम नाम चित उचरै सोई।।तुमरो नहिं ता ठौर अधिकार।मैं तुमसों यह कही पुकार।।अजामेल हरिभक्तन देखि। मनमें कीनो हर्ष विशेखि।।यमदूतन को इनहि निवारचो। वा भयतें मोहिं इन्हीं उबारचो।। तब मन माहिं आनि वैराग।पुत्र कलत्र मोह सब त्याग।।हरिपदसे उन ध्यान लगायो।तातकाल वैकुंठ सिधायो।। अंतकाल जो नाम उचारै। सो सब अपने पापन जारै।।ज्ञान विराग तुरंत तिह होई।सूर विष्णु पद पावै सोई३ श्रीगुरुमाहिमा वर्णन,वृहस्पति अनादरते विश्व रूप वृत्तासुर ब्राह्मण हत्या इन्द्र प्रति, पुनिगुरुकृपासे इन्द्रासन प्राप्ति।।राग विलावल हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो।हरि चरणारविंद उरधरो।।हरि गुरु एक रूप नृपजानि।तामें कछु संदेह न आनि।।गुरु प्रसन्न हरि प्रसन्न जोई। गुरुके दुखित दुखित हरि होई।।कहौं सो कथा सुनोचित्त धारि। कहै सुनै सो तरै भवपारि ।। इंद्र इक दिन निजसभा मँझारि । बैठ्यो हुतो सिंहासन डारि सुर ऋषि सब गंधर्व तहां आए । पुनि कुवेरहू तहां सिधाए। सुरगुरुहूं तेहि औसर आयो । इंद्र उठि तिन्हैं नशीशनवायो ।। सुरगुरु लख्यो गर्व तिहिं भयो। तहँते फिर निज आश्रमगयो ।। सुरपति तब लागे पछतान। मैं यह कहा कियो अज्ञान ।। पुनि निज गुरु आश्रम चलिगयो। तिहि सुर गुरु दरशन नहिं दयो ।। यह सुनि असुर इंद्र पुर आए। किए इंद्र सों युद्ध बनाये ।। इंद्र सहित तब सब सुर भागे। आश्रम अपने सबहिन त्यागे ।। पुनि सब सुर ब्रह्मापै जाई। कह्यो वृत्तांत सकल शिरनाई।। ब्रह्मा कह्यो बुरो तुम कियो। निज गुरुको आदर नहिं दियो ।। अब तुम विश्व रूप गुरु करो। ता प्रसाद या दुखसों तरो ।। सुरपति विश्वरूप पै जाइ। दोउ कर जोर कह्यो शिरनाइ।।कृपा करो मम प्रोहित होहु। कियो वृहस्पति मोपर कोहु ।। कह्यो पुरोहित होत न भलो। जात तेज तप जप नाशि सकलो।। पै तुम विनती बहु विधिकरी। तातें मैं मनमें यह धरी।। यह कहि इंद्रहि यज्ञ करायो गयो राज्य अपनो तिन पायो। असुरनि विश्वरूपसों कह्यो। भली भाइ तू सुरगुरु भयो ।। तुव मनसालमाहिं हम आहिं ।। आहुति हमें देत क्यों नाहिं ।। तिह निमित्त तिन्ह आहुति दई। सुर-पति बात जानि यह लई ।। करिकै क्रोध तुरत तिहि मारचो। हत्याहेत न मंत्र विचारचो ।। चारि अंश हत्याके किए। चारों अंश बांटि पुनि दिए ।। एक अंश धरतीको दियो । ऊसर माहिं अन्न नहिं भयो ।। एक अंश वृक्षनको दीनो। गोंद होइ प्रकाश तिन कीनो ।। एक अंश जल को पुनि दयो। ह्वैकरि काइ जलको छयो ।। एक अंश सब नारिन पायो । तिनको ह्वै रजस्वला छायो त्वष्टा विश्वरूप को बाप। दुखित भयो सुनि सुत संताप ।। तिन करि क्रोध इक जटा उपारी। वृत्तासुर उपज्यो बल भारी ।। सो सुरपतिको मारन धायो । सुरपतिहूं ता सन्मुख आयो ।। जेतक शस्त्र किए प्रहार। सो करि लिए असुर आहार।।तब सुरपति मनमें भय मान। गयो तहां जहां श्रीभगवान ।। नमस्कार करि विनय सुनाई। राखि राखि अशरन शरनाई ।। कह्यो भगवान उपाय न आन। ऋषिदधीचि हाड़ लै दान ।। ताको तुम निज वज्र बनाव । मरिहै असुर तिसीकि घाव ।। तब सुरपति ऋषिके ढिग जाई। करीविनय बहु शीशनवाई ।। बहुरि कही अपनी सब कथा। हरि ज्यों कह्यो कह्यो पुनि तथा ।।तिन कह्यो देह मोहि अति प्यारी। सुरपति तू यह देखि विचारी ।। यह तनु क्योंहीं दियो न जावै। और देत कछु मन नहिं आवै ।। पै यह अंत नशहिहै भाई। परहित देहु तो होइ भलाई ।। तनु देवे ते नाहिन भजों। योगधारना करि यह तजों ।। गउ चटाइ मम त्वचा उपारो । हाड़नको तुम वज्र सँवारो ।। सुरपति ऋषिकी आज्ञा पाई। लियो हाड़ कियो वज्र बनाई ।। गो मुख अशुचि तबै ते भयो । ऋषिशुकदेव

नृपतिसो कह्यों इंद्र आइ तब असुर प्रचारयो। कियो युद्ध पै असुर न मारयो॥ इन्द्र हाथते वज्र छिनाई। मारयो ऐरावतको जाई॥ ऐरावत घायल जब भयो। तब वृत्तासुर को सुख भयो॥ ऐरावत अमृतको ल्याए। भयो सुचेत इंद्र तब धाए॥ वृत्तासुरको वज्र प्रहारयो॥ तिन तिरशूल इंद्रको मारयो॥ लगत त्रिशूल इंद्र मुरझायो॥करते अपनो वज्र गिरायो॥ कह्यो असुर सुरपति संभारि॥ लैकर वज्र मोहिं परिहारि॥ जो मरिहौं तौ सुरपुर जैहौं। जीते जगत माहिं यश लेहौं॥ हारि जीति नहिं जयके हाथ। कारण करता आपहि साथ॥ हमें तुमें पुतरीके भाइ। देखत कौतुक विविध नचाइ॥ तब सुरपतिलै वज्र संहारयो। जैजै शब्द सुरन उच्चारयो॥ पै इंद्रहि संतोष न भयो।ब्राह्मणहत्या दुःखहि तयो॥सो हत्या तिहि लागी धाइ। छपो सुकमलना-लमें जाइ॥ सुरगुरु जाइ तहांते ल्यायो। तासों हरि हित यज्ञ करायो॥ यज्ञ किए हत्या गई बिलाय। यों नृप बहुरि इंद्रपुर आइ॥ नृप यह सुनि शुकसों पुनि कही। ज्ञान बुद्धि असुरहिको भई। शुक कह्यो सुनो परीक्षितराइ। देहुँ तोहिं वृत्तान्त सुनाइ॥ चित्रकेतु पृथ्वीपतिराव। सुत हित भयो तासु हित चाव॥ यद्यपि रानी वरीं अनेक। पै तिहि ते सुत भयो नएक॥तागृह ऋषि अंगिरा सिधाये। अर्घ्यासनदै तिन बैठाए॥ ऋषि सों नृप निज व्यथा सुनाई। कह्यो मोहिं सो करो उपाई॥ ऋषि कह्यो पुत्र न तेर होई। होइ कहूं तो दुखदै सोई॥ नृप कह्यो एक बार सुत होई। पाछे होनी होइ सो होई॥ ऋषि ता नृपसों यज्ञ करायो। दै प्रसाद यह वचन सुनायो॥ जा रानीको तू यह दैहै। तारानी सेती सुत ह्वैहै॥ तब रानीको सो नृप दियो। तिन प्रणाम करि भोजनकियो॥ ऋषि प्रसाद ते सुत तिन जायो। सुत लड़ाइ दंपति सुखपायो॥ विप्रया चक न दीनो दान। कियो उत्सव कहा करों वखान॥ ता रानी सों नृप हित भयो। और तियनिको मन अतितयो। तिन सवहिन करि मंत्र उपाई। नृपतिकुँवर को जहर पिआई॥ बहुत वेर भइ कुँअर नजाग्यो। दासी सों रानी तब भाष्यो। ल्याव कुंअरको वेगि जगाय। दूध प्यायके बहुरि सोआय॥ दासी कुँअर जगावनआई। देख्यो कुँवर मृतककी नाई॥ दासी बालक मृतकनिहारी॥ परी धरणि पै खाइ पछारी॥ रानी तब तहां धाई आई। सुत मृत देखि गिरी मुरछाई। पुनि रानी जब सुरति संभारी। रुदन करन लागी अति भारी॥ रुदन सुनत राजा तहँ आयो। देखिकुअरको अति दुखपायो॥ तवही मूर्छित हो नृप गिरे। कवहुँक सुतको अंकम भरे॥ ऋषि नारद अंगिरा तहँ आये। राजासों यह वचन सुनाये॥ कोतू को यह देखि विचार। स्वप्न स्वरूप सकल संसार॥ सोयो होय होय सत मानै। जो जागै सो मिथ्या जानै॥ताते मृथा मोह विसारि। श्रीभगवान चरण उर धारि॥ हम तुमसों पहिलेही कही। नृप सो बात आज भइ सही॥ नृपको सुनि उपज्यो वैराग। वनको गयो राज सब त्याग॥ वनमें जाइ तपस्या करी। मरि गंधर्व देह तिन धरी॥ इक दिन सो कैलास सिधायो॥ शिवको दरशन तहां न पायो॥ उमा नग्न देखी तिन जाई। दियो शापताहि या भाई॥ तू अब असुर देह धरि जाई। मेरो कह्यो वृथा नाहिं जाई॥ उमाशाप ताको जब भयो। वृत्ता सुरसों याविधि भयो॥ हरिकी भक्ति वृथा नहिं जाई। जन्म जन्म सो प्रगटे आई॥ ताते हरि गुरु सेवाकीजै। मेरो वचन मानि यह लीजै॥ ज्यों शुक नृपसों कहि समुझायो। सूरदास त्योंही करिगायो॥ ३॥ गुरुम हिमा॥ राग सारंग गुरु विनु ऐसी कौन करै। माला तिलक मनोहर वाना लै शिर छत्र धरै। भव सागरसे बूडत राखै दीपक हाथ धरै॥ सूरश्याम गुरु ऐसो समरथ छिनमें लै उधरै॥ ४॥

इति श्रीमद्भागवते—सूरसागरे कविवर श्रीसूरदासकृते षष्ठःस्कंधः समाप्तः॥ ६॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर

सप्तमस्कन्ध.

श्रीनृसिंहरूप अवतार वर्णन राग बिलावल ॥

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि चरणन शुकदेव शिर नाई राजा सों बोल्यो या भाई ॥ कहौं सुकथा सुनो चितलाइ । सूर तरो हरिके गुणगाइ ॥ १ ॥ नरहरि नरहरि सुमिरन करो । नरहरि पद नित हृदय धरो ॥ नरहरि रूप धर‍्यो जो भाई । कहों सु कथा सुनो चितलाई ॥ हरि जब हिरण्याक्ष को मार‍्यो । दशन अग्र पृथ्वीको धार‍्यो ॥ हिरण्यकशिपु दुःसह तप कियो। ब्रह्मा आइ दरश तब दियो॥कछू तोहिं इच्छा जो होई । मांगिलेहि वरदेहुँ अब सोई ॥ राति दिवस नभ धरणि न मरौं । अस्त्र शस्त्र परिहारन धरों ॥ तेरी सृष्टि जहाँ लगिहोई । मोको मारिसकै नहिं कोई ॥ कह्यो ब्रह्मा ऐसेही होई।पुनि हरि चाहै करिहैं सोई॥यह कह ब्रह्मा निज पुर आए। हिरण्यकशिपु निज भौन सिधाए॥ भुवन आइ त्रिभुवनपति भए। इंद्र वरुण सबही भजि गए ॥ ताके पुत्र भए प्रह्लाद । भयो असुर शुनि अति अह्लाद ॥ पांच वरषको भई आइ । संडामर्का लिए बुलाइ ॥ तिनके संग चटशाल पठायो। राम नाम सों तिन चित लायो॥ संडामर्क रहे पचिहाल। राजनीति कह्यो वारंवार॥कह्यो प्रह्लाद पढत में सार। कहां पढावत और जंजार ॥ जब पांड़े इत उत काहिं गए । वालक सब इकठौरे भए ॥ कह्यो यह ज्ञान कहां तुम पायो। नारदमाता गर्भ सुनायो ॥ सबनि कह्यो देहु हमैं सिखाइ । सबहुन के माति ऐसी आइ॥ कह्यो सबनिसे तब समुझाई । सब तजि भजो चरण रघुराई ॥ रामहि राम पढो रे भाई। रामहिं जह तहँ होत सहाई॥ इहां कोऊ काहूको नाहिं। असंबंध मिलत जगमाहिं ॥ काल अवधि जब पहुँचै आई। चलते वेर कोउ संग न जाई॥ सदा संघाती श्री यदुराई । भजिये ताहि सदा लवलाई॥ हर्ता कर्ता आपै सोई। घट घट व्यापि रह्योहै जोई ॥ ताते द्वितिया और नकोई। ताके भजे सदा सुख होई॥ दुर्लभ जन्म सुलभही पाई। हरिन भजै सो नरकहि जाई॥ यह जिय जानि विषय परिहरो। राम नाम ही सदा उच्चरो॥ शत संवत मनुष्य की आई। आधी तो सोवत ही जाई ॥ कछु बालापनहीं में वीते । कछु विरधापन माहिं व्यतीते ॥ कछु नृप सेवा करत विहाई। कछुइक विषय भोगमें जाई॥ ऐसेही जो जन्म सिराई। विन हरि भजन नरक में जाई॥ बालपनो गए ज्वानी आवै । वृद्ध भयेमूरख पछतावै ॥ तीनोपन पुनि ऐसहि जाई। ताते अवहिं भजो यदुराई॥ विषय भोग सब तनमें होई। विनु नर जन्म भक्ति नहिं होई ॥ जाने करै सो पशुसमहोई। ताते भक्ति करो सब कोई॥ जब लगि काल न पहुँचै आई । हरि की भक्ति करो चितलाई॥ हरि व्यापकहै सबसंसार। ताहि भजो ऐसी विचार ॥ शिशु किसोर वृद्ध तनु

होई। सदा एक रस आतम होई॥ जानि ऐसो तनु मोहै त्यागो। हरि चरणारविंद अनुरागो॥ माटी में जो कंचन परे। त्योंही आतमतनु संचरे॥ कंचन ते जो माटी तजे। त्यों तनु मोह छांड़ि हरि भजे॥ नर सेवाते जो सुख होई। क्षणभंगुर थिर रहै न सोई॥ हरिकी भक्ति करो चित लाई। होइ परमसुख कवहुँ न जाई॥ नीच ऊंच हरि गिनत न दोइ। यह जिय जानि भजो सब कोइ॥ असुर होइ सुर भावै होई। जो हरि भजे पिआरो सोई॥ रामहिराम कहो दिन रात। नातर जन्म अकारथ जात॥ सौ बातन की एकै बात। सब तजि भजो जानकीनाथ॥ सब बढ़ियन ऐसी मन आई। रहे सबै हरिपद चित लाई॥ हरि हरि नाम सदा उच्चारैं। विद्या और न मनमें धारैं॥ तब संडा मर्का संक्याय। कह्यो असुरपति सों पुनि जाय॥ तब सुतको पढाय हमहारे। आप न पढै अरु और बिगारे॥ राम नाम नित हरटिवोकरै। राजनीति नाहिं मनमें धरै॥ ताते कह्यो तुमैं हम आइ। करनी होय सो करो उपाइ॥ हिरनकशिपु तब सुतहि बुलायो। कछुक प्रीति कछु डर देखरायो॥ बहुरो गोदमाहि बैठारि। कह्यो कहा पढ्यो विद्यासार॥ सार वेद चारोको जोई। छहो शास्त्र सार पुनि सोई॥ वही पुरातन माहिं जु सार राम नाम मैं पढ्योंसँभार॥ कह्यो याको लेजाइ उचाई। सुमिरत मम रिपुको चितलाई॥ मेरी ओर न कछू निहारो। याको पावक भीतर डारो॥ जो ऐसे करते नहिं मरै। डारि देहु गज मैमत तरे॥ पर्वत से इहि देहु गिराई। मरै जौन विधि मारो जाई॥ असुर चले तब कुँअर लिवाय हरि जू ताकी करै सहाय॥ करै उपाउ सो वृथा जाइ। नृपकी आज्ञालियो उठाइ॥ कुंअर रह्यो हरि पद चितलाइ। असुरनि गिरिते दियो गिराइ॥ राखि लियो तिन त्रिभुवन राइ। तब गजमैमत आगे डारयो॥ राम नाम तब कुँअर उचारयो। गज दोउ दंत टूटि धर परै! देख असुर यह अचरजटरै॥ बहुरो नाग दयो हुडकाइ। जिनके ज्वाला गिरि जरि जाइ॥ हरिजू तहँहू करी सहाइ। नाग रह्यो शिर नीचे नाइ॥ पुनि पावक में दियो गिराय। हरि जू ताकी कियो सहाय॥ करै उपाइ सु वृथा जाइ। तब सब असुर रहे खिसियाइ॥ कह्यो असुरपति सों पुनि जाइ। मरत नहीं यह कियो उपाइ॥ हम तो बहुत भांति पचिहारे। यह तो रामहिराम उचारे॥ नृपकह्यो मंत्र यंत्र कछु आहि। कै छल करत कछू तू आहि॥ तोको कौन बचावत आइ। सोतू मोकोदेहि दताइ॥ मंत्र यंत्र मेरे हरि नाम। घट घटमें जाको विश्राम॥ जहां तहां सोइ करत सहाइ। तासों तेरो कछु न बसाइ॥ कह्यो कहाँ सो मोहिं बताइ। नातर तेरो जिय अब जाइ॥ जो सब ठौर खंभहू होइ। कह्यो प्रह्लाद आहि तू जोहि॥ हिरण्यकशिपु क्रोध मन धारयो। जाइखंभको मुक्का मारयो॥ फटि तब खंभभयो द्वै फारि॥ निकसे हरि नर हरि वपुधारि॥ निरखि असुर चकृत ह्वै गयो। बहुरि गदालै सन्मुख भयो॥ हरि तासों कियो युद्धवनाइ। तब सुर मनमें गये डराइ॥ संध्या समय भयो जो आइ। हरिजू ताको पकरयोधाइ॥ निज जांघन पर ताहि पछारयो। नखन साथ तब उदर विदारयो॥ जय जयकार दशोंदिश भयो। असुर प्राण तजि हरिपुर गयो॥ ब्रह्मादिक सब रहे अरगाइ। क्रोध देखि कोउ निकट नजाइ॥ बहुरो ब्रह्मा सुरन समेत। नरहरि जूके जाइ निकेत॥ करि दंडवत विनय उचारि। तुम अनंत पराक्रम बनवारि॥ तुमही करत नरकनिस्तार। उत्पाति भरत करत संहार॥ करो क्षमा कियो असुर संहार। गयो न क्रोध भरो सोभार। महादेव पुनि विनय उचारी। नमो नमो भक्तन भयहारी॥ भक्त हेतु तुम असुर संहारो। श्री नरहरि अब क्रोध निवारो॥ क्रोध न गयो तब ऐसे कह्यो। क्षमो प्रलयको समय न भयो

तोहूं क्रोध न कियो विकारि । महादेव हू फिरे निहारि ॥ वहुरि इन्द्र स्तुती उचारी । मुयोअसुर सुरभये सुखारी ॥ ह्वैहै यज्ञ अव देवमुरारी । क्षमिए क्रोध सुरनं सुखकारी ॥ पुनि लक्ष्मी यों विनय सुनाई । डरों देखि यह रूप निवाई ॥ महाराज यह रूप दुरावहु । रूप चतुर्भुज मोहिं दिखावहु ॥ वरुन कुवेरादिक पुनि आए । करी विनय तिनहूं वहु भाए ॥ तोहूं क्रोध क्षमा नहिं भयो । तव सव मिलि प्रह्लादहिंकह्यो ॥ तुमरे हेतु हरि लियो अवतार । तुम अव जाइ करो मनुहार ॥ तव प्रह्लाद हरि निकट आइ । करि दंडवत परो गहि पाइ ॥ तव नरहरि जू ताहि उठाइ । ह्वै कृपालु वोल्यो याभाइ॥कहु जुमनोरथ तेरो होइ । छांड़ि विलंव करौं अव सोइ ॥ दीनानाथ दयालु मुरारी । मम हित तुम लीनो अवतारी॥असुर अशुचिहै मेरी जात । मोहिं सनाथ कियो तुम नाथ ॥ भक्त तुम्हारी इच्छा करै । ऐसो असुर कह्यो क्यां मरै ॥ भक्तनहित तुम धारी देह । तरिहैं गाइ गाइ गुण एह ॥ जग प्रभुत्व प्रभु देखा जोई । सो विनतुम क्षिण भंगुर होई ॥ इन्द्रादिक जाते भय करयो । सोमम पिता मृतकहोइ परयो ॥ साधु संग प्रभु मोको दीजै । तिहि संगत तुम भक्ति करीजै॥और न मेरी इच्छा कोइ । भक्ति अनन्य तुम्हारी होइ ॥ और जु मोपर कृपाकरो । जो सवजीवनको उद्धरो ॥ जोकहो कर्मभोग जव करिहैं । तव एजीव सकल निस्तरि हैं ॥ ममकृत इनके वदले लेहु । इनके कर्म सकल मोहिं देहु ॥ मोको नरक माहि लै डारो । पैप्रभु जू इनको निस्तारो ॥ पुनि कह्यो जीव दुखित संसारा । उपजत विनशत वारंवारा ॥ विना कृपा निस्तार नहोई । करो कृपा मैं मांगत सोई॥प्रभु मैं देखि तुम्हैं सुखपावत । पै सुर देखि सकल डरपावत ॥ ताते महा भयानकरूप । अन्तर्ध्यान करो सुर भूप ॥ हरि कह्यो मोहिं विरद की लाज । करो मन्वन्तरलों तुमराज॥राजलक्ष्मी मद नहिं होइ ।कुलइकीसले उधरे सोइ ॥ जो मम भक्त नरकमें जाइ । होइ पवित्र ताहि पर साइ ॥ जाकुल माहि भक्त मम होइ । सप्त पुरुष लै उधरै सोइ ॥ पुनि प्रहलाद राज वैठाए । सव असुरन मिलि शीश नवाए ॥ नरहरिदेखिहर्प मनकी नो अभयदान प्रह्लादहिंदीनो ॥ तव ब्रह्मा विनती अनुसारी । महाराज नरसिंह मुरारी ॥ सकल सुरनको कारज सरो । अंतर्ध्यान रूप अव करो ॥ तव नरहरि भे अंतर्ध्यान । राजा सों शुककह्यो वखान ॥ जो यह लीला सुनै सुनावै । सूरदास हरि भक्ति सुपावै ॥ २ ॥ रागरामकली ॥ पढौ भैया कृष्ण गोविंद मुरारी । कहै प्रह्लाद सुनो रे वालक लीजै जन्म सुधारी ॥ कोहै हिरण्यकशिपु अभिमानी जोर सकै तुम मारि । राखनहार वहै कोउ औरै श्याम धरे भुज चारि ॥ कर्मरूप सुदेव नारायण नाहिं दीजै सुविसारि ॥ सूरदास ता हरिसे मीता कवहूं न आवै हारि ॥३॥ राग कान्हरा ॥ जो मेरे भक्तन्ह दुखदाई । सो मेरे इहि लोक वसै जिन त्रिभुवन छांड़ि अनत कहुँ जाई ॥ शिव विरंचि नारद मुनि देखत तिनहुँ न मोको सुरति दिवाई । वालक अवल अजान रहै वह दिन दिन देत त्रास अधिकाई ॥ खंभ फारि गलगाजि मत्त वल क्रोधमान छवि वरणि न जाई ॥ नैन अरुन विकाल दशन अति नखसों हृदय विदारन आई ॥ कर जोरे प्रह्लाद जू विनवै विनय सुनो असरन शरनाई ॥ अपनी रिसै विसैरि तात मम अपराधी सुपरमगति पाई ॥ दीनदयालु कृपानिधि नरहरि अपनो जानि हृदय लियो लाई । सूरदास प्रभु पूरण ठाकुर कह्यो सकलहि तुमसे निराई ॥ ४ ॥ रागमारू ॥ ऐसी को सकै करि विना मुरारी । कहत प्रह्लाद के धारि नरसिंह वपु निकसि आए तुरित खंभ फारी ॥ हिरण्यकश्यपु निरखि रूप चकृत भयो वहुरि कर लै गदा असुर धायो । हरि गदायुद्ध तासों कियो भली विधि वहुरि संध्या समय होत आयो ॥ गहि असुर

धाइ पुनि जाइ निजजंघपर नखनिसों उदर डारचो विदारी । देखि यह सुरज वर्षा करी पुहु-पकी सिद्ध गंधर्व जय ध्वनि उचारी ॥ बहुरि बहु भाइ प्रह्लाद स्तुति करी ताहि दैराज बैकुंठ सिधाई। भक्तके हेत हरि धरचो नरसिंह वपु सूर जन जानि यह शरन आई ॥ ५ ॥ राग धनाश्री ॥ तव लगि हौं वैकुंठ न जैहों।सुनु प्रहलाद प्रतिज्ञा मेरी जव लगि तुम शिर छत्र न दैहों।।मन वच क्रम जान जिय अपने जहां जहां जन तहां तहां ऐहों।।निर्गुण सगुण होइ सव देख्यो तोसों भक्त कहूं नाहिं पैहों ॥ मो देखत मो दास दुखित भयो यह कलंक हौं कहां गवैहों ॥ हृदय कठोर कुलि शते मेरो अव नहिं दीनदयालु कहैहों ॥ गहि तनु हिरनकशिपुको चीरो फारि उदर तव रुधि र नहैहों ॥ इहि हत मिटै कहै सूरज प्रभु या कृत को फल तुरत चखैहों ॥ ६ ॥ श्रीभगवान शिव सहाय वर्णन ॥ राग बिलावल॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणार्विंद उरधरो ॥ हरि जों शिव को करी सहाई।कहौं सुकथा सुनो चितलाई ।।एक समै सुर असुर प्रचारि।लरे भये असुरन की हारि ॥ तिन ब्रह्मा के हित तप कीनो। ब्रह्मा प्रकटि दरश तव दीनो।।तब ब्रह्मा सों कह्यो शिरनाइ । जैहैहै हमरी किहि भाइ ॥ ब्रह्मा तव यह वचन उचारचो । मय माया मय कोट सँवारचो ॥ तामें वैठि सुरन जयकरो । तुम उनके मारे नहिंमरो॥असुरन यह मयको समुझाई।।तव मयदीनो कोटवनाई । लोहतले मधरूपा लायो । ताके ऊपर कनक लगायो ॥ जहँलै जाहि तहां वह जावै । त्रिपुर नामसो कोट कहावै।। गढके वल असुरन जयपाई । लियो सुरन सों अमृत छिनाई ॥ सुर सव मिलि गए शिव शिरनाई ।शिव तव कीन्ही तिनैं सहाई ॥ पै शिव जाको मारन धाई । अमृत पिआइ तिहिलेहिं जिवाई ॥तव शिव कीनो हरिको ध्यान । प्रगट भए तहां श्रीभगवान ॥ शिव हरिसों सव कथा सुनाई । हरि कह्यो अव मैं करों सहाई ॥ सुंदर गऊरूप हरि कीनो । बछरा कारि ब्रह्मा संग लीनो ॥ अमृत कुंडमें पैठी जाय । कह्यो असुरन मारो यागाय॥ एकनि कह्यो याहि मतमारो । याको सुंदर रूप निहारो ॥ कितक अमृत पीवै यहि भाई । हरि मति तिनकी फिर भर-माई ॥ हरि अमृत पिय गए अकास । असुर देखि यह भए उदास ॥ कह्यो इहिही हिरणाक्ष सुमारचो हिरण्यकशिपु इनहिं संहारचो ॥ यासों हमरो कछु न वसाई । यह कहि असुर रहे खिसियाई ॥ शिव तव कीनो युद्ध अपार । पै असुरननहिं मानी हार ॥ वाण एक हरि शिवको दियो । तासों सव असुरन क्षय कियो ॥ याविधि हरि जू करी सहाय । मैं सो तुम सों दई सुनाय ॥ शुक ज्यों नृपको कहि समुझायो । सूरदास जन त्योंही गायो ॥ ७ ॥ नारद उत्पत्ति कथा वर्णन । राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणार्विंद उर धरो ॥ हरि भजि जैसो नारद भयो । नारद व्यासदेवसों कह्यो ॥ कहौं सुकथा सुनो चित धार । नीच ऊंच हरिके इक सार ॥ गंधर्व ब्रह्मासभा मँझार । हँस्यो अप्सरा ओर निहार ॥ कह्यो ब्रह्मा दासी सुत होही । सकुच न करी देखि तैं मोहिं ॥ भयो दासीसुत ब्राह्मण गेह । तुरत छाँड़िकै गंधर्व देह ॥ ब्राह्मण गृह हरिके जन छाए । दासी दास सेवहित ल्याये ॥ हरि जन हरि चरचा जो करै । दासीसुतसो हृदय धरै ॥ सुनत सुनत उपज्यो वैराग । कह्यो जाउँ क्यों माता त्याग ॥ ताकी माता खाई कारे । सो मरगई शापकी मारे ॥दासी सुत वन भीतर जाई । करी भक्ति हरिपद चित लाई ॥ ब्रह्म पुत्र तनु तजि सो भयो । नारद यों अपने मुख कह्यो ॥ हरिकी भक्ति करै जो कोई । सूर नीच सो ऊंच सु होई ॥

इति श्रीभागवते सूरसागरे सूरदास कृते सप्तमस्कंधः समाप्तः ॥ ७ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर.

अष्टमस्कंध।

राग विलावल ॥ चालि ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणार्विंद उरधरो ॥ हरि चरणन शुकदेव शिरनाई। राजा सों बोल्यो या भाई॥ कहों हरि कथा सुनो चितलाई। सूरदास हरि के गुणगाई॥ १ ॥ गजमोचन अवतार। राग विलावल॥ गज मोचन ज्यों भयो अवतार। कहौं सुनो सो अब चितधार॥ गंधर्व एक नदीमें जाइ। देवलऋषिके पकरचो पाइ ॥ देवल कह्यो ग्राह तुम होहि।कह्यो गंधर्व दया करि मोहि॥ जब गजेंद्रके पग तू गहि है। हरि जू ताको आनि छुड़ै है॥ भए सपर्श देवतनु धरि है। मेरो कह्यो नहीं यह टरि है॥ राजा इंद्रद्युम्न कियो ध्यान। आयो अगस्त्य नहीं तिन जान॥ दियो शाप गजेंद्र तू होहि। कह्यो नृप दयाकरो ऋषि मोहि॥कह्यो तुहि ग्राह आन जब धरि है। तू नारायण सुमिरन करि है॥ याही विधि तेरी गति होई। भयो त्रिकूट पर्वत गज सोई॥ कालहि पाइ ग्राह गज गह्यो। गज बल करि करिके थकि रह्यो ॥ सुत पानी हूं बलकरि रहे। छूटचो नहीं ग्राहके गहे॥ ते सब भूखे दुःखित भए। गजको मोह छाँड़ि उठि गए तब गज हरिकी शरणा आयो। सूरदास प्रभु ताहि छुटायो ॥ २ ॥ माधवजू गज ग्राह ते छुड़ायो। निगमनि हूं मन वचन अगोचर प्रगटि स्वरूप दिखायो॥शिव विरंचि सब देखत ठाढ़े बहुत दीन दुख पायो।विन बदले उपकार करैको काहू करत न यायो॥चितवत चितहींमें चिंता मणि चक्र लये कर धायो॥ अति करुणा करि करुणामै हरि गरुडहिंहूं छुटकायो। सुनियत सुय श जु निज जन कारन कहूं न गहर लगायो॥ना जानों जु सूर इहि औसर कौन दोष बिसरायो॥३॥ राग विलावल ॥ हरि करचक्र धरे धर धावत ॥ गरुड समेत सकल सैनापति पाछे लागे आवत॥ चलि ना सकत गरुड मन डरपत बुधि बल बलहि बढावत। मनो पवन वश पत्र पुरातन अपना चरण चलावत॥को जानै प्रभु कहां चलेहैं काहू कछु न जनावत॥अति व्याकुल गति देखि देवगण सोचि सकल दुखपावत॥ गजहित धावन जन मुकरावन वेद विमल यश गावत। सूर समुझि समुझाव अनाथनि इहि विधि नाथ छुड़ावत ॥ ४ ॥ राग सारंग॥ झांई न मिट न पाई आए हरि आतुर है जब जान्यो गज ग्राह लये जात जलमें। यादवपति यदुनाथ खगपति साथ जन जान्यो विहवल तब छांडि दयो थलमें॥ नीरहूते न्यारो कीनो चक्रन चक्र शीश छीनो देवकीके नन्दलाल ऐंचि भुवतलमें। कहै सूरदास देखि नैननकी मिटी प्यास कृपा कीनो गोपिनाथ आइगए पलमें॥५॥ राग विलावल ॥ अब हौं सब दिशि हेरि रह्यो। राखत कोऊ न नाथ कृपानिधि अति बल ग्राह गह्यो ॥ सुर नर सब स्वारथके गाहक कत श्रम आन करै। उडगण उदित तिमिर नहिं नाशत विन रविरूप धरे। इतनी बात सुनत करुणामय चक्र

गहे करधाए॥ हत गज शत्रु सूरके स्वामी ताछिन सुख उपजाए ॥६॥ कूर्म अवतार समुद्रमथन अमृतादि निमित्त ॥ राग बिलावल ॥ जैसे भयो कूर्म अवतार । कहौं सुनो सो अब चितधार ॥ नरहरि हिरण्यकशिपुजब मारचो । अरु प्रह्लाद राज्य बैठारचो ॥ ताको सुत बैरोचन भयो । ताके बहुरि पुत्र बलिहुयो ॥ बलि सुरपतिको बहु दुख दयो । तब सुरपति हरि शरणनि गयो ॥ हरिजू अपनी बिरद सँभारचो । सूरज प्रभु कूरमतनु धारचो ॥ ७ ॥ रागमारू ॥ सुरन हेतु हरि कच्छपरूप धारचो । मथनकरि जलधि अमृत निकारचो ॥ चतुर्मुख त्रिदशतव विनय हरिसों करी बलि असुरसों सुरनि दुःख पायो । दीनबंधु कृपाकरन अशरन शरन मंत्र यह तिनै निज मुख सुनायो ॥ वासुकी नेति अरु मंदराचल रई कमठमें आपनी पीठ धारचो । असुरसों हेतु करि करो सागर मथन तहां ते अमृत को पुनि निकारचो ॥ रत्न चौदह बहुरि तहांते प्रगट होहिं असुरको सुरा तुम अमृत प्याऊं । जीतिहौ तब महा असुर बलवंतको मरैं नाहिं देवता यों जिवाऊं । इन्द्र मिलि सुरन बलिपास गयो बहुरि उन कह्यो कहो किहि काज आयो।त्रिदशतव समुद्रके मथनकी बात जो हुतीसो सकल कहिकै सुनायो॥बलि कह्यो बिलंब अब नेकुनहिं कीजिए मंदराचल अचल चलो धाई। दोउ इक मंत्रकरि जाइ पहुँचे तहां कह्यो अब लीजिए इहि उँचाई ॥ मंदराचल उपारत भयो बहुत श्रम बहुरिले चलनको जब उठायो । सुर असुर बहुत ताठौरही मरिगए दुहू को गर्व हरि यों नशायो॥ तब दुहू ध्यान भगवानको धरि कह्यो बिनु तुम्हारी कृपा गिरि नजाई । बाम करसों पकरि गरुड पर राखिहरि क्षीरके जलधितट धरचो जाई ॥ कह्यो भगवान अब वासुकी ल्याइए जाइ तिहि वासुकीसों सुनायो। मान भगवान आज्ञा सुआयो तहां नेतिकरि अचलको समुद्र पायो ॥ मंदराचल समुद्रमाहिं बूड़न लग्यो तब बहुरि सबन स्तुति सुनाई । कूर्म को रूप धरि धरि अचल पीठपर सुर असुर सकल मन भई बधाई॥ पूंछको तजि असुर दौरिकै मुख गह्यो सुरन तब पूंछकी ओर लीनी॥मथतभए छीन तब बहुरि स्तुति करी श्रीमहाराज निज शक्ति दीनी॥भयो हलाहल प्रकट प्रथमही मथत जब रुद्रको दयो तिहि कंठधारी । चंद्रमा बहुरि जब मथत पायो प्रगट सोउकरि कृपा दीनो मुरारी ॥ कामनाधेनु तब सप्तऋषिको दई लई उन बहुत आनन्द कीने। अप्सरा पारजातक धनुष अश्व गज श्वेत ए पांच सुरपतिहि दीने। शंख अरु कौस्तुभमणि लई आप हरि बहुरि पुनि लक्ष्मीदई दिखाई। परमसुन्दर मनो तड़ित है दर्शनी कमलकी माल करलएआई ॥ सकल भूषन मनिन के बने सकल अंग अरु बसन अरुन सुंदर सुहाये। देखि सुर असुर सब दौरि लागे गहन कह्यो मैं बरबरों आपभाए। जो मुझे चहै मैं ताहि नाहीं चहौं असुरको राज थिरनाहिं देखों। तपसियन देखि कह्यो क्रोध इनमें बहुत ज्ञानियनि में न आचारपेखौं ॥ सुरनको देखि कह्यो ए पराधीन सब देखि विधिको कह्यो यह बुढ़ायो । चिरंजीवनि देखि कह्यो नडराइ ए लोक तिहुँमाहिं कोउ चित न आयो ॥ बहुरि भगवानको निरखि सुंदर परम कह्यो इहिमाहिंहैं सबै भलाई। पै न इच्छा इनैहै काहू वस्तुकी अरु न ए देखिकै मोहि लोभाई॥ कबहूं किए भक्ति हूंके नए रीझि हैं कबहूंके बैर ए रीझि जाहीं। और गुण चाहिए सो सकल हैं इन्हैं डारि दई मालकहि गरे माहीं ॥ हरि कह्यो मम हृदय माहिं तुम रहो सदा सुरन मिलि देवदुंदुभी बजाई । धन्य धन कह्यो पुनि लक्ष्मी सों सकल सिद्ध गंधर्व जै ध्वनि सुनाई ॥ बहुरि धन्वंत्रि आयो समुद से निकसि सुरा अरु अमृत पुनि संग लायो । भयो आनन्द सुर असुरको देखिकै असुर करि बलहि अमृत छिनायो ॥ सुरन भगवानसों आइ बिनती करी

असुर सब अमृत लैगए छिनाई। कह्यो भगवान चिंता न कछू मन धरौ मैं करों अब तुम्हारी सहाई॥ परस्पर असुर तब युद्ध लागे करन होय बलवंत सोइ लै छिनाई।मोहिनी रूप धरि श्याम आए तहां देखि सुर असुर सबही लोभाई॥ आइ असुरन कह्यो लेहु यह अमृत तुम सबनदेहु बाँटिमेटो लराई॥ हँसि कह्यो नहीं हम तुम कछू मित्रता विना विश्वास वात्यो नजाई॥ कह्यो तोहि वांट पर हमैं विश्वास है देहु तुम वांट जो धर्म होई। कह्यो सब सुर असुर मिलि कियो दधि मथन देउ सब वांट है धर्म सोई॥ कह्यो जो करो सो हमैं परमान है असुर सुरपांति कारि तब विठाई। असुर दिश जिते मुसकाइ मोहे सकल सुरनको अमृत दीनो पिलाई॥ राहु शशि सूर्यके वीचमें वैठिकै मोहनी सों अमृत माँगि लीनो। सूर्य शशि कह्यो जब असुर यह कृष्ण जू लै सुदर्शन सुद्दै टूक कीनो॥ राहु शिर केतु धरको भयो तबहितें सूर शशिका सदा दुःखदाई। करत भगवान रक्षा शशि उ सूरकी होत है सुदर्शन तब सहाई॥ करि अंत ध्यान तब मोहनीरूपको गरुड़ असवार ह्वै तहां आए। असुर चकृत भए कहां गइ नारिवह सुर असुर युद्ध हेतु दोउ धाए॥ सुरनकी जीति भई असुर मारे बहुत जहां तहां गए सबही पराई। सूर प्रभु जिहि करे कृपा जीतै सुई विनु कृपा जाइ उद्यम वृथाई॥ ८ ॥ मोहिनी रूप। राग मारू॥ हरि कृपा करै जीतै सोई। बाद अभिमान जिन करो कोई। पाइ सुधि मोहनीकी सदाशिव चले जाइ भगवान सों कहे सुनाई॥असुर अजितेंद्रिय देखि मोहित भये रूप सो मोहिं दीजे दिखाई।हरि कह्यो ब्रह्म व्यापक निराकार सो निर्गुण तुम सगुणलै कहा करिहो॥ पुनि कह्यो वीनती मान लीजै प्रभू उमा देख्यो चहत कृपाधरिहो। हरि कह्यो तुमैं दिखराइ हौं रूप वह करो विश्राम इकठौर जाई। वैठि एकांत जोहन लग्यो पंथ शिव मोहनी रूप कवदे दिखाई॥ होइ अंतर्ध्यान मोहनी रूप धरि जाइ वन माहिं दीनो देखाई। सूर शशिकिधों चपला परमसुंदरी अंग भूषननि छवि क-हि न जाई॥ हाव अरु भावकरि चलत चितवत जबै कौन ऐसो जो मोहित न होई॥ उमाको छांड़ि अरु डारि मृगचर्मको जाइके निकट रह्यो रुद्र जोई॥ रुद्रको देखि करि मोहनी लाज करि लियो अंतर रुद्र अधिक मोह्यो। उमा हूं देखि पुनि ताहि मोहित भई तासु समरूप अपनो न जोह्यो॥ रुद्र धीरज तज्यो जाइ ताको गह्यो सो चली आपको तब छुडाई॥ रुद्रको वीर्य छुटिकै परयो धरणि पर मोहनी रूप हरि लियो दुराई॥देखिकै उमाको रुद्र लज्जित भए कह्यो मैं कौन यह काम कीनो। इंद्रीजित कहावत हौंतो आपुको समुझि मनमाहि ह्वै रह्यो खीनो। चतुर्भुज रूप हरि आइ दरशन दियो कह्यो शिव सोचदीजे विहाई।सम तुमारो नहीं दूसरो जगतमें कह्यो तुमरूपत व दियो दिखाई॥ नारिके रूपको देखि मोहै न जो सो नहीं लोक तिहुँ माहिं भावे। सूरस्वामी शरन रहित माया सदा को जगत जौन कपि ज्यों नचावै॥ ९ ॥ राग विलावल॥असुर द्वै हुते बलवंत भारी। सुंद उपसुंद स्वेच्छा विहारी॥ भगवती तबै दीनी देखाई। देखि सुंदरी दोउ रहे लुभाई॥ भगवती कह्यो तिनको सुनाई। युद्ध जीतै सु मुहि वरै आई॥ तब दुहूं युद्ध कीनो तहांई। करि मुये तुरंतहि दोउ भाई॥ देखिकै नारि मोहित जो होवै। आपुनो मूल या विधि सुखोवै॥ शुक नृपति पास जेहि विधि सुनाई। सूर ज्यों ही तेहि भांति गाई॥१०॥ वामन अवतार वर्णन॥राग विलावल॥ जैसे भयो वामन अवतार। कहौं सुनो सो अब चितधार॥हरि जब अमृत सुरन पियायो। तब वलि असुर बहुत दुख पायो॥ शुक्र ताहि पुनि यज्ञ करायो। सुर जै राज्य त्रिलोकी पायो॥ निन्यानवे यज्ञ पुनि किये। तब दुख भयो अदितिके हिये॥ हरि हित उन पुनि बहुत पुकारयो। सूरश्याम वामन वपु धारयो॥ ११॥ राग मलार॥ द्वारे ठाढ़े हैं द्विज वामन। चारो वेद पढ़त मुख आगर अति सुगंध सुर गावन॥ वाणी सुनि वलि पूछन लागे इहां विप्र करो आवन।

चर्चित चन्दन नील कलेवर बरसति बुंदन सावन ॥ चरण धोइ चरणोदक लीनो मांगि देउँ मन-भावन। तीन पैंड वसुधा हौं चाहौं परण कुटीको छावन ॥ इतनो कहा विप्र तैं मांग्यो बहुत रत्न देउँ गावन। सूरदास प्रभु बोल छले वलि धरचो पीठि पदपावन ॥ १२ ॥ राग मलार ॥ राजा इक पंडित पौरि तुमारी। चारो वेद पढ़े मुख आगर रहै वामन वपुधारी ॥ अपद दुपद पशुभाषा बूझै अविगत अल्प अहारी। नगर सकल नर नारी मोहे सूरज ज्योति विसारी ॥ सुनि आनंद चले बलि राजा आहुति यज्ञ विसारी। देखि स्वरूप सकल कृष्णाकृत कीनी चरण जुहारी ॥ चलिए विप्र जहां यज्ञ वेदी बहुत करी मनुहारी। जो मांगो सोइ देहुँ तुरतही हीरा रतन भँडारी ॥ रहु रहु राजा यों नहिं कहिये दूषण लागै भारी॥ हूंठ पैंडदे वसुधा हमको तहां रचौं धर्मसारी ॥शुक्र कह्यो सुन हो बलिराजा भूमिको दान निवारी। एतो विप्र न होवै राजा आए छलन मुरारी ॥ कहि धो शुक्र कहां धों कीजे आपुन भए भिखारी। जैजैकार भयो भुवमापति तीन पैंड भइ सारी ॥ आध पैंड़ दै वसुधा राजा नातरि चल सतहारी॥अब सत क्यों हारों जगस्वामी नापो देह हमारी ॥ सूरदास बलि सर्वस दीनो पावो राज्य पतारी॥ १३॥ मत्स्य अवतार वर्णन॥ रागमारू॥सुरनहेतु हरि मत्स्यरूप धारचो॥सदाही भक्त संकट निवारचो॥चतुर्मुख कह्यो श्रुति चतुर शंखा असुर लै गयो तबै परलै दिखायो॥भक्तवत्सल कृपाकरन अशरन शरन मत्स्यको रूप तहां धारि आयो॥स्नान करि अंजली जल जबै नृप लियो मत्स्यको देखि कह्यो डार दीजै। मत्स्य कह मैं गही आय तुमरी शरन करि कृपा अब मोहिं राखिलीजै ॥नृप सुनत वचन चकृत प्रथमहै रह्यो कह्यो मछ वचन किहि भांति भाख्यो-पुनि कमंडलु धरचो तहां सो बढ़िगयो कुंभ धरि बहुरि पुनि मांट राख्यो ॥ पुनि धरचो खाड़ तालावमें पुनि धरचो नदीमें बहुरि तिहि डारि दीनो। बहुरि जब बढ़िगयो सिंधु तब लैगयो तहां हरि रूप तब चीन्हलीनो ॥ कह्यो करि विनय तुम ब्रह्म अनु अंतहौ मत्स्यको रूप किहि काज कीन्हो ॥ वेद विधि चहत तुम प्रलय देखन कहत तुम दोऊ हेतु अवतार लीनो॥कबहुँ भयो राम वासुदेव कबहूं भयो और बहु रूप हित भक्त कीनो॥सातवें दिवस दिखराय हों प्रलय तुहिं सप्तऋषि नावमें बैठि आवें। तोहिं बैठारिहैं नावमें हाथ गहि बहुरि हम ज्ञान तुहि कहि सुनावैं॥सर्प इक आइहै बहुरि तुमरे निकट ताहिसों नाव मम शृंग बांधो॥यहै कहि मत्स्य प्रभु भए अंतर्ध्यान नृप तबै आपनो कर्म साधो ॥सातवें दिवस आयो निकट जलधि जब नृपति कह्यो अब कहां नाव पायो॥आइ गई नाउ तब ऋषिन तासों कह्यो आव हम नृपति तुमको बचावैं ॥ पुनि कहचो मत्स्य हरि अब कहां पाइये ऋषिन कह्यो ध्यान जियमाहिं धारो। मत्स्य अरु सर्प ता ठौर प्रगटित भए तबै तिनसोंनृपति कहि उचारचो ॥ ज्यों महाराज या जलधिते पार कियो भव जलधि हूं पार करो स्वामी।अहं ममता हमैं सदा लागी रहति मोह मद क्रोधयुत मंद कामी ॥ कर्म सुख हित करत होत तहां दुःख तब इतेपर मूढ़ नाहीं सँभारत। करन कारन महाराजहैं आपही ध्यान प्रभु कौन मनमाहिं धारत ॥ बिनु तुमारी कृपा गति नहीं नरनको जानि मोहिं आपनो कृपा कीजे॥जन्म अरु मरनमें सदा दुःखित रहत देहु मोहिं ज्ञान जो सदा जीजै। मत्स्य भगवान कह्यो ज्ञान पुनि नृपतिसों भयो सुपुराण सब जगत जान्यो। लेहु अब ज्ञान कह्यो आंखि अब मीचि तू मत्स्य जो कह्यो सो नृपति मान्यो ॥ आंखिको खोलि जब नृपति देख्यो बहुरि कह्यो हरि प्रलय माया दिखाई। कह्यो जो ज्ञान भगवान सो आनि नृपति उर निज आयु इहिविधि बिताई॥ बहुरि शंखासुरै मारि श्रुति आनिदै चतुर्मुख विविध स्तुति सुनाई ॥ सूरके प्रभूकी नित्य लीलावनी सकै कहि कौन यह कछुक गाई ॥ १४ ॥

इति श्रीमद्भागवते—सूरसागरे कविवर श्रीसूरदास कृते अष्टमःस्कंधः समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ कविवर सूरदास कृत-

श्रीसूरसागर.

नवमस्कन्ध.

राजा पुरूरवाको वैराग्य वर्णनाराग विलावल॥ शुकदेव कह्यो सुनो हो राउ। नारी नागिनि एक स्वभाउ नागिनिके काटे विष होइ। नारी चितवत नर रहे भोइ॥ नारी सों नर प्रीति लगावे। पैनारी तिहि मनहिं न ल्यावे॥ नारी संग प्रीति जो करै। नारी ताहि तुरत परिहरै॥ नृपति एक पुरूरवा भयो। नारीसंग हेतु तिन ठयो॥ तासों उन कटु वचन सुनाए। पै ताके मन कछू न आए॥वहुरो तिहि उपज्यो वैराग। गयो उरवसी को सो त्याग॥हरिकी भक्ति करत गतिपाई। कहों सुकथा सुनो चितलाई॥ एकवार महाप्रलय भयो। नारायण आपे रहिगयो॥ नारायण जलमें रहेसोई। जागि कह्यो वहुरो जग होई॥नाभि कमल ते ब्रह्मा भयो॥तिन मनते मरीचिको ठयो॥पुनि मरीचि कश्यप उपजायो। कश्यप की तिय सूरज जायो॥सूरज के वैवस्वत भयो। सुत हितसों वशिष्ठ पैगयो॥ ताकी नारि सुता हित भाष्यो॥सुनि वशिष्ठ अपने मन राख्यो॥ऋषि नृपसों जज्ञ विधि करवाई॥इला सुता ताके गृह आई॥ नृप कह्यो पुत्र हेतु यज्ञ कियो। पुत्रीभई यह अचरज भयो॥ ऋषि कह्यो रानी पुत्रीकही। मेरे मनमें सोई रही॥ ताते पुत्री उपजी आइ। करिहैं पुत्र ताहि हरिराइ॥ हरि ता पुत्री सों सुत करयो। नाम सुद्युम्न ताहि ऋषि धरयो॥ एक दिवस सुअखेटक गयो। जाइ अंविका वन तिय भयो॥वुधके आश्रम सो पुनि आयो। तासों गंधर्व व्याहं करायो॥ वहुरो एक पुत्र तिन जायो। नाम पुरूरवा ताहि धरायो॥ पुनि सुद्युम्न वशिष्ठ सों कहयो। अंवा वनमें तिय ह्वै गयो॥ ऋषि शिवसों वहु विनती करी। तव शिव यह वाणी उचरी॥ एक मास यह ह्वैहै नारि। द्वितीय मास पुरुष आकारि॥ तव सुद्युम्न अपने गृह आयो। राज समाज माहिं सुख पायो॥ तीनि पुत्र तिन और उपाए। दक्षिण राज करन सुपठाए॥ दश सुत ताके उपजे और। भयो इक्ष्वाकु सवन शिरमोर॥ सूरज वंशी सो कहवायो। रामचंद्र ताही कुल आयो॥ सोम वंश पुरूरवा सों भयो। सकल देश नृप ताको दयो॥ तिहि वंश लियो कृष्ण अवतार। असुर मारि कियो सुरन उद्धार॥ कहिहों कथा सुकरि विस्तार। पुरूरवा कथा सुनो चितधार॥ पुरूरवा गेह उरवसी आई। मित्रवरुन ते शापहिं पाई॥ नृपति देखि तेहि मोहित भयो। तिन यह वचन नृपति सों कह्यो॥ विन रतिकाल नग्न नहिं होवहु। मम मेढनि को कहूं न खोवहु॥ तव लौं मैं तुमरो संग करौं। वचन भंग भयते परिहरौं॥ नृपति कह्यो तुम कह्यो सुकरिहौं। तुमरी आज्ञा मैं अनुसरिहौं॥ तासों मिलि नृप वहु सुख माने। पट पुत्र तासों उतपाने॥ सुरपुर सों गंधर्व पुनि आयो। उरवसी सों यह वचन सुनायो॥ अव तुम इंद्रलोकको चलो। तुम विनु सुरपुर लगत न भलो॥ तिन उरवसी कह्यो या भाइ। छल वल करि सको तो लैजाइ॥ मम चलिवेको यहै उपाव। छल करि मेढनि

नभ लै जाव ॥ गंधर्व मेढनि नभ लै धाए । सोवत नृप उरवसी जगाए ॥ मम मेढ़निको लै गया कोई । देखौ तुम पुरुषै तिहिं जोई ॥ अर्ध निशा नृप ताको धायो । पै मेढ़निको कहूं न पायो ॥ इत उत देखि नृपति जव आयो । तव उरवसी यह वचन सुनायो ॥ राजा वचन तुमारो टरचो । ताते मैं तुमको परिहरचो ॥ यह कहिकै सो चली पराय । जैसे तड़ित अकासै जाय ॥ ताके विरह नृपति वहु तयो । नग्न नग्न ता पाछे धयो ॥ भ्रमत भ्रमत नृप वहु श्रम पायो । वहुरो कुरुक्षेत्रमें आयो ॥ तहां उरवसी सखिन समेत । आइ गई सुस्नान के हेत ॥ पै उनको कोउ देखै नाहिं । उनको सकल लोक दरशाहिं ॥ उरवसीसों तिलोत्तमा कह्यो । कौन पुरुष तुम भुवमें लह्यो ॥ ताके देखनकी मोहिं चाह । कह्यो पुरुष वह ठाढ़ा आह ॥ नृपको देखि सु विस्मय भई । कह्यो विरह तोहिं नृप सुधि गई ॥ वहुत दुखित है तेरे नेह । एक वेर आ दरशन देह ॥ तिन माया आकर्षण करी । तव वह दृष्टि नृपतिकी परी ॥ राजा निरखि प्रफुल्लित भयो । मानो मृतक वहुरि जिय लह्यो ॥ उरवसी निकट नृपति चलि आयो । करि विनती यह वचन सुनायो ॥ तैं मोको काहे विसरायो । मैं तुम विनु वहुतै दुख पायो ॥ तुम विनु भूख नींद नहिं आवै । पल पल युग सम मोहिं विहावै ॥ मेरे गेह कृपा करि चलो । वाही विधि मोसों हिल मिलो ॥ करचो नेह हमकामसों आहि ॥ विना काम हमरे नहिं चाहि ॥ हमसों सहस वरस हित धरै । हम तिहिको छिनमें परिहरै ॥ विन अपराध पुरुष हम मारे । माया मोह न मनमें धारे ॥ हमैं कहौ केतौ किन कोई । चाहैं करन करैं हम सोई ॥ नृप पुनि विनती वहु विधि करी । तव उरवसी वात उच्चरी ॥ वर्ष सात वीते हौं ऐहों एक रात्रि तोको सुख दैहों ॥ वर्ष सप्त वीते सो आई ॥ नरपतिसों मिलि रैन विताई ॥ प्रात होत चलिवे को चह्यो ॥ तव राजा तासों यों कह्यो ॥ तू मोको छांड़े कित जात । मोको तुम विनु छिन न विहात ॥ जव या भांति नृपति वहु कह्यो । तव उरवसी यह उत्तर दयो ॥ यह तो होनहार है नाहीं । सुरपुर छांड़ि रहौं भुव माहीं ॥ जो तुम मेरी इच्छा धरौ । गंधर्वनीके हित तप करौ ॥ तप कीनेसे देहैं आग । ता सेती तुम कीजो जाग ॥ यज्ञ किये गंधर्वलोक सिधैं हो । तहां आइ मोको तुम पै हो ॥ नृप यज्ञ करि ता लोक सिधायो । मिलि उरवसी वहुत सुख पायो ॥ जव या विधि वहु काल वितायो । तव वैराग्य नृपति मन आयो ॥ वहुत काल भोग मैं कीए । पै संतोष न आए हीए । श्री नारायणको विसरायो । विषय हेत सव जन्म गँवायो ॥ या विधि जव विरक्त नृप भयो । छांड़ि उरवसी वनको गयो ॥ वनमें जाइ तपस्या करी । विषम वासना सव परिहरी ॥ हरिपदसों नृप ध्यान लगायो । मिथ्या तनुको मोह भुलायो ॥ हरि व्यापक सव जगमें जान । हरि प्रसाद पायो निर्वान ॥ ताते वुधि त्रियसे गति तजै । श्री नारायणको नित भजै ॥ शुक जैसे नृपको समुझायो । सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १ ॥ च्यवन ऋषि कथा वर्णन ॥ राग विलावल ॥ शुकदेव कह्यो सुनो हो राव । जैसो है हरिभक्त प्रभाव ॥ हरिको भजन करै जो कोई । जग सुख पाइ मुक्ति फल सोई ॥ च्यवन ऋषीश्वर वहु तप कियो । ता सम और जगत नहिं वियो ॥ वांमी ताको लियो छिपाई । तासों ऋषि नहिं दई दिखाई ॥ ता आश्रम सरजात नृप गये । तहां जाइके डेरा दये ॥ छांड़ि तहीं सव राज समाज । राजा गयो अखेटक काज ॥ नृप कन्या तहँ खेलन गई । ऋषि दृग चमकत देखत भई ॥ पै तिहि ऋषि दृग जाने नाहिं । खेलत शूल दये तेहि माहिं ॥ रुधिर धार ऋषि आँखिन ढरी । नृपकन्या सुदेखि तव डरी ॥ शूल व्यथा सव लोगन भई । राजा कह्यो कहा भइ दई ॥ तहँके वासी नृपति वुलाये । वूझो तव तिहि कह्यो

बुझाये ॥ च्यवन ऋषि आश्रम है इहां राई। करौ वीनती उनसों जाई ॥ नृप खोजत ऋषि आश्रम आयो। ऋषि दृग देखत वहुत डरायो ॥ कह्यो कियो किन ऐसो काज । कन्या कह्यो सुनो महाराज ॥ मोते विन जाने यह भई। ऋपिके दृगनि शूल हौं दई ॥ नृप मनही मन वहु पछतायो। ऋपि सों पुनि यह वचन सुनायो ॥ महाराज तुम तो हो साध। ममकन्या ते भयो अपराध ॥ या कन्याको प्रभु तुम वरो। कष्ट शूल कृपा करि हरो ॥ लोग सकल नीको जव भयो। नृप कन्या दै गृहको गयो ॥ ऋपि समाधि हरि चरण लगाई। कन्या ऋपि हरि चरण लव लाई ॥ सुरपति ताके रूप लुभायो। वहुरि कुवेर तहां चालि आयो ॥ पै तिहि दिशि तिन देख्यो नाहीं । गये खिस्याइ दोऊ मन माहीं ॥ चौदइवर्ष भये या भाई। तव ऋपि देख्यो शीश उठाई ॥ हाड चाम तनु पर रहि गये। कृपावंत ऋपि तापर भये ॥ अश्वनी सुत इहि अवसर आयो। करि प्रणाम यह वचन सुनायो॥जो कछु आज्ञा मोको होइ। छांडि विलंव करौं अव सोइ॥कह्यो दृगनि को करौ उपाय। तुरत नेत्र तिन दिये वनाय॥कह्यो मैं यज्ञ भाग नहि पावत। वैद्य जानि मोहिं सुर वहरावत॥ ऋपि कह्यो मैं करिहौं जहां जाग। दैहों तोहिं अवश करि भाग ॥ नृपकन्या सों ऋपि यों कह्यो। तुहि ऊपर प्रसन्न मैं भयो ॥ यद्यपि कछु इच्छा नहिं मेरे। तदपि उपाय करौं हित तेरे ॥ दुउ मिलि तीरथ माहिं अन्हाये। सुन्दर रूप दुहूं जन पाये ॥ दासी सहस प्रगट तहां भई। इन्द्रलोक रचना ऋपि ठई ॥ तियको सुख ऋपि वहु विधि दियो। तासु मनोरथ पूरण कियो॥ तव सरजात रानी सों कही। जव ते कन्या ऋपि को दई ॥ तव ते सुधि कुछ नाहीं पाई। विनु प्रसंग तहां गयो न जाई ॥ यज्ञारंभ नृपति तहँ गयो। देखि ऋपाश्रम विस्मय भयो ॥ कह्यो यह विभव कहां ते आई । किन यह ऐसी वनत वनाई ॥ इहि अंतर नृप कन्या आई । पिता देखि मिलिवे को धाई ॥ नृप ताको आदर नहिं दियो । तैं यह कौन कर्म है कियो ॥ वृद्ध ऋपीश्वर को कहा भयो। कुल कलंक तैं किहि मिलि लयो ॥ कह्यो योग वल ऋपि सव कीनो। मुहिं सुख सकल भांति करि दीनो ॥ नृप प्रसन्न हो ऋपि पै आए। यज्ञ प्रसंग कहिकै गृह लाए ॥ रानी सुता देखि सुख मान्यो।धन्य जन्म करि अपनो जान्यो ॥ च्यवन नृपति को यज्ञ करवायो। अश्विनी सुत हित भाग उठायो॥इन्द्र कोप ह्वै ऋपिसों कह्यो। ताहि भाग तुम काहे दयो ॥ पुनि मारनको वज्र उठायो। पै ऋपिको मारन नहिं पायो ॥ इन्द्र हाथ ऊपर रहि गयो। तिन कह्यो दई कहा यह भयो ॥ कह्यो सुरन तुम ऋपिहिं सतायो। ताते कर रहि गयो उचायो ॥ इन्द्र विनय ऋपि सों वहु करी। तव ऋपि कृपा ताहि पर धरी ॥ सुरपति कर जव नीचे आयो। अश्विनी सुत वलि सुरमें पायो॥ऐसो हरिको भक्त प्रभाव।वरनि कह्यो मैं तुमसों राव॥हरि की भक्ति करै जो कोई। दुहूं लोकको सुख तेहि होई॥शुक ज्यों नृपसों कहि समुझायो।सूरदास योंही कहि गायो ॥ २ ॥ हलधर विवाह कथा वर्णन ॥ रागभैरों ॥ द्वारावति पति रेवत राजा॥तासम जग दुनिया न विराजा॥ता गृह जन्म रेवती लयो॥ताको लै सु ब्रह्मपुर गयो॥विधितिहि आदर दै वैठायो। तव नृप मन में अति सुखपायो ॥ तहां देखि अप्सरा अखारा। नृप कछु नहीं वचन उचारा॥जव अप्सरा नृत्य करि रही। तव राजा ब्रह्मासों कही॥मम पुत्री वर प्रापति आहि। आज्ञा होइ देउँ तेहि व्याहि ॥ ब्रह्मा कहचो सुनो नरनाह ।तेनृप तो अव जगमें नाह। हलधर को तुम देहु विवाह। व्याह योग अव सोई आह ॥ रेवत व्याह कियो जग आइ। आप कियो तप वनमें जाइ ॥ हलधर व्याह भयो या भाइ। सूरदास जन दियो सुनाइ॥ ३ ॥राजा अंवरीपकी कथा,

॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरि पद अंवरीप चितलायो । ऋषि शरापते ताहि बचायो ॥ ऋषिको ताप फेरि पठायो । शुक नृपको यों कहि समुझायो॥अंबरीष राजा हरिभक्त । रहै सदा हरिपद अनुरक्त॥श्रवण कीरत न सुमिरन करै । पद सेवन अरचन उर धरै ॥ वंदन दासीपन सो करै । भक्तन शिष्यभाव अनुसरै॥काय निवेदन सदा उचारै। प्रेम सहित नवधा विस्तारै ॥ नवमी नेम भली विधि करै । दशमीको संयम विस्तरै ॥ एकादशी करै निरहार । द्वादशी पोषै लै आहार ॥ पतिव्रता वा नृपकी नारी । अहनिशिनृपकी आज्ञाकारी । इन्द्री सुखको दोऊ त्याग ॥ धरैं सदा हरिपद अनुराग । ऐसी विधि हरि पूजै सदा हरि हित लावै सब संपदा ॥ राजकाज कछु मन नहिं धरै । चक्र सुदर्शन रक्षा करै ॥ घटिका दोइ द्वादशी जान। ऋषि आयो नृप कियो सन्मान ॥ कह्यो भोजन कीजै ऋषिराई । ऋषि कह्यो आवतहौं मैं न्हाई ॥ यह कहिकै ऋषि गये अन्हान । काल वितायो करत स्नान ॥ राजा कहै कहा अब कीजै । द्विजनकह्यो चरणोदक लीजै ॥ राजा तव करि देख्यो ज्ञान । या विधि होइ न ऋषि अपमान॥लै चरणोदक निज व्रत साध्यो॥ऐसी विधि हरिको अवराध्यो ॥ इहि अंतर दुर्वासा आए । अंबरीषसों वचन सुनाये । सुन राजा तेरो व्रत टरो । क्योंकर तेरे भोजन करों । कह्यो नृपति सुनिये ऋषिराई । मैं व्रत हित यह कर्यो उपाई ॥ चरणोदक लै व्रत प्रतिपार्यो । अबलौं अन्न न मुखमें डार्यो॥ऋषि करि क्रोध इक जटा उचारी॥सो कृत्या भइ ज्वाला भारी॥जब नृप ओर दृष्टि उनकरी । चक्र सुदर्शन सो संहरी ॥ पुनि ऋषिहू को जारन लाग्यो । तब ऋषि आपन जिय लै भाग्यो ॥ ब्रह्मा रुद्र लोकहू गयो । उनहूं ताहि अभय नहिं दयो ॥ बहुरो ऋषि बैकुंठ सिधायो । करि प्रणाम यह वचन सुनायो॥मैं अपराध भक्तको कीनो । चक्र सुदर्शन अति दुख दीनो॥ओर कहूं मैं ठौर न पायो । अशरण शरण जानिकै आयो ॥ महाराज अब रक्षा कीजै । मोको जरत राखि प्रभु लीजै ॥ हरि जू कह्यो सुनो ऋषिराई । मोपै तुहि राख्यो नाहिं जाई ॥ तैं अपराध भक्तको कीन । मैं निज भक्तनके आधीन ॥ ममहित भक्त सकल सुख तजै । और सकल तजि मोको भजै ॥ बिन मम चरण न उनके आशा । परमदयालु सदा मम आशा ॥ उनके मन नाहीं शत्राई । तातै कहौ उन्हीं पै जाई॥तुमको लैहैं वेइ बचाई । नाहीं या बिन और उपाई ॥ इहां राजा अतिही दुख लयो । ऋषि मम द्वारे ते फिरि गयो ॥ ऋषि मग जोवत वर्ष वितायो । पै भोजन तौहू न सिरायो ॥ अंवरीप पै तब ऋषि आयो । हाथ जोरि पुनि शीश नवायो ॥ ऋषिहि देखि नृप कह्यो या भाई । लेहु सुदर्शन याहि बचाई ॥ ब्राह्मण हरि हरि भक्त पियारो । तातै अब याको मति जारो ॥ चक्र सुदर्शन शीतल भयो । अभयदान दुर्वासा लह्यो ॥पुनि नृप तिहिं भोजन करवायो । ऋषि नृपसों यह वचन सुनायो ॥ मैं नाहिं भक्त महातम जान्यो । अवते भली भांति पहिचान्यो ॥ जो यह लीला सुनै सुनावै । सो हरि भक्ति पाइ सुखपावै शुक राजा सोंज्यों समझायो । सूरदास त्योंही करि गायो॥४॥ राग गूजरी ॥फिरत फिरत बल हीन भयो । कहा करों यहि त्रास कृपानिधि जप तपको अभिमान गयो ॥ धायो धर शर शैल विदिशि दिशि तहां चक्रहूं चाहि लयो॥जासे शिव विरंचि सुरपति सब काहू नेक न शरन दयो॥भाज्यो फिर्यो लोक लोकन में पुत्र पुरातन पवन हयो। सूरदास सुनि दीन जानि प्रभु तब निजजन सन्मुख पठयो ॥५॥ सौभरि ऋषि कथा वर्णन॥ राग बिलावल ॥ शुकदेव कह्यो सुनोहो राव । जैसे है हरिभक्त प्रभाव हरिको भजन करै जोकोई । जग सुख पाइ मुक्ति लहै सोई । सौभरि ऋषि यमुनातट गयो । तहां

मच्छ इक देखत भयो॥ सहित कुटुंब सो क्रीड़ाकरै ॥ अति उत्साह हृदय में धरै ॥ ताहि देखिकै ऋषिमन आई। गृहआश्रम है अति सुखदाई॥तप तजिकै गृह आश्रम करौं। कन्या एक नृपतिकी वरौं ॥ कह्यो मान्धातासों जाइ। पुत्री एक देहु मोहिंराइ॥ नृप कह्यो देखि वृद्ध ऋषि देह।हैं पचास पुत्री मम गेह ॥ अंतःपुर भीतर तुम जाहु। वरै तुम्हैं सो देहुँ विवाहु ॥ तव ऋषि मनमें करैं विचार। वृद्ध पुरुषको वरै न नार ॥ तप वल कियो रूप अति सुन्दर। गयो सु तहां जहां नृप मन्दिर ॥ सव कन्या सौभरिको वरयो। ऋषि विवाह सवहिन सों करयो ॥ ऋषि तिनके हित गेह वनाए ॥ तिनके भीतर वाग लगाए ॥ भोग समग्री भरे भंडार ॥ दासी दास गनत नहिं पार ऋषि नारी मिलि वहु सुख पाये। सहस पचास पुत्र उपजाये॥ तिनके वहुत भई संतान। कहांलौं तिनको करौं वखान ॥ वहुतकाल या भांति वितायो। पै ऋषि मन संतोष न आयो ॥ कह्यो विषयते तृप्ति न होय। केतो भोग करौ किन कोय॥ या विधि जव उपज्यो वैराग। तव तप करि कीन्यो तनु त्याग ॥ सव नारिनि सहगामिनि कियो। हरिजू तिनको निज पद दियो ॥ ताते वुध हरि सेवाकरै। हरि चरणन नितही चित धरै ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो। सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ ६ ॥ श्री गंगा भुवलोक आगमन कथा॥ राग भैरों॥शुकदेव कहयो सुनौ नरनाह। गंगा ज्यों आई जग मांह॥कहों सुकथा सुनौ चित लाई। सुने सुभवतरि सुरपुर जाई ॥ शतमों यज्ञ सगर जव ठयो। इन्द्र अश्वको हरिलै गयो ॥ कपिलाश्रम लै ताको राख्यो। सगर सुतन तव नृपको भाष्यो॥ हम सव लोक माहिं फिरि आए। है कै खोज कहूं नहिं पाए ॥ आज्ञा होइ जाहिं पाताल। जाहु तिन्हैं भाप्यो भूपाल ॥ तिनके खोदे सागर भये। कपिल आश्रम ते पुनि गये ॥ अश्व देखि कह्यो धावहु धावहु। भागि जाहि मति विलम लगावहु॥कपिल कुलाहल सुनि अकुलायो।कोप दृष्टि करि तिन्हैं जरायो ॥ सगर नृपति जव यह सुधि पाई। अंशुमानको दियो पठाई॥तिन कपिल स्तुति वहु विधि कीनी। कपिल ताहि यह आज्ञा दीनी॥ यज्ञ हेतु अश्व यह लेहु। भ्रात तुमारे भये जु खेहु ॥ सुरसरि जव भुव ऊपर आवै। उनको अपनो जल परसावै ॥ तवही उन सवकी गति होई ताविन और उपाव न कोई॥अश्व लाइ यज्ञ पूरण कियो। अंशुमान राजा पुनि भयो ॥ अंशुमान पुनि राज विहाई। गंगा हेतु कियो तप जाई॥याही विधि दिलीप तप कीनो। पै गंगा जू वर नहिं दीनो ॥ भागीरथ जव वहु तप कियो। तव गंगाजू दर्शन दियो ॥ कह्यो मनोरथ तेरो करौं। पै मैं जव अकासते परौं ॥ मोको कौन धारना करै। नृप कह्यो शंकर तुमको धरै ॥ तव नृप शिव की सेवा कीनी। शिव प्रसन्न ह्वै आज्ञा दीनी ॥ गंगासों नृप जाइ सुनाई। तव गंगाजू भुव में आई साठ सहस्र सगरके पुत्र। कीने सुरसरि तुरत पवित्र ॥ गंग प्रवाह माहिं जु अन्हाई। सो पवित्र ह्वै हरिपुर जाई ॥ गंगा इहिविधि भुव पर आई। नृप मैं तुमसों भापि सुनाई ॥ शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो। सूरदास त्योंहीं कहि गायो॥ ७ ॥ श्री गंगाविष्णु पादोदककी स्तुति वर्णन ॥ राग विलावल हरिपद कमलको मकरंद। मलिन मति मन मधुप परिहरि विषय नीरस फंद ॥ परम शीतल जानि शंकर शिर धरयो तजि चंद। नाक सरवसु लैन चाहो सुरसरीको विंद ॥ अमृत हूते अमल अति गुण स्रवति निधिआनंद। सूर तीनो लोकपरस्यो सुर असुर जस छंद। ८॥ राग भैरों॥ जय जय जय जय माधव वेनी। जगहित प्रगट करी करुणामय अगतिनको गति देनी॥ जानि कठिन कलि काल कुटिल नृप संग सजी अघ सैनी। जनु ता लगि तरवार त्रिविक्रम धरि करि कोप उपैनी ॥ मेरु मूठि वर वारि पाल क्षिति वहुत वित्तकी लैनी। सोभित अंग तरंग त्रिसंगम धरी धार अति

पैनी ॥ दरशन हूं नाशे यम सैनिक जिमि नह बालक सैनी। एक नाम लेत सब भाजै पीर सुभूमि रसैनी ॥ जाजल युद्ध निरखि सन्मुख है सुन्दर सैना वैनी । सूर परस्पर करत कुलाहल गर मूक यह रावैनी ॥ ९ ॥ राग बिलावल ॥ गंग तरंग बिलोकत नैन । अति पुनीत विष्णु पादोदक महिमा निगम पढ़त गुन चैन॥ परम पवित्र मुक्तिकी दाता भागीरथै भई वर दैन। द्वादश वर्ष सेये निशि वासर तब शंकर भाषी है लैन ॥ त्रिभुवन हार सिंगार भगवती सलिल चराचर जाके ऐन। सूरजदास विधाताके तप प्रगट भई संतन सुख दैन ॥ १० ॥ परशुराम अवतार वर्णन। राग बिलावल ॥ ज्यों भयो परशुराम अवतार। कहौं सुकथा सुनौ चितधार ॥ सहसबाहु रवि वंशी भयो । सरिता तिर इक दिनसो गयो॥निज भुजबल तिन सरिता गही। बढि गयो जल तब रावण कही। नृप तुम हमसों करो लराई।कह्यो करो मध्यान बिताई।बहुरो क्रोधवंत युध छयो।सहसबाहु तब ताको गह्यो॥ बहुरो नृप करिकै मध्यान। दीनो ताको छांड़ि निदान॥फिर नृप जमदग्न्याश्रम आयो।कामधेनु बल करि लै धायो॥परशुराम जब यह सुधि पाई। मारचो ताहि तुरंतहि धाई ॥तासु सुतनि जमदग्निहि मारचो। परशुराम रेणुका हँकारचो॥ मारचो क्षत्री इकइस बार। यों भयो परशुराम अवतार॥ शुक नृप सों ज्यों कहि समुझायो। सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ ११ ॥ राग धनाश्री ॥ परशुराम जमदग्नि गेह लीनो अवतार। माता ताकी यमुन जल लेन गई इक बार ॥ लागी तहां अवार तिहि ऋषि करि क्रोध अपार। परशुराम सों यों कही माको वेगि संहार ॥ और सुतन तब कही पिता नहिं कीजै ऐसी। क्रोधवंत ऋषि कह्यो करौ इनसों हू वैसी ॥ परशुराम तिन सबनको मारचो खड्ग प्रहार। ऋषि कह्यो होइ प्रसन्न वर मांगों देउँ कुमार ॥ परशुराम तब कह्यो यहै वर देहु तात अब। जाने नाहिन मुए फेरिकै जीवैं ये सब ॥ ऋषि कह्यो यह वर दियो मैं इनको देहु उठाइ। परशुराम उनको दियो सोवत मनो जगाइ ॥ परशुराम वन गए तहां दिन बहुत लगाये । सहसबाहु तिहि समय जमदगिन आश्रम आए॥ कामधेनु जमदग्नि की लै गयो नृपति छिनाय । परशुराम सों बोलि ऋषि दियो वृत्तान्त सुनाय ॥ परशुराम सुनि पिता वचन ताको संहारचो॥ कामधेनु दई आनि वचन ऋषिको प्रतिपारचो। सहसबाहु के सुतन पुनि राखी घात लगाइ । परशुराम जब वन गयो मारचो ऋषि को धाइ॥ऋषि की यह गति देखि रेणुका रोइ पुकारी ॥ परशुराम तुम आइ लगत क्यों नहीं गोहारी ॥ यह सुनिकै आयो तुरत मारचो तिन्हैं प्रचार। बहुरो जिय धरि क्रोध हति क्षत्रीबीसिकबार ॥ जग अराज है गयो ऋषिन तब अति दुख पायो । लै पृथ्वी को दान ताहि फिर वनहिं पठायो ॥ बहुरि राज्य दियो क्षत्रियनि भयो ऋषिन आनंद। सूरदास पावत हरष गावत गुण गोविंद ॥१२ ॥ रामअवतार कारण। राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो हरि चरणाविंद उर धरो॥ जय अरु विजय पार्षद दोइ। विप्र शराप असुर भये सोय ॥ एक वराह रूप धरि मारचो। एक नृसिंह रूप संहारचो ॥ रावण कुंभ कर्ण सोइ भये। राम जन्म के तिनके हित लए॥ दशरथ नृपति अयोध्या राव। ताके गृह कियो आविर्भाव ॥ नृपसों ज्यों शुकदेव सुनायो। सूरदास त्योंही कहि गायो ॥ १३ ॥ बालकांड श्रीराम जन्म वर्णन। राग कान्हरा ॥ आजु दशरथके आंगन भीर। आए भुव भार उतारन कारन प्रगटे श्याम शरीर ॥ फूले फिरत अयोध्या वासी गनत न त्यागत चीर। परिरम्भन हँसि देत परस्पर आनँद नैननि नीर ॥ त्रिदश नृपति ऋषि व्योम विमाननि देखत रहे न धीर ॥ त्रिभुवन नाथ दयालु दरश दै हरी सबन की पीर ॥ देत दान राख्यो न भूप कछु महा बड़ेनगहीर। भये निहाल सूर सब याचक जे याचे

रघुवीर ॥ १४ ॥ अयोध्या बाजत आज बधाई । गर्भ मुच्यो कौशल्या माता रामचन्द्र निधि आई ॥ गावैं सखी परस्पर मंगल ऋषि अभिषेक कराई । भीर भई दशरथके आंगन साम वेद ध्वनि गाई ॥ पूछत ऋषिहि अयोध्याको पति कहि हो जन्म गुसाईं । बुद्धवार नौमी तिथि नीकी चौदह भुवन बड़ाई ॥ चारि पुत्र दशरथ के उपजे तिहूंलोक ठकुराई । सदा सर्वदा राज राम को सूरदादि तहां पाई ॥ १५ ॥ रघुकुल प्रगटे हैं रघुवीर । देश देश ते टीका आयो रतन कनक मनि हीर ॥ घर घर मंगल होत बधाई अति पुरवासिन भीर । आनंद मगन भये सब डोलत कछू न शोध शरीर ॥ मागध वंदी सूत लुटाए गउ गयंद हय चीर । देत अशीश सूर चिरजीयो रामचन्द्र रणधीर ॥ १६ ॥ शर क्रीडा वर्णन । राग बिलावल ॥ करतल सोभित बान धनुहियां । खेलत फिरत कनक मय आंगन पहिरे लाल पनहियां ॥ दशरथ कौशल्या के आगे लसत सुमन की छहियां । मानो चारि हंस सरवर ते बैठे आइ सदहियां ॥ रघुकुल कुमुद चंद चिंतामणि प्रगटे भूतल महिया । यहै देन आए रघुकुल को आनंद निधि सब गहियां ॥ ये सुख तीनि लोकमें नाहीं जो पाए प्रभु पहियां । सूरदास हरि बोलि भगतको निरवाहतदै बहियां ॥१७॥ राग बिलावल॥ धनुही बान लये कर डोलत । चारोबीर संग इक सोहत वचन मनोहर बोलत लछिमन भरत शत्रुघन सुंदर राजिवलोचन राम । अति सुकुमार परम पुरुषारथ मुक्ति धर्म धन काम॥ कटि पट पीत पिछौरी बांधे काग पच्छ शिप शीश । शर क्रीड़ा दिन देखत आवत नारद- सुर तैंतीस ॥ शिवमन शोच इन्द्रमन आनँद सुख दुख ब्रह्म समान ॥ दिति दुर्बल अति अदिति हृष्ट चित देखि सूर संधान ॥ १८ ॥ विश्वामित्र यज्ञ रक्षा ताडका वध सीतास्वयंबर । बन । ॥ राग सारंग ॥ दशरथसों ऋषि आनि कह्यो । असुरन सों यज्ञ हौन न पावत राम लछन तब संग दयो ॥ मारि ताड़का यज्ञ करायो विश्वामित्र आनंद भयो । सीय स्वयंवर जानि सूर प्रभुको ऋषिलै ता ठौर गयो ॥ १९ ॥ सीतापति दर्शन ॥ राग बिलावल॥ देखनको मंदिर आनि चढ़ी । रघुपति पूरनचंद बिलोकत मानो उदधि तरंग बढी ॥ पिय दरशन प्यासी अति आतुर निशिवासर गुन आन रढ़ी । तजिं कुलकानि पीय मुख निरखत शीशनाइ आशीश पढ़ी ॥भई देह जों खेह करम- वश ज्यों तट गंगा अनलदढ़ी । सूरदास प्रभु दृष्टिं सुधानिधि मानो फेरिं बनाइ गढ़ी ॥ २० ॥ सीता मनोरथ पूरण ॥ राग सारंग ॥ चितै रघुनाथ वदनकी ओर । रघुपतिसों अब नेम हमारो विधि सों करति निहोर ॥ यह अति दुसह पिनाक पिताप्रण राघव वयस किशोर । इहते दीरघ धनुष चढै क्यों यह सखि संशयमोर ॥ सिय अंदेश जानि सूरज प्रभु लियो करजकी कोर । टूटत धनु नृप लुके जहां तहां ज्यों तारागण भोर ॥ २१ ॥ दशरथ को जनकपुर आगमन रामजूके बिवाहहेतु ॥ महाराज दशरथ तहँ आये । ठाढे जाय जनक मंदिरमें मोतिन चौक पुराये ॥ विप्र लगे ध्वनि वेद उचारन युवतिन मंगल गाये । सुर गंधर्वगन कोटिक आए गगन विमानन छाये ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन ब्याह निरखि सुखपाये । सूर भयो आनंद नृपतिमन दिवि दुंदुभी बजाए ॥ २२ ॥ कंगना खोलन ॥ राग आसावरी ॥ कर कँपै कंगन नहिं छूटै । राम सुपरस मगन मय कौतुक निरखिं सखी सुख लूटै ॥ गावत नारि गारि सब दैदै तात भ्रात की कौन चलावै । तब कर डोर छुटै रघुपति जू जो कौशल्या माइ बुलावै ॥ पुंगीफल युत जल निर्मल धरि आनी भरि कुंडी जु कनककी । खेलत जूप युगल युवतिनमें हारे रघुपति जीति जनककी ॥ घेरे निशान अजिर गृह मंगल विप्रवेद अभिषेक करायो । सूर अमित आनं दकुशलपुर सोई शुकदेव पुराणनि गायो॥२३॥

धनुभंग पाणिग्रहणलीला ॥ राग नट ॥ ललितगति राजत अति रघुबीर । नरपति सभा मध्य भये ठाढ़े युगल हँसत मति धीर ॥ अलख अनंतअमित महिमाबल कटि कसि रख्यो तुनीर । लघु धनु काकपक्ष शिर शोभित इक इक द्वैद्वै तीर ॥ भूपण विविध विपद अंवर युत सुन्दर श्याम शरीर । देखत मुदित चरण परसे सुर व्योम विमानन भीर॥ प्रमुदित जनक निरखि अंवुज मुख विगत नयन मन पीर । तात कठिन प्रण मानि जानि जिय जनकसुता आधीन ॥ करुणा मय जब चाप लियो कर बांधि सुदृढ़ कटि चीर । भुव भृत शीश नमित जु गर्वगत पावक संच्यो नीर ॥ डुलत महीधर भौ फनपति चल कूरम अति अकुलान । दिग्गज चलित खलित मुनि आसन इन्द्रादिक भयमान ॥ रवि मग तज्यो तरकि ताके इत उत पथ गएकी आन ॥ शिव विरंचि व्याकुल भये ध्वनि सुनि जब तोरचो भगवान ॥ भनन शब्द प्रगटित अति अद्भुत अष्टदिशा नभ पूर । श्रवण हीन सुनिभये अष्टकुल नाग वगरि भयचूर ॥ अष्ट श्रवण पूरित ब्रह्मा सुनि सदा सुभट वड़ पूर । मोहित सकल सयान जानि जिय महाप्रलयको पूर ॥ पाणिग्रहण रघुवर वर कीनो जनकसुता सुख दीन । जय जय धुनि सुनि करत अमर गन नर नारी लव लीन ॥ दुष्टन दुष्ट संत संतनको नृप व्रत पूरन कीन। रामचन्द्र दशरथहिं विदा कीर सूर दास आधीन॥२४॥जनक दशरथ रामजी सीता समेत विदा करण । राग सारंग॥दशरथ चले अवध आनन्दत । जनकराइ वहु दाइज दै करि वार वार पद वंदत ॥ तनया जामातनिको समुदत नैन नीर भरि आए । सूरदास दशरथ आनन्दित चले निशान वजाए ॥ २५ ॥ मार्ग विषे परशुरामको रामजीसों मिलाप परस्पर विवाद ॥ परशुराम तेहि अवसर आयो । कठिन पिनाक कह्यो किन तोरचो क्रोध वंत यह वचन सुनायो ॥ विप्र जानि रघुवीर धीर दोउ हाथ जोरि शिरनायो । वहुत दिननको हुतो पुरातन हाथ छुअत उठि आयो ॥ तुम तौ द्विज कुल पूज्य हमारे हम तुम कौन लराई। क्रोधवंत कछु सुन्यो नहीं लयो सायक धनुप चढ़ाई ॥ तबहूँ रघुपति क्रोध न कीनो धनुप वान संभारचो । सूरदास प्रभु रूप समुझि पुनि परशुराम पग धारचो॥२६॥ अवधपुरी प्रवेश । राग सारंग॥ अवधपुर आए दशरथ राइ । राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन सोभित चारो भाइ॥ घुरत निसान मृदंग शंख ध्वनि भेर झांझ सहनाइ । उमगे लोग नगरके निरखत अति सुख सव हनि पाइ॥ कौशल्या आदिक महतारी आरति करति वनाइ । यह सुख निरखि मुदित सुर नर मुनि सूरदास वलि जाइ ॥ २७ ॥ दशरथ विचार रामजीको राज्य दे आप वन गवन, कैकेयी विनती, भरत राज ॥ महाराज दशरथ मन धारी । अवधपुरीको राज राम दै लीजै व्रत वन चारी ॥ यह सुनि वोली नारि कैकयी अपनो वचन संभारो । चौदह वर्ष रहैं वन राघव छत्र भरत शिर धारो ॥ यह सुनि नृपति भयो अति व्याकुल कहत कछू नहिं आई । सूर रहे समुझाइ वहुत पै कैकयी हठ नहिं जाई ॥ २८ ॥ दशरथ कौशल्या विनय । राग कान्हरा ॥ महाराज दशरथ पुनि सोवत । हा रघुपति लछिमन वैदेही सुमिरि सुमिरि गुण रोवत ॥ त्रिय चरित्र मयमत्त न समुझत उठि पखाल मुख धोवत । महा विपरीत रीत कछु औरै वारवार सुख जोवत ॥ परम कुबुद्धि कह्यो नहिं समुझत राम लपन हँकराये । कौशल्या अतिं परम दीन ह्वै नैन नीर भरि आये ॥ विह्वल तन मन चकित भई सुनि सा प्रतच्छ सुपिनाये । गदगद कंठ सूर कोशलपुर सोर सुनत दुख पाये ॥ २९ ॥ दशरथ पश्चाताप कैकेयी प्रति वचन ॥ फिरि फिरि नृपति चलावत वात । कहो सुमति कहा तोहिं पलटी प्राण जीवन कैसे वनजात ॥ हाहा राम लक्ष्मण अरु सीता फल भोजन जु डसावैं पात । ह्वै वियोग

शिर जटा धरैं द्रुम चर्म भस्म सब गात ॥ बिन रथ रूढ़ दुसह दुख मारग बिन पदत्रान चलैं दोउ भ्रात । एहि विधि सोच करत अतिहीं नृप जानकि ओर निरखि बिलखात ॥ इतनी सुनत सिमिटि सब आये प्रेम सहित धारे अश्रुपात । तादिन सूर सहर सब चकृत सच रस नेह तज्यो पितु मात ॥ ३० ॥ कैकेयी वचन राम प्रति । राग सारंग ॥ सकुचनि कहत नहीं महाराज । चौदह वर्ष तुम्हैं वन दीनो मम सुतको निज राज ॥ तब आयसु शिर धरि रघुनायक कौशल्या ढिग आए । शीश नाइ बन आज्ञा मांग्यो सूर सुनत दुख पाये ॥ ३१ ॥ राम जू प्रति दशरथ विलाप ॥ रघुनाथ पियारे आजु रहो हो । चारि याम विश्राम हमारे छिन छिन मीठे वचन कहो हो ॥ वृथा होइ वर वचन हमारुरी कैकयी जीव कलेस सहो हो । आतुर ह्वै अब छांडि कुशल पुर प्राणजिवन कित चलन कहो हो ॥ विछुरत प्राण पयान करैंगे रहो आजु पुनि पंथ गहो हो । अब सूरज दिन दर्शन दुर्लभ कलपि कमल कर कंठ गहो हो ॥ ३२ ॥ राग गूजरी ।श्रीराम वचन जानकी प्रति तुम जानकी जनकपुर जाहु । कहां आनि हम संग भरमिहो बन दुख सिंधु अथाहु ॥ तजि वह जनकराज भूषण सुख कत तृण तलय विपिन फल खैहो । ग्रीषम कमल बदन कुम्हिलैहै तजि सर निकट दूर कितन्हैहो ॥ जिन कछु वृथा सोच मन करिहौं मातु पिता सुख दैहो । तुम फिरि रहौ संग मैं तेरे जो वन बसि पछितैहो ॥ होनी होइ कर्मकृत रेखा करिहौं तासु वचन निरवाहु । सूर सत्य जो पतिव्रत राखो तौ उठि संग चलौ जिन जाहु ॥ ३३ ॥ जानकी वचन श्रीराम जू प्रति ॥ राग केदारा ॥ ऐसी जिय जिनि धरो रघुराई । तुमसों तजि प्रभु मोसी दासी अनत न कहूं समाई ॥ तुमरो रूप अनूप भानु ज्यों जब नैनजि भरि देखौं । ताछिन हृदय कमल परिफुल्लित जन्म सफल करि लेखौं ॥ तुमरे चरन कमल सुखसागर यह व्रत हौं प्रतिपलिहौं सूर सकल सुख छांड़ि आपुनो वन विपदा संग चलि हौं ॥ ३४ ॥ श्रीराम वचन लक्ष्मण प्रति विदा करन हेतु । राग गूजरी ॥ तुम लछमन निज पुरहि सिधारो । बिछुरन भेट देहु लघु बंधू जियत न जैहै शूल तुम्हारो ॥ यह भावी कछु और काज है सुको जो याको मेटन हारो ॥ तुम मति करो अवज्ञा नृप की यह दूषण तो आगे भारो ॥ याको कहा परेषो हरषो मधु छीलर सरितापति खारो । सूर सुमित्रा अंक दीजियो कौशल्या परणाम हमारो ॥ ३५ ॥ लक्ष्मण संगलेन ॥ राग सारंग ॥ लछमन नैन नीर भरि आयो उत्तर कहत कछू नहिं आयो रह्यो चरण लपटायो ॥ अंतर्यामी प्रीति जानिकै लक्ष्मण लीनो साथ । सूरदास रघुनाथ चले बन पिता वचन धरि माथ ॥ ३६ ॥ अहल्या तरन ॥ राग सारंग ॥ गंगा तट आए श्रीराम । तहां पषाण रूप पग परसे गौतम ऋषिकी वाम ॥ गई अकास देव तनु धरिकै अति सुन्दर अभिराम । सूरदास प्रभु पतित उधारन विरद कितक यह काम ॥ ३७ ॥ लक्ष्मण केवट संवाद ॥ रागमारू ॥ रे भैया केवट ले उतराई । रघुपति महाराज इत ठाढे तैं कित नाव दुराई ॥ अबहिं शिला ते भई देव गति जब पगु रेणु छुआई । हौं कुटुंब काहे प्रतिपारौं वैसो यह ह्वै जाई ॥ जाके चरन रेनुकी महिमा सुनियतु अधिक बड़ाई । सूरदास प्रभु अगनित महिमा वेद पुराननि गाई ॥ ३८ ॥ केवट विनय ॥ राग कान्हरा ॥ नवका नाहीं हौं लै आऊं । प्रगट प्रताप चरण को देखौं ताहि कहां लौ गाऊं ॥ कृपासिंधु पै केवट आयो कंपत करत जुवात । चरण परसि पापान उड़त है मति वेरी उड़ि जात ॥ जो यह बधू होय काहू की दार स्वरूप धरे । छूटे देह जाइ सरिता तजि पगसों परस करे ॥ मेरी सकल जीविका यामें रघुपति मुक्ति न कीजै । सूरजदास चढो प्रभु पाछे रेणु पखारन दीजै ॥ ३९ ॥ केवट वचन राम

प्रति । राग रामकली ॥ मेरी नवका जिन चढौ त्रिभुवन पतिराई । मो देखत पाहन उड़े मेरी काठ कि नाई ॥ मैं खेवीही पारको तुम उलटि मँगाई । मेरो जिय योंहीं डरै मति होहि शिलहाई ॥ मैं निर्बल मेरे बलनहीं जो और गढाऊँ । मेरो कुटुंब माहीं लग्यो ऐसी कहां पाऊँ ॥ मैं निर्धन मेरे धन नहीं परिवार घनेरो । सेमर ढाक पलाश काटि बांधो तुम वेरो ॥ वार वार श्रीपति कहै केवट नाहिं मानै । मन परतीति न आवै उडतीही जानै ॥ नियरेहीं जल थाह है चलो तुमैं बताऊँ । सूरदासकी वीनती नीके पहुचाऊं ॥ ४० ॥ पुरवासी वचन जानकी मति सखरी कौन तिहारी जात । राजिव नैन धनुष कर लीने वदन मनोहरगात ॥ लज्जित रही पुर बधू पूछे अंग अंग मुसक्यात । अति मृदु वचन पंथ बन विहरत सुनियत अद्भुत बात ॥ सुन्दर नैन कुँवर सुन्दर दोउ सूर किरन कुम्हिलात । देखि मनोहर तीनो मूरति त्रिविध ताप तनु जात ॥ ४१ ॥ सीता सैन, पति जतावन । राग धनाश्री ॥ कहि धौं सखी बटोहीको हैं । अद्भुत बधू लये संग डोलत देखत त्रिभुवन मोहैं ॥ परम सुशील सुलक्षण जोरी विधि की रची न होई । काकी अब उपमा यह दीजै देह धरेधौं कोई ॥ इहि में को पति त्रिया तुम्हारो पुरजन पूछे धाई । राजिवनैन मैनकी मूरति सैनन माँहि बताई ॥ गए सकल मिलि संग दूरि लों मन न फिरत पुरवास । सूरदास स्वामीके बिछुरत भरि भरि लेत उसास ॥ ४२ ॥ दशरथ माणतजन श्रीरामहेतु ॥ तात वचन रघुनाथ जबै बन गौन कियो । मंत्री गयो फिरावन रथ लै रघुवर फेरि दियो ॥ भुजा छुड़ाइ तोरि तृण ज्यों हित करि प्रभु निठुर हियो । सुरत साल ज्वाला उर अंतर ज्यों पावकहिं पियो ॥ यह सुनि तात तुरत तनु त्यागो बिछुरत तात वियो । इहि विधि विकल सकल पुरवासी नाहीं चहत जियो ॥ पशु पंछी तृण कण त्याग्यो अरु बालक पय न पियो । सूरदास सियनाथ बोल हित पतिव्रत सुख जु कियो ॥ ४३ ॥ राजाको तेल घट स्थापन, मंत्रीगमन भरत निकट । राग सारंग ॥ राजा तेल द्रोनि में डारे । सात दिवस मारग में वीते देखे भरत पियारे ॥ जाइ निकट हिय लाइ दोउ शिशु नैन उमग जलधारे । कुशल छेम पूँछत कौशल्या राजा कुशल तिहारे ॥ कुशल राम लछमन वैदेही ते हैं प्राण हमारे । कुशल क्षेम अवधेक पुरजन दासि दास प्रतिहारे ॥ कुशल राम लछमन बैदेही तुम हित काज हँकारे । सूर सुमंत ज्ञानि ज्ञानद्भुत महिमा समय विचारे ॥ ४४ ॥ कौशल्या विलाप, भरत आवन, माता पर अतिक्रोध । राग गूजरी ॥ रामहिं राखौ कोऊ जाई । जबलौं भरत अयोध्या आवै कहत कौशल्या माई ॥ पठवो दूत भरतको ल्यावन वचन कह्यो शिरनाई । दशरथ वचन राम वन गवने यह कहियो अरथाई ॥ आए भरत दीनह्वै बोले कहा कियो कैकयि माई । हम सेवक वा त्रिभुवनपतिके सिंहहि बलि कौवा क्यों खाई ॥ आजु अयोध्या जल नहिं अचवों ना मुख देखौं माई । सूरदास राघवके बिछुरे मरों भवन दौलाई ॥ ४५ ॥ भरत शत्रुघ्न वचन माता प्रति । राग केदारा ॥ तैं कैकयी कुमंत्र कियो । अपने मुख करि काल हँकारयो हठ करि नृप अपराध लियो ॥ श्रीपति चलत रह्यो कहि कैसे तेरो पाहन कठिन हियो । हम अपराधिनके हित कारन तैं रामहिं वनवास दियो ॥ कौन काज यह राज हमारे इहि पावक परि कौन जियो । लोटत सूर धरणि दोउ बंधू मनो तपत विप विषय पियो ॥ ४६ ॥ राग सोरठ ॥ राम कहां गएरी माता । सूनो भवन सिंहासन सूनो नाहीं दशरथ ताता ॥ धिग तेरो जन्म जिवन धृग तेरो कही कपट मुख बाता । सेवक राज साहिब वन पठ्ये यह कब लिखी विधाता ॥ मुखारविंद हम देखि जीवतें ज्यों चकोर शशिराता ॥ सूरदास कौशल्यानंद बन कहा अयोध्या तेरो नाता ॥ ४७

॥ राग कान्हरा॥ गुरू वशिष्ट भरत समुझायो। राजाको परलोक संवारो युग युग यह चलि आयो॥ चंदन अगर सुगंध और सब विधि करि चिता बनायो। चले विमान संग गुरु पुरजन तापर राज पुढायो। दिन दश लौं जल कुंभ साजि शुचि दीपदान करवायो। भस्म अंत तिल अंजलि दीनो देव विमान चढ़ायो॥ जानि एकादश विप्र बुलायो भोजन बहुत करायो। दीनो दान बहुत नाना विधि इहि विधि कर्म पुजायो॥ सब करतूति कैकयीके शिर जिन अभिलाप उपायो। इहिविधि सूर अयोध्यावासी दिन दिन काल गँवायो॥ ४८ ॥ भरत गवन रामजी निकट बन विषे परस्पर संवाद। राग सारंग॥ राम पै भरत चले अकुलाई। मनही मन सोचत मारगमें दई फिरै क्यों राघवराई॥ देखि दरश चरणन लपटानो गदगद कंठ न कछु कहि आई। लीनो हृदय लगाइ सूर प्रभु पूंछत भद्र भए क्यों भाई॥ ४९ ॥ राम सीता मिलाप दशरथ परलोक श्रवण। राग केदारा॥ भरत मुख निरखि राम बिलसाने। मुंडित केश शीश बिहवल दोउ उमगि कंठ लपटाने॥ तात मरन सुनि श्रवण कृपानिधि धरणि परे मुरछाई। मोह मगन लोचन जलधारा बिपति हृदय न समाई॥ लोटति धरणि परी सुनि सीता समुझति नहिं समुझाई। दारुण दुःख दया ज्यों तृणवन नाहीं बुझति बुझाई॥ दुर्लभ भयो दरश दशरथको भयो अपराध हमारे। सूरदास स्वामी करुणामय नैनन जात उघारे॥५०॥ श्री राम भरत संवाद। राग केदारा॥ तुम विमुख रघुनाथ कौन विधि जीवन कहा बनै॥ चरण सरोज बिना अवलोके को सुख धरणि गनै॥ हठ करि रह्यो चरण नहिं छांड़े नाथ तजो निठुराई। परमदुखी कौशल्या जननी चलो सदन रघुराई॥ चौदह वर्ष तातकी आज्ञा मोपै मेटि न जाई। सूरस्वामी पाँवरी शीश धरि भरत चले बिलखाई॥ ५१ ॥ राम उपदेश भरत प्रति। राग मारू॥ बंधू करियो राज सँभारे। राजनीति अरु गुरुकी सेवा गाइ विप्र प्रतिपारे॥ कौशल्या कैकयी सुमित्रा दरशन सांझ सवारे। गुरु वसिष्ट अरु मिलि सुमंतसों परजा हेतु विचारे॥ भरत गात शीतल ह्वै आयो नैन उमगि जलधारे। सूरदास प्रभु दई पावरी अवधपुरी पग धारे॥ ५२ ॥ भरत बिदा करण। राग सारंग॥ राम यों भरत समुझायो। कौशल्या कैकयी सुमित्राको पुनि पुनि शिरनायो॥ गुरु वशिष्ट अरु मिलि सुमंतसों अतिहीं प्रेम बढ़ायो। बालक प्रतिपालक तुम दोऊ दशरथ लाड़ लड़ायो॥ भरत शत्रुघन करि प्रणाम रघुबर हित कंठ लगायो। गद्गद गिरा सजल अति लोचन हिय सनेह जल छायो॥ कीजै यहै विचार परस्पर राजनीत समुझायो। सेवा मात प्रजा प्रतिपालन यह युग युग चलिआयो॥ चित्रकूट ते चले तिहीं वन मन विश्राम नं पायो। सूरदास बलि गयो रामके निगम नेति जेहि गायो॥ ५३ ॥ दंडकवनमें शूर्पनखाको नाकछेदन। राग मारू॥ दंडकवन आए रघुराई। काम विवस व्याकुल उर अंतर राक्षसि इक तहां आई॥ हँसि करि राम कह्यो सीतासों इहि लक्ष्मण के निकट पठाई॥ भ्रुकुटी कुटिल अरुण अति लोचन अग्निशिखा मुख कह्यो फिराई। ए बौरी भई मदन विवस मेरे ध्यान चरण रघुराई। विरह व्यथा तनु गई लाज छुटि बारबार अकुलाई॥ रघुपति कह्यो निलज्ज निपट तू नारि राक्षसी ह्यांतें जाई। सूर प्रभू बेनी श्रुति वाके छेद्यो नाक गई खिसिआई॥ ५४ ॥ खर दूषण वध मारीच रावणको बनमें आवन। राग सारंग ॥ खर दूषण यह सुनि उठिधाए। तिनके संग अनेक निशाचर रघुपति आश्रम आए॥ श्री रघुनाथ लछन ते मारे कोउ एक गए पराए। शूपनखा ये समाचार सब लंका जाय सुनाए॥ दशकंधर मारीच निशाचर यह सुनिकै अकुलाए। दंडकवन आए छलके हित सूर ठग्यो रघुराए॥ ५५ ॥ मारी चवध सीताहरण मार्गमें गृध्रसो युद्ध ॥ राग केदारा ॥ सीता पुहुप वाटिका लाई। नानाविधि

पांति पांति सुन्दर मनु कंचनकीहै लता बनाई॥बार बार शोकादिकके तरु प्रेम प्रीति सींचे रघुराई। अंकुर मूल भए सो पोषै कर्म भोगफल लागेआई॥मृग स्वरूप मारीच धरयो तव फेरि चल्यो मारग जु दिखाई। श्री रघुनाथ धनुष कर लीनो लागत बाण देवगति पाई॥ टेर लषण सुनि विकल जानकी अति आतुर उठि धाई। रेखा खैंची बार बधनकी हा रघुवीर कहांहो भाई॥ रावण तुरत विभूति लगाए कहत हस्त भिक्षा दै माई। दीन जानिं सुधि आनि भजनकी प्रेम प्रीति भिक्षा लै जाई। हरि साता ले चल्यो डरत जिय मानो रंक महानिधि पाई॥ सूर संग पछतात यहै कहिकर्मदशा मेटी नहिं जाई॥ ५६॥राम स्वरूप वर्णन॥ मृग पाछे धावन समय॥ राग सारंग॥ राम धनुष अरु सायक साधे। सियहित मृग पाछे उठिधाए बसन बहुत ढिग बांधे॥ नव घननील सरोज वरण वपु विपुल बाहु क्षत्री गुन कांधे॥ इन्दु बदन राजिव नैन वर शीश जटा शिवसम शिरबांधे॥पालत सृजत संहारत संतत अंड अनेक अवधि पल आधे॥ सूर भजन महिमा दिखरावत इमि अति सुगम चरण अवराधे॥ ५७॥ सीता छाया हरन राघव गिद्धसे युद्ध॥ राग मारू॥ इहि बिधि वनबसे रघुराइ। डासिकै तृण भूमि सोवत द्रुमनिके फल खाइ।जगत जननी करी वारी मृगा चरि चरि जाइ। कोपिकै प्रभु बान लीनो तबहिं धनुष चढाइ॥ जनकतनया धरि अगिनिमें छायारूप बनाइ। इहकोऊ नहिं भेदजानै बिना श्री रघुराइ॥कह्यो अनुजसों रहो यहां तुम छांड़ि जिनि कहु जाइ। कनक मृग मारीच मारचो गिरचो लक्षण सुनाइ॥खोदि दई सुरेख सीता कह्यो सु कह्यो न जाइ॥तबहिं निशिचर कियो यह छल लियो सीय चुराइ॥गिद्ध ताको देखि धायो लख्यो सूर बनाइ।कटे पंख गिरचो असुर तब गयो लंका धाइ५८अशोकबन में सीताको स्थापन। राग सारंग बन अशोकमें जनकसुताको रावण राख्यो जाइ।भूखरु प्यास नींद नहिं आवै गई बहुत मुरझाइ। रखवारीको बहुत निशिचरी दीनी तुरतपठाइ॥ सूरदास सीता तेहि निरखत मनही मन सकुचाइ॥ ५९॥ राम विलाप सीता वियोग॥ राग केदारा॥ रघुपति कहि प्रियनाम पुकारत।हाथ धनुष लै मुक्त मृगाहिं किये चकृत भये दिशि विदिश निहारत॥ निरखत सून भवन जड़ ह्वै रहे खन लोटत धर वपु न सँभारत। हासीता सीताकहि श्रीपति उमगि नयनजल भरि भरि ढारत॥ लागि शेष उर विलखि जगत गुरु अद्भुतगति नहिं परत विचारत॥ चेतत चेतत सूर सीता हित मोह मेरु दुख टरत न टारत॥६०॥सुनो अनुज इहिवन इतननि मिलि जानकी प्रियाहरी। कछु इक अंगनिकी सहिदानी मेरी दृष्टि परी॥ कटिकेहरि कोकिल वाणी अरु शशि मुख प्रभाखरी। मृगमूसी नैननिकी शोभा जाति न गुप्तकरी॥ चंपक बरन चरन करि कमलनि दाड़िम दशन लरी। गति मराल अरुबिंब अधर छबि अहि अनूप कवरी॥ अति करुणा रघुनाथ गुसाईं युगभर जात घरी॥ सूरदास प्रभु प्रिया प्रेम वश निज महिमा बिसरी॥ ६१॥ फिरत प्रभु पूछत वन द्रुम वेली। अहो बंधु काहू अवलोकी इहि मग बधू अकेली॥ अहो विहंग अहो पन्नग नृप या कंदरके राई। अबकी बार मम विपति मिटाओ जानकी देहु बताई॥ चंपक पुहुप बरन तनु सुन्दर मनो चित्र अवरेखी। हो रघुनाथ निशाचर के संग चली जाति हौं देखी॥ यह सुनि धावत धरनि चरनकी प्रतिमा खगी पंथ में पाई। नैन नीर रघुनाथ सानिकै शिव ज्यों गात चढाई॥ कहुँ हियहार कहूं कर कंकन कहुँ अंचर कहुँ चीरा। सूरदास बन बन अवलोकत बिलखि बदन रघुवीरा॥ ६२॥ रामजीको गृध्र सों मिलाप धूर्तिताको समाचार श्रवण॥ राग केदारा॥ तुम लक्ष्मण या कुंज कुटीमें देखो नैन निहारि। हम देखके जीव नाम मम लैलै उठत पुकारि पुकारि॥ इतनी कहत कंध ते करगहि लीनो

धनुष सँभारि। कृपानिधान नाम हित धाए अपनी विपति विसारि ॥ अहो विहंग कहो अपनो दुख पूछत तब जु मुरारि। किहि मतिमूढ वध्यो तनु तेरो किधौं विछोही नारि ॥ श्रीरघुनाथ रमनि जगजननी जनक नरेश कुमारि। ताको हरण कियो दशकंधर हौं जो लर्‍यो गुहारि ॥ इतनी सुनि कृपालु कोमल प्रभु दियो धनुष कर झारि। मानोसुर प्रान ले रावन गयो देह को डारि॥६३॥ गिद्ध हरि पद प्राप्ति ॥ राग केदारा ॥ रघुपति निरखि गिद्ध शिरनायो। कहिकै वात सकल सीता की तनु तजि चरण कमल चित लायो ॥ श्रीरघुनाथ जानि जन अपना अपने कर करि ताहि जरायो। सूरदास प्रभु दरश परश करि हरिके लोक सिधायो ॥ ६४ ॥ शवरी को हरिपद प्राप्ति ॥ शवरी आश्रम रघुवर आए। अर्घ्यासन दै प्रभु वैठाए ॥ खाटे तजि फल मीठे लाई। जूठे भये सु सहज सुनाई ॥ अंतर्यामी अति हित जानै। भोजन कीने स्वाद वखानै ॥ जातन काहूकी प्रभु जानत। भक्त भाव हरि युग युग मानत॥करि दंडवत भई वलिहारी। पुनि तनु तजि हरिलोक सिधारी ॥ सूर प्रभू करुणामय भये। निज करकरि तिल अंजलि दये ॥ ६५ ॥ किष्किंधा काण्ड ॥ सुग्रीव आज्ञा हनुमान रामको मिलाप ॥ राग सारंग ॥ ऋष्यमूक पर्वत विख्याता। इक दिन अनुजसहित तहां आये सीतापति रघुनाथा ॥ कपि सुग्रीव वालिके भयते वस्यो हुतो तहँ आई। त्रासमानि तव पवनपुत्रको दीनो तुरत पठाई ॥ को यह वीर फिरै वन भीतर किहि कारण इहां आए। सूर प्रभूके निकट आइ कपि हाथ जोरि शिरनाए॥६६॥हनुमान राम संवाद। सुग्रीवको रामजीका दर्शन॥रागमारू॥ मिले हनु पूछी असि प्रभु वात। महामधुर प्रियवाणी वोलत शाखामृग कौनै ते तात॥ अंजनिको सुत केसरिकेकुल पवन गवन उपजायो गात॥तुमको वीर नीरभरि लोचन मीन हीन जलज्यों मुरझात॥ दशरथ कुल कौशलपुरवासी त्रियाहरी ताते अकुलात। ये गिरिपति कपिपति सुनियतहैं वालि त्रास कैसे दिन जात॥ महादीन वलछीन विकल अति पवनपूत देखत विलखात। सूर सुनत सुग्रीव चले उठि चरन गहे पूछी कुशलात ॥ ६७ ॥ वालिवध, सीता भूषण दर्शन, सप्तताल भेद ॥राग मारू ॥ भाग्य वड़े इहि मारग आये। गदगद कंठ शोकसों रोवत वारि विलोचन छाए। महाधीर गंभीर वचन सुनि जाम्बवंत वचन समुझाई। वढ़ी परस्पर प्रीति रीति त व भूषण सिया दिखाए ॥ सप्त ताल शर साधि वालि हति मन अभिलाष वढाए। सूरदास प्रभु भुजनिके वलि वलि विमल विमल यश गाए॥६८॥ सुग्रीव राज, अंगद समाधान। राग सारंग ॥राज दियो सुग्रीव को तिन हरि यश गायो। पुनि अंगद को वोलि ढिग या विधि समुझायो ॥ होनिहार सोइ होति है नहिं जात मिटायो। सूरदास प्रभु चतुरमास ता ठौर वितायो ॥ ६९ ॥ पवनपुत्र अंगदादि मुद्रिका सहित सीता सुधि हित संपाति मिलाप। राग सारंग ॥ श्रीरघुपति सुग्रीव को निज निकट वुलायो। लीजै सुधि अव सीयकी यह कहि समुझायो ॥ जाम्वंत अंगद हनू उठि माथो नायो। हाथ मुद्रिका दई प्रभु संदेश सुनायो ॥आए तीर समुद्रके कछु शोध न पायो। संपाती तहँ मिल्यो सूर यह वचन सुनायो ॥ ७० ॥ संपातीका सीता अवस्था वर्णन कपिन प्रति। राग सारंग ॥ विछुरी मनो संगते हिरनी। चितवति रहति चकित चारो दिशि उपजी विरह तनु जरनी ॥ तरुवर मूल अकेली ठाढी दुखित राम की घरनी। वसन कुचील चिहुर लपटाने देह पीतांवर वरनी ॥ लेत उसास नयन जल भरि भरि धुकि जुपरी धरि धरिनी। सूर सोच जिय पोच निशाचर राम नाम की शरनी ॥७१॥ सुंदर कांड। समुद्र तीर परस्पर मंत्र, हनु विदा, सुरसा मुख प्रवेश। राग केदारा ॥ तव अंगद इक वचन कह्यो। तोकरि सिंधु सिया सुधि लावै किहि वल इतो लह्यो॥ इतनो वचन श्रवन सुनि हर्ष्यो हँसि वोल्यो

जमुवंत। यादल मध्य प्रगट केशरि सुत जाहि नाम हनुमंत ॥ वहै लाइ है सिय सुधि छिनमें अरु आइ है तुरंत। उन प्रभाव त्रिभुवन को पायो वाके बलहिं न अंत॥ जो मन करै एक वासर में छिन आवै छिन जाइ। स्वर्ग पताल महागम ताको कहिये कहा बनाइ ॥ केतिक लंक उपारि वामकर लै आवै उचकाइ। पवनपुत्र बलवंत वज्र तन काके होय समुदाइ॥ लियो बुलाय मुदित चित ह्वै कै बच्छ तंबोलहिं लेहु। ल्यावहु जाइ जनकतनयासुधि रघुपतिको सुख देहु॥ पौरि पौरि प्रति फिरौ विलोकत गिरि कंदर बन गेह। समय विचारि मुद्रिका दीजो सुनो मंत्र सुत येह॥ लयो तंबोल माथ धरि हनुमत कियो चतुर्गुन गात। चढ़ि गिरि शिखर शब्द इक उचरयो गगन उठ्यो आघात॥ कंपत कमठ शेष वसुधा नभ रवि रथ भयो उतपात। मानो पच्छ सुमेरहि लागे उड़्यो अकासहि जात॥ चकृत सकल परस्पर वानर बीच करी किलकार। तहां इक अद्भुत देखि निशिचरी सिरसा मुख विस्तार॥ पवनपुत्र मुख पैठि पधारे तहां लगी कछु वार। सूरदास स्वामी प्रताप बल उतरयो जलनिधि पार॥ ७२॥ हनुमत लंका दर्शन, सीता मिलाप हित अशोकवन प्रवेश। राग धनाश्री॥ लखि लोचन सोचे हनुमान। चहुँ दिशि लंक दुर्ग दानव दल कैसे पाऊं जान॥ सौ योजन विस्तार कनक पुरि चकरी योजन बीस। मनो विश्वकर्मा कर अपुने रचि राखी गिरि शीश॥ गरजत रहत मत्त गज चहुँ दिशि छत्र ध्वजा चहुं दीस। भरमत भयो देखि मारुतसुत दई महाबल ईश॥ उडि हनुमंत गयो आकासहिं पहुँच्यो नगर मँझारि। वन उपवन गम अगम अगोचर मंदिर फिरयो निहारि॥ भई पैज अब हीन हमारी जिय में करै विचारि। पटकि पूंछ माथो ध्वनि लोटै लखी न रावन नारि॥ नाना रूप निशाचर अद्भुत सदा करत मद पान। ठौर ठौर अभ्यास महामल नटपेषने पुरान॥ जिय जिय शोच करत मारुतसुत जियत न मेरेजान। कै वह भाजि समुद्रमें बूड़ी कै उन तज्यो पिरान॥ कैसे नाथ वदन दिखराऊं जो बिन देखे जाउँ। वानर वीर हँसैंगे मोसों तैं बोरयो पितु नाउँ॥ ते सब तर्क वोलि हैं मोको तासों बहुत डराउँ॥ भली रामको सिया मिलाऊं जीति कनकपुर गाउँ॥ जब मोहिं अंगद कुशल पूछिहै कहा कहौंगो वाहि। या जीवनते मरन भलोहै मैं देख्यों अवगाहि॥ मारौं आजु लंक लंकापति लै दिखराऊं ताहि। चौदहसहस अंतःपुर ते लैहैं रावन चाहि॥ बहुरि वीर जब गयो अवासहिं जहां वसै दशकंध। कनक जटि मणि खंभ बनाए पूरण बाससुगंध॥ श्वेत छत्र फहरात शीशपर मनो लच्छको बंध। चौदहसहस नागकन्या रति परयो सुरत मत अंध॥ वीणानाद पखावज आवज और राजको भोग। पुहुप प्रयंक परी नव योवन सुख परिमल रस जोग॥ जिय जिय गढ़े करै विश्वासहि जानै लंका लोग। इहि सुख सेज परीहै सीता राघव विपति वियोग। बैठ्यो जाइ एक तरुवर पर जाकी शीतल छांहि॥ बहु निशाचरी मध्य जानकी मलिन वसन तनु माहिं॥ पुनि आयो सीता जहां बैठी वन अशोकके माहिं। चारहु ओर निशिचरी घेरे नर जेहि देखि डराहिं॥ वारंवार बिसूरि सूर दुख जपति नाम रघुनाह। मलिन अर्धपट देखि वदन पर चंद्र गह्यो ज्यों राह॥ ७३॥ आकाश वाणी हनूमति, सीय निश्चय,। रागमारू॥ गयाकूदि हनुमंत जब सिंधुपारा। शेषके शीश लागे कमठ पीठिसो धस्यो गिरिवर सबै ता संभारा॥ शोच लाग्यो करन यहै धौं जानकी कै कोऊ और मोहिं नहिं चिन्हारा॥ लंकगढ़ माहिं आकास मारग गयो चहूदिश वज्रलाग किनारा॥ पौरि सब देखि आशोक वनमें गयो निरखि सीता छप्यो वृक्षडारा॥ सूर आकाश वाणी भई तब तहां है यहै है यहै करि जुहारा॥ ७४॥ निशिचरी रावण बड़ाई, सीता की निंदा॥ समुझि अब निरखि

जानकी मोहि। बड़ोभग्य गुण अगम दशानन शिव वर दीनो तोहि ॥ केतक राम कृपण ताकी पितुमातु घटाई कानि।तेरे पिता जनककी सीता कीरति कहौं वखानि॥विधि संयोग टरत नहिं टारचो वन दुख देख्यो आनि। अव रावण घर विलसि सहज सुख कह्यो हमारो मानि ॥ इतनो वचन सुनत शिरध्वनिकै वोली सिया रिसाइ। अहो ढीठ मति मुग्ध निशिचरी सन्मुख वैठी आइ॥तव रावण को वदन देखिहौं दश शिर शोणितहाइ। कै तन देउँ मध्य पावक के कै विलसैं रघुराइ ॥ जो पै पतिव्रता व्रत तेरे जीवत विछुरी काइ ॥ तव किन मुई कहौ तुम मोसों भुजागही जवराइ ॥ अव झूठो अभिमान करति सिय झुकति हमारे ताइ। सुखहीं रहसि मिलो रावणको अपने सहज सुभाइ॥ जो तू रामहि दोप लगावै करौं प्राणके घात।तुमरो कुलको वेर न लागै होत भस्म संघात॥ उनके क्रोध जरै लंकापति तेरे हृदय समाइ। तोपै सूर पतिव्रत सांचो जो देखौं रघुराइ ॥ ७५॥
॥ निशिचरी सीता सत प्रगट करन रावण निज उद्धार ज्ञान ॥ राग धनाश्री ॥सुनो क्यों न कनकपुरीके राइ। हौं वुधि वल छल करि पचिहारी लख्यो न शीश उचाइ। डोलै गगन सहित सुरपति अरु पुहुमि पलटि जगजाइ॥नशै धर्म मन वचन काय करि शंभु अचंभुकराइ। अचला चलै चलत पुनि थाकै चिरंजीव सो मरई। श्री रघुनाथ प्रताप पतिव्रत सीता सत नहिं टरई॥ऐसी त्रिया हरित क्यों आई जाके यह सतभाइ।मन वच क्रम और नहिं दूजो तजि रघुनन्दनराइ॥इनके क्रोध भस्म ह्वै जैहो करहु न सीता चाउ। अव तुम काकी शरन उवरिहौ सो वल मोहिं वताउ॥ जो सीता सतते विचलै तौ श्रीपतिं काहि सँभारै। मोसे मुग्ध पहापापीको कौन क्रोध करि तारै ॥ यह जननी वे प्रभु रघुनंदन हम सेवक प्रतिहार। सीताराम सूर संगम विनु कौन उतारै पार ॥ ७६ ॥
रावण लोभ दिखावन जानकी निरादार करन। राग मारू ॥ जनकसुता तू समुझि चित्त में निरखि मोहि तन हेरी। चौदह सहस किन्नरी जेती सव दासी हैं तेरी ॥ कहै तो जनक गेह दै पठवौं अर्ध लंकको राज। तोहिं देखि चतुरानन मोहै तू सुन्दरि शिरताज ॥ छाडि राम तपसी के मोहै उठि आभूपण साज। चौदहसहस तिया मैं तोको पटा वँधाऊं आज ॥ कठिन वचन सुनि श्रवन जानकी सकी न वचन सहार। तृण अंतर दै दृष्टि तिरौंछी दई नैन जलधार ॥ पापी जाउ जीभ गलि तेरी अजुगत वात विचारी। सिंहको भक्ष शृगाल न पावै हौं समरथ की नारी ॥ चौदह सहस दुष्ट खर दूपण रघुपति एकहि वान। लक्ष्मण राम धनुप सन्मुख करि काके रहिहैं प्राण॥ तेरी अवधि कहत सव कोऊ ताते कहि यत वात।विनु विश्वास मारिहैं तोको आजु रैनिकै प्रात॥ मेरो हरन मरन है तेरो स्यो कुटुंव संतान। जारिहै लंक कनकपुर तेरो उदित रघूकुल भान॥ यह राक्षस की जाति हमारी मोह न उपजै गात। परत्रिय रमै धर्म कहां जानै डोलत मानुप खात ॥ मनमें डरी कानि जिनि तोरै मुहिं अवला जिय जानि। नख शिख वसन संभारि सकुचि तनु कुच कपोल गहि पानि ॥ रे दशकंध अंध मति तेरी आयु तुलानी आनि। सूर राम की करी अवज्ञा डारै सव भुज भानि ॥ ७७ ॥ त्रिजटाने सीताको समाधान किया। राग मारू ॥ त्रिजटा सीता पै चलि आई। मनमें सोच न कर तू माता यह कहिके समुझाई॥नल कूवर को शाप रावनहिं तोपर वल न वसाई। सूरदास मनु जरी सजीवन श्री रघुनाथ पठाई ॥७८॥ त्रिजटा मति सीता मनोर्थ वर्णन॥ राग, कान्हरा ॥ सो दिन त्रिजटी कहि कव ह्वैहै। जादिन चरन कमल रघुपतिके हरपि जानकी हृदय लगैहै॥कवहुँक लक्ष्मण पाइ सुमित्रा माइमाइ कहि मोहिं सुनैहै।कवहुँक कृपावंत कौशल्या वधू वधू कहि मोहि वुलैहै॥ जादिन राम रावणहिं मारे ईशहिं दै दशशीश चढ़ैहै। तादिन जन्म

सफल करि जानो मेरे हृदय की कालिम जैहै ॥ जादिन कंचन पुर प्रभु ऐहैं विमल ध्वजा रथ पर फहरै हैं। तादिन सूर राम पर सीता सरवसु वारि बधाई देहैं ॥ ७९ ॥ राग सारंग ॥ मैं राम के चरणन चित दीनो। मनसा वाचा और कर्मना बहुरि मिलन को आगमन कीनो ॥ डुलै सुमेरु शेष शिर कंपै पश्चिम उदै करै वासर पति। सुनि त्रिजटी तौहू नहिं छोड़ौं मधुर मूर्ति रघुनाथ गात रति ॥ सीता करति विचार मनै मन आजु कालिह कोशलपति आवै। सूरदास स्वामी करुणामय सो कृपालु मोहिं क्यों विसरावै ॥ ८० ॥

॥ सीता प्रति त्रिजटी स्वप्न वर्णके हनू सिय दरश परस्पर संवाद मुद्रिका अर्पण ॥ राग धनाश्री ॥ सुन सीता सपनेकी बात रामचंद्र लछमन मैं देखे ऐसी विधि परभात॥कुसुम विमान बैठि वैदेही देखी राघव पास।श्वेत छत्र रघुनाथ शीशपर दिनकर किरण प्रकाश ॥ भयो पलायमान दानवकुल व्याकुलता इक त्रास। पंजरत ध्वजा पताक छत्र रथ मनिमैं कनक अवास ॥ रावन शीश पुहुमिपर लोटत मंदोदरि बिलखाइ। कुम्भकर्ण तनु खंग लगाई लंक बिभीषण पाइ ॥ प्रगट्यो आइ लंकदल कपिको फिरि रघुवीर दुहाई। यह सपनेको भाव सखीरी क्यौंहू विफल न जाई ॥ त्रिजटी वचन सुनत वैदेही अति दुख लेत उसांस। हाहा रामचन्द्र हालछिमन हा कौशल्यासास ॥ त्रिभुवन नाथ नाह ज्यों पायो सुन्यो रहै वनवास। हा कैकयी सुमित्रा रानी कठिन निशाचर त्रास ॥ कौन पाप मैं पापिन कीनो प्रगट्योहै इहिवार॥धिग धिग जीवन है अब इहि तनु क्यों न होइ जरिछार। द्वै अपराध मोहिं ये लागे मृगके हित दीने हथियार ॥ जान्यो नहीं निशाचरके छल नाखी धनुष अकार। पंछी एक सुहृद जानतहो करचो निशाचर भंग। तातें विरामि रहचो रघुनंदन कीर मनसा मन पंग ॥ इतनो कहत नैन उर फरके सगुन जनायो अंग। आजु लहौं रघुनाथ संदेशो मिटै विरह दुखसंग ॥ तिहिछिन पवनपूत तहँ प्रगटेउ सिया अकेली जानि। श्री दशरथकुमार दोउ बंधू धरे धनुष दोउ पानि ॥ प्रिया वियोग फिरत मारे मन परे सिंधु तट आनि। ता सुन्दरि हित मोहिं पठायो सकौं न हौं पहिचानि ॥ वारंवार निरखि तरुवर तन कर मीड़ति पछिताइ। देव जीव पशु पक्षी कोतू नाम लेत रघुराइ ॥ बोलै नहीं रह्यो दुरि वानर द्रुम में देह छुपाइ। कै अपराध ओढ अब मेरो कै तू देहि दिखाइ ॥ तरुवर त्यागि चपल शाखामृग सन्मुख बैठ्यो आइ। माता पुत्र जानि दै उत्तर कहु किहि विधि बिलखाइ ॥ किन्नर नाग देवि सुरकन्या कासों हित उपजाई। कै तू जनककुमारि जानकी राम वियोगिनि आई ॥ राम नाम सुनि उत्तर दीनो पिता बंधु तू होहि। मैं सीता रावन हरि ल्यायो त्रास दिखावत मोहि ॥ अब मैं मरौं सिंधुमें बूड़ौं चित में आवै कोह। सुनो बच्छ जीवन धिग मेरो लक्ष्मण राम विछोह ॥ कुशल जानकीजू रघुनंदन कुशल लक्ष्मण भाई। तुम हित नाथ कठिन व्रत कीनो नाहिं जल भोजन खाई ॥ मुरै न अंग कोऊ जो काटै निशि वासर सम जाई। तुम घट प्राण देखियत सीता विना प्राण रघुराई ॥ वानर वीर चहूँ दिशि धाए ढूंढैं गिरि वनचारी। सुभट अनेक सबल दल साजे परे सिंधु के पारी ॥ उद्यम मेरो सफल भयो अब मैं देखो तुम आइ। अब रघुनाथ मिलाऊं तुमको सुन्दरि सोग सिराइ ॥ यह सुनि सिय मन संका उपजी रावन दूत विचारि। श्रवन मूंदि अंचर मुख ढाँप्यो अरे निशाचर चोर। काहे को छल करि करि आवत धर्म विनासन मोर ॥ पावक परौं सिंधु महँ बूडौं नहिं मुख देखौं तोर। पीली क्योंन पीठि दै मोको पाहन सरिस कठोर जिय में डरचो मोहिं मति शापै व्याकुल वचन कहंत। जो वर दियो सकल देवन मोहिं नाउँ

धरचो हनुमंत ॥ सुग्रीव को तारका मिलाई वध्यो वालि भयमंत । अंजनि कुँवर रामको पाइक ताके वल गर्जत ॥ लेहु मातु मुद्रिका निसानी दई प्रीति करि नाथ । सावधान ह्वै सोक निवारो ओडहु दक्षिण हाथ ॥ खिन मुँदरी खिनही हनुमत सों कहति विसूरि विसूरि । कहि मुद्रिकैं कहां तैं छांडे मेरे जीवनमूरि ॥ कहियो वच्छ संदेशो इतनो जव हम एकत थान । सोवत काग छुयो तनु मेरो वरहिर कीनो वान ॥ फोरचो नयन काग नहिं छाँडचो सुरपति के विदमान । अव वह कोप कहां रघुनंदन दशशिर कंठ विरान ॥ निकट वुलाइ वैठाइ निरखि मुख अंचर लेत वलाइ । चिरजीयो सुकुमार पवनसुत गहति दीन ह्वै पाइ ॥ वहुत भुजनि वल होइ तुमारे ये अमृत फल खाहु । अवकी वेर सूर प्रभु मिलिहो वहुरि प्राण किनि जाहु ॥ ८१ ॥ हनुमत सीता समाधान ॥ राग मारू जननी हौं अनुचर रघुपति को । मति माता करि क्रोध शरापै नहिं दानव धिग मति को ॥ आज्ञा होइ देउँ कर मुँदरी कहौं संदेशो रति को । मति हिय विलख करो सिय रघुवर वधि हैं कुल दैयत को ॥ कहो तु लंक उखारि डारि देउँ जहां पिता संपाति को । कहो तु मारि संहारि निशाचर रावण करौं अगति को ॥ सागर तीर भीर वनचर की देखि कटक रघुपति को । लै मिलइहौं अवहिं सूर प्रभु राम रोप डर अतिको ॥ ८२ ॥ राग मारू ॥ अनुचर रघुनाथ तेरे दरश काज आयो । पवनपूत कपि स्वरूप भक्तनमें गायो ॥ तपन जहां तपन करे सोइ वनमैं झांक्यो जाकी तुम छांह वैठी सोई द्रुम मैं राख्यो ॥ आयसु जो होइ जननी सकल असुर मारौं । लंकेश्वर वांधि राम चरणन तर डारौं ॥ चढि चलौ जु पीठि मेरी अवहीं लै मिलाऊं । सूरश्री रघुनाथ जूके लीला गुण गाऊं ॥ ८३ ॥ हनुमत निराखि सीता संदेह, मुद्रिका अर्पते मतीति । राग मारू ॥ तुम्हैं पहिंचानति नाहीं वीर । इहि नैननि कवहूं नाहिं देख्यो रामचन्द्र के तीर ॥ लंका वसत दैत्य अरु दानव उनके अगम शरीर । तोहिं देखि मेरोजिय डरपत नैनो आवत नीर ॥ तव कर काढ़ि अँगूठी दीनी तौ जिय उपजी धीर । सूरदास प्रभु लंका कारण आए सागर तीर ॥ ८४ ॥ हनूका राम लक्ष्मणके समाचार कहना, अपनो पराक्रम वर्णन ॥ राग सारंग ॥ जननी हौं रघुनाथ पठायो । रामचन्द्र आयेकी तुमको देन वधाई आयो ॥ हौं हनुमंत कपट जिनि समुझो वात कहत समुझाई ॥ मुंदरी दूव धरीलै आगे तव प्रतीति जिय आई ॥ अति सुख पाइ उठाइ लई तव वार वार उर भेटति ॥ ज्यों मलया गिरि पाइ आपनी जरनि हृदयकी मेटति ॥ लक्ष्मण पालागन कहि पठयो हेतु वहुत करि माता । दई अशीश तरनि सन्मुख ह्वै चिरंजीयो दोउ भ्राता ॥ विछुरनको संताप हमारो तुम दरशन ते काट्यो । ज्यों रवि तेज पाइ दशहूं दिशि दोष कुहरको फाट्यो ॥ ठाढे विनती करत पवनसुत अव जो आज्ञा पाऊं ॥ अपने देख चलेको यह सुख उनहूंजाइ सुनाऊं । कल्प समान एकछन राघव कर्म कर्म करि वितवत । ताते हौं अकुलात कृपानिधि ह्वैहैं पैंडो चितवत ॥ रावण हतिलै चलौं साथही लंका धरौं अपूठी ॥ याते जिय अकुलात कृपानिधि करौं प्रतिज्ञा झूठी ॥ यहांकी सव दशा हमारी सूरसों कहियो जाई ॥ विनती वहुत कहा कहौं रघुपति जिहि विधि देखौं पाई ॥ ८५ ॥ सीता आगमन मसन्न हनू धीरनदेन ॥ राग मलार ॥ वनचर कौन देशते आयो । कहँ वे राम कहां वे लक्ष्मण क्यों करि मुद्रा पायो ॥ हौं हनुमंत रामके सेवक तुव सुधि लेन पठायो । रावणमारि तुम्हैं लै जातो राम निदेश न पायो ॥ तुम मति डरियो मेरी मैया राम जोरि दल ल्यायों । सूरदास रावण कुल खोवन सोवत सिंह जगायो ॥ ८६ ॥ अन्यच ॥ राग सारंग ॥ कहो कपि कैसे उतरयो पार । दुस्तर अति गंभीर वारिनिधि शतयोजन विस्तार ॥ इत उत क्रोध दैत्य कपि मारत महा अवुधि अधिकार ।

हाटकपुरी कठिन पथ बानर आए कौन अधार ॥ राम प्रताप सत्य सीताको यहै नाउ कंधार बिन अधार छनमें अवलंघ्यो आवत भई न बार॥पृष्ठभाग चढ़ि जनकनंदनी पौरुप देख हमार। सूरदास लै जाउँ तहां जहँ रघुपति कंत तुम्हार ॥ ८७ ॥ हनू मिलापते सीता आनंद ॥ राग मारू ॥ हनुमत भली करी तुम आए। बार बार कहती वैदेही दुख संताप मिटाए ॥ श्री रघुनाथ और लक्ष्मणके समाचार सब पाये। अब परतीति भई मन मेरे संग मुद्रिका लाये॥क्योंकरि सिंधु पार तुम उतरे क्योंकरि लंका आये। सूरदास रघुनाथ जानि जिय तो बल इहां पठाए ॥ ८८ ॥ सीता राम पराक्रम वर्णन उराहना समेत वेगि मिलाप हित ॥ राग कान्हरा ॥ सुन कपि वे रघुनाथ नहीं। जिन रघुनाथ पिनाक पिताग्यो तोरचो निमिष महीं ॥ जिन रघुनाथ फेरि भृगुपति गति डारी काटि तहीं। जिहिं रघुनाथ हार खरदूषण हरेप्राण शरहीं॥कै रघुनाथ तज्यो प्रण अपनो योगिन दशा गही॥कै रघुनाथ दुखित कानन कै नृप भये रघुकुल हीं॥कै रघुनाथ अतुल राक्षस बल दशकंठर डरहीं।छाड़ीनारि विचारि पवनसुत लंक बाग बसहीं॥किधौं कुचील कुरूप कुलक्षण तौं कंतहिं न चही॥सूरदास स्वामी सों कहियो अब विरमियो नहीं ॥ ८९ ॥ सीता निज दुःख वर्ण्यो हनूमति ॥ राग मारू ॥ देखे यह गति जात संदेशो कैसे कै जु कहौं । सुन कपि इन प्राणनको पहरो कबलों देति रहौं ॥ ये अति चपल चल्यो चाहतहैं करत न कछू विचार। कहिधौं प्राण कहांलौं राखौं रोंकि रोंकि मुख द्वार। अपनी बात जनावति तुमसों सकुचतिहों हनुमंत।नाहीं सूर सुन्यों दुख कबहूं प्रभु करुणामय कंत९०। सीता विनय निज दुःख निवारण निमित्त श्रीराम प्रति ॥ राग मारू ॥ कहियो कपि रघुनाथ राज सों यह इक विनती मेरी। नाहीं सही परति यह मोपैं दारुण आश निशाचर केरी ॥ यह जो अंध बीसहूं लोचन छल बल करत आनि मुख हेरी। आइ शृगाल सिंह बलि मांगत यह मरजाद जात प्रभु तेरी ॥ जेहि भुज परशुराम बल करष्यो ते भुज क्यों न सँभारत फेरी । सूर सनेह जानि करुणामय लेहु छुड़ाइ जानकी चेरी ॥ ९१ ॥ सीता निज अपराध प्रगटन। राग मारू ॥ मैं परदेशिन नारि अकेली। बिनु रघुनाथ और नहिं कोऊ मातु पिता न सहेली ॥ रावण भेष धरचो तपसी को कत मैं भिक्षा मेली॥अति अज्ञान मूढ मति मेरी राम रेख पाइन्न मैं पेली ॥ विरह ताप तनु अधिक जरावत जैसे दौ द्रुम वेली। सूरदास प्रभु वेगि मिलाओ प्राण जात है खेली ॥ ९२ ॥ हनुमत वचन। राग मारू॥ तू जननी जिय दुख जिन मानहि। रामचन्द्र नहिं दूरि कहूं पुनि भूलिहु चितचिंता मति आनहि ॥ अबहिं लिवाइ जाउँ सब रिपु हति डरपत हौं आज्ञा अपमानहि। राख्यो सुफल सँवारि सान दै कैसे निफल करौं वा बानहि ॥ हैं केतेक यह तिमिर निशाचर उदित एक रघुकुल के भानहि। काटन दे दशशीस समर मुख अपनो कृत एऊ जो जानहि ॥ देहिं दरश शुभ नैन निकट निज रिपु को नाश सहित संतानहिं। सूर सप्त मोहिं इनहिं दिननि में लै जु आइ हौं कृपानिधानहि ॥ ९३ ॥ अशोकवन भंग इन्द्रजीत हनुमत प्रति ब्रह्म शर बंधन। राग मारू ॥ हनुमत बल प्रगट भयो सीता जब पाई। जनकसुता चरण वंदि फूल्यो न समाई ॥ अगणित तरु फल सुगंध मधुर मिष्ट खाटे। मनसा करि प्रभुहिं अर्पि भोजनको डाटे ॥ द्रुमन गहि उपाटि लै दै दै किलकारी । दानव बिन प्राण भये देखि चरित भारी ॥ विह्वल मतिहीन गए जोरे सब हाथा। बानर बन विघ्न कियो त्रिभुवन के नाथा ॥ ह्वै निसंक अतिहि ढीठ बिडरै नहिं भाजै । मानो बन कदलि मध्य उनमत्त गज गाजै ॥ भाने मठ कूप वाय सरवरको पानी। गौरी कंत पूजत जहां नव तन दल आनी ॥ कांप्यो सुनि असुर सैन शाखामृग जान्यो। मानो जल जीव सिमिटि जाल में समान्यो॥

तरुवर तहँ इक उपारि हनुमत कर लीनो । किंकर कर पकारि बाण तीन खंड कीनो ॥ योजन विस्तार शिला पवनसुत उपाटी । किंकर करि लक्ष्मान अंतरिक्षकांटी ॥ आगर इक लोह जरित लीनो बलवंड । दुहूं करनि असुर हयो भयो मानस पिंड ॥ दुर्धर परहस्त संग आई सैन भारी । पवनपूत दानव बल बाहर चल कारी ॥ रोम रोम हनू बल छलक समान । जहां तहां देखत कपि करत राम आन ॥ मंत्री सुत पांच सैन अक्षय कुँवर सूर । धीर सहित सवै हते झपटि कै लंगूर ॥ चतुरानन बल सँभारि मेघनाद आयो । मानो घन पावस में नगपति है छायो॥ देख्यो जब दृष्टि बाण निश्चर कर तान्यो । छांड्यो तब सूर हनू ब्रह्म तेज मान्यो ॥ ९४ ॥ हनुमान रावण संवाद ब्रह्मशर मुक्ति । राग मारू ॥ सीतापति सेवक तोहिं देखनको आयो । काके बल बैर तैं जु राम ते बढ़ायो ॥ जेजे तुव सूर सुभट कीट सम न लेखों । तेरे दशकंध अंध प्राणनि बिनु देखों नख शिख ज्यों मीन जाल जड़्यो अंग अंगा । अजहुँ नाहिं संक धरत बनचर मति भंगा ॥ जोई सोई मुखहि कहत मरण निज न जानै । जैसे नर सन्निपात हिये बुधि बखानै ॥ तब तू गयो सून भवन भस्म अंग पोते । करितो बिनुप्राण तोहिं लक्ष्मण जो होते ॥ पाछे तैं सीय हरी विधि मर्याद राखी । जोपै दशकंध बली रेखा क्यों न नाखी ॥ अजहूं सिय सौंपि नतरु बीस भुजा भानै । रघुपति यह पैज करी भूतल धरि पानै ॥ ब्रह्म बाण कानि करी बल करि नहिं बांध्यो ॥ कैसे यह ताप मिटै रघुपति आराध्यो ॥ देखत कपि बाहुडंड तनु प्रस्वेद छूटे । जैजै रघुनाथ नाथ कहत बंध टूटे ॥ देखत बल दूरि कर्‍यो मेघनाद गारो । आपुन भयो सकुचि सूर बंधन ते न्यारो ॥ ९५ ॥ हनुमान लंका जारन ॥ राग मारू ॥ मंत्रिन नीको मंत्र विचार्‍यो । राजन् कहो दूत काहूको कौन नृपतिहै मार्‍यो ॥ इतनी कहत बिभीषन बोल्यो बंधू पांइपरों । यह अनरीति सुनी नहिं श्रवणनि अब पै कहा करौं ॥ तेल तूल पावक वपु धरिकै देखत तुसै जरौं । अब मेरेजिय यहै बसीहै रघुपति काज करौं ॥ हरी विधाता बुद्धि सबनिकी अति आतुर ह्वै धाये । सन अरु सूत चीर पाटंबर लै लंगूर बँधाये । बंधनि तोरि मोरि मुख असुरनि ज्वाला प्रगट करी । रघुपति चरण प्रताप सूरप्रभु लंका सकल जरी ॥ ९६ ॥ आकाशवाणी, सीता कुशल ॥ राग धनाश्री ॥ सोचि जिय पवनपूत पछिताई । अगम अपार सिंधु दुस्तर तारि कहा कियो मैं आई ॥ सेवकको सेवापन इतनो आज्ञाकारी होई । याभय भीति देखि लंकामें सीय जरी मति होई ॥ बिनु आज्ञा मैं भवन प्रजारे अपयश करिहैं लोइ । वेरघुनाथ चतुर कहियत है अंतर्यामी सोइ ॥ इतनी कहत गगनवाणी भई हनू सोच कत करिहै । चिरंजीव सीता तरुवर तर अटल न कबहूं टरिहै ॥ फिर अवलोकि सूर सुख लीजै भुवमें रोम नपरिहै । जाके हिय अंतर रघुनंदन सो क्यों पावक जरि है ॥९७ ॥ लंका दग्धि पुनः सिय दर्शन । राग मारू ॥ लंका हनूमान सब जारी । रामकाज सीताकी सुधि लगि अंगद प्रीति विचारी ॥ जा रावणकी शक्ति तिहूं पुर कहूं न आज्ञा टारी । ता रावणके अछत अक्षय सुत पालक मृष्टि पछारी ॥ पूँछ बुझाइ गये सागर तट है जहँ सीतावारी । करि दंडवत प्रेम पुलकित ह्वै सुनि राघवकी प्यारी ॥ तुमही तेज प्रताप रहीहै तुमरी यहै अटारी । सूरदास स्वामीके आगे जाइ कहौं सुखभारी ॥ ९८ ॥ रामचंद्र प्रति सीता संदेश हनुमंत विदा ॥ राग सारंग ॥ मेरी केती विनती करनी । पहिले करि परणाम पाँइ परि मणि रघुनाथ हाथलै धरनी ॥ मंदाकिनि तट फटिक शिला। पर सुख मुख जोरि तिलककी करनी।कहा कहौं कपि कहत न आवै सुमिरत प्रीति होइउर अरनी॥ तुम हनुमंत पवित्र पवनसुत कहियो जाइ जोइ मैं बरनी । सूरदास प्रभु आनि मिलावहु मूरति

दुसह दुःख भय हरनी ॥ ९९ ॥ अंगदादि निकट हनुमानका पुनः आगमन सीता सुधि देन॥राग मारू ॥ हनूमान अंगदके आगे लंक कथा सब भाषी।अंगद कह्यो भली तुम कीनी हम सबकी पति राखी॥हर्षवंत ह्वै चले तहां ते मगमें विलम न लाई। पहुँचे आइ निकट रघुबरके सुग्रीव आयो धाई ॥ सबन प्रणाम कियो रघुपति को अंगद वचन सुनायो। सूरदास प्रभु पदप्रताप करि हनू सिया सुधि ल्यायो ॥ ॥ १०० ॥ सुग्रीवादि कृत हनुमान प्रशंसा॥ राग मारू ॥ हनू तैं सबको काज सँवारचो। बार बार अंगद यों भाषै मेरो प्राण उबारचो॥तुरतहि गमन कियो सागर ते बीचहि बाग उजारचो॥कियो मधुवनको चौर चहूं दिशि माली जाइ पुकारचो ॥ धनि हनुमंत सुग्रीव कहतहै रावणको दल मारचो । सूर सुनत रघुनाथ भयो सुख काज आपनो सारचो ॥ १०१ ॥ श्री रामचन्द्र हनुमान गोष्ठी। राग मारू ॥ कहौ कपि जनकसुता कुशलात। आवागमन सुनावहु अपनो देहु हमैं सुख गात ॥ सुनो पित जल अंतर ह्वैकै रोक्यो मग इक नारि। धर अंबर घन रूप निशाचरिं गरजी वदन पसारि॥तब मैं डरपि कियो छोटो तनु पैठ्यो उदर मंझारि। खरभर परी देव आनंदे जीत्यो पहिली रारि॥गिरि मैनाक उदधि में अद्भुत आगे रोक्यो जात। पवनपिताको मित्र न जानत धोखे मारी लात॥तबहीं और रह्यो सरितापति आगे योजन सात।तुव प्रताप पेलि दिशि पहुँच्यो कौन बढ़ावै बात। लंका पौंरि पौंरि मैं ढूंढी अरु बन उपवन जाइ । तरुवर तर अवलोकि जानकी तब हौं रह्यो लुकाइ॥ रावण कह्यो सु कह्यो न जाई रह्यो क्रोध अति छाई। तबही अवध जानिकै राख्यो मंदोदरि समुझाई॥ तब हौं गयो सुफल बारी में देखी दृष्टि पसारि। असीसहस किंकर दल जिहि के दौरे मोहिं निहारि। तुम परताप देव छिन भीतर जुरत भई नहिं बार।तिनको मारि तुरंतहि कीनो मेघनाद सों रार ॥ ब्रह्म फांस जब लई हाथ करि मैं चेत्यो करजोरि । तज्यो कोप मर्यादा राखी बँध्यो आपही मोर॥ रावणपै लैगयो सकल मिलि ज्यों लुब्धक पशु जाल। करुवो वचन श्रवण सुनि मेरो तब रिस गही भुवाल॥ आपुनही मुद्गर लै धायो करि लोचन विकराल । चहुँदिशि सूर सोर करि धावै ज्यों केहरिह सियाल॥ १०२॥ राम वचन ॥ राग मारू॥ कैसे पुरी जरी कपिराय। बड़े दैत्य कैसे करि मारे ईश्वर तुमैं बचाइ॥ प्रगट कपाट बड़े दीने हैं बहु जोधा रखवारे। तैंतिस कोटि देव वश कीने ते तुमसे क्यों हारे॥ तीनिलोक डर जाके कंपै तुम हनुमान न पेखे। तुमरे क्रोध शाप सीताके दूरि जरत हम देखे॥ हो जगदीश कहा कहौं तुमसों तुम वर तेज मुरारी। सूरजदास सुनो सब संतो अवगति की गति न्यारी१०३॥सेना समेत सिंधुतट राम पयान ॥राग मारू॥सीय सुधि सुनत रघुवीर धायो।चल्यो तब लक्षण सुग्रीव अंगद हनू जाम्बवंत नील नल सबै आये॥भूमि अति डगमगी योगनी सुनि जगी सहसफन शेश सो शीश कांप्यो। कटक अगणित जुरचो लंक खरभर परचो सूरको तेज धर धूर ढाप्यो॥ जलधि तट आइ रघुराइ ठाढ़े भए ऋच्छ कपि गराजि ह्वै ध्वनि सुनायो। सूर रघुराइ चितये हनूमान दिशि आइ तिन तुरतही शीश नायो ॥१०४॥ हनुमान निज शरीर बल कथन॥राग केदारा॥ राघव जू कितक बात ताजे चिंत।केतक रावण कुंभकर्ण दल सुनिहो देव अनंत॥कहो तु लंक लकुट ज्यों फेरों फेरि कहूं लै डारों कहो तु पर्वत चापि चरण तर नीर खार में गारों॥कहोतो असुर लंगूर लपेटौं कहौ तु नखन विदारौं॥कहो तु शैल उपारि पेडते दै सुमेरु सों मारौं॥जितक शैल सुमेरु धरणि में भुजभरि आनि मिलाऊं॥सप्त समुद्र देउँ छातीतर इतनक देह बढ़ाऊं चली जाहु सेना सब मोपर धरो चरण रघुवीर॥ मोहिं अशीश जगत जननी की तुवतनु वज्र शरीर। जितक बोल बोले तुम आगे रामप्रताप तुमारे। सूरदास प्रभुकी सब सांची जनकी पैज पुकारे॥

हनूमानका निज पराक्रम युद्ध निमित्त कथन ॥ राग मारू ॥ रावण से गहि कोटिक मारों । जो तुम आज्ञादेहु कृपानिधि तो एह पर संसारो । कहो तु जननि जानकी ल्याऊं कहो तु लंक उदारों । कहो तु अवहीं पैठि सुभट हति अनल सकल प्रजारों ॥ कहो तु सचिव सवंधु सकल अरि एकहि एक पछारों । कहो तु तुम प्रताप श्रीरघुवर उदधि पपाननि तारों॥कहो तु दशो शीश वीसो भुज काटि छिनकमें डारों । कहो तु ताको तृण गहाइकै जीवत पाँइन डारों ॥ कहो तु सेना चारि रचों कपि धरनी व्योम पतारों । शैल शिला द्रुम वरपि व्योम चढ़ि शत्रु समूह संहारों ॥ वारवार पद परसि कहतहों हों कवहूं नाहिं हारों । सूरदास प्रभु तुमरे वचन लगि शिव वचनन को टारों ॥ ॥ १०६ ॥ अन्यच ॥ राग मारू ॥हों हरिजूको आयसु पाऊं । अवहीं जाइ उपारि लंगगढ़ उदधि पार लै आऊं ॥ अवहीं जंवूद्वीप इहांते लै लंका पहुँचाऊं । सोखि समुद्र उतारों कपिदल छिनक विलंव न लाऊं ॥ अव आवै रघुवीर जीति दल तौ हनुमंत कहाऊं । सूरदास शुभ पुरी अयोध्या राघव सुयश वसाऊं ॥ १०७॥ सिंधु सेतु निमित्त हनुमान विनय ॥ राग सारंग ॥ रघुपति वेगि जतन अव कीजै।बांधें सिंधु सकल सेना मिलि आपुन आयसु दीजै॥तवलगि तुरत एकतो वांधो द्रुम पापाननि छाई । द्वितिय सिंधु सिय नैन नीरह्वै जवलौं मिलै न आई॥यह विनती हों करों कृपानिधि वारवार अकुलाई॥सूरजदास अकाल प्रलय प्रभु मेटो दरश दिखाई ॥ १०८ ॥ सीता देन निमित्त विभीषन वचन रावण मति ॥ राग मारू॥लंकपतीको अनुज शीशनायो । परमगंभीर रणधीर दशरथ तनय कोपि करि सिंधुके तीर आयो ॥ सीयको लै मिलो यह मतो है भलौ कृपा करि मम वचन मानि लीजै । ईशको ईश करतार करुणामयी तासु पद कमल पर शीश दीजै॥कह्यो लंकेश दै शीशपग तिसीके जाहि मत मूढ कायर डरानो । जानि अशरण शरण सूरके प्रभूको तुरंतहि जाइ द्वारे बुझानो ॥ ॥ १०९ ॥ रामचन्द्रसों विभीषण मिलाप । राग सारंग ॥ आइ विभीषण शीशनवायो । देखत ही रघुवीर धीर कहँ लंकपती तिहि नाम बुलायो ॥ कह्यो सु वहुरि कह्यो नहिं रघुवर यहै विरद चलि आयो । भक्तवछल करुणामय प्रभुको सूरदास यश गायो ॥ ११० ॥ सभामध्य श्रीरामचन्द्र वचन । राग मारू ॥ तव हों नगर अयोध्या जैहों । एक वात सुन निश्चय मेरी रावण राज्य विभीषण दैहों ॥ कपिदल जोरि और सव सेना सागर सेतु वँधैहों । काटि दशोशिर वीस भुजा तव दशरथ सुत जु कहैहों ॥ छन इक माहिं लंक गढ तोरों कंचन कोट ढहैहों । सूरदास प्रभु कहत विभीषण रिपुहति सीता लैहों॥१११॥ सिय दे मिलन निमित्त मंदोदरी शिक्षा रावण मति॥राग मारू॥वे देखि आये राम राजा । जलके निकट आइ भये ठाढे दीसत विमल ध्वजा ॥ सोवत कहा चेतहो रावण मैं जु कहति कत खात दगा । कहति मंदोदरी सुनु पिय रावण मेरी वात अगा ॥ तृण दशनन लै मिल दशकंधर कंठहिं मेलि पगा । सूरदास प्रभु रघुपति आये दहपट होइ लंका ॥ ११२ ॥ अन्यच । शरण परि मन वच कर्म विचारि । ऐसो कौन और त्रिभुवन में जो अव लेइ उवारि ॥ सुनि शिप कंत दंत तृण धारि कै स्यो परिवार सिधारो । परम पुनीत जानकी संग लै कुल कलंक किन टारो ॥ ये दशशीश चरण तर राखो मेटो सव अपराध । महाप्रभु कृपाकरन रघुनंदन रिस न गहें पल आध ॥ तोरि धनुप मुख मोरि नृपनि को सीय स्वयंवर कीनो । छिन इकमें भृगुपाति प्रताप वल करपि हृदय धरि लीनो ॥ लीला करत कनकमृग मारचो वध्यो वालि अभिमानी । सोइ दशरथ कुलचन्द अमित वल आए सारंगपानी ॥ जाके दल सुग्रीव सुमंत्री प्रवल यूथपति भारी । महासुभट रणजीत पवनसुत वड़ो वज्र वपुधारी ॥ करिहै लंक पंक छिन भीतर वज्र

शिला लै धावै। कुल कुटुंब परिवार सहित तुहिं बांधत विलम न लावै ॥ अजहूं जिन वल कर शंकर को मान वचन हित मेरो।जाइ मिलो कौशल नरेशको भ्रात विभीषण तेरो। कटक सोर अति दूरि दशो दिश देखत वनचर भीर। सूर समुझि रघुवंश तिलक दोउ उतरे सागर तीर ॥११३॥ अन्यच ॥ काहे परतिरिया हरि आनी। यह सीता जू जनक की कन्या रमा अपुन रघु नंदन रानी ॥ रावण मुग्ध कर्मको हीनो जनकसुता तैं त्रिय करि मानी। जाके क्रोध भूमि जल पटके कहा कहैगो सिंधुज पानी ॥ मूरख सुखहिं नीद नहिं आवै लेहैं लंक वीस भुज भानी। सूर न मिटत भाग की रेखा अल्प मृत्युतेरी आइ तुलानी ॥ ११४ ॥ अन्यच। रागमारू ॥ तोहिं कौन मति रावण आई। आजु कालि दिन चारि पांचमें लंका होति पराई ॥ लंका कोट देखि जिन गर्वहि अरु समुद्र सी खाई। जाकी नारि सदा नव यौवन सो क्यों हरै पराई ॥ जाके हित सीताप ति आये राम लक्षण दोउ भाई। सूरदास प्रभु लंका तोरैं फेरैं राम दुहाई ॥ ११५ ॥ मंदोदरी रावण संवाद। राग मारू ॥ आयो रघुनाथ वली सीख सुनो मेरी। सीता लै जाइ मिलो पति जु रहै तेरी ॥ तैं जु बुरे कर्म किये सीता हरि ल्यावो। घर बैठे वैर कियो कोपि राम आयो ॥ चेतत क्यों नाहिं मूढ एक वात मेरी। अजहूं सिंधु नाहिं वंध्यो लंका है तेरी ॥ सागर को पाजि वांधि पार उतरि आवैं। देखि त्रिया करिकै वल करिणी दिखरावै ॥ रीछ कीश वश्य करौं रामहि गहि ल्याऊं ॥ जानति हौं वल वालि सों नछूटि पाई। तुम्हें कहा दोष दीजे काल अवधि आई ॥ वलि जव वहु यज्ञ करे इन्द्र सुनि सुखायो। छल करि लई छीनि मही वामन ह्वै धायो ॥ हिरणकशिपु अतिप्रचंड ब्रह्मा वर पायो। नरसिंह रूप धरे छिन न विलम लायो ॥ पाहन सों वांधि सिंधु लंका गढ़ तोरै। सूरदास मिलि विभीषण राम देहि फोरै ॥ ११६ ॥ सेतुबंध आरंभ सिंधुमिलन ॥ राग धनाश्री॥रघुपति चन्द्र विचार कर‍्यो। नातो मानि सगर सागर सों कुश साथरे पर‍्यो ॥ तीनि याम अरु वासर बीते सिंधु गुमान भर‍्यो।कीन्यो कोप कुवँर कमला पति तव कर धनुष धर‍्यो ॥ ब्रह्म भेष आयो अति व्याकुल देख्यो वान डर‍्यो। द्रुम पपान प्रभु वेगि मँगायो रचना सेतु कर‍्यो ॥ नल अरु नील सुत विश्वकर्माके छुवत पषान तर‍्यो। सूरदास स्वामी प्रतापते सव संताप हर‍्यो ॥ ११७ ॥ सेतु बंधन॥ राग मारू ॥ आपुन तरि तरि औरन तारत असम अचेत पाषाण प्रगट पानी में वनचर डारत ॥ इहि विधि उपलैं सुतरु पात ज्यों यदपि सेन अति भारत।बुड़ि न सकेतु सेतु रचना रचि राम प्रताप विचारत॥जिहि जल तृण पशु वार बूडि आपुन सँग औरन बोरत।तिहि जल गाजत महाबीर सव तरत अंग नहिं मोरत॥रघुपति चरण प्रताप प्रगट सुर व्योम विमाननि गावत। सूरदास क्यों बूड़त कलयू नाउ न बूड़न पावत॥११८॥ (लंकाकाण्ड) रावण दूत ग्रहण,पहिरावनि दे विदाकरन। राग सारंग॥ शुक सारन द्वै दूत पठाये।वानर वेष फिरत सेनामें सुनत विभीषन तुरत बँधाये ॥ वीचहि मार परी अतिभारी राम लछन जव दरशन पाये। दीन दयालु विहाल देखिकै छोरी भुजा कहांते आये॥हम लंकेश दूत प्रतिहारी समुद्र तीरको जात अन्हाये। सूर कृपालु भये करुणामय आपुन हाथ दूत पहिराये ॥ ११९ ॥ राम सागर संवाद, रावण दूत पुनः लंका गमन, युद्ध निमित्त कुंभकर्ण मंत्र। राग धनाश्री ॥ रघुपति जवै सिंधु तट आये। कुश साथरी वैठि इक आसन वासर तीनि गँवाये ॥ सागर गर्व धर‍्यो उर भीतर रघुपति नर करि जान्यो। तव रघुवीर तीर अपने कर अग्नि वरण गहि तान्यो। तव जलधर खरभरो त्रास गहि जंतु उठे अकुलाई। कह्यो न नाथ वाण मोहि जार‍्यो शरण पर‍्यो हौं आई ॥

आज्ञा होइ एक छिन भीतर जल दश दिशि करि डारौं । अंतर मारग होइ सवनि को इहि विधि पार उतारों ॥ और मंत्र जो करै देवमणि बांधौ सेतु विचार । दीन जानि धरि चाप विहँसिकै दियो कंठते हार ॥ यहै मंत्र सवहिन मन आयो सेतु बंध प्रभु कीजे । सब दल उतारि होइ पारंगत ज्यों न कोऊ इक छीजे ॥ यह सुनि दूत गयो लंकामहँ सुनत नगर अकुलानो । रामचन्द्र प्रताप दशो दिशि जल पर तरत पपानो ॥ दशशिर बोलि निकट बैठायो कहि धावन सतभाउ । उद्यम कहा होत लंकाको कौने कियो उपाउ ॥ जाम्बवन्त अंगद बंधू मिलि कैसे इहि पुर ऐहैं । मो देखत जानकी नैन भरि कैसे देखन पैहैं ॥ हौं सतभाउ कहत लंकापति जो जिय उत्तम मानो । सकल कहौं व्यवहार कटक को कपि उमहे सो मानो ॥ वार वार यों कहत सकत नहिं तो हति लैहैं प्राण । मेरे जान कनकपुर फिरिहैं रामचन्द्र की आन ॥ कुंभकर्ण हँसि कह्यो सभा में सुनौ आदि उत्पात । एक दिवस हम ब्रह्मसभामें चलत सुनी यह वात ॥ कामअंध ह्वै सब कुटुंब धन खोवै एकहि वार । सो अब सत्य होत एहि अवसर कौन जु मेटनहार ॥ और मंत्र कछु उर जिनि आनो आजु सुकपि रण मांड़हि । गहे बांह रघुपतिके सन्मुख ह्वैकरि यह तनु छांड़हि ॥ यह यश जीति परमपद पावहु उर संशय सब खोई । सूर सकुचि जो शरन सँभारौ क्षत्री धर्म न होई ॥१२०॥ रघुपति सेतु उल्लंघन ॥ राग धनाश्री ॥ सिंधु तट उतरत राम उदार । रोप विपम कीनो रघुनंदन सब विपरीत विचार ॥ सागर पर गिरि गिरि पर अंबर कपि घन के आकार । गरज किलक आघात उठत मनु दामिनि पावक झार ॥ परत फिराइ पयोनिधि भीतर सरिता उलटि वहाई । मनु रघुपति भयभीत सिंधु पत्नी प्योसार पठाई । वाला विरह दुसह सबहुन को जान्यो राजकुमार । वाण वृष्टि शोणित करि सरिता व्याहत लगी न वार ॥ श्रवणनि कनक कलस आभूपन मनि मुक्ता गन हार । सेतुबंध करि तिलक कृपानिधि रघुपति उतरे पार ॥ १२१ ॥ मंदोदरी वचन ॥ राग धनाश्री ॥ देखि रे वह सारंगधर आयो । सायर तीर भीर वानरकी शिरपर छत्र बनायो ॥ शंख कुलाहल सुनियन लागे लीला सिंधु बंधायो । सोयो कहा लंक गढ़ भीतर अधिको कोप दिवायो ॥ पद्मकोटि जाकी सेना सुनियत जंतु जु एक पठायो। सूरदास जे हरि विमुख भये तिहि केतक सुख पायो ॥ १२२ ॥ ॥ अन्यच्च ॥ राग मारू ॥ मेरेजान अजहूं जानकी दीजै ।लंकापति पिय कहत पियासों यामे कछू न छीजै ॥ पाहन तारे सागर वांध्यो तापर चरण न भीजै । वनचर एक लंक तिहि जारी ताकी सरि क्यों लीजै ॥ चरण टेकि दोउ हाथ जोरिकै विनती काहे न कीजै । वे त्रिभुवनपति करैं कृपा अति कुटुंब सहित सुख जीजै ॥ आवत देखि वाण रघुपतिके तेरो मन न पतीजै। सूरदास प्रभु लंक जारिकै राज्य विभीपण दीजै ॥१२३ ॥ मंदोदरी प्रति रावण गर्व वचन ॥ कहा तू कहति त्रिया वार वारी । कोटि तेंतिस सुर सेव अह निशि करत राम अरु लक्ष्मण हैं कहारी ॥ मृत्युको वांधि मैं राखियो कूपमें देन आवत कहा डरत नारी ॥ कहत मंदोदरी मेटि को सकै तेहि जो रची सूर प्रभु होनहारी ॥ १२४ ॥रावणके पास अंगद दूतत्व ॥ लंकपति पास अंगद पठायो । सुन अरे अंध दशकंध लै सिया मिलि सेतु करि बंध रघुवीर आयो वह सुनत परिजरयो वचन नहिं मन धरयो कहा तें राम ते मुहि डरायो । सुर असुर जीति मैं सब कियो आपु वश सूर मम सुयश तिहुँलोक गायो॥१२५॥ ॥रावण तवलौंहै रण गाजत । जबलौं कर सारंगपानिके नाहीं वाण विराजत ॥ यम कुबेर इन्द्र है जानत रचि पचिके रथ साजत ॥ रघुपति रवि प्रकाश सो देखौ उडगन ज्यों तोहि भाजत॥ज्यों सह गवन सुन्दरीके संग बहु बाजन

हैं बाजत। तैसे सूर असुर आदिक सब संग तेरे हैं लाजत ॥ १२६ ॥ रावण प्रति श्रीराम संदेश ॥ जानिहौं बल तेरो रावण। पठवौं कुटुम सहित यम आगे नेक देहि धौं मोको आवन॥दारुण कीश सुभट वर सन्मुख लैहों संग त्रिदिशि बल पावन॥ अगिनि पुंज सित बाण धनुप धरि तोहिं असुर कुल सहित जरावन ॥ करिहौं नाम अचल पशुपतिको पूजा विधि कौतुक देखरावन। असुर मुख छेदि सुपक्क नवफल ज्यों अरु शंकर दशशीश चढ़ावन ॥ देहौं राज्य विभीपन जनको लंकापुर रघु आन चलावन। सूरदास निस्तरिहैं इहि यश कृपन दीन जन नव यश गावन ॥ १२७ ॥ रावण प्रति अंगद उत्तर ॥ मोको राम रजायसु नाहीं। नातर सुन दशकंध निशाचर प्रलय करा छिन माहीं। पलटि धरौं नवखंड पुहुमि पर जो बल भुजा सभारों॥ राखों मेलि भंडार सूर शशि नभ कागद ज्यों फारौं।जारौं लंक छेदि दशमस्तक सुर संकोच निवारैं॥ श्री रघुनाथ प्रताप चरणते उर ते भुज उपारों॥ रे रे चपल स्वरूप ढीठ तू बोलत वचन अनेरो। चितवै कहा पान पल्लव पुट प्राण प्रहारों तेरो॥ गये ससंक युगल बंधू बन जान्यो असुर अहेरो। तीनिलोक विख्यात विशदयश प्रलय नामहै मेरो ॥ रेरे अंध बीसहू लोचन परत्रियहरन विकारी। सूने भवन गवन तैं कीनो शेष रेष नहिं टारी ॥ अजहूं कह्यो सुनै जो मेरो आये निकट मुरारी।जनकसुता लै चलि पाँइनि पर श्री रघुनाथ पियारी। संकट परे जु शरण पुकारौं तौ क्षत्री न कहाऊं। जन्महि ते तापस आराध्यो कैसे हित उपजाऊं॥ अबतो सूर यहै बनिआई हरिको निज पद पाऊं॥थे दशशीश ईश निर्मायल कैसे चरण छुआऊं॥ १२८॥ अंगद वचन ॥ राग मारू ॥ मूरख रघुपति शत्रु कहावत।जाके नाम ध्यान सुमिरण ते कोटि यज्ञ फल पावत। नारदादि सनकादि महामुनि सुमिरत मन शुचि ध्यावत। अंबरीष प्रहलाद भक्त बलि निगम नीति जिहि गावत ॥ जाकी घरनि हरी छल बल करि ताते बिलम न लावत। दश अरु आठ शंख बनचर लै लीला सिंधु बँधावत ॥ जाइ मिलौ कौशलनरेश को मन अभिलाष बढ़ावत। दै सीता लंकेश पाइ परि तव लंकेश कहावत ॥तू भूल्यो दशशीश बीस भुज मोहिं गुमान दिखावत। कंध उपारि डारि भूतल में सूर सकल दुखपावत ॥ ॥ १२९ ॥ रावण भेद उपजावन अंगद राम प्रशंसा। राग मारू ॥ रे कपि क्यों पितु वैर विसार्‍यो। तो समतुल कन्या किन उपजी जो कुलशत्रु न मार्‍यो॥ ऐसो सुभट नहीं इहि मंडल देख्यों वालि समान। तासों कियो वैर मैं हार्‍यो कीनी पैज प्रमान ॥ ताको वधन कियो इहि रघुपति तो देखत विद्मान। ताकी शरण रह्यो क्यों भावै शबद सुनौ दै कान॥ रे दशकंध अंध मति मूरख क्यों भूल्यो इहि रूप। सूझत नहीं बसि हू लोचन पर्‍यो तिमिरके कूप ॥ धन्य पिता जापर परिफुल्लित राघव भुजा अनूप। वा प्रताप की मधुर विलोकनि गहिवारौं सतरूप॥ जो तुहि नाहिं बाँह बल पौरुष अर्धराज देउँ लंक। मो समेत ये सकल निशाचर लरत न माने शंक॥जब रथ साजि चढों रणसन्मुख जीय न आनो दंग। राघव सैन समेत संहारौं करौं रुधिर मय अंग॥ श्री रघुनाथ चरण व्रत उर धरि क्यों नाहिं लागत पाइ। सबके ईश परम करुणामय सबहीको सुखदाइ ॥ हौं जु कहत लै चलो जानकी छांडि सबै दंभान। सन्मुख होइ सूरके स्वामी भक्तन कृपानिधान ॥ १३० ॥ इन्द्रजीत युद्ध आज्ञा अंगद पाय रोपन। राग मारू ॥ लंकपती इन्द्रजीतको बुलायो। कह्यो तिहि जाहु रणभूमि दल साजिकै कहा भयो राम दल जोरि ल्यायो ॥ कोपि अंगद कह्यो धरो धर चरण मे ताहि जो सकै कोऊ उठाई। तौ बिना युद्ध किये जाहिं रघुबीर फिरि यह सुनत उठे जोधा रिसाई॥ रहे पचिहारि नहिं पार कोऊ सक्यो उठ्यो तब आप रावण खिसाई। कह्यो

अंगद कहा मम चरणको गहत चरण रघुवीर गहु क्यों न जाई ॥ सुनत यह सकुच कियो गवन निज भवनको वालिसुत हूं वहां ते सिधायो । सूरके प्रभुको पाँइ परि यों कह्यो अंध दशकंधको काल आयो ॥ १३१ ॥ अंगद आवन राघव निकट ॥ वालिनंदन आइ शीशनायो । अंध दशकंधको काल सूझत प्रभू मैं कई भेद विधि कहि जनायो॥इन्द्रजित चल्यो निज सैन सब साजिकै रावरी सैन हू साज कीजै।सूर प्रभु मारि दशकंध थपि वंधु तिहि जानकी छोरि यश गात लीजै१३२॥ श्रीरघुनाथ प्रति लक्ष्मण प्रतिज्ञा युद्ध निमित्त ॥ रघुपति जो न इन्द्रजित मारौं । तो न होउँ चरणन को चेरो जो न प्रतिज्ञा पारौं ॥ जो दृढ वात जानिये प्रभुजू धर्मगयेकहि वान निवारौं । शपथ राम परताप तिहारे खंड खंड करि डारौं॥कुम्भकर्ण दशशीश वीसभुज दानव दलहिं विडारौं । तबै सूर संधान सफल है रिपुको शीश उपारौं ॥ १३३ ॥ लक्ष्मणका सेना सहित युद्ध गवन ॥ लछन दल संग लये लंक घेरी । वसुमति पष्ट अरु अष्ट आकास भये दिश विदिश कोउ नहिं जात हेरी ॥ ऋच्छ पलवंग किलकार लागे करन आन रघुनाथ की जाइ फेरी । पाट गये टूटि परी लूट सब नगर में सूर दरवान कह्यो जाइ टेरी ॥ १३४ ॥ मंदोदरी वचन रावण प्रति ॥ रावण उठि निरखि देखि आजु लंक घेरी । कोटि जतन करि रही नाहिं सीख सुनी मेरी ॥ गहि गहात किलकात अंधकार आयो । रविको रथ सूझत नहिं धरनि गगन छायो ॥ तोरि पाट लूट परी भागे दरवाना । लंकामें सोर परयो अजहूं तैं न जाना ॥ फोरि फारि तोरि तारि गगन होत गाजै । सूरदास लंका पर चक्र शंख वाजै ॥ १३५ ॥ अन्यच्च ॥ लंका फिरि गई राम दुहाई । कहति मंदोदरि सुन पिया रावण तैं कहा कुमति कमाई ॥ दश मस्तक मेरे वीस भुजा हैं सौ योजन की खाई । मेघनाद से पुत्र महावल कुम्भकर्ण से भाई ॥ रहु रहु अवला वोल न वोलो उनकी करत वडाई । तीनि लोक ते पकरि मँगाऊं वे तपसी दोउ भाई॥ तुम्हैं मारि महारावण मारै देय विभीषण राई। पवनको पूत महावल जोधा पल में लंक जराई ॥ जनकसुतापति हैं रघुवर से संग लक्ष्मण से भाई ॥ सूरदास प्रभुको यश प्रगट्यो देवनि वंदि छुड़ाई ॥ १३६ ॥ मेघनाद युद्ध नारद शिक्षा नाग फास मोचन ॥ राग मारू ॥ मेघनाद ब्रह्मा वर पायो । आहुति अगिनि जिवाइ सँतोषी निकस्यो रथ बहु रतन वनायो ॥ आयुध धरे समेत कवच सजि गर्जि चल्यो रण भूमिहि आयो । मनो मेघनायक ऋतु पावस वाण वृष्टि करि सैन खपायो ॥ कीनो कोप कुँवर कोशलपति पंथ अकास सायकनि छायो। हँसि हँसि नागफांस शर साधत बंधन वंधु समेत वँधायो ॥ नारदस्वामी कह्यो निकट ह्वै गरुडासन काहे विसरायो । भयो तोष दशरथके सुतको मुनिको ज्ञान लखायो ॥ सुमिरन ध्यान जानिकै अपनो नाग फांसते सैन छुड़ायो । सूर विमान चढ़े सुरपुर लौं आनँद अभय निसान वजायो ॥ १३७ ॥ कुम्भकर्ण रावण संवाद॥ राग मारू ॥ लंकपति अनुज सोवत जगायो । लंकपुर आइ रघुराइ डेरो दियो त्रिया जाकी सिया मैं ले आयो ॥ तैं बुरी बहुत कीनी कहा तोहिं कहौं छांड़ि यश जगत अपयश बढ़ायो । सूर अव डर न करि युद्ध को साज करि होइ है सोइ जो दई भायो ॥ १३८ ॥ लक्ष्मण वचन खड्गधारण ॥ राग मारू ॥ लछन कह्यो करवार सभारों । कुम्भकर्ण अरु इन्द्रजीत को टूक टूक करि डारों ॥ महावली रावण जिहि वोलत पल में शीश सँहारों । सब राक्षस रघुवीर कृपाते एकहि वाण निवारों ॥ हँसि हँसि कहत विभीषण सों प्रभु महावली रण भारो ।सूर सुनत रावण उठि धायो क्रोध अनल तन धारो ॥१३९॥ रावण लक्ष्मण युद्ध, लक्ष्मण मूर्छा ॥ राग मारू ॥ रावण चल्यो गुमान भरयो । श्री रघुनाथ अनाथ वंधु सों सन्मुख कहत खरयो ॥ कोप

धरो रघुवीर धीर तब लक्ष्मण पाँइ परचो । तेरे तेज प्रताप नाथ जू मैं कर धनुष धरचो ॥ सारथि सहित असुर बहु मारे रावण क्रोध जरचो । इन्द्रजीत लीनी जब सैंथी देवन हहा करचो ॥ छूटी विज्जु राशि वह मानो भूतल बंधु परचो । करुणा करत कुँवर कौशलपति नैनन नीर झरचो ॥ सूरदास हनुमानदीन ह्वै अंजलि जोरि खरचो । आज्ञादेहु सजीवनि लाऊं गिरि उचाइ सिगरचो ॥ १४० ॥ श्रीराम करुणा ॥ राग मारू ॥ निरखि मुख राघव धरत न धीर । भये अरुण विकराल कमलदल लोचन मोचत नीर ॥ बारहबरस नींद है साधी ताते विकल शरीर । बोलत नहीं मौन कहा साधी विपति बटावन वीर ॥ दशरथ मरन हरन सीता को रन वीरनकी भीर । दूजो सूर सुमित्रा सुतबिनु कौन धरावै धीर ॥ १४१ ॥ अन्यच ॥ अब हौं कौनको मुख हेरों । दुख समुद्र जिहि वारपार नहिं तामें नाव चलाई । केवट थक्यो रह्यो अध वीचक कौन आपदा आई ॥ नाहिन भरत शत्रुघन सुन्दर जासों चित्त लगायो । वचिहि भई औरकी औरै भयो शत्रुको भायो ॥ मैं निज प्राण तजौंगो सुन कपि तजिहै जानकी सुनिकै । ह्वैहै कहा विभीषनकी गति यहै सोच जिय गुनिकै ॥ बार बार शिरलै लक्ष्मणको निरखि गोदपर राखैं । सूरदास प्रभु दीन वचन यों हनूमान सों भाखैं ॥ १४२ ॥ श्री राम हनू प्रशंसा ॥ कहां गयो मारुतपुत्र कुमार । ह्वै अनाथ रघुनाथ पुकारैं संकट मित्र हमार ॥ इतनी विपति भरत सुनिपावै आवै दलहि सजूथ । करगहि धनुप जगतको जीतै कितक निशाचर यूथ ॥ नाहिन और वियो कोउ समरथ जाहि पठाऊं दूत । वह अवहीं पौरुप दिखरावै होइ पवनके पूत ॥ इतनो वचन श्रवण सुनि हरष्यो फूल्यो अंग न मात । लै लै चरन रेनु निज प्रभुकी रिपुके शोणित न्हात ॥ हो परबल पुनीत केशरि सुत तुम हित बंधु हमारो ॥ जिह्वा रोम रोम प्रति नाहीं पौरुप गनो तुम्हारो ॥ जहां जहां जेहिकाल सँभारे तहां तहां त्रास निवारे । सूर सहाय कियो वन वसिकै वन विपदा दुख टारे ॥ १४३ ॥ राघव मति हनुमत वचन लक्ष्मण मूर्छा उपाय ॥रघुपति मन संदेह न कीजै । मो देखत लक्ष्मण क्यों मरिहै मोको आज्ञा दीजै॥कहोततु सूरज उगन देहुँ नहिं दिशि दिशि बाढ़ै ताम । कहो तु गन समेत ग्रसि खाऊं यमपुर जाइ न राम ॥ कहौ तु कालहि खंड खंड करि टूक टूक करि डारों । कहो तु मृत्युहि मारि डारि कै खोजत पालहिं पाटों॥कहो तु चन्दहिले अकासते लक्ष्मण मुखहि निचोरों। कहो तु पैठि सुधाके सागर जल समेत मैं घोरों॥श्री रघुबर मोसों जन जाके ताहि कहा सकराई । सूरदास मिथ्या नहिं भाषत मोहिं रघुनाथ दुहाई ॥ १४४ ॥ सजीवन निमित्त हनुमत गवन ॥ कह्यो तब हनुमत सों रघुराई । द्रोणागिरि पर आहि सजीवनि सुषेन वैद बताई ॥ तुरत जाइ लै आवो ह्यांते विलंब न करि अब भाई ॥ सूरदास प्रभु वचन सुनत हनुवंत चल्यो अतुराई ॥ १४५ ॥ हनू पर्वत लावन भरत मिलाप ॥ राग मारू ॥दौनागिरि हनुमान सिधायो । सँजीवनिको भेद न पायो तब सब शैल उचायो ॥ चितै रह्यो तब भरत देखिकै अवधपुरी जब आयो । मनमें जानि उपद्रव भारी बाण अकास चलायो । राम राम यह कहत पवनसुत भरत निकट तब आयो । पूछ्यो सूर कौन है कहितू हनुमत नाम सुनायो॥१४६॥ भरत कुशल प्रश्न पूछन, हनू लक्ष्मण मूर्छा कथन, करुणामें सुमित्रा धैर्य॥कहो कपि रघुपतिको संदेश॥कुशल बंधु लक्ष्मणवैदेही श्रीपति सकल नरेश जिन पूछो तुम कुशल नाथकी सुनो भरत बलवीर॥बिलख वदन दुख धरे सिया को हैं जलनिधि के तीर॥बनमें बसत निशाचर छल करि हरी सिया मम मात॥ता कारन लक्ष्मण शर लाग्यो भये राम बिनु भ्रात॥इतनो वचन श्रवन सुनि सुनिकै सबनि पुहुमि तन जोयो । त्राहि त्राहि कहि

पुत्र पुत्र कहि लोटि सुमित्रा रोयो ॥ धन्य सुपुत्र पितापन राख्यो धन्य सुकुल जिहि लाज। सेवक धन्य अंतके अवसर आवै प्रभुके काज॥ कत रघुनाथ सूरके कारण मोको लैन पठाये। थक्यो सुमध्य अर्ध निशि बीती को लक्ष्मणहि जियाये॥पुनि धरि धीर कह्यो धनि लक्ष्मण राम काज जो आवै।सूर जियै तौ जग यश पावै मरि सुरलोक सिधावै॥१४७॥धैर्य सहित सुमित्रा वचन॥राग मारू॥धनि जननी जो सुभटहि जावै।भीर परे रिपुको दल दलि मलि कौतुक करि दिखरावै॥कौशल्यासों कहति सुमित्रा जिनि स्वामिनि दुख पावै। लक्ष्मण जनि हौं भई सपूती राम काज जो आवै॥ जीये तो सुख विलसै जगमें कीरति लोगन गावै। मरै तु मंडल भेदि भाव को सुरपुर जाइ बसावै ॥ लोह गहे लालच करि जियको औरो सुभट लजावै। सूरदास प्रभु जीति शत्रुको कुशल क्षेम घर आवै ॥ १४८ ॥हनुमत भरत प्रति उत्तर॥ राग मारू॥ पवनपुत्र बोल्यो सतभाय।जाति सिराति राति बातनि हीं सुनो भरत चितलाय ॥ श्री रघुनाथ सजीवन कारण मोको इहां पठायो। भयो अकाज अर्ध निशि बीती लक्ष्मण काज नशायो॥ स्यों पर्वत शर बैठि पवनसुत हौं प्रभुपै पहुँचाऊं। सूरदास पांवरि मम शिरहै इहिबल भरत कहाऊं ॥ १४९ ॥ कौशल्या संदेश राम प्रति ॥ राग मारू ॥ विनती जाइ कहियो पवनसुत तुम रघुपतिके आगे। या पुर जिनि आवहु विनु लक्ष्मण जननी लाज न लागे॥ मारुतसुत संदेश हमारो सुमित्रा कहि समुझावै। सेवक जूझि परै रन विग्रह ठाकुर तौ घर आवैं॥ जबते तुम गौनें काननको भरत भोग सब छांड़े। सूरदास प्रभु तुमरे दरश विनु दुख समूह उर गाड़े॥१५०॥ हनूमान सजीवन लावन, लक्ष्मण चेत होन॥ राग सारंग॥हनुमान सजीवन ल्यायो महाराज रघुवीर धीरको हाथ जोरि शिरनायो। पर्वत आनि धरचो सागर तट भरत संदेश सुनायो॥ सूर सजीवन दै लक्ष्मणको मुर्छित फिरैं जगायो ॥ १५१ ॥ श्री राम वचन जय प्रतिज्ञा सहित ।राग कान्हरा॥ दूसरे कर वाण न लेहौं। सुन सुग्रीव प्रतिज्ञा मेरी एकहि बान असुर सब हैहों ॥ शिवपूजा जिहि भांति करीहै सोइ पद्धति परतक्ष दिखै हौं। दैत अपराध पाय फल पीड़ित शिरमाला कुल सहित चढ़ैहौं॥ मनो तूलगन परत आगिनि मुख जानि जड़ानि यमपंथ पठैहौं। करिहौं नहीं विलंब कछू अब उठि रावण सन्मुख ह्वै धैहौं॥ इमि दमि दुष्ट देव द्विजमोचन लंक विभीषन तुमको देहौं। लक्ष्मण सिया समेत सूर कपि सब सुख सहित अयोध्या जैहौं॥ ॥ १५२ ॥ रावण कुल वध ॥ राग मारू॥आजु अति कोपे हैं रन राम।ब्रह्मादिक आरूढ़ विमानन देखैं सुर संग्राम॥ धन तन दिव्य कवच सजि करि अरु कर धारचो सारंग। शुचि करि सकल बान सूधे करि कटि तट कस्यो निषंग॥ सुरपुरते आयो रथ सजिकै रघुपति भयो सवार। कांपी भूमि कहा अब ह्वैहै सुमिरत नाम मुरारि। क्षोभित सिंधु शेष शिर कंपित पवनगती भइ पंग। इन्द्र हँस्यो हर हँसि बिलखान्यो जानि वचन भयो भंग॥ धर अंबर दिशिविदिशि बढ़े अति शायक किरन समान। मानो महाप्रलयके कारन उदित उभय पटभान ॥ टूटत ध्वजा पताक छत्र रथ चाप चक्र शिर त्रान। जूझत सुभट जरत ज्यों दौ द्रुम विनु शाखा विनु पान॥ शोणित छिछ उछरि आकासहि गज बाजिन सर लागी। मनो नगर रन तननि धरनिते उपजी है अति आगी॥ उठि कबंध भहरात भीत ह्वै निकसत है जरि जागि। फिरत शृगाल सच्यो सो काटत चलत विसारि लै भागि॥ रघुपति रिस पावक प्रचंड अति सीता श्वास समीर। रावण कुल अरु कुम्भकर्ण वन सकल सुभट रणधीर ॥ भये भस्म कछु वार न लागी ज्यों ज्वाला पट चीर। सूरदास प्रभु अपुने बाहुबल कियो निमिष मय कीर ॥ १५३ ॥ रघुपति अपुनो

ग्रण प्रतिपारयो। तोरयो कोपि प्रवल गढ़ रावण टूक टूक करि डारयो॥ कहुँ भुज कहुँ धर कहुँ शिर लोटत मनो मदय मतवारो। डरपत वरुण कुवेर इन्द्र यम महा सुभट तन भारो॥रह्यो मांस को पिंड प्राण लै गयो बाण अनियारो। जाके नव ग्रह परे पाटि तर कूपै काल उसारयो॥ सो रावण रघुनाथ छिनक में कियो गिद्धको चारो। शिर संभारि लै गयो उमापति रह्यो रुधिरको गारो छोरे और सकल सुखसागर बांधि उदधि जल खारो॥ सुर नर मुनि सब सुयश बखानत दुष्ट दशानन मारयो॥ दियो विभीषण राज्य सूर प्रभु कियो सुरनि निस्तारयो। बंधु सहित जानकी संग लै अवधपुरी पग धारयो॥ १५४॥ रावण मरण समय मंदोदरी आदि विलाप। ॥ करुणा करति मंदोदरी रानी। चौदह सहस सुंदरी ऊभी उठै न कंत महा अभिमानी॥ बार बार बरज्यो नहिं मानत जनकसुता तैं कत घर आनी। ये जगदीश ईश कमलापति सीता तिया तैं जु करि जानी॥ लीन्हे गोद विभीषण रोवत कुल कलंक ऐसी मति ठानी। चोरी करी राजहू खोयो अल्प मृत्यु तेरी आइ तुलानी॥ कुंभकर्ण समुझाइ रहे पचि दे सीता मिलि सारंगपानी। सूर सबनि को कह्यो न मान्यो त्यों खाई अपनी रजधानी॥ १५५॥ आकाशसे अमृत वर्षा ॥ सुरपतिहि बोलि रघुवीर बोले। अमृत की वृष्टि रणखेत ऊपर करो सुनत तिन अमिय भंडार खोले॥ उठे कपि भालु तत्काल जय जय करत असुर भये मुक्त रघुवर निहारे। सूर प्रभु अगम महिमा न कछु कहि परत सिद्ध गंधर्व जय जय पुकारे॥ १५६॥सीता मिलाप॥ लक्ष्मण सीता देखी जाई। अति कृष दीन छीन तन प्रभु बिनु नैननि नीर बढ़ाई॥ जाम्बवंत सुग्रीव विभीषण करी दंडवत आई। आभूषण बहु मोल पटंबर पहिरो मात बनाई॥ बिनु रघुनाथ मोहिं सब फीके आज्ञा मेटि न जाई। पुहुप विमान बैठि वैदेही त्रिजटी तब गुहराई॥ देखत दरश राम मुख मोरयो सिया परी मुरछाई। सूरदास स्वामी तिहुँपुरके जग उपहास डराई॥ १५७॥परीक्षा हेतु सीता अग्नि प्रवेश। राग सोरठ॥ लक्ष्मण रचो हुताशन भाई। यह सुनि हनूमान दुख पाये मोपै लख्यो न जाई॥ आसन एक हुतासन बैठी मानो कुंदन की अरुणाई। जैसे रवि इक पल घन भीतर बिनु मारुत दुरिजाई॥ लै उछंग उत्संग हुतासन निष्कलंक रघुराई। लै विमान बैठारि जानकी कोटि वदन छवि छाई॥ दशरथ कही देवहू भाषी व्योम विमान निकाई। सिया राम लै भले अवध को सूरदास बलि जाई॥ १५८॥ कौशल्या शकुन विचार काग वचन। राग सारंग॥ बैठी जननि करति शगुनौती। लक्ष्मण राम अब मिलैं मोको दोउ अमोलक मोती॥ इतनी कहत सु काग उहांते हरीडार उडि बैठ्यो॥ अंचल गांठ दई दुःख भाज्यो सुख जो आनि उर पैठ्यो। जो लोंहों जीवन भर जीवों सदानाम तुव जपिहौं। दधि ओदन दोना करि देहौं अरु माइनमेंथ पिहौं॥ अबके जो परचो करि पाऊं अरु देखों भरि आँखैं। सूरदास सोनेके पानी मढि हों चों अरु पाँखै॥ १५९॥ अंगद बसीठी रावण वध आदि पर्य्यंत लीला। राग मारू॥ बालिनंदन बली विकट बनचर महा द्वार रघुवीर को वीर आयो। और ते दौर दरवान दशशीशसों जाय शिरनाय यों कह सुनायो॥ सुनि श्रवण दशवदन दशन अभिमान कर नैनकी सैन अंगद बुलायो। देखि लंकेश कपिभेश दर दर हँस्यो सुन्यो भट कटक को पारपायो॥ विविध आयुध धरे सुभट सेवत खरे छत्रकी छांह निर्भय जनायो। देव दानव महाराज रावण सभा कहन को मंत्र तहां कपि पठायो॥ रंक रावण कहा टेक तेरो इतो दोउ कर जोरि विनती विचारो। परम अभिराम रघुनाथ के रोमपर बीस भुज शीश दश वारि डारो॥ झटकि हाटक मुकुट

पटकि भट भूमि सों झारि तरवारि तेरो शिर संहारों । जानकीनाथ के हाथ तेरो मरण कहा मतिमंद तोहिं मध्यमारों ॥ पाक पावक करै वारि सुरपति भरै पवन पावन करै द्वार मेरे । गान नारद करैं ज्ञान सुरगुरु कहै वेद ब्रह्मा पढ़ै पौरि टेरे ॥ शेष वासुकि प्रभृति नाग गंधर्व गण सकल वसुजीति मैं करे चेरे । सुनिअरे शठ दशकंधको कौन भय राम तपसी दये आनि डेरे ॥ तपवली सत्य तापसवली तप विना वारि पर कौन पाषाण तारै । कौन ऐसो वली सुभट जननी जन्यो एकही बाण तकि वालि मारै ॥ परमगंभीर रणधीर दशरथ तनय शरण गये काटि अवगुण विसारै । जाइ मिलि अंध दशकंध गहि दंत तृण तौ भलै मृत्यु मुखते उवारै ॥ कोपि करि वार गहि काल लंकाधिपति मूढ कहा रामको शीश नाऊं । शंभुकी सप्त सुनि कुकपि कायर कृपण श्वास आकाश वनचर उड़ाऊं ॥ होइ सन्मुख भिरों शंक नहिं मन धरों मारि सब कटक सागर वहाऊं । कोटि तेंतीस ममसेव निशि दिन करत कहा अव राम नरसों डराऊं ॥ परो भहराय भभ कत रिपु वायसों करि कदन रुधिर भैरों अघाऊं । सूरसाजै सबै देव दुंदुभि अवै एकते एक रण करि विताऊं॥१६०॥वद्यो रावण सुन्यो शीश तव शिव धुन्यो उमड़ि रण रंग रघुवीर आये।रुंड भक रुंड धुकि धकत धरणी परे रुधिर सरिता नहीं पार पाये।राम शर लागि मनु आगि गिरिपर जरी उछलि छिछिन शरनि भानु छाये ॥ मारि दशकंध पथ बंधु को सूर प्रभु राजीवनैन घर सिया ल्याए ॥ १६१ ॥ (उत्तर कांड) अयोध्या प्रशंसा ॥ राग मारू ॥ हमारो जन्मभूमि यह गाउँ । सुनहु सखा सुग्रीव विभीषण अवनि अयोध्या नाउँ ॥ देखत वन उपवन सरिता सर परम मनोहर ठाउँ । अपनी प्रकृति लिये बोलत हौं सुरपुर में न रहाउँ ॥ ह्यां के वासी अविलोकत हौं आनंद उर न समाउँ । सूरदास जो विधि न सकोचे तो वैकुंठ नजाउँ ॥ १६२ ॥ राम आगमन श्रवन सुनि भरत रचना करन उत्सव प्रकाश॥राग वसंत॥राघव आवति हैं अवधि आजु॥रिपु जीते साधे देव काजु॥प्रभु कुशल बधू सीतासमेत॥जस सकल देश आनंद देत॥कपि सोभित सकल अनेक संग॥ज्यों पूरण शशि सागर तरंग सुग्रीव विभीषण जाम्बवंत । अंगद केदार सुखेन संत ॥ नल नील द्विविद केसरि गवछ । कपि कहे मुख्य और अनेक लछ ॥ जव कही पवनसुत विविधवात । तव उठी सभा सव हर्ष गात ॥ ज्यों पावस ऋतु घन प्रथम घोर । जल जीवक दादुर रटत मोर ॥ जब सुने भरत पुर निकट भूप । तव रच्यो नगर रचना अनूप ॥ प्रति प्रति गृह तोरण ध्वजा धूप । सजे सकल कलस अरु कदली जूप ॥ दधि हरद दूव फल फूल पान । कर कनकथार त्रिय करत गान ॥ सुनि भरे वेद ध्वनि शंख नाद । सुनि निरखि पुलक आनँद प्रसाद ॥ देखत प्रभु की महिमा अपार । सव बिसरि गये मन बुधि विकार ॥ जय जय दशरथ कुल कमल भान । जयकुमुद जननि शशि प्रजा प्रान ॥ जय दिव भूतल शोभा समान । जय जय जय सूर न शब्द आन ॥ १६३ ॥ श्री राम वचन॥ सुग्रीव प्रति भरत दरशावन परस्पर मिलाप ॥ राग मारू ॥ देखो कपिराज भरत वे आये । मम पांवरी शीश परजाके कर अँगुरी रघुनाथ बताए ॥ क्षीन शरीर बीरके विछुरे राग भोग चितते विसराए ॥ लघु दीर्घ तपसा अरु सेवा स्वामी धर्म सब जगहिं सिखाये । पुहुप विमान दूरिही छांड़े चरण चपल प्रभु प्रण करिधाए ॥ आनँद मगन सदन सुत कैकयी कनक दंड ज्यों गिरत उठाये । भेंटत आंसू परत पीठिपर गद्गद गिरा नैनजल छाए ॥ ऐसे मिली सुमित्रासुतको विरह अग्नि तनु जरत बुझाए । यथायोग भेंटे पुरवासी शूल मिटी सुखसिंधु पठाए । सिया राम लक्ष्मण मुख निरखत सूरदासके नैन सिराए ॥ १६४ ॥ कौशल्या सुमित्रा आदि आरती मंगलाचार ॥ राग मारू ॥ अति

सुख कौशल्या उठिधाई। उदित वदन अरु मुदित सदनते आरति साजे सुमित्रा ल्याई ॥ ज्यों सुरभीवन वसति वच्छविनु परवश पशुपनिकी वहराई। चली सांझ समुहाय श्रवत थन उमगि मिलन जननी दोउ आई॥ अमीवचन सुनि होत कुलाहल देवन दिव्य दुंदुभी वजाई। दधिफल दूब कनकके कोपर आरति युवति विचित्र वनाई॥ वरण वरण पट पडत पांवड़े नैननि सकल सुखदही छाई। पुलकित रोम हर्ष गदगद सुर युवतिन मंगल गाथा गाई ॥ निज मंदिरमें आनि तिलकदै द्विजन अशीश सुनाई। सिया सहित सुख लेहो ह्यां तुम सूरदास वलि जाई ॥ श्री राम राज्याभिषेक ॥ राग मारू ॥ मणि मय आसन आनि धरे। दधि मधु नीर कजकके कोपर आपुन भरत भरे॥ प्रथम भरत बैठाइ बंधुको यह कहि पाँइ परे। हौं पावन प्रभुचरण पखारों रुचि करि आप करे॥ निज कर चरण पखारि प्रेम रस आनँद आंसु ढरे। ज्यों शीतल संताप सलिलदै शुद्धि समूह करे॥ परसत पाणि चरण पावन दुःख अंग अंग सकल हरे। सूर सहित आमोद चरण जल लैकर शीश धरे॥ १६५ ॥ राग आसावरी ॥ राज समाज वर्णन॥ विनती केहिविधि प्रभुहि सुनाऊं। महाराज रघुवीर धीरको समय न कवहूं पाऊं॥ याम रहत यामिन के वीते तिहि औसर उठि धाऊं। सकुच होत सुकुमार नींदसे कैसे प्रभुहि जगाऊं ॥ दिनकर किरण उदित ब्रह्मादिक रुद्रादिक इकठाऊं। अगणित भीर अमर मुनिगनकी तिहिते ठौर न पाऊं॥ उठतसभा दिन मध्य सियापति देखि भीर फिरि आऊं। न्हात खात सुख करत साहिवी कैसे कर अनसाऊं। रजनी मुख आवत गुण गावत नारद तुम्बर नाऊं। तुमहीं कहौ कृपण हौं रघुपति किहिविधि दुख समझाऊं॥ एक उपाय करौ कमलापति कहो तो कहि समझाऊं। पतित उधारण सूर नाम प्रभु लिखि कागद पहुँचाऊं ॥ १६६ ॥ इन्द्र दुराचार, इन्द्र अहल्या मति गौतम शाप॥राग विलावल॥ सुरपति गौतम नारि निहार। आतुर ह्वै गयो विना विचार॥काग रूप करि ऋपि गृह आयो।अर्ध निशा तेहिं बोल सुनायो ॥ गौतम लख्यो प्रात है भयो। न्हान काज सो सरिता गयो॥ तव सुरपति मन माहिं विचारी। प्रतिव्रता है गौतम नारी॥ गौतम रूप विना जो जैये। ताके शाप अग्निसों दहिये॥ गौतम रूप धारि तहँ आयो। मूर्छित भयो अहिल्या पायो॥ कह्यो अहिल्या तूको आहि। वेगि यहांते वाहिर जाहि॥ याहि अंतर गौतम ऋपि आयो। इन्द्र जानि यह वचन सुनायो॥ तू इन्द्राणी तजि ह्यां आयो। मूरखतैं परत्रिय मन लायो॥ इक भग की तोहिं इच्छा भई। भग सहस्र मैं तो तन दई॥ इन्द्र शरीर सहसतनभई। छप्यो सो कमलनालमें जई॥ काल बहुत ता ठौर वितायो। सुनि गुरु ऋषिन सहित तब आयो॥ यज्ञकराइ प्रयाग न्हवायो। तौहू पूरव तनु नहिं पायो॥तव सव ऋषिन दई आशीश। भगते नेत्र करो जगदीश॥ भग स्थान नेत्र तब भये। ऋपि इन्द्रहि लै सुरपुर गये॥ परत्रिय मोह इन्द्र दुख पायो। सो नृप मैं तोहि कहि समुझायो॥ परत्रिय नेह करै जोकोई। जीवत नरक करत है सोई॥शुक नृपसों ज्यों कहि समुझायो। सूरदास त्योंही कहि गायो॥१६७॥ राजा नहुष राज्य माप्ति। इन्द्राणी चाह। ब्रह्म शापते सर्प देह पावन राग विलावल ॥ सुरपतिको शाप जब भयो। सो सुरपुर लज्जित नहिं गयो॥ नहुप नृपतिपै ऋपि सव आई। कह्यो सुरराज करौ तुम जाई॥ नहुष इन्द्र राज जब पायो। इन्द्राणी को देखि लुभायो॥ कह्यो इन्द्राणी मोपै आवै। नृपसों ताको कहा वसावै॥ सुरगुरुसों यह वात सुनाई। अवधि करन तिहि कहि समुझाई॥ शची नृपतिसों सोई भाषी। नृप सुनिकै हृदयमें राखी॥ शची अग्निको तुरत पठायो। सुरपति दशादे खिसो आयो॥ इन्द्राणी सुनि व्याकुल भई। अवधि घरी व्यतीत ह्वै गई ॥ तब तिन ऐसी बुधि

उपजाई। इहि अंतर सो नहुष बुलाई॥ कह्यो तुम अश्वमेध नहिं कियो। ऋषि आज्ञा तुम सुरपति भयो॥ विप्रन पर चढ़िकै जो आवहु॥तो तुम मेरो दर्शन पावहु॥नृपति ऋषिन पर ह्वै असवार चलियो तुरत शचीके द्वार॥ काम अंध कछु रहि न सँभार। दुर्वासा ऋषिको पग मार॥ सर्प सर्प कहि वारंवार। तव ऋषि दीन्हो ताको डार॥ कह्यो सर्प तैं भाष्यो मोहि। सर्प रूप तूही नृप होहि॥ जवै शाप ऋषिसों नृप पायो। तव ऋषि चरणन माथो नायो॥इह शराप मुक्ति ज्यों होइ ऋषि मोको अव भाषो सोइ॥ कह्यो युधिष्टिर देखै जोइ। तव उद्धार तेरो नृप होइ॥ नृप ऐसो है पर त्रियप्यार। मूर्ख करत सो विना विचार॥ जो शुक नृपसों कहि समुझायो। सूरदास त्योंही कहि गायो॥ १६८ ॥ कच संजीवनी विद्या हेतु शुक्र गेह गवन, देवयानी छोभावन परस्पर शाप। राग भैरव॥

अविगति गति कछु समुझि न परै। जो कछु प्रभु चाहै सो करै॥ जिवको किये कछू नहिं होइ। कोटि उपाय करो किन कोइ॥ एक वार सुरपति मन आई। शुक्र असुर को लेत जिवाई॥ मम गुरु हू विद्या पढि आवे। मृतक सुरनको फेरि जिआवै॥ निज गुरुसों भाष्यो तिन जाई। शुक्र असुर को लेत जिवाई॥ तुमहू यह विद्या सिखि आवहु। मृतक सुरनको तुमहु जिआवहु॥ तव तिन कचको दियो पठाइ। कह्यो शुक्रको तिन शिरनाइ॥मैंआयो तुम पै शिरनाइ। तुम मुहिं विद्या देहु॥ पढाइ शुक्र कह्यो तासों याभाई। देहौं विद्या तोहिं पढाई॥ विद्या पढै करै गुरुसेव। सव पढि शोधै ताके टेव॥ शुक्रसुता देवयानी नाम। सव गुण पूर्ण रूप अभिराम॥ सुरगुरु सुतको देखि लुभाई। देखै ताहि पुरुषकी नाई॥ कितक काल व्यतीत जव भयो। गाइ चरावनको सो गयो असुरनमिलि यह कियो विचार। सुरगुरु सुतको डारें मारि॥ जो यह संजीवनि पढ़ि आई। तो हम शत्रुनिदेय जिआई। यह विचार करि कचको मारचो। शुक्रसुता दिन पंथ निहारचो॥ सांझ भये हू जव नहिं आयो। शुक्र पास तिन जाइ सुनायो॥ शुक्र हृदय में करी विचार। कह्यो असुरन वहि डारो मार॥ सुता कह्यो तिहि फेरि जिवावहु। मेरे जियके सोच मिटावहु॥ शुक्र ताहि पढि मंत्र जिवायो। भयो तासु तनयाको भायो॥ पुनि हति मदिरा माहि मिलाई। दिये दानव तिहि शुक्र पिआई॥तवतै हत्यामदर्दको लागी। यहै जानि सव ऋषिनि तियागी॥ शाप दियो ताको या भाई। जो तोहि पियै सुनरकाहिं जाई॥कचविनु शुक्रसुता दुख पायो। तव ऋषि तासों कहि समुझायो॥ मारचो कचको असुरनधाई। मदिरामें मुहि दियो पियाई॥ ताहि जिवाऊं तो मैं मरों। जो तुम कहो सु अव मैं करों॥ कह्यो विनयकरि सुनि ऋषिराई। दोउ जिवैं सो करो उपाई॥ संजीवनितव कचहिं पढ़ाई। तासेती यों कह्यो समुझाई॥ जव तुम निकरि उदरते आवहु। याविद्याकरि मोहिं जिवावहु॥ उदर फारि तिहिं वाहर कियो। मृतक कच ऐसी विधिजियो॥ सु जव उदरते वाहर आयो संजीवनि पढ़ि शुक्र जिवायो॥ वहुतकाल व्यतीत जव भयो। कच ऋषि ऋषि तन यासों कह्यो॥ जो तुमरी मोहिं आज्ञा होई। तात मातको देखों जोई। ऋषितनया कह्यो मोहिं विवाहि। कच कह्यो तू गुरु भगनी आहि। तव तिन शाप दियो या भाई। विद्या पढ़ी सु वृथा जाई॥ कचहूं ताहि कहयो या भाई। विप्र पुरुष तोहि मिलै न आई। यह कहि कच अपने गृह आयो। पिता पास वृत्तान्त सुनायो॥ शुक नृप सों ज्यों कहि समुझायो। सूरदास त्योंही कहि गायो॥ १६९ ॥ देवयानी कूप निपातन, राजा ययाति पाणिग्रहण, शुक्र शाप, राजपुत्र यौवन भोग, वैराग्य करि मोक्ष प्राप्ति। राग भैरो॥ दानव वृषपर्वा वलभारी। नाम शरमिष्टा तासु कुमारी॥ ताहि देवयानी सों प्यार। रहे न तासों पल भरि न्यार॥ एक वार ताके मन आई। न्हावन काज प्रयाग सिधाई॥

तासँग दासी गई अपार। न्हान लगी सब कपडे डार॥ दनुजसुता तिहि नहीं निहारी। अँधियारी आई अति भारी॥ वसन शुक्रतनयाके लीने। करत उतावलि परत न चीने॥ शुक्रसुता जब आई बाहर। बसन न पाए तिन तिहि ठाहर॥ असुरसुताको पहिरे देखि। मनमें कीनो क्रोध विशेखि॥ कह्यो मम वसन नहीं तुव योग। तुम दानव हम तपसी लोग॥ मम पितु दियो राज नृप करत। तू मम बसन हरत नहिं डरत॥ तिन कह्यो तुव पितु। स भिच्छा खात। बहुरि कहति हमसों ये बात॥ याविधि कहि करि क्रोध अपार। दीनो ताहि कूप में डार॥ नृपति ययाति अचानक आयो। शुक्रसुता को दरशन पायो॥ दियो तब वसन आपनो डारि। हाथ पकरिकै लियो निकारि॥ बहुरो नृप निज गेह सिधायो। सुताशुक्र सों जाइ सुनायो शुक्र क्रोध करि नगर तियाग्यो। असुर नृपति सुनि ऋषि सँग लाग्यो॥ जब बहु भांति विनय नृप करी। तब ऋषि यह वाणी उच्चरी॥ ममकन्या प्रसन्न ज्यों होय। करो असुरपति अब तुम सोय॥ शुक्रसुता सों कह्यो तिन आई। आज्ञा होइ करों सु उपाई॥ जो तुम कहौ करौं अब सोइ। तब पुत्री ममदासी होइ॥दासीसहस ताहि संग भई। नृप पुत्री दासी करिदई॥सो सब ताकी सेवा करैं। दासी भाव हृदय में धरैं॥ इकदिन शुक्रसुता मनआई। देखौं जाइ फूल फुलवाई॥ लै दासी फुलवारी गई। पुहुपसेज रचि सोवत भई॥ असुरसुता तेहि व्यजन डुलावै। सोवत सेज सु अति सुख पावै॥ तेहि अवसर ययाति नृप आयो। शुक्रसुता तेहि वचन सुनायो॥ नृप मम पाणिग्रहण तुम करो। शुक्र सकुच हृदय मति धरो। कचको प्रथम दियो मैं शाप॥उनहू मोहि दियो करिदाप। ताको कोइ न सकै मिटाई॥ ताते व्याहकरो तुमराई।नृप कह्यो कहो शुक्र सों जाइ। करिहौं जो कहिहैं ऋषिराइ॥ तब तिन कहचो शुक्र सों जाइ। कियो व्याह ऋषि नृपति बुलाइ॥ असुरसुता ताके सँग दई। दासी सहस तासु संगभई॥ दंपति भोग करत सुख पाए। शुक्रसुता यों द्वै सुत जाए॥ कहचो शरमिष्ठा अवसर पाइ। रतिको दान देहु मोहिराइ॥ नृप ताहूसों कीनो भोग। तीन पुत्र भयो विधि संयोग। शुक्रसुता तिहि अवसर देखि। मनसों कीनो क्रोध विशेखि॥ कह्यो शरमिष्ठा सुत कहां पायो। उन कह्यो ऋषि किरपा ते जायो॥ बहुरि कह्यो ऋषि को कह नाम। कह्यो स्वप्न देख्यो अभिराम॥ पुनि पुत्रन सों पूछचो जाई। पिता नाम मोहिं कहो बुझाई॥ बड़े पुत्र भाष्यो पुनि ताहि। नृपति पिता ययाति मम आहि॥ सुनि नृप सों कियो युद्ध बनाई। बहुरि शुक्र सेती कह्यो जाई॥ पाछे ते ययाति हू आयो। ऋषि तासों यह वचन सुनायो॥ तैं यौवन मद ते यह कीनो। ताते शाप तोहिं मैं दीनो जरा अबहिं तोहिं व्यापै आइ। भयो वृद्ध तब कह्यो शिरनाइ॥ ऋषि तुम तो शराप मोहिं दियो। पूरनकाम नाहिं मैं कियो॥ ताते जो मोहिं आज्ञा होइ। आयसु मानि करौं अब सोइ॥ कह्यो जरा तेरी सुत लेय। अपुनो तरुनापा तोहिं देय॥ भोग मनोरथ तव तू पावै। मेरे वचन मृथा नहिं जावै॥ बड़े पुत्र यदु सों कह्यो आइ। उन कह्यो वृद्ध भयो नहिं जाइ॥ नृप कह्यो तोहि राज नहिं होई। वृद्धपनो लै राजा सोई॥ औरनहू सों जब नृप भाख्यो। नृपति वचन काहू नहिं राख्यो॥ लघु सुत नृपति बुढ़ापो लयो। अपुनो तरुनापो तेहि दयो॥ वर्ष सहस्र भोग नृप कियो। पै संतोष न आयो हियो॥ कह्यो विषय ते तृप्ति न होई। भोग करौ कैसो किन कोई॥ तब तरुनापा सुतको दीनो। वृद्धपनो अपनो फिर लीनो॥ वनमें करी तपस्या जाइ। रह्यो हरिचरणन सों चितलाइ॥ या विधि नृपति कृतारथ भयो। सो राजा मैं तुमसों कह्यो॥ शुक ज्यों नृप को कहि समुझायो। सूरदास त्योंही कहि गायो॥ १७०॥

इति श्रीमद्भागवते—सूरसागरे सूरदास कृते नवमःस्कंधः समाप्तः॥ ९॥

श्रीः।

अथ कविवर सूरदास कृत—

श्रीसूरसागर.

दशमस्कन्ध।

राग सारंग ॥ व्यास कह्यो शुकदेव सों श्री भागवत बखान ॥ द्वादश स्कंध परम सुभग, प्रेम भक्ति की खान ॥ नवस्कंध नृप सों कही, श्रीशुकदेव सुजान ॥ सूर कहत अब दशम को, उर में धरि हरि ध्यान ॥ १ ॥ राग बिलावल ॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ ॥ हरि चरणारविंद उर धरौ ॥ जय अरु विजय पार्षद दोई॥विप्रन शाप असुर भये सोई॥दोइ जन्म ज्यों हरि उद्धारी॥सो शुक तुमसों कहि उच्चारी॥दंतवक्र शिशुपाल जो भये। वासुदेव होइ सो पुनि हए॥ औरौ लीला बहु विस्तार। कीन्हे जीवन ज्यों निस्तार॥ सो अब तुमसों सकल बखानौं । प्रेम सहित सुनि हृदये आनौं ॥ जो यह कथा सुनै चितलाई। सोभव तरि वैकुंठहि जाई ॥ जैसे शुक नृपको समुझायो। सूरदास त्योंहीं कहि गायो॥२॥भगवान जन्म लीला ॥ राग सारंग ॥बालविनोद भावती लीला अति पुनीत पुनि भाषीहो॥ सावधानह्वै सुनहु परीक्षित सकलदेव मुनि शाषीहो ॥ १ ॥ कालिंद्रीके कूल बसत एक मधुपुरी नगर रसालाहो। कालनेमि उग्रसेन वंश कुल उपजे कंस भुवालाहो ॥ २ ॥ आदिब्रह्म जननी सुर देवी नामदेवकी बालाहो । दई बिवाहि कंस वसुदेवको अघभंजन उरमालाहो ॥ ३ ॥ हय गज रत्न हेम पाटंबर आनंद मंगलचाराहो ॥ समदत भई अनाहद वाणी कंसकान झनकाराहो ॥ ४ ॥ याके गर्भ अवतरें जे सुत करिहै प्राण प्रहाराहो ॥ रथते उतरि केश गहि राजा कियो खड्ग पटताराहो ॥ ५ ॥ तब वसुदेव दीनह्वै भाष्यो पुरुष न त्रियवध करईहो ॥ मैं सुनी कान मंद विधि वाणी ताते संच न परईहो ॥६॥ आगे वृक्ष फरै जो विषफल वृक्षहि बिन किन सरईहो॥ याहि मारि तोहि और बिवाहों अग्रसोच क्यों मरईहो ॥ ७ ॥ बालक काज धर्म जनि छाँडौ राय न ऐसी कीजैहो। तुम मानी वसुदेव देवकी जीयदान इन दीजैहो ॥ ८ ॥ कीन्हो यज्ञहोतहै निःफल वेद भंग नहिं कीजैहो। याके गर्भ अवतरें जे सुत सावधान ह्वै लीजैहो ॥ ९ ॥ वाचाबंध कंसकारि छाँड्यो तब वसुदेव पतीजेहो। याके मानो मृगी चरत गहि वनमे नैन नीर उर भीजेहो ॥१०॥प्रथम पुत्र देवकी जुजायोहो लै वसुदेव दिखायोहो॥बालक देखि कंस हँसि दीन्हे सब अपराध क्षमायोहो॥ कंस कहा लरिकाई कीन्ही कहि नारद समझायो हो। जाका भरम करतहो राजा मति पहिले सो आयो हो ॥ ११ ॥ यह सुनि कंस पुत्र फिरि मारचो येहिविधि सबनि संहारोहो। तब देवकी भई तनु व्याकुल कह ले प्राणप्रहारोहो ॥१२॥ कंस वंशको नाश करतहै कहांलै जीव उबारौंहो । इह दुख कहा मेटिहैं श्रीपति अरु हौं काहि पुकारौंहो ॥ १३ ॥ धेनुरूप धरि पुहुमि पुकारी शिव विरंचिके द्वाराहो। सब मिलि गये जहां पुरुषोत्तम सोवत अगम अपाराहो ॥ १४ ॥क्षीर समुद्र मध्यते यों कहि दीरघ वचन उचाराहो ॥ उधरौ धरणि असुर कुल-

मारौं धरि नरतनु अवताराहो ॥ १५ ॥ छूंछी मसक पवन पानी ज्यों तैसोइ जन्म विकारीहो। पाखंड धर्म करतहैं पाँवर नाहिन चलत तुम्हारीहो ॥ १६ ॥ मारग छाँडि कुमारग सोंरत बुधिविपरीति विचारीहो। अमृत छाँडि विषय विष अचवत देत अधमपति गारीहो ॥ १७ ॥ सुर नर नाग तथा पशु पंछी सबको आयसु दीन्हो हो ॥ गोकुल जन्म लेहु मेरे संग जो चाहत सुख कीन्होंहो ॥ १८ ॥ दैवैकोष अकर्ष रोहिणी आपुन अंश जो लीन्होंहो। जेहि माया विरंचि शिव मोह्यो वोहि वाणि करि चीन्होहो ॥ १९ ॥ अपनेहि गेह मधुपुरी आवन देवकि प्राणअधाराहो॥ असुरमारि सुरसाध वढ़ावन ब्रजजन सुखदाताराहो ॥ २० ॥हरिके गर्भवास जननीको वदन उजारो लाग्योहो। मानहु शरदचंद्रमा प्रगट्यो सोच तिमिर तनु भाग्योहो ॥ २१ ॥ तेहिखन कंस आनि भयो ठाढो देखि महातम जाग्योहो। अवकी वार अरी आयोहै आपु अपनपो त्याग्योहो ॥ २२ ॥ दिनदशगए देवकी अपनो वदन विलोकन लागीहो ॥ कंसकाल जियजानि गर्भमें अति आनंद सभागी हो ॥ २३ ॥ सुर नर देव वंदना आये सोवत ते उठि जागीहो । अविनाशीको आगम जानी सकल देव अनुरागीहो ॥ २४ ॥ कछुदिन गए गर्भको आगम उर देवकी जनायोहो । कासों कहौं सखी कोउ नाहीं चाहत गर्भ दुरायोहो ॥ २५ ॥ बुध रोहिणी अष्टमी संगम वसुदेव निकट बुलायोहो ॥ सकल लोकनायक सुखदायक अजन जन्म धरि आयोहो ॥ २६॥ माथे मुकुट सुभग पीतांबर उर सोभित भृगुरेखाहो ॥ शंख चक्र भुज चारि विराजत अति प्रताप शिशुभेपाहो ॥ २७ ॥ जननी निरखि भई तनु व्याकुल यह न चरित कहुँ देखाहो। वैठी सकुच निकट पतिवोले दुहुन पुत्र मुख पेपाहो॥ २८ ॥ सुनि देवै एक आन जन्मकी तोसों कथा चलाऊंहो ॥ तुम माँग्यो मैं दियो नाथ हों तुमसों वालक पाऊंहो ॥ २९ ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक योग जापहू न आऊंहो ॥ भक्तवछल वानोहै मोरो विरदहि कहा लजाऊंहो ॥ ३० ॥ यह कहि माया मोह अरुझायो शिशुह्वैरोवनलागेहो॥ अहो वसुदेव जाहु लै गोकुल तुमहो परमसभागेहो ॥ ३१ ॥ घनदामिनि धरणीमिलि गरजै महाकठिन दुखभारेहो ॥ आगे जाउँ यमुन जल वूडों पाछे सिंह दहारेहो ॥३२॥ लै वसुदेव धँसे दह सामुहि तिहूंलोक उजियारेहो। जानु जंघ कटि ग्रीव नासिका वसुदेव मनहि विचारेहो ॥ ३३॥ चरणपसारि परसि कालिंदीतरवा नीरते आगेहो ॥ शेशसहसफन ऊपर छायो लै गोकुलको भागेहो ॥ ३४ ॥ पहुँचे जाइ महर मंदिरमें मनहि न संका कीनीहो ॥ देखी परी योगमाया वसुदेव गोद करि लीनीहो ॥ ३५ ॥ तुरत वेग मधुपुरी पहूंचे सकल प्रगट पुर कीनीहो॥दैवै गर्भ भईहै कन्या राइ न वात पतीनीहो ॥ ३६॥ यह सुनि कंस खड्गलै धायोतव देवै आधीनीहो॥यह कन्या जू वकसु वंधुमोहिं दासीजान करिदीनीहो ॥ ३७॥ क्रूर कंस अववंश न समुझै नवै नहीं रिसि कीनीहो ॥ नाजानी होई छल कीन्हे अविगति गति को चीन्हीहो ॥ ३८ ॥ पटकत शिला गई आकासहि दोउ भुज चरण लगाईहो ॥ गगनगई वोली सुरदेवी कंस मृत्यु नियराईहो ॥ ३९ ॥ जैसे मीन जाल मो कूदत गनै न आपु लखाईहो ॥ तैसे कंस काल ढूक्योहै व्रजमे यादवराईहो ॥ ४० ॥ जैसे व्यालवेग को ढूकै वेग पखीरी ताकैहो जैसे सिंह आपु मुख निरखै परै कूपमेंदाकैहो ॥ ४१ ॥ तैसेहि कंस परमअभिमानी भूल्यो राज सभाकेहो। गतिकी गति पति की पति तेरी हाथ मीजु है ताकेहो ॥ ४२ ॥ यह सुनि कंस देवकी आगे रह्यो चरण शिरनाईहो। वहु अपराध करी शिशुमारे लिख्यो न मेट्यो जाईहो ॥४३॥ काके शत्रु जन्म लीनोहै वूझहु मता बुलाईहो।चारि पहर सुख सेज परेनिशि नेक नींद नहिं आईहो॥४४॥

देश देशके दूत बुलावहु कासों हैछल कैसोहो॥अविगत अजर अजीत अमरता करताको वल जैसो हो ॥ ४५ ॥ दिनही दिन सो पुरुष होतहै वढत असुर वल जैसोहो । बूझतमहि तृणभार बुझायो पवली कापैन नैसोहै ॥४६ ॥ जागी महरि पुत्र मुख देख्यौ आनँद तूर वजायोहो॥कंचन कलस होम द्विज पूजा चंदन भवन लिपायोहो॥४७॥वरण वरण रँग ग्वाल वने मिलि गोपिन मंगल गायोहो। वहुविधि व्योम कुसुम सुर वर्षत फूलन मंडप छायोहो ॥ ४८ ॥ आनँद भरे करत कौतूहल प्रेममगन व्रज नर नारीहो । अभयनिभय नीसान वजावत देत महरिको गारीहो ॥ ४९॥ नाचत महर मुदित मन कीन्हे ग्वाल वजावत तारीहो । सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा गर्वप्रहारीहो ॥ ॥ ५० ॥ अथ प्रथम लीला मथुराते गोकुल आए ॥ राग बिलावल ॥ हरिमुख देखिये वसुदेव ॥ कोटिकाम स्वरूप सुंदर कोउ न जानत भेव । चारि भुजा जाके चारि आयुध निरखि लैकरताउ । जौपै मन परतीत आवै वावा नंद घर लैजाउ ॥ श्वान सूते पहरुआ सव नींद उपजी गेह । निशि अँधेरी वीजु चमकै सघन वरपै मेह ॥ झरे ताला पहरु पौढे खुलिगये वज्रकेंवार। वंदिवेरी सबै छूटी कहौ कौन विचार । सिंह आगे शेष पाछे यमुनाभई भरपूर॥नासिका वहु नीर आए पार पहिलो दूर॥कृष्णने हुंकार छोड्यो यमुना मान्योहेत । चरण परसत थाह दीन्हो वसुदेव उतरे सेत ॥ देन अंमर और कंमर फूली अंग नसमाइ । भिक्षुक भाट सव द्वार ठाढे देखै यशोमति आइ । वावानंदसौं मनुहार करिहौं सुनि नलेहु वसुदेव । सूर सुतही जानि अपनो कृष्णको करिसेव १।२।३॥ ४ ॥ राग केदारो हो पिय सो उपाय कछु कीजै । जेहि तेहि विधि दुराय इह वालक राखि कंससोंलीजै॥मनसा वाचा कहत कर्मना नृपतिहिं नहीं पतीजै । वुधि वल छल कल कैसेहूँकरिकै काटि अनत लैदीजै ॥ नाहिन यतनो भाग सो यहरस नितलोचन पुटपीजै॥ सुनहु सूर ऐसे सुतको मुख निरखिनिरखिजग जीजै ॥ ५ ॥ राग केदारा ॥ सुन देवकी को हितू हमारे । असुर कंस अपवंश विनाशनशिरपर वैठेहैं रखवारे। ऐसो को समरथ त्रिभुवनमें जो यह वालक नेक उवारे॥खड्गधरे आयो तो देखत अपने कर क्षणमाह पछारे ॥ यह सुनतहि अकुलाइ गिरीधर नैननीर भरिभरि दोउडारे । दुखित देखि वसुदेव देवकी प्रगटभये धरिकै भुजचारे ॥ वोलत उठे प्रतिज्ञा प्रभु यह मोते उवरे तव मोहिं मारे । अति दुखमें सुखदै पितु मातहि सूरको प्रभु नंदभवन सिधारे ॥ ६ ॥ भादोंभरकी राति अँधियारी । द्वारकपाट कोटभट रोके दहदिशि कंस भय भारी ॥ गर्जत मेघ महा डर लागत वीच वढी यमुना जलकारी॥तवते इहै सोच जिय मेरे क्यों दुरिहै शशिवदन उज्यारी॥कतपिय वोलु वचन करिराखी वरु ताहीदिन जीवनमारी । कहि जाको ऐसो सुत विछुरै सो कैसे जीवै महतारी ॥ कारि नविलाप देवकी सो कहि दीनदयालु भक्त भयहारी । छूटिगयो निविड तवहिं गए गोकुल सूर सुमतिदै विपति निवारी ॥ ७ ॥ राग धनाश्री ॥ अँधियारी भादौंकी राति । वालकको वसुदेव देवकी पठै पठै पछिताति ॥ वीचनदी घन गर्जत वर्षत दामिनिकोंधतजाति । वैठत उठत सेज सोवरि में कंस डरनि अकुलाति ॥ गोकुल वाजत सुनी वधाई लोगन हेरि सिहाति । सूरदास आनंद नंदके देत कनक नगदाति ॥ ८ ॥ विहागरो ॥ देवकी मन मन चकृत भई । देखहु आइ पुत्र मुख काहेन ऐसी कहू देखि नदई ॥ शिरपर मुकुट पीत उपरेना भृगुपद उर भुजचारि करे । पूरवकथा सुनाइ कही हरि तुम माँग्यो वह वेपधरे । छोटे निमिड सो आये पहरू द्वारेको कपाट उघरचो । तुरत मोहि गोकुल जावहुले यह कहतहि शिशुभेप धरचो ॥ वसुदेव तवहिं उठे यह सुनतहि हर्पवंत नंदभवन गये । वालक धरचो लाई सुरदेवी आइ सूर मधुपुरी भये॥९॥राग विलावल॥आनंदे आनंद वढ्योअति। देवन

दइ दुंदुभी बजाई सुनि मथुरा प्रगटे यादवपति ॥ विद्याधर किन्नरी कंठधर उपजावत अनुराग अमितअति । गावत गगन धरणि ध्वनि सुनियत गर्जत घन तेहिकाल जतनजति ॥ वर्षत सुमन सुदेशसूर सुर जयजयकार करत मानत रति ॥ शिव विरंचि इंद्रादि सनक मुनि फूले सुख नसमात मुदितमति ॥ १० ॥ कमलनयन शशिवदन मनोहर देखिए विचित्रगति । श्याम सुभगतनु पीतवसन दुति उर वाने सोहै अति ॥ नख मणि मुकुट प्रभा अति उदित चितै चकृत उनमान नयावति। अतिप्रकाश निशि विमल तिमिर छुटि कलमलि मलिपतिहि जगावति ॥ दरशन सुखी दुखीअति सोचत षटसुत सोक सुरति उर आवति । सूरदास प्रभु लेहु पुराकृत भुजके चिह्न दुरावति ॥११॥ गोकुल प्रगटभए हरि आई । अमर उधारन असुर संहारन अंतर्यामी त्रिभुवनराई ॥ माथेपर धरि वसुदेव ल्याए नंदमहर घरगे पहुँचाई ॥ जागी महरि पुत्रसुख देखत पुलकअंग उर में न समाई। गद्गद कंठ बोल नहिं आवै हर्षवंतह्वै नंद बुलाई ॥ आवहु कंत देव परसन भए पुत्र भयो मुख देखौधाई।दौरि नंद गए सुतमुख देख्योसो सोभा सुख मोपै वरण नजाइ॥सूरदास पहिले यहमाँग्यै दूधपिआवन यशुमतिमाइ ॥ १२ ॥ जागी महरि पुत्रमुख देख्यो आनंद तूर वजाइ । कंचन कलस हेम द्विजपूजा चंदन भवन लिपाइ ॥ दिनदशहीते वर्षै कुसुमनि फूलन गोकुल छाइ । नंदकहैं इच्छा सब पूजी मनवांछित फल पाइ॥आनंदभरे करत कौतूहल उदित मुदित नर नारी। निर्भय भए निसान बजावत देत निसंके गारी।नाचत महर मुदित मन कीनो ग्वाल वजावत तारी॥ सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मथुरा कंस प्रहारी ॥ १३ ॥ नंदराइके नवनिधि आई । माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल पीतवसन भुजचारु सुहाई ॥ बाजत ताल मृदंग यंत्रगति चरचि अरगजा अंग चढाई अक्षत दूब लिए शिरवंदत घर घर वंदनवार बँधाई ॥ छिरकत हरद दही हिय हर्षत गिरत अंग भरि लेत उठाई । सूरदास सब मिलत परस्पर दानदेत नहिं नंद अघाई ॥ १४ ॥ आजु वनको जिनि जाइ । सबै गाइ और बछरा समेत सब आनहु चित्र बनाइ ॥ ढोटाहैरे भयो महरिक कहत सुनाइ सुनाइ । सबहि घोषमें भयो कोलाहल आनंद उर न समाइ ॥ कतहौ गहर करत रेभैया वेगि चल्यो उठिधाइ । अपने अपने मनको चीत्यो नैननि देखौ आइ ॥ येक फिरत दधि दूब वँधावत एक रहत गहिपाइ । एक परस्पर करत वधाई एक उठत हँसिगाइ। तरुण किसोर वृद्ध अरु बालक बैठ चौगुनेचाइ ॥ सूरदास सब प्रेम मगन भए गनत नराजा राइ ॥ १५ ॥ राग रामकली ॥ हौं एक बात नई सुनि आई । महरि यशोदा ढोटा जायो घर घर होत वधाई ॥ द्वारेभीर गोप गोपिनके महिमा वरणि नजाई।अति आनंद होत गोकुलमें रत्न भूमि सब छाई ॥ नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई । सूरदास स्वामी सुखसागर सुंदरश्याम कन्हाई ॥ हौं सखी नई चाह एक पाई । ऐसे दिनन नंदके सुनियत उपजे पूत कन्हाई ॥ बाजत पवन निसान पंचविधि रुंज मुरज सहनाई । महर महरि ब्रज हाट लुटावत आनंद उर न समाई । चलौ सखी हमहूँ मिलिजैये वेगि करौ अतुराई । कोउ भूषण पहिरयो कोउ पहरति कोउ वैसेहि उठिधाई॥कंचन थार दूब दधि रोचन गावत चलीं वधाई।भांति भांति वनि चली युवति गण यह उपमा मोपै नहिं आई ॥ अमर विमान चढे सुरदेखत जय ध्वनि शब्द सुनाई ॥ सूरदास प्रभु भक्त हेतु हित दुष्ट नके दुखदाई॥१६॥ रागगूजरी ॥ सखीरी काहेको गहरु लगावति॥सुतको जन्म यशोदाके गृह तालगि तुमहि बुलावति । कनकथार भरि लै दधि रोचन वेगि चलौ मिलि गावति ॥ साँचेहु सुत भयो नंदनायक के हौं नाहिन बौरावति ॥ आनँद उर अंचल न सँभारति शीश सुमन वरषावति

सूरदास सोभा तेहि अवसर जहां तहांते आवति ॥ १७ ॥ रागआसावरी ॥ व्रज भयो महरके पूत जब यह बात सुनी ॥ सुनि आनंद सब लोग गोकुल गुनत गुनी ॥ अति पूरव पूरे पुण्यरूपी कुल अटल थुनी । ग्रहलग्न नक्षत्र बल शोधि कीनी वेद ध्वनी ॥ सुनि धाई सबै व्रजनारि सहज शृंगार किए । तनु पहिरे नौतन चीर काजर नैनदिये ॥ कसि कंचुकि तिलक लिलार सोभित हार हिये ॥ करकंकन कंचनथार मंगलसाज लिये ॥ शुभ श्रवणनि तरल बनाइ वेनीशिथलगुही ॥ सुर बर्षत सुमन सुदेश मानौ मेघ फुही । मुखमंडित रोरी रंग सेंदुर माँग छुही ॥ ते अपने अपने मिलि निकसी भांति भली । मनु लाल मुनिनकी पांति पिंजर दूरि चली ॥ गुणगावहिं मंगल गीत मिलि दश पांच अली । मनु भोर भए रवि देखि फूली कमलकली ॥ पिय पहिले पहुँची जाइ अति आनंद भरी । लई भीतर भवन बुलाय सबै शिशुपाइ परी॥एक वदन उघारि निहार देहि अशीश खरी। चिरजिवो यशोदानंद पूरणकामकरी॥धनि धनि दिन धनि राति धनि यह पहर घरी।धन धन्य महरिकी कूख भाग सुहाग भरी॥जिन जायो ऐसो पूत सबसुखफल निफरी।थाप्योथिर परिवार मनकी शूलहरी ॥ सुनि ग्वालनि गाइ बहोरि बालक बोलि लये । गुहि गुंजा घसि बनधातु अंगनि चित्र ठये ॥ शिर दधि माखनके माट गावतगीतनये । कर झांझ मृदंग बजाइ सब नंद भवन गये॥मिलि नाचत करत कलोल छिरकत हरददही । मानों वर्षत भादोंमास नदी घृत दूध वही॥जहां तहां चित जाइ कौतुक तहीं तही॥सब आनंद मगन गुवाल काहू वदत नहीं॥एकधाय नंदपै जाइ पुनि पुनि पांय परै । एक आपुन आपुहि माँहि हँसि हँसि अंक भरै॥एक अंबर उतारत अंगदेतन संक करै । इक दधि अक्षत अरु दूब सबनके शीशधरै ॥ तब न्हाइ नंदभए ठाढ़े अरु कुशहाथ लिये । घसि चन्दन चारु मँगाइ विप्रन तिलक किए॥ नान्दीमुख पित्र पुजाइ अंतर सोच हरे। गुरजनाद्विजन पहिराइ सबनिके पांइ परे ॥ गैयां गनी न जाहिं तरुणि सब वच्छवढ़ी।ते चरहिं यमुनके कच्छ दूने दूधचढ़ी॥खुर ताँबे रूपे पीठि सोने शृंगमढ़ी।तेदीनी द्विजन अनेक हरषि अशीशपढी॥तब अपने मित्र सुबंधु हँसि हँसि बोलि लिए॥माथे मृगमद मलय कपूर सबनके तिलक किए। उरमणिमाला पहिराय सबन विचित्र ठए।दान मान परधान पूरणकाम किए ॥ बरमागध वंदी सूत आंगन भवन भरे । ते बोले लैलै नाम क्रीडत बिवसपरे॥जिन याच्योजाइ रस नंदराय ठरे ॥ मानो वर्षत मास अषाढ़ दादुर मोर ररे। तब अंमर और मँगाइ सारी सुरंग घनी॥ते दीनी वधुन बोलाइ जैसी जाहि बनी । ते बहुरी अति आनंद निज गृह गोप घनी ॥ ते निकसीं देत अशीश रुचि अपनी अपनी। घर घर भेरि मृदंग पड़व निशान बजे॥वारन वंदनवार अरु ध्वज कलस सजे॥तादिनते वे लोग सुख संपांते नतजे । कहि सूर सब यह गति जे हरिचरणभजे ॥ १८ ॥ राग धनाश्री ॥ आजु नंदके द्वारे भीर । एक आवत एक जात विदा होइ एक ठाढे मंदिरके तीर ॥ कोउ केसर कोउ तिलक बनावत कोउ पहिरत कंचुकीचीर।एकनकोदै दान समर्पित येकनको पहिरावतचीर॥एकनको भूषण-पाटम्बर एकनको जो देत नगहीर । एकनको पुहुपनकी माला एकनको चंदन घसि वीर॥एकनको तुलसीकी माला एकनको राखतदेधीर। सूरश्याम घनश्याम सनेही धन्य यशोदा पुण्य शरीर॥ १९॥ गौरी ॥ गोपी गावहिं मंगलचार बधायो व्रजराजको । अब भयउ अमर सब काज बधायो व्रजराजको ॥ रानी जायोहै मोहनपूत बधायो व्रजराजको । बहुत नारि सुभाग सुंदरि और घोपकुमारि सजन प्रीतम नाउ लैलै देहिं परस्पर गारि ॥ आनंद स्तुति अतिस भयो घर घर नृत्य कामहि ठाउँ । नंदद्वारे भेट लैलै उमह्योहै गोकुलगाउँ ॥ सा थिये बनाइके देहिं द्वारे सात सींक

बनाय। नवकिसोरी मुदितह्वै है गहति यशुदाजीके पाँय॥ चौकेचंदन लीपिकै आरति धरी संजोइ। कहत घोपकुमारि ऐसो आनँद जो नितहोइ॥ करि करि अलंकृत गोपिका पहिरे सुभूपण चीर। गाइ वच्छ सँवारि ल्याये ग्वालनकी भैभीर॥ मुदित मंगल सहित लीला करहिं गोपी ग्वाल। हरद अक्षत दूब दधि लै तिलक करहिं ब्रजवाल॥ एक हेरी देहि गावहिं एक भेटहिं धाइ। एक एक न गनै काहू इक खेलावत गाइ॥ एक विरध किसोर बालक एक यौवन योग कृष्णजन्म सुप्रेमसागर क्रीडत सब ब्रजलोग॥ प्रभु मुकुंदके हेतु नवतनु होहि घोप विलास। देखि ब्रजकी संपदाके फूलैहैं सूरजदास॥ २०॥ आजु वधायो नंदराइके गोपी गावहिं मंगलचार। आईं मंगल कलससाजिकै ताऊपर फलडार। अक्षत रोचन दूबलै चलीं बहु विधि फल भरे थार॥ घरन घरनते गावत चलीं ब्रजवधूझुंड अपार॥ चलीं सब मिलि महरके घर देखन नंदकुमार। देखि मोहन आश पूरी सबै देति अशीश। नंदमहरके लाडिले तुम जिओ कोटि वरीस॥ उर मेलैहैं नंदरायके गोप सखन मिलि हार। मागध वंदी जन अति क्रीडत वोलत जैजैकार। महरि दान जु वहुत दीनो अरु दियो नंदराइ॥ ऐसोसुख देखौ सखी जन सूरदास वलिजाइ॥ २१॥ धनि धनि नंद यशोमति धनि जग पावनिरे। धनि हरिलियो अवतार सुधनि दिन आवनरे। दशयेंमास भयो पूत पुनीत सुहावनरे। शंख चक्र सारंग चतुर्भुज भावनरे॥ वनि वनि ब्रजसुंदरि चलीं सुगाइ वधावनरे। कनकथार रोचन दधि तिलक वनावनरे॥ नंद वरहिं चलि गाइ महरि जहां पावनरे। पाँइनि परि सब वधू महरि वैठाव नरे। यशुमति धनि यह कोखि जहां रहे वावनरे॥ भले सुदिन भयो पूत अमर अज रावनरे। युग युग जीवहु कान्ह सवनि मनभावनरे। गोकुल हाट वजार करत जुलुटावनरे। घर घर वजै निसाननगर जुराव नरे। अमर नगर उत्साह अप्सरा नचावनरे॥ ब्रह्म लियो अवतार दुष्टके दावनरे। दान सबै जो देतवर्षि जनु सावनरे॥ मागध सूत भाट धन लेत जु रावनरे। चोवा चंदन अवीर गली छिरकावनरे॥ ब्रह्मादिक सनकादिक गगन भरावनरे। कश्यप ऋषि सुर तात सुलगन गनावनरे॥ तीनि भुवन आनंद कंसहि डरावनरे। सूरदास प्रभु जन्मे भक्त हुलसावनरे॥ २२॥ राग कल्याण॥ शोभासिंधु न अंत रहीरी। नंदभवन भरिपूर उमंग चली ब्रजकी वीथिनि फिरति वहीरी॥ देखी जाइ आजु गोकुलमें घर घर वेचत फिरति दहीरी। कहाँलगि कहौं वनाइ वहुत विधि कहत न मुख सहसहुनिवहीरी॥ यशुमति उदर अगाध उदधिते उपजी ऐसी सवन कहीरी। सूरश्याम दोउ इन्द्र नील मणि ब्रजवनिता उरलाइ गुहीरी॥ २३॥ राग काफी॥ आजुहो निशान वाजै नंद महरिके। आनंद मगन नर गोकुल शहरके। आनंदभरी यशोदा उमगि अंग न समाति आनंदित भई गोपी गावति चहरके॥ दूब दधि रोचन कनकथार लैलै चलीं मानों इंद्रवधू जुरिं पांतिनि वहरके। आनंदित भए ग्वाल वाल करत विनोद ख्याल भुजभरि धरि अंकमदै वरहरिके॥ आनंदमगन धेनु थन स्रवै पय फेनु उमग्यो यमुनजल उछलै लहरके। अंकुरित तरु पान उकठि रहे जेगात वनवेली प्रफुलित कलिन कहरके। आनंदित विप्रसुत मागध याचक गण उमँगे अशीशदेत तरह तरह हरिके॥ आनंदमगन सव अमर गगन छाए पुहुप विमान चढे पहर पहरके। सूरदास प्रभु आइ गोकुल प्रगट भए संतन भयो हरप दुष्टजन मनदहरके॥ २४॥ साईं आजु हो वधायो वाजै नंदगोपराइके। यदुकुल यादव जन्मेहैं आइके॥ आनंदित गोपी ग्वाल नाचैं करदैदै ताल अति अहलाद भयो यशुमतिमाइके। शिर पर दूबधरि वैठे नंद सभा मधि द्विजन को गाइ दीनी वहुत मँगाइके। कनकमाट मँगाइ हरददही मिलाय छिरकैं परस्पर छलवल धाइके॥ आठैं कृष्णपक्ष भादौं महरके दधिकादौं मोतिन वँधायो

वार महलमें जाइकै॥ढाढ़ी और ढाढ़िनि गावै हरिके ठाढ़े वजावै हरपि अशीश देत मस्तक नवाइकै। जोई जोई माँग्यो जिनि सोई सोई पायो तिंनिं दीजै सूरदास दर्श भक्तन वुलाइकै ॥२५॥ रागजैतश्री॥ आजु वधाई नंदके माई। सुन्दर नंद महरके मंदिर। प्रगट्यो पूत सकल सुखकंदर ॥ यशुमति ढोटा व्रजकी सोभा। देखि सखी कछु औरै लोभा ॥ लक्ष्मीसी जहां मालिनवोलै। वंदन माला वांधत डोलै॥ द्वार वुहारत फिरत अष्टसिधि। कौरेन साथिया चींतत नवनिधि॥ गृह गृहते गोपी गावतीं जव। रंगीली गलिनविच भीर भई तव ॥ सोवरनथाल रही हाथन लसि। कमलन चढिआए मानो शशि॥उमगे प्रेमनदी छविपावै। नंद नंद सागरको धावै॥ कंचन कलस जगमगेनग के भागे सकल अमंगल जगके। डोलत ग्वाल मानो रणजीते। भये सवहिके मनके चीते॥ अति आनंद नंद रस भीने। पर्वत सात रत्नके दीने॥ कामधेनु ते नेक नवीने। द्वैलख धेनु द्विजनको दीने॥ नंदद्वार जे याचनआए। वहुरो फिरि याचक न कहाए॥ घरके ठाकुरके सुत जायो। सूरदास तव सव सुखपायो ॥ २६॥ राग विलावल॥ आज गृहनंद महरिके वधाई। प्रात समय मोहन मुख निरखत कोटि चंद्र छविपाई॥मिलि व्रजनारी मंगल गावत नंदभवन में आई। देति अशीश जियो यशुदासुत कोटिवर्ष कुँवरकन्हाई॥ अतिआनंद वढ्यो गोकुलमें उपमा कही नजाई। सूरदास धनि नंदघरनिहै देखत नैन सिराई॥ २७॥ राग जैजैवंती॥ माई आजु तो वधाई वाजै मंदिर महरके। फूले फिरैं गोपी ग्वाल ठहर ठहरके॥ फूली धेनु फूले धाम फूली गोपी अंग अंग। फूले फिरि तरुवर आनंद लहरके॥ फूले वंदीजन द्वारे फूले फूले वंदनेवारे। फूले जहां जोइ सोइ गोकुल शहरके॥फूले फिरैं यादव कुलआनंद समूल मूल।अँकुरित पुण्य फूले पिछले पहरके॥ उमगे यमुनाजल प्रफुलित कुंज पुंजके॥ गर्जत कारे भारे यूथ जल धरके॥नृत्यत मदन फूले फूली रति अंग अंगके॥ मनके मनोज फूले हलधर हरिके॥फूले द्विज संत वेद मिटिगयो कंस खेदके। गावतवधाई सूर भीतर वहरके॥ फूलींहै यशोदारानी सुत जायो सारंग पानी भूपति उदार फूले भार फरे घरके॥ २८॥ जैतश्री॥ नंदजू मेरे मन आनंद भयो हौं गोवर्धनते आयो। तुमरे पुत्र भयो मैं सुनिकै अतिआतुर उठिधायो॥वंदीजन अरु भिक्षुक सुनि सुनि दूरि दूरिते आये॥इक पहिलेही आशा लागे वहुत दिननके छाये॥ तेपहिरे कंचन मणि भूपण नानावसन अनूप। मोहिं मिले मारगमें आवत मानों जात कहूके भूप॥ तुमतो परमउदार नंदजू जिनि जो माँग्यो सो दीनों ऐसो और कौन त्रिभुवनमें तुम सरि साको कीनो॥कोटि देहुतौ रुचि नहिं मानों विन देखे नहि जैहों नंदराय सुनि विनती मेरी तवहि विदाभले ह्वैहौं॥जोमोहिं कृपा करी सोई जोहों होंतो आयो माँगन॥यशुमति सुत अपने पाँइन जव खेलत आवै आंगन॥जवतुम मदन मोहन करि टेरो इहि सुनिकै घरजाऊँ॥ होंतो तेरो घरको ढाढी सूरदासमेरोनाऊँ॥ २९॥ मैं घरको ढाढ़ीहौं तिहारो को मोसर करै आन। सोई लेहों जो मो मनभावै नंदमहरकी आन॥धन्य नंद धनि धन्य यशोदा धनि धनि जायो पूत। धन्य भूमि व्रजवासी धनि धनि आनंद करत अकूत॥ घर घर होत अनंद वधाई जहां तहां मागध सूत। मणि माणिक पाटंवर देते लेत नवनत वहूत॥हय गय सहन भंडार दिये सव फेरिभरेसेभाति। जवहिं देत तवहीं फिरि देखत संपति घर न समाति॥ तेमोहिं मिले जात घर अपने मैं वूझी तव जाति। हँसि हँसि दौरि मिले अंकमभरि हम तुम एकै ज्ञाति॥ संपति देहु लेहुँ नहि एको अन्न वस्त्र केहि काज। जोहों तुमसों मांगन आयो सो लेहौं नंदराज॥ अपने सुतको वदन देखावहु वडे महर शिरताज। तुम साहव मैं ढाढी तेरो प्रभु मेरे व्रजराज॥ चंद्रवदन दरशन संपतिदै सो

मैं ले पुरजाऊँ। सो संपति सनकादिक दुर्लभ सोहै तुमरे ठाऊँ॥ जाको नेति नेति श्रुति गावत तेउ कमलपद धाऊं। होंतेरो जन्म जन्मको ढाढी सूरदास कहिगाऊं॥३०॥राग केदारो॥नंद उदौ सुनि आयोहो वृषभानुको जगा। देवेको वडो महर देत न लावै गहर लालकी वधाई पाऊं लालको झगा॥ प्रफुलित ह्वैके आनदीनहै यशोदारानी झीनीए झगुली तामें कंचनको तगा। नाचै फूल्यो आँगनाइ सूर बखसीस पाइ माथेके चढाइ लीनो लालको वगा॥ ३१॥ राग धनाश्री॥ यशोमति लटकति पाँइ परै। तेरो भलो मनाइहौं झगरी न तूमति मनहि डरै॥ दीन्हों हार सबै कर कंकण मोतिन थार भरै। सूरदास स्वामी प्रगटेहैं अवसर पाइ झगरै॥ नंद जु दुःख गयो सुख आयो सबन्हको दियो पुत्र फल मानौ। तुमरो पुत्र प्राण सबहिनको भवन चतुर्दश जानौ॥ हौंतो तुम्हारो घरको ढाढी नावसेन सजपाऊँ। गृहगोवर्धन वास हमारो घर तजि अनत नजाऊँ। ढाढिनि मेरी नाचै गावै हौंहीं ठाढो वजावों॥ हमरो चीत्यो भयो तुम्हारे जो मांगौं सो पावों। अब तुम मोको करो अयाची जो ग्रह गेहविसारौं॥द्वारेरहौं देहु एक मंदिर श्यामस्वरूप निहारों। हँसिढाढिनि ढाढी सों वोली अब तू वरणि वधाई। ऐसो दियो नदेहै सूर कोउ यशोमतिहौं पहिराई॥ ३२॥ ढाढिनि दान मानकी भाई। नंदउदार भए पहिरावत वहुत भलै वनिआई॥ जब जब जन्म धरौं ढाढीको जन्म कर्म गुणगाऊं। अर्थ धर्म कामना मुक्तफल चार पदारथ पाऊं॥ लै ढाढिनि कंचन मणि मुक्ता नाना वसन अनूप। हीरा रतन पाटंवर हमको दीन्हे ब्रज के भूप॥ अबतो भली भई नारायण दरशे नैन निरखिनिधि पाई। जहां तहां वंदनेवार विराजत घर घर वजत वधाई॥ जो याच्यो सोई तिन पायो तुमरिव भई विदाई॥ भक्तिदेहु पालने झुलावों सूरदास वलिजाई॥ ३३॥ छठीव्यवहार॥६॥ राग सारंग॥ गौरि गणेश विनऊंहो देवीशारदतोहि॥ गाऊंहरिजीको सोहलो मन और आवै मोहिं। वधावो हरिको मन रहिवो रानी जायोहै मोहन पूत॥ घर आंगन वाहेर सवमांगे ठाढ़े मागध सूत। आठ मास चंदन पियोहो नवए पियो कपूर॥ दशयें मास मोहनभए मेरे आंगनरी वाजै धतूर। हर्षीं पार परोसिनि भए हरष नगरके लोग॥हरषीं सखी सहेलरी सब आनँद भयोसुखयोग॥ वाजन वाजे गहगहे मिलि वाजै शारद भेरी॥मालिनि वांधै तोरन मेरे आंगनरी रोपै आछेकरी। आने गढि सोना ढोलना पढिलाये चतुर सुनार॥ विच विच हीरा लगे नंदलाल गरेको हार। यशुमति भाग सुहागिनी जिन जायो हरिसों पूत। करहु ललनकी आरती री अरु दधिकादौं सूत। नाउनि वोलहु नवरंगी लै आवहु महावर वेग॥ लाखटका अरु झूमकसारी देहु दाईको नेग। अगर चंदनको पालनो गढ़ई गुर ढार सुढार॥ लैआयो गढ़ि ढोलनी विश्वकर्मा सो सुतधार। धन्य सो दिन धन्य सोघरी धन्यसो जोतिकजाग॥ धन्य धन्य मथुरापुरीहो धनिं धनि महरिको भाग॥ धनि धनि मातु देवकी धनि धनि महरिको भाग। धनि धनि मातु देवकी धनि धनि वसुदेव सुजान॥ धनि धनि भादौं अष्टमी धनिं जन्मलियो जब कान्ह। काढ़हु कोरे कापरहो अरु काढ़ौ घीकी मौन॥ जाति पांति पहिरायकै सव समदि छतीसौ पौन। काजर रोरी आनोरी मिलिकरौ छठीको चार॥ एपनकीसी पूतरी सव सखियन कियोहै शृंगार। क्रीट मुकुट सोभावनी शुभअंग वनी वनमाल॥ सूरदास प्रभु गोकुल जनमे मोहन मदन गोपाल॥ ३४॥ ॥ रागकाफी॥ अति परमसुंदर पालनागढ़ि ल्यावरे वढ़ैया। शीतल चंदन कटाउ धरि खरादि रंग लगाउ विविध चौकी वनाउ रंगरेसम लगाउ हीरा मोती लाल मढ़ैया॥ विश्वकर्मा सुढार रच्यो है काम सुनार मणि गणि लागे अपार नंदमहर सुत काज अढैया। आनि धरयो नंदद्वार अतिही

सुंदर सुढार ब्रजवधू देखें वारवार सोभा नहिं वारपार धनि धनि धन्यहै गढैया ॥ पालनो आन्यो सवहि अति मनमान्यो नीको सोदिन धराइ सखिन मंगल गवाय रंगमहलमें पौढ्योहै कन्हैया ॥ सूरदास प्रभुकी मैआ यशुमति नंदरानी जोई मांगत सोई लेत वधैया ॥ ३५ ॥ राग जयतश्री॥ब्रजको जीवन नंदलाल । असुर निकंदन भक्तपाल॥कनकरतन मणि पालनौ अति गढनौ काम सुतार। विविध खेलौना भांति भांति के गजमुक्ता वहुधार। सुभगपालने झूलैंहो नंदलाल मात पिता सुकृत फल जगपाल ॥ जननि उवटि अन्हवायके अतिक्रमसों लीनो गोद । पौढाये पट पालने शिशु निरखिं जननि मनमोद ॥ अतिकोमल दिनसातके अधर चरण कर लाल। सूरश्याम छवि अरुणता निरपि हरपि ब्रजवाल ॥ ३६ ॥ राग धनाश्री ॥ यशोदा हरि पालने झुलावै । हलरावै दुलराइ मल्हावै जोइ सोई कछु गावै ॥ मेरे लालको आउ निदरिया काहेन आनि सुवावे। तू काहेन वेगीसी आवै तोको कान्ह वुलावै । कवहूं पलक हरि मूंदिलेतहैं कवहू अधर फरकावै । सोवत जानि मौन ह्वैह्वै रही कर करि सैन वतावै ॥ इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि यशुमति मधुरै गावै । जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ सो नंदभामिनि पावे ॥ ३७ ॥ राग गौरी ॥ हालरो हलरावै माता । वलि वलि जाउँ घोप सुखदाता ॥ यशुमति अपनो पुण्य विचारै । वारवार शिशु वदन निहारै ॥ अंग फरकाय अलप मुसकानो । या छवि पर उपमाको जानो ॥ हलरावति गवति कहि प्यारे । वालदशाके कौतुक भारे।महरि निरखि मुख हिय हुलसानी । सूरदास प्रभु सारंगपानी ॥ राग धनाश्री ॥ कन्हैया हाल रुरे । गढि गुढिल्यायो वढई वलि हालरुरे॥ धरनि पर डिलाइ एकलखमाँगै वढई वलिहाल रुरे । दुइलखवावा नंदजीदेहीं ॥ काहेको तेरो पालना वलिहाल रुरे॥ काहेलागी डोर । रतन जडितको पालना वलिहालरुरे॥रेसम लागी डोर॥ कवहुंकझूलै पालनावलि हालरुरे । कवहुक नंदजीकी गोद। झूलैं सखी झुलावहीं वलिहालरुरे॥सूरदास वलिजाहीं ॥ ३८ ॥ अथपूतनावध ॥ आजुहों राजकाज करि आऊँ । वेगि सँहारौं सकल घोप शिशु जो मुख आयसु पाऊँ॥ तौ मोहन मूर्छन वशीकरन पढ़ि अमित देह वढाऊँ। अंगसुभग सजिकै मधु मूरति नयननि माहँ समाऊँ ॥ घसिकै गरल चढ़ाइ उरोजनिलै रुचिसों पयप्याऊँ। सूरदास प्रभु जीवत ल्याऊं तौ पूतना कहाऊं ॥ ३९ ॥ विहागरो ॥ कंसराय जिय सोच परी । कहाकरौं काको ब्रज पठऊं विधना कहा करी ॥ वारंवार विचारत मनमें भूपनीद विसरी । सूर वुलाइ पूतनासों कह्यो करुन विलंव धरी ॥ ४० ॥ राग धनाश्री ॥ रूप मोहनी धरि ब्रज आई। अद्भुत साजि शृंगार मनोहर असुर कंसदै पान पठाई ॥ कुच विपवाँटि लगाइ कपटकरि वालघातिनी परमसुहाई। वैठी हुतीं यशोदामंदिर दुलरावति सुत श्यामकन्हाई। प्रगटभई तहां आइ पूतना प्रेरितकाल ॥ अवधि नियराई ॥ आवतपीठा वैठन दीनो कुशलवूझि अति निकट वुलाई ॥ पौढ़ाये हरि सुभगपालने नंदघरनि कछु काज सिधाई।वालक लियो उछंग दुष्टमति हर्पत स्तनपान कराई॥ वदन निहारि प्राणहरिलीनो परी राक्षसी योजनताई। सूरजदै जननी गति ताको कृपाकरी निजधाम पठाई॥४१॥ प्रथम कंस पूतना पठाई। नंदघरनि जहँ सुतलिए वैठी चलि तेहि धामहि आई ॥ अतिमोहनी रूप धरि लीनो देखत सवहीके मनभाई। यशुमति रही देखि वाको मुख काकी वधू कौनधौं आई नंदसुवन तवहीं पहिचानी असुर घरनि असुरनकी जाई ॥ आपुन वज्र समान भए हरि माता दुखित भई भरपाई। अहो महरि पालागनमेरो हौं तुम्हरो सुत देखन आई । यहकहि गोद लियो अपने तव त्रिभुवनपति मनमन मुसकाई। मुखचूंव्यो गहि कठ लगाए विप लह्या स्तन मुख

लाई ॥ पयसंग प्राणऐंचि हरिलीन्हे योजन एक परी मुरझाई। त्राहि त्राहि कहि ब्रजजन धाई अग्नि बालक क्यों बच्यो कन्हाई । अतिआनंद सहित सुतपायो हृदये मांझ रहे लपटाई॥ करवर ढरीबड़ी मेरेकी घर घर आनंद करत बधाई।सूरश्याम पूतना पछारी यह सुनि जिय डरप्यो नृपराई ॥ ४२ ॥ राग सारंग ॥ कपटकरि ब्रजहि पूतना आई। रूप स्वरूप विषम स्तन लाए राजा कंस पठाई ॥ मुखचूंबत अरु नैन निहारत राखत कंठ लगाई। भाग्यवडे तुमरे नंदरानी जिनके कुँवर कन्हाई ॥करगहि क्षीर पियावत अपनो जानत केशवराई। बाहर होइके असुर पुकारी अब बलि लेहु छोडाई ॥ गई मुर्छाइपरी धर मानो भुवंगम खाई। सूरदास प्रभु तुमरी लीला भक्तन गाइ सुनाई ॥ ४३ ॥ राग धनाश्री॥ देखो यह विपरीत भई।अद्भुत रूप नारि करि आई कपट हेतु क्योंसहै दई॥ कान्हैलै यशुमतिकोरातै रुचिकरि कंठ लगाई । तब वह देह धरी योजनलौं श्यामरहे लपटाई ॥ बडेभाग्यहैं नंदमहरके बडभागिन नंदरानी। सूरश्याम उर ऊपर बारे यह सब घर घर जानी ॥ ४४ ॥ बिहागरो ॥ नेक गोपालै मोको दैरी । देखों कमलवदन नीके करि ता पाछैतू कनिया लैरी ॥ अतिकोमल कर चरणसरोरुहु अधर दशन नासा सोहैरी। लटकन शीशकंठमणि भ्राजत मन्मथ कोटि वारने गैरी ॥ वासर निशा विचारतहौ सखि यह सुखकबहुँ न पायो मैरी। निगमन धन सनकादिक सर्वसु भाग्यवडे पायो तैं हैरी॥जाको रूप जगत्के लोचन कोटि चंद्र रवि लाजत भैरी ॥ सूरदास बलिजाइ यशोदा गोपिन प्राण पूतना बैरी॥४५॥राग जैतश्री ॥ कन्हैया हाल रोहाल रोई। हौं वारी तेरे इंदु वदनपर अति छवि अलसनिरोई ॥ कमलनयन को कपट कियेमाई इहि ब्रज आवै जोई। पालागों विधि ताहिं वकीजौं तूतिहि तुरत विगोई॥सुन देवता बड़े जगपावन तू पतिया कुलकोई ॥पय पूजिहौं वेगि यह बालक करिदै मोहिं वडोई। द्वितिये के शशिलौं बाढैं शिशु देखै जननि जसोई। यह सुखसूरदासके नयनन दिन दिन दूनो होई ॥ ४६ ॥ रागकान्हरो ॥ पालने श्याम हलावति जननी। अति अनुराग परस्पर गावत प्रफुल्लितमगन मुदित नंद घरनी ॥ उमगि उमगि प्रभु भुजा पसारत हरष यशोमति अंकम भरनी। सूरदास प्रभु मुदित यशोदा पूरण भई पुरातन करनी ॥४७॥ रागविलावल ॥ गोपाल माई पालने झुलाए। सुर मुनि कोटि देव तेतीसों देखन कौतुक अंमर छाए॥ जाको अंत न ब्रह्मा जानत शिव सनकादि न पाए । सो अब देखो नंद यशोदा हरषि हरषि हलराये ॥ हुलसत हुलसि करत किलकारी मन अभिलाख बढ़ाए ॥ सूरश्याम भक्तन हितकारन नानाभेष बनाए॥४८॥सिद्धर बाँभन करम कसाई।कहौ कंससों वचत सुनाई।प्रभु मैं तुम्हरो आज्ञाकारी। नंदसुवन को आवौं मारी ॥ कंस कह्यो तुमते इह होई। तुरत जाहु कर विलंब न कोई॥ शिरधर नंदभवन चलिआयो। यशोदा उठिकै माथो नायो ॥ करो रसोई मैं चलि जावो।तुम्हरे हेतु यमुनजल ल्यावो॥ इहकहि यशुदा यमुना गई। सिद्धर कही भली इह भई। उन अपने मनमारन ठानो। हरिजी ताको तबही जानो ॥ ब्राह्मणमारे नहीं भलाई । अंग याको मैं देंउ नशाई ॥ जबहीं ब्राह्मण हरिढिग आयो। हाथ पकर हरि ताहि गिरायो ॥ गोड चापलै जीभ मरोरी । दधि ढरकायो भाजन फोरी ॥ राख्यो कछु तेहि मुख लपटाई ॥ आपुरहे पलनापर आई ॥ रोवन लागे कृष्ण विनानी॥ यशुमति आइगहैलै पानी ॥ रोवत देखि कहयो अकुलाई ॥ कहाकरचो तैं विप्र अन्याई ॥ ब्राह्मणके मुख वात नआवै । जीभहोइ तौ कहि समुझावै ॥ ब्राह्मणको घरवाहर कीन्हों। गोद उठाइ कृष्ण को लीन्हो ॥ पुरवासी सब देखन आए। सूरदास हरिके गुणगाए ॥४९॥ सुन्यो कंस पूतना मारी। सोचभयो ताकेजिय

भारी॥ कागासुरको निकट बुलायो । तासों कहि सब वचन सुनायो ॥ मम आयसु तुम माथे धरौ। छलबल करि ममकारज करौ ॥ इह सुनिकै तिन्ह माथो नायो। सूर तुरत ब्रजको उठिधायो ॥ ५० ॥ अथ कागासुरको आयबो ॥ राग सारंग ॥ कागरूप एक दनुज धरचो। नृप आयसु लैकर माथे पर हर्षवंत उर गर्व भरचो ॥ कितिक वात प्रभु तुम आयसुलै यह जानो मो जात मरचो। इतनी कहि गोकुल उठि आयो आइ नंदघर छाजरक्यो ॥ पलना पर पौढे हरि देखे तुरत आइ नैननि सों अरचो । कंठ चापि वहु वार फिरायो गहि पटक्यो नृपपास परचो ॥ तुरत कंस पूछन तेहि लाग्यो क्यों आयो नहिं काज सरचो। वीत्यो जाम ज्वाब जब आयो सुनहु कंस तेरो आयुसरचो ॥ धारे अवतार महाबल कोऊ एकहि कर मेरो गर्व हरचो। सूरदास प्रभु कंसनिकंदन भक्तहेतु अवतार धरचो ॥ ५१ ॥ राग बिलावल ॥ मथुरापति जिय अतिहि डेरान्यौ। सभामाँझ असुरनिके आगे वार वार शिर ध्वनि पछितान्यौ । ब्रज भीतर उपज्यो मेरो रिपु मैं जानी यह वात। दिनही दिन वहु वढत जातुहै मोको करिहै घात ॥ दनुजसुता पूतना पठाई छिनकहि माँझ संहारी। पीच मरोरि कागसुर दीनो मेरे ढिग फटकारी ॥ अवहींते यह हाल करतुहैं दिन दिन होत प्रकाश। सैनापतिन सुनाइ वात यह नृपमन भयो उदास॥ ऐसो कौन मारिहै ताको मोहिं कहै सो आय । वाको मारि अपनपौ राखै सूर ब्रजहि सो जाइ ॥ ५२ ॥ अथ शकटासुरको कस आज्ञा मांगन । गौड मलार॥ नृपति वात यह सबनि सुनायो। मुहांचही सैनापतिकीनो शकटासुर मन गर्व बढायो ॥ दोउ कर जोरि भयो तव ठाढो प्रभु आयसु मैं पाऊं। ह्यांते जाइ तुरतही मारों कहौतो जीवत ल्याऊं ॥ यह सुनि नृपति हर्षमन कीनो तुरतहि वीरादीनों। वारं वार सूर कहि ताको आपु प्रशंसाकीनो ॥ ५३ ॥ गौडमलार ॥ पानलै चल्यो नृपआन कीन्हो । गयो शिरनाइकै गर्वही वढाइकै शकटको रूपधरि असुर लीन्हो॥ सुनत घहरानि ब्रजलोग चकृतभए कहा आघात ध्वनि करतु आवै। देखि आकास चहुँपास दशहूं दिशा डरे नर नारि तनुसुधि भुलावै। आपु गयो तहीं जहँ प्रभु रहे पालने करगहे चरण अंगुठ चचोरहि। किलकिकिलकिहँसत वाल शोभा लसत जानितिहि कसत रिपु आयौ भोरहि। नेक फटक्योलात शब्द भयो आघात गिरचौ भहरात शकटा संहारचो ॥ सूरप्रभु नंदलाल दनुज मारचो ख्याल मेटि जंजाल ब्रजजन उवारचो ॥ राग विभास ॥ देखो सखी अद्भुत रूप अतूथ । एक अंवुज मध्य देखियत वीस उदधि सुत यूथ ॥ एकसूकदोऊ जलचर उभयो अर्कअनूप। पंचविराजे एकहि ढिग वहु सखिकौन स्वरूप ॥ शिशु तामै सोभा भई करो अर्थ विचारी। सूर श्रीगोपालकी छवि राखियउरधारी ॥ ५४ ॥ राग विलावल ॥ कर पग गहि अंगुठा मुख मेलत । प्रभुपौढे पालने अकेले हरषिरअपने रँग खेलत॥शिवसोचत विधि वुद्धि विचारत वटवाढ्योसागर जलझेलत॥विडारि चले घन प्रलयजानिकै दिगपति दिग दंतौन सकेलत॥मुनि मन भीत भए भव कंपित शेपसकुचि सहसौ फन पेलत। उन ब्रजवासिन वात न जानी समुझेसूर शकट पगु पेलत ॥ ५५ ॥ चरणगहे अंगुठा मुख मेलत। नंदघरनि गावति हलरावति पलना पर किलकत हरि खेलत॥जोचर णार्विंद श्रीभूषण उरते नेकु नटाराति ॥ कापौधौकारसु चरणनमें मुखमेलत करि आरति । जा चरणार्विंदके रसको सुर नर करत विवाद॥ यह रस है मोको दुर्लभता ताते लेत सवाद । उछलत सिंधु धराधर कांप्यो कमठपीत अकुलाइ। शेपसहसफन डोलन लाग्यो हरि पीवत जव पाइ॥वढचौ विछावट सुर अकुलाने गगनभयो उत्पात॥महाप्रलयके मेघ उठे कारि जहाँ तहाँ आघात॥करुणाकरी

छांडि पशु दीनो जानि सुरन मन संस ॥ सूरदास प्रभु असुरनिकंदन दुष्टनके उरगंस ॥ ५६ ॥ राग विहाग ॥ यशोदा मदनगुपाल सुवावै । देखि स्वप्न गति त्रिभुवन कंप्यो ईशविरंचि भ्रमावै ॥ असित अरुणसित आलस लोचन उभै पलक पर आवै । जनु रवि गति संकुचित कमल युग निशिअलि उडन न पावै ॥ चौंकि चौंकि शिशुदशा प्रगटकरि छवि मनमें नाहिं आवै।जानौनिशिपति धरि करि अति अमृत श्रुतिभंडार भरावै ॥ श्वासउदर उर सति यों मानो दुग्धसिंधु छविपावै । नाभि सरोज प्रगट पद्मासन उतरि नाल पछितावै ॥ कर शिर तर करि श्याममनोहर अलक अधिक सों भावै। सूरदास मानौ पन्नगपति प्रभु ऊपर फनछावै॥५७॥राग विलावल॥अजिर प्रभा तेहि श्यामको पलका पौंढाए।आपुचली गृहकाजको तहां नंद बुलाए॥ निरखिहरषि मुख चूमिकै मंदिर पग धारी।आतुर नंद आए तहां जहँ ब्रह्म मुरारी॥हँसे तात मुखहेरिकै कर पग चतुराई। किलकि झटकि उलटे परे देवन मुनिपाई॥सो छवि नंद निहारिकै तहां महरि बुलाई ॥ निरखिचरित गोपालके सूरज बलि-जाई॥५८॥ रामकली ॥हरषे नंद टेरत महरि।आइ सुत मुख देखि आतुर डारिदै दधि टहरि।मथति दधि यशुमति मथानी ध्वनि रही घर गहरि। श्रवन सुनति न महरि बातैं जहां तहां गई चहरि॥ यह सुनत तब मातु धाई गिरे जाने झहरि।हँसत नंदमुख देखिधीरज तब कह्यो ज्यों ढहरि।श्याम उलटे परे देखे बढ़ी सोभा लहरि । सूरप्रभु करसेज टेकत कबहूं टेकत ढहरि ॥ ५९ ॥ महरि मुदित उलटाइकै मुख चूंबन लागी। चिरुजीवो मेरो लाडिलो मैं भई सभागी॥एकपाख त्रयमासके मेरो भयो कन्हाई।पटक रानि उलटे परे मैं करौं बधाई॥नंद घरनि आनंदभरी बोली ब्रजनारी।यह सुख सुनि आई सबै सूरज बलिहारी॥६०॥ यह सुख सुनि आई ब्रजनारी। देखनकों धाई बनवारी॥ कोइ युवती आई कोइ आवति । कोउ उठि चलति सुनत सुखपावति ॥ घर घर होत अनंद बधाई सूरदास प्रभुकी बलिजाई ॥ ६१ ॥ रामकली ॥ जननी देखि छवि बलिजाति ॥ जैसे निधनी धनहि पाइ हरष दिन अरुराति॥ बाललीला निरखि हरखि धनि धनि धनि ब्रजनारी॥निरखि जननी वदन किलकत त्रिदश पति दैतारि॥धन्य नंद धनि धन्यगोपी धन्य ब्रजके बास।धन्य धरनी करन पावन जन्म सूरजदास ॥ ६२ ॥ विलावल ॥ यशुमति भाग सुहागिनी हरिको सुत जानै । मुख मुख जोरि बतावई शिशुताई ठानैं ॥ मो निधनीके धनरहै किलकत मनमोहन ॥ बलिहारी छविपर भई ऐसी विधि जोवन॥लटकत बेसरि जननिकी इकटक चख लावै॥पकरत वदन उठाइके मनही मन भावै॥ महरि मुदित हित उरभरे यह कहि मै वारी । नंदसुवनके चरित पर सूरज बलिहारी ॥६३॥ राग असावरी ॥ गोद लिये हरिको नंदरानी स्तन पान करावतिहै । बार बार रोहिणिको कहि कहि पलिका अजिर मँगावतिहै ॥ प्रातसमय रवि किरण कौंवरी सो कहि सुतहि बतावतिहै। आउ धाम मेरे श्यामलाल आंगन बालकेलिको गावतिहै ॥रुचिर सेज लैगई मोहनको भुजा उछंगि सुवावतिहै ॥ सूरदास प्रभु सोई कन्हैया लहरावतिमलहरावति है ॥ ६४ ॥ राग विलावल ॥ नंदघरनि आनंदभरी सुत श्याम खिलावै । कबहु घुटुरुवनि चलहिंगे कहि विधिहि मनावै ॥ कबहूं दंतुलीद्वै दूधकी देखों इननैननि। कबहुं कमल मुख बोलिहैं सुनिहौं इन बैननि॥चूमति कर पग अधर पान लटकति लटचूमति। कहा बरणि सूरज कहै कहा पावै सोमति ॥ ६५ ॥ राग विलावल ॥ मेरो नान्हरिया गोपाल बेगि बडो किनिं होहि। इहि मुख मधुरे बयनहँसि कबहूँ जननि कहोगे मोहि ॥ यह लालसा अधिक दिन दिनप्रति कबहूंईशकरै ॥मोदेखत कबहूं हँसिमाधव पगुद्वै धरनि धरै। हल धर सहित फिरै जब आंगन चरण शब्द सुखपाऊं ॥ छिन छिन क्षुधित जात पयकारन हौंहठि

निकट बुलाऊं। आगम निगम नेति करि गायो शिवउ नमान नपायो॥सूरदास बालक रस लीला मन अभिलाष बढ़ायो ॥ ६६ ॥ अथ सतम अध्यात्री नाव वध गोडा तोरन॥राग विलावल ॥ यशुमति मन अभिलाष करै । कब मेरोलाल घुटुरुवन रेंगै कब धरनी पग द्वैक धरै । कबद्वै दंत दूधके देखौं कब तुतरे मुख वैनझरै॥कब नंदहि कहि बाबा बोलै कब जननी कहि मोहि ररै॥कब मेरो अचरा गहि मोहन जोइ सोइ कहि मोसोंझगरै॥कबधौं तनक तनक कछु खैहै अपने कर सो मुखहि भरै॥कबहँसि बात कहैंगे मोहिसों छवि पेपत दुख दूरि करै। श्याम अकेले आगन छाडे आपु गई कछु काज घरै। एहि अंतर अंधवाइउठी इक गरजतगगन सहित घहरै ॥ सूरदास ब्रज लोग सुनत ध्वनि जो जहां तहां सब अतिहि डरै ॥ ६७ ॥ राग सूही ॥ अति विपरीत तृणावर्त आयो। बात वक्र मिस ब्रजके ऊपरि नंद पँवरिके भीतर आयो॥पौढे श्याम अकेले आंगन लेत उव्यौ आकास चढायो अंधधुंध भयो सब गोकुलजो जहाँरह्यो सो तहाछपायो ॥ यशुमति आइ धाइ जोदेखै श्याम श्याम करि सोर उठायो । धावहु नंद गोहारी लागौ किनि तेरो सुत अधवाइ उठायो ॥ इहि अंतर आकासते आवत पर्वतसम काहि सबनि बतायो। मारचो असुर शिलासों पटक्यो आप चढे ताऊपर भायो ॥ दौरे नंद यशोदा दौरी तुरतहि लै हितकंठ लगायो॥सूरदास यह कहत यशोदा ना जानौं विधिनाहिं कह भायो॥६८॥राग बिलावल॥सोभित सुभग नंद जूकोरानी अति आनंद आंगनमें टाढी गोदलिये सुत सारंगपानी॥तृणावर्तकी सुरति आनि जिय पठयो असुर कंस अभिमानी॥गरूभये महिमें बैठाए सहि न परे जननी अकुलानी ॥ आपुन गंई सदनही दौरी काहू एक काज लपटानी। बोंडरु महा भयावन आयो गोकुस सबै प्रलयकै जानी ॥ महादुष्ट लै उड़चो गोपालहि चल्यो अकास कृष्ण यहठानी। चापि ग्रीव हरि प्राणहरे दृग करत प्रवाह चल्यो अधिकानी॥पाहन शिला निरखिहरि डारचो ऊपर खेलत श्यामविनानी। देति अभूपण वारि वारि सब सूरज पियत वारि सब पानी ६९ ॥ रागधनाश्री ॥उबरचो श्याम महरि बड़भागी॥बहुतदूरिते आइ परचो धर देखहुँ मैं कहुँचोट न लागी ॥ रोगलेउँ बलिजाउँ कन्हैया यह कहि कंठलगाइ ॥ तुमहीहो ब्रजके जीवन धन देखत नैन सिराइ। भली नहीं तेरी प्रकृति यशोदा छांड़ि अकेलो जाति ॥ गृहको काज इनहूते प्यारो नेकहु नहीं डेराति। भली भई अबकै हरि बाच्यो अबहू सुरति सम्हारि। सूरदास खिझि कहति ग्वालिनी मनमें महरि विचारि ॥ ७० ॥ रागविलावल ॥ अब हौं श्याम बलिजाउँ हरी। निशि दिन रहति बिलोकति हरिमुख छांड़ि सकति नाहिं एकघरी॥हौं अपने गोपाल लडैहौंभौन चाउ सब रहौं धरी पाए कहा खेलावनको सुख मैं दुखिया दुखकोटिभरी ॥ जासुखको शिव गौरि मनाई त्रिय ब्रत नेम करी। सूरश्याम पाए पैडेमे मैनिधि रांक परी ॥ ७१ ॥ राग धनाश्री ॥ हरि किलकत यशुदाकी कनियां। निरखि निरखि मुख हँसाति श्यामसों मो निधनीके धनिया॥अति कोमल तनु श्यामको बार बार पछितात॥कैसे बच्यो जाउँ बलि तेरी तृणावर्तके घात॥नाजानो धौं कौन पुण्यते को करिलेत सहाइ ॥ वैसो काम पूतना कीनो इहि ऐसो करि आइ। माता दुखित जानि हरि बिहँसे नान्ही दँतुली दिखाइ। सूरदास प्रभु माता चितते दुखडारचो बिसराइ ॥ ७२ ॥ सुत मुख देखि यशोदा फूली। हर्पित देखि दूधकी दँतिया प्रेममगन तनुकी सुधि भूली ॥ बाहिरते तब नंद बुलाए देखोधौं सुंदर सुखदाइ । तनक तनकसीदूधकी दंतिया देखौ नैन सुफल करौ आइ ॥ आनंद सहित महर तब आए मुख चितवत दोउ नैन अघाइ । सूरश्याम किलकत द्विज देख्यो मानो कमल परबीज जमाइ ॥ ७३ ॥ रागनीश्रीहठी ॥ जननी

वलिजाय हालरु हालरो गोपाल । दधिहि विलोइ सदमाखन राख्यो मिश्री सानि चढावै नंदलाल ॥ कंचनके खंभ मयारि मरुवाडांडी खचि हीरा विच लाल प्रवाल । रेसम बुनाइनव रतन लाइ पालनो लटकन वहुत पिरोजालाल ॥ मोतिन झालरि नानाभांति खिलौना रचे विश्व कर्मासुतिहार । देखि देखि किलकत दतिया दो राजत क्रीडत विविध विहार । कठुलाकंठ वज्रके-हरिनख राजै मसविंदुका मृगमद भाल॥ देखत देत अशीशव्रजजन नर नारी चिरजीवो यशोदा तेरो वाल । सुर नर मुनि कौतूहल फूले झूलत देखतनंदकुमार ॥ हरषत सुमन अपार वर्षतनभ ध्वनिछायो जैजैकार ॥ ७३ ॥ अथ अष्टम अध्यायनामकर्म । राग विलावल ॥ महरभवन ऋषिराज गए चरणधोइ चरणोदक लीनो अरघ आसन करि हेतदए ॥ धन्य आजु वड़भाग्य हमारे ऋषिआए अतिकृपाकरी ॥ हमकहँधनि धनि नंद यशोदा धनि यह व्रज जहां प्रगट हरी । आदि अनादि रूप रेखा नहिं इनते प्रभु नहिं और वियो ॥ देवकी उदर अवतार लेनकह्यो दूध पीवन तव मांगिलियो । वालक करि इनको जिनि जानौ कंसको वध एकरिहैं ॥ सूर देह धरि सुरनउधारन भूमिभार एहरिहरिहैं ॥ ७४ ॥ धन्य यशोदा भाग्य तुम्हारो जिनि ऐसो सुतजायो । जाकेदरशपरस सुख तन मन कुलको तिमिर नशायो ॥ विप्रसुजन चारण वंदीजन सकल नंद गृह आए। नौतम सुभग हरद दूव दधि हर्षित शीश वंधाए॥ गर्गनिरूप कहै सव लक्षण अविगतिहैं अविनासी सूरदास सुनतै यश हरिके आनंदे व्रजवासी ॥७५॥ अन्नप्राशनलीला ॥ कान्ह कुंवरकी करहु अन्नप्रासनी कछु दिन घटि षटमास गए । नंदमहर यह सुनि पुलकित जिय हरि अन्नप्रासन योग भए ॥ विप्रवुलाइ नामलै वूझ्यो राशिशोधि इक दिनहि धरौ । आछो दिन सुनि महर यशोदा सखिन वोलि शुभगान करौ॥युवति महरिको गारी गावति और महरको नाम लियो । व्रज घर घर आनंद वढ्योअति प्रेमपुलक न समात हियो । जाको नेति नेति श्रुति गावत ध्यावत शिव मुनि ध्यान धरे सूरदास तिनको व्रज युवती झकझोरति उर अंक भरे ॥ ७६ ॥ राग सारंग ॥ आजु कान्ह करिहै अनप्रासन मणिकंचनके थार भराए।भांति भांतिके वासन नंदघरनि सव वधू वुलाईजे सव अपनी जाति कोउ जिवनार कराति कोउ घृत पक षटरसके वहुभांति ॥ वहुत प्रकार किये सव व्यंजन अनेक वरन मिष्टान । अति उज्ज्वल कोमल सुठि सुंदर महरि देखिमनमान॥यशुमति नंदहि वोलि कह्यो तव महर वुलाइ वहु जाति । आपुगए नंद सकल महर घर लै आये सवज्ञाति ॥ आदर करि वैठाइ सवनिको भीतर गये नंदराइ । यशुमति उवटि न्हवाइ कान्हको पटभूषण पहिराइ ॥ तनै झगुली शिरलाल चौतनी करचूरा दुहुपाइ । वारवार मुख निरखि यशोदा पुनि पुनि लेत वला इ॥घरी जानि सुत मुखजुठरावन नंद वैठे लै गोद।महर वोलि वैठारि मंडली आनंद करत विनोद॥ कंचनथार लै खीर धरी भरि तापर घृत मधु नाइ । नंद लैलै हरिमुख जुठरावत नारि उठीं सव गाइ॥ षटरसके परकार जहांलगि लैलै अधर छुवावत । विश्वंभर जगदीश जगतगुरु परसत मुख करुवावत ॥ तनक तनक जल अधर पोंछिकै यशुमति पै पहुंचाए । हर्षवंत युवती सव लैलै मुख चूमति उर लाए ॥महर गोप सवही मिलि वैठे पनवारे परूसाए । भोजन करत अधिक रुचि उपजी जो जेहिके मन भाए ॥ इहिविधि सुखविलसत व्रजवासी धनि गोकुल नर नारी । नंदसुवनकी या छवि ऊपर सूरदास वलिहारी ॥ ७७ ॥ राग सारंग ॥हरिको मुख माई मोहिं अनुदिन अतिभावै । चितवत चित नैननिकी मति सवगति विसरावै ॥ ललना लैलै उछंग अधिक लोभ सो लागे । निरखति निंदति निमेष करत ओट आगे ॥ सोभित शुभ कपोल अधर अल्प अल्प दशना।

किलकि वैन कहत मोहन मृदु रसना ॥ नासिका लोचन विसाल संतत सुखकारी । सूरदास धन्य भाग्य देखत ब्रजनारी ॥ ७८ ॥ लालन तेरे मुखपरहो वारी । बालगोपाल लगौ इन नैननि रोगु वलाइ तुम्हारी ॥ लट लटकनि मोहन मिस विंदुका तिलकभाल सुखकारी । मनहुँ कमल अलि सावक पंगति उडत मधुप छवि भारी ॥ लोचन ललित कपोलनि काजर छवि उपजत अधिकारी । मुखमें सुख औरै रुचिबाढ़ति हँसत देदै किलकारी ॥ अलप दशन कलवल करि वोलनि विधि नहिं परत विचारी । निकसति ज्योति अधरनिके विचह्वै मानौ विधुमे वीजु उज्यारी । सुंदरताको पार नपावतिं रूपदेखि महतारी । सूरसिंधुकी वूंद भई मिलि मति गति दृष्टिहमारी ॥७९॥ राग धनाश्री ॥ लाल तेरे मुख ऊपर वारी । बलि कैसे मेरे नैननि लागे लेउँ वलाइ तिहारी ॥ सुंदरताको पार न आवति रूप देखि महतारी । उरअंतर आनंद वढ़ावत हँसत देत किलकारी ॥ अलपदशन तोतरावत वोलत छवि चितहु न जात विचारी । सूर सिंधुकी वूंदभई मिलि मनसा मगन हमारी ॥ ८० ॥ राग जैतश्री ॥ लानन हौं वारी तेरे या मुख ऊपर । माई मेरिहि डीठि न लागै तातेमसि विंदा दयो भ्रूपर ॥ सर्वसुमैं पहिलेही दीनों नान्हीं नान्हीं दतुली दूपर । अवकह करौं निछावरि सूर यशोमति अपने लालन ऊपर ॥ ८१ ॥ लालाहौं वारी तेरे मुखपर । कुटिल अलक मोहन मन विहँसत भ्रुकुटी विकट नैननिपर ॥ दमकति द्वैद्वै दंतुलिया विहँसाति मानौ सीपिज घरु कियो वारिजपर ॥ लघु लघु शिरलट घूंघरवारी लटकिररहयो लिलार पर॥यह उपमा कहि कांपै आवै कछुक कहौं सकुचतिहौं हियपर॥नूतनचंद्र रेखमधि राजति सुरगुरु शुक्र उदोत परस्पर ॥ लोचन लोल कपोल ललितअति नासिकको मुक्तारद छंदपर । सूरकहा न्यौछावरि करिये अपने लाल ललित लर ऊपर ॥ ८२ ॥ अथवरसगांठिलीला ॥ राग विलावल ॥ आजु भोर तमचरकी रोल ॥ गोकुलमें आनंद होतहै मंगल ध्वनि महराने ढोल । फूले फिरत नंद अति सुख भयो हर्षि मँगावत फूल तमोल ॥ फूली फिरत यशोदा घर घर उवटि कान्ह अन्हवाइ अमोल । तनक वदन दोउ तनक कर तनक चरन पूंछत पट झोल ॥ कान्हगले सोहै कंठमाला अंग अभूषण अंगुरिनगोल । शिरचौतनी दिठौना दीनें आंखिआंजि पहिराइनिचोल॥ श्याम करत मातासों झगरो अटपटात कलवल करवोल । दोउ कपोल गहिकै मुख चुंवति वर्षदिवस कहि करत कलोल । सूरश्याम ब्रज जन मन मोहन वरपगांठिको डोरा खोल ॥ ८३ ॥ राग धनाश्री ॥ अलि मेरे लालनकी आजु वरपगांठि सव सवनि वोलावो । शुभकरि मंगल गान करावो। चंदन आंगन सवनलिपावो । मोतिअनको तुम चौक पुरावो ॥ उमँग अंगनि आनंद तूर वजावो । मेरे कहे तुम विप्र बुलावो ॥ शुभघरि एक आनि धरावौ ॥ वागे वीरे वनि ठंनि वनावो ॥ आभूपण पहिरावो । अक्षत दूव वधावो॥लालनकी वर्पगांठि जुरावो। इहै मोहि नैनन लाहो देखावो ॥ पंचरंगसारी मंगावो । वंधुजन सव पहिरावो ॥ नचैं सव उमंगि अंग बढ़ावो । नंद रानी सव ग्वाल वुलावो ॥ इहैरीति कहिं कहि सुनावो । वेगि करौ किनि विलंव लगावो ॥ यशुमति तव नंद वोलावो । लाल लिए कनियां देखरावो ॥ लग्नकी घरीतुरत अव आवो । मैंतो अन्ह वाय वनावो ॥ अति सुख भयो वर गांठि जुरावो । सूरश्याम मुख छविहि निहारति । तनमन धन युवती जन वारति ॥ ८४ ॥ राग आसावरी ॥ उमँगनि उमँगीहै ब्रजनारी कान्हकी वरषगांठि वरप वरपानि। गावहिं मंगलगान नीके सुर नीकेतान आनंद हरपनि । कंचनमणि जटितथार दधिरोचन फूल डार देखन चली नंदकुमार मिलिवेकी तर्सनि। सूरदास प्रभुकी वरपगांठि जोरति यह छविपर

तृन तोरति अरस परसनि ॥ ८५ ॥ श्रीकृष्णजीको कनछेदन लीला राग धनाश्री ॥ कान्ह कुंवरको कनछेदनोहै हाथ सुहारी भेलीगुरकी । विधिविहँसत हरिहँसत हेरि हरि यशुमतिके धकधुकी उरकी ॥ रोचन भरि लेदैत सींकसो श्रवणनिकट अतिही चतुरकी ॥ कंचनके द्वै धुर मँगाइलिये कहै कहा छेदन आतुरकी । लोचन भरि भरि दोउ माताके कनछेदन देखत जिय मुरकी ॥ रोवत देखि जननि अकुलानी लियो तुरत नौवाको झरकी हँसत नंदयुवती सब विहँसी झमकि चली सब भीतर दुरकी ॥ सूरदास नंद करत वधाई अतिआनंद वालाव्रज पुरकी ॥ ८६ ॥ जबहि भयो कनछेदन हरिको । सुरवनिता सब कहत परस्पर ब्रजवासी दासी समसरिको ॥ गोपी मगनभई सब गावति हलरावत सुत महर महरिको जो सुख मुनि जन ध्यान नपावत सो सुख नंद करत सब घरको॥मणि मुक्ता गणकरत न्यवछावरि तुरत देत विलम नहिं घरिको। सूर नंद ब्रज जन पहिरावत उमगि चल्यो सुखसिंधु लहरको ॥ ८७ ॥ अथ घुटुरवनिचलिवो ॥ खेलत नंद आंगन गोविंद । निरखि निरखि यशुमति सुखपावति वदन मनोहरचंद ॥ कटि किंकिनी कंठ मणिकी दुति लट मुकुता भरिभाल । परम सुदेश कंठ केहरि नख विच विच वज्र प्रवाल ॥ कर पहुचिया पांयनपैंजनी सुरतन रंजित रजपीत । घुटुरुनि चलत अजिर में विहरत मुखमंडित नवनीत ॥ सूर विचित्र कान्हकी चानक वाणी कहत नहीं वनिआवै ।वालदशा अवलोकि सकल मुनि योग विरति विसरावै ॥ ८८ ॥ आसावरी ॥ घुटुरवन चलत श्याम मणि आंगन मात पिता दोउ देखतरी ॥ कबहुँक किलकिलात मुख हेरत कबहुँ जननि सुखपेषतरी ॥ लटकन लटकत ललित भालपर काजरविंदु भ्रुव ऊपररी । यह सोभा नैननि भरिदेखैं नहिं उपमा तिहुँ भूप हरी । कबहुँक दौरि घुटुरुवन लटकत गिरत परत फिरि धावतिरी । इतते नंद बुलाइ लेतहैं उतते जननि बुलावतिरी ॥ दंपति होड करत आपुसमें श्याम खिलौना कीनोरी ॥ सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सुत हित करि दोउ लीनोरी ॥ ८९ ॥ राग सारंग ॥ निरखिछवि फूलतहै ब्रजराज । उत यशुदा इत आपु परस्पर आडे रहे कर पाज ॥ किंकिनि कटि मध्य प्रसरित भुज उभय मिलत फुनिलाज । झुमित लरत अलि सैन सरोज पर मन मकरंदके काज ॥ अर्धगिरा मृदु श्रवत सुधा जनु पिवत श्रुतिनिपटआज । सूरदास प्रभु सुत रात २ करि लैलै ऊपर भ्राज ॥ ९० ॥ बिलावल ॥ सोभित कर नवनीत लिये । घुटुरुन चलत रेणुतनुमंडित मुखदधि लेप किये । चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक किये ॥ लट लटकनि मनो मत्त मधुप गन मादक मदहि पिये ॥ कठुला कंठ वज्रके हरिनख राजत रुचिर हिये धन्य सूर एको पलमा सुख का सतकल्प जिये ॥ ९१ ॥ राग ललित ॥ माई विहरत गोपाललाल मणिमय रच्यो अंगना परिरांगना घुटुरवनि डोलै ॥ निरखि निरखि अपनो प्रतिविंव हँसत किलकत पाछे फिर फिर चितै मैया मैया वोलै॥ज्यों ज्यों अलिगण सहित विमलजल धाइ रहेकुटिल अलक वहनकी छवि अवनी प्रतिलोलै ॥ सूरदास छवि निहारि थकित रहे सब वोपनारे तन मन धन देति वारि वारि ओलै ॥ ९२ ॥ राग विलावल वाल विनोद खरो जिय भावत । मुख प्रतिविंव करिवे कारन हुलसि घुटुरुवनि धावत ॥ छिनक माँझ त्रिभुवनकी लीला शिशुता माहँ दुरावत ॥ शठएक वोल्यो चाहतहैं प्रगट वचन नहिं आवत ॥ कमलनैन माखन माँगतहैं ग्वालनि सैन वतावत ॥ सूर श्याम सुसनेह मनोहर यशुमति प्रीति वढावत॥९३॥ रागसारंग ॥ वलिजाउँ श्याम मनोहर नैन॥अब चितवत मोहन करि अँखियन मधुप देत मनौं सैन ॥ कुंचित अलक तिलक गोरोचन शशिपूरह

रपे ऐन॥कबहुंक खेलत जात घुटुरुवनि उपजावत सुखचैन॥कबहुँक रोवत हँसतहैं बलिगई बोलत मधुरेबैन॥ कबहुँक ठाढे होत टेकिकर चलि नसकत इत गैन॥ देखत बदन करौं न्योछावरि तार तात मात सुखदैन ॥ सूर बाललीलाके ऊपर वारौं कोटिक मैन ॥ ९३ ॥ कान्हरो ॥ आँगन खेलत घुटुरुवन धाए। नीलजलद तनु श्यामसुख निरखि जननि दोउ निकट बुलाए॥बंधुक सुमन अरुण पदपंकज अंकुश प्रमुख चिह्न वसिआए॥नूपुर कलरव मनों सु तहँशनि रचे नीठ दै वाहवसाए ॥ कटि किंकिनि वरहार श्रीवदर रुचिर वाहु भूपन पहिराए।उर श्रीवक्ष मनोहर केहरि नखनमैं मध्य मणिगण बहु लाए ॥सुभग चिबुक द्विज अधर नासिका श्रवण कपोल मोहिं सुठि भाए ॥ भुव सुंदर करुणारस पूरन लोचन मनहु युगलजल जाए॥भाल विसाल ललित लटकन मणि बालदशाके चिकुर सुहाए ॥ मानो गुरु शनि कुज आगे करि शशिहि मिलन तमके गणभाए ॥ उपमा एक अभूत भई तब जब जननी पटपीत उढाए ॥ नील जलद ऊपर वे निरखत तजि सुभाउ मनौ तडित छपाए ॥ अंग अंग प्रति मार निकारि मिलि छवि समूह लैलै जनु छाए ॥ सूरदास सो क्योंकरि वरणै जो छवि निगम नेति करिगाए ॥ ९४ ॥ धनाश्री ॥ हौं बलि जाउँ छवीले लालकी ॥ धूसरि धूरि घुटुरुवन रेंगनि बोलन वचन रसालकी॥ कछुक हाथ कछू मुखमाखन चितवनि नैन विसालकी ॥ सूर सुप्रभुके प्रेम मगन भई ढिग न तजति ब्रजबालकी ॥ ९५ ॥कान्हरो॥ सादर सहित विलोकि श्यामसुख नंदरूपलिये कनिया॥सुंदरश्याम सरोज नील तनु अंग अंग सकल सुभग सुखदनिया ॥ अरुण तरनि नखज्योति जगमगति झुनझुन करत पाइँ पैंजनिया ॥ कनकरतन मणि जटित रचित कटि किंकिनि कलित पीतपट झनिया ॥ पहुँची करनि पदीके उर हरिनख कठुला कंठ मंजु गजमनिया ॥ रुचिरचिबुक द्विज अधर नासिका अतिसुंदर राजत सोंवनिया ॥ कुटिल भ्रुकुटि सुखकी निधि आनन कपोलकी छवि नउ पनिया ॥ भालतिलक मसि बिंदु विराजत सोभित शीशलालचौतनिया ॥ मनमोहन तुतरी बोलन मुनि मन हरत सुहँसि मुसकनिया ॥ बाल स्वभाउ विलोकि विलोचन चोरत चितहि चारु चितवनिया ॥ निरखति ब्रज युवती सब ठाढी नंदसुवन छवि चंद्र वदनिया॥ सूरदास प्रभु निरखि मगनभए प्रेमविवस कछु सुधि न अपनिया॥९६॥कान्हरो। ॥ बोलि लिए यशुमति यदुनंदहि॥पीत झगलियाकी छवि छाजति विज्जुलता सोहति मनौ कंदहि॥वाजापति अग्रज अंवाते अरजथान सुत माला गंदहि ॥ मनौ सुरग्रहते सुररिपु कन्या सौते आवति डुरिसंदहि ॥ आरि करत कर चपल करतुतो नंदनारि आनन छुवै मंदहि । मनो भुजंग अरि परस लालच फिरि फिरि चाटर सुभग सुचंदहि ॥ गुंगी बातनि यों अनुरागति भँवरगुंजरत कमलमौ वंदहि। सूरदास प्रभु सुतपकिये वडे भाग्य यशुदा अरु नंदहि ॥ ९७॥ रागधनाश्री ॥ कहांलौं वरनौं सुंदरताइ॥खेलत कुँअर कनक आंगनमें नैननिराखि छविछाइ ॥ कुलहि लसत शिर श्याम सुभग अति बहुविधि सुरंग बनाइ ॥ मानो नवघन ऊपर राजत मघवा धनुप चढाइ॥अति सुदेश मृदु हरत चिकुर मन मोहन मुख बगराइ मानो प्रगट कंज पर मंजुल अलि अवली फिरि आइ॥ नील श्वेत परपीत लालमणि लटकनि भालरु नाइ॥ शनि गुरु असुर देवगुरुमिलि मनौ भौम सहित समुदाइ॥ दूधदंत द्युति कहि न जाति अति अद्भुत एक उपमाइ॥ किलकत हँसत दुरत प्रगटत मनौ घनमें विज्जुछटाइ ॥ खंडित वचन देत पूरन सुख अल्प जल्प जलपाइ ॥ घुटुरुन चलत रेणु तनु मंडित सूरदास बलिजाइ ॥ ९८ ॥ नटनारायण ॥ हरिजूकी बालछवि कहौं वरनि ।

सकल सुखकी सींव कोटि मनोज सोभा हरनि ॥ भुज भुजंग सरोजनयननि वदन विधु जित लरनि ॥ रहे विवरन सलिल नभ उपमा अपर दुतिउरनि ॥ मंजु मेचक मृदुल तनु अनुहरत भूषन भरनि ॥ मनहुँ सुभग शृंगार शिशुपतरु फरचौ अद्भुत फरनि । चलत पद प्रति विंव मणि आंगन घुटुरुवन करनि ॥ जलजसंपुट सुभग छवि भरि लेत उर जनु धरनि । पुण्यफल अनुभवति सुतहि विलोकिकै नंदवरनि ॥ सूर प्रभुकी वसी उर किलकिल कनि ललित लरख रनिं ॥ ९९ ॥ राग धनाश्री ॥ किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत । मणिमय कनकनंदके आँगन मुख प्रतिविंब पकरवेहि धावत॥कवहूं निरखि हरि आपछांहको करसों पकरन को चित चाहत।किलकि हँसत राजतद्वै दतियां पुनि पुनि तिहि अवगाहत॥कनक भूमि पर कर पग छाया यह उपमा एक राजत।कर कर प्रति पद प्रति मणि वसुधा कमल वैठकी साजत॥वालदशासुख निरखि यशोदा पुनि पुनि नंद वुलावत । अचरा तर लै ढाकि सूरके प्रभुको जननी दूध पिवावत॥१००॥ विलावल॥ नंद धाम खेलत हरि डोलत । यशुमति करत रसोंई भीतर आपुन किलकत वोलत॥टेरि उठी यशुमति मोहनको आवहु घुटुरुवनधाए । वैन सुनत माता पहिचानी चलै घुटुरुवनि पाए ॥लैउठाय अंचल गहि पोंछे धूर भरी सब देह । सूरज प्रभु यशुमति रजझारति कहां भरी यह खेह ॥१॥ अथ पाँयन चलनसमय॥ सुहो विलावल॥धनि यशुमति वडभागिनी लिये श्याम खिलावै।तनक तनक भुज पकरिकै ठाढो होन सिखावै ॥ लरखरात गिरि परतहैं चलि घुटुरुवनिधावै । पुनि क्रमक्रम भुजटेकिकै पग द्वैक चलावै ॥ अपने पाँयन कवहिंलौं मो देखत धावै।सूरदास यशुमति यह विधि सौंज मनावै ॥ २॥ कान्हरो ॥ हरिको विमल यशगावत गोपंगना । मणिमय आंगन नंदराइके वाल गोपाल तहां करैं रंगना ॥ गिरि गिरि परत घुटुरुवनि टेकत खेलतहैं दोउ छगन मंगना । धूसरि धूरि धौत तनु मंडित मान यशोदा लेत उछंगना ॥ वसुधा त्रयपद करत नआलस भयो तिन्हे कठिन परचो देहरी उलंघना । सूरदास प्रभु व्रजवधू निरखत रुचिर हार हिए सोहतु वंघना ॥३॥ सुहोविलावल चलन चहत पाँइन गोपाल । लै लगाइ अँगुरी नंदरानी मोहन सूरति श्याम तमाल ॥ डगमगात गिरि परत पाँइनि पर भुज भ्राजत नंदलाल । जनो श्रीधर श्रीधरत अधोमुख धुकत धरनि मानौ नमिनाल॥ धूरि धौति तनु नैननि अंजन चलत लटपटी चाल । चरणरुणित नूपुर ध्वनि मानोसर विहरतहै वाल मराल ॥ लट लटकनि शिरचारु चपोडा सुठि सोभासीहै शिशु भाल । सूरदास ऐसो सुख निरखत जो जीजै जगमें वहुकाल ॥४ ॥ विलावल सिखवत चलन यशोदामैया । अरवराइ कर पाणि गहावत डगमगाइ धरणी धरैपैया ॥ कवहुँक सुंदर वदन विलोकति उर आनंद भरि लेत वलैया । कवहुँक वलिको टेरि वुलावति इहि आंगन खेलौ दोउ भैया ॥ कवहुँक कुलदेवता मनावत चिरजीवें मेरो वाल कन्हैया । सूरदास प्रभु सव सुखदायक अति प्रताप वालक नंदरैया ॥५॥ सूहाविलावल॥मणिमयआंगन नंदके खेलत दोउ भैया।गौर श्याम जोरी वनी वलराम कन्हैया॥लटकन ललित लटुरियाँ मसि विंदु गोरोचन । हरि नख उर अति राजहिं संतानि दुखमोचन ॥ संग संग यशुमति रोहिणी हितकारनि मैया।चुटकी देहि नचावहि सुत जानि नन्हैया॥नील पीत पटओढनी देखत जियभावै । वालविनोद अनंद सों सूरज जन गावै ॥ ६ ॥ राग धनाश्री ॥ आंगन खेलैं नंदके नंदा । यदुकुल कुमुद सुखद चारु चंदा ॥ संग संग वलमोहन सोहैं । शिशुभूषण सवको मन मोहैं तनुद्युति मोरचंद्र जिमि झलकै।उमगि उमगि अंग अंग छवि छलकै॥कटि किंकिनि पग नूपुर वाजै। पकज पाणि पहुँचिया राजै ॥ कठुला कंठ वघनहा नीके । नयन सरोज मयन सरसीके ॥ लटकन

ललित ललाट लटूरी। दमकत द्वैद्वै दंतुरियारूरी। मुनिमन हरत मंजु मसिविंदा। ललित वदन वल वाल गोविंदा॥ कुलही चित्र विचित्र झगूली। निरखि यशोदा रोहिणिफूली॥ गहि मणिखंभ डिंभ डग डोलैं। कलवल वचन तोतरे बोलैं॥ निरखत छवि झांकत प्रतिविंवै। देत परमसुख पितु अरु अंवै॥ व्रजजन देखत हिय हुलसाने। सूरश्याम महिमाको जाने॥ ७॥ राग नटनारायण॥ वलिगई वालरूप मुरारि। पाँयँपजन रुनु झुन नचावति नंदनारि॥ कवहूं हरिको लाइ अंगुरी चलन सिखावति ग्वारि। कवहूं हिरदै लगाइ हितकरि लेति अंचलडारि॥ कंवहुँक हरिको चितै चूमति कवहूं गावति गारि। कवहुँ लै पाछे दुरावति ह्यां नहीं वनवारि॥ कवहूं अंग भूपण वनावति राई लोन उतारि। सूर सुर नर सबै मोहे निरखि यह अनुहारि॥ ८॥ बिलावल॥ भावत हरिको वाल विनोद। श्याम राम मुख निरखि प्रमोदित रोहिणि जननी यशोद॥आँगन पंकराग तनु सोभित चले नूपुर ध्वनि सुनि मन मोद।परमसनेह वढावत मातनि रवकिरहरि वैठत गोद॥अति श्रीचपल सकल सुखदायक निशि दिन रहत केलिरस श्रोद।सूरश्याम अंवुज दल लोचन फिरि चितवत व्रजवनिता कोद॥ ९॥ वालविनोद आंगनकी डोलनि। मणिमय भूमि नंदके आलय वलि वलि जाउँ तोतरी वोलनि॥ कठुला कंठ रुचिर केहरिनख वज्रमोल वहुलाल अमोलनि। वदनसरोज तिलक गोरोचन लट लटकन मधु पंकति लोलनि॥लौनी कर आनन परसतहैं कछुक खाइ कछु लग्यो कपोलनि। कहि जन सूर कहांलौ वरणौंधन्य नंद जीवन युग तोलनि॥१०॥रागविलावल॥गहे अंगुरिया तातकी नंद चलन सिखावत। अरवराइ गिरिपरतहैं करटेकि उठावत॥ वारवार वकि श्यामसों कछु वोल वकावत। दुहुंधा द्वै दंतुली भई अतिं मुखछविपावत॥ कवहुँकान्ह कर छांडि नंदपग द्वै करि गावत।कवहूं धरणिपर वैठिकै मनमें कछु गावत॥ कवहुं उलटिं चलैं धामको घुटुरुनु करि धावत सूरश्याम मुख देखि महरमन हर्ष वढ़ावत॥११॥ धनाश्री॥ कान्ह चलत पग द्वैद्वै धरनी।जो मनमे अभिलाप करतही सो देखत नंदघरनी॥ रुनुक झुनुक नूपुर वाजत पग यह अतिहै मन हरनी। वैठजात पुनि उठत तुरतही सो छवि जाइ न वरनी॥ व्रजयुवती सव देखि थकित भई सुंदरताकी सरनी। चिरजीवो यशुदाको नंदन सूरदासको तरनी॥ १२॥ राग बिलावल॥ चलत श्याम घन राजति पैंजन पग पग चारु मनोहर। डगमगात डोलत आंगनमें निरखि विनोद मोहे सुर मुनि नर॥अरु मन मुदित यशोदा जननी पाछे फिरत गहे अंगुरी कर। मनो धेनु तृण छांड़ि वच्छहित प्रेम पुलकि चित श्रवत पयोधर॥ कुंडल लोल कपोल विराजत लटकन ललित लटुरिया भूपर। सूरश्याम सुंदर विलोकनिं रहत वालगोपाल नंदवर॥ १३॥रागगौरी॥ भीतरते वाहरलौं आवत। घर आंगन अति चलत सुगम भयो देहरीमें अटकावत॥ गिरि गिरि परत जात नहिं उलंघी अति श्रम होत न धावत। अहुठपैर वसुधा सव कीन्ही धाम अवधि विरमावत॥ मनहीमन वलवीर कहतहैं ऐसे रंगवनावत। सूरदास प्रभु अगणित महिमा भक्तनके मन भावत॥ १४॥ रागधनाश्री॥ चलत देखि यशुमति सुखपावै।ठुमुकु ठुमुकु धरनी धर रेंगत जननी देखि दिखावै॥देहरीलौ चलि जात वहुरि फिरि फिरि इतहीको आवै। गिरि गिरि परत वनत नहिं नांघत सुर मुनि सोचकरावै॥ कोटि ब्रह्मांड करत छिन भीतर हरत विलंव न लावै। ताको लिए नंदकी रानी नानारूप खिलावै॥ तव यशुमति कर टेकि श्यामको क्रमक्रमकै उतरावै। सूरदास प्रभु देखि देखि सुर न रमुनि मन बुधिं भुलावै॥ १५॥ राग भैरव॥ सो वलँ कहां गयो भगवान॥ जिहिवल मीनरूप जल थाह्यो लियो निगम हति असुर पुरान। जेहिवल कमठपीठ पर गिरिधर सजलसिंधुनथि

कियो विमान ॥ जिहिबल रूप वराह दशनपर राखी पुहुमी पुहुप समान॥ जेहिबल हिरणकशिपु तनुफारयो भए भक्तको कृपानिधान ॥ जेहिबल वलि वंधन करि पठयो त्रैपद वसुधा करी प्रमान जेहिबल विप्रतिलकदै थापे रक्षा आपुकरी विदमान ॥ जेहि बल रावणके शिरकाटे कियो विभीषण नृपति समान ॥ जेहिबल जाम्ववंत मदमेट्यो जेहिबल ध्रुवविनती सुनि कान । सूरदास अब धाम देहरी चढ़ि न सकत हरि खरेई अयान ॥ १६ ॥ आसावरी ॥ देखो अद्भुत अविगतिकी गति कैसो रूप धरयोहैहो॥तीनलोक जाके उदर भवनसो सूपके कोन परयो हैहो॥ जाके नाल रुद्र ब्रह्मादिक सकल योग व्रत साधैहो।तिनको नालछीनि ब्रजयुवती वांटि तगासोंबाधैहै जाके मुख सनकादिक तप कियो सकल चतुरई ठानीहो । सो मुख चूमति महरि यशोदा दूध लार लपटानीहो॥विश्वभरण पोषन सब समरथ माखनकाज हरेहैहो ॥ रूप विराट रोम प्रति कोटि सुपलना माँझ परेहैहो ॥ जिन्हहि भुजा प्रहलाद उवारयो हिरणकशिपु तनुफारेहो ॥ सो भुज पकरि कहत ब्रज युवती ठाठेहोहु ललारेहो॥ जाको ध्यान धरें सुर मुनि जन शंभु समाधि नटारीहो सो ठाकुरहै सूरदासको गोकुल गोप विहारीहो ॥ १७ ॥ आसावरी ॥ आनंद प्रेम उमगी यशोदा लालरी खिलावे ॥ शिव सनकादि शुकादि ब्रह्मादिक खोजत अंत नपावे ॥ गोद लिए हँसिकै हलरावत तोतरे वोल वोलावे ॥ दैकरताल वजाववि गावति राग अनूपमल्हावे । कबहुँक करपल्लव आनि गहावति आँगन माँझ रिझावै।मोहिलियो सुरव्योम विमानन रवि नहिं रथहि चलावे॥ कवहुं कहिलकै किलकै जननी मन सुखसिंधु बढावै।मोहिरही ब्रजकी युवती सब सूरदास यश गावै॥१८॥ रागकान्हरो॥हरिहित मेरो माधैया। देहरी चढत परत गिरि गिरि करपल्लव जो गहत हैरीमैया॥ भक्ति हेतु यशुदाके आये चरण धरणिपर धारैया । जिनहि चरण छलिवो वलिराजा नखप्रसेद गंगाजो व्हैया॥जिहि स्वरूप मोहे ब्रह्मादिक कोटिभानु शशिउगैया॥सूरदास प्रभु इन चरणनकी मैं वलिमैं व लिजैया॥१९॥रागसहो॥ आंगन श्याम नचावहि यशोमति नंदरानी॥तारीदैदै गावही मधुरी मृदुवानी पाँयन नूपुर वाजई कटिकिंकिणि कूजै॥नन्हीनन्ही एडिअन अरुणता फलविंवन पूजै॥यशुमति गान सुनै श्रवण तव आपुन गावै॥तारी वजावत देखहि पुनि तारी वजावै॥केहरि नख उरपर सुठि सोभा कारी । मानो श्याम घन मध्यमे नौ शशि उजियारी॥ गभुआरे शिर केसहैं ते वधू सँवारे । लटकन लटकै भालपर विधु मधि गणतारे ॥ कंठुला कंठ चिवुक तरे मुख हँसनि विराजे । खंजन मीन शुक आनिकै मानो परे दुराजे ॥ यशुमति सुतहि नचावई छवि देखत जिअते।सूरदास प्रभु श्यामके सुख टरत न हियते ॥ २० ॥ बिलावल ॥ त्यों त्यों नाच्चोरी मनमोहन धाम मधुर सुर होई । तैसियै किंकिनि हरि पग नेपुर रसहि मिले सुरदोई ॥ कंचनको कठुला मनमोहत तिन वघनहा विचपोई निरखि निरखि सुख नंद सुवनको सुर मन आनंद होई ॥ देखत बनै कहत नहिं आवै उपमा को नाहिं कोई । सूर भवनको तिमिर नशायो निरखत जननि यशोई ॥२१ ॥ राग आसावरी ॥ जवते मैं खेलत दिखो आंगनरी यशुदाको पूतरी । तवते गृहसों नाहिन नातौ टूट्यो जैसो काचो सूतरी॥ अतिविसाल वारिजदल लोचन राजति काजर रेखरी । इच्छासौं मकरंद लेत मनौ अलिगोकुलके वेषरी ॥ श्रवणन नहि उपकंठ रहतहै अरु बोलत तुतरातरी । उमगे प्रेम नैन मगनह्वैकै कापै रोके जातरी ॥ दमकत दोउ दूधकी दतिया जग मग जग मग होतरी । मानौं सुंदरता मंदिरमें रूपर तनकी ज्योतिरी॥ सूरदास देखौ सुंदरमुख आनंदउर नसमाइरी । मानौं कुमुद कामनापूरण२इदुहि पाइरी ॥ २२ अद्भुत एक चितयो हौंसजनी नंदमहरके आंगनरी । सोमैं निरखि अपनपो खोयो

गई मथनिया मागनरी ॥ बालदशासुख कमल विलोकत कछु जननी सों बोलैरी । प्रगटत हँसत दँतियां मानो सीप दुरेदल ओलैरी ॥ सुंदरभाल तिलक गोरोचनमिलि मसिविंदुक लगौरी । मनो मकरंद अचै रुचिके अलि सावक सोई नजाग्यौरी ॥ कुंडललोल कपोलन झलकत मनो दर्पणमें झाईरी॥रही विलोकि विचारि चारु छवि परमिति काहु नपाईरी । मंजुल तारनकी चपलाई चितु चतुरानन करपैरी॥मनो शरासन समर धरे कर भौंह चढे सरवरपैरी । जलधि थकित जनौं काग कपोत ज्यों कुलन कबहूं आयोरी । नाजानौ केहि अंग मगन मन चाहि रह्यो नाहिं पायोरी ॥ कहां लगि कहौं बनाइ वरणि जितनी छवि निरखत हारीरी । सूरश्यामके एक रोमपर देहु प्राण वलि हारीरी ॥ २३ ॥ राग धनाश्री ॥ यशोदा तेरो चिरजीवहु गोपाल । वेगि वढोवल सहित वृद्धलठ महरि मनोहर वाल ॥ उपजि परचो इह कोखकर्मवश सुंदी सीप ज्यों लाल । या गोकुल के प्राणजीवन वैरिनके उरशाल ॥ सूर कितो मन सुख पावतहै देखे श्याम तमाल॥रुजि आराति लागो मेरी अँखियन रोग दोख जंजाल ॥ २४ ॥सारंग आसावरी ॥आजुगई हों नंदभवनमें कहा कहों ग्रहचै नुरी । वहुअंग चतुरंग छलमो कोटिक दुहियतु धेनुरी ॥ घूमिरहे जित तित दधि मथना सुनत मेघ ध्वनि लाजेरी॥ वरणौं कहा सदनकी सोभा वैकुंठहूते राजैरी॥वोलिलई नववधू जानिकै खेलत जहां कन्हाईरी । मुखदेखत मोहनीसी लागत रूप नवरण्यो जाईरी॥ लटकन लटकि रहे भूऊपर पंचरंग मणिगण पोहेरी । मनहु गुरु शनि शुक्र एक होइ लाल भाल पर सोंहैरी ॥ गोरोचनको तिलक निकटही काजरविंदुकु लाग्यौरी । मानहु कमल गुपाय राग रस निशि अलिसुत सोइ जाग्यौरी ॥ विधुआनन पर दीरघ लोचन नासा लटकत मोतीरी । मानौं सोम संग करिलीनौं जानि आपनो गोतीरी॥सीपजमाल श्याम उर सोहै विच वघना छविपावैरी। मानौं द्वैजशशिनक्षत्र सहितहै उपमा कहत न आवैरी । वरणौं कहा कहा अंग अंग सोभा भाव धरौ जलराशीरी ॥ वाल लाल गोपाल हि वर्णत कविकुल करिहै हांसीरी॥ सोभासिंधु अगाधवोध बुधउपमा नाहिन औररी॥रूपदेखि तनु थकित रहीहो मनौं भइभरेको चोररी॥जो मेरी अँखियां रसना होती कहती रूप बनाइरी॥चिरजीवो यशुदाको नंदन सूरदास वालेजा इरी ॥ २५ ॥ बलभद्रवचन ॥ बिलावल ॥ कलवलते हरि हारपरे । नवरंग विमल जलद पर मानौं द्वैशशि आनिअरे ॥ तव गिरिकमठ सुरासुर सर्पहि धरत न मनमे नेकडरे । तिन भुज भूपन भार परत कर गोपिनके आधार धरे ॥ चंद्रवदन मानौंमथिकाढ्यो विहँसानि मनहु प्रकाशकरे ॥ सूरश्याम दधि भाजन भीतर निरखत मुख मुखते नटरे ॥ २६ ॥ मथत दधि मथनी टेक रह्यौ॥आरि करत मटुकी गहि मोहन वासुकि शंभुडरचो॥मंदिर तरत सिंधु पुनि कांपत फिरि जनि मथन करै । प्रलयहोत जानि गहो मथानी प्रभु मर्यादटरै ॥ सुरअरि सुर ठाढे सव चितवैं नैननिनीर ढरै ।सूरदास प्रभु मुग्ध यशोदा मुखदधि विंदु गिरै॥२७॥राग धनाश्री जब मोहन करगही मथानी॥परसत वार दधि माट नेत चित उदधिशैलवासुकि भय मानी॥कवहुँक अहुठ परग करि वसुधा कवहुक देहरी उलंधि नजानी ॥ कवहुक सुर मुनि ध्यान नपावत कवहू खिला वाति नंदकी रानी । कवहुँक अपर खिरनही भावत कवहू मेखली उदर समानी ।। कवहुक आर करतमाखन की कवहुँक भेप दिखाइ विनानी। कवहुँक अखिल उदर नहिं तार्प्यंत कवहुँक दल माखन रुचि मानी॥सूरदास प्रभुकी यह लीला परत नमहिमा शेप वखानी॥२८॥राग विलावल ॥ नंदजूके वारे कन्हैया छांडिदे मथनिया॥वार वार कहै मात यशोमति रनिया ॥ नेकरहौ माखन दउँ मेरे प्राण धनिया । आरि जिनि करौ वलिजाउंहो निधनीके धनिया॥सुर नर जाको ध्यान धरै गावैं

मुनिं जनियां ॥ ताको नँदरानी मुख चुंबतिहै लिए कनियां।सहसानन गुणगाने गनत नहीं बनियां सूरश्याम देखि सब भूली गोप धनिया ॥ २९ ॥ यशुमति दधि मथन करति बैठी वरधाम अजिर ठाढे हरि हँसत नान्हीसी दांतेआन छविछाजै॥ चितवत चित लेइ चोराई सोभा वरणी नजाई मुनि नके मनहरनको मनमोहनि दलसाजै॥जननि कहति नाचौ तुम देहौं नवनीत मोहन रुनुकु झुनुकु चलत पांइन चायन नूपुर वाजै। गावत गुण सूरदास यशवाढ्यो भुव अकाश नाचत त्रैलोक नाथ माखनकेकाजै ॥ ३० ॥ प्रात समय दधि मथत यशोदा अति सुख कमलनयन गुणगावति। अतिहिमधुरगति कंठ सुघर अति नंदसुवन चित हितहि करावति ॥ नीलवसन तनु सजल जलद मानौ दामिनि विविभुजदंड चलावति।चंद्रवदन लट लटकि छवीली मनहुँ अमृतरस राहु चुरावति ॥ गोरस मथत नाद इक उपजत किंकिनि धुनि सुनि श्रवण रमावति।सूरश्याम अचराधरे ठाढे काम कसौटी कसिदेखरावति ॥ ३१ ॥ ललित ॥ छोटी छोटी गुडियां अंगुरिया छोटी छवीली नख ज्योति मोती मानौ कंजदलनपर ॥ ललित आंगन खेलै ठुमुकु ठुमुकु डोलै झुनुक झुनुक वाजै पैंजनी मृदुसुखर।किंकिनी कलित कटि हाटक रतन जटित मृदु कर कमल पहुँचिया रुचिर वर।पियरी पिछौरी झीनी और उपमा भीनी वालक दामिनि मानौं ओढे वारो वारिधर ॥ उरवघनहा कंठकठुला झडूले वार वेनी लटकन मस विंदु मुनि मनहर॥ अंजन रंजित नयना चितवनि चितचोरैमुखसोभा परवारौं अमित असमसर । चुटुकी वजावति नचावति नंद घरनि वालकेलि गावत मल्हावति प्रेम सुवर ॥ किलकि किलकि हँसै द्वैद्वै दतुरिया लसै सूरदास मनवसै तोतरे वचनवर ॥ ३२ ॥ राग विलावल॥माधव तनकसे वदन तनकसे चरन भुज तनकसे करन पर तनक माखन॥तनकसीवातजो कहत तनकसे तनक रिझि रहे तनक सुधन॥तनक कपोल तनकसी दंतुलिया तनक अधर अरु तनक हँसन पर हरत हो मन।तनकहि तनक जो सूर निकट आवै तनक कृपाकरि दीजे तनक सर नन॥माधव तनक चरन अरु तनक तनक भुज तनक बदन बोलै तनकसे बोल।तनक कपोल तन कसी दँतिया तनक हँसन पर लेतहौ मन मोल ॥ तनक करन पर तनक माखन लिये देखत तनक जाके सकल भुअन। तनक सुनै सुयश पावत परमगति तनक कहत तासों नंदसुवन ॥ तनक रीझ पर देत सकल तन तनक चितै चितवन चितके हरन।तनकहि तनक तनक करि आवै सूर तनक तनक दीजै तनक सरन॥३३॥३४॥ कान्हरो ॥ गोद खिलावति कान्हसुनो बडभागिनिहो नंदरानी ॥ आनँदकी निधि मुख लालाको ताहि निरखि निशि वासर सोतो छवि क्योंहूं नजाति बखानी ॥ गुणअपार बहु विस्तार कहि न परत निगमागमवानी। सूरदास प्रभुको लिये यशुमति गोदखिलावति चिते मुसुक्यानी ॥ ३५ ॥ राग गौरी ॥ मेरे माई श्याम मनोहर जीवनि॥निरखि नयन भूलेते वदन छवि मधुर हँसनि पैषीवनि। कुंतल कुटिल मकर कुंडल भुव नैनविलोकनि वंक। सिंधुसुधाते निकनि नयो शशि राजत मनौ मृगअंक ॥ सोभित सुमन मयूर चंद्रिका नीलनलिन तनुश्याम।मानहुनक्षत्र समेत इंद्र धनु सुभग मेघ अभिराम॥परमकुशलकोविद लीलानट मुसुकनि मन हरिलेत। कृपा कटाक्ष कमल कर फेरत सूर जननि सुखदेत ॥ ३६ ॥ आसावरी ॥ वेद कमल मुख परसत जननी अंक लिये सुतरति करि श्याम। परमसुभग जु अरुन कोमल रुचि आनंदित मनु पूरणकाम ॥ आलंवितजु पृष्ठ वल सुंदर परस्पर चितवत हरि राम। झांकि उझकि हँसत दोऊ सुत प्रेम मगन भई इकटक जाम ॥ देखिस्वरूप नरही कछू सुधि टूरी तवहिं कंठते दाम। सूरदास प्रभु शिशुलीला रस आवहु नंद देखि सुखधाम ॥ ३७ ॥ रागगौरी ॥ सोभा मेरे श्यामहिपै

सोहै। बलि बलि जाउ छबीले मुखकी या पटतरको कोहै ॥ या बानक उपमा दीवेको शुकबिक हाटक ठोहै। देखत अंग थके मनमें शशि कोटि मदन छविमोहै ॥ शशिगण गारि कियो विधि आनन बंकभौंह मिलि जोहै। सूरश्याम सुंदरता निरखत मुनिजनको मनमोहै ॥ ३८ ॥ बिलावल ॥ बाल गोपाल खेलौ मेरे तात। बलिबलि जाउँ मुखारविंदकी अमी वचन बोलत तुतरात ॥ उनींदे नयन विसालकी सोभा कहत न बनिआवे कछुबात। दूरखरे सब सखा बुलावत नयन मीडि उठि आए प्रभात ॥ दुहुँकर माठ गह्यो नँदनंदन छिटकि बूंद दधि परत अघात। मानहुं गजमुक्ता मर्कत पर सोभित सुभग साँवरे गात ॥ जननी प्रति मांगत मनमोहन देमाखन रोटी उठि प्रात। लोटत पुहुमि सूर सुंदर धन चारिपदारथ जाके हाथ ॥ ३८ ॥ पालने झूलो मेरे लालपियारे ॥ सुसकनिकी हौं वलि वलि करौ तिल तिल हठ न करहु जेदुलारे। काजरहाथ भरो जिनि मोहन ह्वैहैं नैन अतिहीरतनारे। शिरकुलही पहिराय पैंजनी तहाँ जाहु जहां नंदबबारे ॥ यह विनोद देखत धरणीधर मात पिता बलभद्र ददारे ॥ सुर नर मुनि कौतू हल भूले देखत सूरश्याम हैंकारे ॥ ३९ ॥ क्रीडत प्रात समय दोउ वीर ॥ माखन मांगत बात न मानत झकत यशोदा जननी तीर ॥ जननी मध्य सन्मुख संकर्षण ऐंचत कान्ह खस्यो तनुचीर ॥ मनो सरस्वती संग उभै द्विज राम कृष्ण अरु नील कंठीर ॥ सूरश्याम गही कुबरी कर मुक्ता मांग गही बलवीर। तारुन भखुलीनो अप अपनो मानहु लेत निवैरनिसीर॥४०॥गोपाल राइ दधि मांगत अरु रोटी। माखन सहित देहि मेरि जननी सुपक समंगल मोटी ॥ कतहो आरि करत मेरे मोहन कहत तुम आंगन लोटी। जो माँगहु सोदेहुँ मनोहर यहै बात तेरी खोटी ॥ प्रातकाल उठि देहुँ कलेऊ वदन चुपरि अरु चोटी। सूरदासको ठाकुर ठाढो हाथ लकुट लिये छोटी ॥ ४१ ॥ हरिकर राजत माखन रोटी। मनौवारिज शनि वैरु जानि जिय गह्यो सुधा शिशु घोटी॥ मनौवराह भूधर सहपति धरी दशननकीकोठी। शनि शिशुमेलि मुख अंबुज भीतर उपजी उपमा मोठी ॥ नग्न गात मुसक्यात तात ढिग निरत करत गहि चोटी। सूरजप्रभुकी इहै जुजूठनि लालन ललि तलपेटी ॥४२॥दोउभैया मैयापै मांगत दे मां माखन रोटी॥सुनीभावती एक बात सुतनकी झूठेहि धामके काम अगोटी॥बलजू गह्यो नासिका मोती कान्हकुँवर गही दृढकरचोटी। मानहु हस मोर भख लीने कविजन कहै उपमा कछु छोटी॥यह छवि देखत महरि अनंदित महर हँसत लोटि लोटी॥ सूरदास प्रभु मुदित यशोदा भागवडे करमनिकी मोटी ॥ ४३ ॥ आसावरी ॥ तनिक दैरी माइ। माखन तनक दैरी माया ॥ तनिक करपर तनिक रोटी मांगत चरन चलाइ ॥ तनक भूपर न नकारिखानेत पकरयौ धाइ।कंपि आगिरि शेपसंक्यो दाधिचलो अकुलाइ॥ जामुखको ब्रह्मादिक लोचै सो मांगत ललचाइ। ईशकेवेग दरशदीजै ब्रज बालक लत बलाइ ॥ माखन मांगत श्यामसुंदर देत पग पटकाइ॥तनक मुखकी तनक बनियां मांगतहैं तोतराइ॥मेरे मनको तनिक मोहन लागु मोहिबलाइ॥श्यामसुंदर गिरिधरानि ऊपर सूर वलि वलि जाइ॥४४॥बिलावल॥नेकरहौ माखन द्यों तुमको। ठाढा मथति जननि दधि आतुर लवनी नंद सुअनको ॥ मैं बलिजाउँ श्याम घन सुंदर भूख लगी तुम भारी। बात कहूंकी बूझति श्यामहिं फेर करत महतारी॥कहत बात हरि कछू न समुझत झूठेहि देत हुंकारी॥सूरदास प्रभुके गुण गावत तुरतहि बिसरिगई नंदनारी ॥ ॥ ४५ ॥ बातनहीं सुत लाइ लियो॥तवलौं मथि दधि जननी यशोदा माखन करि हरि हाथ दियो॥ लैलै अधर परसकरि जेंवत देखत फूल्यो गात हियो ॥ आपुहिं खात प्रशंसत आपुहिं माखन

रोटी बहुत प्रियो। जो प्रभु शिव सनकादिक दुर्लभ सुतहित वशकरि नंदत्रियो॥ यह सुख निरखन सूरज प्रभुको धन्य धन्य फल सुफल जियो॥४६॥ अथ बालवेष वर्णन ॥ बरनौं बालभेष मुरारि। थकित जित कित अमर मुनिगण नंदलाल निहारि॥ केश शिरविन पवनके चहुँ दिशाछिटके झारि॥ शीश पर धरे जटा मानौं रूप कियो त्रिपुरारि। तिलक ललित ललाट केसर बिंदु सोभा कारि॥ रेखा अरुन ज्योतिं तिय लोचन रह्यों जनु रिपु जारि॥ कंठ कठुला नीलमणि अंभोजमाल सँवारि। गरल गिरि बकपाल उर अहि भाय भए मदनारि॥ कुटिल हरिनख हिये हरिके हरप निरखति नारि। ईश जनु रजनीशराख्यो भालहूते उतारि॥ सदन रज तन श्याम सोभित सुभग इहि अनुहारि। मनहुं अंग विभूति राजत शंभुसो मधुहारि॥ त्रिदशपतिं पति असनको अति जननिसों कर आरि। सूरदास विरंचि जाको जपत निज मुखचारि॥४७॥ सखीरी नंदनंदन देखु॥ धूरि धूसरि जटा जुटली हरि किए हरभेषु॥ नीलपाट परोइ मणिगण फणिग धोखे जाइ। खुनखुना करि हँसत मोहन नचत डौंरु बजाइ॥ जलजमाल गोपाल पहिरे कहौं कहां बनाइ॥ मुंडमाला मनोहर गर ऐसी सोभा पाइ। स्वातिसुत मालाविराजत श्यामतन यों भाइ। मनौं गंगा गौरि डरहरि लिए कंठ लगाइ॥ केहरीके नखहि निरखत रही नारि विचारि॥ बालशशि मनौं भाल तेलै उरधरचो त्रिपुरारि। देखि अंग अनंग डरप्यो नंदसुतको जान॥ सूरदासके हृदयबसिरह्यो श्याम शिवको ध्यान॥४८॥ राग कल्याण॥ विहरत विविध बालक संग॥ डगर डगडोलत मगनि मग धूरि धूसरअंग॥ ललित गति पग परत पैजनि परस्पर किलकानि॥ मानहु मधुर मराल सावक सुभग बनविहानि॥ ललित श्रीगोपाल लोचन श्याम सोभा दून॥ मनौं मयंकहिअंक दीन्हीं सिंहकाके सून॥ दूर दमकत श्रवन सोभा जलज युग डहडहत॥ मनहुं बासव बलि पठाए जीव कवि कछु कहत॥ कबहुँद्वारे दौरि आवत कबहुँ नंदनिकेत। सूरप्रभुको गहत ग्वालिनि चारु चुंबन हेत॥४९॥ बिलावल॥ देखो मैं दधिसुतमें दधि जात। एक अचंभो देखि सखीरी रिपुमें रिपु जुसमात॥ दधिपर कीर कीरपर पंकज पंकजके द्वैपात॥ यह सोभा देखत पशुपालक फूले अंग नसमात॥ सुंदरवदन विलोकि श्यामको नंद निरखि मुसकात॥ ऐसो ध्यानधरै जो हरिको सूरदास बलिजात॥५०॥ धनाश्री॥ दधिसुत जामे नंददुवार। निरखिनैन अरुझ्यो मनमोहन रटत देहु कर बारंबार॥ दीरघ मोल कह्यो व्यापारी रहे ठगेसे कौतुकहार॥ करऊपरलै राखिरहे हरि देत न मुक्ता परमसुढार॥ गोकुलनाथ बएयशुमतिके आंगन भीतर भवन मँझार। शाखापत्र भए जलमेलत फूलत फरत न लागीवार॥ जानत नहीं मर्म सुर नर मुनि ब्रह्मादिक नहि परत विचार। सूरदास प्रभुकी यह लीला ब्रजवनिता गुहि पहिरेहार॥५१॥ कजरीको पय पिअहु लाल तेरी चोटीबाढै। सब लरिकनमें सुन सुंदर सुत तो श्री अधिकचढै॥ जैसे देखि और ब्रजबालक त्यों बलबैस बढै। कंस केसि बक बैरिनके उर अनुदिन अनल डढै॥ यह सुनिकै हरि पीवन लागे त्योंत्यों लियो लटै। अचवत पै तातो जब लाग्यो रोवत जीभ डढै॥ पुनि पीवतही कच टकटौवै झूठे जननि रढै। सूर निरखि मुँख हँसत यशोदा सो सुख उर न कढै॥५२॥ रामकली॥ यशोदा कबहिं बढैगी चोटी। कितीबार मोहिं दूध पिवत भई यह अजहूँहै छोटी॥ तूजो कहति बलकी बेनीज्यों ह्वैहै लाँबी मोटी। काढत गुहत न्हवावत ओछत नागिनि सी भ्वै लोटी॥ काचोदूधपिवावत पचिपचि देत नमाखन रोटी। सूरश्याम चिरजीवो दोउ भैया हरि हलधरकी जोटी॥५३॥ देवगंधार॥ कहन लगे मोहन मैया मैया। पितानंदसों बाबा बाबा अरु हलधरसों भैया॥ ऊंचे चढ़ि चढ़ि कहत यशोदा लैलै नाम कन्हैया। दूरि कहूं जिनजाहु ललारे मारैगी काहूकी गैया॥

गोपी ग्वाल करत कौतूहल घर घर नेत वधैया। मणि खंभन प्रतिबिंब विलोकत पुनि नवनीत कुँवर हरि पइआ ॥ नंद यशोदाजीके उरते इह छवि अनत न जइआ ॥ सूरदास प्रभु तुमरे दरशको चरणनकी वलिगइआ ॥५४॥ सारंग ॥ मैया मोहिं वड़ो करिवेरी। दूध दही घृत माखन मेवा जो मांगों सो देरी ॥ कछू हवस राखै जिन मेरी जोइ जोइ मोहिं रुचैरी ॥ रंगभूमि में कंस पछारौं कहाँ कहाँ लैमैरी । सूरदास स्वामीकी लीला मथुरावासी खोजैरी ॥ सुंदर श्याम हंसत जननीसों नंदववाकी सौंरी ॥ ५५ ॥ रामकली ॥ हरि अपने आगे कछु गावत । तनक तनक चरणनसों नाचत मनही मनहि रिझावत ॥ बाँहउचाइ काजरी धौरी गैयन टेरि बुलावत कवहुँक वावा नंद बुलावत कवहुँक घरमें आवत ॥ माखन तनक आपने करलै तनक वदनमें नावत । कवहुँ चितै प्रतिबिंब खंभमें लवनी लिए खवावत ॥ दुरि देखत यशुमति यह लीला हर्ष अनंद वढावत । सूरश्यामके वालचरित नितही नित देखत भावत ॥ ५६ ॥ विलावल ॥ आजु सखी हौं प्रात समयदधि मथन उठी अकुलाइ । भरिभाजन मणिखंभ निकट धरि नेत लियो करजाइ ॥ सुनत शब्द तेहि छिन समीप मे महरि हँसि आए धाइ । मोहे वालविनोद मोदकरि नयनन नृत्य देखाइ ॥ चितवनि चलनि हरयौ चित चंचल चितैरही चितलाइ । पुलकित तव प्रतिबिंब देखि करि सवही एक सुभाइ ॥ माखन पिंड विभाग दुहूँकर आपत मुँह मुसुकाइ । सूरदास प्रभुता सुतके सुख सकै न हृदय समाइ ॥ ५७ ॥ वलि वलि जाउँ मधुर सुर गावहु । अवकी वार मेरे कुँवर कन्हैया नंदहि नाचि देखावहु ॥ तारीदेहु आपने करकी परमप्रीति उपजावहु । आनयंत्र ध्वनि सुनि डरपत कत मोभुज कंठ लगावहु ॥ जिनसंका जियकरो लाल मेरे काहेको भरमावहुं वांह उचाइ कालिकी नाईं धौरी धेनु बुलावहु । नाचहुनेकु जाउँ वलि तेरी मेरी साध पुरावहु ॥ रत्न जटित किंकिणि पगनूपुर अपने रंग वजावहु । कनक खंभ प्रतिबिंबत शिशुइक लौनी ताहि खवावहु ॥ सूरश्याम मेरे उरते कहुँ टारे नेक नभावहु ॥ ५८ ॥ राग सारंग ॥ कान्ह वलिजाउ ऐसी आरि नकीजै । जोइजोइ भावै सोइ सोइ लीजै ॥ कहत यशोदा रानी । कोखिझवै सारंगपानी ॥ मेरे जो लाल खिजावै । सो अपनो कियो भलो पावै ॥ तिहिदेहौं देश निकारो । ताको व्रजनाहि नगारो ॥ अति रिसही ते तनु छीजै । सुठि कोमल अंग पसीजै ॥ वर्जत वर्जत विरुझाने । करि क्रोध मनहि अकुलाने ॥ धरत धरणि धर लोटे । माताको चीर नखोटे ॥ अंग आभूषण सब तोरे लवनी दधि भाजन फोरे । देखितनजल तरसै । यशुदाके चरणन परसै ॥ महरि वाँह गहि आने । तव तेल उवटने साने ॥ तव गिरत परत उठि भागे । कहूं नेक निकट नहिं लागे ॥ तव नंदघरनि चुचकारे । आदहु वलि जाउँ तुम्हारे ॥ नहिं आवहु तौ भले लाला । पुनि जानहुगे मदन गोपाल ॥ तुम मेरी रिस नहिं जानो । मोको नहिं तुम पहिचानौ ॥ मैं आजु तुम्हैं गहिवांधौं । हाहा करि करि अनुराधौं ॥ वावानंद उताहिते आए । कौने हरि अतिहि खिझाए ॥ मुख चूमि हरखि लैआए । यशुमति पै पहुँचाए ॥ मोहन कत खिझत अयानी । लिये लाइ हिये नंदरानी ॥ क्योंहूं जतन जतन करि पाए । तव उवटन तेल लगाए ॥ तातोजल आनि समोयो । अन्हवाइ दियो मुख धोयो ॥ अति सरस वसन तन पोंछे । लैकै मुख कमल अंगोछे ॥ अंजन दोउ दृग भरि दीनों । भ्रुव चारु चखोडा कीनों ॥ अँग आभूषणजे वनाए लालहि क्रम क्रमले पहिराए ॥ ऐसी रिसि नकरो मेरे कान्हा । अव खाहु कुंवर कछु नान्हा ॥ तुतरात कह्यो काहेरी । जो मोहिं भावै सो दैरी ॥ जोइजोइ भावे मेरे प्यारे । सोइसोइ देहौंजु ललारे ॥ कह्योहै

सिरावन सीरा।कछु हठ न करौ बलवीरा॥सद दधि माखन दै आनी।तापर मधु मिश्रीसानी॥खोवामें मधुर मिठाई। सो देखत अतिरुचिपाई॥कछु बलदाऊको दीजै। अरु दूधअधावटपीजै॥ सब हेरि धरीहै साढी। लैउपर उपरते काढी॥अति प्योसरसरिस बनाई।तेहि सोंठ मिरच रुचिताई॥दूध बरा दही वोरी। सो खात अमृत इक कोरी॥ सुठि सरस जलेबी वोरी। जेहि जेवत रुचि नहिं थोरी अरु खुरमासरस सँवारे। ते परसि धरेहैं न्यारे॥संकरपालेसद पागे। ते जेंवत परमसभागे॥सेवलाडू रुचि रसवारे। जे मुख मेलत सुकुमारे॥ सुतिलाडूहैं सुठि मीठे॥ वे खात न कबहुँ उबीठे॥खीर लाडूलै गए नाए। ते करि बहु जतन बनाए॥गोझावहु पूरन पूरे। भरि भरि कपूररस चूरे॥अरु तैसिय गाल मसूरी। जो खातहि मुख दुख दूरी॥ अरुहैसमि सरस सँवारी। अति खात परमसुखकारी। पापर बरणे नहिं जाही।जेहि देखत अतिसुख पाही॥मालपुवामधुसाने। ते तुरत तपत करि आने॥ सुंदर अतिसरस अँदरसे। तेघृत मधु दधि मिलि सरसे॥ घेवर अति घिरत चभोरे। लै खांड उपर तर वोरे॥ माधुरि अति सरस सजूरी। सदपरसिधरी घृत पूरी॥ जब पूरी सुनी हरि हरख्यो।तब भोजन पर मन करष्यो॥ सुनि तुरत यशोदा ल्याई। अति रुचि समेत हरि खाई॥ बलदाऊ को टेरि बुलाए। यह सुनि हलधर तहां आए॥षटरस परकार मँगाए॥ जेवराणि यशोदा गाए॥ मनमोहन हलधर वीरा। जेंवत रुचिराख्यो सीरा॥शीतलजल लियो मँगाई। भरि झारी यशुमति ल्याई॥अच वत तब नयन जुडाने। दोउ हरषि हरषि मुसकाने॥ हँसिजननी चुरु भरवाए। तब कछु कछु मुख पखराए॥ तबवीरी तनक मुख नाए। अतिलाल अधरहै आए॥ तब सूरदास बलिहारी॥ माँगत कछु झूठनि थारी॥ हरितनक तनक कछुखाए। जूठनि सब भक्तनि पाए॥५९॥ रागधनाश्री पाहुनी करिदै तनक मह्यो। हौं लागी गृहकाज रसोंई यशुमति विनय कह्यो॥ आरि करै मनमोहन मेरो अंचल आनि गह्यो। व्याकुल मथति मथनियां रीती दधिभ्वैं ढरकि रह्यो॥ माखन जात जानि नंदरानी सखिन सम्हारि कह्यो। सूरश्याम मुख निरखि मगन भई दुहुनि सकोच सह्यो॥६०॥आसावरी॥यशुमति जबहि कह्यो अन्हवावन रोइगए हरि लोटतरी। लेत उबटनौ लै आगे दधि कहि लालहि चोटत पोटतरी॥ मैं बलिजाउँ न्हाउ जिनि मोहन कत रोवत बिनकाजेरी। पाछे धरि राखौ छपाइकै उबटन तेल समाजैरी॥ महरि बहुत विनती करि राखति मानत नहीं कन्हाईरी सूरश्याम अतिही बिरुझाने सुर मुनि अंतन पाईरी॥६१॥ अथ चंद्रमस्ताव। कान्हरो॥ ठाढी अजिर यशोदा अपने हरिहि लिये चंदा देखरावत। रोवत कत बलिजाउँ तुम्हारी देखौधौं भरि नयन जुडावत॥ चितरहे तब आपुन शशितन अपने कर लै लै जु बतावत। मीठौ लगत किधौं यह खाटो देखत अति सुंदर मनभावत॥मनमनही हरि बुद्धि करतहैं माताको कहि ताहि मँगावत। लागी भूख चंद मैं खैहौं देहु देहु रिसकरि विरुझावत॥ यशुमति कहत कहा मैं कीनो रोवत मोहन अतिदुखपावत। सूरश्यामके यशुदा बोधति गगन चिरैयां उडत लखावत॥६२॥ कान्हरो। किहिविधि करि कान्है समुझैहौं। मैंही भूलि चंद्र दिखरायो ताहि कहत मोहिंदै मैंखैहौं॥अनहोनी कहुँ होत कन्हैया देखी सुनी नबात। यहतौ आहि खिलौना सबको खान कहत तेहि तात॥ यहै देतं लवनी नित मोको छिन छिन सांझ सवारे। बार बार तुम माखन मांगत देउ कहांते प्यारे देखतरहौ खिलौना चंदा आरि न करौ कन्हाई॥ सूरश्याम लियो महरि यशोदा नंदहि कहत बु झाई॥६३॥ धनाश्री॥ आछे मेरे लालहो ऐसी आरि नकीजै॥मधु मेवा पकवान मिठाई जोइ भावै सोइ लीजै॥ सदमाखन घृत दह्यो सजाये अरु मीठो पयपीजै। पालागों हठ अधिक करो जिनि

अति रिसमें तनु छीजे ॥ आन वतावत आन दिखावत बालक तौ न पतीजे। खिझ खिझ कान्ह खसत कनियांते सुसुकि सुसुकि मन खीजे ॥ जलपुट आनि धरचो आँगनमें मोहननेक तौ लीजे सूरश्याम हठि चंदहि मांगै चंद कहांते दीजे ॥ ६४ ॥ कान्हरो ॥ वार वार यशुमति सुत वोधति आउ चंद तोहिं लाल बुलावै। मधु मेवा पकवान मिठाई आपुन खैहै तोहिं खवावै ॥ हाथहि पर तोहि लीने खेलै नहिं धरणी बैठावै। जलभाजन करले जु उठावति याहीमें तू तनुधरि आवै ॥ जलपुट आनि धरणि पर राख्यो गहि आन्यो वह चन्द्र दिखावै ॥ सूरदास प्रभु हँसि मुसुकाने वार वार दोऊ करनावै ॥ ६५ ॥ रामकली ॥ मेरो माई ऐसोहठी बालगोविन्दा॥अपने करगहि गगन वतावत खेलनको मांगै चंदा॥वासनके जलधरचो यशोदा हरिको आनि दिखावै॥रुदन करत ढूँढ़े नहिं पावत धरणि चन्द कैसे आवै॥ दूध दही पकवान मिठाई जु कछु मांगु मेरे छौना। भौंरा चकई लाल पाटको लेंडुवा मांगु खिलौना॥ दैत्यदलन गजदंत उपारन कंसकेश धरि फंदा। सूरदास वलिजाइ यशोमति सुखके सागर दुखके खंदा॥ ६६ ॥ लेहौंरी मा चंदा चहौंगो ॥ कहा करौं जलपुट भीतरको वाहर ओकि गहौंगो ॥ इहतौ झलमलात झकझोरत कैसेकै जु लहौंगो ॥ वहतो निपट निकटही देखत वरज्योहौं नरहौंगो ॥ तुमरो प्रेम प्रगट मैं जान्यो वौराए न वहौंगो ॥ सूरश्याम कहै करगहि ल्याऊं शशि तनु दाप दहौंगो ॥ ६७ ॥ धनाश्री ॥ लाल यह चंदा लेलैहो ॥ कमलनयन वलिजाइ यशोदा नीचे नेक चितैहो ॥ जाकारण सुन सुत सुंदर वर कीन्हो इतीअनैहो सोई सुधाकर देखि दमोदर या भाजन मेंहैहो ॥ नभते निकट आनि राख्योहै जलपुट जतननजो गैहो ॥ लै अपने कर काढ़ि दमोदर जो भावै सो कैहो ॥ गगनमंडलतेगहि आन्यो है पंछी एक पठैहौं ॥ सूरदास प्रभु इतीवातको कत मेरो लाल हठैहो ॥६८॥ विहागरो ॥तुम मुखदेखि डरतु शशि भारी॥कर कारिके हरि हेरचो चाहत भाजि पताल गयो अपहारी॥वह शशितो कैसेहु नहिं आवत यह ऐसी कछु बुद्धिविचारी। वदन देखि विधु विधिसकात मन नैन कंज कुंडल उजियारी। सुनहु श्याम तुमको शशि डरपत है कहत ए शरन तुम्हारी। सूरश्याम विरुझाने सोए लिए लगाइ छतियाँ महतारी॥६९॥केदारो॥यशुमति लै पलिका पौढावति।मेरो आजु अतिही विरुझानो यह कहि कहि मधुरे सुर गावति॥पौढिगई पुनि हरुये करिकै अंगमोरि तव हरि जमुहाने।करसों ठोंकि सुतहि दुलरावति चटपटाइ वैठे अतुराने॥पौढौ लाल कथा एक कहिहौं अतिमीठी श्रवणनको प्यारी। यह सुनि सूरश्याम मनहरषे पौढ़िगए हँसि देत हुँकारी ॥ ७० ॥ सुन सुत एक कथा कहौं प्यारी। कमलनयन मनआनँद उपज्यो चतुर शिरोमणि देत हुँकारी ॥ नगर एक रमणीक अयोध्या वडे महलजहँ अगम अटारी।वहुत गली पुर वीच।विराजत भांति भांति सव हाटवजारी॥तहां नृपति दशरथ रघुवंशी जाके नारि तीन सुखकारी। कौशल्या कैकयी सुमित्रा तिनके जन्म भए सुतचारी॥चारिपुत्र राजाके प्रगटे तिनमें एक राम व्रतधारी। जनक धनुप व्रत देखि जानकी त्रिभुवनके सव नृपति हँकारी ॥ राजपुत्र दोउ ऋषि लै आए सुनि जनक व्रत तहाँ पगधारी। धनुपतोरि मुखमोरि नृपनको जनक सुता तिनकी वरनारी ॥ पग अँगुठा जव पीर नृपतिके तव कैकयी मुखमेलि निवारी। वचन माँगि नृपसोंतव लीनो रघुपतिके अभिपेक सँवारी ॥ तात वचन सुनि तज्यो राज्यतिन भ्राता सहित घरनि वनचारी। उनके जात पिता तनुत्याग्यो अतिव्याकुल करि जीव विसारी ॥ चित्रकूट गए भरत मिलन जव पगपाँवरी देकरी कृपारी। युवती हेतु कनकमृग मारी राजिवलोचन गर्वप्रहारी॥ रावणहरणकरचो सीताको सुनि करुणामय नींदविसारी। सूरश्याम कर उठे चापको लछिमन देहु

जननि भ्रमभारी ॥७१ ॥विहागरो॥ नंदनंदन तुम सुनहु कहानी। पहिली कथा पुरातन सुन सुते जननी पास सुखवानी॥ रामचंद्र राजा दशरथसुत जनकसुता ताके गृहरानी। कहिपंचतत्त्व अरु पंचवटी वन छांडि चले रजधानी॥ तहां वसत सीता हरलीनो रजनीचर अभिमानी। लछिमन धनुष देहु करि उठि हरि यशुमति सूर डरानी ॥७२॥केदारो॥यशुमति मनमें यहै विचारति। झझकि उठ्यो सोवत हरि अबहीं कछु पढ़ि पढ़ि तनु दोष निवारति॥ खेलतमें कहुँ डीठि लगाई लैलै राई लोनु उतारति। सांझहिते मेरो विरुझान्यो चंदहि देखिकरी अतिआरति॥ वार वार कुलदेव मनावति दोउ करजोरि शिरहिलैधारति। सूरदास यशुमति नंदरानी निरखिवदन त्रयताप विसारति ॥७३॥ नहिन जगाइ सकति सुनिसोवावत सजनी। अपने जान अजहुँ कान्ह मानत हैं रजनी॥ जब जब हौं निकट जाति रहति लागी लोभा। ततुकी गति विसरिजाति निरखत सुखसोभा॥ वचनिको बहुत करति साजति जिय ठाढी। नैननि विचार पराति देखत रुचि वाढी॥ इहिविधि वदनाविंद यशुमति मनभावै। सूरदास सुखकी राशिकहत न वनिआवै॥७३॥विलावल॥जागिये ब्रजराज कुँवर कमल कुसुम फूले। कुमुद वृंद सकुचत भए भ्रंगलता भूले॥ तमचुर खग रौर सुनहु बोलत वनराई॥ राँभति गोखिरकनमें वछराहितधाई। विधुमलीन रविप्रकाश गावत नर नारी। सूरश्याम प्रातउठौ अंबुज करधारी॥ ७४ ॥ रामकली॥ प्रात समय उठि सोवत हरिको वदन उघारयो नंद। रहि न सकत देखनको आतुर नैन निसाकेद्वंद॥ स्वच्छ सेजमें ते मुख निकसत गयो तिमिर मिटि मंद। मानौं मथि सुरसिंधु फेन फाटि दरश दिखाईचंद॥ धायो चतुर चकोर सूर सुनि सब सखि सखा सुछंद॥ रही न सुधि शरीर धीरमति पिवत किरन मकरंद॥ ७५॥ भोरभए निरखत हरिको मुख प्रमुदित यशुमति हरपित नंद। दिनकर किरन नलिन ज्यों विकसत उर उपजत आनंद॥ वदन उघारि निहारत जननी जागहु वलिगई आनंद कंद। मानहु मथत सुर सिंधु फेनफटि दई देखाई पूरन चंद॥ जाको यश ब्रह्मादिक मुनिजन नेति नेति गावत श्रुति छंद। सो गोपाल ब्रजके सुनि सूरज प्रगटे पूरण परमानंद॥ ७६॥ ललित जागिये गुपाल लाल आनँद निधि नंदवाल यशुमति कहै वार वार भोर भयो प्यारे। नैनकमलसे विशाल प्रीति वापिका मराल मदन ललित वदन ऊपर कोटि वारिडारे। उगत अरुनविगत सर्वरी ससंकि किरनिहीन दीन दीपक मलीन छीन दुति समूह तारे॥मनहु ज्ञान घनप्रकाश वीतेसब भवविलास आश त्रास तिमिर तोष तरनि तेजजारे। वोलत खग मुखर निकर मधुर ह्वै प्रतीति सुनहु परम प्राण जीवन धन मेरे तुम वारे। मनौ वेद वंदी मुनि सूत वृंद मागधगण विरद वदत जैजैजैजैतकैट भारे॥ विगसत कमलावलीय चलि प्रफंद चंचरीक गुंजत कलकोमल ध्वनि त्यागि कंज न्यारे। मानौ वैरागपाइ सकल कुलग्रह विहाइ प्रेमवंत फिरत भृत्य गुनत गुन तिहारे॥सुनत वचन प्रियरसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुख कदंम टारे॥ त्यागि भ्रमफंद द्वंद निरखिके मुखाविंद सूरदास अतिअनंद मेटे मदभारे॥ ७७॥ प्रातभयो जागो गोपाल। नवल सुंदरी आई बोलत तुमहि सबै ब्रजवाल॥ प्रगटो भानु मंद उडुपति भयो फूले तरुन तमाल। दरशनको ठाढी ब्रजवनिता ल्याई कुसुम गुंज वनमाल॥ मुखहि धोइ सुंदर बलिहारी करहु कलेऊ मोहन लाल। सूरदास प्रभु आनंदके निधि अंवुजलोचन नयन विशाल॥ ७८॥ ललित॥ जागो जागोहो गोपाल। नाहिन इतो सोइये सुनु सुत प्रातसमय शुचिकाल॥दिन विगसत मनौ कमलको शंप्रति छवि ज्यों मधुपनके माल॥फिरि फिरि निरखि निरखि छिन छिन छिन सब गोपनुके वालतौ

तुमही आपुन उठि देखौ निद्रा नैन विशाल ॥ ज्यों तुम मुहिं न पत्याहु सूरप्रभु सुंदर श्याम तमाल ॥ ७९ ॥ भैरव ॥ उठौ नंदकुमार भयो भिनुसार जगावत नंदकी रानी । झारिके जल वदन पखारौ कहि कहि सारंगपानी ॥ माखन रोटी अरु मधु मेवा जो भावे सो लेउ आनी । सूरश्याम मुख निरखि यशोदा मनही मनहि सिहानी ॥ ८० ॥ बिलावल ॥ नंदके लाल उठे जब सोइ । निरखि मुखारविंदकी सोभा कहि काके मन धीरज होइ ॥ मुनि मन हरन हरन युवतीके रतिमान जाइ सब खोइ । ईषदहास दशन द्युति दामिनि मनि गनि ओपि धरे जनुपोइ ॥ नागर नवल कुंवँर वर सुंदर मारग जात लेत मनगोइ । सूरश्याम मन हरण मनोहर गोकुल वसिमोहे सब लोइ ॥ ८१ ॥ अथ कलेवाभोजनसमय ॥ भैरव ॥ उठिये श्याम कलेऊ कीजे । मन मोहन मुख निरखत जीजै॥ खारिक दाख खोपरा खीरा । केरा आम ऊखरस सीरा ॥ श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी । सफरी चिरुआ अरु नय वाणी॥ घेवर फेनी और सुहारी। खोवा सहित खाहु बलिहारी ॥ रचि पिराक लाडू दधि आनों । तुमको भावत पुरी सधानों ॥ तब तमोर रुचि तुमहिं खवावों। सूरदास पनवारो पावों ॥ ८२ ॥ कमलनयन हरि करौ कलेवा । माखन रोटी सद्यजम्यो दधि भाँति भाँतिके मेवा॥खारिक दाख चिरौंजी किसिमिस मिश्री उज्ज्वल गरी बदाम॥सफरी सेव छुहारे पिस्ता जे तरबूजा नाम॥ अरु मेवा बहु भांति भांतिहैं पटरसके मिष्टान॥सूरदास प्रभु करत कलेऊ रीझे श्याम सुजान ॥ ८३ ॥ अथ खेलन समय ॥ रामकली ॥ खेलत श्याम ग्वालन संग । सुबल हलधर अरु सुदामा करत नानारंग॥हाथ तारीदेत भाजत सबै करि करि होड । बरजै हलधर श्याम तुमजिनि चोट लगिहै गोड ॥ तब कह्यो मैं दौरि जानत बहुतबल मोगात।मेरी जोरीहै सुदामा हाथ मारे जात॥ बोलि तबैउठे श्री सुदामा जाहु तारी मारि । आगे हरि पाछे सुदामा धर्यो श्याम हंकारि जानिकै मैं रह्यो ठाढ़ो छुवत कहा जु मोहिं । सूर हरि खीझत सखासों मनहिं कीनो कोहि॥ ८४ ॥ ॥ राग गौरी ॥ सखा कहतहैं श्याम खिसाने । आपुहि आपु ललकिभये ठाढे अब तुम कहा रिसाने आपुन हारि सखासों झगरत यह कहि दिये पठाई॥ सूरश्याम उठिचले रोइकै जननी पूंछति धाइ ॥ ८५ ॥ मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो । मोसों कहत मोलको लीनो तू यशुमति कब जायो ॥ कहा कहौं एहि रिसके मारे खेलन हौं नहिंजातु । पुनि पुनि कहत कौन है माता कोहै तुमरोतातु ॥ गोरेनंद यशोदा गोरी तुमकत श्याम शरीर । चुटुकी दैदै हँसत ग्वाल सब सिखै देत बलबीर ॥ तू मोहीको मारन सीखी दाउहि कबहुँ न खीझै। मोहनको मुख रिस समेतलखि यशुमति सुनि सुनि रीझै॥सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई जनमतहीको धूत । सूरश्याम मो गोधनकीसौं हौं माता तू पूत ॥ ॥ राग नट ॥ मोहन मान मनायो मेरो। मैं बलिहारी नंदनंदनकी नेक इतै हँसि हेरौ ॥ कारो कहि कहि मोहिं खिझावत बरजत खरो अनेरो ॥ आनंद विमल शशिते तनु सुंदर कहाकहै बलिचेरो न्यारोजोपैहठहांकलै अपनो न्यारी गइयां तेरी ॥ मेरो सुत सरदार सबनको इहुते कान्है हीभेरो। बनमें जाइ करौ कौतूहल इह अपनोहै खेरो। सूरदास द्वारे गावतहै विमल विमल यशतेरो ॥ ८७ ॥ रागगौरी ॥ खेलन अब मेरी जात बलैया। जबहिं मोहिं देखत लरिकन सँग तबहिं खिझत बलभैया॥ मोसों कहत तात वसुदेवको देवकी तेरी मैया। मोल लियो कछु देवसुदेव को करि करि जतन बटैया ॥ अब बाबा कहि कहत नंद सों यशुमतिको कहै मैया। ऐसेही कहि सब मोहिं खिझावत तब उठि चलो खिसैया ॥ पाछे नंद सुनतहैं ठाढे हँसत हँसत उर लैया। सूर नंद बलि रामहि धिर्यो सुनि मनहरप कन्हैया ॥ ८८॥ रामकली ॥ खेलन चलिये बाल गोविंद । सखा प्रिय द्वारे बुला

वत घोप बालक वृंद ॥ तृषितहै सब दरश कारन चतुर चातकदास। बरपि छबि नव वारि धरही हरहु लोचन प्यास ॥ विनय वचन सुने कृपानिधि चले मनोहर चाल । ललित लघु लघु चरन कर उर वाहु नयन विशाल ॥ अजिरपद प्रतिबिंब राजत चलत उपमा पुंज । प्रतिचरण मानहु हेमवसुधा देत आसन कंज। सूर प्रभुकी निरखि सोभा रहे सुर अवलोकि॥ शरद चंद चकोर मानौं रहे थकित विलोकि॥८९॥ धनाश्री ॥ खेलनको हरि दूरिगयो। संग संग धावत डोलत हैं कहां धौं बहुत अवेर भयो ॥ पलकओट भावत नाहिं मोको कहा कहौं तोको बात । नंदहि तात तात कह बोलत मोहिं कहतहैं मात ॥ इतनी कहत श्यामघन आए ग्वाल सखा सब चीन्हें। दौरिजाइ उरलाइ सूर प्रभु हरषि यशोदा लीन्हें॥९०॥ विहागरो॥ खेलन दूरि जात कित कान्हा। आजु सुन्यो वन हाऊ आयो तुम नहिं जानत नान्हा ॥ इक लरिका अबहीं भजिआयो बोलि बुझावहु ताहि। कान तोर वह लेत सबनके लरिका जानत जाहि ॥ चलहु वेग सवेरे जैये भजि अपने अपने धाम। सूरदास यह बात सुनतही बोलि लिए बलराम॥९१॥ जैतश्री ॥ दूरिखेलनजनि जाहु लला वन मेरे हाऊ आयोहै। तब हँसि बोले कान्हरि मैया इनको किनहि पठायोहै॥अब डरपत सुनि सुनि ये बातैं कहत हँसत बलदाऊ। सतरसातल शेष सनरहे तबकी सुरत भुलाऊ॥चारिवेद लेगयो शंखासुर जलमें रहे लुकाऊ। मीनरूप धरिकै जब मारचो तबहिं रहे कहां हाऊ ॥ मथि समुद्र सुर असुरनके हित मंदर जलधि धसाऊ। कमठरूप धरि धरनि पीठपर सुखपायो सहिराऊ जब हिरणाक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमें अति गरवाऊ। धरिवाराहरूप रिपुमारचोलै क्षितिदंत अगाऊ विकटरूप अवतार धरचो जबसो प्रहलादहि नाऊ।धरि नरसिंह जब असुर विदारचो तहां नदेख्यो हाऊ॥बावनरूप धरचो बलि छलिकै तीनपरग वसुधाऊ। श्रमजल ब्रह्म कमंडलु राख्यो दरशचरण परसाऊ ॥ मारचो मुनि विनही अपराधहि कामधेनु लेआऊ ॥ इकइस वार निछत्र तव कीनी तहां न देखेहाऊ ॥ शूर्पनखा तारका मारी हिमकुल सहित सोवहाऊ ॥ सिंधुसेतु बांध्यो पषाणसों तहाँ न देखेहाऊ ॥ राम रूप रावन जबमारचो दशशिर बीस भुजाऊ। लंकजराय छार जबकीनी तहाँ न देखे हाऊ। नृपति भीमसों युद्ध परस्पर तहाँ वह भाव बताऊ। तुरतचीरद्वै टूककियो धरि ऐसे त्रिभुवन राऊ। यमुना के तट धेनु चरावत तहाँ सबनवन झाऊ॥ पैठिपताल व्यालगहिनाथ्यो तहाँ न देखे हाऊ ॥ नृपति भीमसों युद्ध परस्पर तब वह भाव बताऊ।तुरत चीर द्वैटूक कियो धरि ऐसे त्रिभुवन राऊ ॥ माटीके मिस वदन विगारचो जब जननी डरपाऊं। मुखभीतर त्रैलोक दिखायो तवउ प्रतीत नआऊ ॥ भक्तहेतु अवतार धरे सब असुरन मारि वहाऊ। सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नितगाऊ ॥९२॥ रामकली॥ यशुमति कान्हहि यहै सिखावति। सुनहु श्यामअब बडे भए तुम चूंची पिवन छुडावति ॥ ब्रजलरिका तोहिं पीवत देखें हँसत लाज नहिं आवति। जैहैं विगरि दांतहैं आछे ताते कहि समुझावति ॥ अजहुँ छांडि कह्योकरि मेरो ऐसी बातन भावति सूरश्याम यह सुनि मुसिकाने अंचल मुखहि लुकावति ॥ ९३ ॥ नंद बुलावतहैं गोपाल । आवहु वेग वलैया लेहौं सुंदर नैन विसाल ॥ परस्यो थार धरचो मग चितवत वेगि चलौ तुम लाल। भात सिरात तात दुखपावत क्योंनचलौ ततकाल॥ हौं बलिजाऊं नान्हे पाइनि की दौरि दिखावहु वाल। छाँडिदेहु तुम ललित अटपटी यहगति मंद मराल ॥ सो राजा जो आगमदौरै सूर सुभौन उताल। जो जैहै बलदेव पहिलेही तौ हँसिहैं सब ग्वाल ॥९४॥ सारंग॥ जेंवत कान्ह नंद इक ठौरे। कछुक खात लपटात दुहूंकर वालकहैं अतिभोरे ॥ वडोकौर मेलत मुख भीतर मिरिच दशन

टकटोरे । तीक्षणलगी नयन भरि आए रोवत वाहर दौरे ॥ फूंकति वदन रोहिणी ठाढी लिये लगाइ अकोरे । सूरश्याम को मधुर कौरदै कीन्हे तात निहोरे ॥ ९५ ॥ राग नट ॥ हरिके वालचरित्र अनूप निरखिरही व्रजनारी एकटक अंग अंग प्रतिरूप ॥ विथुरी अलकैं रही वदनपर विनही विपिन सुभाइ । देखि खंजन चंदके वश मधुप करत सहाइ ॥ सुलछ लोचन चारु नासा परमरुचिर वनाइ युगल खंजन लरत अवनित वीच कियो वनाइ ॥ अरुण अधरनि दशन भाई कहौं उपमा थोरि । नीलपट विच मोतिमानौं धरे चंदन वौरि ॥ सुभगवाल मुकुंदकी छवि वरणिकापै जाइ । भ्रुकुटि पर मसि विंदु सोहै सकै शूर नगाइ ॥ ९६ ॥ कान्हरो ॥ सांझभई घर आवहु प्यारे । दौरत कहां चोट लगिहै कहुँ पुनि खेलौगे होत सकारे ॥ आपुहि जाइ वांह गहि ल्याई खेह रही लपटाई । धूरि झारि तातो जल ल्याई तेल परसि अन्हवाई ॥ सरसवसन तनु पोंछि श्यामको भीतर गई लिवाय । सूरश्याम कछु करो वियारू पुनि राख्यो पौढ़ाइ ॥ ९७ ॥ विहागरो ॥ कमल नयन कछु करौ वियारी । लुचुई लपसी सद्य जलेवी सोइ जेवहु जो लगै पियारी ॥ घेवर मालपुवा मुतिलाडू सुधर सजूरीसरस सवारी ॥ दूध वरा उत्तम दधिवाटी दालमसूरीकी रुचिन्यारी ॥ आछो दूध औटि धौरीको मैं ल्याई रोहिणि महतारी । सूरदास वलराम श्याम दोउ जेंवैहैं जननि जाहि वलिहारी ॥ ९८ ॥ विहागरो ॥ वलमोहन दोउ करत वियारी । प्रेम सहित दोउ सुतनि जिमावतिं रोहिणि अरु यशुमति महतारी ॥ दोऊ भैया मिलि खात एकसंग रतनजटित कंचनकी थारी ॥ आलससों कर कौर उठावत नैननि नींद झमकि रही भारी ॥ दोउमाता निरखत आलससों छवि पर तन मन डारतिवारी ॥ वारवार जमुहात सूर प्रभु इह उपमा कवि कहै कहारी ॥ ९९ ॥ केदारो ॥ कीजै पयपान ललारे ल्याईहै दूध यशुमति मैयर कनक कटोरा भरिलीजे यह पीजै अति सुखदीजै कन्हैया ॥ आछो मैं औट्यो सुठि नीको अरु मिठाई रुचिकारे अचवत क्योंन नन्हैया ॥ वहुत जतन करि करि राख्यो व्रजराज लडैते तुम कारण वल भैया ॥ फूंकि फूंकि जननी पय प्यावति सुख पावति आनंद उर न समैया । सूरदास प्रभु पय पीवत वलराम श्याम दोऊ जननी लेत वलैया ॥ २०० ॥ वल मोहन दोऊ अलसाने ॥ कछुक खाइ दूधलै अचयो मुखजंभात जननी जियजाने ॥ उठहु लाल कहि मुख पखरायो तुमकोलै पौढाऊं ॥ तुम सोवहु मैं तुमहिं सुवाऊं कछु मधुरेरसु गाऊं ॥ तुरतजाय पौढ़े दोनो भैया सोवत आई नींद ॥ सूरदास यशुमति सुखपावति पौढ़े वालगोविंद ॥ १ ॥ माखन वाल गोपालहि भावै । भूखेछिनु नरहत मनमोहन ताहि वदौ जो गह- रु लगावै ॥ थानि मथानी दह्यो विलोये जौलगि लाल नउठन नपावै ॥ जागतही उठि रारि करत अति नहिं मानै जोइंदु मनावै ॥ हौं यह जानति वानि श्यामकी अंखियां मीचैं वदन चलावै ॥ नंदसुवनकी लागै वलैया यह जूठनि कछु सूरज पावै ॥ २ ॥ विलावल ॥ भोर भयो मेरे लाडिले जागो कुँवर कन्हाई ॥ स खाद्वार ठाढे सवे खेलो यदुराई ॥ मोको मुख देखरावहु त्रयताप निहारहु । तुव मुखचंद्रचकोरनैनमधु पानकरावहु ॥ तव हरि पट मुख दूरिकै भक्तन सुखकारी । हँसतउठे प्रभु सेजते सूरज वलिहारी ॥ ३ ॥ विलावल ॥ भोरभयो जागो नंदनंदन ॥ संग सखा ठाढ़े जगवंदन ॥ सुरभी पयहित वच्छपियावै ॥ पंछी तरुत जि दुहुँदिशधावै ॥ अरुन गगन तमचुरनि पुकारे । शिथिल धनुकरति पति गहि डारे ॥ निशिनिघटी रवि रथ रुचि साजी । चंद मलिन चकई रति राजी ॥ कुमुदिनि सकुची वारिज फूले । गुंजत फिरत अलीगन झूले ॥ दरशन देहु मुदित नर नारी । सूरज प्रभु दिन देव मुरारी ॥ ४ ॥ राग नट ॥ खेलत श्याम अपने रंग । नंदलाल निहारि सोभा निरखि थकित अनंग ॥ चरणकी छवि निरखि डरप्यो अरुन गगन छपाइ । जानु रंभाकी सवै छवि निदरि लई छडाइ ॥ युगल जंघ निखंभ रंभा नहिन

सम सारि ताहि ॥ कटि निरखि केहरि लजाने रहे वन घन चाहि। हृदय हरि नख अति बिराजति छवि न वरनी जाइ॥मनौं बालक वारिधर नव चंद्र लई छपाइ॥ मुकुतमाल विसाल उरपर कछु कहौं उपमाइ। मनौं तारागगन पूरित गगनरह्यो छपाइ। अधर अरुन अनूप नासा निरखि जन सुखदाइ मनो शुकफल विंव कारन लेन बैठो आइ॥ कुटिल अलक बिना विपिनके मनौं अलि शशि जाल। सूर प्रभुकी ललित सोभा निरखिरहि ब्रजवाल ॥५॥ सारंग॥ न्हात नंद सुधि करी श्यामकी ल्यावहु वोलि कान्ह वलराम। खेलत कान्ह वार बडि लागी ब्रज भीतर काहूके धाम ॥ मेरे संग आइ दोउ बैठे उन विनु भोजन कौने काम। यशुमति सुनत चली आतुरह्वै ब्रज घर घर टेरत लैनाम॥ आजु अवेर भई कहुँ खेलत वोलि लेहु हरिको कोउ वाम। ढूंढिफिरी नहिं पावत हरिको अति अकुलानी आवतधाम॥ वारवार पछिताति यशोदा वासर वीतिगए युगयाम। सूरश्यामको कहूँ नपावत देखे वहु बालक इकठाम ॥ ६ ॥ सारंग ॥ कोउ माई वोलि लेहु गोपालहि। मैं अपनेको पंथ निहारति खेलत वेरभई नंदलालहि॥ हेरत वेर वडी भई मोकहुँ नहिं पावत घनश्याम॥तमालहि। सिध जेवन सिरात नंद बैठे ल्यावहु वोलि कान्ह ततकालहि। भोजन करहिंनंद संग मिलि के भूखलगी ह्वैहै मेरे बालहि॥सूरश्याम मग जोवति यशोदा आइगए सुनि वचन रसालहि॥७॥राग नटनारायण॥हरिको टेरतहै नँदरानी।बहुत अवार कतहुँ खेलत भइ कहां रहे मेरे सारंगपानी॥सुनतहि टेरदौरि तहाँ आए कबके निकसे लाल। जेंवत नहीं नंद जू तुम विनु वेगि चलो गोपाल॥ श्यामहि ल्याई महरि यशोदा तुरतहि पाँइपखारे। सूरदास प्रभु संग नंदके वैठेहैं दोउ वारे ॥ ८ ॥ सारंग ॥ जेंवत श्याम नंदकी कनिया। कछुक खात कछु धरणि गिरावत छवि निरखत नंदरनियां॥ वरी वरा·वेसन वहु भांतिन व्यंजन विविध अनगनियां। डारतखात लेत अपने कर रुचि मानत दधि दनियां॥ मिश्री दधि माखन मिश्रित करि मुख नावत छवि धनियां। आपुन खात नंदमुख नावत सो सुख कहत नवनियां॥ जो रसनंद यशोदा विलसत सो नाहिं तिहूं भुवनियां। भोजन करि नंद अचवन कियो मांगत सूर जुठनियां॥ ९ ॥ कान्हरो ॥ वोलि लेहु हलधर भैया को। मेरे आगे खेल करौ कछु नैननि सुख दीजै मैयाको॥ मैंमूंदौं हरि आंखि तुम्हारी वालक रहे लुकाई। हरपि श्याम सब सखा वुलाए खेलो आंखि मुँदाई॥ हलधर कहै आंखिको मूँदे हरि कह्यो जननी यशोदा। सूर श्याम लिए जननी खेलावति हर्ष सहित मन मोदा॥ १० ॥ गौरी ॥ हरि तव आपनि आंखि मुदाई सखा सहित बलराम छपाने जहां तहां गए भगाई॥ कान लागि कहेउ जननी यशोदा वा घर मैं बलराम। वलदाऊको आवन देहौं श्रीदामासोंहै काम॥ दौरि दौरि वालक सब आवत छुवत महरिके गात।सब आए रहे सुवल श्रीदामा हारेअवके तात॥सोर पारि हरि सुवलहि धाए गह्यो श्रीदामा जाइ। दैदै सौंहै नंद वबा की जननी पैलैआइ॥ हँसि हँसि तारी देत सखा सब भए श्रीदामाचोर। सूरदास हँसि कहति यशोदा जीत्याहै सुतमोर॥ ११ ॥ केदारा ॥ चलौ लाल कछु करौ वियारी। रुचि नाहीं काहू पर मेरे तू काहि भोजन करयो कहारी॥ वेसन मिलै उरस मैदासों अति कोमल पूरीहै भारी। जेवहु श्याम मोहिं सुख दीजै ताते करी तुमहि पियारी॥ निंवुवा चूरन आंव अथानो और करौंदनकी रुचिन्यारी। वार वार तूँ कहति यशोदा काहि ल्याए रोहिणि महतारी॥ जननी सुनत तुरतलै आई तनक तनक धरि कंचन थारी। सूरश्याम कछु कछु लैखायो जल अचयो अरु वदन पखारी॥ १२ ॥ पौढिए लालमै रचि सेज विछाई। अति उज्ज्वल है सेज तुम्हारी सोवत सुखदाई॥खेलत तुम निशि अधिकगई सुत नैननि नींद झमाई। वदन जँभात अंगऐंडावत जननी

पलोटत पाँई । मधुरे सुर गावत केदारो सुनत श्याम चितलाई ॥ सूरश्याम प्रभु नंदसुवनको नीदगई तब आई ॥ १३ ॥ राग सारंग ॥ खेलन जाहु वाल सब टेरत ॥ यह सुनि कान्ह भए अति आतुर द्वारे तन फिरि हेरत ॥वार वार हरि मातहि कहि कहि मेरी चौगान कहांहै॥ दधि मथनीके पाछे देखो लै मैं धरी तहाँहै। लै चौगान वटाकर आगे प्रभु आए जब वाहर। सूरश्याम पूंछत सब ग्वालन खेलैंगे केहि ठाहर ॥ १४ ॥ खेलत वनै घोप निकास । सुनहु श्याम तुम चतुर शिरोमणि इहांहै घरपास ॥ कान्ह हलधर वीर दोऊ भुजावल अतिजोर । सुवल श्रीदामा और सुदामा वै भए इक ओर ॥ और सखा वटाइ लीन्हे गोप वालक वृंद । चले ब्रजकी खोरि खेलन अति उमँग नंदनंद ॥ वटा धरणी डार दोनो लेचले ढरकाइ । आपु अपनी घात निरखत खेल जम्यो वनाइ॥सखा जीतत श्याम जाने तव करी कछु पेल । सूरदास तव कहत सुदामा कौन ऐसो खेल ॥ १५ ॥ खेलतमें को काको गोसैंयां । हरि हारे जीते श्रीदामा वरवसही कत करत रिसैयां ॥ जाति पांति हमते कछु नाहिन वसत तुम्हारी छहियां । अति अधिकार जनावत याते अधिक तुम्हारेहैं कछु गइयां ॥ रुहठि करै तासों को खेलै रहे पौढि जहां तहां सब ग्वैयां सूरदास प्रभु खेलोई चाहत दाँव दयो करि नंद दोहैयां ॥ १६ ॥ कान्हरो ॥ आवहु कान्ह सांझकी विरियाँ गाइन मांझ भएहो ठाढ़े कहत जननि यह वड़ी कुवेरियां ॥ लरिकाई कहुँ नेक न छांड़त सोइ रहो सुथरी सेजरियां। आए हरि यह वात सुनतही धाइ लिये यशुमति महतरियां ॥ लै पौढ़ी आंगनही सुतको छिटकि रही आछी उजियरियां। सूरदास कछु कहत कहतही वसकरि लिए आइ नीदरियां ॥ ॥ १७ ॥ आँगनमे हरि सोइ गयेरी । दोउजननी मिलिकै हरुये करि सेज सहित तव भवन लियेरी ॥ नेकनहीं घरमें वैठतहै खेलहिके अव रंग रएरी ॥ इहिविधि श्याम कवहुँ नहिं सोए वहुत नीदके वशहि भएरी। कहत रोहिणी सोवन देहु न खेलत दौरत हारि गएरी। सूरदास प्रभुको मुख निरखत यह छवि नित नित होत नएरी ॥१८॥ अथ ब्राह्मणको प्रस्ताव॥ धनाश्री ॥ महरानेते पांडे आयो ॥ ब्रज घर घर बूझत नंदरावर पुत्र भयो सुनिकै उठि धायो ॥ पहुँच्यो आइ नंदके द्वारे यशुमति देखि अनंद वढायो।पाँय धोइ भीतर वैठायो भोजनको निज भवन लिपायो । जो भावै सोभोजन कीजै विप्र मनहि अति हर्प वढ़ायो । वडी वयस विधि भयो दाहिनो धनि यशुमति ऐसो सुत जायो ॥ धेनु दुहाइ दूध लैआई पांडे रुचिकै खीर चढ़ायो। घृत मिष्टान खीर मिश्रित करि परुसि कृष्ण हित ध्यान लगायो। नैन उघारि विप्र जो देखै खात कन्हैया देखन पायो । देखो आइ यशोदा सुत कृत सिद्ध पाक इहि आइ जुठायो ॥ महरि विनय दोऊ कर जोरे घृत मिष्टान पय वहुत मँगायो । सूर श्याम कत करत अचगरी वारवार ब्राह्मणहि खिझायो ॥ १९ ॥ रामकली॥ पांडे नहिं भोग लगावन पावै । कारि कारि पाक जवै अर्पतहै तवहिं तवहिं छैआवै ॥ इच्छा करि मैं ब्राह्मण न्योत्यौं तू गोपाल खिझावै । वह अपने ठाकुरहि जेंवावत तू ऐसे उठि धावै ॥ जननी दोप देहु जनि मोको करि विधान वहु ध्यावै । नैन मूंदि कर जोरि नामलै वारहि वार वुलावै ॥ कह अंतर क्यों होइ भक्तको जो मेरे मन भावै । सूरदास वलिहौं ताकी जो जन्म पाइ यश गावै ॥ २० ॥ विलावल ॥ सफल जन्म प्रभु आजु भयो । धनि गोकुल धनि नंद यशोदा जाके हरि अवतार लयो ॥ प्रगट भयो अव पुण्य सुकृत फल दीनवंधु मोहिं दरशदियो । वार वार नंदके आंगन लोटत द्विज आनंद भयो ॥ मैं अपराध कियो विन जाने को जानै केहिं भेपजयो ॥ सूरदास प्रभु भक्त हेत वश यशुमति हित अवतार लयो२१ ॥ रागधनाश्री ॥ अहो नाथ जेई जेई तेरे शरण आए तेई तेई भए पावन । महापतित कुलतारन एक नाम

अघ जारन कारन दुख विसरावन॥ मोते कोहो अनाथ दरशनते भयो सनाथ देखत नैन जुडावन। भक्त हेत देह धरण पुहुमीको भार हरण जन्म जन्म जन मुकतावन॥ अशरन शरन दीनबंधु यशुमति सुखकारन देह धरावन। हितके चितकी मानत सबके जियकी जानत सूरदास प्रभु मनभावन॥ २२॥ बिलावल॥ मैया करिये कृपाल प्रतिपाल संसार उदधि जंजालते पारपारं। काहूके ब्रह्मा काहूके महेश काहूके गणेश प्रभु मेरेतो तुमहि आधारं।दीनदयालु कृपा करि मोको यह कहि कहि लोटत वार वारं॥ सूरश्याम अंतर्यामी स्वामीहो जगतके कहा कहौं करो निरवारं॥२३॥ अथमाटीकोप्रसंग॥ बिलावल॥ खेलत श्याम पौरिके बाहर ब्रज लरिका सोहत सँग जोरी। तैसेई आपु तैसेई लरिका सब अति अज्ञ सबनिमति थोरी॥ गावत हांक देत किलकारत दुरि देखत नंदरानी। अति पुलकित गद गद मृदुवानी मन मन महरि सिहानी॥ माटी लै मुख मोलि दई हरि तबहिं यशोदा जानी। साटी लिये दौरि भुज पकरे श्याम लंगर इँढानी॥ लरिकनको तुम सब दिन झुठवत मोसों कहा कहोगे। मैया मैं माटी नहिं खाई मुख देखै निवहोगे॥ वदन उघारि देखायो त्रिभुवन वन घन नदी सुमेर। नभ शशि रवि मुख भीतरहै सब सागर धरनी फेर॥ यह देखत जननी जिय व्याकुल बालक मुखका आहि। नैन उघारि वदन हरि मूँद्यो माता मन अवगाहि॥ झूठेहि लोग लगावत मोको माटी मोहिं न सुहावै। सूरदास तब कहति यशोदा ब्रजलोगन इह भावै॥ २४॥ धनाश्री॥ मोहन काहेन उगिलो माटी। वार वार अनरुचि उपजावत महरि हाथ लिये साटी। महतारीको कह्यो न मानत कपट चतुरई ठाटी। वदन पसारि दिखाइ आपनो नाटककी परिपाटी॥ वडी वार भई लोचन उघरे भ्रम यामनकी फाटी। सूरदास नँदरानी भ्रमित भई कहत न मीठी खाटी॥२५॥ रामकली॥ मोदेखत यशुमति तेरे ढोटा अवहीं माटी खाई। इह सुनिकै रिस करि उठि धाई वांह पकरि लैआई॥ इक करसों भुज गहि गाढे करि इक कर लीने साटी। मारतिहौं तोहिं अवहि कन्हैया वेग न उगलो माटी। ब्रज लरिका सव तेरे आगे झूठी कहत वनाई। मेरे कहे नहीं तू मानत दिखरावो मुख वाई॥ अखिल ब्रह्मांड खंडकी महिमा देखरायो मुख माही। सिंधु सुमेरु नदी वन पर्वत चकृत भई मनमाही॥ करते साँटि गिरत नहिं जानी भुजा छांडि अकुलानी। सूर कहै यशुमति मुख मूँदहु वालि गई सारगपानी॥ २६॥ राग सारंग॥ नंदहि कहति यशोदा रानी। माटीके मिस मुख देखरायो तिहूंलोक रजधानी॥ स्वर्ग पताल धरनि वन पर्वत वदन मांझ रहे आनी। नदी सुमेरु देखि चकृतभई याकी अकथ कहानी॥ चितै रहे तव नंद युवति मुख मन मन करत विनानी। सूरदास तब कहति यशोदा गर्ग कही यह वानी॥ २७॥ बिलावल॥ कहत नंद यशुमति सुनु वौरी। नाजानिये कहा तैं देख्यो मेरे कान्ह हिलावति ठौरी॥ पांच वर्षको मेरो कन्हैया अचरज तेरी वात। वेही काज सांटि लै धावति ता पाछे विललात॥ कुशल रहैं वलराम श्याम दोउ खेलत खात अन्हात। सूरश्यामको कहा लगावति वालक कोमल गात॥२८॥ बिलावल॥ देखौरे यशुमति वौरानी। घर घर हाथ दियावत डोलत गोद लिये गोपाल विनानी॥ जानत नाहिं जगत गुरुमाधो यहि आये आपदा नशानी। जाको नाव शक्ति पुनि ताकी ताही देत मंत्र पढि पानी॥ अखिल ब्रह्मांड उदर गति जाकी जाकी ज्योति जल थलहि समानी। सूरसकल सांची मोहिं लागत जो कछु कही मुख गर्ग कहानी॥२९॥ धनाश्री॥ गोपालराइहो चरनन्हि हो काटी हम अवला रिस वांचि न जानी वहुत लागि गइ साटी॥ वारौं करजु कठिन अति कोमल जरहु नयन निज डाटी। मधु मेवा पकवान छांडिकै काहे खात लाल तुम माटी॥ सिगरोई दूध पियो

मेरे मोहन बलहि न देवहु बाटी । सूरदास नंदलेहु दोहनी दुहहु लालकी नाटी ।
॥ अथ माखनचोरी प्रथम ॥ गारी ॥ मैयारी मोहिं माखन भावै । जो मेवा पकवान मिठाई
मोहिं नहीं रुचि आवै ॥ व्रज युवती इक पाछे ठाढ़ी सुनति श्यामकी बात । मन
मनं कहति कबहुँ मेरे घर देखौं माखन खात ॥ बैठे जाइ मथनियांके ढिग मैं तब रही छिपानी ।
सूरदास प्रभु अंतर्यामी ग्वालि मनहिंकी जानी ॥ ३१ ॥ गौरी ॥ गए श्याम तिहि ग्वालिनिके घर ।
देख्यो जाइ द्वार नहिं कोई इत उत चितै चले घरभीतर ॥ हरिं आवत गोंपी तब जान्यो आपुन
रही छिपाइ । सूने सदन मथनियां के ढिग बैठिरहे अरगाइ ॥ माखन भरी कमोरी देखी लैलै लागे
खान। चितै रहत मणि खंभ छाँहतन तासों करत न आन ॥ प्रथम आजु मैं चोरी आयों भल्यो बन्योहै
संगु । आपुनखात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहत का रंगु ॥ जो चाहो सब देउँ कमोरी अति मीठो
कत डारत । तुमहि देखि मैं अति सुखपायो तुम जिय कहा विचारत ॥ सुनि सुनि बातैं श्यामसुं
दरकी उमँगि हंसी ब्रजनारि । सूरदास प्रभु निरखि ग्वालि मुख तब भजि चले मुरारि ॥ ३२ ॥
फूली फिरति ग्वालि मनमेरी । पूछति सखी परस्पर बातैं पायो पर्यो कछुकहै तेरी॥पुलकित रोम
रोम गद गद मुख वाणी कहत न आवै । सो कहा आहि सो सखीरी मोको क्यों न सुनावै । तनु
न्यारो जो एक हमारो हम तुम एकै रूप । सूरदास कहै ग्वालि सखीसों देख्यो रूप अनूप ॥
॥राग गजूरी ॥आजु सखी मणि खंभ निकट हरि जहां गोरसको गोरी । निज प्रतिबिंब सिखावत ज्यों
शिशु प्रगट करै जिनि चोरी ॥ आध विभाग आजुते हम तुम भली बनीहै जोरी । माखन खाहु
कितहि डारतहौ छांड़ि देहु मति भोरी॥हिसा न लेहु सबै चाहतहौ इहै बात है थोरी॥मीठो अधिक
परम रुचि लागै देहौं काढ़ि कमोरी॥प्रेम उमँगि धीरजु न रह्यो तब प्रगट हँसी मुख मोरी॥सूरदास
प्रभु सकुचि निरखि मुख भजे कुंज गहि खोरी ॥ ३३ ॥ बिलावल ॥ प्रथम करी हरि माखन चोरी ।
ग्वालिनि मन इच्छा करि पूरण आपु भजे हरि ब्रजकी खोरी ॥ मनमें इहै विचार करत हरि ब्रज
घर घर सब गाऊं । गोकुल जन्म लियो सुखकारण सबकर माखन खाऊं । बाल रूप
यशुमति मोहिं जाने गोपिन मिलि सुख भोगू ॥ सूरदास प्रभु कहत प्रेमसों येरोरे ब्रज लोगू
॥ ३४ ॥ रामकली ॥ करत हरि ग्वालन संग विचार । चोरि माखन खाहु सब मिलि करौ बालविहार
यह सुनत सब सखाहर्ष भली कही कन्हाई । हँसत परस्पर देत तारी सौंह करि नंदराई ॥ कहां
तुम यह बुद्धि पाई श्याम चतुर सुजान । सूर प्रभु मिलि ग्वाल बालक करतहैं अनुमान ॥ ३५ ॥
गौरी ॥ सखा सहित गए माखन चोरी । देख्यो श्याम गवाक्ष पंथह्वै गोपी एक मथति दधि भोरी॥
हेरि मथानी धरी माटते माखन होंउतरात । आपुनगई कमोरी मांगन हरि पाई ह्वैघात ॥
पैठे सखनसहित घरसूने माखन दधि सब खाई । छूँछीछांडि मटुकिया दधिकी हँसि सब बाहिर
आई ॥ आइ गई कर लिये मटुकिया घरते निकरे ग्वाल । माखन कर दधि मुख लपटानो देखि
रही नंदलाल ॥ काहे आजु ब्रज बालक संगलै माखन कर दधि मुख लपटानो। देखत ते उठि भजे
सखा एक इहि घर आइ पिछानो ॥ भुज गहि लियो कान्ह इक बालक निकरे ब्रजकी खोरि ।
सूरदास प्रभु ठगिरही ग्वालिनि मनु हरि लियो अजोरि ॥ ३६ ॥ गौरी ॥ चकित भई ग्वालिनितन
हेर्यो । माखन छांडि गई मथि बैसहि तबते कियो अवेर्यो ॥ देखौजाइ मटुकियारीती मैं राख्यौ
कहुँ हेरी । चकृत भई ग्वालिनि मन अपनें ढूँढति घर फिरि फेरी ॥ देखति पुनि पुनि घरके बासन
मनहरि लियो गोपाल । सूरदास रसभरी ग्वालिनी जानै हरिके ख्याल ॥ ३७॥ बिलावल ॥ ब्रज घर

घर प्रगटी यह बात। दधि माखन चोरीके लैहरि ग्वाल सखा संग खात॥व्रजवनिता यह सुनि मन हर्षीं सदन हमारे आवैं। माखन खात अचानक पावैं भुज भरि उरहि छुवावैं। मनही मन अभिलाप करत सब हृदय करत यह ध्यान। सूरदास प्रभुको घरते लै देहों माखनखान ॥३८॥ रागसारंग ॥ गोपालहि माखन खानदैसुनुरी सखी कोऊ जिनि बोलै वदन दही लपटानदै॥गहिवहियां हौं लैके जैहों नयनन तपति बुझानदै। वापै जाइ चौगुनो लेहौं मो यशुमति लौं जानदै॥तुम जानति हरि कछुव न जानत सुनत मनोहर कानदै। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को राखोंगी तन मन प्रानदै ॥ ३९ ॥ कान्हरो ॥ चली व्रज घर घरनि यह बात। नंदसुत संग सखालीने चोरि माखन खात॥ कोउ कहति मेरे भवन भीतर अबहिं पैठे धाइ। कोउ कहति मुहि देखि द्वारे गयउ ताहि पराइ॥ कोउ कहति केहि भांति हरिको देखों अपने धाम। हेरि माखन देउँ आछो खाहि जितनो श्याम। कोऊ कहति मैं देखिपाऊं भरि धरौं अँकवारि॥ कोऊ कहति मैं वाधिराखौं को सकै निरवारि॥ सूर प्रभुके मिलन कारन करत बुद्धि विचार। जोरि कर विधिको मनावति पुरुष नंद कुमार॥ ४० ॥ कान्हरो। ग्वालनि घर गये जानि सांझकी अँधेरी॥ मंदिरमें गए समाइ श्यामल तनु लखि नजाइ देह गेह रूप कहौ को कहै निवेरी॥ दीपक गृह दान करयो भुजा चारि प्रगट धरयौ देखत भई चकृत ग्वालि इतं उतको हेरी।श्याम हृदय अति विसाल माखन दधि विंदुजाल मनमो ह्यो नंदलाल वालहि वूझेरी।युवती अति भई विहाल भुज भरिदै अंकमाल सूरज प्रभु अति कृपाल डारयो मन फेरी॥ करसों कर लै लगाइ महरि पैगई लिवाय आनंद उरमें नसमाय वातहै अनेरी॥ ४१। कल्याण॥ यशुमति धौं देखि आनि आगैहै ले पिछानि वहियांगहिल्याई कुँवर और को कितेरो अवलौं मैं करी कानि सही दूध दही हानि अजहूं जिय जानि मानि कान्हहै अनेरो॥ दीपक मैं धरयो वारि देखत भुज भए चारि हारी हौं धरति करति दिन दिनको झेरो। दिखियत नहिं भवन मांझ तैसोई तनु तैसिये सांझ छलसों कछु करतु फिरतु महरिको जठेरो॥ गोरस तनु छीटरही सोभा नहिं जात कही मानौ जल यमुन विंव उडगन पथुफेरो। उरहनो दिन देउ काहि काहेतू इत नो रिसाइ नाहीं व्रजवास सासु ऐसी विधि मेरो॥ गोपी निरखति सुमार यशुमति कोहै कुमार भूली भ्रम रूप मानौ आनि कोऊ हेरो। मनमन विहँसत गोपाल भक्तपाल दुष्टशाल जानैको सूरदास चरित कान्ह केरो॥ ४२॥ गौरी॥ देखि फिरे हरि ग्वालि दुवारे।तव इक बुद्धि रची अपने मन भीतर सांझ परे पिछवारे। सूने भवन कहूं कोउ नाहीं मनौ याहीको राजू॥ भांडे धरतु उघारतु मूंदतु दधि माखनके काजू।रैनि जमाइ धरयो सो गोरस परयो श्यामके हाथ। लैलै खात अकेले आपुन सखा नहीं कोउ साथ॥आहट सुनि युवती घर आई देख्यो नंदकुमार॥ सूरश्याम मंदिर अँधियारे निरखत बारंबार॥४३॥ अँधियारे घर श्याम रहे दुरि। अबहीं मैं देख्यो नंदनंदन चरित भयो मनही मन झुरि।पुनि पुनि चकृत होति अपने जीकैसी है यह बात।मटुकी के ढिगवैठि रहे हरि करैं आपनी घात॥ सकल जीउ जल थलके स्वामी चींटी दई उपाइ।सूरदास प्रभु देखि ग्वालिनी भुज पकरे तव आइ॥ ४४॥ श्याम कहा चाहतसे डोलत। बूझेहूते वदन दुरावत सूधे वोल न वोलत। सूने निपट अँध्यारे मंदिर दधि भाजन में हाथ। अवकहि कहा वनैहो उत्तर कोऊ नाहिन साथ॥मैंजान्यो यह घर अपनो है या धोखे मैं आयो। देखतुहौं गोरसमें चींटी काढनको करनायो॥ सुनि मृदु वचन निरखि मुख सोभा ग्वालिनि मुरि मुसुकानी। सूरश्याम तुमहो रतिनागर वात तिहारी जानी॥ ४५॥ सारंग॥ यशोदा कहां लौं कीजै

कानि। दिनप्रति कैसे सही परतिहै दूध दही की हानि॥ अपने या बालककी करनी जो तुम देखो आनिं। गोरसखाइ ढूँढि सब बासन भली करी यह बानि॥ मैं अपने मंदिरके कोने माखनराख्यो जानि। सोई जाइ तुम्हारे लरिका लीनोहै पहिचानि॥ बूझीग्वालिनि घरमें आयो नेकु न संकामानी॥ सूरश्याम तब उतर बनायो चींटी काढतु पानी॥ ४६॥ गौरी॥ आप गए हरुए सूने घर। सखा सबहि बाहरही छांडे देख्यो दधि माखन हरि भीतर॥ तुरत मथ्यो दधि माखनपायो लैलै खात धरत अधरनिपर। सैनहुदै सब सखा बुलाए तिनहिंदेत भरि भरि अपने कर॥ छिटकिरहीदधि बूंद हृदय पर इत उत चितवत करि मनमें डर। उठत ओटते लेत सबनि लै पुनिलै खात दंत ग्वालिनिबर॥ अंतर भई ग्वालि यह देखति मगन भई अति उर आनंद भरि। सूरश्याम मुख निरखि थकित भई कहत न बनै रही मनमें धरि॥ ४७॥ धनाश्री॥ गोपाल दुरेहैं माखनखात। देखि सखी शोभाजु बनी है श्याम मनोहर गात॥ उठि अवलोकि ओट ठाढे ह्वै जिहि विधि है लखि लेत। चकृत वदन चहूं दिशि चितवतहैं और सखनको देत॥ सुंदर कर आनन समीप अति राजत इहि आकार। मनो सरोज विधु बैर बंचि करि लिये मिलत उपहार॥ गिरिगिरि परत वदनके ऊपर ह्वै दधिसुतके बिंदु। मानहु सुभग सुधाकन बरषत बिजमों आगम इंदु॥बाल विनोद विलोकि सूर प्रभु सिथिल भई व्रजनारि। फुरै न वचन बरजिबे कारन रही विचारि विचारि॥४८॥ सारंग॥ ग्वालिनि जो घर देखे आइ॥माखन खाइ चुराइ श्याम तब आपुनरह्यो छपाइ॥ ठाढी भई मथनियांके ढिग रीती परी कमोरी। अबहीं गई आई इन पाँइनि लै गयो को करि चोरी॥ भीतर गई तहां हरि पाए श्याम रहे गहि पाई। सूरदास प्रभु ग्वालिनि आगे अपनो नाम सुनाई॥ ४९॥ गौरी॥ जो तुम सुनहु यशोदा गोरी। नंदनंदन मेरे मंदिरमें आजु करन गए चोरी॥ हौं भई आनि अचानक ठाढी कह्यो भवनमें कोरी। रहे छपाइ सकुचि रंचक ह्वै भई सहजमति भोरी॥ जबगहि बाँह कुलाहल कीनो तब गहि चरण निहोरी॥ लागे लै नैनन भरि आंसू तब मैं कान न तोरी। मोंहि भयो माखनको संशय रीती देखि कमोरी॥ सूर दास प्रभु देत दिनहुँ दिन ऐसी लरि कस लेरी॥५०॥ सारंग॥ जानि जुपाए हो हरि नीके। चोरि चोरि दधि माखन मेरो नितप्रति गीधिरहे या छीके॥ रोंक्यो भवन द्वार व्रज सुंदरि नूपुर मूंदे अचानकहीके। अब कैसे जैयतु अपने बल भाजन दूध दही मेरो पीके॥ सूर श्याम प्रभु भले परे फंद देउ न जान भाव ते जीके। भरि गंडूक छिरकदै नैननि गिरिधर भाजि चले दै कीके॥ ५१॥ रामकली॥ माखन चोर री मैं पायो। मै जुकही सखीहो तुकहांहै भाजन लगत झुंझायो॥ जौ चाहों तौजान क्यों पैसे बहुत दिननु है खायो। बार बार हौं ढूंकालागी मेरी घात न आयो। नोई नेत की करों चमोर्टी घूंघट में डरवायो॥ बिहँसत निकासिरही दोदँतिया तबलै कंठ लगायो॥मेरे लाल को मारिसकै को रोहिनि गहि हलरायो॥ सूरदास प्रभु बालकलीला विमल विमल यश गायो॥ ॥५२॥ राग नट॥ देखि ग्वालिनि यमुना जात। आपु ता घर गए पूँछन कौनहै कहि बात॥ जाइ देखे भवन महियां ग्वाल बालक दोइ। भीर देखत अति डेराने दुहूं दीनों रोइ॥ ग्वालके कांधे चढ़े तब लिए छीके उतारि। दह्यो माखन खात सब मिलि दूध दीनों डारि॥ बच्छले सब जोरि दीने गए बन समुदाइ। छिरकि लरिकनु दहीसों भरि ग्वाल दीने चलाइ॥ देखी आवत सखी घरकों सखा गए सब दौरि। आनि देखे श्याम घरमें भई ठाढी पौरि॥ प्रेम अंतर रिस भरयो मुख युवति बूझति बात। चित्त मुखतन सुधि बिसारी कियो उर नख घात॥ अतिहिरिसवश भई ग्वालिनि गेह देह बिसारि। सूर प्रभु भुजगहे ल्याई महरिसो अनुहारि॥ ५३॥ गौरी॥ महरि

तुम मानौ मेरी बात।ढूंढि ढूंढि गोरस सब घरको हरयो तुम्हारे तात ॥ और काटि सीके ते लीनो ग्वाल कंधा दैलात। असंभाषु बोलन आई है ढीठ ग्वालिनी प्रात ॥ चाखतनहीं दूध धौरीको तेरे कैसे खात। औरो कहाति कछू सकुचतिहौं कहादिखाऊं गात ॥ ऐसो तौ मेरोनाहीं अचगरो कहा बनावाति बात। चितवत चकित ओट भए ठाढे यशुदा तन मुसुकात ॥ हैं गुण बडे सूरके प्रभुके ह्यांलरिकाह्वै जात ॥ ५४ ॥ गौरी ॥ साँवरेहि बरजाति क्यों जुनहीं। कहा करौं दिन प्रतिकी बातैं नाहिन परत सही॥माखन खात दूध लै डारत लेपत देह दही॥तापाछे घरहूके लरिकनु भाजत छिरकि मही॥जो कछु धरहिं दुराय दूर लै जानत ताहि तही॥सुनहु महरि तेरे या सुत सों हम पचिहारि रही ॥ चोर अधिक चतुराई सीखी जाइ न कथा कही। तापर सूर बछरुवनि ढीलत बन बन फिरत बही ॥ ५५ ॥ कान्हरो ॥ अब ये झूठेहु बोलत लोग। पांच बरष अरु कछुक दिननिको कब भयो चोरी योग॥ इहि मिस देखन आवति ग्वालिनि मुँह फाटे गुग वारी। अनदेखेको दोष लगावति दई देइगो टारी॥कैसे करियाकी भुजा पहुँची कौन वेग ह्यां आयो॥ऊखल ऊपर आनि पीठ धारि तापर सखा चढायो ॥ जो न पत्याहु चलो सँग यशुमति देखौ नयन निहारि। सूरदास प्रभु नेकु न बरजो मनमे महरि विचारि ॥ ५६ ॥ मेरो गुपाल तनकसों कहा करि जानै दधिकी चोरी। हाथ नचावति आवति ग्वालिनि जीभुन करही थोरी ॥ कब सीके चढ़ि माखन खायो कब दधि मटुकी फोरी। अँगुरिन करि कबहूँ नहि चाखतु घरही भरी कमोरी ॥ इतनी सुनत घोषकी नारी विहँसि चली मुख मोरी। सूरदास यशुदा को नंदन जो कछु करै सु थोरी ॥ ५७ ॥ कान्हरो ॥ इनु अँखियनु आगेते मोहन एकौ पल जिनि होहिं नि न्यारो॥हौं बलिगई दरश देखे बिनु तलफतहैं नैननि के तारे॥आनो सखा बुलाय आपने यहि आगन खैलौ मेरे बारे॥निरखति रहौं फणिककी मणि ज्यों सुंदर श्याम विनोद तिहारे॥मधु मेवा पकवान मिठाई खाटे मीटे व्यंजन खारे।सूरदास प्रभु जो मन इच्छा सोइ सोइ माँगिलेहु मेरे प्यारे॥५८॥नट नारायण॥मेरे लाडिले हो जननिकहत जानि जाहु कहूं तेरेहि काजै गुपाल सुनहु लाडिले लाल राखेहैं भाजन भरि सुरस छहूं ॥ काहेको पराये जाइ करत इतने उपाइ दूध दधी घृत माखन तहूं॥करति कछू न कानि बकतिहै कटु वानि निपट निलज बैन विलखहूं ॥ ब्रजकी ढीठी ग्वारी हाटकी बेचनहारी सकुच न देति गारी झगरि कहूं। कहांलौं करौं रिस बकत धौं इही कुश इही मिस सूरश्याम वदन चहूं ॥ ५९ ॥ धनाश्री ॥ चोरी करत कान्ह धरि पाये । निशि वासर मोहिं बहुत सतायो अब हरि हाथहि आये॥ माखन दधि मेरो सब खायो बहुत अचगरी कीन्ही। अबतौ आइ परेहौ ललना तुम्हैं भले मैं चीन्ही ॥ दोउ भुज पकरि कह्यो कित जैहो माखन लेउ मँगाइ। तेरीसों मैं नेकु न चाख्यो सखा गये सब खाइ ॥ मुख तन चितै विहँसिहँसि दीनो रिस तब गई बुझाइ। लियो उर लाइ ग्वालिनी हरिको सूरदास बलिजाइ ॥ ६० ॥ धनाश्री ॥ मथतिग्वालि हरिदेखीजाइ गये हुते माखन की चोरी देखत छवि रहे नयन लगाइ ॥ डोलत तनु शिर अंचलु, उघरयो वेनी पीठि डोलत इहि भाइ ॥ वदन इंदु पयपान करनको मनहुँ उरग उडि लागत धाइ। निरखी श्याम अंग पुनि शोभा भुज भरि धरि लीनो उर लाइ।चितै रही युवती हरिको मुख नयन सैन दै चितहि चुराइ तन मन धन गति मति विसराई सुख दीनो कछु माखन खाइ। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि तुम्हरी लीला लोकहै गाइ॥६१॥ललित ॥देख्यो हरि मथति ग्वालि दधि भेदसो ठाढ़ी॥ यौवन मदमाती इत-राती वेनी ढुरत कटि पर छवि बाढ़ी॥ दिनी थोरी भोरी अति कोरी देखतही जु श्याम भये चाढी।

कर्पतिहै दुहुँकरन मथानी शोभाराशि भुजा गहि गाढ़ी ॥ इत उत अंग मुरति झकझोरति अंगिया वनी कुचनसों माढ़ी । सूरदास प्रभु रीझि थकित भए मनहु काम सांचे भरि काढ़ी ॥ ६२ ॥ ॥ बिलावल ॥गए श्याम तेहि ग्वालिनिके घर ॥ देखीजाइ मथति दधि ठाढ़ी आपु लगे खेलन द्वारे पर॥ फिरि चितई हरि दृष्टि परिगए बोलि लिए हरुवे सूने घरालिये लगाइ कठिन कुचके विच गाढ़े चापि रही अपने कर ॥ उमंगि अंग अंगिया उर दरकी सुधि विसरी तनकी तिहि औसरातव भये श्याम वरप द्वादशके रिझैलई युवती वा छविपर ॥ मन हरि लयो तनकेस ह्वैगये देखिरही शिशु रूप मनोहर । माखन लै मुख धराति श्यामके सूरज प्रभु रति पति नागर वर ॥६३॥ ग्वालिनि उर हनके मिस आइ ॥ नंदनंदन तनु मनु हरिलीनो विन देखे क्षण रह्यो न जाइ ॥ सुनहु महरिअपने सुतके गुण कहा कहौं किहि भांति वनाइ। चोली फारि हार गहि तोरयो इन वातन कहौ कौन वड़ाइ ॥ माखन खाइ खवावत ग्वालन जो उवरयो सो दियो लुढ़ाइ । सुनहु सूर चोरी सहलीनी अव कैसे सहिजात ढिठाइ॥६४॥सारंग॥झूंठहि मोहिं लगावति ग्वारि। खेलत में मोहिं वोलि लियोहै दोउ भुज भरि दीनी अँकवारि॥मेरे कर अपने कुच धारति आपुहि चोली फारि। माखनआपुहि मोहिं खवायो मैं कव दीन्हो ढ़ारि॥कहा जाने मेरो वारो भोरो झुकी महरि देदै मुख गारि।सूरश्याम ग्वालिनि मन मोह्यो चितै रही इक टकहि निहारि ॥६५॥ गौरी॥कवहिं करन गये माखन चोरी।जानति हौं जु कटाक्ष तिहारे कमल नयन मेरोइ तनकसोरी॥देदे दगा वुलाइ भवनमें भेटति भुज भरि उरज कटोरी। उर नखचिह्न दिखावति डोलति कान्ह चतुर भए तू अतिभोरी॥मो घर आवति उरहनके मिस चितै रहति ज्यों चंद्रचकोरी। सूर सनेह जात नहिं हटक्यो नैननि प्रीति जाति नहिं तोरी ॥ ६६ ॥ गौरी ॥ कहा कहौं हरिके गुण तोसों। सुनहु महरि अवही मेरे घर जे रंग कीने मोसों ॥ मैं दधि मथति आपने मंदिर गए तहां इहि भांति। मोसों कह्यो वात सुनु मेरी मैं सुनिकै मुसकाति ॥ वाँह पकरि चोली गहि फारी भरि लीनी अँकवारी। कहत न वनै सकुचकी वातैं देखौ हृदय उघारी ॥ माखन खाइ निदरि नीकी विधि इह तेरे सुतकी वात।सूरदास प्रभु तेरे आगे सकुच तनक ह्वै जात ॥ ६७ ॥ गौडमलार ॥ ग्वालिनी श्याम तनु देखरी आपु तन देखिये। भीति जव होइ तव चित्र अवरेखिये॥कहां मेरो कुँवरहै पांचही वरपको रोइ अजहूँ पयपान मांगे ॥ कहां तू ढीठ योवन मद सुंदरी फिरति अठिलाति गोपाल आगे। कहां मेरो कान्हकी तनकसी आंगुरी वडे वड़े नखनिके चिह्न तेरे।मष्ट करु हँसैगो लोगु अँकवार भुज कहां पाए तैं श्याम मेरे।टगटगै मुख झुकी नयनहूं नागरी उरहनो देत रुचि अधिक वाढी । सुनहु सूर सर्वसुहरयो साँवरे अन उत्तर महरि ढिग देति ठाढी॥६८॥राग गौरी ॥ कतहो कान्ह काहूके जातये सव वढ़ी गर्व गोरसके मुख सम्हारि वोलति नहिं वात॥जोइ जोइ रुचै सोई सोई तव मोपै माँगिलेहु किन तात।ज्योंज्यों वचन सुन्यौ मुख अमृत त्यों त्यों सुख पावत सव गात ॥ कैसी टेव परी इन गोपिन उरहनके मिस आवति प्रात। सूर सकति हठि दोप लगावति घरहूको माखन नहिं खात ॥ ६९ ॥ विलावल ॥ कान्हको ग्वालिनि दोप लगावत चोरातनक दधि माखनके कारण कवै गयो तेरी ओर ॥ तुमतो धन यौवनकी माती निलज भई उठि आवत भोर। लालकुँवर मेरो कछू न जानै तूहै तरुणि किशोर ॥ कापर नयन चढाये डोलति या व्रजमें तिनका सो तोर। सूरदास यशुदा अनखानी इह जीवन धन मोर॥७०॥ देवगंधार ॥ कान्हहि वरजति क्यों न नंदरानी। एक गावँके वसत कहाँलौ करैं नंदकी कानी॥ तुम जो कहतहो मेरो कन्हैया गंगाकोसो पानी। वाहर तरुण किशोर वैस वर वाट घाटको दानी ॥

वचन विचित्र कमल दल लोचन कहत सरस वरवानी। अचरज महरि तुम्हारे आगे आवै जीभ तुतरानी॥ कहां मेरो कान्ह कहां तुम ग्वालिनि इह विपरीति नजानी। आवत सूर उरहनेके मिसु देखि कुँवर मुसुकानी ॥ ७१ ॥ धनाश्री ॥ माखन मागत हैं यशुमतिसों। माता सुनत तुरत लै आई देति खवाइ मगन मन रतिसों ॥ मैया मैं अपने कर लेहौं धरिदे मेरे हाथ। माखन खात चले उठि खेलन सखा जुरे सब साथ ॥ मथुरा जात ग्वालिनी देखी चरचि लई हरि आइ। सूरश्याम ता घरके पाछे बैठिरहे अरगाइ ॥ ७२ ॥ धनाश्री ॥ मथुरा जातहों बेंचन दधियो- मेरे घरको द्वार सखीरी तबलौं देखति रहियो॥ दधि माखन द्वै माट अछूते सौंपतिहौं तुहि सहियो। और तौ डर नाहीं या ब्रजमें नंदसुवनसखि आवत लहियो॥ये शुभ वचन निकट ह्वै मोहन सुनिकरि उर सब गहियो। सूर पौरिलौ गई न ग्वालिनि कूदिपरचो दैधहियो ॥७३॥नट॥ देख्यो जाइ श्याम घरभीतर। अबहीं निकसि कहति भई सो फिरि आई पुनि तुम्हरे डर ॥ सखा साथके चम की गए सब गह्यो श्याम कर धाइ। औरनि जानि जान मैं दीन्ह्यो तुम कहँ जाहु पराइ ॥ बहुत अचगरी करत फिरतहो मैं पाए करि घात। बांह पकरि लैचली महरिपै करत रहत उतपात ॥ देखौ महरि आपने सुतको कबहूं नाहिं पत्याति। बैठे श्याम आपने भवनहि चितै चितै पछिताति॥बांह पकरि तू ल्याई काको अति वेशरम गवाँरि। सूरश्याम मेरे आगे खेलत यौवन मद मतवारि ॥ ७४ ॥ राग सारंग ॥ यशुदा तू जो कहतिही मोसों। दिनप्रति देन उरहनो आवति कहा तिहारो कोसों॥ यहै उरहनो सत्य करनको गोविंदहि गहिल्याई। देखन चली यशोदा सुतको ह्वैगए सुता पराई॥ तेरे हृदय नेक मति नाहीं वदन पेखिपहिचान्है। सुनुरी सखी कहति डोलतिहै या कन्या सों कान्है॥ तैं जो नाम कान्ह मेरेको सूधो है करि पायो। सूरदास स्वामी यह देखौं तुरत त्रिया ह्वै आयो७५॥ राग गौरी ॥ रही ग्वालि हरिको मुख चाहि। कैसे चरित किये हरि अबहीं वार वार सुमिरति करताहि ॥ बांह पकरि घरते लैआई कहा चरित कीन्हेंहैं श्याम। जात नवनै कहत नहिं आवै कहत महरि तू ऐसी वाम॥ जानी वात तिहारी सबकी यशुमति कह्यो इहांते जाहि। सूरदास प्रभुके गुण ऐसे बुद्धि करी तव जीती ताहि॥७६॥गौरी ॥श्याम गए ग्वालिनि घर सूनो। माखन खाइ डारि सब गोरस बासन फोरि सोरु हठि दूनो॥बडो माट इक बहुत दिननिको तासु किये दशटूकासोवत लरिक न छिरकि महीसो हँसत चले दै कूक॥आइगई ग्वालिनि तिहि औसर निकसत हरि धरि पायो। देखत घर वासन सब फूटे दही दूध ढरकायो॥दोउ भुज धरि गाढ़े करिलीन्हें गई महरिके आगे। सूरदास अब बसै कौन ह्यां पति रहिहै ब्रजत्यागे॥७७॥ विलावल। ऐसो हाल मेरे घरमें कीन्हो हौं लैआई तुम पास पकरिकै।फोरे सब वासन घरके दधि माखन खायो जो उवरचो सो डारचो रिस करिकै॥लरिका छिरकि महीसों देखो उपज्यो पूत सपूत महरिकै। बडो माट घर धरचो युगनिको सोउ टूक पांच दश करिके ॥ पारि सपाट चले तव पाये हौं ल्याई तुम पास पकरिकै। सूरदास प्रभु को यों राखो ज्यों राखिये गज मदको जकरिकै॥७८॥कान्हरो ॥करत कान्ह ब्रज घरनि अचगरी। खीझति महरि कान्हसों पुनि पुनि उरहन लै आवतिहै सिगरी॥ बड़े बापके पूत कहावत हम वै वास वसत इक नगरी। नंदहुते ये बड़े कहैहैं फेरि वसैहैं ये ब्रजनगरी॥ जननीके खीझत हरि रोये झूंठेहि मोहिं लगावत धगरी। सूरश्याम मुख पोछि यशोदा कहति सबै युवती हैं लँगरी ॥ ७९ ॥ सारंग ॥ नितही नित सब आवति उठि भोरे। मेरे बारेहि दोष लगावत ग्वालिन यौवन जोर। दूध दही माखनके कारण कब गयो तेरी ओर॥ धनमाती इतराती डोलति सकुचति नाहिं करै अति शोर मेरो। कन्हैया कहां

तनक सों तू है कुचन कठोर । तेरे मनको इहां कौन है पायो आजु कटकको छोर ॥ कापर नयन चलावति आवति जाति नहीं व्रजतिनका तोर॥सुनहु सूर ग्वालिनिकी बातें बसत कान्ह जीवन धन मोर॥८०॥ राग नट ॥मेरो माई कौनको दधि चोरै । मेरे बहुत दईको दीनो लोग पियतहैं औरै कहा भयो तेरे भवन गये जो पियो तनकु लै भोरै।ता ऊपर काहे गरजतिहौ मनो आई चढ़ि घोरै॥ माखन खाइ मह्यो सब डारयो बहुरो भाजन फोरै।सूरदास ये रसिक ग्वालिनी नेह नवल संग जोरै ॥ ८१ ॥ राग रामकली ॥ अपनो गाउँ लेहु नँदरानी । बड़े बापकी बेटी ताते पूतहि भले पढ़ावति बानी ॥ सखा भीरलै पैठत घरमें आपु खाइ तो सहिये । मैं जब चली सामुहे पकरन तबके गुण कह कहिये ॥ भाजिगये दुरि देखत कतहूँ मैं घर पौढ़ी आई ॥ हरे हरे बेनी गहि पाछे बांधी पाटी लाई ॥ सुनु मैया याके गुण मोसों इन मोहिं लियो बुलाई । दधि में परी सेत्तिकी चींटी मोपे सबै कढाई ॥ टहल करत याके घरकी मैं इह पति संग मिलि सोई । सूर वचन सुनि हँसी यशोदा ग्वालि रही मुख गोई ॥ ८२ ॥ सारंग ॥महरि तुम व्रज चाहति कछु और ॥ बात एक मैं कही कि नाहीं आपु लगावति झोर ॥ जहां बसे पाति नहीं आपनी तजन कह्यो सोठौर॥सुतके भए बधाई पाई लोगन देखति हौर । कान्ह पठाइ देति घर लूटन कहत करो या गौर ॥ व्रज घर समुझि लेहु महरि जू हहा करति कर जोरी । सूर सुनत ग्वालिनि की बातें रहि यशुमति मुख मोरी ॥ ८३ ॥ लोगन कहति झुकति तू बौरी । दधि माखन गांठी दै राखत करति फिरत सुत चोरी ॥ जाके घरकी हानि होतनित सो नहिं आन कहै री । जाति पांतिके लोगन देखत और बसैहै नेरी ॥ घर घर कान्ह खान को डोलत अतिहि कृपण तू हैरी । सूरश्यामको जब जोइ भावै सोइ तबहीं तू देरी ॥ ८४ ॥ मलार ॥ महरि तें बड़ी कृपणहै माई । दूध दही विधिको है दीनो सुत डर धरति छिपाई ॥ बालक बहुत नाहिंरी तेरे एक कुँवर कन्हाई । सोऊतौ घरही घर डोलत माखन खात चुराई ॥वृद्ध बैस पूरे पुण्यनिते तें बहुतै निधि पाई । ताहूके खैबे पियबेको कहा करति चतुराई ॥ सुनहु न वचन चतुर नागरिके यशुमति नंद सुनाई । सूरश्यामको चोरीके मिस देखनकोरी आई ॥ ८५ ॥ रागनट ॥ अनत सुत गोरसको कत जात । घर सुरभी नवलाख दुधारी और गनी नहिं जात ॥ नितप्रति सबै उरहनेके मिस आवति है उठि प्रात । अनसमुझे अपराध लगावति बिकट बनावति बात ॥ अतिहि निशंक विवादति सन्मुख सुनि मोहिं नंद रिसात । मोसों कृपण कहत तेरे गृह ढोटाऊ न अघात ॥ करि मनुहारि उठाय गोदलै सुतको बरजति मात । सूरश्याम नित सुनत उरहनो दुखपावत तेरो तात ॥ ८६ ॥ बिलावल ॥ भाजिगये मेरे भाजन फोरी । लरिका सहस एक सँग लीनें नाचत फिरत सांकरी खोरी ॥ माखन खाइ जगाइ बालकन्ह बनचर सहित बछरुया छोरी । सकुच न करत फागुसी खेलत गारी देत हँसत मुख मोरी । बात कहौं तेरे ढोटाकी सब व्रज बांध्यो प्रेमकी डोरी । टोनासी पढि नावत शिर पर जो भावत सो लेत अजोरी ॥ आपु खाइ तो सब हम मानें औरन देत सिकहरो तोरी । सूर सुतहि देखो नंदरानी अब तोरत चोली बंद जोरी ॥ ८७ ॥ नट ॥ श्याम सब भाजन फोरि पराने । हांक देत पैठतहैं पैला नेकु न मनहि डेराने ॥ सींके तोरि मारि लरिकनको माखन दधि सब खाइ । भवन मच्यो दधिकादो लरिकन रोवत पाये जाइ ॥ सुनहुरे सबहिनके लरिका तेरोसों कहुँ नाहीं । हाटन बाटन गलिनि कहूं कोउ चलत नहीं डरुपाहीं ॥ ऋतु आयेको खेल कन्हैया सब दिन खेलत फाग।रोकि रहत गहि गलीसांकरी टेढ़ी बांधत पाग॥बारेते सुत ये ढंग लाये मनहीं मनहिं सिहात। सुनहु सूर ग्वालिनिकी बातें

सकुचि महरि पछितात ॥ ८८ ॥ सारंग ॥ कन्हैया तू नाहिं मोहिं डेरात। पटरस धरे छाँडि कत पर घर चोरी करि करि खात ॥ वकति वकति तोसों पचिहारी नेकहु लाज न आई। ब्रज परगन सिर दार महरितू ताकी करत नन्हाई॥पूत सपूत भयो कुल मेरो अव मैं जानी वात। सूरश्याम अवलौं तोहिं वकस्यों तेरी जानी घात ॥ ८९ ॥ गौरी ॥ सुनिरी ग्वारि कहौं एक वात। मेरी सौं तुम याहि मारियो जवहीं पावो घात॥ अव मैं याहि जकरि बांधौंगी वहुतै मोहिं खिझाई। सांटिन्ह मारि करौं पहुनाई चितवत वदन कन्हाई॥ अजहूं मातु कह्यो सुनु मेरो घर घर तू जनि जाही। सूर श्याम कह्यो कवहुँ न जैहौं माता मुख तन चाही ॥ ९० ॥ विलावल॥ तेरे लाल मेरो माखन खायो। दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूंढि ढंढोरि आपही आयो॥ खोल किंवार सूने मंदिर में दूध दही सव सखन खवायो॥सीके काढि खाट चढि मोहन कछु खायो कछु लै ढरकायो॥दिन प्रति हानि होत गोरसकी यह ढोटा कौने ढंग लायो। सूरदास कहती ब्रजनारी पूत अनोखो जायो॥ ९१ ॥ रामकली॥माखन खात पराये घरको। नितप्रति सहस मथानी मथिये मेघ शब्द दधि माठ घमरको। कितने अहीर जियतहैं मेरे गृह दधि लै मथि वेचतहैं मही महरको॥नव लख धेनु दुहतहैं नितप्रति वडो भाग्यहै नंद महरको॥ताके पूत कहावतहौ जी चोरी करत उघारत फरको॥सूरश्याम कितनो तुम खैहौ दधि माखन मेरे जहां तहां ढरको॥ ९२ ॥ मैया मैं नाहीं दधि खायो। ख्याल परे ये सखा सवै मिलि मेरे मुखलपटायो॥ देखि तुहीं सीके पर भाजन ऊंचे घर लटकायो॥तुहीं निरखि नान्हें कर अपने मैं कैसे करि पायो॥ मुख दधि पोंछि कहत नँदनंदन दोना पीठ दुरायो। डारि साट मुसुकाइ तवहिं गहि सुतको कंठ लगायो॥ वालविनोद मोद मन मोह्यो भक्त प्रताप देखायो सूरदास प्रभु यशुमतिके सुख शिव विरंचि वौरायो ॥ ९३ ॥ ॥ यशुमति तेरो वारो नन्हो अतिहि अचगरो। दूध दही माखनलै डारि देत सगरो॥ भोरहि उठि नितप्रति मोसों करतहै झगरो ग्वाल वाल संग सव लिये घेरि रहैं वगरो॥हम तुमहैं सव वैस एक के को काते अगरो। लियो दियो सोई कछु डारि देहु झगरो॥ सूरश्याम तेरो गुननिमें अति नगरो। चोली अरु हार तोरि कियो झगरो ॥९४॥ देखो माई या वालककी वात। वन उपवन सरिता सव मोहे देखत श्यामल गात॥ मारग चलत अनीत करत हरि हठिकै माखन खात।पीतांवर वै शिरते ओढ़त अंचलदै मुसुकात॥ तेरीसौं कहा कहौं यशोदा उरहन देत लजात।जव हरि आवत तेरे आगे सकुचि तनक ह्वै जात॥कौनर गुण कहौं श्यामके नेक न काहु डरात। सूरश्याम मुख निरखि यशोदा कहति कहा इह वात ॥ ॥ ९५ ॥ राग नट॥नंद घरनि सुत भलो पढ़ायो॥ब्रजकी वीथिन पुरनि घरनि घर घाट घाट सव शोर मचायो॥ लरिकन मारि भजत काहूके काहूको दधि दूध लुटायो॥काहूके घर करत वड़ाई मैं ज्यों त्यों करि पकरन पायो॥ अवतौ इन्हें जकरि बांधौंगी इहि सव तुम्हरो गाउँ भड़ायो। सूरश्याम भुज गहि नँदरानी वहुरि कान्ह अपने ढिग आयो॥ ९६ ॥ विलावल॥सुनि सुनि री तू महरि यशोदा तैं सुत वड़ो लड़ायो। काके नहीं अनोखो ढोटा केहि न कठिन करि जायो॥ मैं हूं अपने औसर पै ते वहुत दिनन में पायो। यहि ढोटा लै ग्वाल भवन में कछु विगरयो कछु खायो॥तैं तो ग्वालि पकरि भुज याकी वदन दही लपटायो॥सूरदास ग्वालिनि अति रूठी वरवस कान्ह वँधायो॥९६॥ ॥ ९७ ॥ अथ नवम अध्याय हरि दाँवरि वँधाए ॥ राग गौरी ॥ ऐसी रिस में जो धरि पाऊं॥ कैसे हाल करौं धरि हरिके तुमको प्रगट देखाऊं॥ सटिया लिये हाथ नँदरानी थरथरात रिस गात। मारे विना आजु जो छाँडों लागै मेरे तात ॥ यहि अंतर ग्वालिनि इक औरै धरे वांह हरि ल्यावति।

भली महरि सूधो सुत जायो चोली हारवतावति ॥ रिसमें रिस अतिही उपजाई जानि जननि अभि लाप । सूरश्याम भुज गहे यशोदा अब बांधौं कहि माप ॥ ९८ ॥ सोरठ ॥ यशुमति रिस करि करि जो करपै । सुत हित क्रोध देखि माताके मनही मन हरि हरपै ॥ उफनत क्षीर जननि करि व्याकुल इहि विधि भुजा छुड़ायो । भाजन फोरि दही सब डारचो माखन मुहँ लपटायो ॥ लै आई जेवरी अब बांधौं गरब जानि न बँधायो। आंगुर द्वै घटि होत सबनि सों पुनि पुनि और मँगायो॥नारद शाप भये यमलार्ज्जुन इनको अब जो उधारौं।सूरदास प्रभु कहत भक्त हित युग युग में तनु धारौं।९९॥ बिलावल ॥यशोदा हरि गहि राजत करपै।गावत गोविंद चरित मनोहर प्रेम पुलकि चित वरपै ॥उफनत क्षीर शरीर तन व्याकुल तबहीं भुजा छुड़ायो। भाजन फोरि दही सब डारेव लवनी मुख लपटायो॥ लैकर दाँवरि यशोदा दौरी बँधन कृष्ण ना पायो । द्वै द्वै अंगुर घटै जेवरी ताते अधवुध आयो ॥ नारद शाप भये यमलार्जुन तिन हित आपु बँधायो । सूरदास बलिजाइ यशोदा साँचे देवल आयो॥२००॥ धनाश्री ॥ देखसखी यशुमति बौरानी । घर घर डोलति लेत दामरी वांह गहे हरिकी वितत्तानी ॥ जानति नहीं जगतपति माधव जिनते सब आपदा नशानी । जाके नाम सकति पुनि ताकी ताहि देखि बांधत नंदरानी॥अखिल ब्रह्मांड उदर में जाके जिनकी ज्योति जल थलहु समानी॥ मुख जम्हात त्रिभुवन देखरायो अचरज कथा न जात बखानी ॥ ब्रह्मादिक सनकादि शुकादिक भ्रमत रहत इनहू नहिं जानी । सूरदास मोहिं ऐसी लागत जोकछु कही गर्गमुनि बानी ॥ १ ॥ राग रामकली ॥ यशोदा येतो कहा रिसानी । कहा भयो जो अपने सुतपै महि टरिपरी मथानी ॥रोस रोस संभरे दृग तेरे कीरति पयलए पानी । मनहु शरदके कमल कोशपर मधुकर मीन सकानी॥ श्रम जलकण किंचित निरखि वदन पर यह छवि कहत मन मानी । मानों चंद्र नव उमँगि सुधा भुव ऊपर बरपा ठानी ॥ गृह गृह गोकुल दई दाँवरी बाधति भुज नंदरानी । आपु बँधावत भक्तन छोरत वदन विदित श्रम पानी ॥ गुण लघु चरचि कराति श्रम जितनो निरखि वदन मुसुकानी । सिथिल अंग सब देखि सूर प्रभु शोभा सिंधु तिरानी ॥२॥ सारंग ॥ बांधौं आजु कौन तोहि छोरै । वहुत लंगरई कीनी मोसों भुज गहि रजु ऊखल सों जोरै॥जननी अति रिस जानि बँधायो चितै वदन लोचन जल ढोरै । यह सुनि ब्रज युवती उठि धाई कहत कान्ह अब क्यों नहिं चोरै । ऊखल सों गहि बांधि यशोदा मारनको साँटी करतोरै ।साँटी देखि ग्वालिनि पछितानी विकल भई जहँ जहँ मुख मोरै ॥सुनहु महरि ऐसीन बूझिये सुत बाँधत माखन दधि थोरै। सूरश्यामको वहुत सतायो चूक परी हमते यह भोरै ॥ ३ ॥ आसावरी ॥ जाहु चली अपने अपने घर। तुमहीं सब मिलि ढीठ करायो अब आई बंधन छोरन वर॥मोहिं अपने बाबाकी सौंहैं कान्हैं अब न पत्याऊं । भवन जाहु अपने अपने सब लागतिहौं मे पाऊं ॥ मोको जिनि वरजो युवती कोउ देखौं हरिके ख्याल। सूरश्याम सों कहति यशोदा वडे नंदके लाल ॥ ४॥ सोरठ ॥ यशोदा तेरो मुख हरि जोवै। कमल नयन हरि हिचिकिनि रोवै बंधन छोरि जु सोवै ॥ जो तेरो सुत खरोई अचगरो तऊ कोखिको जायो।कहा भयो जो घरके ढोटा चोरी माखन खायो ॥ कोरी मटुकी दही जमायो जापन पूजन पायो । तेहि घर देव पितर काहेको जा घर कान्ह रुआयो॥ जाकर नाम लेत भ्रम छूटै कर्म फंद सब काटै ॥सो हरि प्रेम जेवरी बांध्यो जननी साँट लैडाटै दुःखितजानि दोउ सुत कुवेरके ता हित आपु बँधायो । सूरदास प्रभु भक्तहेतुही देह धारि तहां आयो॥५॥बिहागरो ॥ देखौ माई कान्ह हिलकियन रोवै । तनक मुख माखन लपटान्यो डरानते अँसुअन धोवै ॥ माखन लागि उलूखल

वाँध्यो सकल लोग ब्रज जोवै। निरखि कुरूपि उन बालकनिकी दिशि लाजन आँखियन धोवै॥ ग्वाल कहैं धनि जननि हमारी सुकरसुरभी नित नोवै। वरधसही वैठारि गोदमें धारै वदन निचोवै ग्वालिनि कहैं या गोरस कारण कत सुतकी पति खोवै। आनि देहि हम अपने घरते चाहति जित कु यशोवै॥ जब जब बंधन छोरयो चाहत सूर कहै यह कोवै। मन माधो तनु चित्त गोरसमें इहि विधि महरि विलोवै॥ ५॥ सारंग। माई नेकहुँ न दरद करति हिलकिनि हरि रोवै।वज्रहूते कठिन हियो तेरोहै यशोवै॥ पालना पौढाइ जिनाहि विकट वाउ काटै। उलटे भुज वांधि तिनाहि लकुट लिंये डाटै॥ नेकहू न थकित पानि निर्दयी अहीरी। अहो नंदरानी सीख कौनपै लहीरी॥ जाको शिव सनकादिक सदा रहत लोभा। सूरदास प्रभुको मुख निरखि देखि सोभा॥ ६॥ विहागरो॥ कुअँर जल लोचन भरि भरि लेत। वालक वदन विलोकि यशोदा कत रिस करत अचेत॥ छोरि कमरते दुसह दाँवरी डारि कठिन कर वेत। कहि तोको कैसे आवतुहै शिशु पर तामस एत॥ मुख आंसू माखनके कनिका निरखि नैन सुख देत।मानों शशि श्रवत सुधानिधि मोती उडुगण अवलि समेत॥ सरवसु तौ न्यवछावरि कीजै सूरश्यामके हेत।ना जानों केहि हेतु प्रगट भये इहि ब्रज नंद निकेत॥७॥ केदारा॥ हरिके वदन तन धौंचाही।तनक दधि कारण यशोदा एतो कहा रिसाही॥ लकुटके डर डरत जैसे सजल शोभित डोल। नील नीरज दल मनौ अलि वोसकन कृत लोल॥ वात वश मृणाल जैसे प्रात पंकज कोस। नमित मुख पर अधरसूचित सकुचमें कछु रोस॥ केतिक गोरस हानि जाको करतिहौ अपमान। सूर ऐसे वदन ऊपर वारिये धन प्रान॥ ८॥ केदारो॥ मुख छवि देखिहोनंद घरनि। शरद निशिके अंशु अगणित इंदु आभा हरनि॥ललित श्रीगोपाल लोचन लोल आँसूढरनि।मनहुँ वारिज विलखि विभ्रम परे परवश परनि॥ कनक मणिमय मकर कुंडल ज्योति जगमग करनि॥ मित्र लोचन मनहुँ आए तर लगति दोउ तरनि॥ कुटिल कुंतल मधुप मिलि मानौ कियो चाहत लरनि॥ वदन क्रांति अनूप शोभा सकै सूर न वरनिं॥९॥ केदारो॥ हरि मुख देखिहो नंदनारि॥महरि ऐसे सुभग सुतसों इतो कोह निवारि॥ जलज मंजुल लोल लोचन शरद चितवनि दीन। मनहुँ खेलत हैं परस्पर मकरध्वज द्वै मीन॥ ललित कण संयुत कपोलनि ललित कज्जल अंक। मनहु राजत रजनि पूरण कला अति अकलंक॥ वेगि वंधन छोरि तन मन वारिलै हिय लाइ। नवल श्याम किशोर ऊपर सूर जन वलिजाइ॥ १०॥ विहागरो॥ कहौ तौ माखन ल्याऊं घरते। जा कारण तू छोरति नाहिन लकुट न डारति करते॥ महरि सुनहु ऐसी न बूझिये सकुचि गयो मुख डरते। मनहुँ कमल दधिसुत समपोतकि फूलत नाहिंन सरते॥ ऊखल लाइ भुजा धरि वांधे मोहन मूरति वरते। सूरश्याम लोचन जल वरपत जनु मुक्ता हिमकरते॥ ११॥ कल्यान॥ कहन लगी अब वढ़ि वढ़ि वात।ढोटा मेरो तुमहिं वँधायो तनकहि माखन खात॥अब मोहिं माखन देति मँगाए मेरे घर कछुनाहीं। उरहन करि करि सांझ सवारे तुमहिं वँधायो याही॥ रिसही में मोको गहिदीनो अब लागी पछितान। सूरदास हँसि कहत यशोदा बूझौ सबको ज्ञान॥ १२॥ धनाश्री॥ कहा भयो जो घरके लरिका चोरी माखन खायो। अहो यशोदा कत त्रासतिहौ इहै कोखको जायो॥ वालक जौन अयान न जानै केतिक दह्यो लुटायो। तेरो सखी कहा खायो गोरस गोकुल अंत न पायो॥ हाहा लकुट त्रास देखरावत आपन पाश वँधायो। रोदन करत दोउ नयन रचेहैं मनहु कमल तन छायो॥ पौढ़िरहे धरणी पर तिरछे विलखि वदन कर जाइु। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि

हँसिकै कंठ लगाहु ॥ १३ ॥ सुचित दै चितै तनै तन ओर । सकुचत शीत भीत ज्यों जलरुह तुव कर लकुट निरखि सखि घोर ॥ आनन ललित श्रवत जल शोभित अरुण चपल लोचनकी कोर । डारत मनौं गडूक सुधा भरि विधुमंडल ज्यों उभै चकोर ॥ सुभग मृणाल युगल भुज ऊपर बांधे ऊखल दाम कठोर । मनौं भुवंग भीतरते बांबी पर उरझिरही केचुरि गरजोर॥लघु अपराध देखि बहु शोचति निर्दयीहृदय वज्र सम तोर। सूर कहा सुत पर इतनी रिस कहिइतनै कछु माखन चोर ॥ १४ ॥ बिलावल ॥ यशुदा देखि सुतकी ओर। बाल वैस रिसालपर रिस इती कहाके पोर ॥ वार वार निहारि तव तन निमिप दधि मुख चोर। तरनि किरनिके परशि मानौ कुमुदि विधु मति भोर ॥ त्रासते अति चपल गोकुल सजल शोभित छोर। मीन मानौ वेधि वंशी करत जल झकझोर ॥ नंदनंदन जगतवंदन करत आंसू कोर। सूरदास सुमहरि मुख हित निरखि नंदकिशोर ॥ १५ ॥ धनाश्री ॥ चितैधौं कमल नयनकी ओर। कोटि चंद वारौं या मुख छवि येहैं शाहके चोर॥उज्ज्वल अरुण असित देखतिहै दुहूं नैनकी कोर।मानौ सुधा पानके कारण वैठे निकट चकोर ॥ कतहि रिसात यशोदा इन्हसों कौन ज्ञानहै तोर । सूरश्याम बालक मन मोहन नाहिन तरुण किसोर ॥ १६ ॥ सारंग ॥ कबके बाँधे ऊखल दाम। कमल नयन बाहिर करि राखे तू बैठी सुखधाम॥हौं निर्दयी दया कछु नाहीं लागि गई गृह काम।देखि क्षुधा ते मुख कुँभिलानो। अति कोमल तनु श्याम ॥ छोरहु वेगि बड़ी बिरियां भई वीतगये युग याम। तेरे त्रास निकट नाहिं आवत बोलि सकत नहिं राम॥जेहि कारण भुज आप बँधाये वचन कियो ऋषि ताम। तादिनते यह प्रगट सूरप्रभु दामोदर सो नाम ॥१७॥ गौरी॥ वारौं हो वे कर जिन हरिको वदन छुवोरी। वारौ व ह रसना जिन बोल्यो तुकारी ॥ ऐसी निर्मोही भई यशुदान तोसीं निरमोही देख्यो गोपाल लाल आयो क्यों हाथ पसारी॥कुलिशते कठिन वाह चितैरी छतियां अजहूं द्रवति ज्यों देखत उर मुरारी॥ कितिक गोरस हानि जाको त तोरति कानि डारयो तुहिं सूरश्यामके रोम रोम पर वारी ॥ १८॥ राग सोरठ ॥ यशोदा तेरो भलो हियोहै माई। कमल नयन माखनके कारण बाँधे ऊखल लाई॥ जो संपदा देव मुनि दुर्लभ सपनेहुदेइ न देखाई। याही ते तू गर्व भुलानी घर बैठे निधि पाई॥सुत काहूको रोवत देखति दौरि लेत हिय लाई। अब अपने घरके लरिकासों इती कहा जडताई॥वारंवार सजल लोचन भरि चितवत कुँवर कन्हाई।कहा करों वलि जाउँ छोरती तेरी सौंह दिवाई॥जो मूरति जल थलमो व्यापक निगम न खोजत पाई। सो मूरति तू अपने आंगन चुटकी दैदै नचाई ॥ सुरपालक सब असुरसंहारक त्रिभुवन जाहि डराई। सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नित गाई॥१९॥ केदारो॥देखरी नँदनंदन ओर।त्रासते तनु तृपित भो हरि तनक आनन तोर॥वारवार डरात तोको वरन वदनही थोर। मुकुर मुख दोउ नैन ढारत क्षणहि क्षण छवि छोर॥ सजल चपल कनिका। पलक अरुण ऐसे डोर।रसरे अंबुज भवर भीतर भ्रमतहै जनु भोर॥लकुटकै डरि देखि जैसे भये शोणितवोर। उर लै लगाइ वहाइ रिस जिय तजहु प्रथकि क़ठोर॥ कछुक करुणा करि यशोदा करति निपट निहोर। सूरश्याम विलोकि यशुमति कहति माखनचोर॥ २० ॥ धनाश्री ॥तबते बाँधे ऊखल आनि। बालमुकुंदको कत तरसावति अति अंग कोमल जानि ॥ प्रातकालते वांधे मोहन तरनि चढ़े मध्यानि। कुम्हिलानो मुख इंदुदिखावति देखौ धौंनँदरानि॥तेरे त्रासते कोऊ नछोरत अब छोरहु तुम आनि। कमल नयन बांधेई छोडे तू बैठी मन मानि ॥ यशुमतिके मन सुखके कारण आपु बँधावत पानि। यमलार्ज्जुनकी मुक्ति करन को सूरश्याम इह ठानि ॥ २१ ॥ रागनट ॥ कान्हसों

आवत क्यों वरिसात । लै लै लकुट कठिन अपने कर परशति कोमल गात ॥ देखि जुआंसू गिरत नैनते शोभितहैं टरिजात । मुक्ता मनौ चुवत खग खंजन चोंचि पुठी न समात ॥ उरनिडोल डोल तहैं इहि विधि निरखि सुमुद सुनि वात । मानहुँ सूर सकेत शरासन उडिवे को अकुलात ॥ २२॥ रामकली ॥ यशोदा यह न बूझिको काम । कमल नयनकी भुजा देखि धौं तै वांधेहैं दाम ॥ पूतहुते प्रीतम नहिं कोऊ कुल दीपक मणिधाम । हरि पर वारि डारु सव तन मन धन गोरस अरु ग्राम॥ दिखियत कमल वदन कुँभिलानो तू निर्मोही वाम । तू वैठी मंदिर सुख छाहैं सुत दुख पावत घाम अति सुकुमार मनोहर मूरति ताहि करत तुम ताम । एई हैं सव व्रजके जीवन सुख पावत लिए नाम ॥ इह सुनि ग्वालि जगतके वोहित पतितपावनहै नाम।सूरदास प्रभु भक्तनके वशहैं जगतके विश्राम ॥ २३ ॥ धनाश्री ॥ ऐसी रिस तोकों नंदरानी । भली बुद्धि तेरे जिय उपजी वडी वैस अव भई सयानी ॥ ढोटा एक भए कैसेहुँ करि कौन कौन कर वर विधि भानी । कर्म कर्म करि अवलौं उवरचो ताको मारि पितर दै पानी॥को निर्दयी रहै तेरे घरको तेरे संग वैठे आनी।सुनहु सूर कहि कहि पचिहारी युवती चलीं घरहि विरुझानी ॥ २४ ॥ रागसारंग॥ हलधरसों कहि ग्वालि सुनायो। प्रातहिते तुमरो लघुभैयायशुमति ऊखल वांधि लगायो॥काहूके लरिकहि हरि मारचो भोरहिआनि तिनहि गोहरायो।तवहीं ते वांधे हरि वैठे सो हम तुम को आनि जनायो॥हम वरजी वरजो नहि मानत सुनतहि वलआतुरह्वैधायो।सूरश्याम बाँधे ऊखल गहि माता डरत न अतिहि त्रसायो२५ राग सारंग ॥ यहसुनिकै हलधर तहँ धाए।देखिश्याम ऊखल सोंवांधेतवहींदोउ लोचनभरि आए॥मैं वरज्यों कैवार कन्हैया भली करी दोउ हाथ बँधाए।अजहूँ छोड़ोगे लँगराई दोउ कर जोरि जननि पै आए॥श्यामहिं छोरि मोहिं वरु वांधो निकसत सगुन भले नाहिं पाए । मेरे प्राण जीवनधन कान्हा तिनको भुज मोहिं वँधे देखाए ॥ मातासों कह करौं ढिठाई शेष रूप कहि नाम सुनाए । सूरदास तव कहत यशोदा दोउ भैया तुम इकमत भाए ॥ २६॥ राग सारंग ॥ एतौ कियो तु कहारी मैया । कौन काज धन दूध दही यह क्षोभ करायो कन्हैया ॥ आये सिखावन सवै पराये स्यानी ग्वालि वोरैया । दिन दिन देन उरहनो आवैं। ढुँकि ढुँकि करत लरैया ॥ सूरदास सुंदर हिलगाने वह वलभद्र औ भैया ॥ २७ ॥ केदारो ॥ काहेको कलहु नाध्यो दारुण दाँवरि वांध्यो कठिन लकुट लै त्रास्यो मेरो भैया । नाहीं कसकत मन निरखि कोमल तन तनक दधिकाज भलीरी तू मैया ॥ हौंतौ न भयो घर देखतो तेरी यो अरि फोरतो वासन सव जानत वलैया। सूरदास सहित हरि लोचन आये ऐं भरि वलहूकौ वल जाको सोई कन्हैया ॥२८ ॥राग विलावल ॥ काहेको यशोदा मैया त्रास्योहै वारो कन्हैया मोहन मेरो भैया कितनो दधि पियतौ । हौंतो न भयो घर साटी दीनी सर सर वांध्यो कर जेवरी नीके कैसे देखि जियतौ ॥ गोपालतौ सवनिप्यारौ ताकों तैं कीनो प्रहारो जाकोहै मोको गारो अजुगुत कियतौ । ठाढ़ो वांधे वलवीर नैनोंसे ढरतु नीर हरिजूते प्यारो तोको दूध दही पियतौ ॥ सूरदास गिरिधरन धरनीधर हलधर यह छवि सदाई रहौ मेरे जियतौ ॥२९॥ सोरठा ॥ यशोदा तोहिं वाँधे क्यों आयो । कसको नाहिं नेकु ततु तेरो यह कहि काहि खिझायो ॥ शिव विरंचि महिमा नाहिं जानत सो गाइनसँग धायो । ताते तू पहिचानति नाहीं कौन पुण्यते पायो॥इतनी कहत रसिकमणि तवहीं रोप सहित वल धायो। जननी छाँडि और जो होती करत आपना भायो ॥ कहा भयो जो घरके लरिका चोरी माखन खायो । अपने कर सव वंधन खोले प्रेम सहित उर लायो ॥ सरस वचन मनोहर कहि कहि अनुज शूल विसरायो। सूरदास प्रभु भक्तनके हित निजकर आप वँधायो॥३०॥

सोरठ ॥ काहेको हरि इतनौ त्रास्यो।सुनुरी मैया मेरो भैया कितनो गोरस नाश्यो ॥ जव रजुसों कर गाढो वांधे छर छर मारि साटी ॥ सूने घर वाबा नँदनाहीं ऐसो करि हरि डाटी ॥ और न कछु देखे तन श्यामहि ताको करों निपातु । तू जो करै वात सोइ सांची कहा करों तोहि मातु ॥ गाढ़े वदत वात सव हलधर माखन प्यारो तोही । व्रजप्यारो जाको मोहिं गारो छोरति काहे न ओही ॥ काको व्रज माखन दधि केहिको वांधे जकरि कन्हाई । सुनत सूर हलधरकी वातैं जननी सैन वताई ॥ ३१ ॥ राग सारंग ॥ सुनहु वात मेरी वलराम । करन देहु इनकी मोहिं सेवा चोरी प्रगटत नाम ॥ तुमहीं कहो कमी काहेकी नव निधि मेरे धाम । मैं वरजति सुत जाहु कहूं जनि कहि हारी निशि याम ॥ तुमहूँ मोहिं अपराध लगायो माखन प्यारो श्याम ॥ सुनु मैया तुहि छांड़ि कहौं किहि को राखे मेरी ताम । तेरीसों उरहनो लै आवति झूठहि व्रजकी वाम । सूरश्याम अतिही अकुलाने कवके वांधे दाम ॥ ३२ ॥ कहाकरौं हरि वहुत खिझाई । सहि न सकी रिसही रिस भरि गई वहुतै ढीठ कन्हाई ॥ मेरो कह्यो नेकु नहिं मानत करत आपनी टेक । भोर होत उरहन लैआवत व्रजकी वधू अनेक ॥ फिरत जहां तहँ द्वंद्व मचावत घर न रहत क्षणएक । सूरश्याम त्रिभुवनको करता यशुमति कहति जनेक ॥ ३३ ॥ राग गौरी ॥ निरखि श्याम हलधर मुसुकाने । को वांधै को छोरै इनको यह महिमा येईपै जाने ॥ उतपति प्रलय करतहैं येई शेष सहस मुख सुयशवखाने । यमलार्ज्जुन तोरि उधारन कारन करन करत मन मानै। असुर सँहारन भक्तहि तारन पावन पतित कहावत वानै । सूरदास प्रभु भावभक्तके अति हित यशुमति हाथ विकाने ॥ ३४ ॥ हरि चितये यमलार्ज्जुन तन। अवहीं आजु इन्हें उद्धारौं येहैं मेरेई जन ॥ इनके हेतु भुजन वँधवाई अव विलंव नहिं लाऊं । परशकरौं तनु तरुहि गिराऊं मुनिवर शाप मिटाऊं॥ येसुकुमार वहुत दुख पायो सुत कुवेरके तारौं । सूरदास प्रभु कहत मनहि मन करवंधन निरवारौं ॥ ३५ ॥ रामकली ॥ यशोदा ऊखल वांधे श्याम । मनमोहन वाहिरही छोड़े आपुगई गृह काम ॥ दह्यो मथति मुखते कछु वकरति गारी दैदै नाम । घर घर डोलत माखन चोरत पटरस मेरे धाम ॥ व्रजके लरिकन्ह मारि भजतुहै जाहु तुमहु वलराम। सूरश्याम ऊखलसों वांधे निरखति व्रजकी वाम ॥ ३६ ॥ गूजरी ॥ यशोदा कान्हरते दधि प्यारो । डारिदेहु कर मथत मथानी तरसत नंददुलारो ॥ दूध दही माखन वारौं सव जाहि करति तू गारो । कुंभिलाने मुख चंद देखि छवि काहे न नैन निहारो ॥ व्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत सो व्रज गैयन चारो । सूरश्याम पर वलि वलि जैये जीवन प्राण हमारो ॥ ३७ ॥ राग धनाश्री ॥ यशुमति केहि यह सीखदई । सुतहि वांधि तू मथत मथानी ऐसी निठुर भई ॥ हरे वोल युवतिनिको लीनो सुन सव तरुणी नई । लीरकहि त्रास दिखावत रहिये कत मुरझाय गई ॥ मेरे प्राण जीवनधन माधव वांधे वेर भई । सूरश्याम कहुँ त्रास दिखावत तुम कहा कहत दई ॥ ३८ ॥ धनाश्री ॥ तवहिं श्याम इक वुद्धि उपाई । युवती गईं घरनि सव अपने गृह कारज जननी अटकाई ॥ आपु गये यमलार्ज्जुन तरु परशत पात उठे झहराई ॥ दिये गिराय धरणि दोऊ तरु तव द्वै कुवेर सुत प्रगटे आई ॥ दोउ करजोरि करत दोउ स्तुति चारि भुजा तिन्हैं प्रगट देखाई॥ सूर धन्य व्रज जन्म लियो हरि धरणीकी आपदा नशाई ॥ ३९ ॥ विलावल ॥ धनि गोविंद धनि गोकुल आये।धनि धनि नंद धन्य निशि वासर धनि यशुमति जिन श्रीधर जाये। धनि धनि वाल केलि यमुना धनि धनि वन सुरभी वृंद चराये॥ धनि यह समो धन्य व्रजवासी धनि धनि वेणु मधुर ध्वनि गाए । धनि धनि अनख उरहनो धनि धनि धनि माखन धनि मोहन खाए॥ धन्य सूर ऊखल

तरु गोविंद हमहिं हेत धनि भुजा बँधाए ॥ ४० ॥ सोरठ ॥ धन्य धन्य ऋषि शाप हमारे । आदि अनादि निगम नहिं जानत ते हरि प्रकट देह व्रज धारे ॥ धन्य नंद धनि मातु यशोदा धनि आँगन में खेलन वारे । धन्य श्याम धनि दाम बँधाए धनि ऊखल धनि माखन प्यारे॥ दीनबंधु करुणानिधि हहु प्रभु राखिलेहु हम शरण तिहारे । सूरश्यामके चरण शीश धरि स्तुति करि निज धाम सिधारे ॥ ॥ ४१ ॥ बिलावल ॥ यह जिय जानि गोपाल बँधाये शाप दग्ध द्वै सुत कुबेरके आनि भये तरु युगल सुहाये॥ व्याज रुदन लोचन जल ढारत ऊखल दाम सहित चलि आये । विटप भंजि यमलार्ज्जुन तारे करि स्तुति गोविंद रिझाये । तुम बिनु कौन दीन खलु तारै निर्गुण सगुण रूप धरि आये । सूरदास श्याम गुण गावत हर्षवंत निज पुरी सिधाये ॥ ४२ ॥ रामकली ॥ तरु दोउ धरणि परे भहराइ। जर सहित अरराइकै आघात शब्द सुनाइ ॥ भए चकृत लोग सब व्रजके रहे सकुचि डराइ । कोऊ रहे अकाश देखत कोऊ रहे शिरनाइ॥ घरिकलौं जकिरहे जहां तहां देह गति बिसराइ। निरखि यशुमति अजिर देखे बँधे नाहिं कन्हाइ ॥ वृक्ष दोउ महि परे देखे महरि कीन्ह पुकार। अबहिं आंगन छोड़िआइ च्प्यो तरुके डार॥ मैं अभागिनि बांधि राखे नंद प्राणअधार । शोर सुनि नँद दौरि आये विकल गोपी ग्वार ॥ देखि तरु सब अति डराने हैं बड़े बिस्तार॥ गिरे कैसे बड़ो अचरज नेकु नहीं बयार॥ दुहूँ तरु बिच श्याम बैठेरहे ऊखल लागि । भुजा छोरि उठाय लीने महरिके हैं बड़े भागि ॥ निरखि युवती अंग हरिके चोट जनि कहुँलागि । कबहुँ बांधति कबहुँ मारति महरि बड़ी अभागि ॥ नयन जल भरि ढारि यशुमति सुतहि कंठ लगाइ । जरहु रिस जिन तुमहिं बांध्यो लागै मोहिं बलाइ ॥ नंद मोहिं कहा कहैंगे देखि तरु दोउ आइ । मैं मरौं तुम कुशल रहौ दोऊ श्याम हलधर भाइ ॥ आइ घर जो नंद देखे तरु गिरे दोउ भारि । बांधि राखति सुतहि मेरे देत महरिहि गारि ॥ तात कहि तब श्याम दौरे महर लियो अंकवारी । कैसे उबरे कृष्ण तरुते सूरलै बलिहारी ॥ ४३ ॥ रागनट ॥ मेरे मोहन हौं तुमपर वारी । कंठ लगाइ लिये मुख चूमत सुंदर श्याम बिहारी ॥ काहेको दाम ऊखलसों बांध्यो है कैसी महतारी । अतिहि उतंग बयारि न लागत क्यों टूटे दोऊ तरु भारी ॥ वारंवार बिचारि यशोदा यह लीला अवतारी । सूरदास स्वामीकी महिमा कापर जात बिचारी ॥ ॥ ४४ ॥ सारंग ॥ अब घर काहूके जिनि जाहु । तुम्हरे आजु कमी काहेकी कत तुम अनतहिं खाहु ॥ बरैं जेवरी जिन तुम बांधे बरै हाथ महराई ॥ नंद मोहिं अतिही त्रासतहैं बांधे कुँवर कन्हाई ॥ रोग जाउ अपने हलधरकी छोरतहै तब श्याम। सूरदास प्रभु खात फिरो जिनि माखन दधि तुवधाम ॥ ४५ ॥ व्रजयुवती श्यामहि उर लावति । बारम्बार निरखि कोमल तनु कर जोरति बिधिको जुमनावति ॥ कैसे बचे अगम तरुके तर मुख चुंबति यह कहि पछितावति । उरहनोंलै आवति जेहि कारण सो सुख फल पूरण करि पावति ॥ सुनहु महरि इनको तुम बांधति भुज गहि बंधन चिह्न दिखावति । सूरदास प्रभु अति रति नागर गोपी हरषि हृदय लपटावति ॥ ४६ ॥

अथ यमलार्जुनउद्धारन दूसरी लीला ॥ राग बिलावल ॥ ग्वालि उरहनो भोरहि ल्याई । यशुमति कहां गयो तेरो कन्हाई ॥ माखन माथि भरि धरी कमोरी। अबहीं मोहन लै गयो चोरी ॥ भलो कर्म तैं सुतहि पढ़ायो । वारेहीते मूँड चढायो ॥ यह सुनतहि यशुमति रिस मानी । कहां गयो कहि सारंग पानी॥ खेलतते औचक हरि आये । जननी बांह पकरि बैठाये ॥ मुख देखत यशुमति पहिचानों। माखन वदन कहा लपटानों ॥ फिरि देखे द्वै तौ ग्वालिनि पाछे । माता मुख चितवत नहिं आछे चोरीके सब भाव बताये । माता सँटिया द्वैकलगाये ॥ माखन खान जात परघरको । बांधत तोहिं

नेकु नहिं धरको ॥ दांह गहे ढूंढ़ति फिरे डोरी। बांधौं तोहिं सकै को छोरी ॥ बांधि पची डोरी नाहि पूरै। वार वार खीझत रिस झूरै ॥ घर घरते जेवरि लैआई। मिसही मिस देखनको धाई ॥ चकित भई देखैं ढिग ठाढी। मनौ चितेरे लिखि लिखि काढी ॥ यशुमति जोरि जोरि रजु बांधै। आंगुर द्वैद्वै जेवरि सांधै॥जव जानी जननी अकुलानी। आपु वँधायो सारँगपानी। भक्त हेत दावरी वँधाई। सनकादिक सुतकी सुधि थाई। माता हेतु जनाहिं सुखकारी। जानि वँधायो श्रीवनवारी। मुख जँभात त्रिभुवन दिखरायो। चकित कियो तुरतहि विसरायो ॥ वाँधि श्याम वांहर लैआई। गोरस घर घर खात चुराई ॥ ऊखलसों गहि वांधि कन्हाई। नितहि उरहनो सह्यो न जाई ॥ इक कहि जाति एक फिरि आवै। रैनि दिना तू मोहिं खिझावै ॥ माखन दधि तेरे घर नाहीं। धाम भरो चोरी करि खाहीं॥ नवलख धेनु दुहत घर मेरे। केते ग्वाल रहत घर घेरे ॥ मथत नंद घर सहस मथानी॥ताके सुत चोरीकी वानी॥मोसों कहति आनि जव नारी॥वोलिजातु नहिं लाज न मारी॥नंद महरकी करें नन्हाई॥ वृद्ध वैस सुत भयो कन्हाई॥तुम्हरे गुण सव नीके जानै॥नित वरजौं कवहूं नाहिं मानै॥कोउ छोरैजनि ढीठ कन्हाई॥वांधे भुज दोउऊखल लाई॥भवन काजको गइ नँदरानी॥ आंगन छांडे श्याम विनानी॥उरहन देन ग्वालि जे आई॥तिन्हें यशोदा दियो वहराई॥चलीं सवै मिलि सोचति मनमें। श्यामहि गहि वांधेहैं क्षनमें॥ हँसत वात इक कही कि नाहीं। ऊखल सों वांध्यो सुत वाहीं ॥ कहा कहौं वा छविको माई। वांवी पर अहि करत लराई॥ कान्ह वदन अतिही कुँभिलान्यो मानौं कमलहि हिम तरसान्यौ ॥ डरते दीरघ नैन चपल अति। वदन सुधारस मीन करति गति। यह सुनि और युवति सव आई। यशुमति वांधे कहत कन्हाई॥ भली बुद्धि तेरे जिय उपजी ॥ ज्यों ज्यों दिनी भईत्यों निपजी ॥ छोरहु श्याम करहु मन लाहो। अति निर्दयी भई तू काहो॥देखोश्याम ओर नँदरानी। सकुचि रह्यो मुख सारँग पानी ॥ वाहिर वांधि सुतहि वैठारो। मथत दही माखन तोहिं प्यारो ॥ छांडि देहु वहि जाइ मथानी। सौंह दिवावति छोरहु आनी ॥ हांसी करन सवै तुम आई। अव छोरहुँ नहिं कुँवर कन्हाई॥ तुमहीं मिलि रसवाद वढायो। उरहन दैदै मूंड पिरायो। सवहिन गोधन सौंह दिवाई। चितैरहे मुख कुँवर कन्हाई ॥ कव तुमको मैं वोलि बुलाई। केहि कारण तुम धाई आई ॥ इह सुनि वहुरि चली मुरझाई। कहा करौं वलिजाउँ कन्हाई ॥ मूरखको कोइ कहा सिखावै। याकी मति कछु कहत न आवै ॥ नारि गई फिरि भवन आतुरी। नंद घरनि अव भई चातुरी॥ ओछी बुद्धि यशोदा कीनी। याकी जाति अवै हम चीन्ही॥ इहै कहत अपने घर आई माने नहीं कितौ समुझाई ॥ मथत यशोदा दही मथानी। तवहिं कान्ह ऐसी मति ठानी ॥ भक्त वछल हरि अंतर्य्यामी। सुत कुवेरके ये दोउ नामी ॥ यहि अवतार कह्यो इन तारण। इनको दुख अव करौं निवारण॥ जो जेहि ढंग तिहि ढंग सव लायो। यमलार्जुन पै प्रभु तव आयो ॥ वृक्ष वीच ऊखल लै अटक्यो। आगे निकसि नेक गहि झटक्यो॥ अरररात दोउ वृक्ष गिरे धर। अति आघात भयो व्रज ऊपर ॥ भए चकृत व्रजके सव वासी। यहि अंतर दोउकुअँर प्रकासी ॥ शंख चक्र कर शारंगधारी। भक्त हेतु प्रगटे वनवारी ॥ देखि,दरश मन हरप वढायो। तुमहि विना प्रभु कौन सहायो ॥ धनि व्रज कृष्ण जहां वपुधारी। धनि यशुमति व्रह्महि अवतारी ॥ धन्य नंद धनि धनि गोपाला। धन्य धन्य गोकुलकी वाला॥ धन्य गाइ धनि द्रुम वन चारन। धनि यमुना हरि करत विहारन ॥ धन्य उरहनो प्रातहि ल्याई। धनि माखन चोरत यदुराई ॥ धन्य सुजन ऊखल गाढि ल्याये। धन्य दाम भुज कृष्ण वँधाये ॥ गदगद कंठवचन मुख भारी। शरण राखिलेहु गर्व

प्रहारी ॥ वार वार चरणन परे धाई कृपा करी भक्तन सुखदाई ॥ साधु साधु कहि श्रीमुख वानी। विदाभये इहि भांति वखानी ॥ यमलार्जुन प्रभु तारि पठाये। नंद द्वार दोउ वृक्ष गिराये ॥ निरखि यशोदा आंगन आई। दुहूं वृक्ष विच बचे कन्हाई ॥ दौरिपरे ब्रजके नर नारी। नंदद्वार कछु होत गोहारी ॥ देखेआइ वृक्ष दोउ डारे। ये गुण यशुमति आहिं तुम्हारे ॥ तुरत छोरि ऊखलते ल्यायो। देखत जननि नैन भरि आयो ॥ वज्रदेह हरिकी है माई। जहां तहां विधि होत सहाई ॥ प्रथम पूतना मारन आई। पयपीवत वह तहां नशाई ॥ तृणावर्त लैगयो उड़ाई। आपुहि गिरचो शिलापर आई ॥ कागासुर आवत नहिं जान्यो। सुनी कहत ज्यौंलैंइ परान्यो ॥ शकटासुर पलना ढिग आयो। को जाने केहि ताहि गिरायो ॥ खेलत में केशीको मारचो। घीच मरोरिवहि धरनि पछारचो ॥ ग्वालनके सँग गये गोचारन। तहां वकासुर लाग्यो मारन ॥ कौन कौन कीर घर हरि टारचो यशुमति वांधि अजिर लै डारचो॥वहुतै उवरचो आजु कन्हाई। ऊपर वृक्ष गिरो भहराई ॥ कहा कहौं कहतन वनिआवै। तुरत आय हरि कौन वचावै ॥ सवहिन पेलि करत मनभाई पुण्य नंदके वच्यो कन्हाई ॥ मुख चूमति लै लै उर लाए। युवतिन करे आपु मनभाए ॥ लै जननी सुत कंठ लगावति। चोरीकी वातैं समुझावति ॥ मैंरिसही रिस करत लालसों। भुज वाँधे मन हँसति ख्याल सों॥मेरे जो तुम करत अचगरी। उरहन को ठाढ़ी रहैं सगरी॥वार वार तन देखति माई। गिरत वृक्ष कहुँ चोट न आई ॥ कहत श्याम मैं अतिहि डेरान्यो। ऊखल तर मैं रह्यो छिपान्यो ॥ वात सुतहि बूझत नँदरानी। कान्ह कहै मुख उरकी वानी ॥ हरिके चरित कथा नहिं जानै। यशुमति अति वालक करि मानै॥अखिल ब्रह्मांड जीवके दाता। माखन को वांधतिहै माता॥गुण अपार अविगति अविनाशी सो प्रभु घर घर घोष विलासी॥ ऊखल वँध्यो हेतु भक्तनके येइ माता येइ पिता जगतके॥यमलार्जुन को मोक्ष करायेपुत्र हेतु यशुदा गृह आये॥ऐसे हरि जनके सुखकारी। प्रगटे रूप चतुर्भुज धारी ॥ जो जेहि भाव भजै प्रभु तैसे। प्रेम वश्य हरि मिलहीं जैसे॥ सूरदास यह लीला गावै। कहत सुनत सवके मन भावै॥जो हरि चरित ध्यान उर राखै।आनँद सदा दुरित दुख नाखै ॥४९॥ मलार ॥ निगम स्वरूप देखि गोकुल हरि जाको दूरि दरश देवन्हको सो वांध्यो यशोदा ऊखल धरि ॥ चुटकिन दै दै ग्वाल नचावत नाचत कान्ह वाल लीला धरि। जेहि डर भ्रमत पवन रवि शशि जल सो क्यों डरै लकुटियाके डरि ॥क्षीर समुद्र शैन संतत जेहि माँगत दूधपतोखीदै भरि। सूरदास गुणके गाहक हरि रसना गाइ गये अनेक तरि ॥५०॥ सोरठ॥ जाको ब्रह्मा अंत न पावै। तापै नंदकी नारि यशोदा घरकी टहल करावै॥शेष सनक नारद गणेश मुनि जाको गुण नित गावै। निशि वासर खोजत पचिहारे मनशा ध्याननआवै धन्य धन्य गोकुल धनि वनिता वर निरखति श्याम वँधावै। सूरदास प्रभु प्रेमहिके वश संतन दरश दिखावै ॥५१॥ ॥ विलावल॥ गोविंद तेरोइस्वरूप निगम नेति नेति गावै।भक्तके वश श्यामसुंदर देह धरे आवै ॥योगी जन ध्यान धरत सपनेहु नहिं पावै। नंद घरनि वांधि वांधि कपि ज्यों नाच नचावै॥गोपी जन प्रेम आतुर तिनको सुख दीनो अपने अपने रस विलास काहू नहिं चीनो ॥ श्रुति स्मृति सव पुरान कहत मुनि विचारी सूरदास प्रेम कथा सवही ते न्यारी ॥ ५२॥ सारंग ॥ भूखो भयो आजु मेरो वारो। भोरहि ग्वालिनि उरहनो ल्याई उहि यह कियो पसारो ॥ पहिले रोहिणिसों कहि राख्यो तुरत करहु जेवनार। ग्वाल वाल सव वोलि लिये मिलि वैठे नंद कुमार ॥ भोजन वेगि ल्याउ कछु मैया भूख लगी मोहिं भारी। आजु सवारे कछु नहिं खायो सुनत हँसी

महतारी ॥ रोहिणि चितै रही यशुमति तन शिर धुनि धुनि पछितानी । परसहु वेगि वेर कत लावत भूखे सारँगपानी ॥ वहु व्यंजन वहु भांति रसोई पटरसके परकार । सूरश्याम हलधर दोउ भैया और सखा सव ग्वार ॥ ८३ ॥ सारंग ॥ नंदभवनमें कान्ह अरोगे । यशोदा ल्याई पटरस भोगे ॥ आसनदै चौकी आगे धरि । यमुना जल राख्यो झारी भरि ॥ कनक थारमें हाथ धुवाए । सत्रहसै तहँ भोजन आए ॥ लैलै धराति सवनके आगे । मातु परोसै जो हरि मांगे ॥ खीर खांड घृत लाव जलाडू । ऐसे होइ न अमृत खांडू ॥ और लेहु कछु सुत व्रजराजा । लुचई लपसी घेवर खाजा ॥ पेठा पाक जलेवी पेरा । गोंद पाग तिनगरी गिदोंरा ॥ गोझा इलाइची पाग अमिरती सीरोसा जो लै व्रजपती ॥ छोलि धरे खरवूजा केरा । शीतल वासु करत अति घेरा ॥ खारिक दाख अरु गरी चिरारी । पींड वदाम लेत वनवारी ॥ वेसन पुरी सुखपुरी लीजै । आछै दूध कमल सुख पीजै ॥ मैया मोहिं और किन प्यावै । धौरी को पय मोको भावै ॥ वेला भरि हलधर को दीनो । पीवत पय वल स्तुति कीनो ॥ ग्वाल सखा सवही पै अँचयो । नीके ओटि यशोदा रचयो ॥ दोना मेलि धरै है खजुवा । हौंस होइ तौ ल्याऊं पूवा । मीठे अति कोमलहैं नीके । ताते तुरत चभोरे घीके॥फिनी सेव अँदरसे प्यारे । लै आऊँ जेंवहु मेरे वारे ॥ हलधर कही ल्याउरी मैया । मोके दे नहिं लेत कन्हैया ॥ यशुमति हरप भरी लै परसति । जेवतहै अपनी रुचिसों अति कान्ह मांगि शीतल जललीयो । भोजन वीच नीर लै पीयो ॥ भातु पसाइ रोहिणी ल्याई । घृत सुगंध सुंदर दै ताई ॥ नीलावति चावर दिवि दुर्लभ । भात पएस्यो माता सुलभ ॥ मूंग मसूर उरद चना दारी । कनक वरण धरि फटक पछारी ॥ रोटी वाटी पोरी झोरी । एक कोरी एक घीव चभोरी ॥ गायो घृत भरि धरी कचौरी । कछु खायो कछु फेटो छोरी ॥ मीठे तेल चनाकी भाजी एक मकूनी दै मोहिं साजी॥मीठे चरपरे उज्ज्वल कौरा॥हौंस होइ तो ल्याऊं औरा॥मुगौरापकोरा पनोए पतोरा । एक कोरे भीजे गुर वोरा ॥ पापर वरी फुलारी मिथौरी । कूर वरी कचरी पिठोरी । वहुत मिरिचि दै किये निमोना । वेसनके दश वीसक दोना ॥ वनकोरा पिडि साचीचीडी । खीप पिंडारू कोमल भीडी ॥ चौलाई लाल्हा अरु पोई । मध्य मेलि निवुआनि निचोई ॥ रुचितल जान लोनिका फांगी । कढी कृपालु दूसरे मांगी ॥ सरसों मेथी सोवा पालक वथुवारांधि लियोजु उतालक ॥ हींग हर्दि मृच छौंके तेले । अदरख और आँवरे मेले ॥ सालन सकल कपूर सुवासित । स्वाद लेत सुंदर हरि आसित ॥ आंव आदिदे सवै संधाने । सव चाखे गोवर्द्धनराने ॥ कान्ह कहै हौं मातु अघानो । अव मोको शीतल जल आनो ॥ अचवन लै तव धोये कर मुख । शेप न वरने भोजनको सुख॥उज्ज्वल पान कपूर कस्तूरी।आरोगत मुखकी छवि रूरी ॥ चंदन अंग सखनके चरच्यो । यशुमतिको सुखका नहि परच्यो ॥ मांगि जूंठ सूरजलै लीनों । वांटि प्रसाद सवनको दीनों ॥ जन्म जन्म वाढ्यो जूठनिकौ । चेरो नंद महरके घरको ॥८४॥कान्हरो॥ मोहि कहति युवती सव चोर।खेलत रहौं कतहुं मैं वाहिर चितै रहति सव मेरेवोरे॥ वोलि लेति भीतर घर अपने मुख चूमति भरिलेति अकोर । माखन हेरि देति अपने कर कछु काहि विधिसों करति निहोर॥ जहां मोहिं देखति तहाँ टेरति मैं नहिं जात दोहाई तोर। सूरश्याम हँसि कंठ लगायो वैतरुणी कहां वालक मोर ॥ ८५ ॥ केदारो ॥ यशुमति कहति कान्हसों मेरे अपनें ही आंगन तुम खेलौ । वोलि लेहु सव सखा संगके मेरो कह्यो कवहुं जानिपेलौ ॥ व्रजवनिता सव चोर कहति तोहिं लाजन सकुच जातु मन मेरो । आज मोहि वलराम कहत है रूठेहि नाम लेतहै

तेरो ॥ जव मोहिं रिस लागति तव त्रासति बांधति जैसे चेरो ॥ सूर हँसति ग्वालिनि दे तारी चोर नाम कैसेहु सुत फऐ५६। अथ धेनु दुहनसीखनसमै भय॥ अध्याय एकादशी ॥ विलावल ॥ धेनु दुहत हरि देखत ग्वालिनि ॥ आपुन बैठिगए तिनके सँग सिखवहु मोहिं कहत गोपालनि ॥ काल्हि तुम्हैं गोदोहन सिखवैं दुही सबै अब गाइ। भोर दुहौ जे नंद दोहाई उनसों कहत सुनाइ ॥ वडो भयो अब दुहत रहौंगो अपनी धेनु निवेरी। सूरदास प्रभु कहत सौंहदै मुहिं लीजो तुम टेरी ॥ ५७ ॥ कान्हरो ॥ मैं दुहिहौं म्वहि दुहन सिखावहु। कैसे धार दूधकी वाजत सोइ सोइ विधि तुम मोहिं वतावहु ॥ कैसे दुहत दोहनीघुटुवन कैसे वछरा थनहि लगावहु। कैसे लै नोई पग बाँधत कैसे लेया पग अटकावहु॥ निपट भई अब साँझ कन्हैया गाइन प कहुँ चोट लगावहु। सूरश्याम सों कहत ग्वाल सब धेनु दुहन प्रातहि उठि आवहु॥५८॥ सारंग ॥ महर महरिके मन इह आई। गोकुल वहुत उपद्रव दिन प्रति वसिये वृंदावन अब जाई ॥ सब गोपन मिलि शकटा साजी सवहिनके मनमें इह भाई। सूर यमुन तट डेरा देई पांच वरसके कुअर कन्हाई ॥५९॥ विलावल ॥ जागहुहो तुम नंदकुमार। हौं वलिजाउँ मुखार्विंदकी गो सुत मेलो खरिक संभार ॥ इतनो कहा सोये मन मोहन और वार तुम उठत सवार। वारहि वार जगावति माता अंवुज नयन भयो भिनुसार ॥ दधि मथिकै माखन वहु दीनों सकल ग्वाल ठाढ़े दरवार। उठिकै मोहन वदन देखावहु सूरदासके प्राणअधार॥ ६० ॥ विलावल॥ जागहुहो ब्रजराज हरी। लै मुरली आँगन ह्वै देखौ दिनमणि उदित भयो द्वै घरी ॥ गो सुत गृह बँधन सब लागे गो दोहनकी जून टरी। निठुर वचन कहि सुतहि जगावति जननि यशोदा पासखरी भोर भयो दधि मथनहोतु सब ग्वाल सखाकी हांकपरी। सूरदास प्रभु दरशन कारण नींद छुड़ाई चरण धरी ॥ ६१ ॥ विलावल ॥ जागहु लाल ग्वाल सब टेरत । कवहुँ पीताम्बर डारि वदन पर कवहुँ उघारि जननि तन हेरत ॥ सोवतमें जागत मन मोहन वात सुनत सवकी अव टेरत ॥ वारंवार जगावति माता लोचन खोलि पलक पुनि घेरत ॥ पुनि कहि उठी यशोदा मैया उठहु कान्ह रविकिरणि उजेरत ॥ सूरश्याम हँसि चितै मात मुख पट करलै पुनि पुनि मुख फेरत ॥ ६२ ॥ ॥ सूहा विलावल ॥ जननी जगावति उठौ कन्हाई। प्रगट्यो तरणि किरणि गण छाई ॥ आवहु चंद्रवदन देखराइ। वार वार जननी वलिजाइ ॥ सखा द्वार सब तुमहि बुलावत। तुम कारण हम धाए आवत ॥ सूर श्याम उठि दरशन दीनो। माता देखि मुदित मन कीनो॥६३॥रामकली ॥ दाऊजू कहि श्याम पुकारयो। नीलाम्बर पट ऐंचि लियो हरि मनो वादरते चंद उतारयो ॥ हँसत हँसत दोउ वाहर आये माता लै जल वदन पषारयो ॥ दतवनि लै दुहुँ करी मुखारी नैननिको आलस जु विसारयो ॥ माखन खाहु दुहुन कर दीन्ह्यो तुरत मथ्यो मीठो अति भारयो । सूर दास प्रभु खात परस्पर माता अंतर हेत विचारयो ॥ ६४ ॥ विलावल जागहु जागहु नंदकुमार। रवि वहु चढ़े रैनि सवनिघटी उघरे सकल किवार ॥ वारि वारि जल पियति यशोदा उठु मेरे प्राण अधार। घर घर गोपी दह्यो विलोवहिं कर कंकन झनकार ॥ सांझ दुहुन तुम कह्यो गाइको ताते होत अवार। सूरदास प्रभु उठे सुनतही लीला अगम अपार ॥ ६५ ॥ तनक कनककी दोहनी दैदैरी मैया। तात दुहन सीखन कह्यो मोहिं धौरी गैया। अटपटे आसन वैठिकै गोथन कर लीनो। धार अनतही देखिकै ब्रजपति हँसिदीनो ॥ घर घरते आई सबै देखन ब्रजनारी। चितै चोरि चित हरिलियो हँसि गोप विहारी॥ विप्र बोलि आसन दियो करि वेद उचारी । सूरश्याम सुरभी दुही संतन हितकारी॥ ६६ ॥ अथवत्सासुरवध ॥ नटनारायनी ॥ चले वछरु चरावन ग्वाल। वृंदावन सब छाडि

कै लैगये जहँ घन ताल ॥ परम सुंदर भूमि देखत हँसत मनहि बढाइ । आपु लगे तहां खेलन वच्छ दिये बगराइ ॥जानिकै हलधर गये तहँ बाल वछरा पास ।रोहिणी नंदनहि देखत हरप भए हुलास॥ ताल रस बलराम चाख्यो मन भयो आनंद । गोपसुत सब टेरि लीने सुधि भई नंदनंद ॥ कह्यो वछरा हांकि ल्यावहु चलहु जहां कन्हाइ । तालरसके पानते अति मत्त भये बलराइ ॥ तहां छल करि दनुज धायो धरे वछरा भेपि । फिरत ढूढत श्यामको अति प्रबल बलको देपि ॥ सबै वछरनि घेरि ल्याए बहुन घेरचो जाइ । दाऊ कहि बालकनि टेरचो वृषभ सुतन धराइ ॥ कह्यो मन इहि अब हिं मारौं उठे बलहि सँभारि । टेरिलिये सब ग्वाल बालक गये आपु प्रचारि ॥ आगे ह्वै इतको बिडारचो पूछ हाथ लगाइ । पकरिकै भुजसौं फिरायो तालके तर आइ॥असुर लैं तरु सों पछारचो गिरचो तरु झहराइ तालसों ।तरु ताल लाग्यौ उख्यो वन घहराइ॥वछ असुरको मारि हलधर चले सबनि लिवाइ । सूर प्रभुको वीर जाकी तिहूं भुवन बडाइ ॥ ६७ ॥ राग देव गंधार ॥ बछरा चारन चले गोपाल । सुबल सुदामा अरु श्रीदामा संग लिए सब ग्वाल ॥ दनुज एक तहाँ आइ पहुँचेउ धरे वत्सको रूप । हरि हलधर दिशि चितइकब तुम जानतहो इहवीर ॥ कहेव आहि दानौ इहि मारौ धारे वत्स शरीर । तब हरि सींग गह्यो यक करसों यक करसों गहे पाइ ॥ थोरे कहि बलसो छिन भीतर दीनो ताहि गिराइ । गिरत धरनि पर प्राण गए चितवत फिरि नाहिं आयो श्वास ॥ सूरदास ग्वालन सँग मिलि हरि लागे करन विलास ॥ ६८ ॥ अथ वकासुर वध ॥ सारंग ॥ ॥ बन बन फिरत चरावत धेनु । श्याम हलधर संग है बहु गोप बालक सेनु॥तृपित भई सब जानि मोहन सखान टेरन वेनु । बोलि ल्यावो सुरभि गण सब चलौ यमुन जल देन ॥ सुनतही सब हांकिल्याए गाइ करी इकठेन । हेरी देदे ग्वाल बालक कियो यमुन तट गेन ॥ वकासुर रचि रूपमाया रह्यो छल करि आइ । चांचु यक पुहुमी लगाई इक अकाश समाइ ॥ आगे बालक जातहैं ते पाछे आए धाइ। श्यामसों सब कहन लागे आगे एक बलाइ॥ नितहि आवत सुरभि लीने ग्वाल गोसुत संग । कबहुँ नाहिं इहि भांति देख्यो आजको सो रंग ॥ मनहिं मन तब कृष्ण जान्यो इह वका असुर विहंग । चोंच फारि विदारि डारौं पलकमें करौं भंग ॥ निदरि चले गुपाल आगे बकासुरके पास । सखा सब मिलि कहनलागे तुम नजियके आस॥ अजहुँ नाहिं डरात मोहन बचे कितने गास । तब कह्यो हरि चलहु सब मिलि मारि करहि विनास ॥ चले सब मिलि जाइ देख्यो अगम तन विकरार । इत धरणि उत व्योमके बिच गुहाके आकार ॥ पैठि वदनु विदारिडारचौ अति भए विस्तार । मरत असुर चिकार पारचो मारचो नंदकुमार ॥ सुनत ध्वनि सबग्वाल डरपे अब न उबरे श्याम । हमहिं वरजत गयो देखो किये ऐसे काम ॥ देखि ग्वालन विकलता तब कहि उठे बलराम । वका वदन विदारि डारचो अबहिं आवत श्याम ॥ सखा हरि तब टेरिलीने सबै आवहु धाइ । चोच फारि वकासंहारचौ तुमहु करौ सहाइ ॥ निकट आए गोप बालक देखि हरि सुख पाइ । सूर प्रभुके चरित अगणित नेति निगम न गाइ ॥ ६९ ॥ व्रजमेंको उपज्यौ है यह भैया । संग सखा सब कहत परस्पर इनको गुण अगमैया ॥ जबते व्रज अवतार धरचौ इन कोउ नहिं घात करैया । किती बात यह वका विदारचो धनि यशुमति जिन जैया ॥ तृणावर्त पूतना पछारी तब अति रहे नन्हैया । सूरदास प्रभुकी लीला यह हम कत जिय पछितैया ॥ ७० ॥ धनाश्री ॥ वका विदारि चले व्रजको हरि । सखा संग आनंद करत सब अंग अंग वन धातु चित्र करि ॥ वनमाला पहिरावत श्यामहि वार वार अँकवारि भरत धरि। कंस निपात करोगे तुमही हम

जानी यह बात सही परि ॥ पुनि पुनि कहत धन्न नंद यशुमति जिन इनको जन्मौ सो धन्य घरि। कहतइहै सब जात सूर प्रभु आनंद आंसू भरित लोचन भरि॥७१॥कान्हरो॥ व्रज बालक सब जाइ तुरतही महर महरिके पाँइ परे। ऐसो पूत जनौ जग तुमही धन्य कोष जहँ श्याम धरे॥ गाइ लिवाइ गए वृंदाबन चरत चली यमुना तट हेरि। असुर एक खगरूप रह्यो धरि बैठो तीर बाइ मुख घेरि चोच एक पुहुमी करि राखी एक रह्योतौ गगन लगाइ।हरिहम वरजत पहलेहि धायो वदन चीरि पलमांहिं गिराई॥ सुनत नंद यशुमति चकृत चित सुन चकृत नर नारी। सूरदास प्रभु मन हरि लीनो तन जननी भरि लई अंकवारी ॥७२॥ अथ द्वादशमो अध्याय ॥ १२॥ अघासुरवध ॥ धनाश्री ॥ नंदसुत लाड़िले हौ सब व्रज जीवन प्रान।वारवारतमा कहै जागौ श्याम सुजान यशुमति लेति वलाइ भोर भयो उठौ कन्हाई। संग लिये सब सखा द्वारे ठाढ़े वल भाई॥ सुंदर वदन देखाइये हरौ नैननको तापु नैन कमल मुख धोइये कछु करौ कलेऊ आपु॥ माखन रोटी लेहु सद्यदधि रैनि जमायो। पट रसके मिष्टान्न सोई जेवहु रुचि आयो ॥ मोपै लीजै मांगिकै जोइ जोइ भावै॥तोहिंब संग जेवहि वलराम तुम रुचि उपजावहु मोहि। तब हँसि चितए श्याम सेजते वदन उघारचो। मानहु पयनिधि मथत फेन फटि चंद उजारचो॥ सखा सुनत देखन चले मानहुं नैन चकोर। युगल कमल मानौ इंदु पर बैठ रहे अति भोर॥ तव उठि आए कान्ह मातु जल वदन पखारचो। बोलि उठे बलराम श्याम कत उठ्यो सवारचो॥ दाऊजू कहि हँसि मिले वांह गहि वैठाइ। माखन रोटी सद्यदही हो जेवत रुचि उपजाइ॥ जल अचयो मुख धोइ उठे वल मोहन भाई। गाइ लई सब घेरि चले बन कुँवर कन्हाई। टेर सुनत बलरामकी आए बालक धाइ।लै आए सब घेरिकै वरते बछरा गाइ॥सखन्ह कान्ह सों कही आजु वृंदावन जैये। यमुना तट तृणबहुत सुरभि गण तहां चरैये॥ ग्वाल गाइ सब लै गए वृंदावन समुहाइ। अतिहि सघन बन देखिकै हरषि उठे सब गाइ॥ कोउ टेरत कोउ हांकि सुरभि गण जोरि चलावत। कोउ कोउ हेरी देत परस्पर श्याम सिखावत॥ अंतर्यामी कहतजीय सब हमहिं सिखावत ढेरी। श्याम कहत अबके गई पुनि धौली जहु फेरी॥ कोउ मुरली कोउ वेणु शब्द शृंगी को पूरे॥ कृष्ण कियो मन ध्यान असुर इकु वस्यो अधूरै॥ बालक बछराखिहौ एक बार लै जाऊ।कछुक जनाऊ अपनपौ हो अबलौं रहो सुभाऊ॥ असुर कुलहि संहारि धरणि को भार उतारों॥ कपटरूप रचि रह्यो दनुज यहि तुरत पछारों। गिरि समान धरि अगम तन बैठो वदन पसारि।मुख भीतर वन घन नदी माया छल करि भारि ॥ पैठिगए मुख ग्वाल धेनु बछरा संग लीने। देखि महावन भूमि हरे तन द्रुम कृत कीने॥ कहनलगे सब आपुसमें सुरभी चरी अघाई। मानहु पर्वत कंदरा मुख सब गये समाई॥ मुख सब गए समाय असुर तव चोच सकेरचो। अंधकार होय गयो मनहुँ निशिवादर घेरचो॥अतिहि उठे अकुलाइकै ग्वाल वच्छ सबगाइ। त्राहि त्राहि कहि कहि कै उठे परे कहाँ हम आइ॥धीर धारि कहि कान्ह असुर यह कंदर नाही।अनजानत सब परे अघा मुख भीतर माही॥ जिय त्याग्यौ यह सुनतही अब को सकै उबारि। बाते दूनी देह धरि तब असुरन सक्यो सँभारि॥ शब्द करचो आघात अघासुर टेरि पुकारचो। रह्यो अधर दोऊ चापि बुद्धि बल सुरति विसारचो॥ ब्रह्मद्वार फिरि फूटिकै निकसे गोकुलराइ। बाहिर आवहु निकसिकै मैं करि लियो सहाइ॥ बालक बछरा धेनु सबै मन अतिहि सकाने॥ अंधकार मिटिगये देखि जहां तहां अतुराने॥ आये बाहर निकसिकै मन सब कियो हुलास। हम अज्ञान कत डरतहैं कान्ह हमारे पास॥धन्य कान्ह धनि नंद धन्य यशुमति महतारी। धन्य लियो अवतारकोखि धनि जियहि दैतारी॥ गिरि समान तन अगम अगम अति पन्नगकी अनुहारी। हम देखत पल

एकमें मारचो दनुज प्रचारी ॥ हरि हँसि बोले बैन संग जो तुम नहिं होते । तुम सब सब किय सहाय भयो तब कारज मोते॥हमहुँ तुमहुँ मिलि बैठिकै वन भोजीकरियै जाइ।वंशीवट भोजन बहुत यशुमति दियो पठाइ। ग्वाल परमसुख पाइ कोटि सुख करत प्रशंसा । कहा बहुत जोभए सपूततौ एकै वंसा ॥ चढि विमान सुर देखहीं गगन रहे भरि छाइ । जै जै ध्वनि नभ करतहैं हरपि पुहुप वरपाइ॥ब्रह्मसुनी यह बात अमर घर घरनि कहानी।गोकुल लीनो जनम कौन यह मैं नाहिं जानी ॥ देखौं इनका खोजलै शोच परचो मनमाहँ।सूरश्याम ग्वालन लिये चले वंशीवटकी छाहँ ॥७३॥६॥

अथ तेरह अध्याय ब्रह्मा वत्स बालक हरन ॥ राग धनाश्री ॥ हरप भये नंदलाल बैठि तरुछाँहकी ॥ ग्वाल वालसंग करतकोलाहल छाँहकी ॥ वंशीवट अति सुखद और द्रुम पास चहूँहै । सखालिए तहां गए धेनु वन चरति कहूँहै ॥ बैठिगए सुखपाइकै ग्वाल बाल लिये साथ । अति आनँद पुलकित हियें गावतहैं गुणगाथ ॥ १ ॥ अहिर लिये मधु छाक तुरत वृंदावन आए । व्यंजन सहस प्रकार यशोदा वनहि पठाए ॥ श्याम कही वन चलतही मातासों समुझाइ । उतनेवै आए सबै देखतही सुखपाइ ॥ २ ॥ कान्ह देखि मधु छाक पुलकि अँग अंग बढ़ायो । हरि हँसि बोले तबै प्रेमसों जननि पठायो ॥ नीके पहुँचे आनिकै भला बनो संयोग। बार बार कहि सबनका आजु करौ सुखभोग ॥ ३ ॥ वनभोजी विधि करत कमलके पात मँगाये। तोरे पात पलाश सरस दोना बहुल्याये॥ भांति भांति भोजन धरे दधिलवनी मिष्टान। वनफर लये मँगाइकै लागे भोजन खान ॥ ४ ॥ वन भोजन हरि करत संग मिलि सुबल सुदामा। श्याम कुँवर परसन्न महर सुत अरु श्रीदामा। श्याम सबै मिलि खातहैं लै लै कौर छुँड़ाइ। औरन देत बुलाइके डहकि आपु सुख नाइ ॥ ५ ॥ब्रह्मा देखि विचार सृष्टि कोइ नई चलाई। मुहिं पठयो जिहि सौंपि ताहि कहिहौं काजाई ॥ देखौं धौं यह कौनहै बाल वत्स हरिलेउँ। ब्रह्मलोक लै जाउँगो यह बुधि करि दुख देउँ ॥ ६॥ अंतर्यामी नाथ तुरत विधि मनकी जानी। बालक दै दिये पठै धेनु वन कहूं हिरानी॥ जहां तहां वन ढूंढ़िकै फिरि आये हरि पास। श्याम सखन बैठारि करि आपुन गये उदास॥७॥ हरिलै बालक वत्स ब्रह्मलोकहि पहुँचाये। फिरि आवै जो कान्ह कहूं कोउ नाहिन पाये॥ प्रभु तबहीं जानोयहौ विधि लैगयो चुराइ। जोजेहि रँग जेहि रूपको बालक वच्छ वनाइ ॥ ॥८॥ ताते कीन्हे और ब्रह्म ह्रद नाल उपायो। अपनो करि तेहि जानि कियो ताका मन भायो ॥ उद्धारन मारन समर्थ मन हरि कीनो ज्ञान ।अनजाने विधि यह करी नये रचे भगवान॥९॥उहै वृद्धि उहै प्रकृति वहै पौरुष तनसबके। उहै नाउ बुहि भाउ धेनु बछरा मिलि रवके।वो श्याम कह्यो सब सखनको ल्यावहु गोधन फ़ेरि। संध्याको आगम भयो ब्रजतन हांको घेरि॥१०॥सुनत ग्वाल ले धेनु चले ब्रजवृंदावनते। कान्हहि बालक जानि डरे सब ग्वाल मनहिते॥मध्य कियेलै श्याम को सखा भये चहुँ पास। बच्छ धेनु आगे किये आवत करत विलास॥११॥ बाजत वेणु विपाण सबै अपने रँग गावत मुरली ध्वनि गौ रंभ चलत पग धूरि उडावत। मोरमुकुट शिर सोहई वनमाला पटपीत ॥ गोरज मुखपर सोहई मनहु चंद्रकण शीत ॥१२॥ देखि हरपि ब्रजनारि श्यामपर तन मन वारति। इकट रूप निहारि रही मेटति चित आरति ॥ कहा कहै छवि आजुकी मुख मंडित खुर धूरि । मानहुँ पूरन चंद्रमा कुहू रह्यो आपूरि ॥ १३ ॥ गोकुल पहुँचे जाइ गये बालक अपने घर । गोसुत अरु नर नारि मिली अतिहेत लाइ गर ॥ प्रेम सहित वे मिलतहैं जेउ सुत जायो आजु । यशुमति मिलि सुतसों कहति रैनिं करत केहि काजु ॥ १४ ॥ मैं घर आवन कहौं सखा सँग कोउ

नहिं आवै। देखत वन अति अगम डरौं वै मोहै डरपावै ॥ वार वार उर लाइकै लइ वलाइ पछिताइ। कालिहिते वेई सबै ल्यावहिं गाइ चराइ ॥ १५ ॥ यह सुनिकै हरि हँसे कालि मेरि जाइ बलैया। भूख लगी मोहिं बहुत तुरतहींदै कछु मैया ॥ माखन दीयो हाथकै यह तबलौ तुम खाहु तातो जलहै घामको तनक तेलसों न्हाहु ॥ १६ ॥ तब यशुमति गहि बाँह तुरत हरि लै अन्हवाए। रोहिणि करि जिवनार श्याम बलराम बुलाए ॥ जेंवत अति रुचि पावहीं परुसाति माताहेत। जेय उठे अँचवन लियो दुहुँ कर वीरा देत ॥ १७॥ श्याम उनीदे जानि मात रचि सेज विछायो। तापर पौढे लाल अतिहि मन हरष बढायो ॥ अघ मर्दन विधि गर्व हत करत न लागी वार ॥ सूरदास प्रभुके चरित पावत कोउ न पार ॥१८॥ ललित ॥ हौं नाहिन जगाइ सकति सुनु सुवात सजनीरी। अपने जान अजहुँ कान्ह मानतहैं रजनीरी॥ जब जब हौं निकट जाति रहति लागि लोभा। तनकी गति विसरि जाति निरखत मुख शोभा ॥ वचननिकौ बहुत करति शोचति जिय ठाढी । नैननि सुविचार करति देखत रुचि बाढ़ी ॥ यहि विधि वदनार्विंद यशुमति जिय भावै । सूरदास सुख की राशि कापै वरणि आवै ॥ ३७८ ॥ बिलावल ॥ नंदमहरके भावते जागो मेरे वारे । प्रात भयो उठि देखिये रवि किरणि उज्यारे ॥ ग्वाल बाल सब टेरहिं गैया बनचारन। लाल उठौ मुख धोइये लागीवदन उघारन ॥ मुखते पटु न्यारो कियो माता कर अपने । देखि वदन चकृत भई सौतुककी सपने ॥ कहा कहौं वह रूपकी को वरणि बतावै। सूर सु हरिके गुण अपार नंद सुवन कहावै ॥ ३७९ ॥ राग ललित ॥ उठे नंदलाल सुनत जननीकी वानी । आलस भरे नैन दोउ सकल शोभाकी खानी ॥ गोपीजन विथकितह्वै चितवत सब ठाढी । नैनकर चकोर चंद्र वदन प्रीति वाढी ॥ माता जलझारी लै कमलमुख पखारचौ । नैन नीर परसि करत आलसही विसारचौ ॥ सखा द्वार ठाढे सब टेरतहैं बनको। यमुना तट चलौ कान्ह चारन गोधनको ॥ सखा सहित जेवहु मैं भोजन कछु कीनो। सूरश्याम हलधर सब सखा बोलिलीनो ॥ ३८० ॥ बिलावल ॥ दोउ भैया जेवत माँ आगे। पुनि पुनि लै दधि खात कन्हाई और जननि पै मागे॥ अति मीठोदधि आजु जमायो बलदाऊ तुम लेहु। देखौ धौं दधि स्वाद आपु लै ता पाछे मोहिं देहु ॥ वल मोहन दोऊ जेंवत रुचिसों सुख लूटति नँदरानी । सूरश्याम अब कहत अघाने अँचवन मांगत पानी । ॥ रामकली ॥ द्वारे टेरतहैं सब ग्वाल कन्हैया आवहु वार भई । आवहु वेगि विलम जनि लावहु गैयां दूरि गई ।। इह सुनतहि दोऊ उठि धाए कछु अँचयो कछु नाहीं। कितिक दूरि सुरभी तुम छांडी वनतो पहुँची आहीं॥ग्वाल कह्यो कछु पहुँची ह्वैहैं कछु मिलिहैं मगमाहीं॥सूरश्याम बल मोहन भैया गैयन पूछत जाहीं ॥ ८१ ॥ बिलावल ॥ वन पहुँचत सुरभी लई जाई । जैहो कहां सख नको टेरत हलधर संग कन्हाई ॥ जेंवत परखलियो नहिं हमको तुम अति करी चडाई । अब हम जैहैं दूरि चरावन तुम सँग रहै बलाई ॥ यह सुनि ग्वाल धाइ तहां आए श्यामहि अंकमलाई सखा कहत यह नंद सुवनसों तुम सबके सुखदाई ॥ आज चलौ वृंदावन जैए गैया चरैं अघाई। सूरदास प्रभु सुनि हरषित भए घरते छाक मँगाई ॥८२ ॥ बिलावल ॥ चले सब वृंदावन समुहाइ। नंदसुवन सब ग्वालन टेरत लावहु गाइ फिराइ ॥ अति आतुरह्वै फिरे सखा सब जहां तहां आये धाइ। बूझत वात ग्वालकेहि कारण बोले कुँअर कन्हाइ॥ सुरभी वृंद तहीं को हांकी औरन लेहु बोलाइ। सूरश्याम यह कही सबनिसों आप चले अतुराइ ॥ ८३॥ धनाश्री ॥ गैयन घेरि सखा सब ल्याए। देख्यो कान्ह जात वृंदावन याते मन अति हरप बढाए॥ आपुसमें सब करत

कुलाहल धौरी धूमरि धेनु बोलाए। सुरभी हाँकि देत सब जहां तहाँ टेरि हेरि सुरगाए॥ पहुँचे आइ विपिन घन वृंदा देखत द्रुम दुख सबनि गवाए।सूरश्याम गए अघा मारि जब तादिनं ते यहि वन अब आए ८४॥ नटनारायणी ॥ चरावत वृंदावन हरि धेनु। ग्वाल सखा सब संग लगाए खेलतहैं करि चैनु॥ कोउ गावत कोउ मुरली बजावत कोउ विपान कोउ वेनु। कोउ निर्तत कोउ उघटि तारदै जुरि ब्रजबालक सेनु॥ त्रिविध पवन जहँ वहत निशिदिवस सुभग कुंज घनएनु। सूरश्याम निज धाम विसारत आवत यह सुख लेनु॥८५॥ धनाश्री ॥ वृंदावन मोको अति भावत। सुनहु सखा तुम सुवल श्रीदामा ब्रजते वन गऊ चारन आवत॥ कामधेनु सुरतरु सुख जितने सभा सहित वैकुंठ बोलावत। यह वृंदावन यह यमुना तट ये सुरभी अति सुखद चरावत॥ पुनि पुनि कहत श्याम श्रीमुखते तुम मेरे मन अतिहि सुहावत। सूरदास सुनि ग्वाल चकृत भये यह लीला हरि प्रगट देखावत॥ ८६॥ बिलावल ग्वाल सखा करजोरि कहतहैं हमहिं श्याम तुम जिनि विसरावहु। जहां जहां तुम देह धरतहो तहां तहां जनि चरन छडावहु। ब्रजते तुमहिं कहूंनहिं टारों इहै पाइ मैंहूं ब्रज आवत॥ यह सुख नाहीं भुवन चतुर्दश यह ब्रज यह अवतारबतावत। अवर गोप जे बहुरि चले घरतिनसों कहि सुख छाक मँगावत। सूरदास प्रभु गुप्त बात सब ग्वालनसों कहि कहि सुख पावत॥ ३८७॥ बिलावल ॥ कन्है याहेरिदे सुभग सांवरे गातकी मैं शोभा कहत उजाउँ। मोरपंख शिर मुकुटकी मुख मटकनिकी वलि जाउँ॥ कुंडल लोल कपोलनि झांई विहँसनि चितहि चुरावै।दशन दमक मोतिन्ह लर ग्रीवा शोभा कहत न आवै॥ उरपर पदिक कुसुम वनमाला अंग धुक धुकी बिराजै। चित्रित वाहु पौंचिआ पौंचै हाथ मुरलिकाछाजै। कटि पटपीत मेखला मुकुलित पाइन नूपुरु सोहै।आस पास वर ग्वालमंडली देखत त्रिभुवन मोहै॥ सब मिलि आनँद प्रेम बढ़ावत गावत गुण गोपाल। यह सुख देखत श्याम संगको सूरदास सब ग्वाल॥३८८॥कान्ह कांधे कामरि लकुट लिए कर घेरैहौं। वृंदावन में गऊ चरावे धौरी धूमरि टेरैहौं॥ लिये लिवाइ ग्वाल बुलाय जहाँ तहाँ वन वन हेरैहौं। सूरदास प्रभु सकल लोक पति पीतांबर कर फेरैहौं।३८९॥तोई हरिकांध कामरी काछे किये नागे पाइन गाइनकी टहल करतहैं। त्रिभुवनपति दिनपति नारी नरपति पंछिनपति रवि शशि जेहि डरतहैं॥शिव विरंचि ध्यान धरत भक्त त्रिविध ताप हरत तेहि तब उधरतहैं। सूरदास प्रभुके गुण निगम नेति नेति गावत तेई वन विहरतहैं॥॥ ३९०॥ नट॥ छाक लेन जे ग्वाल पठाए। तिनसों बूझति महरि यशोदा छांडि कन्हैयहि आए॥ हमहिं पठाय दिये नँद नंदन भूखे अति अकुलाए। धेनु चरावतहैं वृंदावन हम यहि कारण आए॥ यह कहि ग्वाल गए अपने गृह वनकी खवरि सुनाए। सूरश्याम बलराम प्रातही अध-जेंवत उठि धाए॥९१॥ सारंग॥ और ग्वाल सब गृह आए गोपालहि बेर भई। अतिहि अवेरभई लालनको अजहुंन छाक मँगाई॥ तवहींते भोजन करि राख्यो उत्तम दूध जँमाई। नाजानौ कान्ह कौन वन चारत अतिहि अवेर लगाई॥ राख्य करैं वै धेनु तुम्हारी नंदहि कहत सुनाई॥ पंचकी भीख सूर बल मोहन कहति यशोदा माई॥९२॥सारंग॥जोरति छाक प्रेमसों मैया। ग्वालन बोलि लए अध जेंवत उठि दौरे दोउ भैया॥तवहींते भोजन कीनो चाहत दियो पठाई।भूखे भए आजु दोउ भैया आपहि बोलि मँगाई॥ सद माखन साजो दधि मीठो मधु मेवा पकवान। सूरश्यामको छाक पठावति कहति ग्वारि सों जान॥ ९३॥ सारंग॥ घरहीकी यक ग्वारि बोलाई। छाक समग्री सबै जोरिकै वाके करदै तुरत पठाई॥ कह्यो ताहि वृंदावन जैये तू जानति सब प्रकृति कन्हाई। प्रेम सहित लै चली छाक वह कहाँ वे हैं भूखे दोउ भाई॥तुरत जाइ वृंदावन पहुँची ग्वाल वाल कहुँ

कोउ न बताई । सूरश्याम को टेरति डोलति कतहौ लाल छाक मैं ल्याई ॥ ९४ ॥ टोडी ॥ आजु कौने धौं बन चरावत गाइ कहां भई अबेर । बैठे कहां सुधि लेउँ कौन विधि ग्वारि करत अवसेर ॥ वृंदावन दै आदि सकल वन ढूंढ्यो जहां गायनकी टेर । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि कैसे दुरत दुराये कहौ धौं डुँगरनकी ओट सुमेर ॥ ९५ ॥ छाक लिये शिर श्याम बुलावति । ढूँढति फिरति ग्वारिनीके करि कहूं भेद नहिं पावति ॥ टेर सुनत काहूको श्रवणनि तहीं तुरत उठि धावति । पावति नहीं श्याम बलरामहि व्याकुल है पछितावति ॥ वृंदावन फिरि फिरि देखतिहै बोलि उठे तहाँ ग्वाल । सूरश्याम बलराम इहांहैं छाक लेहु किन लाल ॥९६॥ ॥ कान्हरो ॥ फिरत बन बन वृंदावन वंशीवट संकेत वट नट । नागर कटिकाछे खोरि केसरिकी कीये । पीत वसन चंदन तिलक मोर मुकुट कुंडल श्याम वन यह छवि लिये ॥ तनु त्रिभंग सुगंध अंग निरखि लज्जित रति अनंग ग्वाल बाल लिये संग प्रमुदित सब हिये॥सूरश्याम अति सुजान मुरली ध्वनि करत गान ब्रजजन मनको सुख दिये॥९७॥हरिको टेरति फिरति गुआरि।आई लेहु तुम छाक आपनी बालक बल बनवारि॥आजु कलेऊ करत बन्यो नहिं गैयन सँग उठिधाए । तुम कारण बन छाक यशोदा मेरेहि हाथ पठाए ॥यह बानी जब सुनी कन्हैया दौरि गए तेहि काजू ॥सूरश्याम कह्यो नीके आई भूख बहुतही आजू ॥ ९८ ॥बहुत फिरी तुमकाज कन्हाई। टेरि टेरि मैं भई बावरी दोउ भैया तुम रहे लुकाई॥जे सब ग्वाल गए ब्रज घरको तिनसों कहि तुम छांक मँगाई।लवनी दधि मिष्टान्न जोरिकै यशुमति मेरे हाथ पठाई ॥ ऐसी भूखमांझ तू ल्याई तेरी केहिविधि करौं बड़ाई ॥ सूरश्याम सब सखन पुकारत आवहु क्यों न छाक है आई ॥ ९९ ॥ सारंग ॥ गिरिपर चढि गिरि वर धर टेरे ॥ अहो सुबल श्रीदामा भैया ल्यावहु गाइ खरिकके नेरे ॥ आई छाक अबार भई है नैसुकु धैया पिअहुँसबेरे ॥ सूरदास प्रभु बैठि शिलनि पर भोजन करैं ग्वाल चहुँ फेरे ॥ ४०० ॥ नट ॥ बिहारी लाल आवहु आई छाक । भई अबार गाइ बहुरावहु उलटावहु दैहांक ॥ अर्जुन भोज अरु सुबल श्रीदामा मधु मंगल इकताक ॥ मिलि बैठे सब जेवन लागे बहुत बन्यो कहि पाक ॥ अपनी पत्रावलि सब देखत जहां तहां फेनी पिराक । सूरदास प्रभु खातग्वाल संग ब्रह्म लोक यह धाक ॥ १ ॥ सारंग ॥ आई ॥ आई छाक बुलाए श्याम ॥ यह सुनि सखा सबै जुरि आए सुबल सुदामा अरु श्रीदाम ॥ कमलपत्र दोना पलाशके सब आगे धरि पुरुसत जात । ग्वाल मंडली मध्यश्यामघन सब मिलि भोजन रुचि करि खात ॥ ऐसी भूखमांझ इह भोजन पठै दियो करि यशुमति मात । सूरश्याम अपनो नहिं जेंवत ग्वालन करते लैलैखात ॥ २ ॥ सखन संग हरि जेंवत छांक।प्रेम सहित मैयादै पठए सबै बनाएहैं एकताक।सुबल सुदामा श्रीदामा संग सब मिलि भोजन रुचि सों खात । ग्वालन करते कौर छडावत मुखलै मेलि सराहत जात ॥ जो सुख कान्ह करत वृंदावन सो सुख नहीं लोकहूं सात । सूरश्याम भक्तनवश ऐसे ब्रजहि कहावत हैं नंदतात ॥ ३ ॥ ग्वाल मंडलीमें बैठे हैं मोहन बरकी छहिया दुपहरीकी बिरियां संगलीने । येकमथत दोहनी दूध येकबंटावत फलचबैने ॥ एकनिकर हरि झगरि लेत ऐसबनि आपनी कमर के आसन कीने । जेंवतहै अरु गावत कान्ह सारंगीकी तान लेत सखनिके मध्य विराजत छाक लेत कर छीने सूरदास प्रभुको मुख निरखत सुररीझिहैरैं सुमननि बरषत सभीने ॥४॥ ग्वालन करते कौर छँडावत । जूठो लेत सबनके मुखको अपने मुखलै नावत ॥ षटरसके पकवान धरे सब तामें नहिं रुचि पावत । हाहा करि करि मांगि लेतहै कहत मोहिं अति भावत ॥ यह महिमा एई पै

जानें जाते आप बँधावत।सूरश्याम स्वपने नहिं दरशत मुनिजन ध्यान लगावत ॥ ५ ॥ व्रजवासी पटतर कोउ नाहिं । ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत इनकी जूठनिलेलेखाहिं॥धन्यनंद धनि जननि यशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई । धन्य धन्य वृंदावनके तरु जहां विहर तत्रिभुवनके राई ॥ हलधर कह्यो छाँक जेवत संग मीठो लगत सराहत जाइ । सूरदास प्रभु विश्वंभर हैं ते ग्वालनके कौर अघाइ ॥ ६ ॥ सारंग ॥ शीतल छहियां श्याम बैठे जानि भोजनकी वरिआ । वाम भुजा सखा अंश पर दीने लीने दक्षिण कर द्रुमडरिआ । चलिये जूनैकगाइनिवेरौ जुवलरामसों कहत बोलि लेहु आपने वोरिआ । सूरदास प्रभु बैठे कदम तर गइयाको दूध निकरिया ॥ ७ ॥ नट नारायण ॥ विधि मनहीमन सोचपर्‌यो।गोकुल की रचना सब देखत अति जिय मांहडर्‌यो॥मैं विरंचि विरच्यो जग मेरो यह कहि गर्व वढायो।व्रज नर नारि ग्वाल बालक कहि कौने ठाठ रचायो ॥ वृंदावन वट सघन वृक्ष तर मोहन सबै बोलाये । सखा संग मिलि करि भोजी विधि विधि मन भरम उपाये ॥ धेनु रही वन भूलि द्वै बालक भ्रम तन पाये । याते श्याम अतिहि अतुराने तुरत तहां उठि धाए वालक वच्छ हरे चतुरानन ब्रह्मलोक पहुँचाये ॥ सूरदास प्रभु गर्व विनाशन नव कृत फेरि बनाये ॥८॥सारंग॥जेवत छाक गाइ बिसराई।सखा श्रीदामा कहत सबनिसों छाकहि में तुमरहे भुलाई॥धेनु नहीं देखियत कहूं नियरे भोजन हमिमें सांझ लगाई।सुरभी काज जहां तहां उठि धाये आपु तहां उठि चले कन्हाई ॥ ल्याये ग्वाल घेरि गो गो सुत देखि श्याम मनहरपवढाई।सूरदास प्रभु कहत चलौ घर वनमें आजु अबार कराई ॥ ९ ॥ गौरी ॥ व्रजहि चलौ आई अब सांझ । सुरभी सबै लेहु आगे करि रैनि होइपुनि वनही मांझ । भली कही यह बात कन्हाई अतिहि सघन आरण्य जारि ॥ गैयां हांकि चलाई व्रजको औंर ग्वालसव लिए पुकारि॥ निकासिगएवन ते सव बाहिर अति आनंद भए सव ग्वाल ॥ सूरदास प्रभु मुरली वजावत व्रजआवत नटवर गोपाल ॥१०॥ कल्याण ॥ सुंदर श्याम सुंदर वर लीला सुंदर बोलत वचन रसाल।सुंदर चारु कपोल विराजत सुंदर उरजवनी वनमाल ॥ सुंदर चरण सुंदर हैं नख मनि सुंदर है कुंडल मकराल । सुंदर मोहन नैन चपल किए सुंदर ग्रीवा वाहु विसाल ॥ सुंदर मुरली मधुर वजावत सुंदर हैं मोहन गोपाल। सूरदास जोरी अति राजति व्रजको आवत सुंदर चाल ॥ ११ ॥ सुंदर श्याम सखा सव सुंदर सुंदर भेप धरे गोपाल । सुंदर पथ सुंदर गत आवनि सुंदर मुरली शब्द रसाल ॥ सुंदर लोग सकल व्रज सुंदर सुंदर हलधर सुंदर चाल । सुंदर वदन विलोकनि सुंदर सुंदर गुण सुंदर वनमाल। सुंदर गोप गाइ अतिसुंदर सुंदर गुण सव करत विचार । सूरश्याम संग सव सुख सुंदर सुंदर भक्तहेत अवतार ॥ बिलावल॥ सुंदर ढोटा कौनको सुंदर मृदुवानी ॥ कहि समुझायो ग्वालिनी जायो नँदरानी ॥ सुन्दरता मूरति देखके वन घटा लजानी।सुंदर नैन निहार लियो कमल नको पानी ॥ सुन्दर तिहुँलोककी व्रजपुरमें आनी॥ सूरदास यशुमति भई सुंदरता रजधानी ॥ ॥ १२ ॥ गौरी ॥ देखि सखी वनते जुवने व्रज आवतहैं नँदनंदन ॥ शिखंडी शीश मुख मुरली वजावत वन्यो तिलक उर चंदन । कुटिल अलक मुख चंचल लोचन निरखत अति आनंदन ॥ कमल मध्य मानों द्वै खग खंजन वधें आइ उहि फंदन । अरुण अधर छवि दशन विराजति जव गावत कलमंदन । मुक्ता मनों लालमणिमें पुट धरे मुरकि वरवंदन । गोप भेप गोकुल गोचारत हैं प्रभु असुर निकंदन। सूरदास प्रभु सुयशवखानत नेति नेति श्रुति छंदन॥१३॥मेरे नैन निरखि सुख पावत । सँध्या समै गोप गोधन संग वनते बनेलाल व्रज आवत ॥ वलि वलि जाउँ मुखारविंदकी मंद

मंद गति धावत ॥ नटवर रूप अनूप छबीलो सबहीके मनभावत ॥ गुंजा उर वनमाल मुकुट शिर वेणु रसाल बजावत। कोटि किरण मणि मुख परकाशत उडपति कोटि लजावत॥चंदन खौरि काछनी की छबि सबके मनहि चुरावत। सूरश्याम नागर नारिनको वासर विरह वसावत॥राग केदारा॥सोभा कहत कहै नहिं आवै। अचवत अति आदर लोचन पुट मन न रूपको पावै। सजल मेघ घनश्याम सुभगवपुतडित वसन उरमाल॥सिखीसिखिर तनु धातु विराजति सुमन सुगंध प्रवाल॥कछुक कुटिलको विपिन सघन शिर गोरज मंडित केश॥ सोभित मनो अंबुज परागरस राजत अली सुदेस॥ कुंडल किरिन कपोल कुटिल छबि नैन कमल दलमीन।प्रतिप्रति अंग अंग कोटिकछबि सुनुसखी परम प्रवीन॥अधरमधुर मुसुकानि मनोहर कोटि मदन मनहीन। सूरदास जहां दृष्टि परतहै होत तहीं लवलीन॥१५॥बहुरि वालविमत्स हरन ॥ धनाश्री॥ ब्रजकी लीला देखि ज्ञानु विधिको भयो भारी। त्रिभुवन नाइक आनि भयो गोकुल अवतारी। खेलत ग्वालन संग रंग आनंद मुरारी। सोभित संग ब्रजवाल लाल गोवर्धन धारी॥ घर घरते छाकै चलीं मान सरोवर तीर। नारायण भोजनकरैं बालक संग अहीर॥ १॥ व्यंजन सकल मँगाइ सखनिके आगें राखे॥ खाटे मीठे स्वाद सबे रसलैलै चाखे। रुचि सों जेवत ग्वाल सब लैलै आपुन खात॥ भोजनको सब खादलैं कहत परस्पर बात॥ ॥ २॥ देखत गणगंधर्व सकल सुरपुरके बासी। आपुसमें वै कहत हँसत एई अविनासी॥ देखि सबै अचरजु भए कहौ ब्रह्मसों जाइ। जाको अविनाशी कहत सो ग्वालनसँग खाइ ॥ ३ ॥इह सुनि ब्रह्मा चल्यो तुरत वृंदावन आयो। देखि सरोवर सलिल कमल तिहि मध्य सुहायो॥ परम सुभग यमुना वहै तहां वहै त्रिविध समीर॥ पुहुपलता द्रुम देखिकै चकृत भयो मतिधीर॥४॥अतिरमणीक कदंबछाँह रुचि परम सुहाई। राजत मोहन मध्य अवलि बालक छबिपाई॥ प्रेम मगनह्वै परसपर भोजन करत गुपाल। ल्यावहु गोसुत घेरिकै प्रभु पठएद्वै ग्वाल॥५॥ वन उपवन सब ढूंढि सखा हरिपै फिरि आए। बछराभए अदृष्ट कहूं खोजतनहिंपाए सबै सखा बैठे रहौ मैं देखौं धौंजाइ। वच्छ हरन जिय जानि प्रभु आपुगए वहराए॥६॥जब गोविंद गए दूरि बालकन हरयो विधाता लेहैं तुरत मँगाइ आपु ह्वैहैं जगत्राता॥ब्रह्मलोक ब्रह्मा गयो बालक वच्छा संग।प्रभुकी लीला गम नहीं कियो गर्व अति अंग॥७॥तब चिंतामणि चितै चित्त इक बुद्धि विचारी। बालक वच्छ बनाइ रचे वेही उनिहारी॥ करत कुलाहल सब गए ब्रज घर अपने धाइ॥अति आदर करि करि लिये अपनी अपनी माइ॥८॥ ब्रह्मा कियो विचार जाय ब्रज गोकुल देख्यो। करिहैं सोकु संताप जाइ पितु मातहि देखो।आए तहां विधना चले घर घर देखौं आइ। संध्या समै होत कौतूहल जहां तहां दुहियै गाइ॥ ९॥ यह गोकुल कीधौं और किधौं हौही भ्रम भूल्यो। यह अविनाशी होइ ज्ञान मेरे भ्रम झूल्यो॥अंतर्यामी जानि धौं हरौं वच्छ लै आइ।जगत पितामै संभ्रम्यो गएलोक फिरि धाय॥ १०॥ देख्यो जाइ जगाइ बाल गोसुत जहां राखे। विधि मन चकृतभये बहुरि ब्रजको अभिलाखे॥ छिन भूतल छिन लोकमे छिन आवे छिन जाइ। ऐसेहि करत वरषदिन बीतो थकित भये विधि पाइ॥ ११॥ तब हरि प्रगट्यो जानि ज्ञान चितमें जब आयो। धृग धृग मेरी बुद्धि कृष्णसों वैर बढ़ायो॥ लै गोसुत गोपाल शिशु सरनगयो है साधु। चारिहु मुख स्तुति करत प्रभु क्षमौ मोहि अपराधु॥१२॥ अन जानत यह करी मैं तुमहींसों बरिआई। येमेरे अपराध क्षमहु त्रिभुवनके राई।ज्यों बालक अपराध शत जननी लेति संभारी। शरन गए राखत सदा अवगुण सकल बिसारी॥ १३॥ जोरे उदित खद्योत ताहि क्यों तिमिर नशावै।

दीपक बहुत प्रकाश तरनिसम क्यों कहवावै॥ मैं ब्रह्मा इलोकको ज्यों गूलरि बिचजीव। प्रभु तुमरे इक रोम प्रति कोटि ब्रह्म अरुसीव ॥ १४ ॥ मिथ्या यह संसार और मिथ्या यह माया ॥ मिथ्या है इहदेह कहो क्यों हरि बिसराया। तुम जाने बिन जीव सब उत्पति प्रलय समाहिं ॥ शरण मोहिं प्रभु राखिये चरण कमलकी छाहिं ॥ १५ ॥ करहु मोहिं ब्रजरेणु देहु वृंदावन वासा। मांगौं यहै प्रसाद और नहिं मेरे आशा ॥ जोई भावै सो करहु तुम लता सलिल द्रुम ग्रेहु। ग्वाल गाइ को भृतु करौ मनौ सत्य व्रत एहु ॥ जो दरशन नर नाग अमर सुरपति हूं न पायो। खोजत युग गए बीति अंत मोहूं न दिखायो॥ यह व्रज पारस नित्यहै मैं अब समुझो आइ। वृंदावन रजह्वै रहौ मोहिं नहिं लोक सुहाइ ॥ १७ ॥ माँगत बार बार शेष ग्वालनिको पाऊं। आप लियो कछु जानि भक्ष करि उदर जियाऊं॥ अब मेरे निज ध्यान यह रहिहौ जूठनि खाइ। और विधाता कीजिये मैं नहिं छाँडो पाइ॥ १८ ॥ तब प्रभु बोले आपु वचन मेरो अब मानौ। और काहि विधि करों तुमहिंते कौन सयानो॥ तुम ज्ञाताहौ कर्म धर्मके तुमते सब संसार। मेरी माया अति अगम कोऊ न पावै पार॥ १९ ॥ श्रीमुख वाणी कहत विलंब अब नेक न लावहु। व्रज परिकर्मा करहु देहको पाप नशावहु॥ तुरत जाहु कही लोकको यहि विधि करि मनुहार। ब्रह्मा करि स्तुति चले हरि दीनो उरहार ॥ २० ॥ धनि बछरा धनि बालक जिनिहिनै दरशनपायो। उर मेरो गयो धन्य कृष्ण माला पहिरायो॥ धनि यशुमति जिन वश किए अविनाशी अवतारी। धनि गोपी जिनके सदन माखन खात मुरारी ॥२१॥ धनि गोपी धनि ग्वाल धन्य ये व्रजके वासी। धन्य यशोदानंद भक्ति वश कीन्हें अविनाशी॥ धनि गोसुत धनि गाइये कृष्ण चराये आपु। धनि कालिन्द्री मधुपुरी जादरशन नाशे पापु ॥२२॥ मथुरा आदि अनादि देह धरि आपन आए। धनि देवै वसुदेव पुत्र तुम मांगे पाए॥ चारि वदन मैं कहा कहौं सहसानन नाहिं जान। गाइ चरावत ग्वाल सँग करत नंदकी आन॥ २३ ॥ योगी जन अवराधि फिरत जिहिं ध्यान लगाए। ते ब्रजवासिन संग फिरत अति प्रेम बढाए॥ वृंदावन व्रजको महतु कापै वरण्यो जाइ। चतुरानन पग परशिकै लोक गयो सुख पाइ॥ २४ ॥ हरि लीनां अवतार कहत शारद नहिंपावै। सतगुरकृपा प्रसाद कछुक ताते कहि आवै॥ सूरदास कैसे कहै महापातित अवतार। शेष सहस मुख जपतहै सोऊ न पावै पार॥२५॥सारंग॥कह्यो गोपाल चरतहैं गोसुत हम सब बैठि कलेऊ कीजै शीतल छांह वृक्षकी सुंदर निर्मल यमुनाको जल पीजै॥भोजन करत सखा इक बोल्या बछरू कतहूं दूरिगये यदुपति कह्यो घेरि हौं आनौं तुम जेवहु निश्चित भए॥ चतुरानन बछरालै गोए फिरि माधौ आए वांहि ठाऊं।बालक वच्छ हरे लोकेश्वर बार बार टेरत लें नाऊ॥ जान्यों छल ब्रह्मा मन मोहन गोपी गाइ बहुत दुख पैहैं।तजिहैं प्राण सबै मिलि सुतको निश्चय गृह जो आजु नजै हैं।वाही भाँति बरन वपु वैसहि शिशु सब रचे नंदसुत आन।आगे वच्छ पाछे व्रज बालक करत चले मधुरे सुर गान॥पूरब प्रीति अधिक ताहूते करति व्रजवनिता अरु धेनु। सूरज प्रभु अच्युत व्रज मंगल घरही घर लागे सुखदेनु ॥२६॥ कान्हरो ॥ आज बने बनते व्रज आवत। नानारंग सुमनकी माला नंद नंदन उर पर छवि पावत। संग गोप गोधन संग लीने नाना गति कौतुक उपजावत। कोउ गावत कोउ नृत्य करत कोउ उघटत कोउ ताल बजावत॥रांभत गाइ वच्छ हित सुधि करि प्रेम उँमगि थन दूध चुवावत।यशुमति बोली उठि हरषित ह्वै कान्हों धेनु चराये आवत।इतनी कहत आइगये मोहन जननी दौरि हिये लै लावत। सूरश्यामके कृत यशुमतिसों ग्वाल बाल कहि प्रगट सुनावत ॥२७॥

गोविंद चलत देखियतु नीके। मध्य गुपाल मंडली विराजति कांधे धरि लीएसीके॥ वछरा वृंद घेरि आगे करि जन जन शृंग वजाए।जानौं वन कमल सरोवर तजिकै मधुप उनींदे आए॥ वृंदावन प्रवेश अघ मारचो वालक यशुमति तेरो।सूरदास प्रभु सुनति यशोदा चितै वदन प्रभुकेरो॥ ॥ २८ ॥ बिलावल ॥ आजु यशोदा जाइ कन्हैया महादुष्ट इकु मारचो। पन्नग रूप गिले शिशु गोसुत यहि सब साथ उवारचो॥ गिरि कंदरा समान भयो वड़ जब अघ वदन पसारचो। निदरि गुपाल बैठि मुख भीतर खंड खंड करि डारचौ॥ याके वल हम वदत नकाहू सकल भुवन तृण चारचो।जीते सवै असुर हम आगे यह कह उनहि निहारचो॥हरषि गए सब कहत महरिसों अवहिं अघासुर मारचो। सूरदास प्रभुकी यह लीला को को भुलएनपारचौ॥२९॥ यशुमति सुनि सुनि चकित भई। मैं वरजति बन जात कन्हैया का धौं करै दई॥ कहां कहांते उवरचो मोहन नेकन तऊ डरात। आप जे कहीं तनकसों बातैं सुनहु वनहु में घात॥ मेरो कह्यो सुनो जो श्रवणन कहति यशोदा खीझति। सूरश्याम कह्यो वनहि नजैहो यह कहि मन मन रीझति॥ ३० ॥ गौरी॥ मैया बहुत बुरो बलदाऊ। कहन लगे वन वडो तमाशो सब मौंडा मिलि आऊ॥ मोहूंको चुचकार गएलै जहां सघन बन झाऊ। भागि चले कहि गयो वहांते काटि खांइहै हाऊ॥ होहूँ डरप्यो कांपौ पुकारौ दाऊ कोउ नहिं धीर धराऊ। थरसल गयो न भाग सकौं वै भागे जात अगाऊ॥ मोसों कहत मोलको लीनो आपु कहावत साहु। सूरदास बल बड़े चबाई तैसे मिले सखाहु॥ ३१॥ नट॥हरिकी लीला कहत न आवै। कोटि ब्रह्मांड छनक में नाशै छिनहीमें उपजावै॥ बालक वच्छ ब्रह्म हरिलैगयो ताको गर्व नवावै। ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीझति फिरि पछितावै॥ शिव सनकादि अंत नहिं पावै भक्त वछल कहवावै। सूरदास प्रभु गोकुलमें सो घर घर गाइ चरावै॥ ३२॥ सारंग॥ब्रह्मा बालक बच्छहरे। आदि अंत प्रभु अंतर्यामी मनशाते जो करे॥ सोई रूप वे बालक गोसुत गोकुल जाइ परे। एक वरष निशि वासर रहि सँग काहुन जानि परे॥ त्रास भयो अपराध आप लखि स्तुति करत खरे। सूरदास स्वामी मनमोहन तामें मन न धरे॥३३॥ राग नट॥ तब हरि हरचो विधिको गर्व। बच्छ बालक लैगयो धरि तुरत कीन्हों सर्व॥ब्रह्म लोक चुराइ राख्यो चरित देखन आपु।बच्छ बालक देखिकै मन करत पश्चात्तापु॥ तव गयो विधि लोक अपने दृष्टिकै फिरि आइ।जानि जिय अवतार पूरण परचो पाँयनि धाइ॥बहुतमैं अपराध कीनो क्षमा कीजै नाथ।जानि यह मैं नहीं कीन्हीं जोरि कर रह्यो माथ॥ वच्छ बालक आनि सन्मुख शरण शरण पुकारि। सूरप्रभुके चरण गहि कहि निकट राखु मुरारि॥ ३४॥ धनाश्री॥ ब्रज व्यवहार निरखिकै नैननि ब्रह्माको अभिमान गयो। गोपी ग्वाल फिरत सँग चारत होंहूं क्यों न भयो॥ व्यंजन वरा करवर पर राखत ओदन मधुर दयो। आपन खात खवावत औरन कवन विनोद ठयो॥ सखा संग पयपान करावत अपनो हाथ लियो। शंकर ध्यान धरत युग वीते इह रस तऊन दयो। अहो भाग अहोभाग नंदसुत तपको पुंज लियो। लीला सुभग सूरकी ब्रजमें सबकोउ गाइ जियो॥ ॥ ३५॥ जयतश्री॥ वदत विरंचि विशेष सुकृत ब्रजवासिनके। श्री हरि जिनके भेप सुकृत ब्रजवासिनके॥ ज्योति रूप जगनाथ जगत् गुरु जगत् पिता जगदीश। योग जज्ञ जप तप में दुर्लभ गइ यां गोकुल ईश॥ इक इक रोम विराट कोटि तन कोटि कोटि ब्रह्मंड।सो लीन्ह्यो अवछंग यशोदा अपने भरि भुजदंड॥ जाके उदर लोक त्रय जल थल पंचतत्त्व चौखानि। सो बालकह्वै झूलत पलना यशुमति भवनहि आनि॥ क्षिति मिति त्रिपद करी करुना मै बलि छलि

दियो पत्तार। देहरि ऊलँघिसकत नहि सो अब खेलत नंददुआर ॥ अनुदिन सुरतरु पंचसुधारस चिंतामणि सुरधेनु। सो तजि यशुमति को पै पीवत भक्तनको सुखदेन॥ रवि शशि कोटिकला अवलोकत त्रिविध ताप क्षय जाइ। सो अंजन करलै सुतकहि चक्षु आँजति यशुमति माइ॥ दाता भुक्ता हरता करता विश्वंभर जग जानि।ताहि लाहि माखनकी चोरी बांधे यशुमति रानि॥वेद वेदांत उपनिषद अरपैसो भख भुक्ता नाहि । गोपी ग्वालनिके मंडल में सो हँसि जूठनिखाहि ॥ कमलानायक त्रिभुवनदायक दुख सुख जिनके हाथ । कांधे कमरिआ कांख लकुटिया विहरतवन वछ साथ॥ वकी वकारसुट शकट तृणावर्त अघ प्रलंबविप भास। केसी कंसको वह गति दीनी राखे चरन निवास॥ भक्तवछल अखिल अंतर्यामी रहे सकल भरपूर । मारग रोकि रह्यो द्वारेपरि पतित शिरोमणि सूर॥३६॥ गूढ़मल्लार ॥ आदिसनातन हरि अविनासी।सदा निरंतर घट वट वासी॥ पूरण ब्रह्म पुराण वखानै।चतुरानन शिव अंत न जानै।गुणगण अगम निगम नहिं पावै।ताहि॥यशोदा गोद खिलावै॥ एक निरंतर ध्यावै धानी। पुरुष पुरातनहै निर्वानी॥जप तप संयम ध्यान न आवै। सोई नंदके आंगन धावै॥लोचन श्रवणनि रसना नासा।नापद पानि न तनपरगासा॥ विश्वंभर निज नाम कहावै।घर घर गोरस जाय चुरावै॥शुक शारदसे करत विचारा।नारदसे पावहिं नहिंपारा॥अवर वरन सुर तीनहि धारै। गोपिंनिकोसो वदन निहारै ॥ जरा मरनते रहित अमाया। माता पिता सुत वंधु न जाया॥ ज्ञान रूप हृदयमें बोलै। सोनंद महरके आंगन डोलै॥ जल धर अनिल अनल नभछायो। पंच तत्त्व मिलि जगत् उपायो॥ कालडरै जाके डरभारी। सोऊखल बांध्यो महतारी॥ माया प्रगट सकल जगमोहै। कारन करन करैसो सोहै ॥ ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावै। सोगो कुलमें गाइ चरावै॥ अच्युत रहै आद्य जलसाईं।परमानंद परम सुखदाई॥ लोकरचैराखै प्रतिपारै सो ग्वालन संग लीला धारै । गुण अतीत अविगत न जनावै । यश अपार श्रुति पार न पावै ॥जाकी महिमा कहत न आवै ॥ सो गोपिन संग रासरमावै ॥ जाकी महिमालखै न कोई । निर्गुन सगुण धरै वपु सोई ॥ चौदह भुवन पलकमे टारै । सो बनवीथिनकुटी सँवारै। चरण कमल नितरमापलोवै । चाहतनै कनैन भरि जोवै ॥ अगम अगोचर लीला धारी॥ सोराधावश कुंज विहारी॥भागवडे जे सकल व्रजवासी। जिनके संगरमे अविनाशी॥ जोरस ब्रह्मादिक नहिं पावै। सोरस गोकुल गली कहावै। सूरसुयश कहि कहा वखानै । गोविंदकी गति गोविंद जानै॥ ३७॥ मलार॥ विनवै चतुरानन कहि भोरै। तुव प्रताप जान्यो नहिं प्रभुजू कर स्तुति कर जोरैं॥ अपराधी मतिहीन नाथ हौं चूक परी निज धोरैं। हम कृत दोषुक्षमौ करुणा मय ज्यों भूपर सत ओरैं॥ युग युग विरधइहै चलि आयो सत्य कहतु अब होरैं। सूरदास प्रभु पछिलै लेखें अब न बनै मुख मोरैं॥ ३८॥ सारंग॥ माधव मोहिं करौ वृंदावन रेनु। जिन चरन न डोलत नंद नंदन दिन प्रति चारत धेनु॥ कहा भयोहै देव देह धरि अरु ऊंचो पद पायो ऐनु। सब जीवनलै उदर मांझ प्रभु महाप्रलय जल करत है सैनु॥ हमते धन्य सदा वैतृण द्रुम बालक वच्छ विपानरुवैन। सूरश्याम जिनके सँग डोलत हँसि बोलत मथि पियतहै फेन॥ ३९॥ राग सारंग॥ ऐसे वसिए व्रजकी वीथिनि। ग्वालनके पनवारे चुनि चुनि उदर भरैए सीथिनि॥ पैंडेके सब वृक्ष विराजत छाया परम पुनीतनि ॥ कुंज कुंज प्रति लोटि लोटि रतिरज लागे रंगरीतनि॥ निशि दिन निरखि यशोदानंदनु अरु यमुनाजलतीतिनि। परसत सूर होत तन पावन दरशन करत अतीतनि॥४०॥ धनि यह वृंदावनकी रेनु॥ नंदकिसोर चराई गैया मुखहि बजावत वेनु ॥

मदन मोहनको ध्यान धरै जो अति सुखपावत चैनु । चलत कहा मन वसत पुरातन जहां लैन नहीं दैनु॥ इहां रहौ जहां जूठनिपावै ब्रजवासीके जैनु। सूरदासह्यांकी सरवरि नहिं कल्प वृक्ष सुरधेनु ॥४१॥ गौरी ॥ अघामारि आए नंदलाल ॥ ब्रज युवती सुनिकै उठि धाई घर घर कहत फिरत सब ग्वाल ॥ निरखत वदन चकित भई सुंदरि मनही मन इह करि अनुमान। कहति परस्पर सत्यबात यह कौन करे इनकी सर आन। एई हैंरतिपतिके मोहन एई हैं हमरे पति प्रान ॥ सूरश्याम जननी मन मोहत वार वार मागत कछुखान ॥ ४२ ॥ माँगि लेहु जो भावै प्यारे। वहुत भांति मेवा सब मेरे षटरसके परकारहै न्यारे॥ सबै जोरि राखति हित तुम्हरे मैंजानतितुववानि। तुरतमथो माखन दधि आछो खाहु देइ सो आनि ॥ माखन दधि मोहिं लागत प्यारो औरन भावै मोहि। सूरजननि माखन दधि दोनो खात हँसतु मुख जोहि।।४३।।चकई भौंराखेल ॥नसमै विलावल॥ दे मैया भँवरा चकडोरी। जाइलेहु आरेपर राखो काल्हि मोलले राखे कोरी॥ लैआये हँसि श्याम तुरतही देखिरहे रँगरँग वहु डोरी। मैया विन और को राखै वार वार हरि करत निहोरी॥ वोलि लिए सब सखा संगके खेलत श्याम नंदकी पौरी।तैसेइ हरितैसई सब वालक कर भवँरा चकरीनिकी जोरी॥ देखति जननि यशोदा यह छवि विहँसत वार वार मुख मोरी। सूरदास प्रभु हँसि हँसि खेलत ब्रजवनिता तृण डारत तोरी॥ ४४ ॥ कान्हरो ॥ मेरे हियरे मांझ लागे मनमोहन लैगयो मन चोरी। अवहीं इहि मारगह्वै निकसे छवि निरखत तृण तोरी॥ मोर मुकुट श्रवणन मणि कुंडल उर वनमाला पीत पिछोरी। दशन चमक अधरन अरुणाई देखत परी ठगोरी ॥ ब्रज लरिकन सँग खेलत डोलत हाथ लिए फेरत चकडोरी। सूरश्याम चितवत गए मोतन तन मन लिएअजोरी॥४५॥टोडी॥तवते मोरो जिव न रहि सकत।जित देखों तितही वह मूरति नैननिमें नित लग्योई रहत ॥ ग्वाल वाल सब संग लगाए खेलतमें करि भाव चलत। उरझि परचो मेरो मनु तवते कर झटकत चकडोरी हलत ॥ अब मैं कहा करौं मेरी सजनी सुरति होत तव मदन दहत। सूरश्याम मेरो चित हरिलीन्हौं सकुच छांडि अव तोहिं सों कहत॥४६॥ श्रीराधाकृष्णजीका प्रथम मिलाप ॥ राग टोडी ॥ खेलन हरि निकसे ब्रज खोरी। कटि कछनी पीतांबर ओढे हाथ लिए भौंरा चकडोरी ॥ मोर मुकुट कुंडल श्रवणन वर दशन दमक दामिनि छवि थोरी। गए श्याम रवि तनयाके तट अंगलसति चंदनकी खोरी॥ औचकही देखी तहां राधा नयन विशाल भाल दिए रोरी। नील वसन फरिया कटि पहिरे वेनी पीठि रुचिर झकझोरी॥ संग लरिकिनी चली इत आवति दिन थोरी अति छवि जन गोरी। सूरश्याम देखतहीं रीझे नैन नैन मिलि परी ठगौरी ॥ ४७ ॥ राग टोडी ॥ बूझत श्याम कौन तू गोरी। कहां रहति काकीहै वेटी देखी नहीं कहूं ब्रज खोरी॥काहेको हम ब्रजतन आवति खेलति रहति आपनी पौरी। सुनति रहति श्रवणनि नँद ढोटा करत रहत माखन दधि चोरी॥तुम्हरो कहा चोरि हम लैहैं खेलन चलौ संग मिलि जोरी॥सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि वातन भुरइ राधिका भोरी॥ ४८ ॥ धनाश्री ॥ प्रथम सनेह दुहुँन मन जान्यो। सयन सयन कीनी सब वातैं गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटान्यो॥ खेलन कवहुं हमारे आवहु नंद सदन ब्रज गांव। द्वारे आइ टेरि मोहिं लीजो कान्हहै मेरो नाउं ॥ जो कहिये घर दूरि तुम्हारे वोलत सुनिये टेर। तुमहि सौंह वृषभानु ववाकी प्रात सांझ एक फेर॥ सूधी निपट देखियत तुमकौं ताते करियत साथ। सूरश्याम नागर उत नागरि राधा दोउ मिलि गाथ ॥४९॥ रागनट॥ सैननि लई नागरि समुझाई। खरिक आवहु दोहनीलै यहै मिस छल पाइ॥गाइ

गनती करन जैहैं मोहिं ले नँदराइ । वोलि वचन प्रमाण कीने दुहुँन आतुरताइ ॥ कनक वदन सुढार सुंदरि सकुचि मुख मुसुकाइ। श्याम प्यारी नैन राचे अति विशाल चलाइ॥गुप्त प्रीति जु प्रगट कीन्ह्यो हृदय दुहुन छिपाइ । सूर प्रभुके वचन सुनि सुनि रही कुँवारि लजाइ॥५०॥ सारंग॥ गई वृष भानुसुता अपने घर। संग सखी सों कहति चली यह को जैहै खेलन इनके दर ॥ वड़ी वेर भइ यमुना आए खीझति ह्वैहै मैया । वचन कहति मुख हृदय प्रेम दुख मन हरि लियो कन्हैया ॥ माता कही कहांहुती प्यारी कहां अवार लगाई । सूरदास तव कहति राधिका खरिक देखि मैं आई ॥ ५१ ॥ ॥ रामकली ॥ नागरि मन गई अरुझाइ। अति विरह तनु भई व्याकुल घर न नेक सुहाइ ॥ श्याम सुंदर मदनमोहन मोहनी सी लाइ । मात पितुको त्रास मानति मन विना भई वाइ ॥ जननिसों दोहनी मांगति वेगि देरी माइ। सूर प्रभुको खरिक मिलि हौं गए मोहिं वोलाइ ॥ ५२ ॥ धनाश्री ॥ मोहिं दोहनी देरी मैया । खरिक माहिं अवहीं ह्वै आई अहिर दुहुत अपनी सव गैया ॥ ग्वाल दुहत तव गाइ हमारी जव अपनी दुहिलेत । घरिक मोहिं लगिहै खरिकामें तू आवै जनि हेत ॥ शोचति चली कुँवरि घरहींते खरिका गइ समुहाइ। कव देखौं वह मोहन मूरति जिन मन लियो चुराइ॥ देखो जाइ तहां हरि नाहीं चक्रत भई सुकुमारि । कवहूं इत कवहूँ उत डोलत लागी प्रीति खुम्हारि॥ नंद लिए आवत हारि देखे तव पायो विश्राम ।सूरदास प्रभु अंतर्यामी कीन्ह्यो पूरण काम॥५३॥नंद गये खरिकै हरि लीन्हे देखी तहां राधिका ठाढ़ी श्याम बुलाइ लई तहँ चीन्हें ॥ महर कह्यो खेलहु तुम दोऊ दूरि कहूं जनि जैहो । गनती करत ग्वाल गैयन की मुहिं नियरे तुम रहियो॥सुनु वेटी वृषभानु महरकी कान्हहिलिये खिलाइ । सूरश्यामको देखे रहिहो मारै जनि कोउ गाइ॥ ५४ ॥ राग नट ॥ नंद ववाकी वात सुनो हरि। मोहिं छांड़िकै कवहुँ जाहुगे ल्याऊंगी तुमको धरि ॥ भली भई तुम्हें सौंपिगये म्वहिं जान न देहौं तुमको । वाहँ तुम्हारी नेकु न छडिहौं महरिखीझिहै हमको मेरीवाहँ छाँडिदे राधा करत उपर फट वातैं । सूरश्याम नागर नागरिसों करत प्रेमकी वातैं ॥५५॥ नट ॥ नीवी ललित गही यादौराई। जवहिं सरोज धरो श्रीफलपर तव यशुमति गइ आई ॥ तत्क्ष ण रुदन करत मनमोहन मनमें बुधि उपजाई। देखो ढीठ देति नहिं माता राखो गेंद चुराई॥काहेको झकरोरत नोखे चलहु न देउ वताई । देखि विनोद वाल सुतको तव महरि चली मुसिकाई॥ सूरदा सके प्रभुकी लीला को जानै इहि भाई ॥ राग धनाश्री । वातनमें लइ राधा लाइ। चलहु जैये विपि न वृंदा कहत श्याम बुझाइ ॥ जव जहां तन भेष धारौं तहां तुम हित जाइ। ने कहू नाहिं करौं अंतर निगम भेद न पाइ ॥ तुव परशि तन ताप मेटौं काम द्वंद्व वहाइ। चतुर नागरि हँसि रही सुनि चंद्र वदन नवाइ ॥ मदनमोहन भाव जान्यो गगन मेघ छिपाइ। श्याम श्यामा गुप्त लीला सूर क्यों कहै गाइ ॥ ५६॥ अथ सुख विलास ॥ रागगौडमलार ॥गगन गरजि घहराइ जुरी घटा सेत कारी।पौन झकझोर चपला चमकि चहूं ओर सुवन तन चितै नंद डरत भारी ॥ कह्यो वृषभानुकी कुँवरिसों वोलिकै राधिका कान्ह घर लियेजारी।दोऊ घर जाहु संग नभ भयो श्याम रंग कुँवर गह्यो वृषभान वारी ॥ गये वन घन ओर नवल नँदनंदकिशोर नवल राधा नए कुंज भारी। अंग पुलकित भए मदन तिनतन गए सूरप्रभु श्याम श्यामाविहारी ॥ ५७ ॥ कामोद ॥ नयो नेहु नयो गेहु नयो रस नवल कुँवरि वृपभानु किशोरी। नयो पीतांवर नई चूनरी नई नई वूंदनि भीजति गोरी ॥ नए कुंज अति पुंज नए द्रुम सुभग यमुन जल पवन हिलोरी।सूरदास प्रभु नवलरस विलसत नवल राधिका यौवन भोरी ॥ ५८ ॥ कान्हरो ॥ नवल गुपाल नवेली राधा नये प्रेमरस पागे। नव तरु वन विहार

दोऊ क्रीडत आपु आपु अनुरागे॥ शोभित शिथिल वसन मनमोहन सुखवत सुखके वागे। मानहुँ बुझी मदनकी ज्वाला बहुरि प्रजा नर लागे॥ कबहुँक बैठि अंश भुज धरिकै पीक कपोलनि दागे। आति रसराशि लुटावत लूटत लालच लगे सभागे॥ मानहुंसूर कल्पद्रुमकी निधि लै उतरी फल आगे॥ नहिं छूटति रति रुचिर भामिनी ता सुखमें दोउ पागे॥ ५९॥ राग मलार॥ उतारतहै कंठहिते हार। हरिहीमि लत होतहै अंतर यह मन कियो विचार॥ भुजावाम पर कर छवि लागति उपमा अंत न पार। मनहु कमल दल कमल मध्यते यह अद्भुत आकार॥ चुवत अंग परस्पर जनु युग चंद करत हितवार। रसन वसन भरि चापि चतुर अति करत रंग विस्तार॥ गुणसागर अरु रससागर निधि मानत सुख व्यवहार। सूरश्याम श्यामा नवसर मिलि रीझे नंदकुमार॥ ६०॥ कान्हरो॥ नवल किशोर नवल नागरिया। अपनी भुजा श्याम भुज ऊपर श्याम भुजा अपने उर धरिया॥ क्रीडा करत तमाल तरुन तर श्यामा श्याम उमँगि रस भरिया। यों लपटाइ रहे उर उर ज्यों मर कत मणि कंचन में जरिया॥ उपमा काहि देउँको लायक मन्मथ कोटि वारने करिया। सूरदास बलि बलि जोरी पर नंदकुँवर वृषभानु दुलरिया॥ ६१॥ गौरी॥ आजु नँदनंदन रंग भरे। विवि लोचन सुविशाल दोउनके चितवत चित्त हरे॥ भामिनि मिले परम सुख पायो मंगल प्रथम करे। करसों करज करयो कंचन ज्यों अंबुज उरोज धरे॥ आलिंगन दै अधर पान कर खंजन खंज लरें। हठ करि मान कियो नव भामिनि तव गहि पाइँ परे॥ लैगए पुलिन मध्य कालिंदी रस वश अनंग अरे। पुहुप मंजरी मुक्तनमाला अंग अंग अनुराग भरे॥ सुरति नाद सुख वेन सुधा सुनि तपिअनतप जो टरे। रचना सूर रची वृंदावन आनँद काज करे॥ ६२॥ नट॥ हरि हँसि भामिनी उर लाइ। सुरतिवंत गुपाल रीझे जानी अति सुखदाइ॥ हरषि प्यारी अंक भरि पिय रही कंठ लगाइ। हाव भाव कटाक्ष लोचन कला कोक सुभाइ॥ देखि वाला अतिहि कोमल सुख निरखि मुसुकाइ। सूर प्रभु रति पतिके नायक राधिका समुझाइ॥ ६३॥ गौड मलार॥ नवल सुनि नवल पिया नयो नयो दरश विवि तन मलमले प्राणपति पीयको अधर धरचोरी॥ प्रीतिकी रीति प्राण चंचल करत निरखि नागरि नैन चिवुक सो मोरी॥ तव कामकेलि कमनीय चंदपचकोर चातक स्वाति बूंदपरचोरि॥ सुनि सूरदास रस राशि रस वरसिकै चली जनु हरति लै कूहुस गोरी॥ गृह गवन॥ राग गौरी॥ तुरत गए नंद सदन कन्हाई। अंकुश दै राधा घर पठई वादर जहँ तहँ दिए उड़ाई॥ प्यारीकी सारी आपुनलै पीतांवर राधा उर लाई। जो देखै यशुमति हरि ओढे मन यह कहति कहा धौंपाई॥ जननी नैन तवहिं लखिलीने तवहिं श्याम इक बुद्धि उपाई। सूरदास सुतसों यशुमति कहै पात उढनियां कहां गवाई॥ ६४॥ सारंग॥ पीत उढ़नियां कहां विसारी। यहतौ लाल ढिगनिकी औरै है काहूकी सारी॥ हौं गोधन लैगयो यमुन तट तहां हुती पनिहारी। भीर भई सुरभी सब बिडरीं मुरली भली सँभारी॥ हौं लैगयो और काहूकी सो लैगई हमारी। सूरदास प्रभु भली बनाई बलि यशुमति महतारी॥ ६५॥ धनाश्री॥ मैयारी मैं जानत वाको। पीत उढनियां जो मेरी लैगई लै आनौ धारि ताको॥ हरिकी माया कोउ न जानै आँखि धूरिसी दीनी। लाल ढिगनिकी सारी ताको पीत उठनियां कीनी॥ पीतांवर लै जननि दिखायो लै आन्यो तेहि पास। सूर मनहि मन कहति यशोदा तरुनि पढ़ा वत गास॥ ६६॥ श्यामहि देखि महरि मुसुकानी। पीतांबर काके घर विसरयो लाल ढिग नकी सारी आनी॥ ओढ़नी आनि दिखाई मोको तरुनिनकी सिखई बुद्धि ठानी। घर घर लै मेरो सुत भुरवति ऐसी सबै दिननकी जानी। हरि अंतर्यामीरतिनागर जानि लई जननी पहिचानी॥

सूर निरखि मुख सकुचि भगाने या लीलाकी यहै सयानी ॥ ६७ ॥ कल्याण ॥ सुंदरि गई गृह समुहाइ। दोहनी कर दूध लीन्हे जननि टेरि बुलाइ ॥ प्रेम प्रीति निचोल हरिको कहूं धरयो जुछि पाइ।औरकी औरै कहति कछु माता मनहि डराइ॥ कुँवरिको कहुँ डीठि लागी निरखिके पछिताइ। सूर तब वृपभानु घरनी राधिका उर लाइ ॥ ६८ ॥ जननी कहति कहा भयो प्यारी। अबहीं खरि क गई तू नीके आवतही भई कौन बिथारी ॥ एक बिटिनियां सँग मेरेथी कारे खाई ताहि तहांरी। मों देखत वह परी धरणि गिरि मैं डरपी अपने जिय भारी। इयाम वरण एक ढोटा आयो यह नहिं जानत रहत कहारी। कहत सुनो वह नंदको वारो कछु पढिकै वह तुरतहि झारी ॥ मेरो मन भरिगयो त्रासते अब नीको मोहिं लागतु मारी। सूरदास अति चतुर राधिका यह कहि समुझाई महतारी ॥ ६९ ॥ गौंड मल्लार ॥ कुँवरिसों कहति वृपभानु घरनी। नेक नहिं घर रहति तोहिं कितनो कहति रिसानि मुहिं दहति वन भई हरनी। लरिकिनी सबनि घर तोसी नहीं कोऊ निडर चलत नभ चितै जो तकै धरनि। बडी करवर टरी सांपसों ऊबरी बातके कहत तोहिं लगति जरनि लिखी मेटै कौनु कर्ता करै जौन सोई ह्वैहै होनहारी करनि ॥ सुता लई उरलाइ तन निरखि पछि ताइ डरनि गई कुँभिलाइ सूर वरनि॥७०॥महर वृपभानके यह कुमारी। देवधामी करत द्वार द्वारे परत पुत्र द्वै तीसरी यहै वारी॥भई वरप सातकी शुभ घरी जातकी। प्यारी दुहुँ भ्रातकी वचीभारी कुँवरि दई अन्हवाइ गई तन मुरझाइ वसन पहिराइ कछु कहति खारी ॥ जाहि जनि खरिक तन खेलि अपने सदन यह सुनत हँसति मन इयाम नारी। सूरप्रभु ध्यान धरि हरपि आनंद भरि गाँव घर खेलिहौं कहति कारी ॥ ७१ ॥ श्री राधिका जीका यशोदा गृह गवन ॥ आसावरी ॥ खेलनके मिस कुँवरि राधिका नंदमहरके आईहो । सकुच सहित मधुरे करि बोली घरहौ कुँवर कन्हाई हो ॥ सुनत इयाम कोकिल सम वाणी निकसे अति अतुराईहो । मातासों कछु करत कलह हरि सो डारयो विसराईहो ॥ मैयारी तू इनको चिन्हाति वारंवार वताईहो। यमुना तीर कालिह मैं भूल्यौं वांह पकरि लै आईहो । आवति यहां तोहिं सकुचति है मैं दै सोंह वुलाईहो । सूरइयाम ऐसे गुण आगर नागरि वहुत रिझाईहो ॥ ७२ ॥ को जानै हरिकी चतुराई। नयन सयन संभापण कीनो प्यारीकी उर तपनि बुझाई ॥ मनहीं मन दोउ रीझि मगन भए अति आनँद उरमें न समाई । कर पल्लव हरिभाव वतावत एक प्राण द्वै देह बनाई ॥ जननी हृदय प्रेम उपजायो कहति कान्हसों लेहु बुलाई।सूरइयाम गहि बांह राधिका ल्याए महरि निकट बैठाई ॥ ७३ ॥ सूही ॥ देखि महरि मनही जु सिहानी । बोलि लई बूझति नँदरानी कुँवरि कहति मधुरे मधुवानी॥ब्रजमें तोहिं कहूं नहिं देखी कौन गाउँ है तेरो। भली करी कान्हहि गहि ल्याई भूल्यौ तो सुत मेरो ॥ नयन विशाल वदन अति सुंदर देखत नीकी छोटी। सूर महरि सवितासों विनवति भली इयामकी जोटी ॥ ७४ ॥ रागनट ॥ नामु कहाहै तेरो प्यारी। बेटी कौन महरकी है तू कहि सु कौन तेरी महतारी ॥ धन्य कोख जिन तुमको राख्यो धन्य घरी जिहि तू अवतारी। धन्य पिता माता धनि तेरो छवि निरखति हरिकी महतारी ॥ मैं बेटी वृपभानु महरकी मैया तुमको जानति। यमुना तट बहु बार मिलन भयो तुम नाहिन पहिचानति॥ ऐसी कहि वाको मैं जानति वैतो वढी छिनारि। महर वडो लंगर सब दिनको हँसत देति मुख गारि॥ राधा बोलि उठी बाबा कछु तुमसों ढीठयो कीनी। ऐसे समरथ कब मैं देखे हँसि प्यारी उर लीनी॥ महरि कुँवरिसों यह कहि भापति आउ करौं तेरि चोटी।सूरदास हरपी नँदरानी कहति महरि हम जोटी॥ ॥ ७५ ॥ गारी ॥ यशुमति राधा कुँवरि सँवारति। बड़े बार श्रीवंत शीशके प्रेम सहित लै लै निर

वारति ॥ मांग पारि बेनीहि सँवारति गूंथी सुंदर भांति । गोरे भाल बिंदु बंदन मनौं इंदु प्रात रवि क्रांति ॥ सारी चीर नई फरिया लै अपने हाथ बनाइ । अंचलसों मुख पोंछि अंग सब आपुहि लै पहिराइ ॥ तिल चाँवरी बतासे मेवा दियो कुँवरिके गोद । सूरश्याम राधा तन चितवत यशुमति मन मन मोद॥७६॥ अथ श्याम राधा खेलन समय ॥ कल्याण ॥ खेलो जाइ श्याम सँग राधा यह सुनि कुँवरि हरष मन कीनों मिटी जु अंतर बाधा॥जननी निरखि चकित भई ठाढी दंपति रूप अगाधा॥देखत भाव दुहुँनको सोई जो चित करि अवराधा॥ संग खेलत दोउ झगरन लागे सोभा बढी अबाधा । मनहु तडित घन इंदु तरनिहै बाल करत रस साधा ॥ निरखत विधि भ्रम भूलि परचो तब मन मन करत समाधा। सूरदास प्रभु और रच्यो विधि शोच भयो तन दाधा ॥ ७७ ॥ केदारो ॥ विधिके आन विधिको शोचु । निरखि छबि वृषभानु तनया सकल मम कृत पोचु ॥ रामा गौरी उर्वशी रति इंदिरा विभव समेति । तुल्यादि दिनमणि कहा सारँग नाहिं उपमा देति ॥ चरण निरखि निहारि नख छबि अजित देखैं तोकि । चित्त गुण महिमा न जानत धीर राखित रोकि ॥ सूर आन विरंचि विरचे भक्त निज अवतार । अबलके बल सबल देखि अधीन सकल शृंगार ॥ ७८ ॥ राधा गृहगवन ॥ रागनट ॥ राधे महरिसों कहि चली । आनि खेलौ रहसि प्यारी श्याम तुम हिलिमिली ॥ बोलि उठे गुपाल राधा सकुच जिय कत कराति । मैं बुलाऊं नहीं आवति जननि को कत डराति॥ मैया यशोदा देखि तोको करति कितनो छोहु । सुनत हरिकी बात प्यारी रही मुख तन जोहु ॥ हँसि चली वृषभानु तनया भई बहुत अबार । सूर प्रभु चितते टरत नहिं गई घरके द्वार ॥ ७९ ॥ विहागरो॥बूझति जननी कहां हुती प्यारी । किन तेरे भाल तिलक रचि कीनों किहि कच गूंदि मांग शिर पारी ॥ खेलत रही नंदके आंगन यशुमति कही कुँवरि ह्यां आरी । तिलचावरी गोद करि दीनी फरिया दई फारि नव सारी ॥ मेरो नाउँ बूझि बाबाको तेरो बूझि दई हँसि गारी। मोतन चितै चितै ढोटा तन कछु सवितासों गोद पसारी । यह सुनिकै वृषभानु मुदित चित हँसि हँसि बूझति बात दुलारी । सूरसुनत रससिंधु बढ्यो अति दंपति मनमें यहै विचारी ॥८०॥ राग गौरी ॥ मेरे आगे महरि यशोदा मैयारी तोहिं गारी दीन्ही । वाकी बात सबै मैं जानति वै जैसी तैसी मैं चीन्ही ॥ तोको कहि पुनि कह्यो बबाको बड़ो धूर्त वृषभानु । तब मैं कह्यो ढग्यो कब तुमको हँसि लागी लपटान ॥ भली कही तैं मेरी बेटी लयो आपनो दाउ । जो मुहि कह्यो सबै उनके गुण हँसि हँसि कहत सुभाउ ॥ फेरि फेरि बूझति राधासों सुनत हँसत सब नारि । सूरदास वृषभानु घरनि यशुमति को गावति गारि८१ गौरी । कहत कान्ह जननी समुझाई । जहाँ तहाँ डारे रहत खिलौना राधा जानि लैजाइ चुराई । सांझ सवारे आवन लागी चितै रहति मुरली तन आइ ॥ इनही में मेरो प्राण वसतुहै तेरे भाए नेकु न माइ ॥ राखि छपाइ कह्यो करि मेरो बलदाऊको जानि पतिआइ । सूरदास यह कहति यशोदा को लैहै मुहि लगो बलाइ ॥ ८२ ॥ आसावरी ॥ मेरे लालके प्राण खिलौना ऐसो को लैजैहैरी । नेक सुनन जोपैहौं ताको सो कैसे ब्रज रैहैरी ॥ विनदेखे तू कहा करैगी सो कैसे प्रगटैहैरी । अजहुँ राखि उठाइरी मैया मांगेते कहा दैहैरी ॥ आवतही लैजैहै राधा पुनि पाछे पछितैहैरी । सूरदास तब कहत यशोदा बहुरि श्याम विरुझैहैरी ॥ ८३ ॥ नट ॥ सैंतति महरि खिलौना हरिके । जानति टेउ आपने सुतकी रोवतिहै पुनि लरिकै ॥ धरि चौगान वेत मुरली धरि अरु भौंरा चकडोरी । प्रेम सहित धरि धरि लैराखति जे सब मेरेकोरी ॥ श्रवणनि सुनत अधिक रुचि लागति हरिकी बतियां भोरी । सूर श्यामसों कहति यशोदा दूध पियहु बलि तेरी॥८४॥आजु सवारे धेनु दुही मैं वहै दूध मोहिं प्यावैरी।

सुनमैया मैंतो पय पीवों मोहिं अधिक रुचि आवैरी ॥ और धेनुको दूध न पीवों जो करि कोटि बनावैरी । जननी कहति दूध धौरीको मोको सौंह करावैरी ॥ तुमते मोहिं और को प्यारो बारंवार मनावैरी । सूरश्यामको पय धौरीको माता हितसो ल्यावैरी ॥ ८५ ॥ आछो दूध पियो मेरे तात। तातो लगत वदन नहिं परशत फूंकिं देतहै मात ॥ औटि धरयो अबहीं मनमोहन तुम्हरे हेत बनाइ । तुम पीयो मैं नयनन देखों मेरे कुँवर कन्हाइ ॥ दूध अकेली धौरीको है तनको अति हितकारी । सूरश्याम पय पीवन लागे अति तातो दियो डारी॥८६॥ राग विहागरो॥ देखत पय पीवत बलराम । तातो लगत डारि तुम दीनों दावानल पीवत नहिं ताम ॥ कबहूं रहत मौन धरि जलमें कबहूं फिरत बँधावत दाम।कबहुँ अघासुर वदन समाने कबहुँ अँध्यारे जात न धाम॥कबहुँ करत वसुधा सब त्रयपद कबहूं देहरि उलंघि न जाइ।पट दश सहस गोपिका विलसत वृंदावन रस रास रमाइ ॥ इहै जानि अवतार धरत ब्रज सुर नर मुनि यह भेद न पाई । राजा छोरि वंदिते ल्याए तिहूंलोकमें विदित बड़ाई ॥ युग युग ब्रज अवतार लेत प्रभु अखिल लोक ब्रह्मांडके नाथ । यई गोप यइ ग्वाल इहैं सुख यह लीला कहुँ तजत न साथ ॥ एई कान्ह इहै वृंदावन यहै यमुना यहै कुंज विहार।यहै विहार करत निशि वासर येई हैं जनके प्रतिपार ॥ येईहैं श्रीपति बहु नायक एई हैं कर्ता संसार । रोम रोम प्रति अंड कोटि रवि मुख चूमति यशुमति कहि वार॥ एई कंसकै वेर संहारयो ब्रह्म धरयो कृष्ण अवतार।माखन खात चुराइ घरनते बहुत वार भए नंदकुमार।आदि अंत कोऊ नाहिं जानतु हरता करता सबके सार।सूरदास प्रभु बाल अवस्था तरुण वृद्धको करे निवार ॥८७॥ केदारो ॥ बलि बलि चरित गोकुलराइ । दावानलको पान कीन्हो पीवत दूध रिसाइ ॥ पूतना हठि प्राण लीन्हें आपुन उर लपटाइ । कहति जननी दूध डारत खिझत कछु अनखाइ ॥ धरयो गिरि वर दोहनी कर धरत बाँह पिराइ । शकट भंजन मथन कुच युग कठिन लागत पाइ ॥ तृणावर्त अकाशते पटक्यो शिलापर जाइ । डरत लाल हिंडोरे झूलत हरेदेत झुलाइ ॥ बकासुरकी चोंच फारे सबै दिष्ट देखाइ । कीर पिंजरा गहत मोहन अँगुरी लेत भगाइ ॥ विना दीपक सदन महियां तहां धरत न पाइ । अघासुर मुख पैठि निकसे बाल बच्छ छड़ाइ॥लिख्यो कौरे नाग काजर ताहि देखिडराइ । नृतत कालिनाग फन प्रति सुहथ ताल बजाइ ॥ यमलार्जुन तोरि तारे हृदय प्रेम बढाइ । झटकि पात पलाश पल्लव देह देत दिखाइ॥हरे बालक वत्स नवक्रित हेतु दौरी माइ। चरत धेनु न मिली तिनको आप दौरे धाइ ॥ वृषभ गंजन मथन केशी हने पूंछ फिराइ ॥ भजत सखा समेत मोहन देखि व्याई गाइ ॥ गोपनारी संग मोहन कियो रास बनाइ । कहति जननी व्याहको तब रहत वदन दुराइ ॥ कहा वरणौं कोटि रसना हिये बुधि उपजाइ । सूरके प्रभु रसिक हरि पर अंग अंग विहाइ ॥ पंद्रह अध्याय अथ गौचारन ॥ रामकली ॥ आज मैं गाइ चरावन जैहौं । वृंदावनके भाँति भाँति फल अपने करमैं खैहौं ॥ ऐसी अबहिं कहो जनि बारे देखौ अपनी भांति । तनक तनक पाँइ चलिहो कैसे आवत ह्वैहै राति ॥ प्रात जात गैयां लै चारन घर आवतहैं सांझ । तुम्हरो कमल वदन कुम्हिलैहै रेंगत घामहिं मांझ ॥ तेरी सों मोहिं घामु न लागत भूख नहीं कछु नैक । सूरदास प्रभु कह्यो न मानत परे आपनी टेक ॥ ८९ ॥ मैया हौं गाय चरावन जैहौं । तूकहि महर नंदबाबासों बड़ो भयो न डरैहौं ॥ तेरे हेत मात मन सुख अरु हलधर संगहि रैहौं । वंशीवट तर गाइनके संग खेलत अति सुख पैहौं ॥ ओदन भोजन दै दधि कांवरि भूख लगैते खैहौं । सूरदास मैं साथ सौंह दे जो यमुना जल

न्हैहौं ॥ ९० ॥ चले सब गाइ चरावन ग्वाल । हेरी टेर सुनत लरिकनकी दौरि गए नँदलाल ॥ फिरि इत उत ह्वै देखै यशुमति दृष्टि न परे कन्हाइ । जान्यो जात ग्वाल सँग दौरयो टेरति यशुमति धाइ ॥ जात चल्यो गैयनके पाछे बलदाऊ कहि टेरत । पाछे आवत जननी देखी फिरि फिरि इतको हेरत ॥ बल देख्यो मोहनको आवत सखा किए सब ठाढ़े । पहुँची आइ यशोदा रिससों दोउ भुज पकरे गाढे ॥ हलधर कह्यो जानदे मो संग आवहि आज सवारे । सूरदास बलसों कहै यशुमति देखे रहियो प्यारे ॥ ९१ ॥ बिलावल ॥ खेलत श्याम चले ग्वालनसँग । यशुमति कहति इहै घर आई देखौ हरि कीने जजेरंग ॥ प्रातहिते लागे एही ढँग अपनी टेक परचोहै । देखौं जाइ आजु बनको सुख कहा परोसि धरचोहै ॥ माखन रोटी अरु शीतल जल यशुमति दियो पठाइ । सूर नंद हँसि कहत महरिसों आवत कान्ह चराइ ॥ ९२ ॥ सारंग ॥ हरि जूको ग्वालिनि भोजन ल्याई । वृंदा विपिन विशद यमुना तट शुचि ज्योंनार बनाई।सानि सानि दधि भातु लियो कर सुहृद सबनि करदेत । मध्य गुपाल मंडली मोहन छाक बांटिकै लेत ॥ देवलोक देखत सब कौतुक बाल केलि अनुरागी । गावत सुनत सुनत सुख करि मनौ सूर दुरित दुख भागी ॥ ९३ ॥ अथ धेनुकवध । राग भैरव ॥ सखा कहन लागे हरिसों तब । चलौ तालवनको जैये अब ॥ ता बनमें फल बहुत सुहाए । वैसे हम कबहूं नहिं खाए॥असुर धेनुक तहँहैं रखवारी । चलौ कहैं हँसि बलि बनवारी ॥ विहँसत हरि सँग चले गुआला । नाचत गावत गुण गोपाला ॥ सोयो हुतो असुर तरु छाया । सुनत शोर तरुते उठि धाया ॥ हलधरको देखे तिन आवत । येदोउ बलकर जोर चलावत ॥पकरि बांह बलभद्र फिरायो । मारि ताहि तरु माहि गिरायो ॥ और बहुत ताको परिवारो । हरि हलधर तिन सबको मारो ॥ ग्वालन बनफल रुचि सों खाए । बहुरौ वृंदावनहि सिधाए ॥ हरि हलधर छबि बरणि न जाई । सूरदास इह लीला गाई ॥९४॥ गौरी ॥ बनतें आवत धेनु चराये । संध्या समय सांवरे मुखपर गोपद रज लपटाये ॥ बरह मुकुट के निकट लसति लट मधुप बने रुचि पाये ॥ विलसत सुधा जलद आनन पर उड़त न जात उड़ाये ॥ विधि वाहन भक्षनकी माला राजत उर पहिराये । इक वपु रही नाहिं बड़े छोटे ढोटा शिशु ग्वाल बने इक दाये ॥ सूरदास मिलि लीला प्रभुकी जीवत जन यश गाए ॥ ९५ ॥ आजु हरि धेनु चराये आवत । मोर मुकुट बनमाल विराजत पीतांबर फहरात ॥ जिहि जिहि भांति ग्वाल सब बोलत सुनि श्रवणन मन राखत । आपुन टेरिलेत नान्हे सुर हरपत सुख पुनि भाषत ॥ देखत नंद यशोदा रोहिणि अरु देखत ब्रज लोग । सूरश्याम गाइन सँग आये मैया लीनो रोग ॥ ९६ ॥ यशुमति दौरि लए हरि कनियां । आजु गयो मेरो गाइचरावन हौं बलिगई निछनिया ॥ मो कारण कछु आन्योहै बलि बनफल तोरि कन्हैया। तुमहिं मिले मैं अति सुख पायो मेरे कुँवर कन्हैया ॥ कछुक खाहु जो भावै मोहन देरी माखन रोटी । सूरदास प्रभु जीवहु युग युग हरि हलधरकी जोटी ॥ ९७ ॥ सारंग ॥ मैं अपनी सब गाइ चरैहौं । प्रात होत बलके सँग जैहौं तेरे कहे न भुरैहौं ॥ ग्वाल बाल लै गाइन भीतर नेकहु नहिं डर लागत । आजु न सोवों नंद दुहाई रैनि रहौंगो जागत ॥ और ग्वाल सब गाइ चरैहैं मैं घर बैठो रैहौं । सूरश्याम अब सोइ रहौ तुम प्रात जानमैं देहौं ॥ ९८ ॥ केदारो ॥ बहुतै दुख हरि सोइ गयोरी । सांझहिते लाग्यो यहि बातहि क्रम क्रमते मन बोधि लयोरी ॥ एक दिवस गयो गाइ चरावन ग्वालन साथ सवारे। अबतौ सोइ रह्योहै कहिकै प्रातहि कहा विचारै ॥ यहतौ सब बलरामहि लागै सँग लैगयो लिवाइ । सूर नंद यह कहत महरिसों आवन दे फिरि धाइ ॥ ९९ ॥ बिलावल ॥ करहु

कलेऊ कान्ह पियारे। माखन रोटी दियो हाथ पर वलि वलिजाउँ हौं खाहु ललारे॥ टेरत ग्वाल द्वारके ठाढ़े आए तवके होत सवारे। खेलहु जाइ ब्रजहिके भीतर दूरि कहूं जानि जैयहु प्यारे॥ टेरि उठे वलराम श्यामको आवहु धाइ धेनु वन चारोसूरश्याम कर जोरि मातसों गाइचरावन कहत हमारे॥ ॥ ६०० ॥ विलावल ॥ मैयारी मोहिं दाऊ टेरत । मोको वन फल तोरि देतहैं आपुन गैयन घेरत ॥ और ग्वाल सँग कवहुँ न जैहों वे सव मोहिं खिझावत। मैं अपने दाऊ सँग जैहों वन देखत सुख पावत॥ आगेदे पुनि ल्यावत घरको तू मुहि जान नदेति। सूरश्याम कहै यशुमति मैया हाहा करि करि केति ॥ १ ॥ सारंग ॥ वोलि लियो वलरामहि यशुमति। आवहु लाल सुनहु हरिके गुण कालिहिते लंगरचौ करत अति ॥ श्यामहि जानदेहु मेरे सँग तू काहे डरपावति। मैं अपने ढिगते नहिं टारे जियहि प्रतीति न आवति ॥ हँसी महरि वलकी वातैं सुनि वलिहारी या मुखकी जाहु लिवाय सूरके प्रभुको कहत वीरके रुखकी॥२॥ रागनट॥ अतिआनंद भयो हरि धाए। टेरत ग्वाल वाल सव आवहु मैया मोहिं पठाए। उतते सखा हसत सव आवत चलहु कान्ह वन देखहु वनमाला तुमको पहिरावहिं धातु चित्रतन रेखहु॥ गाइ लेइ सव घेरि घरनते महर गोपके वालक। सूरश्याम चले गाइ चरावन कंस उरहिके शालक ॥ ३ ॥ रागसारंग ॥ चरावत वृंदावन हरि गाइ। सखा लिए सँग सुवल श्रीदामा डोलतहैं सुख पाइ ॥ क्रीडा करत जहां तहां सव मिलि आनंद वढ़ाइ वढाइ। वगरि गईं गैयां वन वीथिनि देखी अति वहुताइ॥ कोउ गए ग्वाल गाइ वन घेरन कोउ गए वछरु लिवाइ। आपुहि रहे अकेले वनमें कहुँ हलधर रहे जाइ ॥ वंशीवट शीतल यमुनातट अतिहि परम सुखदाइ। सूरश्याम तव वैठि विचारत सखा कहां विरमाइ ॥ ४ ॥ वार वार हरि कहत मनहि मन अवहि रहे सँग चारत धेनु। ग्वाल वाल कोउ कतहुँ न देख्यो टेरत नाव लेत दे सेनु॥ आलस गात जानि मनमोहन वैठे छाँह करत सुख चैनु। अकनि रहत कहुँ सुनत नहीं कछु नहिं गौ रंभन वालक वैनु॥ तृपावंत सुरभी वालक गण कालीदह अचयो जल जाइ। निकासि आइ सव तट ठाढे भए वैठि गए जहाँ तहां अकुलाइ॥ वन वन ढूँढ़ि श्याम तहां आए गोसुत ग्वाल रहे मुरझाइ। मनमहँ ध्यान करतही जान्यो काली उरग रह्यो ह्यां आइ ॥ गरुड त्रास करि आइरह्यो दुरि अंतर्यामी सवके नाथ। अमृत दृष्टि भरि चितै सूर प्रभु वोलि उठे गावत हरि गाथ॥ ५॥ आवहु आवहु कान्हजू पाईहै सव धेन। कुंज कुंज में देखि रहे तृण चरति परम सुख चैन॥ द्रुमन चढे सव सखा पुकारत मधुर सुनावहु वैन। जनि धापहु वलि चरन मनोहर कठिन कंठ मन ऐन ॥ वार वार व्रज कौन उवारे पियो कालीदह फैन। सूरश्याम संतन हित कारण प्रगट भए सुखदैन॥ ६ ॥ सारंग॥ पाई पाईहै भैया कुंज वृंदमैं टाली। अवके अपनी हटकि चरावहु जैहै हटकी घाली॥ आवहु वेगि सकल दुहुँ दिशिते कत डोलत अकुलाने। सुनि मृदु वचन देखि उन्नत कर हरपि सवै समुहाने॥ तुमतौ फिरत अनतहीं ढूंढत ये वन फिरति अकेली। ह्यांकी गाइ कौन पर लैहौ सघन वहुत द्रुम वेली ॥ सूरदास प्रभु मधुर वचन कहि रासत सवहि वुलाए। नृत्य करत आनँद गौ चारत सवै कृष्णपै आए ॥७॥ रामकली॥ ताते तरकि कह्यो वनमाली। पशु तन चपल स्वरूप न जानत डोलत चाली चाली॥ धरि तन सगुण त्रिपद पूरण प्रभु आपु कमल प्रतिपाली। यद्यपि वृपभ सुता पति तजिकै फिरति कुमति की घाली॥ अति श्रम भयो सकल वन ढूंढत वन वेली दो जाली। सूरदास संतन जन हारि हित इहि अव सवते टाली॥ ८॥ नट नारायणी॥ मोहिं वन छाँडि आए सव ग्वाल। कहांते कहां आइ

निकसे करे कैसे ख्याल ॥ मुराछि काहे गिरे धरणी कहा यह जंजाल । मैं यहां जो आइ देखो परे सब वेहाल ॥ आनि अँचयो जल यमुन को तवहि गए अकुलाइ । निकसिकै जब कूल आए गिरि परे सब आइ ॥ प्राण विनु हम सब भयेते तुमहिं दियो जिवाइ । सूरके प्रभु तुम जहां तहँ हमहिं लेत बचाइ ॥ ९ ॥ गौरी ॥ बलदाऊ कहि श्याम पुकारचो । आवहु वेगि चलौ घर जैयै वनहीं में पुनि होत अँध्यारचो ॥ ल्याए वोलि सखा हलधरको हँसे श्याम मुख चाही । बड़ी वेर भई तुमहिं कन्हैया गाइन लेहु निवारी ॥ हेरी देत चले सब वनते गोधन दिए चलाई । सूरदास प्रभु राम श्याम दोउ व्रजजनके सुखदाई ॥ १० ॥ वृंदावन प्रवेश शोभा । गौरी ॥ वै मुरलीकी टेर सुनावत। वृंदावन वसि वासर सब निशि आगम जानि चले व्रज आवत ॥ सुवल सुदामा अरु श्रीदामा संग सखा मध्य मोहन छवि पावत । सुरभी गण सब ले आगे करि कोउ टेरत कोउ वेणु वजावत ॥ केकी पच्छ मुकुट शिर भ्राजित गौरी राग मिले रस गावत । सूरश्यामके ललित वदन पर गोरज छवि कहुँ चंद छपावत ॥ ११ ॥ हरि आवत गाइनके पाछे । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल नयन विशाल कमलते आछे ॥ मुरली अधर धरन सीखतहैं वनमाला पीतांवर काछे । ग्वाल वाल सब वरण वरणके कोटि मदनकी छविकियो पाछे ॥ पहुँचे आइ श्याम व्रजपुरमें घरहि चले मोहन वल आछे । सूरदास प्रभु दोउ जननी मिलि लेति वलाइ वोलिमुख वाछे ॥ १२ ॥ कल्याण ॥ आनँदसहित सबै घरआए । धन्य यशोदा तेरो वारो हम सब मरत जिवाए ॥ नर वपु धरे देव यह कोऊ आइ लियो अवतार । गोकुल ग्वाल गाइ गोसुतके एई राखनहार ॥ पय पीवत पूतना निपाती तृणावर्त इहिभांति । वृषभासुर वत्सासुर मारचो रामकृष्ण दोउ भ्रात ॥ जवते जन्म लियो व्रज भीतर तवते इहै उपाइ । सूरश्यामके वल प्रतापते वन वन चारत गाइ ॥ १३ ॥ तुम कत गाइ चरावन जात । पिता तुम्हारो नंद महरसों जाके यशुमति सीहै मात ॥ खेलत रहौ आपने घरमें माखन दधि भावै तव खात । अमृत वचन कहौ मुख अपने रोम रोम पुलकित सव गात ॥ अव काहूके जाहु कहूं जनि आवतिहै युवती इत रात । सूरश्याम मेरे नैनन आगे रहो काहे कहूं जातहौ तात ॥ १४ ॥ मैया हौं न चरैहौं गाइ । सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों मेरे पाँइ पिराइ ॥ जौन पत्याहि पूछ वलदाउहि अपनी सौंह दिवाइ । यह सुनि सुनि यशुमति ग्वालनिको गारीदेत रिसाइ ॥ मैं पठवत अपने लरिकाको आवै मन वहराइ । सूरश्याम मेरो अति वालक मारत ताहि रिगाइ ॥ १५ ॥ वल मोहन वनते दोउ आए । जननि यशोदा मात रोहिणी हरषि दुहुँनि दोउ कंठ लगाए ॥ काहे आजु अवार लगाई काहे कमल वदन कुँभिलाए ॥ भूखेभए आजु दोउ भैया प्रात कलेऊ करन नपाए ॥ देखहुजाइ कहा जेवन कियो यशुमति रोहिणि तुरत पठाई । मैं अन्हवाए देति दुहुँनिको तुम भीतर अति करौ चँडाई ॥ लकुट लियो मुरली कर लीन्हे हलधर दियो विषान । नीलांवर पीतांवर लीन्हें सैंति धरति करि प्रान ॥ मुकुट उतारि धरचो मंदिरलै पोंछतिहै अंगधात । अरु वनमाल उतारति गरते सूरश्यामकी मात ॥ १६ ॥ अंगअभूषण जननि उतारति । दुलरी ग्रीव माल मोतिनकी केउरलै भुजश्याम निहारति ॥ क्षुद्रावली उतारति कटिते सैंति धरति मनहीमन वारति । रोहिणि भोजन करहु चँडाई वारवार कहि कहि करि आरति ॥ भूखेभए श्याम हलधर ए यह कहि अंतर प्रेम विचारति । सूरदास प्रभु मात यशोदा पटलै दुहुँनि अंग रज झारति ॥ १७ ॥ एदोऊ मेरे गाइ चरैया ॥ मोल विसाहि लये मैं तुमको तव दोउ रहे नन्हैया ॥ तुमसों टहल करावति निशि दिन और न टह-

ल करैया। यह सुनि श्याम हँसे कहि दाऊ झूठहि कहतिहै मैया ॥ जानि परत नहिं साँच झुठाई धेनुचरावत रहे झुरैया। सूरदास प्रभु कहति यशोदा मैं चेरी कहि लेति वलैया॥१८॥ कल्याण ॥यह कहि जननि दुहुनि उर लावति। सुमनसुत अंग परसि तरनि जल वालि वलि गई कहि कहि अन्हवा वति॥ सरसवसन तनु पोंछि गई लै पटरसके जेवनार जेवावति। शीतल जल कपूर रस रचयो झारी कनक लए अचवावति॥ भरचो चरू मुख धोइ तुरतही पीरेपान वीरी मुखनावति। सूरश्याम सुख जानि मुदितमन सेज्यापर संग लै पौढ़ावति॥१९॥ विहागरो॥ सोवत नींद आइ गई श्यामहि महरि उठी पौढाइ दुहुँनको आपु लगी गृहकामहि। वरजतिहै घरके सव लोगनि हरुये लैलै नामहि। गाढे वोल न पावत कोऊ डर मोहन वलरामहि। शिव सनकादि अंत नहिं पावत ध्यावतहै निशि जामहि॥ सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सो सोवत नंदधामहि॥२०॥ देखत नंद कान्ह अति सोवत। भूखे भए आजु वन भीतर यह कहि कहि मुखजोवत॥ कह्यो नहीं मानत काहूको आपहठी दोउवीर। वार वार तनुपोंछत करसों अतिहि प्रेमकी पीर॥ सेजमँगाइ लई तहां अपनी जहां श्याम वलराम। सूरदास प्रभुके ढिग सोये संग पौढी नंदवाम॥ २१ ॥ जागि उठे तव कुँवरकन्हाई। मैया कहां गई मो ढिगते सँग सोवत जान्यो वलभाई॥ जागेनंद यशोदा जागी वोलि लिए हरि पास। सोवत झिझिक उठ्यो काहेते दीपक दियो प्रकाश॥ सपने कूदि परचो यमुनादह काहू दियो गिराई। सूरश्यामसों कहति यशोदा जिनिहो लाल डराई॥ ॥२२॥ राग गौरी॥ मैं वरजौ यमुनातट जात। सुधि रहिगई न्हातकी तेरे जिनि डरपो मेरे तात॥ नंद उठाइ लियो कोराकरि अपने संगपौढाइ। वृंदावनमे फिरत जहाँ तहँ केहि कारण तूजाइ॥ अव जिनि जैहो गाइ चरावन कहांको रहत वलाइ। सूरश्याम दंपति विच सोए नींदगई तवआइ॥ ॥२३॥ कल्याण॥ सपनो सुनि जननी अकुलानी॥ दंपति वात कहत आपुसमें सो अतिसारंगपानी॥ या व्रजको जीवनि यह ढोटा कह देख्यो यहि आजु॥ गाइ चरावन जान न दीजै याको है कह काजु॥ गृह संपति द्वै तनक ढोटौना इनहीं लौं सुख भोग। सूरश्याम वनजात चरावन हँसी करत सव लोग॥ २४ ॥ भैरवी॥ यहि अंतर भिनुसार भयो। तारागण सव गगन छपाने अरुन उदित अंधकार गयो॥ जागी महरि काज गृह लागी निशिको सव दुख भूलि गयो। प्रातस्नान करन यमुनाको नंदहि तुरत उठाइ दयो॥ मथनिहारि सव ग्वालि वोलाई भोर भयो उठि मथो दह्यो। सूर नंद घरनी आपुनहू मथति मथानी नेति गह्यो॥२५॥ अथ कंस कँमलके फूल मंगाए, कालीदमन लीला अध्याय षोडशी॥ विलावल॥ नारदसों नृप करत विचार। व्रजमें ये दोउ कोउ अवतार॥ नंदसुवन वलराम कन्हाई। इनकी गति मैं कछू न पाई॥ तृणावर्त सों दूत पठाए। तापाछे कागासुर धाए॥ वाकी पठाइ दई पहिलेही। ऐसेनको वलु वैसेहिलेही॥ उनते भद्र भयो नहिं काजा। यह सुनि सुनि मोहिं आवति लाजा॥ अव मुनि तुम इक वुद्धि विचारहु। सूरश्याम वलरामहि मारहु॥२६॥ नारद ऋपि नृपसों यह भाषत। वैहैं काल तुम्हारे प्रगटे काहेते तुम उनको राखत॥ कालीउरग रह्यो यमुनामें तहँते कमल मँगावहु। दूत पठाय देहु व्रजऊपर नंदहि अति डरपावहु॥ यह सुनिकै व्रज लोग डरैंगे वोउ सुनिहैं यह वात। पुहुप लेन जैहैं नंद ढोटा उरगकरै तहां घात॥ यह सुनि कंस वहुत सुखपायो भलीकही इह मोहिं। सूरदास प्रभुको मुनि जानत ध्यान करत मनएहि॥२७॥ सूहो॥ कंस वुलाइ दूत एक लीन्हो।

कालीदहके फूल मंगाए पत्र लिखाइ ताहि कर दीन्हो ॥ यह कहियो ब्रज जाइ नंदसों कंसराज अतिकाज मँगाए। तुरत पठाइ दियेही बनिहै भली भाँति कहि कहि समुझाए । यह अंतर्यामी जानी जिय आपु रहे बन ग्वाल पठाए । सूरश्याम ब्रजजन सुखदायक कंसकाल जिय हरष बढाए ॥ २८ ॥रामकली ॥ खेलन चले नंदकुमार । दूत आवत जानि ब्रजमें आपु दीन्ह्योटार ॥ नंद यमुना न्हाइ आए महरि ठाढ़ी द्वार । नृपति दूत पठाइ दीन्ह्यो चल्यो ब्रज अहंकार ॥ महर पैठत सदन भीतर छींक बांईधार । सूर नंद कहत महरिसों आजु कहा विचार॥२९॥राग सूहो॥यह सुनि कंस मुदितमन कीन्हों । दूतहि प्रगट कही यह वाणी पत्र लिखाइ नंदको दीन्हों ॥ कालीदहके कमल मँगावहु तुरत देखि यह पाती । जैसे कालिह कमल ह्यां पहुँचैं तू कहियो यहि भांती ॥ यह सुनि दूत तुरतही धायो तब पहुँच्यो ब्रजजाइ । सूर नंद कर पाती दीन्हीं दूतकह्यो समुझाइ ॥ ३० ॥ सूहो ॥ पाती बांचत नंद डेराने । कालीदहके फूल मंगाए सुनी सबनि ब्रजलोग घराने॥जो मोको नहिं फूल पठावहु तौ ब्रज करौं उजारी।महर गोप उपनंद न राखों सबहिन डारों मारी॥पुहुप देहुतौ बनै तुम्हारी नातरु गए बिलाइ।सूरश्याम बल मोहन तेरे माँगौं उनहिं धराइ॥३१॥ ॥बिलावल॥नंदसुनत मुरझाइ गए।पाती बांची सुनी दूत मुख यह वाणी सुनि चकित भए॥बल मोहन खटकत वाके मन आजु कही यह बात । कालीदहके फूल कहौंधौं को आनै पछितात॥और गोप सब नंद बुलाए कहत सुनौ यह बात । सुनहुँ सूर नृप ढंग यह आयो बल मोहन पर घात ॥३२॥ जैतश्री ॥ आपु चढै ब्रजऊपर काली । कहां निकासि जैए को राखै नंद कहत बेहाली ॥ मोहिं नहीं जियको डर नेकहु दोउ सुतको डरपाऊं । गाउँ तजौं कहुँ जाउँ निकसिलै इनही काज पराऊं ॥ अब उबार नहिं दीखत कतहूं शरण राखिको लेइ । सूरश्यामको बरजति माता बाहिर जान नदेइ ॥ ३३ ॥ आसावरी ॥ नंदघरनि ब्रजनारि विचारति । ब्रजहि बसत सब जनम सिराने ऐसे कंस करी नहिं आरति ॥ कालीदहके फूल मँगावत को आनै धौं जाई । ब्रजवासी नातरु सब मारौं बांधौं बलन कन्हाई ॥ यह कहतहि दोउ नैन ढराने नंद घरनि दुखपाइ । सूरश्याम चितवत मातामुख बूझत बात बनाइ ॥ ३४ ॥ बूझहु जाइ तातसों बात । मैं बलिजाउँ मुखारविंदकी तुमही काज कंस अकुलात ॥ आए श्याम नंदपै धाए जान्यो मात पिता अकुलात । अबहीं दूरि करौं दुख इनको कंसहिं पठै देउँ जलजात॥ मोसों कहौ बात बाबा यह बहुत करत तुम सोच विचार । कहा कहौं तुमसों मेरे प्यारे कंस करत कछु तुमको झार।जबते जनम भयो हरि तेरो कितने करबर टरे कन्हाई । सूरश्याम कुलदेवनि तोको जहां तहां करि लिए सहाई ॥ ३५ ॥ बिलावल ॥ तुमहि कहत जो करै सहाई । सो देवता संगही मेरे ब्रजते अनत कहूं नहिं जाई ॥ वह देवता कंस मारैगो केश धरे धरणी घिसि आई । वह देवता मनावहु सबमिलि तुरत कमल जो देइ पठाई ॥ बाबानंद झखत केहि कारण यह कहि माया मोह अरुझाइ । सूरदास प्रभु मात पिताको तुरतहि दुख डारयो बिसराय ॥ ३६ ॥ नट ॥ खेलन चले कुँवरकन्हाइ । कहत घोष निकास जैए तहां खेलें धाइ ॥ गेंदखेलत बहुत बनिहै आनो कोई जाइ ॥ घरही गए सखा श्रीदामा गेंद तुरतही ल्याइ । अपने करलै श्याम देख्यो अतिहि हरष बढ़ाइ॥सूरके प्रभु सखा लीन्हे करत खेल बनाइ ॥३७॥ खेलत श्याम सखा लिये संग । इक मारत इक रोकत गेंदहि इक भागत करि नानारंग॥ मारु परस्पर करत आपुमे अति आनंद भए मनमाहिं । खेलतहीमें श्याम सबनिको यमुनातटको लीन्हे जाहिं । मारि भजत जो जाहि ताहि सो मारत लेत आपनो दाव ॥ सूरश्यामके

गुणको जाने कहत और कछु और उपाव ॥ ३८ ॥ गौरी ॥ लैगए टारि यमुनतट ग्वालनि । आपुन जात कमलके काजहि सखा लिए संग ख्यालनि ॥ जोरी मारि भजत उतहीको जात यमुनके तीर। इकधावत पाछे उनहींके पावत नहीं अधीर ॥ रोंगटि करत तुम खेलतही में परी कहा यह वानि । सूरश्याम सों कहत ग्वाल सब तुमहि भले करि जानि ॥ ३९ ॥ श्याम सखाको गेंद चलाई । श्रीदामा मुरि अंग वचायो गेंद परचो कालीदह जाई ॥ धाइ गह्यो तब फेंट श्यामकी देहु न मेरो गेंद मँगाई । और सखा जिनि मोको जानो मोसों जिनि तुम करौ ढिठाई ॥ जानि बूझि तुम गेंद गिरायो अब दीन्हेही बनै कन्हाई। सूरसखा सब हँसत परस्पर भलीकरी हरि गेंद गिराई४०॥सोरठ॥ फेंट छांडि देहु मेरी श्रीदामा । काहेको तुम रारि बढ़ावत तनक बातके कामा । मेरो गेंद लेहु ता बदले बाँह गहतहौ धाइ । छोटो बड़ो न जानत काहू करत बराबरि आइ ॥ हम काहेके तुमहि बराबरि बड़े नंदके पूत । सूरश्याम दीन्हेंही बनिहै बहुत कहावत धूत ॥ कल्याण ॥ तोसों कहा धुताई करिहौं । जहां करी तहँ देखी नाहीं कहा तोसों मैं लरिहौं ॥ मुंह सँभारि तू बोलत नाहीं कहत बराबरि बात । पावहुगे अपनो कियो अबहीं रिसन कँपावत गात ॥ सुनहु श्याम तुमहूं सरि नाहीं ऐसे गये बिलाइ । हमसों सतर होत सूरजप्रभु कमल देहु अबजाइ ॥ ४२ ॥ हमहीं पर सतरात कन्हाई । प्रथमहि कमल कंसको दीजै डारहु हमहिं मराई ॥ सांच कहौं मैं तुमहि श्रीदामा कमलकाज मैं आयो । कहाकंस बपुरो केहिलायक जाको मोहिं डरायो॥अघा बका केशी शकटासुर तृणा शिला पर डारचो।बकी कपटकरि प्यावन आई ताको तुरत पछारचो ॥ कालीदह जल छुवत मरे सब सोइ काली धरि ल्याऊँ । सूरदास प्रभु देहधरेको गुणप्रगटों एहि ठाऊँ ॥ ४३ ॥ सोरठ ॥ रिसकरि लीन्हीं फेंट छँड़ाई । सखा सबै देखतहैं ठाढे आपुन चढे कदमपर धाई ॥ तारी दैदै हँसत सबै मिलि श्यामगए तुम भाजि डराई । रोवतचले श्रीदामा घरको यशुमति आगे कैहों जाई ॥ सखा सखा कहि श्याम पुकारचो गेंद आपनो लेहु नआई । सूरश्याम पीतांबर काछे कूदि परे दहमें भहराई ॥४४॥ रागगौरी ॥ हाइहाइ करि सखनि पुकारचो । गेंदकाज यह करी श्रीदामा नंदमहरको ढोटामारचो ॥ यशुमति चली रसोंई भीतर तबहिं ग्वालि इकछीकी । ठठकि रही द्वारेपर ठाढी बात नहीं कछु नीकी॥आइ अजिर निकसी नंद रानी बहुरो दोष मिटाइ । मंजारी आगे दे निकसी पुनि फिरि आँगन आइ ॥ व्याकुलभई निकसि गई बाहिर कहांधौ गयो कन्हाई । बांयोकाग दहिनो खर शूकर व्याकुल घर फिरि आई॥ खन भीतर खन बाहिर आवति खन आँगन केहिभांति । सूरश्यामको टेरत जननी नेक नहीं मनशांति ॥ ॥ ४५ ॥ देखे नंद चले घर आवत । पैठत पौरि छींक भई बाईं रोइ दाहिने धाह सुनावत ॥ फटकत श्रवन श्वान द्वारे पर गररी करत लराई । माथे परदे काग उडानो कुशगुण बहुतकपाई ॥ आए नंद घरहि मनमारे व्याकुल देखी नारी । सूर नंद युवती सों बूझत बिन छवि बदन निहारी ॥४६॥ नट ॥ नंद घरनिसों बूझत बात । बदन झुराय गयो क्यों तेरो कहां गयो बल मोहन तात ॥ भीतर चली रसोंई कारण छीकपरी तब आँगनआई । पुनि आगे ह्वैगई मंजारी और बहुत कुश गुण मैं पाई ॥ मोहिं भए कुशगुण घर पैठत आजु कहा यह समुझि नजाई । सूरश्याम गए आजु कहांधौं बार बार बूझत नंदराई ॥ ४७ ॥ महरि महर मन गए जनाइ । खनभीतर खन अंागन ठाढे खन बाहर देखतहैं जाइ ॥ यहि अंतर सब सखा पुकारत रोवत आए ब्रजको धाइ । आतुरगए नंद घरहीको महरि महरसों बात सुनाइ ॥ चकितभई दोउ बूझन लागे कहो

वात हमको समुझाई। सूरश्याम खेलतहि कदमचढि कूदिपरे कालीदहजाई ॥ ४८ ॥ गौरी ॥ सपनो प्रगट कियो कन्हाई। सोवतही निशि आज डराने हमसों यह कहि वात सुनाई। धरणिपरी मुरझाइ यशोदा नंद गए यमुनातट धाइ ॥ वालक सब नंदहि संग धाए व्रज घर जहँ तहँ सोरमचाइ॥त्राहि त्राहि करि नंद पुकारत देखत ठौर गिरे भहराइ।लोटत धरणि परत जलभीतरसूर श्याम दुखदियो वुढाइ ॥४९॥ गौरी॥ व्रजवासी यह सुनि सब आये। कहांपरचो गिरि कुवँर कन्हाई वालक ले सो ठौर दिखाये ॥ सूनो गोकुल कियो श्याम तुम यह कहि लोग उठे सब रोइ । नंद गिरत सबहिन धरि राख्यो पोंछत वदन नीरलै धोइ ॥ व्रजवासी तब कहत नंदसों मरणभयो सबहीको आइ। सूरश्याम विनुको वसिहै व्रज धृगजीवन तिहुँ भुवन कहाइ ॥ ५० ॥ मल्हार पुकारति कुँवर कन्हाई। माखन धरचो तिहारेहि कारण आजु कहां अवसेर लगाई ॥ अतिकोमल तुम्हरे मुखलायक तुम जेंवहु मेरे नैनजुडाइ। धोरी दूध औटिहै राख्यो अपने कर दुहि गए वनाइ॥ वरजति ग्वारि यशोदाको सब यह कहि कहि नीके यदुराइ। सूरश्याम सुत विरहमातके यह वियोग वरण्यो नाहिं जाइ॥ ५१ ॥ गौरी ॥ माखनखाहु लाल मेरे आइ । खेलत आजु अवार लगाइ ॥ वैठहु आइ संग दोउ भाइ। तुम जेंवहु मैया बलिजाइ॥ सदमाखन अतिहित मैं राख्यो। आजु नहीं नेकहु तैं चाख्यो ॥ प्रातहिते मैं दियो जगाइ। दंतवनि करि जु गए दोउ भाइ ॥ मैं बैठी तुव पंथ निहारों। आवहु तुम पर तनु मनु वारों ॥ व्रज युवती सब सुनि ए वानी। रोवत धरणिपरीं अकुलानी। सोकसिंधु बैठी नंदरानी। सुधि बुधि तनकी सबै भुलानी॥ सूरश्याम लीला यह कीन्हो सुखकेहेत जननि दुख दीन्हो॥ ५२ ॥ रागनट ॥ चौंकिपरी तनकी सुधि आई । आज कहा व्रज सोर मचायो तब जान्यो दह गिरो कन्हाई॥पुत्र पुत्र,कहिकै उठि दौरी व्याकुल यमुना तीरहि धाई॥व्रज वनिता सब संगहि लागीं आइ गए बल अग्रजभाई॥ जननी व्याकुल देखि प्रवोधत धीरजकरिनीके यदुराई। मूरश्याम कोनेक नहीं डर जिनि तू रोवै यशुमतिमाई॥५३॥बिलावल॥ व्रजवासी सब उठे पुकारी जलभीतर कहा करत मुरारी॥संकटमें तुम करत सहाय।अब क्यों नहीं बचावत आय॥माता पिता अतिहि दुख पावत। रोइ रोइ सब कृष्ण बुलावत ॥ हलधर कहत सुनहु व्रजवासीवै अंतर्यामी अविनासी ॥ सूरदास प्रभु आनंदरासी। रमासहित जलहीके वासी ॥ ५४ ॥ त्रहो । अतिकोमल तनु धरचो कन्हाई।गए तहां जहां काली सोवत उरगनारि देखत अकुलाई॥कह्यो कौनको वालकहै तू वार वार कहि भाग न जाइ। छिनकाहिमें जरि भस्म होयगो जब देखे उठि जागि जँभाइ॥उरगनारिकी वाणी सुनिकै आप हँसे मनमें मुसकाइ।मोकों कंस पठायो देखन तू याको अब देहि जगाइ।कहा कंस दिखरावत इनको एक फूंकहीमें जरिजाय॥पुनि पुनि कहत सूरके प्रभुको तूं अब काहेन जाइ पराइ५५ गुंडमल्हार॥ कहा डर करौं यहि फनिगको वावरी। कह्यो मेरो मानि छाँड़ि अपनी वानि अवहीं परोंहि जानि टेक सब रावरी ॥ तोहिं देखि मोहि मया अतिही भई कौनको सुवन तू कहां आयो । मरो वह कंस निर्वंशवाकोहोइ कह्यो यह कंस तोको पठायो ॥ कंसको मारिहौं धरणि निरवारिहौं अमर उद्धारिहौं उरग घरनी। सूर प्रभुके वचन सुनत उरगनि कह्यो जाहि अब क्यों न मति भई मरनी॥ ॥ ५६ ॥ रागनाट ॥ झिरकिकै नारि दै गारि गिरिधारि तब पूछ पर लातदै अहि जगायो। उठ्यो अकुलाइ डरपाइ खगराइको देखि वालक गर्व अति वढायो ॥ पूछ राखी चापि रिसनि काली कापि देखै सब सांपि ओसान भूले। पूंछ लीन्हों झटकि धरनिसों गहि पटकि फूं कह्यो लटकि करि क्रोध फूले ॥ करत फनघात विषजात अतुरात अति नीर जरिजात नहिं गात परसै

सूरके प्रभु श्यामलोकाभिराम विन जानि अहिराज विपज्वाल परसै ॥ ५७ ॥
॥ रागनट ॥ इनकोले ब्रजलोग दिखाऊं। कमल भार इनहींपै लादौं इनको आपु जनाऊं॥ मात पिता अतिही दुख पावत दरशनदै मन हरष कराऊं । कमल पठाइ देउँ नृपराजहि कालि कह्यो ब्रजऊपरधाऊं॥मन मन करत विचार श्याम यह अब कालीको दाँव दिवाऊं। सूरदास प्रभुकी यह वाणी ब्रजवासिनको दुख विसराऊं॥ ५८ ॥ कान्हरो ॥ उरगनारि सब कहत परस्पर देखहु या बालककी बात। विपज्वाला जल जरत यमुनको याके तन लागत नाहिं तात॥ यह कछु यंत्र मंत्र है जानत अतिही सुंदर कोमलगात। यह अहिराज महाविषज्वाला कितने करत सहसफन घात॥छुअत नहीं तनुयाको विष कहुँ अवलौं वच्यो पुण्य पितु मात। सूरश्याम सों दाँव बतायो कालीअंग लपेटत जात ॥५९॥ बिलावल ॥ उरग लियो हरिको लपटाइ। गर्व वचन कहि कहि मुख भाषत मोको नहिं जानत अहिराइ॥ लियो लपेटि चरणते शिखलौं अति यहि मोसों करी ढिठाइ। चांपी पूछ लुकावत अपनी युवतिनको नाहिं सकत दिखाय ॥ प्रभु अंतर्यामी सब जानत अब डारों यह सकुच मिटाइ॥ सूरदास प्रभु तनु विस्तारयो काली विकल भयो तब जाइ॥६०॥कान्हरो जबहिं श्याम तनु अति विस्तारयौ। पट पटात टूटत अंग जान्यो शरण शरण अहिराज पुकारयौ॥ यह वाणी सुनतहि करुणामय तबहिं गए सकुचाई।इहै वचन सुनि द्रुपदसुता मुख दीन्हौ बसन बढ़ाई इहै वचन गजराज सुनायो गरुड छांडि तहां धाये।यहै वचन सुनि लाखा गृहमें पांडव जरत बचाये यहवाणी सहिजात न प्रभु सों ऐसे परमकृपाल।सूरदास प्रभु अंग सकोरयो व्याकुल देख्यो व्याल॥ ॥ ६१ ॥ गौरी ॥ नाथत व्याल विलंब न कीन्हो। पगसों चांपि घींच बलतोरयो फोरि नाक करसों गहि लीन्हो ॥ कूदिचढे ताके माथेपर काली करत विचार। श्रवणन सुनी रही यह वाणी ब्रजह्वै है अवतार॥ तेइ अवतरे आइ गोकुल में मैं जानी यह बात। स्तुति करन लग्यो सहसौफन धन्य धन्य जगतात॥ बार बार कहि शरण पुकारयो राखि राखि गोपाल। सूरदास प्रभु कहत सकुचि गए शरण कहत तब व्याल॥ ६२ ॥ बिलावल ॥ देखि दरश मन हरष भयो । पूरणब्रह्म सनातन तुमही ब्रज कृष्णा अवतार लयो ॥ श्रीमुख कह्यो अजौंलौं तुम नहिं जानो ब्रह्म अवतार। और कौन जो तुमसों बाचै सहसफननिकी झार॥ अनजानत अपराध किये बहु राखि शरण मोहिं लेहु। सूरदास प्रभु धनि मेरे फन चरण कमल जहां देहु॥ ६३ ॥ गौरी ॥ अब कीन्हों प्रभु मोहिं सनाथ। कोटि कोटि कीटहु सम नाहीं दरशन दिये जगतके नाथ॥ अशरन शरन कहावतहो तुम कहत सुनी भक्तनि मुखबात। ये अपराध क्षमा सब कीजै धृग मेरी बुधि कहत डरात॥ दीनवचन सुनि कालमुखते चरण धरे फन फन प्रति आप। सूरश्याम देख्यो अहि व्याकुल सुख दीनो मेटे त्रय ताप॥ ६४ ॥ यशुमति टेरति कुँवर कन्हैया। आगे देखि कहति बलरामहिं कहां रह्यो तुमभैया॥ मेरे भैया आवत अबहीं तोहिं दिखाऊं मैया। धीरज करहु नेक तुम देखहु यह सुनि लेति बलैया॥ पुनि यह कहति मोहिं परबोधत धरणि गिरी मुरझैया। सूर बिनासुत भई अति व्याकुल मेरो बाल नन्हैया॥६५॥सारंग॥भरोसो कान्हको है मोहिं।सुन यशुदा कालीके भयते तू जिनि व्याकुल होहि॥पहिले पूतना कपटकै आई स्तनविषया थोहि।वह वैसी ज्यों प्रवल द्वै दिनके बालक मारि दिखावत तोहिं ॥ अघा बका धेनुक तृणावर्त केसीको बल देख्यो जोहि । सात दिवस गोवर्धन राख्यो इंद्र गयो दपु छोहि। सुनि सुनि कथा नंदनंदनकी मन आयो अवरोहि। सूरदास प्रभु जो कहिये कछु सो आवै सब सोहि॥ ६६ ॥ सारंग ॥ यमुना तोहि बह्यो क्यों भावै। तोमें कृष्णहेलुवा

खेले सो सुरत्यो नहिं आवै ॥ तेरे नीर शुची जबलौंहै खार पनार कहावै। हरि वियोग कोउ पाँउ न देहै को तट वेणु बजावै ॥ भरि भादौं जो राति अष्टमी सो दिन क्यों न जनावै। सूरदास के ऐसे ठाकुर कमलफूल लैआवै ॥ ६७ ॥ ब्रजवासी सब भए विहाल। कान्ह कान्ह कहि कहि टेरतहैं व्याकुल गोपी ग्वाल ॥ अब को बसै जाइ ब्रज हरि बिनु धृगजीवन नर नारी। तुमबिन यह गतिभई सबनिकी कहां गए बनवारी ॥ प्रातहिते जल भीतर पैठे होन लग्यो युगयाम। कमल लिये सूरज प्रभु आवत सबसों कहि बलराम ॥ ६८ ॥ नट ॥ आवत उरग नाथे श्याम। नंद यशोदा गोपी गोपनि कहतहैं बलराम ॥ मोर मुकुट विसाल लोचन श्रवन कुंडल लोल। कटि पीतांबर भेप नटवर निर्तं फन प्रति डोल। देव दिवि दुंदुभि बजावत सुमन ये बरपाइ। सूरश्या मविलोकि ब्रजजन मात पित सुख पाइ ॥ ६९ ॥ नट ॥ मात पिता मन हरप बढ़ायो। मोर मुकुट पीतांबर काछे देख्यो अतिहि निकट जब आयो॥देव दुंदुभी बजावत गावत फनपर निर्तत श्याम ब्रजवासी सब मरत जिवाए हरपि उठीं सब बाम ॥ सोकसिंधु वहिगयो तुरतही सुखको सिंधु वढायो। सूरदास प्रभु कंसनिकंदन कमल उरग पर ल्यायो ॥ ७० ॥ कान्हरो ॥ फनफन प्रति निर्तत नंदनंदन। जल भीतर युगयाम रहे कहुँ मिट्यो नहीं तनु चंदन ॥ उहै काछनी कटिपीतां वरशीश मुकुट अति सोहत।मनो गिरि ऊपर मोर अनंदित देखत ब्रजजन मोहत॥अमर थके अमर ललना सँग जयजयध्वनि तिहुँलोक।सूरश्याम काली पर निर्तत आवत ब्रजकी वोक ॥७१॥ सोरठ ॥ गोपालराइ निर्तत फन प्रति ऐसे।मनो गिरिवर पर बादर देखत मोर अनंदत जैसे ॥ डोलत मुकुट शीशपर हरिके कुंडल मंडित गंड।पीत वसन दामिनि तनुघनपर तापर सुरकोदंड॥उरगनारि आगे सब ठाढ़ीं मुख मुख स्तुतिगावैं।सूरश्याम अपराध क्षमहु अब हम माँग्यो पतिपावैं७२बहुत कृपा एहि करीगुसांई इतनी कृपा करी नहिं काहू जितने लिये राखि शरनाई॥कृपाकरी प्रह्लाद भक्तको द्रुपदसुता पतिराखी।ग्राहमुखते गजराज छडायो वेद पुराणन भाषी। जो कछु कृपा करी कालीको सो काहू नहिं किन्हों॥कोटिब्रह्मांड रोमप्रति अंगनि ते पग फन प्रति दीन्हो।धरणि शीशधरि शेप गर्व करि येही भार अधिक संभारयो ॥ पूरण कृपाकरी सूरजप्रभु पग फन फनप्रतिधारयो ॥ ७३ ॥ सोरठ॥ ठाढे देखतहैं ब्रजवासी। करजोरे अहिनारि विनयकरैं कहत धन्य अविनासी ॥ जे पद कमल रमा उर राखति परसि सुरसरी आई। जे पद कमल शंभुकी संपति फल प्रति धरे कन्हाई ॥ जे पद परशि शिलाउद्धारी पांडवगृह फिरिआए ॥ जे पद कमल भजन महिमाते जनप्रहलाद बचाए। जे पद ब्रज युवतिन सुखदायक तिहूँ भुवन धरे बावन ॥ सूरश्याम ते पद फन फन प्रति निर्तत अहि कियो पावन ॥७४ ॥ ऐसी कृपा करी नहिं काहू। खंभ प्रगटि प्रह्लाद बचायो ऐसी कृपा न ताहू ॥ ऐसी कृपा करी नहिं गजको पाँइ पयादे धाए। ऐसी कृपा तबहु नहिं कीन्हीं नृप बंदीते छडाए ॥ ऐसी कृपा करी नहिं तब तिय नगनसमय पति राखी। ऐसी कृपा करी नहिं भीषम परतिज्ञा सतभाषी॥ पूरण कृपानंद यशुमतिको सो पूरण एहि पायो। सूर दास प्रभु धन्य कंस जिन तुमसों कमल मँगायो ॥ ७५ ॥ कान्हरो ॥ सुनहु कृपानिधि जैसी कृपा तुम या काली पै कीन्हो। इती बडाई कबहुँ न कैसो नहिं काहूको दीन्हो ॥ जिन पदकमल सुकृत जलपरस्यो अजहुँ धरे शिवशीश। तेपद प्रगटधरे फन फन प्रति धन्य कृपा जगदीश॥येक अंडको भार बहुतहै गर्व धरयो जिय शेप। येही भार अधिक सह्यो अपने शिर अमित अंडमय भेप॥ सुर नर असुर कीट पशु पंछी सब सेवक प्रभु तेरे। सूरश्याम अपराध क्षमहु अब या अपने

जन केरे ॥ ७६ ॥ चरणकमलवंदौं जगदीश जे गोधनके संगधाए। जे पदकमल धूरि लपटानो कर गहि गोपी उरलाए ॥ जे पदकमल युधिष्ठिर पूजे राजसूइ पै चलिआए। जे पदकमल पितामह भीषम भारत में देखनपाये। जे पदकमल शंभु चतुरानन हृदयकमल अंतरराखे ॥ जे पदकमल रमाउर भूषण वेद भागवत मुनि भाषे । जे पदकमल लोकपावन त्रय वलिराजाके पीठ धरे ॥ ते पद कमल सूरके स्वामी कालीफनपर नितकरे ॥ ७७ ॥ गिरिधर व्रजधर मुरलीधर धरनीधर पीतांवर धर मुकुट धर गोप धर उरगधर शंखधर सारंगधर चक्रधर गदाधर रस धरें अधर सुधाधर ॥ कंवुकंठधर कौस्तुभमणिधर वनमाला धर धर मोतीवाला कालीफनप्रति चरणधर । सूरदासके प्रभु जगतधर भक्तधर दुष्टकंसके धर ॥ ७८ ॥ गरुड़ त्रासते जो ह्यां आयो। तौ प्रभु चरण कमल फन फन प्रति अपने शीश धरायो॥धनि ऋषि शाप दियो खग पतिको ह्यां तव रह्यो छपाइ। प्रभुवाहन डर भाजि वच्यो अहि नातर लेतो खाइ॥ यह सुनि कृपा करी नँदनंदन चरणचिह्न प्रगटाए। सूरदास प्रभु अभय ताहिकरि उरग द्वीप पहुँचाए ॥ ७९ ॥ अतिवल करि करि काली हारचो। लपट गयो सव अंग अंग प्रति निर्विष कियो सकल अल झारचो ॥ नितत पद पटकत फन फन प्रति वमत रुधिर नहिं जात सँभारचो ॥ अति वलहीन छीन भए तेहिछन देखियततहै रज्वा समडारचो। तियविनती करुणा उपजी जिय राख्यो श्याम नहीं तेहि मारचो। सूरदास प्रभु प्राणदान कियो पठयो सिंधु वहांते टारचो ॥८०॥ खेलत खेलत जाइ कदम चढ़ि झप यमुनाजल लीनो। सोवत काली जाइ जगायो फिरि भारत हारि कीनो ॥ उठि युवती करजोरिं विनती करि श्याम दान हम दीजै । टूटत फनफाटत तनु देही दुहुँ दिशि कान्ह निहोरो लीजै ॥ तव अहि छाँड़ि दियो करुणामय मोहन मदन मुरारी। सागरवाज्य दियो कालीको सूरदास वलिहारी॥८१॥कल्याण॥ जय जय ध्वनि अमरन नभकीन्हों। धन्य धन्य जगदीश गुसांई अपनो करि अहि लीन्हो ॥ अभय कियो फन चिह्न चरणधरि जानि आपनो दास । जलते काढ़िं कृपाकरि पठयो मेटिं गरुड़को त्रास ॥ स्तुति करत अमरगण वहुरे गए आपने लोक। सूर श्याम मिलि मात पिताको दूरिकियो तनुसोक॥८२॥कान्हरो ॥लीन्हों जननी कंठ लगाइ। अंग पुलकित रोम गदगद सुखद अंशु वहाइ॥मैं तुमहि वरजति रहौं हरि यमुनतट जिनिजाइ॥कह्यो मेरो कियो कान्ह नहिं गये खेलन धाइ। कंस कमल मँगाइ पठए तात गएउ डराइ॥मैं कह्यो निशिस्वप्नतोसों प्रगट भई सो आइ॥ग्वालसँग मिलि गेंद खेलत आए यमुनातीर॥काहूलै मोहिं डारि दीन्हों कालिया दह नीर॥यह कही तव उरग मोसों किनि पठायो तोहिं॥मैं कही नृपकंस पठयो कमलकारण मोहिं॥ यह सुनत डर कमलदीन्हों मोहिं लियो पीठ चढाइ। सूर यह कहि जननि वोधी देखो तुमही आइ ॥ ८३ ॥ गौरी ॥ व्रजवासिनसों कहत कन्हाई। यमुनातीर आजु सुख कीजै यह मेरे मन आई ॥ गोपन सुनि अति हर्ष वढायो सुखपायो नंदराई । घर घरते पकवान मँगायो ग्वालन दिये पठाई ॥ दधि माखन पटरसके भोजन तुरतहि ल्याए जाई। मात पिता गोपी ग्वालनको सूरज प्रभु सुखदाई ॥ ८४ ॥ तुरत कमल अव देहु पठाइ। सुनहु तात अव विलम न कीजै कंसचढै व्रज ऊपर आइ ॥ कमल मँगाइ लिये तट ऊपर कोटि कमल तव दिये पठाइ। वहुत विनय करि पाती पठई नृपलीजै सव पुहुप गनाइ ॥ तैसी मोको आज्ञादीजै वहुत धरे जल मांझ सजाइ। सूरदास नृप तुव प्रतापते काली आप गयो पहुँचाइ ॥ ८५ ॥ सोरठ ॥ सहस शकट भरि कमल चलाए। अपनी सम सरि और गोप जे तिनको साथ पठाए ॥ और वहुत कांवरि माखन

दधि अहिरनकांधे जोरी ॥ बहुत विनती मेरी कहियो और धरे जलजामल तोरी । नृपके हाथ पत्र यह दीजो श्याम कमल लै आयो ॥ कोटिकमल आपुन नृप मांगे तीनि कोटिहै पायो॥ नृपति हमहि अपनो करि जानें तुम लायक हम नाहीं। सूरदास कहियो नृप आगे तुमहि छोंडि कहां जाहीं ॥ ८६ ॥ गंड ॥ कमलके भार दधिभार माखनभार लिये सबग्वार नृपद्वार आए । तुरतही टारि गनिकरि शकटनिजोरि भये ठाढे पौरि तब सुनाए ॥ सुनत यह बात अतुरात औ डरात महलते निकसि नृप आपु आए । देखि दरबार सब ग्वार नहिं कहूंपार कमलके भार शकटनि सजाए ॥ अतिही चकृत भयो ज्ञान हरि हरि लयो सोच मनमें ठयो कहा कीन्हो। गोप शिरमोर नृप वोर करजोरिकै पुहुपके काज प्रभु पत्र दीन्हो ॥ यह कह्यो नंद नृप वृंद अहि इंद्रपै गयो मेरो नंदन तुव नाम लीन्हों। उव्यो अकुलाइ डरपाइ तुरतहि धाइ गयो पहुँचाइ तट आइ दीन्हो ॥ यह कह्यो श्याम बलराम लीजो नाम राजको काम यह हमहि कीन्हो । और सब गोप आवत जात नृप बात कहत सब सूर मोहिं नहीं चीन्हों॥८७॥ बिलावल ॥ ग्वालन हरिकी बात चलाई। यह सुनि कंस गयो अकुलाई ॥ तब मनही मन करत विचार। यह कोउ भलो नहीं अवतार ॥ यासों मेरो नहीं उवार। मोहिं मारत मारे परिवार ॥ दैत्यगएते बहुरि न आयो ॥ कालीते ए क्यों वचिआए । ताही पर धरि कमल लदाए । सहस शकट भरि व्याल पठाए ॥ एक व्याल मैं उनहि बताए। कोटि व्याल मम सदन चलाए ॥ ग्वालन देखि मनहि रिस कांपै । पुनि मनमें यह अटकर नापै ॥ आपहि आप नृपहि तनु त्याग्यो। सूर देखि कमलन उठि भाग्यो ॥ ८८ ॥ नटराग ॥ भीतर लए गोप बुलाइ। हृदय दुख मुख हलभली करि ब्रजहि दिए पठाइ ॥ नंदको शिरोपाव दीन्हो गोप सब पहिराइ। यह कह्यो बलराम श्यामहि देखिहौं दोउ भाइ॥ अतिहि पुरुषारथ करे उन कमल उनहि ल्याइ ॥ सूरप्रभु को देखिहों मैं एक दिवस बुलाइ ॥८९ ॥ कमल शकटनि भरे व्याल मानो। श्यामके वचन सुनि मनहि मन रह्यो गुनि काठ ज्यों गयो घुनि तन भुलानो ॥ भयो बेहाल नंदलालके रुव्याल यह उरगते बांचि फिरि ब्रजहि आयो। कह्यो दावानलहि देखों तेरे बलहि भस्मकरि ब्रजप्रलहि में कहि पठायो॥चल्यो रिसपाइ अतुराइ तब धाइके ब्रजलोग वनसहित मैं जारि आऊं। नृपतिके लेपान मन कियो अभिमान करत अनुमान चहुँपास धाऊं ॥ वृंदावन आदि ब्रजआदि गोकुल आदि आदि बुन्यादि सब अहिर जारौं । चल्यो मगजात कहि बात इतरात अति सूरप्रभु सहित संहारि डारौं॥९०॥ राग गुंड मलार ॥कमल पहुँचाइ सब गोप आए। गए यमुनातीर भई अतिहीभीर देखि नंदतीर तुरतही बोलाए ॥ दियो शिरपावँ नृपराउने महरको आप पहरावनी सब दिखाए। अतिहि सुखपाईकै लियो शिरनायकै हरष नंदराईकै मन बढाए ॥ श्याम बलरामको नाम जब हम लियो सुनत सुखकियो उन कमल ल्याए। सूर नंदसुवन दोऊ एक दिवस देखिहौं पुहुप लिए सुख पाए इनि बोलाए ॥ ९१ ॥ धनाश्री ॥ यह सुनि नंद बहुत सुख पाये।कमल पठाइ दये नृपलीन्हे देखनको दुहुँ सुतन बुलाये॥सेवा बहुत मानि है लीन्हीं ब्रजनारिन मन हरष बढाये। बड़ीबात भई कमल पठाए आनहु आपुन जलते ल्याये ॥ आनँद करत यमुना तट ब्रजजन खेलत खातहि दिवस विहाए। एक मुख श्याम बचे कालीते यकमुख कंसहि कमल चलाए ॥ हँसत कान्ह बलराम सुनत यह हमको देखन नृपति मँगाए । सूरदास प्रभु मात पिता हित कमलकोटिदै ब्रजहि बचाए ॥ ९२ ॥ अथ कालीलीला दूसरी । राग धनाश्री ॥ नारद कही समुझाइ कंस नृपराजको । तब पठयो ब्रज दूत पुहुप येक काजको ॥ १ ॥ तब पठयो ब्रजदूत

सुनी नारद मुखवानी । वार वार ऋषिकाज कंस मुख स्तुति गानी ॥ धन्य धन्य मुनिराज तुम भलो मंत्र दियो मोहि । दूत चलायो तुरतही अवहिं जाहि व्रज जोहि ॥ २ ॥ इह कहियो तू जाइ कमल नृप कोटि मँगायो । पत्र दियो लिखि हाथ कह्यो बहुभांति जनायो ॥ कालि कमल नहिं आवई तौ तुमको नाँहि चैन । शिरनवाइ करजोरिकै चल्यो दूत सुनि वैन ॥३॥ तुरत पठायो दूत नंद घरही में आयो। कमल फूलके भार कंसनृप वेगि मँगायो॥ कालिह न पहुँचैं आइकै तब वासियो व्रजलोग । गोकुलमें जे सुखकिये ते करि देहौं सोग ॥४॥ जो न पठावहु पुहुप कहौंगे तैसी मोको।यह जानहु गोपन समेत धरिल्याऊंतोको॥वल मोहन तेरे दोउनको पकरि मगाऊँ कालि। पुहुप वेगि पठए वनै जोरे वसौ व्रजपालि॥५॥यह सुनि नंद डराय अतिहि मन मन अकुलानो । यह कारज क्यों होइ काल अपनो करिजानो ॥ और महर सब वोलिलै कैसी करैं उपाइ। कालि प्रात व्रज मारिहै बांधि सबनि लैजाइ॥६॥वल मोहनको नाउँ धरयो कहि पकरि मँगावन । जाते अति भयो सोच लगत सुनि मोहिं डरावन॥यह सुनि शिरनाये सवन मुखहि न आवैवात । वारवार नंद कहतहैं यह लरिकन परघात ॥ ७ ॥ की वालकानि भगाइ जाहिलै आन भूम्यपर । वरु हमको लैजाइ श्याम वलराम वचै घर ॥ महरि सबै व्रजनारिसों कहि पूछत कौन उपाउ। जनमहिते करवरटरी अबके नहीं वचाउ ॥ ८ ॥ कोउ कहै दैहैं दाम नृपति जितनो धन चाहै। कोउकहै जैये शरन सबै मिलि बुधि अवगाहै॥ यही सोच सब पागिरहे कहूँ नहीं निरवार । व्रज भीतर नंदभवनमें घर घर इहै विचार ॥ ९ ॥ अंतर्यामी जानि नंदसों बूझत वात । कहा करतहो सोच कहौ कछु मोसों तात ॥ कहा कहौं मेरे लाडिले कहत वडो संताप । मथुरापतिके जी कछू तुमपर उपज्यो पाप ॥ १० ॥ कालीदहके पुहुप मांगि पठये हमसों उनि । तवते मोजिय सोच जवहिं ते वात बुरी सुनि ॥ जोनहिं पठवहुँ कालिही तौ गोकुल देउँ लगाइ। मो समेत दोउ वंधु तुम कालिहि लेइ वँधाइ ॥ ११ ॥ यह कहि पठयो कंस तवहि ते सोच परयो मोहिं। प्रथम पूतना आइ वहुत दुख दये जो गई तोहि ॥ तृणावर्तके घात ते वहुत वच्यो दुखपाइ । शकटा केशीते वच्यो अब को करै सहाइ ॥ १२ ॥ अघा उदरते वच्यो वहुत दुख सह्यो कन्हाई । वकारह्यो मुखवाइ तहां भयो धर्म सहाई ॥ इतने करवर हैं टरे देवनकिये सहाइ। तवते अब गाढीपरी मोको कछु न सुहाइ ॥ १३ ॥ वावा तुमहीं कहत कौन धौं तोहि उवारै। सोइ व्रजदेवता प्रगट कंसगहि केशपछारै ॥ यह जवहीं हरिसों सुनी नंदमनाहि पतिआइ। गगन गिरत जो संगरह्यो सो करि लेइ सहाइ ॥ १४ ॥ नंदहि यह समुझाइ कान्ह उठि खेलन धाए। जहां व्रज वालक बहुत तुरत तहां आपुन आए ॥ गोपसुतनिसों यह कह्यो खेलैं गेंद मँगाइ। श्रीदामा इह सुनतही घरते लाये जाइ ॥ १५ ॥ सखा परस्पर मारकरैं कोउ कानि नमानै । कौन वडो को छोट भेद भेदा नाहिं जानै॥ खेलत यमुना तट गए आपुहि ल्याए टारि। श्रीदामाके हाथते लै गेंद दयो दहडारि ॥ १६ ॥ श्रीदामा गहि फेट कह्यो हम तुम एक जोटा। कहा भये जो नंद वड़े तुम तिनके ढोटा॥खेलत में कहा छोट वड हमहुं महरके पूत। गेंद दियेही पै वनै छांडिदेहु मद धूत ॥ १७ ॥ तुमसों धूत्यो कहा करौं धूत्या नहिं देख्यो। प्रथम पूतना मारि काग शकटासुर पेख्यो तृणावर्त पटक्यो शिला अघा वका संहारि ॥ तुम तादिन संगही रहे अब धूतन कहत सँभारि ॥ ॥१८॥ टेढे कहा वतात कंसको कमल देहु अब। कालिहि पठएमांगि पुहुप अब लै देहौ जव ॥ वहुत अचगरी जिनकरौ अजहूं तजौ झवारि। पकरि कंस लैजाइगो कालिहि सूर सँभारि॥१९॥

कमल पठाऊँ कोटि कंसको दोप निवारौं । तुम देखत पुनि जाउँ कंस जीवत धरिमारौं ॥ फेट लियो तव झटकिकै चढे कदम पर आइ । सखा हँसत ठाढे सवै मोहन गए पराइ ॥ २० ॥ श्रीदामा चले रोइ जाइ कैहौं नंद आगेगेंद लेहु तुम आइ मोहिं डरपावन लागे॥यह कहि कूदि परे सलिल कीन्हे नटवर साज । कोमलतनु धरिकै गए जहां सोवत अहिराज ॥ २१ यहि अंतर नंदघरनि कह्यो हरि भूखे ह्वैहैं ॥ खेलत ते अव आइ भूखकाहि मोहिं सुनैहैं । अतिआतुर भीतर चली जेंवन कारन आप । छींक सुनत कुशगुण कह्यो कहा भयो यह पाप॥२२॥ अजिर चली पछितात छींकको दोष निवारण । मंजारी गई काटि तवहिं निकसतही वारण ॥ जननी जिय व्याकुल भई कान्ह अवेर लगाई ॥ कुशगुण आजु वहुत भए कुशल रहैं दोउ भाई ॥ २३ ॥ श्याम परे दह कूदि मात जिय गयो जनाई । आतुर आए नंद घरहि वूझत दोउ भाई ॥ नंदघरनिसों यंह कहत मोको लगत उदास । एहि अंतर हरि कहां गए जहां कालीको वास ॥ २४ ॥ देख्यो पन्नग जाइ अतिहि निर्भय भयो सोवत । वैठि तहां अहिनारि डरी वालकको जोवत॥ भागि भागि सुत कौनको अतिकोमल तेरो गात । एक फूंकको नहीं तू विपज्वाला अतितात ॥२५॥ तव हरि कह्यो प्रचारि नारि पति देइ जगाइ । आयो देखन वाहि कंस मोहिं दियो पठाइ ॥ कंसकोटि जरि जाहिगे विषकी एक फुकार । कहा कर मेरी जाहि तू अति वालक सुकुमार ॥ २६ ॥ यहि अंतर सव सखा जाइ व्रजनंद सुनायो । हमसँग खेलत श्याम जाय जलमाँझ धँसायो ॥ वूडि गयो उवरयो नहीं तावातहि वडि वेर । कूदि परयौ चढि कदमते खवरि न करौ सवेर ॥ २७ ॥ त्राहि त्राहि करि नंद सुनत दौरे यमुना तट । यशुमति सुनि यह वात चली रोवत तोरति लट ॥ व्रज वासी नर नारि सव गिरत परत चले धाइ । वूडयो कान्ह सवनि सुनी अति व्याकुल मुरझाइ ॥ २८ ॥ जहँ तहँ परी पुकार कान्ह विन भए उदासी । कौन काहिसों कहै अतिहि व्याकुल व्रजवासी ॥ नंद यशोदा अति विकल परत यमुनमें धाइ । और गोप उपनंद मिलि वांहपकरिलै आइ ॥ २९॥ धेनु फिरत विललात वच्छथन कोउ न लगावै । नंद यशोदा कहत कान्ह विन कौन चरावै ॥ यह सुनि व्रजवासी सवै परे धरणि अकुलाइ । हाइ हाइ करि कहत सव कान्ह रह्यो कहां जाइ ॥ ३० ॥ नंदपुकारत रोइ वुढापा मोको छाधो । कछु दिन मोहलगाइ जाइ जल भीतर माधो यह कहिकै धरणी गिरत जनु तरु काटि गिराइ । नंदघरनि तव देखकै कान्हहि टेरि वुलाइ॥३१॥ निठुरभए सुत आजु तातकी छोह नआवति । यह कहिकै अकुलाइ जलहि भीतर को धावति ॥ परत धाइ यमुना सलिल गहि आनति व्रजनारि । नेकरहो सव मरहिंगी कोहै जीवनहारि ॥ ३२॥ श्याम गयो जल वूडि वृथा जगजीवन जनको । शिरफोरति गिरिजाति अभूपण तोरति अंगको ॥ मुरछि परी तनु सुधिगई प्राण रह्यो कहुँ जाइ । हलधर आए धाइकै जननि गई मुरछाइ ॥ ३३ ॥ नाकमूंदि जल सींचि जननि जननी कहि टेरयौ । वार वार झकझोरि नैक हलधर तन हेर्यौ ॥ कहत उठी वलरामसों वनहि तज्यो लघुभ्रात । कान्ह तुमहि दिन रहत नहिं तुमसों क्यों रहिजात ॥ ३४ ॥ अव तुमहूं जिनि जाहु सखा यकदेहु पठाई । कान्हहि ल्यावै जाइ आजु अवसेर कराई ॥ छाक पठाऊं जोरिकै मगन सोकसरमांझ ॥ प्रात कछू खायो नहीं भूंखेहैगई सांझ ॥ ३५ ॥ कवहुं कहति वनगए कवहुँ कहि घरहि वताततिः । कहां खेलतहौ लाल टेरि यह कहति वुलावति ॥ जागि परी दुख मोहते रोवत देखे लोग । तव जान्यो हरि दह गिरयो उपज्यो वहुरि वियोग॥३६॥ धृगधृगनंदहि कह्यो और कितने दिन जीहौ । मरत नहीं मोहिं मारि वहुरि व्रजवसिहौ कीहौ॥ ऐसे

दुख सों मरन सुख मन कारि देखहु ज्ञान। व्याकुल धरणी गिरि परे नंदभए विनप्राण ॥ ३७ ॥
हरिको अग्रजवंधु तुरतही पिता जगायो। माताको परवोधि दुहुंनि धीरज धरवायो ॥ मोहिं
दोहाई नंदकी अवहीं आवत श्याम। नाथि नाग लैआइहैं तव कहियो वलराम ॥ ३८ ॥ हलधर
कह्यो सुनाइ नंद यशुमति व्रजवासी। वृथा मरत केहिकाज मरै क्यों वह अविनाशी ॥ आदिपुरुष
मैं कहतहौं गयो कमलके काज। गिरिधरको डर करतहौ वह देवन शिरताज ॥ ३९ ॥ वह अवि-
नाशीआहि करौ धीरज अपने मन। काली छेदें नाक लिये आवत नितंत फन॥ कंसहि कमलपठा
इहै काली पठवैं द्वीप। येक घरी धीरज धरौ वैठो सव तरुनीप ॥ ४० ॥ वहां नागिनिसों कहत
श्याम वाम अहि क्यों न जगावै। वालक वालक करति कहा पति क्यों न उठावै ॥ कहा कंस कहा
उरग यह अवहिं दिखाऊं तोहिं। दै जगाइ मैं कहतहौं तू नहिं जानति मोहिं ॥ ४१ ॥ छोटे मुंह
वड़ीवात कहत अवहीं मरिजैहै। जोचितवै करिक्रोध अरे इतनहि जरि जैहै॥ छोहलगति तोहिं देखि
मोहिं काको वालक आहि। खगपतिसों सरवर करी तू वपुरोको आहि ॥४२॥ वपुरा मोसों कहति
तोहिं वपुरी करिडारौं। एक लातसों चापि खसम तेरेको मारौं। सोवत काहू न मारिए चलिआई
यह वात। खगपतिको मैंहीं कियो कहति कहा तू वात ॥ ४३ ॥ तुमहिं विधाता भए और कर्त्ता
कोउ नाहीं। अहि मारोगे आप तनकसे तनकसी वाहीं ॥ कहा करौ कहत न वनै
अतिकोमल सुकुमार। देती अवहिं जगाइके जरि वर होतो छार ॥ ४४ ॥ तूधौं देहि जगाइ तोहि
दोपन कछुनाहीं। परी कहा तोहि प्यारि पाप अपने जरि जाही ॥ हमको वालक
कहतिहै आपु वड़ेकी नारि। वादति है विनकाजही वृथा बढ़ावति रारि ॥ ४५ ॥
तूही नलेहि जगाइ वहुत जो करत ढिठाई। पुनि मरिहै पछिताइ मात पित तेरे भाई ॥ अजहूं
कह्यो करिजाहि घर तू मरि लेहै सुख कौन। पांच वरषके सातको आगे तोको होन ॥ ४६ ॥
झिरकि नारि दै गारि आपु अहिजाय जगायो। पगसों चापी पूंछ सवै अवसान भुलायो ॥ चरण
मसकि धरणीदली उरग गयो अकुलाइ। कालीमनमें तव कही यहँ आयो खगराइ ॥ ४७ ॥
देख्यो नयन उघारि तहां वालक यकठाढो। विषधर झटकी पूंछ फटकि सहसौफन काढो। वार
वार फनघातकै विपज्वालाकी झार ॥ सहसौफन फन फूंकरै नेक नतनहि लगार ॥ ४८ ॥ तव
काली मन कहत पूंछ चांपी एहि पगसों। अतिहि उठो अकुलाइ डरचो वाहन हरि खगसों ॥ यह
वालक धौं कौनको कीन्हो युद्धअघाइ॥ दाँवघाव वहुतै कियो मरत नहीं यदुराइ ॥ ४९ ॥ पुनि
देखै हरि ओर पूंछ चांपी इहि मेरी। मन मन करत विचार लेउँ याको मैं घेरी ॥ दाउँ परचो अहि
जानिकै लियो अंग लपटाइ। काली तव गर्वितभयो प्रभु दियो दाउ वताइ ॥ ५० ॥ कहति उरगकी
नारि गर्व अतिही करि आयो। आ इत पहुँचो वाल कालवश पगहि चलायो ॥ अहिनारिनसों
यह कही मोहिं सम सरि कोउ नाहि। एक फूंक विप ज्वालके जल डोंगर जरिजाहि ॥ ५१ ॥
गर्व वचन प्रभु सुनत तुरतही तनु विस्तारचो। हाइ हाइ करि उरग वार वारही पुकारचो ॥ शरन
शरन अव मरतहौं मैंनहिं जान्यो तोहिं। चटचटात अंग फूटही राखु राखु प्रभु मोहि ॥ ५२ ॥
श्रवन शरन ध्वनि सुनत लियो प्रभु तनु सकुचाइ। क्षमहु मोहि अपराध नजानै करी ढिठाइ ॥
व्रज कृष्ण अवतारहो मैं जानी प्रभु आजु। वहुत किये फन घात मैं वदन दुरावत लाजु ॥ ५३ ॥
रह्यो जानि यहि ठौर गरुडको त्रास गोसाँई ॥ वहुत कृपा मोहिं करी दरशदीन्हो जग साँई। नाक
फोरि फनपर चढे कृपाकरी देवराइ ॥ फन फन प्रति प्रति चरण धरि नितंत हरप वढाइ ॥५४॥

धन्य कृष्ण धनि उरग जानि जन कृपा करी हरि । धन्य धन्य दिन आजु दरशते पाप गए जरि॥ धन्यकंस धनि कमलये धन्य कृष्णअवतार । बडी कृपा उरगहि करी फनप्रति चरण विहार ॥५५॥ शेषकरत जियगर्व अंडको भार शीशधरि । ब्रह्म मुकुंद अनंत नाम को सकै पारकरि ॥ फन फन प्रति अति भार भरि अमित अंडमें गात । उरगनारि करजोरिकै कहत कृष्णसों बात ॥५६॥ देखत ब्रज नर नारि नंद यशुदा समेत सब । संकर्षणसों कहत सुनहु सुत कान्ह नहीं अब ॥ एहि अंतर जल कमल बिच उठो कछू अकुलाइ । रोवतते बरजे सबै मोहन अग्रज भाइ ॥५७॥ आवत हैं वे श्याम पुहुप काली शिरलीन्हे । मात पिता ब्रज दुखित जानि हरि दरशनदीन्हे ॥ निर्तत काली फननिपर देवदुंदुभी बजाइ । नटवर बपु काछे रहे सब देख्योवहभाइ॥५८॥आवत देखे श्याम हरष कीन्हो ब्रजवासी । सोक सिंधु बहि गयो सुखको सिंधु प्रकाशी ॥ जलबूडत नवका मिलै ज्यों तनुहोत अनंद । त्यों ब्रजजन हुलसे सबै आवतहैं नंदनंद ॥ ५९ ॥ सुतदेखत पित मात रोम गदगद पुलकित भयो । उर उपज्योआनंद प्रेमजल लोचन दुहुँअयो ॥ देव दुंदुभी बजावहीं फन प्रति निर्तत श्याम । ब्रजवासी सब कहतहैं धन्य धन्य बलराम ॥६० ॥उरगनारि करजोरि करति स्तुति मुखठाढी ॥ गोपीजन अवलोकि रूप वह अतिरतिबाढी ।सुरअंबर ललना सहित जय ध्वनि सुख मुखगाइ । बडीकृपा एहि उरगको ऐसी काहु नपाइ ॥ ६१ ॥ कृपकरी प्रह्लाद खंभ वैप्रगट भए तबाकृपाकरी गजराज गरुडतजि धाइ गये जब॥द्रुपदसुताको करी कृपावसन समुद्रबढाइ । नंदयशोदहि जो कृपा सोई कृपा एहि पाइ॥६२॥तव काली करजोरि कह्यो प्रभु गरुड त्रासहै मोहिं। अब करिहै ते दंडवत नैन भरि जब देखैंगेतोहि ॥ चरण चिह्न दरशनकरत गहि रहै तेरेपाइ। उरग द्वीपको करिबिदा कह्यो करौ सुखजाइ ॥ ६३ ॥ प्रभु याने कियो कहा चरण जे फन फन परसे । रमा हृदय जे बसत सुरसरी शिव शिव हरसे॥ जन्म जन्म पावन भयो फनपदचिह्न धराइ। पाँइ पर्यो उरगिनि सहित चल्यो द्वीप समुहाइ ॥ ६४ ॥ काली पठयो द्वीप सुरनि सुरलोक पठाए । आपुन आए निकासि कमल सब तटहि धराए ॥ जलते आए श्याम तब मिले सखा सब धाइ । मात पिता दोउ धाइकै लीनो कंठ लगाइ ॥६५॥ फेरि जन्म भयो कान्ह कहत लोचन भरि आए । जहां तहां ब्रज गोपनारि आतुर ह्वैधाए॥अंकम भरि भरि मिलतहैं मनो निधनी धन पाइ। मिली धाइ रोहिणि जननि चूमति लेति बलाइ॥६६॥सखा दौरिकै मिले गये हार हमपर रिसकारि॥ धनि माता धनि पिता धन्य सोदिन जेहि अवतरि । तुम ब्रजजीवनिप्राणहौ यह सुनि हँसे गोपाल। कूदिपरे चढि कदमते तुम खेलत ए ख्याल ॥६७॥ कालील्याए नाथि कमलताही पर ल्याए। जैसी कहिगए श्याम प्रगट सो हमहिं दिखाए ॥ कंस मर्यो निश्चय भई हम जानी ब्रजराज । सिंहिनिको छौना भलो कहा बडो गजराज ॥ ६८ ॥ हरि हलधर तब मिले हँसे मनही मन दोऊ। बंधुमिलत सब कहत भेद नाहिं जानै कोऊ ॥ मात पिता ब्रजलोगसों हरषि कह्यो नंदलाल । आजु रहौ बसि सब इहां मेटहु दुख जंजाल ॥ ६९ ॥ सुनि सबहिन सुखकियो आजु रहिए यमुनातट । शीतल सलिल सुगंध पवन सुख तरु वंसीवट ॥ नंदघरते मिष्टान्न बहु षटरस लिए मँगाइ । महर गोप उपनंदजे सबको दियो बटाइ ॥ ७० ॥ दुखकीन्हो सब दूरि तुरत सुख दियो कन्हाई । हर्षभयो ब्रजलोग कंसको डर बिसराई ॥ कमलकाज ब्रजमारतो कितने लेइ गनाई । नृप गजको अब डर कहां प्रगट्यो सिंह कन्हाइ ॥ ७१ ॥ नंदकह्यो करि गर्व कंसको कमल पठावहु । और कमल जल धरहु कमल कोटिकदै आवहु॥ यह कहियो मेरी कही कमल पठाये कोटि । कोटि द्वैक जलही

धरे यह विनती इक छोटि ॥ ७२ ॥ अपने सम जो गोप कमल तिन साथ चलाए । मन सबके आनंद कान्ह जलते वचि आए ॥ खेलत खात अन्हातही वासर गयो विहाइ। सूरश्याम ब्रजलोगको जहां तहां सुखदाइ॥७३॥५९३ सोरठ ॥ तुम जाहु बालक छांडि यमुना स्वामिमेरो जागिहै । अंगकारो मुख विकारो दृष्टि परे तोहि लागिहै ॥ तुम केरि बालक युवा खेले केरि दौरत दूरियां । लेहु बालक हीरा पदारथ जागिहै मेरो स्वामियां ॥ नामैं नागिन युवाकर खेले न वारे दुरत दुराइयां। कंसकारण गेंद खेले कमलकारण आइयां ॥ तब धाइ धायो जाइ जगायो मानौ छूटी हस्तियां । सहसफन फुंकार छांडे जाइ काली नाथियां ॥ जब कान्ह काली लेचले तब नागिन विनवै देवहो । अबके चेरी अहिवात दीजे करहि तुमरे सेवहो ॥ तब लादि पंकज वाहिर काढ्यो भयो ब्रज मन भावना । मथुरानगरी कृष्णराजा सूर तिनहि वधावना ॥ ७४ ॥ देवगंधार ॥ काली विष गंजन दह आए । देखि मृतक बछ वालक सबलै कटाक्ष जिवाए । बहु उतपात होत गोकुलमें सविता रह्यो भुलाइ । बडी वेरभई अजहुं न आए गृहकृत कछु न सुहाइ । नंदादिक सब गोप गोपि मिलि चले सकल वन धाई ॥ दरशे जाइ उरग लपटाने प्राण तजत अकुलाई ॥ अतिगंभीर धीर निज जानत संकर्पनको भाइ । वश कियो नाग सूरदास प्रभु अतिआनंद नसमाइ ॥ ॥ ९५ ॥ कान्हरो ॥ सबै ब्रजहै यमुनाके तीर । कालीनागके फनपर निर्तत संकर्पणको वीर ॥ लाग मान थेई थेई करि उघटत ताल मृदंग गंभीर । प्रेम मगन गावत गण गंधर्व व्योम विमानन धीर ॥ उरग नारि आगे भई ठाढ़ी नैननि ढारति नीर ॥ हमको दान देइ पति छांड़हु सुंदर श्याम शरीर॥ आए निकसि पहिरि मणि भूषण पीतवसन कटिचीर । सूरश्यामको भुजभरि भेटत अंकमदेत अहीर ॥ ९६ ॥ सप्तदशमोऽध्याय॥दावानलके पानकी लीला ॥ कान्हरो ॥ दावानल ब्रजजनपर धायो । गोकुल ब्रज वृंदावन तृण द्रुम चाहतहै चहुंपास जरायो ॥ घेरत आवत दशहुं दिशाते अति कीने तनुक्रोध। नरनारी सब देखिचकितभए दावा लग्यो चहुंकोध ॥ बहुतौ असुर घात किये आवत धावत पवन समाजु । सूरदास ब्रजलोग कहत इह उव्यो दवा अति आजु ॥९७॥ आइगई दव अतिहि निकटही। यह जानत अब ब्रज न बांचिहै कहत सबै चलिए जलतटही ॥ करि विचार उठि चलन चहतहैं जो देखैं चहुंपास । चकृत भए नर नारिं जहां तहां भरिभरि लेत उसास॥ झरझरात भहरात लपट अति देखिअत नहीं उबार । देखत सूर अग्नि अधिकानी नभलौं पहुंचीझार ॥ ९८॥ दशहुंदिशाते वरत दवानल आवतहै ब्रजजनपर धायो । ज्वालाउठी अकास बराबरि घात आपने करि सब पायो ॥ बीरा लै आयो सनमुखते आदरकरि नृपकंस पठायो । जारि करौं परलय क्षणभीतर ब्रज बपुरो केतिक कहवायो ॥धरणि अकाश भयो परिपूरण नेकनहीं कहुं संधि बचायो । सूरश्याम बलरामहि मारन गर्व सहित आतुरह्वै आयो ॥ ९९॥ ब्रजके लोग उठे अकुलाइ । ज्वालादेखि अकास बराबरि दशहुंदिशाकहुं पारु नपाइ॥झरहरात वनपात गिरत तरु धरणी तरकि तड़ाकि सुनाइ। जल वरपत गिरिवर तर बाचे अब कैसे गिरिहोतु सहाइ ॥ लटकि जात जरिजरि द्रुम वेली पटकत बांस कांस कुशताल। उचटत फर अंगार गगनलौं सूर निरखि ब्रजजन बेहाल ॥ ६०० ॥ नंदघरनि यह कहति पुकारे । कोउ वरषत कोउ अगिनि जरावत दई परचोहै खोज हमारे ॥ तब गिरिवर कर धरयो कन्हैया अब न बांचिहै मारत जारे । जेंवन करन चली जब भीतर छींकपरी तिय आजु सवारे ॥ ताको फल तुरतहि एक पायो सो उवरयो भए धर्म सहारे । अब सबको संहार होतहै छींक किए यक काज विचारे ॥ कैसेहु ए बालक दोउ उबरे पुनि पुनि

सोचति परी खंभारे । सूरश्याम यह कहत जननिसों रहिरी माँ धीरज उरधारे ॥ १ ॥ गौड ॥ भहरात झहरात दवानल आयो । घेरि चहुँ ओर करिसोर अंदोर वन धरणि आकाश चहुँपास छायो ॥ वरत वन बाँस थरहरत कुशकांस जरि उडतहै बांस अतिप्रबल धायो । झपटि झपटत लपट पटकि फूल फूटत फाटि चटकि लट लटकि द्रुमनवायो॥अतिअगिनि झार भार धुंधार करि उचटि अंगार झंझार छायो । वरत वन पात भहरात झहरात अररातत‌रु महा धरणी गिरायो ॥ भए वेहाल सब ग्वाल ब्रजबाल तब शरन गोपाल कहिकै पुकारचो । तृणा केशी शकट बकी बका अघासुर वामकर गिरिराखि ज्यों उवारचौ । नेक धीरज करौ जियहि कोऊ जिनि डरौ कहा यह सुरो लोचन मुदायो ॥ मुठीभरि लियो सब नाइ मुखही दयो सूरप्रभु पियो दावाब्रजजन बचायो ॥२॥ कान्हरो॥ अबकै राखि लेउ गोपाल । दशहुँ दिशाते दुसह दवागिनि उपजीहै यहिकाल॥ पटकत बांस कास कुश चटकत लटकत ताल तमाल । उचटत अतिअंगार फुटत फर झप टत लपट कराल ॥ धूम धूँधि बाढी धर अंमर चमकत विच विच जाल। हरिण बराह मोर चातक पिक जरत जीव वेहाल ॥ जिनि जिय डरहु नयन मूँदहु सब हँसिबोले गोपाल । सूर अनल सब वदन समानी अभयकरे ब्रजबाल ॥३॥ रागगुंड॥दावानल अचयो ब्रजराज ब्रजजन जरत बचायो । धरणि आकाशलौं ज्वाल माला प्रबल घेरि चहुँ पास ब्रजवास आयो ॥ भये वेहाल सब देखि नंदलाल तब हँसतही ख्याल तत्काल कीन्हो । सबनि मूँदे नयन ताहि चितये सैनतृपा ज्योंनीर दव अचैलीन्हो॥देखो अब नैनभरि बुझिगई अग्निझरि चितै नर नारि आनंद भारी॥सूर प्रभु सुख दियो दवानल पीलियो कहत सब ग्वाल धनि धनि मुरारी॥विहागरो॥चकित देखि यह कहि नर नारी॥धरणि अकास बराबरि ज्वाला झपटत लपट करारी॥नहिं वरष्यो नहिं छिरक्यो काहू कहँधो गयो बिलाइ अति आघात करत वनभीतर कैसे गयो बुझाइ तृणकी आगि वरतही बुझिगई हँसि हँसिकहत गुपाल । सुनहु सूर वह करनी कहनी यह ऐसे प्रभुके ख्याल ॥५॥ बिलावल॥जाके सदा सहाइ कन्हाइ ताहि कहो काको डरभाई ॥ वन घर जहां तहां संग डोलैं । खेलत खात सबनिसों बोलैं ॥ जाको ध्यान नपावैं योगी ॥ सो ब्रजमें माखनको भोगी॥जाकी माया त्रिभुवन छावै । सो यशुमतिके प्रेम बधावै ॥ मुनिजन जाको ध्यान नपावैं ॥ ब्रजजन लैलै नाम बुलावैं । सूर ताहि सुर अंमर देखैं ॥ जीवन जन्म ब्रजहिको लेखैं ॥ ६ ॥ कान्हरो ॥ ब्रजवनिता सब कहति परस्पर नंद महरको सुत बड़ वीर । देखहुधौं पुरुषारथ इनको अति कोमल तनुश्याम शरीर ॥ गयो पताल उरग गहि आन्यो ल्यायो तापर कमललदाइ । कमलकाज नृप ब्रज मारतहो कोटि जलज तेहि दिये पठाइ ॥ दावा गिनि नभ धरणि बराबरि दशहूंदिशते लीनो घेरि ॥ नयन मुँदाइ कहा तेहि कीन्हों कहूं नहीं जो देखै हेरि ॥ ए उत्पात मिटत इनहीपै कंस कहा वपुरोहै छार। सूर श्याम अवतार बडो ब्रज येईहैं करता संसार ॥ ७ ॥ सोरठ ॥ अतिसुंदर नंद महर डिठोना । निरखि निरखि ब्रजनारि कहति सब ये जानत कछु टोना ॥ कपटरूपकी त्रिया निपाती तबहिं रहे अतिछौना॥द्वाराशिलापर पटकि तृणाको ह्वैआयो अवपौना ॥ अवा बकासुर तबहिं संहारचो प्रथम कियो वन गौना । सूर प्रगट गिरिधरचो वामकर मैं जानति बलिवौना ॥ ८ ॥ मारू ॥ दवाते जरत ब्रजजन उवारे। पैठिजलगयो गहि उरग आन्यो नाथि प्रगट फन फननि प्रति चरणं धारे ॥ देखैं मुनि लोक सुरलोक शिवलो कके नंद यशुमति हेतु वशमुरारी॥जहां तहां करत स्तुति मुखनि देव नर धन्य,शब्दातिहुँ जय भुवन धारी॥सुखकियो यमुनतट एक वासर रैनि प्रातही ब्रज गये गोप नारी॥सूरप्रभु श्याम बलराम नंद

धाम गयो मात पित ब्रजजनहि सुखदकारी ॥९॥ रामकली ॥ हरिब्रज जनके दुख विसरावन। कहा कंस करि कमल मँगाये कहा दावानल दावन॥जल कव गिरे उरग कव नाथ्यो नहिं जानत ब्रज लोग। कहां बसे यक रैनि दिवस भरि कवहिं भयो यह सोग॥यह जानत हम ऐसेहि ब्रजमें वैसहि करत विहार। सूरश्याम जननीसों मांगत माखन वारंवार१०अष्टादशमोऽध्यायः॥प्रलंववध॥भैरवी॥एक देव प्रलंभ दानवको लीन्हो कंस। बुलाई कह्यो जाइ मारो नंदढोटा देहों वहुत बडाई ॥ तेहि काहिकै आयो ब्रजभीतर करत वडो उतपात।नर नारी देखत सब डरपे कीन्हो हृदय संताप॥हरि ताको दै सैन बुलायो मोपै काहेन आवत। तब वह दोऊ हाथ उन ये आयो हरिदेखि धावत ॥ हरि दोउ हाथ पकरिकै ताके दियो दूरि फटकारी।गिरोधरणि पर अति विह्वल होइ रह्यो नदेह संभारी॥वहुरो उठ्यो संभारि असुर वह धायो निज मुख वाई। देखि भयान करूप असुरको सुर नर गए डराई॥चहुंघा फेरि असुर धारिपट क्यो शब्द उठ्यो आघात। चौंकि परयो कंसासुर सुनिकै भीतर चल्यो हहरात ॥ पुहुप वृष्टि करि देवन मिलि आनंद मोद वढाइ। ब्रजजन नंद यशोदा हरषित सूर सुमंगल गाइ ॥११॥ सारंग ॥ यशुमति वूझति फि राति गोपाल हि। सांझ कि विरियां भई सखीरी मैं डरपति जंजालहि ॥ जवते तृणावर्त ब्रज आयो तवते मोहिं जियसंक। नैनानि ओट होत पल एकौ मैं मन मरति अदंक॥इहि अंतर वालक सव आये नंदहि करत गुहारी। सूरश्यामको आइ कौनधौं लेगयो कांधे डारी ॥ १२ ॥ कान्हरो ॥ आजु कन्हैया वहुत वच्योरी। खेलत रह्यो घोपके वाहर कोउ आयो शिशुरूपरच्योरी ॥ मिलि गयो मनहिं सखा की नाई लेचढाइ हरि कंधस च्योरी। धर्म सहाय होतहै जहँतहँ श्रमकारि पूरव पुण्य वच्योरी ॥ गगन उडाइ गयो ले श्यामहि आइ धरणि पर आपु दच्योरी। सूरश्याम अवकै वचिआये ब्रज घर घर सव सुखहि मच्योरी ॥ १३ ॥ वड़े भाग्यहैं महर महरिकी। लैगयो पीठि चढाइ असुर इक कहाकहौं उवरानि या हरिकी ॥ नंदघरनि कुलदेव मनावति तुमहि लाज सुत घरी पहरकी। जहां तहां तुमहि सहाय सदाहो जीवनिहै यह श्याम शहरकी ॥ हरष भए नंद करत वधाई दानदेत कहाकहौं महरकी। पंचशब्द ध्वनि वाजत नाचत गावत मंगलचार चहरकी ॥ अंकम भरि भरि लेत श्यामको ब्रजनर नारि अतिहि मनहरषी। सूरश्याम संतन सुखदायक दुष्टनके उरशालक करषी ॥ १४ ॥ सारंग ॥ खेलन दूरि जात कत प्यारे। जवते जन्म भयोहै तेरो तवहीं ते इहि भांति ललारे ॥कोउ आवति युवती मिस करिकै कोउ लैजात वतासकलारे। अवलगि वचे कृपा देवनकी वहुत गए मरिशत्रु तुम्हारे॥हाहाकरति पाँइ तेरे लागति अव जनि जाहु दूरि मेरेप्यारे। सुनहु सूर यशुमति सुत वोधति विधिके चरित सवै हैं न्यारे॥१५॥उन्नीसवांअध्याय ॥ कल्याण॥ कवकी टेरति कुँअर कन्हाई।वालसखा सव टेरत ठाढे अरु अग्रज वलभाई॥दाऊजू तुम ह्यां नहिं आवत करो मुखारी आई माता दुहुनि दतौनी करदै जलझारी भरिल्याई ॥ उत्तमविधिसा मुख पखरायो वोदे वसन अँगोछि। दोउ भैया कछु करौ कलेऊ लई वलाइ कर पोंछि ॥ सदमाखन दधि तुरत जमायो मधु मेवा मिष्टान। सूरश्याम वलराम संग मिलि रुचिकरि लागे खान ॥ २० ॥ रागनट ॥ चले वन धेनु चरावन कान्ह। गोपवालक कछु सयाने नंदके सुत नान्ह ॥ हर्षसों यशुमति पठाए श्याम मन आनंद। गाइ गोसुत गोप वालक मध्य श्रीनंदनंद। सखा हरिको यह सिखावत छांडि जिनि कहुं जाहु ॥ सघन वृंदावन अगम अति जाइ कहूँ भुलाहु। सूरके प्रभु हँसत मनमें सुनतही यह वात। मैं कहूं नहिं संग छाडौं वनहि वहुत डेरात ॥ २१ ॥ धनाश्री ॥ हेरी देत चले सव वालक। आनँद सहित जात हरिखेलत संगमिले पशुपालक ॥ कोउ गावत कोउ वेणु वजावत कोउ नाचत कोउ

धावत। किलकत कान्ह देखि यह कौतुक हरषि सखा उरलावत॥ भलीकरी तुम मोको ल्याए मैया हरषि पठाए। गोधन वृंदलिये ब्रजबालक यमुनातट पहुँचाए॥ चरति धेनु अपने अपने रंग अतिहि सघन वनचारो। सूर संग मिलि गाइ चरावत यशुमतिको सुतवारो॥ २२ ॥ देवगंधार द्रुमचढि काहे नटेरौ कान्हा गइयां दूरिगई। धाई जात सबनके आगे जे वृषभान दई॥ घेरे न घिरत तुम विनु माधव जू मिलत नहीं वगदई॥ विडरत फिरत सकल वनमहियां येकइ येक भई॥ छाड़ि खेल सब दूरि जातहै बोलौ जो सके थोककई। सूरदास प्रभु प्रेम समुझिके मुरली सुनत सब आइ गई॥ २३॥ मारू॥ कहि कहि बोलत धौरी कारी। देखो धन्य भाग्य गाइनके प्रीतिकरत बनवारी॥ मोटीभई चरत वृंदावन नंदकुअँरकी पाली॥ काहेन दूध देहि ब्रजपोपन हस्तकमलके लाली। वैन श्रवन सुनि गोवर्धनते तृणदीन्हो धरि चाली। तबहीं वेगि आइ सूरको प्रभुपैते क्यों भजै जेपाली॥ २४॥ कल्याण॥ जब सब गाइ भई एक ठाई। ग्वालन घरको घेरि चलाई॥ मारग में तब उपजी आग। दशहू दिशा जरन सब लाग॥ ग्वाल डरपि हरि शरणै आये। सूर राखि अब त्रिभुवन राये॥२५॥ गौरी॥ साँवरो मनमोहन माई। देख सखी बनते ब्रज आवत सुंदर नंदकुमार कन्हाई॥ मोरपंख शिर मुकुट विराजत मुखमुरली सुर सुभग सोहाई। कुंडल लोल कपोलनि की छवि मधुरी बोलनि वरणि नजाई॥ लोचन ललित ललाट भ्रुकुटि विच ताकि तिलककी रेखवनाई। मानौ मर्याद उलंघि अधिक बल उमँगिचली अति सुंदरताई॥ कुंचितकेश सुदेशवदनपर मानौ मधुपनि माल फिरिआई। मंदमंद मुसुकात मनौ घन दामिनि दुरि दुरि देत दिखाई॥ सोभित सूर निकट नासाके अनुपम अधरनिकी अरुनाई। मानौं शुक सुरंग विलोकि विंवफल चाखन कारन चोच चलाई॥ २६॥ देखौरी नँदनंदन आवत। वृंदावनते धेनु वृंदमें वेनु अधर धरे गावत॥ तनुघनश्याम कमलदल लोचन अंग अंग छविपावत। सुरभीकारी गोरी धूमरी धौरी लैलै नाम बुलावत। संग बाल गोपाल संग सब सोभित मिलि कर पत्र बजावत॥ सूरदास सुख निरखतही सुख गोपी प्रेम बढ़ावत॥ २७॥ रजनीमुख बनते बने आवत भावत मंद गयंदकी लटकान। बालकवृंद विनोद हँसावत करतल लकुट धेनुकी हटकनि॥ विगसत गोपी मनो कुमुद सर रूप सुधा लोचन पुटघटकनि। पूरणकला उदित मनौ उडुपति तेहिछिन विरहव्यथाकी चटकनि॥ लज्जितमन्मथ निरखि विमलछवि रसिकरंग भौंहनकी मटकनि। मोहनलाल छबीलो गिरिधर सूरदास बलि नागरनटकनि॥ २८ ॥ गोचारन॥ विलावल॥ जागिए गोपाललाल प्रगटभई हंसमाल मिट्यो अंधकाल उठौ जननी मुख दिखाई। मुकुलित भए कमलजाल कुमुदवृंद बनविहाल मेटहु जंजाल त्रिविध ताप तन नशाई॥ ठाढ़ेसब सखाद्वार कहत नंदके कुमार टेरतहैं बारबार आइये कन्हाई। गैयनि भई बड़ीबार भरिभरि पैथननि भार बछरागन करैं पुकार तुम विनु यदुराई॥ ताते यह अटकपरी दुहुँनकाज सौंह करी उठि आवहु क्यों न हरी बोलत बलभाई। मुखते पट झटकि डारि चंद्रवदन देउघारि यशुमति बलिहारि वारिजलोचन सुखदाई॥ धेनुदुहन चले धाइ रोहिणी तब लै बुलाइ दोहनी मुहिदै मगाइ तबहीं लैआई॥ बछरा थन दियो लगाइ दुहत बैठिकै कन्हाइ हँसतनंदराइ तहां मात दोउ आई॥ दोहनि कहुं दूधधार सिखवत नंद बार बार यह छवि नहिं वार पार नंद घर बधाई। तब हलधर कह्यो सुनाइ गाइन बन चलौ लिवाइ मेवा लीनो मँगाइ विविधरस मिठाई। जेंवत बलराम श्याम संतनके सुखदधाम धेनुकाज नहिंविश्राम यशुदाजल ल्याई॥ श्याम राम मुखपखारि ग्वालबाललिये हँकारि यमुनातट मनबिचारि गाइन हँकराई॥ शृंग

वेणु नादकरत ॥ मुरली मुख अधर धरत जननी मनहरत ग्वाल गावत सुरसाई वृंदावन तुरतजाइ धेनु चरति तृण अघाइ श्याम हरपपाइ निरखि सूरज बलि जाई ॥ २९ ॥ मुरलीस्तुति ॥ सारंग ॥ जब हरि मुरली अधर धरत खगमोहे मृगयूथ भुलाने निरखि मदन छवि छरत । पशुमोहे सुरभीहु थकीं तृणदंतहि टेकरहत ॥ शुक सनकादि सकल मनमोहे ध्यानिउ ध्यान वहत । सूरजदास भाग्यहैं तिनके जो या सुखहि लहत ॥३०॥ विहागरो ॥ कहो कहा अंगनकी सुधि बिसरि गई । श्याम अधर मृदु सुनत मुरलिका चकृत नारिभई॥ जो जैसे सो तैसे रहिगई सुख दुख कह्यो नजाइ । लिखी चित्रसी सूर सो रहिगई एकटक पल बिसराइ ॥ ३१॥ राग मलार ॥ सुनत बन मुरली ध्वनिकी बाजन । पपीहा गुंज कोकिल वन कुंजत अरु मोरनके गाजन॥यही शब्द सुनिअत गोकुलमें मोहन रूप विराजन । सूरदास प्रभु मिली राधिका अंग अंग कारि साजन ॥ ३२ ॥ मारू ॥ मेरे साँवरे जब मुरली अधर धरी । सुनि ध्वनि सिद्ध समाधि टरी ॥ सुनि थके देव विमान । सुरवधू चित्र समान ॥ ग्रह नक्षत्र तजत नरास । याहीवधे ध्वनिपास ॥ सुनि आनँद उमँगिभरे । जल थलके अचल टरे ॥ चराचर गति विपरीति । सुनि वेनु कल्पित गीति ॥ झरना झरत पापान । गंधर्व मोहे कलगान सुनि खग मृग मौन धरे । फल तृण सुधि बिसरे ॥ सुनि धेनु अति थकित रहे॥तृणदंतहु नहीं गहे । बछरा न पीवैं क्षीर । पंछी न मनमेंधीर ॥ द्रुम वेली चपल भए । सुनि पल्लव प्रगटि नए ॥ जे विटप चंचल पात । ते निकटको अकुलात ॥ अंकुलित जे पुलकित गात । अनुराग नैन चुचात ॥ सुनि चंचल पवन थके । सरिताजल चलि नसके॥सुनि ध्वनि चलीं व्रजनारि । सुतदेह ग्रेह बिसारि सुनि थकित भयो समीर । उलटो बह्यो यमुनानीर । मनमोहन मदनगोपाल । तनश्याम नयन विसाल ॥ नवनील तनु घनश्याम । नवपीत पट अभिराम ॥ नव मुकुट नव घनदाम । लावण्यता कोटिककाम । मनमोहन रूप धरयो । तब कामको गर्व हरयो॥मेरे मदन मोहन लालसंग नागरी व्रजबाल॥नवकुंज यमुनाकूल । देखत सूरदास जन फूल ॥३३॥ पूरबी॥तरु तमाल तरे त्रिभंगी तरुण कान्ह कुँवर ठाढेहैं साँवरेबरन । मोर मुकुट पीतांबर वनमाल विराजित देखत व्रजजन मनहरन॥ सखाअंशपर भुज दीन्हें लीन्हें मुरली अधर मधुरतान विश्वंभरन॥सूर श्याम कमलनयनकौनको नकीन्हे वशविलोकनि श्रीगोवर्धनधरन ॥३४॥ विलावल ॥ श्यामहृदय वर मोतिनमाला । विथकित भई निरखि व्रजवाला ॥ श्रवण थके सुनि वचन रसाला । नैनथकेदरशननँदलाला । कंबुकंठ भुज नैनविसाला।करकेउर कंचन नग जाला॥पल्लव हस्त मुद्रिका भ्राजै।कौस्तुभमणि हृदयस्थल छाजै। रोमावली वरणि नहिं जाई । नाभिस्थलकी सुंदरताई॥ कटि किंकिणी चंद्रमणि संयुत । पीतांबर कटितट छवि अद्भुत ॥ युगल जघकी पटतर कोहै । तरुनी मन धीरजको जोहै ॥ जान जानुकी छवि नसँभारे । नारि निकर मन बुद्धि विचारे ॥ रत्न जटित कंचनकल नेपुरमंदमंद गति चलत मधुर सुर॥युगल कमल पद नखमणि आभा । संतनिमन संतत यह लाभा ॥ जो जेहि अंग सो तहां भुलानी । सूरश्याम गति काहु नजानी ॥३५॥ अध्याय २०॥गौरी ॥ नँदनंदन मुख देख्योमाई । अंग अंग छवि मनहु उये रवि शशि अरु समर लजाई ॥ खंजन मीन कुरंग भृंग वारिजपर अति रुचिपाई । श्रुतिमंडल कुंडल विवि मकरसु विलसत सदन सदाई ॥ कंठ कपोत कीर विद्रुम पर दारिम कननि चुनाई । दुइ सारंग वाहन पर मुरली आई देत दोहाई॥मोहे थिर चर विटप विहंगम व्योम विमान थकाई ॥ कुशमंजुलि वरपत सुर ऊपरते सूरदास बलिजाई ॥३६॥ केदारो ॥ देखिरी

देखि आनंदकंद। चित चातक प्रेमघन लोचन चकोरको चंद ॥ चलित कुंडल गंड मंडल झलक ललित कपोल। सुधासर जनु मकर क्रीडत इंदु दह दह डोल ॥ सुभग कर आनन समापै मुरलिका एहिभाइ। मनो उनै अंभोज भाजन लेत सुधा भराइ॥श्यामदेह दुकूल दुति छवि लसत तुलसिमाल। तडित घन संयोग मानो सेनिकाशुकजाल ॥ अलक अविरल चारु हासविलास भ्रुकुटी भंग। सूर हरिकी निरखि सोभा भई मनसा पंग ॥ ३७ ॥ मलार ॥ देखौमाई सुंदरताको सागर। बुधि विवेक बल पार न पावत मगन होत मन नागर॥ तनु अति श्याम अगाध अंबुनिधि कटिपट पीततरंग। चितवत चलत अधिक रुचि उपजत भँवर परत सब अंग ॥ नैनमीन मकराकृत कुंडल भुजबल सुभग भुजंग। मुकुतमाल मिलि मानो सुरसरि द्वैसरिता लिये संग॥मोर मुकुट मणिनग आभूषण कटिकिंकिनि नखचंद । मनु अडोल वारिधमें विंवित राका उडुगणवृंद॥ वदन चंद्र मंडलकी सोभा अवलोकनि सुखदेत। जनु जलनिधि मथि प्रकट कियो शशिश्रीअरु सुधासमेत ॥ देखि स्वरूप सकल गोपीजन रही विचारि विचारि । तदपि सूर तरि सकी नसोभा रही प्रेम पचिहारि॥३८॥ भैरवी॥जैसी जैसी बातैं करै कहतन आवैरी। श्यामसुंदर अति मगन मन भावैरी मदनमोहन मृदुवैन बजावैरी। तान तरंग रसरासिक रिझावैरी॥ जंगम थावर करै थावर चलावैरी लहरि भुजंग तजि सनमुख आवैरी ॥ व्योम जन अति गति फूल वरपावैरा। कामान धीरज धरै साकों जो कहावैरी॥ नंदलाल ललना लाल चलत लचावैरी। सूरदास प्रेम हरि हिये न समावैरी॥ ॥ ३९ ॥ कल्याण ॥ वने विसाल हरि लोचन लोल। चितै चितै हरि चारु विलोकनि मानहुँ मांगत हैं मन ओल ॥ अधर अनूप नासिका सुंदर कुंडल ललित सुदेश कपोल। मुख मुसकात महाछवि लागत श्रवण सुनत सुढि मीठे बोल॥ चितवत रहत चकोर चंद्र ज्यों नेक नपलक लगावत डोल। सूरदास प्रभुके वश ऐसे दासी सकल भई विनु मोल ॥४० ॥ धनाश्री॥ब्रज युवती हरिचरण मनावै। जेपद कमल महामुनि दुर्लभ ते सपनेहु नपावै ॥ तनु त्रिभंग युग जानु एक पग ठाढे येक येक दरशायो। अंकुश कुलिश वज्र ध्वज परगट तरुणी मन भरमायो ॥ यह छवि देखि रही एकटकही यह मन करति विचार। सूरदास मनौ अरुण कमल पर सुखमय करत विहार ॥ ४१ ॥ विलावल॥ देखि सखी हरि अंग अनूप। जानु युगल युग जंघ विराजत कोवरणै यहरूप॥लकुट लपेटि लटकि भए ठाढे एकचरण धरधारे। मनहुं नीलमणि खंभ काम रचि राक लपेटि सुधारे॥कवहुँ.लकुटते जानु हरिलै अपने सहज चलावत सूरदास। मानहु करभाकर वारंवार डोलावत॥४२॥नट नारायण॥कटि तट पीत वसन सुदेष। मनहुँ नवघन दामिनीतजि रही सहज सुवेष ॥ कनक मणि मेखलाराजत सुभग श्यामल अंग। मनो हंस रिसाल पंगति नारि बालक संग॥सुभग करि काछनी राजत जलज केसरि खंड। सूर प्रभु अंग निरखि माधुरि मदन तनु परचो दंड ॥ ४३ ॥ नट ॥ तरुणी निरखि हरि प्रति अंग। कोउ निरखि नख इंदु भूली कोउ चरण युगरंग॥ कोऊ निरखि वपु रही थकि कोऊ निरखि यगजानु॥ कोउ निरखि युग जंघ सोभा करति मन अनुमानु॥कोऊ निरखि कटि पीत कछनी मेखला रुचिकारि। कोऊ निरखि हृद नाभिकी छवि डारि तनमन वारि ॥ रुचिर रोमावली हरि की चारु उदर सुदेष ॥ मनो अलिसेनी विराजत वनै एकहि भेष। रही एकटक नारि ठाढी करत बुद्धिविचार। सूर आगम कियो नभते यमुन सूक्षमधार॥ ४४ ॥ राजत रोम राजिव रेप। नील घन मनों धूमधारा रही सूक्षमशेष। निरखि सुंदर हृदयपर भृगुपद परम सलेप । मनहुं सोभित अभ्रअंतर शंभु भूषणभेष ॥ मुक्तमाल नक्षत्र गणसम अर्धचंद्रविशेष॥ सजल उज्ज्वल

जलदमलयज प्रबल वलनि अलेश। केकी कच सुरचापकी छवि दशन तडित सपेप ॥ सूर प्रभु अवलोकि आतुर नशे नैन निमेप ॥ ४५ ॥ गौरी ॥ हरि प्रति अंग नागरि निरखि। दृष्टि रोमावली पररहि वनत नाहिन परपि ॥ कोऊ कहत यह काम श्रेनी कोउ कहति नहिंयोग। कोउ कहति अलिवाल पंगति जुरे एक संयोग ॥ कोऊ कहति अहि काम पठयो डसै जिनि यह काहु। श्याम रोमावलीकी छवि सूर नहीं निवाहु ॥ ४६ ॥ आसावरी ॥ चतुरनारि सब कहति विचारि। रोमावली अनूप विराजति यमुनाकी अनुहारि ॥ उर कलिंदते धँसी जलधारा उदर धरणि पर वाह। जातिचली अति तेजलधारा ह्वै नभि हृदय अवगाह ॥ भुजादंड तट सुभग घटा वन वन माला तरुकूल। मोतिनमाल दुहूंघा मानो फेन लहरि रसफूल॥सूरश्याम रोमावलिकी छवि देखति कराति विचारि। बुद्धि रचति तरि सकति नसोभा प्रेम विवस व्रजनारि ॥ ४७ कल्याण ॥ रोमावली रेख अतिराजत। सूक्षम शेप धूमकी धारा नवघन ऊपर भ्राजत ॥ भृगुपद रेख श्याम उर सजनी कहा कहौं ज्यों छाजत।मनहु मेघ भीतर शशिकी द्युतिकोटि काम तनुलाजत॥मुकतामाल नंदनंदन उर अर्ध सुधा घट कांति। तनु श्रीखंड मेघ उज्ज्वलअति देखि महाबल भांति॥वरही मुकुट इंद्रधनु मानहु तडित दशनछवि लाजत। यकटकरहीविलोकि सूरप्रभु तनुकीहै कह हाजत॥४८॥ सारंग ॥ मुख छवि कहौं कहां लगि माई।मनो कंज परकाश प्रातही रवि शशि होऊ जात छपाई॥अधरबिंब नासा ऊपर मनों शुक चाखनको चोचचलाई। विकसत वदन दशन अति चमकनि दामिनि द्युति दुरदेत देखाई ॥ सोभित श्रीकुंडलकी डोलन मकराकृत अति श्रीवनाई। निशिदिन रटत सूरके स्वामी व्रजवनिता देह विसराई४९॥ केदारो॥सखीरी सुंदरता को रंग। छिनछिनमांह परतछवि औरै कमल नयनके अंग॥परमितकरि राख्यो चाहतिहै तुमहुलागि डोलत संग। चलत निमेप विशेप जानियत भूलि भई मतिभंग॥श्याम सुभगके ऊपरवारों आली कोटि अनंग। सूरदास कछु कहत नआवै गिराभई गतिपंग॥५०॥ विहागरो ॥ श्यामभुजाकी सुंदरताई। वडे विसाल जानु लों परसत यक उपमा मन आई॥ मनो भुजंग गगनते उतरत अधमुख रह्यो झुलाई॥चंदनखौरि अनूपम राजत सो छवि कही नजाई॥रत्नजटित पहुँची कर राजत अंगुरी सुंदरभारी॥सूर मनो फनि शिरमणि सोभित फनफनकी छविन्यारी ॥ ५१ ॥ धनाश्री ॥ गोपी श्यामरंगभूली। पूरण मुखचंद्र देखि नैन कमल फूली ॥ कीधौं नवजलद स्वाति चातक मनलाये। किधौं नारिवृंद सीप हृदय हर्पपाये ॥ रवि छवि कुंडल निहारि पंकज विगसाने। किधौं चक्रवाक निरखि अतिही रतिमाने ॥ कीधौं मृगयूथ जुरे मुरली ध्वनि रीझे। सूरश्याम मुख कुंडल छविकेरस भीजे ॥ ५२ ॥ सोरठ ॥ वडो निठुर विधना यह देख्यो ॥ जबते आजु नंदनंदन छवि वारवार करि पेख्यो। नख अंगुरी पग जानु जंघ कटि रचि कीन्हो निर्मान॥ हृदयवाहु कर हस्त अंग अँग मुखसुंदर अतिवान। अधर दशन रसना रस वाणी श्रवन नयन अरु भाल। सूर रोमप्रति लोचन देतो देखत वनै गोपाल॥५३॥गूजरी॥श्याम अंग युवती निरखि भुलानी॥ कोउ निरखति कुंडलकी आभा यतनेहि मांझ विकानी॥ललित कपोल निरखि कोउ अटकी शिथिल भई ज्यों पानी। देह गेहकी सुधि नहिं काहू हरपनको पछितानी ॥ कोउ निरखति रही ललित नासिका यह काहू नहिं जानी। कोउ निरखति अधरनकी सोभा फुरत नहीं मुखवानी ॥ कोउच कृतभई दशन चमकपर चकचौंधी अकुलानी। कोउ निरखति द्युति चिबुक चारुकी सूर तरुनि विततानी ॥ ५४ ॥ नट ॥ श्यामकर मुरली अतिहि विराजत। परसत अधर सुधारस प्रगटत मधुर मधुर सुर वाजत॥ललकत मुकुट भौंहछवि मटकत नैन सैन अतिछाजत। ग्रीवनवाइ अटकि वंसी

पर कोटिमदन छबिलाजत ॥ लोल कपोल झलक कुंडलकी यह उपमा कछु लागत । मानहुँ मकर सुधारस क्रीडत आप आप अनुरागत ॥ वृंदावन विहरत नंदनँदन ग्वालसखा संग सोहत। सूरदास प्रभुकी छवि निरखत सुर नर मुनि सब मोहत ॥ ५५ ॥ रागधनाश्री ॥ तबलगि सबै सयान रही।जबलगि नवलकिसोरी मुरली वदन समीर बही ॥ तबहींलो अभिमान चातुरी पतिव्रत कुलहि चही। जबलगि श्रवण रंध्र मग मिलिकै नाहीं इहै मही। तबलगि तरुनी तरल चंचलता बुधि बल सकुचि रही।सूरदास जबलगि वह ध्वनि सुनि नाहिन बनत कही॥५६॥गौरी॥ब्रजललना देखति गिरिधरको।एक एक अंग अंग पर रीझी अरुझी मुरलीधरको। मनो चित्रकीसी लिखि काढी सुधिनाहीं मन घरको ॥ लोकलाज कुलकानि भुलानी लुब्धी श्यामसुंदरको ॥ कोउ रिसाइ कोउ कहै जाइ कछु डरी न काहू डरको। सूरदास प्रभुसों मनमान्यो जन्म जन्म परतरको ॥ ५७ ॥ सारंग ॥ वंसी बन कान्ह बजावत। आइ सुनो श्रवणनि मधुरे सुर राग रागिनी ल्यावत ॥ सुरश्रुति तान बंधान अमित अति सप्तअतीत अनागत आवत। जनु युग जुरि बरवेप सजलमथि बदनपयोधि अमृत उपजावत ॥ मनो मोहनी भेषधरे धर मुरली मोहन मुख मधु ध्यावत।सुर नर मुनि वश किए राग रस अधर सुधारस मदन जगावत॥महामनोहर नाथ सूर थिर चर मोहे मिलि मरम नपावत। मानहु मूक मिठाईके गुन कहि नसकत मुख शीश डोलावत ॥ ५८ ॥ केदारो ॥ वंसीवनराज आज आई रण जीति। मेटतिहै अपने बल सबहिनिकी रीति ॥ विडरे गजयूथ शीलसैन लाज भाजी। घूंघट पट कवच कहो छूटे मान ताजी ॥ किनहूं पति गेह तजे किनहूं तनप्रान। किनहुन सुख शरण पायो सुनत सुयशकान ॥ कोऊ पद परसिगए अपने अपने देश। कोऊ वरि रंक भए हुते जे नरेश॥ देत मदन मारुत मिलि दशो दिशि दोहाई। सूरश्याम श्रीगोपाल वंसीवश माई ॥ ५९ ॥ सारंग ॥ जबते वंसी श्रवणपरी। तबहीते मन और भयो सखि मोतन सुधि बिसरी हौं अपने अभिमान रूप पौवनके गर्वभरी। नैक नकह्यो कियो सुनि सजनी वादिहि आपु टरी ॥ विनदेखे अब श्याम मनोहर युगभरि जात घरी। सूरदास सुनु आरजपंथते कछू न चाठटरी॥६०॥ मुरली ध्वनि श्रवन सुनि भवन रहो नहिंपरै। ऐसीको चतुरनारि धीरजमन धरै॥ खग मग तरु सुर नर मुनि शिवसमाधि टरै।अपनी गति तजी पौन सरिताउन टरै॥मोहनके मनकोको अपने वशकरै। सूरदास सप्तसुरन सिंधु सुधा भरै॥६१॥कान्हरो ॥ माईरी मुरली अति गर्वकाहू वदति नाहिं आजु। हरिको मुख कमल देख पायो सुखराजु॥बैठति कर पीठ ढीठ अधरछत्र छाही। चमर चिकुर राजत तहां सुरदासभामाहीं ॥ यमुनाके जलहि नाहि जलधि जान देति । सुरपुरते सुर विमान भुवि बुलाइ लेति॥स्थावर चर जंगम जहँ करति जीति अजीति॥वेदकी विधि मेटि चलति आपनेही रीति॥ वंसीवश सकल सूर सुर नर मुनि नाग। श्रीपतिहूं श्रीविसारी एही अनुराग ॥६२॥ गौरी॥ मुरली मोहे कुँवर कन्हाई। अचवति अधर सुधावश कीन्ही अब हम कहा करैं कहिमाई ॥ सर्वसुहरयो कबहुँको ऐसे रहत नदेति अघाई। गाजति बाजति चढी दुहूँ कर अपने शब्द न सुनत पराई ॥ जिहि तन अनल दह्यो कुल अपनो तासों कैसे होत भलाई। अब कहि सूर कौन विधि कीजै बन की व्याधि मांझ घर आई ॥ ६३ ॥ मलार ॥ मुरली तऊ गुपालहि भावति । सुनरी सखी यदपि नँदनंदन नाना भांति नचावति॥राखत एक पाँइ ठाढेकरि अति अधिकार जनावति। कोमल अंग आपु आज्ञागरु कठिठेठी ह्वै आवति॥अति आधीन सुजान कनौठे गिरिधर नारि नवावति।आपुन पौढि अधर सेज्यापर करपल्लव पदल्लपव ठावति।भ्रुकुटी कुटिल कोप नासा पुट हमपर कोप कुपावति

सूरप्रसन्न जानि एको छिन अधर सुशीश डोलावति॥६४॥श्याम तुम्हारी मदन मुरलिका ने कैसी जग मोह्यो। जे सबही जीव जंतु जलथलेक नाद स्वाद सब पोह्यो॥जे तीरथ तप करे तरनिसुत पन गहि पीठि नदन्हिी। ता तीरथ तपके फल लैकै श्याम सुहागनि कीन्हीं ॥ धरणी धरि गोवर्धन राख्यो कोमल प्राण अधार। अब हरि लटकि रहत ह्वै टेढे तनक मुरलिके भार ॥ निदरि हमहि अधरन रस पीवत पढे दूतिका माई। सूरश्याम निकुंजते प्रगटी वैरि सौति भई आई॥६५॥ सखी री मुरली लीजे चोर। जिन गोपाल कीन्हें अपने वश प्रीति सबनिकी तोर॥ छिन एक घेरि फेरि वसुतासुर धरत नकबहूं छोर। कबहूं कर कबहूं अधरनपर कबहूं कटिमें खोसत जोर॥ नौंजाना कछु मेलि मोहनी राखीअंग अंभोर ॥ सूरदास प्रभुको मन सजनी बँध्यो रागके डोर ॥ ६६ ॥ केदारो ॥ मुरली अधर सजीवन वीर। नादप्रति वनिताविमोही डर विसारे चीर॥ खग नैन मूँदि समाधि धरि ज्यों करत मुनि तपधीर। डोलति नहीं द्रुमलता विथकी मंद गंध समीर॥ मृग धेनु तृण तजिरहे ठाढे वच्छतजि सुख क्षीर। सूर मुरली नाद सुनि थकि रहत यमुनानीर॥ ६७ ॥ मलार ॥ जब मोहन मुरली अधर धरी। गृहव्यवहार थके आरजपथ चलत नसंककरी॥पदरिपु पट अटक्यों आतुरज्यो उलटत पलट मरी।शिवसुत वाहन आइ मिलेहैं मनचित बुद्धि हरि॥ दुरि गए कीर कपोत मधुप पिक सारंग सुधि विसरी॥ उडपति विद्रुम विंब खिसान्यो दामिनि अधिक डरी।निरखे श्याम पतंग सुतातट आनंद उमँगि भरी॥सूरदास प्रभु प्रीति परस्पर प्रेम प्रवाह परी॥२१॥अध्यायअथगोपीकावचन॥ सारंग॥हम नभई वृंदावन रेनु। जिन चरणन डोलत नंद नंदन नित प्रति चारत धेनु॥ हमते धन्य परम ए द्रुम वन वालक वच्छ अरु धेनु। सूरसकल खेलत हँसि वोलत ग्वालन संग मथि पीवत फेनु॥ ६९ ॥ केदारो ॥ कहाभयो या देव जनमते ऊंचे पद कह्यो ऐन। सबजीवनको इहै एक फल छिनक मीन जल करते सैन॥ अधर मधुर पीवत मोहनको सबै कलंक नशाइ। अतिकठोर मणिका इनहीमें छेदि विसाल बनाइ॥ अंतरसो सदा देखतहै निज कुल वास वंश विहाइ। लिख्यो विन अंक नहिं कछु करनी निरखत ताही जो नयन लगाइ॥ सूरदास प्रभु वालपरसन नित काम वेलि अधिकाइ॥७०॥रा सारंग॥ऐसो गुपाल निरखि तन मन धन वारौं। नवल किसोर मधुर मूरति सोभा उर धारौं॥ अरुन तरुन कमलनैन मुरली कर राजै। व्रजजन मन हरन वेन मधुर मधुर बाजै॥ललित त्रिभंग सोतन मालासोहै॥ अति सुदेश कुसुमपाग उपमाको कोहै।चरणरुनित नेपुर कटि किंकिणीकल कूजै॥ मकराकृत कुंडल छवि सूर कौन पूजै ॥ ७१ ॥ ॥ सुंदर मुखकी वलि वलि जाउँ॥ लावनिनिधि गुणनिधि सोभानिधि निरखि निरखि जीवत सब गाँउँ। अंग अंग प्रति अमित माधुरी प्रगटत रस रुचि ठाउँठाउँ॥ तामें मृदु मुसुकानि मनोहर न्याय कहत कवि मोहन नाउँ॥नैन सैन दैदै जब हेरत तापर हों विनमोल विकाउँ ॥ सूरदास प्रभु मदन मोहन छवि यह सोभा उपमा नहिं पाउँ॥ ॥ ७२ ॥ वही॥ मैं वलिजाउँ श्याम मुख छविपर। वलि वलि जाउँ कुटिल कच विथुरी वलि वलिजाउँ भृकुटि लिलाटतर॥वलिवलि जाउँ चारु अवलोकनि वलिहारी कुंडलकी॥वलिवलि जाउँ नासिका सुललित वलिहारी वा छविकी॥ वलि वलि जाउँ अरुन अधरनकी विद्रुम विंब लजावन। मैं वलिजाउँ दशन चमकनकी वारौं तड़ित निसावन॥ मैं वलिजाउँ ललित ठोढ़ीपर वलमोतिनकी माल। सूरनिरखि तन मन वलिहारौं वलि वलि यशुमति लाल॥७३॥ कान्हरो ॥ अलकन की छवि अलिकुल गावत। खंजन मीन मृगज लज्जितभये नैन नचावनि गतिहि नपावति ॥

मुख मुसक्यानि आनि उर अंतर अंबुज बुधि उपजावत।सकुचत अरु विगसित वा छविपर अनुदिन जनम गवांवत ॥ पूरण नहीं सुभग श्यामलको यद्यपि जलधर ध्यावत । वसन समान होत नहिं हाटक अग्निझांपदे आवत ॥ मुकतादाम विलोकि विलखि करि अवलि वलाक वनावत। सूरदास प्रभु ललित त्रिभंगी मनमथ मनहि लजावत ॥ ७४ ॥ मारू ॥ निगमते अगम हरि कृपा न्यारी। प्रीतिवश श्यामकी राइकी रंक कोऊ पुरुषकी नारि नहिं भेदकारी॥प्रीतिवशदेवकी गर्भलीन्हो वास प्रीतिके हेत व्रज भेष कीन्हो। प्रीतिके हेतु यशुमति दियो पयपान प्रीतिके हेतु अवतार लीन्हो॥ प्रीतिके हेतु वनधेनु चारत कान्ह प्रीतिके हेतु नंदसुवन नामा । सूरप्रभुको प्रीतिकेहेतु पाइए प्रीतिके हेतु दोउ श्याम श्यामा ॥७५॥ प्रीतिके वश्यहैं मुरारी। प्रीतिके वश्य नटवर भेषधाऱ्यो प्रीतिवश करज गिरिराज धारी॥प्रीतिके वश्य व्रजभए माखनचोर प्रीतिके वश्य दाँवरि वंधाए।प्रीतिके वश्यगोपी रवन प्रियानाम प्रीतिके वश्य तरु जमलमोक्षदाइ ॥ प्रीतिवश नंदवधन वरुण सदनगये प्रीतिके वश्य वनधाम कामी।प्रीतिके वश्य प्रभु सूर त्रिभुवन विदित प्रीतिवश सदा राधिका स्वामी॥ ॥धनाश्री॥देदैरी मैया दोहनी दुहिहौं मैं गैया। माखनखाये वलभयो करि नंददुहैया॥ कजरी धुमरी सेंदुरी धौरी मेरी गैया। दुहिल्याऊं मैं तुरतही तू करिदै धैया॥ ग्वालनकी सरि दुहतहौं बूझहु वलभैया। सूर निरखि जननी हँसी तव लेति बलैया ॥७७॥ सारंग ॥ वावा मोको दुहन सिखायो। तेरे मन परतीति न आवै दुहत अँगुरियन भाव वतायो ॥ अंगुरीभाव देखि जननी तव हँसिकै श्यामहि कंठ लगायो। आठवर्षको कुअँरकन्हैया इतनी बुद्धि कहांते पायो॥ मातालै दोहनी कर दीन्हीं जब हरि हँसत दुहुनको धायो। सूरश्यामको दुहत देखि तव जननी मन अति हर्ष वढ़ायो॥ धनाश्री ॥जननी मथति दधि गोदुहत कन्हाई।सखा परस्पर कहत श्याम हमहूं ते तुम करत चँडाई। दुहन देहु कछु दिन अरु मोको तब करिहौ मोसम सरिआई। जबलौं एक दुहैगे तबलौं चारि दुहौं तौ नंद दोहाई॥ झूठहि करत दुहाई प्रातहि देखहिंगे तुम्हरी अधिकाई । सूरश्याम कह्यो कालि दुहेंगे हमहूं तुम मिलि होड लगाई॥७९॥ राधायशोदाके आईविलावल॥ उठी प्रातही राधिका दोहनी करल्याइ।महरि सुतासों तब कह्यो कहांचली अतुराइ॥खरिक दुहावन जाति हौं तुम्हरी सेवकाइ। तुम ठकुराइनि घर रहौ मोहिं चेरी पाइ॥ रीती देखी दोहनी कत खीझत धाइ। कालि गई अवसेरकै ह्यां उठे रिसाइ॥गाइगई सब प्याइकै प्रातहि नहिं आइ।ताकारण मैं जातिहौं अतिकरत चँडाइ॥ यह कहि जननी सों चली व्रजको समुहाइ। सूरश्याम गृह द्वारही गौ करत दुहाइ॥८०॥ विलावल सुता महर वृषभानुकी नँदसदनहि आई। गृहद्वारेही अजिरमें गो दुहत कन्हाई॥ श्याम चितै मुख राधिका मनहर्ष वढाई। राधा हरिमुख देखिकै तनु सुरति भुलाई॥ महरि देखि कीरति सुता तेहि लियो बुलाई। दंपतिको सुख देखिकै सूरज वलिजाई॥८१॥ आजु राधिका भोरही यशुमति के आई। महरि मुदित हँसि यों कह्यो मथि भान दोहाई॥ आयसु लै ठाढी भई करनेत सुहाई। रीतो माट विलोवहीं चित जहां कन्हाई॥उनके मनकी कह कहौं ज्यों दृष्टि लगाई। लेई आनो वृष भसो गैया विसराई। नैननिमें यशुमति लखी दुहुँ नकी चतुराई। सूरदास दंपति दशा वरणी नहिं जाई॥ ८२॥ महरि कह्योरी लाडिली केहि मथन सिखायो। कहां मथानी कहां माटहै चित कहां लगायो॥ अपने घर योंहीं मथै कहि प्रगट देखायो। की मेरे घर आइकै ह्यां सब विसरायो ॥ मथन नहीं मोहिं आवही तुम सौंह दिवायो॥ तेहि कारणमैं आइकै तुव वोल रखायो। तब नंद घरनि मथि दह्यो यहि भांति बतायो। सूर निरखि मुख श्यामको तहां ध्यान लगायो ॥ ८३ ॥

सूहा ॥ दुहत श्याम गैयां विसराई । नोआलै पगवांधि वृपभके दोहनी मांगत कुँअर कन्हाई ॥ ग्वाल एक दोहनी लै दीनी दुहौ श्याम अति करौं चँडाई। हँसत परस्पर तारी देदे आजु कहा तुम रहे भुलाई ॥ कहत सखा हरि सुनत नहीं सो प्यारीसों रहे चित अरुझाई । सूरश्याम राधा तन चितवत बडेचतुरकी गई चतुराई॥८४॥राम कली॥राधाएढँग हरी हैरि तेरेवैसे हाल मथत दाधि कीन्हे हरिमानो लिखे चितेरे ॥ तेरो मुख देखत शशि लाजै और कह्यो क्यों वाचै । नैना तेरे जलजितहैं खंजनते अतिनाचै ॥ चपलाते चमकत अति प्यारी कहा करौगी श्यामहि । सुनहु सूर ऐसेहि दिन खोवति काज नहीं तेरे धामहि ॥ ८५ ॥ गूजरी ॥ मेरो कह्यो नाहिंन सुनति । तवहीते एकटक रहीहै कहा मनधौं गुनति ॥ अवहीं ते तू करति एढंग तोहिहै हौन । श्यामको तू ऐंसेठगिलियै कछु नजाने जौन ॥ सुताहै वृपभानुकीरी वड़ो उनको नाउ । सूरप्रभु नंदवदन निरखत जननि कहति सुभाउ ॥ ८६ ॥ सूहा॥प्रगटी प्रीति न रही छपाई । परी दृष्टि वृपभानु सुताकी दोऊ अरुझे निरवारि नजाई ॥ वछरा छोरि खरिकको दीनों आपु कान्ह तनु सुधि विसराई । नोवत वृपभ निकसि गैंया गईं हँसत सखा कहा दुहत कन्हाई ॥ चारौ नैन भए एकठाहर मनहीमन दोहुँ रुचि उपजाई। सूरदास स्वामी रतिनागर नागरि देखि गई नगराई ॥ ८७ ॥ चितैवो छांडिदैरी राधा । हिलि मिलि खेलि श्यामसुंदरसों करति कामको वाधा ॥ कीवैठी रहि भवन आपने काहेको वनिआवै । मृगनयनी हरिको मनमोहति जव तू देखिदुहावै ॥ कवहुँक करते गिरति दोहनी कवहुँक विसरत नोई । कवहुँक वृपभ दुहतहैं मोहन नाजानौं काहोई ॥ कौन मंत्र जानति तू प्यारी पढि डारति हरिगात । सूरश्यामको धेनु दुहनदे कहति यशोदामात ॥ ८८ ॥ धनाश्री ॥ धेनु दुहनदे मेरे श्यामहि । जो आवै तौ सहजरूपसों वनि आवति वेकामहि॥ सूधे आइ श्यामसंग खेलो वोलो वैठोहि धामहि। ऐसो ढंग मोहिं नहिं भावै लेउ नताके नामहि । वर अपने तू जाहि राधिका कहति महरि मन तामहि। सूरआइ तू करति अचगरी को वकहीनिशियामहि ॥ ८९ ॥ जैतश्री ॥ वारवार तू जिनि ह्यां आवै । मैं कहा करौं सुतहि नहिं वरजति घरते मोहिं वोलावै ॥ मोसों कहत तोहिं विनु देखे रहत न मेरो प्रान । छोहलगति मोको सुनि वाणी महरि तुम्हारी आन ॥ मुँह पावति तवहीं लौं आवति औरै लावति मोहिं । सूरसमुझि यशुमति उरलाई हँसति कहतिहौं तोहिं ॥ ९० ॥ गौरी ॥ हँसत कह्यो मैं तोसों प्यारी । मनमें कछू विलगु जिनि मानहु मैं तेरी महतारी ॥ वहुतै दिवस आज तू आई राधा मेरे धाम । महरि वडी मैं सुघरि सुनीहै कछु सिखयो गृहकाम॥ मैया जव मोहिं टहल कहत कछु खिझत वावा वृपभान। सूर महरि सो कहति राधिका मानो अतिहि अजान॥९१॥राग रामकली॥दूध दोहनी लैरी मैया । दाऊ टेरत सुनि मैं आऊं तवलों करि विधि वैया॥ मुरली मुकुट पीतांवरदे मोहिं लै आई महतारी । मुकुट धरचो शिर कटि पीतांवर मुरली करलियो धारी॥राधा राधा कहि मुरलीमें खरिकहि लई वुलाई । सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि ऐसी वुद्धि उपाई॥९२॥कुँवरि कह्यो मैं जाति महरिघर। प्रातहि आई खरिक दुहावन कहति दोहनी लैकर ॥ तव खरिकहि कोऊ ग्वाल गये नहिं तिन कारण व्रजआई । जो देखो तौ अजिरहि वैठे गैया दुहत कन्हाई ॥ तनक दोहनी तनक दुहत मोहिं देखिअधिक रुचि लागी॥तनक राधिका तनक सूरप्रभु देखि महरि अनुरागी॥९३॥गूजरी॥जावर प्यारी आवत रहियो । महरि हमारी वात चलावति मिलन हमारो कहियो॥एक दिवस मैं गई यमुनतट तहां उन देखीआइ॥ मोको देखि वहुत सुख पायो मिलिअंकम लपटाइ ॥ यह सुनिकै चली कुवँरि राधिका मोकोभई

अवार ॥ सूरदास प्रभु मन हरिलीन्हों मोहन नंदकुमार॥९४॥ गूजरी॥सैनदै प्यारी लई बोलाई।खेल नको मिस करिकै निकसे खरिकहि गए कन्हाई॥यशुमतिको कहि प्यारी निकसी घरको नाउँ सुनाइ कनक दोहनी लिये तहां आई जहां हलधरको भाइ। तहां मिलीं सब संग सहेली कुँवरि कहां तूआई॥ प्रातहि धेनु दुहावन आई अहिरनहीं तहां पाई॥ तबहिं गई मैं ब्रज उतावली ल्याई ग्वाल बुलाइ।सूरश्याम दुहि देन कह्यो सुनि राधागई मुसकाइ॥ ९५॥ धनाश्री॥ धेनु दुहन जब श्याम बोलाई। श्रवन सुनत तहां गई राधिका मनहरिलियो कन्हाई॥ सखी संगकी कहति परस्पर कह यह प्रीति लगाई। यह वृषभानु पुरा ये ब्रजमें कहा दुहावन आई॥ मुख देखत हरिको चकृत भई तनुकी सुधि बिसराई। सूरदास प्रभुकें रसवशभई काम करी कठिनाई॥ ९६ ॥ गाउँबसत एते दिवसनिमें आजु श्याम मैं देखे। जे दिनगए बिना ब्रजनाथहि तेई वृथा करि लेखे। कहिये जो कछु होइ सयानी कहिवेको अनुमानै। सुंदर श्याम निकाईको सुख नैनाईपै जानै॥ तबते रूप ठगोरी लागी युग समान पल बितवति।तजि कुललाज सूरके प्रभुको फिरि फिरि मुखतन चितवति॥ ॥ ९७॥ देवगंधार॥ मोहन करते दोहनि लीनी गोपद बछरा जोरे। हाथ धेनु थन बदन त्रियातनु क्षीर छीटि छल छोरे॥ आनन रही ललितपै छींटै छाजति छवि तृण तोरे। मनहुँ निकसि निक लंक कलानिधिं दुग्ध सिंधके बोरे॥ दै घूंघट पट वोट नील हँसि कुँवरि मुदित मुख मोरे। मनहुँ शरद शशिको मिलि दामिनि घेरिलियो घन घोरे॥ यहिविधि रहसति बिलसति दंपति हेतु हिये नहिं थोरे। सूर उमँगि आनंद सुधानिधि मनो बिलावल फोरे॥९८॥ रामकली॥ हरिसों धेनु दुहावत प्यारी। करति मनोरथ पूरण मन वृषभानु महरकी नारी॥ दूधधार मुख पर छवि लागति सो उपमा अतिभारी। मानो चंद कलंकहि धोवत जहां तहां बूंद सुधारी॥ हावभाव रस मगन है दोऊ छबि निरखतिललितारी। गोदोहन सुखकरत सूर प्रभु तीनिहु भुवन कहारी॥ ९९॥ सूहो॥ तुमपै कौन दुहावै गैया। लिहें रहत कर कनकदोहनी बैठतहो अधपैया॥ अति रस कामकि प्रीति जानिकै आवत खरकहुहैया। इत चितवत उत धार चलावत एहि सिखयो है मैया॥ गुप्त प्रीति तासों कर मोहन जोहै तेरी दैया। सूरदास प्रभु झगरो सीख्यो ये जोधर खसम गुसैया॥७००॥ धनाश्री॥करिरी न्यारी हरिआपनगैया।नहिंन बसात लाल कछु तुमसों सबै ग्वाल इकठैयां॥नहिन अधिक तेरे बाबाके नाहिं तुम हमरे नाथ गुसैयां॥हम तुम जाति पांतिके एकै कहाभयो अधिकी द्वैगैया॥ जादिनते सबरे गोपनमें तादिनते करत लँगरैया॥ मानीहार सूरके प्रभु सों बहुरि न करिहो नंदहुहैया॥ १॥ सूहो॥ धेनु दुहत अतिही रिसबाढी। एकधार दोहनी पहुँचावत एकधार जहां प्यारी ठाढी॥ मोहन करते धार चलत पय मोहनी मुख अतिही छविगाढी। मनो जलधर जलधार वृष्टि लघु पुनि पुनि प्रेमचंदपर बाढी॥ सखी संगकी निरखति यह छबि भई व्याकुल मन्मथकी डाढी। सूरदास प्रभुके वशभई सब भवनकाजते भई उचाढी॥ २॥ ॥ बिलावल॥ दुहिदीनी राधाकी गैयां। दोहनी नहींदेत करते हरि हाहाकरति परतिहै पैयां॥ ज्यों ज्यों प्यारी हाहा बोलति त्यों त्यों हँसत कन्हैया। बहुरि करौ प्यारी तुम हाहा देहौं नंददुहैया॥ तब दीनी प्यारी कर दोहनी हाहा बहुरि करैया। सूरश्याम रस हावभाव करि दीनी कुँवर पठैया॥ ३॥ चलन चहति पग चलै नघरको। छांडत बनत नहीं कैसेहू मोहन सुंदरवरको॥ अंतर नेक करूं नहिं कबहूं सकुचतिहौं पुरनरको। कछुदिन जैसै तैसे खोऊं दूरिकरौं पुनि डरको॥ मन में यह विचार करि सुंदरि चली आपने पुरको। सूरदास प्रभु कह्यो जाहु घर घात करचो नख

उरको ॥ मलार ॥ मुरि मुरि चितवति नंदगली । डग न परत व्रजनाथ साथ बिनु विरह व्यथा मचली ॥ वार वार मोहन मुख कारण आवत फिरि गुअली । चली पीठिदै दृष्टि फिरावति अंग अंग आनँद रली ॥ सूरदास प्रभु पास दुहायो श्रीवृषभानु लली ॥ ४ ॥ विलावल ॥ शिरदो हनी चली लै प्यारी । फिरि चितवत हरि हँसे निरखि मुख मोहन मोहनी डारी ॥ व्याकुल भई गई सखिअनलौं व्रजको गए कन्हाई । और अहिर सब कहां तुम्हारे हरिसों धेनु दुहाई ॥ यह सुनिकै चकृत भई प्यारी धरणिपरी मुरझाई । सूरदास तब सखियन उर भरि लीनी कुँवरि उठाई ॥ ५ ॥ क्योंहो कुँवरी गिरी मुरझाई।यह वाणी कहि सखियन आगे मोको कारे खाई।।चली लवाइ सुता वृषभा नुहि घरहीतन समुहाई ।डारिदियो भरि दूध दोहनियां अवही नीकेआई ॥ यह कारो सुत नंदमहरको सब हम फूंक लगाई । सूरसखिनमुख सुनि यह वाणी तब यह वात सुनाई॥६॥सारंग॥ मोहिलई नैननि की सैन । श्रवन सुनत सुधि बुधि विसरी सब होलुब्धी मोहनमुख वैन ॥आवत हुते कुमार खरिकते तब अनुमान कियो सखि मैन । निरखत अंग अधिक रुचि उपजी नखशिख सुंदरताको ऐन ॥ मृदु मुसकान हँसे मन कोमनि तवते तिल नरहत चितचैन ।सूरश्याम यह वचन सुनायो मेरी धेनु कही दुहि दैन ॥ ७ ॥ रागधनाश्री ॥ सखिअन मिलि राधा घर ल्याई । देखहु महरि सुता अप नीको कहूं यहि कारे खाई । हम आगे आवति यह पाछे धरणि परी भहराई । शिरते गई दोहनी ढरिकै आपु रही मुरझाई ॥ श्याम भुअंग डस्यो हम देखत ल्यावहु गुणी बुलाई । रोवतजननि कंठ लपटानी सूरश्याम गुनराई ॥ ८ ॥ सारंग ॥ प्रातगई नीके उठि घरते । मैं वरजी कहां जातिरी प्यारी तब खीझी रिस झरते ॥ शीतल अंग खेदसों बूडी सोच परयो मनडरते ॥ अतिहि हठीली कह्यो नमानति करति आपने वरते॥ औरै दशा भई क्षण भीतर वोली गुणी नगरते । सूरगारुडी गुणकरि थाके मंत्र नलागत थरते ॥ ९ ॥ नटनारायण॥चले सब गारुरी पछिताइ । नेकहू नहिं मंत्र लागत समुझि काहु नजाइ ॥ वात बूझत संग सखियन कही हमहि बुझाइ ॥ कहा कहि राधा सुनायो तुम सबनिसों आइ ॥ महाविषधर श्याम अहिवर देखि सबही धाइ । फूंक ज्वा ला हमहूँ लागी कुँवरि उरपरी खाइ ॥ गिरी धरनी मुरछि तवहीं लई तुरत उठाइ । सूर प्रभुको वे गिल्यावहु वडो गारुरिराइ ॥ १० ॥ आसावरी ॥ नंदसुवन गारूरी वोलावहु । कह्यो हमारो सुनत नकोऊ तुरत जाहु व्रज अव लै आवहु ॥ ऐसे गुनी नहीं त्रिभुवन कहुँ हम जानत हैं नाके । आय जाय तौ तुरत जिआवहि नेक छुवतही उठिहै जीके । देखौधौं यह बात हमारी एक हि मंत्र जिवावै । नंदमहरको सुत सूरजप्रभु जो कैसेहुं करिह्यांलौ आवै ॥ ११ ॥ आसावरी ॥ डसीरी माई श्यामभुअंगमकारे । मोहन मुख मुसकानि मनहु विष जाते मरे सो मारे ॥ फुरै न मंत्र यंत्र गइनाही चले गुणी गुणडारे । प्रेम प्रीति विष हिरदैलागी डारतहै तनुजारे ॥ निर्विष होत नही कैसेहु करि वहुत गुणी पचिहारे । सूरश्यामगारुडी विनाको सो शिर गाडूटारै ॥ १२ ॥ धनाश्री ॥ वेगि चलो पिय कुँवरकन्हाई । जाकारण तुम यह वनसेयो सो त्रिय मदनभुअंगम खाई ॥ नैनशिथिल शीतल नासापुट अंगतपति कछु सुधि न रहाई । सकसकात तनु भीजि पसीना उलटि पलटि तनतोरि जँभाई ॥ विनदेखि मूरतिको जित तित उठि दौरी जिनि जहां वताई । ताहि कछू उपचार न लागत करमीजे सहचरि पछिताई ॥ वारवार बूझतिहै ऐसे कमल नयनकी सुंदरताई । जोपै सूर जिवायो चाहत तौ ताको नेक देहु देखाई ॥ १३ ॥ नट ॥ सुनत तुम्हारी वातैं मोहन छुइचले दोऊ नैन । छुटिगई लोकलाज आतुरता रहि न सकति चितचैन॥ उरकांप्यो

तनु पुलकि पसीज्यो विसरिगई सुख बैन। ठाढीहै जैसे तैसे धुकि परी धरणि तिहि अैन॥ कोउ शिरगहि कोउ कमल कुंकुमा कोउ धाई जललैन। ताहि कछू उपचार नलागे डसी कठिन अहि मन मैन॥ होंपठई यक सखी सयानी अब बोलीदे सेन। सूरश्याम राधिका मिले विनु कहा लागे दुखदैन॥ १४॥ केदारो॥ भरि भरि लेत लोचन नीर। तुमविना ब्रजनाथ सुंदरि विरह खेद अधीर॥ कमल उरपर धरत छिनु छिनु छिरकि चंदन चीर। जालमग शशि किरिन रोकित मलय मंद समीर॥ हौं जु तुम्हरे पास पठई देखि मनासिज भीर। सूरदास सुजान श्रीपति मिलि हरहु तनु पीर॥ १५॥ सारंग॥ तनु विष रह्योहै वहु छहरि। नंदसुअन अति गारुरी कहतहैं पठवै धौं महरि॥ गए अवसान भीर नहिं भावै भावै नहिं चहरि। ल्यावो गुणी जाइ गोविंदको बाढीहै अति लहरि॥ देखी डरही विचही खाई मातीहै जहरि। सूरश्याम विषहर कहुँखाई यहकहि चली डहरि॥ ॥ १६॥ सुघराई॥ वृषभानुकी घरनी यशोमति पुकारयो। पठैसुतकाज मैं कहतिहौं लाजतजि पाँइपरिकै महरि करति आरयो॥ प्रात खरिकहिगई आय विह्वल भई राधिका कुँअरि कहुड स्योकारे। सुनी यह वात मैं आइ अतुरात ह्यां गारुरी बडोहै सुत तुम्हारे॥ यह बडी धर्म नंदय रानि तुम पाइहो नेक काहेन सुतको हँकारो। सूर सुनि महरि यह कहि उठी सहजही कहा तुम कहति मेरो अतिहि वारो॥ १७॥ कान्हहि पठै महरि कहति पाइँनपरि। अजू कहुँ कारे काहू खाईहै काम कुँवरि॥ सब दिन आवै जाइ जहां तहां फेरि फिरि। अवहीं खरिक गई आईहै जिय बिसारि॥ निशिके उनीदेनैना तैसे रहे टरि टरि। किधौं कहूं प्यारीको तटकी लागी नजरि। तेरो सुत गारुरी सुन्योहै बावरी महरि। सूरदास प्रभु देखेजैहैरी गरल झरि॥ १८॥ आसावरी॥ यंत्र मंत्र कहाकरि जाने मेरो। यह तुम जाइ गुणिनको बूझहु विनकारण कत करत हो झेरो आठबरषको कुँवर कन्हाई कहा कहत तुम ताहि। किन वहकाइ दईहै तुमको ताहि पकरि लैजाहि॥ मैंतो चकृतभई हौं सुनिकै अति अचरज यह बात। सूरश्याम गारुड़ी कहां को कहआईं विततात॥ १९॥ रागटोडी॥ महरि गारुरी कुँवर कन्हाई। येक विटिनियां कारेखाई॥ ताको श्याम तुरतही ज्याई। बोलिलेहु अपने ढोटाको तुम कहिकै नेक देहु पठाई। कुँवरिराधिका प्रात खरिक गई तहां कहूंधौं कारेखाई। यह सुनि महरि मनहि मुसकानी अबहिं रही मेरे गृह आई। सूरश्याम राधहि कछु कारण यशुमति समुझि रही अरगाई॥२०॥ आसावरी॥तब हरिको टेरति नंदरानी। भली भई सुत भयो गारुरी आजु सुनी श्रवणन यह वानी॥ जननी टेर सुनत हरिआए कहा कहतिरी मैया। कीरति महरि बुलावन आई जाहु न कुँवरकन्हैया॥ कहूं राधिका कारे खाई जाहु न आवहु झारी। यंत्र मंत्र कछु जानतहौ तुम सूरश्याम बनवारी॥ २१॥ गूजरी॥ मैया एक मंत्र मोहिं आवै। विषहर खाइ मरै जो कोऊ मोसों मरन नपावै॥ एक दिवस राधा संग आई खरिक विटिनियां और। तहां ताहि विषहरने खाई गिरीधरणि वहिठौर॥ यहवाणी वृषभानु घरनि कहि यशुमति तव पति आई। सूरश्याम मेरो बड़ो गारुरी राधा ज्यावहु जाई॥ २२॥ ॥ सुघराई॥ यशोमति कह्यो सुत जाहु कन्हाई। कुँवरि जिवाये अतिहि भलाई॥ आजुहि मेरे गृह खेलन आई। जातकहूं कारे तेहि खाई॥ कीरति महरि लिवावन आई। जाहु न श्याम करहु अतुराई सूरश्यामको चली लवाई। गई वृषभानु पुरहि समुहाई॥ २३॥ देवगंधार॥ हरि गारुरी तहां तब आए। यह बानी वृषभानु सुता सुनि मन मन मन अति हर्षबढाए॥ धन्य धन्य आपुनको कीन्हों अतिहि गई मुरझाइ। तनु पुलकित रोमांचल प्रगट भए आनंद अंशुवहाइ॥ विह्वल देखि जननि

भई व्याकुल अंग विष गए समाइ। सूरश्याम प्यारी दोउ जानत अंतरगतिकी भाइ॥२४॥ रामकली॥ रोवति महरि फिराति बितताली। वार वार लै कंठ लगावति अतिहि शिथिल भई पानी॥ नंद सुवन के पाँइ परीलै दौरि महरि तब आइ। व्याकुलभई लाड़िली मेरी मोहन देहु जिवाइ॥ कछु पढ़िपढ़ि करि अंग परसकरि विष अपनो लियो झारि। सूरदास प्रभु बड़े गारुरी शिरपर गांडू टारि॥ २५॥ लोचन दियो कुँवरि उघारि। कुँवरि देख्यो नंदको तब सकुचि अंग सँभारि॥ बात बूझति जननि सौंरी कहाहै यह आजु। मरतते तू बची प्यारी करतिहै कहा लाजु॥ तब कहति तोहिं कारे खाई कछु न रही सुधि गात॥ सूर प्रभु तोहिं ज्याइ लीन्ही कही कुवँरिसों मात॥ २६॥ सारंग॥ बडो मंत्रकियो कुँअर कन्हाई। वारवार लै कंठ लगायो मुखचूम्यो दियो घराहि पठाई॥ धन्य कोखि वह महरि यशोमति जहां अव तरयो यह सुत आइ। ऐसो चरित तुरतही कीन्हों कुँवरि हमारी मरी जिवाइ॥ मनहीमन अनु-मान कियो यह विधना जोरी भली बनाइ। सूरदास प्रभु वडे गारुरी ब्रज घर घर यह घेर चलाइ॥ २७॥ सुघराई॥ भलेभलेहो भले कान्ह विषही उतारो। आजुते गारुरी नाव प्रगटयो तिहारो॥ जननि कहति मेरो सुत वारो। युवती कहति हम तनधौं निहारो॥ अव कौनि करै सांझ सवारो। जान्यो ब्रज वसत कठिन ऐसो कारो सुतवारो॥ युवती कहति हम तनधौं निहारो। अव कौनि करै सांझ सवारो॥ जान्यो ब्रज वसत कठिन ऐसोकारो। यहनिजुमंत्र जनि जियते विसारो॥ बहुरि कारो कहु करैगो पसारो। सूरदास प्रभु सबहिन प्यारो॥ ताहीको डसत जाको हियोहै उज्यारो॥२८॥ रामकली॥ नीके विषहि उतारयो श्याम। वडे गारुरी अव हम जाने संगहि रहत सुकाम॥ ऐसो मंत्र कहां तुम पायो बहुत कियो यह काम। मरी आनि राधिका जिवाई टेरत एकहि बाम॥ हम समुझी यह बात तुम्हारी जाहु आपने धाम। सूरश्याम मनमोहन नागर हँसिवशकीन्हों वाम॥२९॥ हँसिवशकीन्हीं घोषकुमारी॥ विवसभई तनुकी सुधि विसरी मन हरिलियो मुरारी॥ गएश्याम ब्रज धाम आपने युवती मदनशर मारि। लहरि उतारि राधिका शिरते दई तरुनिनपै डारि॥ करत विचार सुंदरी सब मिलि अब सेवहु त्रिपुरारी। मांगहु इहै देहु पति हमको सूरशरन वनवारी॥ ३०॥ अध्याय॥ १२॥ चीरहरनलीला॥ जयतश्री॥ भवन रवन सबहै विसरायो। नँदनंदन जबते मन हरि लियो कहति वृथा यह जनम गवायो। जप तप व्रत संयम साधनते प्रगट होत पाषान। जैसेहि मिले श्याम सुंदर वर सोइ कीजै नहिं आन॥इहै मंत्रदृढ कह्यो सबन मिलि याते होइ सुहोई। वृथा जन्म जगमें जिनि खोवहु इहां अपनो नाहिं कोई॥ तवपरतीति सबनिके आई कीन्हो दृढ विश्वास। सूरश्याम सुंदर पति पावैं इहै हमारे आश॥ ३१॥ आसावरी॥ गौरीपति पूजति ब्रजनारि। नेम धर्मसों रहति क्रिया युत बहुत करति मनुहारि॥इहै कहति पति देहु उमापति गिरिधर नंदकुमार। शरनराखिलेवहु शिवशंकर तनहि नशावतमार॥ कमल पुहुपमा तूल पत्रफल नाना सुमन सुवास महादेव पूजति मन वच क्रम करि सूरश्यामकी आस॥ ३२॥ रामकली॥ शिवसों विनय करति कुमारि। जोरिकर मुख करति स्तुति वडे प्रभु त्रिपुरारि॥ शीत भीत न करत सुंदरि कृषभई सुकुमारि। छहो ऋतु तप करति नीके गृहको नेह विसारि॥ ध्यानधरि करजोरि लोचन मूंदि एक एक याम। विनय अंचल छोरि रविसों करतिहै सब वाम॥ हमहिं होहु कृपालु दिनमणि तुम विदित संसार। कामअति तनुदहत दीजै सूरश्याम भर्तार॥ ३३॥ नटनारायण॥ रविसों विनय करति करजोरैं। प्रभु अंतर्यामी यह जानी हम कारण जप तप जलखोरैं॥ प्रगटभए

प्रभु जलही भीतर देखि सबनको प्रेम। मींडत पीठि सबनिकी पाछे पूरण कीन्हे नेम॥ फिरि देखैं तो कुँवर कन्हाई रुचिसों मीजत पीठि। सूर निरखि सकुचीं ब्रज युवती परीश्याम तनुडीठि॥ ३४॥ देवगंधार॥ अति तप देखि कृपा हरि कीन्हों। तनुकी जरनि दूरिभई सबकी मिलि तरुणिन सुखदीन्हों॥ नवलकिसोर ध्यान युवती मन ऊहै प्रगट दिखायो। सकुचि गईं अंग बसन समारति भयो सबनि मनभायो॥ मन मन कहति भयो तप पूरण आनँद उर नसमाई। सूरदास प्रभु लाज नआवति युवतिन माझ कन्हाई॥ ३५॥ सारंग॥ हँसत श्याम ब्रजघरको भागे। लोगनको यह कहति सुनावति मोहन करन लँगरई लागे॥ हम स्नान करत जलभीतर आपुन मीजत पीठि कन्हाई। कहाभयो जो नंदमहरसुत हमसों करत अधिक ढीठाई॥ लरिकाई तबहींलौं नीकी चारि वरष की पांच। सूरजाइ कहिहैं यशुमति सों श्याम करत एनाच॥ ३६॥ प्रेम विवस सब ग्वालि भईं। उरहन दैन चलीं यशुमतिको मनमोहनके रूप रईं॥ पुलकि अंग अँगिया उर दरकी हार तोरि कर आपु लईं। अंचलचीर घातनख उरकरि यहिमिस करि नंदसदन गईं॥ यशोमति माई कहा सुत सिखयो हमको जैसे हाल कियो। चोली फारि हार गहि तोरचो देखो उर नखघात दियो॥ आंचरचीर अभूषण तोरे घेरि धरत उठि भागि गयो। सूर महरि मन कहति श्याम धौं ऐसे लायक कबहिं भयो॥ ३७॥ रागगौरी॥ महरिश्यामको बरजति काहिन। ऐसे हाल किये हरि हमको भई कहूं जगआहिन॥ और बात एक सुनहु श्यामकी अतिहि भएहैं ढीठ। बसन विना स्नान करति हम आपुन मीजत पीठ॥ आपु कहति मेरो सुत वारो हियो उघारि दिखायो। सुनतहु लाज कहतहु न आवै तुमको कहा लजायो॥ यह वाणी युवतिन मुख सुनिकै हँसी बोली नँदरानी। सूरश्याम तुम लायक नाहीं बात तुम्हारी जानी॥ ३८॥ गौरी॥ बात कहौ सो लहै वहैरी। बिना भीति तुम चित्र लिखतिहौ सो कैसे निबहैरी॥ तुम चाहतहौ गगन तुरैया मांगे कैसे पावहु। आवतही मैं तुम लखि लीन्ही काहि मोहिं कहा सुनावहु॥ चोरीरही छिनारो अब भई जान्यो ज्ञान तुम्हारो। औरै गोपसुतन नाहिं देखौ सूरश्याम है वारो॥ ३९॥ मलार॥ ग्वालिनि घरहीकी वाढी। निशि दिन देखत अपनही आँगन ठाढी॥ कबहिं गुपाल कंचुकी फारी कब मैं ऐसे योग। अबहीं संग खेलन सीखे यह जानत सब लोग॥ नितही झगरतहैं मनमोहन मूरति देखि प्रेमरस चाखी। सूरदास प्रभु अटक नमानत ग्वाल सबैहैं साखी॥ ४०॥ गौरी॥ यहि अंतर हरि आइ गए। मोर मुकुट पीतांबर काछे अतिकोमल छवि अंग भए॥ जननि बुलाइ बांह गहि लीन्हो देखहुरी मदमाती। इनहीको अपराध लगावति कहा फिरत इतराती॥ सुनिहैं लोग मष्ट अबहूं करि तुमहि कहां की लाज। सूरश्याम मेरो माखन भोगी तुम आवति बेकाज॥४१॥ केदारो॥ अबहीं देखे नवल किसोर। घर आवतहीतनकभये हैं ऐसे तनके चोर॥ कछु दिन करि दाधि माखन चोरी अब चोरत मनमोर। विवस भई तनु सुधि नसंभारति कहत बात भई भोर॥ यह वाणी कहतही लजानी समुझिभई जिय ओर। सूरश्याम मुख निरखि चली घर आनँद लोचन लोर॥ ४२॥ नटनारायण॥ ब्रज घर गईं गोपकुमारि। नेकहूं कहुँ मन न लागत कामधाम विसारि॥ मात पितको डर न मानत सुनत नाहिन गारि। हठकराति विरुझाति तब जिय जननि जानत वारि॥ प्रातही उठि चलीं सब मिलि यमुनातट सुकुमारि। सूरप्रभु ब्रत देखि इनको नाहिन परत सँभारि॥ ४३॥ गौरी॥ यमुनातट देखे नँदनंदन। मोर मुकुट मकराकृत कुंडल पीतवसन मनुचंदन॥ लोचन तृप्त भए दरशनते उरकी तपति बुझानी। प्रेममगन तब भई सुंदरी उर गद गद मुखवानी। कमल

नयन तटपरहैं ठाढे सकुचाहिं मिलि व्रजनारी। सूरदास प्रभु अंतर्यामी व्रजपूरण पगधारी॥ ४४॥ नट॥बनत नहीं यमुनाको ऐबो। सुंदर श्याम घाटपर ठाढे कहौ कौन विधि जैवो॥कैसे बसन उतारि धरैं हम कैसे जलहि समैवो। नँदनंदन हमको देखैंगे कैसे करिजो अन्हैवो॥ चोली चीर हार लै भाजत सो कैसे करि पैवो। अंकम भरि भरि लेत सूर प्रभु कालि नएहिपथ ऐवो॥ राम कली॥ कैसे बनै यमुना स्नान॥नंदको सुत तीर बैठो बड़ो चतुर सुजान॥हारतोरै चीर फारै नयन चलै चुरा इ॥कालिधोखे कान्ह मेरी पीठि मींजै आइ॥ कहति युवती बात सुनि सब थकित भईं व्रजनारि॥सूर प्रभुको ध्यान धर मन रविहि बांह पसारि॥ ४५॥ गूजरीराग॥ अति तप करति घोषकुमारि कृष्णपति हम तुरत पावैं कामआतुरनारि॥ नैनमूँदति दरश कारण श्रवण शब्द विचारि। भुजा जोरति अंक भरि हरि ध्यान उर अंकवारि॥शरद ग्रीषम डराति नाहीं करति तपु तनुगारि। सूर प्रभु सर्वज्ञ स्वामी देखि रीझे भारि॥ ४६॥ धनाश्री॥ व्रजवनिता रविको करजोरे। शीत भीत नहिं करति छहोंऋतु त्रिविधकाल यमुनाजल खोरे॥ गौरीपति पूजति तपसाधति करति रहति नित नेमू। भोग रहित निशि जागि चतुर्दशि यशोमति सुतके प्रेमू॥ हमको देहु कृष्णपति ईश्वर और नहीं मनआन। मनसा वाचा कर्मणा हमारे सूरश्यामको ध्यान॥ ४७॥ नीके तप कियो तनुगारि। आपु देखत कदमपर चढ़ि मानि लई मुरारि॥वर्षभरि व्रतनेम संयम श्रम कियो मोहिंकाज। कैसेहु मोहिं भजे कोउ मोहिं विरदकी लाज॥ धन्य व्रत इन कियो पूरण शीततपनि निवारि।कामआतुर भजैं मोको नवतरुनि व्रजनारि॥कृपानाथ कृपालु भय तब जानि जनकी पीर सूरप्रभु अनुमान कीन्हो हरों इनकोचीर॥४८॥बिलावल॥बसन हरे सब कदम चढ़ाये। सोरह सहस गोप कन्यनके अंग अभूषन सहित चोराये॥अति विस्तार नीपतरु तामें लै लै जहां तहां लपटाये। मणि आ भरन डार डारनप्रति देखत छवि मनही अटकाए॥ नलिांवर पाटंवर सारी श्वेत पीत चूनरी अरु नाए। सूरश्याम युवतिन व्रत पूरनकोफल कदमडार फललाए॥४९॥सुगही॥आपु कदम चढ़ि देखत श्याम। वसन अभूषन सब हरि लीन्हे विना वसन जलभीतर वाम॥ मूंदत नयन ध्यान धरि हरि को अंतर्यामी लीन्हो जान॥ बारबार सवितासों मांगैं हम पावैं पति सुंदरश्याम। जलते निकसि आइ तट देख्यो भूषण चीर तहां कछु नाहिं। इत उत हेरि चकृतभई सुंदरि सकुचिगई फिरि जलही माहिं॥नाभि प्रयंत नीरमें ठाढ़ीं थरथर अंग कँपति सुकुमारि। को लैगयो वसन आभूषन सूरश्याम उर प्रीति विचारि॥५०॥आवहु निकसि घोषकुमारि। कदमपरते दरशदीन्हों गिरिधरन बनवारि॥ नैन भरि व्रतफलहि देख्यो करयोहै द्रुमडार। व्रत तुम्हारो भयो पूरण कह्यो नंदकुमार॥ सलिलते सब निकसि आवहु वृथा सहत तुषार। देतहौ किन लेउ मोसों चीर चोली हार॥ बांह टेकि विनयकरौं मोहि कहत वारंवार। सूरप्रभु कह्यो मेरे आगे आनि करहु शृंगार॥ ५१॥ रामकली॥ग्वालिन अपनो चीर लैरी॥जलते निकसि निकसि तट ह्वैकर जोरि शीश देरी॥कतहौ शीत सहति व्रजसुंदरि व्रतपूरण भैरी। मेरे कहे आइ पहिरौपट कृपतनु हेम जरैरी॥ हौ अंतर्यामी जानत सब अति यह पैज करैरी। करिहौं पूरणकाम तुम्हारो शरद रास टेरी॥संतत सूर स्वभाव हमारो कत भय काम डरी। कवनेहुँ भाव भजै कोउ हमको तिन तनु ताप हरैरी॥५२॥ हमारे अंवर देहु मुरारी। लै सब चीर कदम चाढि बैठे हम जल मांझ उघारी॥तुमतौ कहावतहौ नँदनंदन हम वृषभानु दुलारी। तुम्हरोतौ अंवर जवहीं दैहौं जलते निकसि होहु सब न्यारी॥ तटपर विना वसन क्यों आवैं लाज लगतिहै भारी। चोली हार तुमहिको दीन्हो चीर हमहि देहु डारी॥ तुम

यह बात अचंभव भाषत नांगी आवहु नारी। सूरश्याम कछु छोह करौजू शीतगई तनमारी॥
॥ ५३ ॥ आसावरी ॥ हाहाकरति घोषकुमारि। शीतते तन कँपत थर थर वसन देहु मुरारि॥ मनहि
मन अतिही भयो सुख देखिकै गिरिधारि। पुरुष स्त्री अंग देखै कहत दोषहै भारि॥ नेकनहिं तुम
छोह आवत गई हिम सब मारि। सूर प्रभु अतिही निठुरहो नंदसुत वनवारि॥५४॥ बिलावल ॥ लाज
ओट यह दूरि करौ। जोई मैं कहौं करौ तुम सोई सकुच वापुरेहि कहाकरौ ॥ जलते तीर आइ
कर जोरहु मैं देखौं तुम विनयकरौ। पूरण व्रत अब भयो तुम्हारो गुरुजन शंका दूरिकरौ॥ अब
अंतर मोसों जिन राखौ बारबार हठ वृथा करौ। सूरश्याम कह चीर देतहौं मो आगे शृंगारकरौ॥
॥ ५५ ॥ जलते निकासि तीर सब आवहु। जैसे सवितासो करजोरे तैसेहि जोरि देखावहु ॥ नव
वाला हम तरुन कान्ह तुम कैसे अंगदिखावैं। जलहीमें सब बाँह टेकिकै देखहु श्याम रिझावैं॥ऐसे
नाहिं रीझौं मैं तुमको तटही बांह उठावहु। सूरदास प्रभु कहत हार चोली वस्त्र तव पावहु ॥ ५६
बिलावल ॥ हमारो देहु मनोहर चीर। कांपत शीत तनहि अति व्यापत हिम सम यमुनानीर॥ मान
हिंगी उपकार रावरो करो कृपा बलवीर। अतिही दुखित प्राण वपु परसत प्रबल प्रचंड समीर॥
हम दासी तुम नाथ हमारे विनवति जलमेंठाढी॥मानहुं विकासि कुमोदिनि शशिसों अधिक प्रीति
उर बाढी॥जो तुम हमै नाथ कै जान्यो यह मांगे हम देहु॥जलते निकासि आइ बाहेरह्वै वसन आपने लेहु॥
कर धरि शीशगई हरि सन्मुख मनमें करि आनंद। ह्वै कृपालु सूरज प्रभु अंवर दीने परमानंद॥५७
जैतश्री॥ तरुनी निकसि निकसि तट आई॥पुनि पुनि कहत लेहु पट भूषण युवती श्याम बुलाई॥जलते
निकसि भई सब ठाढ़ी कर अंग ऊपरदीन्हे। वसन देहु आभूषन राखहु हाहा पुनि पुनि कीन्हे॥
ऐसे कहावतावतिहौ मोहिं बांह उठाय निहारो। करसों कहा अंग उर मूंदौ मेरे कहे उघारो॥
सूरश्याम सोई हम करिहैं जोइ जोइ तुम सब कैहौ॥लैहैं दाउँ कबहुँ हम तुमसों बहुरि कहां तुम जैहौ॥
॥ ५८ ॥ रामकली ॥ ललना तुम ऐसे लाड़ लड़ाए। लैकर चीर कदमपर बैठे किहि ऐसे ढँग लाए॥
हाहाकरति कंचुकी मांगति अंवर दिए मन भाए। कीनी प्रीति प्रगट मिलिवेकी अँखियन शर्म
गमाए। दुख अरु हाँसी सुनहु सखीरी कान्ह अचानक आए। सूरदासके प्रभुको मिलनो अब
कैसे दुरत दुराए॥५९॥नट॥सोरहसहस घोषकुमारि। देखि सबको श्याम रीझे रही भुजा पसारि।
बोलि लीन्हो कदमकेतर इहां आवहु नारि। प्रगट भए तहां सबनिको हरि काम द्वंद्व निवारि॥
वसन भूषन सबन पहिरे हरषभे सुकुमारि। सूरप्रभु गुण भलेहैं सब ऐसे तुम बनवारि
॥ ६० ॥ दृढव्रत कियो मेरे हेत। धन्य धन्य कहि नंदनंदन जाहु सबै निकेत॥
करौं पूरण काम तुम्हरो शरदरास रमाइ। हरषभई यह सुनत गोपी रही शीश नवाइ॥ सबनिको
अंग परस कीन्हो व्रत कियो तनुगारि। सूर प्रभु सुख दियो मिलिकै ब्रजचलीं सुकुमारि॥ ६१॥
॥ सूही ॥ व्रत पूरण कियो नंदकुमार। युवतिनके मेटे जंजार॥ जप तप करि अब तन जिनिगारो।
तुम घरनि मैं भर्ता तुम्हारो॥अंतर शोच दूरि करि डारहु। मेरो कह्यो सत्य उर धारहु॥शरद रास
तुम आश पुरावहुँ। अंकम भरि सबको उरलावहुँ॥यह सुनि सब मन हर्ष बढ़ायो। मन मन कह्यो
कृष्णपति पायो॥ जाहु सबै घर घोषकुमारी। शरदरास देहौं सुखभारी॥सूरश्याम प्रगटे गिरिधारी
आनंद सहित गई घर नारी॥ ६२ ॥ आसावरी ॥ शिवशंकर हमको फल दीन्हो। पुहुप पान नाना
रस मेवा षटरस अर्पण लैलै कीन्हो॥पाँइ परीं युवती सब यह कहि धन्य धन्य त्रिपुरारी॥तुरतहि फल
पूरन हम पायो नंदसुवन गिरिधारी॥ विनय कराति सविता तुमसरिको पयअंजलि करजोरि।

सूरश्याम पति तुमते पायो यह कहि घरहि बहोरि ॥ ६३ ॥ अथ वस्त्रहरनलीला दूसरी ॥ राग सूही ॥
नँदनंदन वर गिरि वर धारी । देखत रीझी घोपकुमारी॥मोर मुकुट पीतांवर काछे । आवत देखे गाइन पाछे ॥ कोटि इंदुछवि वदन विराजै । निरखि अंग प्रांते मन्मथ लाजै ॥ रवि शत छवि कुंडल नहि तूलै । दशन दमक द्युति दामिनि भूलै ॥ नैन कमल मृगसावक मोहै । शुकनासा पटतरको कोहै ॥ अधर विंव फल पटतर नाही । विद्रुम अरु बंधूपलजाही ॥ देखत रीझि रही ब्रजनारी । देह गेहकी सुरति विसारी ॥ यह मनमें अनुमान कियो तव । जप तप संयम नेम करौं अव ॥ बारवार सविताहि मनावति । नँदनंदन पाति देहु सुनावति । नेम धर्म तप साधन कीजै । शिवसों मांगि कृष्णपति दीजै ॥ वरप दिवसको नेम लियो सव । रुद्रहि सेवहु मन वच क्रम अव ॥ दृढविश्वास व्रताहिको कीन्हों । गौरीपति पूजन मन दीन्हों ॥ षटदश सहस जुरीं सुकुमारी । व्रतसाधत नीके तनुगारी ॥ प्रात उठे यमुनाजल खोरे । शीत उष्ण कहुँ अंग नमोरे ॥ पतिके हेत नेम तप साधैं । शंकरसों यह कहिअवराधैं॥कमलपत्रमातूल चढावैं।नयन मूंदि यह ध्यान लगावैं । हमको पति दीजै गिरिधारी । बडे देव तुमहौ त्रिपुरारी ॥ और कछू नहि तुमसों मांगो । कृष्णहेतु यह कहिं पालागों । ऐसेहि करत बहुत दिनवीते । प्रभु अंतर्यामी मनचीते ॥ एकदिवस आपुन आए तहां । नवतरुनी स्नान करत जहां ॥ वसनधरे जलतीर उतारी । आपुन जल पैठीं सुकुमारी ॥ कृष्णहेतु स्नान करैं जहां । सवके पाछे आपुनहैं तहां । मींजत पीठि प्रेम अतिवाढ़ी । चकृत भई युवती सव ठाढी ॥ देखे नँदनंदन गिरिधारी । व्रतफल प्रगट भये वनवारी॥सकुचि अंग जलपैठि लुकावैं । वार वार हरि अंकम लावैं ॥ लाज नहीं आवतिहै तुमको । देखत वसन विना सव हमको ॥ हँसत चले तव नंदकुमार । लोगन सुनवति करत पुकार ॥ हार चीर लै चले पराई । हांकदियो कहि नंददोहाई ॥ डारिवसन भूपन तव भागे । इयाम करन अव ढीठो लागे ॥ भाजे कहां चलौगे मोहन । पाछे आइ गईं तुव गोहन ॥ तनुकी सुधि संभार कछुनाहीं । वसन अभूपन पहिरत जाहीं ॥ चीरफटे कंचुकिं वंदछूटे । लेत न वनत हारहैं टूटे ॥ प्रेम सहित सुख खीझत जाहीं। झूठहि वार वार पछिताहीं । गईं सवै तिय नंद महरघर । यशुमति पास गईं सव दरदर ॥ देखहु महरि इयामके एगुन । जैसे हाल करे सवके उन ॥ चोली चीर हार देखरायो । आपुन भागि इनहिको आयो ॥ यमुनातट कोउ जान नपावै । संग सखा लिये पाछे धावै तुम सुतको वरजहु नंदरानी । गिरिधर करत नहीं भलीवानी ॥ लाज लगति एक वात सुनावति अंचल छोरि हियो दिखरावति ॥ यह देखत हँसि उठी यशोदा । कछु रिसि कछु मनमें करि मोदा ॥ आइगए तेहि समय कन्हाई । वांहगही लै तुरत देखाई ॥ तनक तनक कर तनक अंगुरिया । तुम योवन भारि नवल वहुरिया ॥ जाहु घरहि तुमको मैं चीन्ही । तुम्हरी जाति जानि मैं लीन्हीं ॥ तुम चाहति सो ह्यां नपैहौ । और वहुत ब्रजभीतर लैहौ॥वारवार कहि कहा सुनावति। इनवातन कछु जान नआवति ॥ देखहुरी एभाव कन्हाई । कहांगई तवकी तरुनाई ॥ महरि तुमहि कछु दोपन नाही । हमको देखि देखि मुसुकाही ॥ इनके गुण कैसे कोउ जानै । औरै करत और धरि ठानै॥दिन उरहनो तुमको आई । नीकी पहिरायनि हम पाई ॥ चलीं सवै युवती घर घरको । मनमें ध्यान करतिहैं हरिको ॥ वरप दिवस तप पूरण कीन्हें। नंद सुवनको तन मन दीन्हें ॥प्रातहोत यमुनाफिर आई।प्रथम रहे चढि कदम कन्हाई ॥तीरआइ युवती भई ठाढी । उर अंतर हरिसों रति वाढी॥कह्यो चलो यमुनाजल खोरैं।अंगन आभूपण सवछोरैं॥चोली छोरैं हार उतारैं । करसों सिथिल

केशनिरवारैं॥ इत उत चितवत लोग निहारैं। कह्यो वसन अव चीर उतारैं॥वसन अभूपण धरचौ उतारी। जल भीतर सव गईं कुमारी॥ माघ शीतको भीत नमानै। पटऋतुको गुण समकरि जानै॥ वारवार बूडैं जलमाहीं। नेकहु जलको डरपति नाहीं॥ प्रातहुते यक याम नहाहीं। नेमधर्महीमेंदिन जाहीं॥ इतनो कष्ट करैं सुकुमारी। पतिके हेतु गोवर्द्धन धारी॥अतितप करति देखि गोपाला मनमें कह्यो धन्य व्रजवाला॥ हरि अंतर्यामी सव जानै। छिन छिनकी यह सेवा मानै॥ व्रतफल इनहि प्रगट देखरावों। वसन हरों लै कदम चढ़ावों। तनु साधैं तप कियो कुमारी। भजी मोहिं कामातुर नारी॥ सोरहसहस गोप सुकुमारी। सवके वसन हरे वनवारी॥ हरत वसन कछु वार नलागी। जलभीतर युवती सव नागी॥ भूषनवसन सवै हरि ल्याये। कदम डार जहँ तहँ लटकाये॥ ऐसो नीप वृक्ष विस्तारा॥चीर हारधौं कित कहँ डारा॥ सवै समाने तनु प्रतिडारा। यह लीला रची नंदकुमारा॥हार चीर मानो तरु फूल्यो। निरखि श्याम आपुन अनुकूल्यो॥ नेमसहित युवती सव न्हाइ।मन मन सविता विनय सुनाइ॥ मूदहिं नैन ध्यान उर धारे। नँदनंदन पति होंय हमारे॥रविकारि विनय शिवहि मन दीन्हो। हृदय भाव अवलोकन कीन्हो॥ त्रिपुरसदन त्रिपुरारि त्रिलोचन। गौरीपति पशुपति अघमोचन॥ गरल अशन अहि भूपनधारी। जटा धरन गंगा शिर प्यारी॥करति विनय यह मांगति तुमसों॥करहु कृपा हँसिकै आपुनसों॥ हम पावैं सुत यशोमतिको पति। इहै देहु करि कृपा देव रति॥नित्यनेमकरि चलीं कुमारी। येक याम तनको हिमजारी॥व्रजललना कह्यो नीर जडाई। अति आतुरह्वै तटको धाई॥ जलते निकसि तरुनि सव आई। चीर अभूषन तहांनपाई॥सकुचि गईं जलभीतर धाई। देखिहँसत तरुचढ़े कन्हाई॥ वार वार युवती पछिताईं। सवके वसन अभूपन नाईं॥ ऐसो कौन सवै लैभाग्यो। लेतहु ताहि विलम नहिं लाग्यो। माघ तुषार युवति अकुलाहीं। ह्यांकहुँ नंद सुवनतौ नाहीं॥ हम जानी यह वात वनाई। अंवर हरि लैगए कन्हाई॥ होकहुँ श्याम विनय सुनि लीजे। अंवरदेहु कृपाकरि जीजे॥ थर थर अंग कँपति सुकुमारी। देखि श्याम नहिं सकैं सँभारी॥ एहि अंतर प्रभु वचन सुनाए। व्रतको फल दरशन सव पाए॥ कहा कहति मोसों व्रजवाला। माघशीत कत होत विहाला॥अंवर जहां वताऊं तुमको। तौ तुम कहा देहुगी हमको॥ तन मन अर्पन तुमको कीन्हो। जो कछु हतो सो तुमहीं दीन्हो॥ और कहा लैहो जू हमसों। हम मांगतहैं अंवर तुमसों॥यह सुनि हँसे दयालु मुरारी। मेरो कह्यो करो सुकुमारी॥ जलते निकसि सवै तट आवहु। तवहि भले अंवर तुम पावहु॥ भुजाप सारि दीनह्वै भाषहु। दोउ करजोरि जोरि तुम राखहु॥सुनहु श्याम इकवात हमारी। नगनकहूं देखिये नानारी॥ यह भांति आपु कहांधौं पाई। आजु सुनी यह वात नवाई॥ ऐसी साध मनहिं में राखहु। यह वाणी मुखते जनि भाषहु॥ हम तरुनी तुम तरुन कन्हाई। विनावसन क्योंदेहिं देखाई॥पुरुष जाति तुम यह काजानौ। हाहा यह मुखमें जनि आनौ। तौ तुम बैठि रहौ जलही सव। वसन अभूपन नाहिं चाहति अव॥ तवहि देउ जल वाहिर आवहु॥ वाँह उठाइ अंग देखरावहु॥ कतहो शीत सहति सुकुवारी। सकुचदेहु जलहीमें डारी॥ फरचो कदम व्रत फरनि तुम्हारो। अव कहा लज्या करति हमारो॥ लेहु नआइ आपुने व्रतको। मैं जानत या व्रतके धनको॥ नीके व्रत कीन्हो तनुगारी। व्रतल्यायो धरिमैं गिरिधारी॥तुम मनकामन पूरण करिहौं। रासरंग रचिरति सुख भरिहौं॥ यह सुनिकै मन हर्ष वढ़ायो। व्रतको पूरण फल हम पायो॥ छांडहु तुम यह टेक कन्हाई। नीरमाहँ वहु गई जडाई॥आभूषण सव आपुहि लेहु। चीर कृपाकै हमको देहु॥हाहा लागे पाँइ तुम्हारे॥पाप

होतहै जाड़ न मारे॥आजुहिते हम दासि तुम्हारी। कैसे अंग देखावैं उघारी॥अंग देखायहि अंबर पैहो। नातरु वैसेहि दिवस गवैहो॥ मेरे कहे निकासि सब आवहु। थोरेहि हमको भलो मनावहु। सुहां चही तरुनी मुसुकानी।यह आपुन थोरी करि जानी॥जोइ जोइ कहो सो तुमको सोहै। आजु तुम्हारे पटतर कोहै॥हमरी पति सव तुम्हरे हाथा। तुमहि कहौ ऐसी ब्रजनाथा॥ तपतनु गारि कियो जेहि कारण।सो फल लग्यो नीपतरु डारन। आवहु निकसि लेहु पट भूपन। यह लामै हमको सब दूपन॥ अब अंतर कत राखत हमसों। वारंवार कहतहौं तुमसों॥ गोपिन मिलि यह बात विचारी। अवतौ टेक परे बनवारी॥ चलहु न जाइ चीर अबलेहु। लाज छांड़ि उनको सुखदेहु॥ जलते निकसि तीर सब आईं। बारबार हरि हर्ष बुलाईं॥ वैठिगईं तरुणी सकुचानी। देहु श्याम हम अतिहि लजानी॥छाँड़िदेहु यह बात सयानी। वैसेहि करौ कही जो बानी॥करकुच अंग ढाँकि भई ठाढ़ी॥ वदन नवाइ लाज अति बाढ़ी॥ देहु श्याम अंबर अब डारी। हाहा दासी सबै तुम्हारी॥ ऐसे नहीं वसन तुम पावहु। बांह उठाइ अंग देखरावहु। कह्यो मानि युवतिनि करजोरे। पुनि पुनि युवतीं करति निहोरे॥ धन्य धन्य कहि श्री गोपाला। निहचै व्रत कीन्हो ब्रजबाला॥ आवहु निकट लेहु सब अंबर।चोली हार सुरंग पटंबर॥ निकट गईं सुनिकै यह बानी। तरुनी नग्न अंग अकुलानी॥ भूपन वसन सबनको दीन्हों। तियके हेतु कृपा हरि कीन्हो॥ चीर अभूपण पहिरे नारी। कह्यो ताहि ऐसे बनवारी॥ तब हँसि बोले कृष्ण मुरारी। मैं पति तुम मेरी सब प्यारी॥ तुमहि हेतु यह वपु ब्रजधारयो।तुम कारण वैकुंठ बिसारयो॥अब व्रतकरि तुम तनुहि नगारौ। मैं तुमते कहुँ होत न न्यारो॥ मोहिं कारण तुम अति तप साध्यो। मन मनकै मोको अवराध्यो॥ जाहु सदन अब सब ब्रजबाला। अंगपरसि मेंटे जंजाला॥ युवतिन विदा दई गिरिधारी। गईं घरनि सब घोपकुमारी वस्त्रहरनलीला प्रभु कीन्हो। ब्रजतरुणी व्रतको फल दीन्हो॥ यह लीला श्रवणनिसुनि भावै। औरनि सिखवै आपुन गावै॥ सूरश्याम जनके सुखदाई। दृढ़ताईमें प्रगट कन्हाई॥ ६४॥ अथ पनघटको प्रस्ताव॥ अडानो॥ हौं गईही यमुनजल लेनमाई हो सांवरेसे मोही। सुरंग केसरि खौरि कुसुमकीदाम अभिराम कंठकनककी दुलरी झलकत पीतांबरकी खोही॥ नान्ही नान्ही बूंदनमें ठाढोरी बजावै गावै मलारकी मीठीतान मैं तो लालाकी छवि नेकहु न जोही। सूरश्याम मुरि मुसकानि छविरी अँखियनमें रही तब न जानोहो कोही॥ ६५॥ चटकीलो पट लपटानो कटि वंसीवट यमुनाके तट नागरनट। मुकुट लटकि अरु भ्रकुटी मटक देखौ कुंडलकी चटकसों अटकि परी दृगनि लपट॥ आछी चरणनि कंचनलकुट ठटकीली बनमाल करटेके द्रुमडार टेढ़े ठाढ़े नंदलाल छविछाइ घट घट। सूरदास प्रभुकी बानक देखे गोपी ग्वाल टारे न टरत निपट आवै सोंधेकी लपट॥ ॥६६॥ सुघराई॥बजावै मुरलीकी तान सुनावै यहिविधि कान्ह रिझावै। नटवर वेप बनाये चटकसों ठाढ़ो रहे यमुनाके तीर नित नव मृग निकट बोलावै॥ऐसोको जो जाइ यमुनते जल भरि ल्यावै। मोरमुकुट कुंडल बनमाला पीतांबर फहरावै। एक अंग सोभा अवलोकत लोचन जल भरि आवै॥ सूरश्यामके अंग अंगप्रति कोटिकाम छविछावै॥ ६७॥ पूरबी॥ पनघट रोकेहि रहत कन्हाई। यमुनाजल कोउ भरन न पावत देखतही फिरिजाई॥ तबहिं श्याम इक बुद्धि उपाई आपुन रहे छपाइ। तब ठाढ़े जे सखा संगके तिनको लिये बोलाइ॥बैठारे ग्वालनको द्रुमतर आपुन फिरि फिरि देखत। बड़ी बारभई कोऊ न आई सूरश्याम मन लेखत॥६८॥ देवगंधार॥ युवति इक आवत देखी श्याम। द्रुमके ओट रहे हरि आपुन यमुनातटगई बाम॥ जल हलोरि गागरि भरि नागरि जबही

शीश उठायों ॥ घरको चली जाइ तापाछे शिरते घट ढरकायो ॥ चतुरग्वालि करगह्यो श्याम को कनक लकुटिआ पाई। औरनिसों करि रहे अचगरी मोसों लगत कन्हाई ॥ गागरिले हँसिदेत ग्वालिकर रीतो घटनाहिं लैहौं। सूरश्याम ह्यां आनि देहु भरि तबहिं लकुट कर देहौं ॥ ६९ ॥ राग कल्याण ॥ लकुट करकी हों तब देहों घट मेरो जब भरिदेहो। कहा भयो जो नंद बडे वृषभानु आन हमहूं तुम सीहैं समसरि मिलि करिकैहौं ॥ एक गाँव एक ठाँवको वास येक तुम कैहौ क्यों मैं सैहौं। सूरश्याम मैं तुम न डरैहौं जवाबको जवाब देहौं॥७०॥ घट भरिदेहु लकुट तब देहौं। हमहूँ बडे महरकी बेटी तुमको नहीं डरैहौं। मेरी कनकलकुटिआ दैरी मैं भरिदेहौं नीर। बिसारि गई सुधि तादिनकी तोहि हरे बसनके चीर ॥ यह वाणी सुनि ग्वारि विवसभई तनुकी सुधि बिसराइ। सूर लकुट कर गिरत नजानी श्याम ठगोरी लाइ ॥ ७१ ॥ हमीर ॥ घटभरि दियो श्याम उठाइ। नेक तनुकी सुधि न ताको चली ब्रज समुहाइ ॥ श्याम सुंदर नयन भीतर रहे आनि समाइ। जहां जहां भरि दृष्टि देखौं तहां तहां कन्हाइ ॥ उतहिते एक सखी आई कहति कहा भुलाइ। सूर अबहीं हँसत आई चली कहा गँवाइ ॥ ७२ ॥ टोडी ॥ अबहिं गई जल भरन अकेली अरीहो श्याम मोहनी घालीरी। नँदनंदन मेरी दृष्टि परे आली फिरि चितवन उर शालीरी ॥ कहारी कहौं कछु कहत न बनि आवै लगी मरमकी भालीरी। सूरदास प्रभु मन हरि लीन्हो विवस भईहौं कासों कहों आलीरी ॥७३॥ धनाश्री ॥ सुनत बात यह सखी अतुरानी। ताहि बांह गहि घर पहुँचाई आपु चली यमुनाके पानी ॥ देखे आइ तहां हरि नाहीं चितवति जहां तहां बिततानी। जलभरि ठठकत चली घरहि तन बार बार हरिको पछितानी ॥ ग्वालिनि विकल देखि प्रभु प्रगटे हर्ष भयो तन तपति बुझानी। सूरश्याम अंकम भरि लीन्ही गोपी अंतरगतिकी जानी ॥ ७४ ॥ आसावरी ॥ मिलि हरि सुख दियो तेहि बाल। तपति मिटिगइ प्रेम छाकी भई रस बेहाल॥मगनही डग धराति नागरि भवनगई भुलाई। जलभरन ब्रजनारि आवति देखि ताहि बोलाइ ॥ जाति कितहै डगर छाँडे कह्यो इतको आइ। सूर प्रभुके रंग राची चितै रही चितलाइ ॥ ७५ ॥ धनाश्री ॥ काहू तोहिं ठगोरी लाई। बूझति सखी सुनति नहिं नेकहु तुही किधौं ठग मूरी खाई॥ चौंकिपरी सपने जनु जागी तब वाणी कहि सखिन सुनाई। श्याम बरन एक मिल्यो ढोटौना तेहि मोको मोहनी लगाई ॥ मैं जलभरे इताहिको आवति आनि अचानक अंकम लाई। सूर ग्वारि सखियनके आगे बात कहै सब लाज गँवाई ॥ ७६ ॥ टोडी ॥ आवतही यमुना भरे पानी। श्याम बरन काहूको ढोटा निरखि वदन घरगई भुलानी ॥ उन मोतन मैं उन तन चितयो तब हीते उन हाथ बिकानी। उर धकधकी टकटकी लागी तनु व्याकुल मुख फुरत नबानी ॥ कह्यो मोहन मोहनी तूकोहै या ब्रजमें नहिंमैं पहिचानी। सूरदास प्रभु मोहन देखत जनु बारिध जल बूंद हेरानी ॥ ७७ ॥ नेक न मनते टरत कन्हाई। यक ऐसेहिं छकि रही श्यामरस तापर इह इहि बात सुनाई ॥ वाको सावधान करि पठयो चली आपु जलको अतुराई। मोर मुकुट पीतांबर काछे देख्यो कुँवर नंदको जाई ॥ कुंडल झलकत ललित कपोलनि सुंदर नैन बिसाल सुहाई। कह्यो सूर प्रभु एढंग सीखे ठगत फिरत हो नारि पराई ॥ ७८ ॥ कहा ठग्यो तुम्हरो ठगि लीन्हो क्योंनहिं ठग्यो और कहा ठगिहौ औरहिके ठग तुमको चीन्हों ॥ कहो नाउ धरि कहा ठगायो सुनि राखै यह बात।ठगके लक्षण मोहिं बतावहु कैसे ठगके घात।ठगके लक्षण हमसों सुनिए मृदु मुस कनि मनचोरत ॥ नैन सैनदे चलत सूर प्रभु अंग त्रिभंग करि मोरत॥७९॥राग सुही॥अतिहि करत

तुम श्याम अचगरी। काहूकी छीनतहौ गेंडुरी काहूकी फोरतहो गगरी ॥ भरनदेहु यमुना जल हमको दूरिकरौ वातैं एलंगरी। पैंडे चलन नपावै कोऊ रोकि रहत-लरकनलै डगरी।घाट वाट सब देखत आवत युवती डरन मरतिहै सिगरी।सूरश्याम तेहि गारी दीनो जो कोउ आवै तुमरी वगरी॥ रामकली॥ नीके देहु न मेरी गिंडुरी। लैजैहौ धरि यशुमति आगे आवहुरी सब मिलि एक झुंडरी॥ काहू नहीं डरात कन्हाई वाट घाट तुम करत अचगरी। यमुना दह गेंडुरी फटकारी फोरी सब शिरकी अस गगरी॥ भली करी यह कुँवर कन्हाई आजु मेटिहौं तुम्हरी लँगरी। चली सूर यशुमतिके आगे उरहनलै तरुनी व्रजसगरी ॥८१॥ आनि नदेहु ढोटौना ढीठ गेंडुरी पराई। तेरे कोऊ कहा करैगो धौं लरिहै हमसों भौजाई॥ मेरे संगकी और गईं ते जल भरि भरि घरते फिर आई। सूरश्याम गेंडुरी दीजै नतौ यशुमति सों कैहौं जाई॥ ८२॥ धनाश्री॥ आपुन चढे कदम पर धाई। वदन सकोरि भौंह मोरतहैं हांक देत करि नंद दोहाई॥ जाइ कहौ मैयाके आगे लेहु सबै मिलि मोंहिं वँधाई। मोको जुरि मारन जब आईं तब दीनी गेंडुरी फटिकाई॥ ऐसेकरि मोको तुम पायो मनौ इनकी मैं करौं चेराई। सूरश्याम वे दिन विसराए जंब बांधे तुम ऊखललाई॥ ८३॥ आसावरी॥ इहँई रहौ तौ वदौं कन्हाई। आपुगई यशुमतिहि सुनावन दैगई श्यामहि नंद दोहाई॥ महरि मथति दधि सदन आपने एहि अंतर युवती सब आई। चितै रही युवतिनको आवत कहां आवतिहैं भीर लगाई॥ मैं जानति तुमको हरि खिझई ताते सब उरहन लै धाई। सूरदास रस भरी ग्वालिनी ऐसो ढीठ कियो सुत माई॥८४॥विलावल॥सुनहु महरि तेरो लाड़िलो अति करत अचगरी।यमुन भरन जल हम गईं तहां रोकत डगरी॥शिरते नीर ढराइ देत फोरी सब गगरी। गेंडुरि दई फटकारिकैं हरि करतहैं लँगरी॥ नित प्रति ऐसेई ढंग करै हमसों कहै अगरी।अब वस वास नहीं वनै यहि तुव व्रजनगरी।आपु गयोचढ़ि कदमही चितवत रहि सिगरी। सूरश्याम ऐसेही सदा हमसों करै झगरी॥ ८५॥ रामकली ॥सुतको वराजि राखहु महरि।डगर चलन नदेत काहुहि फोरि डारत ढहरि॥श्यामके गुण कछु नजानति जाति हमसों गहरि। इहै लालचगाइ दशलिए वसतहै व्रज थहरि॥ यमुनतट हरि देखे ठाढे डरनि आवै वहरि। सूरश्यामहि नेक वरजो करतहै अतिचहरि॥८६॥ तुमसों कहति सकुचति महरि।श्यामके गुण नहीं जानति जाति हमसों गहरि।नेकहूं नहिं सुनति श्रवणनि करति है हम चहरि।जल भरन को उ नहीं पावति रोकि राखत डहरि॥अति अचगरी करत मोहन फटकि गेंडुरी दहरि। सूरप्रभुको कहा सिखयो रिसानि युवती झहरि॥ ८७॥ धनाश्री ॥ कहा करौं मोसों कहौ तुमही। जोपाऊँ तौ तुमहि देखाऊं हाहा करिहौ अवहीं॥तुमहूं गुण जानतिहौ हरिके ऊखल वांधे जवहीं॥साँटिया लै मारन जब लागी तब वरज्यो मोहिं सवहीं॥ लरिकाईते करत अचगरी मैं जाने गुण तवहीं। सूरहाल कैसे करिहौं घरि आवै धौं हरि अवहीं॥ ८८॥ रागसारंग॥ मैं जानतिहौं ढीठ कन्हैया। आवनतौ घर देहु श्यामको जैसी करौं सजैया॥मोसों करत ढिठाई मोहन मैं वाकीहौं मैया। और न काहूको वह मानै कछु सकुचत वल भैया॥ अव जो जाउँ कहां तेहि पावों कासों देइ धरैया। सूरश्याम दिन दिन लंगर भयो दूरि करै लँगरैया॥ ८९॥ राग सूहा॥ युवति वोधि सब घरहि पठाई। यह अपराध मोहिं वकसौरी इहै कहतिहौ मेरी माई॥इतते चली घरनि सब गोपी उतते आवत कुँवर कन्हाई॥ वीचहि भेंट भई युवतिन हरि नैनन जोरत गए लजाई॥ जाहु कान्ह महतारी टेरति वहुत वड़ाई करि हम आई। सूरश्याम मुख निरखि निरखि हँसि मैं कैहौं जननी समुझाई॥९०॥ नट॥ सकुचत

गए घरको श्याम। द्वारहीते निरखि देख्यो जननी लागी काम ॥ इहै वाणी कहति मुखते कहाँ गयो कन्हाई ॥ आप ठाढ़े जननि पाछे सुनतहै चितलाई। जल भरन युवती नपावैं वाटरोकत जाइ। सूर सबके फोरि गागरि श्याम गयो पराइ ॥ ९१ ॥ नटनारायण ॥ यशुमति यह कहिके रिसपावति। रोहिणि करति रसोई भीतर कहि कहि तिनहि सुनावति॥ गारी देत बहू बेटिनिको वै धाई ह्यां आवति। हाहा करति सबनिसों मैंही कैसेहु खूंट छँडावति॥ जाति पांतिसों कहा अचगरी यह कहि सुतहि धिरावति। सूरश्यामको सिखवत हारी मारेहु लाज न आवति॥ ९२ ॥ सारंग॥ तू मोहींको मारन जानति। उनके चरित कहा कोउ जानै उनहि कही तू मानति॥ कदमतीरते मोहिं बुलायो गढ़ि गढ़ि बातैं बानति। मटकत गिरी गागरी शिरते अबऐसी बुधि ठानति॥ फिरि चितई तू कहां रह्यो कहि मैं नाहिं तोको जानति। सूरसुतहि देखतही रिसगइ मुख चूमति उर आनति॥ ९३ ॥ गौरी ॥ झूठहि सुतहि लगावति खोरि। मैं जानति उनके ढंग नीके बातैं मिलवति जोरि। वे यौवन मदकी सब माती कहां मेरो तनक कन्हाई आपुहि फोरि गागरी शिरते उरहन लीन्हे आई॥ तू उनके ढिग जाति कितहिंहै वै पापिनि सब सारि। सूरश्याम अब कह्यो मानि तू हैं सब ढीठ गुवारि॥ ९४॥ मोहन ॥ मोहन बाल गोविंदा माई मेरो कहा जानै बोलि। उरहनलै युवती सब आवति झूँठी बतियाँ जोरि॥ कोऊ कहति गेंडुरी मेरी लीन्ही कोऊ कहति गगरी गयो फोरी। कोऊ चोली हार बतावति कान्हा तेरा भोरी॥ अब आवै जो उरहन लैकै तौ पठऊं मुँहमोरी। सूरकहां मेरो तनक कन्हाई आपुन यौवन जोरी॥ ९५ ॥ कान्हरो ॥ ब्रज घर घर यह बात चलावत। यशुमतिको सुत करत अचगरी यमुना जल कोउ भरन न पावत॥ श्याम बरन नटवर वपुकाछे मुरली राग मलार बजावत। कुंडल छबि रवि किरन हूंते द्युति मुकुट इंद्र धनुते सोभावत॥ मानत काहुन करत अचगरी गागरि धरि जल भुइँ ढरकावत। सूरश्यामको मात पिता दोउ ऐसे ढँग आपुनहिं पढावत॥ ९६ ॥ गौरी करत अचगरी नंदमहरको। सखालिये यमुनातट बैठो निबहत नाहिं सब लोग डहरको॥ कोऊ खिझो कोऊ कितने बरजो युवतिनके मन ध्यान।मन क्रम वचन श्यामसुंदरते और नजानति आन॥ इह लीला सब श्याम करतहैं ब्रज युवतिनके हेत।सूर भजे जेहि भाव कृष्णको ताको सोइ फल देत॥ यमुनाजल कोउ भरन नपावै।आपुन बैठे कदम डार चढि गारी देदै सबनि बोलावै॥काहूकी गगरी गहि फोरत काहू शिरते नीरढरावै। काहूसों करि प्रीति मिलतुहै नैनसैनदे चितहि चुरावै॥ बरबसही अकवांरि भरत धरि काहूसों अपनो मन लावै। सूरश्याम अति करत अचगरी कैसेहुं काहू हाथ नआवै॥९८॥धनाश्री ॥ब्रजगवैंडे कोउ चलन न पावत। ग्वाल सखा संग लीने डोलत देदै हांक जहां तहां धावत॥काहूकी गेंडुरी फटकारत काहूकी गगरी ढरकावत॥काहूको गारीदे भाजत काहूको उठि अंकम लावत। काहू नहिं मानत ब्रजभीतर नंदमहरको कुँवर कहावत।सूरश्याम नटवर वपु काछे यमुनाके तट मुरली बजावत॥९९॥टोडी॥गोकुलके ग्वैंडे एक सांवरो सो ढोंग माई अँखियनके पैंडे पैठि जीके पैंडे पर्योहै।कल न परत छन गृह भयो सम बन तन मन धन प्राण सरबस हर्योहै। भवन न भावै माई आंगन न रह्यो जाइ करै हाइ हाइ देखौ जैसे हाल कर्योहै। सूरदास प्रभु नीके गावत मधुर सुर मानहु मुरलीमें पियूषरस भर्योहै॥ ९०० ॥ राग नट॥ राधा सखियन लई बोलाइ। चलहु यमुनाजलहि जैये चलीं सब सुखपाइ॥ सबनि एक एक कलस लीन्हो तुरत पहुँची जाइ। तहां देख्यो श्याम सुंदर कुँवरि मन हरषाइ॥ नंदनंदन देखिरीझे चितैरहे चितलाइ।

सूर प्रभुकी प्रिया राधा भरत जल मुसुकाइ ॥ १ ॥ गूजरी ॥ घरहि चली यमुना जल भरिकै। सखियन बीच नागरी बिराजति भई प्रीति उर हरिकै ॥ मंद मंद गति चलत अधिक छबि अंचल रह्योहफरिकै। मोहन मोको मोहनी लगाई संगहि चले डगरिकै ॥ बेनीकी छबि कहत नआवै रही नितंबनि ढरिकै। सूरश्याम प्यारीके वशभए रोम रोम रस भरिकै ॥ २ ॥ जयतश्री ॥ गागरि नागरि जल भरि घर लीन्हें आवै। सखियन बीच भरयो घट शिरपर तापर नैन चलावै ॥ढुलतिग्रीव लटकति नकवेसरि मंद मंद गति आवै। भ्रुकुटी धनुष कटाक्षवाण मनो पुनि पुनि हरिहि लगावै ॥ जाको निरखि अनंग अनंगत ताहि अनंग वढावै। सूरश्याम प्यारी छबि निरखत आपुहि धन्य कहावै॥३॥ गागरि नागरि लिये पनिघटते चली घरहि आवै । ग्रीवा डोलत लोचम लोलत हरिके चितहि चुरावै ॥ ठठकाति चलै मटकि मुँह मोरै वंकट भौंह चलावै। मनहु काम सैना अंगसोभा अंचल ध्वज फहरावै॥ गति गयंद कुच कुंभ किंकिनी मनहुँ घंट झहनावै ॥ मोतिनहार जलाजल मानौं खुभीदंत झलकावै॥ मानहु चंद महावत मुख अंकुश करवेसरि लावै। रोमावली सूडि तिरनीलौं नाभि सरोवर आवै ॥ पग जेहरि जंजीर निज करयो यह उपमा कछु पावै। घटजल झलकि कपोलनिं किनुका मानों मदहि चुरावै ॥ वेनी डोलति दुहुँ नितंबपर मानहुँ पूंछ हलावै । गज शिरदार सूरको स्वामी देखि देखि सुखपावै॥४॥ सखिअन बीच नागरी आवै। छबि निरखत रीझे नंदनंदन प्यारी मनहि रिझावै। कबहुँक आगे कबहुँक पाछे नानाभाव वतावै। राधा यह अनुमान कियो हरि मेरे चितहि चोरावै ॥ आगे जाइ कनक लकुटलै पंथ सँवारि बतावै। निरखत छाँह जहां प्यारीकी तहांलै छाँह छुवावै ॥ छबि निरखत तनु वारत अपनो नागर जियहि जनावै अपने शिर पीतांवर वारत ऐसे रुचि उपजावै। ओढि ओढनियां चलत देखावत यहि मिस निकटहि आवै। सूरश्याम ऐसे भावनिसों राधा मनहि रिझावै ॥ ५ ॥ सारंग ॥ लग लागन नाहिं पावत श्याम। तब एकभाव कियो कछु ऐसो प्यारी तनु उपजायो काम ॥ तव मिसकरि निकट आइमुख हेरयो पीतांवर डारयो शिरवारि। यह छल करि मन हरयो कन्हाई कामविवस कीन्ही सुकुमारि॥ पुलकित अंग अंगिया दरकानी उरआनंद अंचल फहरात। गागरि ताकि कांकरी मारै उचटि उचटि लागत प्रियगात ॥ मोहन मन मोहनी लगाई सखिनसंग पहुँची घरजाइ। सूरदास प्रभुसों मन अटक्यो देह गेहकी सुधि विसराइ ॥ ६ ॥ नट ॥ ग्वालिनि चली यमुना वहोरि । वाहि सब मिलि कहत आवहु कछू कहति निहोरिं ॥ ज्वाब देति न हमहि नागरि रही वदन निहोरि। ठगिरही मन कहा सोचति काहू लियो कछु चोरि ॥ भुजाधरि करि कह्यो चलहि न आवै अबहीं खोरि। सूर प्रभुके चरित सखियन कहत लोचन टोरि ॥ ७ ॥ मलार ॥ मेरी गैल नछोंडै सांवरो मैं क्योंकरि पनघट जाउँरी। यहि सकुचानि डरपातिरहों मोहिंधरै नकोउ नाउँरी ॥ जित देखों तितदेखे री रसिया नंदकुमाररी। इत उत नैन चुराइकै मोहिं पलक नकरत जुहाररी ॥ लकुट लिये आगे चलैहो पंथ सँवारत जाइरी। मोहन निहोरो लाइकै वह फिरि चितवै मुसुका-इरी॥ सौकंचुकि अंचरा उचै मेरो हियरा तकि ललचाइरी । यमुनाजल भरि गागरि लै जवशिर चलत उचाइरी ॥ गागरि मारे कांकरी सों लागे मेरे गातरी। गैल माँझ ठाढो रहै मोहिं खुंवटै आवत जातरी ॥ हौंसकुचानि बोलों नहीं लोकलाजकी संकरी। मोतन छैवै हरि चलै वह छबि भरतुहै अंकरी ॥ निकट आइ मुखनिरखिके सकुचे वहुरि निहाररी । अव ढँग ओढी ओढनी पीतांवरमोपै वारिरी ॥ जवकहुँ लग लागे नहीं तव वाको जिव अकुलाइरी। तव हठि मेरी छाँहसों

वह राखैं छाँह छुआइरी ॥ को जानै कित होत हैरी घर गुरुजनकी सोररी। मेरो जिव गांठी बंध्यो पीतांवरकी छोररी॥ अवलौं सकुच अटकरही अब प्रगट करौं अनुरागरी।हिलिमिलिकै संग खेलिहौं मानि आपनो भागरी। घर घर ब्रजवासी सबै कोउ किन कहै पुकाररिरी॥ गुप्तप्रीति परगट करौं कुलकी कानि निवारिरी॥ जवलगि मन मिलयो नहीं तब नची चौपके नाचरी। सूरश्याम संगही रहौ सब करौं मनोरथ सांचरी ॥ ८ ॥ रागकान्हरो ॥ मोहन बिन मन नारहै कहा कहों माईरी। कोटि भांति करि करि रही समुझाईरी॥ लोकलाज कौन काज मनमें नाहिं आईरी ॥ हृदयते टरति नाहिन ऐसी मोहनी लाईरी। सुंदर वर त्रिभंगी नवरंगी सुखदाइरी ॥ सूरदास प्रभु विन मोसों नेकरह्यौ नाजाइरी ॥ ९ ॥ रागसूही ॥ नँदको नंदन सांवरो मेरो चितचोरे जाइरी। रूप अनूप दिखाइकै वह औचक गयो आइरी ॥ मोरमुकुट श्रवण कुंडल ओढनी फहराइरी। अधरनि पर मुरली धरे मधुर तान बजाइरी॥ चंदनकी खौरि किए नटवर कछि काछनी वनाइरी। सूरदास प्रभु बैठे यमुनातट पूरण ब्रह्म कन्हाइरी ॥ १० ॥ गौरी ॥ परचो तबते ढँग सूरि ठगौरी। देख्यो मैं यमुना तट बैठो ठोटा यशुमति कोरी॥ अति सांवरो भरचोसो साँचै कीन्हे चंदन खोरी। मन्मथ कोटि कोटि गहिवारौं ओढे पीत पिछौरी॥ दुलरी कंठ नयनरतनारे मोमन चितै हरचोरी। विकट भ्रुकुटिकी ओर कोरते मन्मथ वाण धरचोरी॥दमकत दशन कनककुंडल मुख मुरली गावत गौरी। श्रवणन सुनत देह गति भूली भई विकल मति वौरी ॥ नहिं कल परत विनादरशनते नयननि लगी ठगौरी।सूरश्याम चित टरत न नेकहु निशि दिन रहत लगौरी॥११॥ कल्याण ॥ युवति इक यमुनाजलको आइ। निरखत अंग अंग प्रति सोभा रीझे कुँवर कन्हाइ॥ गोरे वरन चूनरी सारी अलकैं मुख बगराइ । करनि चारिचरी चुरी विराजति करकंकन झलकाइ ॥ सहज शृंगार उठत यौवनतन विधिसों हाथ वनाइ। सूरश्याम आये ठिग आपुन घटभरि चली झमकाइ॥ १२ ॥ गौरी ॥ ग्वारि घट शिर धरि चली झमकाइ। श्याम अचानक लट गही कहि अति कहा चली अतुराइ॥ मोहनकर त्रिय मुखकी अलकैं यह उपमा अधिकाइ । मनहु सुधा शशि राहु चोरावत धरचो ताहि हरिआइ॥ कुचपरसो अंकम भरिलीनी दुहुँ मन हरष बढाइ। सूरश्याम मानो अमृत घटनिको देखतहै करलाइ ॥ १३ ॥ छांडि देहु मेरी लट मोहन । कुच परसत पुनि पुनि सकुचत नहिं कत आई तजि गोहन ॥ युवती आनि देखिहैं कोऊ कहत बंक भरि भौहन। वारवार कह्‌इ वीर दोहाई तुम मानत नाहिं सोहन॥ यतनेहीको सौंह दिवावत मैं आयो मुखजोहन। सूरश्याम नागरि वश कीन्ही विवस चली धरिकोहन॥ १४ ॥ धनाश्री ॥ चली भवन मन हरि हरिलीन्हों। पगंद्रै जाति ठठकि फिरि हेराति जिय यहा कहति कहा हरि कीन्हो॥ मारग गई भूलि जेहि आई आवतकै नाहिं पावत चीन्हौं। रिसकरि खीझि खीझि लट झटकाति श्याम भुजनि छटकाये दीन्हों॥ प्रेमसिंधु में मगनभई त्रिय हरिके रंगभई अति लीन्हो। सूरदास प्रभु सोंचित अटक्यो आवत नाहिं इतउतहि पतीन्हो॥ १५ ॥ गौरी ॥ घर गुरुजनकी सुधि जब आई। तब मारग सूझ्यो नैननि कछु जिय अपने तिय गई लजाई॥ पहुँची आय सदन ज्योंत्यों करि नेक नहीं चित टरत कन्हाई। सखी संगकी बूझन लागीं यमुनातट अतिझेर लगाई॥ औरै दशाभई कछु तेरी कहति नहीं हमसों समुझाई। कहाकहों कहतन बनिआवै सूरश्याम मोहनी लगाई ॥ १६ ॥ सोरठ ॥ कैसे जलभरन मैं जाउँ। गैल मेरी परचो सखिरी कान्ह जाको नाउँ ॥ घरते निकसत वनत नाहीं लोकलाज लजाउँ। तन इहां मन जाइ अटक्यो

नंदनंदन ठाउँ ॥ जो रहों घर बैठिके तो रह्यो नाहिनजाई । सीख तैसी देहु तुमहीं करों कहा उपाइ ॥ जात वाहिर वनत नाहीं घर ननेकु सुहाइ।मोहनी मोहन लगाई कहति सखिन सुनाइ ॥ लाज काज मरजाद जीलों करतिहो यह सोचाजाहि विन तन प्राण छांडे कौन बुधि यह पोच ॥१७॥मनहि यह परतीति आई दूरि करिहो दोच । सूर प्रभु हिलिमिलि रहोंगी लाज डारों मोच॥ गौरी ॥ सुनहु सखीरी वा यमुनातट । हों जल भरति अकेली पनघट गही श्याम मेरीलट ॥ लै गागरि शिर मारग डगरी उनपहिरे पीरे पट । देखतरूप अधिक रुचि उपजी काछ बनी किंकिनी रकट ॥ फूलएक ग्वालनिके ज्यों रन जीते फिरै महाभट। सूरलरचो गोपाल अलिंगन सफल किये कंचनघट ॥ १८ ॥ आसावरी ॥ कहा कहों सखि कहत वनै नहिं नंदनंदन मेरो मन जो हरचो। मात पिता पति वंधु सकुच तजि मगनभई मोहिं सिंधु तरचो ॥ अरुन अधर युग नयन रुचिर रुचि मदन मुदित मनसंग लरचो । देखिदशा कुलकानि लाज सव सहज सुभाउ रह्यो सुधरचो ॥ आनँद कंद चंद मुखनिशि दिन अवलोकत यह अमल परचो । सूरदास प्रभुसों मेरी गति जनु लुब्धक करमनि तरचो ॥ १९॥ नट ॥ मेरो हरि नागरसों मन मानो । मनमोह्यो सुंदर ब्रजनायक भलीभई सव जग जानो ॥ विसरी देह गेह सुधि विसरी विसरि गई कुलकी कानो । सूरआश पूजे या मनकी तव भावे भोजन पानो ॥ २० ॥ कार्फी ॥ मोही सांवरे सजनी मोहिं गृहवन कछु नसुहाइ । यमुन भरन जल मैं गई तहां श्याम मोहनी लाइ ॥ ओढे पीरी पावरी हो पहिरे लाल निचोल । भौंहैं काट कटीलियां मोही मोल लई विनमोल ॥ मोर मुकुट शिरविराजईहो अधर धरे मुखबैन । हरिकी मूरति माधुरी ताते लागिरहे दोउ नैन ॥ मदनमूरतिके वशभये अव भलो वुरो कहै कोई । सूरदास प्रभुको मिलि करि मन एकै तनु तन दोई ॥ २१ ॥ रामकली । मेरे जिय ऐसी आनिवनी । विन गोपाल और नहिं जानो सुनि मोसों सजनी ॥ कहा काच संग्रहके कीने हरि जो अमोल मनी । विषसुमेर कछु काज न आवे अमृत एक कनी ॥ मन वच क्रम मोहिं और न भावे अव मेरे श्याम धनी । सूरदास स्वामीके कारण तजी जाति अपनी ॥ २२ ॥ गूजरी ॥ अव दृढकरि धरी यह वानि । कहा कीजे सोनफा जेहि होइ जियकी हानि ॥ लोकलज्जाकांच किरिचक श्याम कंचन खानि ॥ कौन लीजे कौन तजिए सखि तुमहि कहो जानि । मोहिंतो नहि और सूझत विना विना मृदु मुसकानि । रंग कापे होत न्यारो हरद चूनो सानि ॥ इहै करिहों और तजिहों परी ऐसीवानि । सूर प्रभु पति वरत राखे मेटिके कुलकानि ॥ २३ ॥ अध्याय॥ २३ ॥ लीला यजपत्नी ॥ विलावल ॥ एक दिन हरि हलधर संग ग्वालन । गये वन भीतर गोधन चारन ॥ सकल ग्वाल मिलि हरिपै आए । भूख लगी कहि वचन सुनाए ॥ हरि कह्यो यज्ञकरत तहां ब्राह्मण। जाहु उनहि निकट भोजन मांगन । ग्वाल तुरत तिनके ढिग आए । हरि हलधरके वचन सुनाए ॥ भोजनदेहु भए वे भूखे । यह सुनिकै ह्वैगए वे रूखे । यज्ञहेतु हम करी रसोई । ग्वालनपहले देहिं न सोई।ग्वाल सकल हरिपै चलिआए । हरिसों तिनके वचन सुनाए। हरि हलधर सों हँसि कह्यो वानी। अविगतिकी गति उन नहिं जानी ॥ तव ग्वालनसों कह्यो वुझाई। त्रियन पास तुम माँगहु जाई ॥ उनके तन दृढ़भक्ति हमारी । मानि लेहिं वे वात तुम्हारी ॥ ग्वाल वाल त्रियनपै आए । हाथजोरिके शीश नवाये ॥ हरि भोजन मांग्योहै तुमसों । आज्ञादेहु कहैं सो उनसों॥ तिन धनि भाग्य आपनो जान्यो॥जीवनजन्म सफल करि मान्यो॥भोजन वहु प्रकार तिन्ह दीन्हो । काहू अपने शिर धरि लीन्हो ॥ ग्वालिनि संग तुरत वे धाई । मन अपने में हर्ष वढाई ॥

काहू पुरुष निवारचो आइ। कहां जात हैरी अतुराइ॥ तिन तो कह्यो न कीन्हो काने। तनु तजि चली विरह अकुलाने। धन्य धन्य वै प्रेम सभागे।मिलीजाइ सबहिन ते आगे॥तब हरि तिनसों कहि समुझाइ।सुनो त्रिया तुम काहे आइ॥ नारी पतिव्रत मानै जोई। चारि पदारथ पावै सोई॥ त्रियन कह्यो जग झूठ सगाई। हमतोहैं तुमरे शरनाई॥ प्रभु पतिव्रत तुम करौ सदाई। तुमको इहै धर्म सुखदाई॥ प्रभु आज्ञाले घरको आई। पुरुष करत तिनकी जु बड़ाई॥ धन्य धन्य तुम हरि दरशन पायो। हम पढि गुनकै सब बिसरायो॥ ब्रह्मादिक खोजत नित जिन्हको। साक्षात तुम देख्यो तिन्हको॥ वै हैं सकल जगतके स्वामी। और सभनके अंतर्यामी। अब हम चरण शरणही आए॥ तब हरि उनके दोष क्षमाए। ग्वालन मिलि हरि भोजन कीन्हो। भाव तियनको धरि हरि लीन्हो भक्तभावसों जो हरि ध्यावै। सो नर नारि अभै पदपावै॥ इह लीला सुनि गावै जोई। हरिकी भक्ति सूरते होई॥ ८२४॥ यज्ञपत्नी वचन॥ बिलावल॥ जानदे जानदे पियहौं गोपाल बोलाई। औरै प्रीति प्राणके लालच नाहिन परत दुराई॥ राखौ रोकि बाँधि दृढ़बंधन कैसेहुँ करै जु त्रास। यह हठ अब कैसे छूटतहै जब लगिहै उर सास॥ सांची कहौं मन वच क्रम करि अपने मनकी बात।देहछांडि मिलहि अबहीं छिन तोहि कैसी कुशलात॥ औसर गए बहुरि सुनि सूरज कहा कीजैगी देह। बिछुरति सहति बिरहके शूलनि झूठे सबै सनेह॥ २६॥ सारंग॥ देखनदे पिय मदन गोपालहि। हाहाहो पिय पालागतिहौं जाइ सुनौ बनवेनु रसालहि॥लकुटलिये काहेको त्रासत पति बिन मति बिरहनि बेहालहि। आतिआतुर आरोधि अधिक दुख तोहिं कहाडर तिन यमकालहि। मनतौ पिय पहिलेही पहुँच्यो प्राणतहीं चाहत चित चालहि॥ कहितू अपने स्वारथ सुखको रोकि कहा करिहै खल खालहि॥ लेहु सँभारि सुखेह देहकी को राखै इतने जंजालहि। सूर सकल सखियनते आगे अबहीं मूढ़ मिलति नँदलालहि॥२७॥सारंग॥देखनदे वृंदावन चंदहि।हाहाकंथ मानि बिनती यह कुल अभिमान छांड़ि मतिमंदहि॥ कहि क्यों भूलि धरत जिय औरै जानत नहिं पाँवन नंदनंदहि।दरशन पाइ आइहौं अबहीं करन सकल तेरे दुखद्वंदहि॥शठ समुझै यहु समुझत नाहिं न खोलत नहीं कपटके फंदहि। देह छोडि प्राणनि भई प्रापति सूर सुप्रभु आनंद निधि कंदहि॥२८॥ कल्यान॥ रतिबाढी गोपालसों। हाहा हरिलौं जान देहु प्रभु पद परसतिहौं भालसों॥ संगकी सखी श्याम सन्मुख भई मोहिं परी पशुपालसों। परवशदेह नेह अंतर्गति क्यों मिलौ नयन बिसालसों॥ शठहठ करि तूही पछितैहै इहै भेट तोहिं बालसों। सूरदास गोपी तनु तजि प्रण करचो तनमै भई नंद लालसों॥ २९॥ सारंग॥ पिय जनि रोकहु जानदे। होहरि विरह जरे जाचतिहौं इतनी बात मोहिं दानदे॥ बैन सुनौ विहरत बन देखो इह सुख हृदय सिरानदे। पुनि जो रुचै सोई तूका जहि साँच कहतिहौं आनदे॥ जो कछु कपट किए याचातिहौं सुनहि कथा हित कानदे। मन क्रम वचन सूर अपनो प्रण राखोंगी तन मन प्रानदे॥ ३०॥ बिलावल॥ हरि देखनकी साध भरी। जान नदई श्याम सुंदरपै सुनु सोई तै पोच करी॥ कुल अभिमान हटकि हठि राख्यो तै जियमें कछु और धरी। यज्ञ पुरुष तजि करत यज्ञ विधि तामें कहि कछु चाडढरी॥ कहांलगि समुझाऊं सूर सुनि जाति मिलनकी औधिटरी। लेहु सँभारि देहु पिय अपनी बिन प्रमाण सब सौंज धरी॥३१॥ हरिह मिलत काहे को फेरी। देखौं वदन जाइ श्रीपतिको जानदेहु हौं ह्वैहौं चेरी॥ पालागौं छाँड़हु अब अंचल बार बार बिनती करौं तेरी।तिरछो करम भयो पूरबको प्रीतम भयो पाँइकी बेरी॥इहलै देहु मारु शिर अपने जासों कहत कंत तुम मेरी। सूरदास सो गई अगमने संब सखियनसों हरि

मुख हेरी ॥ + ॥ जानदै श्यामसुंदरलौं आजु । सुनिहो कंत लोकलाजते बिगरतुहै सब काजु ॥ राखो रोंकि पाँइ बंधनके रोको अरु जलनाजु ॥हौं तो रोके मिलौंगी हरिको तू घर बैठे गाजु॥चितवत हुती झरोखे ठाढी किये मिलनको साजु । सूरदास तनु त्यागि छिनकमें तज्यो कंतको राजु ॥ अध्याय ॥ २४ ॥ गोवर्धनपूजा ॥ बिलावल ॥ नंदमहरसों कहति यशोदा सुरपतिकी पूजा बिसराई । जाकी कृपा वसत ब्रज भीतर जाकी दीनी भई बड़ाई ॥ जाकी कृपा दूध दही पूरन सहसमथानी मथति सदाई । जाकी कृपा अन्न धन मेरे जाकी कृपा नवौनिधि आई ॥ जिनकी कृपा पुत्र भयो मेरे कुशलरहौ बलराम कन्हाई । सूर नंदसों कहति यशोदा दिन आए अब करहु चडाई ॥ ३२ ॥ गौरी ॥ एईहैं कुलदेव हमारे । काहू नहीं और हम जानति गोधनहैं ब्रजके रखवारे ॥ दीपमालिकाके दिन पाँचेक गोपन कहौ बुलाई । बलि सामग्री करैं चडाई अब हीं कहो सुनाई ॥ लई बुलाइ महरि महरानी सुनतहि आईं धाई । नंदघरनि तब कहति सखिनसों कतहौ रही भुलाई ॥ भूली कहा कहौ सो हमसों कहति कहा डरपाइ । सूरदास सुरपतिकी पूजा तुम सबही बिसराइ ॥ ३३ ॥ चौंकि परीं सब गोकुल नारि । भली कही सबही सुधि भूली तुमहि करी सुधि भारि ॥ कह्यो महरिसों करौ चडाई हम अपने घर जाति । तुमहूं करौ भोग सामग्री कुलदेवता अमाति ॥ यशुमति कह्यो अकेली हौं मैं तुमहुं संग मुहिदीजौ । सूर हँसति ब्रजनारि महरिसों अँहैं साँचु पतीजौ ॥ ३४ ॥ कल्याण ॥ कही मोहिं भली कीनी महरि । राजकाजहि रहत डोलत लोभहीकी लहरि ॥ क्षमा कीजो मोहिंहौं प्रभु तुमहिं गयो भुलाइ । ग्वालसों कहि तुरत पठयो ल्याउ महरि बुलाइ॥ नंदकह्यो उपनंद ब्रजके अरु महर वृषभान । अबहिं जाइ बुलाइ आनो करत दिन अनुमान ॥ आइगए दिन अबहिं नेरे करत मन इह ज्ञान । सूर नंद विनय करत करजोरि सुरपति ध्यान ॥ ३५ ॥ बिलावल ॥ नंदमहर उपनंद बुलाए । आदर करि बैठनको दीनो महर महर मिलि शीशनवाए॥मनही मन सब सोच करतहैं कंसनृपति कछु माँगि पठाए।राज अंशधन जो कछु उनको बिनुमाँगे सो हमदै आए ॥ बूझत महर बात नंद महराहि कौन काज हम सबनि बुलाए । सूर नंद यह कहि गोपनसों सुरपति पूजाके दिन आए ॥ ३६ ॥ हँसत गोप कहि नंदमहरसों भली भई यह बात सुनाई । हमहिं सबनि तुम बोलि पठाए अपने जिय सब गए डराई ॥ काहेको डरपे हम बोलत हँसत कहत बातैं नँदराई । बडो सदेहु कियो हम तुमको ब्रजवासी हम तुम सब भाई॥ करो विचार इन्द्र पूजाको जो चाहो सो लेहु मँगाई।बरष दिवसको दिवस हमारो घर घर नेवज करौ चँडाई ॥ अन्नकूट विधि करत लोग सब नेम सहित करि करि पकवान्ह । महरि जोरि कर विनय इन्द्रसों सूर अमर करि कीजै कान्ह ॥ ३७॥ गावत मंगलचार महर घर । यशुमति भोजन करति चँडाई नेवज करि करि धरति श्यामडर ॥ देखेरहो नछुवे कन्हैया कहजानै वह देवकाजपर । और नहीं कुलदेव हमारे कै गोधन के वे सुरपतिवर ॥ करति विनय करजोरि यशोदा कान्हहि कृपा करौ करुणाकर ।और देव तुम सरि कोउ नाहीं सूर करौं सेवा चरणनतर ॥ ३८ ॥ सूही ॥ बाजति नंद अवास बधाई । बैठे खेलत द्वार आपने सात बरषके कुँवर कन्हाई ॥ बैठे नंद सहित वृषभानुहि और गोप बैठे सब आई।थापे देत घरनके द्वारे गावति मंगल नारि सुहाई ॥ पूजा करत इन्द्रकी जानी आए श्याम तहां अतुराई । बूझत बार बार हरि नंदहि कौन देवकी करत पुजाई ॥ इन्द्र बड़े कुल देव हमारे उनते सब यह होत बड़ाई।सूरश्याम तुमरे हित कारण यह पूजा हम करत सदाई ॥ ३९ ॥ आसावरी ॥ नंद कह्यो घर जाहु कन्हाई । ऐसे में तुम जैहो जिनि कहु अहो महरि

सुत लेहु बुलाई॥ सोइ रहौ हमरे पलिका पर कहति महरि हरिसों समुझाई। वरष दिवसकों महा महोत्सव को आवै को कौन सुनाई॥ और महर ढिग श्याम बैठिकै कीनो एक विचार बनाई। सपने आजु मिल्यो मोको इक बड़ो पुरुष अवतार जनाई॥ कहन लग्यो मोसों ए बातैं पूजत हौ तुम काहि मनाई। गिरि गोवर्धन देवनकोमणि सेवहु ताको भोग चढाई॥ भोजन करै सबनिके आगे कहत श्याम यह मन उपजाई। सूरदास गोपन आगे यह लीला कहि कहि प्रगट सुनाई॥ ४०॥ धनाश्री॥ सुनी ग्वाल यह कहत कन्हाई। सुरपतिकी पूजाको मेटत गोवर्धनकी करत बड़ाई॥ फैलि गई यह बात घरनि घर हरि कह जाने देव पुजाई। हलधर कहत सुनौ ब्रजवासी यह महिमा तुम काहु न पाई॥ कोउ कोउ कहत करौ अब ऐसोइ कोउ यह कहत कहै को भाई। सूरदास कोउ सुनि सुख पावत कोउ वरजत सुरपतिहि डराई॥ ४१॥ मेरो कह्यो सत्यकै जानौ। जो चाहौ ब्रजकी कुशलाई तौ गोवर्धन मानौ॥ दूध दही तुम कितनो लैहो गोसुत बढै अनेक। कहा पूजि सुरपतिको पावै छांडि देहु यह टेक॥ मुँह मांगे फल जो तुम पावहु तौ तुम मानहु मोहिं। सूरदास प्रभु कहत बालसों सत्य वचन कहि दोहि॥ ४२॥ छांडि देहु सुरपतिकी पूजा। कान्ह कह्यो गिरि गोवर्धनते और देव नाहिं दूजा॥ गोपनि सत्य मानि यह लीनी बडे देव गिरिराजा। मोहिं छांडि पर्वत पूजतहैं गर्व कियो सुरराजा॥ पर्वत सहित धोइ ब्रजडारौं देउँ समुद्र बहाई। मेरी बलि औरहि लै पर्वत इनको करौं सजाई॥ राखौं नहीं इन्हैं भूतलमें गोकुल देउँ बुड़ाई। सूरदास प्रभु जाके रक्षक संगहि संग रहाई॥ ४३॥ बिलावल॥ गोकुलको कुल देवता श्रीगिरिधर लाल। कमल नयन घन साँवरो वपु बाहु विशाल॥ हलधर ठाढे कहतहैं हरिजूके ख्याल। करता हरता आपुही आपुहि प्रतिपाल॥ वेगि करौ मेरो कह्यो पकवान रसाल। वह मघवा बलि लेतुहै नित करि करि गाल॥ गिरि गोवर्धन पूजिये जीवन गोपाल। जाके दीने बाढहीं गैया गण जाल॥ सब मिलि भोजन करतहैं जहँ तहँ पशुपाल। सूर सुरहि डरपत रहै जिय जिय प्रतिपाल॥ ४४॥ सारंग॥ तात गोवर्धन पूजहु जाइ। मधु मेवा पकवान मिठाई व्यंजन बहुत बनाय॥ यहि पर्वत तृण ललित मनोहर सदा चरै सुखगाय। कान्ह कहो सोइ कीजिये जैसे मघवा जाइ रिसाय॥भरि भरि शकट चले गिरि सन्मुख अपने अपने चाय।सूरदास प्रभु अपवश भोगी धरि स्वरूप हरिराय॥४५॥ बिलावल॥ ब्रज घर घर अति होत कोलाहल। ग्वाल फिरत उमँगे जहां तहां सब अति आनंद भरे जु उमाहल॥ मिलत परस्पर अंकम दैदै शकटनि भोजन साजत। दधि लावनि मधु माट धरतलै राम श्याम सँग राजत॥ मंदिरते लै धरत अजिरपर षटरसकी जिवनार। डालन भरि अरु कलश नए भरि जोरतहैं परकार॥ सहस शकट मिष्टान्न अन्न बहु नंद महर घरहीको। सूर चले सब लै घर घरते संग सुवन नंदजीको॥ नट॥ अति आनंद ब्रजवासीलोग। भांति भांति पकवान शकटभरि लैलै चले छहौरस भोग॥ तीनि लोकको ठाकुर संगहि तासों कहत सखा हम योग। आवत जात डगर नहिं पावत गोवर्धन पूजा संयोग। कोउ पहुँचे कोउ रेंगत मगमें कोउ घरमें ते निकसे नाहिं। कोउ पहुँचाइ शकट घर आवत कोउ घरते भोजन लैजाहि॥ मारगमें कोउ निरंतर आवत कोउ अपने रस गावत माहि। सूरश्यामको यशुमति टेरति बहुत भीरहै हरि न भुलाहि॥ ४६॥ ॥ कान्हरो॥ शकटसाजि सब ग्वाल चले गिरि गोवर्धन पूजाके काज। घर घरते मिष्टान्न चले लै भांति भांति बहु बाजन बाज॥अति आनंद भरे गुण गावत उमडे फिरत अहीर। पैड़ो नहिं पावत

तहां कोऊ व्रजवासिनकी भीर ॥ एक चले आवत व्रजतनको यक व्रजते बनकाज। सूरदास तहां श्याम सबनिको देखियतहै शिरताज ॥ ४७ ॥ नटनारायण ॥ चलीं घर घरनिते व्रजनारि। मनौं इंद्रवधून पंगति सोभा लागति भारि ॥ पहिरि सारि सुरंग पंचरंग पटदश कारे शृंगारि।वहै इच्छा सबनिके मन श्यामरूप निहारि ॥ ललिता चंद्रावली सहित राधा संग कीरति महतारि। चले पूजा करन गिरिकी सूर सँग नर नारि ॥ ४८ ॥ बहुत जुरे व्रजवासी लोग। सुरपति पूजा मेटि गोवर्धन कीनो यह संयोग ॥ योजन वीस एक अरु अगरो डेरा इहि अनुमान। व्रजवासी नर नारि अंत नहिं मानो सिंधु समान॥ इक आवत व्रजते इतहीको इक इततें व्रजजात। नंदलिए तब ग्वाल सूर प्रभु आइ गए तहांप्रात ॥ ४९ ॥ आसावरी ॥ नंद करत गिरिकी पूजा विधि। भोजन सब लै धरे छहौरस कान्ह संग अष्टौसिधि॥ लैलै आवत ग्वाल घरनिते भोजन बहुत प्रकार। व्यंजन देखि बहुत सुखपावत तुरत करौ जिवनार ॥ जो हरि कहत करत सोइ सोइ विधि पूजाकी बहु भांति। माखन दधिपै तक्र धरत लै जोरि जोरि सब पांति॥को बरनै नाना विधि व्यंजन जेवन ए नँदनारी॥ सूरश्यामकी लीला अद्भुत कह बरणे मुखचारी ॥ ५० ॥ नटनारायण ॥ विप्र बुलाइ लिये नंदराइ। प्रथमारंभ यज्ञको कीनो उठे वेद ध्वनि गाइ ॥ गोवर्धन शिर तिलक वंदियो मेटि इंद्र ठकुराइ। अन्नकूट ऐसो रचि राख्यो गिरिकी उपमापाइ॥ भाँति भाँति व्यंजन परसाए कापै बरण्योजाइ। सूरश्यामको कहत ग्वाल गिरि जबहीं कहो बुझाइ ॥ ५१ ॥ विलावल॥ इंद्र सोचु करि मनहिं आपने चकृत पुनि पुनि बुद्धि विचारत। कहा करत देखौं इनको मैं कौन विलंबु लागत पुनि मारतं॥ अब ए करैं आपने मन सुख मोको बनै सम्हारे। तबलौं रहौं पूजि निवरैं ये बचिहैं बैर हमारे ॥ इतनो सुख इनके करैरहै दुख है बहुत अगाध। सूरदास सुरपतिकी वाणी मनही मनकी साध ॥ ५२ ॥ ॥ गौरी ॥ चाढ़ि विमान सुरगणनभ देखत। लीला करत श्याम नवतन यह फिरि फिरि गिरिं गोवर्धन पेपत ॥ थकित भए सब जहां तहां मुनिजन ठौर ठौर नर नारि। चितै रहे तब श्याम बदन तन गति मति सुरति बिसारि॥ पूजामेटि इंद्रकी पूजत गिरि गोवर्धनराज। सूरदास सुरपति गर्वितभयो मैं देवन शिरताज ॥ ५३ ॥ केदारा ॥ कहत कान्ह नंद बाबा आवहु। भोजन परसि धरे सब आगे प्रेम सहित गिरिराज मनावहु ॥ और नंद उपनंद बुलाए कह्यो सबनिसों भोग लगावहु। सपने में देखौ मेरी मूरति यहै रूप धरि ध्यान मनावहु ॥ इक मन इक चित करि अर्पनकरौ प्रगट देव तुम दरशन पावहु।सूरश्याम कहि प्रगट सबनिसों अपने कर लैलै जु जिमावहु॥५४॥विनती करत सकलअहीर। सकल भरि भरि ग्वाल लैलै शिखर डारत क्षीर॥चल्यौ वहि चहुँ पासते पय सुरसरी जलटारि। बसन भूपन लै चढ़ाए भीर अति नर नारि। मूंदिं लोचन भोग अर्प्यों प्रेमसों रुचि भारि।सबनि देखी प्रगट मूरति सहसभुजा पसारि॥रुचि सहित गिरि सबनि आगे करनि लैलैखाइ॥ नंदसुत महिमा अगोचर सूर क्यों कहै गाइ ॥ ५५ ॥ नट ॥ गिरिवर श्यामकी अनुहारि। करत भोजन अति अधिकई भुजासहस पसारि॥ नंदको कर गहे ठाढ़े यहै गिरिको रूप। सखी ललिता राधिकासों कहति देखि स्वरूप॥यहै कुंडल यहै माला यहै पीत पिछौरि। शिखर सोभा श्यामकी छवि श्याम छवि गिरि जोरि ॥ नारि बदरौला रही वृपभानु घर रखवारि। तहांते उहि भोग अर्पैउ लियो भुजा पसारि ॥ राधिका छवि देखि भूली श्याम निरखी ताहि। सूर प्रभु वशभई प्यारी कोर लोचन चाहि॥५६॥ धनाश्री॥ देखहुरी हरि भोजन खात। सहसभुजाधरि उत जेवतहै इतहि कहत गोपिनसों बात ॥ ललिता कहत देखिहो राधा जो तेरे मन बात समाइ। धन्य सबै गोकुलके बासी

संग रहत त्रिभुवनके राइ ॥ जेवत देखि नंद सुखपायो अति आनंद गोकुल नर नारी। सूरदास स्वामी सुखसागर गुण आगर नागर दैतारी ॥५७॥ गौरी ॥ इह लीला सब करत कन्हाई। उत जेवत गिरि गोवर्धन सँग इत राधासों प्रीति लगाई ॥ इत गोपनसों कहत जिमावहु उत आपुहि जेवत मन लाई। आगे धरे छहोरस व्यंजन बदरौलाको लियो मँगाई ॥ अमर विमान चढे सुख देखत जय ध्वनि करि सुमननि वरषाई। सूरश्याम सबके सुखदाता भक्तहेतु अवतार सदाई ॥ ५८ ॥ गोप निसों यह कहत कन्हाई। जो मैं कहत रह्यो भयो सोई सपनंतरकी प्रगट बताई ॥ जो मांग्यो चाहौ सो मांगौ पावहुगे जो जा मनआई। कहत नंद सब तुमही दीनों मांगतहौं हरिकी कुशला ई। करजोरे नंद आगे ठाढे गोवर्धनकी करत बड़ाई। ऐसे देव कहूं नाहिं देखे सहसभुजा धरि खात मिठाई ॥ सदा तुम्हारी सेवा करिहौं और देव नहिं करौं पुजाई । सूरश्याम को नीके राखहु कहत महर ये हलधर भाई ॥ ५९ ॥ अपने अपने टोल कहत ब्रजवासी आई। भावभक्ति लेचलौ सुदंपति आसीआई ॥ शरदकाल ऋतु जानि दीपमालिका बनाई । गोपनके उदमाद फिरत उघमदे कन्हाई ॥ घर घर थापे दीजिये घर घर मंगलचार । सातवर्षको सांवरो खेलत नंददुआर ॥१॥२॥ बैठि नंद उपनंद बोलि वृषभानु पठाए। सुरपति पूजा देखि जानि तहां गोविंद आए ॥ बार बार हाहाकरहिं कहि बाबा यह बात। घर घर भोजन होतहै कौन देवकी जात ॥ ३ ॥ श्याम तुम्हारी कुशल जानि एक मंत्र उपैहौं। पटरस भोजन साजि भोग सुरपतिको देहौं ॥ नंद कह्यो चुचुकारिकै जाइ दमोदर सोई। वर्षदिवसको दिवसहै महामहोत्सव होई ॥ ४ ॥ हरि बोले सब गोप मंत्र बहुरच्यो फिरि कीनो। एक पुरुष मोहि आइ आजु सपनो निशि दीनो ॥ सब देवनको देवता गिरि गोवर्धनराजु। ताहि भोग किनि दीजिये सुरपतिको कह काजु ॥ ५ ॥ बाढैं गोसुत गाइ दूध दधिको कहालेखो। यह परचौ विद्यमान नैन अपने किन देखो ॥ तोदेखत बलिखाइगो मुँहमाँगे फल देहु।गोप कुशलजो चाहिए गिरि गोवर्धन सेहु॥६॥दिवस देवारीके प्रातही सब मिलि पूजन जाइ।नंद प्रतीति न मानहू अब तुम देखत बलि खाइ॥गोपन करच्यो विचार शकट प्रति सबही साजे। बहुविधिके पकवान जहां तहां बाजन बाजे ॥ ७ ॥ एक बाटते चले एक नदी सुरभीर। एक नपैडो पावहीं उमडे फिरहिं अहीर ॥ इक घरते उठि चले एक घरको फिरि जाहिं। गावत गुण गोपालके ग्वाल उमगे न समाहि ॥ ८ ॥ गोपनको सागर भयो गिरि भयो मंदरचार। रतनभई सब गोपिका श्याम विलोवन हार ॥ एक चौरासी कोस परे गोपनके डेरा। लावै चौवन कोश आजु ब्रजवासिन घेरा ॥ ९ ॥ सबहीके मन श्यामलो देखौ सबनि मझारि। कौतुक देखन देवता आएलोक विसारि ॥ लीने विप्र बुलाइ यज्ञ आरंभन कीनो। सुरपति पूजा मेटि भोग गोव-र्धन दीनो ॥ १० ॥ प्रथम दूध अन्हवाइ बहुरि गंगा जल डारे। बड़ो देवता जानि कान्हको मतौ विचारे ॥ जैसे बने गिरिराज जू तैसो अनको कोट। मगन भए पूजा करैं नर नारी बड़ छोट॥११ सहसभुजा उरधरे करै भोजन अधिकाई। नख शिखलों पर्यंत मनो दूसरो कन्हाई ॥ राधासों ललता कहै तेरे हिय न समाइ। गहे अंगुरिया तातकी ढोटा भोजन खाइ ॥ १२ ॥ पीतद्रुमाल्यो श्वेत कंठ मोतिनकी माला । भूषण भुजा अनूप झलमलति नैन विसाला ॥ श्यामकी सोभा गिरि बन्यो गिरिकी सोभा श्याम । जैसे पर्वत धातुको संग भैया बलराम ॥ १३ ॥ जैसिय कनकपुरी जु दिव्य रतननिसों छाई। बलिदीनी परभात छाँह पूरब चालि आई॥ चहूं ओर चक्राधरे चंदहि पटतर सोई। ठौर ठौर वेदी रची बहु विधि पूजाहोई ॥१४॥ जहाँ तहाँ दधि धरयो

कहौं कहा उज्ज्वलताई । उदधि शिखरहै रह्यो भातमें देह छपाई ॥ वदरौला वृषभानुके एक विलोवन हारि । ताकी वलि यहि देवता लीन्ही भुजा पसारि ॥ १८॥ लै सब भोजन अरपि अरपि गोपन करजोरे । अगणित कीने स्वाद दास वरणे कछु थोरे ॥ यहिविधि पूजा पूजिकै गोविंद पूंछो जाई । कान्ह कह्यो हँसि सूरसों लीला भली वनाई ॥ १६ ॥ गौरी ॥ श्याम कहत पूजा गिरि मानी। जो तुम भक्ति भावसों अर्प्यो देवराज सब जानी ॥ तुम देखत भोजन सब कीनो अब तुम मोहिं पत्याने । वडो देव गिरिराज गोवर्धन इनै रहौ तुम माने ॥ सेवा भली करी तुम मेरी देव कही यह वानी।सूर नंदमुख चूमत हरिको यह पूजा तुम ठानी ॥६०॥६१॥ और कछू मांगो नंद हमसों जोमांगौ सो देउँ तुरतही यहै कहत गोपनसों॥वल मोहन दोऊ सुत तेरे कुशल सदा येरहि हैं।इनको कह्यो करत तुम रहियो जब जोई ये कहिहैं॥सेवा वहुत करी तुम मेरी अब तुम सब घर जाहू।भोग प्रसाद लेहु तुम मेरो गोप सबै मिलि खाहू॥सपनो मैंहीं कह्यो श्याम सों करहु हमारी पूजा।सुरपति कौन वापुरो मोते और देव नहिं दूजा ॥ इंद्र आइ वरपै जो व्रज पर तुम जिनि जाहु डराई । सुनहु सूर सुत कान्ह तुम्हारो कहि हैं मोहि सुनाई ॥६२॥ सारंग ॥भली करी पूजा तुम मेरी । वहुत भाव करि भोजन अर्प्यो इह सब मानिलई मैं तेरी॥ सहसभुजा धरि भोजन कीनों तुम देखत विदमान । मोहिं जानतहै कुँवर कन्हैया यही नहीं कोउआन॥पूजा सबकी मानि मैं लीनी जाहु घरानि व्रजलोग। सूरश्याम अपने कर लीने वांटत झूठनि भोग ॥ ६३ ॥ विलावल॥ विनती करत नंद करजोरे पूजा कह हम जानैं नाथ।हमहैं जीव सदा मायाके दरश दियो हम किए सनाथ॥महापतित मैं तुम पावन प्रभु शरण तुम्हारी आयो तात । तुमसे देव और नहिं दूजो कोटि ब्रह्मांडरोम प्रति गात॥तुम दाता अरु तुमहि भोक्ता हरता करता तुमहींसार । सूर कहा हम भोग लगायो तुमही भुलै दियो संसार॥ ॥ ६४ ॥ यह पूजा मोहिं कान्ह वताई । भूल्यो फिरत द्वार देवनिके त्रिभुवनपति तुमको विसराई॥ आपुहि कृपाकरी स्वप्नंतर श्यामहि दरश दियो तुम आई । ऐसे प्रभु कृपालु करुणामय वालककी अति करी वड़ाई ॥ गिरि पाँयनलै हरिको पारत हलधरको पांयन लै नाई । सूरश्याम वलराम तुम्हारे इनको कृपा करो गिरिराई॥६५॥ग्वाल कहत धन्य धन्य कन्हैया।वड़ो देवता प्रगट वतायो यह कहि कहि सब लेत वलैया॥धन्य धन्य गिरिराजनकी मणि तुम सम आन न दूजा। तुम लायक कछु नाहिं हमारे को जाने तुम पूजा॥गोप सबै मिलि कहत श्याम सों जो कछु कह्यो सो कीनो सूर-श्याम कहि कहि यह वाणी देव मानि सुखलीनो॥६६॥ गौड़मल्लार॥गोपनंद उपनंद वृपभा नु आए । विनय सब करत गिरिराजसों जोरि कर गए तनु पाप तुव दरशपाए॥देवता वड़ो तुम प्रगट दरशन दियो प्रकट भोजन कियो सवनि देख्यो।प्रकट वाणी कही गिरिराज तुम सही और नाहिं तिहूँभुवन कहूँ पेख्यो॥हँसत हरिमनहिमन तकत गिरिराज तन देव परसन भए करो काजा। सूरप्रभु प्रगट लीला कही सवनि सों चले घर घरनि अपने समाजा॥६७॥देखि थकित गण गंधर्व सुर मुनि।धन्य नंदको सुकृत पुरातन धन्य कही कहि जैजैजै धुनि ॥ धन्य धन्य गोवर्धन पर्वत करत प्रशंसा सुर मुनि पुनि पुनि।आ-पुहि खात कहतहै गिरिको यह महिमा देखी न कहूं सुनि॥यहै कहत अपने लोकनि गए धनि व्रजवासी वशकीनों उनि।सूरश्याम धनि धनि व्रजविहरत धन्य धन्य सब कहतहैं गुनि गुनि॥६८॥नट नारायणी॥ चले व्रज घरनिको नर नारि । इंद्रकी पूजा मिटाई तिलक गिरिको सारि॥पुलक अंग नसमात उरमें महर महरि समाज।अब वड़े हम देव पाए गिरि गोवर्धन राज॥इनहिते व्रज चैन रहिहै मांगि भोजन खात। यहै घेरा चलत व्रजजन सवनि मुख यह वात॥सवै सदनन आइ पहुँचे करत केलि विलास।

सूर प्रभु यह करी लीला इंद्ररिस परकास ॥६९॥ अध्याय ॥२५॥ इंद्रविचार। सारंग ॥ ब्रजके वासिन मो विसरायो। भलीकरी बलि मेरी जो कछु सो लै सब पर्वतहि जिमायो॥ मोसों गर्वकियो लघु प्राणी नाजानिये कहा मन आयो। त्रिदशकोटि अमरनको नायक जानि बूझि इन मोहिं भुलायो अब गोपन भूतल नहिं राखौं मेरी बलि मोको न चढ़ायो। सुनहु सूर मेरे मारतधौं पर्वत कैसे होत सहायो॥ ७०॥ सोरठ ॥ प्रथमहि देउ गिरिहि वहाइ। वज्रघातनि करौ चूरन देउ धरणि मिलाइ॥ मेरी इन महिमा नजानी प्रगट देउ दिखाइ। जलवरषि ब्रजधोइ डारौ लोग देउ वहाइ खात खेलत रहे नीके करि उपाधि वनाइ। वरष दिवस मोहिं देत पूजा दई सोउ मिटाइ॥ रिस सहित सुरराज लीन्हे प्रबल मेघ बुलाइ। सूर सुरपति कहत पुनि पुनि परौ ब्रजपर धाइ॥ ७१॥ मेघमलार ॥ सुनत मेघवर्तक साजि सैन लै आए। जलवर्त वारिवर्त पवनवर्त वज्रवर्त आगिवर्तक जलद संग ल्याए॥ घहरात तरतरात गररात हहरात पररात झहरात माथनाए। कौन ऐसोकाज बोले हम सुरराज प्रलयके साज हमको बुलाए॥ वरष दिन संयोग देत मोको भोग क्षुद्रमति ब्रज लोग गर्वकीनो। मोहिं गए विसराइ पूज्यो गिरिवर जाइ परो ब्रजपरधाइ आयसु यह दीनो॥ कितक ब्रजके लोग रिसकरत किहियोग गिरिलियो भोगफल तुरत पैहै। सूर सुरपति सुन्यो वयो जैसो लुन्यो प्रभुकहा गुन्यो गिरिसहित वैहै ॥ ७२॥ मलार ॥ विनती सुनहु देव मघवापति। कितिकबात गोकुल ब्रजवासी वारवार रिसकरत जाहि अति॥ आपुन वैठि देखियो कौतुक बहुतै आयसु दीनो। छिनमें वरषि प्रलयजल पाटौं खोजु रहै नहिं चीनो॥ महाप्रलय हमरे जल वरषै गगन रहे भरिछाइ। अक्षयवृक्ष वट वचतु निरंतर कहा ब्रज गोकुल गाइ ॥ चले मेघ माथे कर धरिकै मनमें क्रोध बढाइ। उमडत चले इंद्रके पायक सूर गगन रहे छाइ॥ ७३॥ गौडमलार ॥ मेघदल प्रबल ब्रजलोग देखै। चकित जहां तहां भए निरखि वादर नए ग्वाल गोपाल डरि गगन पेखै॥ऐसे वादर सजल करत अति महाबल घहरात करि चलत अंधकाला। चकृत भए नंदसब महर चकृतभए चकृत नर नारि हरि करत ख्याला॥घटा घनघोर घहरात अररात दररात सररात ब्रजलोग डरपे।तडित आघात तररात उतपात सुनि नर नारि सकुचि तनुप्राणअरपे॥ कहा चाहतहो नभई नकवहूं जौन कवहूं आंगन भौन विकल डोलै।मेटि पूजा इंद्र नंदसुत गोविंद सूर प्रभु करै आनंद कलोलै॥७४॥सैनसाजि ब्रजपर चाढि धावहि।प्रथम वहाइ देउ गोवर्धन तापाछे ब्रजखोदि वहावहि॥अहिरन करी अवज्ञा प्रभुकी सो फल उन कहँ तुरत देखावहि। इंद्रहि पेलि करी गिरि पूजा सलिल बरषि ब्रजनाउँ मिटावहि॥बल समेत निशि वासर बरषहु गोकुल वोरि पताल पठावहि।सूरदास सुरपति आज्ञा यह भूतल कतहूं रहन नपावहि ॥ ७५॥ मेघमलार॥ वादर घुमड़ि उमड़ि आए ब्रज पर वर्षत कारे धूमरे घटा अतिही जल। चपला अति चमचमाति ब्रजजन सब डर डरात टेरत शिशु पिता मात ब्रज गलबल॥ गर्जत ध्वनि प्रलयकाल गोकुल भयो अंधकार चकृत भए ग्वाल बाल घहरत नभ करत चहल।पूजामेटि गोपाल इंद्र करत इहै हाल सूरश्याम राखहु अब गिरिवर बल॥७६॥ गौड़मलार॥ गिरिपर बरषन आए वादर। मेघवर्त जलवर्त सैन सजि आये लैलै आदर॥ सलिल अखंड धार धर टूटत कियो इंद्र मन सादर। मेघ परस्पर यहै कहतहैं धोइ करहु गिरि खादर।देखि देखि डरपत ब्रजवासी अतिहि भए मन कादर। यहै कहत ब्रज कौन उवारै सुरपति किए [illegible]दर॥ सूरश्याम देखे गिरि अपने मेघनिकीनो दादर। देव आपनो नहीं सँभारत करत इंद्रसों ठादर॥ ७७॥ मलार॥ गए वितताइ ब्रज नरनारि। धरत सैंतत धाम वासन नाहिं

सुरति सम्हारि ॥ पूजि आए गिरि गोवर्धन देति पुरुषनि गारि । आपनो कुलदेव सुरपति धरयो ताहि विसारि ॥ दियो फल यह गिरिगोवर्धन लेहु गोदपसारि । सूर कौन सम्हारि लैहै चढ्यो इंद्र प्रचारि ॥ ७८ ॥ सोरठ ॥ ब्रजके लोग फिरत वितताने । गैयनि लै वन ग्वाल गए ते धाए आवत ब्रजहि पराने ॥ कोऊ चितवत नभतन चकृत ह्वै कोउ गिरि परत धरनि अकुलाने । कोऊ लै ओट रहत वृक्षनकी अंधधुंध दिशि विदिशि भुलाने ॥ कोऊ पहुँचे जैसे तैसे गृह कोऊ ढूंढत गृह नहिं पहिचाने । सूरदास गोवर्धन पूजा कीने कर फल लेहु विहाने ॥ ७९ ॥ रागनट ॥ तरपत नभ डरपत ब्रज लोग । सुरपतिकी पूजा विसराई लै दीनो पर्वत को भोग ॥ नंदसुवन यह बुधि उप जाई कौन देव कह्यो पर्वत योग । सूरदास गिरि बड़ो देवता प्रगट होइ ऐसे संयोग॥८०॥ब्रज नरना रि नंद यशुमतिसों कहत श्याम एकाजकरे । कुलदेवता हमारे सुरपति तिनको सवमिलि मेटिधरे ॥ इंद्रहि मेटि गोवर्धन थाप्यो उनकी पूजा कहा सरै । संतत फिरत जहाँ तहाँ वासन लरिकनु लैलै गोदभरै ॥ को करि लेइ सहाय हमारो प्रलयकाजके मेघ अरे । सूरदास प्रभु कहत नारि नर क्यों सुरपति पूजा विसरे ॥ ८१ ॥ विलावल ॥ राखिलेहु गोकुलके नायक । भीजत ग्वाल गाइ गोसुत सव विपम वूंद लागत जनु सायक ॥ वरपत मुसलधार सैनापति महामेघ मघवाके पायक । तुम विनु ऐसो कौन नंदसुत यह दुखदुसह मिटावन लायक ॥ अघ मरदन वकवदन विदारन वकी विनाशन सव सुखदायक । सूरदास प्रभुताकी यहगति जाके तुमसे सदा सहायक ॥ ८२ ॥ अध्याय ॥ २६ ॥ तथा ॥ २७ ॥ मलार ॥ शरण राखि लेहो नंदताता । घटा आई गरजि युवती गई मन लरजि वीजु चमकति तरजि डरत गाता ॥ और कोऊ नहीं तुम त्रिभुवनधनी जहँ तहँ विकल ह्वैके कही तुमहिं नाता । सूरप्रभु सुनि हँसत प्रीति उरमें वसत इंद्रको कसत हरि जगत धाता ॥८३ ॥ विलावल ॥ राखिलेहु अव नंदकिसोर । तुम जु इन्द्रकी मेटी पूजा वरपतहै अतिजोर ॥ ब्रजवासी सव तुम तन चितवतहैं ज्योंकरि चंद्र चकोर । जनि जिय डरो नैन जनि मूँदौं धरिहौं नखकी कोर ॥ करि अभिमान इंद्र झर लायो करत घटा घनघोर । सूरश्या म कहि तुमको राखौं वूंद नआवै छोर ॥ ८४ ॥ मलार ॥ माधवजू कांपत डरन हियो । दामिनि चाप वूंद सायक मनौ द्वै योधा लैसंग ॥ ह्वै गयो सरस समीर दुहूं दिशि धनुप धुजा वहु रंग । सोभित सुभट प्रचारि पैजकारि भिरत नमोरत अंग ॥ कहत तुम्हारे कियो नँदनंदन सुरपतिको व्रत भंग । वरपत प्रलय मेघ धर अंवर डरपत गोकुल गाउँ । समरथ नाथ शरणहौं तुमविनु और कौनपै जाउँ ॥ जो तुम अनल व्याल मुख राखे श्रीपति सुहृद सुभाई । हमरै तौ तुमहीं चिंतामणि सव विधि दाइ उपाई ॥ जनि डर करहु सवै मिलि आवहु यापर्वतकी छाँह । वर्पत में गोपाल बुलाए अभय किये दैवाँह ॥ एक हाथ गोवर्धन राख्यो सात दिवस वलवीर । सूरदास प्रभु ब्रजवासिनके एहरता सव पीर ॥ ८५ ॥ माधव मेघ घेरि कितौ आए । घरको गाय वहोरो मोहन ग्वालन टेर सुनाए ॥ कारी घटा सधूम देखियति अति गति पवन चलायो । चारौ दिशा चितै किन देखौ दामिनि कौंधा लायो ॥ अति घनश्याम सुदेश सूरप्रभु करगहि शैल उठायो । राखे सुखी सकल ब्रजवासी इंद्रको कोप नवायो ॥ ८६ ॥ आजु ब्रज महाघटनु घट घेरो । अव ब्रजराख कान्ह इहि औसर सव चितवत मुखतेरो ॥ कोटि छ्यानवे मेघ बुलाए आनि कियो ब्रज डेरो । मूशल धार टूटे चहुँ दिशते ह्वैगयो दिवस अँधेरो ॥ इतनी कहत यशोदा नंदन गोवर्धन तनहेरो। कियो उपाइ गिरिवर धरिवेको माहिते पकरि उखेरो ॥ सात दिवस जल वर्षि सिराने हारि

मानि सुखफेरो। श्रीपति कियो सहाय सूरप्रभु बूंद न आवत नेरो॥ ८७॥ मेघमलार॥ गगनमेघ घहरात थहरात गात। चपला चमचमाति चमकि नभ भहरात राखिले क्यों न ब्रजनंदतात॥सुनत करुणाबैन उठे हरि चले ऐन नैनकी सैनगिरि तन निहारो। सबनि धीरज दियो उचकि मंदर लियो कह्यो गिरिराज तुमको उबारो॥ करजके अग्र भुजवाम गिरिवर धरो नाम गिरिधर परचो भक्तकाजै। सूर प्रभु कहत ब्रज वासिनसों राखि तुम लिए गिरिराज राजै॥ ८८॥ गौरी। श्याम लियो गिरिराज उठाई। धरि धरि हरि कहत सबनिसों गिरि गोवर्धन कियो सहाई॥ नंद गोप ग्वालनके आगे देव कह्यो यह प्रगट सुनाई। काहेको व्याकुलभए डोलत रक्षा करी देवता आई॥ सत्यवचन गिरिदेव कहतहै कान्ह लेइ मुहि कर उचकाई। सूरदास नारी नर ब्रजके कहत धन्य तुम कुवँर कन्हाई॥८९॥मलार॥वामकर चढे क्यों गिरिराज।गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दुःखविसारचो सुखकरत समाज॥ आनँद करत सकल गिरिवर तर दुख डारचो सबही विसराइ। चक्रृतभए देखत यह लीला सबै परत हरि चरणनधाइ॥गिरिवर टेकि रहे बायेंकर दक्षिण कर लियो सखनि उठाइ। कान्ह कहत ऐसो गोवर्धन देख्यो कैसो कियो सहाइ॥ गोप वाल नंदादिक जहँलौं नंदसुवन लिए निकट बुलाइ। सूरदास प्रभु कहत सबनिसों तुमहूं मिलि टेकौ गिरिआइ॥ ९०॥ गिरि जनि गिरे श्यामके करते। करत विचार सबै ब्रजवासी भयउपजत अतिडरते॥ लैलै लकुट ग्वाल सब धाए करत सहाय उठे तुरते। यह अति प्रबल श्याम अतिकोमल रवकि रवकि उर परते॥ सप्त दिवस कर पर गिरि धारचो वर्षा वरषि हारचो अंमरते।गोपी ग्वाल नंद सुत राख्यो बरपत मेघधार जलधरते॥ यमलार्जुन दोउसुत कुबेरके तेउ उखारे जरते। सूरदास प्रभु इंद्रगवन कियो ब्रजराख्योहै वरते॥९१॥ मलार॥ नकि धरो नँदनंदन बलवीर। गिरि जानि परै टरै नखते तब कौन सहैगो पीर॥ चहुँदिश पवन झकोरत घोरत मेघघटा गंभीर। उनै उनै वरपतु गिरि ऊपर धार अखंडित नीर॥ अंध धुंध अंवरते गिरिपर मानो परत वज्रके तीर। चमकि चमकि चपला चकचौंधति श्याम कहत मनधीर॥कर जोरत कुलदेव मनावत ब्रजके गोप अहीर।पय पकवान विहान पूजिहैंलै दधि मधु घृत खीर॥ गोपी ग्वाल गाइ गोसुत सब रहैं सुख सहित शरीर। सूरश्याम गिरिधरचो बामकर मेघभए अति सीर॥ ९२॥ गिरिवरनीके धरचो कन्हैया। देखतरहो टरे जनि नखते भुजा तनकसी भैया। जब जब गाढ परत ब्रजलोगन तब करि लेत सहैया। जननि यशोदा करलै चांपति अतिश्रम होतिरिदैया। देखत प्रगट धरचो गोवर्धन चकितभए नंदरैया। पिता देखि व्याकुल मनमोहन तब एक बुद्धि उपजैया॥ आवहु तात गेहहु गोवर्धन गोपनसंग लिवैया। जहां तहां सबहुन गिरि टेक्यो कान्हहि बोतादिवैया॥श्याम कहत सब नंद गोपसों भलो करचो उचकैया। सूरदास प्रभु अंतर्यामी नंदहि हरष बढैया॥ ९३॥ गिरिवरधरचो सखा सब करते। सब मिलि ग्वाल लकुटियनि टेको अपने भु जके वरते॥सात दिवस मूशलजलधारा बरपतुहै निशिदिन अंबरते।अंतरिक्ष जलजात कहाँ ये क्रोध सहित फिरि बरषत झरते।गाइ गोप नंदादिक राख्यो वृथा बूंदसब नेकु न थरते। सूर गोपाल राखि गिरिवरतर गोकुल नर नारी ब्रज घरते॥ ९४॥ बरषत मेघवर्त धरणीपर। मूशल धार सलिल बरषतु है बूंद न आवत भूपर॥चपला चमकि चमकि चकचौंधति करति शब्दआघात। अंधाधुंध पवनवर्तकघन करत फिरत उत्पात॥निशि सम गगनभयो आच्छादित वरपि वरपि अरु इंदु। ब्रजवासी सुख चैन करतहैं कर गिरिवर गोविंद॥ मेघ बरषि जल सबै बढ़ाने विविगुण गए सिराइ। वैसोई गिरिवर वैसोई ब्रजवासी दूनो हरष बढाइ॥ सात दिवस जल वर्षै निसा दिन ब्र

घर घर आनंद । सूरदास ब्रज राखिलियो धरि गिरिवर कर नँदनंद ॥९६॥ बादर ब्रजपर आनि अरे। तबते बाम करज पर राख्यो बहुरि फेरि घुमरे ॥ सात दिवस मूसल जलधारा सायर समुद्र भरे। नहिं परवाह नंदके ढोटहि पूरतबेनु धरे ॥ लियो उठाइ कोपिकै गिरिवर सकल शरन उबरे । सूरदास बलि बलि चरणनकी सुरपति पाँइपरे॥९६॥बरषि बरषि ब्रजतन वन हेरत । मेघवर्त अपनी सैनाको खीझतहै फिरि टेरत ॥ कहा वरषि अबलौं तुम कीनो राखत जलहि छपाइ । मूसलंधार वरषि जलपाटौ सात दिवस भए आइ ॥ रिस कारि करि गर्जत नभ वर्षत चाहत ब्रजहि बहाइ । सूरश्याम गिरि गोवर्धन धरि ब्रजजनको सुखदाइ ॥ ९७ ॥ बरषि बरषि हहरे सब बादर। ब्रजके लोगन धोइ बहावहु इंद्र हमहि कहि आदर ॥ कहा जाइ कैहैं प्रभु आगे करिहैं बहुत निआदर । हम बर्षत पर्वत जलसोखत ब्रजवासी सब सादर ॥ पुनि रिस करत प्रलयजल बरपत कहत भए सब कादर। सूर गाइ गोसुत सब राख्यो गिरि वर धरि ब्रजनागर ॥ ॥ ९८ ॥ धनाश्री ॥ कहा होत जल महाप्रलयको । राख्यो सैंति सैंत जेहिकारज बचत नहीं कहुँ मनको ॥ भुवपर एक बूंद नाहिं पहुँची निझरि गए सब मेह। वासर सात अखंडित धारा बरपत हारे देह ॥ वरुन भयो बिननीर सबनिको नाम रह्योहै बादर । सूरचले फिरि अमर राज पर ब्रजते भए निरादर॥९९॥मलार॥मघवनि हारि मानि मुख फेरो।नीके गोप बड़े गोवर्धन जब नी के ब्रज देरो ॥ नीकेगाइ बच्छ सब नीके नीके बालगोपाल । नीको वन वैसीये यमुना मन मन भयो बिहाल । गोकुल ब्रज वृंदावन मारग नेकनहीं जलधार। सूरदास प्रभु अगणित महिमा कहाभयो जलसार ॥ १०० ॥ नटनारायण ॥ मघवन जाइ कहि पुकारी । दीनह्वै सुरराज आगे अस्त्र दीने डारी सात दिन भरि वरषि ब्रजपर गई नेक नझार । अखंड धारा सलिल निझरो मिटी नहीं लगार ॥ धरणि नेकु नबूँद पहुँच्यो हरपे ब्रज नर नारि । सूर मेघन इंद्र आगे करत यहै गुहारि ॥१॥ गौरी ॥ तुम बरपे ब्रज कुशल परचो । तुम बरपत जल महा प्रलयको यह कहि मन मन सोच परचो ॥ एक घरी जाके बरपेते गगन आच्छादित होई । ते मघवा विह्वल मो आगे बात कहतहैं रोई ॥ सात दिवस जल बरषि सिराने ताते भए निरास । सूरदास सुरपति संकित भयो सुरन बुलायो पास ॥ २ ॥ अमरराज सब अमर बुलाए । आज्ञा सुनत सकल धर घरते आए कछु बिलंबु ना लाए ॥ कौन काज सुरराज हमारो हमको आयसु होई । देखौ मेघवर्त्तकनिकी गति ब्रजते आए रोई गोवर्धनकी करी पुजाई मुहि डारचो बिसराइ ॥ मेघवर्त्त जलवर्त्त पठाए आवहु ब्रजहि बहाइ ॥ धार अखंडित बरपि सातदिन ब्रज पहुँची नहिं बूंद । सुरनि कही गोकुल प्रगटे हैं पूरण ब्रह्ममुकुंद । मोसों क्यों न कही तुम तबहीं गोकुलमें ब्रजराज । सूरदास प्रभु कृपा करहिंगे शरनचलौ दिवराज ॥३ ॥सोरठ॥शरण गए जो होइ सु होई । वे करता वेईहैं हरता अब न रहौं मुख गोई ॥ ब्रज अवतार कह्यो है श्रीमुख तेई करत विहार । पूरण ब्रह्म सनातन वेई मैं भूल्यो संसार ॥ उनके आगे चाहों पूजा ज्योंमणि दीप प्रकाश। रविआगे खद्योत उज्यारी चंदन संग कुवास ॥ कोटि इंद्र छिनही मेराचैं छिन में करैं विनाश । सूर रच्यो उनहीको सुरपति मैं भूल्यो तिहि आश ॥४॥सारंग॥ प्रगट भए ब्रज त्रिभुवन राइ । युग गुण बीति त्रिगुण बुधि व्यापी शरन चलौ सुरपति अकुलाइ॥सपनेको धनु जागि परे ज्यों त्यों जानी अपनी ठकुराइ । कहत चल्यो यह कहा कियो मैं जगतपिता सों करी ढिठाइ ॥ शिव बिरंचि राचे इंद्र वरुन यम लिए अमर गण संग लगाइ । वार वार शिर धुनत जातु मग कैहों कहा वदन दिखराइ ॥ वेहैं परम कृपालु महाप्रभु रहौं शीश चरणन तरनाइ ॥ सूरदास प्रभु पिता

मात मैं ओछी बुद्धि करी लरिकाइ ॥ ५ ॥ इंद्र शरणचले ॥ कान्हरो ॥ सुरगण सहित इंद्र व्रज आवत। धवल वरन ऐरापति देख्यो उतारि गगनते धरणि धँसावत ॥ अमरा शिव रवि शशि चतुरानन हय गय वसह हंस मृग जावत। धर्मराज वनराज अनलदिव शारद नारद शिवसुत भावत ॥ मेंढा मढी मगरगुडरारो मोर आखु मनवाह गनावत। व्रजके लोग देखि डरपे मन हरि आगे कहि कहि जुसुनावत॥ सातदिवस जल वरषि बटान्यो आवत चल्यो व्रजहि अत्रावत। घेरा करत जहां तहां ठाढे व्रजवासिनको नहीं बचावत ॥ दूरहिते वाहनसों उतरचो देवन सहित चल्यो शिरनावत। आइ परचो चरणनतर आतुर सूरदास प्रभु शीश उठावत ॥ ६ ॥ सुरपति चरण परचो गहि धाइ। युग गुणधोइ शेषगुण जान्यो शरणहि राखिलेहु शरनाइ ॥ तुम बिसरे तुमरी मायामें तुम विनु नाहीं और सहाइ। शरन शरन पुनि पुनि कहि कहि मोहिं राखि राखि त्रिभुवनके राइ ॥ मोते चूकपरी विनुजाने मैं कीने अपराध बनाइ। तुम माता तुमही जगदाता तुम भ्राता अपराध क्षमाइ ॥ जो बालक जननीसें विरुझै माता ताको लेइ मनाइ। ऐसेहि मोहिं करौ करुणामय सूर श्याम ज्यों सुतहित माइ॥७॥ बिलावल॥ व्याकुल देखि इन्द्रको श्रीपति उभय भुजा करि लियो उठाइ अभय निभय कर माथे दीनो श्रीमुखवचन कह्यो मुसिक्याइ॥कहाभयो जु चढे व्रज ऊपर मैं तुरतहिं करि लियो सहाइ। हमको जानि नहीं तुम कीनो विनजाने यह करी ढिठाइ ॥ अब अपने जिय सोच करौ जिनि यह मेरी दीनी ठकुराइ ॥ सूरश्याम गिरिधर सब लायक इंद्रहि कह्यो करो सुखजाइ ॥ ८ ॥ रागनट ॥ सुरगण करत स्तुति मुखनि। दरशते तनुताप खोयो मेटि अघके दुखनि ॥ अंग पुलकित रोम गदगद कहत वाणी मुखनि। वामभुज करटेकि राख्यो करज लघुके नखनि॥प्रेमके वश तुमहि कीन्हो ग्वाल बालक सखनि।योगि जन बन तप न जाप न नहीं पावत मखनि ॥ धन्य नंद धनि मातु यशोमति चलत जाके रुखनि। सूरप्रभु महिमा अगोचर जाति कापै लखनि ॥ ९ ॥ भैरव ॥ जयमाधव गोविंद मुकुंदहरि। कृपासिंधु कल्याण कंसअरि ॥ प्रणतपाल केशव कमलापति। कृष्णकमल लोचन अनन्यगति ॥ श्रीरामचन्द्र राजीव नैननवर शरण साधु श्रीपति सारंगधर ॥ वनमाली विट्ठल वावन वल। वासुदेव वासी व्रजभूतल ॥ खरदूषण त्रिशिरा शिरखंडन।चरण चिह्न दंडक भुअमंडन॥वकी वदन वक वदन विदारन।वरुन विपाद नंद निस्तारन॥ऋषि मख तृणा तारकातारन।वनवसि तात वचन प्रतिपालन॥कालीदमन केशिकरपातन। अघ अरिष्ट धेनुक अनुघातन ॥ रघुपति प्रवल पिनाक विभंजन।जगहित जनक सुता मनुरंजन ॥ गोकुलपति गिरिधर गुणसागर।गोपीरमन राशिरतिनागर॥करुणामय कपिकुल हितकारी।वालिविरोध कपट मृगहारी ॥ गुप्त गोपकन्या व्रतपूरन। दुष्टन दुख भक्त न दुखचूरन ॥ रावण कुंभकर्ण शिरछेदन। तरु वर सात एक शर वेधन ॥ शंखचूड चाणूर संहारन। शक्र कहै मोको रक्षाकरन ॥ उत्तरकृपा गीध हितकारी। दरशनदे शवरी उद्धारी॥जेपद सदा शंभुहितकारी।जेपद परसि सुरसरी गारी ॥ जेपद रमा हृदयनहिं टारी। जेपद तिहूँभुवन प्रतिपारी ॥ जेपद अहिफन फन प्रतिधारी। जेपद वृंदावनहि विहारी॥ जेपद शकटासुर संहारी। जेपद पंडव गृह पगुधारी ॥ जेपद रज गौतम तियतारी। जेपद भक्तनके सुखकारी ॥ सूरदास सुर याचत तेपद। करहु कृपा अपने जनपर सद ॥ आसावरी ॥ स्तुति करि सुर घरनि चले। यहै कहत सब जात परस्पर सुकृत हमारे प्रगट फले ॥ शिवविरंचि सुरपति कहँ भाषत पूरण ब्रह्महि प्रगट मिले। धन्य धन्य यह दिवस आजुको जातहै मारग करत मिले ॥ पहुँचेजाइ आपुने लोकनि अमर नारि सब हरष भरे। सूरश्यामकी

लीला सुनि सुनि अतिहित मंगल गानकरे॥१०॥ मलार॥दिखियत दोउ घन उनए। उत घन वासव भक्ति वश्ययत नर इक रोप भए॥ उत सुरचाप कला प्रचंड इत तडित पीत पट श्यामनए। उत सैनापति वरपि मुसलसम इत प्रभु अमिय दृष्टि चितए॥ युगल वीच गिरिराज विराजत कर जु उठाइ लए। मनौ विवि मरकत वीच महा नग चतुर नारि वनए। लुढत शक्रके शीश चरण तर युग गुण गत समए। मानहु कनकपुरी पतिके शिर रघुपति फेरि दए॥ भए प्रसन्न सकल सुरपुरको प्रमुदित फेरि गए। सूरदास गिरिधर करुणामय इंद्रथापि पठए॥११॥ देखौ भाई वदरनिकी वरियाई। मदनगोपाल धरचो गिरिवरकर इंद्र ढीठ झरलाई॥ जाके राज सदा सुख कीनो तासों कौन वड़ाई। सेवकु करै स्वामिसों सरवर इनिवातनि पतिजाई॥ इंद्र ढीठ वलि खाइ हमारी आपै अकलगई। सूरदास तेहिको काको डर जिहि वन सिंह कन्हाई॥१२॥ सोरठ॥ जहां तहां तुम हमहि उवारचो। ग्वाल सखा सव कहत श्यामसों धनि यशुमति अवतारचो॥ तृणावर्त्त ब्रजपर चढिआयो लाग्यो देनउडाइ। अतिशिशुतामें ताहि संहारचो परचो शिलापर आइ॥ फलजनवै बालक सँग खेलत केशी आयो साथ। वाहि मारि तुम हमहिं उवारचो ऐसे त्रिभुवननाथ॥ कागासुर शकटासुर मारचो पय पीवत दनुनारी।अघाअसुरते हमहिं निकास्यो वकावदन धरिफारी॥ काली दह जल अचैगए मरि तव तुम लिये जिवाय।सूरश्याम सुरपतिते राखे देतो सवनि वहाइ॥१३॥ हमको नँदनंदनको गारो। इंद्रकोप ब्रज वहाजातहै गिरिधर सकल उवारो॥राम कृष्ण वल वदत न काहू निडर चरावत चारो। विगरै सवरै हमरे शिर ऊपर वलको वीर रखवारो॥ तवहीं हमहि भरोसो आयो केशी तृणावर्त जव मारचो। सूरदास प्रभु रंगभूमिमें हरि जीत्यौ नृप हारचो॥१४॥ मलार॥तुम सुरपतिको मान हरचो। वरपत शुंड दंडधर धारा छिन छिन एक में प्रलय करचो॥ ऐरावत आरूढ़ अग्रघन लघुता जानि शुरोपभरचो। देखेदीन दुखित नंदादिक लीला गिरिवर कर जुधरचो॥ सूरदास करुणामय माधव ब्रज सुख उनको गरव हरचो॥१५॥ विलावल॥ ब्रज युवती ब्रजजन ब्रजवासी कहत श्यामसर कौन करै। ब्रजमारत ब्रजनाथहि आगे वज्रायुध मन क्रोध करै॥ वलसमेत वरष्यो ब्रजऊपर वल मोहनकी सुधि नकरै। हारिमानि हहरचो हरि चरणनि हरपि हिये अव हेतु करै॥गरजि गरजि घहरात गुसांकोरि गिरिवारो यह पैजुकरै। सूरदास गिरिधर करुणामय तुम विनुको प्रभु क्षमाकरै॥ मेघमलार॥श्याम गिरिराज क्यों धरचो करसो। अतिहि विस्तार अतिभार तुम वार अति वाम भुज टेकि लघु जात करसो॥कहत सव ग्वाल धनि धन्य नंद लाल ब्रज धन्य गोपाल वल कितिक करसो।धन्य यशुमति मात जिनि जन्यो तुम तात शोरि माखन खात वाँधे करसो॥कान्ह हँसिकै कह्यो तुम सवन गिरिगह्यो रह्यो हो ब्रज वहह्यो लकुट करसो। सूरप्रभुके चरित कहा वल गिरि धरत चरणरज लेत सुरराज करसो॥ मलार॥ हाहारे हठीले हरि। अपनी जननीको कह्यो करि इंद्र वरपि गयो अव गिरिवरधरि॥ सातदिवस कीनी छाँह नेकु न पिरानी वांह अति कठिन कुटु राख्यो रे छतनि करि।सुनिकै यशोदा धाइ निकट गोपाल करौरे सवै सहाय नैन रहे जलभरि॥ कुलके देव मनाए देवेको द्विज वुलाये जाहि जोई भायो इंद्रकोप जियोरे कन्हैया प्यारो जाके राज सुखकरि। सूरदास प्रभु गिरिधरको कौतुक देखि कामधेनु आयो धायो इंद्र अपडर डरि॥१६॥ सोरठ॥ जव करतें गिरि धरचो उतारि। श्याम कह्यो वहुरो गिरि पूजहु ब्रज जन लिए उवारि॥ यह सुनतहि मन हर्प वढ़ायो किये पकवानु सँवारि। वहु मिष्टान्न वहुत विधि भोजन वहु व्यंजन अनुहारि॥ परसि धरो गोवर्धन आगे जेंवत अति रुचि भारि सूरश्याम

गिरिधर वर मांगत रविसों घोषकुमारि ॥ १७ ॥ कान्हरो ॥ घरघरते ब्रज युवती आवति। दधि अक्षत रोचन धरि थारनि हरषि श्याम शिर तिलक बनावति ॥ वारंवार निरखि छवि अंग अंग श्याम रूप उरमाहँ दुरावति। नंद सुवन गिरि धरचो वामकर यह कहिकै मनहरप वढ़ावति ॥ जेहि पूजति सब जन्म गँवायो सो कैसेहुं पग छुवन नपावति। सूरश्याम गिरिधरन मांगि वरु करजोरति कहि विधिहि मनावति ॥ १८ ॥ सोरठ ॥ नीके धरणि धरचो गोपाल। प्रलयघन जल बरषि सुरपति परचो चरण विहाल ॥ करत स्तुति नारि नर ब्रज नंद अरु सब ग्वाल। जहां तहां सहाय हमको होतहैं नंदलाल ॥ जाहि पूजत डरत मनमें ताहि देख्यो दीन। त्रिदशपति सब सुरको नायक सो भयो आधीन। देखि छवि अति नंदसुतकी नारि तन मन वारि। सूरप्रभु करते गुवर्धन धरचो धरणि उतारि ॥ १९ ॥ नट ॥ करते धरचो धरणी धरनि। देखि ब्रजजन थकित ह्वै रहे रूप रतिपति हरनि ॥ लेत वेर न धरत जान्यो कहत ब्रज नर घरनि। तन ललित भुज अतिहि कोमल कियो बल बहु करनि ॥ मोर मुकुट विशाल लोचन श्रवण कुंडल वरनि। सूर सुरपति हारि मानी तब परचो दुहुँ चरनि ॥ २० ॥ बिलावल ॥ घरनि घरनि ब्रज होत बधाई। सातवरषके कुँवर कन्हैया गिरिवर धरि जीत्यो सुरराई ॥ गर्व सहित आयो ब्रज बोरन यह कहि मेरी भक्ति घटाई। सातदिवस जल वरषि सिराने तब आयो पाइँनतरधाई ॥ कहाँ कहाँ शंकट नाहिं मेटत नर नारी सब करत वडाई। सूरश्याम अबकै ब्रजराख्यो ग्वाल करत सब नंद दोहाई ॥ २१ ॥ नट ॥ क्यों राख्यो गोवर्धन श्याम अतिऊंचो विस्तार अतिहि बहु लीनो उचकि करज भुजवाम ॥ यह आघात महाप्रलय जल डर आवत मुख लेतहि नाम। नीके राखि लियो ब्रज सिगरो ताको तुमहि पठायो धाम ॥ ब्रज अवतार लियो जबते तुम यहै करत निशि वासर याम। सूरश्याम बन घन हम कारण बहुत करत श्रमनहिं विश्राम ॥ २२ ॥ राखि लियो ब्रज नंदकिसोर। आयो इंद्र गर्व करि चढिकै सात दिवस वरषत भयो भोर ॥ वाम भुजा गोवर्धन राख्यो अति कोमल नखहीकी कोर। गोपी ग्वाल गाइ ब्रजराख्यो नेकु न आई बूंद झकोर ॥ अमरापति चरणन लै परचो जब वीते युग गुनको जोर। सूरश्याम करुणा कै ताको पठै दियो घर मानि निहोर ॥ २३ ॥ मलार ॥ मेरो मोहन जल प्रवाहक्यों टारचो। बूझत मुदित यशोदा जननी इंद्र कोप करिहारचो ॥ मेघवर्त्त जल वरषि निशा दिन नेकु न नैन उघारचो। वार वार यह कहति कान्हसों कैसे गिरि नख धारचो ॥ सुरपति आनि गिऱ्यो गहि पांइन ताको शरन उवाऱ्यो। सूरश्याम जनके सुखदाता करते धरणि उतारचो ॥ २४ ॥ सोरठ ॥ मेरे सांवरे मैं बलिजाउँ भुजनकी। क्यों गिरि सबल धरचो कोमल कर बूझतिहौं गति तनकी ॥ इंद्र कोप आयो ब्रज ऊपर बहुत पैज करि हारे। ठाढे गोप कहत भैयाहो तैं हम भले उबारे॥ थार तमोर दूध दधि रोचन हरषि यशोदा ल्याई। करै शिर तिलक चरण रजवंदित मनहु रंक निधिपाई ॥ चरणनपरत कमल ब्रजसुंदरि हरषि हरषि मुसकाई। फिरि फिरि दरशकरति एही मिस प्रेम न प्रीति अघाई॥ गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब वार वार अकुलाहीं। निरखि निरखि सुंदर मुख सोभा प्रेम तृषा न बुझाहीं ॥ सूरदास सुरपति शंकितह्वै सुरनलिये सँगआयो। तुम जु अनंत अखिल अविनाशी काहू मरम नपायो ॥ २५ ॥ सोरठ ॥ गिरिवर कैसे लियो उठाई। कोमल कर चापति यशुदा यह कहि लेत बलाई ॥ महाप्रलय जल तापर राख्यो एक गोवर्धन भारी। नेक नहीं हाल्यो नखपरते मेरो सुत अहंकारी ॥ कंचनथार दूव दधि रोचन सजि तमोर लैआई। हरषतितिलक करति मुख निरखति भुजभरि कंठ लगाई ॥

रिसकरिकै सुरपति चढि आयो देतो ब्रजहि वहाई। सूरश्यामसों कहति यशोदा गिरि धर वडो कन्हाई ॥२६॥ धरणि धर क्यों राख्यो दिनसात। अतिहि कोमल भुजा तुम्हारी चापति यशुमति मात॥ ऊंचो अति विस्तार भार बहु यह कहि कहि पछितात। वह अघात तेरे तनक तनक कर कैसे राख्यो तात॥ मुख चूमति हरि कंठ लगावति देखि हँसे बल भ्रात। सूरश्यामको केतिक बात यह जननी जोरति नात॥ २७॥ कान्हरो॥ जननी चापति भुजा श्यामकी ठाढे देखि हँसत बलराम। चौदह भुवन उदरमें जाके गिरिवरधरचो बहुत यह काम॥ कोटि ब्रह्मांड रोम रोमनि प्रति जहां तहां निशि वासर धाम। जोइ आवति सोइ देखि चक्रतहै कहत करे हरि कैसे काम॥ नाभिकमल ब्रह्मा प्रगटाये देखि जलार्णव तज्यो विश्राम। आवत जात बीचही भट क्यों दुखित भयो खोजत निजधाम॥ तिनसों कहत सकल ब्रजवासी कैसेकर राख्यो गिरिश्याम। सूरदास प्रभु जल थल व्यापक फिरि फिरि जन्म लेत नंदधाम॥२८॥ गौरी ॥ मात पिता इनके नाहिं कोई॥ आपुहि करता आपुहि हरता त्रिभुवन गए रहतहै जोई॥ किंतिक बार अवतार लियो ब्रज एहैं ऐसेवोई। जल थल कीट ब्रह्मके व्यापक और न इनसरि होई॥ वसुधा भार उतारन कारन आपु रहत तनुगोई॥ सूरश्याम माता हितकारी भोजन मांगतरोई॥ २९॥ अथ गोवर्धनकी दूसरी लीला॥

॥ बिलावल॥ नंदहि कहति यशोदारानी। सुरपति पूजा तुमहि भुलानी॥ यह नहिं भली तुम्हारी वानी मैं गृहकाज रहौं लपटानी॥ लोभहि लोभ रहेहो सानी। देवकाजकी सुधि विसरानी॥ महरि कहति पुनि पुनि यह बानी। पूजाके दिन पहुँचे आनी॥ सूरदास यशुमतिकी बानी। नंदहि खीझि खीझि पछिताती॥ १॥ नंद कह्यो सुधि भली देवाई। मैंतौ राजकाज मनलाई॥ नित प्रति करत इहैं अधमाई। कुल देवता सुरति विसराई॥ कंसदई इह लोक बड़ाई। गाउँदशक शिरदार कहाई॥ जलधि बूंद ज्यों जलहि समाई। माया जहँकी तहां बिलाई॥ सूरदास यह कहि नँदराई। चरण तुम्हारे सदा सहाई॥ २॥ कहत महरि तब ऐसी बानी। इंद्रहिकी दीनी रजधानी॥ कंस करत तुम्हरी अतिकानी। यह प्रभुकीहै आशिष बानी॥ गोपन बहुत बड़ाई मानी। जहां तहां यह चलति कहानी॥ तुम घर मथिये सहस मथानी। ग्वालिनि रहत सदा वितातानी॥ तृण उपजत उनहीं के पानी। ऐसे प्रभुकी सुरति भुलानी॥ सूर नंद मनमें तब आनी। सत्य कहत तुम देव कहानी॥३॥ महर लियो इक ग्वाल बुलाइ। गोपनंद उपनंद बुलाइ॥ अरु आनो वृषभानु लवाइ। तुरत जाहु तुम करहु चँडाइ॥ यह सुनि ग्वाल गए तहँ धाई। नंद महरकी कही सुनाई॥ नेक करहु अब जिनि विलमाई। मोहिं कह्यो सब देहु पठाई॥ यह सुनिकै सब चले अतुराई। मन मन सोच करत पछिताई॥ कंसकाज जिय मांझ डराई। राजअंश धन दियो चलाई॥ सूर नंदगृह पहुँचे आई। आदर करि बैठे नँदराई॥४॥ गोप सबै उपनंद बोलाई। कौनकाज को हम हँकराई॥ सुनतेही हम आतुर आए। कंस कछू कहि मांगि पठाए॥ इहैजानि अति आतुर आए। सब मिलि कह्यो बहुत डरपाए॥ कालिहि राज अंशदै आए। ग्वाल कहत तुरतहि उठि धाए॥ महर कह्यो हम तुम डरवाए हँसि हँसि कहत अनंद बढ़ाए॥ हम तुमको सुखकाज मँगाए। वारवार यहकहि दुखपाए॥ सूर इंद्र पूजा विसरायें। यह सुनतहि शिर सबनि नवाए॥ ५॥ पूजा सुनत बहुत सुख कीन्हों। भली करी हमको सुधि दीन्हो॥ यह वाणी सबहिन सुख लीन्हो। बडे देव सब दिनको चीन्हो॥ इनहीते ब्रजवास बसीनो। हम सब अहिर जाति मतिहीनो॥ पूजाकी विधि करत सबै मिलि। जेहि जेहि भांति सदा जैसी चलि॥ विदा माँगि नंदसों गृह आए। घरनि घरनि यह बात चलाए॥ सूरदास

गोपनकी बानी । ब्रज नर नारि सबन यह जानी ॥ ६ ॥ नंदघरनि ब्रजबधू बोलाई । यह सुनिकै तुरतहि सब आई ॥ कौन काज हम महरि हँकारी । तुम नाहिं जानत यौवन भारी ॥ बिहँसि कहति कहा देतिहौ गारी । सुरपति पूजा करो सवारी ॥ देखें हम सब सुरति बिसारी । औरो हमहि बूझिएगारी॥ यह सुनि हरषित भई नँदनारी । सखियन वचन कह्यो जब प्यारी ॥ सूर इंद्र पूजा अनुसारी । तुरत करौ सब भोग सँवारी ॥ ७ ॥ घरनि चलीं सब कहि यशुमति सों । देव मनावति वचन विनति सों ॥ तुमबिन और नहीं हम जाने । मुख मुख स्तुति करत बखानै ॥ जहां तहां ब्रजमंगल गाने । बाजत ढोल मृदंग निसानै ॥ बहुत भांति सब करे पकवानै । नेवजकरि धरि सांझ बिहानै । छुवत नहीं देवकाज सकाने । देवभोगको रहत डेराने ॥ सूरदास हम सुरपति जानै । और कौन ऐसो जेहि मानै ॥ ८ ॥ नंदमहर घर होत बधाई । करत सबै विधिदेव पुजाई॥नेवज करत यशोदा आतुर। अष्टौ सिद्धि घरहि अतिचातुर॥ मैदा उज्ज्वल करिकै छान्यो । बेसनदारि चनक करि बान्यो॥घृत मिष्टान्न सबै परिपूरन । मिश्रित करत पागको चूरन ॥ कटुवा करत मिठाई घृत पक । रोहिणि करत अन्नभोजन तक॥ संग और ब्रजनारी लागी । भोजन करतहैं बड़ी सभागी । महरि करत ऊपर तरकारी । जोरत सबविधि न्यारी न्यारी ॥ सूरदास जो मांगत जबहीं । भीतरते लेदेतहैं तबहीं ॥९॥ महरि सबै नेवज लै सैतति । श्याम छुवै कहुँ ताको डरपति॥ कान्हहि कहति यहां जनिं आवै।लरकनको यह देव डरावै॥श्यामरहे आंगनहिं डराई।मन मन हँसत मात सुखदाई ॥ मैयारी मोहिं देव देखैहै। इतनो भोजन सब वह खैहै ॥ यह सुनि खीझतिहै नँदरानी बार बार सुतसों बिरुझानी ॥ ऐसी बात नकहौ कन्हाई । तू कत करत श्याम लँगराई॥ कर जोरति अपराध छमावति। बालकको यह दोष मिटावति ॥ सूरदास प्रभुको नहिं जानै । हँसत चले मनमें नरिसानै ॥ १० ॥ युवती कहति कान्ह रिसपायो । जान देहु सुरकाज बतायो ॥ बालक आइ छुवै कहुँ भोजन । उनकी पूजा जानै को जन ॥ यह कहि कहि देवता मनावति । भोग सामग्री धरत उठावति॥ उनकी कृपा गऊगण घेरे । उनकी कृपा धाम धन मेरे ॥ उनकी कृपा पुत्र फल पायो। देखहु श्यामहि खीझि पठायो ॥ सूरदास प्रभु अंतर्यामी । ब्रह्माकीट आदिके स्वामी ॥ ११ ॥ नंद निकट तब गए कन्हाई । सुनत बात तहँ इंद्र पुजाई ॥ महर नंद उपनंद तहाँ सब । बोलिलिए वृषभानु महर तब ॥ दीपमालिका रचि रचि साजत । पुहुपमाल मंडली बिराजत ॥ बरषसातके कुँवरकन्हाई।खेलत मन आनंद बढ़ाई॥घर घर देति युवति जमहाथा।पूजा देखि हँसत ब्रजनाथा॥ मो आगे सुरपतिकी पूजा । मोते और देव को दूजा ॥ शतशत इंद्र रोमप्रति लोमनि । शतलोमनि मेरे इक रोमनि ॥ सूरश्यामए मनसों बातैं । लीनो भोग बहुत दिन जातैं ॥१२॥ सुर पति पूजा जानि कन्हाई । बार बार बूझत नँदराई ॥ कौन देवकी करत पुजाई । सो मोसों तुम कहौ बुझाई॥महर कह्यो तब कान्ह सुनाई।सुरपति सब देवनके राई॥तुमरे हित मैं करतपुजाई । जाते तुम रहो कुशल कन्हाई ॥ सूर नंद कहि भेद बताई । भीर बहुत घर जाहु सिखाई॥१३॥जाहु घर हि बलिहारी तेरी । सेज जाइ सोवो तुम मेरी ॥ मैं आवतहौं तुम्हरे पाछें । भवन जाहु तुम मेरे बाछे ॥ गोपन लीन्हें कान्ह बुलाई । मंत्र कहौं एक मनहि समाई ॥ आजु एक सपने कोउ आयो । शंखचतुर्भुज चारि बतायो॥मोसों यह कहि कहि समुझायो॥यह पूजा तुम किनहि सिखायो॥सूरश्याम कहि प्रगट सुनायो॥गिरि गोवर्धन देव बतायो॥१४॥यह तब कहन लगे दिवराई । इंद्रहि पूजे कौन बड़ाई॥कोटि इंद्र हम छिनमें मारैं॥छनहीमें फिरि कोटि सँवारैं॥जाके पूजे फल तुम पावहु॥तादेवहि

तुम भोग लगावहु॥तुम आगे वह भोजन खैहै। मुँह माँग्यो फल तुमको दैहै॥ऐसो देव प्रगट गोवर्धन। जाके पूजे बाढ़े गोधन॥ समुझि परी कैसी यह वानी। ग्वाल कही यह अकथ कहानी॥ सूरश्याम यह सपनो पायो। भोजन कौन देवही खायो॥१५॥ मानहु कह्यो सत्य यह वानी।जो चाहौ व्रजकी रजधानी॥जो तुम मुँह मांग्यो फल पावहु। तौ तुम अपने करन जेवावहु॥भोजन सब खैहैं मुँहमाँगे।पूजत सुरपति तिनके आगे॥ मेरी कही सत्य करि मानहु। गोवर्धनकी पूजा ठानहु॥सूरश्याम कहि कहि समुझायो। नंद गोप सबके मन आयो॥ १६॥ सुरपति पूजा मेटि धराई। गोवर्धनकी करत पुजाई। पांचदिनालौं करी मिठाई। नंदमहरघरकी ठकुराई॥जाके घरनी महरि यशोदा॥अष्ट सिद्धि नवनिधि चहुँ कोदा॥ घृत पक वहुत भांति पकवाना। व्यंजन बहु को करै वखाना॥ भोग अन्न बहु भार सजायो। अपने कुल सब अहिर बोलायो॥ सहस शकट भरि भरत मिठाई। गोवर्धनकी प्रथम पुजाई। सूरश्याम यह पूजा ठानी। गिरिगोवर्धनकी रजधानी॥ १७॥ व्रज घर घर सब भोजन साजत। सबके द्वार वधाई बाजत॥ शकट जोरिले चले देवबलि।गोकुल व्रजवासी सब हिलि मिलि॥ दधि लवनी मधु साजि मिठाई॥कहँलगि कहौं सबै बहुताई॥घर घरते पकवान चलाए। निकसि गांवके ग्वैंडे आये॥ व्रजवासी तहां जुरे अपारा। सिंधुसमान पारना वारा॥ पैंडे चलन नहीं कोउ पावत। शकटभरे सब भोजन आवत॥ सहस शकट चले नंद महरके। और शकट कितने घरघरके॥ सूरदास प्रभु महिमा सागर। गोकुल प्रगटेहैं हरिनागर॥१८॥ इक आवत घरते चले धाई। एकजात फिरि घर समुहाई॥ इकटेरत इक दौरे आवत। एक गिरावत एक उठावत॥ एक कहत आवहुरे भाई। बैल देतहै शकटगिराई॥ कौन काहिको कहै सँभारे। जहाँ तहाँ सब लोग पुकारे॥ कोउ गावत कोउ निर्तत आवै। श्यामसखासंग खेलत धावै॥ सूरदास प्रभु सबके नायक। जो मनकरै सो करिवे लायक॥ १९॥ सजिशृंगार चलीं व्रजनारी। युवतिन भीरभई अतिभारी॥ जगमगात अंगनिप्रति गहनो। सबके भाव दरशहरि लहनो॥ यहि मिस देखनको सब आईं। देखत एकटक रूप कन्हाई॥ वै नहिं जानत देव पुजाई। केवल श्याम हिसों लवलाई॥ कोमलजाति कहाको बोलत। नंदसुवन ते चितनहिं डोलत॥ सूरभजे हरि जो जेहि भाउ। मिलत ताहि प्रभु तेहि सुभाउ॥२०॥ गोपनंद उपनंद गए तहँ। गिरिगोवर्धन बडे देव जहँ॥ शिखर देखि तब रीझे मन मन। ग्वाल कहत आजुहि अचरज वन॥अति ऊंचो गिरिराज विराजत। कोटि मदन निरखत छवि लाजत॥ पहुँचे शकटनि भरि भरि भोजन। कोउ आए कोउ नहिं कहुँ खोजन॥ तिनके काज अहीर पठाए। विलमकरहु जिनि तुरत धवाए॥ आवत मारग पाये तिनको। आतुरकरि बोले नँद जिनको॥ तुरत लिवाइ तिनहि तहां आए। महर मनहि अति हरप बढाए॥ सूरदास प्रभु तहँ अधिकारी। बूझतहैं पूजा परकारी॥ २१॥ आइ जुरे सब व्रजके वासी। डेरापरचो कोशचौरासी॥एक फिरत कहुँ ठौर नपावैं। एतेपर आनंद बढ़ावैं॥ कोउ काहूसों वैर नताकै। बैठत मन जहां भावत जाकै॥ खेलत हँसत करैं कौतूहल। जुरे लोग तहँ तहां अकूहल॥ नंदकह्यो सब भोग मँगावहु। अपने कर सब लैलै आवहु॥ भोग बहुत वृपभानुहिं घरको। को करि बरनै अतिहि वहरको॥ सूरश्याम जो आयसु दीन्हों। विप्रबुलाइ नंद तब लीन्हों॥ २२॥ तुरत तहां सब विप्र बोलाए। यज्ञारंभ तहां करवाए॥ सामवेदद्विज गान करत तहां। देखत सुर विथके अमरन जहां॥ सुरपति पूजा तबहि मिटाई। गिरिगोवर्धन तिलक चढ़ाई॥ कान्ह कह्यो गिरि दूध अन्हावहु। बडे देवता इनहि मनावहु॥ गोवर्धन

दूधहि अन्हवाए। देवराज कहँ माथ नवाए ॥ नये देवता कान्ह पुजावत । नर नारी सब देखन आवत ॥ सूरश्याम गोवर्धन थाप्यो। इंद्रदेखि रिसकरि तनु कांप्यो ॥ २३ ॥ देखिइंद्र मन गर्व बढायो। ब्रजलोगन सब मोहिं बिसरायो॥अहिरजाति ओछी मति कीन्ही। अपनी ज्ञाति प्रगट करिदीन्ही॥ पूजत गिरिहि कहा मनआई। गिरि समेत ब्रज देउँ वहाई ॥ देखोधौं कितनो सुखपैहैं मेरे मारत काहि मनैहैं ॥ पर्वत तव इनको क्यों राखत। वारंवार कहै इह भाषत ॥ पूजत गिरि अति प्रेम बढाए। सपनेको सुख लेत मनाए॥ सूरदास सुरपतिकी वानी। ब्रजवोरौं प्रलयके पानी॥ ॥ २४ ॥ श्याम कह्यो तव भोजन लावहु। गिरि आगे सब आनि धरावहु ॥ सुनत नंद तहँ ग्वाल वोलाए। भोगसामग्री सबै मँगाए ॥ पटरसके बहुभांति मिठाई। अन्नभोग अतिही बहुताई ॥ व्यंजन बधुतभाँति पहुँचाए। दधि लवनी मधु माट धराए॥ दही वरा बहुतै परसाए। चंद्रहिं सम पटतर तेहि पाए ॥ अन्नकूट जैसो गोवर्धन। अरु पकवान धरे चहुँकोदन ॥ परसत भोजन प्रात हिते सब। रवि माथेते ढरकि गयो अब ॥ गोपन कह्यो श्याम ह्यां आवहु। भोगधरचो सबगिरिहि जेमावहु ॥ सूरश्याम आपुनहीभोगी। आपुहि माया आपुहि योगी ॥२५॥ कान्ह कह्यो नंद भोग लगावहु। गोपमहर उपनंद वोलावहु ॥ नैनमूंदि करजोरि मनावहु। प्रेमसहित देवहि न चढ़ावहु॥ मनमें नेक खुटक जानि राखहु। दीनवचन मुखते तुम भाषहु॥ ऐसीविधिगिरि परसन ह्वैहै। सहस भुजा धरि भोजन खैहै॥सूरदास प्रभु आपु पुजावत।यह महिमा कैसे कोउ पावत ॥२६॥श्यामकही सोई सब मानी। पूजाकी विधि हम अब जानी ॥ नैनमूंदि करजोरि वोलायो। भावभक्ति सों भोग लगायो ॥ बड़ेदेव गिरिराज सबनके। भोजन करहु कृपाकरि तिनके॥सहसभुजाधरि दरशनदीन्हो जैजै ध्वनि नभ देवन कीन्हो ॥ भोजन करत सबनके आगे। सुर नर मुनि सब देखन लागे॥ देखि थकित ब्रजकी सब वाला। देखत नंद गोप सब ग्वाला ॥ सूरश्याम जनके सुखदाई। सहसभुजा धरि भोजन खाई॥२७॥जेंवत देव नंद सुख पायो॥कान्ह देवता प्रगट देखायो॥ब्रजवासी गिरि जेंवत देख्यो॥जीवन जन्म सफल करि लेख्यो॥ललिता कहति राधिका आगे। जेंवत कान्ह नंदकर लागे॥मैं जानी हरिकी चतुराई। सुरपति मेटि आपु वलिखाई ॥उत जेंवत इत वातन लागे। कहत श्याम गिरि जेंवन लागे ॥ मैं जो वात कही सो आई। सहसभुजा धरि भोजन खाई ॥ और देव इनकी सरि नाहीं ।इत बोधत उत भोजन खाहीं ॥ सूरदास प्रभुकी यह लीला। सदा करत ब्रजमें यह क्रीला ॥ २८ ॥ यह छवि देखि राधिका भूली। वात कहत सखियनसों फूली ॥ आपुहि देव आपुही पुजेरी। आपुहि भोजन जेंवत ढेरी ॥ अतिआतुर जेंवतहैं भारी। एक वृषभानु विलोवन हारी ॥ नाम ताहि बदरोला नारी। ताकी वलि लई भुजा पसारी ॥ उत गिरि संग खात बलिसारी। वदरौलाकी बलि रुचिकारी॥ सूरदास प्रभु जेवनहारी। गिरि वपुरेसों कौन अधिकारी॥२९॥इतहि श्याम गोपन सँग ठाढ़े। भोजन करत अधिक रुचिवाढ़े॥ गिरितन सोभा श्याम विराजै। श्यामहि छवि गिरिवरकी छाजै ॥ गिरिवर उर पीतांवरडारे । मोतिनकी उरमाला भारे ॥ अँग भूषण श्रवणन मणिकुंडल। मोरमुकुट शिर अलकहै झुंडल॥ छवि निरखत सब घोषकुमारी। गोवर्धन छवि श्याम अनुहारी ॥ सूरश्याम लीला रसनायक। जन्म जन्म भक्तन सुखदायक॥३०॥ भोजन करत देवभए परसन। माँगहु नंद तुम्हारे जो मन ॥ भलीकरी तुम मेरी पूजा। सेवक तुमते और न दूजा ॥ जोइमांगौ सोइ फल मैं देहौं। जहां भावताही पैहौं, मैंसेवावश भयो तुम्हारे। जोइ फल चाहो लेहु सवारे ॥ यह सुनि चकृतभए नर नारी। भोजन कियो प्रथमही भारी ॥

कहतहै । ऐसे देव कहां त्रिभुवनहै ॥ कान्ह कह्यो कछु माँगहु इनसों । गिरिदेवता देत परसनसों ॥ सूरश्याम देवता आपहै । ब्रजजनके त्रयताप हरतहै ॥ ३१ ॥ नंदकह्यो कहा मांगौं स्वामी । तुम जानत सब अंतर्यामी ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि तुमदीनो । कृपासिंधु तुमरोई कीनो ॥ कुशल रहैं बलराम कन्हाई । हम इहि कारण करैं पुजाई ॥ देवनकी मणि गिरिवर तुमहौ । जहँ तहँ व्यापक पूरन समहो ॥ तुम हरता तुम करता सबके । देखि थकित नर नारि नगरके ॥ बडोदेवता श्याम बतायो । प्रगटभए सब भोजन खायो ॥ सूरश्यामके जोइ मन आवै । सोइ सोइ नानारूप बनावै ॥ ३२ ॥ मांगिलेहु कछु और पदारथ । सेवा सबै भई अबस्वारथ ॥ फलमांग्यो बलराम कन्हाई । येद्वै रहैं कुशल सुखदाई । इनहीते हम तुमको जान्यो । तब तुम गिरि गोवर्धन मान्यो ॥ करत अवृथा इंद्र पुजाई । मेरी दीनी है ठकुराई ॥ कान्ह तुम्हारो मोको जाने । इनको रैहो तुम सब माने ॥ इंद्र आइ चढिहै ब्रज ऊपर । यह कहिहै नाहिं राखौंभूपर ॥ नेक कछू नहिं वासों ह्वैहै । श्याम उठाइ मोहिं करलेहै ॥ सूरश्याम गिरिवरकी बानी । ब्रजजन सुनत सत्य करि मानी ॥ ३३ ॥ कौतुक देखत सुर नर भूले । रोम रोम गद गद सब फूले ॥ सुर विमान सुमनन बरषाए । जयध्वनि शब्द देव नर गाए ॥ देव कह्यो ब्रजवासिनसों तब । पूजा भली करी मेरी सब ॥ जाहु सबै मिलि सदन करौ सुख । श्यामकह्यो गिरि गोवर्धन मुख । ग्वाल करत स्तुति सब ठाढे । भाव प्रेम सबके चित बाढे ॥ भवन जाहु कहि श्रीमुखबानी । भोजनशेष श्याम कर आनी ॥ बांटि प्रसाद सबनिको दीन्हो ब्रजनारी नर आनँद कीन्हो ॥ सूरश्याम गोपन सुखकारी । चलौ कह्यो ब्रजको नर नारी ॥ ३४ ॥ दोउ करजोरि भए सब ठाढे । धन्य धन्य भक्तनके चाढे तुम भोक्ता तुमही प्रभुदाता । अखिल ब्रह्मांड लोकके ज्ञाता । तुमको भोजन कौन करावै । हितके।वश तुमको कोउ पावै ॥ तुम लायक हमरे कछु नाहीं । सुनत श्याम ठाढे मुसकाहीं॥ललितासखी देवता चीन्हो चंद्रावली राधिकहि दीन्हो ॥ देव बड़ो इह कुँवर कन्हाई । कृपाजानि हरि ताहि चिन्हाई ॥ सूरश्याम कहि प्रगट सुनाई । भये तृप्त भोजन दिवराई ॥ ३५ ॥ परसत चरण चलत सब घरको । जात चले सब घोष शहरको॥ सुख समेत मग जात चले सब । दूनी भीर भई तबते अब ॥ कोउ आगें कोउ पाछे आवत।मारगमें कहुँ ठौर न पावत॥प्रथमहि गयो डगर तिन पायो।पाछेके लोगन पछितायो घरपहुँचे अबहीं नहीं कोई।मारगमैं अटके सब लोई ॥ डेरो परचो कोस चौरासी। इतने लोग जुरे ब्रजवासी ॥ पैंडे चलन नहीं कोउ पावत। कितक दूरि ब्रज पूँछत आवत ॥ सूरश्याम गुण सागर नागर उत्तम लीला करी उजागर ॥ ३६ ॥ कोउ पहुँचे कोउ मारग माहीं।बहुत गए घर बहुतक जाहीं ॥ काहूके मन कछु दुख नाहीं । अरस परस हँसि हँसि लपटाहीं ॥ आनँद करत सबै ब्रज आए । निकट आनि लोगन नियराये ॥ भीरभई बहु खोरि जहाँ तहँ । जैसे नदी मिलत सागर महँ ॥ नर नारी सरिता सब आगर । सिंधु मनौं इह घोष उजागर ॥ मथनहार हरि रतनकुमारी।चंद्रवदन राधा सुकुमारी ॥ सूरश्याम आए नँदशाला । पहुँचे घरनि आइ नरबाला ॥ ३७ ॥ बड़ो देवता कान्ह पुजायो । ग्वाल गोप हँसि अंग मिलायो ॥ कान्ह धन्य धनि यशुमति जायो । ब्रज धनि धनि तुमते कहवायो ॥ धन्य नंद जिन तुम सुत पायो । धनि धनि देव प्रगट दरशायो॥पूजामेटि इंद्र गिरि पूज्यो । परसन हमहि सदा प्रभु हूज्यो॥कहा इंद्र बपुरा केहि लायक । गिरि देवता सबहिके नायक॥ सूरदास प्रभुके गुण ऐसे।भक्तन वश दुष्टनको नैसे॥३८॥हरि सबके मन यह उपजाई । सुरपति निंदत गिरिहि बड़ाई ॥ वर्ष वर्ष प्रति इंद्र पुजाई । कबहूं परसन भयो न आई ॥ पूजत रह्यौ अविर्था सुरपति ।

सब मुख यह वाणी पर निंदति ॥ बड़ो देव यह गिरि गोवर्धन । इहै कहत गोकुल ब्रज पुरजन ॥ तहाँ दूत इक इंद्र पठायो। ब्रजकौतुक देखन वह आयो॥घर घर कहत बात नर नारी । दूत सुन्यो सो श्रवण पसारी ॥ मानत गिरि निंदत सुरपतिको । हँसत दूत ब्रजजन गई मतिको ॥ सूरसुनत इतनी रिस पाये । उठि तुरतहि सुरलोकहि आये ॥ ३९ ॥ ब्रह्मदई जाको ठकुराई । त्रिदशकोटि देवनके राई ॥ गिरिपूज्यो तिनिही बिसराइ । जाति बुद्धि इनके मनआइ ॥ शिव विरंचि जाको कहैं लायक । जाके मैं मघवा से पायक ॥ यह कहतहि आए सुरलोकहि । पहुँचे जाइ इंद्रके ओकहि ॥ दूतन ऐसिय जाइ सुनाई । बैठे जहाँ सुरनके राई ॥ करजोरे सन्मुख भे आई । पूछि उठे ब्रजकी कुशलाई ॥ दूतन ब्रजकी बात सुनाई । तुमहि मेटि पूज्यो गिरिजाई ॥ तुमहि निदरि गिरिवरहि बड़ाई । इह सुनतहि रहे देह कँपाई ॥ सूरश्याम इह बुद्धि उपाई । ज्यों जानै ब्रजमें यदुराई ॥ ४० ॥ ग्वालन मोसों करी ढिठाई । मोको अपनी जाति देखाई ॥ तेतिसकोटि सुरनको राई ॥ तिहूं भुवन भरि चलत बड़ाई ॥ साहवसों जो करै धुताई । ताको नाहिं कोऊ पतिआई॥ इनि अपनी परतीति घटाई । मेरे बैर बांचिहैं भाई ॥ नईरीति इन अबहिं चलाई । काहू इनहि दियो बहिकाई ॥ ऐसी मति इन अबकै पाई । काके शरन रहैंगे जाई ॥ इन दीनो मोको बिसराई । नंद आपनी प्रकृति गँवाई ॥ जानी बात बुढ़ाई आई । अहिर जाति कोई न पत्याई ॥ मात पिता नहिं मानै भाई । जानि बूझि इन करी धिगाई॥ मेरी बलि पर्वतहि चढ़ाई । गिरिवर सहितै ब्रजै बहाई ॥ सूरदास सुरपति रिस पाई । कीडीतनु ज्यों पांख उपाई ॥ ४१ ॥ मोको निंदि पर्वतहि वंदत । चारौ कपट पंछि ज्यों फंदत ॥ मरन काल ऐसी बुधि होई । कछू करत कछुवै वह जोई ॥ खेलत खात रहे ब्रजभीतर । नान्हे लोग तनक धन ईतर ॥ समय समय बरषौं प्रतिपालौं । इनकी बुद्धि इनको अब घालौं ॥ मेरे मारत कौन राखिहै । अहिरनके मन इहै काषिहै॥जो मन जाके सोइ फल पावे । नीव लगाइ आंब क्यों खावै ॥ विषके वृक्ष विषहि फल फलिहै । तामे दाख कहौ क्यों मिलिहै ॥ अग्निवर्त देखै करनावै । कहा करै तेहि अग्नि जरावै ॥ सूरदास इह सब कोउ जानै । जो जाको सो ताको मानै ॥ ४२ ॥ पर्वत पहिले खोदि बहाऊं । ब्रजजन मारि पताल पठाऊं ॥ फूलि फूलि जेहि पूजा कीन्हों । नेक न राखौं ताको चीन्हों ॥ नंद गोप नैनन यह देखैं । बड़े देवताको सुख पेषैं ॥ निंदत मोहिं करी गिरि पूजा । जासों कहत और नहिं दूजा ॥ गर्वकरत गोवर्धन गिरिको । पर्वत मांह आइ वह किरको ॥ डोंगरिको बल उनहिं बताऊं । ता पाछे ब्रज खोदि बहाऊं ॥राखौंनहीं काहु सब मारौं। ब्रजगोकुलको खोजि निवारौं॥को जानै कह गिरि कह गोकुल। भुवपर नहिं राखौं उनको कुल ॥ सूरदास इह इंद्र प्रतिज्ञा । ब्रजवासिन सब करी अवज्ञा ॥ ४३ ॥ सुरपति क्रोध कियो अतिभारी । फरकत अधर नैन रतनारी ॥ भृतनि बोलाये दैदै गारी । मेघनि ल्यावो तुरत हँकारी ॥ एक कहत धाए सौचारी । अति डरपे तनुकी सुधि हारी॥ मेघवर्त जलवर्त बोलावहु । सैन साजि तुरतहि लै आवहु ॥ कापर क्रोध कियो अमरापति । महाप्रलय जिय जानि डरे अति ॥ मेघनसों यह बात सुनाई । तुरत चलौ बोले सुरराई॥सैन सहित बोलाए तुमको॥रिस करि तुरत पठाए हमको ॥ वेगि चलौ कछु विलम न लावहु । हमहि कह्यो अबहीं लै आवहु ॥ मेघवर्त सब सैन्य बोलाए । महाप्रलयके जे सब आए ॥ कछु हर्ष कछु मनहि स काने । प्रलय आहि की हमहिं रिसाने ॥ चूकपरी हमते कछु नाहीं । यह कहि कहि सब आतुर जाहीं ॥ मेघवर्त्त जलवर्त वारिवर्त । अनिलवर्त्त वज्रवर्त्त प्रवर्त्त ॥ बोलत चले आपनी बानी ।

प्रभु सन्मुख सब पहुँचे आनी ॥ गार्जि गार्जि घहराताहि आए । देव देव कहि माथ नवाए॥ सूरदास डरपत सब जलधर । हमपर क्रोध किधों काहू पर ॥ ४४ ॥ चितवतही सब गए झुराई । सकुचि कह्यो कापर रिसपाई ॥ क्षमाकरहु आयसु हमपावैं । जापर कहौ ताहिपर धावैं ॥ सैनसहित प्रभु हमहि बोलाए । आज्ञा सुनत तुरत उठिधाए॥ऐसो कवन जाहि प्रभु कोपे।जीवनाम सब तुम्ह रेइ रोपे ॥ सूर कही यह मेघन वानी । यह सुनि सुनि रिस कछुक भुजानी ॥ ४५ ॥ मेघनिसों बोले सुरराई । अहिरन मोसों करी ढिठाई ॥ मेरी दिन्ही करत बडाई । जानिबूझि मोहिं दियो भुलाई ॥ सदा करत मेरी सेवकाई । अब सेवत पर्वत कहँ जाई ॥ इहीकाज तुमको हँकराये । भलीकरी सैना लियेआए ॥ गाइ गोप ब्रज सबै वहावहु । पहिले पर्वत दोदि ढहावहु ॥ जब यह सुनी इंद्रकी बानी । मेघन मन तब धीरज आनी ॥ सूरदास यह सुनि वनतमके । कापर क्रोध करत प्रभु जमके ॥ ४६ ॥ रिसलायक तापर रिसकीजे । यहिरिसते प्रभु देही छीजे ॥ तुम प्रभु हमसे सेवक जाके । ऐसो कवन रहै तुम ताके ॥ छिनहींमें ब्रज धोइ बहावें । डूंगरको कहिं नाउँ नपावैं ॥ आपु क्षमा करिये देवराई । हम करिहैं उनकी पहुनाई ॥ यह सुनिकै हरपित चित कीन्हों । आदर सहित पान कर दिन्हो ॥ प्रथमहि देहु पहार वहाई । मेरी बलि वोही सब खाई ॥ सूर इंद्र मेघनि समझावत । हरपि चले घन आदर पावत ॥ ४७ ॥ आयसुपाइ तुरतही धाये । अपनी सैना सबनि बोलाये ॥ कह्यो सबनि ब्रज ऊपर धावहु । घटाघोर करि गगन छपावहु ॥ मेघ वर्त जलवर्तक आगे । औरे मेघ सब पाछे लागे ॥ गरजि उठे ब्रज ऊपर जाइ । शब्दकियो आघात सुनाइ ॥ ब्रजके लोग डरे अतिभारी । आजु घटा देखतिहै कारी ॥ देखत देखत अति अधिकायो नेकहि में रविगगन छपायो ॥ ऐसे मेघ कबहुँ नहिं देखे । अतिकारे काजर अवरेखे ॥ सुनहुसूर एमेघ डरावन । ब्रजवासी सब कहत भयावन ॥ ४८ ॥ गराजि गराजि ब्रज घेरत आवै । तरपि तरपि चपला चमकावे ॥ नर नारी सब देखतठाढेयि वादर प्रलयके काढे॥दरदरात घहरात प्रबल अति।गोपी ग्वाल भए औरै गति॥कहा होन अवही यह चाहत । जहाँ तहाँ लोग इहै अवगाहत ॥ खनभीतर खन बाहिर आवत।गगन देखि धीरज विसरावत॥सूरश्याम यह करी पुजाई।तातेसुरपति चल्यो रिसाई ॥४९॥ फिरत लोग जहँतहँवितताने । कोहै अपने कौन विराने ॥ ग्वाल गए जे धेनु चरावन।तिनहि परयो वनमांझ परावन॥गाइ वच्छ कोऊ नसँभारै।जियकी सबको परी खँभारै॥भागे आवत ब्रजही तनको । विपति परी अति वन ग्वालनको ॥ अंध धुंध मग कहूं न सूझे । ब्रजभीतर ब्रजहीको बूझे ॥ जैसे तैसे ब्रज पहिचानत । अटक रही अटकर करि आनत ॥खोजत फिरैं आपने घरको । कहा भयो भैया घोप शहरको ॥ रोवत डोलैं घरहि नपावैं । द्वार द्वार घरको विसरावैं । सूरश्याम सुरपति विसरायो।गिरिके पूजे यह फल पायो॥५०॥यमुनाजलहि गई जो नारी।डारिचलीं शिर गागरि भारी ॥ देखो मैं बालक कत छांड्यो । एक कहत अंगन दधि मांड्यो॥एक कहत मारग नहिं पावति । एक सामुहे बोलि बतावति ॥ ब्रजवासी सब अति अकुलाने । कालिहि पूज्यो फल्यो विहाने।कहां रहे अब कुँवरकन्हाइ।गिरि गोवर्धन लेहिं बोलाई।।जिवन सहसभुजा धरिआवै॥अब द्वैभुज हमको देखरावै॥यह देवता खातही लोके।पाछे पुनि तुम कौन कहोके॥सूरश्याम सपनों प्रग टायो । घरके देव सबनि विसरायो ॥ ५१ ॥ गर्जत घन अतिही घहरावत । कान्ह सुनत आनंद वढ़ावत ॥ कौतुक देखत ब्रजलोगनके । निकट रहत संगहि सँग जनके ॥ यक सैंतत घरके सब बासन । लीने फिरत घरहिके पासन ॥ येक कहत जियकी नाहिं आसा । देखत सबै दुष्टके नाशा॥

सूरश्याम जानत एगासा। कहां पाणि कहां करै हुतासा ॥५२॥ मेघवर्त मेघनि समुझावत। बार बार गिरितनहि बतावत॥ पर्वत पर बरषहु तुम जाई। इहै कही हमको सुरराई॥ ऐसे देहु पहार बहाइ। नाउ रहै नहिं ठौर जनाइ॥ सुरपतिकी बलि ये सब खाई। ताके फल पावै गिरि राई। जेंवत कालि अधिक रुचिपाई। सलिल देहु जेहि तृषा बुझाई॥ दिनाचारि रहते जग ऊपर॥ अब न रहन पावहु या भूपर॥ सूर मेघ सुरपतिहि पठाये। ब्रजके लोगन तुमहि वहाये॥५३॥ वर्षतहैं घन गिरिके ऊपर। देखि देखि ब्रजलोग करत डर॥ ब्रजवासी सब कान्ह वतावत। महा प्रलय जल गिरिहि ढहावत॥ झरहरात झारत झर लावत। गिरिहि धोइ ब्रज ऊपर आवत॥ विकल देखि गोकुलके वासी। दरशदियो सबको अविनाशी॥ अविनाशीको दरशन पाये। तब सब मन परतीति बढाये॥ नंद यशोदा सुतहित जानै। और सबै सुख स्तुतिगानै॥ वर्षत गिरि झरपत ब्रज ऊपरासो जल जँह तहँ पूरन भूपर॥ सूरदास प्रभु राखि लेहु अब।जैसे राखे अघा वदन तब५४॥ राखिलेहु अब नंदकुमार। गोसुत गाइ फिरत विकरार॥ वर्षतबूंद लगै जनु सायक। राखि लेहु अब गोकुलनायक॥ तुमविनु कौन सहाय हमारे। नंदसुवन अब शरण तुम्हारे॥ शरण शरण जब ब्रजजन बोले। धीरवचन देदै दुख मोले॥यह बोले हँसि कृष्ण मुरारी। गिरि कर धर राखौं नर नारी॥ सूरश्याम चितए गिरिवर तन। विकल देखिकै गोसुत ब्रजजन॥५५॥ गोवर्धन लीन्हो उचकाई देखिविकल नर नारि कन्हाई॥ अपने सुख ब्रजजन विततायें। बूंद कयुक ब्रजपर वरषाये॥ वै डरपत आपुन हरषत मन। राखेरहैं जहाँ तहाँ ब्रजजन॥ घरिक देखि मनही सुख दीन्हों। वामभुजा धरि गिरिवर लीन्हों॥ सूरश्याम गिरिकर गहि राख्यो। धीर धीर सबसों कहि भाख्यो ॥५६॥ श्यामधरयो गिरि गोवर्धन कर। राखिलिए ब्रजके नारी नर॥ गोकुल ब्रजराख्यो सब घर घर। आनँद करत सबै ताही तर॥ वरषत मुसलधार मघववावर। बूंद नआवत नेकहु भूपर॥ धार अखंडित वरपत झरझर॥ कहत मेघ धौं वहु ब्रज गिरिवर॥ सलिल प्रलयको ढूंढत तरतर। बाजत शब्द नीरको धरधर।वै जानत जलजातहै दरदर।वीचहि जरत जात जल अंबर॥ सूरदास प्रभु कान्ह गर्वहर। वरषत कहत गयो गिरिको जर॥५७॥ बोलि लिए सब ग्वाल कन्हाई। टेकहु गिरि गोवर्धनराई॥ आज सबै मिलि होहु सहाई। हँसतदेखि बलराम कन्हाई॥ लकुट लिए कर टेकत जाई। कहत परस्पर लेहु उठाई॥ वरषत इंद्र महाझर लाई। अतिजल देखि सखा डरपाई॥ नँदनंदन विन को गिरिधारै। ऐसे बल विन कौन सँभारै॥ नखते गिरै कौन गिरि राखै वारवार कहि कहि यह भाषै॥ सूरश्याम गिरिवर कर लीन्हों। वर्षत मेघ चकृत मन कीन्हों ॥५८॥ वात कहत आपुसमें वादर। इंद्र पठाए करि हम आदर॥ अब देखत कछु होत निरादर। वरषि वरषि घन भए मन कादर॥ खीजत कहत मेघ सबहिनसों। वरपि कहा कीन्हो तबहीसों॥ महाप्रलयको जल कहँ राखत। डारिदेहु ब्रजपर कहा ताकत॥ क्रोध सहित फिरि वर्षन लागे। ब्रजवासी आनँद अनुरागे॥ ग्वाल कहत तुम धन्य कन्हैया। वामभुजा गिरि लिए उठैया॥ सूरश्याम तुम सरि कोउ नाहीं। वर्षत घन गिरि देखि खिसाहीं॥५९॥ प्रलयमेघ आए लैवाने। आपुसहीमें सबै रिसाने॥सातदिवस जल वरषि बुढाने।चकृत भए तन सुरति भुलाने॥फिरि देखत जल कहां टराने।झुरिझुरि सबवादर विततानै॥बूंदनहीं घन नैक वचाने।जलद अपु नको धृग करि माने॥फिरि सब चले अतिहि विकलाने।मनमें हार मानि सकुचाने॥ सूरश्याम गोवर्धन राने मूरख सुरपति अजहुँ नजाने॥६०॥ मेघ चले मुख फेरि अमरपुर।करी पुकार जाइ आगे सुर॥

श्रमते टूटि गये सबके उर। जलबिनु भए सबै घन धूंधर। की मारौ कै शरण उबारौ। हममें कहा रह्यो अवगारौ। जहँ तहँ बादर रोवत बोले। श्रम अपने प्रभु आगे खोले॥ सात दिवस नहिं मिटी लगार। बरष्यो सलिल अखंडित धार॥ महाप्रलय जल नेक नउबरचो। ब्रजवासी नीके अब नि दरचो॥वैसोइगिरि वैसाइ ब्रजवासी। नेक बूंद नहिं धरणि प्रगासी॥सूर सुनत सुरपती उदासी।देखहुये आए जलरासी॥६१॥चकृत भयो ब्रज चाह सुनाई। पुनि पुनि बूझत मेघ बुलाई॥ कहां गयो जल प्रलयकालको। कहा कहौं सब तन बेहालको॥ कहा करैं अपनों बल कीन्हौं। व्याकुल रोइ रोइ तब दीन्हौं॥ दंड एक बरषै मनलाइ। पूरण होत गगनलौं आइ॥ पर्वत मेंहै कोउ अवतार। सुरप ति मन यह करत विचार॥ सूर इंद्र सुरगण हँकराये। आज्ञा सुनत तुरत उठि आये ॥ ६२ ॥ सुरपति आगे भए सब ठाढे। चिंता सबहिनके मन बाढे॥ कौन काज सुरराज बोलाए। सकुच सहित पूंछतसे आए॥ कहा कहौं कछु कहत न आवै। मघवनकी गति सुरन बतावै॥ ब्रजवासिन मोको बिसरायो। भोजन लै सब गिरिहि चढायो॥ मोको मेटि पर्वतहि थाप्यो। तब मैं थरथराय रिस कांप्यो॥ सूरदास यह सुरन सुनाई। याकारज तुमलिए बोलाई॥६३॥ सुरन कही सुरपतिके आगे। सन्मुख कहत सकुच हम लागे॥ सकुचत कत सो बात सुनावहु। नीके करि मोको समुझावहु॥ नीके भांति सुनौ सुरराई। ब्रजमें ब्रह्म प्रगट भए आई॥ तुम जानत जब धरणि पुकारी। पापहि पाप भई अति भारी॥ पौढे सेज शेष संग श्री प्यारी। ते ब्रज भीतरहैं वपुधारी॥ ब्रह्मकथा कहि आदि पसारी। तिनसों हम कीनी अधिकारी॥ सूरदास प्रभु गिरि कर धारी। यह सुनि इंद्र डरचो मनभारी॥ ६४॥ यह मोको तबही न सुनाई। मैं बहुतै कीन्ही अधमाई॥ पूरन ब्रह्म रहे ब्रज आई। काहूतौ मोंहि सुधि न दिवाई॥ सुरनि कही नहिं करी भलाई। आजु कह्यो जब महत गवाई॥ यह सुनि अमर गए सरमाई।सुनहु राज हमजानि नपाई॥ अब सुनिए आपुन मनला ई। ब्रजहि चलो नहिं और उपाई॥ वैहैं कृपासिंधु करुणाकर। क्षमा करहिंगे श्रीसुंदरवर॥ और कछू मनमें जिनि आनहु। हम जो कहैं सत्य करि मानहु॥ सूर सुरन यह बात सुनाई। सुरपति शरण चले अकुलाई॥ ६५॥ जब जान्यो ब्रज देव मुरारी। उतरि गई तब गर्व खुमारी॥व्याकुल भयो डरचो जियभारी।अनजानत कीन्ही अधिकारी॥बैठि रहे ते नहिं बनि आवै।ऐसो को जो मोंहि बचावै॥बार बार यह कहि पछितावै।जाउ शरण बल मनहि धरावै॥ जाइ परौ चरणन शिरधारो। की मारैं की मोहि उधारों॥अमरन कह्यो करो असवारी।ऐरावतको लेहु हँकारी॥सूरशरण सुरपति चले धाइ।लिये अमरगणसंग लगाइ॥६६॥ करत विचार चल्यो सन्मुख ब्रज।लटपटात पग धरणि धरत गज॥ कोटि इंद्र जाके रोमनि रज। ब्रज अवतार लियो माया तज॥उतरि गगन पुहुमी पर आए। श्वेतबरन ऐरापति लाए॥ ब्रज बासी सब देखन पाए। चकृत भए मन सबनि भ्रमाए॥ कहत सुनी लोगन मुख बाता। येइहैं सुरपति सुरज्ञाता॥ देखि सैन ब्रजलोग सकात। यह आयो कीन्हे कछु घात॥सूरश्यामको जाइ सुनाये।सुरपति सैनसाजि ब्रजआए॥६७॥ निकट जानि त्यागे बाहनको। सकुचत चले कृष्ण सन्मुखको। कछु आनंद कछुक मनमें दुख।हर्ष विषाद तक्यो हरि सन्मुख॥ परचो धाइ चरणन शिरनाइ।कृपासिंधु राखहु शरणाइ॥किए अपराध बहुत बिन जाने। प्रभु उठाइ लिए कछु मुसकाने॥श्रीमुख कह्यो उठहु सुरराजा।बदन उठाइ सकत नहिं लाजा॥येदिन वृथा गए बिनकाजा। तुमको नहिं जान्यो ब्रजराजा॥सूरश्याम लीन्हे उरलाइ।अशरन शरन निगम यह गाइ॥ ६८॥ हँसि हँसि कहत कृष्ण मुखबानी। हम नाहिन रिस तुमपर आनी॥ तुम कत

अति शंका जिय जानी। भली करी ब्रजराख्यो पानी ॥ यह सुनि इंद्र अतिहि सकुचान्यो। ब्रज अवतार नहीं मैं जान्यो ॥ राखि राखि त्रिभुवनके नाथा। नहिं मोते कोउ अवर अनाथा ॥ फिरि फिरि चरण धरत लै माथा। क्षमाकरहु राखहु मोहिं साथा ॥ रवि आगे खद्योत प्रकाशा। मणि आगे ज्यों दीपक नाशा ॥ कोटि इंद्र रचि कोटि विनाशा। मोहिं गरीबकी केतिक आशा ॥ दीन वचन सुनि भवके वासा। क्षमाभयो जल परे हुतासा ॥ अमरापति चरणन तर लोटत। रही नहीं मनमें कहुँ खोटत ॥ उभय भुजा करि लियो उठाइ। सुरपतिं शीश अभयकरनाइ ॥ हँसिदीन्ही प्रभु लोक वड़ाई। श्रीमुख कह्यो करौ सुखजाई ॥ धन्य धन्य जनके सुखदाई। जय जय ध्वनि देवन सुखगाई ॥ शिव विरंचि चतुरानन नारद। गौरी सुत दोऊ सँग शारद ॥ रवि शशि वरुण अनल यमराजा। आजु भए सव पूरन काजा ॥ अशरन शरन सदा तुव वानो। यह लीला प्रभु तुमही जानो ॥ मातासों सुत करै ढिठाई। माता फिरि ताको सुखदाई ॥ ज्यों धरनी हल खोदि विनाशै। सन्मुख सतगुण फलहि प्रकाशै ॥ करकुठार लै तरुहि गिरावै। वह काटै वह छाया छावै ॥ जैसे दशन जीभ दलिजाइ। तव कासों सो करै रिसाइ ॥ धनि ब्रज धनि गोकुल वृंदावन। धनि यमुना धनि लता कुंज घन ॥ धन्य नंद धनि जननि यशोदा। बालकेलि हरिके रस मोदा ॥ स्तुति सुनि मनहर्ष बढ़ायो। साधु साधु कहि सुरनि सुनायो ॥ तुमहि जाइ जव मोहि जगायो। तुम्हरेहि काज देह धरिआयो ॥ तुमैराख असुरन संहारौं। तनु धरि धरणिभार उतारौं ॥ आवत जात वहुत श्रम पायो। जाहु भवन करि कृपा पठायो ॥ कर शिर धरि धरि चले देवगन। पहुँचे अमरलोक आनँद मन ॥ यह लीला सुर घरनि सुनाई। गाइ उठी सुरनारि बधाई ॥ अमरलोक आनंद भए सव। हर्ष सहित आए सुरपति जव ॥ सूरदास सुरपति अति हरष्यो। जैजैध्वनि सुमननि ब्रज वरष्यो ॥ ६९ ॥ हरि करते गिरिराज उतारयो। सात दिवस जल प्रलय सँभारयो ॥ ग्वाल कहत कैसे गिरिधारयो। कैसे सुरपति गर्व निवारयो ॥ वज्रायुध जल वर्षि सिराने। परयो चरण तव प्रभुकरि जाने ॥ हम सँग सदा रहतहैं ऐसे। यह करतूति करत तुम कैसे ॥ हम हिलि मिलि तुम गाइ चरावत। नंद यशोदा सुवन कहावत ॥ देखिरहीं सव घोप कुमारी। कोटि काम छविपर वलिहारी ॥ कर जोरत रवि गोद पसारै। गिरिवरपति प्रभु होहिं हमारै ॥ ऐसो गिरि गोवर्द्धनभारी। कव लीन्हों कव धरयो उतारी ॥ तनक तनक भुज तनक कन्हाई। यह कहि उठी यशोदा माई ॥ कैसे पर्वत लियो उचकाई। भुज चापति चूमति वलिजाई ॥ वारंवार निरखि पछिताई। हँसत देखि ठाढे वल भाई ॥ इनकी महिमा काहु न पाई। गिरिवर धरयो इहै वहुताई ॥ एक एक रोम कोटि ब्रह्मंडा। रवि शशि धरणीधर नव खंडा ॥ यहि ब्रज जन्म लियो कै वारा। जहाँ तहाँ जल थल अवतारा ॥ प्रगट होत भक्तहिके काजा। ब्रह्म कीट सम सवके राजा ॥ जहँ जहँ गाढ परै तहँ आवै। गरुड छांडि तव सन्मुख धावै ॥ ब्रजही में नित करत विहार। सहज स्वभाव भक्त हितकार ॥ यह लीला इनको अति भावै। देह धरत पुनि पुनि प्रगटावै ॥ नेक तजत नहिं ब्रज नर नारी। इनके सुख गिरि धरत मुरारी ॥ गर्ववंत सुरपति चढि आयो। वाम करज गिरि टेकि दिखायो ॥ ऐसेहैं प्रभु गर्वप्रहारी। मुख चूमति यशुमति महतारी ॥ यह लीला जो नितप्रति गावैं। आपुन सिखै औरनि सिखरावैं ॥ सुनै सीख पढि मनमें राखै। प्रेम सहित मुखते पुनि भाखै। भक्ति मुक्तिकी केतिक आसा। सदा रहत हरि तिनके पासा ॥ चतुरानन जाको रस मानै। शेषसहस मुख जाहि वखानै ॥ आदि अंत कोऊ नाहिं पावै। जाको निगम नेति नित गावै ॥ सूरदास

प्रभु सबके स्वामी । शरन राखि मोहिं अंतर्यामी ॥७०॥९९९॥ सोरठ ॥ तेरे भुजन बहुत बल होइ कन्हैया। बार बार भुज देखि तनकसे कहति यशोदा मैया॥श्याम कहत नाहिं भुजा पिरानी ग्वालन कियो सहैया॥लकुटन टेकि सबन मिलिराख्यो अरु बाबा नँदरैया॥मोसों क्यों रहतो गोवर्धन अति इ बडो बहभारी॥ सूरश्याम यह कहि परबोध्यो देखि चकृत महतारी॥१०००॥देवगंधार ॥ सबै मिलि पूजौ हरि की बहियाँ॥जो नाहिं लेत उठाइ गोवर्धन को बांचत ब्रज महियाँ। कोमल कर गिरि धरयो घोष पर शरद कमलकी छहियाँ॥सूरदास प्रभु तुमरे दरशको आनँद होत ब्रज महियाँ ॥१॥ अध्याय ॥ २८ ॥ अथ नंदको वरुण लेगये ॥ बिलावल॥ उत्तम शुक्क एकादशि आई । भक्ति मुक्ति दायक सुखदाई निराहार जलपान विवर्जित । पाप नरहत धर्मफल अर्चित ॥ नारायण हित ध्यान लगायो । और नहीं कहुँ मन बिरमायो ॥ बासर ध्यान करत सब बीत्यो । निशि जागरण करन मन चीत्यो ॥ पाटंबर दिवि मंदिर छायो । शालिग्राम तहां बैठायो ॥ धूप दीप नैवेद्य चढ़ायो । पुहुप मंडली तापर छायो ॥ प्रेम सहित करि भोग लगायो । आरतिकरि तब माथो नायो ॥ सादर सहित करी नंद पूजा । तुम तजि देव और नाहिं दूजा। तृतिय पहर जब रैनि गमाई । नंदमहरिसों कही बुझाई॥ दंड एक द्वादशी सकारे । पारनकी विधि करो सवारे । यह कहि नंदगए यमुनातट । लै धोती विधि कीनो कर्म पट ॥ झारी भरि यमुना जल लीनो । बाहिर जाइ देह कृत कीनो ॥ लै माटी कर चरन पखारी । अति उत्तम सो करी मुखारी ॥ अँचवन लै पैठे नंद पानी । जल बाजत दूतन तब जानी ॥ वरुन पास लाये ततकालहि । नंदहि बाँधि लै गये पतालहि॥जान्यो वरुण कृष्णके तातहि मनहीं मन हर्षित इहि बातहि ॥ भीतर लै राखे नंद नीके । अंतरपुर महलन रानीके॥ रानी सबन नंदको देख्यो । धन्य जन्म अपनो करि लेख्यो॥जिनके सुत त्रैलोक गुसांई। सुर नर मुनि सबके हैं साईं ॥ वरुण कही मन हर्ष बढ़ाए । बड़ीबात भई नंदहि ल्याए ॥ अंतर्यामी जानत बाता । अब आवत हैं हैं जगत्राता ॥ जाको ब्रह्मा अंत न पायो । ताको मुनि जन ध्यान लगायो ॥ जाको नेति निगम गावतहैं । ताको मुनिवर जन ध्यावतहैं॥जाको ध्यान धरैं शिव योगी । ताको सेवत सुरपति भोगी ॥ सो प्रभुहैं जल थल सब व्यापक। जोहैं कंस दर्पको दापक ॥ गुण अतीत अविगत अविनाशी । सो ब्रजमें खेलत सुखरासी ॥ धनि मेरे भृत नंदहि ल्याए । करुणामय अब आवत धाए ॥ महरि कही तब सब ग्वालिनको । बड़ी बार भई नंदमहरको ॥ गए ग्वाल तब नंद बोलावन । देख्यो जाइ यमुन जल पावन॥जहँ तहँ ग्वाल ढूँढि घर आए॥धोती अरुझारी वे ल्याए॥ मन मन शोच करैं अकुलाए॥कहि यशुदासों नंद न पाए ॥ धोती झारी तटमें पाई॥सुनत महरि मुख गयो सुखाई ॥ निशा अकेले आजु सिधाए॥काहू धौं जलचर धरि खाए॥यह कहि यशुमति रोइ पुकारयो। मों बरजत कत रैनि सिधारयो॥ब्रजजन लोग सबै उठिधाए॥यमुनाके तट नंद न पाए॥बन बन ढूंढत गावँ मझारैं॥ नंद नंद कहि लोग पुकारैं ॥ खेलत ते हरि हलधर आए । रोवत मात देखि दुखपाए ॥ कत रोवतहै यशुदा मैया॥पूछत जननी सों दोउ भैया ॥ कहत श्याम जनि रोवहु माता । अबहीं आवतहैं नंद ताता ॥ मोसों कहिगए अबहीं आवन । रोवै माति मैं जात बोलावन ॥ सबके अंतर्यामी हैं हरि । लैगयो बांधि वरुन नंदहि धरि ॥ यह कारज मैं वाको दीनों । वाके दूतन नंदन चीनों ॥ वरुन लोक तबहीं प्रभु आए । सुनत वरुन आतुर ह्वै धाए॥आनँद कियो देखि हरिको मुख । कोटि जन्मके गए सबै दुख ॥ धन्य भाग्य मेरे बडे आजु । चरण कमल दरशन सुखकाजु ॥ पाटंबर पाँवडे डसाए । महलन बंदनवार बँधाए ॥ रत्न खचित सिंहासन धारयो । तिहिपर कृष्णहि लै बैठारयो ॥

अपने कर प्रभु चरण पखारे। जे कमला उरते नहिं टारे॥ जे पद परसि सुरसरी आई। तिहूं लोक है विदित बड़ाई॥ तेपद वरुन हाथ लै धोए। जन्म जन्मके पातक खोए॥ कृपासिंधु अब शरन तुम्हारी। इहि कारण अपराध विचारी॥ आपु चले हरि नंदहि देखन। बैठे नंद राजवर भेपन॥ नृपरानी सब आगे ठाढीं। मुख मुख ते सब स्तुति काढीं॥ पाँइन परी कृष्णके रानी। धन्य जन्म सबहिन कहि मानी॥धन्य नंद धनि धन्य यशोदा। धनि धनि तुमैं खिलावति गोदा॥धनिव्रज धनि गोकुलकी नारी। पूरन ब्रह्म तहां वपु धारी॥ शेष सहस मुख वरनि नजाई। सहज रूप को करै वड़ाई॥ देखि नंद तब करत विचारा। यह कोउ आहि बड़ो अवतारा॥ नंद मनहि अति हर्ष बढ़ायो। कृपासिंधु मेरे गृह आयो॥ वरुनहि दीनी लोक बडाई। तुमहौ एहि पातालके राई॥ कहा देत मोंहिलोक बड़ाई। वृंदावन रज करौं सदाई॥ वरुन थाप नंदहि लै आए। महर गोप सब देखन धाए॥ नंदहि बूझत हैं सब वाता। हम अति दुखित भए सब गाता॥एकादशी कालिहमैं कीनों॥ निशि जागरन नेम यह लीनों॥ तीन पहर निशि जागि गँवाई। तब लीनी मैं महरि बुलाई॥ एकदंड द्वादशी सुनाई। ताकारणमैं करी चँडाई॥ एकदंड द्वादशि कैयो पल। रैनि अछतमैं गयो यमुनजल॥ गयो यमुनकटिलौं भीतर भारि। वरुनदूतलै गयो मोहिं धरि॥तहँ ते जाइ कृष्ण मोहिं ल्यायो। हम कोउ वडे पुण्य कारि पायो॥ इनकी महिमा कोउ न जानै। वरुन कोटि मुख कहैं वखानै॥ रानिन सहित परचो चरणनतर। वंदनवार वँधे महलनि वर॥ मेरो कह्यो सत्यकै मानों। इनको नर देही जिनि जानौ॥ यशुमति सुनि चकृत इह वानी। कहत कहा यह अकथ कहानी॥ व्रज नर नारि सुनत जे गाथा। इनते हम सब भए सनाथा॥मनी मोह कारि सबै भुलाए। नंदहि वरुनलोकते ल्याए॥ नंद एकादशी वरणि सुनाई। कहत सुनत सबके मनभाई॥ जो या पदको सुनै सुनावै।एकादशिव्रतको फल पावै॥यह प्रताप नंदहि दिखराई। सूरदास प्रभु गोकुलराई॥१॥कान्हरो॥ नंदहि कहति यशोदा रानी। मोहिं वरजत निशिगए यमुनतट पैठे जाइअकेले पानी॥अबतौ कुशल परी पुण्यनिते द्विजन करौ बहुदान।बोलिलेहु बाजने बजावहु देहु मिठाई पान॥ गावति मंगल नारि बधाई बाजत नंददुआर। सुनहु सूर यह कहति यशोदा नंद बचे इहिवार॥२॥ विलावल॥कहत नंद यशुमति सुनि बात। अब अपने जिय सोचु करति कत जाके त्रिभुवनपति सों तात॥ गर्ग सुनाइ कही जो बाणी सोई प्रगट होतिहै जात। इनते नहीं और कोउ समरथ एईहैं सबहीके तात॥ मायारूप मोहिनी लगाइ डरि भूले सबै जे गाथ। सूरश्याम खेलत ते आए माखनदै माँ हाथ॥ ३ ॥ गौरी ॥ तबहिं यशोदा माखन ल्याइ। मैं मथिकै अबहीं धरि राख्यो तुम्हरे काज मेरे कुँवरकन्हाइ॥ मांगिलेहु एही विधि मोसे मो आगे तुम खाहू। बाहेर जिन कबहूं खैये सुत डीठि लगैगी काहू॥तनक तनक कछु खाहु लालमेरे ज्योंबढि आवै देह।सूरश्याम अबहोहु सयाने वैरिनके मुखखेह॥ ४ ॥ अथ दानलिला ॥ विलावल ॥ भक्तनके सुखदायकश्याम। स्त्री पुरुष नहीं कछु नाम॥ संकटमें जिनि जहां पुकारे। तहां प्रगटि तिनको उद्धारे॥ सुख भीतर जिनि सुमिरन कीन्हो। तिनको दरश तहां हरि दीन्हों॥ दुख सुख में जो हरिको ध्यावै। तिनको नेक नहरि विसरावै॥ चितदै भजै कौनहू भाउ। ताको तैसो त्रिभुवन राउ॥ कामातुर गोपी हरि ध्यायो। मन वच कर्महि सों मन लायो। पटऋतु तपकीनों तनुगारी। होहिं हमारे पति गिरिधारी॥ अंतर्यामी जानत सबकी।प्रीति पुरातन शाली तबकी॥ वसनहरे गोपिन सुखदीनो। नाना विधिकौतुकरस कीनो॥ युवतिनके इह ध्यान सदाई। नेक न अंतर होइ कन्हाई। घाट

बाट यमुनातट रोकै। मारग चलत जहाँ तहँ टोकै ॥ काहूकी गागरि धरि फोरै । काहूसों हँसि वदन सकोरै ॥ काहूको अंकम भरि भेंटै। कामव्यथा तरुणिनकै मेटै। ब्रह्माकीट आदिके स्वामी प्रभुहैं निर्लोभी निहकामी॥भाववश्य सँगही सँगडोलै । खेलै हँसै तिनहिसों बोलै ॥ ब्रजयुवती नहिं नेक विसारैं। भवनकाज चित हरिसोंधारैं।गोरसलै निकसीं ब्रजबाला।तहँतिनि देखे मदन गोपाला॥ अँग अँग सजि शृंगार वर कामिनि । चलीं मनहु यूथनि जुरि दामिनि ॥ कटि किंकिनि नूपुरबिछिया धुनि। मनहु मदनके गजघंटा सुनि ॥ जाति माट मटुकी शिरधरिकै । मुख मुख गान करति गुण हरिके ॥ चंद्रवदनि तनु अति सुकुमारी। अपने मन सब कृष्ण पियारी ॥ देखि सबनि रीझे वनवारी। तब मनमें इक बुद्धि विचारी ॥ अब दधि दान रचौं इक लीला। युवतिन संग करौं रस लीला ॥ सूरश्याम सँग सखन बोलायो। यह लीला कहि सुख उपजायो ॥ १००९ ॥ जयतश्री ॥

सुनत हँसी सुख होहि दान दहीको लाग्यो। निशिदिन मथुरा दधि बेचैं श्याम दान अब माँग्यो। प्रात होत उठि कान्ह टेरि सब सखनि बोलाए। तेइ तेइ लीने साथ मिले जे प्रकृति बनाए ॥ डगरि गए अनजानही गह्यो जाइ वन घाट। पेडपेड तरुके लगे ठाटि ठगनको ठाट ॥ १ ॥ इहां ग्वालि बनि बनि जुरीं सब सखी सहेली। शिरनि लिए दधि दूध सबै योवन अलबेली ॥ हँसत परस्पर आपुमें चली जाहिं जिय भोर। जबहि आनि घातहि परी तब छेकिलिए चहुँओर ॥ ॥ २ ॥ देखि अचानक भीर भई सब चकृत किशोरी। ज्यों मृगसावक यूथ मध्य वागुरि चहुँओरी संकितह्वै ठाढ़ी भई हाथ पाँव नहिंडोल। मनहुँ चित्रकीसी लिखीं मुखहि न आवै बोल ॥ ३ ॥ तब उठि बोले ग्वाल डरहु जिनि कान्ह दुहाई। ठग तस्कर कोउ नाहिं दान यदुपति सुखदाई ॥ आवत निशि दिनही रहो श्यामराज भए नाहीं। जोकछु लागै दानको तुम घाटि देहु तेहि माहीं॥४॥ तब हँसि बोली ग्वालि नाम जब कान्ह सुनायो॥चोरी भरयो नपेट आनि अब दान लगायो॥तब उलटी पलटी फबी जब शिशुरहे कन्हाई। अब ओहि कछु धोखे करौं तौ छिनकमाहँ पतिजाई॥५॥तब उठि बोले कान्ह रही तुम पोच सदाई । महरि महर सुखपाइ संकतजि करहु ढिठाई ॥ अब वह धोखो मेटिकै छांडिदेहु अभिमान। करि लेखो अब दानको दियहि पाइहौ जान ॥ ६ ॥ तब हँसि बोलीं ग्वालि डरनि तुम तजी ढिठाई। बहुतै नंदनि काज भयो तुअ तप अधिकाई ॥ कालिहि घर घर डोलते खाते दही चुराइ। राति कछू सपनों भयो प्रातभई ठकुराइ ॥ ७ ॥ भली कही नहिं ग्वालि बातको भेद न पायो। पिता रचित धन धाम पुत्रके काजहि आयो ॥ तुमसे प्रजा बसाइकै राखेहैं इह पाइ। ते तुम हम सरवस भई अब मिलहु छाँडि चतुराइ ॥ ८ ॥ तब झुकि बोली ग्वालि बात किन कहौ सम्हारे। ऐसोको बहिगयो प्रजाहै बसे तुम्हारे ॥ हमहूं तुम नृपकं सके बसैं बास इकठाँउ। देखौंधौं परजाइकै हम तजैं तुम्हारो गाउँ ॥ ९ ॥ गाउँ हमारो छाँडि जाइ बसिहौ केहि केरे। तीनलोकमें कौन जीव नाहिन वशमेरे ॥ कंसहि को गनती गनै जाके हमहि कहाहु ॥ दियेदान पै बांचिहो नातरु नहीं निवाहु ॥ १० ॥ छोटे मुँह बडीबात कहौ किनि आपु सँभारे। तीनिलोक अरु कंस कबहिं वशभए तुम्हारे ॥ यह बाणी तिनसों कहो जो कोउ होइ अजान। ऐसे होहु जुरावरे हम जानाति परवान ॥ ११ ॥ लेखो जैहै भूलि कहूंकी बात चलावत। झूठी मिलवत आनि सुनत हमको नहिं भावत ॥ हमसों लीजे दानके दाम सबै परखाइ। थैली मांगि पठाइए पीतांबर फाटिजाइ ॥ १२ ॥ काहेको सतरात बात मैं सांची भाषत । झूठी सब तुम ग्वारि बात मेरी गहि नाखत ॥ कह्यो मानि लेखो करौ देहु हमारो दान। सौंह बबा मोहिं

नंदकी ऐसे देउँ नजान ॥ १३ ॥ नंद दोहाई देत कहा तुम कंस दोहाई । काहेको अठिलात कान्ह छाँडौ लरिकाई । पहिली परिपाटी चलौ नहीं चलौ क्यों आजु । नृपति जानि जो पावै घुनिपै होइ अकाजु ॥ १४ ॥ लरिका मोको कहति नाहिं देखी लरिकाई । पय पीवत संहारि पूतना स्वर्ग पठाई ॥ अघा बका शकटा तृणा केशी सुखकर नाई । गिरि गोवर्धन करधरयो यह मेरी लरिकाई ॥ १५ ॥ सबै भली तुम करी हमैं अब कहत कहाहो । ऐसी बात करतहो मोहन तैसी सोइ लहाहो ॥ हँसी पलक द्वैचारिकी बीतन लागे याम । बनमें राखी रोकिकै नारि पराई श्याम ॥१६॥ हँसी करतहो तुमहि भली गई मति ब्रजनारी । तुम हमको हम तुमहि दई बिनकाजहि गारी ॥ बात कहौ कछु जानिकै वृथा बढावत सोर । सदा जाहु चोरटी भई आजु परी फँग मोर ॥ १७ ॥ माँगि लेहु दधि देहिं दानको नाउँ मिटावहु । देत दुहाई नंदराइकी दान न सदा लगावहु ॥ हमहिं कहतहो चोरटी आपु भयेहो साहु । चोरी करत बडेभए मही छाक लै खाहु ॥ १८ ॥ दही लेतहो छीनि दान अंगनिको लेहौं । लेहौं रूपहि दान दान यौवनपै केहौं ॥ तुम सब कंचन भारलै मेरे मारग जाहु । मही दही दिखरावहू कैसे होत निबाहु॥१९॥जाहु भलेहो कान्ह दान अंग अंग को मांगत । हमरो योवन रूप आंखि इनके गडि लागत॥सबै चली झहराइकै मटुकी शीश उठाइ । रिसकरि कसि कटि पीतपट ग्वारि गही हरिधाइ ॥ २० ॥ मटुकी लई छिड़ाइ हार चोली बंद तोरयो । भुजभरि धरि अंकवारि बांह गहिकै झकझोरयो ॥ माखन दधि लियो छीनिकै कह्यो ग्वाल सब प्याहु । मुख झगरति आनंद उर धिरवतहै घरजाहु ॥ २१ ॥ देखो हरिको काम झटकि चोली बंदतोरयो । हमको भरि अँकवारि बांहधरि धरि झकझोरयो ॥ यशुमतिसों कहिये चलौ अब प्रगटी तरुनाइ । दधि माखन सब छीनिलै ग्वालनि दए खवाइ ॥ २२ ॥ जाइ कहौ जू भली बात मैयाके आगे । तुमको जोवन रूप दान देती नाहिं मांगे॥तुम जो कहौ जाइकै जननी नहीं पत्याइ। सूर सुनहुरी ग्वालिनी आवहुगी पछिताइ ॥ २३ ॥१००६॥ काफी ॥ ऐसो दान नमांगिये जोहमपै दियो नजाइ । वनमें पाइ अकेली युवतिनि मारग रोकत धाइ ॥ घाट बाट अवघट यमुना तट बातैं कहत बनाइ । कोऊ ऐसा दानलेतहै कौने सिखै पठाइ॥हमनाहिं जानति तुमयों नाहीं रैहौ गारी खाइ । जोरस चाहौ सो रस नाहीं गोरस पियहु अघाइ ॥ औरनसों लैलीजिये गिरिधर तब हमदेहिं बोलाइ । सूरश्याम कत करत अचगरी हमसों कुँवरकन्हाइ॥७॥ नट ॥ दानलेहु देहु जान काहेको कान्ह देतहो गारी । जो कोऊ कह्यो करैरी हठि याही मारग आवै ब्रजमारी ॥ भली करी दधि माखन खायो चोली हार तोरि सब डारी । जोबन दान कहूं कोउ माँगत यह सुनि लाजन मारी ॥ होत अबार दूरि घर जैबे पैयां लागैं डरतिहैं भारी । हमहि तुमहि कैसो झगरो सूर सुजान हम गँवारी ॥ ८ ॥ भैरव ॥ भोरहिते कान्ह करत मोसों झगरो । औरन छांडि परे हठ हमसों दिनप्रति कलह करत गहि डगरो ॥ आन बोहनी तनक नहिंदैहौ ऐसेहि छीनि लेहु वरु सगरो । सब कोऊ जात मधुपुरी बेचन कौने दियोदिखावहुकगरो ॥ अंचल ऐंचि ऐंचि राखतहो जान अब देहु होतहै दगरो । मुख चूमति हँसि कंठलगावति आपुहि कहति न लाल अचगरो ॥ सूरसनेह ग्वारि मन अटक्यो छांडहुदियो परत नहिं पगरो । परमगनहै रही चितै मुख सबहीते भाग याहीको अगरो ॥ ९ ॥ कान्हरो ॥ दान लेहौं सब अंगनिको । अति मद गलित तालफलते गुरु इनि युग उरोज उतंगनिको ॥ खंजन कंज मीन मृग सावक भवँर जवर भुवभंगनिको । कुंदकली बंधूप बिंबफल वर तांटंक तरंगनिको ॥ कोकिल कीर कपोत किसलता हाटक हंस

फनिंगनिको। सूरदास प्रभु हँसि वश कीन्हों नायक कोटि अनंगनिको ॥ १० ॥ काफी ॥ कान्ह भलेहो भलेहो। अंगदान हमसों तुम मांगत उलटी रीति चलेहो ॥ कौन दोष कीन्हों माखनछीनों काहेको तुम औरहि भाव मिलेहो। दानलेहु कछु और कहतहो कौन प्रकृतिही लेहो ॥ हारतोरचो चीरफारचो बोलत बोल हठीलेहो । ऐसो हाल हमारो कीन्हों जातहुती दही लेहो ॥ हमहैं तुम्हारे गाउँकी कछु याते ए गहि लेहो। सूरदास प्रभु और भए अब तुम नहिं होहु पहिलेहो ॥११॥ पूरबी ॥ तूमोसों दान माँगि किनु लैहो नंदकेलाला। ऐसी बातनि झगरों ठानोंहो मूरख तेरो कौन हवाला ॥ नंदमहरकी कानि करतहैं छांडिदेहु ऐसो ख्याला। सूरदास प्रभु मन हरिलीन्हो नेक हँसतही ग्वारिनिं भई बिहाला ॥ १२ ॥ गूजरी ॥ सूधे दान काहे न लेत। और अटपटी छांडि नंदसुत रहहु कँपावत बेत॥ वृंदावनकी वीथिनि तकि तकि रहत गुमान समेत। इनि बातनि पति पावत मोहन जानत होहु अचेत ॥ अबलनि रविकर वकि पकरतहो मारग चलन नदेत।सोई तुम कछु कहि न जनावत कहा तुम्हारे हेत॥आजु नजान देहुरी ग्वालिनि बहुत दिननिको नेत । सूरदास प्रभु कुंजभवनचलि जोर उरनि नखदेत ॥ १३ ॥ कान्हरो ॥ जोवनदान लेउँगो तुमसों। जाके बल तुम बदति नकाहुहि कहा दुरावति हमसों ॥ ऐसो धन तुम लिए फिरतिहौ दानदेत सतराति। अतिहि गर्वते कह्यो नमोसों नितप्रति आवति जाति॥ कंचनकलस महारसभारे हमहूं तनक चखावहु। सूर सुनहु करि भार मराति है हमहि नमोल दिवावहु ॥ १४ ॥ कहा कहत तू नंद ढुठौना। सखी सुनहुरी बातैं जैसी करत अतिहि अचभौना॥ वदन सकोरत भौंह मरोरत नैननिमें कछुटोना ॥ जोवनदान कहा धौं मांगत भई कहूं नहिं होना॥ हम कहैं बात सुनहु मनमोहन कालि रहे तुम छौना। सूरश्याम गारी कहा दीजै इह बुद्धिहै घर खोना ॥ १५ ॥ पूरबी ॥ ऐसे जिनि बोलहु नँदलाला। छाँडिदेहु अचरा मेरो नीके जानत औरसी बाला ॥ बारबार मैं तुमहि कहतिहौं परिहै बहुरि जंजाला। जोवनरूप देखि ललचाने अबहींतें ए ख्याला ॥ तरुणाई तनु आवनंदीजै कित जिय होत बिहाला । सूरश्याम उरते कर टारहु टूटै मोतिनमाला ॥ १६ ॥ सुघराई ॥ कहागति प्रकृति परीहो कान्ह तुम्हारी धरत कहा कत राखतघेरे। जे बतियां तुम हँसि हाँसि भाषत इहैं चलै चहुँ फेरे ॥ अब सुनिहै इह बात आजुकी बनमें कान्ह युवति सब नेरे। सकुचतिहै घर घर घेराको नेकलाज नहिं तेरे ॥ अतिहि अबेर भई घर छांडे चितै हँसत मुखतन हरिहेरे। सूरदास प्रभु झुकत कहाहौ चेरीहै कहुकेरे ॥ १७ ॥ टोडी ॥ कहा कहतु तुमसों मैं ग्वारिनि। दानदेहु सब जाहु चली घर अतिकत होत गँवारिनि कबहूं बात नहीं घरखोवति कबहुँ उठतिदे गारिनि। लीन्हें फिरति रूप त्रिभुवनको ऐनोखी बनिजा रनि ॥ पेलाकरति देति नहिं नीके तुमहो बड़ी बंजारनि । सूरदास ऐसो गथ जाके ताके बुद्धि पसारनि ॥ १८ ॥ पुरिआकान्हरो ॥ कान अब नारि गह्योहै जानि। मांगत दान दहीको अबलौंलैकछु अबरै ठानि ॥ औरनिसों तुम कहा लियो है सो सब हमहि देखावहु आनी। मांगतहैं दधिसो हम देहैं कहत कहा यह बानी ॥ छांडि देहु अचरा फटि जैहै तुमको हम नीके पहिचानी। सूरश्याम तुम रति पति नागर नागरि अतिहि सयानी ॥ १९ ॥ रागकान्हरो ॥ लेहों दान अंग अंगनको । गोरेभाल लाल सेंदुरछवि मुक्ता वर शिरसुभग मंगको ॥ नकवेसरि खुटिला तरिवनको गरहमेल कुच युग उतंगको । कंठसिरी दुलरी तिलरी उर माणिक मोती हार रंग को ॥ बहु नग लगे जरावकी अँगिया भुजा बहुटनी वलय संग को। कटि किंकिणिको दान

जुले हौं तिन रीझत मन अनंग को। जेहरि पगजु करचो गाढे मनो मंद मंद गति यह मतंग को। जोवन रूप अंग पाटंबर सुनहु सूर सब यह प्रसंग को॥ २०॥ टोड़ी॥ अरी यह ढीठ कान्ह बोलि न जानै बरबस झगरो ठानै। जो भावत सोइ सोइ कहि डारत ऐसो निधरक नाहिं कहूं देख्यो रूप जोवन अनुमानै॥ अंग अंगके दान लेत नहिं घर के को पहिचानै। हम दधि बेचन जातिहैं मथुरा मारग रोकि रहत गहि, अंचल कंसकी आन न मानै॥ ऐसी बात संभारि कहौ हरि हम तुमको पहिचानै। सूरश्याम जो हमसों मांगत सो पैहो कहूँ और त्रियनपै ये बातैं गढ़ि बानै॥ २१॥ ॥ मलार॥ तोहिं कमरी लकुटिया भूलि गई पीत वसन दुहुँ करनवलासी। गोकुलकी गाइनिचरैबो छोंडि दीन्हौं कीन्हौं नवलबधू संग नवल नेह आयो परम विसासी॥ गोरस चोराइ खाइ बदन दुराइ राखै मन न धरत वृंदावन को मवासी। सूरश्याम तोहिं घर घर सब जानै इहां कोहै तिहारी दासी॥ २२॥ वै बातैं भूलिगईं नंदमहरके सुवन करत हौ अचगरी। बन बन धेनु चरावत फिरत निशि बासर धावत बैन बजावत दानी भए गहि डगरी॥ बनमें पराई नारि रोकि राखी बनवारी जाननहीं देत ह्यांकौन ऐसी लंगरी। मांगत योबनदान भलेहौ जू भले कान्ह मानत कंसआन कोबसिहै ब्रजनगरी। कबहुं गहत दधि मटुकी अचानक कबहुं गहतहो अचानक गगरी॥ सूरश्याम जहँतहाँ खिझावत जो मनभावत दूरिकरौ लंगर सगरी॥ २३॥ पूरवी॥ तुम कबते भयेहो जू सूरश्याम दानी। मटुकी फोरि हार गहि तोरचो इन बातन पहिचानी॥ नंदमहरकी कान करति हौ नातर करती मेहमानी। भूलिगए सुधि तादिनकी जब बांधे यशोदारानी॥ अबलौं सही तुम्हारी ढीठो तुम यह कहत डरानी। सूरश्याम कछु करत नबनिहै नृप पावै कहुँ जानी॥ २४॥ दधि मटुकी हरि छीनिलई। हार तोरि चोली बंद तोरचो जोवन कैवल ढीठ भई॥ ज्योंहीं ज्यों हम सूधे बोलत हो त्यों त्यों अतिही सतरगई। बाद करति अबहीं रोवहुगी बार बार कहि दई दई॥ अंश परायो देहु न नीके मांगत ही सब करत खई। सूर सुनहुँ मैं कहत अजहुँलौं प्रीति करहु जो भई सो भई॥ २५॥ काफी॥ कन्हैया हार हमारो देहु। दधि लवनी घृत जो कछु चाहौ सो तुम ऐसेहि लेहु॥ कहाकरैं दधि दूध तिहारो मोसों नाहीं काम। जोवनरूप दुराइ धरचोहै ताको लेति न नाम॥ नीके मनहै मांगत तुमसों वैर नहीं उर नाखाति। सूर सुनहु री ग्वारि अयानी अंतर हमसों राखाति॥ २६॥ गौरी॥ हमको लाज न तुमहि कन्हाई। जो हम एहि मारग सब आई तौ तुम हमसों करत ढिठाई॥ हाहाकरति पाँइ तुम लागति रीती मटुकी देहु मँगाई। काको बदन प्रातही देख्यो घरते हम छीकतहु न आई॥ उतही जातहि सखी सहेली मैंही सबको इतहि फिराई। सूरश्याम अधमई हमहि सब लागै तुमहि भलाई॥ ॥ २७॥ विलावल॥ मैं भरुहाये लागतहौं। कनक कलस रस मोहिं चखावहु जोमैं तुमसों मांगतहा॥ वोही ढंग तुम रहे कन्हाई उठीं सबै झिझिकारि। लेहु अशीश सबके मुखते कतहि दिवावत गारि॥ नीके देहु हार दधि मटुकी बात कहन नहिं जानत। कैहैं जाइ यशोदासों प्रभु सूर अचगरी ठानत॥ ॥ २८॥ हार तोरि बिथराइ दियो। मैया पै तुम कहन चली कत दधि माखन सब छीनि लियो॥ रिसकरि धाइ कंचुकी फारी अबतो मेरो नाउँ भयो। कालि नहीं एहि मारग पैहो ऐसो मोसों बैर ठयो॥ भलीबात घरजाहु आजु तुम मांगत जोवन दान नयो। सूरदास सुखही रिस युवतिन उर उर अंतर काम जयो॥ २९॥ नट॥ मोहिं तोहिं जानिबी नँदनंदन जब बृंदावनते गोकुल जैबो। सखिन कहति छीनिले मेरी मटुकिया गारी दैबो॥ मुहँ मोरिबो बाउ अधिकाई सो लैबो, एक गाँउ

एकहि सँग वसिये कैसेरी यहि मग ऐवो ॥ युवतिनको मुख देखि रहतहौ ललचाने कैसे पैयो । कैसे हार तोरि मेरो डारचो विसरत नाहिं रिसकर धैवो॥सुनुरी सखी ढीठ नँदनंदन चलौ सबै यशोमतिसों हमलरिवो। सूरश्याम दधि माखन लीन्हों हारन देहौं वैर समुझि कहिवो ॥ ३० ॥ सारंग तैं कत तोरचो हार नौसरिको मोती वगरि रहे सव वनमें गयो कानको तरिको॥एअवगुण जू करत गोकुलमें तिलक दिये केसरिको॥ढीठ गुवाल दहीके माते वोढनहार कमरीको ॥जाइ पुकारैं यशुमति आगे कहत जो मोहन लरिको। सूरज श्याम जानि चतुराई जेहि अभ्यास महु वरिको ॥ ३१ ॥ विलावल ॥ सुनहु श्याम हम अव चलीं यशोमतिके आगे। तौ वदियो हमको अवहीं तुमको धरि माँगे ॥ इक इक करी विथराइकै मोतिन लर तोरचो। यह सुनि सुनि मुसकाइकै हरि भौंह सकोरचो ॥ चलींमहरिपै सुंदरी उरहनलै हरिको।अवहीं वोलि वँधाइए लंगर यह लरिको॥गई नंद घरको सबै यशुमति जहां भीतर। देखि महरिको कहि उठीं सुतकीन्हों ईतर ॥ मारग चलन नपाइएरी हरिके आगे। सूरदास प्रभु त्रासते व्रजताजि हम भागे ॥३२॥ अपनेरी कुँवर कन्हाई सों माई तू कहाति काहिन। आनकी आन कहत नित हमसों उनके मनकी कछु जानाति नाहिंन॥ वहुत वचाति व्रजराजकी कानि न हँसति कहा ह्यांते जाहिन। ऐसो भयो कुल कौन तिहारे योवन दान लियो मोपै चाहिन ॥ अति उत्पात कहांलौ कीजे पीपरको वन दाहिन। आनकी आन कहत नित हमसों उनके मनकी कछु जानत नाहिन।काहू विलोकनि वानि सिखायो मैं अव पहिचानति ताहिन। वूझिधौं देखि ह्यां कौन सयानी हारि मेरो मन चुरवायो कापहिचाहिन जाइ न मिलो सूरके प्रभुको अरुझेनसों अरुझाहिन ॥ ३३ ॥ सुघराई ॥ यशुमति तेरो वारो अतिहि अचगरो। दूध दही माखन लै ढारि दियो सगरो ॥ भोर होत नित प्राति करैहै झगरो। ग्वाल वाल संग लयेजाइ गहै डगरो ॥हम तुम एक सम कौन काते अगरो। लियो दियो कछु सोऊ डारि देहु कगरो॥ सूरदास प्रभु सव गुणानि अगरो। और कहूं जाइरहे छांडि व्रज वगरो॥३४॥सूही ॥ मैं तुम्हरे मनकी सव जानी। आपु सबै इतरातिहै दोषन हेत श्यामकोआनी॥ मेरो हरि कहँ दशहि वरपको तुम्हरी यौवन मद उदमादी। लाज नहीं आवति इन लगारिनि कैसे धौं कहि आवति वानी ॥ आपुहि हार तोरि चोली वँद उर नखघात वनाइ निशानी। कहाँ कान्हकी तनक अँगुरियां यह कहि वार वार पछितानी ॥ देखहु जाइ और काहूको हरिपर सबै रहत मँडरानी। सूरदास प्रभु मेरो नान्हो तुम तरुणी डोलति अठिलानी ॥३५॥ जयतश्री॥ जव दधि वेचन जाहिं तव मारग रोंकि रहै। ग्वालिनि देखाति धाइरी अंचल आइ गहै ॥ अहो नंदकी नारि गारि ऐसी क्यों दीजै। एक ठौर वस वास सुनहु ऐसी नहिं कीजै ॥ सुत वैसो तुमहूंतो खीझति को रैहै यहि गाँउँ। जैहैं व्रज तजि अनतही वहुरि सुनो नहिं नाँउँ ॥ १ ॥ कहा कहति डरपाइ कछू मेरो घटि जैहै। तुम वाँधति आकाश वात झूठी को सैहै ॥ योवन दिन द्वै सवहिको तुम ऐसी इतराति। झूठेहि कान्हहि दोषदै तुमहीं व्रज तजि जाति ॥ २ ॥ हम यह झूठी कहीं औरसों वूझि न देखौ। हमसों माँगत दान करहि कौड़िनको लेखौ॥ मटुकी डारै शीशते मर्कट लेइ वुलाइ। महाढीठ मानै नहीं सखन सहित दधि खाइ ॥ ३ ॥ ग्वारिन ढीठि गँवारि कान्ह मेरो अति भोरो। तेरे गोरस वहुत भयोरी मेरे थोरो ॥ वोलत लाज नहीं तुम हिं सवही भईं गँवारी। ऐसी कैसे हरि करै कतहि वढ़ावति रारी ॥ ४ ॥ अहो यशोदा महरि पूतकी मानी पीवै। हमहिं कहाहै होत वहुत दिन मोहन जीवै ॥ सुतके कर्म न जानई करै आपनी टेक। दश गैयन करि कोउ अधिक अहिर जाति सव एक ॥ ५ ॥ कहा गैयनकी चली कहा

अब चली जातिकी । चकृत भई मैं तुमहि कहत अनमिलत बातकी ॥ जैसी मोसों कहतिहौ को सुनिकै पतिआइ । कौन प्रकृति तुमको परी मोहिं कहो समुझाइ ॥ ६ ॥ अहो यशोदा बात का लिकी सुनी कि नाहीं । वंशीवटकी छांह गही हरि मेरी बाहीं । हौं सकुचनि बोली नहीं बहु सखिय नकी भीर । गहि बहियां मोहिं लैचले हंससुताके तीर ॥ ७ ॥ येरी मदमत ग्वालि फिरति जोवन मदमाती । गोरस बेचन हारि गूजरीअति इतराती ॥ अनमिलती बातैं कहतिं सुनिपैहै तेरो नाँह । कह मोहन कह तूरहै कबहि गही तेरी बाँह ॥ ८ ॥ सांची सब मैं कहति झूठ नहिं कहिहौं तुमसों । सुतकी राखति कानि बिलग मानतिहो हमसों ॥ कुंजनमें क्रीडा करै मनु वाहीको राज । कंस सकुच नहिं मानई रहत भयो शिरताज ॥ ९ ॥ ऐसी बातैं कहति मनहुँ हरि बरष तीसको । दुसह सह्यो नहिंजाइ नैक डर करहु ईशको ॥ धनि धनि तुम यह कहतिहो मोको आवै लाज । माखन मांगत रोइकै तेहि दोष देत बिन काज ॥ १० ॥ हरि जाननहैं मंत्र यंत्र सीखो कहुँ टोना । वनमें तरुण कन्हाई घरहि आवत है छौना ॥ एक दिवस किन देखहू अंतर रहौ छपाइ । दशकोहै धौं वीसको नैननि देखौजाइ ॥ ११ ॥ जाहु चली घर आपने नैनानि भरि हमदेख्योहै । तिसि वीस दश वरष एक दिन सब लेख्योहै ॥ डीठि लगावति कान्हको जरैं बरैं वै आंखि । धींगरी धींग चाचरि करै मोहिं बुलावति साखि ॥१२॥ धींग तुम्हारो पूत धींगरी हमको कीन्ही । सुतको हटकति नाहिं कोटि इक गारी दीन्हीं ॥महतारी सुत दोउ बने वेमग रोकत जाइइनहिं कहन दुख आइये सबको उठाति रिसाइ॥१३॥कहाकरौं तुम बात कहूंकी कहूं लगावति।तरुणिन इहै सोहात मोहिं कैसे यह भावति॥बहुत उरहनो मोहिं दियो अब ऐसो जनि देहु । तुम तरुणी हरि तरुण नाहिं मन अपने गुणिलेहु ॥१४॥ निरउत्तर भई ग्वालि बहुरि कह कछू न आयो । मन उपज्यो कछु लाज गुप्त हरिसों चितलायो ॥ लीला ललित गोपालकी कहत सुनत सुखदाइ । दान चरित सुख देखिकै सूरदास बलिजाइ ॥ १५ ॥ १०३६ ॥ रामकली ॥ नंद नँदन इक बुद्धि उपाई । जेजे सखा प्रकृतिके जाने ते सब लए बोलाई ॥ सुबल सुदामा श्रीदामा मिलि और महर सुत आए । जो कछु मंत्र हृदय हरि कीन्हौं ग्वालन प्रगट सुनाए॥ब्रजयुवती नित प्रति दधि बेचन बनि बनि मथुरा जाति । राधा चंद्रावलि ललितादिक बहु तरुणी यक भांति॥कालिंदी तट कालि प्रातही द्रुम चढि रहौ लुकाइ । गोरस लै जबहीं सब आवैं मारग रोकहु जाइ ॥ भली बुद्धि इह रची कन्हाई सखनि कह्यो सुख पाई।सूरदास प्रभु प्रीति हृदयकी सब मन गए जनाई॥ ॥३७॥ प्रातहि उठी गोप कुमारि । परस्पर बोलीं जहां तहाँ यह सुनी बनवारि ॥ प्रथमही उठि सखा आये नंदके दरबार।आइये उठिकै कन्हाई कह्यो बारंबार॥ग्वाल टेर सुनत यशोदा कुँवर दियो जगाइ। रहे आपुन मौन साधे उठे तब अकुलाइ॥मुकुट शिर कटि कसिं पीतांबर मुरली लीन्ही हाथ । सूर प्रभु कालिंदी तट गए सखा लीने साथ ॥ ३८ ॥ रामकली ॥ भली करी उठि प्रातहि आए । मैं जानत सब ग्वारि उठी जब तब तुम मोहिं बोलाए ॥ अब आवति हैहै दधि लीन्हे घर घरते ब्रजनारी । हँसे सबै करतारी दैदै आनँद कौतुक भारी ॥ प्रकृति प्रकृतिके जे सब राखे संगी पांच हजार । और पठाइ दिये सूरजप्रभु जेजे अतिहि कुमार ॥३९॥ बिलावल ॥ हँसत सखनि यह कहत कन्हाई । जाइ चढ़ौ तुम सघन द्रुमनि पर जहँतहँ रहौ छिपाई ॥ तबलौं बैठिरहौ मुँह मूंदे जब जानहु अब आई । कूदिपरोगे द्रुमनि द्रुमतिते दैदै नंद दोहाई ॥ चकित होहिं जैसे युवती गण डरनि जाहिं अकुलाई । वेनु विषान मुरलि ध्वनि कीज्यो शंख शब्द घहनाई ॥ नितप्राति जाति

हमारे मारग इह कहियो समुझाई । सूरश्याम माखन दधि दानी यह सुधि नाहिन पाई ॥ ४० ॥ श्याम सखन ऐसो समुझावत । ब्रजवनिता ललितादिक इनको देखि बहुत सुख पावत ॥ कालि जात यहि मारग देखी तव यह बुद्धि उपाई । अब आवति ह्वै हैं वनि वनि सब मोहीसों चितलाई॥ तुमसों कछू दुरावत नाहीं कहत प्रगट करि बात।सुनहु सूर लोचन मेरे विनु राधा मुख अकुलात॥ ॥ ४१ ॥ ब्रजयुवती मिलि करति विचार । चलो आजु प्रातहि दधि वेचन नित तुम करति अवार । तुरत चलो अवहीं फिरि आवैं गोरस वेचि सवारें । माखन दधिघृत साजति मटुकी मथुरा जान विचारैं ॥ पटदशसहस शृंगार करतिहैं अंग अंग सब निरखि सँवारति । सूरदास प्रभु प्रीति सवनिकी नेक न हृदय विसारति ॥४२॥धनाश्री ॥ युवती अंग शृंगार सँवारति । वेनी गूंथि मांग मोतिनकी शीशफूल शिर धारति ॥ गोरे भाल विंद सेंदुरपर टीका धरयो जराउ । वदन चंद्र पर रवि तारागण मानों उदित सुभाउ॥सुभग श्रवण तरिवन मणि भूपित यह उपमा नहिं पार। मनहुँ काम विविफंद वताए कारण नंदकुमार ॥ नासा नथ मुकुताकी शोभा रह्यो अधर तट जाई । दाडिम कनशुक लेत वन्यो नाहिं कनक फंद रह्यो आई ॥ दमकत दशन अरुण धरणीतर चिबुक टिठौना भ्राजत । दुलरी अरु तिलरी वंदतापर सुभग हमेल विराजत ॥ कुच कुंचकी हार मोतिन अरु भुजन विजयठे सोहत । डारन चुरी करन फुंदनावनि कंज पास अलि जोहत ॥ क्षुद्रघंटिका कटि लहँगा रंग तन तन सुखकी सारी । सूर ग्वालि दधि वेचन निकरी पग नूपुर ध्वनि भारी ॥ ४३ ॥ नटनारायणी ॥ दधि वेचन चलीं ब्रजनारि । शीश धरि धरि माट मटुकी वड़ीशोभा भारि ॥ निकसि ब्रजके गईं गोंडे हरप भई सुकुमारि । चलीं गावति कृष्णके गुण हृदय ध्यान विचारि ॥ सवनके मन जो मिलैं हरि कोउ न कहति उघारि । सूर प्रभु घट घटके व्यापी जानि लई वनवारि ४४ ॥ जयतश्री ॥ हरि देखी युवती आवति जव । सखन कह्यो तुम जाइ चढौ द्रुम वैठिरहौ दुरि जहां तहां सव ॥ चढ़े सवै द्रुम डार ग्वाल गण सुनत श्याम मुख वानी । धोखे धोखे रहे सवै हम श्याम भली यह जानी ॥ नवसत साजे शृंगार युवति सव दधि मटुकी लिये आवत । सूरश्याम छवि देखत रीझे मन मन हरप बढ़ावत ॥४५ ॥ धनाश्री ॥ सखा और संग लिये कन्हाई । आपुन निकसि गये आगेको मारग रोक्यो जाई ॥ यहि अंतर युवती सव आई वनलाग्यो कछु भारी । पाछे युवति रही तिन टेरत अवहिं गई तुमहारी ॥ तरुणी जुरि यक संग भई सव इत उत चलीं निहारत । सूरदास प्रभु सखा लिये सँग ठाढ़े इहे विचारत ॥ ४६ ॥ गौरी ॥ ग्वारिन तव देखे नँदनंदन।मोर मुकुट पीतांवर काछे खौरि किये तनु चंदन॥तव यह कह्यो कहाँ अव जैहौ आगे कुँवर कन्हाई।यह सुनि मन आनंद बढ़ायो मुख कहैं वात डराई॥कोउ कोउ कहति चलौरी जाई कोउ कहै फिरि घर जाइ । कोउ कोउ कहति कहा करिहै हरि इनको कहाँ पराइ ॥ कोउ कोउ कहति कालिही हमको लूटिलई नँदलाल । सूरश्यामके ऐसे गुणहैं घरहि फिरो ब्रजवाल ॥ ४७ ॥ सारठ ॥ ग्वालन सैन दियो तव श्याम । कूदि कूदि सव परहु द्रुमनते जात चलीं घर वाम ॥ सैन जानि तव ग्वाल जहां तहँ द्रुम द्रुम डार हलाए । वेनु विपान शंख मुरली ध्वनि सव एक शब्द वजाए ॥ चकृत भई तरु तरु प्रति देखति डारनि डारनि ग्वाल । कूदि कूदि सव परे धरणिमें घेरि लईं ब्रजवाल॥नितप्रति जात दूध दधि वेचन आजु पकरि हम पाईं ।सूरश्यामको दान देहु तव जैहौ नंद दोहाई ॥ ४८ ॥ नट ॥ ग्वारिनि यह भली नाहिं करति । दूध दधि घृत नितहि वेचति दान देते डरति ॥ प्रातही लै जाति गोरस वेचि आवति राति । कहौ कैसे जानिये

तुम दान मारे जाति ॥ कालिंद्री तट श्याम बैठे हमहिं दियो पठाइ। यह कह्यो हरि दान माँगहु जाति नितहि चुराइ ॥ तुम सुता वृषभानुकी वै वड़े नंदकुमार। सूर प्रभुको नाहिं जानति दान हाट बजार ॥ ४९ ॥ कान्हरो ॥ यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी। आनि सुनहुरी बात नई इक सिखयेहैं महतारी ॥ दधि माखन खैवेको चाहत मांगि लेहु हम पास । सूधे बात कहौ सुखपावैं बांधन कहत अकास ॥ अब समुझी हम बात तुम्हारी पढ़े एक चटशार । सुनहु सूर यह बात कहौ जिनि जानति नंदकुमार ॥ ५० ॥ धनाश्री ॥ बात कहति ग्वालिनि इतराति । हम जानी अब बाति तुम्हारी सूधे नहिं बतराति ॥ इहै बडो दुख गाँव वासको चीन्हे कोउ नसकात हरिमांगतहै दान आपनों कहत मांगि किनखात ॥ हाट बाट सब हमहि उगाहत अपनो दान जगात। सूरदासको लेखो दीजै कोउ नकहै पुनि बात ॥ ५१ ॥ कान्हरो ॥ कौन कान्हको तुम कहा मांगत। नीके करि सबको हम जानति बातैं कहत अनागत ॥ छांडिदेहु हमको जनि रोकहु वृथा बढावति रारि। जैहै बात दूरिलौं ऐसी परिहै बहुरि खँभारि ॥ आजुहि दान पहरि ह्याँ आए कहां दिखावहु छाप। सूरश्याम वैसेहि चलौ ज्यों चलत तुम्हारो बाप ॥ ५२ ॥ कान्हरो ॥ कान्ह कहत दधिदान नदैहो। लेहौं छीनि दूध दधि माखन देखतही तुमरैहो ॥ सब दिनको भरि लेहुँ आजुही तब छांडौं मैं तुमको। उपटतिहै तुम मात पितालौं नाहिं जानो तुम हमको ॥ हम जानतिहैं तुमको मोहन लैलै गोद खिलाए । सूरश्याम अब भए जगाती वैदिन सब विसराए ॥ ५३ ॥ अजहूं मांगिलेहु दधि देहौं। दूध दही माखन जो चाहो सहज खाहु सुख पैहौं ॥ तुम दानी है आए हमपर यह हमको नाहिं भावत। करौ तहीं लै निबहै जोई जाते सब-सुख पावत ॥ हमको जान देहु दधि वेचन पुनि कोउ नाहिन लैहै। गोरसलेत प्रातही सबको उ सूर धरचो पुनि रैहै ॥ ५४ ॥ कान्हरो ॥ दान दिये विन जान नपैहो।जब देहौं ढराइ सब गोरस तबहिं दान तुम दैहो ॥ तुमसों बहुत लेनहै मोको यह लै ताहि सुनावहु । चोरी आवति वेचि जातिसब पुनि गोरस बहुरो कहँ पावहु ॥ मांगत छाप कहा दिखराऊं कोनाहिं हमको जानत । सूरश्याम तब कह्यो ग्वारिसों तुम मोको क्यों मानत ॥ ५५ ॥ रामकली ॥ कहा हमहिं रिसकरत कन्हाई। इहरिस जाइ करौ मथुरापर जहां है कंस बसाई ॥ हम अब कहा जाइ गुहरावैं बसत तुम्हारे गाउँ। ऐसे हाल करत लोगनके कौन रहै यहिठाउँ ॥ अपने घरके तुम राजाहौ सबको राजा कंस । सूरश्याम हम देखत ठाढे अब सीखे एगंस ॥ ५६ ॥ गंधारी ॥ कापर दान पहिरि तुम आए। चलहु जु मिलि उनहींमें जैए जिन तुम रोकन पंथ पठाए ॥ सखासंग लीन्हे जु सैंति के फिरत रैनि दिन बनमें धाए। नाहिन राज कंसको जान्यो बाट रोकते फिरत पराए ॥ लीन्हे छीनि बसन सबहीके सबही लै कुंजनि अरुझाए। सूरदास प्रभुके गुण ऐसे दधिके माट भूमिढरकाए ॥ ५७ ॥ सूहा ॥ जाइ सबै कंसहि गुहरावहु । दधि माखन घृत लेत छँडाए आजुहि मोहि हजूर बोलावहु ॥ ऐसेको कह मोहिं बतावति पल भीतर गहिमारौं। मथुरापतिहि सुनोगी तुमही जब वाके धरि केश पछारौं ॥ बार बार दिन हमहि बतावत अपनो दिन न विचारो। सूरइंद्र ब्रज तबहिं बहावत तब गिरि राखिउबारो ॥ ५८ ॥ गूजरी ॥ गिरि वर धरचो आपने घरको। ताहिकि बल तुम दान लेतहौ रोंकि रहतहौ हमको ॥ अपनेही मुख वडे कहावत हमहू जानति तुमको। इह जानाति पुनि गाइ चरावत नितप्रति जातहौ बनको ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर देखो आभूषन सब बनको। सूरदास कांधे कामरिहू जानति हाथ

लकुट कंचनको ॥ ५९ ॥ बिलावल ॥ यह कमरी कमरी करि जानाति । जाके जितनी बुद्धि हृदय में सो तितनी अनुमानति॥या कमरीके येक रोमपर वारौं चीर नील पाटंबर॥सो कमरी तुम निंदति गोपी जो तीनिलोक आडंबर ॥ कमरीके बल असुर संहारे कमरिहिते सब भोग । जाति पांति कमरी सब मेरी सूर सबहि यह योग ॥ ६० ॥ बिलावल ॥ धनि धनि यह कामरिहो मोहन श्यामलालकी। इहै ओढि जात बनहि इहै सेज करतहो तुम मेह बूंद निरवारन इहै छांह घामकी॥इहै उठि गुन करतहै पुनि शिशिर शीत इहै हरति गहनेलै धरति ओट कोट वामकी। इहै जाति इहै पाति परिपाटी यह सिखवति सूरदास प्रभुके यह सब विशरामकी ॥ ६१ ॥ अब तुप सांची बात कही। एतेपर युवतिनको रोंकत मांगत दान दही ॥ जो हम तुमहि कह्यो चाहतही सो श्रीमुख प्रगटायो। नीके जाति उघारि आपनी युवतिन भले हँसायो॥ तुम कमरीके ओढनहारे पीतांबर नहिं छाजत। सूरदास कारे तनु ऊपर कारी कमरी भ्राजत ॥ ६२ ॥ मोसों बात सुनहु ब्रजनारि । एक उपखान चलत त्रिभुवनमें तुमसों आजु उघारि ॥ कबहूँ बालक मुँह नदीजिये मुँहनदीजिये नारि। जोइ मनकरै सोई करिडारै मूँड चढतहै भारि ॥ बात कहत अठिलात जाति सब हँसत देति कर तारि। सूर कहा ए हमको जानै छाछिहि बेचन हारि ॥ १०६३ ॥ यह जानति तुम नंदमहरसुत। धेनु दुहत तुमको हम देखति जबहि जात खरिकहि उत ॥ चोरी करत रहौ पुनि जानति घर घर ढूंढत भांडे। मारगरोकि भये अब दानी वैढँग कबते छांडे ॥ और सुनहु यशुमति जब बांधे तब हम कियो सहाइ। सूरदास प्रभु यह जानति हम तुम ब्रजरहत कन्हाइ ॥ ६४ ॥ आसावरी ॥ को माता को पिता हमारे। कब जनमत हमको तुम देख्यो हँसी लगत सुनि बात तुम्हारे ॥ कब माखन चोरी करि खायो कब बांधे महतारी । दुहत कौनकी गैया चारत बात कही यह भारी तुम जानति मोहिं नंद ढुटौना नंद कहां ते आए। मैं पूरन अविगति अविनाशी माया सबनि भुलाए ॥ यह सुनि ग्वालि सबै मुसकानी ऐसेउ गुणहो जानत। सूरश्याम जो निदर्यो सबही मात पिता नहिं मानत ॥ ६५ ॥ सोरठ ॥ तुमको नंदमहर भरुहाए। माता गर्भ नहीं तुम उपजे तौ कहौ कहांते आए ॥ घर घर माखन नहीं चुरायो ऊखल नहीं बँधाए। हाहाकरि यशुमतिके आगे तुमको हमहि छुराये ॥ ग्वालनि संग संग वृंदावन तुम नहिं गाइ चराये । सूरश्याम दशमास गर्भधरि जननि नहीं तुम जाये ॥ ६६ ॥ गोडी ॥ भक्तहेतु अवतार धर्यो। कर्म धर्मके वश मैं नाहीं योग जप मैंने नकर्यो ॥ दीनगुहारि सुनौ श्रवणनि भरि गर्व वचन सुनि हृदय जरौं। भाव अधीन रहौं सबहीके और नकाहू नेकडरौं ॥ ब्रह्मकोटि आदिलौं व्यापक सबको सुखदै दुखहिहरौं। सूरश्याम तब कही प्रगटही जहां भाव तहँते नटरौं॥ ॥ ६७ ॥ धनाश्री ॥ कान्ह कहांकी बात चलावत। स्वर्ग पताल एक करि राखो युवतिनको कहि कहा बतावत ॥ जो लायक तौ अपने घरको बनभीतर डरपावत। कहा दान गोरसको ह्वैहै सबै नलेहु देखावत ॥ रीती जान देहु घर हमको यतनेही सुखपावत । सूरश्याम माखन दधि लीजै युवतिन कत अरुझावत ॥ ६८ ॥ माखन दधि कह करौं तुम्हारो। मैं मनमें अनुमान करौं नित मोसों कैहै बनिज पसारो ॥ काहेको तुम मोहिं कहतहो जोबन धन ताको कारि गारो। अब कैसे घर जान पाइहो मोको यह समुझाइ सिधारो ॥ सूर बनिज तुम करत सदाई लेखो करिहौं आजु तिहारो ॥ सूहवी ॥ ऐसी कहो बनिजको अटकी । मुख मुख हेरि तरुनि मुसकानी नैन सैन दै दै सब मटकी ॥ हमहू कह्यो दान दधिको कहा माँगत कुँवर कन्हाई। अबलौं कहा मौन

धरि बैठे तबहीं नहीं सुनाई॥ हँसि वृषभानुसुता तब बोली कहा वनिज हम पास। सूरश्याम लेखो करि लीजै जाहिं सबै ब्रजवास॥६९॥ बिलावल॥ कहौ तुमहि हमको कहा बूझति। लैलै नाम सुना वहु तुमहीं मोसों काहे अरूझति॥ तुम जानति मैंहूं कछु जानत जो जो माल तुम्हारे। डारि देहु जापर जो लागै मारग चलौ हमारे॥ इतनेहीको सोर लगायो अब समुझी यह बात। सूरश्यामके वचन सुनहुरी कछु समुझतिहौ बात॥ ७०॥ ये नहिं धौं बूझौ यह लेखो। कहा कहैंगे श्रवणनि सुनिये चरित नेक तुम देखो॥ मन मन हरष भई सब युवती मुख ये बात चलावति। ज्यों ज्यों श्याम कहत मृदुवानी त्यों त्यों अति सुखपावति॥ कोउ काहूको भेद न जानत लोग सकुच उर मानत। सूरदास प्रभु अंतर्यामी अंतर्गतिकी जानत॥ ७१॥ कहो कान्ह कह गथलै हमसों। जाकारण युवती सब अटकी सो बूझतहैं तुमसों॥ लौंग नारियर दाख सुपारी कहा लादे हम आवैं। हींग मिरच पीपरि अजवाइनि ये सब वनिज कहावैं। कूट काइफर सोंठि चिरैता कटजीरा कहुँ देखत॥ आलमजीठ लाख सेंदुर कहुँ ऐसेहि बुधि अवरेखत॥ वाइविरंग वहेरा हरैं कहुँ बैलगोनि व्यापारी। सूरश्याम लरिकाई भूली जोवन भए मुरारी॥ ७२॥ ॥सूहा॥कवन वनिज काहि मोहिं सुनावति। तुम्हरो गथ लादो गयंदपर हींग मिरच पीपरि कहा गावति॥ अपनो वनिज दुरावतहौ कत नाउँ लियो यतनोही। कहा दुरावतिहौ मो आगे सब जानत तुव गोही॥ बहुत मोलको वावा तुह्मारो कैसे दुरत दुराए। सुनहु सूर कछु मोल लेहिंगे कछु इक दान भराए॥ ७३॥ टोडी॥ दधिको दान मेटि यह ठान्यो। सुनहु श्याम अति चतुर भएहौ आजु तुमहि हम जान्यो॥ जो कछु दूध दह्यौ हम देती लैखाते तुम ग्वाल। सोऊ खोइ हाथते बैठे हँसति कहात ब्रजवाल॥ यह सुनि श्याम सबनि करते दधि मटकी लई छँडाई। आपुन खाइ सखन को दीन्हों अति मन हरष बढाई॥ कछुखायो कछु भुँइ ढरकायो चितै रही ब्रजनारि॥ सूरश्याम वन भीतर युवती नएढंग करत मुरारि॥७४॥रामकली॥ प्यारी पीतांबर उर झटक्यो। हरि तोरी मोतिनकी माला कछुगर कछुकर लटक्यो॥ढीठो करन श्याम तुम लागे जाइ गही कटि फेट। आपु श्याम रिस करि अंकमभरि भई प्रेमकी भेट॥ युवतिन घेरि लियो हरिको तब भरि भरि धरि अँकवारि। सखा परस्पर देखत ठाढे हँसत देत किलकारि॥ हाँक दियो करि नंद दोहाई आइ गए सब ग्वाल॥ सूरश्यामको जानत नाहीं ढीठभई हैं बाल॥ ७५॥ रागभैरव॥ हम भई ढीठ भले तुम्हग्वाल॥ दीन्हों ज्वाब दईको चैहो देखौरी यह कहा जंजाल॥ वनभीतर युवतिनकोरोंकत हम खोटी तुम्हरे ये हाल। बात कहनको योंआवतहै बडे सुधर्मा धर्मेहिपाल॥ साखि सखाकी ऐसिय भरिहौ तब आवहु ते जीति भुआल। आयेहैं चढि रिसकरि हमपर सूर हमहि जानन वेहाल॥ ७६॥ बिलावल॥ जानी बात तुम्हारी सबकी। लरिकाईके ख्याल तजौ अब गई बात वह तबकी॥ मारग रोकत रहे यमुनको तेहि धोखेहौ आये। पावहुगे पुनि कियो आपनो युवतिन हाथ लगाये॥ जो सुनिहै यह बात मात पितु तब हमसे कहा कैहैं। सूरश्याम मोतिन लरतोरी कौन ज्वाब हम देहैं॥ ७७॥ बिलावलनट॥ आपुन भई सबै अब भोरी। तुम हरिको पीतांवर झटक्यो उन तुम्हरी मोतिन लर तोरी॥ मांगत दान ज्वाब नहिं देती ऐसी तुम जोवनकी जोरी। डरनहिं मानति नँदनंदनको करति आनि झकझोराझोरी॥ यक तुम नारि गँवारि भलीहौ त्रिभुवन में इनकी सरि कोरी। सूर सुनहु लेहैं छँडाइ सब अबहिं फिरौंगी दौरी दौरी॥ ७८॥ नट॥ कहा बड़ाई इनकी सरि मैं। नंद यशोदाके प्रतिपाले

जानति नीके करिमैं ॥ तुम्हरे कहे सवन डरमान्यो हरिहि गई अति डरिमैं । वसुदेव डारि रातिही भागे आयेहैं शुभघरि मैं । अंग अंगको दान कहतहैं सुनत उठी रिस जरिमैं । तव पीतांवर झटकि लियो मैं सूरश्यामको धरिमैं ॥ ७९ ॥ गौरी ॥ याते तुमको ढीठ कही । श्यामहि तुम भई झिरकन हारी एतेपर पुनि हारि नही ॥ तवते हमहिं देतहौ गारी हमको दाहति आपु दही । वनिज करति हमसों झगरतिहौ कहा कहैं हम वहुत सही ॥ समुझि परी अव कछु जिय जान्यो तातेहौ सव मौन रही । सूरश्याम व्रज ऊपर दानी यहि मारग अव तुम निवही ॥ ८० ॥ ॥ कल्याण ॥ तुम देखत रैहौ हम जैहैं । गोरस वेचि मधुपुरीते पुनि येही मारग ऐहैं ॥ ऐसेही वैठे सव रैहौ वोले ज्वाव नदेहैं । धरि लैहैं यशुमतिं पै हरिको तव धौं कैसे कैहैं ॥ काहेको मोतिनलर तोरी हम पीतांवरलैहैं । सूरश्याम इतरात इते पर घर वैठे तव रैहैं ॥ ८१ ॥ मेरे हठ क्यों निवहन पैहौ । अवतो रोकि सवनिको राख्यो कैसे करि तुम जैहौ । दान लेउँगो भरि दिन दिनको लेखो करि सव देहौं । सौंह करतहौं नंदववाकी मैं केहौं तव जैहौं ॥ आवत जात रहत येही पथ मोसों वैर वढ़ैहौ । सुनहु सूर हमसों हठ मांडति कौन नफा करि लैहौ ॥ ८२ ॥ कान्हरो ॥ कौन वात यह कहत कन्हाई । समुझति नहीं कहा तुम मांगत डरपावत करि नंद दोहाई ॥ डरपावहु तिनको जे डरपहिं तुमते घटि हम नाहीं । मारगछाँडि देहु मनमोहन दधि वेचन हम जाहीं ॥ भलीकरी मोतिनलर तोरी यशुमतिसों हम लैहैं । सूरदास प्रभु इहौ वनत नहिं इतनो धन कहा पैहैं ॥ ८३ ॥ येकहार मोहिं कहा देखावति । नखशिखते अंग अंगनिहारहु ए सव कतहि दुरावति ॥ मोतिन माल जराइको टीको कर्णफूल नकवेसर । कंठसिरी दुलरी तिलरीको और हार एक नवसर ॥ सुभग हमेल कनक अँगिया नग नगन जरितकी चौकी । वाहुठाड कर कंकन वाजूवंद येते परहौ तौकी ॥ छुद्रघंटिका पग नूपुर जेहरि विछिया सव लेखौ । सहज अंग सोभा सव न्यारी कहत सूर ये देखौ ॥ ८४ ॥ जैतश्री ॥ याहूमें कछु वांट तुम्हारो । अचरज आइ सुनहुरी माई भूषण देखि न सकत हमारो ॥ कहो ढिठाई हिएते आपुन की यशुमतिकी नंद । घाटधरचो तुम इहै जानिकै करत ठगनके छंद ॥ जितनो पहिरि आपु हम आई घरहे याते दूनो । सूरश्याम हौ वहुत लोभाने वन देख्यो धौं सूनो ॥ ८५ ॥ गौरी ॥ चीज कहा अव सवै हमारो । जवलौं दान नहीं हम पायो तवलौं कैसे होत तिहारो ॥ आभूषणकी कौन चलावत कंचनघट काहे न उघारो । मदनदूत मोहिं वात सुनाई इनमें भरचो महारस भारो ॥ एक ओर यह अंग अभूषण सव एक ओर यह दान विचारो । सुनहु सूर कहा वाट करैं हम दान देहु पुनि जहां सिधारो ॥ ८६ ॥ कल्याण ॥ श्याम भराये सेरसनागर । दिनद्वै घाट रोकि यमुनाको युवतिनमें तुम भए उजागर ॥ कांधे कामरि हाथ लकुटिया गाइ चरावन जाते । दही भातकी छाक मँगावत ग्वालन सँग मिलि खाते ॥ अव तुम कर नवलासी लीने पीतांवर कटि सोहत । सूरश्याम अव नवल भए तुम नवल नारि मन मोहत ॥ ८७ ॥ गौरी ॥ दान देतकी झगरो करिहौ । प्रथमहि यह जंजाल मिटावहु ता पाछे तुम हमहि निदरिहौ ॥ कहत कहा निदरेसेहौ तुम सहज कहति हम वात । आदि वुन्यादि सवै हम जानति काहेको सतरात ॥ रिस करि करि मटुकी शिर धरि धरि डगरि चलीं सव ग्वालिनि । सूरश्याम अंचल गहि झरकी जैहौं कहा वजारिनि ॥ ८८ ॥ कल्याण ॥ अव तुमको मैं जान न दैहौं । दान लेउँ कौडी कौडी करि वैर आपनो लैहौं ॥ गोरस खाइ वच्यो सो डारचो मटुकी डारी फोरि । दैदै गारि नारि झकझोरी चोलीके वँदतोरि ॥ हँसत सखा करतारी दैदै वनमें रोकी नारि । सुनत

लोग घरते आवहिंगे सकिहौ नहीं सम्हारि ॥ घरके लोगनि कहा डरावत कंसहि आनि बुलाइ । सूर सबै युवतिनके देखत पूजा करौं बनाइ॥८९॥गौरी॥तो तुमहीहौ सबके राजा। तो बैठौ सिंहासन चढ़िकैं चमर छत्र शिर भ्राजा॥मोर मुकुट मुरली पीतांबर छाँडिदेहु नटवरको साजा। वेनु विषान शृंगक्यों पूरत बाजे नौबाति बाजा॥यह जो सुनै हमहु सुखपावै संगकरै कछु काजा। सूरश्याम ऐसी बातें सुनि हमको आवति लाजा ॥ ९० ॥ कल्याण ॥ तुम्हारे चित रजधानी नीकी । मेरे दास दासनिके चेरे तिनको लागति फीकी ॥ ऐसी कहि मोहिं कहा सुनावति तुमको इहै अगाध । कंस मारि शिरछत्र धरावों कहा तुच्छ यह साध ॥ तवही लौं यह संग तिहारो जबलगि जीवत कंस । सूरश्यामके मुख यह सुनि तब मन मन कीन्हो संस ॥ ९१ ॥ जैतश्री ॥ भली करी हरि माखन खायो। इहौ मानि लीनी अपने शिर उबरो सो ढरकायो॥ राखी रही दुराइ कमोरी सोलै प्रगट देखायो। यह लीजै कछु और मँगावें दान सुनत रिसपायो॥ दानदियें विनु जान नपैहौं कबमैं दान छुटायो। सूरश्याम हठ परे हमारे कहो नकहा लदायो ॥९२॥ धनाश्री॥लैहौं दान इननको तुमसों। मत्त गयंद हंसते तुमसोंहैं कहा दुरावति तुमसों॥केहरि कनक कलस अमृतके कैसे दुरै दुरावति।विद्रुम हेम वज्रके किनुका नाहिन हमहि सुनावति ॥ खग कपोत कोकिला कीर खंजन चंचल मृगजान ति ॥ मणि कंचनके चित्र जरेहैं एतेपर नाहिं मानति। सायक चाप तुरय बनिजातिहौ लिये सबै तुम जाहू ॥ चंदन चमर सुगंध जहाँ तहँ कैसे होत निवाहू ॥ यह बनिजाति वृषभानु सुता तुम ह मसों वैर बढ़ावति। सुनहु सूर एतेपर कहतिहै हमधौं कहा लदावति ॥ ९३ ॥ सोरठ ॥ यह सुनि चकृतभई ब्रजवाला। तरुणी सब आपुसमें बूझति कहा कहत गोपाला । कहां तुरंग कहां गज के हरि कहां हंससरोवर सुनिये। कंचनकलस गढाये कब हम देखे धौं यह गुनिये॥ कोकिल कीर कपोत बननमें मृग खंजन इक संग। तिनको दान लेतहै हमसों देखहु इनको रंग ॥ चंदन चौंर सु गंध बतावत कहां हमारे पास। सूरदास जो ऐसे दानी देखिलेहु चहुँ पास ॥ ९४ ॥ गुनकरी ॥ भू लिरहे तुम कहा कन्हाई । तिनको नाउलेत हम आगे जो सपने कहुँ दृष्टि नआई॥ हैवर गैवर सिं ह हंसबर खग मृग कँहहैं हम लीन्हे । सायक धनुष चक्र सुनि चकृत चमर न देखेचीन्हे ॥ चंद न और सुगंध कहतहौ कंचन कलस बतावहु । सूरश्याम ये सब जो ह्वैहै तवहिं दान तुप पावहु ॥ ९५ ॥ गूजरी ॥ इतने सबै तुम्हारे पास। निरखि न देखहु अंग अंग अब चतुराई के गांस॥ तुर तही निरुवारि डारहु करति कहत अवेर । तुमकहोकछु हमहुँ बोलैं घरहि जाहु सवेर। कनक तुम परतक्ष देखहु सजे नवसत अंग । सूर तुमसों रूप जोवन धर्‍यो एकहि संग ॥ ९६ ॥ विलावल ॥ प्र गटकरौ सब तुमहि बतावें। चिकुर चमर घूघटहै वरवर भुवसारंग देखावैं॥वाण कटाक्ष नयन खंजन मृग नासा शुक उपमांउ । तरिवनचक्र अधर विद्रुम छवि दशन वज्र कनठांउं ॥ ग्रीव कपोत को किला वाणी कुच घट कनक सुभाउ। जोवनमदरसअमृत भरेहैं रूप रंग झलकाउ ॥ अंग सुगंध बसन पाटंवर गनि गनि तुमहि सुनाउ। कटि केहरि गयंदगति सोभा हंससहित यकनाउँ। फेरकिये कैसे निवहतिहै घरहिगएकहा पाउँ ॥ सुनहु सूर यह वानिज तुम्हारे फिरि फिरि तुमहि मनाउँ ॥ नट ॥९७॥ माँगत ऐसे दान कन्हाई।अब समुझी हम बात तुम्हारी प्रगट भई कछुधौं तरुनाई॥यहि लाल च अँकवारि भरतहौ हार तोरि चोली झटकाई।अपनी ओर देखि धौं लीजैं ता पाछे करियै वरिआई॥ सखालियेतुम घेरत पुनि पुनि बनभीतर सब नारि पराई।सूरश्याम ऐसी नबूझियै इनिबातनि मर्यादा जाई ॥९८॥ नट हमपर रिस करति ब्रजनारि। बात सूधे हम बतावत आपु उठत पुकारि॥कबहुँ

मर्यादा घटावति कबहुँ देहै गारि । प्रातते झगरो पसारो दानदेहु निवारि ॥ बडे घरकी बहू बेटी करति वृथा झवारि । सूर अपनो अंश पावै जाहिंघर झखमारि ॥ ९९ ॥ सारंग ॥ तुमहि उलटि हमपर सतराने। जो कछु हमको कहन बूझिए सो तुम कहि आगे अतुराने ॥ यह चतुराई कहा पढी हरि थोरे दिन अति भये सयाने। तुमकोलाज होतकी हमको वात परै जो कहुँ महराने॥ऐसो दान और पै मांगहु जो हमसों कहौ छविछाने । सूरदास प्रभु जानदेहु अब बहुरि कहौगे कालि विहानै ॥ ११०० ॥ श्यामहि बोलि लियो ढिग प्यारी । ऐसी बात प्रगट कहुँ कहिये सखनि मांझ कत लाजन मारी ॥ एक ऐसेहि उपहास करत सब तापर तुम यह बात पसारी । जातिपांतिके लोग हँसिहिंगे प्रगट जानिहै श्याम भतारी ॥ लाजन मारतहौ कत हमको हाहा करति जाति बलिहारी । सूरश्याम सर्वज्ञ कहावत मात पितासों द्यावत गारी ॥ १ ॥ जबहि ग्वारि यह बात सुनाई । सखा सबनि तबहीं लखि लीन्ही सदा श्यामके प्रकृत सुभाई॥सुनहुँ ग्वारि इकबात सुनावों जो तुम्हरे मन आवै। तुम प्रति अंग अंगकी सोभा देखत हरिसुख पावै ॥ तुम नागरी नवल नागर वे दोऊ मिलि करौ विहार । सूरश्यामश्यामा तुम एकै कहा हँसिहै संसार॥२॥नट ॥ नंदसुवन यह बात कहावत।आपुन जोबन दान लेतहै तापर जोइ सोइ सखनि कहावत ॥ वैदिन भूलिगए हरि तुमको चोरी माखन खाते । खीझतही भरिनयन लेतहै डरडरात भजि जाते ॥ यशुमति जब ऊखलसों बांधति हमही छोरति जाइ । सूरश्याम अब बडे भयेहौ जोबनदान सुहाइ ॥ ३ ॥ टोडी ॥ लरिकाईकी बात चलावति । कैसी भई कहा हम जानै नेकहु सुधि नहिं आवाति॥ कब माखन चोरी करि खायो कब बांधे धौं मैया। भले बुरेको मात पिता तन हरषतही दिन जैया ॥ अपनी बात खबरि करि देखहु न्हात यमुनके तीर । सूरश्याम तब कहत सबनिके कदम चढाए चीर ॥ ४ ॥ गूजरी ॥ सबै रही जलमांझ उघारी । बार बार हाहाकारि थाकीं मैं तट लिये हँकारी॥आई निकसि बसन बिनुतरुनी बहुत करी मनुहारि । कैसे हास भए तब सबके सो तुम सुरति बिसारि ॥ हमहि कहति दधि दूध चुराये अरु बांधे महतारी । सूरश्यामके भेद वचन सुनि हँसि सकुचीं ब्रज नारी ॥ ५ ॥ कहाभए आति ढीठ कन्हाई।ऐसी बात कहत सकुचत नहिं कहाधौं अपनी लाज गवाई॥जाहु चले लोगनिके आगे झूठी वाणी कहत सुनाई।तुम हँसि कहत ग्वाल सुनिकै सब घर घर कैहैं जाई॥बहुत होहुगे दशहि वरसके बात कहतहौ बनै बनाई।सूरश्याम यशुमतिके आगे इहै बात सब कैहैं जाई॥६॥हमीर॥झूठीबात कहा मैं जानौं।जो हमको जैसेही भजेरी ताको तैसेहि मानौं।तुम पाति क्रियो मोहिको मनदै मैंहौं अंतर्यामी योगीको योगी ह्वै दरशौं कामीको ह्वै कामी ॥ हमको तुम झूठे करिजानति तौ काहे तप कीन्हो। सुनहु सूर अब निठुर भई कत दान जात नहिं दीन्हों ॥ ७ ॥ गौरी ॥ दान सुनत रिस होइ कन्हाई । और कहौ सो सब सहि लेहैं जो कछु भली बुराई ॥ महतारी तुम्हरीके वे गुण उरहन देत रिसाई । तुम नीके ढँग सीखे बनमें रोकत नारि पराई ॥ आवन जावन पावत कोऊ तुम मगमें घटवाई । सूरश्याम हमको विरमावत खीझत वहिनी माई ॥ ८ ॥ काहेको तुम झेर लगावति।दानदेहु घर जाहु वेंचि दधि तुमहीको यह भावाति ॥ प्रीति करौ मोसों तुम काहेन वानिज कराति ब्रजगाउँ । आवहु जाहु सबै यहि मारग लेत हमारो नाउँ॥लेखौ करौ तुमहि अपने मन जोइ देहो सोइ लेहौं।सूर सुभाइ चलहुगी जब तुम पुनिधौं मैं कहौं कैहौं ॥ ९ ॥ कान्हरो ॥ सुनहु आइ हरिके गुण माई । हम भई वानि जारिनि आपुन दानि भए कुँवर कन्हाई ॥ कहा वनिज लै आई धौं हम ताको मांगत दान । कालिहिके ढँग पुनि आएहै नाहिं जानत कछु आन ॥ तुम गँवारि एही मग आवति जानि बूझि गुण

इनिके। सूरश्याम सुंदर बहु नायक सुखदायक सबहिनके॥ १० ॥ टोडी॥ काहेको हमसों हरि लागत। बातहि कछू खोल रस नाही को जानै कहा मांगत॥ कहा स्वभाउ पर्यो अबहींते इनि बातन कछु पावत। निपट हमारे ख्याल परे हरि बनमें नितहि खिझावत॥ पैंडो देहु बहुत अब कीनों सुनत हँसहिंगे लोग। सूर हमहि मारग जिनि रोकहु घरते लीजे बोग॥ ११॥ सुही ॥ अब लों इहै कर्यो तुम लेखो। मोको ऐसी बुद्धि बतावत करकंकन दर्पण लै देखो ॥ आपुहि चतुरि आपुही सब कछु हमको करति गँवार। औगहै लेत फिरो इनके घर ठाढे ह्वै हैं द्वार ॥ घाट छांडि जैहौ तबलैहों ज्वाब नृपति कहा देहों। जादिनते यहि मारग आवति तादिनते भरिलेहों ॥ इनि की बुद्धि दान हम पहिरो काहेन घर घर जैहो। सूरश्याम तब कहत सखिनसों जान कौन विधि पैंहो॥ १२ ॥ टोडी ॥ भली भई नृप मान्यो तुमहू। लेखो करै जाइ कंसहिपै चले संग तुम हमहू॥ अबलों हम जानीही घरही पहिर्यो। तुमदान कालि कह्यो हो दान लेनको नंदमहरकी आन॥ तो तुम कंस पठाएहैं ह्यां अब जानी यह बात। सूरश्याम सुनि सुनि यह वाणी भौंह मोरि मुसकात ॥ १३ ॥ आसावरी ॥ कहा हँसत मोरतहो भौंह। सोई कह्यो मनहि कहि आई तुमहि नंदकी सौंह॥ और सौंह तुमको गोधनकी सौंह माइ यशुमतिकी । सौंह तुमहि बलदाऊकीहै कहो बात वा मनकी ॥ बार बार तुम भौंह सकोर्यो कहा आपु हँसि रीझे । सूरश्याम हम पर सुख पायो की मनही मन खीझे ॥१४॥रामकली॥ हँसत सखनसों कहत कन्हाई। मैयाकी बाबाकी दाऊजीकी सौंह दिवाई॥ कहति कहा काहे हँसि हेर्यो काहे भौंह सकोर्यो। यह अचरज देखौ तुम इनिको कब हम वदन मरोर्यो॥ ऐसीबातनि सौंह दिवावति अधिक हँसी मोहिं आवत। सूरश्याम कहि श्री दामासों तुम काहेन समुझावत॥ १५ ॥ धनाश्री ॥ श्रीदामा गोपिन समुझावत। हँसत श्यामके तुम कहा जान्यो काहे सौंह दिवावत॥तुमहूं हँसो आपने सँग मिलिं हम नहिं सौंह दिवावैं। तरुणिनकी यह प्रकृति अनैसी थोरेहि बात खिसावैं ॥ नान्हे लोगानि सौंह दिवावहु वै दानी प्रभु सबकोसूरश्यामको दान देहुरी मांगत ठाढे कबके॥१६ ॥ जैतश्री ॥ हम जानति वै कुँवर कन्हाई। प्रभु तुम्हरे सुख आजु सुनी हम तुम जानत प्रभुताई ॥ प्रभुता नहीं होति इनि बातनि मही दहीके दान। वै ठाकुर तुम सेवक उनके जान्यो सबको ज्ञान ॥दधिखायो मोतिन लर तोर्यो घृत माखन सोउ लीजे। सूरदास प्रभु अपने सदका घरहि जान हम दीजे॥ १७ ॥ तुम घर जाहु दानको दैहै। जेहि बीरा दै मोहिं पठासो मोसों कहा लैहै॥तुम गृहजाइ बैठि सुखकरिहो नृप गारी को खैहै। अबहीं बोलि पठावै गोरी तासन्मुखको जैहै ॥ जान कहै तुमको तुम जैहो विधिना कैसेसैहै। सूर मोहिं अटक्योहै नृपवर तुमविनु कौन छँडैहै॥ १८॥ नृपको नाँउ लेत तेहि सुख जेहि सुख निंदा कालिकरी। आपुनतौ राजनिके राजा आजु कहा सुधि मनहि परी॥ भले श्याम ऐसी तुम कीनी कहा कंसको नाउँलियो। जब हम सौंह दिवावन लागीं तबहिं कंस पर रोपकियो॥ जाकोनींदि बंदियै सो पुनि वह ताकोनिंदरे। सूर सुनी वह बात कालिकी तब जानी इनि कंस डरै ॥१९॥ आसावरी ॥ कहा कहति कछु जानि न पायो।कब कंसहि धौं हम कर जोर्यो कब वाको हम माथ नवायो॥ कबहूं सौंह करत देख्यो मोहिं लेत कबहुँ मुखनाऊं। निपटहि ग्वारि गँवारि भई तुम बसति हमारे गाऊं॥ कहा कंस केतने लायकको जाको मोहिं देखावति।सुनहु सूर यहि नृपके हमहैं इह तुम्हरे मन आवति॥ २० ॥ टोडी॥ कौन नृपति जाके तुमहौ। ताको नाउँ सुनावहु हमको यह सुनिकै अति पतिभो॥ यह संसार भुवन चौदह भरि कंसहिते नहिं दूजो। सो नृप कहा रहत

सुनि पावैं तव ताहीको पूजो ॥ कहा नाउँ केहि गाँउ बसतहै ताहीके ह्वैरहिए । सूरदास प्रभु कहे वनेगी झूठे हमहि निदरिए ॥ २१ ॥ मोसों सुनहु नृपतिको नाउँ । तिहूं भुवन भरि गम्यहै जाको नर नारी सव गाउँ ॥ गण गंधर्व वश्यवाहीके अवर नहीं सरिताहि ॥ उनकी स्तुति करौं कहांलगि मैं सकुचतहौं जाहि ॥ तिनहीको पठयो मैं आयो दियो दानको वीरा । सूररूप जोवन धन सुनिकै देखत भयो अधीरा ॥ २२ ॥ गौरी॥ पाई जाति तुम्हारे नृपकी जैसे तुम तैसे वो ऊहौं कहां रहे दुरिजाइ आजुलौं एई ढंग गुणके सोऊहैं॥ यह अनुमान कियो मनमें हम येकहि दिन जनमें दोऊहैं । चोरी अपमारग वटपारचो इनि पटतरके नाहिं कोऊहैं ॥ श्याम बनी अव जोरी नीकी सुनहु सखी मानत तोऊहैं । सूरश्याम जितने रंग काछत युवती जन मनके गोऊहैं ॥ २३ ॥ ठगाति फिराति ठगिनी तुम नारी । जोइ आवाति सोइ सोइ कहडाराति जाति जनावाति दै दै गारी ॥ फँसिहारिनि वटपारिनि हम भईं आपुन भए सुधर्मी भारी । फंदाफाँसिकमानवानसो काहूडारत देख्यो मारी॥जाकेमन जैसोई वरतै मुखवानी कहिदेत उघारी॥सुनहु सूर प्रभुनी के जान्यो व्रज युवती तुम सव वटपारी ॥ २४ ॥ सुही ॥ अपने नृपको इहै सुनायो । व्रजनारी वटपारिनि हैं सव चुगली आपुहि जाइ लगायो॥राजा बड़े बात यह समुझी तुमको हमपर धौंस पठायो॥फाँसि हारिनि कैसे तुम जानी तुम कहुँ नाहिंन प्रगट देखायो॥व्रजवनिता फँसिहारी जो सव महतारी काहे न गनायो ॥ फंदा फांसि धनुप विप लाडू सूरश्याम नाहिं हमहिं वतायो॥२५॥भैरव॥फंदा फांसि वतावहु जौ । अंगनि धरे छपाइ जहां जो प्रगट करौ सव दीहौं तौ ॥ प्रथमहि शीश मोहिनी डाराति ऐसे ताहि करत वशहौ । विपलाडू दरशावति लै पुनि देह दशा पुनि विसरति ज्यो ॥ ता पाछे फंदा गर डाराति एहिभांतिनि करि मारतिहो । सुनहु सूर ऐसे गुण तुम्हारे मोसों कहा उचारतिहौ२६ प्रगट करौ यह वात कन्हाई । वान कमान कहां केहि मारचो काके गर हम फांसि लगाई ॥ काके शिर पढ़ि मंत्र दियो हम कहां हमारे पाशदिनाई । मिलवत कहां कहांकी वातैं हँसत कहति अति गई सकुचाई॥तव मानैं सव हमहुँ वतावहु कहो नहीं जो नंद दोहाई । सूरश्याम तव कह्यो सुनहुगी एक एक करि देउँ वताई ॥ २७ ॥ रागिनी ॥ मोसों कहा दुरावति नारी । नयनशयन दै चितहि चुरावति इहै मंत्र टोना शिरडारी ॥ भौंह धनुप अंजन गुन वान कटाक्षनि डाराति मारि। तरिवन श्रवन फांसि गर डारति कैसेहुँ नहीं सकत निरवारि ॥ पीन उरोज सुख नैन चखावाति इह विप मोदक जानत झारि । घालति छुरी प्रेमकी वानी सूरदासको सकै सँभारि ॥ २८ ॥ टोडी ॥ अपनोगुण औरनि शिरडारत । मोहन योवन मंत्र यंत्र टोना सव तुमपर वारत ॥ तनुत्रिभंग अंग अंगमरोरनि भौंह वंक करि हेरत । मुरली अधर वजाइ मधुर सुर तरुनी मृगवन घेरत ॥ नटवर भेप पीतांवर काछे छैलभए तुम डोलत । सूरश्याम रावरे ढंगए अवरनिको ढँगवोलत ॥ २९ ॥ जानी वात मौन धरि रहिए । इहै जानि हमपर चढि आए जो भावै सो कहिए ॥ हम नहिं विलग तुम्हारो मान्यो तुम जनि कछु मन आनो । देखहु एक दोइ जनि भापहु चारि देखि दुइगानो॥दोवल देति सवै मोहीको उन पठयो मैं आयो । सूर रूप जोवनकी चुगली नैननि जाइ सुनायो ॥ ३० ॥ विलावल ॥ तव रिसकरिकै मोहिं वोलायो । लोचन दूत तुमहिं इहि मारग देखत जाइ सुनायो । सोइ सव महलनते सुनि वानी जोवन महलनि आयो । अपने कर वीरा मोहिं दीन्हो तुरत मोहिं पहिरायो ॥ वैठ्योहै सिंहासन चढिकै चतुराई उपजायो । मनतरंग आज्ञाकारी भृत सौतिनको तुमही लगायो॥तिनको नाम अनंग नृपतिवर सुनहु वात सुखपायो । सूरश्याम मुखवात सुनत यह

युवतिन तनु विसरायो ॥३१॥ सुही ॥ ब्रज युवती सुनि मगन भई। यह वानी सुनि नंदसुवन मुख मन व्याकुल तन शुधीगई ॥ को हम कहां रहति कहां आई युवतिनके यह सोच पर्यो। लागी काम नृपतिकी सांटी जोवन रूपहि आनि अर्यो॥ तृपितभई तरुणी अनंगडर सकुचि रूप जोव नहिं दियो। सूरश्याम अब शरन तुम्हारे हृदय सबनि यह ध्यान कियो॥३२॥ जयतश्री ॥ मन यह कहति देह विसरायो। यह धन तुमहीको साचि राख्यो तेहि लीजै सुखपायो॥ जोवनरूप नहीं तुम लायक तुमको देत लजाति। ज्यों वारिध आगे जल किनिका विनय करति एहि भांति ॥ अमृत रस आगे मधुरंचक मनहिं करत अनुमान। सूरश्याम सोभाकी सींवा को पटतर को आन ॥३३॥ अंतर्यामी जानिलई। मनमें मिले सबनि सुख दीन्हों तब तनुकी कछु सुरति भई॥ तब जान्यो बनमें हम ठाढी तनु निरख्यो मन सकुचि गई।कहति परस्पर आपुसमें सब कहा रही हम काहि रई॥ श्याम विना ये चरित करै को यह कहिकै तनु सौंपदई। सूरदास प्रभु अंतर्यामी गुप्तहि जोवनदान लई॥३४॥ रामकली॥ यह कहि उठे नंदकुमार। कहा ठगीसी रही बाला पर्यो कौन विचार॥ दानको कछु कियो लेखो रही जहां तहां सोचि। प्रगट करि हमको सुनावहु मेटि जिहिदै दोचि॥बहुरि यहि मग जाहु आवहु राति सांझ सकार। सूर ऐसो कौन जो पुनि तुमहि रोक नहार॥३५॥गूजरी॥हमहि और सो रोकै कौन। रोकनहारो नंदमहर सुत कान्ह नाम जाकोहै तौन॥ जाके बलहै काम नृपतिको ठगत फिरत युवतिनको जौन। टोना डारि देत शिर ऊपर आपु रहत ठाढो ह्वै मौन॥सुनहु श्याम ऐसी न बूझिए बानि परी तुमको यह कौन। सूरदास प्रभु कृपाकरहु अब कै सेहु जाहि आपने भौन॥ ३६॥ सुही॥ दान मानि घरको सब जाहु। लेखो मैं कहुँ कहुँ जानतहौं तुम समुझे सब होत निवाहु॥ पछिलो देहु निवारि आजु सब पुनि दीजो जब जानौ कालि। अब मैं कहत भलीहौं तुमसों जो तुम मोको मानो ग्वालि॥ वृंदावन तुम आवत डरपति मैं दैहौं तुमको पहुँ चाइ। सुनहु सूर त्रिभुवन बश जाके सो प्रभु युवतिनके वशआइ ॥ ३७ ॥ को जानै हरि चरित तुम्हारे। जब हूं दान नहीं तुम पायो मन हरिलिये हमारे॥ लेखो करि लीजै मनमोहन दूधदह्यो कछु खाहु। सदमाखन तुम्हरेहि मुख लायक लिजै दान उगाहु॥तुम खैहौ माखन दधि मोहन हम सब देखि देखि सुख पावैं। सूरश्याम तुम अब दधि दानी कहि कहि प्रगट सुनावैं॥ ३८ ॥ गुंड ॥कान्ह माखन खाहु हम सब देखैं। सद्य दधि दूध ल्याई अवटि अबहि हम खाहु तुम सफल करि जन्म लेखैं॥ सखा सब बोलि बैठारि हरि मंडली वनहिंके पात दोना लगाये। देत दधि परुसि ब्रजनारि जेवत कान्ह ग्वाल सँग बैठि अति रुचि चढ़ाये। धन्यदधि धन्य माखन धन्य गोपिका धन्य राधा वश्यहै मुरारी। सूर प्रभुके चरित देखि सुर गन थकित कृष्ण संग सुख करति घोषनारी३९॥जैतश्री॥ माखन दधि हरि खात ग्वाल सँग। पातनिके दोना सबके कर लेत पतोखनि मुख मेलत रँग॥ मटुकिनते लैलै परुसतिहैं हर्ष भरी ब्रजनारि। यह सुख तिहूं भुवन कहुँ नाहीं दधि जेंवत बनवारि॥ गोपी धन्य कहति आपुनको धन्य दूध दधि माखन। जाको कान्ह लेत मुख मेलत कियोसबनि संभाषन॥ जो हम साध करति अपने मन सो सुख पायो नीके। सूरश्याम पर तन मन वारति आनँद जी सबहीके॥ ४०॥ देवगंधार ॥ गोपिका अति आनँदभरी। माखन दधि हरिखात प्रेमसों निरखति नारि खरी॥ कर लैलै मुख परस करावत उपमा वढी सुभाइ। मानहु कंज मिलतहूं शशिको लिये सुधा करौ करआइ॥ जाकारण शिव ध्यान लगावत शेष सहसमुख गावत। सोई सूर प्रगट ब्रजभीतर राधा मनहि चुरावत॥ ४१॥ रामकली ॥ राधासों माखन हरि माँगत। औरनिकी

मटुकीको खायो तुम्हरो कैसे लागत ॥ लैआई वृषभानुसुता हँसि सदलौनी है मेरो। लै दीन्हों अपने कर हरिमुख खात अल्प हँसि हेरो ॥ सबहिनते मीठो दधिहै यह मधुरे कह्यो सुनाइ। सूरदास प्रभु सुख उपजायो ब्रजललना मनभाइ॥ रामकली॥ मेरे दधिको हरि स्वाद नपायो। जानत इन गुजरिनिको सोल्यो छिडाइ मिलि ग्वालनि खायो। धौरी धेनु दुहाइ छानिपय मधुर आंच मैं अवटि सिरायो ॥ नई दोहनी पोंछ पखारी धरि निर्धूम खीरनि परतायो। तामें मिले मिश्रित मिश्रीकरि दैकपूर पुट जावन नायो ॥ सुभग ढकनिया ढांपि बांधि पट जतन राखि छींके समदायो ॥ हौं तुम कारण मैं आई गृह मारगमें नकहूं दरशायो। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि कियो कान्ह ग्वालनि मन भायो ॥ ४२ ॥ नट ॥ गोपिन हेतु माखन खात । प्रेमके वश नंदनंदन नेक नहीं अघात ॥ सबै मटुकी भरी वैसेहि प्रेम नहीं सिरात। भाव हृदये जान मोहन खात माखन जात ॥ एकनिकर दधि दूध लीने एकनि करि दधि जात। सूर प्रभुको निरखि गोपी मनहि मनहि सिहात॥ ४३ ॥ बिहागरो॥ गोपी कहति धन्य हम नारि। धन्य दूध धनि दधि धनि माखन हम परुसति जेंवत गिरिधारि॥ धन्य घोष धनि निशि धनि वह धनि धनि गोकुल प्रगटे बनवारि। धन्य सुकृत पाछिलो धन्य धनि धन्य नंद यशुमति महतारि ॥ धनि धनि ग्वाल धन्य वृंदावन धन्य भूमि यह अति सुखकारि। धन्य दान धनि कान्ह मँगैया धन्य सूर तृण द्रुम बन डारि ॥ ४४ ॥ नट ॥ गण गंधर्व देखि सिहात धन्य ब्रजललनानि करते ब्रह्म माखन खात ॥ नहीं रेख नरूप नहिं तनु बरन नहिं अनुहारि। मात पितु दोऊ न जाके हरतमरत नजारि॥ आपु करता आपु हरता आपु त्रिभुवन नाथ । आपुही सब घटके व्यापी निगम गावत गाथ॥ अंगप्रति प्रति रोम जाके कोटि कोटे ब्रह्मंड।कीट ब्रह्म प्रयंत जल थल इनहिते यह मंड ॥ विश्व विश्वंभरन एई ग्वालसंग बिलास। सोइ प्रभु दधि दान मांगत धन्य सूरजदास ॥४५॥ रामकली ॥ कंसहेतु हरि जन्म लियो। पापहि पाप धरा भई भारी तब हम सबनि पुकारकियो ॥शेषसैन जहँ रमा संग मिलि तहां अकाश भई यह बानी। असुर मारि भुवभार उतारौं गोकुल प्रगटौं आनी ॥ गर्भदेवकीके तनु धरिहौं यशुमतिको पय पीहौं। पूरब तप बहु कियो कष्टकरि इनिको बहुतऋनीहौं॥यह बानी कहि सूर सुरनको अब कृष्णा अवतार।कह्यो सबनि ब्रज जन्म लेहु सँग हमरे करहु बिहार४।गौरी ॥ ब्रह्म जिनिहि यह आयसु दीन्हो।तिन तिन संग जन्म लियो ब्रज में सखी सखा करि परगट कीन्हों।।गोपी ग्वाल कान्ह दोइ नाहीं ये कहु नेक नन्यारे।जहां जहां अवतार धरत हरि ये नहिं नेक बिसारे।येकै देह बिहार करि राखे गोपी ग्वाल मुरारि। यह सुख देखि सूरके प्रभु को थकित अमर सँगनारि॥४७॥गौरी॥अमरनारि स्तुति करै भारी।एकनिमिष ब्रजवासिन को सुख नहिं तिहुँ भुवन बिचारी ॥ धन्य कान्ह नटवर वपु काछे धन्य गोपिका नारी । एक एकते गुण रूप उजागरि श्याम भावती प्यारी॥ परुसति ग्वारि ग्वार सब जेंवत मध्य कृष्ण सुखकारी । सूरश्याम दधि दानी कहि कहि आनँद घोषकुमारी ॥ ४८ ॥ बिलावल ॥ धन्य कृष्ण अवतार ब्रह्म लियो। रेख नरूप प्रगट दरशन दियो ॥ जल थलमें कोउ और नहीं बियो । दुष्टन बधि संत निको सुख दियो ॥१॥ जो प्रभु नरदेही नहिं धरते। देवै गर्भ नहीं अवतरते ॥ कंससोक कैसे उर टरते। मात पिता दुरितक्यों हरते॥२॥जो प्रभु ब्रजभीतर नहिं आवै। नंद यशोदा क्यों सुख पावै॥ पूरबतप कैसे प्रगटावै। वेदवचन कैसे ठहरावै॥३॥ जो प्रभु भेष धरै नहि बालक। कैसे होइ पूतना घालक ॥ अँगुठा पिवत शकट संहारक। तृणा अकास शिलापर डारक ॥ ४ ॥ जो प्रभु ब्रजमास

न न चोरावै। क्यों गोपिनको आपु जनावै॥ भुजा उलूखल नहीं बँधावै। जमलामोक्ष कौन विधि पावै॥ ५॥ सो प्रभु दधिदानी कहवावै। गोपिनको मारग अटकावै॥ करिलेखो कै दान सुनावै। आपुन खीझै उनहिं खिझावै॥ ६॥ ब्रजवासी जो धन्य कहावै। जहां श्याम दधि दान लगावै॥ मांगि खात आनंद बढावै। युवतिनसों कहि कहि परुसावै॥ ७॥ तेई हरि नटवर वपु काछे। मोर मुकुट पीतांवर आछे॥ग्वालसखा ठाढे सब पाछे। सूरश्याम गोपिन सुख साछे॥८॥४९॥सुही॥ यह महिमा येईपै जानै। योग यज्ञ तप ध्यान न आवत सो दधि दान लेत सुखमानै॥ खात परस्पर ग्वालन मिलिकै मीठो कहि कहि आपु वखाने। विश्वंभर जगदीश कहावत तेदधि दोना माँझ अघाने॥ आपुहि हरता आपुहि करता आपु वनावत आपुहि भाने। ऐसे सूरदासके स्वामी ते गोपिनके हाथ विकाने॥ ५०॥ रामकली॥ धनि वडभागिनी ब्रजनारि। खात लै दधि दूध माखन प्रगट जहां मुरारि॥ नहीं जानत भेद जाको ब्रह्मा अरु त्रिपुरारि। शुक सनक मुनि येउ न जानत निगम गावत चारि॥ देखि सुख ब्रजनारि हरिसँग अमर रहे भुलाइ। सूर प्रभुके चरित अगनित वरनि कापै जाइ॥५१॥विलावल॥ब्रजवनिता यह कहति श्यामसों माखन दूध दह्यो अरुल्यावै॥मटुकि निते हम देहिं खाहु तुम देखि देखि नैननिं सुखपावै॥गोरस वहुत हमरे घर घर दान पाछिलो लेहु। खायो जौन दान आजुहिको मांगतहै सव देहु॥ सवै लेहु राखहु जिनि वाकी पुनि नपाइहो मांगे आजुहिलेहु सवै भरिदैहैं कहति तुम्हारे आगे॥ कह्यो श्याम अव भई हमारी मनहि भई परतीति। जव चैहैं तव मांगि लेहिंगे हमहिं तुम्हैंभई प्रीति॥ वेचहु जाइ दूध दही निधरक वाट वाट डर नाहीं। सूरश्याम वशभई ग्वारिनी जात वनत घरनाहीं॥ ५२॥ टोडी॥ सुनहु सखी मोहन कहा कीन्हों। येक येक सों कहति वात यह दान लियो की मन हरि लीन्हों॥ यहतौ नाहिं वदी हम उनसों बूझहु धौं यह वात। चक्रतभई विचार करत यह विसरि गई सुधि गात॥उमचि जाति तवहीं सव सकुचति वहुरि मगनह्वैजाति। सूरश्याम सों कहौं कहा यह कहत न वनत लजाति॥५३॥धनाश्री॥ श्याम सुनहु एक वात हमारी॥ढीठो वहुत कियो हम तुमसों सो वकसो हरि चूक हमारी॥मुख जो कही कटुक सव वानी हृदय हमारे नाहीं। हँसि हँसि कहति खिझावति तुमको अति आनँद मनमाहीं॥ दधि माखनको दान और जो जानो सवै तुम्हारो। सूरश्याम तुमको सव दीनों जीवनप्राण हमारो॥ ५४॥ नंदकुमार कहा यह कीन्हौं। बूझति तुमहि कहौ धौं हमसों दान लियो की मन हरिलीन्हौं॥ कछू दुराव नहीं हम राख्यो निकट तुम्हारे आई। येते पर तुमही अव जानौं करनी भली वुराई॥ जो जासों अंतर नाहिं राखै सो क्यों अंतर राखै। सूरश्याम तुम अंतर्यामी वेद उपनिषद भाषै॥ ५५॥टोडी॥ सुनहु वात युवती इक मेरी। तुमते दूरि होत नहिं कतहूँ तुम राखौ मोहिं घेरी॥ तुम कारण वैकुंठ तजतहौं जनमलेत ब्रजआई। वृंदावन राधा सँग गोपी यह नहिं विसरचो जाई॥तुम अंतर अंतर कहा भाषति एक प्राण द्वै देह। क्यों राधा व्रज वसे विसारचो सुमिरि पुरातन नेह॥ अव घर जाहु दान मैं पायो लेखो कियो नजाइ। सूरश्याम हँसि हँसि युवतिनसों ऐसी कहत वनाइ॥५६॥नट॥ घर तनु मनहिं विना जात। आपु हँसि हँसि कहतहौजू चतुरईकी वात॥ तनहि परहै मनहि राजा जोइ करै सोइ होइ। कहौ घर हम जाहिं कैसे मनधरचो तुम गोइ॥ नयन श्रवन विचार सुधि वुधि रहे मनहि लुभाइ जाहि अवही तनहि लै घर परत नाहिन पाइ॥ प्रीतिकरि दुविधा करी कत तुमहि जानौ नाथ। सूरके प्रभु दीजिये मन जाइँ घरलै साथ॥ ५७॥ कानरो॥ मन भीतरहै वास हमारो। हमको

लैकरि तुमहि छपायो कहा कहति यह दोष तुम्हारो ॥ अजहुँ कहौ रैहैं हम अनतहि तुम अपनो मंन लेहु । अब पछितानी लोकलाज डर हमहिं छांडि तैं देहु ॥ घटती होइ जाहिते अपनी ताको कीजै त्याग । धोखे कियो वास मनभीतर अब समुझे भई जाग ॥ मन दीन्हो मोको तब लीन्हों मन लैहों मैं जाउ।सूरश्याम ऐसी जनि कहिये हम यह कही सुभाउ॥५८॥तुमहि विना मनधृक अरु धृकघर । तुमहि विना धृक धृक माता पितु धृक धृक कुलकानि लाजडर॥धृकसुत पतिधृक जीवन जगको धृक तुमविन संसार ॥ धृक सो दिवस पहर घटिका पल धृक धृक यहकहि नंदकुमार ॥ धृक धृक श्रवन कथा विनु हरिके धृक लोचन विनरूप । सूरदास प्रभु तुम विनु घर यौवन भीत रके कूप ॥ ५९ ॥ अथ दानलीला॥ रागिहठीली ॥ सुनि तमचुरको सोर घोषकी वागरी । नवसत साजि शृंगारचली वननागरी ॥१॥ नवसतसाजिशृंगार अंग पाटवर सोहै । एकते एक विचित्ररूपत्रिभुव न मनमोहै ॥ इंदा विंदा राधिका श्यामा कामा नारि । ललिता अरु चंद्रावली सखिनमध्य सुकु मारि ॥ २ ॥ कोउ दूध कोउ दह्यो मह्यो लैचलीं सयानी । कोउ मटुकी कोउ माट भरी नवनीत म थानी ॥ गृह गृहते सव सुंदरी जुरि यमुना तटजाइ । सवनि हरप मनमें कियो उठीं श्यामगुणगा इ ॥ ३ ॥ यह सुनि नंदकुमार सैनदे सखा वोलाए।मन हरपित भए आपु जाइ सव ग्वाल जगाए॥ यह कहिकै तव साँवरे राखे द्रुमनि चढ़ाइ । और सखा कछु संगलै रोकि रहे मगजाइ ॥ ४ ॥ येक सखी अवलोकतही सव सखी वोलाई । यहि वनमें इकवार लूटि हम लई कन्हाई ॥ तनक फेर फि रि आइए अपने सुखहि विलास । यह झगरो सुनि होइगो गोकुलमें उपहास ॥ ५ ॥ उलटि चलीं तव सखी तहां कोउ जान नपावै । रोकि रहे सव सखा और वातनि विरमावै । सुवल सखा तव यह कह्यो तुम ग्वालिनि हरियोग । कैसे वात दुरतिहै तुम उनके संयोग ॥ ६ ॥ किनहु शृंग कोउ वेनु किनहु वनपत्र वजाये ॥ छांडि छांडि द्रुमडार कूदि धरनी धँसिधाये ॥ सखिनमध्य इत राधिका सखामध्य वलवीर । झगरो ठान्यो दानको कालिंद्रीके तीर॥कहत नंदलाडिलो७॥दैनारिन दधिदान कान्ह ठाढे वृंदावन । और सखा हरि संग वच्छ चारत अरु गोधन॥ वै वडे नंदके लाडिले तुम वृपभानुकुमारि।दह्यो मह्यो के कारने कतहि वढावति रारि॥कहत व्रजनागरी॥८॥सूधे गोरस माँगि कछू लै हमपैखाहू। ऐसे ढीठ गँवार कान्ह वरजत नहिं काहू॥एहि मग गोरसलै सवै दिन प्रति आवहि जाहि। हमहि छाप देखरावहू दान चहत केहि पाहि॥कहत नँदलाडिले॥९॥इते मान सतरात ग्वारि हम जान नदेहैं।अनउत्तर कहा कहति तुमहि वश कान्ह भयेहैं॥अव तुम ऐसी जनि करौ या वृंदा वन वीच । पुहुमि माहँ ढरकाइहै मचिहै गोरस कीच ॥ कहत व्रजनागरी ॥ १० ॥ कान्ह अचगरचो देत लेहु सव आंगनवारी । कापहि माँगत दान भए कवते अधिकारी ॥ मात पिता जैसे चलैं तैसे चालिये आपु । कठिन कंस मथुरा वसै कोकहि लेइ संतापु ॥ कहत नंदलाडिले ॥ ११ ॥ कहै नजाइ उताल जहां भूपाल तिहारो । हो वृंदावन चंद्र कहा कोउ करै हमारो ॥ शेपसहसफन नाथिज्यों सुरपति करे निरंस । अग्नि पान किये सांवरे केतिक वपुरो कंस ॥ कहतव्रजनागरी॥१२॥जाके तुम सुकुमार ताहि हम नकै जाने । जो पूछौ साति भाउ आदि अद्यावलिभाने ॥ वातनि वडे नहूजिये सुनहु श्याम उतपाति । गर्भसाटि यशुदा लियो तव तुम आएराति॥कहत नंदलाडिले॥१३॥अरी ग्वारि मैमंत वचन वोलत जो अनेरो। कव हरि वालक भए गर्भ कव लियो वसेरो॥प्रवल असुर पुहुमी वढे विधि कीन्हे ये ख्याल। कमलकोस अलिभोर ए त्यों तुम भुरचो गोपाल॥ कहत व्रजनागरी॥१४॥तुम भुरए हो नंद कहतहैं तुमसों ढोटा । दधि

ओद नके काज देहधरि आए छोटा ॥ गढि गढि मिलवत लाडिले भली नहीं यहश्याम। या धोखे जिनि भूलहू हम समरथकी बाम॥ कहत नंद लाडिले ॥ १५ ॥ तुम समरथकी बाम कहा काहूको करिहौ। चोरी जाती बेचि दान सब दिनको भरिहौ ॥ जो प्रभु देह नधरे दीन खल कौन उधारे कंसकेशको गहै विघ्न ब्रजको को टारे ॥ १६ ॥ कहा निगम कहि ध्यावतो कहा मुनीजन धरते ध्यान। दरशपरस विननाम गुनको पावै पद निर्वान॥ कहत ब्रजनागरी॥१६॥ जौपै दरशन परस नाम गुण केलि कन्हाई। तुम निर्भयपद हेत वेदविधि इहै बताई॥योग युक्ति तप ध्यावही तिनगति कौन दयाल। जलतरंग ज्यों मीनगति विधे कर्मके जाल ॥ कहत नँदलाडिले ॥ १७ ॥ जटाभस्म तनुदहै वृथा करि कर्म बँधावै। पुहुमि दाहिनी देहि गुफा वासि मोहिं नपावै॥ तजिअभिमान जोगा वही गदगदसुरहि प्रकाश। तासु मगनहो ग्वालिनी ता घट मेरो वास॥ कहत ब्रजनागरी ॥ १८ ॥ जूपै चाहिलै श्याम करत उपहास घनेरो। हम अहीरि गृह नारि लोक लज्जाके जेरो ॥ तादिन हमभई बावरी दियो कंठते हार। तबते घर घेरा चल्यो श्याम तुम्हारो जार॥कहत नंदलाडिले १९॥ सखा सबनि मिलि कह्यो ग्वारि एक बात सुनावै। तो तनु ज्योति सुभाउ रूप उपमाको पावै॥ गुप्त प्रीति विधना करी रसिक साँवरेयोग। यह विचार सुनि ग्वारिनी न्याउ हँसैगो लोग। कहत ब्रजनागरी॥२०॥ऐसी बातैं कान्ह कहत हमसों काहेते। चोरी खाते छांछि नयन भरिलेत गहेते॥देत उरहनो रावरे बछरा दावरि जोरिजननी ऊखल बांधती हमही देती छोरि ॥ कहत नंदलाडिले॥२१॥ बालकरूप अंजान कहा काहू पहिचानै। अनउत्तर कोउकहै भली अनभली नमानै॥वह दिन सुमिरौ आपनो न्हानि यमुनके पानि। सब मिलि मो हाहा करी वस्त्र हरचो मैं जानि ॥ कहत ब्रज नागरी ॥ २२ ॥ बहुत भएहौ ढीठ देत मुख ऊपर गारी। जेहि छाजै तेहि केहौ इहां कोउ दासि तुम्हारी ॥ तुमसों अब दधिकारने कौन बढ़ावै रारि। काहेको इतरातहौ रोकि पराई ॥ नारि कहत नंदलाडिले ॥ २३ ॥ लियो उपरना छीनि दूरि डारनि अटकायो । दियो सखनि दधि बांटि माट पुहुमी ढरकायो ॥ फेंट पीतपट साँवरे करपलाशके पात। हँसत परस्पर ग्वाल सब विमल विमल दधि खात॥कहत ब्रजनागरी ॥ २४ ॥ कान्ह बहाँरि न देहु दही काहेको माते । बासिये येकहि गाउँ कानि राखतिहैं ताते ॥ तब नकछू वनिआईहै जब विरचैं सब नारि। लरिकनिके वर करत यह पुनि धरिहैं लाड उतारि॥कहत नँदलाडिले॥२५॥गहि अंचल झकझोरि तोरि हारावलि डारी। मटुकी लई उतारि मोरि भुज कंचुकि फारी॥लैलै ठाढे ग्वार सब दोना एक एक हाथ।खात जात दधि दूध लै हँसत मिलै इक साथ॥कहत ब्रजनागरी ॥२६॥ झीनी कामरि काज कान्ह ऐसी नहिं कीजै। काच पोत गिर जाइ नंदघर गथै नपूजै॥ विनही लीने आपिये सो कामरिको तोल। लाख सुँदरिया जाइगी कान्ह तुम्हारो मोल॥कहत नंदलाडिले॥२७॥शिव विरंचि सनकादि आदितिनहूं नाहिं जानी शेश सहसफन थक्यो निगमकी रति न बखानी ॥ तेरी सों सुनि ग्वालिनी इहै मेरे मन माह। भुवन चतुर्दश देखिए वा कामरि की छांह। शेष नपायो अंत पुहुमि जाकी फनवारी ॥ पवन बुहारत द्वार सदा शंकर कुतवारी॥ धर्मराज जाकी पवरि सनकादिक प्रतिहार। मेघ छप्पान वैकोटि सब जल ढोवहिं प्रतिवार॥कहत ब्रजनागरी ॥ २८ ॥ जिनहि इतो परताप गाइ सो कतहि चरावै। परद्वाराकें जाइ आपु कत लज्जापावै ॥ घरके वाढे रावरे बातैं कहत बनाइ। ग्वारनिपै लै खातहैं जूठी छाक छिनाइ॥कहत नंदलाडिले॥२९॥धेनु रूपमम देह करत कौतूहल न्यारे। गोकुल गुप्त विलास जानि को सकै हमारे॥यावृंदावन ग्वारिनी जित सित अमृत वेलिहूता॥ लोकमें गाइये

मेरे रसके केलि॥ कहत ब्रजनागरी ॥३०॥ अबलों कीन्ही कानि कान्ह अब तुमसों लरिहैं। अधर नयन रसकोपि विरचि अनउत्तर करिहैं ॥ मोआगे को छोहरा जीत्यो चाहे मोहिं। काके बल इत रातहो देहुँन नख भरि तोहिं॥कहत नंदलाडिले॥३१॥चितै वदन मुसकाइ हाथ दधि पूरन दोना। इत सुंदरी विचित्र उतहि घनश्याम सलोना ॥ आतितामस तोहि ग्वालिनी मैं सब जानत आदि। खोटी करनी जाहि मेरेकी सोई करे उपादि ॥ कहत ब्रजनागरी ॥३२॥ तोहि नछांडौं कान्ह दान तुमको नहिं देहौं । विना कहे ब्रजलोग कहा काहूपतिऐहौं ॥ लाज नहीं तुम आवई बोलत जब सतराइ । कहूं कंस सुनि पाइहै गहत फिरहुगे पाइ ॥ कहत नँदलाडिले ॥ ३३ ॥ सुनत हँसे नँदलाल ग्वारि जिय तामस मान्यो ॥ सींच्यो अमृतबैन कोप कपंत नहिं जान्यो ॥ कहां बसतिहो बावरी सुनहु नमुग्ध गवाँरि। ब्रजवासी कहा जानिहीं तामसको व्यवहारि ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ३४ ॥ जननी जन परिहरयो तात कुलधर्म नशायो । गोपराइके गेह पुत्रह्वै नाम धरायो ॥ इतनेते इतनो कियो खाटी छांछि पिवाइ। तुमहि दोष नहिं लाडिले वोछो गुण क्यों जाइ॥कहत नंदलाडिले ॥ ३५ ॥ अविगति अगम अपार आदि नाहीं अविनासी । परमपुरुष अवतार माया जिनकीहै दासी ॥ तुमहि मिले ओछेभए कहा रही करि मौन। तुम्हरे आगेन्या वहै दुइ में ओछो कौन॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ३६ ॥ हमहि ओछाई भई जबहि तुमको प्रतिपाले। तुम पूरे सब भांति मात पितु संकट घाले ॥ कहा चलत उपरावटे अजहूं खिसी नगात । कंस सौंहदै पूछिये जिन पटकेहैं सात ॥ कहत नंदलाडिले ॥ ३७ ॥ कंसकेश निग्रहों पुहुमिको भार उतारों। उग्रसेन शिरछत्र चमर अपने कर ढारों ॥ मथुरा सुरनि बसाइहौं असुर करों यमहाथ ॥ दनुज वदन विरदावली सांचो त्रिभुवननाथ ॥ कहत ब्रजनागरी ॥ ३८ ॥ तब न कंस निग्रह्यो पुहुमिको भार उतारयो। चोरीजायो मातु गोद गोकुल पगधारयो ॥ अब बहुते बातें कहा दही दूध के मात । जो ऐसे बलवंतहो मथुरा काहे नजात॥ कहत नंदलाडिले ॥ ३९ ॥ जो जैहौं मधुपुरी बहुरि गोकुल नहिं ऐहौं। यह अपनो परताप नंद यशुमतिहि सुनैहौं ॥ वचनलागि मैं हूं कियो यशुमतिको पयपान। मोहिग्वार जनि जानहू ग्वारिनि सुनहु निदान॥कहत ब्रजनागरी ॥ ४० ॥ हम ग्वाली तुम तरनि रूप रस रवि शशि मोहैं। तीनलोक परताप छत्र सिंहासन सोहै ॥ गयो गर्व गति ग्वालनी देखि चरित तेहि काल । हम अहीर ढीगे दई तुम जेजैमदन गोपाल ॥ और दिननते आजु दह्यो हम उसाल्याई । देखत ज्योति विलास दई सुख वचन डिठाई ॥ कान्ह विलग जिन मानहु राखहु पिछलो नेहु। दही दूधकी को गनै कछु हमहू पैते लेहु॥ धन्य नंदको गेह धन्य गोकुल जहँ आये। धनि गोपनकी नारि जहां तुम रोकन धाये ॥ धनि धनि झगरो आजुको इह सुख नाहिन पार। नंदनँदन पर कीजिये तन मन धन बलिहार ॥ तब लै दधि आगे धरयो कान्ह लीजे जो भावे । खाइ जाइ मंजार काज एको नहिं आवे॥ हम अनखी या बातको लेत दानको नाउँ । सहज भावरहो लाडिले बसत एकही गाउँ । कहत नँदलाडिले ॥ ४१ ॥ अभरन दियो मँगाइ कियो गोपिन मनभायो। हिलि मिलि बढ्यो सनेह आपु करमाट उठायो ॥ नँदनंदन छवि देखिकै गोपिन वारो प्रान । कुंज केलि मनमें बसी गायो सूर सुजान ॥ ४२ ॥ ११६० ॥ बिलावल ॥ जबहि कान्ह यह बात सुनाई। ब्रजयुवती अति गई मुरझाई ॥ कंस संहारन मथुरा जैहौं। बहुरौ फिरि ब्रजको नहिं ऐहौं ॥ दैव गर्भ वासहो लीन्हों। तुमको गोकुल दरशन दीन्हों ॥ नंद यशोदा अति तप कीन्हों। मोसों पुत्र

मांगि तब लीन्हो ॥ मोसों दूजो और नकोई । हरता करता मैंही सोई ॥ तुमसों सुत पयपान कराऊं। यह तुमसों मैं माँगे पाऊं ॥ मोसों सुत तुमको मैंदेहौं । मथुरा जनमि गोकुलहि ऐहौं ॥ नंद यशोदा वचन बँधायो। ताकारण देही धरि आयो॥ यह वाणी सुनि ग्वारि झुरानी। मीन भये मानो विन पानी ॥ इहै कथा तब गर्ग सुनाई । सोई आपु कहतरी माई ॥ नरदेही करि मोहि नजानो । ब्रह्मरूप करि मोको मानो ॥ षोडश वरष मिले सुख करिहौं । मथुराजाइ देव उद्धरिहौं ॥ केशगहे अरिकंस पछरिहौं । असुर कठोर यमुन लै डरिहौं ॥ रंगभूमि करि मल्लन मारौं। प्रबल कुवलियादंतउपारौं ॥ सुनहु नारि हरिमुखकी बानी। यह सुनि सुनि तरुणी विकलानी ॥ तन मन धन इनपर सब वारहु। जोवनदान देहु रिसि टारहु ॥ षोडसवर्ष गए धौं जैहै। ब्रजते जाइ मधुपुरी रैहै ॥ राजा उग्रसेनको करिहैं। कनकदंड आपुन कर धरिहैं । माता पिता वसुदेवदेवकी।यशुमति धाइ कहतिहैं इनकी ॥अब तिनके बंधन मोचहिंगे। दरशविना पुनि हम लोचहिंगे ॥ मथुरा नारिनके सुख दैहैं। तब घट प्राणकहौ क्यों रैहैं ॥ कहत हसी यह बात अयानी। जानतिहो तुम कछुक सयानी ॥ जोवन दान लेहिंगे तुमसों। चतुरायो मिलवतिहै हम सों ॥ इनके गांस कहारी जानौ। इतनी कही एक जनिमानौ॥ जो चाहै सो दीजै इनको । ज्योंविन देखे रहत न जिनको ॥ आपु आपु यह बात विचारै। नारि नारि मन धीरजधारै ॥ आगे धरौ दूध दधि माखन। प्रथमहि यह कीजै संभाषन ॥ वड़े चतुर तुम अहो कन्हाई । तरुनि सबनि कहि इहै सुनाई ॥ जानी बात तुम्हारे मनकी। दूरि नकीजै यह रिस तनकी ॥ सबनि धरचो दधि माखन आगे। लेहु सबै अब विनही मँगे ॥ तुम रिस करत देखि सुखपावें। याते वारहिवार खिझावें ॥ तनु जोवन धन अर्पन कीन्हों। मनदै मन हरिको सुख दीन्हों ॥ सुभगपात दोना लिए हाथनि। बैठे सखा श्याम एक साथनि॥मोहन खात खवावत नारी। माँगिलेत दधि गिरिवर धारी ॥ आपुहि धन्य कहति ब्रजनारी । रुचिकरि माँगि खात वनवारी ॥ और खाउ मोहन दधिदानी । यह कहि कहि तरुणी मुसुकानी ॥ सुखदीनो हरि अंतर्यामी । ब्रज युवतिनके पूरनकामी ॥ देखत रूप थकित ब्रजनारी। देह गेहकी शुद्धि विसारी ॥ सूरश्याम सबके सुखकारी। कह्यो जाहु घर घोषकुमारी ॥ ६१ ॥ रामकली ॥ युवती ब्रज घर जान विचारति। कबहुँक मटुकी लेत शीशपर कबहुँ धरणि फिरि धारति ॥ देखत श्याम सखा सब देखत चितैरही ब्रजनारि रीती मटुकिनिमें कछु नाहीं सकुचति मनहि विचारि ॥ तब हँसि बोले श्याम जाहु घर तुमको भई अवार। सकुचति दान पाछिले को तुम मैं करिहौं निरवार ॥ यह कहिकै हरि ब्रजहि सिधारे युवतिन दान मनाई। सूरश्याम नागर नारिनकी चितलै गए चुराई ॥ ६२ ॥ बिलावल ॥ अलहीआ ॥ रीती मटकी शीशलै चली घोषकुमारी। एक एककी सुधि नहींको कैसी नारी ॥ बनही में बेचति फिरै घरकी सुधि डारी। लोकलाज कुलकानकी मर्यादा टारी ॥ लेहु लेहु दधि कहति हैं वनसोर पसारी। द्रुम सब घर करि जानही तिनको दैगारी ॥ दूध दह्यो नहि लेहुरी कहि कहि पचिहारी कहति सूर घर कोउ नहीं कहां गई दईमारी ॥ ६३ ॥ टोडी ॥ याघरमें कोउहै की नाहीं। बार बार बूझति वृक्षनको गोरस लैहौ कि नाही । आपुहि कहाति लेहु नाहीं दधि और द्रुमन तर जाती । मिलति परस्पर विवस देखि तेहि कहति कहा इतराती ॥ ताको कहति आपु सुधि नाहीं सो पुनि जानत नाहीं। सूरश्याम रसभरी गोपिका बनमें यो वितताही॥६४॥रीती मटुकी शीशधरै। बनकी घरकी सुरति नकाहू लेहु दही यह कहत फिरै ॥ कबहुँक जाति कुंज भीतरको तहां

श्यामकी सुरति करै। चौंक परति कछु तनु सुधि आवति जहां तहँ सखि सुनति ररै तब यह कहति कहौ मैं इनिसों भ्रमि भ्रमि वनमें वृथामरै ॥ सूरश्यामके रस पुनि छाकति वैसेही ढंग बहुरि ढरै ॥ ६५ ॥ नट ॥ तरुणी श्यामरस मतवारि। प्रथम जोवन रस चढायो अतिहि भई खुमारि ॥ दूध नाहिं दधि नहीं माखन नहीं रीतो माट। महारस अंग अंग पूरण कहां घर कहां वाट ॥ मात पितु गुरुजन कहांको कौन पति को नारि। सूरप्रभुके प्रेम पूरन छकि रहीं व्रजनारि ॥६६॥ रामकली ॥ गोरसलेहुरी कोउ आइ।द्रुमनिसों यह कहति डोलति कौन लेइ बुलाइ॥ कबहुँ यमुनातीरको सब जातिहै अकुलाइ। कबहुँ वंसीवट निकट जुरि होति ठाढी धाइ ॥ लेहु गोरसदान मोहन कहां रहे छपाइ। डरनि तुम्हारे जाति नाहीं लेत दह्यो छिड़ाइ ॥ मांगिलीजै दान अपनो कहतिहै समुझाइ। आइहौ पुनि रिस करत हरि दह्यो देत वहाइ ॥ एक एकहि वात बूझत कहां गए कन्हाइ। सूर प्रभुके रंग राची जीव गयो भरमाइ ॥ ६७ ॥ जैतश्री ॥ वैठिगई मटुकी सन्न धरिकै। यह जानत अवहींहै आवत ग्वाल सखा सँग हरिकै ॥ अंचलसों दधिमाट दुरावति दृष्टिगई तहां परिकै। सवनि मटुकिया रीती देखी तरुनी गई भभरिकै ॥ कहि कहि उठीं जहां तहँ सवमिलि गोरस गयो कहुँ ढरिकै। कोउ कोउ कहै श्याम ढरकायो जानदेहुरी जरिकै॥ यहिमारग कोऊ जिनि आवहु रिसकरि चली डगरिकै। सूर सुरति तनुकी कछु आई उतरतै काम लहरिकै ॥ ६८ ॥ नट ॥ चकृतभई घोपकुमारि। हम नहीं घर गईं तबते रही विचारि विचारि ॥ घरहिते हम प्रात आई सकुचिवदन निहारि। कछु हँसति कछु डरति गुरुजन देतिह्वै हँगारि ॥ जो भई सो भई हम कह रही इतनी नारि। सखासंग मिलि खाइदधि तबही गए वन वारि ॥ इहांलौंकी वात जानति यह अचंभो भारि। इँहै जानति सूरके प्रभु गए शिर कछुडारि॥ ॥ ६९ ॥ धनाश्री ॥ श्यामविना यह कौन करै। चितवतही मोहनी लगावत नेक हँसनिपर मनहि हरै ॥ रोकिरह्यो प्रातहि गहि मारग लेखो करि दधि दान लियो। तनुकी सुधि तवहीं ते भूली कछु पढिकै शिर नाइदियो ॥ मनके करति मनोरथ पूरण चतुरनारि एहिभांति कहै। सूरश्याम मन हरचो हमारो तेहिविनु कहु कैसे निवहै ॥ ७० ॥ मन हरिसों तनु घरहि चलावति। ज्यों गजमत्त जाल अंकुशकर घर गुरुजन सुधि आवति ॥ हरिरसरूप इँहै मद आवत डरडारचो जु महावत। गेह नेह वंधन पगतोरचो प्रेम सरोवर धावत ॥ रोमावली सूंड विविकुच मनों कुंभस्थल छपिपावत। सूरश्याम केहरि सुनिकै जोवन गजदर्प नवावत ॥ ७१ ॥ युवतीगईं घर नेक नभावत मात पिता गुरु जन पूछत कछु औरै और बतावत॥गारीदेति सुनति नाहिं नेकहु श्रवन शब्द हरि पूरे। नैननही देखत काहूको जो कहु होहिं अधूरे ॥ वचन कहति हरिहीके गुनको उतही चरण चलावै। सूरश्याम विन और नभावै कोउ जितनो समुझावै ॥ ७२ ॥ सोरठ ॥ लोक सकुच कुलकानि तजी। जैसे नदी सिंधुको धावै तैसे श्यामभजी ॥ मात पिता बहु त्रास दिखायो नेक नडरी लजी। हारिमानि वैठे नहिं लागति वहुतै बुद्धि सजी ॥ मानतनहीं लोक मर्यादा हरिके रंग मजी। सूरश्यामको मिली चूने हरदी ज्यों रंग रजी ॥ ७३ ॥ वारवार जननी समुझावति। काहेको तुम जहँ तहँ डोलति हमको अतिहि लजावति ॥ अपने कुलकी खवरि करौधों सकुच नहीं जियआवति। दधिवेचहु घर सूधे आवहु काहे झेर लगावति ॥ यह सुनिकै मन हर्ष वढ़ायो तव इक बुद्धि बनावति। सुनि मैया दधि माट ढरायो तेहि डर वात नआवति। जान देहि कितनो दधि डारचो ऐसे तव न सुनावति॥सुनहु सूर यहि वात डरानी माता उरलै लावति॥

॥ ॥ सारंग ॥ नेक नहीं घरमो मन लागत । पिता मात गुरुजन परबोधत नीके वचन वाणसम लागत ॥ तिनको धृग धृग कहति मनहि मन इनको वनै भलेही त्यागत । श्यामविमुख नर नारि वृथा सब कैसे मन इनिसों अनुरागत ॥ इनको वदन प्रात दरशै जिनि बार बार विधिसों यह मांगत । यह तनु सूर श्यामको अप्यौं नेक टरत नहिं सोवत जागत ॥ ७५ ॥ धनाश्री ॥ पलकओट नहिं होत कन्हाई । घर गुरुजन बहुतै विधि त्रासत लाज करावत लाज न आई ॥ नयन जहां दरशन हरि अटके श्रवन थके सुनि वचन सोहाई । रसना और नहीं कछु भाषत श्याम श्याम रट इहै लगाई ॥ चितचंचल संगहिसंग डोलत लोकलाज मर्याद मिटाई । मन हरि लियो सूर प्रभु तबहीं तनु वपुरेकी कहा बसाई ॥ ७६ ॥ विलावल ॥ चली प्रातही गोपिका मटुकिनलै गोरस । नयन श्रवन मनचित बुधि ये नहिं काहूके वश ॥ तनु लीन्हे डोलत फिरै रसना अटक्यो जस । गोरस नाम नआवई कोऊ लैहै हरिरस जीव पर्यो या ख्यालमें अरु गए दशादश ॥ वझे जाइ खग वृंद ज्यों प्रिय छवि लटकनिलस ॥ छांडिदेहु डरात नाहिं कीन्हो पावै तस । सूरश्याम प्रभु भौंह की मोरनि फांसी गस ॥ ७७ ॥ कान्हरो ॥ दधिवेचत ब्रज गॅलिन फिरैं । गोरसलेन बोलावत कोऊ ताकी सुधि नेकहु नकरैं ॥ उनकी बात सुनत नहिं श्रवणनि कहति कहा ये घर नजरैं । दूधदह्यो ह्यां लेत नकोऊ प्रातहिते शिरलिये ररैं ॥ बोलि उठति पुनि लेहु गोपालहि घर घर लोक लाजनिदरैं । सूरश्यामको रूप महारस जाके बल काहू नडरैं ॥७८॥ गोरसको निज नाम भुलायो। लेहु लेहु कोऊ गोपालहि गलिन गलिन यह सोर लगायो ॥ कोऊ कहै श्याम कृष्ण कहै कोऊ आजु दरश नाहीं हम पायो । जाके सुधि तनकी कछु आवति लेहु दही कहि तिनहि सुनायो ॥ एक कहि उठत दान मांगत हरि कहू भई की तुमहि चलायो ।सुनहु सूर तरुणी जोवनमद तापर श्याम महारस खायो॥७९॥ग्वालिनि फिरति बेहालहिसों । दधि मटुकी शिर लीन्हे डोलति रसना रटति गोपालहिसों ॥ गेह नेह सुधि देह विसारे जीव पर्यो हरिख्यालहिसों । श्याम धाम निज बास रच्यो रचि रहित भई जंजालहिसों॥ छलकत तक्र उफनि अंग आवतनहिं जानति तेहि कालहिसों। सूरदास चित ठौर नहीं कहुँ मन लाग्यो नंदलालहिसों॥८०॥ मलार ॥ कोऊ माई लैहैरी गोपालहि। दधिको नाम श्याम सुंदररस विसरि गई ब्रजबालहि॥मटुकी शीशफिरति ब्रज वीथिन बोलत वचन रसालहि । उफनत तक्र चहूँ दिश चितवति चितलाग्यो नंदलालहि ॥ हँसाति रिसाति बोलावति वरजति देखहु उलटी चालहि ॥ सूरश्याम विनु और नभावै याविरहनि बेहालहि ॥ ८१ ॥ गौडमलार ॥ ग्वालिनि प्रगट्यो पूरन नेहु । दधिभाजन शिरपर धरे कहति गुपालहि लेहु ॥ वन वीथिन निजपुर गली जहीं तहीं हरिनाउँ । समुझाई समुझत नहीं सिखदै विथक्यो गाउँ ॥ कौन सुनै काके श्रवण काकी सुरति सकोच । कौन निडर डर आपको को उत्तम को पोच ॥ प्रेमप्रिये वर वारुनी बलकत वल न सँभार । पग डगमग जित तित धरति मुकुलित अकल लिलार ॥ मंदिरमें दीपक दिये वाहेर लखे न कोइ॥ तिन्है प्रेम परगट भए गुप्त कौनपै होइ ॥ लज्जा तरल तरंगिनी गुरुजन गहैरी धार । दुहुँ कूल तरुनी मिली तिहि तरत न लागी वार ॥ विधिभाजन ओछो रच्यो शोभा सिंधुअपार । उलटि मगनतामें भई तव कौन निकासनि हार॥ जैसे सरिता सिंधुमें मिली जु कूल विदारि । नामामिट्यो सलिलै भई तव कौन निवेरै वारि॥ चितआकर्ष्यौ नंदसुत मुरली मधुर वजाइ । जिहिलज्जा जग लज्जियो सो लज्जागई लजाइ ॥ प्रेम मगन ग्वालनि भई सूर सुप्रभुके संग । नैन बैन मुख नासिका ज्यों कंचुली तजै भुजंग ॥८२॥

सुघराई ॥ छोटी मटुकिया मधुर चालले चलीरी गोरस वेचन रसाल। हरवराइ उठि आइ प्रातते विथुरी अलक अरु वसन मरगजै तैसीये सोहति कुँभिलानी माल ॥ गेहनेह सुधि नेक न आवति मोहिरही तजि भव जंजाल। औरै कहति और कहि आवति मनमोहनके ख्याल ॥ जोइ जोइ बूझतहैरी कहा यामें कहति फिरति कोऊ लेहु गोपाल। सूरदास प्रभुके रस वश भई चतुर ग्वारिनी तनु मनुगति वेहाल ॥ ८२ ॥ कान्हरो ॥ दधि मटुकी शिरधरे ग्वालिनी कान्ह कान्ह करती डोलै। विवसभई तनु न सँभारैरी गोरस सुधि विसारि गई आपु विकानी विनुमोलै ॥ जोइ जोइ पूछत यामें हैरी कहा लेहु लेहु करति फिरति डोल डोले ॥ सूरदास प्रभुके रस वश भई ग्वालिनी विरहा वशतनुगति भयो डोलै ॥ ८३ ॥ धनाश्री ॥ वेचतिही दधि व्रजकी खोरि। शिरको भार सुरति महि आवति श्याम श्याम टेरत भई भोरि ॥ घर घर फिरति गोपालहि वेचति मगनभई मन ग्वारि किसोरि। सुंदर वदन निहारन कारन अंतर लगी सुरतिकी डोरि ॥ ठाढ़ी भई विथकि मारगमें माँझ हाट मटकीसो फोरि। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि चित चिंता मणि लियो अजोरि ॥ ८४ ॥ विलावल ॥ नर नारी सव बूझत जाई। दही मही मटुकी शिरलीन्हे वोलतिहो गोपाल सुनाई ॥ हमहि कहो तुम करति कहा यह फिरति प्रातहीतेहो आई। गृह द्वारा कहुँ है की नाहीं पिता मात पति वंधु न माई ॥ इतते उत उतते इत आवति विधि मर्यादा सवै मिटाई। सूरश्याम मनहरयो तुम्हारो हम जानी इह वात वनाई ॥ ८५ ॥ धनाश्री ॥ कहति नंदघर मोहिं वतावहु। द्वारहि मांझ वात इह कहती है कहा मोहिं दिखावहु ॥ याही गाँव किधौं औरै कहु जहां महरको गेहु। वहुत दूरिते मैं आईहौं काहि काहेन यश लेहु ॥ अतिही संभ्रम भई ग्वालिनी द्वारेही पर ठाढी। सूरदास स्वामीसों अटकी प्रीति प्रगट अतिवाढी ॥ ८६ ॥ गुंडमलार ॥ ग्वारिनि नंदद्वार नंद गृह बूझै। इतहिते जाति उत उतहिते फिरै इत निकटहै जाति नहिं नेक सूझै ॥ भई वेहाल व्रजवाल नंदलाल हित अर्पि तन मन सवै तिन्है दीन्हों। लोकलज्जा तजी लाज देखत लजी श्यामको भजी कछु डर न कीन्हों ॥ भूलिगयो दधि नाम कहति लेहौ श्याम नहीं सुधि धाम कहुहै कि नाहीं। सूर प्रभुको मिली भेट भली अनभली चून हरदी रंग देह छाही ॥ ॥ ८७ ॥ रामकली ॥ तव एक सखी प्रीतम कहति। प्रेम ऐसो प्रगट कीन्हों धीरकाहेन गहति ॥ व्रज घरनि उपहास जहँ तहँ समुझि मन किनु रहति। वात मेरी सुनत नाहिन कतहि निंदा सहति ॥ मातु पितु गुरु जननि जान्यो भली खोई महति। सूर प्रभुको ध्यान चितधरि अतिहि काहे वहति ॥ ८८ ॥ धनाश्री ॥ आपु कहावति वड़ी सयानी। तव तू कहति सवनिसों हँसि हँसि अव तू प्रगटहि भई दिवानी ॥ कहागई चतुराई तेरी अतिही काहे भई अयानी। गुप्तप्रीति परगट तैं कीन्ही सुनति कछू घर घरकी वानी ॥ एकहि वेर तजी मर्यादा मात पिता गुरुजनहि भुलानी। सुनहु सूर ऐसी न बूझिए शीश धरे मटुकी विततानी ॥ ८९ ॥ नट ॥ सुनुरी ग्वारि मुगुध गवाँरि। श्यामसों हित भले कीन्हों राखिसकै उवारि ॥ ओछी वुधि तैं करी सजनी लाज दीन्ही डारि। लाज आवति मोहिं सुनिरी तोहिं कहत गँवारि ॥ कृष्णधन कहा प्रगट कीजै दियो ताहि उघारि। अजहुँ काहेन समुझि देखति कह्यो सुनोरी नारि ॥ ज्वाव नाहिन आवई मुख कहतिहौ जो पुकारि। सूरप्रभुको पाइके यह ज्ञान हृदय विचारि ॥ ॥ ९० ॥ कान्हरो ॥ कछु कैहैकी मौनहि रहिहै। कहा कहति हौंतोसों तवकी ताको ज्वाव कछू मोहि देहै ॥ सुनिहै मात पिता लोगनि मुख यह लीला उनि सवै जनैहै। प्रातहि ते आई दधिवेचन घरही आजुन जैहै। मेरो कह्यो मानिहै नाहीं ऐसेही भ्रमि भ्रमि द्योस वितैहै। मुखतौ खोलि सुनौ तेरी वानी भली बुरी

कैसी घर कैहै ॥ गुप्तप्रीति काहेन करी हरिसों प्रगट किए कछु नफा वढैहै । सूरश्यामसों प्रीति निरंतर लाजकिए अंतर कछु ह्वैहै ॥ ९१ ॥ कहाकहति तूं मोहिरी माई। नँदनंदन मन हरि लियो मेरो तबते मोको कछु न सोहाई॥ अवलौं नाहिं जानाति मैं कोही कवते तू मेरे ढिग आई। कहां गेह कहां मात पिताहैं कहां सजन गुरुजनको भाई ॥ कैसी लाज कानिहै कैसी कहा कहाति ह्वैहै रिस हाई। अबतो सूर भजी नंदलालहिंकी लघुता की होउ बड़ाई ॥ धनाश्री ॥ बार बार मोहिं कहा सुनावति। नेकहु टरत नहीं हृदयते अनेक भांति मनको समुझावति ॥ दोवल कहा देति मोहिं सजनी तूतो बड़ी सुजान। अपनीसी मैं बहुतै कीन्ही रहति न तेरी आन॥लोचन और न देखत काहू और सुनत नाहिं कान। सूरश्यामको वेगि मिलावहु कहति रहत घट प्रान ॥ ९२ ॥ सबै हिरानी हरि मुख हेरे । घूंघट ओट पटओट करे सखि हाथौ हाथन मेरे ॥ कोहै लाज कौनको डरहै कहा कहै भयो तेरे। को अब सुनै श्रवनहै काके निपट निगमके टेरे ॥ मेरे नैननहो नैननकी जोपै जानत फेरे सूरदासहै चेरी कीनी मन मनसिजके चेरे॥ ९३ ॥ नट ॥ मेरे कहेमें कोऊ नाहीं। कहा कहौं कछु कहि नहिं आवै नेकहुनहीं डराही ॥ नए नए हरि दरशनलोभी श्रवण शब्द रसाल। प्रथमही मन गयो तनु तजि तब भई बेहाल॥ इंद्रियन पर भूप मनहै सबनि लिये बुलाइ। सूरप्रभुकोमिले सबए मोहिं करि गये बाइ ॥ ९४ ॥ गौरी ॥ कहा करौं मन हाथ नहीं। तू मोसों यह कहत भलीरी अपनो चित मोहिं देत नहीं ॥ नयन रूप अटके नहिं आवत श्रवन रहे सुनि बात तही । इंद्रीधाइ मिली सब उनको तनुमें जीव रह्यो संगही ॥ मेरे हाथ नहीं ये कोऊ घटलीन्हे इक रैहा मही । सूरश्याम संगते कहुँ टरत न आनि देहि जो मोहिं तुही ॥९५॥ सारंग ॥ बिकानी हरिमुखकी मुसकानि। परवशभई फिरति संग निशि दिन सहजपरी यह बानि॥नैननि निरखि वसीठी कीन्ही मनु मिलियो पय पानि। गहि रतिनाथ लाज निज पुरते हरिको सौंपी आनि ॥ सुनि सखि सुमुखी नँदनंदनकी दासी सब जग जानि। जोइ जोइ कहत करत सोईकृत आयसु माथे मानि॥गईज्ञाति अभिमान मोह मद पति परजन पहिचानि। सूरसिंधु सरिता मिलि जैसे मनसा बूंद हिरानि ॥९६ ॥ अबतो प्रगट भई जग जानी। वा मोहनसों प्रीति निरंतर क्यों वरहैगी छपानी ॥ कहा करौं सुंदर मूरति इनि नयननि मांझ समानी। निकसत नहीं बहुत पचिहारी रोम रोम अरुझानी ॥ अब कैसे निरवारि जातिहै मिली दूध ज्यों पानी। सूरदास प्रभु अंतर्यामी उर अंतरकी मानी ॥ ९७ ॥ कहा करैगो कोऊ मेरो। हौं अपने पतिव्रतहि न टरिहौं जग उपहास करौ बहुतेरो ॥ कोउ किनलै पाछे मुख मोरै कोऊ कहै श्रवण सुनाइ नटेरो । हौ माति कुशल नाहिनै काची हरिसंग छांडिभिरो भवफेरो ॥ अबतौ जी ऐसी बनिआई श्यामधाम मैं करौं वसेरो। तेहिरंग सूर रँग्यो मिलिकै मन होइ न श्वेत अरुन फिरि पेरो ॥ ९८ ॥ धनाश्री ॥ माईरी गोविंदासों प्रीति करत तबहीं काहेन हट कीरी। यहतौ अबबात फैलि गई बई बीज वट कीरी॥घर घर नित इहै घेर बानी घटघटकी। मैंतो यह सबै सही लोकलाज पटकी ॥ मदके हस्ती समान फिराति प्रेम लटकी॥ खेलत में चूकि जाति होति कला नटकी। जल रजु मिलि गांठिपरी रसना हरि रटकी ॥ छोरेते नहीं छुटति कइकबेर झटकी ॥ मेटे क्योंहू नमिटति छाप परी टटकी। सूरदास प्रभुकी छवि हिरदै मेरे अटकी ॥९९॥ आसावरी ॥ मैं अपनो मन हरिसों जोरचो । हरिसों जोरि सबनि सों तोरचो ॥ नाच कछचो घूंघुट छोरचो तव लोकलाज सब फटकि पिछोरचो ॥ आगे पाछे नीके हेरचो। मांझबाट मटुकी शिर फोरचो॥ कहि कहि कासों कराति निहोरचो। कहाभयो कोऊ मुख मोरचो॥सूरदास प्रभु सों

चित जोरयो। लोकवेद तिनुकासोंतोरयो ॥ १२०० ॥ सखीरी श्यामसों मन मान्यो। नीकेकरि चित कमलनैनसों घालि एकठो सान्यो ॥ लोकलाज उपहास नमान्यो मति अपनेही आन्यो। यागोविंदचंदके कारन वैर सबनिसों ठान्यो॥अब क्यों जाति निवेरि सखीरी मिलो येक पय पान्यो। सूरदास प्रभु मेरी जीवनि है पहिली पहिचान्यो ॥ १ ॥ नंदलालसों मेरो मन मान्यो कहाकरैगो कोईरी। मैंतो चरण कमल लपटानी जो भावै सो होईरी ॥ बाप रिसाइ माइ घरमारै हँसै विरानो लोगरी। अबतौ श्यामहिसों रतिवाढी विधिना रच्यो संयोगरी ॥ जाति महति पति जाइ नमेरी अरु परलोक नशाईरी। गिरिधर वरमैं नैक नछाँडो मिली निसान बजाईरी ॥ बहुरि कबहिं यह तनु धरि पैहो कहा पुनि श्रीवनवारीरी। सूरदास स्वामीके ऊपर यह तनुडारौं वारीरी ॥ २ ॥ सारंग ॥ करनदै लोगनको उपहास। मन कर्म वचन नंदनंदनको नैक नछाँडौंपास ॥ सबही या ब्रजके लोग चिकनिया मेरे भाएघास। अबतो इहै बसीरी माई नहिं मानौंगी त्रास ॥ कैसे रह्यो परैरी सजनी एकगाँवको वास। श्याम मिलनकी प्रीति सखीरी जानत सूरजदास ॥ ३॥ रामकली ॥ येक गाउँको वास धीरज कैसेकै धरौं। लोचन मधुप अटक नहिं मानत यद्यपि जतन करौं ॥ वैयेहि मग नितप्रति आवतहैं हौं दधिलै निकरौं। पुलकित रोम रोम गद गद सुर आनँद उमँगिभरौं ॥ पल अंतर चलिजात कलपवर विरहा अनल जरौं। सूर सकुच कुलकानि कहालगि आरजपंथहि डरौं ॥ ४ ॥ मेरो मन हरि चितवनि अरुझानो। फेरत कमलद्वारह्वै निकसे करत शृंगारभुलानो॥ अरुन अधर दशननि द्युति राजति मोहन मुरि मुसकानों। उदधितनया सुत पांति कमलके मांहि वदन भुरके मानों ॥ सुभग कपोल लोल मणिकुंडल इह उपमा केहि वानों। उभयअंक अति पान अमीरस मीन ग्रसतविधि भानों। यह रस मगन रहति निशि वासर हारि जीति नहिं जानो। सूरदास चितभग होत क्यों जो जेहिरूप समानो ॥५॥ रामकली हों संग साँवरेके जैहौं। होनी होइ सो होवै अवहीं यश अपयश काहू न डरैहों ॥ कहा रिसाइ करै कोउ मेरो कछु जो कहै प्राणतेहि देहों। देहौं त्यागि राखिहौं यह व्रत हरि रति वीज बहुरि कब वैहौं ॥ का यह सूर अजिर अवनी तनु ताजि अगास पिय भवन समैहों। का यह ब्रजवापी क्रीडा जल भजि नँदनंद सवै सुख लैहौं६॥धनाश्री॥तैं मेरे हित कहत सहीरी।यह मोको सुधि भली,दिवाई तनु विसरे मैं बहुत वहीरी॥जवते दान लियो हरि हमसों हँसि हँसिरी कछु बात कहीरी। काकेघर काके पित माता काके तनुकी सुरति रहीरी ॥ अब समुझति कछु तेरी वाणी आई हौं लइ दही महीरी सुनहु सूर प्रातहिते आई यह कहि कहि जिय लाज गहीरी ॥ ७ ॥ सुनरी सखी बात एक मेरी। तोसों धरौं दुराइ कहौं केहि तू जानहि सब चितकी मेरी ॥ मैं गोरस लै जाति अकेली कालि कान्ह वहिया गही मेरी। हारसहित अचरा गहो गाढे एक कर गह्यो मटुकिया मेरी ॥ तब मैं कह्यो खीझि हरि छांडहु टूटैगी मोतिन लर मेरी। सूरश्याम ऐसे मोहि रिझई कहा कहति तूमोसों मेरी ॥ ८ ॥ तऊ न गोरस छाँडि दयो। चहुँ फल भवन गह्यो सारंगरिपु वाजि धरा अथयो अमी वचन रुचि रचत कपटहठि झगरो फोरि ठयो। कुमुदिन प्रफुलितहौं जिय सकुची लै मृगचंद जयो ॥ जानिशि सा शशिरूप विलोकत नवलकिशोर भयो। तवते सूर नेक नहिं छूटत मन अप नाइ लयो ॥ ९ ॥ नट ॥ सखी वह गई हरिपै धाइ। तुरतही हरि मिले ताको प्रगटकही सुनाइ। नारिएक अति परमसुंदरि वरन कापै जाइ। प्राततें शिरधरे मटुकी नंदगृह भरमाइ। लेहु लेहु गोपाल कोऊ दह्यो गई भुलाइ। सूरप्रभु कहुं मिलें ताको कहति करि चतुराइ ॥ १० ॥ कान्हरो ॥

नंदग्रामको मारग बूझै है कोऊ दधि बेचनहारी। सुनहू श्याम कठिन तनुगोरै विधुबदनी अरु हाट कठारी॥ अब याको सुत ताहि विरंचै जाहि विरंचि शीशपर धारी। कमल कुरंग चलत वरुना भप राख्यो निकट निखंग सँवारी॥ गति मराल शावक तापाछे जावक मुक्ता सुनत विसारी। सूरदास प्रभु कहत बनै नहिं सुख संपति वृषभानु दुलारी॥ ११॥ विलावल॥शिरमटुकी मुखमौन गही। भ्रमि भ्रमि विवसभई नवग्वारिन नवल कान्हके रस उमही॥ तनुकीसुधि आवति जब मनही तबहि कहति को लेत दही। द्वारेआइ नंदके बोलति कान्ह लेहु किन सरस मही॥ इतउत ह्वैआवति फिरि इहँई महरिं तहां लगि द्वाररही। अवर बोलावत ताहि नहेरत बोलति आनि नंद दरही॥ अंग अंग यशुमति तेहि चरची कहा करति यह ग्वारि वही। सुनहु सूर यह ग्वारि भ्रमानी कबकी एही ढंग रही॥ १२॥ रामकली॥ कबकी मह्यो लिये शिरडोलै॥ झूठेही इत उत फिरि आवै इहां आनि पै बोलै॥ मुँहसो भरी मथनियां तेरी तोहिं रटत भई सांझ। जानतिहौ गोरसको लेवो याही वाखरि मांझ॥ इतधौं आइ बात सुनि मेरी कहे विलग जिनि माने। तेरे घरमे तूही सयानी और वेचि नाहिं जाने॥ भ्रमतहिं भ्रमत भ्रमिगई ग्वालिनि विकलभई बेहाल। सूरदास प्रभु अंतर्यामी आइ मिले गोपाल॥ १३॥ भयो मन माधवकी अवसेर। मौनधरे मुख चितवति ठाढी ज्वाब नआवे फेर॥ तब अकुलाइ चली उठि वनको बोले सुनत नटेर। विरह विवस चहुंधा भरमति है श्याम कहा कियो झेर॥ अबहूं वेगि मिलो नँदनंदन दान करो निरवेर। सूरश्याम अंकम भरिलीन्ही दूरि कियो दुख ढेर॥१४॥विलावल॥सांची प्रीति जानि हरिआए। पूरन नेह प्रगट दरशाए॥लई उठाइ अंक भरि प्यारी।भ्रमि भ्रमि श्रम कीन्हों तनुभारी॥मुख मुख जोरि अलिंगन दीन्हों।बार बार भुज भरि भरि लीन्हों॥वृंदावन घनकुंज लतातर। श्यामाश्याम नवल नवला वर॥ मनमोहन मोहनी सुखकारी। कोककला गुण प्रगटे भारी॥ छूटेबंद अलक शिरछूटे। मोतिनहार टूटि सुख लूटे॥ सूरश्याम विपरीत बढाइ। नागरि सकुचि रही लपटाइ॥ १५॥ रामकली॥ यह कहि मौन साध्यो ग्वारि। श्याम रस घट पूरि उछलित बहुरि धर्‍यो सँभारि॥ वैसेही ढंग बहुरि आई देह दशाविसारि। लेहुरी कोऊ नंदनंदन कहै पुकारि पुकारि॥सखीसों तब कहति तूरी को कहांकी नारि। नंदके गृह जाँउ कित है जहां ह्वै वनवारि॥ देखि वाको चकृत भई सखि विकल भ्रम गई मारि। सूरश्यामहि कहि सुनाऊं गए शिरकहा डारि॥ १६॥ नट॥ श्यामाश्याम करत विहार। कुंजगृह रचि कुसुम शैया छबि वरनिको पार॥ सुरति सुख करि अंग आलस सकुचि बसन सँभारि। परस पद भुज कंठ दीन्हे बैठेहैं वरनारि॥ पीत कंचन वरन भामिनि श्याम तनु अनुहारि। सूर घन अरु दामिनी मिलि प्रगट सुख विस्तारि॥ १७॥ कान्हरो॥ राधा वसन श्याम तनु चीन्ही। सारंग वदन विलास विलोचन हरि सारंग जानि रति कीन्ही॥ सारंग बचन कहत सारंगसों सारंगरिपुहै राखति झीनी। सारंगपानि कहत रिपु सारंग सारंग कहा कहति लियो छीनी॥सुधापान कर कुचनिकी विधि रह्यो शेष फिरि मुद्रा दीन्ही। सूरसुदेश आहि रतिनागर भुज आकर्षि नाम कर लीन्ही॥ १८॥ तुमसों कहा कहौं सुंदरघन। या ब्रजमें उपहास चलतहै सुनि सुनि श्रवन रहति मनही मन॥ जादिन सबनि वछरु नोईकरि मो दुहिदई धेनु वंसीवन। तुम गही बाँह सुभाइ आपने हों चितई हँसि नेक वदनतन॥ तादिनते घर मारग जित तित करत चवाउ सकल गोपी जन। सूरश्यामसों सांच पारिहौं यह पतिवरत सुनहु नँदनंदन॥ १९॥ भैरव॥ कहा कहौं सुंदर घन तुमसों। घेराइहै

चलावत घरघर श्रवण सुनत जिय खुनसों ॥ भैनी मात पिता बंधव गुरु गुरु जन यह कहैं मोसों राधा कान्ह एक संग विलसत मनहींमन अपसोसों॥ कबहुँक कहौं सबनि परित्यागों बूझतिहौं अब गोसों । सूरश्याम दरशन विन पाये नयन देत मोहिं दोसों ॥ २० ॥ रामकली ॥ बात यह तुमसों कहत लजाउँ । सुनि न जात घर घरको घेरा काहू मुख न समाउँ ॥ नर नारी सब इहै चलावत राधा मोहन येक । मात पिता सुनि सुनि अतित्रासत मैं येकै वे अनेक ॥ आपु जबहि द्वारेह्वै निकसत देखत सबै सुगात । निंदति तुमहि सुनावति मोको सुनत ननेक सोहात ॥ धृग नर धृग नारी धृगजीवन तुमहि विमुख धृग देह।सूरश्याम यह कोऊ नजानत तनुह्वैहै जरिखेह॥२१॥गूजरी॥श्याम यह तुमसों क्यों न कहौं । जहाँ तहाँ घरघरको घेरा कौनी भांति सहौं॥ पिता कोपि करवार लेत कर बंधु वधनको धावै । मात कहै कन्या कुलको दुख जनि कोऊ जग जावै ॥ विनती एक करौं करजोरे यहि वीथिनि जिनिआवै । ये जन आपुनको जानत हैं ते जन जन्म नपावै ॥मन कर्म वचन कहतिहौं सांची मैं मन तुमहि लगायो । सूरदास प्रभु अंतर्यामी क्यों नकरहु मनभायो ॥ २२ ॥ रामकली ॥ हँसि बोले गिरिधर रसबानी । गुरुजन खिझत कतहि रिसपावति काहेको पछितानी ॥ देहधरेको धर्म इहैहै सजन कुटुंब गृहप्रानी । कहन देहु कहि कहा करैंगे अपनी सुरति हिरानी ॥ लोकलाज काहेको छाँडाति ब्रजही बसे भुलानी । सूरदास घट ह्वैद्वैकरि मन ये भेद नहीं कछुजानी ॥ २३ ॥ जयतश्री ॥ ब्रजवासि काके बोल सहौं । तुम बिन श्याम और नहिं जानों सकुचनि तुमहि कहौं ॥ कुलकी कानि कहालौं करिहौं तुमको कहां लहौं । धृग माता धृग पिता विमुख तुव भावै तहां वहौं ॥कोऊ करै कहै कछु कोऊ हरप नसोक गहौं । सूरश्याम तुमको विनु देखे तन मन जीव दहौं ॥ २४ ॥ ब्रजहि बसे आपुहि विसरायो । प्रकृति पुरुष एकै करि जानहु बातनि भेद करायो ॥ जल थल जहां रहो तुम विनु नाहिं भेद उपनिपद गायो । द्वैतनु जीभ एक हम तुम दोऊ सुख कारण उपजायो ॥ ब्रह्मरूप द्वितिया नाहिं कोई तब मन त्रिया जनायो । सूरश्याम मुख देखिअल पहँसि आनँद पुंज रढायो ॥ २५ ॥ रामकली ॥ तब नागरि मन हरप भई । नेह पुरातन जानि श्यामको अति आनंदमई ॥ प्रकृति पुरुष नारी पेपति काहे भूलि गई । को माता को पिता बंधु को यहतो भेटनई ॥ जन्म जन्म युग युग यह लीला प्यारी जानि लई । सूरदास प्रभुकी यह महिमा याते विवस भई ॥ २६ ॥ सुही ॥ सुनहु श्याम मेरी इक विनती । तुमहरता तुम करता प्रभुजू मात पिता कौनें गनती ॥ गैवरभेटि चढावत रासभप्रभुता मेटि करतादिनती । अबलों करी लोक मर्यादा मानहु थोरहि दिनती ॥ बहुरि बहुरि ब्रज जन्म लेतहौं इह लीला जानी किनती । सूरश्याम चरणनि ते मोको राखत रहै कहा मिनती ॥ २७ ॥ धनाश्री ॥ देह धरेको यह फल प्यारी । लोकलाज कुलकानि मानिये डरिये बंधु पिता महतारी ॥ श्रीमुख कह्यो जाहु घर सुंदरि बड़े महर वृपभानुदुलारी । तुम अवसेर करत सबह्वैहै जाहु वेगि देहै पुनिं गारी ॥ हमहुँ जाहिं ब्रज तुमहु जाहु अब गेह नेह क्यों दीजै डारी । सूरदास प्रभु कहत प्रियासों नेक नही मोते तुम न्यारी ॥ २८॥ धनाश्री ॥ देह धरेको कारण सोई । लोक लाज कुलकानि न तजिये जाते भलो कहै सब कोई॥ मात पिताके डरको माने माने सजन कुटुंब सब लोई । तात मात मोहूको भावत तनुधरिकै मायावशहोई ॥ सुनि वृपभानु सुता मेरीवानी प्रीतिं पुरातन राखहु गोई । सूरश्याम नागरिहि सुनावत मैं तुम एक नहीहो दोई ॥२९ ॥ सारंग ॥ अब कैसे दूजे हाथ विकाऊं । मन मधुकर कीन्हो वा दिनते चरण कमल निज ठाऊं ॥ जो जानों

औरैकोई करता तऊ न मन पछिताऊं। जो जाको सोई सो जाने अघतारन नर नाऊं ॥ जब परता ति होइया युगकी परमिति छुटत डेराऊं। सूरदास प्रभुसिंधु शरण तजि नदी शरन कत जाऊं ॥ ३० ॥ बिलावल ॥ घर पठई प्यारी अकमभारि। कर अपने मुखपरसि त्रियाके प्रेमसहित दोऊ भुज धरिधरि ॥ सँग सुख लूटि हरषभई हृदय चली भवन भामिनि गजगति ढरि। अंग मरगजी पटोरी राजति छबि निरखत रीझत ठाढेहरि ॥ वेनी डुलति नितंबनि पर दोउ छीन लंक पर वारों केहरि। फिरि चितयो तब प्यारी पियतन दुहुँ मन आनँद हरष करि ॥ राधाहरि आधा आधा तनु येकेद्वैब्रजमेंह्वै अवतरि।सूरश्याम रस भरी उमँग अंग वह छवि देखिरह्यो रतिपति डरि ॥ ३१ ॥ बिलावल ॥ घरहि जाति मन हरष बढाये। दुख डाऱ्यो सुख अंग भारभरि चली लूटि सो पाये ॥ भौंह सकोरति चलति मंदगति नेक वदन मुसुकाए । तहँ एक सखी मिली राधाको कहति भयो मनभाए ॥ कुंजभवन हरि संग विलसि रस मनके सुफल कराए । सूरसुगंध सुनावन हारे कैसे दुरत दुराए ॥ ३२ ॥ जैतश्री ॥ कहा फूली आवतरी राधा। मानहुँ मिली अंक भरि माधव प्रगटत प्रेम अगाधा ॥ भ्रुकुटी धनुष नैन ररसाधे वदन विकास अगाधा । चंचल चपल चारु अवलोकनि कामनचावति ताधा ॥ जेहि रस शिव सनकादि मगन भए शंभु रहत दिन साधा। सोरस दिये सूरप्रभु तोको शिवा न लहति अराधा ॥ ३३ ॥ सोरठ ॥ राधेसों रस वरनि नजाई । जा रसको सुरभान शीश दियो सो तैं पियो अकुलाई ॥ पचिहारे सब वाल कमलमुख चंद्रवदन ठहराई । अजहुँकमध फिरत तेहि लालच सुंदरि सैन बुझाई ॥ मोहन ते रसरूप आगरी कटति नजानि निकाई। सूरदास पपिहाके मुखमें कैसे सिंधु समाई ॥३४॥ नट ॥ मोसों कहा दुरावति राधा।कहां मिली नँदनंदनको जिन पुरयो मनको साधा॥ व्याकुलभई फिरतही अबहीं कामव्यथा तनुवाधा।पुलकित रोम रोम गदगद अब अँग अँग रूप अ गाधा ॥ नाहिं पावत जोरस योगी जन तब तप करतसमाधा। सुनहु सूर तेहि रस परिपूरन दूरि कियो तनुदाधा ॥३५॥ आसावरी ॥ कहा कहति तू भईवावरी ॥तू हँसि कहति सुने कोउ औरै कहा कीन्हों चाहति उपावरी ॥ सोतो सांच माहि यह लैहै हमहि तुमहि बाते सुभावरी। मेरी प्रकृति भलै करि जानति मैं तोसों करिहौं दुरावरी ॥ ऐसी कैसे होइ सखीरी घर पुनि मेरोहै वचावरी सूर कहति राधा सखी आगे चकितभई सुनि कथा रावरी ॥ ३६ ॥ सारंग ॥ श्याम कौन कारेकी गोरे। कहा रहत काके वै ढोटा बृद्ध तरुणकी वोहैंभोरे ॥ यहँई रहत कि और गाउँ कहुँ मैं देखे नाहिन कहुँ उनको। कहै नहीं समुझाइवात इह मोहि लगावति हो तुम जिनको॥कहारहौं मैं वै धौं कहांके तुम मिलवतिहौ काहे ऐसी। सुनहु सूर मोसी भोरीको जोरि जोरि लावतिहौ कैसी ॥ ३७ ॥ जाहुचली मैं जानी तोको। आजुहि पढि लीन्ही चतुराई कहा दुरावति मोको ॥ एही ब्रज तुम हम नँदनंदनहूँ दूरि कतहुँनहिं जैहैं। मेरे फंग कबहुँतो परिहो मुजरा तबहीं दैहैं ॥ उनहि मिले वितपन्नभई अब वै दिन गए भुलाइ। सूरश्याम सँगते उठि आई मोसों कहति दुराइ ॥३८॥ सोरठा ॥ हँसत कहत कीधौं सतभाव। तेरीसों मैं कछू न समुझति कहा कह्यो मोहिं बहुरि सुनाव मेरी शपथ तोहिंरी सजनी कबहूँ कछु पायो यहि भाउ। देख्यो नयन सुन्यो कहु श्रवणनि झूठे कहति फिरतिहौ दाउ ॥ यह कहती औरे जो कोऊ तासों मैं करती अपडाउ। सूरदास यह मोहि लगावति सपनेहु जासों नहिं दरशाउ ॥ ३९ ॥ धनाश्री ॥ राधे तेरो वदन विराजत नीको। जब तू इतउत बंक विलोकति होत निशापति फीको॥भ्रुकुटी धनुष नैन शरसाधे शिरकेसरिको टीको।

मनु घूंघटपट में दुरि बैठो पारधिपति रतिहीको॥गति मैं मंत नाग ज्यों नागरि करे कहतिहौ लीको। सूरदास प्रभु विविध भांति करि मन रिझयो हरिपीको॥४०॥बिलावल॥ राजति राधे अलकभलीरी। मुक्तामांग तिलक पन गनि शिर सुत सेमत भपलेन चलीरी॥ कुमकुम आड श्रवत श्रमजलमिलि मधु पीवत छविछीट चलीरी । चारु उरोज ऊपर यों राजत अरुझे अलिकुल कमलकलीरी ॥ रोमावली त्रिवली उर परशत वंशवढे नट काम बलीरी। प्रीति सोहाग भुजा शिरमंडन जघन सघन विपरीत कदलीरी॥जावक चरण पंचश रसायक समरजीति लै शरन चलीरी । सूरदास प्रभुको सुखदीन्हो नख शिख राधे सुखनि फलीरी॥४१॥रामकली॥सजनी कत यह बात दुरैहौ।ऐसी मोहिं कहै जिनि कबहूं झूठे पर दुखपैहौ॥तांते प्रीतम और कौनहै जाके आगे कैहौं। मोको उचठा एक छपैही बहुरि नाहैं नहिं लैहों ॥ यह परतीति नहीं जिय तेरे सो कहा तोहि चुरैहौं । सूरश्याम धौं कहां रहतहैं काहेको तहां जैहौं ॥ ४२ ॥ धनाश्री ॥ चतुर सखी मन जानि लई। मोसों तो दुराव यह कीन्हों याके जिय कछु त्रास भई ॥ तब यह कह्यो हँसतरी तोसों जिनि मनमें कछु आनै। मानी बात कहावै कहां तू हमहूँ उनहि नजानै ॥ अबै तनक तू भई सयानी हम आगेकी बारी । सूरश्याम ब्रजमें नहिं देखे हँसत कह्यो घर जारी ॥ ४३ ॥ बिलावल ॥ सकुच सहित घरको गई वृषभानु दुलारी। महरि देखि तासों कह्यो कहँ रहीरी प्यारी ॥ पर तोहि नेक नदेखऊँ मेरी महतारी। ढोटत लाज न आवई अजहूँ है बारी ॥ पिता आजु रिस करतहैं दैदै कहै गारी। सुता बडे वृषभानु की कुलखोवनहारी ॥ बंधव मारन कहतहैं तेरे ढगकारी। सूरश्याम सँग फिरतिहै जोबन मतवारी ॥ ४४ ॥ गुंडमलार ॥ कहारी कहति तू मातु मोसों । ऐसे बहिगईको श्याम संग फिरे जो वृथा रिस करति कहा कहों तोसों ॥ कही कौने बात बोलिये तेहि मात मेरे आगे कहै ताहि देखो। तात रिस करत भ्राता कहै मारिहौं भीति विन चित्र तुम करति रेखो ॥ तुमहु रिस करति कछु कहा मोहिं मारिहो धन्य पितु भ्रात मात अरुही । ऐसे लायक नंदमहरको सुत भयो तिनहि मोहि कहति प्रभु सूर सुनहीं ॥ ४५ ॥ गूजरी ॥ काहेको परघर छिन छिन जाति । गृहमें डाटि देति शिषजननी नाहिंन नेक डराति ॥ राधा कान्ह कान्ह राधा ब्रज ह्वैरह्यो अतिहि लजाति । अब गोकुलको जैबो छाँडो अपयशहू न अघाति ॥ तू वृषभानु बडेकी बेटी उनके जाति न पांति । सूर सुता समुझावति जननी सकुचत नहिं मुसकाति ॥ ४६॥ कान्हरो ॥ खेलनको मैं जाउँ नहीं । और लरिकनी घर घर खेलति मोहीको पै कहति तुही ॥ उनके मात पिता नहिं कोई खेलति डोलति जही तही । तोसी महतारी वाहि जाइ नमें रैहौं तुमही बिनही ॥ कबहूं मोको कछू लगावति कबहुँ कहति जिन जाहु कही। सूरदास बातें अनखोही नाहिन मोपै जात सही ॥ ४७ ॥ सारंग ॥ मनही मन रीझति महतारी । कहा भई जो बाढि तनकगई अबहीं तो मेरीहै बारी ॥ झूठेही यह बात उडीहै राधा कान्ह कहत नर नारी । रिसकी बात सुताके मुखकी सुनत हँसी मनही मन भारी ॥ अबलौं नहीं कछू इहि जान्यो खेलत देखि लगावै गारी । सूरदास जननी उर लावति मुखचूमति पोछति रिसटारी ॥४८॥ गूजरी ॥ सुता लये जननी समुझावति। संग बिटिनिअनके मिलि खेलो श्याम साथ सुनि सुनि रिसपावति ॥ जाते निंदाहोइ आपनी जाते कुलको गारी आवति। सुनि लाडिली कहति यह तासों तोको याते रिस करि धावति ॥ अब समुझी मैं बात सबनकी झूठेही यह बात उठावति। सूरदास सुनि सुनि यह बातें राधा मन अतिहरप बढावति॥४९ ॥ नट ॥ राधा विनय करति मनहीं मन सुनहु श्याम अंतरके यामी। मात पिता कुल

कानिहि मानत तुमहिं न जानतहैं जगस्वामी॥ तुम्हरो नाम लेत सकुचतहैं ऐसे ठौर रहीहौं आनी। गुरु परिजनकी कानि मानियो बारंबार कही मुख बानी॥ कैसे संग रहौं विमुखनके यह कहि कहि नागरि पछितानी। सूरदास प्रभुको हृदय धरि गृहजन देखि देखि मुसकानी॥ ५०॥ धनाश्री॥ जब प्यारी मन ध्यान धरयो। पुलकित उर रोमांच प्रगट भए अंचर टरि मुख उघरि टरयो॥ जननी निरखि रही ता छविको कहन चहै कछु कहि नहिं आवै। चकृतभई अंग अंग विलोकत दुख सुख दोऊ मन उपजावै॥पुनि मन कहति सुता काहूकी कीधौं यह मेरीहै जाई। राधा हरिके रंगहि राची जननी रही जियै भरमाई॥ तब जानी मेरी यह बेटी जिय अपने तब ज्ञान कियो। सूरदास प्रभु प्यारीकी छवि देखि चहति कछु शीष दियो॥ ५१॥ सोरठ॥ राधा दधिसुत क्यों न दुरावति। हौंजू कहति वृषभानुनंदिनी काहेको तू जीव सतावति॥जलसुत दुखी दुखीहै मधुकर द्वै पंछी दुख पावत। सूरदास सारंग केहिकारण सारंग कुलहि लजावत॥ ५२॥ विहागरो॥ मेरी सिख श्रवन काहे न करति। अजहूं भोरी भई रैहै कहति तोसों डरति॥ शशिनिरखि मुख चलत नाहिंन नयन निरखि कुरंग। कमल खंजन मीन मधुकर होतहै चितभंग॥ देखिनासा कीर लज्जित अधर दशन निहारि। विंब अरु वंधूप विद्रुम दामिनी डरभारि॥उर निरखि चक्रवाक विथके कटि निरखि वन राज। चाल देखि मराल भूले चलत तब गजराज॥ अंग अंग अवलोकि सोभा मनहि देखिविचारि। सूरसुख पट देति काहेन वरष दश युग भारि॥ ५३॥ सूहा विलावल॥अब राधा तू भई सयानी। मेरी शीष मानि हृदय धरि जहां तहां डोलति बुद्धि अयानी॥ भई लाजकी सामा तनुमें सुनि यह बात कुँवरि मुसकानी। हँसति कहा मैं कहति भली तोहिं सुनत नहीं लोगनकी बानी॥आजुहिते कहुँ जाननदैहौं मा तेरी कछु अकथ कहानी। सूरश्याम के संग न जैहौं जा कारण तू मोहिं सुगानी॥ ॥ ५४॥ टोडी॥ भलीबात बाबा आवनदे। कान्ह लगाइ देति मोहिं गारी ऐसे बड़े भए कवते वे॥ कालि मोहिं मारगमें रोकी जातरही सखियनसँग दधिलै॥ कहन लगे मेरो देहु खिलौना तादिनलै भागी चुराइकै॥ छठि आठैं मोहिं कान्ह कुअँरसों तिनको कहति प्रीति सों सोहै। सूर जननि सुनि सुनि यह बानी पुनि पुनि मुख निरखति विहँसतिहै॥ ५५॥ गौरी॥ बड़ीभई नहिं गई लरिकाई। वारेहीके ढंग आजुलों सदा आपनी टेक चलाई॥ अबहीं मचलि जाइगी तब पुनि कैसे मोसों जाति बुझाई। मानी हारि न हरि मन अपने बोलिलई हँसिकै दुलराई॥ कंठ लगाइ लई अति हितसों पुनि पुनि कहि मेरी रिसहाई। सूरदास अति चतुरराधिका राखिलई नीके चतुराई ॥५६॥ गुंडमलार॥ श्यामनग जानि हिरदै चुरायो। चतुर वर नागरी महामणि लखिलियो प्रियसखी संगनाहिन जनायो॥कृपिनि ज्यों धराति धन ऐसे डिठ कियो मन जननि सुनि बात हँसि कंठ लायो। गांसदियो डारि कह्यो कुँवरि मेरी वारि सूर प्रभु नाम झूठे डरायो॥ ५७॥ कल्याण॥ सखियन इहै विचार परयो। राधा कान्ह एक भए दोऊ हमसों गोप करयो॥ वृंदावनते अबहीं आई अति जिय हरष बढ़ाये। औरे भाव अंग छविऔरै श्याम मिले मनभाये॥ तब वह सखी कहति मैं बूझी मोतन फिरि हँसि हेरयो। जबहिं कही सखि मिले तोहिं हरि तब रिस करि मुख फेरयो॥ औरे बात चलावन लागी मैं वाको पहिचानी। सूरश्यामके मिलत आजही ऐसी भई सयानी॥ ५८॥ सोरठ॥ सुनहु सखी राधाकी बातें।मोसों कहति श्यामहैं कैसे ऐसी मिलई घातें॥ की गोरे की कारे रंग हरि की जोवनकी भोरे।की यहि गाउँ बसतकी अनतहि दिननि बहुत की थोरे॥की तू कहति बात हँसि मोसों की बूझति सतिभाऊ। सपनेहूं उनको नहिं देखे वाके सुनहु उपाऊ॥ मोसों कही

कौन तोसी प्रिय तोसों बात दुरैहौं। सूर कही राधा मो आगे कैसे मुख दरशैहौं ॥ ५९ ॥ गौरी ॥ वह निधरक मैं सकुचि गई। तब यह कह्यो जाहि घर राधा मैं झूठी तैं सांच भई ॥ त्योंरीभौंह नमोतन चितवै नैकरहों तो करै खई। कामभंडार लूटि नीके करि निदरिगई मैं चक्रतभई ॥ घरधौं जाइ कहा अब कैहै अब कछु अवरै बुद्धि नई। सूरश्यामअंग संग रँग राची मनमानो सुख लूटि लई ॥ ६० ॥ बिलावल ॥ सुनि सुनि बात सखी मुसकानी। अबहीं जाइ प्रगट करि दैहैं कहा रहै यह बात छपानी ॥ औरनिसों दुराव जो करती तौ हम कहती भली सयानी। दाई आगे पेट दुरावति वाकी बुद्धि आज मैं जानी ॥ हमजातहि वह उघारि परैगी दूध दूध पानीसो पानी। सूरदास अब करति चतुरई हमहि दुरावति बातन ठानी ॥ ६१ ॥ रामकली ॥ अपनो भेद तुम्हैं नहिंकैहै। देखहु जाइ चरित तुम वाके जैसे गाल बजैहै ॥ बडे गुरूकी बुद्धि पढी वह काहू को न पत्यैहै। एकौ बात मानिहै नाहीं सबकी सौंहैं खैहै॥मैं नीके करि बूझि रहीहौं अब बूझे रिस पैहै। सुनहु सूर रस छकी राधिका बातन बैर बढैहै॥६२॥बिलावल॥ कहा बैर हमसों वह करिहै। वाकी जाति भले करि पाई हमको कहा निदरिहै ॥ कैहै कहा चोरटी हमसों बातैं बात उघरिहै। दूरिकरौं लँगराई वाकी मेरेफंग जो परिहै ॥ हमसों बैर किये कहा पैहै काज कहा पुनि सरिहै। सूरदास मटुकी शिरलीन्हें बहुरि वेसही रहिहै ॥६३॥ चलहु सखी जैये राधा घर। बूझे बात कहाधौं कैहै निधरकहै कीधौं मनमें डर ॥ कीधौं हमहि देखि भजि जैहै की उठि हमको मिलिहै। कीधौं बात उघारि कहैगी की मनहीमन गिलिहै ॥ कीधौं हँसिबोलै की रिसकरि कीधौं सहज सुभाई। कीधौं सूरश्याम रसमाती जोवन गर्व बढाई ॥ ६४ ॥ युवती जुरि राधा ढिग आई। लखिलीनी तब चतुर नागरी ये मोपर सबहैं रिसहाई ॥ आदरनहीं कियो काहूको मनमें एक बुद्धि उपजाई। मौनगह्यो नहिं बोलति तिनसों बैठिरही करिकै चतुराई ॥ आपुहि बैठिगई ढिग सिगरी जब जानी यह तौ चतुराई। सूरदास वे सखी सयानी और कहूंकी बात चलाई ॥ ६५ ॥ जयतश्री ॥ चतुर चतुरकी भेट भई। वैतो निठुर मौनह्वै बैठी इन सबहिन लखि ताहि लई ॥ मुहाचही युवतिन तब कीन्हीं देखौ उलटी रीति भई। कहा हमारो मन यह राखै अरु हमही पर सतरगई॥ बूझहु याहि खूट धरिकै तू कहा आजु यह मौन लई। सुनहु सूर हमसों कहा परदा हम करिदीन्ही साठसई ॥ ॥ ६६ ॥ गुंड ॥ राधिका मौनव्रत किन संधायो। धन्य ऐसो गुरू कानके लागतही मंत्रदै आजुही वह लखायो ॥ कालि कछु और प्रातहि कछु औरही अबहि कछु और ह्वैगईप्यारी। सुनत यह बात दौरिआई सबै तोहिं देखत भई चक्रत भारी ॥ अब कहो बात या मौनको फल कहा सुनि जुलीजे कछु हमहु जानै। एकही संग भई सबै जोबन नई अब होहु गुरु हम तुमहि मानै ॥ देहिं उपदेश हमहूं धरैं मौन सब मंत्र जब लियो तब हम नवोली। सूर प्रभुकी नारि राधिका नागरी चरचि लीन्हो मोहि करति ढोली॥६७॥ मारू ॥ की गुरु कहौ कि मौनै छांडौ। हमहिं मूरख बदति आपुएढंग सदति पाइअब मदति हठ कतहिमाडौ॥एकही संगहम तुमसदारहतिहैं आजुहीचटाकेतूभई न्यारीभेद हमसों कियो और कोऊ बियो कहा धौं कहै कहा देहि गारी॥कहा तोही भयो तेरी प्रकृति कौनैहरी रीति यह नई तैंही चलायो॥सूर सुनि नागरी गुणनकी आगरी निठुरईसो बात कहिसुनायो ॥ ६८ ॥ गौरी ॥ तुम प्रीतम की वैरनि मेरी। वासों कहति मिली जो मारग यह मोसों अति कही अनेरी॥ अहति कहा श्यामहि मिलिआई मैं चाकि रही सौंह मोहिं तेरी। मेरे अंग छवि और कहति कछु युवती सुनत रही मुख हेरी॥मैं जिनको सपनेहून देखे तिनकी बात कहत फिरि फेरी॥सूरदास गुणभरी

राधिका महिमाको जानै यहि केरी॥६९॥ कल्याण॥तुमसों कछु दुरावहै मेरो।कहां कान्ह कहां में सुनि सजनी ब्रज घर घर यह चलतहै घेरो ॥ और कहत सब मोहिं न व्यापै तुमहूँ कहौ यह बानी।आदर नहीं कियो याहीते तुमपर अतिहि रिसानी ॥ हमतौ नहीं कह्यो कछु तोसों ताही पर रिस करती। सूर तबहिं हमसों जो कहती तेरी वां ह्वै लरती ॥ ७० ॥ रामकली ॥ सखी तू राधहि दोष लगावति। तेरी श्याम कहां ए देखे बातन वैर बढ़ावति ॥ हम आगे झूठी नहिं कैहै सखियन सैन बतावति । ऐसीबात अरी मुख तेरे कैसी धौं कहि आवति ॥ भेदहि भेद कहतिहै बातें ऐसे मनहि जनावति । सूरश्यामतें देखेनाहीं कीधौं हमहि दुरावति ॥ ७१ ॥ नटनारायण ॥ काको काको मुख माई बात नको गहिये। पांचकी सात लगायो झूंठी झूंठीकै बनायो सांची जो तनक होइ तौलौं सब सहिये ॥ बातनि गह्यो अकास सुनत न आवै सांस बोलि तो कछु न आवै ताते मौन गहिये। ऐसे कहै नर नारि विना चित्र भीति कारि काहेको देखे मैं कान्ह कहा कहौ सहियै॥ घर घर इहै घेर वृथा मोसों करै बैर यह सुनि श्रवणनि हृदय सहि दहिये। सूरदास बरु उपहास सहौंई सुर मेरे नंदसुवन मिलैं तोपै कहा चाहियै ॥ ७२ ॥ गुंडमलार ॥ दुरत नाहिं नेह अरु सुगंध चोरी। कहा कोऊ कहै तू सुनतिकाहेनरहै तनहिं कत दहै सुनि सीख मोरी ॥लोगतोहि कहत हैं पाप को गहतहैं कहाधौं लह तहैं सुनहु भोरी। खरिकहू नहिं मिले कहै कह अनभले करनदे गिले तू दिनानि थोरी ॥ नंदको सुवन अरु सुता वृषभानुकी हँसत सब कहै चिरजीवै जोरी। सूर प्रभु कहां तू कहां वे अपने भव नमें लखी तोहि तोसी न वोरी॥७३॥ बिलावल॥ कैसेहैं नंदसुवन कन्हाई। देखे नहीं नयनभरि कबहूं ब्रजमें रहत सदाई॥ सकुचतिहौं एकबात कहत तोहिं सो नहिं जात सुनाई। कैसेहुँ मोहिं देखावहु उनको यह मेरे मन आई॥ अतिही सुंदर कहियत है वै मोकों देहि बताई। सूरदास राधाकी वाणी सुनत सखी भरमाई॥७४॥ धनाश्री॥ सुनहु सखी राधाकी बानी। ब्रजबसिहारि देखे नाहिं कबहू लोग कहत कछु अकथ कहानी॥ ये अब कहति देखावहु हरिको देख हुरी यह अकथ कहानी ।जो हम सुनत रही सो नाहीं अब ऐसेहि यह बात वहानी ॥ ज्याव नदेत बनै काहूसों मनमें काहु नमानी। सूर सबै तरुणी सुखचाहत चतुर चतुरईठानी ॥७५॥ बिलावल ॥ सुनि राधे तोहिं श्याम देखावैं।जहां तहां ब्रजगलिन फिरतहै जबहीं वे यहि मारग आवें॥जबहीं हम उनको देखेंगी तहांई तोहिं बोलैहैं। उनहूंके लालसा बहुत यह तो देखे सुख पैहैं ॥ दरशनते धीरज जबरैहै तब हम तोहिं पतैहैं। तुमको देखि श्याम सुंदर घन मुरली मधुर बजैहैं॥तनु त्रिभंग करि अंग अंगमो नाना भाउ जनैहैं। सूरदास प्रभु नवल कान्हवर पीतांबर फहरैहैं ॥ ७६ ॥ गुंडमलार ॥ नंदनंदन दरशन जब पैहो । येक द्वै तीनि तजि चारि बानी पांच छहनिदारि तबहिं सातै भुलैहो ॥ आठहूं गाँठि परिहै नवहु दशदिशा भूलिहौ ग्यारहो रुद्रजैसे। बारहौ कला ते तपनि तपते मिटत तेरहो रतन मुख छबिन तैसे ॥ निपुन चौदह वरन पंद्रहो सुभग अति वरष षोडश सतर होन रैहै । जपत अठारहो भेद उनईस नहिं बीसहू बिसौ तै सुखहि पैहै ॥ नैनभरि देखि जीवन सफल करि लेवि ब्रजहि में र हति तैं नहीं जाने। सूरप्रभु चतुर तुमहू महाचतुरहो जैसे तुम तैसे वोऊ सयाने॥७७॥ देवगंधार॥ मन मन हँसति राधिका गोरी। ऐसे श्याम रहत ब्रजभीतर बूझतिहै भैभोरी ॥ तुम उनको कहुँ नहिं देखेहैं की सुनी कहतिहो बात। चतुराई नीके गहि राखी कहत सखी मुसिकात ॥ कबहूंतो काहू फंग परिहौ तबहीं लीजो चीन्हि। सूरश्याम को पीतांबर बेसरि लीजो मेरी छीनि ॥ नट॥७८॥यह सुनि हँसि चलीं ब्रजनारि। अतिहि आई गर्वकीन्हे गई घर झखमारि ॥ कबहुँ तो हम देखिहैं

येक संग राधा कान्हाभेद हमसों कियो राधा निठुरभई निदान्ह॥ वीस विरियां चोर कीतौ कबहुँ मिलिहै साहु। सूर सब दिन चोरको कहुँ होतहै निरवाहु॥ ७९॥ कान्हरो॥ भेदलियो चाहति राधासों। बैठिरहौ अपने घर चुपके कामकहा काहू बाधासों॥ यह मन दूरि धरौ अपनो लै अति वरबोलि गई कह कीन्हों। कैसे निर्भय रही सबनिसों भेद नकाहुहि दीन्हों॥ वह कैसे फँग परै तुम्हारे वाके घात नजानों। सूर सबै तुम बड़ी सयानी मोहिं नहीं तुम मानों॥ ८०॥ बिलावल॥ फेरि आइ देखो मैं धरिहौं।सुनुरीसखी प्रतिज्ञा मोरी तेरी दिन तासों हरिहौं॥हमको निदरि रहीहै राधारिसनि रहीमैं जरिहौं। तब मेरे मन धीरज ऐहै चोरी करत पकरिहौं॥ राति दिवस मोहिं चैन नहीं अब उनको देखत फिरिहौं। सूरदास स्वामीके आगे नीके ताहिनिदरिहौं॥ ८१॥ नटनारायण॥ गोपी इहै करति चवाउ। देखोधौं चतुराई वाकी हमहि कियो दुराउ॥ लरिकईते करत एढंग तबै रहै सतिभाउ। अब करति चतुरई जाने श्याम पठाये दाउ॥ कहालौं कारि है अचगरी सबै ए उपजाउ। आजु वाची मौन धरि जो सदा होत बचाउ॥ दिवस चारिकभोर पारहु रहौं येक सुभाउ। सूर कालिहि प्रगट कैहै करनदै अपडाउ॥ ८२॥ सूहा बिलावल॥ कहाकहति तू बात अयानी। तुम इह कहिति सबै वह जानति हम सबते वह बड़ी सयानी॥ सात वरष ते येढंग सीखे तुम तौ यह आजुहि है जानी॥वाके छंद भेद को जानै मीन कबहिं धौं पीवत पानी॥ हरिके चरित सबै उहि सीखे दोऊहैं वे वारहवानी। कालि गई वाके घर सब मिलि कैसी बुद्धि मौन की ठानी॥ केती कही नेकु नहिं बोली फिरी आइ तब हमहि खिसानी॥सूरश्याम संगतिकी महिमा काहूको नेकहु न पत्यानी॥ ८३॥ मारू॥ तबहि राधा सखियनपै आई। आवत देखि सबनि मुख मूँदो जहां तहां रही अरगाई॥ मुख देखत सब सकुचि गईं यह कहां अचानक आई। करति रहीं चुगुली हम याकी तरुनी गईं लजाई॥ अति आदर करि बैठक दीन्हो कह्यो कहां तुम आई। कहा आजु सुधि करी हमारी सूरश्याम सुखदाई॥ ८४॥ रागधनाश्री॥ मैंकह आजुनिबेरी आई। बहुतै आदर करति सबै मिलि पहुनेकी करिये पहुनाई॥ कैसी बात कहति तू राधा बैठनको नहिं कहिये। तुम आई अपने घरते ह्याँ हमहुँ मौन धरि रहिये॥ जानिलई वृषभानु सुता हँसि कह्यो तरक तुम कीन्हो। सूरदास तादिनको बदलो दाउँ आपनो लीन्हों॥ ८५॥ धनाश्री॥ दाउँ घाउ तुमही सब जानति।सदा मानि तुमको हम आईं अबहूं तैसे मानति॥तुम वह बात गांस करि राख्यो हमको गई भुलाई।तादिन कह्यो नहीं मैं जानो मानि लई सतिभाई॥ चोर सबनि चोरी करि जानो ज्ञानी मन सब ज्ञानी।सूरदास गोपिनकी वाणी राधा सुनि मुसकानी॥८६॥सखी तुम बात कही यह सांची।जाके हृदय जो कहै मुखते तौन कैसे हरिको नकहि लीक खांची॥हरषि ब्रजनारि भरि लेत अंकमवारि सब कहति तू कहा इहबात जाने। हम हँसति कहति तू रिस कहा गहतिरी नागरी राधिका विलगु मानै॥तुमहि उलटी कहो तुमहि पलटी कहो तुमहि रिसकरति मैं कछु नजानौं।सूर प्रभुको नाम मोहिं तुमही कह्यो श्रवन यह सुन्यो तुम कछू मानो८७॥अथ ग्रीष्मलीला॥सखिन सहित यमुना विहार॥ टोडी॥ पुनि कहियों अब न्हान चलौगी। तब अपनो मन भायो कीजो जब मोको हरि संग मिलोगी॥ उहै बात मनमें गहि राखी मैं जानति कबहुँन बिसरौगी। बडी बार मोको भई आए न्हान चलतकी बहुरि लरोगी॥गहि गहि बांह सबनि करि ठाढी कैसेहू घरते निसरौगी। सूरराधिका कहति सखिनसों बहुरि आइ घरकाज करौगी॥ ८८॥ मारू॥ राधिका संग मिलि गोपनारी। चली हिलि मिलि सबै रहसि विहसति तरुनि परस्पर कौतूहल करत भारी॥ मध्य ब्रजनागरी रूप रस

आगरी घोष उजागरी श्याम प्यारी । जुरीं ब्रजसुंदरी दशनछवि कुंदरी काम तनु दुंदरी करण हारी ॥ अंग अंग सुभग अति चलति गजगति कृष्णसोएकमति यमुनजाही । कोऊ निकसि जाति कोऊ ठठकि ठाढी रहति कोऊ कहति संग मिलि चलहु नाही ॥ युवती आनंद भरी भई जुरिकै खरी नहीं छरहरी उठि बसै थोरी । सूरप्रभु सुनि श्रवन तहां कीन्हों गवन तरुणि मन रवन सब ब्रजकिसोरी ॥ ८९ ॥ नटनारायण ॥ गई ब्रजनारि यमुनातीर । देखिलहरि तरंग हरषी रहत नहिं मनधीर॥संग राजति कुँवारि राधा भई सोभा भीर। स्नानको वे भई आतुर सुभग जल गंभीर॥ कोऊ गई जल पैठि तरुनी और ठाढी तीर। तिनहि लई बोलाइ राधा करति सुख तनकीर॥ एक एकहि धरति भुजभरि एक छिरकति नीर। सूर राधा हँसति वाढी वढी छवि तन चीर॥९०॥ जयतश्री ॥ राधा जल विहरत सखियन संग । ग्रीवप्रयंतनीरमेंठाढी छिरकत जल अपने अपने रंग ॥ मुख भरि नीर परस्पर डारति सोभा अतिहि अनूप वढी तव । मनहु चंद्र गन सुधा गई खनि डारतहै आनंद भरे सब ॥ आई निकसि जातु कटिलों सब अँजुरिनते जलडारत । मनहुं सूर कनकवल्ली जुरि अमृत पवन मिसझारत ॥ ९१ ॥ नट ॥ यमुनाजल विहरत ब्रजनारी । तट ठाढे देखत नँदनंदन मधुर मुरलि करधारी ॥ मोरमुकुट श्रवणन मणिकुंडल जलजमाल उर भ्राजत सुंदर सुभग श्याम तनु नव घन विच वगपांति विराजत । उर वनमाल सुभग वहुभांतिनुश्वेत लाल सित पीत। मनों सूर सरितटि वैठे शुक वरनत वरन जिभीत।पीतांवर कटि छुद्रावलि वाजत परम शब्द रसाल। सूरदास मनों कनक भूमि ढिग बोलत रुचिर मराल ॥ ९२ ॥ विहागरो ॥ नटवर भेष काछे श्याम । पद कमल नख इंदु सोभा ध्यान पूरण काम ॥ जानु जंघ सुघटानि कर भा नाहि रंभा तूल । पीतपट काछनी मानहुं जलजकेसर झूल ॥ कनक छुद्रावली पंगति नाभि कटिके भीर । मनहुँ हंस रसाल पंगति रहेहैं ह्रद तीर ॥ झलक रोमावली सोभा ग्रीव मोतिनहार। मनहु गंगा वीच यमुना चलीमिलि त्रियधार॥वाहुदण्ड विसाल तट दोउ अंग चंदनु रेनु । तीर तरु वनमालकी छवि ब्रजयुवति सुखदेनु । चिवुक पर अधरानि दशनद्युति विंवु वीज जलाइ। नासिका शुक नयन खंजन कहत कवि सरमाइ ॥ श्रवण कुंडल कोटि रवि छवि भ्रुकुटि काम कोदंड । सूर प्रभुहै नीपके तर शीश धरे श्रीखंड ॥ ९३ ॥ पूर्वी ॥ उपमा धीरज तज्यो निरखि छवि । कोटि मदन अपनो वल हारयो कुंडल किरनि वीच जो छप्योरवि॥ खंजन कंज म धुप विधु ताडिघन दिनकर रहत कहूंवे दवि । हरिपटतर दै हमहि लजावत सकुचनहीं आवत खोटै कवि ॥ अरुन अधर दशनानि दुति निरखत विद्रुम शिखर लजानेसव । सूरश्याम आछे वपु काछे पटतर मेटि विराने अव ॥ ९४ ॥ गौरी ॥ उपमा हरि तन देखि लजाने । कोउ जलमें कोउ वनमें रहे दुरि कोऊ गगन समाने ॥ मुख निरखत शशिगयो अंवरको तडित दशन छवि हेरो । मीन कमल करचरन नयन डर जलमो कियो वसेरो ॥ भुजादेखि अहिराज लजाने विवरानि पैठे धाइ। कटिनिरखत केहरि डर मान्यो वन वनरहे दुराइ ॥ गारीदेहि कविनके वर्णत श्रीअँगपटतर देत । सूरदास हमको विरमावत नाउँ हमारो लेत ॥ ९५ ॥ सारंग ॥ ऐसे गोपाल निरखि तिल तिल तनु वारौं । नवकिसोर मधुरमूरति सोभा उर धारौं ॥ अरुण तरुण कंज नयन मुरली कर राजै । ब्रजजन मन हरन वेन मधुर मधुर वाजै । ललितवर त्रिभंग सुतन वनमाला सोहै । अति सुदेश कुसुम पाग उपमाको कोहै ॥ चरण रुनित नूपुर कटि किंकिनि कलकूजै । मकराकृत कुंडल छवि सूरकौन पूजै ॥ ९६ ॥ कान्हरो ॥ वनि मोतिनकी माल मनोहर । सोभित श्यामसुभग उर ऊपर

मनो गिरिते सुरसरी धसीधर ॥ तट भुजदंड भौंर भृगु रेखा चंदन चित्रित रंगनि सुंदर । मणिकी किरणि मीन कुंडल छबि मनों मकर मिलन आवत त्यागे सर ॥ ता ऊपर रोमावलि राजत मणिवर तीखन ज्योति सितावर । संतहि ध्यान स्नान करत नित कर्मकीच धोवे तनि केंकर ॥ यज्ञोपवीत विचित्र सूर प्रभु सुनि मध्यधार धारा जो वानीवर । शंख चक्र गदा पद्म पानि मनो कमल कुलहं सनि कीन्हे घर ॥ नटनारायण ॥ राधे निरखि भूली अंग । नंदनंदन रूप पर गति मति भई तनुपंग ॥ इत सकुच अति सखिनको उत होत अपनी हानि । ज्ञानकरि अनुमान कीन्हो अवहि लैहैजानि ॥ चतुर सखियन परखिलीन्ही समुझि भई गँवारि । सबै मिलि इत न्हान लागीं ताहि दियो विसारि ॥ नागरी मुख श्याम निरखत कबहुँ सखियन हेरि । सूर राधा लखति नाहीं इन दई अवटेरि ॥ ९७॥ कान्हरो ॥ जब जान्यो ये न्हाति सबै । हरि प्रति अंग अंगकी सोभा अँखियन मगहे लेउ अबै ॥ कम लकोसमें आनि दुरावो बहुरि दरशधौं होइ कबै । यह मन करि युवतिन तनु हेरति सकुचतिहैं पुनि नहीं फबै ॥ कबहुँक कहै तजौ मर्यादा इनिसोंमैं करि गोप तबै । सूरश्याम तवहीं मन मानैसं गहि रैहौं जाइ जबै ॥ गौरी ॥ चित राधारतिनागर ओर । नयनवदन छवि यों उपजत मानों शशि अनुराग चकोर ॥ सारससर अचवनको मानहु फिरत मधुप युगजोर । पान करत त्रिय तन मानत पलक नदेत अकोर ॥ लिये मनोरथ मानि सकल ज्यों रजनि गए पुनि भोर । सूर परस्पर प्रीति निरंतर दंपतिहैं चितचोर ॥ कल्याण ॥ यह कछु भोरेहि भाइ भई । निरखत वदन नंदनँदनको अब रहती सो गई ॥ हिरदैजामि प्रेम अंकुर जारि सप्त पतार गई । सो द्रुम पसारि शिखर अंबरलों सब जग छाइ लई ॥ वचन सुपत्र वकल अवलोकनि गुननिधि पुहुप मई । परस परम अनुराग सींचि सुख लगी प्रमोद जई ॥ मनके सकल मनोरथ पूरण सेमर भार नई । सूरदास फल गिरिधर नागर मिलि रसरीति ढई ॥ रामकली ॥ चितवनि रोकेहूं नरही । श्याम सुंदर सिंधु सन्मुख सरित उमगि वही । प्रेम सलिल प्रवाह भँवरनि मिलि कबहुँ न थाह लही । लोभ लहरि कटाक्ष घूंघट पट करार ढही ॥ थके पल पथ नाव धीरज परत नहिन गही । हिलि मिलि सूर स्वभाव श्यामहि फेरीहू न चही ॥ जैतश्री देखी हरि राधा उत अटकी । चितैरही एकटक हरिही तन नाजानिये कौन अंग लटकी ॥ कालिहमो कैसे निदरतिही मेरे चित वह टरति न खटकी । न्हातरही कैसे संग मिलिकै चित चंचल विरहाकी चटकी ॥ वात करत तुलसी मुख मेले नयन शयनदै मुँह मटकी । सूरश्यामके रूप भुलानी राधाके चित सुधि न घटी ॥ ४० ॥ विलावल ॥ चितै रही राधा हरिको मुख । भ्रुकुटी विकट विसाल नयन युग देखत मनहि भयो रतिपति दुख ॥ उतहि श्याम एक टक प्यारी छवि अंग अंग अवलोकत । रीझि रहे उत हरि इत राधा अरस परस दोउ नोकत ॥ सखिन कह्यो वृषभानु सुतासों देखे कुवँर कन्हाई । सूरश्याम एई हैं व्रजमें जिनकी होति वड़ाई ॥ ४१ ॥ रामकली ॥ हमहि कह्यो हो श्याम देखावहु । देखहु दरश नयन भरि नीके पुनि पुनि दरशन पावहु ॥ बहुत लालसा करत रही तुम वे तुम कारण आए । पूरी साध मिली तुम उनको याते हमहिं वोलाये ॥ नीके सगुण आजु ह्यां आई भयो तुम्हारो काज । सुनहु सूर हमको कछु दैहौ तुमहि मिले व्रजराज ॥ ४२ ॥ राधा कह्यो आजु इन जानी । बारबार मैं हरि तन चितई तबही ये मुसकानी ॥ कालि कह्यो मैं इन सों वैसे अवतो बात न ठानी । इह चतुरई परी मोही पर मन मन अतिहि लजानी ॥ मेरी बात गई इनि आगे अवहि करति विनपानी । सूरदास प्रभु कहा कहौमैं तू अव हाथ विकानी ॥ ४३ ॥ विलावल ॥ मैं अतिही यह पोच करी । ये मेरी मर्यादा लैहैं तादिन इनिसों बहुत लरी ॥ सुंदर श्याम कमलदल लोचन तुम अव

होहु सहाइ। ऐसी कहौं बात इन आगे मेरी पति जिन जाइ॥ तब यक बुद्धि रची मनही मन अति आनंद हुलास। सूरश्याम राधा आधातन कीन्हो बुद्धि प्रकाश ॥ ४४ ॥ गूजरी ॥ राधा चलन भवनही जाहि। कबहि की हम यमुना आईं कहहिं अरु पछिताहि ॥ कियो दरशन श्यामको तुम चलोगीकी नाहि। बहुरि मिलिहो चीन्हि राखहु कहतिं सब मुसकाहि॥ हम चली घर तुमहुँ आवहु सोच भयो मन माहि। सूर राधा सहित गोपी चलीं ब्रज समुहाहि॥ ४५॥ बिलावल॥ कहि राधा हरि कैसेहैं।तेरे मन भायेकी नाहीं की सुंदरकी नैसेहैं।की पुनि हमहि दुरावकरोगी की कैहौ वैजेसे हैं। की हम तुमसों कहत रही ज्यों सांच कहो की तैसेहैं॥ नटवर भेप काछनी काछे अंगनि रातिपाति सैसेहैं। सूरश्याम तुम नीके देखे हम जानाति हरि ऐसेहैं ॥ ४६ ॥ राधामनमें इहै विचाराति।ये सब मेरे ख्याल परीहैं अबही बातनलै निरुवाराति॥ मोहूते ये चतुर कहावति ये मनही मन मोको नाराति । ऐसे वचन कहौंगी इनको चतुराई इन की मैं झाराति ॥ जाके नंद नँदन शिरसमरथ वार वार तनु मन धन वाराति । सूरश्यामके गर्व राधिका सूधे काहू तन न निहाराति ॥ ४७ ॥ सूही ॥ राधा हरिके गर्व गहीली। मंद मंद गति मत्त मतंगज्यों अंग अंग सुख पुंज भरीली॥ पगद्वै चलति ठटकि रहै ठाढी मौन धरे हरिके रसगीली॥धरनी नख चरननि कुरवाराति सौतिन भाग सुहाग डहीली ॥ नेकनहीं पियते कहुँविछुराति ताते नाहिन काम दहीली। सूरसखी बूझै यह कैहो आजु भई इह भेद पहीली ॥४८॥ आसावरी ॥ क्यों राधा फिरि मौन धरयोरी। जैसे नउआ अंध झवखर तैसेहि तैं यह मौन कह्योरी॥ बातनहीं मुखते कहि आवाति को तेरो मनँ श्याम हरयोरी। जानि नहीं पहिचानि न कँबहू देखतही चित तिनहि ठरयोरी ॥ साँची बात कहौं तुम हमसों कहा सोच सो जियहि परयोरी । सूरश्याम तन देखि रही कहा लोचन इकटक ते न टरयोरी ॥४९॥ धनाश्री॥ कहा कहति तुम बात अलेखे। मोसों कहति श्याम तुम देखे तुम नीके करिदेखे॥कैसो वरन भेषहै कैसो कैसे अंग त्रिभंग।मो आगे वह भेद कहो धौंकि सोहैं तनु रंग मैंदखे कीनाही देखे तुमतो वारहजार।सूरश्याम द्वै अँखियन देखति जाको वार नपार॥५०॥कान्हरो॥हम देखे यहि भाँति कन्हाई।शीशश्रीखंड अलक विथुरे मुख श्रवननि कुंडल चारु सोहाई॥ कुटिल भ्रुकुटि लोचन अनियारे सुभग नासिका राजत। अरुन अधर दशनावलिकी द्युति दारिम कन तन लाजत ॥ ग्रीवहारमुक्ता वनमाला बाहुदंड गजशुंड। रोमावली सुभग वगपंगति जात नाभि हृदय झुंड॥कटि पटपीत मेखला कंचन सुभग जंघ युग जान। चरन कमल नखचंद्र नहीं सम ऐसे सूर सुजान॥५१॥बिलावल॥बनेहैं विसाल कमल दल नैन। ताहूमें अति चारु विलोकनि गूढभाव सूचत सखिसैन॥वदन सरोज निकट कुंचित कच मनहु मधुपआए मधुलैन।तिलक तरनि शशि कहत कछुक हँसि बोलत मधुर मनोहर बैन॥मदननृपतिको देश महामद बुधि बल बसि न सकत उर चैन।सूरदास प्रभु दूत दिनहि दिन पठवत चारित चुनौती दैन ॥५२॥देवगंधार॥मोहन बदन विलोकत अँखियन उपजतहै अनुराग। तरनिताप तलफाति चकोरगति पिवत पियूष पराग॥ लोचन नलिन नये राजत रति पूरण मधुकर भाग। मानहु आलि आनंद मिले मकरंद पिवत रतिफाग॥भँवरिभाग भ्रुकुटी पर कुमकुम चंदनविंदु विभाग।चातक सोम शक्र धनु घनमें निरखत मनु वैराग॥कुंचित केश मयूर चंद्रिका मंडल सुमन सुपाग। मानहु मदन धनुष शर लीन्हे बरषतहै बन बाग॥अधरबिंब विहँसान मनोहर मोहन मुरली राग। मानहु सुधा पयोधि घेरि घन ब्रजपर वरषन लाग॥ कुंडल मकर कपोलनि झलकतश्रमसी करके दाग। मानहुँ मीन मकर मिलि क्रीडत सोभित शरद

तड़ाग।नाशा तिलक प्रसून पद विपर चिबुक चारु चित खाग। दाड़िम दशन मंदगति मुसकनि मोहत सुर नर नाग॥ श्री गोपाल रस रूप भरींहैं सूर सनेह सोहाग। ऐसी सोभा सिंधु विलोकत इन अँखियनके भाग॥ ५३ ॥ धनाश्री ॥ हम देखे यहि भांति गोपाल। छंद कपट कछु जानति नाहीं सूधीहैं ब्रजकी सब बाल॥झूठीकी सांची नहिं भाषें सांची झूठी कबहुँ नहोइ। सांचीकी झूठी करिडारें यह सोई जानें धनि जोइ॥ इतननिमें दुराव कछु नाहीं भेदाभेद विचार। सूरदासते झूठी मिलवै तनुकी गति जानै करतार॥ ५४ ॥ आसावरी ॥ झूठीबात नहोति भलाई। चोर जुआ रसंग बरु करिये झूठेको नहिं कोउ पतिआई॥ सांचीकी झूठी करिडारें पंचनमें मर्यादा जाई। बोलि उठी एक सखी बीचहींतें कह जानैं लाज बड़ाई। यामें कछू नफाहे उनको जाते मन ऐसी ये भाई। सूर स्वभाउ परचो ऐसोई को जानैरी बुद्धि पराई॥५५॥धनाश्री॥ऐसे हम देखे नँदनंदन।श्याम सुभग तनु पीत बसन जनु मनहु जलद पर तड़ित सुछंदन॥ मंदमंद मुरली मुख गरजनि सुधावृष्टि बरषत आनंदन। विविध सुमन वनमाला उर मनु सुरपति धनुप नहीं येहिछंदन॥ मुक्तावली मनहुँ बगपंगति सुभग अंग चरचित छवि चंदन। सूरप्रभूनीप तरोवर तर ठाढ़े सुर नर मुनि वंदन॥५६॥ बिलावल ॥तुमको कैसे श्याम लगे। न्हातरही जलमें सब तरुनी तब तुअ नैना कहां लगे॥ अंग अंग अवलोकन कीन्हो कौन अंग पर रहे पगे। भूल्योस्नान ज्ञान तनु भूली नंदसुवन उतते नडगे॥ जानति नहीं कहूंनहिं देखे मिलिगई ऐसे मनहि लगे। सूर श्याम ऐसे तें देखे मैं जानति दुख दूरि भगे॥५७॥ गौरी ॥ तुम देखे मैं नहीं पत्यानी। मैं जानति मेरी गति सबही इहै सांच अपने मन आनी॥ जो तुम अंग अंग अवलोक्यो धन्य धन्य मुख स्तुति गानी। मैं तो अंग अंग अवलोकति दोऊ नयन भये भर पानी॥ कुंडल, झलक कपोलनि आभा इतनाहैं माँझ बिकानी। एकटकरही नैन दोउ रुंधे सूरश्यामको नहिं पहिंचानी॥ ५८॥ नट॥ मेरी अँखियां अजान भई। एक अंग अवलोकत हरिके औरें अंग रई॥ये भूली ज्यों चोर भरे घर नौनिधि नहीं लई। फेरत पलटत भोर भए कछु लई न छांडिदई॥ पहिलेहि राति करिकै आरति करि ताहि रई। सूर सकाति हठि दोष लगावति पल पल पीर नई॥ ५९ ॥ सारंग ॥ विधातहि चूकपरी मैं जानी। आजु गोविंदहि देखि देखि होइहै समुझि पछितानी॥ रचि पचि सोचि सँवारि सकल अंग चतुर चतुरई ठानी।दृष्टि नदई रोमरोमानि प्रति इतनहि कला नशानी॥ कहाकरों अति सूवे नयना उमगि चलत पग पानी। सूर सुमेर समाइ कहांधों बुद्धिवासना पुरानी॥ ६०॥ धनाश्री॥ द्वैलोचन तुह्मरे द्वै मेरे। तुमप्रतिअंग विलोकन कीन्हो मैं भई मगन एक अंग हेरे॥ अपनो अपनो भाग्य सखीरी तुम तनमय मैं कहूँ ननेरे। जो बुनिये सोई पुनि लुनिये और नहीं त्रिभुवन भट मेरे॥ श्यामरूप अवगाहि सिंधुते पारहोत चढि डोंगन केरे। सूरदास तैसे ए लोचन कृपा जहाज विनाको पेरे॥६१॥ आसावरी॥ पावै कौन लिखे बिनभाल। काहूको पटरस नहिं भावत कोऊ भोजन कहुँ फिरत विहाल॥तुम देख्यो हरि अंग माधुरी मैं नहिं देख्यो कौन गोपाल।जैसेरंक तनक धन पाए ताहि महा वह होत निहाल॥तुमहि मोहि इतनो अंतरहै धन्य धन्य ब्रजकी तुम बाल। सूरदास प्रभुकी तुम संगनि तुमहि मिले यह दरश गोपाल॥ ॥ ६२॥ कल्याण॥ सुनहु सखी राधाकी वानी। हमको धन्य कहति आपुन धृग यह निर्मल अति जानी॥ आपुन रंक भई हरिधनको हमहि कहति धनवंत। यह पूरण हम निपट अधूरी हम असंत यह संत॥ धृग धृग हम धृग बुद्धि हमारी धन्य राधिका नारि। सूरश्यामको एहि

पहिचानी हमभई अंत गँवारि ॥ ६३ ॥ गुंडमलार ॥ धन्य राधा धन्य बुद्धि हेरी। धन्यमाता धन्य पिता धन्य भगति तुव धृग हमहि नहीं सम दासी तेरी ॥ धन्य तुव ज्ञान धन्य ध्यान धनि परमान नहीं जानति आन ब्रह्मरूपी । अन्य अनुराग धनि भाग धनि सौभाग धन्य जो वनरूप अति अनूपी ॥ हम विमुख तुम सुमुख कृष्ण प्यारी सदा निगम मुखसहस स्तुति वखाने । सूरश्यामा श्याम नवल जोरी अटल तुमहिं विन कान्ह धरिज न आन ॥ ६४ ॥ विहागरो ॥ जैसे कहै श्यामहैं तैसे । कृष्णरूप अवलोकनको सखि नयन होहिं जो ऐसे ॥ तैं जो कहति लोचन भरि आये श्यामकियो तेहि ठौर । पुण्यस्थली जानि विराजे वात न हियेहै और ॥ तेरे नयन वास हरि कीन्हो राधा आधा जानि । सूरश्याम नटवर वपु काछे निकसे वहि मग आनि ॥ ६५ ॥ कान्हरो ॥ अचानक आइगए तहाँ श्याम । कृष्णकथा सव कहत परस्पर राधा संग मिली ब्रजवाम ॥ मुरली अधर धरे नटवर वपु कटि कछनी परवारौं काम।सुभग मोरचंद्रिका शीश पर आइ गए पूरण सुखधाम॥तरुतमाल तरुतरुन कन्हाई दूरि करन युवतिन तनु ताम। सूरश्याम वंशी ध्वनि पूरत श्रीराधा राधा लै नाम॥६६॥सूही विलावल॥थकितभई राधा ब्रजनारि। जो मन ध्यान करति अवलोकन ते अंतर्यामी वनवारि॥रतनजरितपग सुभग पाँवरी नूपुरध्वनि कल परम रसाल। मानहु चरण कमलदल लोभी निकटहि वैठे वाल मराल॥ युगलजंघ मरकतमणिसोभा विपरीति भांति सँवारी।कटिकाछनी कनक छुद्रावलि पहिरे नंददुलारे॥ हृदय विसाल माल मोतिनविच कौस्तुभमणि अतिभ्राजत।मानहु नभ निर्मल तारागन तामधि चंद्र विराजत ॥ दुहुँकर मुरलि अधर परसाये मोहन राग वजावत।चमकत दशन मटकि नाशापुट लटकि नयन मुख गावत ॥ कुंडल झलक कपोलनि मानहुँ मीनसुधा सर क्रीडत। भ्रुकुटी धनुषनैन खंजन मानो उडत नहीं मन व्रीडत ॥ देखिरूप ब्रजनारि थकितभई कीट मुकुट शिर सोहत। ऐसे सूरश्याम सोभानिधि गोपी जन मन मोहत ॥६७॥कल्याण ॥ जवते निरखे चारु कपोल। तवते लोकलाज सुधि विसरी दैराखेमनबोल ॥ निकसे आनि अचानक तिरछे पहिरे नील निचोल ।रतन जरित शिरमुकुट विराजत मणिमय कुंडल लोल॥ कहा करौं वारिज मुख ऊपर विथके षट पद जोल। सूरश्याम करिये उत्कर्षा वशकीन्ही विनमोल ॥ ६८ ॥ पूरवी ॥ चारु चितौनि चंचलडोल। कही नजाति मनमें अति भावति कछु जो एक उपजत गतिगोल॥ मुरली मधुर वजावत गावत चलत करज अरु कुंडललोल ।सव छवि मिलि प्रतिबिंव विराजत इंद्रनीलमणिमुकुर कपोल॥ कुंचितकेश सुगंध सुवसु मनु उड़िआए मधुपनके टोल । सूर सुभगनासिका मनोहर अनुमानत अनुराग अमोल ॥ ६९॥ गौरी॥नँदनंदन वृंदावन चंद। यदुकुल नभ तिथि द्वितिय देवकी प्रगटे त्रिभुवन वंद ॥ जठर कहूते वहरि वारिनिधि दिशिमधुपुरी सुछंद। वसुदेव शंभु शीश धरि आने गोकुल आनँदकंद ॥ ब्रजप्राची राका तिथि यशुमति शरद सरस ऋतुनंद। उडुगन सकल शाखा संकर्षन तम दनुकुल योनिकंद ॥ गोपीजन तेंहि धरति चकोर गति निरखि मेटि पल द्वंद । सूर सुदेश कला पोडश पर पूरन परमानंद ॥ ७० ॥ गौरी ॥ देखि सखी हरिको मुखचारु । मनहु छिडाइलिये नँदनंदन वा शशिको सतसारु ॥ रूप तिलक कच कुटिल किरनि छवि कुंडल कल विस्तारु। पत्रावलि परिवेष सुमन सरि मिल्यो मनहु उडदारु ॥ नयनचकोर विहंग सूर सुनि पिवत न पावत पारु। अव अंवर ऐसो लागत है जैसो झूठो थारु ॥ ७१ ॥ कान्हरो ॥ देखिरी हरिके चंचलतारे। कमल मीनको कहा एती छवि खंजनहू न जात अनुहारे ॥ वे देखि निरखि नमित

मुरली पर कर मुख नयन एक भए वारे। मनो सरोज विधु वैर विरंचि करि करत नाद वाहन चुचु कारे॥ उपमा एक अनूपम उपजत कुंचित अलक मनोहर भारे। बिडरत विझुकि जानि रथते मृग जनु ससंकि शशि लंगर सारे। हरि प्रति अंग विलोकि मानि रुचि व्रजवनितानि प्राण धनवारे। सूरश्याम मुख निरखि मगन भई यह विचारि चित अनत नटारे॥ ७३॥ सोरठ॥ हरि मुख निरखत नैन भुलाने। ये मधुकर रुचि पंकज लोभी ताहीते न उड़ाने॥ कुंडल मकर कपोलनकी ढिग जनु रवि रैनि विहाने। भ्रुव सुंदर नैननि गति निरखत खंजन मीन लजाने॥ अरुण अधर ध्वज कोटि वज्रद्युति शशिगन रूप समाने। कुंचित अलक सिली मुख मानो लै मकरंद निदाने॥ तिलक ललाट कंठ मुकुतावलि भूषन मय मनि साने। सूरदास स्वामी अंग नागर ते गुणजात नजाने॥ ॥ ७४॥ केदारो॥ देखिरी नवल नंद किसोर। लकुटसों लपटाइ ठाढे युवति जन मन चोर॥ चारु लोचन हँसि विलोकनि देखिकै चितभोर। मोहनी मोहन लगावत लटकि मुकुट झकोर॥ श्रवन ध्वनि सुरनाद मोहत करत हिरदै फोर। सूर अंग त्रिभंग सुंदर छवि निरखि तृण तोर॥ ७५॥ कान्हरो॥ व्रजवनिता देखति नँदनंदन। नवघन नील वरन ताऊपर खौर कियो तनु चंदन॥ कनकवरन कटि पीत पिछौरी उर भ्राजत वनमाला। निर्मल गगन श्वेत वादर पुर मनो दामिनी जाला। मुक्तामाल विपुल वग पंगति उडत एक भई जोति। सूरश्याम छवि निरखति युवती हरष परस्पर होति॥ ७६॥ सूही॥ प्रातसमय आवत हरि राजत। रत्नजटित कुंडल सखि श्रवणनि तिनकी क्रिरनि सुरत न लजात॥ सातैं राशि मेलि द्वादशमे कटि मेखला अलंकृत साजत। पृथ्वी मथि पिता सो लैकर मुख समीप मुरली ध्वनि बाजत॥ जलधि तात तेहि नाम कंठके किनके पंख मुकुट शिरभ्राजत। सूरदास कहे सुनहु गूढ हरि भक्तनि भजत अभक्तनि भाजत॥ ७७॥ नट॥ हरि तन मोहिनी माई। अंग अंग अनंग शत शत वरनि नहिं जाई॥ कोऊ निरखि शिर मुकुटकी छवि सुरति विसराई। कोऊ निरखि विथुरी अलक मुख अधिक सुखदाई॥ कोऊ निरखि रही भालचंदन एकचित लाई। कोऊ निरखि विथुरी भ्रुकुटिपर नैन ठहराई॥ कोऊ निरखि रही चारुलोचन निमिष भरमाई। सूर प्रभुकी निरखिसोभा कहत नहिं आई॥ ७८॥ सारंग॥ हरिमुख किधौं मोहनीमाई। अवलोकत अघात नहिं मेरे नैना ठगे ठगोरी लाई॥ कुंडल किरनि निकट भ्रूलोचन आराति मीन द्दग सम चपलाई। श्रवनरंध्र नहिं निपुन दास जनु काम कुवेनी कलित वनाई॥ छाजत रदन रदन छंदकी छवि मंदमाधुरी गिरा सुहाई। जया कुसुम दल मनहु कमलपर तडितजुथ कोश कोकिला गाई॥ सबविधि वशीकरनकी वाकी वलितवलाक अनुज वलझाई। सूरदास प्रभु वदन विलोकत जकित थकित चित्त अनत नजाई॥ ७९॥ गुंडमलार॥ श्यामसुखराशि रसराशि भारी। रूपकी राशि गुणराशि यौवन राशि थकितभई निरखि नवतरुनी नारी॥ शीलकीराशि जलराशि आनंदराशि नीलनव जलद छवि वरनकारी। दयाकी राशि विद्याराशि वलराशि निर्दयराशि दनुकुल प्रहारी॥ चतुरई राशि छलराशि कलराशिहरि भजे जेहि हेतु तेहि देनहारी। सूरप्रभु श्याम सुखधाम पूरण काम लसति कटि पीत मुखमुरलिधारी॥ बिहागरो॥ सुंदर बोलत आवत बैन। ना जानौं तेहि समय सखीरी सबतन श्रवन किनैन॥ रोम रोम में शब्द सुरतिकी नख शिख ज्यों चखयैन। येते मान बनी चंचलता सुनी न समुझी सैन॥ तनतकि जकि ह्वैरही चित्रसी पल न लगतचितचैन। सुनहु सूर यह सांचकी संभ्रम सपन किधौं दिन रैन॥ ८०॥ मलार॥ नैना माई भूले अनत न

जात । देखिसखी सोभा जो वनीहै माधवके मुसकात ॥ दाडिम दशन निकट नासा शुक चोंच चलाइ नखात । मनो रतिनाथ हाथ भ्रुकुटी धनु ता अवलोकि डरात ॥ वदन प्रभा मुख चंचल लोचन आनँद उर न समात॥मानहुँ भौंह युवारथ जोते शशि न चलत मृगामत॥कुंचित केश मधुर ध्वनि मुरली सूरदास सुरसात । मनहुं कमलपर कोकिल कूलत अलिगण उपर उडात ॥ ८१ ॥ कान्हरो ॥ श्याम कमलपद नखकी सोभा । जे नख चंद्र इंद्रशिरपरसे शिव विरंचि मन लोभा ॥ जे नखचंद्र सनक मुनि ध्यावत नहिं पावत भरमाही । ते नखचंद्र प्रगट ब्रज युवती निरखि निरखि हरषाही ॥ जे नखचंद्र फनन्द्रि हृदयते येकौ निमिष न टारत । जेनखचंद्र महामुनिनारद पलक न कहू विसारत॥जिनखचंद्र भजन खलनाखत रमा हृदय जेहि परसत॥सूरश्याम नखचंद्र विमल छवि गोपी जनमिलि दरशत॥८२॥आसावरी॥श्याम हृदय जलसुतकी माला अतिहि अनूपम छाजैरी । मनहु बलाक पांति नवघनपर यह उपमा कछु भ्राजैरी ॥ पीत हरित सित अरुण माल वन राजत हृदय विसालरी॥मानहु इंद्रधनुष नभमंडल प्रगटभयो तिहिकालरी॥भृगुपद चिह्न उरस्थल प्रगटे कौस्तुभमणि ढिग दरशतरी । वैठे मनु षटवधू एक सँग अर्धनिसा मिलि हरपतरी ॥ भुजाविसाल श्यामसुंदरकी चंदनखौरि चढाएरी । सूरसुभग अंग अंगकी सोभा ब्रजललना ललचाएरी ॥८३॥ मलार ॥ निरखि सखि सुंदरताकी सींव । अधर अनूप मुरलिका राजति लटकि रहनि अधग्रीव ॥ मंद मंद सुर पूरत मोहन रागमलार वजावत । कवहुँक रीझि मुरलिपर गिरिधर आपुहि रसभरि गावत ॥ हर्षत लखत दशनावलि पंगति ब्रजवनिता मनमोहत । मर्कत मणि पुट विचमुकुताहल वदन भरे मनु सोहत ॥ मुख विकसत सोभा एक आवत मनोराजिव प्रकाश । सूर अरुण आग मन देखिकै प्रफुलित भए हुलास॥८४॥टोडी ॥ गोपीजन हरिवदन निहारति॥कुंचित अलक विथुरि रहे भ्रुवपर तापर तन मन वाराति ॥ वदन सुधा सरसीरुह लोचन भ्रुकुटी दोउ रखवारी । मनोंमधुप मधुपानहि आवत देखि डरत जियभारी ॥ एक एक अलक लटकि लोचन पर यह उपमा एक आवत । मनहु पन्नगिनि उतरि गगनते दलपर फनपरसावत॥मुरली अधर धरे कलपूरत मंद मंद सुरगावत । सूरश्याम नागर नारिनके चंचल चितहि चोरावत ॥ ८५ ॥ सूहीबिलावल ॥ देखि सखी यह सुंदरताई । चपलनैन विच चारुनासिका यकटक नैन रही तहांलाई ॥ करति विचार परस्पर युवती उपमा आनति बुद्धि वनाई । मानहुं खंजन विच शुक बैठो यह कहिकै मन जात लजाई कछु एक तिलक प्रसूनकी आभा मन मधुकर जहां रह्यो लुभाई । सूरश्याम नासिका मनोहर यह सुंदरता उन कहां पाई ॥ ८६ ॥ रामकली ॥ मनोहरहै नैननकी भांति । मानहुं दूरि करत बल अपने शरद कमलकी कांति ॥ इंदीवर राजीव कसेसे जीते सब गुण जाति । अतिआनंद सप्रौढा ताते विकसत दिन अरु राति ॥ खंजरीट मृग मीन विचारति उपमाको अकुलाति । चंचल चारु चपल अवलोकनि चितहि नएक समाति ॥ जबलगि परत निमेष अंतरा युग समान पल जात । सूरदास वह रसिक राधिका निमिष पर अति अनखात ॥ ८७ ॥ आजु सखी देखे श्याम नएरी । निकसे आनि अचानक अवहीं इत फिरि फिरि चितएरी ॥ मैं तवते पछिताति इहै तनु नैनन बहुत भएरी । जो विधिना इतनी जानतहै कत द्दग दोइ दयेरी ॥ सबदै लेउ लाख लोचनकहे जो कोउ करत नयेरी । हरिप्रतिअंग विलोकनको मन मैं पनकै पठएरी ॥ अपने चोप बहुत कह पइये येहरिसंग गयेरी ॥ थकेचरण सुनि सूर मनो गुण मदन वाण विधयेरी ॥ ८८ ॥ गूजरी ॥ देखिरी हरिके चंचलनैन । खंजन मीन मृगज चपलाई नहिं पटतर एकसैन ॥ राजिवदल इंद्री वरसतदल

कमलकुसेसे जाति।निशि मुद्रित प्रातहि एविगसत एविगसत दिन राति॥अरुण श्वेत सित झलक पलक प्रति को वरणै उपमाइ।मनो सरस्वति गंगा यमुना मिलि आगम कीन्हो आइ॥अवलोकनि जल धार तेज अति तहां न मन ठहरात। सूरश्यामलोचन अपार छवि उपमा सुनि सरमात॥८९॥
॥ सोरठा ॥ देखिसखी मोहन मन चोरत। नैन कटाक्ष विलोकन मधुरी सुभग भ्रुकुटी विवि मोरत चंदनखौरिं ललाट श्यामके निरखत अति सुखदाई। मानहुं अर्धचंद्र तट अहिनी सुधा चोरावन आई॥ मलयज भाल भ्रुकुटि रेखाकी कवि उपमा एक ल्यावत। मनोएक संग गंग यमुन नभ तिरछी धार वहावत॥ भ्रुकुटी चारु निरखि व्रजसुंदरि यह मन करति विचार। सूरदास प्रभु सोभासागर कोउ नपावतपार॥९०॥रामकली॥देखिरी देखि कुंडललोलचारु श्रवणनि ग्रहित कीन्ही झलक ललित कपोल॥ वदन मंडलसुधा सरवर निरखि मन भयोभोर। मकरक्रीडत गुप्त परगट रूप जल झकझोर॥ नैन मीन भुवंगिनी भुअ नासिका थलवीच। सरस मृगमद तिलक सोभा लसतिहै गलकीच॥ मुख विकास सरोज मानहु युवति लोचन भृंग॥ विथुरी अलकैं परी मानहुं प्रेमलहरि तरंग॥ इयाम तुम छवि अमृत पूरण रच्यो काम तडाग। सूर प्रभुकी निरखि सोभा व्रज तरुणि वडभाग॥ ९१॥ ॥धनाश्री॥ हरिमुख निरखंति नागरि नारि। कमलनयनके कमल वदनपर वारिज वारिज वारि॥ सुमति सुंदरी परस प्रियारस लंपट माडी आरि। हारि जोहारि जो करत वसीठी प्रथमहि प्रथम चिन्हारि॥ राखत ओट कोटि यतननिकरि झांपति अंचल झवारि। खंजन मनहु उडनको आतुर सकत नपंख पसारि॥ देखि स्वरूप श्यामसुंदरको रही नपलकसँभारि। देखहु सूर अधिक सूरतितिनअजहुँ न मानो हारि॥ हरिमुख किधों मोहनी माई। वोलत वचन मंत्र सों लागत गति माति जाति भुलाई॥ कुटिल अलक राजत भुव ऊपर जहां तहां रहे वगराई।श्याम फांसि मन कर्प्यो हमरो अब समुझी चतुराई॥ कुंडल ललित कपोलनि झलकत इनकी गति मैं पाई। सूरश्याम युवती मन मोहन ये सँग करत सहाई॥ ९३॥ नट॥ निरखति रूप नागरि नारि। मुकुट पर मन अटकि लटक्यो जात नहिं निरु आरि॥श्याम तनुकी झलक आभा चंद्रिका झलकाइ।वार वार विलोकि थकि रही नयनही ढहराइ॥ श्याम मर्कत मणि महानग शिखिनि निर्त्ततमोर। देखि जलधर हर्ष उरपर नहीं आनँद थोर॥ कोउ कहति सुरचाप मानो गमन भयो प्रकास। थकित व्रजललना जहां तहँ हरप कवहुँ उदास॥ निरखि जो जेहि अंग राची तहीं रही भुलाइ। सूर प्रभु गुणराशिसोभा रसिक जन सुखदाइ॥ ९४॥
विहागरो॥ देखिरी देखि सोभाराशि। काम पटतर कहा दीजै रमा जिनकी दासि॥ मुकुट शिर श्रीखंड सोहै निरखि रही व्रजनारि। कोटिसुर कोदंड आभा झिराकि डारे वारि॥ केश कुंचित विथुरि भुवपर वीच सोभा भाल। मनहुं चंद्रहि अव लजान्यो राहु घेरो जाल॥ चारु कुंडल सुभग श्रवणनि कोसके उपमाइ। कोटि कोटि कलातरनि छवि देखि तनु भरमाइ॥ सुभग मुख पर चारु लोचन नासिका यहि भाँति। मनो खंजन वीच शुक मिलि वैठेहैं एक पांति॥ सुभग नासा तर अधरछवि रसभरे अरुनाइ। मनो विंव निहारि शुक भ्रुवधनुष देखिडेराइ॥ हँसत दशननि चमकताई वज्रकन रुचिपांति। दामिनी दुर धँसी कियो मन अति भ्रांति॥ चिवुक पर चितवित चोरावत नवलनंद किसोर। सूर प्रभुकी निरखि सोभा भई तरुनी भोर॥ ॥ ९५॥ सोरठ॥ तन मन नारिडारत वारि। श्याम सोभासिंधु जान्यो अंग अंग निहारि॥ पचि रही मन ज्ञान करि करि लहति नाहिनतीर। श्याम तन जलराशि पूरण महा गुण गंभीर॥ पीतपट

फहरानि मानो लहरि उठत अपार।निरखि छबि थकि तीर बैठी कहूं वार नपार॥चलत अंग त्रिभंग करिकै भौंहभाव चलाइ। मनो बिच बिच भौंर डोलत चित परत भरमाइ॥ श्रवण कुंडल मकर मानो नैन मीन विसाल। सलिल झलकनि रूप आभा देखरी नँदलाल॥ बाहुदंड भुजंग मानो जलधि मध्य विहार। मुक्तमाला मनों सुरसरि है चली द्वयधार॥ अंग अंग भूषण विराजत कनक मुकुट प्रभास। उदधि माथि नग प्रगट कीन्हों श्रीसुधापरगास॥ चकृत भई तिय निरखि सोभा देहगति विसराइ। सूरप्रभु छबिराशि नागर जानि जानि नजाइ॥ ९६ ॥ सारंग ॥ बैठी कहा मदन मोहनको सुंदर वदन विलोकि। जाकारण घूंघट पट अवलौं अँखियां राखीरोकि॥ फाविरहे मोरचंद्रिका माथे छबिकी उठत तरंग। मनहुँ अमरपति धनुष विराजत नवजलधरके संग॥ रुचिरचारु कमनीय भाल कुंकुमको तिलक दिये। मानहुँ अखिल भुवनकी सोभा राजत उदय किये॥ मणिमय जडित लोल कुंडलकी आभा झलकत गंड। मनहुँ कमल ऊपर दिनकरकी पसरी किरनि प्रचंड॥ भ्रुकुटी कुटिल निकट नैननके चपल होत यहि भांति। मनहुँ तामरस पारस खेलत बालभृंगकी पांति॥ कोमलश्याम कुटिल अलकावलि ललितकपोलन तीर। मानहुं सुभग शरद इंदु ऊपर मधुपनिकी अति भीर॥ अरुण अधर नासिका निकाई वदत परस्पर होड। सूरसो मनसा भई पांगुरी निरखि डगमगे गोड॥ ९७॥ केदारो ॥ करिमन नंदनंदन ध्यान। सेइ चरण सरोज शीतल तजि विषै रस पान॥ जानु जंघ त्रिभंग सुंदर कलित कंचन दंड। काछिनी कटि पीत पटदुति कमलकेसर खंड॥ मनु मराल प्रवाल छौना किंकिनी कलराउ। नाभिहृदय रोमावली अलि चले सैन सुभाउ मणिकंठ मुक्तामाल मलयज उरबने वनमाल। सुरसरिके तीर मानो लता श्याम तमाल॥ बाहुपानि सरोज पल्लव गहे मुख मृदु वेनु। अति विराजत वदन विधुपर सुरभि रंजित रेनु॥ अरुण अधर कपोल नासा परमसुंदर नैन। चलित कुंडल गंडमंडल मनहु निर्तत मैन॥ कुटिल कच भ्रूतिलक रेखा शीशशिखिनि श्रीखंड। मनु मदन धनु शर सँधाने देखिधन कोदंड॥ सूर श्रीगोपालकी छबि दृष्टि भरि भरि लेत। प्राणपतिकी निरखि सोभा पलक परन नदेत॥ ९८॥ नटनारायण ॥ सजनी निरखि हरिको रूप। मनसि वचसि विचारि देखो अंग अंग अनूप॥ कुटिलकेश सुदेश अलिगन वदन शरदसरोज। मकर कुंडल किंकिनि छबि दुराति फिराति मनोज॥ अरुण अधर कपोल नासा शुभग ईसद हास।दशनकी द्युति तडित नव शशि भ्रुकुटि मदन विलास॥ अंग अंग अनंग जीते रुचिर उर वनमाल। सूरसोभा हृदय पूरण देत सुख गोपाल॥९९॥ नट॥ नैननिध्यान नंदकुमार। शीशमुकुट श्रीखंड भ्राजित नहीं उपमा पार॥ कुटिलकेश सुदेश राजत मनहुं मधुकर जाल। रुचिरकेसरि तिलक दीन्हों परमसोभा भाल॥ भ्रुकुटि वंकट चारु लोचन रही युवती देषि। मनौंखंजनचाप डरि डरि उड़त नाहिं तेहिं पेखि॥ मकर कुंडल गंडझलमल निरखिलज्जित काम। नासिकाछबि कीर लज्जित कवि न वरनत नाम॥ अधर विद्रुम दशन दाडिम चिबुकहै चितचोर। सूरप्रभु मुखचंद्र पूरण नारि नैन चकोर॥ १४००॥केदारा॥ हमारे श्यामलालहो। नैन विसालहो मोही तेरी चालहो॥ मोरमुकुट डोलनि मुख मुरलीकलमंद। मनों तमाल शिखा शिखि नाचत आनंद॥ मकराकृत कुंडल छबिराजत लोल कपोल। ईसद अधर मुसुकिन बिच मधुर २ बोले॥ चपल चितवनि मनोहर राजत भ्रुवभंग। धनुष बाण डारिकै वशहोत कोटि अनंग॥ वदनसुधाको सरोवर कुटिल अलकवारि। ब्रज युवती मृगिनी रचि तिनकै

फल वारि ॥ पीतांवर छवि निरखत दामिनि द्युति लजाइ । चमकि चमकि सावन मनों घनमें दुरिजाइ ॥ चरण कमल अवलंवित राजित वनमाल । प्रफुलित ह्वै ह्वै लता मनों चढीं तरु तमाल॥सूरदास वा छविपै वारों तन प्राण॥गिरिधर तिय देखि देखि कहा करौं अनुमान॥१॥ सारंग॥ देख सखीसुंदर घनश्यामसुंदर मुकुट कुटिल कच सुंदर सुंदर भाल तिलक छवि धाम॥सुंदर भ्रुव सुंदर अतिलोचन सुंदर अवलोकनि विश्राम । अतिसुंदर कुंडल श्रवणनिवर सुंदर झलकनि रीझत काम ॥ सुंदर चारुनासिका सुंदर सुंदर मुरली अधर उपाम । सुंदर दशन चिबुक अति सुंदर सुंदर हृदय विराजत दाम ॥ सुंदर भुजा पीत कटि सुंदर सुंदर कनक मेखला झाम । सुंदर जंघ जानु पद सुंदर सूर उधारन नाम ॥ २ ॥ धनाश्री ॥ देखि देखिरी नंदकुलके उधारी । मात पित दुरित उद्धरन व्रजउद्धरन धरनि उद्धरन शिर मुकुटधारी ॥ पतित उद्धरन अपने भक्त उद्धरन दीनउद्धरन कुंडलनिधारी । जगत उद्धरन तिहुँ लोकके उद्धरन वलिहि उद्धरन पग पीठ धारी । पूतना उद्धरन दनुज कुलउद्धरन तृणा उद्धरन मुख मुरलिधारी ॥ शकट उद्धरन केशी प्रवल उद्धरन वका उद्धरण अरुण अधर धारी । अघा उद्धरन गाइ ग्वालके उद्धरन वृषभ उद्धरन वनमाल धारी॥वच्छ उद्धरन ब्रह्मा उद्धरन येइ प्रभुयज्ञके पति यज्ञोपवीत धारी॥काली उद्धरन फन फन सहित उद्धरन दवा उद्धरन अंग मलयधारी ।ग्राह उद्धरन गजराज उद्धरन ये शिला उद्धरन कटि पीत धारी । यदुकुल उद्धरन द्रौपदी उद्धरन रुक्मिणी उद्धरन कर लकुट धारी॥सिंधु उद्धरन सीता प्यारी उद्धरन जै विजय के उद्धरन धनुष धारी । त्रास उद्धरन प्रहलादके उद्धरन प्रवल नर सिंह अवतार धारी । हरिणकश्यपके उद्धरन हिरण्याक्षके उद्धरन वेद उद्धरन वल भुजा धारी । धरम उद्धरन यह कर्म उद्धरन प्रभु सुभग कटि किंकिनी पीत धारी । सूर उद्धरन सुरलोकके उद्धरन हरि कंस उद्धरन एई मुरारी ॥ ३ ॥ नँद नंदन मुख देख्यो नीके । अंग अंग प्रति कोटि माधुरी निरखि होत सुख जीके । सुभग श्रवन कुंडलकी आभा झलक कपोलनि पीके ॥ दह दह अमृत मकर क्रीडत मनौ यह उपमा कछु हीके । और अंगकी सुधि नहिं जानें करे कहतिहों लीके सूरदास प्रभु नटवर काछे रहत है रतिपति वीके ॥ ४ ॥ रामकली ॥ देखिरी देखि कुंडल झलक । नैनद्वै छवि धरौं कैसे लगत तापर पलक ॥ लसत चारुकपोल दुहुँ विच सजल लोचन चार । सुख सुधा सरमीन मानौ मकर संग विहार ॥ कुटिल अलक सुभाइ हरिके भुवनि पर रहे आइ । मनों मन्मथ फांदि फंदनि मीन विवि लटलयाइ ॥ चपल लोचन चपल कुंडल चपल भ्रुकुटीबंक । सखा व्याकुल देखि अपने लेत वनत नसंक ॥सूर प्रभु नंदसुवनकी छवि वरनि कापै जाइ । निरखि गोपी निकरि विथकी विधिहि अति रिसपाइ ॥ ५ ॥ जयतश्री ॥ विधिना अतिही पोच कियोरी । कहा विगार कियो हम वाको व्रज काहे अवतार दियोरी । यहतौ मन अपने जानतहों येते पर क्यों निठुर हियोरी । रोम रोम लोचन एकटक करि युवतिन प्रति काहे न टयोरी । अँखियां द्वै छविकी चमकनि वह हमतौ चाहति सवै पियोरी ॥ सुनि सजनी यह करनी अपनी अपनेही शिरमानि लियोरी ॥ हमतौ पाप कियो भुगुतैको पुण्य प्रगट क्यों निठुर हियोरी । सूरदास प्रभु रूप सुधानिधि पुट थोरो विधि नहीं वियोरी ॥ ६ ॥ धनाश्री ॥ सुनरी सखी वचन एक मोसों । रोम रोम प्रति लोचन चाहति द्वै सावितहैं तोसों ॥ मैं विधना सों कहौं कछु नहीं नितप्रति निमकों कोसो । यों जानीकें दोऊ रहते निरखत रहती हांसो ॥ एक एक अंग अंग छवि धरती मैं जो कहती तेरीसों । सूर कहा तू कहति

अयानी काम पऱ्यो सब जोसों ॥ ७ ॥ कान्हरो ॥ कहा काहूको दोष लगावै । निमिषौ कहा कहति कहो विधिसों कहा नैननि पछितावै ॥ श्याम हितू कैसे करि जानति औरो निठुर कहावै । क्षणमें और और अंग सोभा जो ए देखन पावै ॥ जबहीं एकटक करि अवलोकत तवही वैझलकावै । सूरश्यामके चरित लखैको एई वैर बढ़ावै ॥ ८ ॥ नट ॥ लहनी करम के पाछे। दियो आपनों लहै सोई मिलै नहिं पाछे। प्रगटहीहैं श्याम ठाढे कौन अंग केहि रूप। लह्यो काहू कहो मोसों श्यामहै ठगभूप ॥ प्रेम जावक धनी हरिसे नैन पुट कह लेहि। अमृत सिंधु हिलोरि पूरण कृपा दरशन देहि॥ पाइ ऐसोई सखीरी लिखो जितनो भाल। सूर उत कछु कमी नाहीं छबि समुद्र गोपाल ॥ ९ ॥ सुहीविलावल ॥ देख सखी अधरनकी लाली। मणि मरकतते सुभग कलेवर ऐसेहैं वनमाली ॥ मनो प्रातकी घटा सांवरी तापर अरुन प्रकाश। ज्यों दामिनि बिच चमकि रहतहै फहरत पीत सवास ॥ कीधों तरुन तमाल वेलि चढि युग फलबिंब सुपाक्यो। नासा कीर आय मनों वैठो लेत बनत नहि ताक्यो ॥ हँसत दशन एक सोभा उपजत उपमा यदपि लजाइ। मनों नीलमणि पुट मुकुतागन वंदन भरि वगराइ ॥ किधौं वज्रकन लाल नगनि खचि तापर विद्रुम पांति। किधौं सुभग वंधूप कुसुमपर झलकत जलकन कांति ॥ किधौं अरुण अंबुज बिच बैठी सुंदरताई आई।सूर अरुण अधरनकी सोभा वर्णत वरनिनजाई१० धनाश्री ॥ श्यामरूप देखनकी साध मेरी माई। कितनो पचिहारि रही देत नाहिं दिखाई ॥ मनतौनि रखत सुअंग में रही भुलाई। मोसों यह भेंद कहो कैसे वहि पाई ॥ आपुन अंग अंग विधो मोको विसराई। बार बार कहत इहै तू क्यों नहिंआई ॥ अवहूं लैजात साध वाहि बोले लाई। सूरश्याम छवि आगाध निरखत भरमाई ॥ ११ ॥ विलावल ॥ सुनहु सखी मैं बूझति तुमको काहू हरिको देखेहै। कैसो तन कैसो रंग देखियत कैसी विधि करि भेषेहै ॥ कैसो मुकुट कुटिल कच कैसे सुभग भाल भ्रुव नीकेहैं।कैसे नैन नाशिका कैसी श्रवणनि कुंडल पीकेहैं॥ कैसे अधर दशन दुति कैसी चुबुक चारु चित चोरतहै। कैसे निरखि हँसत काहू तन कैसे बदन सकोरतहैं ॥ कैसो उरमालाहै सोभित कैसी भुजा विराजतहै। कैसे कर पहुँचीहै कैसी अँगुरिआ राजतहै ॥ कैसी रोमावली श्यामके नाभि चारु कटि सुनियतहै। कैसी कनक मेखला कैसी कछनी यह मन गुनियतहै ॥ कैसे जंघ जानु कैसे दोउ कैसे वदन खजानतिहै। सूरश्याम अंग अंगकी सोभा देखेकी अनुमानतिहै ॥ १२ ॥ रामकली ॥ ऐसे सुने नंदकुमार। नख निरखि शशि कोटि वारत चरण कमल अपार ॥ जानु जंघ निहारि रंभा करनि डारत वारि। काछनी पर प्राण वारत देखि सोभाभारि ॥ कटि निरखि तनु सिंह वारत किंकिनीजु मराल। नाभि पर हृद आपु वारत रोमावलि अलिमाल ॥ हृदय मुकुतामाल निरखतवारिअवलि वलाक। करज कर पर कमलवारत चलति जहां तहां साक॥ भुजा पर वर नाग वारत गये भागि पताल। ग्रीवकी उपमा नहीं कहुँ लखति परम रसाल॥ चिबुकपर चित वारि हारत अधर अंबुज लाल। वंधूप विद्रुम विंब वारत ते भये वेहाल ॥ वचन सुनि कोकिलावारत दशन दामिनि कांति। नाशिकापर कीर वारत चारु लोचन भांति॥ कंज खंजन मीन मृग सावकनिडारति वार। भ्रुकुटि पर सुर चाप वारत तरनि कुंडल हारि ॥ अलक पर वारत अँध्यारी तिलक भाल सुदेस। सूर प्रभु शिर मुकुटधारे धरे नटवर भेष ॥ १३ ॥ सारंग ॥ ऐसी विधि नंदलाल कहत सुने माईरी। देखे जो नैन रोम रोम प्रति सुभा ईरी ॥ विधिनेंद्वै नैन रचे अंग ठानि ठान्यो। लोचन नहिं बहुत दिये जानिकै भुलान्यो ॥ चतुरता

प्रवीनता विधाताको जानै। अब कैसे लगत हमहि बातें न अयाने ॥ त्रिभुवन पति तरुन कान्ह नट-वर वपुकाछे। हमको द्वै नैन दिये तेऊ नहिंआछे ॥ ऐसो विधिको विवेक कहौं कहा वाको। सूर कबहुं पाऊं जो कर अपने ताको ॥ १४ ॥ नट ॥ मुखपर चंद्र डारौं वारि। कुटिल कच पर भौंर वारौं भौंह पर धनु वारि। भालकेसरि तिलक छविपर मदन शत शर वारि ॥ मनु चली वहि सुधा धारा निरखि मनधौं वारि। नैनखंज न मृग मीन वारौं कमलके कुलवारि ॥ मनों सुरसति यमुन गंगा उपमा डारौंवारि। निरखिकुंडल तरुनि वारौं कूप श्रवननि वारि ॥ झलक ललित कपोल छविपर मुकुर शत शतवारि। नासिकापर कीर वारौं अधर विद्रुम वारि ॥ दशन एकन वज्रवारौं वीज दाडिम वारि। चिवुकपर चित वित्त वारौं प्राणडारौं वारि। सूरहरिके अंग सोभा कोसकै निरवारि ॥ १५॥ सोरठ ॥ श्याम उर सुधादह मानौ। मलय चंदन लेप कीन्हे वरन यह जानौ ॥ मलय तनु मिलि लसति सोभा महाजल गंभीर निरखि लोचन भ्रमत पुनि२धरत नहिं मन धीर॥उरज भँवरी भँवर मानों मीन मणिकी कांति।भृगुच रण हृदय चिह्न ये सब जीव जल वहुभांति॥श्यामबाहु विसाल केसरि खौरि विविधि बनाइ। सहज निकसे मगर मानों कूल खेलत आइ ॥ सुभग रोमावली की छवि चली दहते धार। सूर प्रभुकी निरखि सोभा युवति वारंवार ॥ १६ ॥ मनु मधुकर पद कमल लुभान्यो। चित्त चकोर चंद्र नख अटक्यो यकटक पल न भुलान्यो ॥ बिनही कहे गये उठि मोते जात नहीं मैं जान्यो। अब देखो तनमे वे नाहीं कहा जियहिधौं आन्यों ॥ तबते फेरि तके नहिं मोतन नखचरणनहित मान्यो। सूरदास वे आपु स्वारथी परवेदन नहिंजान्यो॥१७ ॥ मारू ॥ श्याम सखि नीके देखे नाहीं। चितवतही लोचन भरिआए वार वार पछिताहीं ॥ कैसेहूं करिय कटक राखति नेकहि मैं अकुलाहीं। निमिष मनों छवि पर रखवारे ताते अतिहि डेराहीं। कहा करैं इनको कहा दोष न इन अपनीसी कीन्हीं ॥ सूरश्याम छवि पर मन अटक्यो ॥ उन सब सोभा कीन्हीं ॥ १९ ॥ गौरी ॥ मनलुब्ध्यो हरिरूप निहारि। यादिन श्याम अचानक आये तबते मोहिं विसारि ॥ इंद्रिन संग लगाइ गयो ह्यां डेरा निकसे झारि। ऐसे हाल करतरी कोऊ रही अकेली नारि॥फेरि न मेरी उहि सुधि लीन्ही आपु करत सुखभारि। सूरश्यामको उरहनो देहौं पठवत काहे नमारि ॥ २० ॥ अथ अनुरागसमयके पद ॥ रामकली ॥ पुनि पुनि कहतिहैं व्रजनारि। धन्य वडभागिनी राधा तेरे वश गिरिधारि ॥ धन्य नंदकुमार धनि तुम धन्यतेरी प्रीति ।धन्य तुम दोउ नवलजोरी कोक कलानिजीति।हम विमुख तुम कृष्णसंगिनि प्राण एक द्वै देह॥एक मन एक बुद्धि एकचित दुहुनि एक सनेह।एक छिनु विनु तुमहि देखे श्याम धरत नधीर॥मुरलिमें तुअ नाम पुनि पुनि कहतहैं बलवीर॥श्याममणिमैं परखि लीन्हो महाचतुरसुजान।सूरप्रभुके प्रेमही वश कौन तोसरिआन॥२१॥ विहागरो ॥ राधा परमनिर्मल नारि। कहतिहौं मन कर्मना करि हृदय दुविधा टारि ॥ श्यामको एक तूही जान्यो दुराचरनी और। जैसे घट पूरण न डोलै अध खुलो डगडौर ॥ धनी धन कबहूँ न प्रगटै धरै धनहि छपाइ । तैं महानग श्याम पायो प्रगटिकैसेजाइ ॥ कहतिहौं यह बात तोसों प्रगट करिहौं नाहिं। सूरसखी सुजान राधा परस्पर मुसकाहिं ॥ २२ ॥ गौरी ॥ श्यामको तैहीं है पहिचाने। सांची प्रीति जानि मनमोहन तेरेही हाथ विकाने ॥ हम अपराध कियो कहि तुमसों हमही कुलटी नारि। तुमसों उनसों वीच नहीं कछु तुम दोऊ वरनारि ॥ धन्य सुहाग भाग्य है तेरो धनि वडभागी श्याम। सूरदास प्रभुसे पति जाके तोसी जाके वाम ॥ २३ ॥ सोरठ ॥ राधा श्यामकी प्यारी। कृष्णपति सर्वदा

तेरे तू सदा नारी ॥ सुनत बाणी सखी मुखकी जिय भयो अनुराग। प्रेम गदगद रोम पुलकित समुझि अपने भाग ॥ प्रीति परगट कियो चाहै वचन बोलि न जाइ । नंदनंदन कामनायक रहे नैननि छाइ ॥ हृदय ते कहुँ टरत नाहीं कियो निहचल वास। सूरप्रभु रस भरी राधा दुरत नाहिं प्रकाश ॥ २४ ॥ जैतश्री ॥ सुनि सजनी मेरी एक बात। तुमतौ अतिही करति बडाई मन मेरो सर मात ॥ मोसों हँसति श्याम तुम एकै यह सुनिकै मरमात। एक अंगको पार न पावति चकित होइ भरमात ॥ वह मूरतिद्वै नयन हमारे लिखी नहीं करमात । सूर रोम प्रति लोचन देतो विधिना पर तर मात ॥२५॥ कल्याण ॥ जो विधना अपवश करि पाऊं। तौ सखि कह्यो होइ कछु तेरो अपनी साध पुराऊं ॥ लोचन रोम रोम प्रति मांगौं पुनि पुनि त्रास दिखाऊं।यकटक रहैं पलक नहिं लागैं पद्धति नई चलाऊं ॥ कहा करौं छवि राशि श्याम घन लोचन द्वै नहिं ठाऊं। येते पर ये निमिष सूर सुनि यह सुख काहि सुनाऊं ॥ २६ ॥ बिलावल ॥ कहा करौं विधि हाथ नही। वह सुख यह तनु दशा हमारी नैननिको रिस मरत मही ॥ अंग अंग कीनी विधि वन ये द्वै नैना देखति जबही। ऐसो कौन ताहि धरि आनै कहा करौं खीझति मनही ॥ बडो सुजान चतुरई नीकी जगत पिता कहियत सबही। सूरश्याम अवतार जानि व्रज लोचन बहुत न दिये हमहि ॥ २७ ॥ अब समुझी यह निठुर विधाता। ऐसेहि जगतपिता कहवावत ऐसे घातकरै सो दाता॥कैसो ज्ञान चतुरई कैसी कौन विवेक कहांको ज्ञाता। जैसो दुख हमको एहि दीन्हौ तैसे याको होत निपाता ॥ द्वै लोचन तनुमें करि दीन्हो याहीते जान्यो पितुमाता। सूरश्यामछवि ते अघात नाहिं बार बार आवत अकुलाता ॥ ॥२८॥ सूही बिलावल ॥ है लोचन सावित नहिंतेउ। विनु देखे कल परत नहीं छन येते पर कीन्हे यह टेउ॥वार वार छवि देख्योई चाहत साथी निमिष मिलेहैं येउ। तेतो ओट करत छिनही छिन देख तही भरिआवत दोउ ॥ कैसे मैं उनकोपहिंचानों नैन विना लखिये क्यों भेउ। येतौ निमिष परत भरि आवत निठुर विधाता दीन्हें येउ ॥ कहाभई जो मिली श्यामसों तू जान्यो जानै सबकोउ। सूरश्यामको नाम श्रवन सुनि दरशन नीके देत न वोउ ॥ २९ ॥ सुही ॥ श्यामहि मैं कैसे पहिंचानों। कर्म कर्म करि एक अंग निहारति पलकवोट ताको नहिं जानों ॥ पुनि लोचन ठहराइ निहारति निमिष मेटि वह छवि अनुमानों। औरैभाव औरकछु सोभा कहौं सखी कैसें उरआनों छिन छिन अंग अंग छवि अगणित पुनि देखौं फिरिकै हठठानों । सूरदास स्वामीकी महिमा कैसे रसना एक वखानों ॥ ३० ॥ सारंग ॥ श्यामसों काहेकी पहिचानि। निमिष निमिष वह रूप न वह छवि रति कीजै जेहिजानि ॥ एकटक रहत निरंतर निशि दिन मनमाति सोचित सानि। एकौ पल सोभा की सीवा सकत न उरमह आनि ॥ समुझि नपरे प्रगटही निरखत आनँदकी निधि खानि। सखी यह विरह संयोग की समरस दुख सुख लाभकि हानि ॥ मिटति नघृतते होम अग्निरुचि सूर सुलोचन बानि । इत लोभी उत रूप परमनिधि कोउन रहत मिति मानि ॥ ३१ ॥ रामकली ॥ कहाकरों नीके करि हरिको रूपरेख नहिं पावति। संगहिसंग फिरति निशिवासर नैननिमेष नलावति ॥ बधी दृष्टि यों डोर गुडी वश पाछे लागी धावति। निकटभये मेरी ए छाया मोको दुख उपजावति ॥ नखशिख निरखि निहारयोई चाहति मनमूरति अतिभावति। जानों नहीं कहांते निजछवि अंग अंगमें आवति॥अपनीदेह आपुको वैरिनि दुरत नदुरी दुरावति। सूरश्याम सों प्रीति निरंतर अंतर मोहिं करावति॥३२॥धनाश्री॥जो देखोंतौ प्रीति करौंरी॥संगहि रहौं फिरौं निशिवासर चितते नेक नहीं विसरौंरी। कैसे दुरति दुराये मेरे उन विनधीरज नहीं धरौंरी॥

जाउँ तहीं जहँ रहैं श्यामघन निरखत एक टक ते नटरौंरी। सुनिरी सखी दशा यह मेरी सो कहिधौं अब कहा मरौंरी। सूरश्याम लोचन भरि देखौं कैसे इतनी साध मरौंरी॥ ३३ ॥ बिलावल ॥ हरि दरशनकी साध मुई। उड़िये उड़ी फिरति नैनति संग फरफूटै ज्यों आक रुई ॥ जानौं नहीं कहांते आवति वह मूरति मनमाहँ उई। विनदेखेकी यथा विरहनी अति जुर जरति नजाति छुई ॥ कछु वै कहत कछू कहि आवत प्रेमपुलकि श्रमसेदचुई। सूखति सूर धान अंकुरसी विनु वरपा ज्यों मूलतुई ॥ ३४ ॥ धनाश्री ॥ सुनरी सखी दशा यह मेरी। जवते मिले श्याम घन सुंदर संगहि फिरति भई जनु चेरी ॥ नीके दरश देत नहिं मोकों अंगनप्रति अनंगकी टेरी। चपलाते अतिही चंचलता दशन चमक चकचौंधि घनेरी ॥ चमकतअंग पीतपट चमकत चमकति माला मोतिनकेरी। सूर समुझि विधिनाकी करनी अतिरिस करति सौंह मुँह तेरी ॥३५॥मारू॥ आजुके दिनको सखी आति नहीं नौलाख लोचन अंग अंग होते। पूरति साध मेरे हृदय माँझ देखत सबै छवि श्याम कोते ॥ चित्तलोभी नैन द्वार अतिही सूक्ष्म कहा वह सिंधु छविहै अगाधा। रोम जितने अंग नैन होते संग रूप लेती निदरि कहति राधा ॥ श्रवन सुनि सुनि दहै रूप कैसे लहै नैन कछु गहै रसनान ताके। देखि कोउरहै कोउ सुनि रहै जीभ विन सो कहै कहा नहिं नैन जाके ॥ अंग विनुहै सबै नहीं एकौ फबै सुनत देखत जबै कहन लोरे। कहैं रसना सुनत श्रवन देखत नैन सूर सब भेद गुनि मनहिं तोरे ॥ ३६ ॥ धनाश्री ॥ इनहुँमे घटिताई कीन्ही। रसना श्रवन नैनके होते की रसनाहीको नाहिं दीन्ही ॥ वैर कियो विधना हमको राचे याकी जाति अबै हम चीन्ही॥निठुर निर्दयीयाते और न श्याम वैर हमसोंहै लीन्ही॥यारसहीमें मगन राधिका चतुरसखी तवही लखि भीनी। सूरश्यामके रंगहि राची टरत नहीं जलते ज्यों मीन्ही ॥ ३७ ॥ सोरठ ॥धन्य धन्य वडभागिनि राधा। नीके भजी नंदनंदनको मेटि भवन जन बाधा। नवल श्याम नवला तुमहूं हो दोउ तुम रूप अगाधा। मैं जानी यह वात हृदयकी रही नहीं कछु साधा॥ संगहि रहति सदा पियप्यारी क्रीडत करति उपाधा॥कोककला वितपन्न भईहौ कान्हरूप तनु आधा ॥ प्रेम उमंगि तेरे मुख प्रगस्यो अरस परस अवलाधा॥सूरदास प्रभु मिले कृपाकरि गये दुरति दुखदाधा ॥३८॥ धनाश्री कहि राधिका वात अब सांची॥तुम अब प्रगट कही मो आगे श्यामप्रेमरस मांची॥तुमको कहां मिले नँद नंदन जब उनके रंगराची। खरिक मिलेकी गोरस वेचत की विपहरते वांची ॥ कहे वनै छाडो चतुराई वात नहीं यह काची। सूरदास राधिका सयानी रूपराशि रस खाची ॥ ३९ ॥ गौरी ॥ कवरी मिले श्याम नहिं जानो। तेरीसों कहि कहत सखीरी अवहूं नाहिं पहिचानों॥खरिक मिलेकी गोरस वेंचत की अवही की कालि। नैननि अंतर होत न कवहूं कहति कहारी आलि ॥ येको पल हरि होत नन्यारे नीके देखे नाहीं। सूरदास प्रभु टरत न टारे नैनानि सदा वसाहीं ॥ ४० ॥ ॥ बिलावल ॥ श्याममिले मोहिं ऐसे माई। मैं जलको यमुनातट आई ॥ औचक आये तहां कन्हाई देखतहीमोहनी लगाई ॥ तवहीते तनुसुरतिगवाई। सूधे मारगगई भुलाई ॥ विन देखे कल परे नमाई सूरश्याम मोहनी लगाई ॥ ४१ ॥ तवहीते हरि हाथ विकानी। देह गेह सुधि सबै भुलानी ॥ अंगसि थिल फई जैसे पानी। ज्यों त्यों करि गृह पहुँची आनी ॥ वोले तहां अचानक वानी। द्वारे देखे श्याम विनानी ॥ कहाकहौं सुनि सखी सयानी। सूर श्याम ऐसी मति ठानी ॥ ४२ ॥ धनाश्री ॥ जादिनते हरि दृष्टि परेरी। तादिनते इनि मेरे नैननि दुख सुख सव विसरेरी ॥ मोहन अंग गोपाललाल के प्रेम पियूप भरेरी। धसे उहां मुसुकानि वाढुलै रचि रुचि भवन करेरी ॥

पठवतिहौं मन तिनहि मनावन निशि दिन रहत अरेरी। ज्यों ज्यों मान करति उलटावत त्यों त्यों होत खरेरी॥ पचिहारी समुझाइ सोचि पचि पुनि पुनि पाँइ परेरी। सो सुख सूर कहालों वरणौं एक टकते न टरेरी॥ सारंग॥ जवते प्रीति श्यामसों कीन्ही। तादिनते मेरे इन नैननि नेकहु नींद न लीन्हीं॥सदा रहैं मन चाक चढ्यौ सो और न कछू सोहाइ।करत उपाइ बहुत मिलिवेको इहै विचारत जाइ॥सूर सकल लागत ऐसी यह सो दुख कासों कहिये।ज्यों अचेत बालककी वेदन अपनेही तन सहिये॥४३॥ अडानो॥ को जानै हारि कहा कियोरी। मन समझति सुख कहत न आवै कछु एक रस लोचन जुपियोरी॥ठाढी हुती अकेली आंगन आनि अचानक दरश दियोरी। सुधि बुधि कछु न रही तेहि अवसर मेरो मन किधौं पलटि लयोरी॥ता सुख हेतु दहति दुख दारुण छिन छिन जरति जुडात हियोरी। सूर सकल आनत उर अंतर उपमाको पावतिन वियोरी॥४४॥ सारंग॥ मेरे हरि अँगनाह्वै जुगएरी। निकसे आइ अचानक सजनी इत फिरि फिरि चितयेरी॥अति दुखमें पछितातित यहै कहि नैनन बहुत ठयेरी।जो विधि इहै कियो चाहत हो द्वै मुहि कत वदएरी॥सव दै लेउ लाखलोचनसखी ज्यों कोऊ जड़त नएरी।थाके सूर पथिकमगमानो मदन व्याध विधयेरी॥ कान्हरो॥ पीतांवरकी सोभा सखीरी मोपै कही नजाई। सागरसुतापति आयुध मानो वनरिपु रिपुमैंदेति दिखाइ॥जाअरि पवन ताहि महि सुव स्वामी आभा कुंडल कोटि दिखाई। छायापति तनु वदन विराजत वंधु अधरनए लजाई॥ नाकी नाथ कुवाहनकी गति मुरली सुधुनि वजाई। सूरदास प्रभु हरि सुत वाहन तासुत हरिलै सरह वनाई॥ सारंग॥ टरति नटारे इहछवि मनमें चुभी। श्याम सुसघन पीत वर दामिनि चातक अँखियाहो जाइ तुभी॥ है जलधार हार मुकुतामनों वक पंगति कुमुदमाल सुभी। गिरागंभीर गरज मनु सुनि सखी खानि केश्रवन देखुभी॥ मोहन वानीहौं ठगी रही इकटकहौं जुउभी। सूरदास मोहन मुख निरखत उपजी सकल तनकाम गुँभी॥ विलावल॥ नंदकेलाल हरचो मनमोर। हौं वैठी पोवति मोतिअनलर कां करडारि चले सखिभोर॥ वंकाविलोकनि चाल छवीली रसिक शिरोमणि नंद किसोर। कहि काको मन रहत श्रवण सुनि सरस मधुर मुरली की घोर। इंदु गोविंदु वदनको कारन चितवति नैन विहंग चकोर। सूरदास प्रभुके जुमिलनको कुच श्रीफलहो करति अकोर॥ अडानो॥ मेरो मन गोपाल हरचोरी। चितवतही उर पैठि नैनमन नाजानों धौं कहा कह्योरी॥ मात पिता पति वंधु सजन जन सखियां गन सव भवन भरचोरी। लोक वेद प्रतिहार पहरुआ तिनहूंपै राख्यो न परचोरी॥ धर्म धीर कुलकानि कुंची कर तेहि तारौदै दूरि धरचोरी। पलक कपाट कठिन उर अंतर इतेहु जतन कछुवै न सरचोरी॥ वुधि विवेक वल सहित सच्यो पचि सुधन अटल कवहूं न टरचोरी। लियो चुराइ चितै चित सजनी सूर सो मोतन जात जरचोरी॥४५॥ अडानो॥ मेरो मन तवते न फिरचोरी। गयो जुसंग श्याम सुंदरके तहांते कवहूं न टरचोरी॥ जोवनरूप गर्वधन सचि सचि हों उरमें जु धरचोरी। कहाकहौं कुलशील सकुच सचि सरवस हाथ परचोरी॥विनु देखोमुख मनु हरिको यह निशिं दिन रहत अरचोरी। सूरदास या वृथा लाजते कछुअ नकाज सरचोरी॥४६॥ सारंग॥ यह सर्व मैंही पोच करी। श्यामरूप निरखति नैनानि भरि भौंहनि फंद परी॥ वै किसोर कमनीय मुगधमैं लुवुधतहूँ न डरी। अव छवि गई समाइ हियेमें टारतहू नटरी॥ अति सुख दुख संभ्रम व्याकुलता विधु मुख सनमुखरी। वुधि विवेक वल वचन विवसह्वै आनँद उमँगि भरी॥ यद्यपि शूल सहत सुनि सूर सु अंगहउदै नअरी।

तदपि मुख मुरलिका विलोकति उलटि अनंग जरी ॥ ४७ ॥ आसावरी ॥ सखीरी ना जानौं तवहींते मोको श्याम कहाधौंकीन्होरी। मेरे दृष्टि परे जादिनते ज्ञान जान हरि लीन्होरी॥द्वारे आइ गए औचकही मैं आंगनही ठाढीरी। मनमोहन मुख देखि रही तव कामव्यथा तनु वाढीरी॥ नैन सैन दैदै हरि मोतन कछु एकवात वतायोरी। पीतांवर उपरैना करगहि अपने शीश फिरायोरी॥ लोकलाज गुरुजनकी संका कहत नआवै वानीरी। सूरश्याम मेरे आँगन आए जात वहुत पछिता नीरी॥४८॥ सोरठ॥ मन हरिलीन्हो कुँअर कन्हाई। जवते श्याम द्वारह्वै निकसे तवं तेरी मोहिं घर न सुहाई॥ मेरे हित आइ भये हरि ठाढे मोते कछु न भईरी माई। तवही ते व्याकुल भई डोलति वैरी भए मातपितु भाई॥ मोदेखत शिरपाग सँवारी हँसि चितये छवि कही नजाई। सूरश्याम गिरि धर वर नागर मेरो मन लैगए चोराई॥४९॥ धनाश्री॥प्रेमसहित हरि तेरे आये। कछु सेवा तैं करीकि नाहीं कीधौं वैसेहि उनहि पठाये॥काहेते हरि पाग सँवारी क्यों पीतांवर शीश फिराये। गुप्त भावतो सों कछु कीन्हों घर आए काहे विसराये॥ अतिही चतुर कहावत राधा वातनहीं हरि क्योंन भुराये। सूरश्यामको वश करि लेती काहेको रहते पछताये॥ ५०॥ गुरुजन में वैठी आये हरि वेंदी सँवारन मिस पाइलागी।चतुर नायकहू पाग मसकी मनहीमन रीझे गुप्तभेद प्रीति तन जागी॥ हस्तकमल हरि हेरि हृदय धरे भामिन उत आप कंठलागी। सूरदास अति चतुर नागरी पिये अति नागर दुहुँ कह्यो मनमें सुहाग भागी॥ ५१॥ श्याम अचानक आइ गयेरी। मैं वैठी गुरु जन विच सजनी देखतही मेरे नैन नयेरी॥ तव इक वुद्धि करी मैं ऐसी वेंदीसों कर परस कियो री। आपु हँसे उत पाग मसकी हरि अंतर्यामी जानि लियोरी॥ लैकर कमल अधर परसायो देखि हरपि पुनि हृदय धर्योरी। चरन छुवै दोऊ नैन लगाये मैं अपने भुज अंक भर्योरी॥ ठाढे रहे द्वार अति हित करि तवहीते मन चोरि गयोरी। सूरदास कछु दोप न मेरो उत गुरुजन इत हेतु नयोरी॥५२॥ करत मोहिं कछुवै तो न वनी। हरि आए चितवतहीरही सखी जैसे चित्र धनी॥ अति आनंद हरप आसन उर कमल कुटी अपनी। न्योछापारे अंचलकी फहरनि अधैनैन जल धार घनी॥ गुरुजन लाज कछू नसकी कहि सुनि मन वुधि सजनी। हृदय उमँगि कुच कलस प्र गट भये टूटी तरकि तनी॥ अव उपजाति अति लाज मनहि मन समुझति निज करनी। सूरदास मेरी जडमति मंगल प्रभु मांझ गुनी॥ ५३॥ सेवा मानि लई हरि तेरी। अव काहे पछिताति राधिका श्याम जात करि फेरी॥ गुरुजनमें भावहि की पूजा और कहौ कछु टेरी। मोहन अति सुखपाय गयेरी चाहति हौं कहमेरी॥ तेरे वशभए कुँवर कन्हाई कराति कहा अवसेरी। सूरश्याम तुमको अति चाहत तुमप्यारी हरि केरी॥ ५४॥ आसावरी॥ राधा भाव कियो यह नीको तुम वेंदी उन पाग छुई।ऐसे भेद कहा कोउ जानै तुमही जानो गुप्त दुई॥ तुम जुहार उनको जव कीन्हो तुम को उनहु जुहार कियो। एकै प्राण देह द्वै कीन्हे तुम वै एकै नहीं वियो॥ तुम पग परसि नैन पर राख्यो उनि करकमलनि हृदयधर्यो।सूरश्याम हृदय तुम राखे तुम उनको लै कंठभर्यो॥५५॥ विहागरो॥अरी माई एक गाँवके वसत एक वार हरि कीन्ही पहिचानि।निशिदिन रहै दरशकी आशा मिले अचानक आनि॥ भाग्य दशा आंगनही आये सुंदर सरवस जानि।नीके करि देखनहुँ न पाए वहिनजाइ कुलकानि। कल न परत हरि दरशन विनरी मोहिं परी यह वानि। सूरदास विकानीरी हौंनंदसुवनके पानि॥ ५६॥ कहा करौं गुरुजन डर मान्यो। आए श्याम कौनहित करिकै मैं अपराधिनि कछू नजान्यो॥ ठाढे श्याम रहे मेरे आंगन तवते मन उन हाथ विकान्यो। चूकपरी

मोको सबही अंग कहा करौं गई भूलि सयान्यो ॥ वे उतहीको गये हरष मन मेरी करनी समुझि अयान्यो । सूरश्याम सँग मन उठि लाग्यो मोपर वारंवार रिसान्यो ॥ ५७ ॥ सारंग ॥ अचानक आयेरी हरि मेरे चितै तब होंरही छवि निहारि । कुंडल लोल कपोल रहे कच श्रमजल सों कर कंजसों ढारि ॥ गुरुजन विच मैं आंगन ठाढी अतिहित दरशन दियो मया करि । सूरदास स्वामी अंतर्यामी वे हँसि चितये सुखकरि ॥ ५८ ॥ गौरी ॥ मैं अपने कुलकानि डरानी। कैसे श्याम अचानक आये मैं सेवा नहिं जानी ॥ उहै चूक जिय जानि सखी सुनि मन लै गए चुराइ । तनते जात नहीं मैं जान्यो लियो श्याम अपनाइ॥ऐसे ढंग फिरत हरि घर घर भूलि कियो अपराध सूरश्याम मन देहि न मेरो पुनि करिहौं अनुराध ॥ काफी॥ मोही सांवरे सजनी तवते गृह मोको न सोहाई। द्वार अचानकह्वै गयेरी सुंदर वदन दिखाई ॥ ओढे पीरी पामरी पहिरे लाल निचोल । भौंहैं कांट कटीलियां सखि कीन्ही बिनमोल ॥ मोर मुकुट शिर सोहई अरु अधर धरे मुखवैन । मोहन मूरति हृदय बसै छवि लागि रही दोउनैन॥श्यामरूपमें मन गीध्यो भलो बुरो कहो कोई। सुरदास प्रभु संग गयो मन मनों उनहीं को होई॥६०॥मोहन बिनु मन नरहै कहा करौं माईरी । कोटिभांति करि करि रहा समुझाईरी॥लोकलाज कौनकाज मानत यदुराईरी॥हृदयते टरत नाहिं मुख सुंदरताईरी॥ ऐसेहैं त्रिभंगी नवरंगी सुखदाईरी । सूरश्याम विन नरहों ऐसी बनिआईरी ॥६१॥ मेरो मन नरहै कान्ह विना नैन तपै माई । नवकिशोर श्याम वरन मोहनी लगाई ॥ बनकी धातु चित्रित तनु मोर चंद्र सोहै । बनमाला लुब्ध भवँर सुर नर मुनि मोहै॥नटवर वपु भेष ललित कट किंकिनि राजै । मणि कुंडल मकराकृत तरुन तिलक भ्राजै ॥ कुटिलकेश अति सुदेस गोरज लपटानी । तडित बसन कुंद दशन देखिहों भुलानी ॥ अरुन श्वेत कुंभ वज्र खचित पादिक सोभा। मणिकौस्तुभ कंठ लसत चितवत चित लोभा॥अधर सधर मधुर बोल मुरली कलगावे॥भ्रुवविलास मंद हास गोपिन्ह जिय भावै ॥ कमलनैन चितके चैन निरखि मैन वारों। प्रेम अंश अरुझि रहो उरते नहिं टारों ॥ गोप भेष धरि सखीरी संग संग डोलौं । तन मन अनुराग भरी मोहन संग वोलौं। नवकिसोर चितकेचोर पलकओट नकरिहौं । सुभग चरन कमलअरुन अपने उर धरिहौं॥ असन वसन शयन भवन हरिविनु न सुहाइ । विनु देखे कल नपरै कहाकरौं माइ ॥ यशोमति सुत सुंदर तनु निरखि हो लोभानी । हरिदरशन अमल पर्यो लाजन लजानी॥रूपराशि सुख विलास देखत बनि आवै । सूर प्रभु रूपकी सवा उपमा नहिपावे ॥ गौरी ॥ मनमेरो हरि साथ गयोरी । द्वारे आय श्याम घन सजनी हँसि मोतनते संग लयोरी ॥ ऐसे मिल्यो जाइ मोको तजि मानहुँ उनही पोषि जयोरी । सेवा चूक परी जो मोते मन उनको धौं कहा कियोरी ॥ मोको देखि रिसात हते यह तेरे जिय कछु गर्व भयोरी । सूरश्याम छबि अंग भुलानो मन वच कर्म मोहि छाडि दयोरी ॥ ६२ ॥ रामकली ॥ मैं मन बहुत भांति समुझायो । कहा करौं दरशनमें अटक्यो बहुरि नहीं घटआयो ॥ इन नैननके भेद रूपरस उरमें आनि दुरायो । बरजतही वेकाज सुपतज्यों पलघो जोन सिधायो ॥ लोक वेद कुल निदरि निडरह्वै करत आपनो भायो । मुखछबि निरखि बोधि निशिखग ज्यों हाठि अपुनपो बँधायो ॥ हरिको दोष कहा कहि दीजै यह अपने बल धायो । आति विपरीति भई सुनि सूर प्रभु मुरझ्यो वदन जगायो ॥ ६३ ॥ बिलावल ॥ मनहिं विना कहा करौं सहीरी । घरतजिकै कोऊ रहत पराये मैं तबहीते

फिरत वहीरी ॥ आइ अचानकही लेगए हरि वार वारमें हटकि रहीरी । मेरो कह्यो सुनत काहेको लेगए हारि हारिके उतहीरी ॥ ऐसी करत कहूंरी कोऊ कहाकरों मैंहारि रहीरी । सूरश्याम को यह न बूझिये ढीठ कियो मनकोउ नहींरी ॥ ६४ ॥ सोरठी ॥ माखनकी चोरी तें सखि करन लगे अब चितहूकी चोरी । जाके दृष्टिपरे नँदनंदन सोउ फिराति गोहन डोरी डोरी ॥ लोकलाज कुलकानि मेटि करि वन वन डोलति नवलकिसोरी । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि जबतें देखे निगम वानि भई भोरी ॥ ६५ ॥ आसावरी ॥ क्यों सुरझाऊँरी नंदलालसों अरुझि रह्यो मन मेरो । मोहन मूरति कहूँ नेक न विसरति कहि कहि हारि रही कैसेहु करत नफेरो ॥ बहुत यतन घेरि घेरि राखति फेरि फेरि लरत सुनत नाहिं टेरो । सूरदास प्रभुके संग रसवश भई डोलत निशि वासर कहूँ निरखत पायो नडेरो ॥ ६६ ॥ बिलावल ॥ मैं अपनो मन हरत नजान्यो । कब धौंगयो संग हरिके वह कीधौं पंथ भुलान्यो ॥ कीधौं श्याम हटकिहैं राख्यो कीधौं आपुर तान्यो । काहेते सुधि करी न मेरी मोपर कहा रिसान्यो ॥ जबहींते हरि ह्यां ह्वै निकरे वैरतबहि ते ठान्यो । सूरश्याम संग चलन कह्यो मोहिं कहो नहीं तब मान्यो ॥ ६७ ॥ गूजरी ॥ श्याम करतहैं मनकी चोरी । कैसे मिलत आनि पहिलेही कहि कहि बतियां भोरी ॥ लोकलाजकी कानि गमाई फिरत गुडीवश डोरी । ऐसेढंग श्याम अब सीखे चोर भयो चितकोरी ॥ माखनकी चोरी सहिलीन्ही वात रही वह थोरी । सूरश्याम भए निडर तबहिते गोरस लेत अजोरी ॥ ६८ ॥ सोरठी ॥ सुनहु सखी हरि करत न नीकी । आपस्वारथहिं मन मोहन पीर नहीं औरनकी ॥ वेतो निठुर सदा मैं जानति वात कहत मनहीकी । कैसे इनहिं वहां करि पाऊं रिसमेटों सब जीकी ॥ चितवतन हीं मोहिं सपनेहूंको जानि इनहींकी । ऐसे मिले सूरके प्रभुको मनहुं मोललै बीकी ॥६९॥ आसावरी ॥ माईरी कृष्ण नाम जबते श्रवण सुन्योरी तबते भूलीरी भवन बावरीसी भईरी । भरि भरि आवें नैन चित न रहत चैन बैननिहू सुध्यौं भूली मनकी दशा सब औरै ह्वै गईरी ॥ कोमाता कौन पिता कौन भैनी कौन भ्राता कौन ग्रान कौन ज्ञान कौन ध्यान मदन हईरी । सूरश्याम जबते परेरी मेरे दृष्टि वाम काम धाम निशियाम लोकलाज कुलकानि नईरी ॥७०॥ रामकली ॥ राधातें हरिके रँगराची । तोते चतुर और नहिं कोऊ वात कहौं मैं सांची ॥ तें उनको मन नहीं चुरायो ऐसी है तू काची । हरि तेरोमन अबहिं चुरायो प्रथम तुहीहै नाची ॥ तुम अरु श्याम एकहो दोऊ वाकी नाहीं वाची ॥ सूरश्याम तेरे वश राधा कहति लीक मैं सांची ॥ ७१ ॥ जैतश्री ॥ तू काहेको करति सयानी । श्याम भए वश पहिले तेरे तब तू उनके हाथ विकानी ॥ वाकी नहीं रही नेकहु अब मिली दूध ज्यों पानी । नँदनंदन गिरिधर बहुनायक तू तिनकी पटरानी ॥ तोसी कौन वडिभागिनि राधा यह नीके करि जानी । सूरश्याम संग हिलि मिलि खेलो अजहुँ रहति वौरानी ॥ ७२ ॥ गौरी ॥ मन हरि लीन्हों कुँवर कन्हाई । तबहींते मैं भई वौरानी कहा करों री माई ॥ कुटिल अलक भीतर अरुझाने अब निरुवारि नजाई । नैन कटाक्ष चारु अवलोकनि मोतन गये बसाई ॥ निलजभई कुल कानि गँवाई कहा ठगोरी लाई । वारंवार कहति मैं तोको तेरे हिये न आई ॥ अपनी सी बुधि मेरी जानति इतनी मैं कहांपाई । सूरश्याम ऐसी गति कीन्हीं देह दशा विसराई ॥ ७३ ॥ रामकली ॥ राधा हरि अनुराग भरी । गदगद मुख वाणी परकाशत देह दशा विसरी ॥ कहति इहै मन हरि हरि लेगये एही परनिपरी । लोक सकुच संका नहिं मानति श्यामहिरंग ढरी ॥ सखी सखीसों कहति बावरी येहि हमको निदरी । सूरश्याम संग सदा रहतिहै बूझेहू नकरी ॥७४॥ सूही बिलावल ॥

तुम जानति राधाहै छोटी। चतुराई अंग अंग भरीहै पूरण ज्ञान न बुद्धिकी मोटी ॥ हमसों सदा दुरावति सोइहि बात कहै मुख चोटी पोटी। कबहुँ श्यामते नेक नबिछुराति किये रहति हमसों हठ योटी॥नँदनंदन याहीके वश हैं विवस देखि वेंदी छवि चोटी॥सूरदास प्रभु वै अति खोटे यह उनहीते अतिही खोटी॥७५॥ बिलावल॥ सखी कहति तू बात गँवारी। याकी सारि कैसे कोउ ह्वैहै जाके वश हैं श्रीवनवारी॥ब्रजभीतर इह रूप आगरी ब्रतलीन्हों हढगिरिवर धारी॥प्रीति गुप्तहीकीहै नीकी यापर मैं रीझिहौं भारी॥सांची कहौं नेह ऐसोई पाछे मोको दीजो गारी॥सूरदास राधा जो खोटी तौ देखो यह कृष्ण पियारी ॥ ७६ ॥ गूजरी ॥ सुनहु सखी राधासरि कोहै । जेहरिहैं रतिपति मनमोहन याको मुख सो जोहै॥जैसे श्याम नारि यह तैसी सुंदर जोरी सोहै। इह द्वादश वेऊ दशद्वैके ब्रज युवतिन मनमोहै। मैं इनको घटि वढि नहिं जानति भेद करैसो कोहै। सूरश्याम नागर इह नागरि एक प्राणतनुद्वैहै ॥ ७७ ॥ गूजरी ॥ सुनि सजनी ए ऐसे लागत । एक प्राण युग तन सुख कारण एको निमिष न त्यागत ॥ बिछुरत नहीं संगते दोऊ बैठे सोवत जागत। पूरवनेह आजु यह नाहीं मोसों सुनहु अनागत ॥ मेरी कही सांची तुम जानो कीजे आगत स्वागत। सूरश्याम राधावर ऐसे प्रीतिहिते अनुरागत ॥ ७८ ॥ जैतश्री ॥ सखी सखीसों धन्य कहै । इनको हम ऐसे नहिं जाने ब्रजभीतर ए गुप्त रहै ॥ धन्य धन्य तेरी मति साँची हम इनका कछु और कहै। राधा कान्ह एकहैं दोऊ तो इतनो उपहास सहै । वै दोऊ एक दूसरी तूहै तोहूको सखि श्याम चहै। सूरश्याम धनि अरु राधा धनि तुहूं धन्य हम वृथा वहै ॥ ७९ ॥ धनाश्री ॥ धन्य धन्य यह तेरी बानी। तैं नीके हरिको पहिचानें अब हम तुमको जानी॥ राधा आधा देह श्यामकी तू उनकी विचवानी। राधाहूते अधिक श्यामसों तेरी प्रीति पुरानी ॥ जो हरिकी संगिनि तू नाहीं आदिने हक्यों मानी। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि यह रस कथा व खानी॥ ८० ॥ पूरबी ॥ हे माई राधा मोहन सहज सनेही। सहजरूप गुण सहज लाडिली एक प्राणद्वै देही॥ सहज माधुरी अंग अंगप्रति सहज सदावन ग्रेही। सूरश्याम श्यामा दोऊ सहजहि सहज प्रीति करि लेही ॥ ८१ ॥ आसावरी ॥ राधा नँदनंदन अनुरागी। भव चिंता हिरदै नहिं एको श्याम रंग रस पागी ॥ हरद चून रंग पय पानी ज्यों दुविधा दुहुँकी भागी।तनमन प्राण समर्पण कीन्हों अंग अंग रतिखागी॥ब्रजवनिता अवलोकन करि करि प्रेम विवस तनत्यागी। सूरदास प्रभुसों चितलाग्यो सोवत ते मनुजागी ॥ मारू ॥ गोपी श्यामरंग राची । देह गेह सुधि विसारी वढी प्रीति सांची ॥ दुविधा उर दूरि भई गई मति वह काची। राधाते आपु विवस भई उघरि गई नाची ॥ हरितजि जो और भजै पुहुमि लीक खांची। मात पिता लोक भीत वाकी नहिं बाची॥ सकुच जवहिं आवै उर वारंवार झांची। सूरश्याम पद पराग ताहीमें माची ॥ ८२ ॥ मारू ॥ श्याम जल सुजल जल ब्रजनारि खोरै। नदी माला जुजल तट भुजा अति सवल धार रोमावली यमुन भोरै ॥ नयन ठहरात नहिं वहत अति तेजसी तहां गयो चित्त धीरज सँभारै। मन गयो तही आपुन रही निकट जल एकएक अंग छबि सुधि विचारै। कराति स्नान सब प्रेम बुडकी देहि समुझि जिय होइ भजि तीर आवै । सूर प्रभु श्याम जलराशि ब्रजवासीन करति अनुमान नहिं पारपावै ॥ ८३ ॥ बिलावल ॥ श्यामरंग राची ब्रजनारी । और रंग सब दीन्ही डारी ॥ कुसुमरंग गुरुजन पितुमाता। हरितरंग भैनी अरु भ्राता॥ दिनांचारि में सब मिटि जैहै।श्यामरंग अजरायल रैहै ॥ उज्ज्वलरंग गोपिका नारी। श्यामरंग गिरिवरके धारी॥ श्यामहि में सबरंग वसेरो

प्रगट वताइ देउ कहि झेरो ॥ अरुणश्वेत सित सुंदर तारे । पीतरंग पीतांवर धारे ॥ नानारंग श्याम गुणकारी । सूरश्याम रंग घोषकुमारी ॥ ८४ ॥ विहागरो ॥ श्यामसलोनेरूपमें अरी मन अरयो । ऐसेहै लटक्यों तहां ते फिरि नहिं मटक्यो वहुत जतन में करयो ॥ ज्यों ज्यों खैंचाति त्यों त्यों मगनहोत ऐसी धरनि धरयो।मोसों वैर करत उनकी ह्यां देख्योजाइ ढरयो॥ ज्यों शिवछत दरशन रविपाये जेही गरानिगरयो । सूरदास प्रभुरूपथक्यो मन कुंजल पंक परयो ॥ ८५ ॥ देसाप ॥निशि दिना इनि नैननिकोरी नंदलालकी लागीरहै लालसाई । मुरलीरसतानभरी श्रवननरी जवतेरी परी कैसेहु टराति नहीं हृदयते विहारी यदुराई ॥ कहाकहों तोसों यह सजनी मनमेरो लैगयो चोराई॥ सूरश्यामको नाम धरों पुनि धरयो नजाइ सुधि नरहै तनुमाई ॥ ८६ ॥ देख सखी मेरोमन नरहै श्यामविना । अतिहि चतुर जान जानानि मनि वह छवि परमें भईलीना ॥ अपनी दशा कहींमें कासों वन वन डोलति रैनिंदिना । मनतो चोरि लियो पहिलेही झुरिझुरिहै रही छीना ॥ वे मोहन मनहरत सहजही हरिलै ताको करत हीना । सूरदास प्रभु रसिक रसीले वहुनायकहैं नाउँजीना ॥ ८७ ॥ सारंग ॥ नैननि नींदी गईरी निशिदिन पल पल छतियां लाग्यौ ,रहै धरको । उत मोहन मुख मुरली सुनत सुध्यो नरही इत घेरा घरको ॥ ननदी तौन दिये विनुगारी नैकहू रहति सासु सपनेहू में आनि गोउति काननिमें लये रहै मेरे पाँइनको खरको। निकसनहूं ना पाइयेरी कासों दुख कहिये देखहू नपाइयेरी सूरदास प्रभुके तन मेरो ज्यों ऐसो भयो जैसो हाथ पाथर तरको॥८८॥ सुघराई ॥ मोहन मुरली वजाइहों रिझाई । तिनही मोहीरी हों मोहीरी सांझ समै देखे कन्हाई॥आनि निकसे मेरे आंगनह्वै तवते चितवत यह पीर भईरी । काकी देह गेह सुधि काके हेहरि कैसे मैं हीरि ॥ तेरे कहे कहतिहों वानी मैं हरिहाथ विकानी तवते एक टक जोइरहीरी । मिलत नहीं नाहिं संगते त्यागत कहाकरों बूझो तोहीरी ॥ सूरश्याम तवते नहिं आये मन जवते हरिलीन्हो वेतो ऐसेहैं द्रोहीरी ॥ अडानो ॥८९॥ व्रजकी खोरि ठाढो साँवरो ढोटौना तवहीं मोहीरी हीं मोहीरी। जवते मैं देखे श्यामसुंदररी चलि नसकत पगदइहै काम नृप द्रोहीरी ॥ कोलैआइ कौने चरन चलाइ कौने वहियां गही सोधों कोहीरी॥ सूरदास प्रभु देखे सुधि रही नहिं अति विदेह भई अव मैं बूझति तोहीरी ॥ सुघराई ॥ आंखिन में वसे जियरे में वसे हियरे में वसत निशि दिन प्यारो । मनमें वसे तनमें वसे रसनामें वसें अंग अंग में वसत नंदवारो ॥ सुधिमें वसे वुधि हूमें वसे पुरजनमं वसत पिय प्रेम दुलारो । सूरश्याम वनहू मे वसत घरहूमें वसत संगजयों जलरंगन होत न्यारो ॥ ९० ॥ सोरठ ॥ नँदनंदन विन कल नपरै । अति अनुराग भरी युवती सव जहां श्याम तहां चित्त ढरै ॥ भवन गई मन तहाँ न लागै गुरु गुरुजन अति त्रास करै । वैकछु कहै करै कछु औरै सासु ननद तिनपर झहरै॥ इहै तुमहि पितु मात सिखायो वोल कराति नाहिं रिसन जरै । सूरदास प्रभुसे चित अरुझ्यो यह समुझो जिय ज्ञान धरै॥९१॥जैतश्री॥सासु ननद घर त्रास देखावै । तुम कुलवधू लाज नाहिं आवति वार वार यह कहि समुझावे ॥ कवही गई न्हान तुम यमुना यह कहि कहि रिसपावै । राधाको तुम संग करतिहो व्रज उपहास उडावै ॥ वेहैं वडे महरकी वेटी तौ ऐसी कहवावै । सुनहु सूर यह उनही फावे येसी कहति डरावे ॥ ९२ ॥ सारंग ॥ हम अहीर व्रजवासी लोग । ऐसे चलो हँसे नहिं कोऊ घरमे वैठि करो सुख भोग ॥ दही मही लवनी घृत वेंचो सवै करौ अपने उपयोग । शिरपर कंस मधुपुरी वैठो छिन कहिमें करि डारो सोग॥ फूंकि फूंकि धरणी पग धारो अव लागी तुम करन अयोग । सुनहु सूर अव जानोगी तव जव देखे राधा संयोग॥९३॥

॥ धनाश्री ॥ तुम कुलवधू निलज जिनि ह्वैहो । यह करनी उनहीको छाजै उनके संग न जै हो ॥ राधा कान्ह कथा ब्रज घर घर ऐसे जानि कह वैहो ॥ यह करनी उन नई चलाई तुम जानि हमहि हँसैहो । तुमहौ बडे महरकी बेटी कुल जिननाम धरैहो ॥ सूरश्याम राधाकी महिमा इहै जानि सरमैहो ॥ ९४ ॥ टोडी ॥ यह सुनिकै हँसि मौनरहीरी । ब्रज उपहास कान्ह राधाको यह महिमा जानी उनहीरी ॥ जैसी बुद्धि हृदयहै इनके तैसी यै मुख वात कहीरी । रविके तेज उलूक नजानै तरनि सदा पूरन नभहीरी ॥ विषको कीट विपहि रुचिमानै जानै कहा सुधारसहीरी । सूर दास तिल तेल सुवादी स्वाद कहा जानै घृत हीरी॥९५॥सोरठ॥अहीर जाति गोधनको मानै नँदनंदन सुर नर मुनि वंदन तिनकी महिमाक्यों येजाने॥धनि राधा उपहास धन्य यह सदा श्याम के गुणगा ने । परम पुनीत हृदय अति निर्मल वार वार बाजही वखानै ॥ श्यामकामकी पूरनहारी ताको कुलटी करि पहिचानै । सूरदास ऐसे लोगनको नाउँ नलीजै होत विहानै ॥ ९६ ॥ विहागरो विधिना संगति मोहिं यह दीनी । इनिको नाम प्रात नाहिं लीजै कहा निठुरही कीनी ॥ मनमोहन गोहन विन अबलौं मानो वीते युगचारि। विमुखनमेंते कवधौं छूटौं कब मिलि हौं वनवारि ॥ एक एक दिन विहात कैसेहूं अबतौ रह्यो नजाइ । सूरश्याम दरशन विन पाये वार वार अकुलाइ ॥ ९७ ॥ विमु खजननिको संग न कीजै । इनके विमुख वचन सुनि श्रवनानि दिन दिन देही छीजै ॥ मोको नेक नहीं येभावत परवशको कहा कीजै। धृगजीवन ऐसो बहु दिनको श्याम भजन पल जीजै ॥ धृग ये घर धृग ये गुरुजनको इनमें नहीं वसीजै । सूरदास प्रभु अंतर्यामी इहै जानि मन लीजै ॥९८॥नट॥ राधा श्याम रंग रंगी । रोमविरोमानि भिदि गयो सब अंग अंग पगी ॥ प्रीतिदै मन लैगए हरि नंद नंदन आप । श्यामरस उनमत्त नागरि दुरत नाहिं परताप ॥ चली यमुना जाति मारग हृदय इहै विचार । सूर प्रभुको दरश पावै निगम अगम अपार ॥९९॥ धनाश्री ॥ चितको चोर अबहिं जो पाऊं । हृदय कपाट लगाइ जतनकरि अपने मनहि मनाऊं ॥ जबहिं निशंक होति गुरुजनते तेहि औसर जो आवै । भुजनि धरौं भरि सुदृढ मनोहर बहुत दिननिको फलपावै ॥ लैराखौं कुच वीचि चापि करि प्रति दिन को तनुताप विसारौं । सूरदास नंदनंदनको गृह गृह डोलनिको श्रमटारौं ॥ ॥ १००॥ बिलावल ॥ इतते राधा जाति यमुनतट उतते हरि आवत घरको । कछिकाछिनी भेष नट वरको वीच मिली मुरलीधरको ॥ चितैरही मुख इंदु मनोहर वा छविपर वारतितनको । दूरिहुते देखतही जाने प्राणनाथ सुंदर घनको ॥ रोम पुलकि गदगद वाणी कहि कहाजात चोरे मनको। सूरदास प्रभु चोरी सीखे माखनते चितवित धनको ॥ १ ॥ इह नहोइ जैसे माखन चोरी । तव वह मुख पहिचानि मानि सुख देती जान हानि हुती थोरी ॥ उन दिनानि सुकुआर हते हरि हौं जानत अपनो मन भोरी । ब्रजवसि वास वडेके ढोटा गोरसकारण कानि नतोरी ॥ अबभए कुशल किसोर नंदसुत हौं भई सजग समान किसोरी । जात कहा वलि वांह छुडाए मूसेमन संपति सब मोरी । नखशिखलौं चितचोर सकल अंग चीन्हे पर कत करत मरोरी । येक सुनि सूर हरयो मेरो सर्वस अरु उलटी डोलों संगडोरी ॥ २ ॥ गौरी ॥ भुजा पकरि ठाढे हरि कीन्हे । बाँह मरोरि जाहुगे कैसे मैं तुमको नीके करि चीन्हें ॥ माखनचोरी करत रहे तुम अबतो भए मनुचोर । सुनत रही मन चोरतहैं हरि प्रगट लियो मनमोर ॥ ऐसे ढीठ भए तुम डोलत निदरे ब्रजकी नारि । सूरश्याम मोहू निदरौगे देत प्रेमकी गारि ॥ ३ ॥ सारंग ॥ बहु बलुकितकुजानौ यदुराइ । तुम जो तरकिमो अबलापै तौ चलेहो भुजा छडाइ ॥ कहिअतहो अति चतुर सकल अंग आवत बहुत

उपाइ ॥ तौ जानो जो अवके अेडंगकोसकै देते जाइ । सूरदास स्वामी श्रीपतिको भावत अंतर भाइ सहि नसके रति वचन उलटि हँसि लीनी कंठ लगाइ ॥ ३ ॥ ईमन ॥ मैं तुमरे गुण-जाने श्याम । औरनको मन चोर रहेहौ मेरो मन चोरे किहि काम ॥ वै डरपति तुमकोधौं काहे मोको जानत वैसी वाम । मैं तुमको अवहीं वांधौगी मोहिं वूझि जैहो तव धाम ॥ मनलोहौं पहुनाई करिहौं राखा अटकि द्योस अरु याम । सूरश्याम यह कौन भलाई चोर रह्यो तहां तुम्हरोनाम ॥ कल्याण ॥ व्रजमे ढीठ भए तुम डोलत । अवतो श्याम परे फँग मेरे सूधे काहे न बोलत ॥ मनदीजै मर्यादा जैहे रहत चतुरई कीन्हें । दुखकारि देहु कि सुखकारि दीजे अवतौ वनिहै दीन्हें ऐसे ढंग तुम करत कन्हाई जीति रहे व्रजगाउँ । सूर आजु वहुतै दुख पाये मन कारण पछिताउँ ॥ ॥ ४ ॥गुंडमलार॥ सुनरी कुलकी कानि ललनसों मैं झगरो मांडौगी । मेरे इनके कोउ वीच परौ जिनि अधर दशन खांडौगी ॥ चतुरनाइकसों काम परयोहै कैसे ह्वै छांडौगी । सूरदास प्रभु नँद नँदनको रसलै डांडौगी॥५॥ कान्हरो ॥ चोरीके फल तुमहि दिखाऊं । कंचनखंभ डोर कंचनकी देखो तुमहिं वधाऊं ॥ खंडों एक अंग कछु तुमरो चोरी नाउँ मिटाऊं । जो चाहौ सोई सव लैहौं यह कहि डांड मँगाऊं ॥ वीच करन जो आवे कोऊ ताको सौंह दिवाऊं । सूरश्याम चोरनके राजा वहुरि कहां मैं पाऊं॥ ६ ॥ रागगंधारी ॥ रहिरी लाज नाहिं काज आज हारि पाये पकरन चोरी । मूपि मूपि लेगए मन माखन जो मेरे धन होरी ॥ वांधौं कंचनखंभ कलेवर उभै भुजा दृढ डोरी । चांपों कठिन कुलिश कुच अंतर सके कौनधौं छोरी ॥ खंडौं अधर भूलि रस गोरस हरै न काहू कोरी । दंडौं काम डंड परघरको नाउँ नलेइ वहोरी ॥ तवकुलकानि आनि भई तिरछी क्षमि अपराध किसोरी । शिव पर पानि धराइ सूरडर सकुचि मोचि शिरडोरी ॥ ७ ॥ विहागरो ॥ वीच कियो कुल लज्जा आई । सुनि नागरि वकसी यह मोको सन्मुख आए धाई ॥ चूकपरी हरिते मैं जानी मनले गए चुराइ । ठाढे रहे सकुचि तो आगे राख्यो वदन दुराइ ॥ तुमहो वड़े महरकी वेटी काहे गई भुलाइ । सूरश्यामहैं चोर तुम्हारे छाँडि देहु डरपाइ ॥ ८ ॥ गौरी ॥ कुलकी लाज अकाज कियो । तुमविन श्याम सोहात नहीं कछु कहा करौं अति जरत हियो ॥ आपु गुप्तकरि राखी मोको मैं आयसु शिरमानि लियो । देह गेह सुधि रहत विसारे तुम ते हितु नाहिं और वियो ॥ अवमोको चरणनि तर राखों हँसिनँदनंदन अंग छियो । सूरश्याम श्रीमुखकी वाणी तुमपै प्यारी वसत जियो ॥ ९ ॥ जैतश्री ॥ मात पिता अति त्रास दिखावत । भ्राता मारन मोहिंधिरावे देखे मोहिं नभावत ॥ जननी कहति वड़ेकी वेटी तोको लाज न आवत । पिताकहै कैसी कुल उपजी मनही मन रिसपावत ॥ भैनी देखि देति मोहिं गारी काहे कुलहि लजावति । सूरदास प्रभुसों यह कहि कहि अपनी विपति जनावति ॥ १० ॥ विहागरो ॥ सुंदरश्याम कमलदल लोचन । विमुख जननको संगतिको दुख कवधौं करिहौ मोचन ॥ भवन मोहिं भाटीसों लागत मराति सोचही सोचन । ऐसी गति मेरी तुम आगे करत कहा जियदोचन ॥ धृगवै मात पिता धृग भ्राता देत रहत मोहिं खोचन । सूरश्याम मन तुमहि लुभानो हरद चून रंगरोचन ॥ ११ ॥ रामकली ॥ कुलकी कानि कहांलौं करिहौं । तुम आगे मैं कहौं नसांची अव काहू नाहिं डरिहौं ॥ लोग कुटुंव जगके जे कहियत पेला सवहि निदरिहौं । अव यह दुख सहि जात न मोपै विमुख वचन सुनि मरिहौं ॥ आपु सुखी तो सव सव नीकेहैं उनके सुख कहा सरिहौं । सूरदास प्रभु चतुराशि रोमणि अव कैहौं कछु लरिहौं ॥ १२ ॥ कान्हरो ॥ प्राणनाथहौ मेरी सुरति क्यों न करौ । मैं जु दुख

पावतिहौं अपने तन मन मेरी सुरति करौ। दीनदयालु कृपाकरौ मोको कामद्वंद दुख और विरह हरौ॥ तुम बहुवरनि रवनमैं जानाति याहीके धोखमोसों काहेको लरौ । सूरदास स्वामी तुमहो अंतर्यामी मनसा वाचा ध्यान तुमसोंधरौ ॥ १३ ॥ कान्हरो ॥ हो या मायाही लागी तुम कत तो रत । मेरो ज्यो तिहारे चरननिही लाग्यो धीरज क्यों रहै रावरे मुख मोरत ॥ को लै बनाइ बातै मिलवति तुम आगे सो किनआइ मोसों अब जोरत । सूरश्याम पिय मेरे तौ तुमही जिय तुम विनु देखे मेरो हियो कोरत ॥१४॥ बिलावल ॥ सुनहु श्याम मेरी यक बात । हरिप्यारीके मुखतन चितवत मनही मनहुसिहात ॥ कहाकहाति वृषभानु नंदिनी बूझतहै मुसुकात । कनकवरन सुँदरी राधिका कटि कृष कोमलगात ॥ तुमही मेरे प्राण जीवनधन अहो चंद्र तुअ भ्रात । सुनहु सूजो कहति रही तुम कहो न कहा लजात ॥ १५ ॥ गुंड ॥ नागरी श्यामसों कहत वानी सुनहु गिरिधर नवल शीशश्रीखंडधर जयति सुर नागरस सहसवानी ॥ रुद्रपति छुद्रपति लोकपति वोकपति धरनिपति गगनपति अगमवानी । अखिल ब्रह्मांडपति तिहुँभुवनाधिपति नीरपति पवनपति अगमवानी ॥ सिंहके शरन जंबुक त्रास करै जव कृष्ण राधा एक जग बतानी । सूरप्रभु श्याम तुअ नाम करुणाधाम करौ मनकाम सुनि दीनवानी॥१६॥ गुंडमलार ॥विहासि राधा कृष्णअंक लीनी॥अधरसों अधर जुरि नैनसों नैन मिलि हृदै सों हृदय लगि हरष कीन्ही॥कंठ भुज जोरि नारि उछंगलीन्हीं भवन दुखटारि सुख दियो भारी॥हरषि बोले श्याम कुंज वन घन धाम तहां हम तुम संग मिलैंप्यारी ॥ जाहु गृह परमधन हमहु जैहैं सदन आइ कहुँ पास मोहि सैनदैहौ । सूर यह भावदै तुरतही गमन करि कुंजगृह सदन तुम जाइ रैहौ ॥ १७ ॥ गुंडमलार ॥ यह सुनत नागरी माथनायो श्याम रसवश भरे मदन जियमेंडरे सुंदरी बातको भेदपायो । खरे ब्रज यमुन विच दुहुनि मनअति सकुच और कछु बने नाहिं बुद्धिठानी । तवहि ब्रजनारि आवत देखि यमुनाते एकब्रजाहिते जु राधा लजानी ॥ श्याम हँसिकै चले तुरत ग्वालनि मिले कहां सब रहे कहि हांक दीन्हो । भाव यह करि गए सूर प्रभु गुननए नागरी रसिक जिय जानि लीन्हो ॥१८॥ टोडी॥ राधा हरिके भावहि जान्यो । इहै वात कैहौं इन आगे मनही मन अनुमान्यो ॥ उन देखी राधा मग ठाढी श्याम पठाए टारि । वूझतही कछु बुद्धि रचैगी बड़ी चतुर यह नारि ॥ इत वृषभानुसुता मन सोचति सोहि देखि हरिसंग । सूर अवहि बातनि करि धरिहै जानाति इनके रंग ॥ १९ ॥ गुंडमलार ॥ चतुर वर नागरी बुद्धि ठानी । अवहिं मोहिं बूझिहै इनहि कैहौं कहा श्याम संग आजु मोहिं प्रगटजानी । भावकरि गए हरि ग्वाल बूझत रहे जानि जियलई अति चतुर रासी । यहरचौ बुद्धि एक कहा एकहैं मोहिं मेरे मन सबै घोषवासी ॥ इतहुँकी सबै जुरि एकठी कहतिं राधा कहां जाति हैरी । सूरप्रभु को अवहिं देखे हम तेरे ढिग कहां गए तिनहिं पछिताति हैरी ॥ २० ॥ गूजरी ॥ कान्ह कहा बूझत हैं तुमको । ह्वांहीते लखि लीन्ही तवहीं कहां दुरावति हमको॥मन लैगए चुराइ तुम्हारो सो अपनो तुम पायो । अपनो काज सारि तुम लीन्हो हम देखतहि पठायो ॥ सदा चतुरई फवती नाहीं अतिही निझारि रहीहो । सूरश्यामधौं कहां रहतहै यह कहि कहि ग्रुतहीहो ॥ २१ ॥ अलहिया ॥ कहति रही तब राधिका जब हरिसंग पेखो । वेसरिलीज्यो छीनिकै मुख तन कहा देखो ॥ देहो वेसरि की नहीं की लेहिं छडाइ । चतुराई प्रगटी अवै ऐसीहौ माइ ॥ वार वार नागरि हँसे तरुनी वेहानी । ऐसेहि वेसरि लेहुगी सब भई अयानी ॥ हम मूरख तुम चतुरहौ कछु लाज न आवे । सूर श्याम संग नहीं रही अब कहा दुरावै ॥ २२ ॥ सोरठ ॥ इहै कहन मोको तुम आई । इत ते ये

उतते तुम सब मिलि काहे ऐसी धाई ॥ बेसरि एक लेहुगी को को पीतांबर नदेखावहु । बेसरि अरु पीतांबरलै तब घर घर जाइ सुनावहु ॥ तारी एक बजतकी दोऊ इतनो इती विचारो । सुनहु सूर ए बेसरि लेहैं जानो ज्ञान तुम्हारो ॥ २३ ॥ जैयतश्री ॥ सुनि राधा तोसों हम हारी । तेरे चरित नहीं कोइ जानैं वंशकीन्हो गिरिधारी ॥ अबहीं कान्ह टारि करि पठए धनि तेरी महतारी । अंग अंग रचि कपट चतुरई विधिना आपु सँवारी॥अबही प्रगट दुहुनि हम देख्यो जानति दै मो गारी । सूरश्यामके यह बुधि नाहीं जितनीहै तोधारी ॥ २४ ॥ बिलावल ॥ श्याम भले अरु तुमहुँ भलीहो । बेसरि छीनतिहौ बेकाजहि जाहु नघरहि चलीहो॥ कैसे दौरि परी मेरे पर मानहुँ संग मिलीहो ।और भई सब वनकी बेली आपुन कमल कलीहो ॥ तब कहती गहि बांह दुहुँनकी जो तुम चतुर अली हो । सूरदास राधा गुण आगरि नागरि नारि छलीहो ॥२५॥ अलहिया बिलावल ॥ अब हमसों सांची कहो वृषभानु दुलारी । कछुतौ तोसों कहतहै ठाढे गिरिधारी ॥ हाहा हमसों सोइ कहो देहौ जिनि गारी । हमको देखतही गए उत ग्वाल हँकारी ॥ भेदकरै जो लाडिली तोहि सौंह हमारी । तू ठाढी काहे रही मगमेरी प्यारी ॥सहज होइ तू कहि अबै उरते रिसटारी। सूरश्यामकी भावती कहै कहौ कहारी ॥ २६ ॥ सूही ॥ मैं यमुना तन जात सहीरी । ब्रजते आवत देखि सखिनको इन कारण ह्यां परखि रहीरी ॥ इतते आइ गए हरितिरछे मैं तुमही तन चितैरहीरी । बूझन लगे कान्ह ग्वालन को तुमतो देखे उनहि नहीरी ॥ कछु उनसों बोली नहिं सन्मुख नाहि तहांकछुवैनकहीरी । सूर श्याम गए ग्वालनि टेरत नाजानौ तुम कहा गहीरी॥२७॥टोडी ॥ तुम मेरी बेसरिको धाई । सकुचि गई सुनि सुनि यह बानी तरुनिन राधा भले लजाई ॥ यह तौ बात लगति कछु साँची हमपर जाइ रिसाई । टेरत कान्ह गए ग्वालनको श्रवन परी ध्वनि आई ॥ बेसरि नाउ लेत सरमानी तब राधा झहरानी । सूरदास ब्रजनारि मनहि मन यह गुनि गुनि पछितानी ॥ २८ ॥ गूजरी ॥ राधा तू अति हीहै भोरी । झूठेही लोग उठावत घर घर हम जान्यो अति तोरी॥कंठ लगाइ लई रिस छांडौ चूक परी हम बोरी । तुम निर्मल गंगाजल हूते दुरत नहीं वह चोरी ॥ घर जैहौ की यमुना जैहौ हम आवैं संग गोरी । सूरदास प्रभुप्यारी भुरी राधा चतुर दिननकी थोरी ॥२९॥ आसावरी ॥ अहो सखी तुम ऐसीहो । अबलौ तुम कुलटी करि जानति मोकोरी सब तैसीहो ॥ अपने मन जैसी तैसेई सब मोहु जनावत तैसीहो । जोरी भली बनैगी हरिसों छाह निहारो कैसीहो॥अबलागी मोको दुलरावन प्रेमकराति टरि येसीहो । सुनहु सूर तुमरे छिन छिन मति बडी प्रेमकी गैसीहो ॥३०॥ टोडी॥ हँसति नारि सब घरहि चली।हम जानी राधाहै खोटी हम खोटी राधिका भली॥इतते युवति जाति यमुना जे तिनको मगमें परखिरही । श्याम कहूंते आइ कढे ह्यां चले गए उत हेरतही ॥इतनी तबहि नहीं यह जानी झूठेंही सब आनि गही॥सूरश्याम अपने रंग आये हम वाको नहिं भली कही॥३१॥बिलावल राधा श्याम सनेहिनी हरि राधा नेही । राधा हरिके तन बसे हरि राधा देही ॥ राधा हरिके नैनमें हरि राधा नैननि । कुंजभवन रति युद्धके जोरति बल मैननि ॥ और न काहूको रुचै घर घर गए दोऊ । मात पिता सतिभाइसों यह जानै न कोऊ । कैसे हूं करि करि दिन गयो निशि कटत न क्योंहूं । दोऊ रस विरह मगन भए निशि भई अगोंहूं ॥ विरह सरोवर बूडई अंधकार सिवार । सुधि अवलंबन टेकही कहुँ वार न पार ॥ तमचुर टेरि पुकारई बूडें जिनि कोई ॥ सूर प्रात नवका मिल्यो आनन्द मन दोई ॥ ३२ ॥ धनाश्री ॥ मन मृग बेध्यो मोहन नैन बान सों । गूढ भावकी सैन अचानक तकिताक्यो भ्रुकुटी कमान सों ॥ प्रथम नाद बल घेरि निकट लै मुरली सप्तक सुर बंधान

सों। पाछे बंक चितै मधुरै हँसि घात किये उलटे सुठान सों॥सूरसुमार बिथा या तनुकी घटत नहीं ओषधी आनसों॥ह्वैहै सुख तबहीं उरअंतर आलिंगन गिरिधर सुजानसों ॥३३॥ बिलावल॥ कान्ह उठे अति प्रातही तल बेली लागी। प्रिया प्रेमके रस भरे राति अंतर खागी ॥ श्याम उठत अवलोकिकै जननी तब जागी। सुन्दर बदन बिलोकि कै अंग अंग अनुरागी॥ माता पूँछति सुअनको बलि गई मेरे बारे। कहा आजु अचरज कियो तुम उठे सवारे ॥ झारी जल दन्तवन दियो छवि परत नवारयो। उत्तम जल लै प्रेमसों सुत वदन पखारयो ॥ करी मुखारी अतुरई नागरि रस छाके। सूर श्याम ऐसी दशा त्रिभुवन वश जाके ॥ ३४ ॥ बिलावल॥ उत वृषभानुसुता उठी वह भाव विचारै। रैनि विहानी कठिनसों मन्मथ बल भारे॥ ग्रीव मुतसरी तोरिकै अचरा सों बाँध्यो। इहै बहानो करि लियो हरि मन अनुराध्यो॥ जननी उठी अकुलाइके क्यों राधा जागी। कहां चली उठि भोरही सोवै न सभागी॥ अब जननी सोऊं नहीं रवि किरनि प्रकाशी । तूहु उठे काहे नहीं जागे ब्रजवासी॥ आपु उठी आँगन गई फिरि घरही आई । कबधौं मिलि हैं श्यामको पल रह्यो न जाई॥ फिरि फिरि अजिरहि भवनही तलवेली लागी ॥ सूर श्यामके रसभरी राधा अनुरागी॥ ३५ ॥ गुंडमलार॥ सुतासों कहति वृषभानु घरनी। कहा तू राधिका भोरते फिरति है तेरी गति मोपै नहिं जाति बरनी ॥ तोरि मोतीसरी तब गुप्त करि धरयो कहुँ एहि मिसि सकुचि रही मुख न बोलै । मनहुं खंजन चपल चन्दफंदा परयो उडत नहिं बनत इत उतहि डोलै॥ कहा तेरी प्रकृति परीधौं लाडिली अबहिते कहा तू जाहि गीरी । सूर कहै जननि बोले नहीं आज तू परुसि धरिहौं आइ खाइ गीरी॥३६॥ नट ॥जननी पुनि पुनि ग्रीव निहारै। देखो नहीं मुतसरी माला सो जिनि कतहूं डारै ॥ बोलै नहीं बात यह सुनि रही मनलागी मुस कान। अबही मोकों खीझि पठैहै वनिहै काको जान॥ भली बुद्धि मेरे चित आई कृष्ण प्रीतिहै साँची। सूरदास राधिका नागरी नागरके रँगराची ॥ ३७॥ सोरठ॥ जननी अतिहि भई रिसहाई। बार बार कहै कुँवरि राधिकारी मोतिसरी कहां गमाई॥ बूझेते तोहि ज्वाब नआवै कहा रही अरगाई। चौसरहार अमोल गरेको देहु न मेरी माई॥ कालिहि ते रीतोगर तेरो डारि कहूँ तू आई। सुनहु सूर माता रिस देखत राधा हँसति डेराई ॥३८॥ बिलावल॥ सुनरी मैया कालही मोतसरी गवाई। सखिन मिले यमुनागई धौं उनहि चुराई॥ कीधौं जलहीमें गई यह सुधि नहिं मेरे। तबते मैं पछितातिहौं कहतिन डरतेरे॥ पलक नहीं निशि कहूँ लगी मोहिं शपथरी तेरी। येहि डरते मैं आजुही अतिउठी सवेरी॥ महरि सुनत चकृत भई मुख ज्वाब न आवै। सूर राधिका गुनभरी कोउ पार न पावै॥ ३९॥ गुंडमलार॥ क्रोध करि सुतासों कहति माता। तोहिं वरजत मरी अचगरी रिसपरी गर्व गंजन नामहै विधाता ॥ तेरो दोष नहीं भ्रमती तू जहीं तहीं नदी डोगर वन वन पात पाता। मात पित लोककी कानि मानै नहीं निलज भई रहति नहीं लाज गाता॥ भली नहिं उनकरी शीशतोकोधरी जगतमें सुता तू महरताता । बात सुनिहै श्रवण भई विनही भवन सूरडारै मारि आजु भ्राता ॥४०॥ धनाश्री ॥ जाहु तहीं मोतिसरी गमाई। तबहीं तौ घर पैठन पैहौ अब ऐसे ढंग आई॥ जो वरजो आपुन सोइ सोइ करै देखोरी गुन माई। एक एक नग सत सत दामनिके लाख टकादै ल्याई। जाके हाथ परयोसो दैहै घर बैठे निधि पाई। सूर सुन तरी कुँवरि राधिका तोको नहीं भलाई॥ ४१ ॥ टोडी॥ भरि भरि नैन लेतिहै माता। मुखते कछु आवै नहिं बाता॥ रीतो ग्रीव निहारत जबही। हियो उमँगि आवतहै तबही ॥ मोतसरीते

मुख परम विराजे। मानों शशि पारसविच भ्राजे ॥ मोतिसरी माला कहां गवाई । जीव विना करिहै वह भाई॥जाधौं देखि कहूंधौं पावै। सूर जोरिकर विधिहि मनावै ॥ ४२ ॥ गुंड्मलार ॥ कहां वह मोतीसरी जो गँवाईरी। वावासों और लेहौं मँगाईरी॥ वै कहा करेंगी सेति राखैरी। तादिना तूहीधौं कितिक भापैरी॥ नैन भरिलेति कह और नाहीरी॥ छोर मोतिसरीको मोहिं रिसा हिरी॥संदूखन भरि धरे ते न खोलैरी। कहा मोसोंखीझ वोलैरी॥ सुता वृपभानुकी हरप मनहीरी सूरप्रभु सैन दै वोले वनहीरी ॥ ४३ ॥ गौरी ॥ सुनि राधा अव तोहि न पत्यैहों। और हार चौकी हमेल अव तेरे कंठ ननैहौं॥ लाख टकाकी हानि करी तैं सो जव तोसों लैहौं। हार विना ल्याये लडिवोरी धरनहिं पैठन देहौं॥ जव देखों ग्रीवहै मोतसरी तवहीं तो संच पैहौं। नातर सूर जनमभरि तेरो नाउँ नहीं मुख लैहौं ॥ ४४ ॥ कल्याण ॥ सुनिरी राधा अतिलडवौरी यमुनगई जव संग को नही। बूझति नहीं जाइ अपनिनको न्हातरही जव जोन जोनही ॥ काको नाउँ धरौं तो आगे ललिता चंद्रावली नही नही। वहुत रहीं संग सखी सहेली कहौं कहा मैं सैन सैनही॥ देखोजाइ यमुनतट हीमें जहां धरिकैमैं न्हात रहीही। सूरजाइ बूझौ धौं वाको ब्रजयुवती एक देखिरहीही ॥४५॥ कल्याण ॥ जैहे कहा मोतिसरी मेरी। अव सुधि भई लई वाहीने हँसत चली वृपभानु किसोरी॥ अवही मैं लीन्हे आवतिहौं मेरे संग आवै जिनिकोरी । देखोधौं कह करिहौ वाको वडे लोग सीखतहै चोरी ॥ मोको आजु अवेर लगीहै ढूंढूंगी ब्रज घर घर खोरी। सूर चली निधरकह्वै सवसों चतुर राधिका वातन भोरी॥ ४६॥ नंद सुअन वार वार रवनीपंथ जोहैरी। लोचन हरि करि चकोर राधा मुख चंद ओर देखत नहिं तिमिर भोर मनही मन मोहैरी॥ नैना दोउ भृंगरूप वदन कमल शरदरूप तरनिको प्रकाश मिलन विना चपल डोलैरी लोचन मृग सुभग जोर राग रूप भएभोर भौंह धनुप शर कटाक्ष सुरति व्याध तोलैरी। कीधौं एकछुक चारु प्यारी मुख रूप सार श्याम देखि रीझे मन इहै सांच मानी। सूरश्याम सुखदधाम राधाहे जाहि नाम आतुर पियजानि गवन प्यारी अतुरानी॥४७॥देवगंधार॥श्याम अति राधा विरहभरे कवहुँ सदन कवहूँ आँगनही कवहूं पौरि खरे॥ जननी आतुर करति रसोई देखि देखि हरिजात। कहा अवेर करति तू अवरी भूखलगी अतिमात ॥ मैं वलिजाउँ श्मामघन सुंदर अव वैठौ तुम आई। सूर सखा संग सवै वोलावहु हलधर नहीं वताई ॥ ४८ ॥ विलावल ॥ महरि कह्यो नँदलाडिले सँग सखा वोलावहु। करैं कलेऊ आइकै हलधरहु वोलावहु॥ हलधर लयो वोलाइकै मोहन करि आदर। दाऊजी चलिजेंइये यह कहि मनसादर ॥ कान्ह जाइ तुम जेवहू मोको रुचिनाहीं। सखा संग हरि लेगए वैठे एक ठाहीं॥ पटरस व्यंजनको गनै वहुभांति रसोई। सरस कनिक वेसन मिलै रुचि रोटी पोई॥ प्रेमसहित परुसन लगी हलधरकी माता। ग्वाल सखा सव जोरिकै वैठे नँदताता॥ सखा सवै जेवन लगे हरि आयसु दीन्हो। सूरदास प्रभु आपहू करकोरहि लीन्हो ॥ ४९ ॥ आसावरी ॥ नंदमहर घरके पिछवारे राधा आइ वतानीहो। मनौ अँवदल मोर देखिकै कुहकि कोकिला वानीहो॥ झूठेहिनामलेत ललिताको काहे जाहु परानीहो। वृंदावन मग जाति अकेली शिरलिये दही मथानीहो॥ मैं वैठी परखति ह्वांरैहों श्याम तवहिते जानीहो। कोक कला गुणआगरि नागरि सूर चतुरई ठानीहो॥५०॥ रामकली॥श्यामसखा जेंवतही छाँडे।करको कौर डारि पनवारे नागरि सूर आपु चले अतिचाँडे ॥ चकृतभई देखत जननीदोउ चकृत भए सव ग्वाल। अति आतुर तुम चले कहांहो हमहि कहो गोपाल॥ अवही एक सखा यह कहि गयो गाइ रही

बन व्याइ। सुनहु सूर मैं जेंवन बैठो वह सुधि गई भुलाइ ॥५१॥ ललित ॥ धौरी मेरी गाइ वियानी। सखन कह्यो तुम जेवहु बैठे श्याम चतुरई ठानी॥ गाइ नहीं ह्वां बछरानाहीं वहँ है राधा रानी॥ सखा हँसत मनही मन कहि कहि ऐसे गुणनिनिधानी॥ जननी भेद नहीं कछु जानै वार वार अकुलानी सूरश्याम भूखो उठि धायो मरै नगाइ वियानी ॥ ५२॥ कल्याण ॥ सैनदै नारि गई बनधामको। तबहिं करकौर दियो डारि नहिं रहिसके ग्वाल जेवत तजे मोहिं गई श्यामको ॥ चले अकुलाइ बनधाइ व्यानी गाय देखिहो जाइ मनहरष कीन्हों॥प्रिया निरखति पंथ मिलै कब हरिकंत गये येहिं२ अंतर हँसि अंक लीन्हों॥ अतिहि सुखपाइ अतुराइ मिले धाइ दोऊ मनो अति रंक नव निधिपाई सूर प्रभुकी प्रिया राधिका अति नवल नवल नंदलालके मनहि भाई ॥ ५३ ॥ धनाश्री ॥ पिछ वारे ह्वै बोलि सुनायो। कमलनयन हरि करत कलेऊ कानाहिन आनन लायो ॥ गाइ एक बन व्याइ रहीहै येहि मिस आतुर उठिधायो। बेनु नलियो लकुट नाहिं लीन्हों हरवराइ कोऊ सखन बोलायो॥ चौंकि परे चकृत ह्वै जित कित सत्य आहिकी सपन भयो ज्ञायो। फूले फिरत संकना मानत मानहु सुधा किरनि छविछायो॥ मिलि बैठे संकेत लतातर कियो सबै जितनो मन भायो॥ सूरदास सुंदरी सयानी उलटि अंक गिरिधर पर नायो ॥ ५४ ॥ देवगंधार ॥ दोउ राजत रति रण धीर। महासुभट प्रगटे भूतल वृषभानु सुता बलवीर ॥ भौंहैं धनुष चढाइ परस्पर सजे कवच तनुचीर। गुण संधान निमेष घटत नहिं छुटे कटाक्षनितीर ॥ नखनेजा आकृत उरलागे नेक न मानत पीर। मुरलीधरनि डारि आयुधलै गहे सुभुज भटभीर ॥ प्रेम समुद्र छाडि मर्यादा उमंगि मिले तजि तीर। करत विहार दुहूँ दिशते मानो सींचत सुधा शरीर ॥ अति बल जोवन धार रुधिर रचि रवदन मिलि श्रमनीर। सूरदास स्वामी अरु प्यारी विरहत कुंज कुटीर ॥ ५५ ॥ कान्हरो॥नवल निकुंज नवल नवल मिलि नवला निकेतनि रुचिर बनायो। विलसत विपिन विलास विविधवर वारिजवदन विकच सचुपाये॥लागत चंद्र मयूष सुतौ तनु लताभवन रंध्रनि मग आये॥ मनहुं मदन बल्लीपरहिसकर सींचत सुधाधार सतनाये ॥ सुनि सुनि सूचति श्रवन सुंदरी मौन किये मोदति मन लाये। सूरसखी राधा माधौ मिलि क्रीडतहैं रतिपतिहि लजाये ॥५६॥ कल्याण॥ हरपि पिय प्रेम तिय अंक लीन्हीं॥पिये विन वसनकरि उलटि धरि भुजनभरि सुरति रति पूर प्रति निवल कीन्हीं॥आपने करन खनि अलक कुरवारही कबहुँ बाँधे अतिहि लगत लोभा॥कबहुँ मुख मोरि चुंबन देत हरष ह्वै अधर भरि दशन वह उनहिं सोभा॥ बहुरि उपज्यो काम राधिका पति श्याम मगन रस ताम नहिं तनु सँभारै। सूर प्रभु नवल नवला नवल कुंजगृह अन्त नाहिं लहत दोउ रति विहारै ॥५७॥ नट॥नागर श्याम नागरी नारि॥सुरति रति रणजीत दोऊ अंग मन्मथ धारि॥ श्याम तनु घन नील मानो तडित तन सुकुमारि। मानो मर्कत कनक संयुत रच्यो काम सँवारि ॥ कोक गुन करि कुशल श्यामा उत कुशल नन्दलाल॥सूरश्याम अनंग नायक विवस कीन्हीं बाल॥ ॥ ५८ ॥ मलार ॥ उलहरि आयो शीतल बूँद पवन पुरवाई । वाढे द्रुम सघन बन दोउहो चहुँ ओर घटा छाई॥ अनमने भए कन्हाई भीजत देखि राधिका माधव कारी कामरि ओढाई ॥ अति दूरेरकी झरेर टपकत सब अँबराई॥कांपत तनु त्रियाको पिय हँसिकै ग्रीवा लगाई॥ भए एक ठौर सूर श्याम श्यामा भरि कोर अरस परस रीझत उपरै नाही मैं समाई ॥ ५९ ॥ मलार ॥ दीजै कान्ह काँधेहूको कंमर ।नान्ही नान्ही बूँदन वरषन लागो भीजत कुसुंभी अंबर ॥ वार वार अकुलाइ राधिका देखि मेघ आडंबर।हँसि हँसि रीझी बैठि रहे दोउ ओढि सुभग पीताम्बर ॥ शिव सनका

दिक नारद शारद अंत न पावै तुम्बर । सूर श्याम गति लखि न परत कछु खात ग्वालन तजि संमर ॥ ६० ॥ गौरी ॥ सुरति अंत बैठे वनवारी । प्यारी नैन जुरत नाहिं सन्मुख सकुचि हँसत गिरिधारी ॥ वसन सँभारि तन लेत गये दोऊ आनँद उर न समाइ । चितवत दुरि दुरि नैन लजौही सो छबि वरनि न जाइ ॥ नागरि अंग मरगजी सारी कान्ह मरगजे अंग । सूरज प्रभु प्यारी वश कीन्हा हाव भाव रति रंग॥६१॥सोरठ ॥ रीझे श्याम नागरी छविपर । प्यारी एक अंग पर अटकी यह गति भई परस्पर ॥ देह दशाकी सुधि नाहिं काहू नैन नैन मिलि अटके । इन्दीवर राजीव कमल पर युग खंजन युग लटके ॥ चकृत भए तनुकी सुधि आई वनही में भई राति । सूर श्याम श्यामा विहार करि सो छविकी एक भाँति ॥ ६२ ॥ आसावरी ॥ कान्ह कह्यो वन रैनि न कीजै सुनहु राधिका प्यारी हो । अति हित सों उरलाइ कह्यो अब भवन आपने जारी हो ॥ मात पिता जिय जान न कोई गुप्त प्रीति रस भारी हो । करते कौर डारि मैं आयो देखत दोउ महतारी हो ॥ तुम जो प्यारी मोही लागत चन्द्र चकोर कहारी हो । सूरदास स्वामी इन बातन नागरि रिझई भारी हो ॥ ६३ ॥ कल्याण ॥ प्यारी उठि पियके उर लागी । आलस अंग लटकि लट आई देखि श्याम वडभागी ॥ सुरति मोन निशि वीती मानों हँसनि प्रात भयो जागी । अति सुख कंठ लगाइ लई हरि अरस परस अनुरागी ॥ नवतनमें घनवेली दामिनि सहज मेंटि मिलि पागी । सूरदास प्रभुको अंकम भरि का मद्वंद्व तनु त्यागी ॥ ६४ ॥ ॥ गौरी ॥ कहा करौं पग चलत न घरको । नैन विमुख देखे जात न लुब्धे अरुन अधरको ॥ श्रवन कहत वे वचन सुनै नाहिं रिस पावत मो परको । मन अटक्यो रस मधुर हँसनि पर डरत नकाहू डरको ॥ इंद्री अंग अंग अरुझानी श्यामरंग नटवरको । सुनहु सूर प्रभु रही अकेली कहा करौं सुंदरवरको ॥ ६५ ॥ श्याम आपनी चितवनि वरजो अरु मुखकी मुसकानी । तुम्हरे तनक सहजके कारन सहियत सरवस हानी ॥ इजै विजै दोऊ आपुसमें निरये विधना आनि । विद्यमान सबही इन देखत वशकरवेकी वानि ॥ आपुनही डहकाय अपुनपो कहियत कहा वखानि । सूर सुगंध गँवाइ गांठिको रही बौरई मानि ॥६६॥विहागरो॥अतिहित श्याम बोलेवैन । तुम वदन देखे विना ये तृप्तहोत ननैन ॥ पलक नाहि चितते टराति तुम प्राणवल्लभ नारि सुनति श्रवननि वचन अमृत हरष अंतर भारि ॥ मात पित अवसेर करिहै गवनकीजेगेह । सूर प्रभु प्रिय त्रिया आगे प्रगटि पूरन नेह ॥ ६७ ॥ श्यामप्रगट कीन्हों अनुराग । अतिआनंद मनहि मन नागरि वदति आपने भाग ॥ सुंदरघन उत व्रजहि सिधारे इतहि गमन करि नारि । दंपति नैन रहे दोउ भरि भरि गये सुरति रति सारि ॥ जननी मन अवसेर करतिही हरी पहुँचे तेहि काल । सूरश्यामको मात अंकभरि कहति जाउँ वलिलाल ॥ ६८ ॥ मैं वलि जाऊं कन्हैयाकी । करते कौर डारि उठिधायो व्यात सुनी वनगैयाकी ॥ धौरी गाइ आपनी जानी उपजी प्रीति लवैयाकी । तातो जल समोइ पग धोवति श्याम देखि हित मैयाकी ॥ जो अनुराग यशोदाके उर मुखकी कहति नन्हैयाकी । यह सुख सूर और कहुँ नाहीं सौंह करत वलभैयाकी ॥ ६९ ॥ ईमन ॥ कान्ह प्यारे वारने जाऊं श्याम सुंदर मूरति पर । छविसों छबीली लटकि वदनपर । चंद्रिकाकी लटकनि अतिहि विराजत मुरली सुभग धरेकर । सुंदरनैन विसाल भौंह सुरचाप मनोतिलक विराजित ललित भालपर । सूरश्याम मेरो अतिवानक वन्यो वनमाला अतिही उर राजत कटि तट सोहत पीतांवर ॥ ७० ॥ विहागरो ॥ वइ तो मेरी गाइ न होई । सुन मैया मैं वृथा भरम्यो वन

जो देखों नैनन भरि जोई ॥ वृंदावन ढूंढ्यो यमुनातट देख्यो वन डोंगरी मंझारी । सखा संग कोउ नहीं अकेलो कांधे कामरि कर लकुटधारी॥ वहतौ धेनु और काहूकी युवती एक मिलीधौं कौन । सूरसंग मेरे वह आई मोको उहि पहुँचायो भौन ॥ ७१ ॥ रामकली ॥ राधा अतिही चतुर प्रवीन । कृष्णको सुख दे चली हँसि हंसगति कटिछीन ॥ हारके मिस इहां आई श्याम मणिके काज । भयो सब पूरण मनोरथ मिले श्रीव्रजराज ॥ गाँठि आँचर छोरिकै मोतसरी लीन्ही हाथ । सखी आवत देखि राधा लई ताको साथ॥ युवति बूझति कहां नागरि निशिगई एक याम । सूर व्योरो कहि सुनायो मैं गई तेहि काम ॥ ७२ ॥ कान्हरो ॥ ऐसीरी निधरक तू राधा । व्रज घर घर वन वन डोली तू नहीं किया कहुं वाधा ॥ मोको संग वोलि तू लेती करनी करी अगाधा । प्रातहिते तू अव आवतिहै रैनि याम लग आधा॥पायो हार किधौं पुनि नाहीं देखौरी मोहिं साधा । आंचर हेरि ग्रीव देखरायो दामन मोल उपाधा ॥ मन मन कहति वात यह मिलवति गई श्याम अव राधा॥सूरसखी लखि लीनी ताको यह तोहै कछु दुविधा॥७३॥ धनाश्री ॥ कहि राधा किन हार चोरायो । व्रज युवतिनि सवहिन मैं जानति घर घर लेलै नाम वतायो ॥ श्यामा कामा चतुरा नवला प्रमुदा सुमदा नारि।सुखमा शीला अवधा नंदा वृंदा यमुना सारि॥कमला तारा विमला चंदा चंद्रावलि सुकुमारि । अमला अवला कंजा मुकुता हीरा नीला प्यारि ॥ सुमना वहुला चंपा जुहिला ज्ञाना भाना भाउ । प्रेमा दामा रूपा हंसा रंगा हरषा जाउ॥दर्वा रंभा कृष्णा ध्याना मैना नैना रूप । रत्ना कुमुदा मोहा करुना ललना लोभा नूप॥इतनिनमें कहि कौने लीन्हो ताको नाउ वताउ । सूरश्याम हैं चोर तिहारे मैं जानति सव दाउँ ॥ ७४ ॥ शंकराभारन ॥ सुरति रति मानि आइ पिय पैतैं गजगति गामिनी । मरगजे हार विथुरे वार देखियत आइ गई येकयाम यामिनी ॥ औरै सोभा सोहाई अंग अंग अरसाय वोलतिहै कहा अलसामिनी । सूरदास छवि निरखति रही रसवश हैरी धनि धनि धनि तू भामिनी ॥ ७५ ॥ कान्हरो ॥ उरधारी लटैं छूटी आननपर भीजी फुलेलनसों आली हरि संग केलि । सोधे अरगजी अरु मरगजी सारी केसरि खोरि विराजित कहुँ कहुँ कुचानि पर दरकी अँगिया घन वेलि॥आलसहैं भरेनैन वैन अटपटात जात ऐंडात जम्हात गात अंग मोरि वहियां झेलि । सूरज प्रभु प्यारी प्यारे संग करि रस विलास अरस परस दोउ अंको मेलि ॥७६॥ ललित ॥ आइ तू डगमगात ऐंडात जँभावति रंगमगी रंग मगी रंग भरिके । चंद उदै मुख देखतहीं कर दर्पन प्रतिविंब निहारि धौं पीक लीक नैनानि छवि परके ॥ विथुरे अलक सुथरे मुख ऊपर अति आनंद उर हरिके। सुखकेलि करिकै सूरज प्रभु रसिकराइ रस वश कीन्ही वनाइ नवला नवल रीझि मन टरिकै ॥ ७७ ॥ विलावल ॥ सुनिरी राधा अवहि नई । वातें कहावनावति मोसों हमहूं ते तुम चतुरदई ॥ कहां ग्वालि कहँ हार तुम्हारो कहां तहां तू आजु गई।मनहीं जानि लेहु मैं जान्यो जाको रंग तू सदा रई ॥ तेरे गुण परगट करिहौं मैं ऐसी रीति कहुँ नभई । सूर श्याम जवते संग कीन्हों तवहीते मैं जानि लई ॥ ७८ ॥ विलावल ॥ इन वातन कछु पावतिरी । विन देखे लोगनसों सुनि सुनि काहे वैर वढ़ावतरी ॥ मोको जहां अकेली देखति तवही ये उपजावतरी । व्रज युवतिनकी संगति त्यागो पुनि पुनि क्रोध करावतरी ॥ कैसी वुद्धि तुम्हारी सवकी ऐसी ए तुमको भावतरी । सूर शीशतृणदै बूझतिहो कह तू एही मनावतरी ॥ ७९ ॥ गुंडमलार ॥ करति अवसेर वृषभानुनारी।प्रातते गई वासर गयो वीति एकयाम निशिगई धौं कहां वारी । हार के त्रासमैं कुँवरि त्रासी वहुत तेही डरन अजहुँ नाहिं सदन आई कहाँ मैं जाउँ कहा धौं रही रूसिकै

सखिनसों कहति कहीं मिली माई॥ हार वहिजाइ अतिगई अकुलाईके सुताके नाउँ इक उहै मेरे। सूर यह बात जो सुनें अवही महर कहैंगे मोहिं ये ढंग तेरे॥ ८०॥ सोरठ॥ राधा उर डरात गृह आई। देखतही कीरति महतारी हरषि कुँवरि उरलाई॥ धीरज भयो सुता माता जिय दूरि गयो तनु सोच। मेरीको मैं काहे त्रासी कहा कियो यह पोच॥ लैरी मैया हार मोतसरी जाकारण मोहिं त्रासी। सूरराधिकाके गुण ऐसे मिली आइ अविनाशी॥ ८१॥ विहागरो॥ परमचतुर वृषभानु दुलारी॥यह मति रची कृष्णमिलिवेको परमपुनीत महारी। उत सुखदियो नंदनंदनको इतहि हरप महतारी। हारइतो उपकार करायो कवहु न उरतेटारी॥ जे शिव सनक सनातन दुर्लभ ते वश कियो कुमारी। सूरदास प्रभु कृपा अगोचर निगमनहूं ते न्यारी॥ ८२॥ भैरव॥ श्याम भए वश नागरिके। नैन कटाक्ष वंक अवलोकनि रीझे घोप उजागरके॥ चित मधुकर रस कमल कोशको प्यारी वदन सुधागरिको। लोकलाज संपुटनाहिं छूटत फिरि फिरि आवत वागरिको॥ मिलन प्रकाश मनावत मन मन कहा कहौं अनुरागरिको। सूरश्याम वश वाम भएहैं धनि ऐसी वड़भागरिको॥८३॥आसावरी॥श्याम भए वृषभानु सुता वश और नहीं कछुभावैहो। जो प्रभु तिहूं भुवनको नायक सुर मुनि अंत न पावैहो॥ जाको शिव ध्यावत निशि वासर सहसासन जेहि गावैहो। सो हरि राधा वदन चंदको नैनचकोर त्रसावैहो॥ जाको देखि अनंग अनागत नागरि छवि भरमावैहो॥सूरश्याम श्यामावश ऐसे ज्यों सँग छाह डुलावैहो॥८४॥ जैतश्री॥कवहूं श्याम यमुनतट जात॥कवहूं कदम चढत मग देखत मनराधा विनशति अकुलात। कवहुं जात वन कुंज धामको देखि रहत कछु नहीं सुहात॥तव आवत वृषभानुपुराको अति अनुराग भरे नँदतात॥ प्यारी हृदय प्रगटही जानति तव मन मांझ सिहात। सूरदास प्रभु नागरिके उर नागर श्यामलगात॥ ८५॥ गूजरी॥ राधा श्याम श्याम राधारँग। पियप्यारीको हृदय राखत प्यारी रहति सदा हरिके सँग॥ नागरि नैन चकोर वदन शशि पिय मधुकर अंवुज सुंदरि मुख। चाहत अरस परस ऐसे करि हरि नागर नागरि नागर सुख॥ सुख दुख सोचि रहत मनही मन तव जानत तनको यह कारन। सुनहु सूर कुलकानि जीय दुख दोऊ फल दोउ करत विचारन॥८६॥सूही विलावल॥ यमुना चली राधिका गोरी। युवति वृंद विच चतुरनागरी देखे नंद सुअन तेहि खोरी॥ व्याकुल दशा जानि मोहनकी मनही मन डरपी उन ओरी। चतुर काम फंग परे कन्हाई अव धौं इनहि वुझावै कोरी॥ इत सखि यनसों वात वनावति अतिहि गई तनकसी भोरी। सूर उतहि हरि भाव वतावत धीर धरौ मिलिहै दोउ जोरी॥ ८७॥ जयतश्री॥ तव राधा इक भाव वतावति। मुख मुसकाइ सकुचि पुनि लीन्हो सहज चली अलक निरुवारति॥ एक सखी आवत जल लीन्हे तासों कहति सुनावति। टेरि कह्यो घर मेरे जेहो मैं यमुनाते आवति॥ तव सुखपाइ चले हरि परको हरि प्यारीहि मनावत। सूरज प्रभु वितपन्नकोक गुन ताते हरि हरि ध्यावत॥ ८८॥ धनाश्री॥ श्यामको भाव देगई राधा। नारि नागरि न काहू लख्यो कोऊ नहीं कान्ह कछु करतहै वहुत अनुराधा॥चितै हरि वदन याको हँसत मैं लखी वेर तहि गए कछु हरप किये। भावतो भावके संग नाहीं सुने ये महा चतुर चतुरई लिये॥ आजुही रैनि दोउ संग ये मिलहिंगे हरे कहि परसपर मनहि मन जानी। सूर व्रजनागरी नारि नागरिन सँग फिरी व्रज तुरत लै यमुन पानी॥८९॥ टोडी॥भाव दियो आवैंगे श्याम। अंग अंग आभूपन साजति राजति अपने धाम॥रतिरण जानि अनंग नृपति सों आप नृपति राजति वल जोरति। अति सुगंध मर्दन अँग अँग ठनि वनि वनि भूपन भेपति॥वीरा हार चीर चोली छवि सैना सजि शृंगार।

पान वचन सह्लाह कवचदै जोरो सूर अपार॥९०॥ कान्हरो ॥ प्यारी अंग शृंगार कियो। वेनी रची सुभग कर अपने टीका भाल दियो॥ मोतियन मांग सँवारि प्रथमही केसरि आड सँवारि। लोचन आँजि श्रवन तरवनं छवि कोकवि कहै निवारि॥ नासानथ अतिही छवि राजत वीरा अधरनि रंग। नवसत साजि चीर चोली वनि सूर मिलत हरि संग॥९१॥ कल्याण॥ नागरि नागर पंथ निहारै। उदै वाल शशि अस्तभयो अब जिय जिय इहै विचारै॥ कीधौं अवहीं आवत ह्वैहैं की आवन नहिं पैहैं। मात पिताकी त्रास उतहि इत मेरे घरहि डरैहैं॥ अँग शृंगार श्यामहित कीन्हे वृथा होन ये चाहत। सूरश्याम आवैंकी नाहीं मन मन इह अवगाहत॥ ९२ ॥ कान्हरो ॥ श्यामा निशिमें सरस बनीरी। मृगरिपु लंक तासु रिपु गज ताऊपर मधु केलि ठनीरी॥ कीर कपोत मधुप पिक तवरिपुसत रेख बनीरी। उडपति विंव धरे अति सोभा सुखवाला जोरिचिनीरी॥ कनक खंभ रचि नवसत साजे जलधर भख जब श्रवन सुनीरी। करगहि सत्र सात परिसारंग दंपतिहीकी सुरति ठनीरी॥ उमापतिहि रिपुको ललचानी बनरिपु तनमे अधिक जरीरी। सूरदास प्रभु मिलो राधिका तन मन शीतल रोमभरीरी॥ विहागरो॥ राधा रचि रचि सेज सँवारति। तापर सुमन सुगंध बिछावति वारंवार निहारति॥ भवन गवन करिहैं हरि मेरे हरष दुखहि निरुवारति। आवैं कवहुँ अचानकही जो सुभग पावँडे डारति॥ यहि अभिलाषहि में हरि प्रगटे पुरुष भवन सकुचानी। वह सुख श्रीराधा माधोको सूर उरहि यह जानी॥ ९३ ॥ कहा कहौं सुख कह्यौ न जाइ। वह अभिलाष श्यामकी आवनि दुहुँ उर आनंद नहीं समाइ॥ द्वादशकान्ह द्वादशी आपुन वह निशिवे हरि राधा योग। वह रसकी झझकनि वह महिमा वह मुसुकनि वैसो संयोग। वैहित वोल परस्पर दोऊ ठटकत कहत प्रेम पहिचानि। सूरश्याम करवाम भुजाधरि उछंगलई वह सुख पहिचानि॥ ९४ ॥ कान्हरो ॥ श्याम सकुच प्यारी उर जानी। उछंगि लई वाम भुज भरिकै वार वार कहिवानी॥ निरखति सकुच वदन हरिप्यारी प्रेमसहित दोऊ ज्ञानी। करत कहा पिय अति उताइली मैं कहुँ जात परानी॥ कुटिल कटाक्ष वंक करि भ्रुकुटी आनन मुरि मुसकानी॥ सूरश्याम गिरिधर रतिनागर नागरि राधारानी ॥ ९५ ॥ नागरि नागर करत विहार। कामनृपति सैना दुहुँ अंगनि सोभा वारनपार॥ अधर अधर नैननि नैननि भ्रुव भाल कियो इकठोर। मन इंदीवर कमल कसेसे चारि भँवर रंग और॥ वंदन भाल विहँसनि दोऊ अरस परस वरनारि। मनों विच चंद चकोर परस्पर कमल अरुन रविधारि ॥ ९६ ॥ गुंडमलार ॥ श्यामा श्याम परम कुशल जोरी। मनों नव जलद पर दामिनिकी कला सहज गति मेटि श्रुति भई भोरी॥ अलक विथुरी श्याम सुख पर रहे मनों बल राहु शशि घेरि लीन्हों। चितै मुख चारु चुंबन करति सकुच तजि दशन छत अधर पिय मगन दीन्हों॥ परत श्रम बूंद टप टपकि आनन वाल भई वेहाल रति मोह भारी। विधुपर सुदंत विध्वंत अमृत चुवत सूर विपरीत रति पीड़ि नारी ॥ ९७ ॥ कुरंग ॥ कुंजके निकट कुंज सुरति निरति सो सेजराजत सुख गात। छूटिगई तनकी चोली दरकि तरकि गये चारो याम रजनी विहानी भोररे भोर प्रात ॥ आलससों उठि बैठे अरस परस दोउ दंपति अति मन मन मुसकात। सूर आश पूरी श्यामा श्याम वनी जोरी निशिरस सुधि आये नैन नैननिलजात ॥ ९८ ॥ ललित ॥ राजत दोऊ रतिरंग भरे। सहज प्रीति विपरीति निसा सब आलस सेज परे॥ अति रणवीर परस्पर दोऊ नेकहु कोउ न मुरे। अंग अंग बल अपने आनिसों रति संग्राम लरे ॥ मगन मुरछि रहे खेत सेज पर इत

उत कोउ न टरे । सूरश्याम श्यामा रति रणते एक पग पल न टरे ॥ ९९ ॥ विभास ॥ श्यामा श्याम सेज उठि बैठे अरस परस दोउ करत विहार । उन उनकी पहिरी मोतिनकी माला उन उनको पहिरचो नव सरिहार ॥ लटपट पेंच सँवारति प्यारी अलक सँवारत नंदकुमार । सूरदास प्रभु नागरि नागर विपरीत भूषण करत शृंगार ॥ १६०० ॥ ललित ॥ करि शृंगार दोऊ अलसाने । प्रथम बोल तमचुर सुनि हरषे पुनि पौढे दोऊ लपटाने ॥ रति रण युद्ध याम त्रय नीके सेज परे उठि पुनि मुरझाने । मानों सूर खेत सम लरिकै गिरे उठत फिरि गिरे लजाने ॥ १ ॥ ललित ॥ बोले तमचुर चारो यामको गजर मारचो पौन भयो शीतल तमतमता गई । प्राचीरवि अरु णानी मानि किरिन उज्यारी नभ छाई उडगन चंद्रमा मलिनता लई ॥ मुकुले कमल वच्छ बंधन विछोहि ग्वाल चरै चली गाइ द्विज पैंती करको दई ॥ सूरदास राधिका सरसवानी बोलि कहे जागो प्राणप्यारे जू सवारेकी समै भई ॥ २ ॥ विभास ॥ चिरई चुहचुहानी चंदकी ज्योति परानी रजनी विहानी प्राची पियरी प्रवानकी । तारिका दुरानी तमचुरबोले श्रवण भनक परी ललितके तानकी ॥ भृंग मिले भारजा विछुरी जोरी कोक मिले उतरी पनच अब कामके कमानकी । अथवत आये गृह बहुरि उवत भान उठौ प्राणनाथ महा जान मणि जानकी ॥ व्रज घर घर इहै करत चवाव लोग वार वार कहनि करनि पग आनकी । सूरदास प्रभु नंदसुवन सिधारो धाम सुनत उठनि छवि कृपाके निधानकी ॥ ३ ॥ विलावल ॥ जागिये प्राणपति रैनि बीती । चंद्रकी दुतिगई पहै पीरीभई सकुच नाही दई अतिहि भीती ॥ मात पितु बंधु गुरुजन अबहि जानिहैं लखै जिनि कहूं यह लाज भारी । सखिन आगे नहीं नहीं सब दिन कही मोहि घेरे रहति सबै नारी ॥ उठे मुसुकाइ अकुलाइ अतुराइकै निकसि गए श्याम व्रजनारि जान्यो । सूर प्रभु नंदनंदन दरशदै गये निरखि यकटक रही पल भुलान्यो ॥ ४ ॥ विलावल ॥ प्रगट दरशदै गए कन्हाई । राधा गृहते निकसत देखे यह उनकी मन साध पुराई ॥ शीश मुकुट मोतिन उरमाला पीतांबर पट सहज फिराई । श्याम बरन तन निरखि भुलानी अंग अंग छवि कह्यो न जाई ॥ करति सोच राधा मन अपने आलस भरे गये हरिमाई । सूरश्याम निशि नेक न सोये इहै कहति पुनि पुनि पछिताई ॥ ५ ॥ विलावल ॥ श्याम गये देखे जिनि कोई । सखियनसों निवहन पुनि पैहौं इनि आगे राखौं रसगोई ॥ देखे आइ द्वारके नागरि जहां तहां व्रजनारी । सकुचि गई युवतिनके देखत दुखकीन्ही जिय भारी ॥ मन चिंता अतिही उपजायो वारवार पछितानी । सूरश्यामसों प्रीति गुप्तही आजु सवनि इन जानी ॥ ६ ॥ विलावल ॥ वार वार राधा पछितानी । निकसे श्याम सदन मेरेते इन अटकरि पहिचानी ॥ नितही नित बूझति ये मोसों मैं इन पर सतराति । अबतौ हरि प्रगटही देखे पुनि पुनि कहति लजाति ॥ यक ऐसेहि झकझोरति मोको पायो नीको दोउ । सूर आजु केहि भांति दुराऊं सोचति करति उपाउ ॥ ७ ॥ सोच परचो मन राधिका कछु कहत न आवै । कछु हरषे कछु दुख करै मन मौज बढ़ावै ॥ निशि रस रंगहि में पगी तनुसुधि विसरावै । कबहुँ विचारति निठुर ह्वै सखि ज्वाब न आवै ॥ अवहीं मोको बूझिहै युवती चतुरावै ॥ तिन सन्मुख कैहो कहा प्रभु सूर मनावै ॥ ८ ॥ नटनारायण ॥ कबहूं मगन हरिके नेह । श्याम सँग निशि सुरतिको सुख भूलि अपनी देह ॥ जबहि आवति सुधि सखिनकी रहति अति सरसाइ ॥ तब करति हरि ध्यान हिरदै चरण कमल मनाइ ॥ होइ ज्यों परबोध उनको मेरी पति जिनिजाइ ॥ निदरि निदरि सबको रहीहूं आजुलौं यहि भाइ । अबहिं सब जुरि आइहैं ह्यां तुम बिना न उपाइ । सूरप्रभु

ऐसी करौ कछु बहुरि न जाहु लजाइ ॥९॥ टोडी ॥ ज्वाब कहा मैं देहौं उनको । की आवति अबही की छिनकहि चोर कहैगी मोको ॥ कैसे हूं पति रहे विधाता अब यह करौ सँभारि । घेरेहि रहति दुराऊं कबलौं ऐसी नागरि नारि । नैना भए चकोर रहत हैं मुख शशि पूरण श्याम । सुनहु सूर यह दशा हमारी ये ब्रजकी सब वाम॥१०॥जैतश्री ॥ ये सब मेरेहि खोज परीमैंतौ श्याम मिली नहिं नीके आजु रही निशि संग हरी ॥ युवतीहैं सबदई सवाँरी घर बनहू में रहति भरी। कैसेधौं यह साध मिटैगी कहां मिलै जो एक घरी ॥ प्रगट करै तो बनति नहीं कछु लोक सकुच कुल लजा मरी। ते परगट अबहीं इन देखे सूरज प्रभु ब्रजराज हरी ॥ ११ ॥ धनाश्री ॥ तब नागरि मन हरष बढ़ायो। परम कुशल राधा हरि प्यारी हृदय बुद्धि उपजायो ॥ अब आवैं कैसेहु अँग बूझै ज्वाब मनहि ठहरायो। अति आनंद पुलक तनु कीन्हो सोच मोच विसरायो ॥ प्रगट गए जैसे नँदनंदन उहै ध्यान उपजायो। सूरदास प्रभु रूप बखानो इनको जो दरशायो ॥ १२ ॥ ललित ॥ राधा हरिके गर्व भरी। सखियनको आगम जब जान्यो बैठी रही खरी॥ उत ब्रजनारि संग जुरिकै वै हँसाति करति परिहास । चलौ नजाइ देखियेरी वै राधाकोउ अवास ॥ कैसो वदन शृंगार कौन विधि अंगदशा भइ कैसी । सूरश्याम संग निशि रस कीये निधरकहैहै वैसी ॥ १३ ॥ जैतश्री ॥ सुनो सखी राधाके मनकी यह करनी सखि जान्यो । जब हम जाति चली यमुना को तबही मैं वाको पहिचान्यो ॥ तबहि सैन दे श्याम बुलायो गृह आवन को भाउ। उनके गुण धौं को नहिं जानत चतुर शिरोमणि राउ ॥ सुनहु सखी अंतर नहिं कीजिय मूड़ परै अपनेही । सूरश्याम सुख हमहि दुरावति आजु मिले सपनेही ॥ १४ ॥ सारंग ॥ तुम जो कहति राधिका भोरी। आजु रही अब कहा दुराई कौन दिनन की थोरी ॥ जे छोटी तेई हैं खोटी साजति माजति जोरी। बेंदी भाल नयन नित आंजति निरखि रहति तनु गोरी ॥ चम कति चलै बदन मटकावै ऐसी जोबन जोरी। सूर सखी तोहि कहति अयानी मन मोहनहि ठगोरी १५॥रामकली॥ राधाको मैं तबहीं जानी। अपने कर जे मांग सँवारे राचि रचि बेनी बानी॥मुख भरि पान मुकुर लै देखति तिनसों कहति अयानी। लोचन आंजि सुधारति काजर छाँह निरखि मुसुकानी॥बार बार उरजनि अवलोकति उनते कौन सयानी। सूरदास जैसीहै तैसी मैं वाको पहिचानी ॥ १६ ॥ गुंडमलार ॥ राधिका सदन ब्रजनारि आई। रही मुख मूंदिकै बचन बोलै नहीं नैनकी सैन दै दै बुलाई ॥ इनि तबहिं लखि लई रचति हैं चतुरई बुद्धि रचिकै अबहिं और कैहे । चोर चोरी करै आपने जंघ बल प्रगट कै है तुमहिं नाहिं पत्यै है॥भौंह देखो निरखि ज्वाब देहै कौन तुमहुँ में राखति गर्व बोलि देखौं। सूर प्रभु संगते अति निधरक भई नैन मुख ओर तुम नहीं पेखौ ॥ १७॥सूही ॥आजु कहा मुख मूंदि रही री।सुनति नहीं हो कुँवरि राधिका कापर रिसकरि मौन गही री ॥ हमको यह काहे न सुनावति हम हैं तेरी संग सखीरी। यह कहि कहि मुसकात परस्पर चतुर नारि यह तबहिं लखीरी ॥ कीधौं ध्यान करति देवनिको कीधौं ऐसी प्रकृति परीरी । सूर जबहिं आवति हम तेरे तब तब ऐसी धरनि धरीरी ॥१८॥बिलावल ॥ बार बार युवती सबै राधा सों भाषैं। तुम दुराव करती हौ हम तुम सों राखैं॥इतनो सोच पर्यो कहा मुख ज्वाब न आवै।हम तौ हैं तेरी सखी सो कहि न सुनावै॥ कछु दिनते तेरी दशा तनु रहति भुलाये। निठुर भई कापर इतो कहै सूर सुभाये ॥ १९ ॥ गुंडमलार ॥ राधिका कहति ये करति हांसी । रहति मुख मुख हेरि नैनकी सैन दै कहति मोको कृष्ण उपासी॥सुनहुरी सखी मैं कहा तुम सों कहौं कहा बूझति मोहिं कहति

राधा। आजुही प्रात इक चरित देख्यो नयो तवहि ते मोहिं यह भई बाधा॥ कहौं जो एक करि देखती नैन भरि भोरते भोर ह्वै रही माई। सूर प्रभु श्याम की श्यामता मेघ की यहै जिय सोच कछु नाहिं सोहाई॥ २०॥ रामकली॥ करधरकी धरमैर सखीरी। कीमृक सीपजकी वगपंगति की मयूरकी पीड पखींरी॥ की सुरचाप किधौं वनमाला तडित किधौं पटु पीत। किधौं मंदगरजनि जलधरकी पगनूपुर रवनीत॥ की जलधरकी श्याम सुभगतनु इहै भोरते सोचति। सूरश्याम रसभरी राधिका उमँगि उमँगि रसमोचति॥ २१॥ रामकली॥ आजु सखी अरुणोदय मेरे नैनन धोख भयो। कीहरि आजु पंथ यहि गौने कीधौं श्याम जलद उनयो। की वगपंगति भ्रांति उरपरकी मुकुतामाल वहुमोल। कीधौं मोर मुदित नाचतकी वरहि मुकुटकी डोल॥ की घनघोरगंभीर प्रात उठि की वालनकी टेरनि। कीदामिनि कौंधति चहुँदिशकी सुभग पीतपट फेरनि॥ की वनमाल लाल उरराजन की सुरपति धनुचारु। सूरदास प्रभु रस भरि उमकी राधा कहति विचारु॥२२॥ विलावल॥सुनहु सखी राधा कहनावति। हम देख्यो सोई इन देखे ऐसेहि दोष लगावति॥यह पुनीत हमही अपराधिनि तनु अपराध बढावत।श्यामाश्याम सबके सुखदायक ताते कहि मनभावत॥ इतनेहि रहौ और जिनि भाषहु अजहूं लाज न आवत। सूरश्याम राधा जो एके तऊ नहीं कहि आवत॥ २३॥ सूहीविलावल॥ राधाको कछु और सुभाउ। हम देखति हरिको औरहि अंग यह निरखति सतिभाउ॥ यह है विनकलंककी सांची हम कलंकमें सानी। हम हरिकी दासी समनाहीं यह हरिकी पटरानी॥ याकी स्तुति हम कहा करिहैं रसना एक नआवै।सूरश्याम कोईनहिं जाने भजन प्रताप वतावै॥ २४॥ गूंडमलार॥ राधिका हृदयते दोष टारो। नंदके लाल देखे प्रात काल ते मेघ नहिं श्याम तनु छवि विचारो॥इंद्रधनु नहीं वन दाम वहु सुमनके वगपांति नहीं वर मोतीमाला। शिखी वह नहीं शिरमुकुट श्रीखंड पछ तडित नहिं पीत पट छवि रसाल॥ मंद गर्जनि नहीं चरण नूपुर शबद भोरहीं आजु हरिगवन कीन्हो। सूर प्रभु भामिनी भवन करि गवनमनरवन दुखके दवन जानिलीन्हों॥२५॥भोरजे गये तेई श्यामवैरी।धोखो मोहिं भयो तव लखे नहिं एक करि नीलवनमेघ छवि चीन्ह तनु लैरी॥ शिखीकी भांति शिरपीड डोलत सुभग चापते अधिक नव मालसोभा॥सांवरीघटा वगपांतिते रुचिर मोतिवर दाम उर देखि लोभा॥तडिततेपीतपटु कीच मकराजई गरज नाहिं प्रातही ग्वाल वोले। सूर प्रभु सखी यह वात सांची कही पवनवशमेघ ज्यों अंग डोले॥२६॥ कल्याण॥ धन्यहो धन्य तुम घोष नारी॥मोहिं धोखो गयो दरश तुमको भयो तुमहि मोहिं देखोरी वीचभारी॥ जादिना संग मैं गई स्नानको यमुनके तीर देखे कन्हाई॥ पींड श्रीखंड शिर भेष नटवर कछे अंग इक छटा मैंही भुलाई॥एकद्यौस आइ ठाढे भए द्वार हरि आज द्वारह्वै गए मेरे। सूर प्रभु तादिना तुमहि कहि दियो मोहिं आज मैं लखे सोउ कहे तेरे २७॥आसावरी तुम कैसे दरशन पावतिरी। कैसे श्याम अंग अवलोकति क्यों नैननको ठहरावतरी॥ कैसे रूप हृदय राखतिहौ वैतो अति झलकावतरी। मोको जहां मिलत हैं माई तहँ तहँ अति भरमावतरी॥ मैं कवहूं नीके नहिं देखे कहा कहौं कहत न आवतरी। सूरश्याम कैसे तुम देखति मोहिं दरश नहिं द्यावतरी॥ २८॥ आसावरी॥ धन्य धन्य वृषभानुकुमारी। धनि माता धनि पिता धन्य तुअ धनि तोसी उपजाईरी॥ धन्य दिवस धनि निसा तवहिंकी धन्य घरी धनि याम। धन्य कान्ह तेरे वश जेहैं धनि कीन्हें वश श्याम॥ धनि मति धनि गति धनि तेरो हित धन्य भक्ति धनि भाउ। सूरश्याम पति धन्य नारि तू धनि धनि एक सुभाउ॥ २९॥ जैतश्री॥ तोहिं श्याम

हम कहाँ देखावें। तुमते न्यारे रहत कबहुँ वे नैक नहीं विसरावें ॥ एक जीव देही द्वै राची यह कहि कहि जु सुनावैं। उनकी पटतर तुमको दीजै तुम पटतरवे पावैं ॥ अमृत कहा अमृत गुण प्रगटे सो हम कहा बतावैं। सूरदास गूंगेको गुर ज्यों बूझति कहा बुझावैं ॥ ३० ॥ टोडी ॥ सुनि राधा यह कहा विचारै। वे तेरे रंग तू उनके रंग अपनो मुख काहे न निहारै ॥ जो देखे तौ छांह आपनी श्याम हृदय ह्यां छाया।ऐसी दशा नंदनंदनकी तुम दोउ निर्मल काया॥नीलांबर श्यामलतनुकी छवि तुअछवि पीत सुवास।घन भीतर दामिनी प्रकाशतदामिनि घन चहुँपास।सुनरी सखी विलछ कहौं तोसों चाहति हरिको रूप।सूर सुनहु तुम दोउ समजोरी एक एक रूप अनूप ॥३१॥ धनाश्री ॥ सुनि ललिता चंद्रावलि बात। मोसों श्याम नेह मानतहैं तुमसों कहति लजात ॥ तुमतौ सदा रहति हरि सँगही भेद कहो यह मोहि। हाहाकरति पाँइहों लागति शपथहै मेरी तोहि ॥ काहेको इतरात सखीरी तोते प्यारी कौन । सूरश्याम तेरे वश ऐसे ज्यों पर्वतवश पौन ॥ ३२ ॥ नट ॥ पिय तेरे वश योंरी माई । ज्यों संगही संग छाँह देह वश प्रेम कह्यो नहिंजाई ॥ ज्यों चकोर वश शरद चंद्रके चक्रवाक वशभान। जैसे मधुकर कमलकोश वश त्यों वश श्याम सुजान ॥ ज्यों चातक वश स्वाति बूंदके तनके वश ज्यों जीय । सूरदास प्रभु अतिवश तेरे समझि देखिधोंहीय ॥ ३३ ॥ धनाश्री ॥ तूरी छांह किये हरि राखति। अपने मन तू जानति नीके मुख मोसों यह भाषति ॥ अतिवश रहत कान्हरी तोको मुकुर हाथले देखो। तैसींये मन मोहनकी गति उहै भाव मन लेखो ॥ तुमहौ वाम अंग दक्षिण वै ऐसे करि एक देह। सूर मीन मधुकर चकोरको इतनो नहीं सनेह ॥ ३४ ॥ देसाष ॥ नँदनंदन वशतेरेरी । सुनि राधिका परम बड़भागिनि अनुरागिनि हरिकेरीरी॥ जादिन ते तोहिं खरिक मिले हरि धेनु दुहावन आई री ता दिनते वश भये कन्हाई कहा ठगोरी लाई री ॥ अब तू कहति कहा मो आगे बातन मोहिं भुलावै री। सूरदास ललिताकी वाणी सुनि सुनि हरष बढ़ावैरी ॥ ३५ ॥ टोडी ॥ ललिता मुख सुनि सुनि वै बानी। मैं ऐसी जिय में यह आनी ॥ और नही मोसरि कोउ ब्रजकी। हौ राधा आधा अँग हरिकी॥ अपनेही वश पियको करिहौं। कहूं जात देखौं तब लरिहौं॥ घर घर सबै गई ब्रजनारी। यहि अंतर आये गिरिधारी ॥ हरि अंतर्यामी अविनाशी। जानि राधिका गर्व उदासी ॥ सूरश्याम राधा तन हेरचो। नागरि देखतही मुख फेरचो ॥ ३६ ॥ सारंग ॥ बरज्यो नहिं मानत उझकत फिरत हौ कान्ह घर घर। तुम मिसही मिस देखत फिरत युवतिनके वदन कौन कौनके घर ॥ कोउ अपने घर काम काज जैसे तैसे तुम आवत हौ दर दर । सूरदास प्रभु अतिहि अचगरी देत डोलत नेक नहीं जियमें डर ॥ ३७ ॥ विलावल ॥ यह जान्यो जिय राधिका द्वारे हरि लागे। गर्व कियो जिय प्रेम को ऐसे अनुरागे॥ बैठि रही अभिमान सों यह ठौर न पायो हृदय श्याम सुखधाम में अभिमान बसायो। राधा के यह जानि कै आपुन पछिताहीं। जहां गर्व अभिमान है तहां गोविंद नाहीं॥तहां नेकहुँ नहिं रहे नहीं दरशन दीन्हों। सूरश्याम अंतर भये जब गर्वहि चीन्हों॥३८॥धनाश्री ॥ राधा चकित भई मन माहीं । अबहीं श्याम द्वार है झांके ह्यां आये क्यों नाहीं ॥ आपुन आइ तहां जो देखे मिले न नंदकुमार । आवत हे फिरि गये श्याम घन अति ही भयो विचार ॥ सूनै भवन अकेली मैंही नीके उझकि निहारचो। मोते चूक परी मैं जानी ताते मोहिं विसारचो ॥ एक अभिमान हृदय करि बैठी एते पर झहरानी। सूरदास प्रभु गये द्वार को तब व्याकुल पछितानी ॥ ३९ ॥ सारंग ॥ मैं अपने जिय गर्व कियो। वै अंतर्यामी सब जानत देख

तही उन चरच लियो॥ कासों कहौं मिलावै अब को नैक न धीरज धरत हियो। वै तो निठुर भये या बुद्धिते अहंकार फल इहै दियो॥तब आपुन को निठुर करावति प्रीति सुमरि भरि लेत हियो। सूर श्याम प्रभु वे बहुनायक मोसी उनके कोटि त्रियो ॥ ४० ॥ विहागरो ॥ श्याम विरह वन मांझ हेरानी। संगी गये संग सब तजिकै आपुन भई देवानी ॥ श्याम धाम मैं गर्वहि राखति दुराचारि नी जानी। ताते त्यागि गये आपुहि सब अंग २ रति मानी ॥ अहंकार लंपट अपकाजी संग न रह्यो निदानी। सूरश्याम बिन नागरि राधा नागर चित्त भुलानी ॥ ४१ ॥ विहागरो ॥ महाविरह वन मांझ परी। चक्रत भई ज्यों चित्र पूतरी हरि मारगहि बिसारी ॥ संगवटपार गर्व जब देख्यो साथी छोंड़ि पराने। श्याम सहज अंग अंग माधुरी तहां वै जाइ लुकाने ॥ यह बन मांझ अकेली व्याकुल संपति गर्व छँडाये। सूरश्याम सुधि टरत न उरते यह मनो जीव बचाये ॥ ४२ ॥ मारू ॥ विरहवन मिलन सुधि त्रास भारी। नैन जल नदी पर्वत उरज येइ मनो सुभग वेनी भई अहि निकारी॥ नैन मृग श्रवन वन कूप जहां तहां मिले भ्रम गली सघन नहिं पार पावै । सिंह कटि व्याघ्र अंग अंग भूषन मनो दुसह भये भार अतिही डरावै॥ शरनकीर अन्रडरि डर लहत कोउ नहीं अंग सुख श्याम बिन भये ऐसे। सूर प्रभु नाम करुना धाम जाउ क्यों कृपा मारग बहुरि मिलै कैसे ॥ ४३ ॥ टोडी ॥ राधा भवन सखी मिलि आई। अति व्याकुल सुधि बुधि कछु नाहीं देहदशा बिसराई। बांह गही तेहि बूझन लागी कहा भयोरी माई। ऐसी बिवस भई तुम काहे कहो न हमहि सुनाई। कालिहि और वरन तोहिं देखी आयु गई मुरझाई । सूरश्याम देखे की बहुरो उनहि ठगोरी लाई ॥ ४४ ॥ हमरि ॥ श्याम नाम चक्रत भई श्रवन सुनत जागी ॥ आये हरि यह कहि कहि सखिन कंठ लागी॥मोते यह चूक परी मैं बडी अभागी॥ अबकै अपराध क्षमहु गये मोहिं त्यागी ॥ चरण कमल शरन देहु वार वार मांगी। सूरदास प्रभुकेवश राधा अनु रागी ॥ ४५ ॥ विहागरो ॥ सखी रही राधा मुख हेरी। चक्रत भई कछु कहत न आवै करन लगी अवसेरी ॥ बार बार जल परसि वदनसों वचन सुनावत टेरी। आजु भई कैसी गति तेरी ब्रजमें चतुर निवेरी ॥ तब जान्यो यहतो चंद्रावलि लाज सहित मुख फेरी। सूरतबहिं सुधि भई आपनी मेटी मोह अँधेरी॥ ४६ ॥ रागजैतश्री ॥ कहा भयो तू आयु अयानी। अतिही चतुर प्रवीन राधिका सखियनमें तू बड़ी सयानी ॥ कहिधौं बात हृदय की मोसों ऐसी तू काहे बिततानी। मुखमलीन तनुकी गति औरै बूझति बारबार सो बानी॥ कहा दुराव करोंरी तोसों मैंतो हरिके हाथ बिकानी॥ सूरश्याम मोको परत्यागी जाकारण मैं भई देवानी ॥ ४७ ॥ अब मैं तोसों कहा दुराऊं। अपनी कथा श्यामकी करनी तो आगे कहि प्रगट सुनाऊँ॥ मैं बैठीही भवन आपने आपुन द्वार दियो दरशाऊँ। जानि लई मेरे जियकी उन गर्व प्रहारन उनको नाऊँ।तबहींते व्याकुलभई डोलति चित न रहै कितनो समुझाऊं। सुनहु सूर गृह बन भयो मोको अब कैसे हरि दरशन पाऊं॥ ४८॥ नटनारायण ॥ सखी मिलि करौ कछु उपाउ। मारन चह्यो विरहिनि निदरि पायो दांउ॥ हुतासन धुजजात उन्नत वह्यो हरिदिशवाउ। कुसुमसर रिपुनंद वाहन हरपि हरपित गाउ ॥ वारि भव सुत तासु भावरि अब न करिहौं काउ। बार अबकी प्राण प्रीतम विजै सखी मिलाउ ॥ ऋतुविचारि जुमान कीजै सोउ वहि किन जाउ। सूर सखी सुभाउ रैहौं संग शिरोमणि राउ॥ ४९ ॥ रागनट ॥ मिलवहु पार्थ मित्रहि आनि। जलजसुतके सुतकी रुचि करे भई हितकी हानि ॥ दधिसुतासुत अवलि उरपर इंद्र आयुध जानि। गिरिसुता पति तिलक करकस हनत

सायक ताानि ॥ पिनाकी पति सुत तासु वाहन भषक भष विषपानि । शाखामृग रिपु बसन मलयज हित हुतासनवानि ॥ धर्मसुतके अरि सुभावहि तजत धरि शिरपानि । सूरदास विचित्र विरहिनि चूक मन मन मानि ॥ ५० ॥ टोडी ॥ सुनि सजनी यह करनी तेरी । हमसों भेद करै हित उनसों ऐसे गुन उन केरी ॥ आजुहिते ऐसे ढंग आये अबहीं तो दिन हैरी । ऐसे टूटि परी उन ऊपर तुमही कीन्हो वैरी ॥ अजहूँ कह्यो मानिहै मेरे कीधों नहीं करैरी ॥ सूर श्याम सों मानु करै किन काहे वृथा मरैरी ॥ ५१ ॥ सोरठ ॥ तैहीं उनको मूंड चढ़ायो । भवन विपिन सँगही सँग डोलै ऐसेहि भेद लखायो ॥ पुरुषभवँर दिनचारि आपने अपनो चाउ सरायो । नँदनंदन बहु रवानि रवनवै इहै जानि विसरायो ॥ अपनी बात आपने करहै हमको तव न सुनायो । सुनहु सूर विन मान कहौ किन अपनो पिय अपनायो ॥ ५२ ॥ कान्हरो ॥ रैनिमो जागत विहानी मोहनसों मैं मान कियो तातेभई अधिक तनुतपाति । सेज सुगंध तलप लागत पावकहुं दाह सखीरी त्रिविध पवन उड़पति ॥ ऐसीकै व्यापीहो मन्मथ मेरो जी जानै माई श्याम श्याम कहि रैनि जपाति । वेगि मिलाउ सूरके प्रभुको भूलिभिमान करौं कबहूं नाहिं मदनवानते कंपति ॥५३॥ धनाश्री॥मानविना नाहिं प्रीति रहैरी॥धाइ मिलेकी गति तेरीसी प्रगट देखि मोहिं कहा कहैरी॥अपनो चाउ सारि उन लीन्हों तू काहे अब वृथा वहैरी । बैठि रहे काहे नहिं दृढहै फिरि काहेन तू मान गहैरी ॥ अपनो पेट दियो तैं उनको नाकबुध्य त्रय सबै कहैरी । सूरश्याम ऐसैहैं माई उनको विनु अभिमान लहैरी ॥ ५४ ॥ मलार ॥ सजौं क्यों मान मन न मेरे हाथ ॥ पियकी सुरति करि उमंगि भरत मोसों मानत वाम श्याम गुण गुण अभिलाष ॥ करत जो मोकानि न मानि आनि जुवरत तिन विन नुसरत । अपमानतहूं मुदित मूढयश अपयशहू न डरत ॥ रिसमें रस विधुदै चिरचत नंदलाल हठि प्राणहरत । भ्रममेतो रिस करत न रसवश मोहिंसों उलटि सरत । स्वारथ सब इंद्री समहूं पर विरहा धीर धरत । सूरदास घरकी फूटैडी कैसे धीर धरत ॥ ५५ ॥ कान्हरो ॥ चारि चारि दिन सबै सुहागिनि री ह्वै चुकीमैं स्वरूप अपनी।कोउ अपने जिय मान करै माईहो मोहितो छुटति अति कपनी ॥ मेरो कह्यो करि मान हृदय धारि छांडि देहु अति तपनी । सूरश्याम तबही मानैंगे तबहिं करैंगे जपनी ॥ ५६ ॥ हमारी सुरति विसारी वनवारी हम सरबस दैदैहारी । सखीपै वै न भये अपने सपनेहू वै मुरारी गिरिधारी ॥ वे मोहन मधुकर समान अन वोली मनलावतरी । धावत हम व्याकुल विरह व्यापि दिन प्रति नीर जनैना ढारि ढारी ॥ हम तन मनदै हाथ बिकानी वै अति निठुर रहत हैं मुरारी। सूरदास प्रभु सुनहु सखी बहु रवनि रवन पिय हम यक व्रतधरि मदन अगिनि तनु जारी ॥ ५७ ॥ गौरी ॥ मैं अपनीसी बहुत करीरी । मोसों कहा कहाति तू माई मनके संग मैं बहुत लड़ीरी । राखौं अटकि उतहिको धावै उनको वैसियौं परन परीरी ॥ मोसों बैर करै रति उनसों मोको छांडी द्वार खड़ीरी ॥ अजहूं मान करौ मन पाऊं यह कहि इत उत चितै डरीरी । सुनहु सूर पांच मत एकै मोमैं मैंही रही परीरी ॥ ५८ ॥ गौरी ॥ मन जिनि सुनै बात यह माई। कौरै लग्यो होइगो कितहूं कहि देहै को जाई ॥ ऐसे डरति रहति हैं वाको चुगुली जाइ करै गो । उनसों काहि फिरि ह्यां आवैगो मोसों आनि लरैगो । पंच संग लीन्हे वह डोलत कोऊ मोहिं न मानै।सूरश्याम कोउ उनहिं सिखायो वै इतनो कह जानै ॥५९॥ ईमन ॥ मेरो मन कहिवे कोहै । जबहीं ते हारि दरशन कीन्हे नैन भेद कियो जोहै ॥ इंद्री सहित चित्त हू लैगयो रही अकेली हमही । येते पर तुम मान करावत तौ मनदेहु न तुमही ॥ मोको दोवल देति

कहाहै तुमतौ सबै अयानी । सूरश्यामको वेगि मिलावहु हारि आपनी मानी ॥ ६० ॥ रामकली ॥ सारंग सारंग धरहि मिलावहु । सारँग विनय करत सारंग सों सारंग दुख विसरावहु ॥ सारंग समय दहत अति सारंग सारंग तिनहि दिखावहु । सारंगपति सारंगधर जैहै सारंग जाइ मनावहु ॥ सारंग चरण सुभग कर सारंग सारंग नाम बोलावहु । सूरदास सारंग उपकारिनि सारंग मरत जिवावहु ॥ ६१ ॥ विहागरो ॥ मोते यह अपराध पर्‍यो । आये श्याम द्वार भये ठाढे मैं अपने जिय गर्व धर्‍यो ॥ जानि बूझि मैं यह कृत कीन्हो सो मेरेही शीशपर्‍यो । मन अपने ढँगहीमें मोसों वारंवार लर्‍यो ॥ मैं अति विमुख रहे ये सन्मुख नीके उनहिं ठर्‍यो । सूरदास मन आपु स्वारथी अपनो काज कर्‍यो ॥ ६२ ॥ सोरठ ॥ मन जो कह्यो करैरी माई । तेरी कही बात सब होती मिलो उनहिं को धाई ॥ निलज भई तनु सुधि विसराई गुरुजन करत लराई । इत कुलकानि उतहि हरिको रस मनतो अति अपुडाई॥आप स्वारथी सबै देखियत है मोकों दुखदाई। सूरदास प्रभु चित अपनो करि तनकहि गयो रिसाई॥६३॥ देशाष॥मैं अवही करौं मानपै मन थिर नरहै । कोटि यतन करि करि पचिहारी मोहिं विसारि गये को उनसों जुकहै॥मोको निदरि मिल्योहै हरिको येते पर तनु मदन दहै । सूरश्याम सँग नेक न त्यागत सोवत जागत वरु अपमान सहै ॥६४॥मनहि कह्यो करि मानपै कह्यो नकरै । वारवार हरिसों गुहरावत मोहिं मँगावत पुनि पुनि आनि लरै॥घटहूमें इंद्री वश ताके लै निकस्यो मोहिं कौन डरै । सुनि सजनी मैं रही अकेली विरह दहेली इत गुरुजन झहरै ॥ अव विनु मिले वनत नहिं आली निशि दिन पल पल रह्यो नपरै । सूरश्याम वहु रवनि रवन जो भलेही रहैं वे चित यह नहिं धरै ॥ ६५ ॥ विलावल ॥ भूलि नहीं अब मान करौंरी । जाते होइ अकाज आपनो काहे वृथा मरौंरी ॥ ऐसे तनमें गर्व नराखौं चिंतामणि विसरौंरी । ऐसी बात कहै जो कोऊ ताके संग लरौंरी ॥ आरजपंथ चले कहा सरिहै श्यामहि संग फिरौंरी ॥ सूरश्याम जो आपस्वारथी दरशन नैन भरौंरी ॥ ६६ ॥ आसावरी ॥ चूक परी मोते मैं जानी मिलैं श्याम वकसाऊंरी । हाहाकरि दशननितृण धरि धरि लोचन जलनि ढराऊंरी ॥ चरण गहौं गाढ़े करि करसों पुनि पुनि शीश छुवाऊंरी । मुख चितवौं फिरि धरणि निहारों ऐसी रुचि उपजाऊंरी ॥ मिलौं धाइ अकुलाइ भुजनि भरि उरकी तपति जनाऊँरी । सूरश्याम अपराध क्षमहु अव यह कहि कहि जु सुनाऊंरी ॥ ६७ ॥ गौरी ॥ माई मेरो मन पियसों यों लग्यो ज्यों सँग लागी छांह । मेरो मन पियके जीव वसतहै पियको जीव मोमें नाँह ॥ ज्यों चकोर चंदाको निरखै इत उत दृष्टि नजाहि । सूरश्याम विनु छिन छिन युग सम क्यों करि रैनि विहाहि ॥ ६८ ॥ जैतश्री ॥ उनको यह अपराध नहीं । वै आवतहैं नीके मेरे मैंही गर्व कियो तनही ॥ मेरे गर्वते सह्यो कछु नहीं एक भई तनु दशानही । सुख मिटि गयो हिये दुख पूरन अवरै होइ नहीं विनही ॥ अव जो दरश देहिं कैसेहू फिरतरहौं सँगही सँगही । सूरदास प्रभुको हियरेते अंतर करौं नहीं छिनही ॥ ६९ ॥ विलावल ॥ अवकै जो पियपाऊं तो हृदय माँझ दुराऊँ । हरिको दरशन पाऊँ आभूषण अंग वनाऊं ॥ ऐसोको जो आनि मिलावै ताहि निहाल कराऊं । जो पाऊं तौ मंगल गाऊँ मोतिनचौक पुराऊं ॥ रसकरि नाचों गाऊं वजाऊं चंदन भवन लिपाऊं । जो मोहन वश मेरे होवहिं हीरालाल लुटाऊं ॥ मणि माणिक न्यव छावरि करिहौं सोदिन सुदिन कहाऊँ । केतकि करनवेलि चम्मेली फूलन सेज विछाऊँ ॥ तापर पियको पौढाऊं मैं अचरा वायु डुलाऊं । चंदन अगर कपूर अरगजा प्रभुके खौरि वनाऊं ॥ जो विधना कवहूं यह करतो कामको काम पुराऊँ । सूरश्याम विन देखे सजनी कैसे मन अपनाऊं७०॥

॥ सांकारण ॥ अरी मोहिं पिउ भावै को ऐसी जो आनि मिलावै । चौदह विद्या प्रवीन अतिही सुंदर नवीन वहुनायक कौन मनावै ॥ नेकदृष्टिं भरि चितवे मो विरहिनिको माई काम द्वंद्व विरह तपनि तनुते बुझावै। सूरदास प्रभु मोको करहिं कृपा अव नित प्रति विरह जरावै ॥ ७१ ॥ विलावल ॥ धीरज करिरी नागरी अव श्यामहि ल्याऊं । अति व्याकुल जिनि होहिरी सुख अवहिं कराऊं ॥ देखि दशा सहि नहिं सकी मनही अकुलानी। मैं राधाकी प्रियसखी यह कहि पछितानी॥ झुरि झुरि पियरी भईहै यहतौ सुकुमारी। ऐसी चूक परी है मोपै कहा करौं गिरिधारी ॥ प्यारी को मुख धोइकै पटपोंछि सँवारचो। तरक वात बहुतै कही कछु सुधि नसँभा रचो ॥ सावधान करिकै गई ल्याऊं गिरिधरको। सूर तहां आतुर गई पाये हरि वरको ॥ ७२ ॥ टोडी ॥ ललिता मुख चितवत मुसुकाने। आपु हँसी पिय मुख अवलोकत दुहुँनि मनहिं मन जाने ॥ अति आतुर धाई कहां आई काहे वदन झुराये। बूझत है पुनि पुनि नँदनंदन चितवत नैन चुराये॥ तव बोली वह चतुर नागरी अचरज कथा सुनाऊं। सूरश्याम जो चलौ तुरतहीं नैननि जाइ दिखा ऊं ॥ ७३ ॥ सारंग ॥ अद्भुत एक अनूपमवाग। युगल कमल पर गज क्रीडतहै तापर सिंह करत अनुराग ॥ हरि पर सरवर सरपर गिरिवर गिरिपर फूले कंज पराग। रुचिर कपोत वसे ता ऊपर ता ऊपर अंमृत फल लाग ॥ फल पर पुहुप पुहुप पर पल्लव तापर शुक पिक मृग मद काग। खंजन धनुष चंद्रमा ऊपर ता ऊपर इक मणिधर नाग ॥ अंग अंग प्रति और और छवि उपमा ताके करत न त्याग। सूरदास प्रभु पिवहु सुधारस मानों अधरनिके वड़भाग॥ रामकली ॥ पद्मनिसा रंग एक मझारि। आपहि सारंग नाम कहावै सारंग वरनी वारि ॥ तामें एक छवीलो सारंग अर्ध सारंग उनहारि। अर्ध सारंग पारि सकलई सारंग अधसारंग विचारि ॥ तामहि सारंग सुत सोभित है ठाढी सारंग संभारि। सूरदास प्रभु तुमहूं सारंग वनी छवीली नारि ॥ रामकली ॥ विराजत अंग अंग इति वात। अपने कर करिधरे विधाता पट खग नव जल जात ॥ द्वै पतंग शशि वीस एक फनि चारि विविध रंग धात। द्वै पिक विंव वतीस वज्रकन एक जलज पर थात ॥ इक सायक इक चाप चपल अति चिवुक में चित्त विकात।दुइ मृणाल मातुल ऊभे द्वै कदली खंभ विन पात॥ इक केहरि इक हंस गुप्त रहै तिनहि लग्यो यह गात । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको अति आतुर अकुलात ॥ सारंग ॥ आजु मैं देखी एक वाम नईसी। ठाढी हुती अंगना द्वारे विधना रची कीधौं मदन भईसी ॥ हम तन चितै सकुच अंचल दै वारिज वदन परिवारि वईसी । मानौ द्वै ढंग चले हैं दृगनिलै ललित वलित हरि मनहि नईसी ॥ जनु पावस ते निकसि दामिनी नेक दमकि दुरि वोट लईसी। भोजन भवन कछू नहिं भावत पलकन मानो करत खईसी ॥ यह सूरति कवहूं नहिं देखी मेरी अँखियन कछु भूल भईसी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को मन मोहन मोहनी अचईसी ॥ सारंग ॥ वरणों श्रीवृषभानु कुमारी । चितदै सुनहु श्याम सुंदर छवि रतिनाहीं अनुहारी ॥ प्रथमहि सुभग श्याम वेनी की सोभा कहौं विचारी । मानों फनिग रह्यो पीवन को शशि मुख सुधा निहारी ॥ कहिये कहा शीश सेंदुरको कितौ रही पचिहारी। मानों अरुन किरनि दिनकरकी पसरी तिमिर विदारी ॥ भृकुटी विकट निकट नैननिके राजत अति वरनारि। मनहुँ मदन जगजीति जेर करि राख्यो धनुष उतारि॥ ताविच वनी आड़केसरिकी दीन्ही सखिन सँवारि। मानों वंधि इंदु मंडलमें रूपसुधाकी पारि ॥ चपल नैन नासा विच सोभा अधर सुरंग सुठारामनों मध्य खंजन शुक वैठ्यो लुवध्यो विंव विचारि॥

तरिवन सधर अधर नकवेसरि चिवुक चारि रुचिकारी। कंठसरी दुलरी तिलरी पर नहिं उपमा कहुँचारी॥ सुरंग गुलाब माल कुच मंडल निरखत तन मन वारि। मानों दिंशिनिधूँम अग्निके तप वैठो त्रिपुरारि। जो मेरो कृतमानहु मोहन करिल्याऊं मनुहारि। सूर रसिक तवहीपै वदिहौं मुरली सकी न सँभारि॥ मलार॥ लाल उनि सुनी मनोहर वंसी। नहिं संभार अजहुँ युवतिनि वल मदन भुवंगम डंसी॥ कैसे ल्याउँ संगीत सरोवर मगन भई गति हंसी। अंकेउटरिचलहु आपु नपै मेलि भौंह दृढ फंसी॥ वृंदावनकी माल कलेवर लता माधुरी गंसी। सूरदास प्रभु सब सुख दाता लै भुज वीच प्रशंसी॥ धनाश्री॥ मनसिज माधवे मानिनिहि मारिहै। त्रोटि परलत्र अरत तपरमौअरनिरखिनिमुखको तारिहै॥ किसलय कुसुम कुंतसम सायक पायक पवन विचारिहै। द्रुम वल्ली एह दीप युग वनी जनति अनल त्रिय जारिहै॥ भवँर जु एक चकृत चमरकर भरि वंडुपखगडारिहै॥ पुनि पुनि वाज साज सुनि सुंदरि त्रसित तिनहि देखे मारिहै॥विरह विभूति वढी वनितावपु शीशजटा वनवारिहै। मुखशशि शेपरह्यो सित मानो भई तभों उनहारिहै॥ जौ न इतेपर चलहु कृपानिधि तौ वह निज करसारिहै। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि तुमताजि काहि पुकारिहै॥ सारंग॥ शिव न अवध सुंदरी वधोजिन।मुकुता मांग अनंग गगनहिमे नवसत साजे अर्थ श्यामघन॥ भाल तिलक उडुपति नहोय इह कवरी ग्रथित अहिपति न सहसफन। नहिंविभूति दधिसुत नकंठ जड इह मृगमद चंदन चरचित तन॥नहिंगजचर्म से असित कंचुकी देखि विचारि कहां नंदीगन। सूर सुहरि अव मिलहु कृपाकरि वरवश सरम करत हठ हमसन॥ सारंग॥नैक कुंज कृपाकरि आइये। अति रिस कृपहैरही किसोरी करि मनुहारि मनाइये॥ कर कपोल अंतर नहिं पावत अति उसास तनताइये। छूटे चिहुर वदन कुँभिलानो सुहथ सँवारि वनाइये॥ इतनो कहा गांठिको लागत जो वातनि यशपाइये। रूठेहि आदर देत सयाने इहै सूरज सगाइये॥धनाश्री॥प्रियमुख देखो श्याम निहारि। कहि नजाइ आननकी सोभा रही विचारि विचारि॥ क्षीरोदक घूंघट हातो करि सन्मुख दियो उघारि। मानो सुधाकर दुग्ध सिंधुते काढ्यो कलंक पखारि॥मुक्तामांग शीश पर सोभित राजत डुहि आकारि। मानो उडगन जानि नवल शशि आये करन जुहारि॥भाल लाल सेंदूर विंद पर मृगमद दियो सुधारि। मनों वंधूक कुसुम ऊपर अलि वैठो पंख पसारि॥चंचलनैन चहूंदिश चितवत युगखंजन अनुहारि। मनहुँ परस्पर करत लराई कीर वचाई रारि॥ वेसरिके मुकुतामें झाईं वरन विराजित चारि। मानो सुरगुरु शुक्र भौम शनि चमकत चंद्र मझारि॥ अधर विंव दशननकी सोभा दुति दामिनि चमकारि। चिवुक विंदु विच दियो विधाता रूपसीव निरुवारि॥ ज्योति पुंज पटतर देवेको दीजे कहा अनुहारि। जनु युग भानु दुहूँ दिशि उगए तम दुरिगयो पतारि॥ लाल सुमाल हार हीरावलि सखियन गुही सुढारि। मनहु धुई निधूँम अग्नि पर तप वैठे त्रिपुरारि॥ सन्मुख दृष्टि परे मन मोहन लजित भई सुकुमारि। लीन्हीं उमँगि उठाइ अंक भरि सूरदास वलिहारि॥ नट॥ भुज भरि लई हृदय लाय। विरह व्याकुल देखि वाला नयन दोउ भरि आय॥ रैनि वासर वीचही में दोउ गए मुरुझाइ। मनो वृक्ष तमाल वेली कनक सुधा सिचाइ॥ हरप डहडह मुसुकि फूले प्रेमफलनि लगाइ। काम मुरछानि वेलि तरुकी तुरतही विसराइ॥ देखि ललिता मिलनि वह आनंद नहीं समाइ। सूरके प्रभु श्याम श्यामा त्रिविध ताप नशाइ॥ रामकली॥ ललिता प्रेमविवस भई भारी। वह चितवनि वह मिलनि परस्पर अति सोभा वरनारी॥ एकटक अंग अंग अवलोकति उत वश भए विहारी। वह आतुर छवि लेति देत वै

इकते इक अधिकारी ॥ ललिता संग सखिन सोभा सखि देख्यो छवि पियप्यारी । सुनहु सूर जो अग्नि होम घृत ताहूते यह न्यारी ॥ धनाश्री ॥ देखि सखी राधा अकुलानी। ऐसे अंग अंग छवि लूटत मिलेहु श्यामको नहीं पत्यानी ॥ जैसे तृषावंत जल अचवत वहतौ पुनि ठहरात। यह आतुर छवि लै उरधारति नैक नहीं त्रिपितात ॥ जो चकोर इकटक निशि चितवत याकी सरि सोउ नाहीं। ज्यों घृत होम वह्निकी महिमा सूर प्रगट या माहीं ॥ केदारो ॥ यद्यपि राधिका हरि संग। हावभाव कटाक्ष लोचन करत नानारंग ॥ हृदय व्याकुल धीर नाहीं वदन कमल विलास। तृषामें जल नाम सुनि ज्यों अधिक अधिकहि प्यास ॥ श्यामरूप अपार इत उत लोभ पुट विस्तार। सूरमिलत नहिं लहत कोऊ दुहुँनि वल अधिकार ॥ केदारो ॥ राधेहि मिलेहु प्रतीत न आवति।यद्यपि नाथ विधु वदन विलोकति दरशनको सुखपावति ॥ भरि भरि लोचन रूप परमनिधि उरमें आनि दुरावति । विरह विकल मति दृष्टि दुहूँदिशि सचिसरधा ज्यों धावति ॥ चितवति चकित रहति चित अंतर नैन निमेष न लावति। सपनो आहि कि सत्य ईश इह बुद्धि वितर्क वनावति ॥ कवहुँक करत विचार कौनहो को हरि केहि यह भावति । सूर प्रेमकी वात अटपटी मनतरंग उपजावति ॥ रामकली ॥ देखहु अनदेखेसे लागत। यद्यपि करति रंग भरे एकहि इकटक रहे निमिष नहिं त्यागत ॥ इत रुचि दृष्टि मनोज महासुख उत सोभा गुण अमित अनागत । वाढ्यो वैरै कर्ण अर्जुन ज्यों दुइ महँ एक भूलि नहिं भागत ॥ उत सन्मुखसी सावधान सजि इत सना ह अँग अँग अनुरागत। ऐसे सूर सुभट एलोचन अधिकौ अधिक श्याम सुख मांगत ॥ कान्हरो ॥ देखियत दोउ अहंकार परे। उत हरि रूप नैन याके इत मानहु सुभट अरे ॥ रुचिर सुदृष्टि मनोज महासुख इन इत एक करे। उन उत भूपण भेद विविध रचि अंग अंग धनुप धरे ॥ एअति रति रण रोष नखानत निमिष निखंग झरे। वाहु व्यथहि न वदत पुलक रुह सब अंग सरस चरे ॥ वैश्री ए अनुराग सूर सजि छिनु २ वढत खरे। मानहु उमँगि चल्यो चाहतहै सारँग सुधाभरे ॥ विहागरो ॥ नखशिखते अंग अंग रूप छवि देखि देखि नैना न अवाने। निशि अरु दिन एक टकही राखे पलक लगाइ न जाने ॥ छवितरंग अगनित सरिताए जलनिधि लोचन तृप्ति न माने। सूरदास प्रभुकी सोभाको अति लालिची रहे ललचाने ॥ विभास ॥ ललिता संग सखिनको लीन्हें। दंपति सुख देखत अति भावत एकटक लोचन दीन्हें॥प्यारी श्याम अंग की सोभा निदरे देख्योई चाहति। उत नागर नागरि नैननिको निदारि रूप अवगाहति ॥ उत उदार सोभाकी सींवा इत लोभहि नहिं पार। सूरश्याम अंग अंगकी सोभा निरखत वारंवार ॥ गुंडमलार ॥ निदरि अंग छवि लेति राधा। यह कहति कितिक सोभा करैंगे श्याम मेटिहौं आज मन सवै साधा ॥ उतहि हरि रूपकी राशि नहिं पार कहुँ दुहुँनि मन परस्पर होड कीन्हों । इतहि लुब्ध वै उतहि उदार चित्त दुहुँ नवल अंत नहीं परत चीन्हो ॥जुरे रणवीर ज्यों एकते एक सरस सुरत कोउ नहीं दोउ रूप भारी। सूर स्वामी स्वामिनी राधिका सरस निरस कोउ नहीं लखि लई नारी ॥ मारू ॥ रुँधे रति संग्राम खेत नीके। एकते एक रणवीर जोधा प्रवल सुरत नहिं नेक अति सवल जीके ॥ भौं ह कोदंड शर नैन जोधानु की काम छूटनि मानो कटाक्षनि निहारै । हँसनि दुज चमक करिवर नि लोहेन झकल नखन छत घात नेजा सँभारै॥पीतपट डारि कंचुकी मोचित करनि कवच सन्न हए छुटे तनते । भुजा भुज धरत मनो द्विरद शुंडिन लरत उर उरनि भिरे दोउ जुरे मनते ॥ लटकि लपटानि मानो सुभट लरि परे खेत रति सेज चुंचिताम कीन्हों । सूर प्रभु रसिक

प्रिय राधिका रसकिनी कोक गुन सहित सुख लूटि लीन्हों ॥ नट ॥ किसोरी अंग अंग भेटी श्यामहि। कृष्णतमाल तरल भुज शाखा लटकि मिली जैसे दामहि ॥ अचरज एक लता गिरि उपजै सोउ दीने करुणामहि। कछुक श्यामता साँवल गिरिकी छायो कनक अगामहि गिरिवर धरन सुरति रतिनायक रति जीते संग्रामहि। सूरकहै ये उभय सुभट विच क्यों जु वसै रिपु कामहि ॥ नट ॥ रसना युगलरस निधि वोलि। कनक वेलि तमाल अरुझी सुभुज वंधन खोलि ॥ भृंग यूथ सुधा किरनि मनो वन में आवत जात। सुरसरी पर तरनि तनया उमँगि तट न समात॥ कोक नद पर तरनि तांडव मीन खंजन संग।करति लाज शिखर मिलि युगम संग मरंग ॥ जलद ते तारा गिरत मनो परत पय निधि माहिं। युग भुजंग प्रसन्न मुख है कनक घट लपटाहिं ॥ कनक संपुट कोकिला रव विवस है दे दान। विकच कंज अनारलागि अधर लसि करत पयपान॥ दामिनी थिर घन घटाचर कवहुँ है एहि भांति। कवहुँ दिन उद्योत कवहूं होत अतिकहुराति ॥ सिंह मध्य सनाह मणिं गण सरससर के तीर। कमल मनो विननाल उलटै कछुकतीक्षननीर ॥ हंस सारस शिखर चढि दोउ करत नाना नाद। मकर निजपद निकट विहरत मिलन अति अह लाद ॥ प्रेम हित करि क्षीरसागर भई मनसा एक। श्याम मणिके अंग चंदन अमीके अविपेक ॥ सूरदास सखी सभा मिलि करत बुद्धि विचार। समय सोभा लगि रही मनो सूमको संसार ॥ रामकली ॥ सोभा सुभग आनन वोर। त्रासते तनु त्रसित तिरछे चितै देत अकोर॥निरखि सन्मुख कियो चाहत वदन विधुकी जोर। तुला विचलोकेशतौले गरुअ आनन गोर ॥ दरशपति रुचि मुदित मनसिज चपल दृग दृग कोर। कोस क्रीडत मीन मानों नीर नीरज भोर ॥ श्यामसुंदर नैन युग वर झलक कज्जल कोर। सुधा सर संकेत मानो कूप दानव वोर ॥ श्रवन मणि ताटंक मंजुल कुटिल कुंतल छोर। मकर संकट कामवापी अलक फंदनिडोर ॥ चिकुर अध नव मोति मंडल तरल लट तृण तोर। जनु विध्वंसित व्याल वालक अमी की झक झोर । श्रमस्वेद सीक र गुंड मंडित रूप अंबुज कोर। उमँगि ईपद यो श्रम तज्यो पीयूप कुंभ हिलोर ॥ हँसत दशनानि चमक विज्जुल लसित कठिन कठोर। मुदित मधुपर विंदगन मकरंद मध्यन थोर ॥ निरखि सोभा समर लज्जित इंदु भयो भ्रम भोर। सूर धन्य सुनव किसोरी धन्य नंद किसोर ॥ विलावल ॥ धन्य कान्ह धनि राधा गोरी। धनि वह भाग सुहाग धन्य वह धन्य नवल नवला नव जोरी ॥ धन्य यह मिलनि धन्य यह वैठनि धन्य अनुराग नहीं रुचि थोरी। धनि यह अरस परस छवि लूटनि महाचतुर सुख भोरे भोरी ॥ प्यारी अंग अंग अवलोकति पिय अव लोकत लगत ठगोरी । सूरदास प्रभु रीझि थकित भए नागरि पर डारत तृण तोरी ॥ धनाश्री ॥ नागरि छवि पर रीझत श्याम। कवहुँक वारतहैं पीतांवर कवहुँक वारत मुकुतादाम ॥ कवहुँक वारतहैं कर मुरली कवहुँक वारत मोहननाम। निरखिरूप सुख अंत लहत नहिं तनु मनुवारत पूरणकाम ॥ वारंवार सिहात सूर प्रभु देखि देखि राधासी वाम। इनको पलकओट नहिं करिहौं मन इह कहत वासरहु याम॥ विलावल ॥श्याम निरखि प्यारी अंग अंग।सकुचि रहत सुखतन नहिं चितवत जेहि वश रहत अनंत अनंत ॥ चपलनैन दीरघ अनियारे हाव भाव नाना मतिभंग। वारों मीन कोटि अंबुज गण खंजन वारत कोटि कुरंग ॥ लोचन नहिं ठहरात श्यामके कवहुँ अंग नैना सुख रंग। सूरदास प्रभु यों प्यारी वश ज्यों वशडोर फिरत सँग चंग॥ टोडी ॥श्याम भए राधा वश ऐसे। चातक स्वाति चकोर रहत ज्यों चक्रवाक रवि जैसे ॥ नाद कुरंग मीन जलकी गति

ज्यों तनुके वश छाया। एकटक नैन अंग छबि पोहै थकित भए पतिजाया॥ उठे उठत बैठे बैठ तहैं चले चलत सुधि नाहीं। सूरदास बड़भागिनि राधा समुझि मनहि मुसुकाहीं॥ आसावरी॥ निरखि श्याम प्यारी अंग सोभा मन अभिलाष बढ़ावतहै। प्रिया अभूषण मांगत पुनि पुनि अपने अंग बनावतहै॥कुंडल तट तरिवनलै साजत नासा वेसरि धारतहै। वेंदी भाल मांग शिर पारत वेनी गूंथि सँवारतहै॥प्यारी नैननिको अंजनलै अपने लोचन अँजतहै। पीतांबर वोढनी शीशदे राधाको मन रंजतहै॥ कंचुकि भुजनि भरत उर धारत कंठ हमेल भ्रजावतहै। सूरश्याम लालच त्रिय तनुपर करि शृंगार सुखपावतहै॥ नट॥ श्यामा श्याम छविकी साध। मुकुट मंडल पीतपट छवि देखिरूप अगाध॥ प्रिया हाहा करति पुनि पुनि देहु प्रीतममोहि। अंग अंग सँवारि भूपण रहति वह छवि जोहि॥ काछि कछनी पीत पटु कटि किंकिनी अतिसोभ। हृदय वनमाला बना वन देखि छवि मनलोभ॥ श्रवन कुंडल धारि सोभा शीश रचि श्रीखंड। सूरश्याम सुहागिनी रुचि कनक करलै दंड॥ रागिनीकिर्नाटकी॥ श्रीगोपाललालजी वंसी नेक मैं पाऊं। हो मदन गुपाल तुम्हारी मुरली मैं नेकु बजाऊं॥ टेक॥ मुरली बजाऊं रिझाऊं गिरिधर गाऊं न आज सुनाऊं। तेइ तेइ तान तुमसी गीतगावत जेइ कर्णाटी गौरी मैं गाय सुनाऊं॥ हो०॥ तहांलगि गान गाऊं मोहन जहां लगि सात सुरन मैं पाऊं। सुरन विमान थकित करि राखों कालिंदी स्थिर नीर वहाऊं॥ हो०॥ वेनी शीशफूल पहिरो हरि मैं शिर मुकुट वनाऊं। तुम वृषभानु सुता ह्वै बैठो मैं नंदलाल कहाऊं॥ हो०॥ तिहारे आभूषण मैं पहिरौं अपने तुम्हैं पहिराऊं। तुममाननिको मान करि बैठो मैं गहि चरण मनाऊं॥ हो०॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको भक्तिभाव नीके करि पाऊं। कीजै कृपा अनेक अनुचर पर अनुपम लीला गाऊं॥ हो०॥ नट॥ तिहारी लाल मुरली नेक बजाऊं। जो जिय होत प्रीति कहिबेकी सो धरि अधर सुनाऊं॥ जैसी तान तुम्हारे मुखकी तैसिय मधुर उपाऊं। जैसे फिरत रंध्र मगु अंगुरी तैसे मैंहुं फिराऊं॥ जैसे आपु अधर धरि फूंकत मैं अधरनि परसाऊं। हाहाकरति पाय हौं लागति वांस वँसुरिया पाऊं॥ सारंग नट पूरवी मिलैकै राग अनूपम गाऊं। तुम्हरे भूषण मोको दीजै अपने तुमहि वनाऊं॥ तुम बैठो दृढ मान साजिकै मैं गहि चरण मनाऊं। तुम्हराधेहो माधोई माधो ऐसी प्रीति जनाऊं॥ यह अभिलाष बहुत मेरे जिय नैननि इहै देखाऊं। सूरश्याम गिरिधरन छवीले भुजभरि कंठ लगाऊं॥ नट॥ हरिजी मुरली तुम्हैं सुनाऊं। तुम सुरपुर वो प्राणनाथ प्रभु हौं अँगुरियन चलाऊं॥ मधुरे सुर गति राग रागिनी भलीतान उपजाऊं। जेहि जेहि भांति रिझहु नँदनंदन तेहि तेहि भांति रिझाऊं॥ अंश वाहु धरि करि विक्रम ज्यों ते मनुसुखहो पाऊं। सूरदास अटक्यो मन चलै न पगु मनअभिलाष वढाऊं॥ नट॥ प्यारी कर वांसुरी लई। सन्मुख होइ तुम सुनहु रसिक पिय ललित त्रिभंग भई॥ उठत राग रागिनी तरंगन छितु छितु उपजि नई। आलवाल नंदलाल श्रवनवर जनु मोहनी वई॥ नमित सुधाकर वदन अमित छवि मनमोहन चितई। मानहुँ मत्त चकोर मेचक मृग तनु सुधि बिसरि गई॥ कटि पीतांवर छाइ नाह को छल वलकै रिझई। सूर सखी हँसि कमल नैन कह राधे अंक दई॥ गूजरी॥ मुरली लई करते छीनि। तासमय छवि कही जाति न चतुर नारि नवीनि। कहति पुनि पुनि श्याम आगे मोहिं देउ सिखाइ। मुरलीपर मुख जोरि दोऊ अरस परस बजाइ॥ कृष्ण पूरत नाद उछरत प्यारी रिसकारि गात। वार वारहि अधर धरि धरि वजत नाहिं अकुलात॥ प्रिया भूषण श्याम

पहिरत श्याम भूषण नारि। सूर प्रभु करि मानु बैठे त्रिय कराति मनुहारि॥ बिलावल॥ कहति नागरी श्याम सों तजौ मानु हठीली। हमते चूक कहा परी त्रिय गर्व गहीली॥ हँसतहि में तुम रिस कियो कहा प्रकृति तुम्हारी। वार वार कर धरतिहैं कहि कहि सुकुमारी॥ वृथा मान नाहिं कीजिये शिर चरणन धारति। आनन आनन जोरिकै पिय मुखहि निहारति॥ निठुर भईहौ लाड़िली कबके हम ठाढे। तुम हम पर रिसि करतहौ हमहैं तुव चाढे॥ श्याम कियो हठ जानिकै इक चरित बनाऊं। सुनहु सूर प्यारी हृदय रस विरह उपाऊं॥ बिलावल॥ लाल निठुर ह्वै बैठि रहे। प्यारी हाहा करति न मानत पुनि पुनि चरण गहे॥ नहिं बोलत नाहिं चितवत मुखतन धरणी नखन करोवत। आपु हँसति पुनि पुनि उर लागत चकित होत मुख जोवत॥ कहा करत एबोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावहु। सूरश्याम मुख कोटि चंद्रछबि हँसिकै मोहिं देखावहु॥ धनाश्री॥ नागरि हँसति हृदय डरभारी। कबहुँ अंक भरि लेति उरज बिच कबहुँ करति मनुहारी॥ मान करत नीके नहिं लागै दूरि करौ यह ख्याल। नेक नहीं चितवत राधा तन निठुर भए नँदलाल॥ शीश धरति चरणनि लै पुनि पुनि त्रियको रूप निहारत। सूरदास प्रभु मान धरचो दृढ़ धरणी नखन विदारत॥ गुंड॥ निरखि त्रियरूप पिय चकित भारी। किधौं वै पुरुष मैं नारिकी वै नारि माहिंहौं पुरुष तनु सुधि विसारी॥ आप तन चितै शिर मुकुट कुंडल श्रवन अधर मुरली माल वन विराजै। उतहि प्रियरूप शिर मांग वेनी सुभग भाल वेंदी विंद महाछाजै॥ नागरी हठ तजौ कृपाकरि मोहिं भजौ परी कह चूक सो कहौ प्यारी। सूरप्रभु नागरी रस विरह मगन भई देखि छवि हँसत गिरिराज धारी॥ धनाश्री॥ निरखत पिय प्यारी अंग अंग विरह सोभा। कबहूँ पियचरण परति कबहूँ भुज अंक भरति कबहूँ जिय डरति वचन सुनिवेकी लोभा॥ कबहुँ कहति पियसों पिय कबहुँ कहति प्यारी हो हाहा करि पाँइ परति विकल भई वाला। कबहुँ उठति कबहुँ बैठ पाछे ह्वै रहति कबहूं आगे ह्वै वदन हेरि परी विरह ज्वाला॥ काहे तुम कियो मान वोले विन जात प्रान दंपति हैं संग दशा ऐसी उपजाई। रीझे प्रिय सूरश्याम अंकम भरि लई वाम विरह द्वंद्व मेटि हरप हृदय उपजाई॥ धनाश्री॥ प्रिया पिय लीन्ही अंकम लाइ। खेलतमें तुम विरह बढ़ायो गई कहा वितताइ॥ तुमही कह्यो मान करिवेको आपुहि बुद्धि उपाइ। काहे विवस भई विन कारण ऐसी गई डराइ॥ सुन प्यारी हम भाव बतायो अंतर गए जनाइ। वारंवार अलिंगन दीन्हो अवहिं रही मुरझाइ॥ सींची कनकलता सूरज प्रभु अमृत वचन सुनाइ। अति सुखदै दुखको विसरायो राधारवन कन्हाइ॥ गुंडमलार॥ श्याम तनु पिया भूपण विराजै। कनक मणि मुकुट कुंडल श्रवन वनमाल अधर मुरली धरे नारि छाजै॥ निरखि छवि परस्पर रीझि दोउ नारि वर गयो तजि विरह उर प्रेम पागे। सूरप्रभु नागरी हँसति मन मन रसाति वसत मन श्यामके वड़ भागे॥ नट॥ नागरि भूषण श्याम बनावत। श्रीनागर नागरि अँग सोभा किवो निरखि मन भावत॥ श्यामा कनक लकुट कर लीन्हे पीतांवर उर धारे। उत गिरिधर नीलांवर सारी घूंघट वोट निहारे॥ वचन परस्पर कोकिल वाणी श्याम नारि पतिराधा। सूर स्वरूप नारि पति काछे पति नारी तनु साधा॥ नट॥ नीके श्याम मान तुम धारचो। तुम बैठे दृढ़मान ठानि मैं देख्यो मान तुम्हारो॥ यह मन साध बहुतही मेरे तुम विनु कौन निवारै। नागरि पियतन अपनी सोभा वारहि वार निहारै॥ वेनी मांग भाल वेंदी छवि नैननि अंजन रंग॥ सूर निरखि पिय घूंघट की छवि पुलकनमावति अंग॥ धनाश्री॥ कुंजवन गमन दंपति विचारै॥ नारिको वेसकरि नारिको मनहि हरि

मुकुर लै भावती छवि निहारै॥ भामिनी अंग वह निरखि नटवर भेष हँसतही हँसत सब भेटि डारे॥ सहज अपनो रूप धरो मन भावती और भूषण तुरत अंगधारे। त्रियाको रूप धरि संग राधा कुँवरि जात ब्रज खोरि नहिं लखत कोऊ। सूर स्वामी स्वामिनी वने एकसे कोउ न पटतर अरस परस दोऊ॥ गौरी॥ नँदनंदन त्रिय छबि तनु काछे। मनों गोरी साँवरी नारि दोउ जात सहज में आछे॥ श्याम अंग कुसुँभीनई सारी फलगुंजाकी भांति। इत नागरी नीलांवर पहिरे जनु दामिनि घन कांति॥ आतुर चले जात वनधामहि अतिमन हरष वढ़ाए। सूरश्याम वा छविको नागरि निरखति नैन चुराए॥ कान्हरो॥ मनही मन रीझतिहै राधा वार वार पिय रूप निहारै। निरखि भाल वेंदी सेंदुरकी वा छवि पर तन मन धन वारै॥यह मन कहति सखी जिन देखे बूझे पर कहा कैहो। तिहू भुवन सोभा सुखकी निधि कैसे उनहि दुरैहो॥ पग जेहरि विछिअनकी झमकनि चलत परस्पर वाजत। सूरश्याम श्यामा सुख जोरी मणि कंचन छवि लाजत॥ कल्याण॥ श्यामा श्याम कुंजवन आवत। भुज भुज कंठ परस्पर दीन्हें यह छवि उनहीं पावत॥ इतते चंद्रा वली जात ब्रज उतते ए दोउ आए। दूरिहिते चितवत उनही तन इकटक नैन लगाए॥ एक राधिका दूसरिकोहै याको नहिं पहिचानौं। ब्रज वृषभानु पुरा युवतिनको इक इक करि मैं जानौं॥ यह आई कहुँ और गाँवते छवि सांवरी सलोनी। सूर आजु इह नई वतानी एक अंग न विलोकी॥ ॥ सोरठ॥ राधा सकुचि श्याम मुख हेरति। चंद्रावली देखिके आवति ब्रजहीको पियफेरति॥ जाहु जाहु मुखते कहि भाषति करते कर नहिं छूटति। उतहि सखी आवत सकुचानी इतहि श्याम सुख लूटति॥दुख सुख हरष कछू नहिं जानति श्याम महारस माती।सूर उतहि चंद्रावलि इकटक उनहीके रँग राती॥ गौरी॥ यह वृषभानु सुता वह कोहै। याकी सरि युवती कोउ नाहीं यह त्रिभुवन मनमोहै॥ अतिआतुर देखनको आवति निकट जाइ पहिचानो। ब्रजमें रहति किधौं कहुँ औरै बूझेते तव जानो॥ यह मोहनी कहांते आई परम सलोनी नारि। सूरश्याम देखत मुसुकानी करी चतुरई भारि॥ गौरी॥ इनते निधरक और नकोइ। कैसी बुद्धि रचीहै नोखी देखी सुनी नहोइ॥ इह राधा सों हाथ विधाता बुद्धि चतुरई ठानी। कैसे श्याम चुराइ चली लै अपने भूषण ठानी॥ और कहा इतिको पहिचाने सोपै लखे न जात। सूरश्याम चंद्रावलि जाने मनहीं मन मुसुकात॥ ॥ कानरो॥ सकुच छांडि अब इनहि जनाऊं। एतो चले आपने काजहि मैं काहेन समझाऊं॥ मनहीं मनमें जीति जाहिंगे जानिं बूझि निदराऊं। यह चतुरई काछिके आए सो अब प्रकट देखाऊं॥ वड़े गुणज्ञ कहावत दोऊ इनको लाज लजाऊं। सूरश्याम राधाकी करनी महिमा प्रगट सुनाऊं॥सारंग॥कहि राधा ये कोहैरी। अति सुंदरि साँवरी सलोनी त्रिभुवन जन मन मोहैरी॥ और नारि इनकी सरि नाहीं कहौ न हम तन जोहैरी। काकी सुता वधू है काकी काकी युवती धौहैरी॥ जैसी तुम तैसीहैं एऊ भली वनी तुम सोहैरी। सुनहु सूर अति चतुर राधिका एई चतुर नीकी गौहैरी॥ ईमन॥ मथुरा ते ये आई है। कछु सम्बन्ध हमारा इनसों ताते इनहि वुलाई है॥ ललिता संग गई दधि वेचन उनही इनहि चिन्हाई है। उहै सनेह जानिरी सजनी भवन आजु हम आई है॥ तवहीं की पहिचान हमारी ऐसी सहज सुभाई है। सूर मोहिं देखन इहां आवत आपु संग उठि धाई है॥ सोरठ॥ इनको ब्रजही क्यों न वुलावहु। की वृषभानु पुराकी गोकुल निकटहि आनि वसावहु॥ वोऊ नवल नवल तुमहूं हौ मोहन को दोउ भावहु। मोको देखि कियो अति घूंघट काहे न लाज छुड़ावहु॥ यह अचरज देख्यो नहिं कवहूं युवतिहि युवति दुरावहु। सूरसखी

राधा सों पुनि पुनि कहति जु हमहि मिलावहु ॥ हमीर ॥सांवरे तनु कुसुंभी सारी सोहत है नीकी री । मानो रतिपति सँवारि बनी रवनी जीकीरी ॥ राधाते अतिहि सरस श्याम देखि पावैरी । ऐसी यह नारि और नारि मन चुरावैरी ॥ घूंघट पट वदन ढांकि काहे इन राख्यो री । चितवहु मोतन कुमारि चंद्रावलि भाष्योरी ॥ आपुहि पट दूरि कियो तरुणी वदन देखैरी । मनही मन सफल जानि जीवन जग लेखैरी ॥ नैन नैन जोराति नाहिं भावसों लजानैरी । सूरश्याम नागरि मुख चितवत मुसुकानैरी ॥ बिलावल ॥ मथुरा में वस वास तुम्हारो । राधा ते उपकार भयो यह दुर्लभ दरशन भयो तुम्हारो ॥ वार वार कर गहि गहि निरखत घूंघट वोट करो किन न्यारो । कवहुँक कर परसत कपोल छुइ चुटकि लेत ह्यां हमहि निहारो ॥ कछु मैं हूं पहिचानाति तुमको तुमहि मिलाऊं नंददुलारो । काहेको तुम सकुचति हो जी कहो काह है नाम तुम्हारो ॥ ऐसी सखी मिली तोहिं राधा तो हमको काहे न विसारो । सूरदास दंपति मन जान्यो यासे कैसे होत उवारो ॥ रामकली ॥ राधा सखी मिली मन भाई । जवते इनसों नेह लगायो बहुत भई चतुराई ॥ और भई इतने तुमको सखी गृहजन सों निठुराई । काहूके मनमें नहिं आनति हमहुं सवन विसराई ॥ तुमही कुशल कुशल हैं एऊ आपु स्वारथी माई । सूर परस्पर दंपति आतुर चतुर सखी लखि पाई ॥ रामकली ॥ इह सखि अवलों कहां दुराई । राति दिवस हम कवहुँ न देखी अव जु कहां ते आई ॥ त्रिभुवनकी सोभा सव गुणनिधि है विधि एक उपाई । विद्यमान वृषभानु नंदिनी सहचरि सव सुखदाई ॥ अपने मन तकि तकि तनु तोलति विय जन सुंदर ताई । दुसर रूपकी राशि राधिका कहो न साध पुराई ॥ राचिरही रस सुरति सूर दोउ निरखी नैन निकाई । चान्हे हो चले जाहु कुंज गृह छांडि देहु चतुराई ॥ रामकली ॥ ऐसी कुँवरि कहां तुम पाई । राधा हूंने नख शिख सुंदरि अवलों कहां दुराई ॥ काकी नारि कौनकी वेटी कौन गाउँते आई । देखी सुनी न व्रज वृंदावन सुधि वुधि रहतिपराई ॥ धन्य सुहाग भाग याको यह गुनतिनके मनभाई । सूरदास प्रभु हरषि मिले हँसि ले उर कंठ लगाई ॥ गुंडमलार ॥ नँद नंदन हँसे नागरी मुखचितै हरषि चंद्रावलि कंठ लगाई । वामभुज रवनि दक्षिण भुजा सखी पर चले वन धाम सुख कहि नजाइ ॥ मनो विवदामिनी वीच नव घन सुभग देखि छवि कामरति सहित लाजे।किधौं कंचनलता विच तमाल तरु भामिनी विच गिरिधर विराजे । गए गृह कुंज अलि गुंज सुमनन पुंज देखि आनंदभरे सूर स्वामी।राधिका रवन युवती रवन मन हरन निरखि छवि होत मन काम कामी॥ [illegible]॥वरेरी हैं री नयननिमें पटइंदु । नँदनंदन वृषभानु नंदिनी सखी सहित सोभित जगवंदु । द्वादशही पतंग शशि सो वीस पट फणि चौवसि धातु चतुरंग छंदु ॥द्वादशही पकु विंवसों वानँव वज्रकन पट कमलनिमुसिक्यात मंदु॥द्वादशही मृणाल कदली खंभ द्वादश द्वादश ते मातु लेहि गिनंदु ॥ द्वादशही सायक द्वादश चाप चपलई खग व्याली समाधुरी फंदु । चौविसही चतुष्पद शोभा अति कीनी मानों चलत चुवतकर भामकरंदु ॥ नील गौर दामिनि विच पीतघन षोडश राजत अनूपम छवि श्रीगोकुल चंदु । साठि जलजही अरु द्वादश सरवर अंगही अंग सर सरस कंदु । सूरश्याम पर तनु मनुहिवारते ललिता इति देखि भयो आनंदु॥ केदारो॥कुंज सुहावनो भवन वान ठानि वैठे राधा वरन । रवन वरन कुसुम प्रफुल्लित शशिकी किरनि जगमगात तैसोइ वहे त्रिविध पवन ॥ आलिंगन पिकमंगल गावत ध्वनि सुनि सुनि मनहि भावत देखत दंपति विवस अयन । सूरदास प्रभु पिय प्यारी दोउ राजत साजत सखी वारति रति पति

शयन ॥ विलावल ॥ सँग सोभित वृषभानु किसोरी। सारंग नैन बैन वर सारंग सारंग वदन कहै छवि कोरी ॥ सारंग अधर सधर कर सारंग सारंग जाति सारंग मति भोरी । सारंग दशन वसन पुनि सारंग सारंग वसन पीतपट डोरी ॥ सारंग चरन पीठपर सारंग कनक खंभ अहि मनहुँ चढोरी। सारंग वरन पीठि पर सारंग सारंग गति सारंग कटि थोरी॥ सारंग पुलिन रजनी रुचि सारंग सारंग अंग सुभग भुज जोरी। विहरत सघन कुंज सखि निरखति सूर श्याम घन दामिनि गोरी॥ ॥ विलावल ॥कुंज भवन राधा मन मोहन।रति विलास करि मगन भए अति निरखत नैन लजोहन॥ त्रियतनु को दुख दूरि कियो पिय दैदै अपनी सोहन। वार वार भुज धरि अंकम भरि मिलि बैठे दोउ गोहन॥पीतांबर पटसों मुख पोंछत हरषि परस्पर जोहन। सूरश्याम श्यामा मन रिझवत पीन कुचनि टकटोहन ॥ विहागरो ॥ बनहि धाम सुख रैनि विहाई । तैसिय नवल राधिका नागरि तैसेइ नवल कन्हाई ॥ जैसोइ पुलिन पवित्र यमुनको तैसोइ मंद सुगंध। जैसोइ कंठ कोकिला कुहुकनि तैसोइ सुख सम्बंध ॥ रति विहार करि पिय अरु प्यारी प्रात चले ब्रजधाम। सूरदास दोउ बांहां जोरी राजत श्यामा श्याम ॥ ललित ॥ नवल निकुंज नवल रस दोऊ राजत हैं रंग भीने। कुसुमनि सेज भोर उठि आवत आलसयुत अंशनि भुज दीने ॥ अरुन नैन कुच रेख विराजत श्रम जल वसन पलटि तनु लीने। सूरज प्रभु पिय प्यारीको सुख निरखत सखिन सहित ललिता दृगदीने ॥ कान्हरो ॥ वरन वरन वादर मनहरन उदय करन वनधाम ते निकसत ऐसे दोऊ लागे। श्याम घटा मध्य मानो दामिनि भामिनी राजति लाजति दुरिजाति कबहुँ प्रगट होत हारी तामें अरुन भए नैन सो सबै निशिके जागे॥ मोर मुकुट पीतवसन इंद्रधनुष बीच बीच मंद मंद गरजि बोलनि पिय रंग अनुरागे। सूरदास प्रभु पियप्यारी की छवि गावत पावत कवि उपमा जे तेउ वडभागे ॥ अडाने ॥ बांहांजोरी निकसे कुंज ते प्रात रीझि रीझि कहैं बात।कुंडल झलमलात झलकत विवि गात चकचौंधीसी लागति मेरे इन नैनानि आली रपटत पगनहिं ठहरात ॥ राधा मोहन बने घन चपला ज्यों चमकि चमकि मेरी पूतरीन में समात।सूरदास प्रभुके वै वचन सुनहु मधुर मधुर अब मोहिं भूलीरी पांच और सात॥ विलावल ॥नवलकिसोर किसोरी बांहांजोरी आवतहैं रति रंग अनुरागे कबहुँ चरन गति डगाति लगत छवि नैन बैन अलसात जम्हात ऐंड़ात गात आनंद निसा सुख जागे॥ वानक देखत रीझि रही हौं चंदन बंदन माल विना गुन अंजन पीक पलटि लागे। सूरदास प्रभु प्यारी राजत आवत भ्राजत बनेहैं मरगजे वागे॥सारंग॥अरुझि रहे मुकुताहल निरवारत सोहत घूँघर वारे वार।रतिमानी सँग नँद नंदन के छूटे बंद कंचुकी टूटे हार।निशिके जागे दोउ नैना ढरकि रहे चलति जोबन मदभार।सूरश्याम संग इह सुख देखत रीझे बारंबार ॥ विलावल ॥ नवल श्याम नवला श्रीश्यामा दोउ राजत बांहांजोरी चलेजात ब्रजधामा।या छविकी उपमा देवेको त्रिभुवन नहीं उपमा दामिनि घन पटतर दीवेको सकुचत कविलिएनामा॥सुधा शरीर परस्पर दोऊ सुखदायक दिन जामा। सूरदास प्रभु नागर नागरि जीतेरतिपति कामा ॥ललित॥ दोउ वनते ब्रजधामगये। रतिसंग्राम जीति पिय प्यारी भूषण सजति नए॥वै ब्रजगए आपु अपने गृह चितते कोउ न टारत।मन वाचा कर्मना एक दोउ एको पल न विसारत। जैसे मीन नीर नहिं त्यागत एखंडित ए पूरन।सूरश्याम श्यामा दोउ देखोइ तको उत को ऊन अधूरन॥धनाश्री॥बहुरि फिरि राधा सजति शृंगार। मानहु काम हार पहिरावति अंग रणजीते सुरति अपार ॥ कटि तट सुभटनि देत रसन पट भुज भूषण उरहार। करकंकन काजर नकवेसरि दीन्हो तिलक लिलार ॥ वीरा विहँसि देत अधरनिको सन्मुख सहे प्रहार। सूर

दास प्रभुके जु विमुख भए वाधति कायरवार ॥ कान्हरो ॥ आज अति राधा नारि वनी । प्रति प्रति अंग अनंग जंते रसवश त्रैलोक्य धनी॥सोभित केश विचित्र भांति द्युति शिखि शिखंड हरनी॥रची मांग सभाग रागिनिधि कामधाम सरनी॥अलक तिलक राजत अकलंकित मृगमद अंक रवनी॥खुभी नजराव फूलद्युति यों मनौं दुद्धर गति रजनी ॥ भौंह कमान समान वान मनो हैं युग नैन अनी । नासा तिलक प्रसून विंवाधर अमल कमल वदनी ॥ चिवुक मध्य मेचक रुचि राजति विंद कुंद रदनी । कंवु कंठ विधि लोक विलोकत सुंदरि एक गनी ॥ वाँह मृणाल लाल कर पल्लव मद गज गति गवनी । पतिमन मणिं कंचन संपुट कुच रोम राजितठनी ॥ नाभि भवँर त्रिवली तरंग गति पुलिन तुलिन ठटनी । कूपकटि प्रथु नितंव किंकिनि युत कदलिखंभ जघनी ॥ रचि आभरण शृंगार अंग सजिं रति पति ज्यों सजनी । जीते सूरश्याम गुण कारण सुख न मुरचो लजनी ॥ विलावल ॥ नँदनंदन वश कीन्हे राधा भवन गए चित नैक न लागत। श्यामा श्याम रूपमं दिर सुख अंतरते सो नेक न त्यागत ॥ जा कारण वैकुंठ विसारत निज स्थल मनमें नहिं भावत । राधा कान्ह देह धरि पुनि पुनि या सुखको वृंदावन आवत ॥ विछुरन मिलन विरहनर सुख नवतन दिन दिन प्रीति प्रकाशत । सूरश्याम श्यामा विलास रस निगम नेति नेति नित भासत ॥ टोडी ॥ निगम नेति नेति गावतहैं जाको । राधा वश कीन्होंहै ताको ॥ निशि वनधाम संग रहे दोऊ । एकै सँग नैक टरैं न कोऊ ॥ प्रात गए घर घर रस पागे । अरस परस दोऊ अनुरागे ॥ अपनी अपनी दशा विचारैं । भागवड़े कहि वारंवारै ॥ प्यारी फेरि अभूषण साजति । वैठी रंगमहल में राजति ॥ ज्यों चकोर चंद्राको आतुर । त्यों नागरि वश गिरिधर चातुर ॥ आये उझकि झरोखे झांक्यो॥ करत शृंगार सुंदरी ताक्यो ॥ जालरंध्र मग नैन लगायो । सूरश्याम मनको फलपायो ॥ ॥ टोडी॥आधो मुख नीलांवर सों ढांकि विथुरी अलकैं सोहैं॥एकदिशा मनो मकर चाँदिनी एक दिशा सघन वीजरी ऐसेहरि मनमोहैं॥कवहुँक करपल्लवनसों केश निरुवारति पाछेलैडारति निकसत शशि संपूरण सन्मुख जव जोहैं। सूरदास प्रभु यह छवि न्यारे दुरि देखतहैं त्रिभुवनमें उपमा सो कोहै ॥ ॥ टोडी ॥ एक कर दर्पण एक कर अचरा कजराहि सँवारति ललना मुख कालिमदूरि करतिहै उलटि भँवर फिरि कमल परत।शीशफूल अति राजत नगानि जड्यो ताकी उपमा कहे शेष शशि मणि मनो वरत ॥ करनफूल करननिहि सँवारति अलकैं निरवारति वंदन विंदु लीला टकरत। सूरश्याम दुरि देखत दर्पणको मुख एकटक ते पलकहु नटरत ॥ गुंडमलार ॥ कराति शृंगार वृप भानु वारी। रहे एकटक जाल रंध्र मग हेरिके श्याम मन भावती परमप्यारी ॥ कवहुँ वैनी रचाति फूलसों मिलै कच कवहुँ रचि मांग मोती सँवारै । कवहुँ राखति शीशफूल लटकाइके कवहुँ वंदन विंदु भाल भारै ॥ कवहुँ केसरि आड रचति दर्पण हेरि कवहुँ भ्रूनिरखि रिसकरि सकोरै। निरखि अपनो रूप आपुही विवस भई सूर परछाँहको नैन जोरै ॥ टोडी ॥ इह सुंदरी कहांते आई। वार वार प्रतिविंव निहाराति नागरि मन मन रही लुभाई ॥ करते मुकुर दूरि नाहिं डाराति हृदय माँझ कछु रिस उपजाई। देखै कहूं नैन भरि याको नागर सुंदर कुँवर कन्हाई ॥ मेरी कहा चलै या आगे यहधौं आजु अरस परसते आई । सूरदास याको या व्रजमें ऐसीको वैरानि जो ल्याई ॥ हमीर ॥ मुकुर छांह निरखि देहकी दशा गँवाइ। वोली धौं कौने की आपुनही गमन कियो ऐसीको वैरानिहै या व्रजमें माइ ॥ विथकी अंग अंग निरखि वारवारहै परखि ललिता चंद्रावालि कह इतनी छविपाइ। मनमें कछु कहन चहै देखतही ठठुकिरहै सूरश्याम निरखत दुरी

तनु सुधि बिसराइ॥ बिलावल ॥कहति छाँहसों नागरी कोहै तू माई। मिली नहीं ब्रजगाँव में री कहो कहांते आई॥नाम कहाहै सुंदरी कहि सोंहदिवाई। कहौ न मेरे साथहैं मुख वचन सुनाई ॥ दिननि हमहुँ तुम सरवरी तुव छवि अधिकाई। और संग नहिं कोउ लई यह कहि डरपाई ॥ जानति हौं यह नाहिं सुनी ह्यांकी अधमाई। अभरन लेत छिडाइकै ब्रज ढीठ कन्हाई॥ सदन जाहु मेरे कहे पटु अंग छपाई। सूरश्याम जो देखिहैं करिहै वरिआई ॥ धनाश्री ॥ मैं उनके गुण नीके जानाति। सदन जाहु मर्यादा जैहै कह्यो न काहे मानति॥ अपनी दशा कहौं तो आगे जैसी विपति वनाइ। मथुरा चली जाति दधि वेचन घेरि लई उन आइ॥ गोरस लियो अभूषण छीन्यो तुम एक हम अनेक । सूरश्याम जो देखन पैहै करिहै अपनी टेक॥ बिलावल ॥ तेरे हित को कहतिहौं मानो जिनि मानो। तू आई है आजुही उनको का जानो॥ऐसो ढीठ नहीं कहूं त्रिभुवनमें माई। नारि पराई देखिकै हँसि लेत बोलाई ॥ सो अपने सहजहि मिलै उनके गुण ऐसे। भूषण लेत मँगाइके औरो गुण नैसे । काहूको नाहिं डरपही मथुरापति धरकै । मनको भायो करत है कवहूं नाहिं हरकै॥ तुम सुंदरि काकी वधू वर जाहु सवारी। सूरश्याम सुनि सुनि हँसै मनही मन भारी॥ मारू ॥नागरी चरित पिय चकित भारी। अंगकी छवि निरखि प्रथमही विवस ह्वै प्रतिबिंब निरखत देह सुधि बिसारी ॥ एक राधा दूसरी वाहि जानि जिय नागरी पास आवत लजाही। नैन ठहराइ ठहराइ पुनि पुनि रहै कहै नाहिं कछू हरषत डराही॥ पुनि उठत जागि देखै मुकुरनारि कर ललचात अंकभरि लैन लोरै । सूर प्रभु भावती के सदा रस भरे नैन भरि भरि प्रिया रूप चोरै॥गुंडमलार ॥धन्य हरि नैन धनि रूप राधा। धन्य वह मुकुर धनि धन्य प्रतिबिंब मुख धन्य दंपति रहति भेप आधा॥धन्य शृंगार धनि धन्य निरखनि श्याम धन्य छवि लूटि लूटत मुरारी। सूर प्रभु चतुर चतुरी नवल नागरी रहै प्रतिबिंब पर नैन जोरी॥ केदारो ॥ श्यामा जू आपनो रूप देखि रीझि रीझि नेकहु दर्पण दूरि न करति। अपनी छवि जु निहारति अपनों तन मन वारति विवस ह्वै प्रतिबिंब के पांइन परति ॥ कवहूँ श्यामकी सकुच मानति यह जिय अनुमानति यासों जिनि प्रीति करै एही डर डराति। सूरदास प्रभु प्यारी की छवि निरखत न्यारे ह्वै दृष्टि न इत उत टरति ॥ आसावरी ॥ नाम काह सुंदरी तुम्हारो क्यों मोसों नहिं बोलति हौ। हँसे हँसति चितए चितवति तुम तनु डोलै तनु डोलति हौ ॥ परमचतुर मैं जानाति तुमको मोपर भौंह मरोरति हौ। लटकति सुभग नासिका बेसरि पुनि पुनि वदन सकोरति हौ॥ अरुन अधर चित हरन चिवुक अति दामिनि दशन लजावतिहौ। ऐसे वचन मुखकी माधुरी काहे न हमहि सुनावतिहौ॥ कहौ वचन काकी तुम घरनी काके मनको चोरतिहौ । सुनहु सूर सहजहि कीधौं रिस मोसों लोचन जोरतिहौ ॥ सोरठ ॥ कछु रिस कछु नागरि जिय धरकी। यह तो जोवन रूप गहीली संका मानति हरकी॥ यह विपरीत होतहै चाहत ब्रज यह आयसुमानी। यह तौ गुणनि उजागरि नागरि वैतो चतुर बिनानी॥कर दर्पण प्रतिबिंब निहारति चकित भई सुकुमारी। सूरश्याम अंग निरखत वा छवि मग नागरि भोरी भारी॥बिलावल॥सुता विवस वृषभानुकी देखी गिरिधारी। लोचन एकटक दैरही प्रतिबिंब निहारी ॥ अपनी छवि पर आपनो तन मन धन वारै। वार वार हाहा करै त्रिय नाम न सारै॥ बूझति ताको कौन तू को हैरी प्यारी। मैं देखी तौ आजुही सुंदरि गुणभारी॥ त्रिभुवन में कोऊ नहीं तेरी उपमारी। यह कहि मुख मन सोचई भई सौति हमारी॥ दृष्टि परै जिनि श्यामके तवही वश ह्वैहै। सोच करै पछिताति है सँगही

सँग रैहै ॥ ऐसी सुंदरि नारि को जवहीं वै पै है । दोउ भुज भरि अँकवारि कै हँसि कंठ लगैहै ॥ यह वैरिनि मोको भई धौं कहँते आई । मोतन एकटक हेरई मैं रही लजाई॥ श्यामहि वश करि लेइगी मैं जानी माई। देखि दशा यह वामकी प्रतिबिंव भुलाई ॥ इकटक नैन टरै नहीं छविकी अधिकाई । पिय हरपै आनँद भरे सोभा यह पाई ॥ कवहुँ चलत त्रिय पासको फिरि रहत लुभाई । सूरश्याम तृणतोरही मन मन मुसुकाई ॥ विहागरो ॥ नागरि रही मुकुर निहारि । आनि औचक नैन मूँदे कमल कर गिरिधारि ॥ चौंकि चकृत भई मनमें श्यामको जिय जानि । मैं डरतिही अवहिं जाको मिले ताको आनि ॥ तवहिं तनुकी सुरति आई लख्यो तनु प्रतिछाहिं ॥ सकुचि मनही मन दुरावति परस्पर मुसुकाहिं ॥ समुझि चितमें कहति सखिअनि विपुल लैलै नाम । सूरप्रभु उर शीश परसे वीच वेनी श्याम ॥ विहागरो ॥ मूंदिरहे पिय प्यारी लोचन । अति हित वेनी उर परसाए वेष्टित भुजा अमोचन ॥ कंचन माणि सुमेर अंग दोऊ सोभा कही नजाइ। मनों पन्नगी निकसि ताविच रही हाटक गिरि लपटाइ ॥ चपल नैन दीरघ अति सुंदर खंजन ते अधिकाई । अति आतुर भपकारण धाई धरती फनन समाई ॥ मनहरपति मुख खिझति सखिन कहि चतुर चतुरई भाव । सूरश्याम मनकामनके फल लूटतहै एहिदाव ॥ रामकली ॥ करत मन काम फल लूटि दोउ ।॥ रहे दोउ नैन पिय मूंदि कोमलकरनि वरनि नहिं सकत वह उपमा कोऊ॥ हृदय भरि वाम सुखधाम मोहन काम मनो घन दामिनि झकोर लीन्हें ॥ महाआनंद सुखसिंधु उछलत दोऊ सूर प्रभु नागरी तुरत चीन्हें ॥ कान्हरो ॥ वैठी रही कुँवरि राधा हरि अँखिया मूंदी आइ । अतिहि विशाल चपल अनियारे नहिं पिय पानि समाइ ॥ खन खोलत खन ढांकत नागरि मुख रिस मन मुसुकाइ । ज्यों मणि धर मणि छांडि वहुरि फिरि फन तर धरत छपाइ ॥ श्याम अंगुरिअनि अंतर राजत आतुर दुरि दरशाइ । मानो मरकत मणि पिंजरनिमें विवि खंजन अकुलाइ ॥ करकपोल विच सुभग तरौना सोभा वढ़ी सुभाइ । मनो सरोजद्वै मिलत सुधानिधि विवि रवि संग सहाइ ॥ अपने पानि पकरिं मोहनके करधरि लिए छिड़ाइ । कमल चकोर चंचरि जनु द्वै शशि दिनकर जुरति सगाइ ॥ उपमा काहि देउँ को लायक देखा वहुत वनाइ । सूरदास प्रभु दंपति देखत रतिसों काम लजाइ ॥ गुंडमल्लार ॥ श्याम भुज वाम गहि सन्मुख आने । भले जुभले मैं सखी धाखें रही रहे लोचन मूंदि अति पिराने ॥ दौरि पैठे भवन काहि कवहिं कीन्हो गवन नारि मन रवन तुमहौ कन्हाई । सूर प्रभु हरपि प्यारी अंक भरिलई मुकुरकी कथा तव कहि सुनाई ॥ गूजरी ॥ नागरि यह सुनिकै मुसकानी । को जानै पिय महिमा तुम्हरी नैननि चितै लजानी ॥ मैं वैठी प्रतिबिंव विलोकति अपने सहज सुहाइ । आपुन कहा अचानक आये तुवगति लखी नजाइ ॥ इक सुंदर दूजे अति नागर. तीजे कोक प्रवीन । सूरदास प्रभु अवहींतौ तुम यशुमति सुवन नवीन ॥ विलावल ॥ हँसत चले तव कुँवर कन्हाई । मनके करे मनोरथ पूरण राधाके सुखदाई ॥ उत हरपत हरि भवन सिधारे नागरि हरप वढ़ाई । जव आवत सुधि मुकुर विलोकनि तव तव रहति लजाई ॥ यहि अंतर सखियन संग लीन्हें चंद्रावलि तहँ आई । सूर तुरत राधिका सवनिको आदर करि वैठाई ॥ रामकली ॥ अति आदर सों वैठक दीन्हों । मेरे गृह चंद्रावलि आई अतिही आनँद कीन्हों ॥ श्याम संग सुख प्रगट्यो चाहति पुनि धीरज धरि राखति । जोइ जोइ कहति वचन गदगदसो वार वार मुख भाषति ॥ सखी संगकी कहति राधिका आजु कहा तैं पायो । सुनहु सूर इतने आदर सों कवहूं नहीं वोलायो ॥ आसावरी ॥ हम

तेरे नितही प्राति आवैं सुनहु राधिका गोरी हो। ऐसो आदर कबहुँ न कीन्हों मेरी अलकसलोरी हो ॥ काहे आजु हरष जिय उपज्यो कहा विभव तुम पायोहो। कीधौं आजु मिले नँदनंदन पछि लहु दुख बिसरायो हो ॥ उमँग्यो प्रेम रहत नाहिं रोके सखियन कहति सुनावैहो। सूरश्याम मेरे भवन पधारे यह कहि कहि मन भावैहो ॥ बिहागरो ॥ आये श्याम अबहिं मेरे गेह। कही जाति न सखी मोपै मिले जौन सनेह ॥ करति अंग शृंगार बैठी मुकुर लीन्हे हाथ। आइ पाछे भए ठाढे चतुर बर ब्रजनाथ ॥ भाव इक मैं कियो भोरे ताहि कहत लजाउँ। निरखि अपनी छाँहको त्रिय और आनि डराउँ ॥ जालरंध्रनि रहे ठाढे निरखि कौतुक श्याम। नैन औचक आनि मूंदे सुनहु हरिके काम ॥ देतिहौं उरहनों तुमको भये डोलत चोर। सूर प्रभु आए अचानक भवन बैठी भोर ॥ बिलावल ॥ श्याम संग सुख लूटति हो। सुनि राधे रीझे हरि तोको अब उनते तुम छूटति हो ॥ भली भई हरिके रस पागी वै तुमसों रति मानत हैं। आवत जात रहत घर तेरे अंतरही पहिचानत हैं ॥ तुम अति चतुर चतुर वे तुमते रूप गुणनि दोउ नीके हो। सूरदास स्वामी स्वामिनि दोउ परमभावते जीके हो ॥ अडानो ॥ भलेही मेरे लालन आए री आजु मैं फूली अंग न समाई। गाऊं बजाऊं रस प्रेम भरि नाचौं तन मन धन न्यवछावर करि डारों एहि विधि करति बधाई। धनि धनि भाग धनि धनिरी सुहाग धनि अनुराग धनि धन्य कन्हाई ॥ धनि धनि रैनि धनि धनि दिन जैसो आजु धनि घरी धनि पल धनि धनि धनि माई।धनि गेह धनि देह धनि री शृंगार वह धनि प्रतिबिंब धनि रही मैं भुलाई॥धनि धनि सूर प्रभु धनि अवलोकनि धनि नैन मूंदे कर धनि धनि पिय सुखदाई॥ईमन॥ बनि बनि आवत हैं लाल भाग बडेरी मेरे।दरश देखन को अति सुख उपजत और सन्मुख जब हेरे ॥ तब मैं हँसति जब मंद मुसुकात वै आनंद मानि पिय आवत नेरे।सूरदास प्रभुकी सुरतिहै महा रसाल टरति नसांझ सवेरे॥ईमन॥श्याम अचानक आएरी।पाछेते लोचन दोउ मूंदे मोको हृदय लगाएरी॥लहनो ताको जाके आवै मैं वडभागिनि पाएरी। यह उपकार तुम्हारो सजनी रूसे कान्ह मिलाएरी ॥ ल्याइ तुरत जादिन तू हरिको मैं अपराध क्षमाएरी। सूरदास प्रभु नैननि लागे भावत नाहिं बिसराएरी ॥ अथ नैननि समयके पद ॥ टोडी ॥ हरि अनुराग भरी ब्रजनारी। लोक सकुच कुलकानि बिसारी॥सासु ननद हारी दैगारी॥सुनत नहीं को कहत कहारी ॥ सुत पति नेह जगत इह जान्यो।ब्रज युवती तिनुकासों मान्यो॥काचो सूत तोरि सो डारचो।उरग कंचुकी फिरि न निहारचो॥ज्यों जलधार फिरै पुनि नाही।जैसे नदी समुद्र समाही॥जैसे सुभट खेत चढ़ि धावै।जैसे सती बहुरि नहिं आवै ॥ ऐसे भजी नंदनंदनको। सकुची नाहिं त्यागत गृह जनको ॥ सूरज प्रभु सब घोषकुमारी। ज्यों गज पंक नसकै निवारी ॥ सोरठ ॥ एहि अंतर तेही खोरिही नँद नंदन आए। सखिन सहित ब्रजनागरी पल बिनु टकलाए ॥ मोर मुकुट शिरसोहई श्रवणनि वर कुंडल। ललित कपोलनि झलमले सुंदर अति निर्मल ॥ तरुनिगई चकचौंधिकै नहिं नैन थिराही। सूरश्याम छवि निरखिकै युवती भरमाही ॥ सोरठ ॥ देखो श्याम अचानक जात। ब्रजकी खोरि अकेले निकसे पीतांबर कटिपर फहरात ॥ लटकत मुकुट मटक भौंहनिकी चटकत चलत मंद मुसुकात। पगद्वै जात बहुरि फिरि हेरत नैन सैन दैके नंदतात ॥ निरखत नारि निकर विथकित भए दुख सुख व्याकुल झुलति सिहात । सूरश्याम अंग अंग माधुरी चमकि चमकि चकचौंधत गात ॥ सोरठा ॥ सघन कल्पतरु तर मन मोहन। दक्षिण चरन चरन पर दीन्हे तनु त्रिभंग मृदु जोहन ॥ मणिमय जडित मनोहर कुंडल शिखी चंद्रिका शीश रही फवि । मृगमद तिलक अलक

घुँघरारी उर वनमाल कहौं जो वै छवि ॥ तनु घन श्याम पीत पट सोभित हृदय पदिककी पाँति दिपत द्युति। वन तनु धात विचित्र विराजित वंसी अधरनि धरे ललित गति ॥ करज मुद्रिका कर कंकन छवि कटि किंकिणि नूपुर पग भ्राजत। नख शिख कांति विलोकि सखीरी शशि औ भान मगन तनुलाजत॥ नखशिख रूप अनूप विलोकति नटवर भेष धरे ज़ुललित अति। रूपराशि यशुमतिको ढोटा वरणि सकै नहिं सूर अलपमति ॥ सोरठा ॥ लोचन हरत अंबुज मान चकित मन्मथ शरन चाहत धनुप तजि निज वान ॥ चिकुर कोमल कुटिल राजत रुचिर विमल कपोल। नील नलिन सुगंध ज्यों रस थकित मधुकर लोल ॥ श्याम उर पर परमसुंदर सजल मोतिनहार। मनो मर्कत शैलते वहिचली सुरसरि धार ॥ सूर कटि पटपीत राजत सुभग छवि नँदलाल। मनो कनकलता अवलि विच तरल विटप तमाल ॥ ॥ रागरामकली ॥ मोहन माईरी! हठ करि मनहि हरत। अंग अंग प्रति और और गति अतिही छवि जु धरत ॥ सुंदर सुभग श्याम कर दोऊ तिनसों मुरली अधर धरत। राजत ललित नील कर पल्लव उभै उरग मनो सुभट लरत ॥ कुंडल मुकुट भाल भ्रुव लोचन मनों शरद शशि उदै करत। सूरदास प्रभु तनु अवलोकत नैनथके इत उत नटरत ॥ रामकली ॥ मनतो हरिही हाथ विकानो। निकस्यो मान गुमान सहित वह मैं यह होत न जानो ॥ नैनानि साँटि करी मिलि नैननि उनहींसो रुचि मानो। वहुत जतन करिहौं पचिहारी इतको नहीं फिरानो। सहज सुभाइ ठगोरी डारी शीश फिरत अरगानो ॥ सूरदास प्रभु रसवश गोपी विसरि गयो तनु मानो ॥ सोरठ ॥ मनतो गयो नैन हैं मेरे। अव इनसों वहि भेद कियो कछु एउ भए हरिके चेरे ॥ तनिक सहाय रहेहैं मोको येऊ दिन मिलि घेरे। क्रम क्रम गए कह्यो नहिं काहू श्याम संग अरुझेरे ॥ ज्यों दीवाल गिले परकाकर डारतही युग डेरे। सूर लटकि लागे अंग छवि पर निठुर न जात उखेरे ॥ विहागरो ॥ सजनी मनहि अकाज कियो। आपुन जाइ भेद करि हमसों इंद्रिन्ह वोलि लियो ॥ मैं उनकी करनी नहिं जानौं मोसों वैर कियो ॥ जैसे करि अनाथ मोहिं त्यागी ज्यों त्यों मानि लियो ॥ अव देखो उनकी निठुराई सो गुनि मरति हियो। सूरदास ए नैन रहेहैं तिनहूं कियो वियो ॥ विहागरो ॥ मेरे जिय इहई सोच पर्यो। मनके ढंग सुनोरी सजनी जैसे मोहिं निदर्यो ॥ आपुन गयो गंच संग लीन्हें प्रथमहि इहै कर्यो। मोसों वैर प्रीतिकरि हरिसों ऐसी लरनि लर्यो ॥ ज्योंत्यों नैन रहे लपटाने तिनहू भेद भर्यो। सुनहु सूर अपनाइ इनहुँको अवलौं रह्यो डर्यो ॥ गौरी ॥ मन विगर्यो ए नैन विगारे। ऐसो निठुर भयो देखौरी तव ए मोते टरत नटारे ॥ इंद्री लई नैन अव लीन्हे श्यामहि गाँधे भारे। एसव कहौ कौनैहैं मेरे खानाजाद विचारे ॥ इतनेते इतनेमैं कीन्हे कैसे आजु विसारे। सुनहु सूर जे आप स्वारथी ते आपुनही मारे ॥ गौरी ॥ आपु स्वारथी की गति नाहीं। विधिना ह्यां काहे अवतारे युवती गुनि पछिताहीं ॥ जनमें संग संग प्रतिपाले संगहि वड़े भए। जव उनको आसरो कियो जिय तवहीं छोंडि गए॥ ऐसेहैं ए स्वामि कारजी तिनको मानत श्याम। सुनहु सूर अव परगट कहिये ऐसे उनके काम॥ कान्हरो॥ हमते गए उनहुते खोवैं। ह्वांते खेदि देहिं वै हम तन हम उन तन नाहिं जोवैं॥ जैसी दशा हमारी कीन्ही तैसे उनहि विगोवैं। भटके फिरैं द्वार द्वारनि सव हम देखैवै रोवैं॥ आवहु इहै मतोरी करिए निधरक वैं सुख सोवैं। सूरश्यामको मिले जाइकै कैसे उनको धोवैं॥ ॥ धनाश्री ॥ मनके भेदनैन गए माई। लुब्धे जाइ श्यामसुंदर रस करी नकछू भलाई ॥ जवहीं श्याम अचानक आए इकटक रहे लगाइ। लोक सकुच मर्यादा कुलकी छिनहींमें विसराइ ॥ व्याकुल

फिरति भवन वन जहँ तहँ तूल आक उधराइ। देह नहीं अपनीसी लागति यहहै मनो पराइ॥ सुनहु सखी मनके ढँग ऐसे ऐसी बुद्धि उपाइ। सूरश्याम लोचन वश कीने रूप ठगोरी लाइ॥नट॥ नैन नमेरे हाथ रहे। देखत दरश श्यामसुंदरको जलकी ढरनि बहे॥ वह नीचेको धावत आतुर ऐसेहि नैन भए।वहतौ जाइ समात उदधिमें ए प्रतिअंग रए॥वह अगाध कहुँ वार नपारन एउ सोभा नहिं पार। लोचन मिले त्रिवेनी ह्वैकै सूर समुद्र अपार॥ बिहागरो॥ मन ते ए अति ढीठ भए। वेतो आइ बोलते कबहूं एउ गए सुगए॥ ज्यों भुवंग काचरी विसारत फिरि नहिं ताहि निहारत। तैसेहि जाइ मिले इकटकह्वै डरत लाज निरवारत॥इंद्रिन सहित मिल्यो मन तबहीं नैन रहे मोहिंशालत। सूरश्याम सँगही सँग डोलत औरनिके घर घालत॥ सोरठ॥ लोचन गए निदरिके मोकों। तोहूको व्यापीरी माई कहा कहतिहै मोकों॥ मैं आई दुख कहन आपनी तेरे दुख अधिकारी। जैसे दीनदी नसों याचै वृथाहोइ श्रमभारी॥ मन अपनो वश कैसेहुँ कीजै याहीते सचुपावै। सूरदास इंद्रिन समेत अरु लोचन अबहिं मँगावै॥ गौरी॥ नैना नीके उतहि रहे। मन जब गयो नहीं मैं जान्यो ए दोउ निदरि गहे॥ एतौ भए भावते हरिके सदा रहत इन माहीं। कर मीडति शिर धुनति नारि सब यह कहि कहि पछिताहीं॥ मूरखके ज्यों बुद्धिपाछिली हमहूं करि दियो आगे।अबतौ मिले सूरके प्रभुको पावतिहौ अब मांगे॥ पूरवी॥ नैना नाहिं आवैं तुव पास। कैसेहूं करि निकसे ह्यांते अतिही भए उदास॥ अपने स्वारथके सबकोई मैं जानी यह बात। यह सोभा सुख लूटि पाइकै अब वै काहि पत्यात॥ षटरस भोजन त्यागि कहौको रूखीरोटीखात। सूरश्याम रसरूप माधुरी एतेपर न अघात॥ जयतश्री ॥नैन परे रस श्याम सुधामें। शिव सनकादि ब्रह्म नारद मुनि एलुब्धैहैं जामें॥ ऐसो रस विलास नानाविधि खात खवावत डारत। सुनहु सखी वैसी निधि तजिकै क्यों नहिं तुमहि निहारत॥ जिनि वह सुधापान सुख कीन्हों ते कैसे कटु देखत। त्योंए नैन भए गर्वीले अब काहे हम लेखत॥काहेको अपसोसमरतिहौ नैन तुम्हारे नाहीं।मिले जाइ सूरजके प्रभुको इत उत कहूं नजाहीं॥ भैरव॥नैन परे हरि पाछेरी।मिले अतिहि अतुराइ श्यामको रीझे नटवर काछेरी॥ निमिष नहीं लागत इकटकही निशि वासरनाहिं जानतरी। निरखत अंग अंगकी सोभा ताही पर रुचि मानतरी॥ नैन परे परवशरी माई उनको इनि वश कीन्हेरी। सूरजप्रभु सेवा करि रिझए उन अपने करिलीन्हेरी॥ कल्याण॥ नैना हरि अंगरूप लुब्धेरी माई। लोक लाज कुलकी मर्यादा विसराई॥ जैसे चंदा चकोर मृगनिाद जैसे। कंचुरि ज्यों त्यागि फनिग फिरत नहीं तैसे॥ जैसे सरिताप्रवाह सागर को धावै। कोऊ श्रम कोटि करै तहां फिरि न आवै॥ तनुकी गति पंगुकिए सोचति ब्रजनारी। तैसेई मिले जाइ सूरजप्रभु ढारी॥ कल्याण॥ लोचन भए श्याम वश्य कहा करौं माईरी। जितही वै चलत तितहि आपु जात धाईरी॥ मुसुकनि दै मोललिए किए प्रगटचेरी। जोइ जोइ वै कहत करत रहत सदा नेरी॥ उनकी परतीतश्याम मानत नाहिं अजहूं। अलकनि रजुवांधि धरे भाजै जिनि कबहूं॥ मन लै इन उनहि दयो रहत सदा सँगही। सूरश्याम रूप राशि रीझे वा रँगही॥ बिहागरो॥ नैनाभए वजाइ गुलाम। मनवेच्यो लै वस्तु हमारी सुनहु सखी एकाम॥ प्रथम भेद करि आयो आपुन मांगि पठायो श्याम। वेचि दिये निधरक हरि लीन्हें मृदुमुसुकनिदै दाम॥ यह वाणी जहँ तहँ परकाशी मोल लिएको नाम। सुनहु सूर यह दोष कौनको यह तुम कहौ नवाम॥ मारू॥ कियो वह भेद मन और नाही। पहिलेही जाइ हरिसों कियो भेद वहि और वे काज कासों वताही॥ दूसरे आइकै इंद्रियानि लै गयो ऐसे अपदाँवसब इनहि

कीन्हे। मैं कह्यो नैन मोको संग देहिंगे इन्हहुँ लै जाइ हरि हाथ दीन्हे ॥ जो कहूँ कछू सो मनहिं सों कहि रहैं इहां कछु श्यामको दोप नाहीं। सूर प्रभु नैन लै मोल अपवश किए आपु बैठे रहत तिनहि माहीं॥ बिलावल ॥ कहा भए जो ऐसे लोचन मेरे तो कछु काज नहीं। मैं तो व्याकुल भई पुकारति वै सँग लै जु गए मनहीं॥ त्रिभुवनमें अति नाम जगायो फिरत श्याम सँगही सँगही। अपने सुखको कहा चाहिये बहुरि न आए मोतनही॥ सोसुपूत परिवार चलावै एतो लोभी धृग इनही। एते पर ए सूर कहावत लाज नहीं ऐसे जनही॥ कान्हरो ॥ इन बातन कहुँ होत बड़ाइ। लूटतहैं छबिराशि श्यामकी मनो परीनिधि पाइ॥ थोरेही में उघरि परैंगे अतिहि चले इतराइ। डारत खात देत नहिं काहू वोछे घर निधि आइ॥यह संपतिहै तिहूं भुवनकी सबै इनहि अपनाइ। धोखे रहत सूरके स्वामी काहू नहीं जनाइ॥ बिलावल ॥नैन परे हैं बहु लूटनिमें मैं नोखे निधिपाए। छोह लगत वह समुझिकै इन हमहिं जिवाए ॥ इनके नेक दया नहीं हम पर रिस पावैं। श्याम अक्षयनिधि पाइकै तउ कृपण कहावैं॥ ऐसे लोभी ए भए तब इनहि न जान्यो। संगहि संग सदा रहैं अतिहित करि मान्यो॥ जैसी हमको इन करी यह करै न कोई। सूर अनल कर जो गहै डाढै पुनि सोई॥ कान्हरो ॥ नैन आपने घर केरी। लूटन देहु श्याम अंगसोभा जो हम पर वै तरसैरी॥ यह जानी नीके कर सजनी नहीं हमारे डरकेरी॥ वै जानत हम सारि को त्रिभुवन ऐसे रहत निधरकेरी॥ ऐसी रिस आवत है उन पर करैं उनहि घर घर केरी। सूर श्याम के गर्व भुलाने वै उनपर हैं ढरकेरी॥ गौरी ॥ नैना कहह्यो न मानै मेरो। मो बरजत बरजत उठि धाए बहुरि कियो नहिं फेरो॥ निकसे जल प्रवाहकी नाई पाछे फिरि न निहारचो। भवं जंजाल तोरि तरुवन के पल्लव हृदय विदारचो॥ तबहीं ते यह दशा हमारी जब एऊ गए त्यागि। सूरदास प्रभु सों वे लुब्धे ऐसे बड़े सभागि॥ टोडी ॥ इन नैननि मोहिं बहुत सतायो। अबलौं कानिकरी मैं सजनी बहुतै मूंड चढायो॥ निदरे रहत गहे रिस मोसों मोहीं दोष लगायो। लूटत आपुन श्री अँग सोभा मनो निधनि धनपायो॥ निशदू दिन ए करत अचगरी मनहि कहाधौं आयो। सुनहु सूर इनको प्रतिपालत आलस नेक न आयो ॥ रामकली ॥ लोचन भए श्यामके चेरे। एते पर सुख पावत कोटिक मोतन फेरि नहेरे॥ हाहा करत परत हरि चरणन ऐसे वश्य भएउनही॥ उनको वदन विलोकत निशि दिन मेरो कह्यो न सुनही॥ ललित त्रिभंगी छबि पर अटके फटके मोसों तोरि। सूरदास यह मेरी कीन्ही आपुन हरिसों जोरि॥ धनाश्री ॥ हरि छबि देखि नैन ललचाने। इक टक रहे चकोर चंद ज्यों निमिष बिसारि ठहराने॥ मेरो कह्यो सुनत नाहिं श्रवनन लोक लाज न लजाने। गये अकुलाइ धाइ मो देखत नेकहु नहीं सकाने॥ जैसे सुभट जात रण सन्मुख लडत न कबहुँ पराने। सूरदास ऐसी इन कीनी श्याम रंग लपटाने ॥गुंडमलार॥नैन तो कहे में नहीं मेरे। बारही बार कहि हटकि राखति निकसि गये हरि संग नाहिं रहे घेरे॥ ज्यों व्याध फंदते छूटत खग उडि चलत तहां फिरि तकत नहिंत्रासमाने। जाइ वन द्रुमनि में दुरत योंही गये श्याम तनु रूप वन में समाने॥ पालि इतने किए आज उनके भए मोल करिलए अब श्याम उनको। सूर यह कौंति व्रजनारि व्याकुल भई प्रेममें नैन लैगये पाछितात मनको ॥ जतश्री ॥ नैना हाथ न मेरे आली। इत ह्वै गये ठगोरी लावत सुंदर कमल नैन वनमाली ॥ वे पाछे ए आगे धाये मैं बरजत बरजत पचिहारी। मेरे तन ह्वै फेरि न चितए आतुरता वह कहौ कहारी॥ जैसे बरत भवन ताजि भजिए तैसेहि गये फेरि नहिं हेरचो॥सूरश्याम रस रसे रसीले पय पानीको करै निवेरचो॥ रामकली ॥

श्याम रँग रँगे रँगीले नैन। धोए छुटत नहीं यह कैसेहु मिलैं पपिलि ह्वै मैन ॥ औचकही आँगन ह्वै निकसे दै गये नैननि सैन । नख शिख अंग अंगकी सोभा निरखि लजत शतमैन ॥ ए गीधे नहिं टरत वहांते मोसों लैन न दैन । सूरज प्रभुके सँग सँग डोलत नेकहु करत न चैन ॥ ईमन ॥ नैन भए हारिही केरी। जवते गए फेरि नहिं चितए ऐसे गुण इनही केरी ॥ और सुनौ उनके गुण सजनी सोऊ तुमहिं सुनाऊँरी। मोसों कहत तुहूं नाहिं आवे सुनत अचंभो पाऊँरी ॥ मनभयो ढीठ इनहिके कीन्हे ऐसे लोन हरामीरी। सूरदास प्रभु इनहि पत्याने आखिर वड़े निकामीरी ॥ विलावल ॥ नैना लुब्धे रूपको अपने सुख माई । अपराधी अपस्वारथी मोको विसराई॥मन इंद्री तहांई गए कीन्ही अधमाई। मिले धाइ अकुलाइकै मैं करति लराई॥अति हि करी उन अपतई हरिसों समताई। वै इनसों सुखपाइकै अति करत वडाई ॥ अब वै भरुहाने फिरैं कहुँ डरत नमाई। सूरज प्रभु मुँह पाइकै भए ढीठ वजाई ॥ सारंग ॥ ढीठ भए ए डोलत हैं। मौन रहत मोपर रिसपाई हरिसों खेलत वोलतहैं ॥ कहा कहौं निठुराई उनकी सपनेहुँ ह्यां नहिं आवतहैं। लुब्धे जाइ श्याम सुंदरको उनहीके गुण गावत हैं॥ जैसे उन मोको परतेजी कबहूं फिरि न निहारतहैं। सूर भलेको भलो होइगो वेतो पंथ विगारतहैं ॥ विलावल ॥ सुन सजनी तू भई अयानी। या कलियुगकी वात सुनाऊं मैं तोहिं जानति वड़ी सयानी ॥ जो तुम करौ भलाई को टिक सो नाहिं मानै कोई। जे अनभले वड़ाई ताकी मानै जोई सोई ॥ प्रगट देहि कहुँ दूरि वताऊं हमहुँ श्यामको ध्यावैं। सुनहु सूर सव व्याकुल डोलैं नैन तुरत फल पावैं ॥ विलावल ॥ नैन करैं सुख हम दुख पावैं । ऐसो को परवेद न जानै जासों कहि जु जनावैं ॥ ताते मौन भलो सवहीते कहिकै मान गँवावैं। लोचन मन इन्द्री हरिको भजि तजि हमको रिसपावैं॥वैतौ गए आपने करते वृथा जीव भरमावैं। सूरश्यामहैं चतुर शिरोमणि तिनसों भेद सुनावैं ॥ धनाश्री ॥ इन नैननि की कथा सुनावैं। इनको गुण अवगुण हरि आगे तिन लै भेद जनावैं ॥ इनसों तुम परतीत वढ़ावत ए हैं अपने काजी। स्वारथ मानि लेत रति करिकै वोलत हांजी हांजी ॥ ए गुण नाहिं मानत काहूको अपने सुख भरिलेत। सूरज प्रभु ए ऐसेहैं सव फिरि पाछे दुख देत ॥ सोरठ ॥ ये नैना यों आहिं हमारे। इतनेते इतने हम कीन्हे वारेते प्रतिपारे ॥ धोवाति पुनि अंचल लै पोछति आंजति इनहिं वनाई। वड़े भए तवलों न मानि यह जहां तहां चलत भगाई ॥ ऐसे सेवक कहां पाइहौं इहै कहैं हरि आगे।ए अव ढीठ भये ह्यां डोलत इनहिं वनै परित्यागे ॥ सूरश्याम तुम त्रिभुवन नायक दुखदायक तुम नाहीं॥ज्यों त्यों करि यह हमहि मिलावहु इहै कहत वलि जाहीं ॥ सूही ॥ नैननिको अव नहीं पत्याउँ।वहुरचो उनको वोलतिहौ तुम हाइ हाइ लीजे नाहिं नाउँ ॥ अव उनकोमैं नाहिं वसाऊं मेरे उनको नाहीं ठाउँ।व्याकुलभई डोलिहौं ऐसेहि वे जहँरहैं तहां नहिं जाउँ॥खाइ खवाइ वडे जव कीन्हें वसे जाइ अव औरहि गाउँ।अपनो कियो फलहि पावैंगे मैं काहे उनको पछिताउँ। जैसे लोन हमारो मान्यो कहाकहौं कहि काहि सुनाउँ। सूरदास मैं इन विन रैहौं कृपा करैं उनको सरमाउँ॥ सूही ॥ सतरहोति काहेको माई। आए नैन धाइकै लीजै आवत अव ह्यां वेवेहाई ॥ जिनि अपनो घर डर परित्याग्यो तौ उनि वहां कछू निधि पाई। परेजाइ वा रूप लूटिमें जानतिहौं उनकी चतुराई ॥ विनकारण तुम सोर लगावति वृथाहोति कापर रिसयाई। सूरश्याम मुख मधुर हँसनि पर विवस भए वै तू बिसराई॥ विहागरो॥लोचन आइ कहा ह्यां पावैं। कुंडल झलक कपोलनि रीझि श्याम पठाए उनहीं आवैं ॥ जिनि पायो अमृत घट पूरण छिनु छिनु खात अघात। ते

तुमसों फिरिकै रुचि मानैं कहति अचंभव वात ॥ रसलंपटवै भए रहतहैं व्रज घर घर यह वानी। हमहूँको अपराध लगावहिं एऊ भई देवानी॥लूटहिं ए इंद्री मन मिलिकै त्रिभुवन नाम हमारो । सूर कहा हरि रहत कहा हम यह काहे न विचारो॥ धनाश्री॥नैननते यह भई वड़ाई। घर घर इहै चवाव चलावत हमसों भेट नमाई ॥ कहां श्याम मिलि वैठी कवहूं कहनावति व्रज ऐसी । लूटहिंए उपहास हमारो यहतौ वात अनैसी ॥ एई घर घर कहत फिरतहैं कहा करैं पचिहारी। सूरश्याम यह सुनत हँसतहैं नैन किए अधिकारी ॥ सारंग ॥ नैनभए अधिकारी जाइ। यह तुम वात सुनी सखि नाहीं मन आए गए भेद वताइ॥जव आवैं कवहूं ढिग मेरे तव तव इहै कहतहैं आइ॥हमहींलै मिल्यो हम देखत श्यामरूपमें गए समाइ ॥ अव वोऊ पछितात वात कहि उनहूंको वै भए वलाइ अपनो कियो तुरत फल पायो जैसी मन कीन्ही अधमाइ ॥ इंद्री मन अव नैनन पाछे ऐसे उन वश किए कन्हाइ । सूरदास लोचनकी महिमा कहा कहैं कछु कही नजाइ ॥ रामकली ॥ जवते हरि अधिकार दियो । तवहींते चतुरई प्रकाशी नैनन अतिहि कियो ॥ इंद्रिनपर मन नृपति कहावत नैनन इहै डरात । काहेको मैं इनहिं मिलाए जानि वूझि पछितात ॥ अव सुधि करन हमारी लागे उनकी प्रभुता देखि।हियो भरत कहि इनहि ढराऊं वे इकटक रहे देखि॥अव मानीहैं दोप आपनी हमहीं वेच्यो आइ। सूरदास प्रभुके अधिकारी एई भए वजाइ ॥ विलावल ॥ यद्यपि नैन भरत ढरि जात । इकटक नैक नहीं कहुँ टारत तृप्ति नहोत अघात ॥ अपनेही सुख भरत निशादिन यद्यपि पूरणगात । लैलै भरत आपने भीतर औरहि नहीं पत्यात ॥ जोइ लीजै सोईहै अपनो जैसे चोर भगात । सुनहु सूर ऐसे लोभी धनि इनको पितु अरु मात ॥ सोरठ ॥ नैना अतिही लोभ भरे । संगहि संग रहत वै जहँ तहँ वैठत चलत खरे ॥ काहूकी परतीति नमानत जानत सवहिन चोर । लूटत रूप अखूट दामको श्याम वश्ययो भोर ॥ वडे भाग मानी यह जानी कृपिण न इनते और । ऐसी निधि मैं नाउँ न कीन्हो कह लैहैं कह ठौर ॥ आपुन लेहिं औरहूं देते यश लेते संसार। सूरदास प्रभु इनहि पत्याने कोकहै वारहि वार ॥ कान्हरो ॥ ऐसे आपस्वारथी नैन।अपनोई पेट भरतहैं निशि दिन और नलैन नदैन ॥ वस्तु अपार पर्यो वोछे कर ए जानत घट जैहै। को इनसों समुझाइ कहै यह दीन्हेही अधिकैहै ॥ सदा नहीं रैहो अधिकारी नाउँ राखि जो लेते । सूरश्याम सुख लूटै आपुन औरनिहूको देते ॥ ॥ विलावल ॥ जे लोभी ते देहिं कहारी । ऐसे नैन नहीं मैं जाने जैसे निठुर महारी ॥ मन अपनो कवहू वरु ह्वैहै ए नहिं होहिं हमारे। जवते गए नंदनंदन ढिग तवते फिरि न निहारे ॥ कोटि करौं वे हमहिं न मानैं गीधे रूप अगाध । सूरश्याम जो कवहूं त्रासैं रहै हमारी साध ॥ नट ॥ नैना भये घरके चोर। लेत नहिं कछु वनै इनसों देखि छवि भए भोर ॥ नहीं त्यागत नहीं भागत रूप जाग प्रकाश । अलक डोरनि वांधि राखे तजौ उनकी आश ॥ मैं वहुत करि वरजिहारी निदरि निकसे हेरि । सूरश्याम वँधाइ राखे अंगके छवि घेरि ॥ विलावल ॥ भली करी उन श्याम वँधाए। वरज्यो नहीं कर्‌यो उन मेरो अति आतुर उठि धाए ॥ अल्पचोर वहुमाल लुभाने संगी सवन धराए । निदरि गए तैसो फल पायो अव वै भए पराए॥ हमसों इन अति करी ढिठाई जो करि कोटि वुझाए । सूरगए हरि रूप चुरावन उन अप-वश करि पाए ॥ विहागरो ॥ लोचन चोर वांधे श्याम। जातही उन तुरत पकरे कुटिल अलकनि दाम ॥ सुभग ललित कपोल आभा गीधे दाम अपार। और अंग छवि लोग जागे अव नहीं

निरवार ॥ संग गए वै सबै अटके लटके अंग अनूप । एक एकहि नहीं जानत मारे सोभा रूप ॥ जो जहां सो तहां डारचो नेक तनु सुधि नाहिं । सूर गुरुजन डरहि मानत इहै कहि पछिताहिं ॥ ॥ जैतश्री ॥ लोचन भए पखेरूमाइ । लुब्धे श्याम रूप चाराको अलक फंद परे जाइ । मोर मुकुट टाटी मानो यह बैठनि ललित त्रिभंग । चितवनि ललित लकुट लासालटकनि पिय कांपै अलक तरंग ॥ दौरि गहनि मुख मृदु मुसुकावनि लोभ पींजरा डारे । सूरदास मन व्याध हमारो गृह वनते जु विसारे ॥ गुंडमलार ॥ कपट कन दरश खग नैन मेरे । चुनत निरखनि तुरत आपुही उड़ि मिले परचो चारा पेट मंत्र केरे ॥ निरखि सुंदर वदन मोहनी शिर परि रहे एकटक निरखि डरत नाहीं ॥ लाज कुलकानि बन फेरि आवत कवहुँ रहत नाहिं नैकहू उताहि जाहीं ॥ मृदु हँसनि व्याध पढि मंत्र बोलनि मधुर श्रवन ध्वनि सुनत इत कौन आवै।सूर प्रभु श्याम छवि धामही में रहै गेह बन नाम मनते भुलावै ॥ मारू ॥ नैन खग श्याम नीके पठाए । किए वश कपट कन मंत्र के डारिकै लए अपनाइ मनो इन पठाए ॥ वेगिधे उनहिं सों रूप रस पान करि नेकहू टरत नहिं चीन्हि लीन्हे । गए हमको त्यागि बहुरि कबहूँ न फिरे केचुरी उरग ज्यों छोंडि दीन्हे ॥ एक ह्वै गए हरदी चून रंग ज्यों कौन पै जात निरुवारि माई । सूर प्रभु कृपामये कियो उन वास राचि निज देह बन सघन सुधि भुलाई ॥ विहागरो ॥ नैना ऐसे हैं विश्वासी । आप काज कीने हमको तजि तबते भए निरासी ॥ प्रतिपालन करि वड़े कराये जानि आपनो अंग । निमिष निमिष में धोवति आंजति सिखए भावत रंग ॥ हम जान्यो हमको ये ह्वैहैं ऐसे गये पराइ । सुनहु सूर बर जतही बरजत चेरे भए वजाइ ॥ जैतश्री ॥ नैना भए प्रगटही चेरे । ताको कछु उपकार न मानत हम ए किए बडेरे ॥ जो वरजो यह बात भली नहिं हँसत नैन कल जात । फूले फिरत सुनावत सबको एते पर न डरात ॥ इहौ कही हमको जिनिछाँडौ तुम विनु तनु बेहाल । तमकि उठे यह बात सुनतही गीधे गुण गोपाल ॥ मुकुट लटक भौंहनकी मटकनि कुंडल झलक कपोल । सूरश्याम मृदु मुसुकनि ऊपर लोचन लीन्हे मोल ॥ सोरठ ॥ लोचनभृंग भएरी मेरे । लोकलाज बन घन वेली तजि आतुरह्वै जुगडेरे ॥ श्यामरूप रस बारिज लोचन तहां जाइ लुब्धेरे । लपटे लटकि पराग विलोकनि संपुट लोभ परेरे ॥ हँसनि प्रकाश विभास देखिकै निकसत पुनि तहां बैठत । सूरश्याम अंबुज कर चरणनि जहँ तहँ भ्रमि भ्रमि बैठत ॥ रामकली ॥ लोचन भृंगको शरसपागे । श्याम कमलपदसों अनुरागे ॥ सकुचकानि बनवेली त्यागी । चले उड़ाइ सुरति रति पागी ॥ मुक्तिपराग रसहि इनचाख्यो । नव सुख फूल रसहि इनि नाख्यो ॥ इनते लोभी और न कोई । जो पटतर दीजै कहि सोई ॥ गए तबहिंते फेरि न आए । सूरश्याम वेगहि अटकाए ॥ सारंग ॥ नैना पंकज पंक खचे । मोहन मदनश्याम मुख निरखत भ्रुवविलास रचे ॥ बोलनि हँसनि विराजमान अति श्रुति अवतंस सचे।जनु पिनाककी आशलागि शशि सारंग शरन बचे॥चंदचकोर चातक ज्यों जलधर हर रिपु हरषि नचे । पुहुपवास लै मधुप शैलवन धनु करि भवन रचे ॥ परमप्रीतिके कुंड महागज काढत बहुत पचे।सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको मुनि जन मानि मचे॥ ॥सारंग॥ नैना वींधे दोऊ मेरे । मानौ परे गयंद पंक महि महासबल बल केरे॥ निकसत नहीं अधिक बल कीने जतन न वने घनेरे । श्याम सुंदरके दरश परसमें इत उत फिरत न फेरे ॥ लंपट लवनि अटक नाहिं मानाति चंचल चपल अरेरे । सूरदास प्रभु निगम अगम सुनि सुनि सुमिरत बहुतेरे ॥ धनाश्री ॥ मेरे नैन कुरंग भए । जोवन वनते निकासि चले ए मुरली नाद रए ॥ रूप व्याध

कुंडल दुति ज्वाला किंकिनि घंटा घोष । व्याकुलह्वै एकहि टक देखत गुरुजन ताजि संतोष ॥ भौंह कमान नैन शर साधनि मारनि चितवनि चार । ठौर रहै नहिं टरत सूर वै मंद हँसनि शरधार ॥राम कली॥नैन भए वश मोहनते।ज्यों कुरंग वश होत नादके टरत नहीं ता गोहनते॥ ज्यों मधुकर वश कमलकोशके ज्यों वश चंद चकोर।तैसेहि ए वश भये श्यामके गुटी वश्य ज्यों डोर॥ज्यों वश स्वाति बूंदके चातक ज्यों वश जलके मीन।सूरज प्रभुके वश्य भए ए छिनु छिनु प्रति नवीन॥टोडी॥ ऐसे वश्यन काहुहि कोउ।जैसे वश नँदनंदनकोए नैना मेरे दोउ॥चंद्र चकोर नहींसरि इनकी एकोपल न विसारत । नाद कुरंग कहा पटतर इन व्याध तुरतही मारत॥ए वश भए सदा सुख लूटत चतुर चतुरई कीन्हो । सूरदास प्रभु त्रिभुवनके पति ते इन वश करि लीन्हो ॥ जैतश्री ॥ ए नैना अप स्वारथके । और इनहि पटतर क्यों दीजे वे हैं सव परमारथके ॥ विना दोष हमको परित्याग्यो सुख कारण भए चेरे । मिले धाइ वरज्यो नहिं मान्यों तके न दाहिनडेरे ॥ इनको भलो होइगो कैसे नैक न सेवा मानी । सूरश्याम इनपर कहा रीझे इनिकी गति नहिं जानी ॥सूही ॥ नैनों लोनहरामी ए । चोर ढुंढ़ वटपार अन्याई अपमारगी कहा वैं जे ॥ निलज निर्दयीनिसंक पातकी जैसे आप स्वारथी वै । वारेते प्रतिपालि वढाए बड़े भए गए तव तजिकै ॥ हमको निदरि करत सुख हरिसँग वै उनि लीन्हो हित करिकै॥मिले जाइ सूरजके प्रभुको जैसे मिलत नीर अरुपै॥जैतश्री॥ नैन मिले हरिको ढरि भारी । जैसे नीर नीर मिलि एकै कौन सके ताको निरुवारी ॥ वात चक्र ज्यों तृण हिं उड़तलै देह संग ज्यों छांह । पवन वश्य ज्यों उडत पताका ए तैसे छवि मांह । मन पाछे ए आगे धावत इंद्री इनहि लजाने । सूरश्याम जैसे इन जाने त्यों काहू नहिं जाने ॥ नट ॥ लोचन भए अतिही ढीठ । रहतहैं हरि संग निशि दिन अतिहि नवल अहीठ ॥ वदत काहू नहीं निधरक निदरि मोहिं न गनत । वार वार वुझाइ हारी भौंह मोपर तनत ॥ ज्यों सुभट रण देखि टरत न लरत खेत प्रचारि । सूर छवि सन्मुखहि धावत निमिष अत्र निडारि ॥ विलावल ॥ सुभट भए डोलत ए नैन । सन्मुख भिरत मुरत नहिं पाछे सोभा शूर डरैन ॥ आपुन लोभ अत्रलै धावत पलक कवच नहिं अंग । हाव भाव रस लरत कटाक्षनि भ्रुकुटी धनुष अपंग ॥ महावीर ए उत अंग अंग वल रूप सैन पर धावत । सुनहु सूर ए लोचन मेरे यकटक पलक नलावत ॥ जैतश्री ॥ सेवा इनकी वृथा करी । ऐसे भए दुखदायक हमको एही सोचमरी ॥ घूंघट ओट महलमें राखति पलक कपाट दिए । ए जोइ कहैं करैं हम सोई नाहिन भेद हिए ॥ अव पाई इनकी लँगराई रहते पेट समाने । सुनहु सूर लोचन वटपारी गुण जोइ सोइं प्रगटाने ॥ गौरी ॥ नैना हैरी ए वटपारी । कपट नेह करि करि इन हमसों गुरुजनते करी न्यारी ॥ श्याम दरश लाडू करि दीन्हो प्रेम ठगोरी लाइ । मुख परसाई हँसन मधुरता डोलत संग लगाइ ॥ मन इनसों मिलि भेद वतायो विरह फाँस गरे डारी । कुललज्जा संपदा हमारी लूटि लई इन सारी ॥ मोह विपिनमें पड़ी कहरतिहौं नेह जीव नहिं जात । सूरदास गुण सुमिरि सुमिरि वे अंतर गति पछितात ॥ विहागरो ॥ तिनको श्याम पत्याने सुनियत । ह्वांऊजाइ अकाज करैंगे गुण गुनि गुनि शिर धुनियत ॥ विवस भई तनुकी सुधि नाहीं विरह फाँस गयो डारि । लगनि गांठि वैठी नहिं छूटति मगन मूरछा भारि ॥ प्रेमजीव निसरत नहिं कैसेहु अंतर अंतर जानति । सूरदास प्रभु क्यों सुधि पावे वार वार गुण गावति ॥ सारंग ॥ रोम रोम ह्वै नैन गएरी । ज्यों जलधर पर्वत पर वरषत बूंद कूंद ह्वै झरानिदएरी ॥ ज्यों मधुकर रस

कमल पानकरि माते ताजि उन मत्तभएरी । ज्यों कांचुरी भुअंगम तजही फिरि नतकै जुगए सुगएरी॥ ऐसी दशा भईरी इनकी श्यामरूप में मगन रएरी। सूरदास प्रभु अगणित सोभा नाजानौं केहि अंग छएरी ॥सारंग॥नैन निरखि अजहूं न फिरेरी।हरिमुख कमल कोश रस लोभी मनहु मधुप मधु माति गिरेरी ॥ पलकनि शूल सलाकसहींहै निशि वासर दोउ रहत अरेरी । मानहु विवर गए चलि कारे तजि केचुरी भये निनरेरी ॥ ज्यों सरिता पर्वतकी खोरी प्रेम पुलक श्रमस्वेद झरेरी। बूंद बूंद ह्वै मिले सूर प्रभुना जानों केहि घाट तरेरी॥सारंग॥नैनगए सु फिरे नहिं फेरि।यद्यपि घेरि घेरि मैं राखति रहे नहीं पचिहारी टेरि॥कहाकहौं सपनेहुँ नहिं आवत वश्यभए हरिहीके जाई।मोते कहा चूक उनि जानी जाते निपट गए बिसराई ॥छिनहूकी पहिचानि नमानी उनको हम प्रतिपाले प्रेम। जोतजि गए हमारे वैसेइ उन त्याग्यो हमहें वोहि नेम । मात पिता संगहि प्रतिपाले सँगही संग रहै निशियाम।सुनहु सूरए बालसँघाती प्रेम विसारि मिले हरिश्याम॥नट॥ नैननि देखिवेकी ठौरि।नंद गोपकुमार सुंदर किए चंदन खौरि॥शीशपिंड शिखंड भ्राजत नखशिखा छवि और।सुभग गावनि मृदुबजावनि वैनसुर ललितौर॥कुटिल कच मृगमद तिलक छवि वचन मंत्र ठगौर।सूर प्रभु नट रूप नागर निरखि लोचन वोर॥मलार॥तवते नैन रहे एक टकही।जवते इयाम त्रिभंगललित गति जातभैइन तकही॥मुरली धरे अरुन अधरनिपर कुंडल झलक कपोल।निरखत एकटक पलक भुलानो मानो बिकाने मोल॥ हमको वै काहेन बिसारैं अपनी सुधि उन नाहिं। सूरश्याम छवि सिंधु समाने वृथा तरुनि पछितांहिं ॥ मलार ॥ नैना नैननि माँझ समाने । टारे नटरत एक मिलि मधुकर सुरसमत्त अरु झाने ॥ मन गति पंगु भई सुधि बिसरी प्रेम पराग लुभाने । मिले परस्पर खंजन मानों झगरत निरखि लजाने॥मन वच क्रम पलवोट नभावत छिनु युग वरस समाने ।सूरश्याम के वश्य भए ए जेहि वीतै सो जाने ॥ गौरी ॥ मेरे माई लोभी नैन भए । कहा करौं ए कह्यो नमाने वरज तही जो गए ॥ रहत नघूंघटवोट भवनमें पलक कपाट दए। लए फँदाइ विहंगम मानो मदन व्याध विधए ॥ नहिं परमिति मुख इंदु सुधानिधि सोभा नितहि नए। सूरश्याम तनु पीत वसन छवि अंग अनंग जितए ॥ विहागरो ॥ नैना लोभहिं लोभ भरे। जैसे चोर भरे घरहीमें वैठत उठत खरे ॥ अंग अंग सोभा अपार निधि लेत नसोच परे । जोइ देखै सोइ सोइ निमोलै करलै तहीं धरे ॥ त्यों लुब्धे ए टरत नटारे लोक लाज नडरे। सूर कछू उनिहाथ न आयो लोभ जाग पकरे ॥ सोरठ ॥ नैना वोछे चोर सखीरी। श्याम रूप निधि नोखे पाई देखत गए भरीरी ॥ अंग अंग छवि चित्त चलायो सो कछु रहति परीरी। कहा लेहिं कह तजौ विवस भए तैसिय करनि करीरी ॥ पुनि पुनि जाइ एक एक लेते आतुर धरणि धरीरी । भोरे भए भोरसों ह्वैगयो धरे जगार परीरी ॥ जो कोउ काज करै विन बूझे पेलि महत्त हरीरी। सूरश्याम वश परे जाइकै ज्यों मोहिं तजी खरीरी ॥ मलार ॥ नैना मारेहू पर मारत। राखी छवि दुराइ हृदय में तिनको हिय भरि डारत ॥ आपुन गए भली कीन्ही अब उनहि इहांते टारत। वरवशही लै जान कहतहैं पैज आपनी सारत ॥ ऐसे खोज परचो यह लेहैं आवत जानत हारत। उनके गुण कैसे कहि आवै सूर पयारहि झारत ॥ मलार ॥ नैना खोज परेहैं ऐसे। नैक रही हरि मूरति हृदय डाह मरतहैं जैसे॥ मनतौ गयो इंद्रियन लैकै बुधि मति ज्ञान समेत। जिनकी आशसदा हम राखैं तिन्ह दुख दीन्हे जेत ॥ आपुन गए कौन सो चालै करत ढिठाई और। नैक रही छवि दुति हिरदैमें ताहि लगावत ठौर ॥ गए रहे आए एहि कारज भरि टारतहैं ताहि। सूरदास नैननेकी महिमा कोहै

काहिये काहि ॥ सारंग ॥ नैना यहि ढंग परे कहा करौं माई । आए फिरि कौन काज कबहि मैं बुलाई॥अबलौं इह आश रही मिलिहैं य आई। भाँवरिसी पारि फिरैं नारि ज्यों पराई॥ आवतहैंताहि लेन ऐसे दुःखदाई । मारेको मारतहैं बडे लोग भाई॥ अतिही ए करत फिरत दिनही दिन ढिठाई । सूरदास प्रभु आगे चलौ कहैं जाई ॥ गौरी ॥ यहतो नैननिही जु कियो । सर्वस जो कछु रह्यो हमारे सो लै हरिहि दियो ॥ बुधि विवेक कुलकानि गँवाई इंद्रिन कियो वियो । आपुन जाइ वहुरि आयो यह चाहत रूपलियो ॥ अव लाग्यो जिय घात करनको ऐसो निठुर हियो।सुनहु सूर प्रतिपालेको गुण वैरई मानि लियो ॥ नट ॥ मेरे नैन चकोर भुलाने । अहनिशि रहत पलक सुधि बिसरे रूप सुधान अघाने ॥ पल घटिका घरी याम दिनहि दिन युग ही युग वरजाने। स्वाद परचो निमिषौ नहिं त्यागत ताही मांझ समाने॥हरि मुख विधु पीवत ए व्याकुल नेकहुँ नहीं थकाने ।सूरदास प्रभु निरखि ललित तनु अंग अंग अरुझाने ॥ सारंग ॥ हरि मुख विधु मेरी अँखियां चकोरी । राखे रहति वोट पट जतननि तऊ न मानत कितकि निहोरी ॥ वरवसही इन गही मूढता प्रीतजाय चंचल सों जोरी । विवसभए चाहत उड़िलागन अटकत नेक अंजनकी डोरी ॥वरवसही इन गही चपलता करत फिरत हमहूं सों चोरी । सूरदास प्रभु मोहन नागर वरपि सुधारस सिंधु झकोरी ॥ विहागरो ॥ लोचन लालच ते नटरे । हरि सारंग सों सारंग गीधे दधिसुत काज जरे ॥ ज्यों मधुकर वश परे केतकी नहिं ह्यांते निकरे । ज्यों लोभी लोभहि नहिं छांडत ए अति उमँगि भरे ॥ सन्मुख रहत सहत दुख दारुण मृग ज्यों नहीं डरे । वह धोखे यह जानत है सब हित चित सदाकरे ॥ ज्यों पग फिर फिर परत प्रेमवश जीवत मुरछि मरे । जैसे मीन अहार लोभते लीलत परे गरे ॥ ऐसेहि ए लुब्धे हरि छवि पर जीवत रहत भिरे । सूरसुभट ज्यों रण नहिं छांडत जवलौं धरनि गिरे ॥ नट॥ मेरे नैननि कोउ समुझावैरी । अपनो घर तुम छांडे डोलत मेरे ह्यां लै आवैरी ॥ इहै बूझि देखौ नीके करि जहांजात कछु पावैरी।वृथा फिरत नटके गुण देखत नानारूप वनावैरी।देखतके सब सांचे लागत ताहि छुवन नहिं पावैरी।सूरश्याम अंग अंग माधुरी शत शत मदन लजावैरी ॥ नट ॥ हरि छवि अंग नटके ख्याल।नैन देखत प्रगट सबकोउ कनक मुकुता लाल।।छिनकमें मिटिजात सो पुनि और करत विचार। त्योंही ए छवि और औरै रचत चरित अपार॥लहै तव जो हाथ आवै दृष्टि नहिं ठहरात।वृथा भूले रहत लोचन इनहि कहै कोइवात।।रहतनिशिदिन संग हरिके हरपनहीं समात।सूर जब जब मिले हमको महा विह्वल गात।।कान्हरो।।भईगईए नैनन जानत। फिरि फिरि जात लहत नाहि सोभा हारेहुँ हारि नमानत।।बूझहु जाइ रहत निशि वासर नेक रूप पहिंचानत।सुनहु सखी सतरात इतेपर हमपर भौंहैं तानत।।झूठे कहत श्याम अंग सुंदर बातें गाढि गाढि वानत।सुनहु सूर छवि अति अगाधगति निगम नेति जेहि गावत ॥ विहागरो ॥ श्याम छवि लोचन भटकि परे।अतिहि भए वेहाल सखीरी निशिदिन रहत खरे।।हमते गए लूटिलेवेको उनहि परचो अव सोच।अपनो कह्यो तुरत फल पायो राखति घुंघट वोट ॥ इकटक रहत पराएवशभए दुख सुख समुझि नजाइ । सूर कहौ ऐसो को त्रिभुवन आवै सिंधु थहाइ ॥ नट ॥ नैन भये वोहितके काग । उड़ि उड़ि जात पार नहिं पावे फिरि आवत नाहिं लाग।। ऐसी दशा भईरी इनकी अब लागे पछितान।मो वरजत वरजत उठि धाये नाहिं पायो अनुमान।।वह समुद्र वोछे वासन ए धरे कहा सुखराशि।सुनहु सूरए चतुर कहावत वहछवि महा प्रकाशि ॥ गौरी ॥ हारि जीत नैना नाहिं जानत । धाए जात तहींको फिरि फिरि वै कितनो अपमानत ॥ परे रहत द्वारे सोभाके वोई गुण गुणि गानत । हरपत रहत सबनिको निदरै नेकहु

लाज न आवत। अबतो रहत निषसई कीन्हें यद्यपि रूप न जानत। दुख सुख विरह संयोग समेत जनु सूरदास यह गानत ॥ रामकली ॥ नैना मान पमान सह्यो। अति अकुलाइ मिलेरी वरजत यद्यपि कोटि कह्यो॥ जाकी बानि परी सखी जैसी तेही टेक रह्यो। ज्यों मर्कट मूठी नहिं छांडत नलनी सुवा गह्यो। जैसे नीर प्रवाह समुद्रहि वह्यो सुवह्यो सुवह्यो। सूरदास इनि तैसिय कीन्ही फिरि मोतन न चह्यो॥ सोरठ ॥ यह नैननिकी टेवपरी। जैसे लुवधति कमलकोशमें भ्रमरा की भ्रमरी॥ ज्योंचातकस्वातिहि रटलावै तैसिय धरनि धरी। निमिष नहीं मिलवत पल एको आपु दशा बिसरी॥ जैसे नारि भजै पर पुरुषहि ताके रंगढरी। लोक वेद आरजपथकी सुधि मार गहू न डरी॥ ज्यों कंचुकी त्यागि वोहि मारग अहि घरनी न फिरी। सूरदास तैसेहि ए लोचन काधौं परनि परी॥ विहागरो ॥ नैना गये न फिरेरी माई। ज्यों मर्यादा जाति सुपतकी बहुरचो फेरि न आई॥ जैसे बाला दशा वितावै फिरै नहीं तरुनाई। ज्यों जल टरत फिरत नहिं पाछे आगेहि आगे जाई॥ज्यों कुलवधू वाहिरी परिकै कुलमें फिरि न समाई। तैसी दशा भई इनहूंकी सूरश्याम शरनाई॥सूही॥ जबते नैन गये मोहिं त्यागि। इंद्री गई गयो तनुते मन उनाहि विना अवसेरी लागि॥ वे निर्दयी मोह मेरे जिय कहा करौं मैं भई बेहाल। गुरुजन तेउ इहां इनि त्यागी मेरे वाटे परचो जंजाल॥इतकी भई न उतकी सजनी भ्रमत भ्रमत मैं भई अनाथ। सूरश्याम को मिले जाइ सब दरशन करि वे भये सनाथ॥विलावल॥नैना मेरे मिलि चले इंद्री मन संग।मोको व्याकुल छांडिकै आपुन करै रंग॥अपनो यह कबहुँ न करै अधमनिके काम।जनम गमायो साथही अब भई निकाम॥ धृगजन ऐसे जगत में यह कहि कहि पछिताति। धर्म हृदय जिनके नहीं धृग धृग तिनकी जाति॥ मनसा वाचा कर्मना मोहिं गए विसारि।सूर सुमिरि गुन नैनके विलपति ब्रजनारि॥विलावल॥नैननिसों झगरो करिहौंरी। कहा भयो जो श्याम संगहैं वांह पकरि सन्मुख लरिहौंरी॥ जनमहिते प्रति पालि वडे किए दिनादिनको लेखो करिहौंरी॥रूप लूटि कीन्हो तुम काहे अपने वाटेको धरिहौंरी॥ एक मात पितु भवन एकरहे मैं काहे उनको डरिहौंरी। सूर अंश जो नहीं देहिगे उनके रंग मैं हूं ढरिहौंरी॥ आसावरी ॥ मोहूते वे ढीठ कहावत। जवहीं लौं मैं मौन धरेहौं तवलौं वे कामना पुरावत॥ मैं उनको पहिलेहि करि राख्यो वे मोको काहे विसरावत। आपकाज को उनहिं चले मिल वाट देत रोई अब आवत॥ बहुतै कानि करी मैं सजनी अब देखो मर्याद घटावत। जो जैसो तैसो त्यों चलिए हारि आगे गढ़ि बात बनावत॥ मिले रहैं नहिं उनको चाहति मेरो लेखो क्यों न बुझावत। सूर श्याम संग गर्व बढायो उनहकिे वल वैर लगावत॥ धनाश्री॥ नैना नरहैंरी मेरे अटके। कछु पढि दिये सखी एहि ढोटा घुंघरवारी लटकैं॥ कज्जल कुलुफ मेलि मंदिरमें पलक संदूक पट अटके। निगम नेति कुललाज टूटि सब मन गयंदके उढके॥ मोहनलाल करो वश अपनेहो निमेषके मटके। सुर नर नारि न सूर पुरत सँग संग लगाये नटके॥काफी॥नैना अटके रूप में पलर हत विसारे। निशि वासर नहिं संग तजैं भरि भरि जल ढारे॥ अरुन अधर दुति चमकही चपला चकचौंधनि। कुटिल अलक छवि घुंघरे सुमनासुत शोधनि॥ चंपकलीसी नासिकारंग श्यामहि लीन्हें। नैनविसाल समुद्रसों कुंडल श्रुति दीन्हें॥ तहँ ए रहे भुलाइकै कछु समुझि नजाई। सूर श्याम वे वश किए मोहनी लगाई॥ जैतश्री ॥ लोचन भूलि रहे तहां जाई। अंग अंग छवि निरखि माधुरी इकटक पल विसराई॥ अति लोभी अचवत अघातहैं तापर पुनि ललचात। देत नहीं काहूको नेकहु आपुहि डारत खात॥ ओछे हाथ परी अपारनिधि काहू काम न आवै। सूर सबै

इनको क्यों सौंप्यो यह कहि कहि पछितावे ॥ धनाश्री ॥ नैनन यह कुटेव पकरी । लूटत श्याम रूप आपुनहीं निशि दिन पहर घरी ॥ प्रथमहि इन इह नोखे पाई गए अतिहि इतराइ । मिले अचानक वड़भागीहैं पूरण दरशन पाइ ॥ लोभी वड़े कृपणको इनसरि कृपा भई यह न्यारी । सूरश्याम उनको भए भोरे हमको निठुर मुरारी ॥ भौरी ॥ सुन सजनी मोसों इक वात । भाग विना कछु नहीं पाइए तू काहे पुनि पुनि पछितात ॥ नैनन वहुत करीरी सेवा पल पल घरी पहर दिन राति । मन वच क्रम दृढता इनकी है धन्य धन्य इनकी है जाति ॥ कैसे मिले श्याम इनको ढरि जैसे सुतके हितको मात । सूरदास प्रभु कृपासिंधु वे सहज वड़े हैं त्रिभुवन तात ॥ भैरों ॥ नैन श्याम सुख लूटत हैं । ईहै वात मोको नहिं भावै हमते काहे छूटत हैं ॥ महाअक्षय निधि पाइ अचानक आपुहि सवै चुरावत हैं । अपने हैं ताते यह कहियत श्याम इनहि भरुहावत हैं ॥ यह संपदा कहौ क्यों पचिहै वाल संघाती जानत हैं । सूरदास जो देते कछु इक कहौ कहा अनुमानत हैं ॥ रामकली ॥ सजनी मोते नैन गए । अव लौं आश रही आवनकी हरिके अंग छए ॥ जवते कमल वदन उन दरश्यो दिन दिन और भए । मिले जाइ हरदी चूने ज्यों एकहि रंग रए ॥ मोको तजि भए आपु स्वारथी वा रस मत्त भए । सूरश्यामके रूप समाने मानो वूँदतए ॥ विहागरो ॥ नैन गएरी अति अकुलात । ज्यों धावत जल नीचे मारग कहूं नहीं ठहरात ॥ कहा कहौं ऐसी आतुरता पवन वश्य ज्यों पात । ज्यों आए ऋतु राज सखीरी द्रुमन तेज झहरात ॥ आइ वसी ऐसी जिय उनके मैं व्याकुल पछितात । सूरदास कैसेहुँ न वहुरे गीधे श्यामल गात ॥ रामकली ॥ लोभी नैन हैं ये मेरे । उताहि श्याम उदार मनके रूप निधि टेरे ॥ जातही उन लूटि खाई तृपा जैसे नीर । क्षुधामें ज्यों मिलत भोजन होत जैसे धीर ॥ वे भएरी निठुर मोको अव परी यह जान । अष्ट सिद्ध नव निद्धि हरितजि लेहि ह्यां कह आन ॥ आपने सुखके भए वे हैं जो युग अनुमान । सूर प्रभु करि लियो आदर वड़े परम सुजान ॥ आसावरी ॥ नैननते हरि आप स्वारथी आज वात यह जानीरी । ए उनको वे इनको चाहत मिले दूध अरु पानीरी ॥ सुनियत परम उदार श्याम घन रूप राशि उन माहीरी । कीजै कहा कृपणकी संपति नैन नहीं जु पत्याहीरी ॥ विलसत डारत रूप सुधानिधि उनकी कछु न चलावैरी । सुनहु सूर हम स्वाति बूंदलौं रटलागी नहिं पावैरी ॥ सारंग ॥ जाते परचो श्याम घन नाम । इनते निठुर और नहिं कोई कवि गावत उपमान ॥ चातकके रट नेह सदा वह ऋतु अनऋतु नहिं हारत । रसना तारूसों नहिं लावत पीवै पीव पुकारत ॥ वै वरषत डोंगर वन धरणी सरिता कूप तडाग । सूरदास चातक मुख जैसे बूंद नहीं कहुँ लाग ॥ मलार ॥ श्याम घन ऐसे हैंरी माई । हमको दरश नही सपनेहूं धरे रहत निठुराई ॥ पटऋतु व्रत तनु गारि कियो क्यों चातक ज्यों रट लाई । उनमें है चित सदा हमारो नैक नहीं विसराई ॥ इंद्री मन लूटत लोचन मिलि इनको वै सुखदाई । सूर स्वाति चातककी करनी ऐसे हमहिं कन्हाई ॥ सारंग ॥ नैनन हरिको निठुर कराए । चुगली करी जाइ उन आगे हम ते वे उचटाए ॥ ईहै कह्यो हम उनहि वोलावत वे नाहिन ह्यां आवत । आरज पंथ लोककी संका तुम तन आवत पावत ॥ यह सुनिकै उन हमहि विसारी राखत नैनन साथ । सेवावश करिकै लूटतहैं वात आपने हाथ ॥ संगहि रहत फिरत नहि कतहूं आपु स्वारथी नीके । सुनहु सूर वे एउ तैसेइ वड़े कुटिलहैं जीके ॥ कपटी नैननते कोउ नाहीं ॥ घरको भेद औरके आगे क्यों कहिवेको जाहीं ॥ आपगए निधरक ह्वै हमते वराजि वराजि पचिहारी । मनका

मना भयो परिपूरण ढरि रीझे गिरिधारी ॥ इनहि विना वे उनहि विना ए अंतर नाहीं भावत । सूरदास यह युगकी महिमा कुटिल तुरत फल पावत ॥ बिलावल ॥ कहा भए जो आप स्वारथी नैनन अपनी निंद्य कराई। जो यह सुनत कहत सोइ धृग धृग तुरताहि ऐसी भई बड़ाई ॥ कहा चाहिए अपने सुखको इनतो सीखी इहै भलाई । अजहूँ जाइ कहै कोउ उनसों काहेको तुम लाज गँवाई ॥ अचरज कथा कहतिहौं सजनी ऐसी इह तुमसों चतुराई। सुनहु सूर जे भजि उबरेहैं तिनको तुम अब चाहति माई ॥ बिहागरो॥ सजनी नैना गए भगाइ । अरवातीको नीरबरे डी कैसे फिरिहैं धाइ ॥ वरत भवन जैसे तजियतुहै निकसे त्यों अकुलाइ । सोउ अपनो नाहिं पथिक पंथके वासा लीन्हो आइ ॥ ऐसी दशा भईहै इनकी सुखपायो ह्वां जाइ। सूरदास प्रभुकों ए नैना मिले निसान बजाइ ॥ बिलावल ॥ मोहन वदन विलोकि थकितभए माईरी ए लोचन मेरे। मिले जाइ अकुलाइ अगमने कहा भयो जो घूंघट घेरे ॥ लोकलाज कुलकानि छाँडि करि वरवश चपल पिकी भए चेरे। काहेको वादिहि वकति वावरी मानत कौन मते अब तेरे ॥ ललित त्रिभंगी तनु छवि अटके नाहिंन फिरत कितौऊफेरे॥ सूरश्याम सन्मुख रति मानत गए मग विसारि दाहिने डेरे ॥रामकली॥थकितभए मोहन मुख नैन। घूंघट वाटे न मानत कैसेहु वरजत वरजत कीन्हो गौन॥निदरि गए मर्यादा कुलकी अपनो भायो कीन्हो। मिले जाइ हरि आतुर ह्वै कै लूटि सुधारस लीन्हो ॥ अब तू वकति वादिरी माई कह्यो मानि रहि मौन । सुनहु सूर अपनो सुख तजिकै हमहिं चलावै कौन ॥ देवगंधार ॥ मेरे इन नैनन इते करे । मोहन वदन चकोर चंद्र ज्यों यकटक तेन टरे ॥ प्रमुदित मणिहिंअवलोकि उरग ज्यों अति आनंद भरे। निधिहि पाइ इतराइ नीच ज्यों त्यों हमको निदरे ॥ मृदु मुसुकनि मनो ठग लड्डुआमिषि गति मति सुध विसरे । फेरि लगे अँग अँग सो हरिके समुझि न सुधि पकरे ॥ ज्यों अटके गोचर घूंघट पट शिशु ज्यों अरनि अरे। धरे न धीर अनमने रुदनबल सो हठकरनिपरे । रही तडी खिझिलाज लकुटलै एकहु डरनडरे। सूरदास गथ खोटो काहे पारखि दोष धरे॥ जैतश्री ॥ नैनन दशाकरी यह मेरी । आपुन भए जाइ हरिचेरे मोहिं करत हैं चेरी ॥ जूठो खइए मीठे कारण आपुहि खात लडावत । और जाइ सो कौन नफेको देखनतौ नहिं पावत ॥ काज होइ तौ इहो कीजिए वृथा फिरै को पाछे । सूरदास प्रभु जब जब देखत नटसवाँग सो काछे ॥ ॥ बिलावल ॥ को इनकी परतीति बखाने। नैनाधौं काहेते अटके कौन अंगढरकाने ॥ उनके गुण वारेहिते सजनी मैं नीके करि जाने। चेरे भए जाइ ए तिनके कैसे उनहि पत्याने ॥ छिन छिनमें औरै गति जिनकी ऐसे आप सयाने । सूरश्याम अपने गुण सोभाको नहिं वश करि आने ॥ ॥ रामकली ॥ नैननि कठिन बानि पकरी। गिरिधर लाल रसिक विन देखे रहत न एक घरी ॥ आव तही यमुनाजल लीन्हें सखी सहज डगरी। वे उलटे मग मोहिं देखके हौं उलटी उत लै गगरी ॥ वह मूरति तबते इन बलकरि लै उरमांझ धरी । ते क्यों तृप्ति होत अनरंचक जिनि पाई सिगरी ॥ जग उपहास लोकलज्जा तजि रहे एक जकरी । सूर पुलक अँग अंग प्रेमभरि श्याम संग तकरी ॥ रामकली ॥ नैननि बानि परी नहिं नीकी। फिरत सदा हरि पाछे पाछे कहा लगनि उन जीकी ॥ लोकलाज कुलकी मर्यादा अतिही लागति फीकी । जोवीतति मोकोरी सजनी कहौं काहि यह हीकी ॥ अपने मन उन भली करीहै मोहि रहे हैं वीकी। सूरदास ए जाइ लोभान मृदु मुसुकनि हरिपीकी ॥ धनाश्री ॥ ऐसे निठुर भये नहिं कोई ॥ जैसे निठु

भये डोलत हैं मेरे नैना दोई ॥ निठुर रहत ज्यों शशि चकोरको वै उन विन अकुलाहीं । निठुर रहत दीपक पतंग उड़ि ज्यों जरि वारि मरि जाहीं ॥ निठुर रहत जैसे जल मीनहि तौसिय दशा हमारी । सूरदास धृग धृग तिनकोंहै जिनके नाहीं पीर परारी॥धनाश्री॥नैना मानैं नहिं मेरो वरज्यो। इनके लिए सखीरी मेरो वाहर रहै न घरज्यों॥यद्यपि जतन किये राखतिही तदपि न मानत हरज्यो। परवश भई गुडी ज्यों डोलति परचो पराए करज्यों ॥ देखे बिना चटपटी लागति कछू मूंड पढि परज्यों । को वकि मरे सखीरी मेरे सूरश्याम के थरज्यों ॥ नटनारायण ॥ नैना कह्यो मानत नाहिं । आपने हठ जहां भावत तहां को ए जाहिं ॥ लोकलज्जा वेदमारग तजत नहीं डराहिं। श्याम रसमें रहत पूरण पुलक अंगन माहिं ॥ पियाहिके गुण गुणत उरमें दरश देखि सिहाहिं। वदत हमको नेक नाहीं मरहिं जो पछिताहिं ॥ धरनि मन बिच धरी ऐसी कर्मना करि ध्याहि। सूर प्रभुपदकमल अलि ह्वै रैनि दिन न भुलाहि ॥ आसावरी ॥ परी मेरे नैनन यह वानि। जब लगि मुख निरखत तव लगि सुख सुंदरताकी खानि ॥ एगीधे वींधे न रहत सखिं तजी सवनिकी कानि । सादर श्रीमुखचंद्र विलोकत ज्यों चकोर रति मानि ॥ अतिह अधीर नीर भरि आवत सहत न दरशन हानि। कीजे कहा वांधि करि सौंपी सूरश्यामके पानि॥ जैतश्री ॥ नैनन ऐसी वानि परी। लुब्धे श्याम चरणपंकजको मोको तजी खरी ॥ घूंघटवोट किए राखतिही अपनीसी जु करी। गए पेलि ताको नहिं मान्यो देखो ज्यों निदरी ॥ गए सु गए फेरि नहिं वहुरे काधौं जियहि धरी। सुनहु सूर मेरे प्रतिपाले ते वश किए हरी ॥ सारंग ॥ नैननहीं समुझाइ रही। मानत नहीं कह्यो काहूको कठिन कुटेव गही ॥ अनजानतही चितै वदनछवि सन्मुख शूलसही। तनु विसरचो कुलकानि गवांई जगउपहास सही ॥ एते पर संतोष न मानत मर्यादा न गही । मगन होत वपुश्याम सिंधुमें कहू न थाहलही ॥ रोम रोम सुंदरता निरखत आनँद उमँगि ढही । सूरदास इन लोभिनके सँग वन वन फिरति वही ॥ रामकली ॥ नैना कह्यो न मानैं मेरो। हारि मानिकै रहीमौन ह्वै निकट सुनत नहिं टेरो ॥ ऐसे भए मनो नहिं मेरे जवहिं श्याम मुख हेरो । मैं पछिताति जवहिं सुधि आवति ज्यों दीन्हों मोहिं डेरो ॥ एतेपर कवहूं जव आवत झरपत लरत घनेरो। मोहूं वरवस उतहि चलावत दूत भयो उन केरो॥लोक वेद कुलकानि न मानै अतिही रहत अनेरो। सूरश्याम धौं कहा ठगोरी लाइ कियो धरि चेरो ॥कल्याण॥कवहुँ कवहुँ आवत ए मोहिं लेन माईरी। आवतही इहै कहत श्याम त्वहिं वोलाईरी ॥ नेकहू न रहत विरमि जात तहां धाईरी । मानो पहँचान नहीं ऐसे विसराईरी ॥ उनको सुख देत मोहिं वहिवेको पाईरी । सूरश्याम सँगही सँग निशि वासर जाईरी ॥ विहागरो ॥ मेरे नैननही सव दोष। विनहीं काज और को सजनी कतकीजै मन रोष ॥ यद्यपिहौं अपने जिय जानति अरु वरजे सव घोष । तद्यपि वा यशुमतिके सुत विन कहूं न सुख संतोष ॥ कहि पचिहारि रही निशि वासर और कंठ करि सोष । सूरदास अव क्यों विसरतुहै मधुरिपुको परितोष ॥ सोरठ ॥ मेरे नैना दोष भरे। नँदनंदन सुंदर वर नागर देखत तिनहिं खरे ॥ पलक कपाट तोरिकै निकसे घूंघट वोट न मानत । हाहाकारि पाँइन परि हारी नेकहु जो पहिंचानत ॥ ऐसे भए रहत ए मोपर जैसे लोग वटाउ । सोऊतो बूझेते वोलत इनमें इह निठुराउ ॥ ए मेरे अव होहिं नहीं सखि हरि छवि विगरि परे। सुनहु सूर ऐसेउ जन जगमें करता करनि करे ॥ रामकली ॥ नैना मोको नहीं पत्याहिं। जे लुब्धे हरिरूप माधुरी और गनत ए नाहिं ॥ जिनि दुहि धेनु औटि पय चाख्यो ते सुखपरसैं छाक। ज्यों मधुकर मधुकमल

कोश तजि रुचि मानतहै आक॥ जे षटरस मुख भोग करतहैं ते कैसे खरि खात। सूर सुनहु लोचन हरि रसतजि हमसों क्यों त्रिपितात॥ देवगंधार॥ मेरे नैननहीं सब खोरि। श्यामवदन छवि निरखि जु अटके बहुरे नहीं वहोरि॥जो मैं कोटि जतन करि राखति घूंघट वोट अगोरि॥ज्यों उड़ि मिले वधिक खग छिनमें पलक पिंजरन तोरि॥बुधि विवेक बल वचन चातुरी पहिलेहि लई अजोरि॥अति आधीन भई सँग डोलति ज्यों गुड्डीवशडोरि॥ अवधौं कौन हेतु हरि हमसों बहुरि हँसत मुख मोरि। मनहु सूर दोउ सिंधु सुधाभरि उमँगि चले मिति फोरि॥ गौरी॥ यह सब नैननहीको लागे। अपनेही घर भेद करो इन वरजतही उठि भागे॥ ज्यों बालक जननी सों अरझत भोजनको कछु माँगे। त्योंही ए अतिही हठ ठानत इकटक पलक न त्यागे॥ कहत देहु हरि रूप माधुरी रोवत हैं अनुरागे। सूरश्याम धौं कहा चखायो रूपमाधुरी पागे॥ धनाश्री॥ लोचन टेक परे शिशु जैसे। मांगत हैं हरि रूप माधुरी खोज परे हैं नैसे॥ वारंवार चलावत उतही रहन न पाऊं वैसे। जात चले आपुनही अबलौं राखे जैसे तैसे॥ कोटि यतन कहि कहि परवोधति कह्यो न मानहिं कैसे। सूर कहूं ठग मूरी खाई व्याकुल डोलत ऐसे॥ जैतश्री॥ इन नैननकी टेव न जाइ। कहा करौं वरजतही चंचल पर मुख लागत धाइ॥ वाट घाट जहां मिलत मनोहर तहां मुख चलत छपाइ। गीधे हेम चोर ज्यों आतुर वह छवि लेत चुराइ॥ मनहु मधुप मधुकारण लोभी हरिमुखपंकज पाइ। घूंघट पटवश जलहि मीन ज्यों अधिक उठत अकुलाइ॥निलजभए कुलकानि न मानत तिन सों कहा वसाइ। सूरश्याम सुंदर मुखरा विन देखे रह्यो न जाइ॥ सोरठ॥ जाके जैसी टेव परीरी। सोतौ टरै जीवके पाछे जो जो धरनि धरीरी॥ जैसे चोर तजै नहिं चोरी वरजेहु वहै करैरी। वर ज्यो जाइ हानि पुनि पावत कतही वकत मरीरी॥ यद्यपि व्याध वधै मृग प्रगटहि मृगिनी रहै खरीरी। ताहू नादवश्य ज्यों दीन्हों संका नहीं करीरी॥ यद्यपि मैं समुझावति पुनि पुनि यह कहि कहि जु लरीरी। सूरश्याम दरशनते इकटक टरत न निमिष घरीरी॥ सारंग॥ ए नैन मेरे ढीठ भएरी। घूंघट ओट रहत नहिं रोके हरिमुख देखन लोभ गएरी॥ जो मैं कोटि जतन करि राखे पलक कपाटनि मूँदि लएरी। उतरे उमँगि चले दोउ हठकरि करौं कहा मैं जान दएरी॥ अतिहि चपल वरज्यो नहिं मानत देखि वदन तन फेरि नएरी। सूरश्याम सुंदर रस अटके मानहुँ लोभी उहइ छएरी॥ नट॥ नैना ढीठ अतिही भए। लाज लकुट दिखाइ त्रासी नैकहूं ननए॥ तोरि पलक कपाट घूंघट वोट मेटि गए। मिले हरिको जाइ आतुर जैहैं गुणनि मए॥ मुकुट कुंडल पीतपट कटि ललित भेष ठए। जाइ लुब्धे निरखि वह छवि सूर नंद जए॥ ॥ विलावल॥ नैना झगरत आइकै मोसोंरी माई। खूँट धरत हैं धाइकै चलि श्याम दुहाई॥ मैं चकृत ह्वै ठगिरहौं कछु कहत न आवै। आपुन जाइ मिले रहैं अब मोहिं बोलावै॥ गए दरश जो देहिं वे तहां अपनी छाया। और कछू वहहै नहींरी उनकी माया॥ कपटिनके ढँग ए सखी लोचन हरि कैसे। सूरभली जोरी वनी जैसेको तैसे॥ सूही॥ नैननको मत सुनहु सयानी। निशि दिन तपत सिरात न कवहूं यद्यपि उमँगि चलतपानी॥ हों उपचार अमित उर आनति खल भई लोक लाज कुलकानी। कछु न सोहाइ दहति दरशन दव वारिजबदन मंद मुसुकानी॥ रूप लकुट अभिमान निडर ह्वै जग उपहास न सुनत लजानी। बुधि विवेक बल वचन चातुरी मनहुँ उलटि उनमांझ समानी॥ आरजपथ गुरु ज्ञान गुप्त करि विकल भई तनुदशाहिरानी। याचत सूरश्याम अंजनको वह किसोर छवि जीवहि तानी॥ सारंग॥

नैनन भलो मतो ठहरायो। जबहीं मैं बरजति हरि सँगते तबहीं तब टहरायो ॥ जरत रहत एते पर निशि दिन छिनु बिनु जनम गँवायो। ऐसी बुद्धि करन अब लागे मोको बहुत सतायो॥ कहा करों मैं हारि धरी जिय कोटि जतन समुझायो । लुब्धे हमचोरकी नांई फिरि फिरि उतही धायो॥ मोसों कहत भेद कछु नाहीं अपनोइ उदर भरायो। सूरदास ऐसे कपटिनको विधिना हाथ छड़ायो॥ बिलावल ॥ मेरे नैना अटकि परे। सुंदर श्याम अंगकी सोभा निरखत भटकि परे॥ मोरमुकुट लट घूंघरवारे तामें लटकि परे। कुंडलतरानि किरनि ते उज्ज्वल चमकनि चटकि परे॥ चपल नैन मृग मीन कंज जित आलि ज्यों लुब्धि परे। सूरश्याम मृदु हँसनि लोभाने हमते दूरि परे॥ बिलावल॥ नैनन साधै ये रही । निरखत वदन नंदनंदनको भूलि न तृप्ति कही॥ पचिहारे इनकी रुचि कारण परमिति तौ न लही। मगन होत अब श्याम सिंधुमें कतहुँ न थाह लही॥ रोम रोम सुंदरता निरखत आनँद उमँगि वही। दुख सुख सूर विचार एक करि कुलमर्याद ढही ॥ ॥ नट ॥ नैनन साध रही सिराइ। यद्यपि निशि दिन संगहि डोलत तद्यपि नहीं अघाइ॥ पलक नहिं कहुँ नेक लागत रहत इकटक हेरि। तऊ कहुँ त्रिपितात नाहीं रूप रसकी ढेरि ॥ ज्यों अगिनि घृत तृप्ति नाहीं तृषा नहीं बुझाइ। सूर प्रभु अति रूप दानी नैन लोभ नजाइ ॥ कल्याण॥ श्याम अंग निरखत नैन कहुँ अघात नाहीं। एकहि टक रहे जोरि पल पल नहि सकत तोरि जैसे चंदा चकोर तैसी इन पाहीं॥ छबि तरंग सरितागण लोचन ए सागर जनु प्रेम धार लोभ गहनि नीके अवगाही। सूरदास एते पर तृप्ति नहीं मानत ए इनकी सोइ दशा सखी बरणी नहि जाही ॥ बिलावल ॥ लोचन सपनेके भ्रम भूले। जो छबि निरखत सो पुनि नाहीं भरम हिंडोरे झूले॥ इक टक रहत तृप्ति नाहिं कबहूं एते पर इं फूले। निदरे रहत मोहिं नहि मानत कहत कौन हम तूले ॥ गोते गए कुब्जाके जरजों ऐस वे निरमूले। सूरश्याम जलराशि परे अब रूप रंग अनुकूले॥ गौरी॥ मेरे नैना ई अति ढीठ। मैं कुलकानि किये राखतिही ये हठि होत वसीठ॥ यद्यपि वे उत कुशल समर बल ए इत अतिबल ढीठ। तदपि निदरि पटजात पलक छिदि जूझत देत न पीठ। अंजन त्रास तजत तम कत तकि तानत दरशन डीठि। हारेहू नहिं हटत अमित बल वदन पयोधि पईठि ॥ आतुर अडत अर्काझ अँग अँग अनुरागनमितिमननीठि। सूरश्याम सुंदर रस अटके नहिं जा नत कछु मीठि॥ बिलावल ॥ नहीं ढीठ नैननते और। कितनो मैं बरजति समुझावति उलटि कर त है झोर॥ मोसों लरत भिरत हरि सन्मुख महा सुभट ज्यों धावत। भौंह धनुष शर सरस कटाक्षन मारु करत नहिं आवत॥ मानत नहीं हारि जो हारत अपने मन नाहिं टूटत । सूरश्याम अँग अँगकी सोभा लोभ सैन सों लूटत ॥ बिलावल ॥ लोचन लालची भारी। इनके लए लाज या तनकी सब श्याम सों हारी॥ बरजत मात पिता पति बंधव अरु आवे कुलगारी । तदपि रहत नँदनंदन बिन कठिन प्रकृति हठि धारी॥ नख शिख सुभग श्याम सुंदरके अंग अंग सुख कारी। सूरश्याम को जो न भजे सो कौन कुमति है नारी॥ कल्याण ॥ अतिरस लंपट नैन भए। चाख्यो रूप सुधारस हरिको लुब्धे उतहि गए॥ ज्यों व्यभिचारि भवन नहिं भावत औरहि पुरुष रई। आवत कबहुँ होत अति व्याकुल जैसे गवन नई॥ फिरि उतहीको धावत जैसे छुटत धनुष ते तीर। चुभे जाय हरि रूप वोपमें सुंदर श्याम शरीर॥ ऐसे रहत उतहिको आतुर मोसों रहत उदास। सूरश्यामके मन वच क्रम भए रीझे रूप प्रकाश ॥ धुही॥ ए नैना अति चपल चकोर। सरबस भूखि देत माधवको सुधि बुधि सुधन विवेक न मोर॥ अनजानत कल बैन श्रवण

सुनि चितै रहत उत उनकी वोर। मोहन मुख मुसुकाइ चले मानों भेद भयो यह लै अंकोर ॥ हरिको दोष कहा कहि दीजै जो कीजै सो इनको थोर। सूर संग सोवत न परी सुधि पायो मरम वियोगन भोर ॥ गौरी ॥ नैन करत घरहीकी चोरी। चोरन गए श्याम अँग सोभा उत शिरपरी ठगोरी ॥ अपवश करि इनको हरि लीन्हें मोतन फेरि पठाए। जो कछु रही संपदा मेरे सुधि बुधि चोर लिवाए ॥ राधा ए आए निधरकसों लैगए संग लगाइ। सूरश्याम ऐसे हैं माई उलटी चाल चलाइ ॥ सारंग ॥ नैनन प्राण चोरि लै दीने। समुझत नहीं बहुत समुझाए अति उत कंठ नवीने ॥ अति हौ चतुर चातुरी जानत सकल कला जु प्रवीने। लोभ लिये परवश भइ माई मीन जुबंसी भीने ॥ कहा कहौं कहिवे नहिं लायक मते रहत भर हीने ॥ आपु बँधाइ पुंजि लै सौंपी हरिरस रतिके लीने। ज्यों डोरे वश गुडी देखि यत डोलत संग अधीने। सूरदास प्रभु रूपसिंधुमें मिले सलिल गुण कीने ॥ नट ॥ये लोचन लालची भएरी। सारंगरिपुके रहत नरोंके हरिस्वरूप गिधएरी ॥ काजर कुलफ मेलि मैं राखे पलक कपाट दएरी। मिलि मनदूत पैजकरि निकसे बहुरि श्याम पैगएरी। ह्वै आधीन पंचते न्यारे कुललज्जा न नएरी। सूरश्याम सुंदर रस अटके मानो उहइँ छएरी ॥ विहागरो ॥ लोचन लोभ हिँमें ये रहत। फिरैं अपने काजहीको धीर नाहीं गहत॥देखि मृपनि कुरंग धावत तृप्ति नाहीं होत। ए लहत ना हृदय धावत तऊ नाहिंन वोत॥हठी लोभी लालची इनते नहीं कोउ और। सूर ऐसे कुटिलको छवि श्याम दीन्हों ठौर ॥ रामकली ॥ लोचन मानत नाहिंन बोल। ऐसे रहत श्यामके आगे मनुदै लीन्हें मोल ॥ इत आवत दै जात देखाई ज्यों भँवरा चकडोर। उतते सूत्र नटारत कतहूं मोसों मानत कोर ॥ नीके रहे सदा मेरे वश जाइ भए ह्वां जोर। मोहन शिर मोहनी लगाई जब चितए उनि वोर ॥ अव मिलि गए श्याम मनमाने निशि वासर इक ठौर। सूर श्यामके चोर कहावत राखेहैं गिरिगौर ॥ रामकली ॥ नैना उनही देखे जीवत। सुंदर वदन तडाग रूप जल निर खनि पुटभरि पीवत ॥ राखे रहत और नहिं पावै उन मानी परतीति। सूरश्याम इनसों सुख मानत देखे इनकी प्रीति ॥ गूजरी ॥ नैना नाहिंन कछू विचारत। सन्मुख समर करत मोहनसों यद्यपि हैं हठिहारत ॥ अवलोकत अलसात नवल छवि अमित तोष अतिआरत। तमकि तमकि तरकत मृगपति ज्यों घूंघट पटहि विदारत ॥ बुधि बल कुल अभिमान रोष रस जोवत भवहि निवारत। निदरे विरह समूह श्याम अँग पेखिपलक नहिं पारत ॥ अमित सुभट सकुचत साहस करि पुनि पुनि सुखहि सम्हारत। सूर स्वरूप मगन झुकि व्याकुल टरत न इकटक टारत ॥ ॥विहागरो॥ श्याम रंग नैना राचेरी। सारंग रिपुते निकसि निलज भए अव परगट नाचेरी॥मुरली नाद मृदंग मृदंगी अधर वजावन हार। गायन घर घर घेर चलावत लोभ नचावन हार॥ चंचलता नृत्यनि कटाक्षरस भाव बतावत नीके। सूरदास ए रीझे गिरिधर मनमाने उनहीके॥ ॥ रामकली ॥ नाचत नैन नचावत लोभ। यह करनी इन नई चलाई मेटि सकुच कुल क्षोभ ॥ घूंघट पट त्याग्यो इन मन क्रम नाचहि पर मनमान्यो। घर घर घेरि मृदंग शब्दकरि निलज काछनी वान्यो ॥ इंद्री मन समाज गायन ए ताल धरे रहैं पाछे। सूर प्रेम भावनिसों रीझे श्याम चतुर वर आछे ॥ धनाश्री ॥ नैनन सिखवत हारि परी। कमल नैन मुख विनु अवलोके रहत न एक घरी ॥ हों कुलकानि मानि सुनि सजनी घूंघट वोट करी। वे अकुलाइ मिले हरि लै मन लैतनहूकी बुद्धिहरी ॥ जवते अंग अंग छवि निरखत सो चितते न टरी। सूरश्याम मिलि लोक

वेदकी मर्यादा निदरी ॥ बिलावल ॥ इन नैननसोंरी सखी मैं मानी हारि। साट सकुच नहिं मानहीं बहुवारनि मारि ॥ डरत नहीं फिरि फिरि औरें हरि दरशन काज। आपु गए मोहूं कहैं चलि मिलि ब्रजराज ॥ घूंघट घरमें नहिं रहै कहि रही बुझाइ। पलक कपाट विदारिकै उठि चले पराइ ॥ तबते मौनभई रहौं देखत ए रंग। सूरज प्रभु जहँ जहँ रहै तहँ तहँ ए संग ॥ गूजरी ॥ नैना बहुत भांति हटके। बुधि बल छल उपाइ करि थाकी नैक नहीं मटके ॥ इत चितवत उतही फिरि लागत रहत नहीं अटके। देखतही उड़ि गए हाथते भए बटा नटके ॥ एकहिपरनि परे खग ज्यों हरि रूपमांझ लटके। मिले जाइ हरदी चूना त्यों फिरि न सूर फटके ॥ जैतश्री ॥ बहुत भांति नैना समुझाए। लंपट तदपि सकोच न मानत यद्यपि घूंघट पट अटकि दुराए ॥ निरखि नवल इतराहिं जाहिं मिलि विविखंजन अंजन जनुपाए। श्याम कुंवरके कमल वदनको महामत्त मधुकर ह्वै धाए ॥ घूंघट वोट तजी सरिता ज्यों श्यामसिंधुके सन्मुख धाए। सूरश्याम मिलकरि पलकनसों बिनमोलहि हठि भए पराए ॥ सोरठ ॥ नटके बटा भए ए नैन। देखतिहौं पुनि जात कहांधौं पलक रहत नाहिं ऐन ॥ स्वांगीसे ए भए रहतहैं छिनही छिन ए और। ऐसे जात रहत नाहिं रोके हैहूते अति दौर ॥ गए सु गए गए अब आए जात लगी नहिं वार। सूरश्याम सुंदरता चाहत जिनको वारनपार ॥ बिहागरो ॥ मोते नैन गएरी ऐसे। देखे वधिक पिंजराते खग छूटि भजत हे जैसे ॥ सकुच फांसि में फँदे रहत हैं ते धौं तौरें कैसे। मैं भूली यहि लाज भरोसे राखतिही ए वैसे ॥ श्यामरूप वनमांझ समाने मोपै रहैं अनैसे। सूर मिले हरिको आतुर ह्वै ज्यों सुरभी सुत तैसे ॥ जैतश्री ॥ लोचनभए पराए जाइ। सन्मुख रहत टरत नहिं कबहूं सदा करत सिवकाइ ॥ ह्वांतौ भए गुलाम रहतहैं मोसों करत ढिठाइ। देखत रहति चरित इनके सब हरिहि कहौंगी जाइ ॥ जिनको मैं प्रतिपालि बड़े किए ते तुम वशकरि पाइ। सूरश्यामसों यह करि लेहौं अपने वल पकराइ ॥ टोडी ॥ अब मैंहूं यहि टेक परी। राखों अटकि जान नहिं पावें क्यों मोको निदरी ॥ मौन भई मैं रही आजुलौं अपनोइ मन समुझाऊं। एऊ मिले नैनही डागरि देखति इनहु भगाऊं ॥ सुनरी सखी मिले ए कबके इनहीको यह भेद। सूरदास नहिं जानी अबलौं वृथा करति तनुखेद ॥ धनाश्री ॥ नैना भए पराए चेरे। नंदलालके रंग गए रँगि अब नाहिन वशमेरे ॥ यद्यपि जतन किए जुगवतिही श्यामलसोभा घेरे। तउ मिलि गए दूध पानी ज्यों निवरत नहीं निवेरे ॥ कुल अंकुश आरजपथ तजिकै लाज सकुच दिये डेरे। सूरश्यामके रूप भुलाने कैसहुँ फिरत न फेरे ॥ रामकली ॥ जाकी जैसी वानि परीरी। कोऊ कोटि करै नहिं छूटै जो जेहि धरनि धरीरी ॥ वारेहीते इनके एढंग चंचल चपल अनेरे। वरजतही वरजत उठि दौरे भए श्यामके चेरे ॥ ये उपजे वोछे नक्षत्रके लंपट भए वजाइ। सूरकहा तिनकी संगति जे रहैं पराए जाइ ॥ आसावरी ॥ नैननकोरी इहै सुहाइ। लुब्धे जाइ रूप मोहनको चेरे भए वजाइ ॥ फूले फिरत गिनत नहिं काहू आनँद उर न समात। इहै वात कहि सबन सुनावति नेकहु नहीं लजात ॥ निशि दिन करि सेवा प्रतिपाले बड़े भए जब आइ। तब हमको ये छांडि भगाने देखो सूर सुभाइ ॥ कान्हरो ॥ देखत हरिको रूप नैना हारेरी पै हारि न मानत। भए भटकि वलहीन क्षीन तनु तउ अपनी जै जानत ॥ दुरत न पटुकी वोट प्रगट ह्वै वीच पलक नहिं आनत। छुटि गये कुटिल कटाक्ष अलक मनो टूटि गए गुण तानत ॥ भाल तिलक भ्रुव चाप आपलै सोइ संधान सँधावत। मन क्रम वचन समेत सूर प्रभु नाहिं अपवल पहिंचानत ॥ सूही ॥ हारि जीति दोऊ सम इनके। लाभ हानि

काको कहियत है लोभ सदा जियमें जिनके ॥ ऐसी धरनि परीरी जाके लाज कहा ह्वै है तिनके। सुंदरश्याम रूपमें भूले कहा वश्य इन नैननि के ॥ ऐसे लोगनको सब मानत जिनकी घर घर हैं भनकै। लुब्धे जाइ सूरके प्रभुको सुनत रही श्रवणनि झनके॥ अथ अँखियाँ समयके पद ॥ धनाश्री ॥ अँखिअनके इहई टेव परी। कहा करौं वारिज मुख ऊपर लागति ज्यों भ्रमरी ॥ चितवति रहति चकोर चंद्र ज्यों विसरति नहिंन घरी। यद्यपि हटकि हटकि राखतिहौं तद्यपि होति खरी ॥ गड़ि जुरही वा रूप जलधि में प्रेम पियूष भरी। सूर तहां नग अंग परसरस लूटति निधि सिगरी ॥ धनाश्री अँखियां निरखि श्याम मुख भूली। चकित भई मृदु हँसनि चमक पर इंदु कुमुद ज्यों फूली ॥ कुल लज्जा कुल धर्म नाम कुल मानत नाहिंन एको। ऐसे ह्वै ये भजीं श्यामको वरजत सुनति न नेको ॥ लुब्धीं हारिके अंग माधुरी तनुकी दशा विसारी। सूरश्याम मोहनी लगाई कछु पढिकै शिरडारी ॥ जैतश्री ॥ अँखियां हरिके हाथ बिकानी। मृदु मुसुकानि मोल इन लीन्हीं यह सुनि सुनि पछितानी ॥ कैसे रहत रहीं मेरे वश अब कछु औरै भांति। अब वै लाज मरति मोहिं देखत बैठी मिलि हरि पांति ॥ स्वपनेकीसी मिलनि करत हैं कब आवति कब जाति। सूर मिलीं ढरि नँदनंदन को अनत नहीं पतियाति ॥ बिहागरो ॥ अँखियनि ऐसी धरनि धरी। नंदनँदन देखे सचुपावै मोसों रहति डरी ॥ कबहूं रहति निरखि मुख सोभा कबहुँ देह सुधि नाहीं कबहूं कहति कौन हरि को मैं यो तन मय ह्वै जाहीं ॥ अँखियाँ ऐसेहि भजीं श्यामको नहीं रह्यो कछु भेद। सूरश्यामके परम भावती पलक न होत विछेद ॥ रामकली ॥ अँखिअन श्याम अपनी करी। जैसेही उन मुँह लगाई तैसेही ए ढरी॥इनकिए हरि हाथ अपने दूरि हमते परी। रहति वासर रैनि इकटक छाँह घामैं खरी ॥ लोकलज्जा निकासि निदरी नहीं काहुहि डरी। ए महा अति चतुर नागरि चतुर नागर हरी ॥ रहति डोलति संग लागी डटति ज्यों नाहिं डरी। सूर जब हम हटकि हटकति बहुत हमपर लरी ॥ बिहागरो॥ अँखिआनि तबते वैर धरचो। जब हम हटकति हरि दरशन को सो रिसनहिं विसरचो ॥ तबहींते उन हमहिं भुलाई गई उतहिको धाइ। अबतौ तरकि तरकि ऐंठति हैं लेनी लेति बनाइ ॥ भई जाइ वे श्याम सुहागिनि वड़भागिनि कहवावैं । सूरदास वैसी प्रभुता तजि हमपै अब वे आवैं ॥ जैतश्री ॥ धन्य धन्य अँखियाँ वडभागिनि । जिन विन श्याम रहत नाहिं नेकहु कीन्हीं वनै सुहागिनि ॥ जिनको नहीं अंगते टारत निशि दिन दरशन पावैं। तिनकी सरि कहि कैसे कोई जे हरिके मनभावैं ॥ हमहींते ए भई उजागरि अब हमपर रिसमाने। सूरश्याम अति विवस भए हैं कैसे रहत लुभाने ॥ बिलावल ॥ ए अँखियां वड़भागिनी जिन रीझे श्याम। अँगते नैक नटारहीं वासर अरु याम ॥ ए कैसी हैं लोभिनी छवि धरति चुराइ । और न ऐसी करिसकै मर्यादा जाइ ॥ यह पहिले मनही करी अब तो पछिताति। उनके गुण गुणि गुणि झुरै याहू न पत्याति॥ इंद्रीवश न्यारी परी सुख लूटति आंखि।सूरदासजे सँग रहैं तेऊ मरैं झांखि ॥ बिलावल ॥ अँखिअनि ते री श्यामको प्यारी नहिं और। जिनको हरि अंग अंगमें करि दीन्हों ठौर ॥ जो सुख पूरण इन लह्यो कहा जानै और। अंवुज हरि मुख जारको दोउ भौंरी जोर ॥ यहि अंतर श्रवणन परी मुरलीकी सोर । सूर चकित भई सुंदरी शिरपरी ठगोर ॥ बिहागरो ॥ अँखिअनकी सुधि भूलि गई। श्याम अधर मृदु सुनत मुरलिका चकृत नारि भई ॥ जो जैसे तैसेहि रहिगई सुख दुख कह्यो नजाइ। लिखी चित्रकीसी सब ह्वै गई इक टक पल विसराइ ॥ काहू सुधि काहू सुधि नाहीं सहज मुरलिका गान। भवन रवनकी सुधि न रही तनु सुनत शब्द वह कान ॥ अँखिअनते

मुरली अति प्यारी वह वैरनि यह सौति । सूर परस्पर कहत गोपिका यह उपजी उदभौति॥ सारंग॥ अधररस मुरली लूटन लागी । जा रसको षटऋतु तनु गारयो सो रस पिवत सभागी ॥ कहां रही कहँ ते इह आई कौने याहि बुलाई । चकृत कहा भई ब्रजवासिनि यह तौ भली न आई ॥ साव धान क्यों होत नहीं तुम उपजी बुरी वलाइ । सूरदास प्रभु हमपर याको कीन्हीं सौति बजाइ सारंग ॥ आवतही याके ये ढंग । मन मोहन वश भए तुरतही ह्वैगए अंग त्रिभंग ॥ मैं जानी यह टोना जानति करिहै नाना रंग । देखो चरित भजै हरि कैसे या मुरलीके संग ॥ वातनमें कह ध्वनि उपजावति सुरते तान तरंग । सूरदाससे दूर सदन में पैठो बडो भुजंग ॥ अध्याय २९ वंशी ध्वनि सुरगोपीमोह ॥ रासलीलापंचाऽध्यायी ॥ राग टोडी ॥ मुरली सुनत भई सब वौरी । मानहुँ परि शिरमांझ ठगोरी ॥ जो जैसे सो तैसे सोरी । तनु व्याकुल सब भई किसोरी ॥ कोउ धरणी कोउ गगन निहारै। कोउ कर करते वासन डारै ॥ कोउ मनही मन बुद्धि विचारै । कोउ वालक नाहिं गोद सँभारै ॥ घर घर तरुनी सब वितितानी । मन मन कहति कौन यह वानी॥छुटि सब लाज गई कुलकानी। सुत पति आरजपंथ भुलानी ॥ लैलै नाम सवनिको टेरे । मुरली ध्वनि घरहीके नेरे ॥ कोउ जेवत पतिहीतन हेरै । कोउ दधिमें जावनपय फेरै ॥ कोउ उठि चली जैसही तैसे । फिरि आवहि घरहींमें पैसे ॥ घर पाछे मुरली ध्वनि ऐसे । आँगनगए नहीं वह जैसे ॥ गृह गुरुजन तिनहूं सुधि नाहीं । कोउ कतहूं कोउ कतहूं जाहीं ॥ कोउ निरखत कोउ काहू माहीं । मुरछयो मदन तरुणि सब डाहीं ॥ व्याकुल भई सबै ब्रजनारी । मुरली सों बोली गिरिधारी ॥ चलीं सबै जहँ तहँ सुकुमारी। उपजी प्रीति हृदय हरिभारी ॥ मुरलीश्याम अनूप वजाई । विधि मर्यादा सवनि भुलाई ॥ निशि वनको युवती सव धाई । उलटे अंग अभूपण ठाई ॥ कोउ चालि चरणहार लपटाई । काहू चौकी भुजनि वनाई ॥ अँगिया कटि लहँगा उरलाई । यह सोभा वरणी नहिं जाई॥कोउ उठि चली जातिहै कोऊ । कोउ मग गई मिली मग कोऊ ॥ सूरदास प्रभु कुंजविहारी । शरदरास रसरीति विचारी ॥ गुंडमलार ॥शरदनिशि देखि हरि हरष पायो। विपिन वृंदावन सुभग फूले सुमन रास रुचि श्यामके मनहि आयो ॥ परम उज्ज्वलरैनि छिटकि रही भूमि पर सद्यफल तरुन प्रति लटकि लागे । तैसोई परम रमणीक यमुना पुलिन त्रिविध वहै पवन आनंद जागे ॥ राधिका रवन वन भवन सुख देखिकै अधर धरि वेनु सुरललित वजाई । नाम लैलै सकल गोपकन्यानके सवनके श्रवन वह ध्वनि सुनाई ॥ सुनत उपज्यो मैन परत काहुन चैन शब्द सुनि श्रवन भई विकल भारी । सूर प्रभु ध्यान धरिकै चलीं उठि सबै भवन जन नेह तजि घोषनारी ॥ ८० ॥ विहागरो ॥ सुनहु हरि मुरली मधुर वजाई । मोहे सुर नर नाग निरंतर ब्रजवनिता मिलि धाई ॥ यमुना नीर प्रवाह थकित भयो पवन रह्यो मुरझाई । खग मृग मीन अधीन भए सब अपनी गति विसराई ॥ द्रुमवल्ली अनुराग पुलकतनु शशिथक्यो निशि न घटाई । सूरश्याम वृंदावन विहरत चलहु सखी सुधिपाई ॥ ८१ ॥ विहागरो ॥ मुरली सुनत उपजी वाइ । श्यामसों अतिभाव वाढो चलीं सव अकुलाइ ॥ गुरुजननसों भेद काहू कह्यो नहीं उघारि । अर्ध रैनि चलीं घरनिते यूथ यूथनि नारि ॥ नंदनंदन तरुनि वोलीं शरद निशिके हेत । रुचि सहित वनको चलीं वै सूर भई अचेत ॥ ८२ ॥ गुंडमलार ॥ सुनत मुरली भवन डर न कीन्हों । श्यामपै चित्त पहुँचाइ पहिले दियो आप उठि चली सुधि मदन दीन्हों ॥ कहत मनका मना आजु पूरण करैं नंदनंदन सवनि वन बुलाई । जानि लायक भजी तरुनि सुत पति तजी

काहु नहिं लजीं अति प्रेम धाई ॥ तज्यो कुलधर्म गोधन भवन जन तजे पगीं रस कृष्ण विन कछु न भावै। सूर प्रभु सों प्रेम सत्य करिकै कियो मन गयो तहां इनको बुलावै॥ ८३॥ सोरठ॥ मुरली मधुर बजायो श्याम। मन हरि लियो भवन नहिं भावै व्याकुल ब्रजकी बाम॥ भोजन भूषणकी सुधि नाहीं तनुकी नहीं सँभार। गृह गुरुलाज सूतसों तोरयो डरीं नहीं व्यवहार॥ करत शृंगार विवस भई सुंदरि अंगनि गई भुलाई। सूरश्याम वन वेणु बजावत चितहित रासरमाई॥ गुंडमलार॥ करत शृंगार युवती भुलाहीं। अंग सुधि नहीं उलटे वसन धारहीं एक एकनि कछू सुरति नाहीं॥ नैन अंजन अधर अंजहीं हरष सों श्रवण ताटंक उलटे सँवारैं। सूरप्रभु मुख ललित वेणु ध्वनि वन सुनत चलीं वेहाल अंचल नधारैं॥८३॥नट॥ हरि मुख सुनत वैन रसाल। विरह व्याकुल भई वाला चलीं जहँ गोपाल॥ पयदुहावत चलीं कोऊ रह्यो धीरज नाहिं। एक दुहनी दूध जावन को शिरावत जाहिं॥ एक उफनतही चलीं उठि धरयो नहीं उतारि। एक जेवन करत त्याग्यो चढ़े चूल्है दारि॥ एक भोजन करि संपूरन गई वैसहि त्यागि। सूर प्रभुके पास तुरतहि मन गयो उठि भागि॥८४॥रामकली॥मन गयो चित्त श्यामसों लाग्यो॥नानाविधि जेवन करि परस्यो पुरुष जेवाँवत त्याग्यो॥ इक पय प्यावत चलि तजि बालक छोह नहीं तब कीन्हों। चली धाइ अकुलाइ सकुच तजि बोलि वेतु ध्वनि लीन्हों॥ इक पति सेवा करत चली उठि व्याकुल तनु सुधि नाहीं। सूर निदारि विधिकी मर्यादा निशि वनको सब जाहीं॥ ८५॥ जैतश्री॥ जबहिं वन मुरली श्रवण परी। चकृत भई गोपकन्या सब कामधाम बिसरी॥ कुल मर्याद वेदकी आज्ञा नेकहु नहीं डरी। श्यामसिंधु सरिता ललनागन जलकी ढरनि ढरी॥ अँग मर्दन करिवेको लागीं उबटन तेल धरी। जो जेहि भांति चली सो तैसेइ निशि नवकुंज खरी॥ सुत पति नेह भवन जन संका लज्जा नहीं करी॥सूरदास प्रभु मन हरि लीन्हों नागर नव लहरी८६॥ केदारो॥ सुनि मुरली शबद ब्रजनारि। करति अंग शृँगार भूली काम गयो तनु मारि॥ चरण सों गहि हार बांध्यो नैन देखति नाहिं। कंचुकी कटि साजि लहँगा धरति हृदय माँहिं॥ चतुरता हरि चोरि लीन्हीं भई भोरी बाल। सूरप्रभु रति काम मोहन रास रुचि नँदलाल॥ ८७॥ रामकली॥ ब्रजयुवतिन मन हरयो कन्हाई। रास रंग रस रुचि मन आन्यो निशि वन नारि बुलाई॥ तब तनु गारि बहुत श्रम कीन्हों सो फल पूरण दैन। वेणु नाद रस विवस कराई सुनि ध्वनि कीन्हो गौन॥ जाको मन हरि लियो श्याम घन ताहि सँभारै कौन। सूरदास ज्यों नारि कंत मिलि करै सुभावै जौन॥ ८८॥ धनाश्री॥ चली वन वेणु सुनत जब धाइ। मात पिता बंधव इक त्रासत जाति कहां अकुलाइ॥ सकुच नहीं संकाहू नाहीं रैनि कहां तुम जाति। जननी कहति दई की घाली काहेको इतराति॥ मानति नहीं और रिस पावति निकसी नातो तोरि। जैसे जल प्रवाह भादौं को सोको सकै बहोरि॥ ज्यों केंचुरी भुवंगम त्यागत मात पिता यों त्यागे। सूरश्यामके हाथ बिकानी अलि अंबुज अनुरागे॥ ८९॥ गुंडमलार॥ सुनत मुरली अलि न धीर धरिकै। चलीं पित मात अपमान करिकै॥ लरत निकसीं सबै तोरि फारिकै। भई आतुर वदन दरश हरिकै॥ जाहि जो भजै सो ताहि रातै। कोऊ कछु कहै सब निरस बातै॥ ता विना ताहि कछु नहीं भावै। और तो जोरि कोटिक दिखावै॥ प्रीति कथा वह प्रीतिहि जानै। और करि कोटि बातैं वखानै॥ ज्यों सलिल सिंधु बिनु कहुँ न जाई। सूर वैसी दशा इनहुँ पाई॥ ९०॥ सूही बिलावल॥ घर घर ते निकसीं ब्रजबाला। लैलै नाम युवति जन जनके मुरली में सुनि सुनि ततकाला॥ इक मारग

इक घरते निकरी इक निकसत इक भई बेहाल। इक नाहीं भवनानि ते निकरी तिनपै आए परम कृपाल॥ यह महिमा ओई पै जानै कवि सों कहा वरणि यह जाइ। सूरश्याम रस रास रीति सुख विन देखे आवै क्यों गाइ॥९१॥मलार॥रासरस रीति नाहिं वरणि आवै।कहाँ वैसी बुद्धि कहां वह मन लहौं कहां इह चित्त जिय भ्रम भुलावै॥जो कहौं कौन मानै निगम अगम जो कृपा विन नहीं या रसहि पावै। भावसों भजै विन भाव में ए नहीं भावही माहँ भाव यह वसावै॥यहै निज मंत्र यह ज्ञान यह ध्यान है दरश दंपति भजन सार गाऊं। इहै मांग्यो वार वार प्रभु सूरके नैन द्वौ रहैं नरदेह पाऊं॥९२॥केदारो। मुरली ध्वनि करी वलवीर। शरदनिशिको इंदुपूरण देखि यमुनानीर॥ सुनत सो ध्वनि भई व्याकुल सकल घोपकुमारि। अंग अभरण उलटि साजी रही कछु न सँभारि॥ गईं सोरहसहस हरिपै छांडि सुत पति नेह। एक राखी एकको पति सो गई तजि निजदेह॥ दियो तिन तिय आन मधुरे चितै लोचन कोर। सूर भजि गोविंद यो जग मोह वंधन तोर॥९३॥ सारंग॥ सुनो शुक कह्यो परीक्षित राव। गोपिन परम कंत हरि जान्यो लख्यो न ब्रह्मप्रभाव॥ गुणमें ध्यान कीन्ह निर्गुण पद पायो तिन केहि भाइ। मेरे जिय संदेह वढ्यो यह मुनिवर देहु नशाइ॥शुक कह्यो कुटिलभाव मन राखे मुक्तभयो शिशुपाल। गोपी हरिकी प्रिया मुक्ति लहैं कहा अचरज भूपाल॥ काम क्रोध में नेह सुहृदता काहू विधि करै कोई। धरैं ध्यान हरिको जे दृढकरि सूर सो हरिसों होई॥९४॥ गुंडमलार॥ सुनत वन वेनु ध्वनि चलीं नारी। लोक लज्जा निदरि भवन तजि सुंदरी मिलीं वनजाइके वनविहारी॥ दरशके लहत मनहरप सवको भयो परसकी साध अति करति भारी। इहै मन वच कर्म तज्यो सुत पति धर्म मेटि भव भर्म सहिलाज गारी॥ भजै जेहि भाव जो मिलै हरि ताहि त्यों भेद भेदा नहीं पुरुप नारी। सूरप्रभु श्याम ब्रजवाम आतुरकाम मिलीं वनधाम गिरिराज धारी॥९५॥ सूही विलावल॥ देखि श्याम मनहरप वढ़ायो। तैसिय शरद चांदिनी निर्मल तैसोइ रासरंग उपजायो॥ तैसिय कनकवरन सव सुंदरि यह सोभा पर मन ललचायो॥ तैसी हंस सुता पवित्र तट तैसोइ कल्पवृक्ष सुख दायो। करौं मनोरथ पूरण सवके इहि अंतर इक खेद उपायो। सूरश्याम रचि कपट चतुरई युवतिनके मन यह भरमायो॥९६॥ विहागरो॥ निशि काहे वनको उठि धाईं। हँसि हँसि श्याम कहतहैं सुंदरि की तुम ब्रजमारगहि भुलाई॥ गई रही दधिवेचन मथुरा तहां आजु अवसेर लगाई। अति श्रम भयो विपिन क्यों आई मारग वह कहि सवनि वताई॥ जाहु जाहु घर तुरत युवति जन खिझत गुरूजन कहि डरवाई। की गोकुलते गमन कियो तुम इन वातन है नहीं भलाई॥ यह सुनिकै ब्रजवाम कहत भई कहा करत गिरिधर चतुराई। सूरनाम लै लै जन जनके मुरली वारंवार वुलाई॥९७॥ विहागरो॥ यह जिनि कहौ घोप कुमारि। हम चतुरई नहीं कीन्हीं तुम चतुर सव ग्वारि॥ कहां हम कहां तुम रही ब्रज कहां मुरली नाद। करतिहौ परिहास हमसों तजौ यह रस वाद॥ वड़ेकी तुम वहू वेटी नामले क्योंजाइ। ऐसेही निशि दौरि आई हमहि दोप लगाइ॥ भली यह तुम करी नाहीं अजहुँ घर फिरि जाहु। सूर प्रभु क्यों निडरि आई नहीं तुम्हरे नाहु॥९८॥ जैतश्री॥ मात पिता तुम्हरे धौं नाहीं। वारंवार कमलदललोचन यह कहि कहि पछिताहीं॥ उनके लाज नहीं वन तुमको आवन दीन्हीं राति। सव सुंदरी सवै नव योवन निठुर अहिरकी जाति॥ की तुम कहि आई की ऐसेहि कीन्ही कैसी रीति। सूर तुमहिं यह नाहीं वूझी वड़ी करी विपरीति॥९९॥ रामकली॥ अव तुम

कही हमारी मानो। बनमें आइ रैनि सुख देख्यो इहै लह्यो सुख जानो॥ अब ऐसी कीजो जिनि कबहूं जानाति हो मन तुमहूं। यह ध्वनि सुनै कहूं जो कोऊ तुमहिं लाज अरु हमहूं॥ हमतो आजु बहुत सरमाने मुरली टेरि बजायो। जैसो कियो लह्यो फल तैसो हमही दोपन आयो॥ अब तुम भवन जाहु पति पूजहु परमेश्वरकी नाहीं। सूरश्याम युवतिनसों यह कहि कहि सब अपराध क्षमाहीं॥७००॥सूही बिलावल॥यह युवतिनको धर्म नहोई। धृग सो नारि पुरुप जो त्यागै धृग सो पति जो त्यागै जोई॥ पतिको धर्म रहै प्रतिपाले युवती सेवाहीको धर्म। युवती सेवा तऊ न त्यागै जो पति कोटि करै अप कर्म॥ बनमें रैनि वास नहि कीजै देख्यो बन वृंदावन आई।विविध सुमन शीतल यमुना जल त्रिविध समीर परसि सुखदाई॥ घरही में तुम धर्म सदाही सुत पति दुखित होत तुम जाहु। सूरश्याम यह कहि परबोधत सेवा करहु जाइ घरनाहु॥ १ ॥ बिहागरो ॥ यह विधि वेद मारग सुनो। कपट तजि पति करौ पूजा कहा तुम जिय गुनौ॥ कंत मानहु भव तरौगी और नहिंन उपाइ। ताहि तजि क्यों विपिन आईं कहा पायो आइ॥ विरध अरु विन भाग हूको पति तजो पति होइ। जऊ मूरख होइ रोगी तजै नाहीं जोइ॥ इहै मैं पुनि कहत तुमसों जगत में यह सार। सूर पति सेवा विना क्यों तरौगी संसार॥२॥बिहागरो॥कहा भयो जो हमपै आई कुलकी रीति गमाई। हमहूंको विधिको डरभारी अजहुँ जाहु चंडाई॥ तजि भरतार और जो भजिए सो कुलीन नाहिं होई। मरे नरक जीवत या जगमें भलो कहै नहिं कोई॥हम जो कहत सबै तुम जानत तुमहूँ चतुर सुजान। सुनहु सूर घर जाहु हमौ घर जैहैं होत बिहान ॥ ३ ॥ बिलावल ॥ निठुर वचन सुनि श्यामके युवती विकलानी। चकृत भई सब सुनिरहीं नहिं आवै वानी॥ मनों तुषार कमल न परयो ऐसे कुँभिलानी। मनो महानिधि पाइकै खोये पछितानी॥ ऐसी ह्वैगईं तनुदशा पियक सुनि वानी। सूर विरह व्याकुल भई बूडी विनपानी ॥ ४ ॥ मारू ॥ श्याम उर प्रीति मुख कपट वानी। युवति व्याकुल भई धरणि सब गिरि गई आश गई टूटि नहिं भेद जानी ॥ हँसत नँद लाल मन मन करत ख्यालए भई वेहाल ब्रजबाल भारी। रुदन जल नदी सम वहिचल्यो उरज विच मनों गिरि फोरि सरिता परानी॥ अंग थकि पथिक नहिं चलत कोऊ पंथ नावरसभाव हरि नहीं आनै। सूर प्रभु निठुर करि कहा ह्वै रहेहौ उनहिं विन औरको खेइजानै ॥ ५ ॥ जैतश्री ॥ निठुर वचन जिनि बोलहु श्याम। आश निराश करौ जिनि हमरी व्याकुल वचन कहति हैं वाम ॥ अंतर कपट दूरि करि डारौ हमतनु कृपा निहारो। कृपासिंधु तुमको सब गावत अपनो नाम सँभारो॥ हमको शरण और नहिं सूझै कापै हम अब जाहिं। सूरदास प्रभु निज दासनिको चूक कहा पछिताहिं॥ ६ ॥ गौरी ॥ तुम पावत हम घोपन जाहिं।कहा जाइ लैहैं ब्रजमें हम यह दरशन त्रिभुवनमें नाहिं ॥ तुमहूँते ब्रजहितू कोउ नहिं कोटि कहौ नहिं मानै। काके पिता मात हैं काके काहू हम नहिं जानै॥ काके पति सुत मोह कौनको घर है कहां पठावत।कैसो धर्म पापहै कैसो आश निराश करावत॥ हम जानै केवल तुमहीको और वृथा संसार। सूरश्याम निठुराई तजिए तजिय वचन विनसार ॥ ७ ॥ जैतश्री ॥ तुमहौ अंतर्यामि कन्हाई। निठुर भए कत रहत इतेपर तुम नाहिं जानत पीर पराई॥ पुनि पुनि कहत जाहु ब्रजसुंदरि दूरि करौ पिय यह चतुराई। आपुहि कही करौ पति सेवा ता सेवाको हैं हम आई॥ जो तुम कहौ तुमहिं सब छाजै कहा कहैं हम प्रभुहि सुनाई। सुनहु सूर इहँई तनु त्यागैं हमपै घोप गयो नहिं जाई॥ ८ ॥ बिहागरो ॥ कैसे हमको ब्रजहि पठावत। मनतौ रह्यो चरण लपटानो जो यतनी यह

देह चलावत ॥ अटके नैन माधुरी मुसकानि अमृत वचन श्रवणनको भावत । इंद्री सबै मनहिके पाछे कहो धर्म काहि कहा बतावत ॥ इनको करी आपनो लायक तौ क्यों हम नाहीं जिय भावत। सूरसैनदै सरवस लूट्यो मुरली लै लै नाम बुलावत॥ ९ ॥ कान्हरो ॥ भवन नहीं अब जाहिं कन्हाई। सुजन बंधुते भई बाहिरी अब कैसे दे करत बडाई । जो कबहूं वे लेहिं कृपाकारि धृग वै धृग हम नारि। तुम बिछुरत जीवन धृग राखैं कहौं न आपु बिचारि ॥ धृग वह लाज विमुखकी संगति धनि जीवन तुम हेत । धृग माता धृग पिता गेह धृग धृग सुत पतिको चेत ॥ हम चाहति मृदु हँसनि माधुरी जाते उपज्यो काम । सूरश्याम अधरन रस सींचहु जरति विरह सब वाम ॥ १० ॥ कान्हरो ॥ सुनहु श्याम अब करहु चतुरई क्यों तुम वेणु बजाइ बुलाई । विधि मर्याद लोककी लज्जा सबै त्यागि हम धाई आई ॥ अब तुमको ऐसी न बूझिये आश निराश करौ जिनि साई । सोइ कुलीन सोई वडभागिनि जो तुव सन्मुख रहैं सदाई ॥ ते धनि पुरुष नारि धनि तेई पंकज चरण रहैं दृढताई॥सूरदास कहि कहा बखानै यह निशि यह अँग सुंदरताई॥११॥रामकली॥ विनती सुनिये श्यामसुजान । अतिहि सुख अपमान कीन्हों दृढ न इनते आन ॥ अब करौ दुख दूरि इनको भजों तजि अभिमान।विरह द्वंद्व निवारि डारो अधररस दै पान । मनहि मन यह सुखकरत हरि भए कृपानिधान।सूर निश्चय भजी मोकों नहीं जानति आन॥१२॥बिलावल॥मोहिं विना ए और न जानै विधि मर्याद लोककी लज्जा तृणहूते घटिमानै।इन मोको नीके पहिचान्यो कपट नहीं उरराख्यो।साधु साधु पुनि पुनि हरषित ह्वै मनहीं मन यह भाख्यो । पुनि हँसि कह्यो निठुरता धरिकै क्यों त्याग्यो गृहधर्म । सूर श्याम मुख कपट हृदय रति युवतिनके अति भर्म ॥ १३ ॥ गुंडमलार ॥ तजौ नँद लाल आति निठुरई गहि रहे कहा पुनि पुनि कहत धर्म हमको । एकही ढँग रहे वचन सब कटु कहे वृथा युवतिन दहे मेटि प्रनको ॥ विमुख तुमते रहैं तिनहि हम क्यों गहैं तहाँ कह लहैं दुख देहिं भारी । कहा सुत पति कहा मात पित कुल कहा कहा संसार वन वन विहारी ॥ हमहिं समुझाइ यह कहो मूरख नारि कहो तुम कहां नाहिं भर्म जानैं । सुनहु प्रभु सूर तुम भले की वे भले सत्य करि कहौ हम अबहिं मानें॥१४॥ रामकली ॥ तुमहि विमुख धृग धृग नर नारि । हमतौ यह जानति तुव महिमा को सुनिए गिरिधारि ॥ सांची प्रीति करी हम तुमसों अंतर्यामी जानो ॥ गृह जनकी नाहिं पीर हमारे वृथा धर्म हमठानो ॥ पाप पुण्य दोऊ परित्यागे अब जो होइ सुहोई । आश निराश सूरके स्वामी ऐसी करै नकोई ॥ १५ ॥ जैतश्री ॥ आश जिनि तोरहु श्याम हमारी । बैन नाद ध्वनि सुनि उठि धाई प्रगटत नाम मुरारी ॥ क्यों तुम निठुर नाम प्रगटायो काहे विरद भुलाने । दीन आजु हमते कोउ नाहीं जानि श्याम मुसुकाने ॥ अपने भुजदंडन कर गहिए विरह सलिल में भासी । वार वार कुलधर्म बतावत ऐसे तुम अविनासी ॥ प्रीति वचन नवका कारि राख्यो अंकम भरि वैठावहु । सूरश्याम तुम बिनु गति नाहीं युवतिन पार लगावहु॥१६॥नट॥चितदै सुनहु अंबुज नैन । कृपणके गथ भयो हमको सरस अमृत बैन ॥ हम गुणी नववाल रिझवति तुम तरुण धनराशि। कैसेहू सुखदान दीजै विरह दारिद नाशि॥ करहु यह यश प्रगट त्रिभुवन निठुर कोठी खोलि । कृपा चितवनि भुज उठावहु प्रेमवचननि वोलि ॥ दीनवाणी श्रवण सुनि सुनि द्रए परम कृपाल । सूर एकहु अँग न काची धन्य धनि व्रजवाल ॥ १७ ॥ बिहागरो ॥ हरि सुनि दीन वचन रसाल । विरह व्याकुल देखि बाला भरे नैन विसाल ॥ चारु आनन लोरधारा वराणि कापै जाइ । मनहुँ सुधातडाग उछले प्रेम प्रगटि देखाइ ॥ चंद्रमुख पारि निडरि वैठे सुभग जोर चकोर। पियत

मुख भरि भरि सुधा शशि गिरत तापर भौर ॥ हरप वाणी कहत पुनि पुनि धन्य धनि ब्रजवाल। सूर प्रभु करि कृपा जोह्यो सदय भए गोपाल॥ १८॥ विहागरो॥ श्याम हँसि बोले प्रभुता डारि। वारंवार विनय कर जोरत कटिपट गोद पसारि॥ तुम सन्मुख मैं विमुख तुम्हारो मैं असाध तुम साध।धन्य धन्य कहि कहि युवतिनको आप करत अनुराध॥ मोको भजी एक चित ह्वैके निदरि लोक कुलकानि।सुत पति नेह तोरि तिनुकासों मोही निजकरि जानि॥जाके हाथ पेट फल ताको सो फल लह्यो कुमारि। सूर कृपा पूरण सों बोले गिरिगोवर्धन धारि॥१९॥सूही बिलावल॥ कहत श्याम यह श्रीमुखवानी। धन्य धन्य दृढ नेम तुम्हारो विन दामन मो हाथ विकानी॥ निर्दय वचन कपटके भाषे तुम अपने जिय नेक न आनी। भजी निसंक आय तुम मोको गुरुजनकी संका नहिं मानी॥ सिंह रहै जंबुक शरणागत देखी सुनी न अकथ कहानी। सूरश्याम अंकम भरि लीन्हीं विरह अग्नि झर तुरत बुझानी॥२०॥ मारू॥ कियो जेहि काज तप घोषनारी। देउँ फल हौं तुरत लेहु तुम अव वरी हरप चित करहु दुख देहु डारी॥ रासरस रचौ मिलि संग विलसहु सवै विहँसि हरि कह्यो यों निगमबानी। हँसत सुख मुख निरखि वचन अमृत वरपि प्रिया रस भरे सारंगपानी॥ ब्रजयुवती चहुँ पास मध्य सुंदर श्याम राधिका वाम अति छवि विराजै। सूर नव जलद तनु सुभग श्यामलकांति इंद्रवधु पांति विच अधिक छाजै॥ २१ ॥ नट॥ हरि मुख देखि भूले नैन। हृदय हरषित प्रेम गद्गद मुख न आवत वैन ॥ काम आतुर भजी गोपी हरि मिले तेहि भाइ। प्रेम वश्य कृपालु केशव जानि लेत सुभाइ॥ परस्पर मिलि हँसत रहसत हरपि करत विलास। उमँगि आनँद सिंधु उछल्यो श्यामके अभिलाष॥ मिलति इक इक भुजनि भरि भरि रास रुचि जिय आनि। तेहि समय सुख श्याम श्यामा सूर क्यों कहै गानि॥ २२ ॥ विहागरो॥ रास रुचि जवहि श्याम मन आनी। करहु शृंगार सँवारि सुंदरी हँसत कहत हरि वानी॥ जो देखे अँग उलटे भूपण तव तरुनिन मुसुकानी।वार वार पिय देखि देखि मुख पुनि पुनि युवति लजानी॥ नवसतसाजि भई सव ठाढी को छवि सकै वखानी ॥ वह छवि निरखि अधीर भई तनु कामनारि वितानी॥ कुच भुज परसि करी मनइच्छा कछु तनु तृपा बुझानी। सुनहु सूर रसरास नायका सुंदरि राधा रानी॥ २३॥ सोरठ॥ अंचल चंचल श्याम गह्यो। लै गए सुभग पुलिन यमुनाके अँग अँग भेष लह्यो॥ कलपतरोवर तर वंसीवट राधा रति गृहधाम। तहां रास रस रंग उपायो सँग सोभाति ब्रजवाम॥ मध्य श्याम घन तडित भामिनी अतिराजत शुभ जोरी। सूरदास प्रभु नवल छवीले नवल छवीली गोरी॥ २४॥ टोडी॥ जहां श्याम घन रास उपायो। कुमकुम जल सुख वृष्टि रमायो॥ धरणीरज कपूर मय भारी। विविध सुमन छवि न्यारी न्यारी॥युवतीजुरि मंडली विराजै।विच विच कान्ह तरुनि विच भ्राजै॥अनुपम लीला प्रगट देखायो। गोपिनको कीयो मन भायो॥ विच श्री श्याम नारि विच गोरी। कनकखंभ मर्कत खचि धोरी॥ सोभा सिंधु हिलोर हिलोरी। सूर कहा मति वरणै थोरी॥ २५॥ गुंडमलार॥ रास मंडल वने श्याम श्यामा। नारि दोहूं पास गिरिधर वने दुहुँनि विच सहस शशि वीस द्वादश उपमा॥ मुकुटकी छवि निरखि कहा उपमा कहौं नैन जानत नहीं देह जानै। सुभग नवमेघ ता वीच चपला चमक निरखि नृत्यत मोर हरष मानै॥ करति आनंद पियसंग लक्ष्मी पुंज वढत रसरंग छिन छिनहि थोरै। सूर प्रभु रास रस नागरी मध्य दोउ परस्पर नारि पति मनहि चोरै॥ २६॥ परस्पर श्याम ब्रजवाम सोहै। शीशश्रीखंड कुंडल जडित माणि श्रवण निरखि छवि श्याम मन तरुणि मोहै॥

नाशिका ललित वेसरि वनी अधर तट सुभग ताटंक छवि कहि न जाई । धरणि पग पटकि कर झटकि भौंहनि मटकि अटकि मन तहां रीझे कन्हाई ॥ तब चलत हरि मटकि रही युवती भटकि लटकि लटकन खटकि छवि विचारै । कहति प्रभु सूर वहुरौ चलौ वैसही हमहु वैसे चलैं जो निहारै ॥ २७ ॥ निरखि व्रजनारि छवि श्यामलाजे । विविधवेनीं रची मांग पाटी सुभग भाल वेंदीविंदु इंदु लाजे ॥ श्रवण ताटंक लोचन चारु नासिका हंस खंजन कीर कोटि लाजै । अधर विद्रुम दशन नहीं छवि दामिनी सुभगवेसरि निरखि काम लाजै ॥ चिवुक तर कंठ श्रीमाल मोतीन छवि कुच उचनि हेम गिरि अतिहि लाजै । सूरकी स्वामिनी नारि व्रजभामिनी निरखि पिय प्रेम सोभा सुलाजै ॥ २८ ॥ विहागरो ॥ वनी व्रजनारि सोभा भारि । पगनि जेहरि लाल लहँगा अंग पचरँग सारि ॥ किंकिणी कटि कुनित कंकन करचुरी झनकार । हृदय चौकी चमकि वैठी सुभग मोतिनहार ॥ कंठश्री दुलरी विराजत चिवुक श्यामल विंद।सुभग वेंदी ललित नासा रीझिरहे नँदनंद ॥ श्रवणपर ताटंककी छवि गोर ललित कपोल । सूर प्रभु वश अति भएहैं निरखि लोचनलोल ॥ २९ ॥ जैतश्री ॥ सुर गण चढि विमान नभ देखत । ललना सहित सुमन गण वरपत जन्म धन्य व्रजहीको लेखत ॥ धनि व्रजलोग धन्य व्रजवाला विहरत रास गोपाल । धनि वंसीवट धनि यमुनातट धनि धनि लता तमाल ॥ सवते धन्य धन्य वृंदावन जहीं कृष्णको वास । धनि धनि सूरदासके स्वामी अद्भुत राच्यो रास ॥ ३० ॥ विलावल ॥ नैन सफल अव भए हमारे । देवलोक नीसान वजाए वरपत सुमन सुधारे ॥ जैजैध्वनि किन्नर मुनि गावत निरखत योग विसारे । शिव शारद नारद यह भापत धनि धनि नंददुलारे ॥ सुरललना पतिगति विसराए रही निहारि निहारि। जात न वनें देखि सुख हरिको आई लोक विसारि।।यह छवितिहूं भुवनकहुँ नाहीं जो वृंदावन धाम । सुंदर त्रयगुण रसकी सींवां सूर राधिका श्याम ॥ ३१ ॥ आसावरी ॥ हमको विधि व्रज वधू न कीन्हीं कहा अमर पुर वास भए । वार वार पछितात यहै कहि सुख हो तो हरि संग रए ॥ कहा जन्म जो नहीं हमारो फिरि फिरि व्रज अवतार भलो । वृंदावन द्रुम लता हूजिए कर तासों मांगिए चलो ॥ यह वांछना होइ क्यों पूरण दासी ह्वै वरु व्रज रहिए। सूरदास प्रभु अंतर्यामी तिनहि विना कासों कहिए ॥३२॥ विहागरो ॥धन्य नंद यशु दाके नंदन । धनि श्रीखंड पिंड शिर लटकनि धनि कुंडल धनि मृगमद चंदन ॥ धनि राधिका धन्य सुंदरता धनि मोहनकी जोरी । ज्यों वनमध्य दामिनीकी छवि यह उपमा कहौं थोरी ॥ धनि मंडली जुरी गोपिनकी ताविच नंदकुमार । राधा श्याम सव गोपकुमारी क्रीडत रास विहार ॥ पट दश सहस गोपकीनारी पट दश सहस गुपाल । काहूसों कहुँ अंतर नाहीं करत परस्पर ख्याल ॥ धनि व्रजवास आश यह पूरण कैसे होति हमारी । सूर अमर ललना गण अंमर विथकी लोक विसारी ॥३३॥ मलार ॥ मानो माई घन घन अंतर दामिनि । घन दामिनि दामिनि घन अंतर सोभित हरि व्रज भामिनि ॥ यमुना पुलिन मल्लिका मनोहर शरद सुहाई यामिनि । सुंदर शशि गुण रूप राग निधि अंग अंग अभिरामिनि ॥ रच्यो रास मिलि रसिकराइ सों मुदित भई व्रज भामिनि । रूपनिधान श्यामसुंदर घन आनँद मन विश्रामिनि॥ खंजन मीन मराल हरन छवि भान भेद गजगामिनि । को गति गुनही सूरश्याम सँग काम विमोह्यो कामिनि ॥ ३४ ॥ मलार ॥ देखो माई रूप सरोवर साज्यो । व्रजवनिता वरवारि वृंद में श्री व्रजराज विराज्यो ॥ लोचन जलज मधुप अलकावलि कुंडल मीन सलोल । कुच चक्रवाक विलोकि वदन विधु विछुरि रहे अन

बोल ॥ मुक्तामाल बाल बग पंगति करत कुलाहल कूल । सारस हंस मध्य शुक सैना वैजयंति सम तूल ॥ पुरइनि कपिश निचोल विविध रंग विहसत सचु उपजावै । सूरश्याम आनंद कंद की सोभा कहत न आवै ॥३५॥ सूही ॥ तरुतमाल गोपाल लाल वनमाल गिरिधर हृदय विसाल । कबहुँक गोधन सँगलै बालक कबहुँ फिरत सँग सखा ग्वाल । धनि व्रजनायक सबगुण लायक कियो महरि पोषी प्रतिपाल । कबहुँक बनिकै रहे जु बनए गोरस दान लेत तत्काल ॥ पैठि पताल नाथ्यो काली फन प्रति नृत्यत विविध ताल । धन भूषन धन मुकुट जरचो नग हीरा चूनी लाल ॥ धन्य सूर प्रभुता धरे राजै सँग सँग वनिता जाल।कुंडल लोल कपोल विराजत दशन चमक सपनाल॥३६॥कान्हरो॥भाल तिलक सोभित शिर केसरि नैना विवि वने।कटि कछनी चंदन खौरि श्याम वरन घन सुंदर ऐसे नटनागरके जैएरी वारने ॥ त्रिभंगी है नृत्य करत व्रज युवतिन मंडली विच दुहुँ दुहुँ विच श्याम घने । मोरमुकुट शीश धरे राजतहै सूरप्रभु निरखि निरखि अमरन भजै जैजैध्वनि भनै॥३७॥धनाश्री॥ रास मंडल मध्य श्याम राधा । मनो घनवीच दामिनी कोंधति सुभग येकहै रूप द्वैनाहिं वाधा ॥ नायका अष्ट अष्टहु दिशा सोंहहीं वनी चहुँपास सव गोप कन्या । मिले सब संग नहिं लखति कोउ परस्पर बने षटदशसहस कृष्ण सैन्या ॥ सजे शृंगार नवसात जग मग रह्यो अंगभूषण रैनि वनी तैसी । सूर प्रभु नवल गिरिधर नवल राधिका नवल व्रजसुता मंडली जैसी ३८॥भैरव॥युवति अंग छबि निरखत श्याम।नंदकुमार श्रीअंगमाधुरी अवलोकति व्रजवाम ॥ परी दृष्टि कुच उचनि पियाकी वह सुख कह्यो नजाई । अँगिया नील मांडनी राती निरखत नैन चुराई ॥ वै निरखति पिय उर भुजकी छबि पहुँचनि पहुँची भ्राजति।करपल्लवन मुद्रिका सोहत ता छबिपर मन लाजति ॥ वंदन विंद निरखि हरि रीझे शशिपर वालविभास । नंदलाल व्रजवाल कि छबि क्यों वरणै सूरजदास ॥३९॥ गौरी ॥ श्यामतनु राजत पीतपिछौरी । उर वनमाल काछनी काछे कटिकिंकिनि छबि रोरी ॥ वेनी सुभग नितंबनि डोलत मंदगामिनी नारी । सूथन जघन बांधि नारा बंद तिरनी पर छबि भारी ॥ नखनिरंग जावककी शोभा देखत पिय मन भावत । सूर दास प्रभु तनु त्रिभंग है युवतिन मनहि रिझावत ॥४०॥ सारंग॥ नीलांवर पहिरे तनु भामिनि जनु घनमें दमकतहै दामिनि । शेष महेश लोकेश शुकादिक नारदादि मुनिकी है स्वामिनि ॥ शशि मुखतिलक दियो मृगमदको खुटिला खुभी जरायजरी । नासा तिल प्रसून वेसरि छबि मोतियन माँगसुहागभरी ॥ अति सुदेश मृदु चिकुर हरत चित गुंथे सुमन रसालहि । कुँवरी अति कमनीय सुभग शिर राजति गौरी वालहि ॥ सगरी कनक रत्न मुक्तामणि लटकनि चितहि चुरावै । मानो कोटि कोटि शत मोहनी पाँइनि आनि लगावै ॥ काम कमान समान भौंह दोउ चंचल नैन सरोजै । अलिगंजन अंजन दै रेखा वरषत वाण मनोजै ॥ कंबुकंठ नाना मणिभूषण उर मुक्ताकी माल । कनक किंकिणी नूपुर कलरव कुंजत बालमराल ॥ चौकी हेमचंद्र मणिलागी हीरारतन जराय खची । भुवन चतुर्दशकी सुंदरता राधेके मुखमनहि रची ॥ सजल मेघ घन सांवल सुंदर वाम अंग अति सोहै । रूप अनूप मनोहर मोहे ता उपमा कहिकोहै ॥ सहज माधुरी अंग अंग प्रति सुवश किए व्रजनाथ धनी । अखिललोक लोकेश विलोकत सब लोकन माहिं एक गनी ॥ कबहुँक हरि सँग नृत्यति श्यामा श्रम कनबूंद विराजतयो । मानहु अधर सुधाके कारण शशि दूजो मुकताह तयो ॥ रमा उमा अरु शची अरुंधति दिन प्रति देखन आवैं । निरखि कुसुम सुरगण हैं वर्षत प्रेम मुदित यश गावैं ॥ रूप राशि सुखराशि राधिका शील महागुणराशी । कृष्णचरणते पावहि श्यामा

जे तुव चरण उपासी ॥ जगनायक जगदीश पियारी जगतजननि जगरानी । नित विहार गोपाल लाल सँग वृंदावन रजधानी ॥ अगतनिको गति भक्तनकी पति श्रीराधापद मंगलदानी । अशरन शरनी भव भय हरनी वेद पुरान बखानी ॥ रसना एक नहीं शत कोटिक सोभा अमित अपारी । कृष्णभक्ति दीजै श्रीराधे सूरदास बलिहारी ॥४१॥ विहागरो ॥ नृत्यत इयाम नाना रंग । मुकुट लटकनि भ्रुकुटि मटकन धरे नटवर अंग ॥ चलत गति कटि रुनित किंकिनि घूंघरू झनकार । मनो हंस रसाल बानी अरस परस विहार ॥ लसति कर पहुँची सो पुंजय मुद्रिका अति ज्योति ॥ भावसों भुज फिरत जबहीं तबहिं सोभा होति ॥ कबहुँ नृत्यत नारि गति पर कबहुँ नृत्यत आपु । सूरके प्रभु रसिक की मणि रच्यो रास प्रतापु ॥४२॥ विहागरो ॥ गति सुधंग नृत्यत ब्रजनारी । हाव भाव नैन सैन दैदै रिझवति गिरिधारी ॥ पग पग पटकि भुजनि लटकावति फंदा करनि अनूप । चंचल चलत झूमि ये अंचल अद्भुत है वह रूप ॥ दुरिनिरखत अंगरूप परस्पर दोउ मनहि मन रिझवत । हँसि हँसि वदन वचन रस प्रगटत खेद अंग जलभीजत ॥ वेनी छूटि लटैं वगरानी मुकुट लटकि लटकानो । फूल खसत शिरते भए न्यारे सुभग स्वातिसुत मानो ॥ गान करति नागरि रीझे पिय लीन्हीं अंकमलाइ । रसवश ह्वै लपटाइरहे दोउ सूरसखी बलिजाइ ॥ ४३ ॥ गौरी ॥ नृत्यत अंग अभूषण बाजत । गति सधंग सों भाव देखावत इकते इक अति राजत ॥ कहत न बनै रह्यो रस ऐसो वर्णत वरणि नजाइ । तैसेइ बने इयाम तैसीये गोपी अतिही छवि अधिकाइ ॥ कंकन चुरी किंकिनी नूपुर पग पैजानि विछिया सोभित । अद्भुत ध्वनि उपजत इन मिलिकै भ्रमि २ इत उत जोवत ॥ सुनि सुनि श्रवण रीझि मनही मन राधा रास रसज्ञा । सूरइयाम सबके सुखदायक लायक गुणनि गुणज्ञा ॥ ४४ ॥ केदारो ॥ उघटत इयाम नृत्यत नारि । धरे अधर उपंग उपजै लेत हैं गिरिधारि ॥ ताल मुरज रवाब वीना किन्नरी रस सार । शब्द संग मृदंग मिलवत सुघर नंदकुमार ॥ नागरी सब गुणनि आगरि मिलि चलति पिय संग । कबहुँ गावति कबहुँ नृत्यत कबहुँ उघटति रंग ॥ मंडली गोपाल गोपी अंग अँग अनुहारि । सूरप्रभु धनि नवल भामिनि दामिनी छविडारि ॥ ४५ ॥ विहागरो ॥ नृत्यत हैं दोउ इयामा इयाम । अंग मगन पियते प्यारी अति निरखि चकित ब्रजवाम ॥ तिरपलेति चपलासी चमकति झमकति भूपण अंग । या छवि पर उपमा कहूं नाहीं निरखत विवस अनंग ॥ श्री राधिका सकल गुणपूरण जाके इयाम अधीन । संगते होत नहीं कहुँ न्यारी भए रहति अतिलीन ॥ रस समुद्र मानों उछलत भयो सुंदरताकी खानि । सूरदास प्रभु रीझि थकित भए कहत न कछू बखानि ॥४६॥ कल्याण ॥ कबहूं पिय हरपि हृदय लगावै ॥ कबहूं लै लै तान नागरी सुघर प्रति सुघर नँद सुवनको मन रिझावै ॥ कबहुँ चुंबन देति आकर्पि जिय लेति कराति विन चेत सब हेतु अपने । मिलति भुज कंठदै रहति अँग लटकिकै जात दुख दूरिह्वै झझकि सपने ॥ लेति गहि कुचनि विच देति अधरानि अमृत एक कर चिवुक इक शीश धारै । सूर प्रभुकी स्वामिनी इयाम अति सन्मुख ह्वै निरखि मुख नैन इकटक निहारै ॥ ४७ ॥ आसावरी ॥ जो सुखइयाम करत वृंदावन सो सुख तिहुँपुर नाहींहो । हमको कहा मिलत रज उनकी यह कहि कहि अकुलाहीं हो ॥ सुनहु प्रिया श्रीसत्य कहतहौं मोते और नकोईहो । नंदकुमार रास रस सुख विन वृंदावन नहिं होई हो ॥ हरता करताको प्रभु मैंही वह सुख मोतें न्यारोहो ॥ सूर धन्य राधावर गिरिधर धनि सुख नंद दुलारोहो ॥ ४८ ॥ विहागरो ॥ रसवशइयाम कीन्ही नारि । अधर रस अचवत परस्पर संग सब

ब्रजनारि ॥ काम आतुर भईं बाला सबनि पुरई आश। एक इक ब्रजनारि इक इक आपकरयो प्रकाश ॥ कबहुँ नृत्यत कबहुँ गावत कबहुँ कोकविलास । सूरके प्रभु आश नायक करत सुख दुख नाश ॥ ४९ ॥ कल्याण ॥ हरषि मुरली श्याम नाद कीन्हों। करषि मन तिहुँ भुवन मुनि थकि रह्यो पवन शशिहि भूल्यो गवन ज्ञान लीन्हो ॥ तारकागण लजे बुद्धि मन मन सजे तबहिं तनु सुधि तजे शब्द लाग्यो। नाग नर मुनि थके नभ धरणितनतके शारदा स्वामि शिव ध्यान जाग्यो॥ध्यान नारद टरयो शेष आसन चल्यो गई वैकुंठ ध्वनि मगन स्वामी। कहत श्रीप्रियासों राधिका रवन ए सूरप्रभु श्यामके दरशकामी ॥ ५० ॥ विहागरो ॥ मुरली ध्वनि वैकुंठ गई । नारायण कमला सुनि दंपति अति रुचि हृदयभई ॥ सुनहुं प्रिया यह वाणी अद्भुत वृंदावन हरि देख्यो। धन्य धन्य श्रीपति मुख कहि कहि जीवन ब्रजको लेख्यो। रास विलास करत नँदनंदन सो हमते अति दूरि। धनि वन धाम धन्य ब्रज धरनी उडि लागे ज्यों धूरि॥ यह सुख तिहूं भुवन में नाहीं जो हरि सँग पल एक। सूर निरखि नारायण इकटक भूले नैन निमेक ॥ ५१ ॥ कल्याण ॥ जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो। जंगम जड थावर चर कीन्हे पाहन जलज विकास्यो ॥ स्वर्ग पताल दशों दिशि पूरण ध्वनि आच्छादित कीन्हों । निशिवर कल्प समान बढ़ाई गोपिनको सुख दीन्हों ॥ मैमत्तभए जीव जल थलके तनुकी सुधि न सँभार । सूरश्याम मुखबैन मधुर सुनि उलटे सब व्यवहार ॥ ५२ ॥ पूरवी ॥ मुरली गति विपरीति कराई। तिहूंभुवन भरि नाद समानो राधा रवन बजाई ॥ बछरा थन नाहीं मुख परसत चरत नहीं तृण धेनु। यमुना उलटी धार चली वहि पवन थकित सुनि वेनु ॥ विह्वल भए नहीं सुधि काहू सुर गंधर्व नर नारि । सूरदास सब चकित जहां तहां ब्रजयुवतिन सुखकारि ॥ ५३ ॥ केदारो ॥ मुरली सुनत अचल चले । थके चर जल झरत पाहन बिफल वृक्षन फले ॥पयश्रवत गोधननि थनते प्रेम पुलकित गात। झुरे द्रुम अंकुरित पल्लव विटप चंचलपात ॥ सुनत खग मृग मौन साध्यो चित्रकी अनुहारि । धरणि उमँगि न माति धरमें यती योग विसारि ॥ ग्वाल गृह गृह सहज सोवत उहै सहज सुभाइ । सूर प्रभु रसरासके हित सुखद रैनि बढ़ाइ ॥५४॥केदारो॥रास रस मुरली हीते जान्यों। श्याम अधर पर बैठि नाद कियो मारग चंद्र हिरान्यों ॥ धरणि जीव जल थलके मोहे नभमंडल सुर थाके । तृण द्रुम सलिल पवन गति भूले श्रवण शब्द परयो जाके ॥ बच्यो नहीं पाताल रसातल कितिक उदेलौं भान। नारद शारद शिव यह भाषत कछु तनु रह्यो न सयान ॥ यह अपार रस रास उपायो सुन्यो न देख्यो नैन । नारायण ध्वनि सुनि ललचाने श्याम अधर सुनि वैन॥ कहत रमासों सुनि सुनि प्यारी विरहतहै बन श्याम। सूरकहाँ हमको वैसो सुख जो विलसति ब्रजवाम ॥ ५५॥ जीती जीती है रनवंसी। मधुकर सूत वदत बंदी पिक मागध मदन प्रशंसी ॥ मथ्यो मान बल दर्प महीपति युवति यूथ गहि आने । ध्वनिको खंड ब्रह्मंड भेद करि सुर सन्मुख शर ताने॥ ब्रह्मादिक शिव सनक सनंदन बोलत जै जै बाने।राधापति सर्वस अपनो दै पुनि ता हाथ विकाने॥ खग मृग मीन सुमार किए सब जड जंगम जित भेष। छाजत छत मद मोह कवच कटि तजत न नैन निमेष ॥ अपनी अपनी ठकुराइनिकी काढतिहै भ्रुवरेख । वैठी पीठ पानि गर्जति है देति सबनि अवसेष ॥ रविको रथ ले दियो सोमको षटदश कला समेत। रच्यो यज्ञ रसरास राजसू वृंदाविपिन निकेत ॥ दान मान परधान प्रेमरस बध्यो माधुरी हेत । अधिकारी गोपाल तहँ तथा ध्वनि सुख देत५६॥ अथ श्रीकृष्णविवाह वर्णन ॥ सारंग॥ जाको व्यास वर्णत रास। है गंधर्व विमुदित य-

वाह चितदै सुनौ विविध विलास ॥ कियो प्रथम कुमारि यह व्रत धरयो हृदय निवास । नंदसुत पति देव देवी पुजै मनकी आस ॥ दियो तव परसाद सवको भयो सवन हुलास । मंत्र नयना तरुन वर तर यमुना जल हरिपास ॥ धरयो लग्न जो शरद निशिकी सुधि करी गुरु रास । मोर मुकुट समीर मानों कनक कंकन रास॥वेणुध्वनि सुनि श्रवण सायक कमल वदन प्रकास । रूप प्रति प्रति रूप कीन्हें भए अंश निवास॥अधर निधि वेधीर करिकै करत आनन हास।फिरत भाँवरि खस्म भूषण अग्नि मानो भास ॥ सुरनारि कौतुक लागि आई छाँड़ि सुत पति पास । जिय परी ग्रंथ कौन छोरै निकट ननद न सास॥निरखि श्रुति मति कुसुम अंजलि वरषि प्रसून अकास॥लित या रस रासको रस रसिक सूरजदास ८७॥ सूही ॥ यह व्रत हियधरि देवी पूजी । है कछु मन अभिलाष न दूजी॥दीजै नंदसुवन पति मेरे । जौपै होइ अनुग्रह तेरे॥ वरष दिनन भरि तप तनु कियो । तव करि अनुग्रह देवी वर दियो ॥ छंद ॥ करि अनुग्रह वर जो दीन्हो वरष युवतिन तप कियो । त्रैलोक भूषण पुरुष सुंदर रूप गुण नाहिन वियो ॥ इत उवटि खोरि शृंगारि सखिअन कुँवरि चोरी आनियो । जाहि तकि यो व्रत नेम संयम सो घरी विधि वानियो॥१॥मोर मुकुट रचि मौर बनायो माथेपर धरि हरि वरु आयो ॥ तनु श्यामल पटपीत दुकूले । देखत घन दामिनि मन भूले ॥ ॥ छंद ॥ दामिनी घन कोटि वारौं जब निहारौं वह छवी । कुंडल विराजत गुंड मंडल नहीं शोभा शशि रवी ॥ और कौन समान त्रिभुवन सकल गुण जेहि माहिआं । मनो मोर नाचत संग डोलत मुकुटकी परछाहिआं ॥ २ ॥ गोपीजन सव नेवते आई । मुरली ध्वनि ते पठइ बुलाई ॥ वहु विधि आनँद मंगल गाए । नवफूलनके मंडप छाए ॥ छंद ॥ छाये जु फूलन कुंज मंडफ प्रीति ग्रंथि हिए परी । अति रुचिर रूप प्रवीन राधिका निकट वृंदा शुभघरी ॥ गाए जु गीत पुनीत वहु विधि वेद रवि सुंदर ध्वनी । नंदसुत वृषभानुतनया रासमें जोरी वनी ॥ ३ ॥ मिलि मनदै सुख आसन वैसे । चितवनि वार किए सव तैसे ॥ तापरि पाणिग्रहण विधि कीन्ही । तव मंडल भरि भाँवरि दीन्ही ॥ छंद ॥ देत भाँवरि कुंज मंडफ पुलिन में वेदी रची । वैठे जु श्यामा श्याम वर त्रैलोककी सोभा खची ॥ उत कोकिला गण करैं कोलाहल इत सकल व्रजनारियां । आई जुनिवती दुहूं दिशि मनों देति आनँद गारियां ॥ ४ ॥ भए जो मन्मथ सैन्य वराती । द्रुम फूले वन अन वन भांती॥सुर वंदीजन सव यश गाए।मघवा जे मृदंग वजाए॥छंद॥ वाजहिं जे वाजन सकल नभ सुर पुहुप अंजलि वरषहीं । थकि रहे व्योम विमान मुनिगन जैजै शब्द करि हर्षहीं ॥ सूरदा सहिभयो आनँद पूजी मनकी साधा ॥ श्रीलाल गिरिधर नवल दुलहै दुलहनि श्रीराधा ॥ विहागरो ॥ प्रथम व्याह विधि ह्वै रह्यो कंकन चार विचारि।रचि रचि पचि पचि गूंथि वनायो नवल निपुन व्रजनारि ॥ नाह छूटै मोहन डोरनाहो वडेहोवहु तव छोरियो हो ये गोकुल के राइ । की कर जोरि करौ विनती कै छुवौ श्रीराधाजीके पाँइ॥इह न होइ गिरिको धरिवो हो सुनहु कुँवर गोपीनाथ। आपुनको तुम वड़े कहावत कांपन लागेहैं दोउ हाथ ॥ वहुरि सिमिटि व्रजसुंदरी मिलि दीन्ही गांठि वनाइ । छोरहु वेगि कि आनहु अपनीयशुमति माइ वोलाइ॥सहज सिथिल पल्लवते हरिजू लीन्हों छोरि सवारि। किलकि उठीं सव सखी श्यामकी अव तुम छोरौ सुकुमारि॥पचिहारौ कैसेहु नहिं छूटत वँधी प्रेमकी डोरि । देखि सखी यह रीति दुहुँनकी मुदित हँसी मुख मोरि ॥ अव जिनि करहु सहाय सखीरी छोड़हु सकल सयान । दुलहिनि छोरि दुलहको कंकन की वोलि वबा वृषभान ॥ कमल कमल करि वरनिएहो पानि पिय गोपाल । अव कवि कुल साँचेसे लागे रोमकटीले नाल ॥ लीला रास

गोपाल लालकी जो रस रसिक वखान । सदा रहो इह अविचल जोरी वलि वलि सूर समान ५८॥ ॥ सारंग ॥ कान्ह तुम्हारी माइ महावल सव जग अपवश कीन्होहो । नेक चितै मुसुकाइके उनि सवको मन हरि लीन्होहो ॥ कछु कुल धर्म न जानिए वाके रूप सवै रँग राचेहो । विन देखे समुझे सुने जग ठगत नकोऊ वाचेहो ॥ पहिरे राती कंचुकी शिर श्वेत उपरना सोहैहो । काटिनीलो लहँगा कस्यो सो को जो निरखि न मोहेहो॥ वोली चतुरानन ठगे सव अमर उपरना रातेहो । अत रौढा अवलोकिकै सव असुर महामद मातेहो॥येकानि विन दरशन ठगे निशि एकनलै सँग सोवैहो । एकनलै मंदिर चढै रचि एकानि विरचि विगोवैहो ॥ अकथ कथा वाकी सवै कछु कहौ तो कहिय न जाहीहो । छैलनके सँग यो फिरे जैसे तनु सँग छाहींहो ॥ सुनि ताकी सव अपतई शुक सनकादिक भागेहो । नेक दृष्टि पथ परि गई शंकर शिर टोना लागेहो ॥ योग युक्ति विसरी सवै उर काम क्रोध मद जागेहो । लोकलाज सव छांडिकै उठि धाइ चले सँग नाँगेहो ॥ और कहा लगि वर्णिये परपुरुष न उवरन पावैहो । जो सोवत अतिनीदमें हो तहांऊ जाइ जगावैहो ॥ यहिविधि इह डहकै सवै भरि जल थलहु जीव जेतेहो । चतुर शिरोमणि श्याम सुन्यो कानि कहौं कहां लगि केतेहो ॥ यहि लाजन मरिए सदा हरि जव सव कहत माय तुम्हारीहो । सूरदास प्रभु वरजिकै किनि मेटहु कुलकी गारीहो ५९॥ काफी ॥ सनकादिक नारद मुनि शिव विरंचि जान । देव दुंदुभी मृदंग वाजे वर निसान ॥ वारने तोरन वँधाए हरि कीन्हो उछाह । व्रजकी सव रीति भई वरसाने व्याह॥डोरन कर छोरनको आई सकल धाइ । फूली फिरैं सहचरी आनँद उर न समाइ ॥ गजवर गति आवनि पग धरनि धरत पाँव । लटकत शिर सेहरो मनो शिखिश्री खंड सुभाव ॥ सोभित सँग नारि अंग सवै छवि विराज । गज रथ वाजी वनाइ चवँर छत्र साज ॥ दुलहिनि वृष भानु सुता अंग अंग भ्राज । सूरदास प्रभु दुलह देखो श्रीव्रजराज॥ ६० ॥ सारंग ॥ दुलह देखोंगी जाइ उतरे संकेत वट केहि मिस देखन पाऊं । फूल गूथि माललै मालिनि ह्वै जाऊं । नंदनंदन प्यारेको विरिआ करि लाऊं।तमोलिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ । अपने गोपाल लालके मैं वागे रचि लेउँ ॥ वजाजिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ । वृंदावन चंदको मैं भूषण गढि लेउँ ॥ सुनारिनि ह्वै जाउँ निरखि नैननि सुख देउँ । चंदन अरगजा सूर के सर धरि लेउँ॥गंधिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देउँ॥६१ ॥ विहागरो ॥ वृषभानुनंदिनी अति छवि वनी । श्रीवृंदावन चंद राधा निर्मल चांदनी ॥ श्याम अलक विच मोती दुति मंगा ॥ मानहु झल मलित शीश गंगा । श्रवण ताटंक सोहै चिकुरकी कांति । उलटि चल्यो है राहु चक्रकी भांति॥ गोरे लिलाट सोहै सेंदुरको विंद । शशिकी उपमा देत कवि कोहै निंद ॥ चपल उनींदे नैन न लागत सोहाये । नासिका चंपकलीको द्वै अलिधाये ॥ वदन मंजनते अंजन गयो दूरि । कलंक रहित शशि पुनि कला पूरि॥गिरि ते लता भई यह हम सुनि । कंचन लताते द्वै गिरि भए पुनि ॥ कंचन से तनु सोहै नीलांवरसारी । कहुनिसामध्य जनु दामिनि उजियारी ॥ नख शिख सोभा मोपै वरनि न जाई । तुमसी तुमही राधा श्याम मनभाई ॥ यह छवि सूरदास सदारहै वानी । नँद नंदनराजा राधिका देरानी॥६२॥देवगंधार॥ दोऊ राजत श्यामा श्याम । व्रजयुवती मंडली विराजत देखति सुरगन वाम॥धन्य धन्य वृंदावनको सुख सुर पुर कौने काम।धनि वृषभानु सुता धनि मोहन धनि गोपिनको नाम ॥ इनकी को दासी सरि ह्वैहै धन्य शरदकी याम। कैसेहु सूरजनम व्रज पावै यह सुख नहिं तिहुँ धाम ॥ ६३ ॥ केदारो ॥ विराजत मोहनमंडलरास । श्यामा सुधा सरोवर

मानो क्रीडत विविध विलास ॥ ब्रजयुवती सत यूथ मंडली मिलि कर परस करे । भुज मृणाल भूषण तोरण युत कंचन खंभ खरे ॥ मृदुपद न्यास मंद मलयानिल विगलत शीश निचोल । नील पीत सित अरुन ध्वजा चल सीर समीर झकोल ॥ विपुल पुलक कंचुकि बँद छूटे हृदय अनँद भए । कुच युग चक्रवाक अवनी तजि अंतर रैनिगए । दशन कुंद दाडिम दुति दामिनि प्रगटत ज्यों दुरिजात । अधर बिंब मधु अमी जलदकन प्रीतम वदन समात ॥ गिरत कुसुम कुँवरी केशनते टूटतहै उरहार । शरद जलद मानो मंद किरन कन कहूं कहूं जलधार ॥ प्रफुलित वदन सरोज सुंदरी अति रस नैन रँगे । पुहुकर पुंडरीक पूरन मानों खंजन केलि खगे । पृथु नितंब करभीर कमल पद नखमणि चंद्र अनूप । मानहु लब्ध भयो वारिज दल इंदु किए दशरूप ॥ श्रुति कुंडल धर गिरत न जानति अति आनंद भरी । चरण परसते चलत चहूं दिशि मानहुँ मीन करी ॥ चरणरुनित नूपुरकटि किंकिनि करतलतालरसाल । तरनतिनय सोभा समीप सुख मुख राति मधुर मराल ॥ बाजत ताल मृदंग उपंग बांसुरी उपजति तान तरंग । निकट विटप मानो द्विज कुल कूजत पय बल बढै अनंग ॥ सकलविनोद सहित सुरललना मोहे सुर नर नाग । विथकित उडपति विंद विराजत श्रीगोपाल अनुराग ॥ याचत दास आश चरणनकी अपनी शरन बसाव ॥ मन अभिलाष श्रवण यश पूरित सूरहि सुधा पिआव ॥६४॥ सूही॥रासरसिक गोपाललाल ब्रजबाल संग विहरत वृंदावन।सप्तसुरन मुरली बाजत गाजत भ्राजत राजत अधरनि ध्वनि सुनि मोहे सुर नर गंधर्व गन ॥ तरुण कान्ह तरु तमालके तट तरुणि गोपिका यूथ निकट पट पीतांबर नीलांबर तन तन ॥ नृत्य करत उघटत संगीत पद ताथेई थेई ता कहत सूर प्रभु निरखि परस्पर रीझत मन मन ॥६५॥विहागरो॥आजु निशि सोभित शरद सुहाई॥शितल मंद सुगंध पवन बहै रोम रोम सुखदाई॥यमुना पुलिन पुनीत परमरुचि रचि मंडली बनाई । राधा वामअंग पर कर धरि मध्यहि कुँवर कन्हाई ॥ कुंडल संग ताटंक एक भए युगल कपोलनि झाईं । एक उरग मानो गिरि ऊपर द्वै शशि उदय कराई॥चारि चकोर परे मनो फंदा चलतहैं चंचलताई । उडुपतिगति जति रह्यो निरखि लजि सूरदास बलि जाई॥ ६६ ॥ ॥ केदारो ॥ आजु हरि ऐसे रास रच्यो । श्रवण सुन्यो न कहूं अवलोक्यो यह सुख अवलौं कहां सच्यो॥प्रथमहि सबै समाज साज सुर मोहे कोउ न बच्यो । एकहि बार थकित थिर चर कियो को जानै को कबहि नच्यो ॥ गत गुण मँद अभिमान अधिक रुचि लै लोचन मन तहँइ खच्यो । शिव नारद शारदा कहत यों हम इतने दिन बादि पच्यो ॥ निरखि नैन रसरीति रजनि रुचि काम कटक फिरि कलह मच्यो । सूर धनुष धीरज न धरचो तब उलटि अनंग अनंग तच्यो ॥ ॥ ६७ ॥ आजु हरि अद्भुत रास उपायो । एकहि सुर सब मोहित कीन्हें मुरलीनाद सुनायो ॥ अचल चले चल थकित भए सब मुनि जन ध्यान भुलायो । चंचल पवन थक्यो नाहिं डोलत यमुना उलटि बहायो ॥ थकित भयो चंद्रमा सहित मृग सुधा समुद्र बढायो॥सूरश्याम गोपिन सुख दायक लायक दरश दिखायो ॥ सोरठ ॥ मोहन यह सुख कहा धरचो । जो सुख रास रैनि उपजायो त्रिभुवन मनहि हरचो ॥ मुरली शब्द सुनत ऐसो को जो व्रतते नटरचो। बचे न कोउ मोहित सब कीन्हे प्रेम उद्योत करचो ॥ उलटि काम तनु काम प्रकाश्यो अद्भुत रूप धरचो । सूरदास शिव नारद शारद कहत न कह्यो परचो ॥ ६८ ॥ विहागरो ॥ आजु निशि रास रंग हरि कीन्हों । ब्रज बनिता बिच श्याममंडली मिलि सबको सुख दीन्हों ॥ सुरललना सुरसहित विमोहे रच्यो

मधुर सुरगान ॥ नृत्य करत उघटत नानाविधि सुनि मुनि विसरयो ध्यान । मुरली सुनत भए सब व्याकुल नभ धरनी पाताल॥ सूरश्यामका को न किए वश रचि रसरास रसाल॥६९॥ केदारो ॥ बनावत रासमंडल प्यारो।मुकुटकी लटक झलक कुंडलकी निरतत नंददुलारो ॥उर बनमाल सोहै सुंदर वर गोपिनके सँग गावै । लेत उपर नागर नागरि सँग विच विच तान सुनावै ॥ वंसी वट तट रास रच्यो है सब गोपिन सुखकारो । सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको भक्तन प्राण अधारो ॥७०॥ बिहागरो ॥ दुलह दुलहिनि श्यामा श्याम । कोककला वितपन्न परस्पर देखत लज्जित काम ॥ जा फलको ब्रजनारि कियो व्रत सो फल पूरण पायो । मनकामना भयो परिपूरण सवहित मानि लियो ॥ राग रागिनी प्रगट देखायो गाये जो जेहि रूप सप्त सुरनके भेद बतावति नागरि रूप अनूप ॥ अतिहि सुघर पियको मन मोह्यो अपवश करति रिझावति।सूरश्याम मोहन मूरतिको वार वार उरलावति ॥ ७१ ॥ रामकली ॥ श्यामा श्याम रिझावति भारी । मन मन कहति और नहिं मोसी पियको कोऊ प्यारी ॥ ध्रुवा छंद धुरपद यश हरिको हरिही गाय सुनावति । आपुन रीझि कंतको रिझवति यह जिय गर्व वढावति ॥ नृत्यति उघटति गति संगीत पद सुनत कोकिला लाजति । सूरश्याम नागर अरु नागरि ललना सुलप मंडली राजति॥ ७२ ॥रामकली रिझवति पियहि वारंवार । निरखि नैन लजात हरिके नहीं सोभापार ॥ चालि सुलप गज हंस मोहति कोक कला प्रवीन । हँसि परस्पर तान गावति करति पियहि अधीन ॥ सुनत वनमृग होत व्याकुल रहत चकृत आइ । सूरप्रभु वश किए नागरि महाजानानि राइ ॥ ७३ ॥ प्यारी श्याम लई उर लाई । उरज उरसों परस को सुख वरणि कापै जाई ॥ कनक छवि तन मलय लेपन निरखि भामिन अंग । नासिका शुभ वास लैलै पुलक श्याम अनंग ॥ देत चुंबन लेत सुखको मानि पूरण भाग । सूर प्रभु वश किए नागरि वदति धन्य सुहाग ॥७४॥ बिहागरो रीझे परस्पर वरनारि । कंठ भुज भुज धरे दोऊ सकत नाहिं निर वारि ॥ गौर श्याम कपोल सुललित अधर अंमृत सार । परस्पर दोउ पियरु प्यारी रीझि लेत उगार ॥ प्राण इक द्वै देह कीन्हें भक्त प्रीति प्रकास । सूर स्वामी स्वामिनी मिलि करत रंग विलास ॥ ७५ ॥ गावत श्याम श्यामा रंग । सुघर गति नागरि अलापति सुर धरति पिय संग ॥ तान गावति कोकिला मनो नाद अलि मिलि देत । मोर संग चकोर डोलत आप अपने हेत॥ भामिनी अंग जोन्ह मानै जलद श्यामलगात । परस्पर दोउ करत क्रीडा मनहि मनहि सिहात । कुचनि विच कच परमसोभा निरखि हँसत गोपाल ॥ सूर कंचन गिरि विचनि मनों रह्यो है अंधकाल ॥७६॥ मोहन मोहनी रस भरे । भौंह मोरनि नैन फेरनि तहाँ ते नाहिं टरे ॥ अंग निरखि अनंग लज्जित सकै नाहिं ठहराइ। एककी कहाचलै शत शत कोटि रहत लजाइ॥इते पर हस्तकनि गति छवि नृत्य भेद अपार । उडत अंचल प्रगटि कुच दोउ कनकघट रससार ॥ दरकि कंचुकि तरकि माला रही धरणी जाइ । सूर प्रभु करि निरखि करुणा तुरत लई उचाइ ॥ ७७ ॥ जैतश्री ॥ प्रेमसहित माला कर लीन्ही । प्यारी हृदय रहत यह जानी भुवपर नहीं पतीन्ही ॥ पीतवसन लै श्रमजल पोंछत पुनिलै कंठ लगाइ । चरणन कर परसतहै अपने कहत अतिहि श्रम पाइ ॥ कुच श्रम देखि पवन मुखहीके फूंकि झुरावत अंग । सूरदास प्रभु भौंह निहारत चलत त्रियाके रंग ॥ ॥ ७८ ॥ भैरव ॥ हाहाहो पिय नृत्य करो । जैसे करि मैं तुमहि रिझाई त्यों मेरो मन तुमहु हरो ॥ तुम जैसे श्रम वायु करतहो तैसे मैंहुँ डुलावोंगी । मैं श्रम देखि तुम्हारे अँगको भुजभरि कंठ लगा

वोंगी ॥ मैं हारी त्योंही तुम हारो चरण चापि श्रम मेटोंगी । सूरश्याम ज्यों उछगि लई मोहि त्यों मैं हूं हँसि भेटोंगी ॥ ७९ ॥ रामकली ॥ नृत्यत श्याम श्यामा हेत। मुकुट लटकनि भ्रुकुटि मटकनि नारि मन सुखदेत ॥ कवहुँ चलत सुधंग गतिसों कवहुँ उघटत वैन। लोल कुंडल गंड मंडल चपल नैननि सैन ॥ श्यामकी छवि देखि नागरि रही इकटक जोहि। सूर प्रभु उरलाइ लीन्हो प्रेमगुण करि पोहि ॥ ८० ॥ मलारकमोद ॥ अरुझि कुंडल लटवेसरिसों पीतपट वनमाल वीचि आनि उरझेहैं दोउ जन । प्राणनसों प्राण नैन नैननसों अटकि रहे चटकीली छवि देखि लपटात श्याम घन ॥ होडाहोडी नृत्य करें रीझि रीझि अंक भरें ताता थेई थेई उघटतहैं हरपि मन। सूरदास प्रभु प्यारी मंडली युवती भोरी नारिको अंचल लैले पोंछतहैं श्रमके कन ॥ ८१ ॥

॥ अडानो ॥ मोहनलाल संग ललनायों सोहैं ज्यों तरुतमालके ढिग सुभग सुमन जरदको। वदन कांति अनूप भांति नाहिं सँभारति नीलांवर गगन मैन व घन विंच प्रगट्यो शशि मनो शरदको ॥ मुक्ता लड तारागन प्रतिविंवित वेसरिको चूने मिलि रंग जैसे होत हरदको। सूरदास प्रभु मोहन गोहनकी छवि वाढी मेटति दुख निरखि नैन मैनके दरदको ॥ ८२ ॥ पूरवी ॥ नँदनंदन सुघराई मोहन वंशी वजाई सरिगमा पधनिसा संसप्त सुरनि गाइ । अति अनगात संगीत सुघर और तान मिलाइ। सुर ध्याय ताल ध्याय नृत्य ध्याय निपुनराय मृदंग वजाइ॥ सूरप्रभु नवल वाल सकल कला गुण प्रवीन अरस परस रीझि रिझाइ ॥ ८३ ॥ विहागरो ॥ पियके संग खेलत अधिक श्रम भयो आउरी ह्यांको वयारि । अपनो अंचल लै सुखउरी रुचिर वदन श्रमकनके वारि ॥ नृत्यत उलटि गए अंग भूपन विथुरी अलक वाँधी सँवारि। सूर रची रचना वृंदावन व्रजयुवतिन सुखको वनवारि ॥ ८४ ॥ केदारो ॥ प्यारी देखि विह्वल गात । नंदनंदन देखि रीझे अंक भरि लपटात ॥ कवहुँ लेहि उछंग वाला कहि परस्पर वात । प्रेम रस करि भरे दोऊ नैन मिलि मुसुकात ॥ रास रस कामना पूरन रैनि नहीं विहात । सूर प्रभु सँग व्रज तरुणि मिलि करत सुखन सिहात ॥ ८५ ॥ कल्याण ॥ रच्यो रास रंग श्याम सवही सुख दीन्हों। मुरली सुर करि प्रकाश खग मृग सुनि रस उदास युवतिन तजि गेह वास वनहि गवन कीन्हों ॥ मोहे सुर असुरनाग मुनि जन गन भए जाग शिव शारद नारदादि चक्रत भए ज्ञानी। अमरगन अमरनारि आई लोकनि विसारि ओक लोक त्यागि कहति धन्य धन्य वानी ॥ थकित भयो गति समीर चंद्रमा भयो अधीर तारागन लज्जित भए मारग नहिं पावै। उलटि यमुन वहति धार विपरीत सवही विचार सूरजप्रभु संग नारि कौतुक उपजावै ॥ ८६ ॥ टोडी ॥ नंदकुमार रास रस कीनों। व्रजतरुनिनि मिलिकै सुख दीनों ॥ अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो। कियो श्याम सवहिन मन भायो ॥ विच गोपी विच मिले गोपाल। मणिकंचन सोहति शुभमाल ॥ राधा मोनहमध्य विराजै। त्रिभुवनकी सोभा ये भाजै ॥ रास रंग रस राख्यो भारी। हाव भाव नाना गति भारी ॥ रूप गुणनि करि परम उजागरि। नृत्यत अंग थकित भई नागरि ॥ उमँगे श्याम श्यामा उर लाई। वारंवार कह्यो श्रम पाई ॥ कंठ कंठ भुज दोऊ जोरे। घन दामिनि छूटति नहिं छोरे ॥ सूरश्याम युवतिन सुखदाई। युवतिनके मन गर्व वढाई ॥ ८७ ॥ सूही ॥ तव नागरि अति गर्व वढायो। मो समान त्रिय और नहीं कोउ गिरिधर मैंही वश करि पायो ॥ जोइ जोइ कहति करत सोइ सोई पिय मेरे हित यह रास उपायो। सुंदर चतुर और नाहिं मोसी देह धरे को भाव जनायो ॥ कवहुँक वैठि जाति हरि कर धरि कवहुँक कहति मैं अति श्रम पायो। सूरश्याम गहि

कंठ रही त्रिय कंध चढौं यह वचन सुनायो॥८८॥ बिलावल ॥कहै भामिनी कंतसों मोंहि कंध चढावहु। नृत्यकरत अतिश्रम भयो ता श्रमहि मिटावहु॥ धरणी धरत बनैं नहीं पग अतिहि पिराने। त्रिया वचन सुनि गर्वके पिय मन मुसुकाने॥ मैं अविगत अज अकल हौं यह मर्म न पायो। भाव वश्य सब पै रहौं निगमनि यह गायो॥ एक देह द्वै प्रान हैं दुविधा नहिं यामें। गर्व कियो नर देह ते मैं रहौं न तामें॥ सूरज प्रभु अंतर भए संगते तजि नारी। जहां तहां ठाढी रहीं सब घोप कुमारी ॥ ८९ ॥ अध्याय ॥ ३० ॥ अथ श्रीकृष्णअंतर्ध्यानलीला ॥ रामकली ॥ गर्व भयो ब्रजनारि को तबहीं हरि जाना। राधाप्यारी संग लिए भये अंतर्ध्याना॥ गोपिन हरि देख्यो नहीं तब गईं अकुलाई। चकित होइ पूछनलगीं कहां गए कन्हाई॥ कोउ मर्म जानै नहीं व्याकुल सब बाला। सूरश्याम ढूंढत फिरैं जित तित ब्रजबाला ॥ ९० ॥ विहागरो ॥ तब हरि भए अंतर्ध्यान। जब कियो मन गर्व प्यारी कौन मोसी आन॥ अति थकित भई चलत मोहन चलि नमोपै जाइ। कंठ भुज गहि रही यह कहि लेहु जबहि चढाइ॥ गए संग विसारि रिसमें विरस कीन्हो बाल। सूर प्रभु दुरि चरित देखत तुरत भई बेहाल ॥ ९१ ॥ टोडी ॥ श्याम गए युवती सँग त्यागि। चकितभईं तरुणिन सँग जागि॥ प्यारी संग लगाइ विहारी। कुंजलता तर कतहूं डारी ॥ संग नहीं तहँ गिरिवर धारी। दशहुदिशा तन दृष्टि पसारी ॥ परी मुरुछि धरनी सुकुमारी। कामवैर लीन्हों शरमारी॥ त्राहि त्राहि कहि कहुँ वनवारी। भई व्याकुल तनुदशा विसारी॥ नैन सलिल भीजी सब सारी। सूरसंग तजि गए मुरारी॥९२॥ अध्याय ॥ ३१ ॥ तथा ॥ ३२ ॥ गोपी विरह ॥ राग विहागरो ॥ व्याकुल भईं घोष कुमारि। श्यामतजि सँगते कहाँगए यह कहति ब्रजनारि॥ दशौंदिश नभ द्रुम न देखिति चकित भईं बेहाल। राधिका नहिं तहाँ देखी कह्यो वाके ख्याल॥ कछुक दुख कछु हरष कीन्हों कुंज लैगईं श्याम। सूर प्रभुसँग मही देखो करे ऐसे काम ॥ ९३ ॥ धनाश्री ॥ विकल ब्रजनाथ वियोगन नारि। हाहा नाथ अनाथ करौ जिन टेरति बांह पसारि॥ हरिजूके लाड गर्व जो तनु सखी सकीन वचन सँभारि।जनिअतहै अपराध हमारो नहिं कछु दोष मुरारि॥ढूँढति वाट घाट वन घन तन मुरछि नैन जलधारि। सूरदास अभिमान देहको बैठी सरवस हारि ॥ ९४ ॥ नट ॥ बायें कर द्रुम टेके ठाढी। बिछुरे मदन गुपाल रसिक मोहिं विरह व्यथा तनु बाढी॥ लोचन सजल वचन नहि आवे श्वास लेति अतिगाढी। नंदलाल ऐसी हमसों करी जलते मीन धरिकाढी॥ तब कित लाड लडाइ लडइते वेनी कुसुम गुहिगाढी। सूरश्याम प्रभु तुमरे दरशविनु अब न चलत दृग आढी ॥ ९५ ॥ सारंग ॥ अकेली भूलि परी वन माँह। कोऊ वायु वही कतहूंकी छूटगई पियबांह॥जहँ जहँ जाउँ तहां डर लागत डगर न पावत नांह॥सूरदास प्रभु तुमरे दरशविनु वेइकदम वै छांह ॥ ९६ ॥ विहागरो ॥ वन कुंजन चली ब्रजनारि। सदा राधा करति दुविधा देति रसकी गारि ॥ संगही लैगई हरिको सुख करति वनधाम। कहां जैहै ढूंढि लैहै महारसकी वाम॥ चरण चिह्ननि चलीं देखति राधिका पगनाहिं। सूर प्रभु पगपरसि गोपी हरषि मन मुसुकाहिं॥९७॥ कान्हरो ॥ हँसि हँसि युवती कहति परस्पर प्यारीको उरलाइ गएरी। श्याम काम तनु आतुरताई ऐसे वामा वश्यभएरी। पुनि देखति राधिका।चिह्न पग पियपग चिह्न न पावै।की पियको प्यारी उर लीन्हों यह कहि भ्रम उपजावै॥ वै गिरिधर उरधरि क्यों लेहीं वै गिरिधर उरलीन्हों। सूर भई आतुर ब्रजनारी पियप्यारी पग चीन्हों ॥ ९८ ॥बिलावल॥ जो देखैं द्रुमके तरे मुरछी सुकुमारी। चकितभई सब सुंदरी यहतौ राधानारी॥ याहीको खोजति सबै यह रही कहांरी। धाइ परीं सब

सुंदरी जो जहां तहांरी ॥ तनकी तनकहु सुधि नहीं व्याकुल भई बाला । यहतौ अति बेहाल है कहां गए गोपाला ॥ बारबार बूझति सबै नहिं बोलति बानी । सूरश्याम काहे तजी कहि सब पछितानी ॥९८॥ सारंग॥राधे कत निकुंज ठाढी रोवति । इंदु ज्योति मुखारविंदकी चकित चहूँदिशि जोवति ॥ द्रुमशाखा अवलंब बेलि गहि नखसों भूमि खनोवति । मुकुलित कच तन वनकि ओटह्वै अँसुवनि चीर निचोवति ॥ सूरदास प्रभु तजी गर्वते भये प्रेम गति गोवति ॥ ९९ ॥भैरव॥ क्यों राधा नहिं बोलतिहै । काहे धरणि परी व्याकुलह्वै काहे नैनन खोलतिहै ॥ कनकवेलिसी क्यों मुरझानी क्यों वनमांझ अकेलीहै । कहांगए मनमोहन तजिकै काहे विरह दहेलीहै ॥ श्याम नाम श्रवणनि ध्वनि सुनिकै सखियन कंठ लगावतिहै । सूरश्याम आए यह कहि कहि ऐसे मन हरपावतिहै॥१८००॥विहागरो॥कहां रहे अवलौं तुम श्याम । नैन उघारि निहारि रही तहां जो देखै ब्रजवाम ॥ लागी करन विलाप सबनसों श्याम गए मोहिं त्यागि । तुमको नहीं मिले नँदनंदन बूझतिहै तब जागि ॥ निरखि वदन वृपभानु कुँवरिको मनो सुधा विन चंद । राधा विरह देखि विरहानी यह गति विन नँदनंद ॥ या वनमें कैसे तुम आई श्यामसंगहैं नाहीं । कछु जानति कहां गए कन्हाई तहाँ तोहिं लैजाहीं॥ मैं हठ कियो वृथारी माई जिय उपज्यो अभिमान । सूरश्याम ऊपर मोहिं आनी ह्वैगए अंतर्ध्यान ॥ १ ॥ विहागरो ॥ मैं अपने मन गर्व बढ़ायो । इहै कह्यो पिय कंध चढौंगी तब मैं भेद न पायो॥ यह वाणी सुनि हँसे कंठभरि भुजनि उछंगि लई । तब मैं कह्यो कौनहै मोसी अंतर जानि लई ॥ कहाँगए गिरिधर मोको तजि ह्यां कैसे मैं आई । सूरश्याम अंतर भए मोते अपनी चूक सुनाई ॥ २ ॥ विहागरो ॥ रुदन करति वृपभानुकुमारी । बार बार सखियन उर लावति कहांगए गिरिधारी ॥ कबहूं गिरति धरणि पर व्याकुल देखि दशा ब्रजनारी । भरि अँकवारि धरति मुख पोंछति देति नैन जल ढारी । त्रिया पुरुपसों भाव करतिहै जाने निठुर मुरारी। सूरश्याम कुलधर्म आपनो लये रहत वनवारी ॥३॥ गौरी ॥ नँदनंदन उनको हम जानति। ग्वालन संग रहत जे माई यह कहि कहि गुण गानति ॥ वन वन धेनु चरावत वासर त्रिया वधत डर नाहीं॥ देखि दशा वृपभानुसुताकी ब्रजतरुणी पछिताहीं ॥ कहा भयो त्रिय जो हठ कीन्हों यह न बूझिए श्यामहि ।सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि दूरि करहु मनतामहिं॥४॥कल्याण॥राधिकासों कह्यो धीर मन धरिरी । मिलैंगे श्याम व्याकुल दशा जिनि करै हरप जिय करौ दुख दूरि करिरी ॥ आपु जहँ तहँ गई विरह सब पगिरई कुँवरि सों कहि गई श्याम ल्यावै। फिरति वन वन विकल सहस सोरह सकल ब्रह्मपूरन अकल नहीं पावै ॥ कहां गए यह कहति सबै मग जोवहीं कामतनु दहति ब्रजनारि भारी । सूर प्रभु श्याम दुरि चरित देखहिं सकल गर्व अंतर हृदय हेत नारी॥५॥विलावल॥ श्याम सवनिको देखहीं वै देखति नाहीं । जहां तहां व्याकुल फिरैं तनु धीरज नाहीं ॥ कोउ वंसीवटको चली कोउ वन घन जाहीं । देखि भूमि वह रासकी जहँ तहँ पगछाहीं ॥ सदा हठीली लाडिली कहि कहि पछिताहीं । नैन सजल जल ढारिकै व्याकुल मनमाहीं ॥ एक एक ह्वै ढूंढहीं तरुनी विकलाहीं । सूरज प्रभु कहुँ नहिं मिले ढूंढति द्रुम पाहीं ॥ ६ ॥ रामकली ॥ कहिधौंरी वन बेलि कहूं तुम देखेहैं नँदनंदन । बूझहु धौं मालती कहूं तैं पाएहैं तनुचंदन ॥ कहिधौं कुंद कदम बकुल वट चंपक लता तमाल । कहिधौं कमल कहां कमलापति सुंदर नैन विसाल ॥ श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह ध्वनि वृंदावन छायोरी ॥ गर्व जानि पिय अंतरह्वै रहे सो मैं वृथा बढ़ायोरी । अब बिन देखे कल न परत छिन श्याम सुंदर गुण गारोरी । मृग मृगनी द्रुम

वन सारस खग काहू नहीं बतायोरी॥मुरली अधरसुधारस लैतरु रहे यमुनके तीर। कहि तुलसी तुम सब जानतिहौ कहँ घनश्याम शरीर॥कहिधौं मृगी मयाकरि हमसों कहिधौं मधुप मराल। सूरदास प्रभुके तुम संगी हौ कहां परम दयाल॥ ७ ॥ कहूं न देख्योरी मधुबनमें माधौ । कहाँधौ मृग गमन कीन्हो कहाँधौ बिलमि रहे नैन मरत दरशनकी साधौ ॥ जबते बिछुरे श्याम तबते रह्यो नजाइ सुनौ सखी मेरोइ अपराधौ । सूरदास प्रभु बिनु कैसे जीबहिं माई घटत घटत घटि रह्यो प्राण आधो ॥ ८ ॥ आसावरी ॥ कहूं न पाऊंरी सब ढूंढि वन घन श्यामसुंदर परवारौं तन मन। नैनन चटपटी मेरे तबते लागी रहति कहां प्राणप्यारो निर्धनको धन ॥ चंपक जाइ गुलाब बकुल फूले तरु प्रति बूझति कहुँ देखे नँदनंदन। सूरदास प्रभु रास रसिक बिनु रास रसिकिनी विरह विकल करि भईहैं मगन॥ ९ ॥ काफी ॥ कोऊ कहुँ देखेरी नँदलाल । साँवरो सलोना ढोटा नैन बिसाल ॥ मोर मुकुट बनमाल रसाल। पीतांबर मोहै सोहै तन गोपाल॥ निशि बनगई जहां सबै ब्रजबाल। अंतर्ध्यान भए रचि ख्याल ॥ द्रुम द्रुम ढूँढत भई बेहाल। सूर श्याम बिनु विरह जंजाल॥ १०॥सारंग॥तुम कहुँ देखे श्याम बिसासी॥नैक मुरलिका बजाइ बाँसकी लै गए प्राणनिकासी॥कबहुँक आगे कबहुँक पाछे पग पग भरत उसासी॥सूरश्यामके दरशन कारण निकसी चंद्रकलासी॥ ११॥बागेसरी ॥ कान्हरो॥ मोहन मोहन कहि कहि टेरै कान्ह हवौ यहि वन मेरो॥कहियत हौ तुम अंतर्यामी पूरण कामी सब केरे ॥ ढूंढतिहै द्रुम बेली बाला भई बेहाल करति अब सेरें। सूरदास प्रभु रास बिहारी श्रीवनवारी वृथा करत काहे झेरें ॥ १२ ॥ अडानो ॥ कहौ कान्ह ए बातें हैं तिहारी बनवारी सुखही में भए न्यारे। इक सँग एक समीप रहतहैं तिन तजि कहां सिधारे ॥ अब करि कृपा मिलौ करुणामय कहियतहो सुख[illegible] । सूरश्याम अपराध क्षमहु अब समुझी चूक हमारे ॥ १३ ॥ परासी ॥ केहि मारग मैं जाउँ सखीरी मारग बिसरयो। ना जानौं कित ह्वै गए मोंहि जातन जानि परयो॥ अपनो पिय ढूंढति फिरौंरी मोंहिं मिलबेको चाव। कांटो लाग्यो प्रेमको पिय यह पायो दाव॥ बन डोंगर ढूँढति फिरी घरमारग तजि गाउँ। बूझों द्रुम प्रति रूख ए कोउ कहै न पियको नाउँ ॥ चकित भई चितवत फिरौंरी व्याकुल अतिहि अनाथ। अबकै जो कैसेहुँ मिलौ तौ पलक न तजिहौं साथ॥ हृदय माहँ पिय घर करौंरी नैनन बैठक देउँ। सूरदास प्रभु सँग मिलौ बहुरि रास रसलेउँ॥ १४॥ श्रीराग॥ कान्ह प्यारो कहुँ पायोरी। श्याम श्याम कहि कहति फिरति यह ध्वनि वृंदावन छायोरी ॥ गर्व जानि पिय अंतर ह्वै रहे सो मैं वृथा बढ़ायोरी। अब बिनु देखे कल न परत छिन श्यामसुंदर गुण रायोरी॥मृग मृगिनी द्रुम वन सारस खग काहू नहीं बतायोरी। सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि युवतिन टेरि सुनायोरी॥ १५॥ बिहागरो॥ हो कान्ह मैं तुम चाहौं तुम काहे ना आवो॥तुम धन तुम तन तुम मन भावो॥कियो चाहों अरस परस करौ नहिं माना। सुन्यो चाहौं श्रवण मधुर मुरलीकी ताना॥ कुंज कुंज जपति फिरी तेरे गुणनकी माला। सूरदास प्रभु वेगि मिलौ मोंहि मोहन नँदलाला ॥ १६ ॥ काफी ॥ सखी मोहिं मोहन लाल मिलावै। ज्यों चकोर चंद्राको इकटक भृंगी ध्यान लगावै ॥ बिनु देखे मोंहिं कल न परैरी यह कहि सबन सुनावै। बिन कारन मैं मान कियोरी अपनेहि मन दुखपावै ॥ हाहा करि करि पाँइन परि परि हरि हरि टेर लगावै। सूरश्याम बिनु कोटि करौ जो और नहीं जिय आवै ॥ ॥ १७॥आसावरी॥होंतौ ढूंढि फिरि आईरी माईरी सिगरो वृंदावन कहुँ नहीं पाएरी नँदनंदन।अनतहि रहे जाइ कौनेधौं राख छपाई मोको न कछु सुहाइ कहां जाइ रहे कामकंदन॥ मोहींते परीरी चूक

अंतर भए हैं जाते तुमसों कहति वातैं मैंहीं कियो द्वंदन । सूरदास प्रभु विनु भईहौं विकल आली कहां रहे वनमाली सुर नर मुनि जन वंदन ॥ १८ ॥ बिलावल ॥ मिलहु श्याम मोहिं चूक परी । तेहि अंतर तनुकी सुधि नाहीं रसना रट लागी न टरी ॥ धरणि परी व्याकुल भई बोलति लोचन धारा अंसुझरी । कबहूँ मगन कबहुँ सुधि आवति शरन शरन कहि विरह जरी ॥ कृष्ण कृष्ण करि टेरि उठति है युगसम बीतत पलक घरी । सूर निरखि व्रजनारि दशा यह चकित भई जहँ तहां खरी ॥ १९ ॥ देखि दशा सुकुमारिकी युवती सब धाईं । तरु तमाल बूझति फिरैं कहि कहि मुरझाईं ॥ नँदनंदन देखे कहूं मुरली कर धारी । कुंडल मुकुट विराजई तनु कुंडल भारी ॥ लोचन चारु विलास हैं नासा अतिलोनी । अरुन अधर दशनावली छवि वरणै कोनी ॥ विंब पँवारे लाजहीं दामिनि दुति थोरी । ऐसे हरि हमको कहौ कहुँ देखे होरी । अंग अंग छवि कहा कहै देखे बनि आवै । सूरश्याम पावै नहीं को काहि बतावै ॥२०॥ बिलावल ॥ अति व्याकुल भई गोपिका ढूंढति गिरिधारी । बूझति है वन वेलि सों देखे वनवारी ॥ जाही जूही सेवती करनाकनिआरी । वेलि चमेली मालती बूझति द्रुमडारी ॥ बूझा मरुआ कुंद सों कहै गोद पसारी । वकुल बहुलि वट कदमपै ठाढीं व्रजनारी ॥ वार २ हाहा करैं कहुँ हो गिरिधारी । सूरश्यामको नाम लै लोचन जल ढारी ॥ २१ ॥ कहूं न पावैं श्यामको बूझत वन वेली । सबै भई व्याकुल फिरैं तन मदन दहेली ॥ मृगनारीसों बूझहीं बूझैं सुकुमारी । कमल सरोवर बूझहीं विरहा तनु भारी ॥ कनक वेलिसी सुंदरी द्रुमके तर डारी । मानों दामिनि धरणि परी की सुधा पनारी ॥ इत उतते फिरि आवहीं जहँ राधा प्यारी । सूरश्याम अजहूं नहीं कारि मिलत कृपारी ॥ २२ ॥ बिहागरो ॥ करति हैं हरि चरित्र व्रजनारि । देखि अतिही विकल राधा इहै बुद्धि विचारि ॥ एक भई गोपालको वपु एकभई वनवारि । एकभई गिरिधरन समरथ एक भई दैत्यारि ॥ एकभई वे धेनु वछरा एकभई नँदलाल । एकभई जमला उधारन इक त्रिभंग रसाल ॥ एक भई छवि राशि मोहन कहत राधा नारि । एक कहति उठि मिलहु भुजभरि सूर प्रभुरी प्यारि ॥ २३ ॥ जैतश्री ॥ सुनत ध्वनि श्रवण उठी अकुलाइ । जो देखै नँदनंदनही वै सखियन भेप बनाइ॥ कहा कपट करि मोहिं देखावति कहां श्याम सुखदाइ । कृष्ण कृष्ण शरणागत कहिकै बहुरि गिरी भहराइ ॥ पुनि दौरीं जहँ तहँ व्रजवाला वन द्रुम सोर लगाइ । सूरदास प्रभु अंतर्यामी विरहिनि लेहु जिवाइ ॥ २४ ॥ कान्हरो ॥ कृपासिंधु हरि क्षमा करौ हो । अनजाने मन गर्व बढ़ायो सो अपने जिनि हृदय धरौ हो ॥ सोरहसहस पीर तन एकै राधा जिव सब देह । ऐसी दशा देखि करुणा मै प्रगट्यो हृदय सनेह ॥ गर्व हत्यो तनु विरह प्रकाश्यो प्यारी व्याकुल जानि । सुनहु सूर अब दरशन दीजै चूक लई इनि मानि ॥२५॥ केदारो ॥ अहो तुम आनि मिलौ नँदलाल । दुर्वल मलिन फिरत हम वन वन तुम विनु मदन गोपाल ॥ द्रुम वेली पूंछति सब उझकाति देखति ताल तमाल । खेलत रास रंग भरि छांडी ले जु गये ककवाल ॥ सूरदास सब गोपी पछिली क्रीडा करति रसाल । गोपीवृंदमध्य जगजीवन प्रगट भए तेहिकाल ॥ ॥ २६ ॥ हरिविनु लागतहै वन सूनो । ढूंढति फिरति सकल व्रजयुवती दहत काम दुखदूनो । तजि सुत पति सुनि श्रवणनिधाईं मुरलिनादमृदु कीनो ॥ व्यापत मकर मीन अति आतुर मनहुँ मीन जल हीनो । चितवति चकित दिशनदिश हेरति मनमोहन हरलीनो । द्रुम वेली पूछे सब सुंदरि नवल जात कहुँ चीनों ॥ कदली वोट निचोरत अंचल अधर सुधारस पीनो । सूरश्यामप्रिय प्रेम

उमँगि रस हँसि आलिंगन दीन्हों ॥ २७ ॥ विहागरो ॥ राधे भूलिरही अनुराग । तरु तरु रुदन करत मुरझानी ढूंढि फिरी बनबाग॥ कुँवरि ग्रसित श्रीखंड अहि भ्रम चरणशिली मुखलाग । वाणी मधुर जानि पिक बोलत कदम करारत काग ॥ कर पल्लव किसलय कुसुमाकर जानि ग्रसित भए कीराराका चंद्र चकोर जानके पिवत नैनको नीर ॥ व्याकुल दशा देख जगजीवन प्रगट भए तेहि काल । सूरश्याम हित प्रेम अंकुर उर लाइ लई भुजबाल ॥ २८ ॥ कल्याण ॥ न्यायतजी श्यामा गोपाल । थोरी कृपा बहुत करि मानी पांवर बुधि व्रजबाल ॥ मैं कछु कपट सबनसों कीन्हों अपयश ते न डेरानी । हम एकही संग एकहि मत सबकोउ नहिं विलगानी ॥ हम चातक घन नँदनंदन बरपनलागे हित कीन्हों । तुवडी प्रबल पवन सम सजनी प्रेमबीच दुख दीनों ॥ जानि दिनदुखी सब सुखके निधि मोहन वेनु बजायो।सूरश्याम तव दरश परस करि मिलि संतापनशायो॥ ॥ २९ ॥ कान्हरो ॥ प्रगटभए नँदनंदन आई । प्यारी निरखि विरह अति व्याकुल करते लई उठाई उभय भुजा भरि अंकम दीन्हो राखी कंठ लगाइ।प्राणहुते प्यारी तुम मेरे यह कहि दुख बिसराइ॥ हँसत भए अंतर हम तुमसों सहज खेल उपजाइ। धरणी मुरझि परी तुम काहे कहां गई चतुराइ ॥ राधा सकुचि रही मनजान्यो कह्यो न कछू सुनाइ । सूरदास प्रभु मिलि सुखदीन्हों दुख डारयो बिसराइ ॥ ३० ॥ कान्हरो ॥ नँदनंदन उरलाइ लई । नागरि प्रेम प्रगट तनु व्याकुल तबकरुणाहरि हृदयभई । देखि नारि तरुतर मुरझानी देहदशा सब भूलिगई । प्रियाजानि अंकम भरि लीन्हीं कहि कहि ऐसी काम हई ॥ वदन विलोकि कंठ उठिलागी कनकवेलि आनंद जई । सूरश्याम फल कृपादृष्टि भए अतिहि भई आनंद मई ॥ ॥ अध्याय ३३ ॥ श्रीकृष्णमिले गोपिनको फेर रास लीला व जलक्रीडा ॥ रागसूही ॥ अंतरते हरि प्रगट भए।रहत प्रेमके वश्य कन्हाई युवतिनको मिलि हर्ष दए॥ वैसहि सुख सबको फिरि दीन्हों उहै भाव सब मानिलियो । वह जानति हरिसंग तबहि ते उहै बुद्धि सब उहै दियो॥उहै रासमंडल रसजानति विच गोपी विच श्यामधनी। सूरश्याम श्यामा मधिनायकउहै परस्पर प्रीति बनी ॥३१॥सारंग ॥ बहुरि श्याम सुख रास कियो । भुज भुज जोरि जुरी व्रजबाला वैसेही रस उमँगि हियो ॥ वैसहि मुरलीनाद प्रकाश्यो वैसहि सुर नर वश्यभए । वैसे उडुगण सहित निशापति वैसेहि मारग भूलिगए ॥ वैसेहि दशाभई यमुनाकी वैसेहि गति जति पवनथक्यो। वैसेहि नृत्य तरंग बढायो वैसेहि बहुरो काम जक्यो ॥ उहै निशा वैसेहि मन युवती वैसेही हरि सबनि भजे।सूर श्याम वैसेइ मनमोहन वैसेहि प्यारी निरखिलजे ॥३२॥विहागरो॥ श्यामछवि निरखत नागरि नारि । प्यारी छवि निरखत मनमोहन सकत न नैन पसारि॥पिय सकुचत नाहिं दृष्टि मिलावत सन्मुख होत लजात । श्रीराधिका निडरि अवलोकत अतिहि हृदय हरपात ॥ अरस परस मोहनि मोहन मिलि सँग गोपी गोपाल । सूरदास प्रभु सब गुण लायक दुश्मनके उरशाल ॥ ३३ ॥ रची रस रास श्यामसुजान । प्रथम मुरली नाद करि हरि हरयो सबको ज्ञान ॥ सबनि उलटी रीति कीन्हों देव सुर नर आदि । व्रजवधू मन काम पूरण कियो पुरुष अनादि ॥ सहज सुखनिशि ग्वाल सोवत सोरची षटमास । हेतु युवती सुख बढोवन कियो पूरण आस ॥ मेटि अंतर्ध्यानको दुख उहै राख्यो भाउ । सूरप्रभु महिमा अगोचर निगम अंत नपाउ ॥ ३४ ॥ नट ॥ मोहन रच्यो अद्भुत रास । संग मिलि वृषभानु तनया गोपिका चहुँपास ॥ एकही सुर सकल मोहे मुरलि सुधाप्रकास । जलहु थलके जीव थकिर हे मुनिन मनहिं उदास ॥ थकित भए समीर सुनिकै यमुना उलटी धार । सूर प्रभु व्रजवाम मिलि मन निशा करत विहार॥३५॥ विहरत रासरंग गोपाल । नवल श्याम संग

सोभित नवल सब व्रजबाल ॥ शरद निशि अति नवल उज्ज्वल नवलता वनधाम । परम निर्मल पुलिन यमुना कल्पतरु विश्राम ॥ कोश द्वादश रासपरमिति रच्यो नंदकुमार । सूर प्रभु सुख दियो निशिरमि कामकौतुक हार॥३६॥मलार॥रास रस श्रमित भई व्रजबाल । निशि सुख दै यमुना जल लैगए भोर भयो तेहिकाल॥मनकामना भए परिपूरण रही न एकौ साध ।षोडससहस नारि सँग मोहन कीन्हों सुख आगाध॥यमुना जल विहरत नँदनंदन संगमिली सुकुमारि॥सूर धन्य धरनी वृंदा वन रवितनया सुखकारि॥३७॥गुंडमलार॥ संग व्रजनारि हरि रास कीन्हों । सबनकी आश पूरनकरी श्यामले त्रियनि पियहेत सुख मानि लीन्हों॥मेटि कुलकानि मर्याद विधि वेदकी त्यागि गृहनेह सुनि वैनधाई । फवी जैजैकरी मनहि सब जे धरी संक काहुन करी आप माई ॥ ज्यों महामत्त गजयूथ कर नीलिए कूल सरकोरि डर कही मानैं । सूर प्रभु नंद सुत निदरि निशि रसक क्यों नाग नरलोक सुर सबै जानै ॥ ३८ ॥ अथ जलक्रीडा ॥ गुंडमलार ॥ रैनि रस रास सुख करत वीती । भोरभए गए पावन यमुनके सलिल न्हात सुख करत अति बढ़ी प्रीती ॥ एक इक मिलति हँसि एक हरि संग रसि एक जल मध्य इक तीर ठाढी । एक इक डरति एक इक भरि कै चलति एक सुख लरति अति नेह बाढी ॥ काहु नहिं डराति जल थलहु क्रीडा कराति हराति मन निडरि ज्यों कंत नारी। सूर प्रभु श्याम श्यामा संग गोपिका मिटी तनुसाध भई मगन भारी ॥ ३९ ॥ गौरी ॥ यमुनजल क्रीडत हैं नँदनंदन । गोपीवृंद मनोहर चहुँ दिश मध्य अरिष्ट निकंदन॥पकरे पाणि परस्पर छिर कत सिथिल सलिल भुजचंदन । मानों युवति पूजि अहिपतिको लग्यो अंकदै वंदन ॥ कुच भरि कुटिल सुदेश अंबुकनि चुवति अग्रगति मंदन । मानहु भरि गंडूप कमलते डारत अलि आनं दन ॥ भुजभरि अंक अगाध चलतलै ज्यों लुब्धक खग फंदन । सूरदास प्रभु सुयश बखा नत नेति नेति श्रुति छंदन ॥ ४० ॥ कान्हरो ॥ विहरतहैं यमुनाजल श्याम । राजतहैं दोउ बांहां जोरी दंपति अरु व्रजवाम ॥ कोउ ठाढी जल जानु जंघलों कोउ काटि हिरदै ग्रीव । यह सुखव राणि सकै ऐसोको सुंदरताकी सीव ॥ श्याम अंग चंदनकी आभा नागरिकेसरि अंग । मल यज पंक कुमकुमा मिलिकै जल यमुना इक रंग॥ निशि श्रम मिट्यो मिट्यो तनु आलस परसि य मुन भई पावन । सूरश्याम जल मध्य युवति गन जन जनके मनभावन ॥ ४१ ॥ जल क्रीडा सुख अति उपजायो । रास रंग मनते नहिं भूलत उहै भेद मन आयो ॥ युवती कर करजोरि मंडली श्याम नागरी वीच । चंदन अंग कुमकुमा छूटत जलमिलि तट भई कीच ॥जो सुख श्याम करत युवती सँग सो सुख तिहुँ पुर नाहीं । सूरश्याम देखत नारिनको रीझि रीझि लपटाहीं॥४२॥ ॥ बिलावल ॥ विहरत नारि हँसत नँदनंदन । निर्मल देह छूटि तनु चंदन ॥ अति सोभा त्रिभुवन जन वंदन । पावत नहिं गावत श्रुति छंदन ॥ कंचन पीठ नारि अति सोभा । वे उनको वे उनको लोभा ॥ कबहुँ अंकभरि चलत अगाधहि । अरस परस मेटत मन साधहि ॥ कोउ भाजै कोउ पाछे धावै । युवतिनसों कहि ताहि मँगावै ॥ ताको गहि अथाह जल डारैं । मुख व्याकुलता रूप निहारैं ॥ कंठ लगाइ लेत पुनि ताही । देत अलिंगन रीझत जाही ॥ सूरश्याम व्रजयुवतिन भोगी । जाको ध्यावत शिव मुनि योगी॥४३॥टोडी ॥ ऐसे श्याम वश्य राधाके । नाम लेत पावन आधाके॥ प्यारी श्याम अंजली डारै । वा छविको चितलाइ निहारै ॥ मनो जलद जलडारत टारै । मन मनही तन मन धन वारै ॥ निरखिरूप नहिं धीर सम्हारै । सूरश्यामके अंकम धारै ॥ ४४ ॥ ललित ॥ राधे छिरकाति छटि छबीली । कुच कुमकुम कंचुकि वँद टूटे लटकि रही लटगीली॥वंदन

शिरताटंक गंड पर रतन जटित मणिलीली। गति गयंद मृगराज सुकटिपर सोभित किंकिणि ढीली ॥ मच्यो खेल यमुना जल अंतर प्रेम मुदित रस झीली। नंदसुवन भुज ग्रीव विराजत भाग सुहाग भरीली ॥ वर्षत सुमन देवगण हर्षित दुंदुभि सरस बजीली। सूरश्याम श्यामा रस क्रीडत यमुन तरंग थकीली ॥ ४५ ॥ रामकली ॥ श्याम श्यामा सुभग यमुना जल निश्रम करत विहार। पीतकमल इंदीवर पर मनो भोरहि भए निहार॥ श्रीराधा अंबुज कर भरि भरि छिरकत वारंवार। कनकलता मकरंद झरत मनु हालत पवन सँचार ॥ अतसीकुसुम कलेवर बूंदै प्रति बिंबत निरधार। ज्योति प्रकाश सुघन में खेलत स्वाति सुवन आकार ॥ धाइ धरे वृषभानु सुत हरि मोहे सकल शृँगार। विद्रुम जलद सूर मनों विधु मिलि श्रवत सुधाकी धार ॥४६॥ रामकली ॥ यमुनजल गिरिधर करत विहार। इत उत गोपवधू मिलि छिरकत हस्तकमल सुखचार ॥ काहूकी कंचुकी छूटी काहूके विथुरे हैं बार। काहु खुभी काहू नकबेसरि काहू के टूटे हैं हार ॥ सूरदास कहँलौं बरणौं मैं लीला अगम अपार४७॥रीझे श्याम नागरी रूप।तैसी ये लटबगरीं ऊपर श्रवतनीर अनूप। श्रवत जल कुच परत धारा नहीं उपमा पार।मनों उगलत राहु अमृत कनक गिरिपर धार ॥ उरज परसत श्याम सुंदर नागरी सरमाइ। सूर प्रभु तनकाम व्याकुल गए मननि जनाइ ॥४७॥ सारंग ॥ देखरी उमँग्यो सुख आज। जल विहार विनोद सुखरुचि रतनको है साज ॥ भीजे पट लपटयो सुभग उर रही केसर जयन। अरस परस स्वभाव मानो जगे निशिके नयन ॥ कछुक कुं चित केशमाई सरस सोभा भयो। सुभग राजत कामद्रुमको मनो अंकुर नयो ॥ युवति गण सब यूथ जितकित भरत अंचल नीर। सूर सुभग गोपाल तन ब्रज सुखद श्याम शरीर ॥ ४८॥ रामकली ॥ श्यामा श्याम अंकम भरी। उरज उर परसाइ भुज भुज जोरि गाढे धरी ॥ तुरत मन सुख मानि लीन्हों नारि तेहि रँग ढरी। परस्पर दोउ करत क्रीडा राधिका नवहरी ॥ ऐसही सुख दियो मोहन सबै आनँद भरी। करति रंग हिलोर यमुना प्रेम आनँद झरी ॥ रास निशि श्रम दूरि कीन्हों धन्य धनि यह घरी। सूर प्रभु तट निकसि आए नारि सँग सब खरी ॥ ४९ ॥ गूजरी ॥ ठाढे श्याम यमुना तीर। धन्य पुलिन पवित्र पावन जहां गिरिधर धीर ॥ युवति बनि बनि भई ठाढी और पहिरे चीर। राधिका सुख श्याम दायक कनक बरन शरीर ॥ लाल चोली नील डँडि आ संग युवतिनभीर। सूरप्रभु छवि निरखि रीझे मगन भयो मन कीर ॥ ५० ॥ नट ॥ ललकत श्याम मन ललचात। कहत हैं घर जाहु सुंदरि मुख न आवत बात ॥ षटसहस्र दशगोपकन्या रैनि भोगीरास।एक छिन भई कोउ न न्यारी सबनि पुरई आस॥विहँसि सब घर घर पठाईं ब्रजगईं ब्रजबाल।सूरप्रभु नँदधाम पहुँचे लख्यो काहु न ख्याल॥५१॥बिलावल॥ब्रजवासी सब सोवत पाए। नंदसुवन मति ऐसी ठानी घरलोगन उन जाइ जगाए॥उठे प्रात गाथा मुखभाषत आतुर रैनि विहानी। ऐंडतअंग जम्हात वदनभरि कहत सबै यह बानी॥ जो जैसे सो तैसे लागे अपने अपने काज। सूरश्यामके चरित अगोचर राखी कुलकी लाज ॥ ५२ ॥ जैतश्री ॥ ब्रज युवती रसरास पगी। कियो श्याम सबको मनभायो निशिरति रंग जगी ॥ पूरण ब्रह्म अकल अविनाशी सबनि संग सुख दीन्हों। जितनी नारि भेष भए तितने भेद न काहू चीन्हों ॥ वह सुख टरत नकाहू मनते पतिहित साध पुराई। सूरश्याम दूलह सब दुलहिनि निशि भांवरि दैआई ॥५३॥सोरठ॥साध नहीं युवतिन मन राखी। मनवंछना सबन फल पायो वेद उपनिषद साखी ॥ भुजभरि मिली कठिन कुच चापे अधर सुधारस चाखी। हाव भाव नैनन सैननदै वचन रचन मुख भाषी ॥ शुक

भागवत प्रगट करि गायो कछू न दुविधा राखी। सूरदास व्रजनारि संग हरि मांगी करहिं नहीं कोउ काखी ॥५४॥ कान्हरा ॥ धनि शुक मुनि भागवत बखान्यो। गुरुकी कृपा भई जब पूरण तव रसना कहि गान्यो ॥ धन्य श्याम वृंदावनको सुख संत मयाते जान्यो। जो रस रास रंग हरि कीन्हें वेद नहीं ठहरान्यो ॥ सुर नर मुनि मोहित सब कीन्हे शिवहि समाधि भुलान्यो। सूरदास तहां नैन बसाए और नकहूँ पत्यान्यो ॥ ५५ ॥ धनाश्री ॥ शरद सोहाई आई राति। दह दिशि फूलि रही वन जाति ॥ देखि श्याम मन अति सुख भयो * शशिगो मंडित यमुना कूल। वरपत विटप सदा फल फूल ॥ त्रिविध पवन दुखदवनहै * श्रीराधा रवन बजायो वैन। सुनि ध्वनि गोपिन उप ज्यो मैन ॥जहां तहांते उठि चलीं * चलत न काहुहि कियो जनाव। हरि प्यारी सों वाढ्यो भाव॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १ ॥ घर डर विसरचो बढ्यो उछाह। मन चीते हरि पायो नाह ॥ व्रजनायक लायक सुने * दूध पूतकी छांडी आश। गोधन भरता करे निराश ॥ साँचे हित हरिसों कियो * खान पान तनुकी न सँभार। हिलग छँडाई गृहं व्यवहार ॥ सुधि बुधि मोहन हरिलई * अंजन मंजन अँगन शृंगार। पट भूषण छूटे शिरवार ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ २ ॥ एक दुहावतते उठि चली। एक सिरावत मग महँ मिली ॥ उतसहकंठा हरिसों वढी * उफनत दूध न धरचो उतारि। सीझी थूली चूल्हे दारि ॥ पुरुप तात ज्यों जेवतहुते * पय प्यावत बालक धरि चली। पति सेवा तजि करी न भली ॥ धरचो रह्यो जेवन जिते * तेल उबटना त्याग्यो दूरि। भागन पाई जीवन मूरि ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥३॥ अंजतही इक नैन विसारचो। कटि कंचुकि लहँगाउरधारचो ॥ हार लपेटचो चरण न सों * श्रवण न पहिरे उलटे तार ॥ तिरनी पर चौकी शृंगार ॥ चतुर चतुरता हरिलई * जाको मन जहां अटके जाइ ॥ तावनिताको कछु न सोहाइ। कठिन प्रीतिको फंदहै * श्यामहि सूचत मुरलीनाद। सुनि धुनि छूटे विप सवाद ॥ रासरसिक गुण गाइहो ॥ ४ ॥ एक मात पित रोकी आनि। सही न हरि दरशनकी हानि ॥ सबहीको अपमानके * जाको मनमोहन हरि लियो। ताको काहू कछुना कियो ॥ ज्यों पतिसों त्रिय रतिकरे * जैसे सरिता सिंधुहि भजे। कोटिक गिरि भेदत नाहिं लजे ॥ तैसी गति तिनकी भई * इक जे घरते निकसी नहीं। हरि करुणा करि आए तहीं॥रासरसिक गुण गाइहो॥५॥निरस कवी न कहै रसरीति।रसिकहि लीला रसपर प्रीति॥यह मत शुकमुख जानिवो* व्रजवनिता पहुँची पियपास। चितवत चंचल भ्रुकुटिविलास ॥ हँसि बूझी हरि मानदे * कैसे आई मारग मांझ। कुलकी नारि न निकसै सांझ ॥ कहा कहैं तुम योगहो * व्रजकी कुशल कहो वड़भाग। क्यों तुम छांडे सुवन सोहाग ॥ रासरसिक गुणगाइहो ॥ ६ ॥ अजहूं फिरि अपने घर जाहु। परमेश्वर करि मानो नाहु॥वनमें निशि वसिए नहीं* श्रीवृंदावन तुम देखा आइ। सुखद कुमो दिनि प्रफुल्लित जाइ। यमुनाजल सीकर घनो * घरमहँ युवती धर्महि फवै।ताविन सुतपति दुःखित सवै ॥ यह विधना रचना रची * भरताकी सेवा सतसार। कपट तजै छूटै संसार ॥ रासरसिक गुणगाइहो ॥ ७ ॥ विरध अभागी जो पति होई। मूरख रोगी तजै न जोई ॥ पतित विलक्षक छाँडिए * तजि भरता रहि जारहि लीन। ऐसी नारि नहोइ कुलीन॥यश विहीन नरकहि परै*बहुत कहा समुझाऊं आज। हमहूँ कछु करिवे गृहकाज॥हमते को अति जानतहै * श्रीमुख वचन सुनत विलखाइ। व्याकुल धरणि परी मुरझाइ ॥ रासरसिक गुणगाइहो ॥ ८ ॥ दारुण चिंता वढी न थोर। क्रूरवचन कहै नंदकिसोर ॥ और शरन सूझै नाहिं ठौर * रुदन करत नदी वढ़ी गँभीर। हरि

करि आनहि जाने पीर। कुच थंभन अवलंबहै * तुम्हरी रही बहुत पिय आश। बिन अपराध नकरहु निराश ॥ कैतो रुखाई छांडिये * निठुर वचन जिनि बोलहु नाथ। निजदासी जिनि करहु अनाथ ॥ रासरसिक गुणगाइहो ॥ ९ ॥ मुख देखत सुख पावत नैन। श्रवण सिरात सुनत मृदु बैन ॥ सैननहीं सरबसहरयो * मंदहँसनि उपजायो काम। अधरसुधा ध्वनि करि विश्राम। बरपि सींचि विरहानला * मुरली सुनते भई सवाइ। तवते और न कछू सोहाइ ॥ कहौ घोष हम जाहिं क्यों * सजन बंधु को करिहै कानि। तुम बिछुरत पिय आतमहानि। रास रसिक गुण गाइहो ॥ १० ॥ बेनु बजाइ बुलाई नारि। सहि आई कुल सबकी गारि ॥ मन मधुकर लंपट भयो * सोऊ सुंदरि चतुर सुजान। आरज पंथ सुनै तजि जान ॥ तिन देखत पुरुषउ लजै * बहुत कहा बरणों यह रूप। और न त्रिभुवन शरण अनूप ॥ बलिहारी या राति की * सुन मोहन विनती दै कान। अपयश होइ किये अपमान ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ ११ ॥ तुम हमको उपदेश्यो धर्म। ताको कछू न पायो मर्म ॥ हम अबला मतिहीन हैं * दुख दाता सुत पति गृह बंधु। तुम्हरि कृपा बिनु सब जग अंधु॥तुमते प्रीतम औरको * तुमसों प्रीति करहिं जे धीर। तिनहि न लोक वेदकी पीर॥पाप पुण्य तिनके नहीं * आशापाश बँधी हम बाल। तुमहि विमुख ह्वै हैं बेहाल ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १२ ॥ बिरद तुम्हारो दीनदयाल। कर सों कर धरि करि प्रतिपाल॥भुजदंडनि खंडहु व्यथा * जैसे गुणी देखावै कला। कृपण कबहुँ नहिं मानै भला ॥ सदय हृदय हमपर करौ* ब्रजकी लाज बडाई तोहि। करहु कृपा करुणा करि जोहि॥ तुमहिं हमारे गति सदा * दीन वचन जब युवतिन कहे। सुनत वचन लोचन जल बहे ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १३ ॥ हँसि बोले हरि बोली बोडि। करजोरे प्रभुता सब छोंडि ॥ हौं असाध तुम साध हौ * मो कारण तुम भई निसंक। लोक वेद बपुरा को रंक॥ सिंह शरन जंबुक बसै * बिन दम कनहौं लीन्हो मोल। करत निरादर भई न लोल ॥ आवहु हिलि मिलि खेलिये * ब्रजयुवतिन घेरे ब्रजराज। मनहुँ निशाकर किरन समाज ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १४ ॥ हरि मुख देखत भूले नैन। उर उमँगे कछु कहत न बैन ॥ श्यामहि गावत काम वश * हँसत हँसावत करि परिहास। मनमें कहत करैं अब रास॥अंचल गहि चंचल चल्यो * ल्यायो कोमल पुलिन मँझार। नख शिख भूषण अंग सँवार। पट भूषण युवतिन सजे *कुच परसत पुजई सब साध। रससागर मनो मदन अगाध ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १५ ॥ रस में विरस जु अन्तर्ध्यान। गोपिनके उपजै अभिमान ॥ विरह कथा में कौन सुख * द्वादश कोश रास परमान। ताको कैसे होत बखान ॥ आस पास यमुना हिली * तामें मान सरोवर ताल। कमल विमल जल परम रसाल ॥ सेवहिं खग मृग शुकभरे * निकट कलपतरु बंसीबटा। श्रीराधा रति कुंजनि अटा ॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १६ ॥ नव कुमकुम रज बरषत जहां। उड़त कपूर धूरि तहँ तहां ॥ और फूल फल को गनै * तहां घनश्याम रास रस रच्यो। मर्कत मणि कंचन सों खच्यो ॥ अद्भुत कौतुक प्रगट कियो * मंडल जोरि युवति जहां बनी। दुहुँ दुहुँ बीच श्याम घन धनी। सोभा कहत न आवई * घूंघट मुकुट विराजत शीश। सोभित शशि मनो सहस बतीस॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १७ ॥ मणि कुंडल ताटंक विलोल। विहँसत लज्जित ललित कपोल ॥ अलक तिलक वेसरि बनी * कंठशिरी गजमोतिन हार। चंचरि चुरि किंकिणि झनकार ॥ चौकी चमकति उरलगी * कौस्तुभमणि राजति रुचिपोति। दशन दमक दामिनिते ज्योति॥ सरस अधर पल्लव बने* चिबुक

मध्य श्यामल रुचि विंद। देखि सवनि रीझे गोविंद॥ रास रसिक गुण गाइहो ॥ १८॥ सघन विमान गगन भरि रहे। कौतुक देखन अमर उमहे॥ नैन सुफल सबके भए * बाजे देवलोकनीसान। वरपत सुमन करत सुरगान॥मुनि किन्नर जय जय ध्वनि करैं * युवतिन विसरे पति गति गेह। प्रेममगन सब सहित सनेह॥ यह सुख हमको हो कहां * सुंदरता सब सुखकी खानि। रसना एक नपरत वखानि॥ रास रसिक गुण गाइहो॥ १९॥ नील कंचुकी मांडनिलास। भुजानि नवइ आभूपण माल॥ पीत पिछौरी श्यामतनु * अँगुरिन मुँदरी पहुँची पानि। काछे काटि कछिनी किंकिनि वानि॥ उर नितंव वेनी तुरै * नारावंदन सूथन जंघन। पायँननूपुर वाजत संघन॥ नखन महावर खुलिरह्यो * श्रीराधा मोहन मंडल मांझ। मनहु विराजत चंदा साँझ॥ रास रसिक गुण गाइहो॥ २०॥ पग पटकत लटकत लट वाहु। मटकत भौंहन हस्त उछाहु॥ अंचल चंचल झूमका * दुरि दुरि देखत नैनन सैन। मुखकी हँसी कहत मृदु वैन॥ मंडित गंड प्रस्वेदकन * चोरी डोरी विगलित केश। झूमत लटकत मुकुट सुदेश॥ फूल खसत शिरतेघने * कृष्णवधू पावन यश गाइ। रीझत मोहन कंठ लगाइ॥ रास रसिक गुण गाइहो॥ २१॥ वाजत भूपण ताल मृदंग। अंग दिखावत सरस सुगंध॥ रंग रह्यो न कह्यो परै * नूपुर किंकिनि कंकनचुरी। उपजत मिश्रित ध्वनि माधुरी॥सुनत सिराने श्रवण मन * मुरली मुरज रवाव उपंग।उघटत शब्द विहारी संग। नागरि सब गुण आगरी * गोपीमंडल मंडित श्याम। कनक नीलमणि जनु अभिराम॥रास रसिक गुण गाइहो॥ २२॥ तिरपलेति सुंदर भामिनी। मनहु विराजत घनदामिनी। या छविकी उपमानहीं * राधाकी गति परत नलखी। रससागरकी सींवानखी॥वलिहारी वा रूपकी * लेति सुघर औघरगति तान। दै चुंवन आकर्पति प्राण॥ भेटति मेटति दुख सवै * राखति पियहि कुचन विच आनि। दै अधरामृत शिरपर पानि॥ रास रसिक गुण गाइहो॥२३॥ हरपित वेणु वजायो छैल। चंद्रहि विसरी नभकी गैल॥ तारागण मनमें लज्यो * मुरली ध्वनि वैकुंठहि गई। नारायण सुनि प्रीति जु भई॥ कहत वचन कमला सुनौ * श्रीकुंजविहारीविहरत देखि। जीवन जन्म सफलकरि लेखि॥इहसुख तिहुँपुरहै कहां * श्रीवृंदावन हमते दूरि। कैसे धौं उडिलागै धूरि॥ रासरसिक गुणगाइहो॥२४॥ कोलाहल ध्वनि दहदिशजाति। कल्पसमान भई सुखराति॥ जीवजंतु मैमँतसवै * उलटि वह्यो यमुनाको नीर। वालक वच्छ नपीवैं क्षीर॥ राधारवन ठगे सवै * गिरिवर तरुवर पुलकित गात। गोधन थनते दूध चुचात॥ सुनि खग मृग मुनि व्रत धरयौ * महिफूली भूल्यो गति पौन। सोवत ग्वाल तजतनहिं भौन। रास रसिक गुण गाइहो॥ २५॥ राग रागिनी मूरतिवंत। दूलह दुलहिनि सरस वसंत॥ कोक कला संगीत गुर * सप्तसुरनकी जाति अनेक। नीके मिलवति राधा एक॥ मनमोह्यो पियको सुघर * छंद ध्रुवनिके भेद अपार। नाचति कुँवरि मिले झपतार॥ कह्योसवै संगीतमें * पिकनि रिझावति सुन्दर सुपद। सरस स्वल्प ध्वनि उघटत शवद॥ रास रसिक गुण गाइहो॥२६॥ चलति सुमोहति गति गज हंस। हँसतपरस्पर गावत गंस॥ तान मान मृगमथनके * गौरीचंदन चरचित वाहु॥लेत सुवास पुलक तनु नाहु। दैचुंवन हरि सुख लियो * श्यामल गौर कपोल सुचारु। रीझि परस्पर लेत उगारु॥ एक प्राण द्वैदेहहैं * नाचत गावत गुणकी खानि। श्रमित भए टेकत पिय पानि॥ रास रसिक गुण गाइहो॥ २७॥ पिक गावत अलिनादाहि देत। मोर चकोर फिरत सँग हेत॥ सघन सुमनहारहैं मनों * कच कुच विंदरसे हँसिश्याम। चलत भौंह नैनन अभिराम॥ अंगन

कोटि अनंग छवि * हस्तक भेद ललित गति लई। अंचल उडत अधिक छवि भई॥कुच विगलित मालागिरी * हरि करुणाकरि लई उठाइ।पोंछत श्रमजल कंठलगाइ॥रास रसिक गुण गाइहो॥२८॥ तिनहि लिवाइ यमुनजल गए। पुलिन पुनीत निकुंजनि ठए॥ अंगश्रमित सबके भए * जैसे मदगज कूल विदारि। तैसे सँग लै खेली नारि॥ संक नकाहूकी करी * मेटी वेद लोक कुल मेंडि। निकसि कुँवरि खेल्यो करि पेंडि॥ फवी सबै जो मन धरी * जल थल क्रीडत व्रीडत वनी। तिन की लीला परत न कही॥ रास रसिक गुण गाइहो॥ २९ ॥ कह्यो भागवत शुक अनुराग। कैसे समुझै विन वडभाग॥श्रीगुरु सकल कृपाकरी * सूर आश करि वरण्यो रास।चाहतहौं वृंदावन वास॥श्रीराधा वर इतनी करकृपा * निशि दिन श्याम सेऊं तोहिं। इहै कृपा करि दीजै मोहिं॥ नवनिकुंज सुख पुंज में * हरि वंसी हरि दासी जहां। हरि करुणा करि राखहु तहां॥ नित विहार आभार दै * कहत सुनत वाढत रस रीति। वक्ता श्रोता हरि पद प्रीति॥रास रसिक गुण गाइहो॥ ३०॥ १८ ५६॥ धनाश्री॥ मैं कैसे रस रासहि गाऊं। श्री राधिका श्यामकी प्यारी तुव विन कृपा वास व्रजपाऊं। अन्य देव सपनेहु न जानौं दंपति को शिरनाऊं। भजन प्रताप शरन महिमाते गुरुकी कृपा दिखाऊं॥ नवनिकुंज वन धाम निकट इक आनँदकुटी रचाऊं। सूर कहा विनती करि विनवै जन्म जन्म यह ध्याऊं॥५७॥ विलावल॥ तुमही मोको ढीठ कियो। नैन सदा चरणनतर राखे सुख देखत नहिं गनत वियो॥ प्रभु तुम मेरी सकुच मिटाई जोइ सोइ माँगत पेलि। मांगों चरण शरन वृंदावन जहां करत नित केलि॥ यह वाणी भजनकी श्रवण विन सुनत वहुत सरमाऊं। श्रीवृषभानुसुता पति सेऊँ सूर जगत भरमाऊं॥ ५८॥ विहागरो॥ रासरस लीला गाइ सुनाऊं। यह यश कहै सुनै मुख श्रवणन तिन चरणन शिरनाऊं॥ कहा कहौं वक्ता श्रोता फल इक रसना क्यों गाऊ। अष्टसिद्धि नवनिधि सुख संपति लघुता करि दरशाऊं॥ जो परतीति होइ हृदय में जगमाया धृग देखै। हरिजन दरश हरिहि सम पूजै अंतर कपट नभेषै॥ धनि धनि वक्ता तेहि धनि श्रोता श्याम निकटहै ताके। सूर धन्य तिनके पित माता भाव भजनहै जाके॥ ५९॥ विलावल॥ वृंदावन हरि रास उपायो। देखि शरद निशि रुचि उपजायो॥ अद्भुत मुरली नाद सुनायो। युवति सुनत तनु दशा गँवायो॥मिलि धाई मनको फल पायो। जंगम चले जुचलनि थिरायो॥ उलटी यमुना धार वहायो। सुनि ध्वनि चंचल पवन थकायो॥ सुर नर मुनिको ध्यान भुलायो। चंद्रगगन मारग विसरायो॥रूपदेखि मन काम लजायो।रसमें अंतर विरस जनायो॥ युवतिनके तनु विरह बढायो। वहुरि मिले हित अति उपजायो॥हाव भाव करि सबन रिझायो। कल्प रैनि रस हित उपजायो॥ प्रातसमय यमुनातट आयो। नारिनके निशि श्रमहि मिटायो॥ युवतिन प्रति प्रति रूप वनायो। शिव नारद शारद यह गायो॥ ध्यान टर्यो चितत हां लगायो। राधावर निज नाम कहायो॥ सूरदास कछु कहिके गायो। रमाकंत जासुको ध्यायो। सो सुख नंद सुवन व्रज आयो॥ ६०॥ गोपी पदरज महिमा विधि भृगुसों कही। वरष सहस्रन कियो तप मैं ताऊ न लही॥ इह सुनके भृगु कह्यो नारद आदिक हरि भक्ता। माँगे तिनकी चरण रेणु तोहिं यह जुगुता॥ सोनिज गोपी चरण रज वांछितहौ तुम देव। मेरे मन संशय भयो कहौ कृपा करि भेव॥ व्रज सुंदरि नहिं नारि ऋचा श्रुतिकी सब आहिं। मैं अरु शिव पुनि लक्ष्मी तिन सम नाहिं॥ अद्भुतहै तिनकी कथा कहों सो मैं अवगाइ। ताहि सुनै जो प्रीतिकै सो हरिपदहि समाइ॥ प्राकृत लैभए पुरुष जगत सब प्राकृत समाइ।रहै एक वैकुंठ लोक जहां त्रि

भुवन राइ ॥ अक्षर अच्युत निर्विकार निरंकार है जोई । आदि अंत नाहिं जानिअत आदि अंत प्रभु सोई ॥ श्रुति विनती करि कह्यो सर्व तुमही हौ देवा । दूरि निरंतर तुमहिं हौ तुम निज जानत भेवा ॥ या विधि बहुत स्तुति करी तब भइ गिरा अकास । मांगो वर मनभावते पुरवो सो तुम आस ॥ श्रुतिन कह्यो करजोरि सने आनंद देह तुम । जो नारायण आदि रूप तुम्हरी सो लखी हम ॥ निर्गुण रहित जो निज स्वरूप लख्यो न ताको भेव । मन वाणी ते अगम अगोचर देखरावहु सो देव ॥ वृंदावन निजधाम कृपाकारि तहां देखायो । सब दिन जहां बसंत कल्पवृक्षनसों छायो ॥ कुंज अद्भुत रमणीक तहां वेलि सुभग रही छाइ । गिरि गोवर्धन धातमें झरना झरत सुभाइ ॥ कालिंद्रीजल अमृत प्रफुलित कमल सुहाइ । नगन जरित दोउ कूल हंस सारस तहँ छाइ ॥ क्रीडत श्याम किसोर तहां लिये गोपिका साथ । निरखि सो छवि श्रुति थकित भए तब बोले यदुनाथ ॥ जो मन इच्छा होइ कहो सो मोहिं प्रगट कर । पूरण करों सो काम देउँ तुमको मैं यह वर ॥ श्रुतिन कह्यो ह्वै गोपिका केलि करैं तुम संग । एवमस्तु निज मुख कह्यो पूरण परमानंद ॥ कल्पसार सतब्रह्मा जब सब सृष्टि उपावै । अरु तेहि लोग न वर्ण आश्रमके धर्म चलावै ॥ बहुरि अधर्मी होहिं नृप जग अधर्म बाढि जाइ । तब विधि पृथ्वी सुरसकल करैं विनय मोहिं आइ ॥ मथुरा मंडल भरतखंड निजधाम हमारो । धरौं तहां मैं गोप भेप सो पंथ निहारौ ॥ तब तुम होइकै गोपिका करिहो मोसों नेह । करौं केलि तुमसों सदा सत्य वचन मम येह ॥ श्रुति सुनिकै हरिवचन भाग्य अपनी बहुमानी । चितवन लागे समय दिवससो जात न जानी ॥भारभयो जब पृथ्वी पर तब हरि लियो अवतार । वेद ऋचा होइ गोपिका हरिसों कियो विहार ॥ जो कोइ भरता भाव हृदय धरि हरिपद ध्यावै । नारि पुरुप कोउ होइ श्रुति ऋचा गति सो पावै ॥ तिनके पद रज जो कोई वृंदावन भूमि माहिं । परसै सोऊ गोपिका गति पावे संशय नाहिं ॥ भृगु ताते मैं चरण रेणु गोपिनकी चाहत । श्रुति मति वारंवार हृदय अपने अवगाहत ॥ यह महिमा रज गोपिकाकी जब विधि दई सुनाइ । तब भृगु आदिक ऋषि सकल रहे हरिपद चितलाइ ॥ सर्वशास्त्रको सार इतिहास सर्व जो । सर्व पुराणको सार युत श्रुतिनको ॥ वंदनरज विधि सबै कह्यो विधि दियो ऋपिन्ह बताइ । व्यास त्रिपद बावनपुराण कह्यो सूर सोइ अब गाइ ॥ ६१ ॥ गूजरी ॥ श्यामा श्यामके उरबसी । रैनि नृत्यत रिझै पियमन तडित ते छवि लसी ॥ श्यामतारस मगन डोलत सब त्रियन में जसी । कोककलाप्रवीन सुंदरि कंत गुण कर कसी ॥ करत सदन शृंगार बैठी अंग अंग प्रति रसी । सूर प्रभु आए अचानक देखि तिनको हँसी ॥६२॥रामकली॥ पिय निरखत प्यारी हँसि दीन्हों । रीझे श्याम अंग अँग निरखत हँसि नागारि उरलीन्हो ॥ आलिंगनदै अधर दशन खंडि करगहि चिवुक उठावत । नासा सों नासा लै जोरत नैन नैन परसावत ॥ यहि अंतर प्यारी उर निरख्यो झझकि भई तब न्यारी । सूरश्याम मोको दिखरावत उर ल्याए धरि प्यारी ॥ ६३ ॥ अथ राधाको मान ॥ राग टोडी ॥ अब जानी पिय बात तुम्हारी । मोसों तुम मुहँकी मिलवतहौ भावतिहै वह प्यारी ॥ राखे रहत हृदय परजाको धन्य भाग्यहैं ताके । ऐसी कहौ लखी नहिं अबलौं वश्य भएहौ याके॥ भलीकरी यह बात जनाई प्रगट देखाई मोहिं । सूरश्याम यह प्राणपियारी उरमें राखी पोहिं ॥ धनाश्री ॥६४॥ सुनत श्याम चकृत भए बानी । प्यारी पिय मुख देखि कछुक हँसि कछुक हृदय रिस मानी ॥ नागरि हँसति हँसी उर छाया तापर अति झहरानी । अधर कंप रिस भौंह मरोरयो मनही

मन गहरानी॥इकटक चितै रही प्रतिबिंबहि सौति शाल जिय जानी॥सूरदास प्रभु तुम बडभागी बडभागिनि जेहि आनी ॥६५॥प्यारी सांच कहतिकी हाँसी। काहेको इतनो रिस पावति कत तुम होहु उदासी ॥ पुनि पुनि कहति कहा तवहींते कहा ठगी सों ठाढी। इकटक चितै रहीहिरदै तन मनो चित्र लिखि काढी ॥ समुझी नहीं कहा मन आई मदन त्रसै तुम आगे। सूरश्याम भए काम आतुरे भुजा गहन पिय लागे ॥ ६६ ॥ मोहिं छुवौ जिनि दूरि रहौजू। जाको हृदय लगाइ लई है ताकी बाँह गहौजू ॥ तुम सर्वज्ञ और सब मूरख सो रानी अरु दासी। मैं देखति हृदय वह बैठी हम तुमको भइ हांसी ॥ बांह गहत कछु शरम न आवत सुख पावत मनमाहीं। सुनहु सूर मोतनको इकटक चितवति डरपति नाहीं ॥ ६७ ॥ बिलावल ॥ कहा भई धनि बावरी कहि तुमहिं सुनाऊं। तुमते कोहै भावती को हृदय बसाऊं॥ तुमहिं श्रवण तुम नैनहो तुम प्राणअधारा। वृथा क्रोध त्रिय क्यों करौ कहि बारंबारा ॥ भुजगहि ताहि बतावहू जो हृदय बतावति। सूरजप्रभु कहै नागरी तुमते को भावति ॥ ६८ ॥ नट ॥ माधौ नाहिंन डरति जो हृदय बसति। ऐसी ढीठ मेरे जानि तुमहि कीन्हींहै कान्ह मोसों सन्मुख देखति न त्रसति ॥ झुके झुकति भाल भ्रुकुटी कुटिल किये रूखीहै रहत हँसेते हँसाति।तबहींते इकटक चितवत और सिसकत हौं डरते इत उत नधसाति॥ जाही सों लगत नैन ताही खगत बैन नख शिखलौं सबगात ग्रसाति। ताके रँग राचे हरि सोईहै अंतर संग काँचकी करोतीके जल ज्यों लसति ॥ बिहँसि बोले गोपाल सुनिरी ब्रजकी बाल उछंग लेत कत धरणि खसति। अपनी छाया निहारि काहेको करति आरि कामकी कसोटी सूर कर्षते कसति ॥ ६९ ॥ कान्हरो ॥ काहेको हो बात बनावत। अब तुमको पिय मैं पत्याति हौं अपनी धरणि बतावत ॥ वा देखत हमको तुम मिलिहौ काहेको ताको अनखावत। जैहै कहूं निकासि हिरदैते जानि बूझि तेहि क्यों उचटावत ॥ जो वह कहै करो तुम सोई कहा मोहिं पुनि पुनि समुझावत। सूरश्याम नागर वह नागरि भले भले जू मोहिं खिझावत ॥ ७० ॥ ॥ गुंडमलार ॥ वृथा हठ दूरि किनि करौ प्यारी। कहा रिस करति ह्यां छांह अपनी देखि उरको उनहीं रिस जरति भारी॥ तुमहिं धन रहति मन नैनमें तुव बसति कनक सो कसिलेहु कहा बैठी॥ चतुराई कहांगई बुद्धि कैसी भई चूक समुझे बिना भौंह ऐठी॥ यह सुनत रिसभरी रही नाहिं तहाँ खरी ओटह्वै झरि हरी मानुकीन्हौं। जाहु मन कह्यो मैं बहुत सुख लह्यो सौति देखराय मोहिं सूर दीन्हो ॥ ७१ ॥ राग कल्याण ॥ कियो अतिमान वृषभानुवारी। देखि प्रतिबिंब पिय हृदयनारी ॥ कहाल्यों करत लैजाहु प्यारी। मनहिमन देत अति ताहिगारी॥सुनत यह बचन पिय विरह बाढो। कियो अति नागरी मानगाढो ॥ कामतनु दहत नाहिं धीरधारै। कबहुँ बैठत उठत बारबारै। सूर अतिभए व्याकुल मुरारी। नैनभरिलेत जलदेत ढारी ॥ ७२ ॥ बिहागरो ॥ मानकरयो त्रिय बिन अपराधहि। तनुदाहति बिनकाज आपनो कहत डरत जिय बादहि॥कहारही मुख मूंदि भामिनी मोहिं चूक कछु नाहीं। झझकि रही क्यों चतुर नागरी देखि आपनी छाहीं॥ अजहूं दूरि करौ रिस उरते हृदये ज्ञान बिचारौ। सूरश्याम कहि कहि पचिहारे हठ कीन्हों जिय भारौ ॥ ७३ ॥ सोरठ ॥ काम श्याम तनु चटप कियो। मनो धरयो नागरि जिय गाढो सूख्यो कमल हियो ॥ व्याकुल भए चले वृंदावन मिली दूतिका आनि। बारबार हरि बदन निहारति सकै न दुख पहिचानि॥ कैसी दशा आजु मैं देखति कहो न मोहिं सुनाइ। सूरश्याम देखे तुम व्याकुल आए कहा गँवाइ॥ ॥ ७४ ॥ गौरी ॥ व्याकुल बचन कहत हैं श्याम। वृथा नागरी मान बढायो जोर कियो तनु काम॥

यह कहतहि लोचन भरि आए पायो विरह सहाइ । चाहत कह्यो भेद ता आगे वाणी कही न जाइ ॥ और सखी तेहि अंतर आई व्याकुल देखि मुरारी । सूरश्याम मुख देखि चकित भई क्यों तनुरहे विसारी ॥ ७५ ॥ विहागरो ॥ कहति दूतिका सखिन बुझाइ । आजु राधिका मान कर्‍यो है श्याम गए कुँभिलाइ ॥ करसों कर धरि लाल लेगई सखिन सहित वनधाम । सुखदे कह्यो लिए आवतिहौं संग विलसो वाम ॥ मो आगेकी महरि बिटनिआं कहा करै वह मान । सुनहु सूर प्रभु कितिक वात यह करौ न पूरण काम ॥ ७६ ॥ भैरव ॥ श्याम कुंज बैठारि गई । चतुर दूतिका सखियन लीन्हें आतुरताई जानि लई ॥ मनहीं मन इक रचि चतुराई इहै कहौंगी वात नई । अवहीं लै आवतिहौं ताको इहै भई कछु वहुत दई ॥ करि आई हरिसों परतिज्ञा कहा कहै वृषभानु जई । सूरश्याम सों मान कर्‍यो है आजुहि ऐसी कहा भई ॥ ७७ ॥ नट ॥ सखिन सँग लै तहां गई । दूतिका मुख निरखि राधा जानि हृदय लई ॥ अति चतुर वृषभानुतनया सहज बोलि लई । सहज वचन प्रकाश कीन्हो कहाँ कृपा भई ॥ तुरतही यह कहि सुनायो श्याम वोले तोहिं। सूर प्रभु वन वोलि पठई तोहिं कारण मोहिं ॥ ७८ ॥ टोडी ॥ काहेको वन श्याम वोलाई। याहीते तुम धाई आई ॥ कहा कहौं तोकोरी माई । तुमहुँ भली अरु भले कन्हाई ॥ अव इक नई मिली है आई । ताहीको अव लेहिं वुलाई ॥ ताको राखी हृदय दुराई । तोको ह्वांते टारि पठाई ॥ सूर श्याम ऐसे गुण राई । उनकी महिमा कही न जाई ॥ ७९ ॥ धनाश्री ॥ आजु कछू घर कलह भयोरी । तऊ आजु अनमनी वत्यानी यह कहि मान ठयोरी ॥ मोसों कछुक कह्यो नाहिं मोहन सहज पठाई लेन । कहा पुकार परी हरि आगे चलो न देखो नैन ॥ तेरो नाम लेत हरि आगे कहत सुनाइ सुनाइ। सूर सुनहुका को काको गथ तै धौं लियो छँडाइ ॥ ८० ॥ सूही ॥ वृंदावन हरि बैठे धाम । काहेको गथ हर्‍यो सवनको काहे अपनो कियो कुनाम ॥ डारि देहु कह लियो परायो मेरो कह्यो मानिरी वाम। तवहीं ते उन सोर लगायो तोकों वोली है यहि काम ॥ चलहु तुरत जिनि झेर लगावहु अवहीं आइ करौ विश्राम। सूरश्याम तेरी घां झगरत तू काहे तिनसों करै ताम ॥ ८१ ॥ जैतश्री ॥ यह कछु नोखी वात सुनावति । काको गथ धौं मैं लीन्हों है वार वार वन मोहिं वोलावति ॥ मेरी घां हरि लरत कौनसों इतीमया मोहिं कीन्हीं । जैसे हैं हरि तेरे माई मैं नीके करि चीन्हीं ॥ की बैठो की भवन जाहुकी मैं उनपै नाहिं जाउँ। सूरदास प्रभुको री सजनी जन्म न लेहौं नाउँ ॥ ८२ ॥ गौरी ॥ मैं कहा तोहिं मनावन आई । प्रगट लिए सवको व्रज बैठी कहा करति अधिकाई ॥ जाइ करौ ह्वां वोध सवनिको मोपर कत सतरानी । श्यामलरत तवहीते उनसों तिन पर अतिहि रिसानी ॥ वार वार तू कहा कहतिरी व्रज काको मैं लीन्हों । सूरदास राधा सहचारिसों ज्वाव निदरिकै दीन्हों ॥ ८३॥ सोरठ॥ तैं कछु नाहिं काहूको लीन्हां । प्रगट कहौं तवहीं मानोंगी ज्वाव निदरि मोहिं दीन्हों ॥ तव वदिहौं ऐसेहि ह्वां कैहै जहँ बैठे सव वैरी । मेरे कहे वहुत रिस पावति संपति सवकी लैरी॥इक इक करि सव तोहिं दिखाऊँ कहि आवहु वनजाइ । की दीजौ की पुनि सव लीजौ सूर श्याम पै आइ ॥ ८४ ॥ सूही ॥ जिन जिन जाइ श्याम के आगे तेरी चुगली वहुत करी । वार वार जिन सों हरि खीझे तेरी घां, है महूं लरी ॥ श्याम भेद करि मोहिं पठाई तू मोहीं पर खीझ परी। जाइ करो रिस वैरिनि आगे जाके जाके गथहि हरी ॥ धरनि अकाश वनहु के आए देखत तिनको अतिहि डरी।सूरश्याम विनु न्याव चुकै क्यों तिन पर तू अतिही झहरी॥८५॥धनाश्री॥ते जन पुकारे

हरि पै जाइ।जिनकी यह सब सौज राधिका तेरे तनु सब लई छँडाइ ॥ इंदु कहै हो बदन बिगोयो अलकन अलि समुदाइ।नैनन मृग वचनन पिक लूटे बिलपत हरिहि सुनाइ ॥ कमल कीर केहरि कपोत गज कनक कदलि दुखपाइ।विद्रुम कुंद भुजंग संग मिलि शरन गए अकुलाइ॥अति अनीति जिय जानि सूर प्रभु पठई मोंहि रिसाइ।वोलीहै व्रजनारि वेगि चलि अब उत्तर दे आइ॥८६॥कल्याण॥ चलराधे हरि रसिक बुलाई । कमलनयन कछु मर्म कह्यो नाहिं मोहन वदन करन पुट लाई ॥ अँग अँग सर्वसु हरन लगीरी राच विरंचि तुव वनक वनाई। अव जो पुकार करत तेरे तनु जितजी वनकी सब सोभा चुराई॥मांग उरग नव तरनि तरौना तिलकभाल शशिकी ससकाई। भ्रुकुटी शर धनु सांधि वचन वर सुरपुर परिहै मदन दोहाई ॥ दाडिमवज्र पंगति पंकज दल दामिनि घन दुति रदन दोहाई । कंवुकपोत कंठ निशि वासर वाहुवली कटि कंज लताई ॥ उरभय भेष शेष अधर नपट यमुन मानो छवि कटि मृगराज सुहाई।हंस पुकार करत सूरज प्रभु दीनवंधु हौं लेन पठाई ॥८७॥कान्हरो॥मान करौ तुम और सवाई।कोटि करौ एकै पुनि ह्वैहौ तुम अरु वे मनमोहन माई ॥ मोहनसों सुनि नाम श्रवणही मगन भई सुकुमारी । मान गयो रिसगई तुरतही लज्जित भई मन भारी ॥ धाइ मिली दूतिका कंठ सों धन्य धन्य कहि वानी । सूरश्याम वनधाम जानिकै दरशनको अतुरानी ॥ ८८ ॥ विलावल ॥ हँसिकै कह्यो दूतिका आगे श्यामहि सुख देरी तू जाई। करि स्नान अभूषण अँगभरि मैं आवति तो पाछे धाई॥ यह सुनि हर्ष भई अतिही सखि गई तहां जहँ श्याम । अति व्याकुल तनुकी सुधि नाहीं विह्वल कीन्हो काम॥की वनमें की घरही वैठे की वासर की याम । सूरश्याम रसना रट लागी राधा राधा नाम ॥ ८९ ॥रामकली॥ श्याम नारिके विरह भरे।कवहुँक वैठत कुंज द्रुमनतर कवहुँक रहत खरे॥कवहुँक तनुकी सुरति विसारत कवहुँक तनु सुधि आवत । तव नागरिके गुणहि विचारत तेइ गुण गुनि गुनि गावत ॥ कहूं मुकुट कहुँ मुरलि रही गिरि कहुँ कटि पीत पिछौरी । सूरश्याम ऐसी गति भीतर आई दूतिका दौरी ॥ ९० ॥ ॥ विलावल ॥ श्याम भुजागहि दूतिका कहि आतुर वानी । काहेको कदरातहौ मैं राधा आनी ॥ विरह दूरि करि डारिए सुख करौ कन्हाई। त्रिया नाम श्रवणनि सुन्यो चितए अकुलाई ॥ मिले दूति कहि अंक दै लोचन भरि आए।प्यारी प्यारी वोलिकै युवती उरलाए।तव वोली हँसि दूतिका पिय आवति नारी।सूरश्याम सुनि वोल वै हरषे वनवारी॥९१ ॥ गूजरी॥धीर धरौ प्यारी अव आवति मैं जुगई परतिज्ञा करिकै सो कहिवात जनावति॥मनचिंता अव दूरि करौ जू कहौ न कह मोहिं देहौ। वनि आवति वृषभानुनंदिनी भुजभरि अंकम लेहौ॥यह सुंदरता और नहीं कहुँ वड़भागी सो पावै। सूरश्याम दूतिका वचन सुनि करयुग काम मनावै ॥ ९२ ॥ जैतश्री ॥यह सुनिकै मन श्याम सिहात ।पुलकित अंग रहै नाहिं धीरज पुनि पुनि पंथ निहारत जात ॥ कुंजभवन कुसुमनकी सेज्या अपने हाथ निवारत पात । जे द्रुम लता लटकि तनु लागत ते ऊंचे धरि पुलकित गात ॥ प्यारी अँग अतिकोमल जानत सेजकली चुनि डारत । सूरश्याम रीझत मनहीं मन सुधि करि छविहि निहारत ॥ ९३ ॥ कल्याण ॥ दूतिका हँसाति हरि चरित हेरै । कवहुँ कर अपने रचत सुमन नसेज कवहुँ मग निरखि कहूँ भयो झेरै ॥ काम आतुर भरे कवहुँ वैठत खरे कवहुँ आगे जाइ रहत ठाढे । चतुर सखि देखि पुनि राधिका पैगई झेरक्यों कराति धनकंत चाढे ॥ सुनत प्यारी हँसी पियाके मनवसी रूप गुण कर यशी प्रेमरासी । सूर प्रभु नाम सुनि मदन तन वल भयो अंग प्रति छवि उपररमा दासी ॥ ९४ ॥ धनाश्री ॥ धनि वृषभानुसुता वड़भागिनि । कहा निहारति अंग

अंग छवि धन्य श्याम अनुरागिनि ॥ और त्रिया नख शिख शृंगार सजि तेरे सहज न पूरै । रति रंभा उरवसी रमासी तोहिं निरखि मन झूरै ॥ ए सब कंत सुहागिनि नाहीं तूंहै कंतहि प्यारी। सूर धन्य तेरी सुंदरता तोसीं और न नारी ॥ ९५ ॥ सहज रूपकी राशि नागरी भूषण अधिक विराजै । मुख सौरभ संमिलित सुधानिधि कनकलता पर छाजै ॥ वदनाविंद धार मिलि सोभित धूमिल नील अगाध । मनहुँ बाल रवि रस समीर संकित तिमिर कूट ह्वै आध ॥ माणिक मध्य पास चहुँ मोती पंगति झलक सिंदूर । रेंग्यो जनु तम तट तारागण ऊगत घेरचो सूर ॥ की मन्मथरथ चक्र की तरिवन रवि रवरचितसे साज।श्रवण कूपकी रहट घंटिका राजत सुभग समाज॥ नाशानथ मुक्ता बिम्बाधर प्रतिबिंबित असमूच । बींध्यो कनक पासि शुक सुंदर कारि कवीज गहि चूंच ॥ कहँ लगि कहौं भूषणन भूषित अंग अंगके रूप । सूर सकल सोभा श्रीपतिके राजिवनै न अनूप ॥ ९६ ॥ कान्हरो ॥ विराजत राधा रूप निधान । सुंदरताको पुंज प्रगटही को पटतर त्रिय आन॥सिंदुर शीश मांग मुक्तावलि कचक वनी अवि नान । मनहुँ चंद्र मुख कोपि हन्यो रिपु राहु विषम बलवान ॥ तरल तिलक तार्टक गंडपर झलकत कल विय कान । मानहु शशि सहायकरिबेको रण विरचे द्वै भान ॥दीरघनैन नासिका बेसरि अरुण अधर छविवान । खंजन शुक नहिं बिंब समितको लज्जित भए अजान ॥ को कहि सकै उरोजन की छवि कंचन मेरु लजान । श्रीफल सकुचि रहे दुरिकानन सिखरहिवो विहरान ॥ रोमावलि त्रिवली छवि छाजत जनु कीन्ही यह ठान । कृप कटि सवल डंड बंधन मनों विधि दीन्हो बंधान ॥ अंग अंग आभूषण की छवि कापै होइ बखान । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि विलसहु श्याम सुजान ॥ ९७ ॥ सारंग ॥ राजत तेरे वदन शशीरी । किरनि कटाक्षवाण वर सांधे भौंह कलंक कमान कसीरी ॥पीन पयोधर सघन उन्नत अति तापर रोमावली लसीरी । चक्रवाक खग चुंच पुटीते मनु सैवल मंजीर खसीरी ॥ ज्यों नाभी सर एक नाल नव कनक कमल विवि रहे बसीरी । सूरज श्रीगोपाल पियारी मेरी अध तम धरा धसीरी॥९८॥गूजरी॥सुनि राधे तेरे अंगन ऊपर सुंदरता नवची ।लोक चतुर्दशनीरस लागत तू रसरास रची ॥ नखशिख विशिष कुसुमकी सेना को तुम अवधि रची । सहज माधुरी रोमन वर्षत रतिरणकीचमची ॥ तोसी नारि श्याम से नायक विधि वेकाज पची । सूर सुमेरु कूटकी सरवर क्यों पूजै घुंघची॥९९॥नट॥राधे देखि तेरो रूप।पठईहौं हरि सांकि मनु दल सज्यो मनसिज भूप ॥ चाल गज शृंखला नूपुर नीवि नव रुचि ढाल । किंकिनी घंटा घोप माधो भये भै बेहाल ॥ कंचुकी भूषण कवच सजि अति कुच कसे रणवीर । अंचलध्वजा अवलोकि नाहीं धरत पिय मन धीर ॥ भौंहैं चाप चढाइ कीन्हो तिलक शर संधान । नैनकी तकि देखि गिरिधर तज्योहै मदमान॥ चमर चिकुर सुदेश घूंघट छत्र सोभित छांह । ज्यों कह्यो त्योंही मिलाऊं दै दयालुहि बाहँ ॥ राधिका अति चतुर सुंदरि सुनि सुवचन विलास । सूर रुचि मनसा जनाई प्रगटि मुख मृदुहास ॥ ॥१९००॥ कल्याण ॥ आजु अंजन दियो राधिका नैनको । मीन गणहीन मृगलजित खंजन चकित अधिक चंचल सरस श्याम सुखदैनको ॥ लसति दाडिम दशन भौंह मन्मथ फंद स्वलपलट लटकि रही रहत नहिं चैनको।कसनि कंचुकि बंद उर मुक्तमाल मुख निरखि उडराज तजि गयो सुर ऐनको॥ रुनित नूपुर चरण क्षुद्रकटि घंटिका कनक तनु गौर छवि उँमागि उपरैनको । सूर सुनि सून उठि नवल गिरिधर सेज चलीहै गजगति मनो मदनगढ लैनको ॥ १ ॥ टोडी ॥ रसिक शिरमौर ढोरि लगावत गावत राधा राधा नाम । कुंजभवन बैठे मनमोहन अलिगोहन सोहन बोलत मुख

तेरोई गुणग्राम ॥ श्रवण सुनत प्यारी पुलकित भई प्रफुलित तन मन रोम रोम सुखराशि वाम । सूरदास प्रभु गिरिवर धरको चली मिलन गजराज गामिनी झनक रुनुक वनधाम ॥ २ ॥ ॥ देवगंधारी ॥ चलौ किन मानिनि कुंज कुटीर । तुव विन कुँवर कोटि वनितातज सहत मदनकी पीर ॥ गद्गद सुर पुलकित विरहानल नैन विलोकत नीर । क्वासि क्वासि वृषभानु नंदिनी विल पत विपिन अधीर॥बंसी विशिख माल व्यालावलि पंचानन पिक कीर ।मलयज गरल हुतासन मारुत शाखामृग रिपुचीर॥हियमें हराषि प्रेम अति आतुर चतुरचलहुपियतीर॥सुनि भयभीतवज्रके पिंजर सूर सुरति रणधीर ॥ ३ ॥ कल्याण॥नवेली सुनिनवल पियनवनिकुंज हैरी॥भावते लालसोंभावती केलिकरि भावती भावतो रसिक रसलैरी । त्यागि अभिमान गुणरूप सौभाग रति मानिनी मनुहारि मैन सुख दैरी ॥ एक ब्रजवास आवत जात देखियत आपनी जाति पति पेडको घेरी । लहित उदार हित पीर करि कीर माति धीर तनु मेटि मन्मथको भैरी । कलाचौंसठि संगीत शृंगार रस कोक विधि बंद प्रगट भेदसे सैरी । सुरति सागर साज श्रवत जस रसलाज अंग अनुकूल रतिराज रण जेरी ॥ कामशर कनय कुच प्रगट भृंगी चिह्न दागि मेलै कंत आपनो कैरी ॥ जासु आलाप सुनि दारुसे पल्लवै पुहुप मधुधार करभार भरनैरी ।मुरलिका गान तुवनाम मधुराधुनी सुधा गुण सिंधु नहिं गनतनिज मेरी । हीन जलमीन ज्यों दरश विन कमल लै प्राण प्रीतम नहीं धीरज धरै री॥प्रीतिकी रीति गति होति हैरी हरषि निरखि रति करि चिबुक अशनि ढैरी॥अधर मधुलोभ पंथान चितवत चकित कमल गुह्लासदल तल रचैरी ॥ अरुण शीतल मृदुपातदल सरि करत सेज चढि दल मही चरण के बेरी । तुव कामकेलि कमनीय कामिनि बृंद चंद चकोर चातक स्वाति तैरी ॥ सूर सुनि श्रवणतजि भवन करि गवन मन रवन तनु तवहि कहँ सगति गैरी ॥ ४ ॥ कान्हरो ॥ मनो गिरिवरते आवति गंगा । राजति अति रमणीक राधिका यहि विधि अधिक अनू पम अंगा ॥ गौर गात दुति विमल वारि विधि कटि तट त्रिवली तरल तरंगा । रोम राजि मनो यमुन मिली अध भवँर परत मानो भुवभंगा ॥ भुजवल पुलिन पास मिलि वैठे चारुचक्वै उरुज उतंगा । मनो मुख मृदुल पाणि पंकरुह गुरुगति मनहु मराल विहंगा ॥ मणि गण भूषण रुचिर तीरवर मध्यधार मोतिन मै मंगा । सूरदास मनो चली सुरसरी श्रीगोपाल सागर सुख संगा ॥ ॥ ५ ॥ सूही ॥ नाहिंन नैन लगे निशि यहि डर । जबते जाइ कह्यो हँसि हरिसों समर सोच उनके जिय धर धर ॥ भौंह कमान तिलक भलुकाकरि रुचि सुदेश श्रीमंत सुरँग सर । चलय ताटंक कच नख नेजा दामिनि से चमकत रद असि वर । गज उरोज वरवाजि विलोचन बंकट विशद विसाल मनोहर ॥ लाल ढाल अंचल चंचल गति चमर चिकुर राजत ता ऊपर । अंग अंग सज सुभट सहायक बने विविध भूषण बानेवर ॥ कामिनि आजुहि आनि रहैगी काम कटक लै कुंज झंडातर । चरन रुनित नूपुर रणतूरा सुनत श्रवण कांपहि गे थर थर ॥ तव जानवी किसोर जी र रुपि रहौ जीति करि खेत सबै पर । ऐंचि करौ जो कहौ किसोरी वै जो भीत ह्वै रहे बैठि घर ॥ यहै मतो सुख सुख जोरहौ तही करहु पार लै पकरि पियहि कर । सहचारि चतुरातुर लै आई बाँह बोलदैकरि कहत वह छर । रोष सुरत नन मिली अंकम भरि लैलटकी दै दंत पियाधर ॥ जुरत सुरत संग्राम मच्यो छवि छूटि छूटि कच टूटि हार लर । अति सनेह दुहुँ विसरि देह भिरि मैन मल्ल मुरझाई गिरिधर॥विविध विलास कोश वश राधा नारिनंदनंदन वर । निगमन नेति कह्यो निर्गुण सों कह गुणाधि वरणिहै सूर नर ॥ ६ ॥ टोडी ॥ फूलनको महल

फूलनकी सेज्या फूले कुंजविहारी फूली राधाप्यारी। फूले वै दंपति नवल मगन फूले फूले करैं केलि न्यारी न्यारी॥ फूली लता वेलि विविध सुमन गण फूले आनन दोउहैं सुखकारी। सूरदास प्रभु प्यारी पर वारत फूले फूल चंपकवेलि निवारी॥ ७॥धनाश्री॥ आजु रंग फूले कुँवर कन्हाई। कबहुँक अधर दशन भरि खंडित चाखत सुधा मिठाई। कबहुँक कुचकर परसि कठिनअति तहां वदन परसावत। मुख निरखति सकुचति सुकुमारी मनहीमन अतिभावत॥ तव प्यारी मुख गहि कर टारति नैक लाज नहिं आवत। सूरदास प्रभु कामशिरोमणि कोककला देखरावत॥ ॥ ८॥ रागविहागरो॥ देखे सात कमल इकठौर। तिनको अति आदर देवेको धाय मिले द्वै और॥ मिलत मिले फिर चलत न विछुरत अवलोकत यह चाल। न्यारे भए विराजतहैं सब अपने सहज सनाल॥ हरि तम श्याम निशा निशनायक प्रगटहोत हँसिवोले। चिबुक उठाय कह्यो अव देखो अजहुँ रहति अनबोले॥ इतनी जतन किए नँदनंदन तव वह निठुर मनाई। भरिकै अंक सूरके स्वामी पर्यंकपरि ह्वां आई॥ ९॥ केदारो॥ पियको भावति राधा नारि। उलटि चुंवन देति रसिकन सकुच दीन्हींडारि॥ परस्पर दोउ भरे श्रमजल फूँकि फूक झुरात। मनो बूझि अनंग ज्वाला प्रगट करतलजात॥ वहुरि उठे सँभारि भट ज्यों अंग अनँग सँभारि। सूरप्रभु वन धाम विहरत वने दोउ वरनारि॥ १०॥ रामकली॥ विहरत वन दोउ मन इक करे। एक भाव इक भए लपटिकै उर उर जोरि धरे॥ मनोसुभट रणएक संग जुरि करिवर नहीं डरे। अधर दशन छत नख छत उर पर घायन फरहि परे॥ यह सुख यह उपमा पटतरको रति संग्राम लरे। सूरसखी निरखत अंतर भई रति पति काजसरे॥११॥ आजु अति शोभित हो घनश्याम। मानहुँ हैं जीते नँदनंदन मनसिज सों संग्राम॥ मुकुलित कच न समात मुकुट में रोष अरुण दोउ नैन। श्रम सूचत मानो आलस गति बोलत वनत न वैन॥ नखछत शोणित प्रस्वेद गातते चंदन गयो कछु छूटि। मदन सुभट केसर सुदेश मनु लगे कवच पट फूटि॥ दशन अंक पर प्रगट पीक मनो सन्मुख सहे प्रहार। सूरदास प्रभु परमसूर मैं जाने नंदकुमार॥ १२॥ कल्याण॥ सकुचि मन परस्पर वसन लीन्हे। प्यारी पिया निपुन कोकगुन कला में उनि धनाहिं कंत अबल कीन्हे॥ स्वेदकन गंड मंडलनि नाशानि तट पिय निरखि पीत पट पोंछि डार्यो। निरखि प्यारी पोंछि वै सही पियवदन कछु सकुच कछु हरषि कै निहार्यो॥ नागरी डरन पिय पीत पट उर धरे वहुरि जिनि आपनी छाँह देषै। सूर प्रभु स्वामिनी अंग छवि दामिनी झलक प्रतिबिंब परमान भेषै॥ १३॥ रामकली॥ सँग राजति वृषभानुकुमारी। कुंज सदन कुसुमनि सेज्यापर दंपति सोभा भारी॥ आलस भरे मगन रस दोऊ अंग अंग प्रति जोहत। मनहुँ गौर श्यामल शशि उत्तम वैठे सन्मुख सोहत॥ कुंजभवन राधा मनमोहन चहूं पास व्रजनारी। सूर रही लोचन इकटक करि डारति तन मन वारी॥ १४॥ नट॥ इकटक रही नारि निहार। कुंज घर श्रीश्याम श्यामा वैठे करत विहार॥ नैन सैन कटाक्ष सों मिलि करत रंग विलास। नहीं सोभा पार पावति वचन मुख सुख हास॥ तरुनि श्रीवृषभानुतनया तरुन नंदकुमार। सूर सो क्यों वरणि गावै रूप रस सुखसार॥ १५॥ धनाश्री॥ चितै राधा रति नागर ओर। नैन वदन छवि यों उपजत मनो शशि अनुराग चकोर॥ सार सरस अचवनको मानो तृषित मधुप युग जोर। पान करत कहुँ तृप्ति न मानत पलक न देत अकोर॥लिये मनोरथ मानि परस्पर जानि गई भयो भोर। सूरश्याम श्यामा आपुसमें करत रहत चितचोर॥१६॥ विलावल॥

देखो सोभासिंधु समाति । श्यामा श्याम सकल निशिरस वश जागे होत प्रभात ॥ लै पाहन सुत कर सन्मुखदै निरखि निरखि मुसुक्यात । अचरज सुभग वेद जल जातक कनक नील मणि गात ॥ उदित जराउ हार पंचति अरविसासि किरनि तहां सेंदुरात । चंचल खग वसु असुकंजदल सोभा वराणि नजात॥ चारि कीर पर पारस विद्रुम आनि अलीगण खात। सुखकी राशि युगल मुख ऊपर सूरदास वलिजात ॥१७॥ रामकली ॥ देख सखी पंच कमल द्वै शंभु । एक कमल ब्रज ऊपर राजत निरखत नैन अचंभु ॥ एक कमल प्यारी कर लीन्हें कमल सुकोमल अंग । युगल कमल सत कमल विचारत प्रीति न कबहूँ भंग ॥ पट जु कमल मुख सन्मुख चितवत बहुविधि रंगत रंग । तिनमें तीनि सोमवंशी वश तीनि शाप शुक अंग॥जेइ कमल सनकादिक दुर्लभ जिनहीं निकसी गंग । तेई कमल सूर नित चितवत निपट निरंतर संग ॥ १८ ॥ नट ॥ देख सखि चारि चंद्र इकजोर । निरखति बैठि नितंबिनि पिय सँग सार सुताकी ओर ॥ द्वै शशि श्याम नवल घन सुंदर द्वै कीन्हें विधि गोर । तिनके मध्य चारि शुक राजत द्वै फल आठ चकोर ॥ शशि सुसंग परवाल कुंद कलि अरुझि रह्यो मनमोर । सूरदास प्रभु अति रतिनागर वलि वलि युगल किसोर ॥ १९ ॥ नट ॥ देखरी प्रगट द्वादशमीन । पट इंदु द्वादशतरणि सोभित विमल उडुगन तीन ॥ षटअष्ट अंबुज कीरषटमुख कोकिला सुर एक । दश दोइ विद्रुम दामिनी षट तीनि व्याल विशेक ॥ त्रिवलि षट श्रीफल विराजत परस्पर वर नारि । व्रज कुँअरि गिरिधर कुँवर पर सूर जन वलिहारि॥२०॥नट॥ दंपति कुंज द्वार खरे । शिथिल अंग मरगजे अंवर अतिही रूप भरे॥ सुरतही सब रैनि वीती कोक पूरण रंग । जलद दामिनि संग सोहत भरे आलस अंग ॥ चकृत ह्वै व्रजनारि निरखत मनो चंद्र चकोर । सूर प्रभु वृषभानुतनया विलसि रतिपति जोर॥२१॥ललित॥ सघन कुंजते उठे भोरही श्यामा श्यामखरे । जलदनवीन मिली मानो दामिनि वरषि निशा उसरे ॥ शिथिल वसन तनु नील पीत दुति आलस युत पहिरे । श्रमजल बूंद कहूं कहुँ उडुगण वदरन वरन करे॥भूषन विविध भांति मडवारी रति रस उमँगि भरे । काजर अधर तमोर नैन रँग अँग अँग झलक परे ॥ प्रेमप्रवाह चली मनो सरिता टूटी माल गरे । सोभा अमित विलोकि सूर प्रभु क्यों सुखजात तरे ॥ २२ ॥ विलावल ॥ राजत दोउ निकुंज खरे । श्यामा नवल किसोर पिय नव रँग अति अनुराग भरे ॥ अति सुकुमारि सुभग चंपक तनु भूषण मृगन अरे । मर्कत कमल शरीर सुभग हारि रति जिय वेपकरे ॥ चंचित चार कमल दल मानो पियके दशन समाति । मुख मयंक मधु पियत करत कासि ललना तऊ न अघाति ॥ लाजत मदन दुराइ मधुन मृदु मुसकानि मन हरिलेत । छूटी अलक भुअंगनि कुचतट पैठी त्रिवलि निकेत ॥ रिस रुचि रंग वरहके मुखलौं आने सोम समेति । प्रेम पियूष पूरि पोंछाति पिय इत उत जान न देति ॥ वदन उघारि निहारि निकट करि पियके आनि धरे । विष संका नख रहत मुदित मनो मनसिज ताप हरे ॥ युगल किसोर चरण रज वंदौं सूरज शरन समाहि । गावत सुनत श्रवण सुखकारी विपदरीत दुरिजाहि ॥ २३ ॥ नट ॥ जो सुख श्याम प्रिया सँग कीन्हों । सो युवतिन अपनोंहि करि लीन्हों ॥ दुविधा हृदय कछू नहिं राख्यो । अति आनंद वचन मुख भाख्यो ॥ इहै कहति तब की अब नीके । सकुचि हँसी नागरि सँग पीके । नैनकोर पिय हृदय निहारचो । उन पहिलेहि पीतांवर धारचो ॥ सूरदास इह लीला गावै । हरिपद शरन अक्षै फल पावै॥२४॥ नट ॥ धनि व्रजसुंदरी धनि श्याम । धन्य धन्य वृषभानुतनया राधिका जेहि नाम ॥ गेह गेहनि गई तरुनी श्याम गए नँदधाम ।

भवन गई वृषभानुतनया कोक कला सुयाम ॥ करत मनकामना पूरण एक निशि सब वाम। सूरप्रभु जा सदन जात न सोइ करत तनु ताम ॥२५॥ अथ खंडिता समय ॥ बिलावल ॥ नाना रँग उप जावत श्याम। कोउ रीझति कोउ खीझति वाम ॥ काहूके निशि वसत बनाई। काहू मुख ह्वै आवत जाई ॥ बहुनायक ह्वै विलसत आप। जाको शिवनहिं पावहिं जाप ॥ ताको ब्रजनारी पति जानैं। कोऊ आदर कोउ अपमानैं ॥ काहूसों कहि आवत सांझ। रहत और नागरि घर मांझ ॥ कबहुँ रैनि सब संग विहात। सुनहु सूर ऐसे नँदतात ॥ २६ ॥ बिलावल ॥ अब युवतिन सों प्रगटे श्याम। अरस परस सबहिन यह जानी हरि लुब्धे सबहिनके धाम ॥ जादिन जाके भवन न आवत सो मन में यह कराति विचार। आजु गए और हि काहूके रिसपावति कहि बडे लवार ॥ यह लीला हरिके मनभावति खंडित वचन कहत सुख होत। साँझ बोलदै जात सूर प्रभु ताके आवत होत उदोत ॥ २७ ॥ रामकली ॥ ठाढे नंद द्वार गोपाल। बोलि लीन्हें देखि ललिता सैनदै ततकाल ॥ हँसत गए हरि गेह ताके कोउ न जानत और। मिली हरिके लाइ उरभरि चापि कुचन कठोर ॥ कह्यो मेरे धाम कबहूं क्यों न आवत श्याम। सूर प्रभु कहि आजु नागरि आइ हैं हम जाम ॥ २८ ॥ बिलावल ॥ ललिता को सुख दै गए श्याम। आज बसैंगे रैनि तुम्हारे प्राण पियारी हौ तुम वाम ॥ यह कहिकै अनतहि पगधारे बहुनायक के भेद अपार। साँझ समय आवन कहि आए सौंह बहुत करि नंदकुमार ॥ वह बैठी मारग हरि जोवति इक इक पल वीतत इक याम। सूरश्याम आवनकी आशा सेज सँवा री व्याकुल काम ॥ २९ ॥ गौरी ॥ सांझहि ते हरि पंथ निहारै। ललिता रुचि करि धाम आपने सुमन सुगंधनि सेज सँवारै ॥ कबहुँक होत वार ने ठाढी कबहुँक गनति गगनके तारे। कबहुँक आइ गली मग जोवति अजहुँ न आए श्याम पियारे ॥ वै बहुनायक अनत लुभाने और वामके धाम सिधारे। सूरश्याम विनु विलपति वाला तमचुर शब्द जहँ तहां पुकारे ॥ ३० ॥ ललिता तमचुर टेर सुन्यो।वे बहुनायक अनत लोभाने नहिं आए जिय कहा गुन्यो॥विन कारण दै आश गए पिय वार वार तिय शीश धुन्यो। सेज सँवारि पंथ निशि जोवत अस्त आनि भयो चंद पुन्यो। तब बैठी मनमारि आपनो कछु रिस कछु मन सोच परचो। सूरश्याम याते नहिं आए मात पिताको त्रास धरचो ॥ ३१ ॥ जैतश्री ॥ सोचपरचो नागरि मन माहीं। की काहूके अनत लोभाने की पितुमात त्रास मनमाहीं ॥ वे निशि वसे महल शीलाके सुख सब रैनि गँवाई। उठे अकुलाइ भोर भयो जान्यो तब नागरि सुधि आई ॥ सहज चले गोपी सों कहिकै जिय सकुचे अति भारी। सूरश्याम ललिता गृह आए चितै रही मुँहप्यारी ॥ ३२ ॥ ललित॥ प्यारी चितै रही मुख पियको। अंजन अधर कपोलनि वंदन लाग्यो काहू त्रियको ॥ तुरत उठी दर्पण करलीन्हें देखो वदन सुधारो। अपनो मुख उठि प्रात देखिकै तब तुम कहूं सिधारौ ॥ काजर वदन अधर कपोलन सकुचे देखि कन्हाई। सूरश्याम नागरि मुख जोवत वचन कह्यो नहिं जाई ॥ ३३ ॥ शीलाके घरते ललिताके आए ॥ आसावरी ॥ दर्पण लै प्यारी मुख आगे कहति पिया छवि हेरोजू। मेरी सौं हाहा कहि पुनि पुनि उत काहे मुख फेरोजू ॥ सकुचत कहा बोलके साँचे मेरे गृहतौ आएजू ॥ रैनि नहीं तौ अब जु कृपा भई धनि जिनि स्वांग करायोजू॥मेरी कही बिलग जिनि मानो मैं तुव करत बडाईजू। सूरश्याम सन्मुख नहिं चितवत रहे धरणि शिरनाईजू ॥ ३४ ॥ ललित ॥ क्योंमो हन दर्पण नहिं देखत। क्योंधरणीपग नखन करोवत क्यों हमतन नहिं पेखत॥क्यों ठाढे बैठत क्यों

नाहीं कहा परी हम चूक। पीतांबर गहिकह्यो बैठिए रहे कहाह्वै मूक॥ उवरि गयो उरते उपरैना नखछत विन गुणमाल। सूर देखि लटपटी पागपर जावककी छविलाल॥ ३५॥ ईमन॥ ऐसी कहौ रँगीले लाल। जावकसों कहाँ पाग रँगाई रँगरेजिनमिलि है को वाल॥ वंदन रंग कपोलन दीन्हों अधर अरुणभए श्याम रसाल। जिनि तुम्हरे मन इच्छा पुरई धनि धनि पिय धनि धनि वह बाल॥ माला कहाँ मिली विन गुनकी उरछत देखिभई वेहाल। सूरश्याम छवि सबै विराजी इहै देखि मोको जंजाल॥ ३६॥ गुंडमलार॥ काहेते सकुचत पिय दृष्टि नहीं तुम जोरत मोहन रूप विहारी। निकसे समाचार सब सोवत घूमति आँखि तिहारी॥ नैन जगे पल लगे जातहैं योठत तल्प हमारी। विविध कुसुम रचना रचि पचिकै आने हाथ सवाँरी॥ कहत सूर उर तप्यो भोर भयो हम बैठी रखवारी॥ ३७॥ विलावल॥ ज्वाब नहीं पिय आवई क्यों कहाँ ठगाने। मैं तबहीं की वकतिहौं कछु आजु भुलाने॥ हाँ नाहीं नाहिं कहतहो मेरीसों काहे। आए क्यों चकृतभए मोको रिसिदाहे॥ कहाँरहे कासों बन्यो तहाँई पगधारो। सूरश्याम गुणरावरे हिरदै नविसारो॥ ॥ ३८॥ विलावल॥ काहेको कहि गए आइहैं काहे झूठी सौंहैं खाए। ऐसे मैं जाने नहिं तुमको जे गुणकरि तुम प्रगट देखाए॥ भलीकरी दरशनहरि दीन्हें जन्म जन्मके ताप नशाए। तब चितए हरिनेक त्रियातन इतनेहि सब अपराध क्षमाए॥ सूरदास सुंदरी सयानी हँसि लीन्हे पिय अंकम लाए॥ ३९॥ विलावल॥ नैनकोरहरि हेरिकै प्यारी वश कीन्हीं। भावकह्यौ आधीनको ललिता लखिलीन्ही॥ तुरतगयो रिस दूरिह्वै हँसि कंठ लगाए। भलीकरी मनभावते ऐसेहु मैं पाए॥ भवनगई गहिवांहलै निशिजागे जाने। अंग सिथिल निशिश्रम भयो मनहीमन ज्ञाने॥ अंग सुगंध मर्दनाकियो तुरतहि अन्हवाये। अपनेकर अंग पोंछिकै मन साध पुराए॥ चीर अभूषण अंगदै बैठे गिरिधारी। रुचिभोजन पियको दियो सूरज बलिहारी॥ ४०॥ कल्याण॥ कियो मन काम नहिं रही बाकी। प्रिया रिस दूरिकै दियो रसपूरिकै अनंगबलदूरिकै गोपजाकी। नंदसुत लाडिले प्रेमके चांडिले सौंहदै कहतहै नारिआगेतुम परमभावती प्राणहूँ ते खरी सुख नहीं लहत मैं तुमहिं त्यागे॥ तुमहिधन तन तुमहि तुमहि मनही सबै और त्रिय नहीं मो मनहि भावै। सूर प्रभु चतुर वर चतुर नागरिनके चतुरई वचन कहि मन चुरावै॥ ४१॥ भैरव॥ इहै भाव सब युवतिनसों। ऐसे वचन कहत सब आगे भूलि रहति मनमोहनसों। विनदेखे रिसभाव वढावत मिलिआई दै सौंहनि सों। मुख देखत दुख रहत नहीं तनु चितवत मुरि दोउ भौंहनसों॥ और त्रिया अँध चिह्न विराजत रिस मनहीं मन छोहनसों। सूरश्याम सब गोप कुमारी टरति नहीं कहुँ गोहन सों॥ ४२॥ विलावल॥ ललिताको सुख दै चले अपने निजधाम। बीचमिली चंद्रावली उन देखे श्याम॥ मोर मुकुट कछनी कछे नटवर गोपाल। रही वदन तनु हेरिकै अतिहित व्रजबाल॥ गली साँकरी कोउ नहीं आतुर मिलि धाई। कहां कहां पिय रहतहौ हमको विसराई॥ श्याम कह्यो हँसि वाम सों तुम्हरे निशिवास। सूर हृदयकी कल्पना सुनि भई हुलास॥४३॥ आसावरी। श्याम वामको सुख दै बोले रैनि तुम्हारे आऊंगो। मात पिता जिय त्रास धरत हौं तऊ आइ सुख पाऊंगो॥ तुव मिलवेकी साध भुजा भरि उरसों कुच परसाऊंगो। नैन विसाल भाल उर बैठे ते तुव हाथ कहाऊंगो॥ तव तनु परसि काम दुख मेटों जीवन सफल कराऊंगो। सुनहु सूर अधरन रस अँचवो दुहुँ मन तृषा बुझाऊंगो॥ ४४॥ गूजरी॥ सुनि सुनि वचन नारि मुसुकानी। गई सदन अति ह्वै उतावली आनँद सहित लजानी॥ फूली फिरति कहति नहिं काहू मीन मिल्यो

जनु पानी। वारंवार श्याम रति रसकी कही प्रगट करि वानी ॥ वासर कल्प समान न वीतत कैसे हुँ रैनि तुलानी। सूर देखि गति गत पतंगकी अवधि जानि हरपानी ॥ ४५ ॥ कल्याण ॥ राधिका गेह हरि देह वासी। और त्रिय घरन घर तनु प्रकासी॥ब्रह्मपूरण एक द्वितीय नहिं कोऊ। राधिका सवै हरि सवै कोऊ ॥ दीप सों दीप जैसे उजारी। तैसेही ब्रह्म घर घर विहारी ॥ खंडिता वचन हित यह उपाई। कवहुँ कहुँ जात कहुँ नहिं कन्हाई॥जन्मको सफल हरि इहै पावै।नारि रस वचन श्रवणन सुनावै ॥ सूर प्रभु अनतही गमन कीन्हों। तहां नाहिं गए जहां वचन दीन्हों ॥ ४६ ॥ टोडी ॥ श्याम गए सुखमाके धाम। देखत हर्ष भई मनवाम ॥ आतुर मंदिर गए समाइ। प्यारी प्रेम उठी झहराइ ॥ श्याम भामिनी परम उदार। कोककला रस करत विचार ॥ वोलत पिय नहिं आवति पास। गद्गद वानी कहति उदास ॥ धाइ जाइ पति अंकम लाइ।हाहा कहि कहि लेत वलाइ ॥ अति आतुर पतिके गति काम। कहा प्रकृति पाई यह वाम ॥ बांह गहत कीन्हों धन मान। तव हरिकीन्हे एक सयान॥तव प्यारी चरणन शिरधारी। काम व्यथा जान्यो सुकुमारी ॥ अल्प हँसी मुख हेरि लजानी। सूरज प्रभु त्रिय मनकी जानी ॥ ४७ ॥ गुंडमलार ॥ श्याम कर भामिनी मुख सँवारचो। वसन तनु दूरि करि सवल भुज अंकभरि कामरिस वाम परि निदरि धारचो ॥ अधर दशनन भरे कठिन कुच उरलरे परे सुख सेज मन मुरछि दोऊ। मनो कुँभिलाइ रहे मैन से मल्लदोउ कोक परवीन घटि नहीं कोऊ। अंग विह्वल भए नैन नैनन नए लजि रति अंत त्रिय कंत भारी । सूर धनि धन्य सुखमा नारि वश श्याम याम युग भई पतिते नन्यारी ॥ ४८ ॥ विहागरो ॥ चंद्रावली श्याम मग जोवति। कवहुँ सेज करझारि सँवारति कवहुँ मलयरज भोवति ॥ कवहुँ नैन अलसात जानिकै जल लै लै पुनि धोवति । कवहुँ भवन कवहूं आँगन ह्वै ऐसे रैनि विगोवति ॥ कवहुँक विरह जरति अति व्याकुल आकुलता मनमो अति। सूरश्याम वहु रवन रवन पिय यह कहि तव गुण तोमदि ॥ ४९ ॥ ललित ॥ ऐसेहि ऐसेहि रैनि विहानी। चंद्रमलीन चिरैया वोलीं सुनी कागकी वानी ॥ वे लुब्धे अनतहिं काहूके मनकी आश भुलानी।कपटी कुटिल क्रूर कहा जानें श्याम नाम जिय आनी॥कोकिल श्याम श्याम अलि देखो श्याम रंगहे पानी।श्याम जलद अहि श्याम कहावत सूरश्याम सों वानी ॥५०॥ गुंडमलार॥वाम संग श्याम त्रययाम जागे। कोक विद्या निपुण सकल गुण मेप पुन सुरति संग्राम जुरि नहीं भागे॥अंग आलस भरे नैन निद्रा ढरे नेक सेज्यापरे निशावीती। सूर प्रभु नंदसुत चले अकुलाइके गए ता धाम रसकाम जीती ॥ ५१ ॥ विभास ॥ चंद्रावलि धाम श्याम भोर भए आएजू। इत रिस करि रही वाम रैनि जागी चारि याम देख्यो जो द्वार कान्ह ठाढे सुखदायेजू ॥ मंदिरते रही निहारि मनही मन देत गारि ऐसे कपटी कठोर आए निशि वीते।रिस नहिं सकी सँभारि वैठी चढि द्वार नारि ठाढे गिरिधारि निरखि छवि नख शिखहीते ॥ विनु गुनवनी हृदय माल ता विच नख छत रसाल लोचन दोउ दरशिलाल जैसी रिस गाढी। जावक रँग लग्यो भाल वदन भुज पर विसाल पीक पलक अधर झलक वाम प्रीति गाढी॥क्यों आए कौन काज नाना करि अंग साज उलटे आभूपण शृंगार निरखतही जाने । ताहीके जाहु श्याम जाके निशि वसे धाम मेरे गृह कहा काम सूर दास गाने ॥ ५२ ॥ विलावल ॥ तहीं जाहु जहिं रैनि वसेहो। काहेको दाहन हो आए अंग अंग देखति चिह्न जैसेहो ॥ अरगजे अंग मरगजी माला वसन सुगंध भरेसेहो। काजर अधर कपोलन वंदन सोचन अरुन धरेसेहो ॥ पलकनि पीक मुकुर लै देखो एकोनहीं अनैसेहो॰। सूरदास प्रभु

पी ढब लैगई नागरि अंक भरेसेहो ॥ ५३ ॥ सारंग ॥ तहँइ जाहु जहँ रैनि रहे वासि । कैतवकत दामिनि पद प्रगटत आए मारन दुश्मन बानकसि ॥ सिथिल सरोज रोर सुठि सोभित शीशहुते कछु पागरही धासि । जावक रस मनो संवर अरिगण पिया मनाई पदललाट घसि ॥ विन गुणमाल मराल तरनिगति मगन चालपद परत रहत खसि । चंदन चरचित कुच उर उपटित मनु नवघनमें उदित दोउ शशि ॥ सखियन समाचार लिखि पठए तन कागज नखलेखनि रुधिरमसि । सूरदास प्रभु श्रीगोपालहै मानो जागत भई निशा नशि ॥५४॥ ॥ बिलावल ॥ तहँइ जाहु जहां निशा बसेहो । जानतहो पिय चतुर शिरोमणि नागरि जागर रास रसेहो ॥ घूमतहो मनो प्रिया उरगिनी नव विलास श्रमसे जडसेहो । काजर अधरानि प्रगट देखियत हो नागवेलि रँग निपट लसेहो॥श्याम उरस्थल पर रेखा मनहुँ गगन शशि उदित दिसेहो । लटपटी पाग महावरके रँग माननि पग पर शीश घसेहो ॥विगलित वसन मरगजी माला पीठ बलयके चिह्न लसेहो।सूरदास प्रभु प्रिया वचन सुनि नागर नगधर नैक हँसेहो॥५५॥ तहँई जाहु जहँ रैनि हुते । काहे दुराव करत मनमोहन मिटे चिह्न नहिं अंगजुते ॥ विनही गुन उरहार विराजत परम चतुर हियलाइ सुते । विथुरीं अलक अटपटे भूषण काम कुटिल कुच बीच गुते ॥ दशन दाग नखरेखवनीहै भामिनि भवन भले भुगुते । सूर सुदेश अधर मधु फीके लोचन अलस उनीदहुते५६॥तहांई जाहु जहां रैनि गँवाई । काहेको मुँह परसन आए जानति हौं चतुराई॥ वाके गुण मनते नाहिं टारत बोलत नाहीं बैन । याछबिपर मैं तन मन वारों पीक विराजित नैन ॥ भली करी यह दरश दिखायो ताते नैन सिराने । सूर श्याम निशिको सुख लूट्यो हमको मया विहाने॥५७॥सुघराई ॥ आएलाल ललित भेष किए।पीककपोल अधर पर काजर जावक भाल दिए ॥ चंदन खौरि मेटि अब आए कुमकुम रंग हिए । पीतांबर तहां डारि कौनको नीलांबरहि लिए।लालीदै पीरी लै आए देखत पुलकि जिए।सूरदास प्रभु नवल रसीले बोऊ नवल त्रिए।५८॥ ॥ सूही ॥ जागे होजू रावरे पै नैना क्यों नखोलौ । भये त्रियाके वश निशि जागे सरवस भोरभए उठि आए भूले कहा डोलो ॥ चंदन मिटाए तनु अतिही अलसात नागरीकी पीक लागी तो कपोलो । पीतांबर भूलि आए प्यारी जीको पटु ल्याए भोर भए उठे सूरकिए आए दोलो ॥५९॥ ॥ बिलावल ॥ पीतांबर पट कहा भयो । नीलांबर ओढेहो आए अति दुहुँ डहो नयो ॥ तैसोइ अंग वसन रंग तैसोइ कहा कहौं यह सोभा । तैसिय बनी मरगजीकेसोर ता त्रियके मनलोभा ॥ एते पर क्यों बोलत नाहीं कहा खोइसे आए । सूरश्याम यह अब मैं जानी नागरि चित्त चुराए ॥ ६०॥भैरव॥ हाहाहो पिय बात कहौ । आप कछू जिय तरक गहत हो तो तुम मोसों मैं नगहो॥कहा चूक हमको पिय लागै रूसि रहेहो काहेजू । तबहींते वैसेहि हो ठाढे मोतनकौ नहिं चाहेजू॥ अब हमको अपराध क्षमैंगे कृपा करौ मुख बोलोजू।सूरश्याम अब तजो निठुरई गांठि हृदयकी खोलोजू॥ ६१॥ बिलावल ॥ रूखे हो पिय रूखेहो । उत्तरको उत्तर नदेतहौ देखतही न कछूसेहो ॥ वह चितवनि नहोइ नैननकी वचननहूं ते उतहूपेहो । वह मुखकमल विकास नहीं रति सायक शिरहि विदूषेहो ॥ की छुटि गई संपदा करते की ठग ठगे कछूपेहो । मेरेहु जान सूर प्रभु सांचे मदन चोर मिलि मूषेहो ॥ ६२॥ मदनचोर सों जानि मुषायो । अपनी लाली खोइ पीककी लाली पलकनि पायो॥ ह्यांते गए चतुरई लीन्हें सो सब उनहि छपायो। आलस अबल जम्हात अंग ऐंडात गात दरशायो । कंचन खोय कांच लै आये विढतो भलो फवायो । सूर कहूं पर परमन नाहीं जैसे हाल करायो ॥ ६३ ॥ काफी ॥ लाल उनीदे नयना आलस भरि आए । अरुझि काम

की वेलि सों कौने विरमाए ॥ सिथिल पाग दस्तारकी जावक रँग भीने । पाँइपरे अपवश करे तव सरवसदीने ॥ लाली मेरे लालकी सवतन ढीले । लाली ले लालनगए आए मुख पीले ॥ बिन गुन माल हिये लसै पिय प्रीति निसानी । सखी रसाल हमको दई तुम देहु बिरानी ॥ पग डगमग इत को धरौ उतको डगधाए। अभ्यंतर अंतर वसे पिय मोमन भाए॥ उलटि तहां पग धारिए जासों मनमान्यो । छपदकंज तजि वेलिसों लटि प्रेम नजान्यो॥तवहँसि वोले श्यामजी तुमते को प्यारी। तुम विनु कल मोको नहीं अतिही सुखकारी ॥ वचन चतुरई छांडिदेहु कहा पढि आए । सूरश्याम गुणराशि हो नीके प्रगटाए॥६४॥सुघराई॥आए लाल यामिनी जागेसे भोर । नील कलेवर कोमल ऊप र रगडि गए कुच जे कठोर ॥ निशिवसि रहे मानिनीके गृह ह्यां उठि आए भोर। सूरदास प्रभु वचन बनावत अब चोरत मनमोर ॥ ६५ ॥ आए लाल ललित भेष किए। पीक कपोल अधर पर काजर जावक भाल दिए॥ चंदन खौरि मेटि अब आए कुमकुम रंग हिए । पीतांवर कहां डारि कौनको लीला वरहि लिए ॥ लालीदे पियरी लैआए देखत पुलकि जिए। सूरदास प्रभु नवल रसीले वोऊ नवल त्रिये ॥ ६६ ॥ मैं जानी जिय जहँ रति मानी। तुम आएहौ ललना जब चिरिआं चुहचुहा नी ॥ मुखकी बात कहा कहौं ठानी बात नहीं पहिचानी। येते पर अँखियां रससानी अरु पगिया लपटानी ॥ भाल जावक रंग बनानी अधर अंजन प्रगट जानी।विन गुण वनी माल सब अंग उलटे निसानी ॥ सूरदास प्रभु निधानी अंतर गतिकी मैं सब जानी।धनि त्रिय तुमको जो सुखदानी संग जागत रैनि विहानी ॥ ६७ ॥ विभास ॥ मैं जानी पियबात तुह्मारी। भोर भए मेरे गृह आए ऐसे भोरे भारी ॥ ह्यां आए मुख परसम मेरो हृदय टरति नहिं प्यारी। कपट चतुरई दूरि करौजू अपयश लेत रु गारी ॥ कहा सांच मैं खोवत करते झूठे कहा फवावति । सूरश्याम नागर नागरि वह हम तुम्हरे मन आवति ॥ ६८ ॥ काफी ॥ रैनि रझि की बात कहौ। काहेको सकुचत मनमोहन ठाढे क्यों न रहौ ॥ पीतांवर कहा भयो तुम्हारो कीधौं लियेगहो । नीलांवर पहरावन पाई सन्मुख क्योंन चहौ ॥ तव हँसि चले श्याम मंदिर तन कछु जिय लाज गहो। सूरश्याम ह्यांई अव रहिए अति पुनीत तुमहो ॥ ६९ ॥ बिलावल ॥ तुम रीझेकी उनहि रिझा ए। हाहा यह पिय प्रगट सुनाऊं कोटिक सौंह दिवाए ॥ जावक भाल चिह्न में जान्यो हठकरि पांय लगाए। नैनन पीक मया उनि कीन्ही अंजन अधर लगाए ॥ विनु गुन माल मिली कहँ तुम को कंकन पीठि देखावहु । सूरश्याम हमतौ यों जानति तुमहू कहि न सुनावहु ॥ ७० ॥ माधव नीकी विधिसों आए। नखरेखाउर मंडित मानो द्वितिया चंद उगाए ॥ विगलित वसन पाग डोलतिहै केहरि चाल चलाये । सर्वसु आनि जु रहे सूर प्रभु उत मेरे मन भाए ॥ पाउँ धारिए वाम धाम जहँ चारो याम गँवाए ॥७१॥ बिलावल॥ आजु हरि पायेहै मुँह माँग्यो।जवते तुमसों विचारयो मनसिज देसिलवारयो त्यागो ॥ कहुँ जावक कहुँ वने तमोर रँग कहुँ अंग सेंदुर दाग्यो । मानो इन छूटे घायलको जहां तहां शोणित लाग्यो ॥ नखमानो चंद्र वाण साजिकै झझकारत उर आग्यो । सूरदास मानानि रण जीत्यो समर संग हारि रण भाग्यो ॥७२॥ आजु हरि रैनि उनीदे आए ॥ अंजन अधर ललाट महाउर नैन तमोर खवाए । विनु गुनमाल विराजत उर पर चंदन खौरि लगाए। मगन देह शिरपाग लटपटी जावक रंग रँगाए । हृदय सुभग नख रेख विराजत कंकन पीठि वनाए। सूरदास प्रभु इहै अचंभव तीन तिलक कहाँ पाए ॥ ७३ ॥ आजु हरि आल सरंग भरे । कबहुँक बाँह जोरि ऐंडावत बहुत जम्हात खरे ॥ वैठोगे की पांव धारिए देखत नैन

सिराने। सांझ आय इक दरशन दीन्हों की अवहोत विहाने॥ कबके द्वार भए पिय ठाढे भोरे बडे कन्हाई। सूरश्याम ह्वां सुरति करत वह ह्यां तुम झेर लगाई॥ ७४॥ सौंह करनको भोरही तुम मेरे आए। रैनि करत सुख अनतही ताके मन भाए॥अँग अँग भूषण औरसे मांगे कहुँ पाए। देखि थकित यह रूपको लोचन अरुनाए। मानकियो वोहि मानिनी धनि पाइ पराए॥ यह चतुराई कहँ पढी उनहीं समुझाए॥ सूरदास प्रभु सांचिले उपमा कविगाए॥ ७५॥ गौरी॥ तुमको कमल नैन कवि गावत। वदन कमल उपमा यह सांची ता गुनको प्रगटावत॥सुंदर कर कमलनकी सोभा चरण कमल कहवावत। और अंग कहि कहा वखानो इतनेहिको गुण गावत॥ श्याम नाम अद्भुत यह वाणी श्रवण सुनत सुख पावत। सूरदास प्रभु ग्वाल सँगाती जानी जाति जनावत॥ ७६॥ तुम न्याय कहावत कमलनैन। कमल चरण करकमल वदन छवि अरज सुनावत मधुर बैन॥ प्रात प्रगट रति रविहि जनावत हुलसत आवत अंक दैन। निशिदै हार कपाट मदि लवधु मधुपति प्यावत परमचैन॥ मिलेहु मांझ उदास अनत चित वसत सदा जल एक ऐन। सूर कपट फल तबहिं पाइहौ अपनी अरप जब देहै भैन॥ ७७॥ भैरव॥ धीर धरौ फल पावहुगे। अपनेही पियके सुख चांडे कबहूँ तौ वश आवहुगे॥ हमसों कहत औरकी औरै इन बातन मन भावहुगे। कबहुँ राधिका मान करैगी अंतर बिरह जनावहुगे॥ तब चरित्र हमही देखैंगी जैसे नाच नचावहुगे। सूरश्याम अति चतुर कहावत चतुराई विसरावहुगे॥ ७८॥ देवगंधार॥ यह कहि प्यारी भवन गई। रीझे श्याम देखि वा छवि पर रिस मुख सुंदरई॥ द्वारकपाट दियो गाढे कारि कर आपने वनाई। नैक नहीं कहुँ संधि बचाई पौढि रही तब जाई॥ यहि अंतर हरि अंतर्यामी जो कछु करे सुहोई। जहाँ नारि मुख मूंदि पौढि रही तहां संग रहे सोई॥ जो देखे ह्यां संगविराजत चली त्रिया झहराई। एक श्याम आंगनही देखे इक गृह रहे समाई॥ उतको वै अति विनय करतहैं इत अंकम भरिलीनी। सूरश्याम मनहरन कहावहु मनहरिकै वश कीनी॥ ॥ ७९॥ कल्याण॥ तब नागरि रिस भूलि गई। पुलकि अंक अँगिया उर दरकी अंग अनंग जई॥ अंकम भारि पिय प्यारी लीन्ही निशि सुख वासर दीन्हो। मान छँडाइ हुलास बढायो सुफल मनोरथ कीन्हो॥ तब निजधाम श्याम पगधारे तहां सहचरी आई। सूरज प्रभु रसभरी नागरी देखि रही मनलाई॥ ८०॥ आसावरी॥ चंद्रावली हरषसों बैठी तहां सहचरी आईहो। औरै बदन और अँग सोभा देखि रही चखलाईहो॥ कहा आज अति हरषित बैठी कहा लूटिसी पाईहो। क्यों अंग सिथिल मरगजी सारी यहछबि कही नजाईहो॥ मोसों कहा दुराव करतिहै कहा रही शिरनाईहो। मैं जानी तोहिं मिले सूरप्रभु यशुमति कुँवर कन्हाईहो॥ ८१॥ आसावरी॥ चंद्रावली करति चतुराई सुनत वचन मुख मूंदि रही। ज्वाब नहीं कछु देत सखी क्यों हाँ नाहीं कछु बैन कही॥ गुंगे गुरकी दशा भई है पूरण श्याम सोहाग सही। आये श्याम सदन सुखभारी दुखनिवारि आनंद करी। वहै ध्यान हरिके अनुरागी वह लीला चितवते नटरी॥ तब बोली मोसों कछु बूझति कहा कहौं मुख वनै नहीं। सूरश्याम युवती मनमोहन तिनको गुण नहिं परत कही॥ ८२॥ विलावल॥ हाहा कहि चंद्रावलि मोसों हरिके गुणमैंहूं सुनि लेउँ। श्रवणत मग सुनि हृदय प्रकाशो पुनि पुनि उत्तर देउँ॥ की तोहिं मिले तीर यमुनाके की तोहिं मिले भवनही माँझ। कहौं तोहिं मेरे गृह आए मानो अस्त होत रवि साँझ॥ कहूं वामके धाम वसे निशि भोर सदन गए मेरे आई। सूरश्याम जो चरित उपायो कहन चहौं मुख कह्यो न जाई॥ ८३॥ गौरी॥ अबतो कहे बनैगी

माई। कहा श्याम अचरज सो कीन्हों कहत कह्यो नहिं जाई ॥ कैसे लाल अनतते आए कैसे तेरे गेह। कैसे मान कियो क्यों मिटिगए कैसे बढ्यो सनेह ॥ तब गद्गद वाणी मुख प्रगटी सुन सजनी दै कान।सूरज प्रभुके चरित सुनाऊँ जैसे बिसरचो मान॥८४॥ विलावल॥प्रातसमै मेरे मोहन आए कुंचित केश कमल मुख ऊपर हृदय रहो मन अलि कुलछाए ॥ डगमग चाल परत न सूधे पग इहि विधि तौ मेरे मन भाए। कहुँ कहुँ पीक कहूं काजर कहुँ नखरेखा अति बनत सुहाए ॥ मो तन वीच निरखि मुसुकाने छोरि पीतपट अंक दुराए।सूरश्याम माधव बालि अब वालि श्याम जानि हौं पाए॥८५॥ गौरी॥ मैं हरि सों हो मान कियोरी।आवत देखि आन वनितारति द्वार कपाट दियोरी॥ अपनेही कर संकर सारी संधि संधि सियोरी। जो देखों तौ सेज समूराति कांप्यो रिसनि हियोरी। जब झुकि चली भवनते बाहर तब हठि लोट लियोरी। कहा कहौं कछु कहत न आवै हेतु गोविंद वियोरी ॥ बिसरि गई सब रोष हरष मन पुनि फिरि मदन जियोरी। सूरदास प्रभु अति रति नागर छलि मुख अमृत पियोरी ॥ ८६ ॥ विलावल ॥ तवहींते भयो हरष हियोरी। वैसे आइ चरित ए कीन्हे सदन पैठि मन चोरि लियोरी। अंग वाम छवि शेष देखिकै रिस उपजी जियभारी। क्रोध गयो उर आनँद उपज्यो सुख तनु दशा बिसारी ॥ ऐसे चरित कौनको आवैं जे कीने गिरिधारी। सूरश्याम रतिपतिके नायक सब लायक बनवारी ॥ ८७ ॥ भैरव ॥ नँदनंदन सुखदायक हैं। नैन सैनदै हरत नारि मन कामं कामतन दायक हैं ॥ कबहूं रैनि बसत काहूके कबहुँ भोर उठि आवत हैं। सुनहु सूर जेइ जेइ मनभावत तेइ तेइ रँग उपजावत हैं ॥ ८८ ॥ विलावल ॥ अनतहि रैनि रहे कहुँ श्याम। भोर भए आए निज धाम ॥ नागरि सहज रही मनमाहीं। नंदसुवन निशि अनत नजाहीं॥महरसदनकी मेरे गेह।हृदय है त्रिय इहै सनेह ॥आये श्याम रही मुख हेरि।मन मन करन लगी अवसेरि ॥ रतिरस चिह्न नारिके वानि। सूर हँसी राधा पहिचानि ॥ ८९ ॥ रामकली ॥ आज बने पिय रूप अगाध।परउपकाज हेतु तनु धारचो पुरवत सब मन साध॥धर्म नीति यह कहा पढी जू हमहूं बात सुनावहु। कहौ कहां काको सुख दीनों काहेन प्रगट बतावहु ॥ धनि उपकार करत डोलतहौ आज बात यह जानी। सूरश्याम गिरिधर गुण नागर अंग निरखि पहिचानी॥९०॥ गूजरी॥ पिय छवि निरखि हँसति त्रियभारी।कहां महाउर पाग रँगाई यह सोभा इक न्यारी॥अरुननयन अलसात देखियत पलक पीकलपटानो। अधर दशन छत वंदन राजत वंधुकपुर अलिमानो ॥ हृदय रुचिर मोतिनकी माला नखरेखा तेहि तीर।विनु गुनमाल सूरके स्वामी कुंकुम श्यामशरीर॥९१॥ ॥विलावल॥ धन्य आजु यह दरशदियो। धन्य धन्य जासों अनुरागे तव जानी नहि और वियो॥ भले श्याम वह भली भावती भले भली मिल भलीकरी। यह मेरे जिय अतिहि अचंभित तौं विछुरत क्यों एक घरी ॥ जाहु तहीं सुख दीनो मोको वै सुनिकै रिस पावैंगी। सूरश्याम अतिचतुर कहावत बहुरो मनन मिलावैंगी ॥ ९२ ॥ क्यों आये उठि भोर इहां। काहेको इतनो सरमाने रैनिरहे फिरि जाहु तहां ॥ हमको कहा इती गरुआई उनही क्यों न सम्हारोजू। उनआए ह्यांनाहीं जान्यो अजहूं लौं पगधारौजू ॥ हमहूं बोलि वहाँई लीजो डर उनको हमहूं कोहै। सूरश्याम तिनहीं सुख दीजे जो विलसैं सँग तुमकोलै ॥ ९३ ॥ रामकली ॥ उनहीको मन राखे काम। ह्यां तुम आए होजू नाहीं बात सुनतहो नाहीं श्याम ॥ देखो अंग अंग प्रतिसोभा मैंतौ भूलीहौं यहिरूप। धनि पिय बने बनी वेऊ हैं इक इक रूप अनूप ॥सो छवि मोहिं देखावन आए मायाकरी बहुत हरिआजु सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि वह उरसिकनी बन्यो समाजु ॥ ९४ ॥ विलावल ॥ रसिक रसिकई जानिपरी। नैननते अब न्यारे हूजै तबहीते अति रिसानि मरी। तुम जोवन अरु सो नवजोवनि

येते पर सब गुणनि भरी। लाजनहीं मेरे गृह आवत जाहु जाहु करि त्रिय झहरी ॥ अंजन अधर कपोलन वंदन पीक पलक छवि देखिडरी। सूरश्याम रति चिह्न देखावन मेरे आए भले जुहरी ॥ ९५ ॥ धनाश्री ॥ श्याम त्रिया सन्मुखनहिं जोवत। कवहुँ नैनकी कोर निहारत कवहुँ वदन पुनि गोवत ॥ मन मन हँसत त्रसत तनुपरगट सुनत भावतीवात । खंडित वचन सुनत प्यारी के पुलक होत सब गात ॥ यह सुख सूरदास कछु जानै प्रभु अपनेको भाव। श्रीराधा रिस करति निरखि मुख सो छवि पर ललचाव ॥ ९६ ॥ पियको सुख प्यारी नहिं जानै। जोइ आवत सोइ सोइ कहडारत जाहु जाहु तुम गाने। काहेको मोहिं डाहन आए रैनिदेत सुख वाको ॥ भली नवेली नोखी पाई जो जाको सो ताको। चंदन वंदन त्रिय अँग कुमकुम शेप लिए ह्यां आए । सूरश्याम यह तुमहि वड़ाई औरनको सरमाए ॥ ९७ ॥ विलावल औरनको छवि कहा देखावत। तुमहीको भावत मनमोहन हम देखत रिस पावत॥आपुनको भई वड़ी प्रतिष्टा जावक भाल लगाए। याको अरथ नहीं कोउ जानत मारत सवन लजाए।पियनिधरक हम अति सकुचतहैं दर्पणलै मुखदेखो। सूरश्याम क्यों बोलत नाहीं क्यों हम तन नाहिं पेखो ॥९८॥ गौरी॥श्यामहँसे प्यारी मुखहेरो। रिसाहि उठी झहराय कह्यो यह वश कीन्हों मन मेरो॥जाय हँसो पिय ताही आगे मैं रीझी अति भारी। ऐसे हँसि हँसि ताहि रिझावहु देउँ कहा अव गारी॥होत अवार गमन अव कीजे धरणी कहा निहारत। सूरश्याम मनकी मैं जानी ताके गुणहि विचारत ॥ ९९ ॥ देवगंधारी ॥ मैं जानी पिय मनकी बात। धरनी पग नख कहा करोवत अव सीखे ए घात ॥ तुम जानत जिय हमहि सयाने अरु सव लोग अयाने। रैनि वसत कहुँ भोर हमारे आवत नहीं लजाने ॥ यह चतुरई पढ़ी ताहीपै सो गुण हमते न्यारो। धनि धनि सूरदासके स्वामी काहे हम न विसारो ॥ २००० ॥ मैं जाने होंजू ललना तहीं न सिधारिए जहां नयो नेहरा। मुँहकी हल भलई मोहूसों करन आए जिय की जासों ताही सों तुम विन सूनो वाको गेहरा ॥ निशिके सुखकी कहे देत अधर नैना उर नख लागे छवि देहरा। वेगि सँवारे पाँइ धारिए सूरके स्वामी नतर भीजैगो पियरो पट आवतहै पिय मेहरा ॥ १ ॥ मलार ॥ ठाढे रहो आंगनही हो पिय जौलौं मेहन नख शिख भीजो। परन देहु वडी वडी बूँदे तुम चीर उतारि और वस्त्र पहिरो तव गेह देहरी पांव दीजो ॥ कहिए वात रैनिकी सांची ता पछि सोहैं कीजो। सूरश्याम तुमहौ वहु नायक देह सुधारि मोहिं छीजौ ॥ २ ॥ मोंहूसो निठुरई ठानी मोहन प्यारे काहेको आवन कह्यो सांचे। प्रीतिके वचन वाचे विरह अनल आंचे अपने गरजको तुम एक पांइ नाचे ॥ भलेहोजू जाने लाल अरगजे भीने माल केसरि तिलक भाल मैन मंत्र काचे। निशि चिह्न चीन्हे सूरश्याम रति भीने ताहीके सिधारो पिय जाके रंग राचे॥३॥मालकौशिक॥तुम जिनि सकुचो प्यारे लाल मेरे जो त्रिय सों रति मानी ताहीके रहो अव। मैं इतनेहीमें भलो मानौ प्रीतम जो मेरे आंगन पांव धारे आपन जव॥नैन तृप्त भए दरश देखतही श्रवण तृप्त भय वचन सुने तव। सूरदास प्रभु चरण छुए कहति रोम रोम पुलकित अंग भए सव ॥ ४ ॥ कान्हरो ॥ नैन चपलता कहां गँवाई। मोसों कहा दुरावत नागर नागरि रैनि जगाई ॥ ताहीके रँग अरुण भएहैं धनि यह सुंदरताई। मनो अरुण अंवुज पर वैठे मत्त भृंग रस आई ॥ उड़ि न सकत ऐसे मतवारे लागत पलक जभाइ। सुनहु सूर यह अंग माधुरी आलस भरे कन्हाई ॥ ५ ॥ विलावल ॥ नैनकी चंचलता कहा कीन्हे भीने रंग कौनकेहो श्याम हमहूँसों कहत दुरावत । और के वदन देखिवेको नेम लियो ताके पलकनि राखे भार भरे नए आवत ॥ पुहुप गंध लोभ

भँवर उडि न सकत फिरि बैठत जा समीप रतिमानी संगलिए आवत रतिकीरीति गावत। सूरदास प्रभु प्यारे प्यारी रसवश कीन्हे मुखकी हमहि बनावत॥ ६ ॥ कान्हरो ॥ जाके रस रैनि आजु जागे हो लाल जाई। जावक तिलक भाल दीयो है नंदलाल विनु गुन बनी माल कहत अनोखी अरु बातनि बनाई॥ अधर अंजन दाग मिट्योहै पीक पराग और मिटी वंदनकी ललाई। अंग अंग सिथिल भएहो प्रेम सूरके स्वामी मिटि गई चंचलताई ॥ ७॥ रंग भरि आएहौ मेरे ललना बातैं कहतहौ अटपटी। अति अलसात जम्हातहौ प्यारे पिय प्रगट त्रिया प्रताप छूटत नहिंन अंतरकी गटी॥ यह चतुराई अधिकाई कहाँ पाई श्याम वाके प्रेमकी गढि पढेहो पटी। सूरदास प्रभु गिरिधर बहुनायक तन मन नैन चटपटी ॥ ८ ॥ ॥ ईमन ॥ डोलत महल महल इहै टहल हम जानति तुम बहु नाइक पीये। आयेहो सुरति किए ठाठकरख लिये सकसकी धकधकी हिये। छूटे वंदन अरु पागकी बांधनि छुटी लटपटे पेच अट पटे दिये। सूरदास प्रभुहो बहुनायक मेरे पाँव धारे बैठो जू बैठो भली किये॥ ९ ॥ महल महल अब डोलतहौ। इहै कामते धाम बिसारयो बूझे काहि न बोलतहौ॥ बहुनायककी आजु मैं जानी कहा चतुरई तोलतहौ। निशि रस कियो भोर पुनि अटके शिथिल अंग पुनि डोलतहौ॥ तटके चिह्न पाछिले न्यारे धकधकात उर जोलतहौ॥ जाहु चले गुन प्रगट सूर प्रभु कहा चतुरई छोलत हौ॥ १०॥ अंग अंग रँग भरे आएहौ। रंगभरी पाग भाल रँग सोभा रंग रंग नैन पगाएहौ॥ रँग कपोल रँग पलकनि सोभा अधरन श्याम रँगाएहौ। नख छत रंग चारु उर रेखा रति रँग रैनि जगाएहौ॥ कंकन वलय पीठि गड़ि लागे उरपर छाप बनाएहौ। सूरश्याम वा मारग पागे अनु रागे मन भाएहौ॥ ११॥ विलावल॥ बारबार मैं कहतिहौं पिय तहां सिधारो। आएहौ मन हर नको हरि नाम तुम्हारो॥भली बनी छवि आजुकी क्यों लेत जम्हाई। रैनि आज सोए नहीं रतिकाम जगाई॥वह रति तुम रतिनाथहौ हम कैसे भावै।सूरश्यामते बहु गुणी जे तुमहिं रिझावै॥ १२॥ सोरठ॥ सकुचत श्याम कहउ मृदुबानी। किनि देख्यो किनि कही बात यह मो हुजूर कहै आनी॥याते वचन बोलि नहिं आवत रिस पावतहौ भारी। जोरि कहति बातैं तुम आगे खोटी व्रजकी नारी॥तुमहूंते ऐसीको प्यारी सौंह करो जो मानों॥सुनहु सूर जो बूझति मोको मैं काहुन पहि चानों॥ १३॥ विलावल ॥ को पति आइ तुम्हारी सोंहनि। वा तियको अनुराग देखियत प्रगट रावरी भौंहनि॥ तुलसीको कहा नीम प्रगट कियो मोहीते कारि वोहनि।प्रात आइ मनु पोपन लागे आए घालन खोहनि॥ मुँहहींकी हमसों मिलवत जिय बसत जहाँ मनमोहनि। सूर सुबस घर छाँडि हमारो क्यों रति मानत खोहनि॥ १४॥ भैरव॥ विन बोले पिय रहिएजू। नाहीं कही कहे कहा ताको अब ऐसे जिनि दहिएजू॥ मौन रहोतौ कछू गँवावहु इनवातन कछु लहिएजू। सौंह कहा करिहो सुनि पावहिं सन्मुख ह्वै धौं कहिएजू॥ एतेपर कहा वादन लागे कैसे रिस मन सहिएजू। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि रसिकहि सब गुण चहिएजू॥ १५॥ विलावल ॥ आइ गई ब्रजनारी तहाँ। सौंह करत पिय प्यारी आगे आनँद विरह महा॥ प्यारी हँसि देखी सखियनको अंतर रिसहै भारी। नैन सैन दै अंग देखावति पिय सोभा अधिकारी॥ श्याम रहे मुख मूंदि सकुचिके युवति परस्पर हेरैं। सूरदास प्रभु अँग अनूपछवि कहँ पायो केहिकेरैं॥१६॥ तब नागरी कहति सखियन सों एतेपर क्यों सौंह करैं। दरशन प्रात देत है हमको निशि औरन के चित्त हरैं॥ तुमहीं देखि लेहु अँगवानक एतेपर क्यों सही परै। कृपाकरैं अब तहीं सिधारैं मो

आगे तें अब जुटरै ॥ यह छबि देखि सनाथ भई मैं अब ताहीपर जाइ ढरैं । सूरश्याम रिस देखि चले डरि कहो सखी अब आन फिरैं॥१७॥ विहागरो॥ श्याम गए त्रिय मान कियो । देखो मोहिं दोष तुम देती उन ऐसे मन चोरिलियो ॥ जाहु सदन तुमहूं सब अपने मैं बैठी हौं धाम । जानदेहु अब ह्यां जनि आवै ऐसेन को कहा काम ॥ अनतहि बसत अनतही डोलत आवत किरिन प्रकाश । सुनहु सूर पुनितौ कहि आवै तनगि गए तापास ॥ १८ ॥ अथ राधाजूको मान ॥ बिलावल ॥ यह कहि कै त्रिय धाम गई । रिसनिभरी नख शिख लौं प्यारी जोवन गर्व मई ॥ सखी चली गृह देखि दशा यह हठ करि बैठी जाइ । बोलत नहीं मानकरि हरिसों हरि अंतर रहे आइ ॥ यहि अंतर युवती सबआई जहां श्याम घरद्वारे । प्रिया मान करि बैठि रही है रिस करि क्रोध तुम्हारे ॥ तुम आवत अतिही झहरानी कहा करी चतुराई।सुनत सूर ए बात चकित पिय अतिहि गए मुरझाई॥ ॥१९॥ विहागरो॥बहुरि नागरी मान कियो । लोचन भरि भरि ढारि दिए दोउ अतितनु विरह हियो ॥ देखतही देखत भए व्याकुल त्रिय कारण अकुलाने । वै गुन करत होत अब काचे कहियत परम सयाने ॥ यह सुनिकै दूती हरि पठई देखि जाय अनुमान। सूरश्याम यह कहतहि पठई तुरत तजहि जेहि मान ॥ २० ॥ केदारो ॥ दूती दई श्याम पठाइ । और मुख कछु बातन आवै तहां बैठी जाइ ॥ प्रिया मन परवाह नाहीं कोटि आवै जाहिं । सौंति शाल सलाइ बैठी डुलति इत उत नाहिं ॥ भीति बिन कह चित्र रेखै रही दूती हेरि। सूरप्रभु आतुर पठाई करत मन अवसेरि ॥ २१ ॥ कान्हरो ॥ दूती मन अवसेर करै । श्याम मनावन मोहिं पठाई यह कतहूं चितवै न टरै ॥ तब कहि उठी मान अति कीन्हो बहुत करी हरि कहौ करौ । ऐसे बिनवै नहीं जाति हैं अब कबहूं जनि उनहिं ठरौ ॥ मैं आवति यमुनातट ते ब्रज सखी एक यह बात कही । सुनहु सूर मैं रहिन सकी गृह कहा श्यामकी प्रकृति सही ॥२२॥ विहागरो ॥ अब द्वारेते टरत न श्याम। अब घर घर की सौंह करत हैं भूलिकरौ नहिं ऐसे काम ॥ अब तू मान तजै जिनि उनसों इहै कहन आई तेरे धाम । अब समुझी औरौं समुझ्यो वै हम जब कहैं करैं तब ताम ॥ अब मोको यह जानि परी है काहूके न वसे कहुँ याम । सूरदास दूती की वाणी सुनति धरति मनही मन वाम ॥२३॥ सूही ॥ जब दूती यह वचन कह्यो । तब जाने हरि द्वारे ठाढे उर उमँग्यो रिस नहीं रह्यो ॥ काहेको हरिद्वार खरेहैं किन राखे कहि जीभगरे । मौन गहैं मैंही कहि आवौं तू काहेको रिसनि जरे ॥ चतुर दूतिका जानिलई जिय अब बोली गयो मान सबै । सूरश्यामपै आतुर आई कहत आनकी आन फबै॥२४॥ केदारो ॥ काहि मनाऊं श्यामलाल बाल जोरैं नहिं डीठि। मुखहूंजो बोलै तौ मनहीकी लहिये ऐसी तिहारी अहीठि ॥ अपनीसी बहुत कही सुनि सुनि उन सबै सही बारू कीबूंद ताको कहाकरै बसीठि । सूरदासके पिय प्यारी आपुहीं जाइ मनाय लीजै जैसी बयारि बहै तैसी ओढिए जू पीठि ॥ २५ ॥ ललन तुम्हारी प्यारी आजु मनायो नमानति। बूझि न परति जानि का बैठी कियोजु इत रिस तुमहीलै कोटि अवगुण गनाति॥भरि भरि अँखियन नीर लेति पैढा रति नाहीं अतिरिस कँपति अधर फरकि करि भ्रुकुटी तानति । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि आपुन चलिएतौ भली बाँनाति ॥२६॥ पूरवी ॥ हौं कैसेकै ल्याऊँ जो मरम पाऊँ श्याम वाकी मान मानो गढ वै भयो । तनु कंचन गिरि प्रगट कियो तामें बसन कोटि रच्यो अंचल ड्योढी ओट दियो॥ वचन पौरिआबोलनखोलै मुख पौरि मूंदि रह्यो ॥ मोहन भौंह कमान नैना रिसके बान ताते जाइ न निकट गयो ॥ श्याम दाम दण्ड भेद सबै मैं करि देख्यो सूरदास प्रभु चतुर कहावत

आपुन चलिए जो तुमहूं पै जाय लयो ॥ २७ ॥ नट ॥ विहरत मानसर सकुमारि । कैसेहूँ निकसत नहीं हो रही करि मनुहारि ॥ मौन पारि अपार रचि अवगाह अंश जुवारि । मगन ह्वै वै डरत नाहीं थकित प्रगट पुकारि ॥ सूरश्याम सरोज लोचन दुलन जन जलचारि । ग्राह ग्राहक प्राण चाहक करत रति तहाँ डर डारि ॥ चिकुर सइवर निकरि अरुझति सकति नाहिं निरुवारि । नील अंचल पत्र पद्मिनि उरज जलज निहारि ॥ रच्योरचि रुचि मान मानिनि मनमराल मुरारि । सूर आपुन आनिए गहि बाँह नारि निकारि ॥२८॥ विहागरो ॥ यह सुनि श्याम विरह भरे । कहुँ मुकुट कहुँ कटि पीतांवर मुरछि धरणि परे ॥ युवति भरि अंकवारि लीन्हों है कहा गिरिधारि । आपुही चलि बांह गहिए अंक लीजे नारि ॥ अतिहि व्याकुल होत काहे धरो धीरज श्याम । सूर प्रभु तुम वड़े नागर विवस कीन्हे काम ॥ २९ ॥ रामकली ॥ श्यामहि धीरज दै पुनि आई । वाणी इहै प्रकाशत मुख में व्याकुल वडे कन्हाई ॥ वारंवार नैन दोउ ढारत परे मदन जंजाल । धरणि रहे मुरझाइ विलोके कहा कहौं वेहाल ॥ बैठी आइ अनमनी ह्वैकै वारवार पछितानी । सूरश्याम मिलिकै सुख देहि न जो तुम वड़ी सयानी ॥ ३० ॥ तुही प्रिया भावती नाहिन आन । निशि दिन मन मन करत मनोहर रसवश केलि निदान ॥ ध्यान विलास दरश संभ्रम मिलि मानत मानिनि मान । अनुनायन करत वि वस बोलतहैं दैपरिरंभन दान ॥ प्रथम समागम ते नानाविधि चरित तिहारे गान । सूरश्याम कह वर अंतर सुनि सुयश आपने कान ॥ ३१ ॥ सारंग ॥ श्याम तू अति श्यामहि भावै । वैठत उठत चलत गउचारत तेरिय लीला गावै । पीते पीत वसन भूषण सजि पीत धात अँगलावै । चंद्रानन सुनि मोरचंद्रिका माथे मुकुट वनावै ॥ अति अनुराग सैन संभ्रम मिलि संग परमसुख पावै । विछु रत तोहिं क्वासि राधा कहि कुंज कुंज प्रति धावै ॥ तेरो चित्र लिखै अरु निरखै वासर विरह गँवावै । सूरदास रसरसी रसिकसों अंतर क्योंकरि आवै ॥ ३२ ॥ विहागरो ॥ मन मन पछितायो रहि जैहै। सुनि सुंदरि यह समो गएते पुनि न शूल सहिजैहै ॥ मानहु मीन मजीठ प्रेम रँग तैसेही गहि जैहै । काम हर्ष हरैरे हरि अंमर देखतही वहि जैहै ॥ इते भेदकी वात सखीरी कत कोऊ काहि जैहै । भरत भवन खनि कूप सूर त्यों मदन अगिनि वहि दहिजैहै ॥ ३३ ॥ केदारो ॥ तेई नैन सुहावनेहो नैक नभावत न्यारेरी । पलक वोट प्राण जाते तेरेरी ध्यान चकोर चंदा मेरे नैन चित वनि पर चेरेरी ॥ कमल कुरंगजु मधुप उपमा नहिं आवै चंचल रहत चितेरेरी । सूरदास प्रभुकी तुहि जीवनि कतहि करत त्रिय झेरेरी ॥ ३४ ॥ आसावरी ॥ वनत नहीं राधे मानु किएं । नंदलाल आरतेकै पठई सौंह करतिहो शीश छुए ॥ जाके पद कमलाकर लीने मन वच क्रम चित उन्हैं दिये । ता प्रभुकी पठईहों आई तू जु गर्वकी मोटलिए ॥ हरि मुख कमल सच्यो रस सजनी अति आनँद पीयूष पिये । सूरदास सकल सुख हरि सँग कृपा विमुख कै काल जिये ॥ ३५ ॥ सारंग ॥ जव जव सुरति करत तव तव डव डवाइ दोउ लोचन उमँगि भरत ॥ जैसे मीन कमल दलको चले अधिक अरत । पलक कपाट नहोत तवहींते निकसि परत । अंसु परत ढरि ढरि उर ऊपर मुक्ता मनहुँ झरत । सहजगिरा बोलत न वनत हित हेरि हरत । राधा नैन चकोर विना मुख मानहु चंद्र जरत । सूरश्याम तुम्हरे दरशन विन नाहिंन धीर धरत ॥ ३६ ॥ सारंग ॥ चिते चलि ठुठुकि रहत । तव पद चिह्न परसि रस वश भए आधे वचन कहत ॥ किसलय कुसुम पराग अंवपै फेन अहत । कंटक जनु भू कठिन जानियत कष्ट लहत ॥

कमल कोश कोमल विभाग अनुराग वहत। सूरदास सुंदर अति शीतल मृदु वे उन सहत ॥३७॥ हरि तोहिं वारंवार सम्हारे। कहि कहि नाम सकल युवतिनके कहूं नहीं रुचि जेहि उर धारे॥ कबहुँक आँखि मूँदिकरि चाहत चित धरि गैरति हारे। तव प्रसिद्ध लीला वन विहरत अव नहिं तुमहि विसारे॥ जो जाको जैसो करि जानै सो तैसे हित मानै। उलटी रीति तुम्हारी सुनिकै सब अचरज करि जानै। क्योंपतियाँ पठवै नहिं उनको वाँचि समुझि सुख पावै॥ सूरश्याम हैं कुंजधाम में अनत नमन विरमावै॥ ३८ ॥ राधे हरि तेरो नाम विचारै। तुम्हरेइ गुण ग्रंथित करि माला रसना करसों टारै॥ लोचन मूँदि ध्यान धरि हठ करि नेक न पलक उघारै। अंग अंग प्रति रूप माधुरी उरते नहीं विसारै॥ ऐसो नेम तुम्हारो पियकै कह जिय निठुर तिहारे। सूरश्याम मनकाम पुरावहु उठि चलि कहे हमारे॥ ३९ ॥ विलावल ॥ चल राधे हरि बोलीरी। उठि चालि वेगि गहरकत लावति वचन श्यामकी डोलीरी॥ तनु जोवन ऐसे चलि जैहै जनु फागुनकी होरी। भीजि विनशि जाई क्षण भीतर ज्यों कागज की चोलीरी॥ तोपर कृपा भई मोहनकी छांड़ि सबै चो छोलीरी। सूरदास स्वामी मिलिवेको ताते तू निमोंलीरी॥ ४०॥ केदारो॥ जाके दरशनको जग तरसत ताहि दरश नैक देरी। जाकी मुरलीकी ध्वनि सुर मुनि मोहे तातन नैक चितैरी॥ शिव विरंचि जाको पार न पावत सो तो तेरे चरणन परसतुहैरी। सूरदास वश तीनि लोक जाके हैं सोतो तेरे वश माईरी तू सुख ध्वनि सुनाइ मोहिं लैरी ॥४१॥ रागभूपाली॥ तुव कोहैरी कौन पठाई तेरीको मानै। तूजु कहति श्याम कौनसे देखे न सुने को पहिचानै॥ और कहति कहि नेम लियो ह्यां को वैसी वे जानै। सूरदास प्रभु रसिक वडेतोको पठई अति स्यानै॥ ॥ ४२ ॥ सारंग ॥ अति हठ नकीजैरी सुनि ग्वारि। हौं जु कहति तू सुन याते शठ सरै नएको द्वारि॥ एक समय मोतिनके धोखे हंस चुनतहै ज्वारि। कीजै कहा काम अपनेको जीति मानिए हारि॥ हौं जो कहति हौं मान सखीरी तनको काज सँवारि। कामी कान्ह कुँअरके ऊपर सरवस दीजै वारि॥ यह जोवन वर्षाकी नदी ज्यों वोरति कतहि करारि। सूरदास प्रभु अंत मिलहुगी ए वीते दिन चारि॥ ४३ ॥ रामकली ॥ कहा तुम इतनेहिको गर्वानी। जोवन रूप दिवश दशहीको ज्यों अँगुरीको पानी॥ करि कछु ज्ञान अभिमान जानदै है अव कौन मति ठानी। तन धन जानि याम युग छाया भूलति कहा अमानी॥ नवसै नदी चलत मर्यादा सूधी सिंधु समानी। सूर इतर ऊषरके वरषे थोरेहि जल इतरानी॥४४॥ गूरिया॥ तू चलि प्यारीरी एतो हठ छांडि मानीरी। परम विचित्र गुण रूप आगरी अतिहि चतुर त्रिय भारीरी॥ मदन मोहन तन मदन दहतहै तेरी उनकी पीर न्यारी। सूरदास प्रभु विरह विकल हैं नैक न निरखि निहारीरी॥४५॥ विहागरो॥ वादि वकति काहेको तू कत आई मेरे घर। वे अति चतुर कहा कहिए जिनि तोसी मूरख लैन पठाई तनु वेधति वचनन शर उतकी इत इतकी उत मिलवति समुझति नाहिन प्रीति रीतिकोही तू कोहै गिरिवर धर॥ सूरदास प्रभु आनि मिलैंगे छुहैं पग अपने कर ॥४६॥ ज्यों ज्यों मैं निहोरे करौं त्यों त्यों यों वोलति हैरी अनोखी रूसनहारी वहियाँ गहत सतराति कौनपर मगधरी उँगरी कौन पै होत पीरी कारी॥ कौन करत मान तोसी और न त्रिय आन हठ दूरि करि धरि मेरे कहे आरी। सूरदास प्रभु तेरो पथ जोवत तोहिं तोहिं रट लागी मदन दहत तनुभारी ॥ ४७ ॥ मलार ॥ तऊतो गँवारि अहीरि तोसों कछु नँदनंदन हँसि कह्यो इतनेहीको तू कबकी अन उत्तर वोलति कह्यो नहीं न मानति हीरी। श्यामसुंदर हँसि हँसि देत सुनि सुनि करत कानि इक

टकहि ग्वारिनि जुरहीरी कहा कहौं हरिसों अवतोसीको मुँहलगाइ वारि फेरि डारौं तोहिं पियके एक रोम परहीरी । सूरदास प्रभुको कहा कहि वरणौं एती कवहूं काहूकी न सहीरी ॥ ४८ ॥ ॥ नट ॥ एकतौ लालन लाडनि लडाइ दूजे यौवन वावरी । उनके गरव जिनि भूलि रहैरी हमसों करि लीन्हे सुख अनेक दिन दिन दिन चारि होत अधिक चावरी ॥ मेरो कह्यो तू मानिरी माई सव त्रियानको इहै सुभावरी । मैं जु कहति करि सूरश्याम सों हिलि मिलि रहिए उठत वैसको इ है दाँवरी ॥ ४९ ॥ कान्हरो ॥ रहिरी मानिनि मान नकीजे । यह जोवन अँजरीको जलहै ज्यों गोपाल माँगें त्यों दीजे ॥ छिनु छिनु घटाति वढाति नहिं रजनी ज्यों ज्यों कलाचंद्रकी छीजे । पूरव पुण्य सुकृत फल तेरो काहेन रूप नैन भरि पीजै ॥ सौंह करत तेरे पाँइनकी ऐसे जिय नि दशौ दिन जीजै । सूर सुजीवनि सुफल जगतको वैरी वांधि विवस करि लीजै ॥ ५० ॥ सुन प्यारी राधिका सुजान । कहिधौं कौन काज सरिहैरी यहि झूठे अभिमान ॥ जिनके चरण रमा नित लोलित सव गुण रूपनिधान । तिनके मुखके वचन मनोहर सो तू करति नकान ॥ परम चतुर सुंदर सुखकारी तोसी त्रिया नआन । कीजै कहा कृपणकी संपति विना भोग विनदान॥ऐसी व्यथा होत निशि हरिको जिनि हठ करौं विहान । नाहिन कढत औरके काढे सूर मदनके वान ॥ ॥ ५१ ॥ रामकली ॥ आज हाठि वैठी मानकिए । महाक्रोध रस अंशतपत मिलि मनु विष विषम पिये ॥ अधमुख रहति विरह व्याकुल सिख मूरि मंत्र नहिं मानै । मूक नतजै सुनि जाति ज्यों सुधि आए तनु जानै ॥ एकलीक वसुधा पर काढी नभतन गोदपसारी । जनु वोहित तजिकै परनको दाधि ज्यों अवनि निहारी ॥ ज्यों अति दीन सुखी सवही अँग कतहूं शांति नपावै । त्यों विन पियहि त्रिया प्रातहिते एकै वात मनावै ॥ कवहुँक धुकाति धरनि श्रम जल भारि महा शरदर विसास । इकटक भई चित्र पूतरि ज्यों जीवनकी नाहिं आश ॥तव उपचार कियो मैं करकस लै रस पारयोकान । मुरछा जगी नहीं मुख वोली लै वैठी फिरि मान ॥ हौंतौ थकी कराति वहु जतननि जीकी व्यथा नपाई । बूझहु लाल नवल नागर तुम ए कैसे न वताई ॥ शिव आकार दिखायो कछु इक भाव दोष रस नाहीं । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि लै मेली पगछाहीं ॥ ५२ ॥ देवगंधार ॥ प्रिया पिय नाहिं मनायो मानै । श्रीमुख वचन मधुर मृदुवाणी मादक कठिन कुलिशहूते जानै ॥ सोभित सहित सुगंध श्याम कच कलकपोल अरुझाने । मनहु विध्वंसज ग्रस्यो कलानिधि तजत नहीं विनदाने । वालभाव अनुसरति भराति दृग अग्र अंशुकन आने। जनु खंजरीट युगल जठरातुर लेत सुभष अकुलाने ॥ गोरेगात उससतजो असितपट और प्रगट पहिचाने । नैन निकट ताटंककी सोभा मंडल कविन वखानै । मानो मन्मथ फंद त्रासते फिरत कुरंग सकानै ॥ नाशापुटनि सकोचाति मोचाति विकट भ्रुकुटि धनु तानै । जनु शुक निकट निपट शरसाधे षटपद सुभट पराने ॥ जनु खद्योत चमक चलि सकतिनिशितिमिर हिराने । यह सुनिकै अकुलाइ चले हरि कृत अपराध क्षमानै ॥ सूरदास प्रभु मिले परस्पर मानिनि मिलि मुसकाने ॥ ५३ ॥ धनाश्री ॥ मानि मनायो मोहनरीसकुच समेति चली उठि आतुर वनकी गैलगही ॥ विधिमुख निरखि विमुख करि लोचन पुनि विधुवदन चही ॥ दरशत परसत रूप आज निज भूमिनख लेखिकही ॥ पुहुप सुरंग सारंग रिपु ओट देखी तव चतुर लही ॥ पानि सुपरसत शीशपरस्पर मुसकाने तवही ॥ तृण तोरचो गुनजात जितेगुन

काढति रेखमही । सूरश्याम बहुरो मिलि विलसहु जाति अवधि अवही ॥ ५४ ॥ सारंग चली वन मान मनायो मानि । अंचल ओट पुहुप दिखरायो धरयो शीशपर पानि ॥ शचितन चितै नैन दोउ मूंदे मुखमहँ अँगुरी आनि । यहतौ चरित गुप्तकी बातैं मुसकाने जियजानि ॥ रेखा तीनि भूमि पर खाँची तृणतोरयो करतानि । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि विलसहु श्यामसुजानि ॥ ॥ ५५ ॥ गुंड ॥ सैनदै कह्यो वनधाम चलिए श्याम इहै कारिकाम अबआनि मिलिहौं । भावही कह्यो मन भाव दृढराखिवो देसुख तुमहि सँग रंग रलिहैं ॥ जानि पियअतिहि आतुर नारि आतुरी गई वन तीर तनु शुद्धिहेती । सूर प्रभु हरष भए कुंजवन तहाँ गए सजत रतिसेज जे निगम नेती ॥ ५६ ॥ गुंडमलार ॥ श्यामवन धाम मगवाम जोवै । कवहुँ रचि सेज अनुमान जिय जिय करत लता संकेत तर कवहुँ सोवै ॥ एक छिन इक घरी घरी इक याम सम याम वासर हुते होत भारी । मनहि मन साध पुरवत अंग भावकरि धन्य भुज धनि हृदयमिले प्यारी ॥ कवहिं आवैं सांझ सोच अति जिय माँझ नैन लग इंदुहै रहे दोऊ । सूरप्रभु भामिनी वदन पूरन चंद्र रस परस मनहिं अकुलात वोऊ ॥ ५७ ॥ नट नारायणी ॥ दूती संग हरिके रही । श्यामअति आधीन ह्वैकै जाहु जाहु तासों कही ॥ वेगि आनि मिलाइ मोको परम प्यारी नारि । देखि हरि तनुकाम व्याकुल चली मनहि विचारि ॥ गई तहँ जहँ करति राधा अंग अंग शृंगार । सूरके प्रभु नवल गिरिधर संग जानि विहार ॥ ५८ ॥ विहागरो ॥ राधा सखी देखि हरषानी । आतुर श्याम पठाई याको अंतर्गतिकी जानी ॥ वह सोभा निरखत अँग अँगकी रही निहारि निहारि । चकित देखि नागरि मुखवाको तुरत शृंगार निसारि ॥ ताहि कह्यो सुख दै चलि हरिको मैं आवति हौं पाछे । वैसेहि फिरी सूरके प्रभुपै जहां कुंज गृह काछे ॥ ॥५९॥ केदारो ॥ दूती देखि आतुर श्याम । कुंजगृह तें निकसि धाए काम कीन्हो ताम ॥ बोलि उठी रसाल वाणी धन्य तुव वड़भाग । अवहि आवति बनी वाला किए मन अनुराग ॥ कहा वरणौं अंग सोभा नैनन देखों आज । सूर प्रभु नेक धरौ धीरज करौ पूरण काज ॥ ६० ॥ ईमन ॥ वड़े भाग्यके मोटे हौ । ऐसी त्रिया औरको पावे वने परस्पर जोटे हौ ॥ वैसिय नारि सुंदरी छोटी तैसेइ तुम वालि छोटे हौ । पूरवपुण्य सुकृत फल की वह आपु गुननकारि घोटे हौ ॥ परम सुशील सुलक्षण नारी तुमहि त्रिभंगी खोटे हौ । सूरश्याम उनके मन तुमही तुम बहुनायक कोटेहौ ॥ ॥६१॥ काफी ॥ सुनिहो मोहन तेरी प्राण प्रियाको वरणौं नंदकुमार । जो तुम आदि अंत मेरो गुण मानहु यह उपकार ॥ चंद्रमुखी भौंहैं कलंक विच चंदन तिलक लिलार । मनु वेनी भुवंगिनि के परसत श्रवत सुधाकी धार ॥ नैन मीन सरवर आनन में चंचल करत विहार । मानो कर्ण फूल चाराको रवकत वारंवार ॥ वेसरि वनी सुभग नाशा पर मुक्ता परमसुढार । मनों तिल फूल अधर विंबाधर दुहुँ विच बूंद तुषार ॥ सुठि सुठान ठोढी अति सुंदर सुंदर ताको सार । चितवत चुअत सुधारस मानो रहि गई बूंद मँझार ॥ कंठाशिरी उर पदिक विराजत गजमोतिन को हार दहिनावर्त्त देत मनो ध्रुवको मिलि नक्षत्रकी मार । कुच युग कुंभ शुंडिरोमावलि नाभि सुहृदय अकार । जनु जल सोखि लयो से सविता जोवन गज मतदार ॥ रत्न जटित गजरा वाजूबँद सोभा भुजन अपार । फूंदा सुभग फूल फूले मनो मदन विटपकी डार । छीन लंक कटि किंकिणि ध्वनि वाजत अति झनकार ॥ मौर वाँधि वैठो जनु दूलह मन्मथ आसन तार । युगल जंघ जेहरि जरावकी राजत परम उदार । राजहंस गति चलति किसोरी अतिनि

तंवके भार ॥ छिटकि रह्यो लहँगा रँग तासँग तन सुखवत सुकुमार । सूर सुअंग सुगंध समूहनि भँवर करत गुंजार ॥ ६२ ॥ नट ॥ आज राधिका रूप अन्हायो । देखत वनै कहत नहिं आवै मुखछवि उपमा अंत नपायो ॥ अलवेली अलक तिलक केसरिको ता विच सेंदुर विंदु वनायो । मानो पून्यो चंद्र खेतचढि लरि सुरभानसों घायल आयो ॥ काननकी वारी अतिराजत मनहुँ मदन रथ चक्र चढायो । मानहुँ नागजीति मणिमाथे भरिसोहागको छत्र तनायो ॥ वंकति भौंह चपल अतिलोचन वेसरिरस मुकुताहल छायो । मानो मृगनि अमीभाजन भरि पिवत न वन्यो दुहूं ढरकायो ॥ अधर दशन रसना कोकिलज्यों तिमिरजीतिविच चिवुक लगायो । मनहुँ देखि रवि कमल प्रकाशत तापर भृंगी सावकस्वायो ॥ कंचुकि श्याम सुगंध सँवारी चौकी पर नग वन्यो वनायो । मानों दीपक उदित भवनमें तिमिर सकुच शरणागत आयो॥भूपण भुजा ललित लटकन वर मनहु मिले अलिपुंज सुहायो । एतेहू पर रूठि सूर प्रभु लै दूती दर्पण देखरायो॥६३॥विलावल॥देखत नवल किशोरीसजनी उपजत अति आनंद। नवसत सजे माधुरी अँग अँग वशकीन्हे नँदनंद॥ कंवुकंठ ताटंक गंडपर मंडित वदन सरोज । मोहनके मन वांधिवेको मनो पूरी पासि मनोज॥नाशापरम अनूपम सोभित लज्जित कीर विहंग। मानो विधु अपने कर वनायके तिलप्रसूनके अंग ॥ भुजविलास करकंकन सोभित मिलिराजत अवतंश । तीन रेख कंचनके मानो वहु वनाइ पियअंश॥ कुंकुम कुचन कंचुकी अंतर मंगल कलसअनंग। मधुपूरण राखे पियकारण मधुर मधुपके अंग ॥ कीरति विशद विमल श्यामाकी श्रीगोपाल अनुराग । गावत सुनत सुखद कर मानो सूर दुरे दुखभाग॥६४॥ जयतश्री ॥ नवनागरीहो सकल गुण आगरीहो । हरिभुज ग्रीवाहो सोभाकी सींवाहो श्याम छवीली भावती गौर श्याम छवि पावती॥सैसवतामें हे सखी जोवन किया प्रवेश । कहाकहौं छवि रूपकी नखशिख अंग सुदेश ॥ श्रीपति केलि सरोवरी सैसव जलभरि पूरि । प्रगट भई कुचस्थली सोख्यो जोवन सूरि ॥ छुटे केशमज्जन समय देखि विरुध अहिभोर । भोरकहूं निशिमें रमे उतारि चले अहिओर । शीश सचिक्कन केशहो विच श्रीमंत सँवारि ॥ मानहुँ किरनि पतंगते भयो दुधांत महारि ॥ केसरि आड लिलाटहो विच सेंदुरको विंद। नैनन ऊपर कहाकहौं ज्यों राजत भुवभंग। जुवा वनावत चंद्रमा चपलहोत सारंग ॥ चंपकली सी नासिका राजत अमल अदोस। तापर मुक्ता योंवन्यो मनो भोरकन ओस ॥ मुक्ता आपु विकाइहो उरमें छिद्र कराइ। अधर अमृत हित तपकरै अधमुख ऊरध पाइ ॥ अधरनकी छवि कहतहौं सदा श्याम अनुकूल । विंव पँवारे लाजहीं हरषत वरषतफूल ॥ पांति कांति दशनावली रहे तमोल रंग भीज । वंदनसों शशिमें वए मनो सै दामिनि के वीज ॥ गुंजाकीसी छवि लई मुक्ता अति वडभाग। नैननकी लई श्यामता अधरनको अनुराग ॥ वेसरिके मुक्ता मानि धनि धानि नाशा व्रज नारि । गुरु भृगु सुत विच भौम हो शशि समीप गृह चारि॥ खुंटिला सुभग जराइके मुकुता मणि छवि देत। प्रगट भयो घनमध्यते शशि मनो नक्षत्र समेत सुंदर सुघर कपोलहो रहे तमोर भरिपूर। कंचन संपुट द्वैपला मानहु भरे सिंदूर ॥ चिवुक डिठौ ना जव दियो मो मन धोखे जात।निकस्यो आलि शिशु कुंजते मनहुँ जानि परभात॥जेहि मारग वन वाटिका निकसति आनि सुभाइ। मधुप कमल वन छांडिकै चलत संग लपटाइ ॥ जहां जहां तू पगधरै तहां तहां मन साथ। अति आधीन पिय ह्वै रहै तन मन दै तेरे हाथ॥ देखि वदनके रूपको मोहन रह्यो लुभाइ। इकटक रह्यो चकोर ज्यों दृष्टि न इतउत जाइ ॥ तोहिं श्याम सोहे

सखी बढ़ी निरंतर प्रीति। तू तन मन धन श्यामके तैं हरि पाए जीति॥ मदन मोहन तू वश करै अति प्रवीन नँदलाल। सूरदास गावै सदा कीरति विशद विसाल॥ ६५॥ नट॥ राधा संग ललिता लिए। श्याम आतुर जानि बाला गवन आतुर किए॥किंकिणी ध्वनि श्रवण सुनि हरि अतिहि पुलकित हिए।नारि आवत जानि गिरिधर नहीं धीरजजिए॥चले आतुर धाइ आगे संग सहचरि बिए। सूर प्रभु रतिरंग राचे देखि रीझी त्रिये॥ ६६॥ पिय छवि निरखत नागरी अँगदशा भुलानी। अंतर्गत आनँदभरी ललिता हरषानी॥ सहचरि सों कहि सुमनलै हारि भेंट भराए। अति अधीन पिय ह्वै रहे वशपरे डराए॥ मारग सुमन विछावहीं पग निरखि निहारे। फूले फूले मग धरे कलिआं चुनिडारे। ऐसे वश पिय वामके सुख सूरज जाने।जो जेहि भाव निहारि भजै तेहि तैसोइ माने॥ ६७॥ पूरबी॥ पीछे ललिता आगे श्यामा प्यारी ता आगे पिय मारग फूल विछावत जात। कठिन कठिन कली बीनि करत न्यारी प्यारीके चरण कोमल जानि सकुचअति गडिवेहि डरात॥ दीरघलता अपने कर निरुवारत ऊंचे लै डारत द्रुम बेली पात। सूरदास प्रभुकी ऐसी अधीनता देखत मेरे नैन सिरात॥ ६८॥ कान्हरो॥ वडे वडे वार एँडिन परसत श्यामा पीछे अपने अंचलमें लिए। वेणी गूँथन मिस फूल सुगंध फेट भरे डोलत बोलत नाहिंन सकुच हिए॥ अरु कुसुमीसारी में अलक झलक गोरे तनु मनो अहि कुल चंदन वंदन सों पूजा किए। सूरदास प्रभु त्रिय मिलि नैन प्राण सुख भयो चितए करुखिआनि अनकनि दिए॥ ६९॥ रामकली॥ वरन वरन वन फूलि रह्यो। हर्षितह्वै वृषभानु नंदिनी सँग सब सखिन कह्यो॥ कुसुमकली देखत रुचि उपजत यह कहि तिनहि सुनावति। आपुन चुनति गोदलै धारति युवतिन कहाति चुनावति॥ हँसत परस्पर दैदै तारी श्याम लिए करवाँही। सूरदास प्रभु काम आतुरे और ध्यान चित नाहीं॥ ७०॥ डोलत वांकी कुंज गली। ब्रजवनिता मृगसावक नैनी बीनति कुसुमकली॥ कमल वदन पर विथुरि रहीं लट कुंचित मनहुँ अली। अधर बिंब नासिका मनोहर दामिनि दशन छली॥ नाभि परसलौं रस रोमावलि कुच युग बीच चली। मनहुँ विवरते उरग रिंग्यो तकि गिरिके संधिथली॥पृथु नितंब कटि छांन हँसगति जघन सघन कदली।चरण महावर नूपुर मणि मैं बाजत भाँति भली॥ओटभए अवलोकि परस्पर बोलत अली अली। सूर सुमोहन लाल रसिक सँग वन वन मांझ रली॥ ७१॥ राग रुखा॥ सखियन सँग राधे कुँवरि बीनति कुसुमकलिआं। एक वयक्रम एकहि वानक रूप गुणकी सींव मनभावत सुंदर श्याम लालके कर सोहति रँगीली डलिआँ॥ एक अनूपम माल बनावति एक परस्पर वेनी गूंथति भ्राजति कुंज महलिआँ। सूरदास पभु सँग मिलि कौतुक देखत हरष हरष प्यारी अंकम भरिआं॥ ७२॥ कल्याण॥ लैगए धाम वन श्याम प्यारी। रहे पलटाइ दोउ भुजनि लपटाइ कै कह्यो पिय वचन हौ निठुर नारी॥विहँसि वृषभानु तनया कहति हम निठुर तुम सुहृद बात वह जिनि चलावो। निठुर अरु सुहृद सो मनहि मन जानिहै कहा वह कथाकी सुरति धावो। परस्पर हँसे दोउ रसे रति रंगमें करत मनकाम फल पुरुष नारी। सूर प्रभु कोक गुण में निपुणहैं बडे कामवल तोरि रस रह्यो भारी॥ ७३॥ सूहीबिलावल॥ गिरिधर नारि अवल अति कीन्ही। सबल भुजाधरि अंकम भरि भरि चापि कठिन कुच ऊपर लीन्हीं॥ कोक अनागत क्रीडा पर रुचि दूरि करत तनुसारी। कमल करनि कुच गहत लहत पुट देखो वह छवि न्यारी॥ वार वार ललचात साध करि सकुचाति पुनि पुनि बाला। सूरश्याम यह काम

करो जिनि धनि धनि मदन गोपाला ॥ ७४ ॥ रामकली ॥ सुता दधिपति सों क्रोधभरी। अंमर लेत भई खिझि वालहि सारँग संगलरी ॥ तब श्रीपति अति बुद्धि विचारी मणि लै हाथ धरी। वै अति चतुर नागरी नागर लै मुख मांझ करी ॥ चाखत चरण शेष चालि आयो उदयाचलहि डरी। सूरदास स्वामी लीला उर अंकम लगि उबरी ॥ ७५ ॥ सकुचि तनु उदधि सुता मुसकानी। रवि सारथी सहोदर तापति अंवर लेत लजानी ॥ सारँग पाणि मूँदि मृगनैनी माणि मुख माँह समानी। चरण चापि महि प्रगट करी पिय शेष शीश सहदानी ॥ सूरदास तव कहैं करैं अब लाज वहुरि तब यह मति ठानी। भुज अंकम भरि चापि कठिन कुच श्याम कंठ लपटानी ॥ ७६ ॥ विलावल ॥ वह छवि अंग निहारत श्याम। कवहुँक चुंवन देत उरोज धरि अति सकुचत तव वाम ॥ सन्मुख नैनन जोरति प्यारी निलज भए पिय ऐसे। हाहा कराति चरणकर टेकति कहा करत ढँग नैसे ॥ वहुरि काम रस भरे परस्पर रति विपरीति वढाइ। सूरश्याम रति पति विह्वल करि नागरि रहि मुरझाइ ॥ ७७ ॥ पियप्यारी तनुश्रमित भए। सकुचि उठी नागरि पटलीन्हों श्यामलजाइ गए ॥ सावधान रति अंत भए पिय प्यारी तन नहिं हेरत। नागरि कुटिल कटाक्षनि हेरति भ्रुकुटी वंकन फेरत ॥ ऐसे गुण तुम किनहि सिखाए तरुणी काटि कसि दीन्हीं। सूरकहति पियसों त्रिय वातैं आज तुमहि मैं चीन्हीं ॥७८॥ धनाश्री ॥ हरषि श्याम त्रिय बांह गही। अपने कर सारी अँग साजत यह इक साधकही ॥ सकुचत नारि वदन मुसकानी उतको चितै रही। कोककला करि पूरण दोऊ त्रिभुवन और नहीं। कुंजभवन सँग मिलि दोउ वैठे सोभा एक चही। सूरश्याम श्यामा शिर वेनी अपने करन गुही ॥ ॥७९॥ मोहन मोहनी अंग शृंगारतविनी ललित ललित करि गूंथत निरखत सुंदर मांग सँवारत ॥ शीशफूल धरि पाटी पोंछत फूंदनि झँवा निहारत। वदनविंद जराइकी वेंदी तापर वनै सुधारत ॥ तरिवन श्रवण नैन दोउ आंजति नाशा वेसरि साजत। वीरी मुख भरि चिवुक डिठौना निरखि कपोलनि लाजत ॥ नख शिख सजाति शृंगार भावसों जावक चरणन सोहत। सूरश्याम त्रिय अंग सँवारत निरखि आप मनमोहत ॥ ८० ॥ ललित ॥ ऐसेहि सुख सव रैनि विहानी। भोरभए ब्रज धाम चले दोउ मन मन नारि सिहानी ॥ प्यारी गई वृषभानुपुरा तन श्याम जात नँदधाम। सुखमा महल द्वारही ठाढी उन देखी वह वाम॥प्रात चले वनते ब्रज आए मन मन करत विचार। सुनहु सूर ठठकत सकुचत ता गृह गए नंदकुमार॥८१॥अथ वहुरोखंडित, सुखमा घरआए ॥ रागदेवगंधार ॥ कितते आएहो नँदलाल। ले भवनमें सब भेद बूझो सुनिहौ वचन रसाल ॥ ऐसी कौन वाल जा धोखे तुम आइ द्वारहे झांके।मिटत नहीं चितवनि हित चितकी उहै टेव नित नितकी मैं पहिचाने नैनावाँके॥कवहुँ जम्हात कवहुँ अँग मोरत अटपटात मुखवात न आवै रैनि कहूं धौं थाके।सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि रसिक रसिकई जानि नाम लेहु रहे जाके८२॥ललित॥वनतनते आए अति भोर। रातिरहे कहुँ गाँइन घेरत आएहौ ज्यों चोर ॥ अंग २ उलटे आभूषण वनहूं में तुम पावत।वड़भागी तुमते नहिं कोई कृपा करत जहँ आवत ॥ औचक आइ गए गृह मेरे दुर्लभ दरशन दीन्हों। सूर श्याम निशिहौ कहुँ जागे पावति अँग अँग चीन्हों८३ ॥ विलावल ॥ लालउनींदे नैना भए। राजतहैं रतनारे नैना मानहुँ नलिन नए॥पीक कपोल ललाट महाउर वंदन वलित खए ॥ जनु तनुजामे सद्य अरुनदल कामके वीज वए। विन गुनहार पयोधर मुद्रा हृदय सुदेशढए।अंजन अधर सुमंत्र लिख्योरति दीक्षालेन गए ॥ सूरश्याम विथुरे कच मुखपर नख नाराच हए ॥ ता ऊपर आनंद

इंदु जनु मानहुँ समर जए॥८४॥ विलावल॥ रैनि जागे अतिरस पागे अनुरागे नव त्रिय संग॥मो सन्मुख कत आएहो दहन पियरसमसे नैन अटपटे वैनानि तहाँई जाहु जाकेरंग ॥ विन गुन वनी माल पीक कपोलनि लाल जावक तिलक भाल कीन्हे रसवश अंग।सूरदास प्रभु रजनी विहाइ आए मेरे जीति अनंग ॥८५॥ विलावल॥ भोरभए मुख देखि लजाने । रतिके केलि वेलि सुख सींचति सोभित अरुननैन अलसाने॥काजर रेख वनी अधरन पर नैनकपोल पीक लपटाने॥मनहुँ कंज ऊपर वैठे अलि उडि न सकत मकरंद लोभाने॥है हियहार अलंकृत विनुगुन आइ सुरति रणजीति सयाने। सूरदास प्रभु पांइ धारिये जानतिहौ परहाथ विकाने ॥८६॥ सारंग॥ अरुण उदय वेला अरुनैन । निशिजागे अलसात श्यामधौं मोहन वोलत मधुरे वैन ॥ आनन जल प्रसेध गत चलि यों आए मधुकर मधुही लैन।वार वार रजनीसुख सींचति उमँगि उमँगि रस प्रीति देन ॥ क्रीडत सघन कुंज वृंदावन वंसीवट यमुनाके ठैन।सूरदास प्रभु सव विधि नागर पीवतहौ रस परमसचैन॥८७॥ विहागरो॥ आजु निशि कहा हुतेप्यारे । तुमरीसों कछु कहि न जाति छवि अरुण नैन रतनारे॥मेचक अधर निमेप पीक रुचिसो चिह्न देखि तुम्हारे । हृदयहार विनही गुणलंकृत मृग मद मिल्यो लिलारे॥दशन वसन पर छाप हृदय छवि दई वृषभानु सुतारे । अरु देखो मुसुकाइ इतेपर सरवसु हरत हमारे ॥ सूरश्याम चतुरई प्रगटभई आगे ते होहु न न्यारे॥८८॥कहौ श्याम कहाँ रैनि गँवाई।अव ए चिह्न प्रगट देखि अतहै मोसों कौन करत चतुराई ॥ लटपटी पाग अलक जो विथुरी वात कहत आवत अलसाई । तुमसों चतुर सुजान नागरी जाके रस तुम रहे लोभाई ॥ सूरदास प्रभु तहँहि सिधारो नौतन प्रीति जहां उपजाई॥८९॥ अथ सुखमाके घर सखी एक आई ॥ विभास॥सुनत सखी तहँ दौरि गई।सुने श्याम सुखमाके आए धाई तरुणि नई ॥ कोउ निरखति मुख कोउ निरखति अँग कोउ निरखत रँग और । रैनि कहूं फँग पगे कन्हाई कहति सवै करि शोर ॥ तव कहि उठी नारि सुखमा यह भाग्य हमारे आए । सूरश्याम धनि वाम तुम्हारी जिन निशिवश करि पाए ॥ ९० ॥ सारंग ॥ क्यों अव दुरत हैं प्रगट भए। कहत हैं नैन निशाके जागे मानो सरसिज अरुण नए॥ जावक भाल नागरस लोचन मसिरेखा अधरनि जो ठए। वालि या पीठि वचन अलिसोहै विन गुण कंठ हार वनए॥ भुज ताटंक ग्रीव सोहै चंदन चिन्ह कपोल दशन ग्रसए । आलिंगन चंदन कुच चर्चित मानो द्वै शशि उरहि उए ॥ चरण सिथिल अरु चाल डगमगी घूमत घायल समर जए। सरवत सकल अंग शोणित है श्यामा नख सायक जो दए॥ राजत वसन पीत उर राते अति आतुर होइ उलटि लए। सूरसखी कैसे मनमानै सुंदर श्याम कुटिल नगए ॥ ९१ ॥ विलावल॥ माई आजु लाल लटपटात आए अनुरागे । सोभित भूषण अंग अंग अलस भरे रैनि उनीदे जागे ॥ लटपटे शिरपेच पाग छूटे वंदन वागे । सूरश्याम रसिकराइ रसवश कीन्हें सुभाइ जागे जहां सोइ त्रिया वडभागे॥ ९२ ॥ विभास ॥ हो माई आज अनत जागेरी मोहन भोरहि मेरे कीन्हो है आवन । सोभित भूषण अंग अंग आलस भरे लैलै लागे अनमिली मिलावन ॥ अव कैसे पतिआतिहौ प्रीतम सांचे हो सोंहनि वोलनिवाहन वातैं वनावत । सूरश्याम रसिकराइ जावक चिह्न लगाइ अव आये मोहन असल सलावन ॥ ९३ ॥ सुघराई ॥ आज वन्यो वन रंग पियारो। व्रजवनिता मिलि क्यों न निहारो ॥ लटपटी पाग महाउर लागी । कुँवरि मनावति अति वड़भागी पीक कपोल अधर मसिलागे। आलसवलित सवै निशि जागे॥ कहुँ चंदन कहुँ वंदन की छवि। रैनि रंग अँग अंग रह्यो फवि ॥ सूरश्यामके यह छवि देखो। जीवन जन्म सफल करि लेखो॥९४॥

आज बने नव रंग छबलि । डगमगात पग अँग अँग ढलि ॥ जावकपाग रँगी धौं कैसे । जैसे करी कहो पिय तैसे ॥ बोलत वचन बहुत अलसाने । पीक कपोलनसों लपटाने ॥ कुमकुम हृदय भुज न छवि वंदन । सूरश्याम नारिन मन फंदन ॥ ९५ ॥ गौरी ॥ आज बने व्रजते वन आवत । यद्यपि हैं अपराध भरे हरि देखतऊ मोहिं भावत ॥ नख रेखा मुक्तावलिके तट अंग अनूप लसी । मनो सुरसरी ईश शीशते लै विधुकला धसी ॥ केलि करत काहू युवती कर कुमकुम भरि उर दीन्हों । मनो भारती पंचधार ह्वै नभ ते आगम कीन्हों ॥ बीच बीच कमनीय अंगपर श्यामल रेख रही । सूरसुता मनो कनक भूमिपर धार प्रवाह वही ॥ निरखत अंग सूरके प्रभुको प्रगट भई त्रिवेनी । मन वच करम दुरित नाशनको मानहु स्वर्ग निसेनी ॥ ९६ ॥ रामकली ॥ सखी सोभा अनूपम अति राजे । नैन कोनकी अंजन रेखा पटतर कहूं नछाजे ॥ खंजरीट मनो ग्रसित पन्नगी यह उपमा कछु आवे । दुग्ध सिंधुकी गरल सुधा ज्यों कोटिक भ्रम उपजावे ॥ की सुर सरिता सुरजतनय तट की पय पिवति भुअंगिनि । की अति मान मानि सागरते उलटी यमुन तरंगिनि ॥ समरारीको सुयश कुयशकी प्रगट एकही काल । किधौं रुचिर राजीवकोशते निकसि चली अलिमाल ॥ सूरदास दासिनि हित करकी हरि हलधरकी जोरी । राधावर निशि रसिक शिरोमणि कवि कुल परी ठगोरी॥९७अडानो॥लाल आए हो उनींदे आपुन पौढिये पलका मेरे पलो टिहों पाइ । मेरी सकुच जियमें कत आनत होंतो आज्ञाकारिणि हौं तुम जिनि जानौ मोसों औरनिकेसे सुभाइ ॥ यह अचरज आवत इनि बातन मान करत नहिं मानत मोसों आए मान मनाइ । सूरश्यामता वामहि वश करि लीन्ही कंठ लगाइ ॥ ९८ ॥ आजु अति रैनि उनींदे लाल । तुम पौढो मैं चरण पलोटों जिय जनि जानो ख्याल॥सुमन सुगंध सेज है डासी देखति अंग विहाल। मेरे कहे नाहुँ कछु भोजन करो न मदन गोपाल ॥ निशि श्रम भयो पीर मोहिं आवत सुनत परस्पर वाल । सूरश्याम सुनि वचन कपट त्रिय भरि लीन्ही अंक माल ॥ ९९ ॥ बिलावल ॥ श्यामहि सुख दै राधिका निजधाम सिधारी । चितते कहुँ उतरत नहीं श्रीकुंजविहारी ॥ रैनि विपिन रतिरस रह्यो सो मनहि विचारै । पिय सँगके अँग चिह्नजे दर्पणहि निहारै ॥ यहि अंतर चंद्रावली राधा गृह आई । अंग सिथिल छवि देखिकै जहँ तहँ भरमाई ॥ कह्यो चहति कहतन बने मन मन अनुमानै । सूरश्याम सँग निशि वसी निहचै यह जानै॥२१००॥ आसावरी ॥ चंद्रावलि सखियन सँग लीन्हें राधाके गृह आईहो । आजु अंग सोभा कछु औरै हरि सँग रैनि महाईहो ॥ अवतो नहीं दुराव रह्यो कछु कहो सांच हम आगेहो । अधर दशन छत उरोजनि नख छत पीक पलक दोउ पागेहो ॥ हम जानी तुम कहौ प्रगट करि श्याम संग सुख मानेहो । सुनहु सूर हम सखी परस्पर क्यों न रैनि यश गानेहो ॥ १ ॥ बिलावल ॥ कहति सखिनसों राधिका तुम कहति कहारी । मेरीसों की हँसतिहो सुनि चकित महारी ॥ पीक कपोलन यों लग्यो मुखपोछन लागी। कहां श्याम कहां मैंरही कबधौं निशि जागी ॥ उरज करज निज करजको गरहार सँवारत । सहज कछुक निशिमें जगी वचनन शरमारत ॥ कहति औरकी औरई मैं तुमहि दुरैहौं । सूरश्याम सँग जो मिलौ तुमसों नाहिं कैहौं ॥ २ ॥ बिलावल ॥ आजु वनी नवरंग किसोरी । रसिक कुँवर मोहन विन जोरी ॥ विथुरी अलक सिथिल कटि डोरी । कनकलता मनो पवन झकोरी ॥ अधर दशन छत कछु छवि थोरी । दर्पण लै देख्यो मुख गोरी ॥ सुख लूटत अतिही भई भोरी । सूरसखी डारत तृण तोरी ॥ ३ ॥ धौंडो ॥ आजु वनी वृषभानु कुमारी । गिरिधर वर राधा

तू गोरी ॥ हमसों करत दुराव वृथारी। इन बातन तू लहति कहारी ॥ आलस अंग मरगजी सारी। ऐसी छवि कहि कालि कहांरी॥सूरदास छवि पर बलिहारी। धन्य धन्य तुम दोउ वरनारी ॥ ॥४॥सारंग॥बानक बनी वृषभानु किसोरी। नख शिख सुंदर चिह्न सुरतके अरु मरगजी पटोरी ॥उर भुज नील कंचुकी फाटी प्रगटेहैं कुचकोरी। नवघन मध्य देखिअत मानहु नव रवि रस मिसु थोरी। आलस नैन सिथिल कज्जल वल मानि ताटंक नमोरी॥मानहु खंजन हंस कंजपर लरत चूंच पढतोरी। विथुरी लट लटकी भ्रुकुटीपर विकट माँग नग रोरी। मानहुँ कर कोदंड काम अलि सैन कमल हित जोरी ॥ अति अनुराग पियत पियूष हारि अधर सिंधु ह्रद थोरी। सूर सखी निशि संग श्यामके प्रगट प्रात भई चोरी॥५॥सावुत॥ राधे तू अति रंग भरी। मेरे जान मिली मनमोहन अचरा पीकपरी ॥ हों जानति हौं फौज मदनकी लूटिलई सगरी । छूटी लट छूटी नकवेसरि मोतिनकी दुलरी ॥ अरुण नैन मुख शरद निशाकर कुसुम गलित कवरी। सूरदास प्रभु गिरिधर के सँग सुरत समुद्र तरी ॥ ६ ॥ नट ॥ मैं जानी हैरी तेरे जियकी बात सोई अरु गात चिह्न कहे देत माई। आलस तनु मोरे भुज जोरे जम्हाइरी अटपटात माईरी लागत मोहिं सुहाई वाही पियके मन भाई ॥ वैन ऐन नैन सैन देखिये रसीले शृंगार हार बार विथारि रहेरी रति कँपति देति क्यों न जनाई। सूरदास प्रभुकी सुन जरी आली तेरे अंग अंग भयो उदोत वह हिलनि मिलनि खिलनकी तेरे प्रेम प्रीति जनाई ॥७॥ सूही ॥ नहिं दुरत हारि पियको परस । उपजतहै मनको अति आनँद अधरन रँग नैननको अरस ॥ अंचल उडत अधिक छवि लागत नखरेखा उर बनी वरस । मनो जलधर तर बाल कलानिधि कबहुँ प्रगटि दुरि देत दरश ॥ विथुरी अलक सुदेश देखियत श्रम जलते मिटियो तिलक सरस। सूर सखी बूझेहुँ न बोलते सो कहि धौं तोहिं को न तरस ॥ ॥८॥विलावल॥तोहिं छवि राजैरी ब्रजराजके संग जागेकी॥करसों कर जोरि मिली जम्हात अरु अैंडात होति दुरि मुरि रही अलक लसी आगेकी ॥कबहूं कबहूं पलक झपकि झपकि आवत ते मनभावत अंखियां अरुण भई प्रेम पगेकी॥सूरदास प्रभुको जू प्रगट उमँगि देखत।श्याम सुंदर उर लागेकी ॥ ॥ देशाख ॥ अरी मैं जानि पाए चिह्न दुरैं न दुराए। अति अलसात जम्हात पियारी श्यामके काम पुराए॥ कहा दुराव करति री प्यारी कोटि करे मुख नैन झुराए । सुमनहारसी मरगजी डारी पिय रँग रैनि जगाए॥ प्रगट नहीं तू करति डरति कहि सुरति सेज रति काम लराए। सूरश्याम तोहिं रस वशकीनी जात न मन विसराए ॥ १० ॥ सारंग ॥ काहेको दुरावति नैन नागरी ॥ जानतिहौ नँदलाल रसिक पिय मिलि सब रैनि जगीरी । सुरत समैके मुख तमोर मिलि लोचन परस लागरी॥मनहुँ शरद विधु भए पद्मयुग युग मुकलित अनुरागरी। उरज करज मनो शिव शिरपर शशि सारंग भागरी ॥ अरुण कपोल अंक अलकै मिलि उरग कामिनी आगरी हरि पुनि चतुर चतुर अति कामी कै तु रूपकी आगरी। सूरदास प्रभु वश करि लीन्हे धनि त्रिय तेरो सुहागरी॥११॥टोडी॥लालसों रति मानी जानी कहे देत नैनारी रंगभोए। चंचल अंचल कतहि दुरावति रूप राशि अति मानहु मीन महाउर धोए ॥ पीक कपोलन तरिवनके ढिग झलमलात मोतिन छवि जोए। सूरदास प्रभु छविपर रीझे जानतिहौ निशि नेक नसोए॥१२॥आसावरी॥ देखरी नख रेख बनी उर।अचला उडत अधिक छवि उपजाति मनहुँ उदित शशि दुति दुतिया वर॥सोभा कहा कहत बनि आवहि निरखि निरखि नैनानि सनपावति। लागति पाइ दशो दिशि मेलति लिए रजनी कर अलिन वदावति ॥ सुनि श्रवण उनमान करीतिहौ निगमनेति यह लखनि लखीरी।

मानो विधु जु विधंत ग्रहन डर आयो तेरे शरन सखीरी ॥ मोतिन माल मुकति मन वांछित हरि हर हरिहि जु आज जपत जप । मनहु दक्ष ऋषि शाप निवारन उभैईश जिय जानि करत तप॥ छांडि सकुच सांचो कहि मोसों हौं जानति मन मरम पराए। सूरदास प्रभु मिलन प्रगट भयो पियको परसु कैसे दुरत दुराए॥१३॥ बिलावल॥सुरत समैके चिह्न राधिका राजत रंग भरे । जहँ जहँ रति रणकोप कियो प्रीतम कर दशन धरे॥ आदुमिटी छूटी अलक आलस वश लोचन लवि लुकत खरे। मानहु धनुप धरे करसाज्यो जनु तूणके बाण झरे ॥ सिंधुसुता तनु रोम राजि मिलि राजत वरन खरे। मानहुँ विधु मनकामना तीरथ तप करि तीरपरे॥ दशन अंक सहि पीक प्रगट मुख सन्मुख हू न डरे।सूरश्याम सोभा सुखसागर सब अंग भरनिभरे ॥१४॥ बिलावल ॥ भामिनि सोभा अधिक भईरी। सुपक विंब शुक खंडित मंडित अधर सुधा मधु लाल लईरी ॥ राजित रुचिर कपोल महावर रद मुद्रावलि नाह दईरी । मनहुँ पीकदल सींचि स्वेदजल आलवाल रति वेलि वईरी ॥ कंचुकि वंद विगलित सुललित छवि उच्च कुचनि नख रेखन ईरी। मनहु सिंदूर पूर दुति दरशित कंचन कुंभदरार लईरी ॥ आलस भ्रुकुटी अलकैं छूटी मन तूटी पनच सत जूझ जईरी। नैन सुवनै कटाक्ष लगे शर सिथिल भई मति मैंन ढईरी ॥ ढीली नीवी गोरी अति भोरी पियके सँग रँग राग रईरी । सूरज श्री गोपाल विलासिनि चंद्रवदनि आनंद मईरी ॥ १५ ॥ द्वै करजोरि लेत जँभुआई । सोभा कहति वनति नाहिं मोपै आजु सखी पियसंग हुते आई ॥ सोइ आभा पुनि फेरि फवतहै विधि आपुन रुचि रचित वनाई। मानहुँ कुमुदिन कनक मेर चढि शशि सन्मुख मृदु सहित सिधाई । सोभितचिकुर ललाट वदनपर कुंचित कुटिल अलक विथुराई। नागवधू मनु अमी कोशते लै मधुपान अमरह्वै आई ॥ झुकि झुकि परत प्रेम मदमाती उमगि उमगि तन देत दिखाई। सूरदास प्रभु सखी सयानी चुटकिनि देत तवहि लखि पाई ॥१६॥धनाश्री॥ आलस भरि सोभित भामिनी। राजत सुभग नैन रतनारे हरिसँग जागत गई यामिनी ॥ वाँह उँचाइ जोरि जमुहानी अँडानी कमनीय कामिनी। भुज छूटे छवि यों लागीमनो टूटिभई द्वैटूक दामिनी॥ कुच उतंग वर रचित कंचुकी विलसित त्रिव ली उरदछामिनी। देखिअति मनहु मदन नृप तव हरि रसजीते राधा नामिनी ॥ विथुरी अलक सिंथिल कटिडोरी नखछत छरित मराल गामिनी । दुगुन सुरति सजि श्रीगुपाल भजि समुदित सूरज दास स्वामिनी॥१७॥नट॥ खंजन नैन सुरंग रस माते। अतिशय चारु विमल दृग चंचल पट पिंजरा न समाते॥ वसे कहूं सोइ वात कही सखि रहे इहाँ केहि नाते। सोइ संज्ञा देखति औरासी विकल उदास कलाते ॥ चलि चलि आवत श्रवण निकटअति सकुचति टंक फदाते। सूरदास अंजन गुण अटके नतरु कवै उडिजाते॥१८॥बिलावल॥भोरहि सोभा शिरसिंदूरयुगल पाट घन घटा वीच मनो उदय कियो नवसूर ॥ मन्मथ रथ आनंद कंद मुख चंद्रकला परिपूर। चक्र ताटंक निसंक सुदृग मृग जनु रन तम सम जूर ॥ सुंदर वर नासिका सुदेशपर वेसरि मुक्तारूरा । किधौं तूल तिलफूल निकरकन किधौं असुर गुरचूर। रद सद दामिनि अधर सुधा मधु रपा झपा झकि झूर ॥ वचन रचन माधुरी सधरपर कवन कोकिला कूर। उच्च उरोज मनोज नृपतिके जोवनकोटि कंगूर ॥ हरि सरि कटि तटि लरकि जाइ जिनि विशद नितंव गरूर । कदली जंघ मराल मंदगति रूप अनूप समूर।सूरदास सोभा स्वामिनि पर वारत सखितृणतूर॥१९॥रामकली॥मोसों कहा दुराव ति प्यारी। नंदलाल सँगरैनिवसीरी कोककला गुणभारी ॥ लोचन पलक पीक अधरनको कैसे

दुरत दुराए। मनो इंदुपर अरुण रहे वसि प्रेम परस्परभाए॥ अधर दशन छतकी अति सोभा उपमा कही नजाइ। मनो कीर फल विंबचोंचदै भरव्यो नगयो उड़ाइ॥ कुच नखरेख धनुषकी आकृति मनो शिव शिरशशिराजै॥ सुनत सूर प्रियवचन सखी मुख नागरि हँसि मन लाजै॥२०॥ धनाश्री॥ प्यारी सुनत सखी मुखवानी हँसि मुसकाइ रही। नैनन रही लजाइ मुदित चित मानी वात सही॥ तोसों कहा दुराव करौंरी तू प्राणनते प्यारी। कहा कहौं वह मिलनि श्याम की क्रीड़ा कहति उघारी॥रति सुख अंत रची इकलीला कहै कि धरौं दुराइ। सूरदास प्रभुके गुण आली चित्तहि रह्यो समाइ॥२१॥सोरठ॥राधा अव जिनि कछू दुरावै।हाहाकरि चरणन शिर नावति अपनी सौंह दिवावै॥ उहै कथा मोसों कहि प्यारी चरित कहारी कीन्हों। जा रस में तू मगनभई है कौन अंग सुख दीन्हों॥ उछलत भए सुधाउर घटते मुखमारग न सँभारै। सूरश्याम रस छकी राधिका कहत न बनै विचारै॥२२॥गुंडमलार॥श्याम रति अंतर रस इहै कीन्हो। कहत पुनि पुनि कहा अंग अंवरजहू मैं रही सकुच गहि आप लीन्हों॥ कियो तव मैं कहा लरी सारंग सों सारंग धर धरति तव चरण चापी। शेष सहसों फननि मणिनकी ज्योति अति त्रासते कंठ लपटाइ कांपी॥ रही उनकी टेक चलै मेरी कहा धरणि गिरिराज भुज सवल धारी। सूरप्रभुके सखी सुनहु गुण रैनि के वे पुरुष मैं कहा करौं नारी॥२३॥ नट॥आजहौं अधिक हँसी मेरी माई।काम विवस मो सों रति बाढी अवलोकत मुरझाई॥ रवि शशि कांति उग्र भवन में ठाढीही इक ठाइ। विस्मय वढी प्रतिविंब प्रतिह प्रति अंकदई यदुराइ॥ करअंचर मुख मुदित रहीहौं दीन देखि हँसि आई। सूरदास प्रभु निश्चय जानी तवहिं उलटि उरलाई॥२४॥आसावरी॥धन्य धन्य वृषभानुकुमारी गिरिवर धर वश कीन्हेरी। जोइ जोइ साधकरी पियरसकी सो सव उन को दीन्हेरी॥ तोसी त्रिया और को त्रिभुवन में पुरुष श्यामसे नाहींरी। कोककला पूरण तुम दोऊ अव न कहूं हरिजाहीं री॥ ऐसे वश तुम भई परस्पर मोसों प्रभू दुरावैरी। सूरसखी आनँद न सम्हारति नागरि कंठ लगावैरी॥ ॥२५॥विलावल॥श्याम गए उठि भोरही वृंदाके धाम। कामाके गृह निशि वसे पुरयो मनकाम॥सांझ गए कहि आइ हैं वहुनायक नाम।सेज सँवारति आशलै ऐसेहि गई याम॥ अरुण उदय द्वारे खरे देखत भई ताम। रिसनि रही झहराइकै मनही मन वाम॥ चिह्न और अंगनारिके विन गुन उरदाम। सूरदास प्रभुगुण भरे आलस तनु झाम॥२६॥अथ वृंदागृहगमन॥ विलावल॥लालन आए रैनि गँवाई। निशि भई छीन बोलि तमचुर खग ग्वालन ढीली गाई॥ अरुन किरन सुख पंकज विग सित मधुप लियोरसजाइ। चंद्रमलीन भयो दिनमणि ते कुमुद गए कुँभिलाइ॥ आज कि रैनि गई मुहिं जागत तुम विनु कछु न सोहाइ। सूरश्याम या दरश परश विनु निशि गई नींद हेराइ॥ ॥२७॥ विलावल॥ नीके आए गिरिवर धारी नागर।तुम्हरी चिंताते अरुन नैन भए सकल निशाके जागर॥ रतिके समाचार लिखि पठए सुभग कलेवर कागर। जियकी कृपा हम तवहीं जानी भोर भुलाए आगर॥ वलि वलि गई मुखारविंदकी सुरति सिंधु रससागर। जाके रसवश भए हो सूर प्रभु ऐसी व कौन उजागर॥२८॥ विभास॥ तुम्हारे पूजिये पिय पाँइ। वहुत वात उपजति है तुमको कहत वनाई वनाइ॥ अरुण अधर श्याम भए कैसे आए पट लपटाई॥ चारु कपोल पीक कहाँ लागी ऊरज पत्र लिखाई॥ नंदकुमार जहाँ निशि जागे तहँ सुख देखौ जाई। सूरदास सव भांति अटपटी अव मन क्यों पति आई॥२९॥विलावल॥ मोहन काहेको लजात। मूँदि कर मुख रहे सन्मुख कहि न आवत वात॥ अहि लता रँग मिल्यो अधरन लग्यो दीपक जात।

निकसि चल युग पूतरी जनु अलि उरझि अधगात ॥ चारि याम जुनिशि उनीदे आलस वश हि जँभात । सूर ऐसे मदनमूरति निरखि रति मुसुकात ॥ सकल निशि जागे के हैं नैन । जानति हौं अति किए कोकनद आन रवनि सुख चैन ॥ लटपटी पाग चाल गति उलटी रसन अटपटे वैन । लगत पलक उघरत न उघारे मनु खंडित रस ऐन ॥ तमचुर टेरतही उठि धाए अब दूनो दुखदैन । जानी प्रीति सूर प्रभु अब हम सुरति भई गति मैन ॥ ३० ॥ आजु और छवि नंदकिसोर । मिलि रिस रुचि लोचन भए रोचन चितवत चित्त पराई ओर ॥ सोभित पीठि प्रगट कर कंकन सोभित हार हिए विनु डोर । सोभित पीतवसन दोउ राते अधरन अंजन नैन तमोर ॥ नखशिख ज्यों शृंगार अटपटे पाए मनहु पराए चोर । फूले फिरत दिखावत औरन निडर भए दै हँसनि अकोर ॥ कहत नवनै सुनतहु न आवै वैसंधि वर्णत कविन कठोर ॥ अचरज क्यों न होत इन वा तन सूर ग्रहण देखे जनु भोर ॥ ३१ ॥ विलावल सूही ॥ अतिहि अरुण हरि नैन तिहारे । मानहु रति रस भए रँग मगे करत केलि पिय पलकन पारे ॥ मंद मंद डोलत संकितसे सोभित मध्य मनोहर तारे । मनहु कमल संपुट महँ वीधे उड न सकत चंचल अलिबारे ॥ झलमलात रति रैनि जनावत अति रस मत्त भ्रमत अनिआरे । मानहु सकल जगत जीतनको कामवाण खरसान सँवारे ॥ अटपटात अलसात पलकपट मूंदत कवहूं करत उघारे । मनहुँ मुदित मर्कत मणि आंगन खेलत खंजरीटचटकारे ॥ वारवार अवलोकि कुरुखियन कपटनेह मन हरत हमारे । सूरश्याम सुखदायक लोचन दुखमोचन लोचनरतनारे ॥ ३२ ॥ विलावल ॥ नहिंन दुरत नैना रतनारे । वंधुप कुसुम पर सोभित सुंदर श्याम शिली मुखतारे ॥ कुटिल अलक रही विथुरि वदन पर सकुच सहित हरि नरम निहारे । भौंह सिथिलमनुमदन धनुप गुन गेरेकोकनद वान विसारे । मूंदेई आवत नैन आलस वशछीन भए उघरत न उघारे । सूरदास प्रभु सोइ पै कहौ तुमको भामिनि जहँ रति रण हारे ॥ ३३ ॥ रति संग्राम वीररस माते । हैं हरि शूर शिरोमणि अजहूँ नहिंन सँभारत ताते ॥ आनहि वरन भए दोउ लोचन अपने सहज विनाते । मानहुँ भीरपरी जोधनकी भए क्रोध अतिराते ॥ परिमल लुब्ध मधुप जहाँ वैठत उडि न सकत तेहिठाते । मनहुँ मदनके है शरपा ए फोंक वाहिरी घाते ॥ वैठिजात अलसात उनीदे क्रम २ उठत तहांते । मनो मूरछा कटाक्ष नाटस ल कठिन सकत हियराते ॥ डगमगात घूमत जनु घायल सोभा सुभट कलाते । सूरदास प्रभु रतिरण जीते अवसकात धौंकाते ॥ ३४ ॥ नैन उनीद भए रँग राते । मनहु सुरंग सुमन पर सजनी फिरत भृंग मदमाते ॥ प्रेम पराग पाँखुरी पल दल प्रफुलित मदन लताते । सुभग सुवास विलास विलोकनि प्रगट प्रीति करि ताते ॥ तैसोइ मारुत मंद जम्हावरि मिली मुदित छवियाते । सींचे सूरश्याम माननिकर हितसों केलि कलाते ॥ ३५ ॥ रामकली ॥ आए सुरति रंग रसमाते । मानहु छिन विश्राम नमित पिय श्रमित भएहैं ताते ॥ डगमगात मग धरत परत पग उठत न वेगितहांते । मनु गजमत्त चरण संकट कर गहि आनत तेहिठाते ॥ उर नख छत कंकन छत पाछे सोभितहै रुहिराते ॥ मदन सुभटके वाण लागि मनो निकसि गए वोहि घाते ॥ सांचे करत आपने वोलनि टरत नम र्यादाते । सूरश्याम कहि गए आइहैं पगधारे तेहि नाते ॥ ३६ ॥ विलावल ॥ अरुण नैन राजत प्रभु मोरे । रति सुख सुरति किए सखि सँग मनोजीत समर मन्मथ शर जोरे ॥ अति उनीद अलसात कर्मगति गोलक चपल सिथिल कछु थोरे । मनहु कमलके कोश तमी तम उठत रहत छवि रिपुदल दौरे ॥ सोभित सुभग सजल प्रतिकारे संगम छवितारे तनु डोरे । मनो भारतीके भँवर मीन शिशु

जात तरल चितवंत चितचोरे ॥ वरणि नजाइ कहाँलगि वरणौं प्रेमजलधि वेला वल वोरे।सूरदास सों कौन त्रिया जिनि हरिके अंग अंग बलतोरे ॥ ३७ ॥ काहेको पिय भोरही मेरे गृह आए। इतने गुण हमपै कहाँ जे रैनि रमाए ॥ ताहीके पग्रुधारिए चकृत मैं जाने। विन गुण गढि माला रही नहिं कहुँ विहराने ॥ आएहौ सुखदेनको ऐसेइ हितकारी।सूरश्याम तुम योगको को वैसी नारी॥ ३८ ॥ कृपा करी उठि भोरहीं मेरे गृह आए। अब हम भइ बडभागिनी निशिचिह्न देखाए।जावक भाल नसों दियो नीके वश पाए। नैन देखि चकृत भई क्यों पान खवाए ॥ अधरन पर काजरवन्यो बहु रंग कहाए। वंदन विंदुली भालकी भुज आप बनाए ॥ यह मोसों तुमही कहौ उरछत अरु नाए। सूरश्याम यशराशिहौ धनि त्रिया हँसाए ॥ ३९ ॥ भैरव ॥ जाहु तहीं कहा सोचतहौ। जासँग रैनि बिहात न जानी भोर भए तेहि मोचतहौ ॥ औरनको छिन युग वीततहै तुम निहचीते नागरहौ। झूमत नैन जम्हात बारही रतिसंग्राम उजागरहौ ॥ मैं अब कहति तिहारे हितकी ताहीके गृह सोइ रहो॥सूरश्याम वैसी त्रियकोहै वह रस वाही वननलहौ॥४०॥हमहीपर पिय रूखेहो॥बोलत नही मूक क्यों ह्वैरहे अँग रँगहीन कछूखेहो॥तब निरखत औरहि हित कीधौं हमसों कहुँतुमलूखेहो॥तब हँसि बदन मिलत आजुहि कछु और भए निठुर पूषेहो ॥ डगमगात पग उतहि परत है चित चंचल उत हूषेहो। सूरदास प्रभु साँच भाषिगए त्रिया अंग बल मूपेहो ॥ ४१ ॥ विलावल ॥ हरषि श्याम त्रिय बाँह गही। चूकपरी हमको यह बकसो आवनको कहि गए सही ॥ रिसनउठी झह राइ झटकि भुज छुवत कहा पिय सरम नहीं। भवनगई आतुर ह्वै नागरि जे आई मुख सबै कही॥ मेरे महल आजु ते आवहु सौंह नंदकी कोटि लही। सूर श्याम जबलौं जग जीवों मिलौं नहीं वरु कामदही ॥ ४२ ॥ नट नारायण ॥ नागरि निठुर मान गह्यो। पीठिदै रिस काँपि वैठी फिरिन उताहि चह्यो ॥ श्याम मन अनुमान कीन्हों रिसनि व्याकुल नारि। तनकही रिस खोइ डारौं यह प्रतिज्ञा धारि॥सखी एक स्वभाव अपने गए ताके गेह। यह चरित सब कह्यो तासों चतुरि लख्यो सनेह॥ गई आतुर नारि ताके लख्यो नैनानि कोर। चकित बाला नंद सुतबिन लह्यो हठको छोर ॥ भुजागहि कहि कियो कारिस कहि सही ब्रजग्वारि। सूर प्रभुसों मान कीन्हों हृदय देखि विचारि ४३ ॥ कान्हरो ॥ बाँह गह्यो कहि आँगन ल्याई। बहुनायक उनको नहिं जानति बडी चतुर हो माई ॥ मैं जो कहति श्रवण सुनि चितधरि जोवन धन सपनेको। चलु गहि भुजा मिलै किन हरि सों कहा निठुर भई तोको ॥ तूँही गहति न बाँह जाइकै मोसों बाँह गहावति। सुनहु सूर मैं सौंह करी है तू मोहिं तिनहिं मिलावति ॥ ४४ ॥ कहाकहति तू मिलिहि रहीहै। मोसों करति कहा चतुराई उनं इह भेद कही है ॥ जो हठ कऱ्यो भली नाहिं कीन्ही एदिन ऐसेनाहीं। की इहँई पिय को न बुलावै की तहँई चलिजाहीं ॥ वै सब गुण लायक तू नागरि जोवन दिन द्वै चारि। सूर श्यामको मिलि सुख लेहि न पुनि पछितैहै नारि॥ ४५ ॥ बहुरि पछितैहैरी ब्रजनारि। देखि जाइ ठाढे मग जोवत सुंदर श्याम मुरारि ॥ ऐसी निठुर नैक नहिं चितवति चंचल नैन पसारि। कहा गर्व या झूठे तनको देखि हाथले वारि ॥ ताजि अभिमान मानरी मानिनि मैं जु करति मनु हारि। सूर हंस स्वाती सुत धोखे कबहुँक खात जुवारि ॥४६ ॥ केदारो ॥ मोसों मानि भावै न मानि लाल मनाइ है री तेरी आँखि न मैं पैयत है। कत सकुचति मैं तौ सब जानति ऐसी प्रीति क्यों दुरैयत है ॥ मेरो विलग मानति यह जानति या बातन में कछु पैयत है। सूरश्याम न्यारे न बूझिये यह मोको नाहिं भावै काहे को अनखैयत है ॥ ४७ ॥ विलावल ॥ बहुरि मिलौ

गी कालिही चित समुझि सयानी । मेरो कह्यो न क्यों करै क्यों भई अयानी ॥ अनलहि ओपधि अनलहे सब जानिरहीहौ । धरणी धर व्याकुलखरेरी गर्वगहेली । सूरकह्यो सुनि मानिलै मैं कहति सहेली॥४८॥ सोरठ॥श्याम धरचो त्रिय मोहन रूप। दूती प्रिया संग इक लीन्हें अंग त्रिभंग अनूप॥ अंतर द्वार आइ भए ठाढे सुनत त्रियाकी बातैं। सरसवचन जु कहति सखि आगे कहो मिलैं केहि नातैं ॥ कपटी कुटिल क्रूर कहि आवत यह सुनि सुनि मुसकाने । सूरदास प्रभुहैं बहुनायक तुही कहति यह बाने ॥ ४९ ॥ मलार ॥ जोलौं माई हो जीवन भरि जीवों । तब लगि मदन गोपाल लालके पंथ न पानी पीवों ॥ करौं न अंजन धरौं न मरकत मृगमद तनु न लगाऊँ । हस्त वलय कटिना पटु मेचक कंठ न पोति बनाऊँ ॥ सुनौं न श्रवणन अलि पिक वाणी नैनन नवघन देखों । नील कमल कर धरौं नकबहूं श्याम सरीसे लेखों ॥ इतनी कहत आइगए मोहन लिये प्रिय दूती संग । छूटि गई रिसटेक मानकी निरखि रसिकके अंग ॥ अति रति लीन भई भामिनि सँग तब करगहि करलीन्हों । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि मिलि जु सुधासुख दीन्हों ॥५०॥धनाश्री॥कवि गावत हरि मोहन नाम । गाढो मान दूरि करि डारचो हरपभई मन वाम ॥ ऐसे चरित औरको जानै धन्य धन्य नँदलाल । जो ए गुण तौ हरत त्रियन मन अति हरपित भई बाल ॥ मिव्यो काम तनु ताम तुरतही रिझई मदन गोपाल । सूरश्याम रस वश करि लीन्हीं इहै रच्यो इक ख्याल ॥ ॥५१॥मलार॥सखीरी कठिन मानगढ टूव्यो।श्रीगोपाल विहँसनि वलयातसचल्यो अतिहि गोलनको जूव्यो ॥ करि प्रतिहार तज्यों सुर गोपुर कंच कोट सन फूव्यो । कामअग्नि उपजी उर अंतर मौन सुभट को तब रण छूव्यो ॥ कुच लोचन दोउ लरैं सोहहै भौंह कमान कुटिल शर छूव्यो । विद्राचारि गोपालकी सूरताजि सर्वसु लूव्यो ॥५२ ॥ गुंडमलार ॥ श्याम गुण राशि मानिनि मनाई । रह्यो रस परस्पर मिव्यो तनु विरह झर भरी आनंद त्रिय उर नमाई ॥ कबहुँ रति सहज कबहूं करति विपरीत वासरहुते सब रैनि बीती । श्रमित दोउ अंग भए अतिहि विह्वल परे सेज रति पति अधिक वढी प्रीती ॥ भोरभए चले निज सदन पितु मातके फिरे सकुचे देखि नंद द्वारे । सूर प्रभु श्याम सकुचि गए प्रमुदा धाम कहत ए गुण भले हरि तुम्हारे ॥५३ ॥ सुखमाके धामते आए प्रम दाके धाम ॥ गुंडमलार ॥कहाहै श्याम कहाँ गमन कीन्हों । कहां तुम रहत कबहूं दरश देत नहिं धोखे गए आय हम मानि लीन्हें॥नैन आलस भरे चरण उर लरखरे कहाहौ डरेसे कहौ मोसों।रैनि कहुँ बसे त्रिय कौनसों रसेहो उर करज कसे सो कहो गोंसों ॥ भले जू भले नँदलाल वेऊ भली चरण जावक पाग जिनहि रंगी।सूरप्रभु देखि अँग अँग बानक कुशल मैं रही रीझि वह नारि चंगी॥५४॥ ॥ कल्याण॥सुनत हँसि चले हरि सकुचि भारी।यह कह्यो आजु हम आइहैं गेह तुव तरक जिनि कहौ हम समुझि डारी । नारि आनँद भरी रॉंगसी ह्वै ढरी द्वार अपने खरी अंग पुलकी । गए कहि सूर प्रभु रैनि वसिहैं आजु सजति शृंगार कछु सकुच कुलकी॥५५॥ अँग शृँगार सुंदरी बनावै। मिलैंगी श्याम निज धाम करि आजुही रैनि विलसौं काम मन मनावै ॥ सरस सुमना जात शीश करसों करति श्रीमंत अलक पुनि पुनि सँवारै । मांग सूधी पारि निरखि दर्पण रहति ग्रँथि कुँवरिछाँह पाटी निहारै । कमल खंजन मृगज मीन लोचन जीते सारंग सुतलेति तहां आँजै । हार उरधराति नख शिखहू भूषण भराति सूर प्रभु मिलनहित नारि राजै ॥५६ ॥ कान्हरो ॥ विधुवदनी अरु कमल निहारै । सुमनासुत लै कमलन मंजित धनपति धामको नाम सँवारै॥तरनि तात वनिता सुत ता छवि कमलन रचि ग्रंथित थाति चारै । कमल कमलपर रेख बनावति सारँग रिपु पाहन गति

ढारै ॥ उर हारावलि मेलति कमलन मनहुँ इंदु पारस ढिग पारै।सूरश्यामके नामहि जीतन कमला पतिके पदहि विचारै ॥ ५७ ॥ आसावरी ॥ अँग शृंगार सँवारि नागरी सेज रचत हरि आवहिंगे। सुमन सुगंध रचत तापर लै निरखि आइ सुख पावहिंगे॥चंदन अगर कुमकुमा मिश्रित श्रमते अंग चढावहिंगे। मैं मनसाध करौंगी सँगमिलि वै मन काम पुरावहिंगे॥ रति सुख अंत भरौंगी आलस अंकमभरि उरलावहिंगे। रस भीतर मैं मान करौंगी वै गहिचरण मनावहिंगे ॥ आतुर जब देखौं पिय नैनन वचन रचन समुझावहिंगे। सूरश्याम युवती मनमोहन मेरे मनहिं चुरावहिंगे ॥ ५८ ॥ नंदसुवन बहुनायकी अनतहि रहे जाई। वह अभिलाष करतरही ताको विसराई॥वासर ऐसेही गयो निशि याम तुलानी। नारिपरी अति सोचमें विरहा अकुलानी ॥ आवन कहि गए सांझही अजहूं नहिं आए। कीधौं कतहूं रमिरहे फँगपरे पराए॥ वेईहैं बहुनायकी लायक गुणभारी। सूरश्याम कुमुदा भवन सुधि करि पगधारी ॥ ५९ ॥ केदारो ॥ रहे हरि रैनि कुमुदा गेह। परस्पर दोउ प्रेम भीजे बढ्यो अतिहि सनेह॥ एक क्षण इक याम बितवति कामरस वशगात। ताहि बीतत याम युग सम गनत ताराजात ॥ उनहि वैसेइ याहि ऐसे रजनि गई भयो भोर। सूर मोसों करि चतुरई गए नंदकिशोर ॥ ६० ॥ नट ॥ कुटिलई करी हरि मोसों। चित्त चिंता भरी सुंदरि करति मनगोसों ॥ कहिगए निशि आइहैं हरि अनत विरमें जाइ। रैनि बीती उदित दिनकर देखि त्रिय मुरझाइ ॥ भवनही मनमारि बैठी सहज सखि इक आइ।देखि तनु अति विरह व्याकुल कहति वचन सुनाइ॥ बोलि ढिग बैठारि ताको पोंछि लोचन लोर। सूरप्रभुके विरह व्याकुल सखी लखि मुख ओर ॥ ६१ ॥ गौरी ॥ आजु तोहिं काहे आनँद थोर। यह विपरीति सखी तो महियां इन्दु विन्दु इकठोर ॥ हरदावन संतत अधिकारी ज्यों विधु चंद्रचकोर। दाधि गृह युगल तू क्यों न बनावति विगसत अंबुज भोर ॥ कंपित श्वास त्रास अति मोकति ज्यों मृग केहरि कोर। सूरदास स्वामी रतिनागर तौ न हरयो मनमोर॥६२॥गौरी॥आज़ु बितु आनँदको सुख तेरो।कहा रही मनमारि भोर हीं अतिव्याकुल मनमेरो ॥ मोसों गोप करै जिनि सुंदरि नहिं पावति वह भाव। सुनों बात कैसी उपजीहै कछु जिनि करै दुराव ॥ तब बोली मधुरी बाणी सों कहा कहौंरी तोहिं। तेरे श्याम भले गुणनागर कपटी कुटिल कठोहिं ॥ निशिवसिवेकी अवधि वदी मोहिं साँझ गए कहि आवन। सूरश्याम अनतहि कहुँ लुब्धे नैनभये दोउ सावन ॥६३॥ सोरठ ॥ ऐसे गुण हरिकेरी माई। मैंपहि चानि रहीहौं नीके कुटिल शिरोमणिराई ॥ अब मोसों उनसों कहबनिहै कछु मैं गई बुलावन। आपुहि कालिह कृपा यह कीन्ही अजिर करिगए पावन ॥ तोसों मिलै कहूं मेरी सों तिनसों तू यह कहिए। सूरदास प्रभु बोलनि सांचि लाज कछू जिय गहिए ॥ ६४ ॥ विहागरो ॥ सखीरी और सुन हु इक बात। आजु गोपाल हमारे आए उठि करि नहिं मिसि प्रात ॥ कतहूं रैनि उनीदे मोहन अपने गृहतन जात। आगे द्वार नंदहै ठांढे ताते गए न सकात॥ डगमगात डग धरत परत पग आलस वंत जम्हात। मानहु मदन दंड दै छँडि चुटकी दैदै गात ॥ जो मैं कह्यो कहां रहे मोहन तौ सन्मुख मुसकात। ताते कछू न उत्तर आयो सूरश्याम सकुचात ॥ ६५ ॥ केदारो ॥ तब हरि यह चतुरई करी।कह्यो मेरे धाम आवन टारदै गए हरी॥आपुही श्रीमुख गए कहि सही कैसी परी। सेज रचि सब रैनि जागी तब रिसानि हौं जरी ॥ श्याम देखे द्वार ठाढे मनहिं मन झहरी।कहत सूर सुनाइ हरिको धन्य यह शुभवरी॥६६॥ विलावल॥सखी निरखि अँग अंग श्यामके। कहुँ चंदन कहुँ वंदन रेखा कहुँ काजर छवि लखत वामके ॥ आलसभरे नैन रतनारे चतुरनारि

सँग जगे यामके। अपने मन हारि सोच करत यह परी त्रिया फँग कठिन तामके॥ मान कियो मोतन फिरि बैठी आए हैं यह सुनत नामके। सूरश्याम इक बुद्धि विचारी मनमोहन रति सहित कामके॥६७॥सूही॥ श्याम सैनदै सखी बोलाई। यह कहि चली जाउँ गृह अपने तू तो मान कियोरी माई॥ अंतर जाइ भए हरि ठाढे सखी सहज निकसी तहँ जाई। मुख निरखत दोउ हँसे परस्पर भवन जाहु मैं लेउँ मनाई॥ अंग दिखाइ गई हँसि प्यारी सूरति चिह्ननिकी सुघराई। सूर प्रभू गुन पार लहै को जानी बूझि करी रिसहाई॥६९॥विलावल॥इहै कही कहि मौन रही। मन मन कहति दरश अब दीन्हों निशि सब रैनि डही॥ मधुरे वचन सुनाइ सखी सों रिस वश भरे कही। आए कहां जाहिं ताहीके चतुर त्रिया ढिगही॥ वा बिन उनको कौन मिलैगी नहिं कोउ फिरति वही। सूरज प्रभु इतको जिनि आवैं पग धारैं उतही॥ ७०॥ गौरी॥ सखी गई कहि लेउँ मनाई। ज्ञाननमणि विद्यामणि गुणमणि चतुरनमणि चतुराई॥ प्रिया हृदय यह बुद्धि उपाई ह्यां तौ नहीं कन्हाई। आतुर चली यमुनजल खोरन काहू संग न लाई॥ पहुँची जाइ ते रवितनया तट न्हाइ चली अतुराइ। सूरश्याम मारग भए ठाढे बालक मोहनराइ॥ ७१॥ ॥विलावल॥ पाँचबरसके लाल ह्वै त्रिय मोहन आए। नागरि आगे ह्वै गई तब बोल सुनाए॥ कह्यो कहारी जाति है काकी तू नारी। मोहिं पठाई श्यामले जाकी तू प्यारी॥ यह सुनि नारि चकित भई आपुन तहां आए। तब करसों कर गहि लियो देखत मन भाए॥ अगम चरित प्रभु सूरके ते लखै न कोई। श्याम नाम श्रवणन पर्यो हरषी मुख जोई॥ ७२॥ रामकली॥ हरषी निरखि रूप अपार। गह्यो करसों सदन ल्याई जानि गोपकुमार॥ श्याम मोको बोलि पठई कहत है यह लाल। भवनले इन भेद बूझों सुनों वचन रसाल॥ हृदय आनँद भई बाला प्रेमरस बेहाल। कुँवरि अंतःपुर गई लै रच्यो हरि तहां ख्याल॥ तरुण ह्वै करि उरज परसे दियो अंचल डारि। सूर प्रभु हँसि लई प्यारी भुजन अंकम धारि॥ ७३॥ टोडी॥ मुख निरखत त्रिय चकित भई। जो देखी अति तरुण कन्हाई यह को लखै दई॥ छांडिदेहु ऐसे मन मोहन हँसि मन लजित भई। ऐसे छंद चरित पिय धनि धनि कीन्ही करनि नई॥ अंकम भरि त्रिय कंठ लगाई कुच उर चापि लई। सूर श्याम मानिनि मन मोहन रतिरससों भोगई॥७४॥विलावल॥श्याम मनाई माननी हरषित भई अंग। रैनि विरहतनको गयो जे करे अनंग॥ सुतामहर वृषभानुकी सुधि कीनी श्याम। ताको सुख दै हरि चले प्यारीके धाम॥ प्यारी आवत पिय लखे चितई मुसकाइ। जिय डरपे मोहिं देखिकै सुख कह्यो न जाइ॥ अब न पियहि उचटाइ हौं मोको सरमात। त्रास करत मेरी जिती आवत सकुचात॥आनिद्वार ठाढे भए नायक बहु नाम। सूरप्रभु अंग सहजही निरखति रुचिसों वाम॥७५॥ ॥ गुंडमल्लार॥ श्याम डर वाम निज धाम आए। उतहि प्रमुदा धाम सखी सहजहि गई अंगके चिह्न कछु और पाए॥ देखि हरषी नारि सकुच दीन्ही डारि अतिहि आनँद भरी श्याम रंगी। सखी बूझति ताहि हँसत जासुख चाहि श्यामको मिलीरी बनी चंगी॥ कहन लागी कहा कहत तू आज मोहिं ताहि नाहीं करति दुरति कैसे। मिले प्रभु सूर तोहिं जानि यह चतुरई नहीं तू करति नहिं लखति जैसे॥ ७६॥ सूही॥नैनातो अति रँगीले चिहुर छूटे छबीले काजर पीक लागिलै आरसी देख। मरगजे बसन अधर दशनानि छत कहुँ कहुँ नीकी लागी चंदन रेख॥ काहेको तू मोहिं दुरावतिरी सजनी जानी अरस परस छबि शेष। सूरदास प्रभु नंदसुवन सँग अबही सुरति रंगकोसो भेष७७॥ ॥विलावल॥अब तू कहा दुरावैगी।मोहिं कहत नाहिं काहि कहैगी कबलौं बात लुकावैगी॥मोसी और कौन

प्रिय तेरे जासों प्रेम जनावैगी॥मेरी सों उनकीसों तोको कहा दुराए पावैगी॥औरनसी मोहूको जानति मोते बहुरि रमावैगी॥ सूरश्याम तोहिं बहुरि मिलैहौं आखिरतौ प्रगटावैगी७८प्रमुदा अति हर्षितभई सुनि बात सखीके। रोम रोम पुलकित भई उपजी रुचिहीके॥ कहति अबहिंह्यांते गए नंदसुवन कन्हाई। चरित कहा उनके कहौं मुख कह्यो नजाई॥ साँझगए कहि आइहैं मोसोंरी आली। अन त विरमि कतहूं रहे बहुनायक ख्याली॥ रैनि रही मैं जागिके भोरहि उठिआए। मान कियो रिस पाइकै पलमाँह छँडाए॥ अगणित गुण प्रभु सूरके कहि तोहिं सुनाऊं। अबहिंचरित करिकै गए तेही गुण गाऊं ॥७९॥ रामकली ॥ आजु सखी यमुना मग मोहन मोहिं छदी छँदलाइ। कोतू आहि कौनकी वनिता बात एक सुनि आइ॥ विहँसि कह्यो मोहिं श्याम पठायो सुनत विरह गति भूली। रति जल जलज हियो हुलस्यो मन पलक पाखुरी फूली॥ जानि कुमार गह्यो करसों कर ल्याई भवन बोलाइ। नैन मूँदि अंचल गहि डारयो मैं माधो मिलि आइ॥ छैल छुयो उर वदन विलोक्यो सकुचि रही मुसकाइ। छाँडहु सूरश्याम तुम्हरी अब आवनि जानि न जाइ ॥ ८० ॥धनाश्री॥ आवत ही मैं तोहिं लख्योरी। तुमहु भली उन को मैं जानति अधर विंब मनो कीर भख्योरी॥ अँग मरगजी पटोरी देखी उरनख छत छबिभारी । धनि वै नंद सुवन धनि नागरि कियो सुरति रण हारी॥ हँसतगई सखी भवन आपने मन आनंद बढाए । सूरश्याम राधिका धामके द्वारे शीश नवाए ॥८१॥सारंग॥ राधिका श्याम तन देखि मुसक्यानी। हार विन गुण बन्यो अधर काजर रेख नैन तंमोर तुतरातवानी॥ पागलटपटी बनी उरह छूटी तनी अंगकी गति देखि मन लजानी। उलटि कंकन पीठि बाहु विह्वल ढीठ चतुरई चतुर्भुज अधिक ठानी॥ पाणि पल्लव अधर दशन गहिरही बैन बोली वचन निहारि मानी। बलि बलि सूर प्रभु अंगभरि प्राणपति नागरी नवल उरघालि सानी ॥ ८२ ॥ विलावल॥ भली करी पिय ऐसेहूं मेरे गृह आए । लीन्हें कंठ लगाइ कै बडभागिनि पाए ॥ कहा सोच जिय करतहौ भुजगहि कर लीन्हों। गई भवन भीतर लिये तहँ बैठक दीन्हों॥ श्याम सकुचि अँग हेरहीं नागरि पहिचानी। चिह्न निहारत डर कहा आवतही जानी ॥ या छबिपर उपमा कहौं जो त्रिभुवन होई। तुम जानत यह रूपको अरु लखै न कोई॥ चंदन वंदन पानरंग अधरन काजर छबि । सूरश्याम उर करजको को वरणि सकै कबि ॥ ८३ ॥ काहेको पिय सकुचतहो । अब ऐसो जिनि काम करौ कहुँ जो अतिही जिय अकुचतहो॥ अबकी चूक नहीं जिय मेरे और दिननको जानि रहौ। सौंह करौ मेरी मो आगे डरडारौ जिन मौन गहौ॥ यह सुनि श्याम हरषि कुच परसे बारबार शिव सौंह करी। सूरश्याम गिरिधर गुण नागर बात आजुते सहीपरी॥८४॥ गुंडमलार॥ श्याम सौंह कुच परस कियो। नंदसदनते अबहीं आवत और त्रियनको नेमलियो॥ ऐसी शपथ करौ काहेको जु कछु आजुते करी सुकरी॥अब जु कालिते अनत सिधारो तब जानौगे तुमहि हरी॥ मैं सतिभाव मिली हाँसि तुमको कहा आजुकी सौंह करौं। सूरश्याम जो भई सुभई जू अबते सबको नेम धरौं॥ ॥ ८५ ॥ गुंडमलार ॥ अहो राजत राजीवनैन मोहन छवि उरग लता रंग लाग। जेहि बनिता रस वश कीन्हें निशि प्रगट होत अनुराग॥ सिथिल अंग अरु सिथिल पाग वनी सिथिल चरण गति आज। मनहुँ सेज रेवा ह्रदते उठि आवतहै गजराज॥ भालमध्य जावकरँग देखत लागतिहै मोहिं लाज। तुम अपने जिय यों जानतहौ तिलकलोक जई राज॥ हंस बंधु रव लोचन ललना मिलित निशाक्रांति काज। वदन चंद वियसंधि जानि नहिं बढत किरनि मनलाज ॥ भवन जीव

सुत लग्यो अधर पर यह छवि कही न जाइ। मनो बंधूक सुमन ऊपर विय अलिसुत बैठे आइ॥ कुच कुमकुम अवलेप तरुनि किए सोभित श्यामलगात। गत पतंग राका शशि विय संग घटा सघन सोभात॥ श्याम हृदय छलने ता ऊपर लगी करज कृत रेप। मनहुँ वसंतराज रुचि की राति अरुण किसलतरु भेप॥ कामवाण वर लिए पंच चितवत प्रति अँग अँग लाग। अब न जान गृह देउँ पियारे जब आए तब भाग॥ तादिनते वृषभानुनंदिनी अनत जान नाहिं दीन्हें। सूरदास प्रभु प्रीति पुरातन यहि विधि रस वश कीन्हें॥ ८६॥ अथ बड़ोमानसमय॥ बिलावल॥ सखियन सँग लै राधिका निकसी व्रजखोरी। चली यमुन स्नानको प्रातहि उठि गोरी॥ नंदसुवन जा गृह वसे तेहि बोलन आई। जाइ भई द्वारे खरी तब कढे कन्हाई॥ औचक भेट भई तहां चकृत भए दोऊ। ये इतते वै उतहिते नाहिं जानत कोऊ॥ फिरी सदनको नागरी सखि निरखत ठाढी। स्नान दानकी सुधि गई अति रिस तनुवाढी॥श्याम रहे मुरझाइके ढग मूरी खाई। ठाढे जहँके तहँ रहे सखियन समुझाई॥ इतनेहीकि ह्वै गए गहि बाँह लै आई। सूरज प्रभुको ले तहां राधा दिखराई॥ रामकली॥ राधहि श्याम देखी आइ। महामान दृढाय बैठी चिते कापे जाइ॥ रिसहि रिस भई मगन सुंदरि श्याम अति अकुलात। चकितह्वै जाकि रहे ठाढे कहि न आवै वात॥देखि व्याकुल नंदनंदन सखी करति विचार। सूर प्रभु दोउ मिले जैसे करो सोइ उपचार॥८७॥ कान्हरा॥ सखी एक गई मानिनि पास। लखति नहिं कछु भाव ताको मिटी मनकी आस॥ कहीं कासों कोन सुनिहै रिसानि नारि अचेत। बुद्धि सोचति त्रिया ठाढी नेक नहीं सुचेत॥ श्याम व्याकुल अतिहि आतुर यहि कियो दृढ़ मान॥सूर सहचरि कहति राधा बड़ी चतुर सुजान॥८८॥कान्हरो॥नहिं तेरो अतिही हठ नीको॥मेरो कह्यो सुनहु व्रज सुंदरि मान मनायो नागर पियको॥ सोइ अतिरूप सुलक्षणनारी रीझे जाहि भावतो जीको। प्यासे प्राण जाहिँ जो जलविनु पुनि कह कीजे सिंधु अमीको। तो जू मान तजहुगी भामिनि रविकी रसामि कामफल फीको।कीजे कहा समय विनु सुंदरि भोजन पीछे अचवनघीको॥ सूरस्वरूप गर्व जोवनके जानतिहो अपने शिर टीको। जाके उदय अनेक प्रकाशत शशिहि कहा डर कमल कलीको॥८९॥ सारंग॥ चितयो चपल नैनकी कोर।मन्मथ वाण दुसह अनियारे निकसे फूटि हिए वहि ओर॥ अति व्याकुल धुकि धरणि परे जिमि तरुण तमाल पवनके जोर। कहुँ मुरली कहुँ लकुट मनोहर कहुँ पट कहूँ चंद्रिका मोर॥ खन बूडत खनहीखन उछलत विरह सिंधुको बढो हिलोर। प्रेम सलिल भीज्यो पीरोपट फट्यो निचोरत अंचल छोर॥ फुरै न वचन नैन नहिं उघरत मानहुँ कमल भए विनुभोर। सूर सुअधर सुधारस सींचहु मेटहु मुरछा नंद किसोर॥९०॥नट॥ राधे तेरे नैन किधौं मृगवारे।रहत न युगल भौंह युग योते भजत तिलक रथ डारे॥ यदपि अलक अंजन गहि वांधे तऊ चपल गति न्यारे। घुंघट पट वागरज्यों विड्वत जतन करत शशि हारे॥ खुटिला युगल नाक मोती मणि मुक्तावलि ग्रीव हारे। दोउ रुख लिये दीपका मानों किये जात उजियारे॥ मुरलीनाद सुनत कछु धीरज जिय जानत चुचकारे। सूरदास प्रभु रीझिरसिक पिय उमन प्राण धनवारे॥९१॥राधे तेरे नैन किधौंरी वान। यों मारे ज्यों मुरछि परे धर क्यों करि राखै प्रान॥ खगपर कमल कमल पर केदलि केदलि पर हरि ठान। हरि पर सर सरवर पर कलसा कलसा पर शशिभान। शशिपर बिंब कोकिला ताबिच कीर करत अनुमान॥ बीच बीच दामिनि द्युति उपजत मधुप यूथ असमान॥ तू नागरि सब गुणनि उजागरि पूरण कला निधान।सूरश्याम तो दरशन कारण व्याकुल परे अजान॥९२॥ नट ॥राधे तेरे नैन किधौं बटपारे।

चितवत दृष्टि बाण भरि मारत घूमत ज्यों मतवारे॥ करि अंजन मनोपिय मन रंजन खंजन नैन सँवारे। चलि मुसक्याय श्याम सुंदर पै नाचत ज्यों नट वारे॥ थकित भए देखत नँदनंदन तिन सों कहिकै हारे। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को कोटि मान पचिहारे॥९३॥सारंग॥चपल भामिनिकै भौंहैं वंक। अलक तिलक छवि चित्र लिखीसी श्रुति मंडल ताटंक॥ तेरो रूप कहाँलौं वरणौं नागर ताको अंग। उर सुदेश रोमावलि राजत मृगअरि कोसो लंक॥ तेरे नैन सुभट अनियारे नग वर धरन निसंक।सूरजचरित चुनौती पठवत भयो मदन मन रंक९४॥मलार॥यह ऋतु रूसिवेकी नाहीं। वरषत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हरषि मिलाहीं॥ जे तमाल ग्रीषम ऋतु डाहीं ते तरवर लपटाहीं। जे जल विन सरिताते पूरण मिलि न समुद्रहि जाहीं॥ जोवन धनहै दिवस चारिको ज्यों वदरीकी छाँही॥ मैंदंपति रस रीति कहीहै समुझि चतुर मनमाहीं। यह चित्त धरहु सखीरी राधिका दै दूतीको बाहीं। सूरदास हठ चलहु राधिका सँग दूती पिय पाहीं॥९५॥ बिलावल॥ दधिसुत वदनी राधिका दधि दूरि निवारौ। दधिसुत दृष्टि मेलि दधिसुत में दधिसुत पतिसों क्यों न विचारौ॥ घरहि छांडिकै घरहि पकरिलै घरहु लता घनश्याम सवारौ। हारपहरि कहि हार पकरि करि हार गुवर्धननाथ निहारौ॥ समुझि चली वृषभानुनंदिनी आलिंगन गोपाल पियारौ। विद्यमान कलहंस जात गलि सूरदास अपनो तनुवारौ॥९६॥ सोरठ॥ राधे हरि रिपु क्यों न छपावति। मेरुसुतापति ताके पति सुत ताको क्यों न मनावति॥ हरि वाहन ता वाहन उपमा सो तैं धरे दृढावति। नव अरु सात वीस तोहिं सोभित काहे गहरु लगावति॥ सारँग वचन कह्यो करि हरिको सारँग वचन निभावति। सूरदास प्रभु दरश विना तुव लोचन नीर बहावति॥९७॥ नट॥ राधे हरिरिपु क्यों न दुरावति। शैल सुतापति तासु सुतापति ताके सुतहि मनावति॥ हरि वाहन सोभा यह ताकी कैसे धरे सुहावति। द्वै अरु चारि छहो वै वीते काहे को गहरु लगावति॥ नौ अरु सात राज तहँ सोभित ते तू कहि क्यों दुरावति। सूरदास प्रभु तुमरे मिलनको श्रीरंग भरि आवति॥९८॥ सारंग॥ राधे हरिरिपु क्यों न दुरावति। सारँग सुत वाहनकी सोभा सारँग सुतन बनावति॥ शैल सुतापति ताके सुतपति ताके सुतहि मनावति। हरि वाहनके मीत तासुपति तापति तोहिं बुलावति॥ राकापति नहिं कियो उदो सुनि या समये नहिं आवति। विधि विलास आनंद रसिक सुख सूरश्याम तेरे गुण गावति॥९९॥ राधा तैं बहु लोभ कर्‍यो। लावनरथ तापति आभूषण आनन ओप हर्‍यो॥ भ्रुकुटि कोदंड अवनि धारि चपला विवस ह्वै कीर अर्‍यो। पिक मृणाल अलि अरित रूप सम ते वपु आप धर्‍यो॥ जलचर गति मृगराज सकुचि जिय सोच नजाइ पर्‍यो। सूरदास प्रभुको मिलि भामिनि निशि सब जात टर्‍यो॥२००॥ गौरी॥ राधे यामें कहा तिहारो। मुकहि मकर तनु हाटक वेनी सो पन्नग अँग कारो॥ गति मराल केहरि कटि कदली युगल जंघ अनुहारो। नैन कुरंग वचन कोकिलके नाशा शुक कहां गारो॥ विद्रुम अधर दशन दाडिम कन करो न तुम निरवारो। सूरदास प्रभु त्रिभुवन पतिको एको न उनहिं उवारो॥१॥ ॥ बिहागरो॥ तोहिं किन रूठब सिखई प्यारी। नवल वैस नव नागरि श्यामा वै नागर गिरिधारी। सिगरी रैनि मनावत बीती हाहाकारि हों हारी। एते पर हठ छांडत नाहीं तू वृषभानु दुलारी॥ शरद समय शशि दरशि समर सर लागे उन तन भारी। मेटहु त्रास दिखाय वदन विधु सूरश्याम हित कारी॥२॥ ईमन॥ आजु तेरे तन में नयो जोवन ठौर ठौर सुवनयो पिय मिलि मेरे मन काहे रूपि रही वेकाज। अधिक राखैं बडाई तोहि तोहि करै माई और सब त्रियन में तू अधिकाई

अरु तिनमें भाग सुहाग विराजत आज ॥ रिस दूरि करौ छिआ मानि मेरे कहे तोहिं रूपनैन आवे लाज । सूरप्रभुको औसेर अतिही भई अबेररी वेग चालि साजि शृंगार काढि माठी खग वारो थाइके साज ॥ ३ ॥ खट ॥ देखरी कमलनैन मधुर मधुर वैननि हँसि हँसि कचके करत मनु हारि । जव हरि नीचे चितवत भरि भरि अँखियन लाडिली वारति मानकी रिस निवारि ॥ अति आसक्त जानि मनमोहन रीझि मान दानँदे प्रीति विचारि । सूरदास प्रभुके चरणन पूजरी आली प्रेम उमँगि अँसु ढारि ॥ ४ ॥ इमन ॥ अनवोली क्यों न रहैरी आली तू आइ मोसों वात वनावन । बहुत सहीहो घर आएते ऊपर जात न तू लागीहै पाछिली सुरति दिवावन ॥ वै अति चतुर प्रवीन कहा कहौं जिनि पठई तोको वहरावन । सूरदास प्रभु जियकी होनीकी जानति कांच करोती में जली जैसे ऐसे तू लागी प्रगटावन ॥ ५ ॥ कान्हरो ॥ तू आई है वात वनावन । जाहि न ह्यांते वैठि रही है ए आई है मोहिं मनावन ॥ आरि करत कहि मोहिं सुनावत जाइरहै नाहिं ताके । को उनकी ह्यां वात चलावे इतनो हितहै काके ॥ इक रिस जरति मनहि मन अपने तोहीको वै भावत । सूरदास दरशन ता गृहको उहै ध्यान मन भावत ॥ ६ ॥ केदारो ॥ यह कहि क्रोध मगन भई । रही एकटक सांस विना तन विरहा विवस भई ॥ वारंवारहि सखी वुलावति कहा भई दई । नारि नउमी दशा पहुँची ह्वै अचेत गई ॥ श्याम व्याकुल धरणि मुरछे त्रिया रोप हई । सूर प्रभु गए तीर यमुना काम जरनिठई ॥ ७ ॥ कान्हरो ॥ रिसमें रसकी वात सुनाई । चतुर सखिन यह वुधि उपजाई ॥ क्रोध मगन त्रिय चतुर जगाई । जागतै दूतिका वोली तोको श्याम वुलाई ॥ उमाधि गई तनु सुरति सँभारी फिरि वैठी लै मान । कान्ह गए यमुनातट व्याकुल यह गति देखि अजान ॥ काहेको विपरीति वढावति यह कहि गई हरि पास । देखे जाइ सूरके स्वामी कुंजद्रुमन तर वास ॥८॥ विहागरो ॥ हरि मुख राधा राधा वानी । धरणी परे अचेत नहीं सुधि सखी देखि विकलानी ॥ वासरगयो रैनि इक वीती विनभोजन विनपानी । वाँहपकरि तव सखिन जगायो धनि धनि सारँग पानी ॥ ह्यां तुम विवस भए हो ऐसे ह्वां तौ वै विवसानी । सूर वने दोउ नारि पुरुप तुम दुहुँकी अकथ कहानी ॥९॥ अडानो ॥ लाल अनमने कत होत हो तुम देखो धों देखो कैसे करि ल्याइहौं । जलनिकटकी वारु जैसे गाढे गहि ऐसी कठिन होती त्रियाकी प्रकृतिहों तो करही कर पघिलाइहौं॥ रिस अरु रुचि हौं समुझि देखि हौं वाके मनकी ढरनि वाकी भावती वात चलाइहौं । सूरदास प्रभु तुमहिं मिलैहौं नेक न ह्वैहौं न्यारे जैसे पानी में रंग मिलाइहौं॥१०॥भैरव॥सखी गई हरिको सुख दै। व्याकुल जानि चतुरई कीन्ही अव आवति प्यारीको लै ॥ आतुरगई मानिनी आगे जाइ कह्यो अजहूं रिस है । मोहन रहे मुराछि द्रुमके तर त्रिभुवन में ह्वैहै यश है । अजहूं कह्यो मानिरी मानिनि उठि चलि मिलि पियको जियलै । सूर मान गाढो त्रिय कीन्हो कहैं वात कोउ कोटिकलै ॥११॥सारंग॥ तू चलिरी वन वोली श्याम । कमलनैनके तू अति वल्लभ सुरति करी हरि आतुर काम ॥ मुरली में तुव नाम प्रकाशत तेरे हितको सुनरी वाम । कोमल करनि सुमन वहु तोरत रुचिसों सेज रचत गृह धाम ॥ मन क्रम वचन शपथ चरणन की विसरत नहीं तुम्हारो नाम।सूरदास प्रभुको मिलि भामिनि ज्यों पायो चाहत विश्राम ॥१२॥ रामकली ॥ रसिक राधे वोली नंदकुमार । दरशन को तरसत हरि लोचन तू सोभाकी धार॥ खंजरीट मृग मीन मधुप मिलि रंभारचि अनुसार। गौरि सकुचि शशिविरथ कियो रथ मेरु उलट्यो वाडितार ॥ कौनहेतुते मिट्यो सितासित विछुरी कौन विचार । मंदाकि

नि मानो शिर धरिकै रुद्रनि करी पुकार ॥ राख्यो मेलि पीठिते परधन हर जु कियो विनहार। सूरदास प्रभु सों हठ कीन्हों उठि चल क्यों न सवार ॥१३॥ सारंग ॥ वोलत हैं तोहिं नंद किसोर। मान छांडि सखी नैकचितैरी पैयांलागौं करौं निहोर ॥ तरिवन तिलक वनी नकवेसरि चक्षु काजर मुख सुरँग तमोर। सब शृंगार वन्यो योवन पर लै मिलि मदन गोपाल अकोर ॥ लताभवन में सेज विछाई वोलत सकल विहंगम मोर।सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको ज्यों दामिनि घन चंद चकोर॥१४॥ केदारो ॥ चलराधे बोलत नंद किसोर। ललित त्रिभंग श्याम सुंदर घन नाचत ज्यों वन मोर॥ छिन छिन विरस करतिहै सुंदरि क्यों वरहत मनमोर। आनँदकंद चंद वृंदावन तू कारि नैन चकोर ॥ कहा कहौं महिमा तु अभागकी पुण्य गनत नाहिं और। सूरसखी पिय पै चलिनागरि लै मिलि प्राण अकोर ॥ तोहिं बोलैरी मधु केशी मथन। यमुना कूल अनुकूल तृपारत चकित विलोकत सकल पथन ॥ नकरु विलंव भूषण कृत दूषण चिहुर विहुर नाना करनगयन। समुद कुमुद गति मकर मिलन दुति पसित भए सब नाथ नथन ॥ निंकुंजनिकी सैन साजे एकाएकी रमत सखी वियो नसवन। अति जु कुसुमवास सखीरी तुम्हारी आश हरिजू रचि धरे अपने हाथन॥युगजुजातपल श्रीगोपालके कुटिल तमकिरी चढे हैं रथन । सूरदास अति गति कामरत वासरगत भयो तुम्हरी कथन॥१५॥सारंग॥ माननि मान मनायो मोर। हौं माई पठई हौं तोपै प्रीतम नंदकिसोर ॥ तेरे विरह वृषभानुनंदिनी मोहन वहरावत डोर । तानतरंग मुरलि में लैलै नाम बुलावत तोर ॥ वलि तुहि जाउ वेगि लै मिलऊ श्यामसरोज वदन तुव गोर। सूरदास ऐसी दृष्टि सुधानिधि चरणकमल कमला चितचोर ॥१६॥ माननि नैक चितै यहि वोर । नाशत तिमिर वदन प्रकाशते ज्यों राजत रविभोर ॥ तुव मुख कमल मधुप मेरोमन विंध्यो नैनकी कोर। वक्रविलोक माधुरी मुसुकनि भावतहै प्रियतोर ॥ अंतर दूरि करौ अंचलको होइ मनोरथ मोर।सूर परस्पर रहौ प्रेमवश दोउ मिलि नवलकिसोर॥१७॥नट॥कहि पठई हरिवात सुचितदै सुनि राधिका सुजान। तैंजु वदन झाँप्यो झुकि अंचल इहै न दुख मेरे मन मान ॥ यहपै दुसह जु इतनेहि अंतर उपजि परै कछु आन। शरद सुधा शशिकी नवकीराति सुनियत अपने कान ॥ खंजरीट मृग मीन मधुप पिक कीर करत हैं गान । विद्रुम अरु वंधूप विंव मिलि देत कविन छविदान। दाडिम दामिनि कुंदकली मिलि वाढ्यो वहुत बखान ॥ सूरदास उपमा नक्षत्र गन सब सोभित विनभान॥१८॥ सारंग ॥ रहीदै घूंघटपटकी वोट। मनो कियो फिरि मान मवासों मन्मथ वंकट कोट ॥ नहसुत कील कपाट सुलक्षण दै दृग द्वार अगोटो । भीतर भाग कृष्णभूपतिको राखि अधर मधु मोटो॥ अंजन आड तिलक आभूषण साचि आयुध वड छोट। भ्रुकुटी सूर गही करसारँग निकर कटाक्षनिचोट ॥१९॥विलावल॥ तैं जु नीलपट वोट दियोरी। सुन राधिका श्यामसुंदरसों विनहि काज अति रोष कियोरी ॥ जलसुत किरनि महाइक सोभा किधौं जलमें प्रतिविंव विराजत मनहुँ शरद शशिराहु लियोरी । भूमि घिसनि किधौं कनकखंभ चढि मिलि रसहीरस अमृतपियौरी ॥ तुम अतिचतुर सुजान राधिका कत राख्यो भरि मानु हियोरी। सूरदास प्रभु अँग अँग नागरि मनो काम कियो रूप वियोरी॥२०॥सारँगरिपुकी ओट रहे दुरि सुंदर सारँग चारि। शशि मृग फनिग ध्वनिग दोउ अँग सँग सारँगकी अनुहारि ॥ तामें एक और सुत सारँग वोलक वहुरि विचारि। परकृत एक नामहैं दोऊ किधौं पुरुष किधौं नारि॥ ढाकति कहा प्रेमहित सुंदरि सारँग नैक उघारि।सूरदास प्रभुमोहे रूपहि सारँग वदन निहारि२१॥यहि तेरे वृंदावन

वाग । सुन राधिका कदम विटपनकी शाखा एक अमीफल लाग ॥ श्याम अरुण कछु अधिक पीत छवि वरणिजाइ नाहिं अंग विभाग।अति सुपक्क मुरलीके परसत चुइ चुइ उमगि परत रसराग॥व्रजवनि ता वर वारि कनकमय रोके रहत सुधा सुरनाग । तुव प्रताप छुइ सकत नसुंदरि सुर मुनि मर्कट को किल काग ॥ मैं मालिनि जतननि जलजुगयो सींचत सुहथ परे करदाग। सूर सुश्रम उठि भेंटि पर स्पर पिउ पियूप पाए वडभाग॥२२॥सारंग॥देखि श्यामको वदन शशि माई मोहिं अपनपो भूल्यो। वि द्यमान या दृष्टि सरोवर मोहन वारिज फूल्यो ॥ करिअगाध सघन वृंदावन चंचल लता तरंग निमि मृणाल सुमृत पत्रावलि गावत मुनिजन शृंग ॥ सुरभी सुभग हंस गोवृप मृग जलचर जीव अनंत । सूर कछू यह ह्यांरी अद्भुत लीला कमलाकंत॥२३॥विलावल॥अव राधे नाहिन व्रजनीति । नृप भयो कान्ह काम अधिकारी उपजीहै ज्यों कठिन कुरीति ॥ कुटिल अलक भ्रुवचारुनैन मि लि सचरे श्रवण समीप सुमीति । वक्र विलोकनि भेद भेदिआं जोइ कहत सोइ करत प्रतीति॥पोच पिसुन लस दशन सभासद प्रभु अनंग मंत्री विन भीति । सखि विन मिलै तौ नावनिऐहै कठिन कुराज राजकी ईति ॥ मंदहास सुखमंद वचन रुचि मंदचाल चरणनभई प्रीति । नख शिखते चित चोर सकलअँग जस राजा तस प्रजा वसीति ॥ तेरो तनु धनरूप महागुण सुंदर श्याम सुनी यह कीर्ति । सोकर सूर जेहि भाँति रहै पति जिनि वल वांधि वढावहु छीति॥२४॥नट॥राधे तेरे रूपकी अधिकाइ । जो उपमा दीजे तेरे तनु तामें छवि नसमाइ ॥ सिंह सकुचि सर व्यथा मरति दिन विन सोइ नीर सुकाइ । शशिउर घटत हेम पावक परि चंपक कुसुम रहे कुम्हिलाइ ॥ इभ तूटत अरु अरुण पंकभए विधिना आन वनाइ । कद्रुजपैठि पतालदुरेरहे खगपति हरिवाहन भएजाइ ॥ हंसदु रयो सर दुरयो सरूरुह गज मृग चले पराइ।सूरदास विचारि देखिमन तोर रसन पिक रही लजाइ ॥२५॥मलार ॥ राधे तेरो रूप नआनसो ॥ सुरभी सुतपति ताको भूपण सुत घन उति तन पूजे भान सो । अमीरसाल कोकिला जु साधे अंबुज चित्त अंकुंभि रामसो॥ विद्रुम अधर दशन दाडिम विज भ्रुकुटी किए सुठानसो । सूरदास प्रभुसों कव मिलिहौं सुफलरूप कल्यानसों॥२६॥सारंग॥ राधे यह छवि उलटि भई। सारँग ऊपर सुंदर कदली तापर सिंह ठई॥ताऊपर द्वै हाटक वरणों मोहन कुंभ म ई ॥ तापर कमल कमल विच विद्रुम तापर कीर लई । ताऊपर द्वै मीन चपल हैं सउती साधरही । सूरदास प्रभु देखि अचंभो कहत न परत कही ॥ २७ ॥ केदारो ॥ लागो या वदनकी वलाई । खंजन तेरे खरे कटाक्षनि न्याउ गुपाल विकाई ॥ का पटतरद्यों चंद्र कलंकी घटत वढ़त दिन लाज लजाइ। जा शशिकी तुम आरि करतहौ चंद्र निहारो आइ॥ढोटा जोपै खरो अटपटो वातें कहत वनाइ।सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनते तनुकी तपत वुझाइ॥२८॥विलावल॥जलसुत प्रीतम सुत रिपु वंधव आयुध आनन विलखभयोरी । मेरु सुतापति वसत जु माथे कोटि प्रकाश रिसाइ गयोरी ॥ मारुतसुत पति अरिपुर वासी पित वाहन भोजन नसोहाइ । हरसुत वाहन अशन सनेही मानहु अनल देह दवलाइ ॥ उदधिसुता पति ताकर वाहन ता वाहन कैसे समुझावै। सूरश्याम मिलि धर्म सुवन रिपु ता अवतारहि सलित वहावै ॥ २९ ॥ नट ॥ लोचन श्याम जूके सायक। नैन चितै वृपभानु नंदिनी वश करि गोकुलनायक ॥ यहै जानि पठई नँदनंदन तुम सव विधि सुखदायक। तू व्रजनाथ शिरोमणि सजनी श्याम सुंदर पिय लायक ॥ लग लागे पागे उर अंतर कठिन शिलीमुख पायक । सूरदास प्रभु मोहन जोरी करी कुंज मनभायक॥३०॥ सारंग ॥ जवते श्रवण सुन्यो तेरो नाम । तवते हा राधा हाराधा हरि इहै जु मंत्र जपत दुरि दाम ॥ वसत

निकुज कालिंदीके तट सुरभी सखा छांडि सुखधाम। विरह वियोग महायोगी ज्यों जागतही बीतत युग याम॥ कबहुँक किसलय पीठ सुचिर रुचि कबहुँक गान करत गुणग्राम। कबहुँक लोचन मूंदि मौनह्वै चित चिंतत अँग अँग अभिराम॥ तर्पण नैन हृदय होमत हवि मन वच क्रम औरै नहिं काम।तरफत नैनहु देत मनोहर ब्रह्मभोज बोलत विश्राम। सूरश्याम कृप गात सब हि विधि दरशन दै पुरवै पियकाम २१॥ अडानो॥मोहन नीकोरी अति नीको।तासों नरूसन कीजै हितकै मनाइ लीजै हँसत हँसत दूरि करै न रिसजीको॥अतिहि मानिनी जे जे जेऊ मैं मनाइ दई अतिहि कठिन हठ देख्योरी तो त्रीको।दूसरी यामिनि गई त्यों त्यों तू हठीली भई सूर निरखि मुख देखौ प्यारी पीको॥३२॥ विहागरो॥ और सखी इक श्याम पठाई। हरिको विरह देखि भई व्याकुल मान मनावन आई॥ बैठी आइ चतुरई काछे वह कछु नहीं लगार। देखतिहौं कछु और दशा तुव बूझति वारंवार॥ मन मन खिझति मानिनी याको कौने इहां पठाई। सूर सबन कछु मान मनायो सो सुनिकै इह आई॥ ३३॥विहागरो॥ अजहूं मान तजत नहिं प्यारी।मदन नृपतिके सैन साजिकै घेरे आनि विहारी॥ इतने कटक देखि मनमोहन भीत भए भए भारी। कुसुम बाण जित तितते छूटत खगरव घटा सवारी॥ पल्लव पटनिसान भँवरा भर मंजरीस ललसाटी। सूरदास प्रभुके सहायको उठि चलि वेगि हकाटी॥ ३४॥ सारंग॥ वेगि चलौ बलि कुँवरि सयानी। समय वसंत विपिन रथहैंगै मदन सुभट नृप फौज पलानी॥ चहुँ दिशि चांदिनि निशा चंचली मनो धवल धरै धूरि उडानी। सोरहकला छपाकरकी छवि सोभित शीश छत्र शिरतानी॥ बोलति हँसाति चपल वंदीजन मनहु प्रशंसत पिक वर वानी। धीर समीर रटत वर अलिगण मनहुँ कमोदिक मुरलि सुठानी॥ कुसुम शरासन अधिक विराजत कठिन मानगढ अति अभिमानी। सूरदास प्रभुकीहै यह गति करहु सहाय राधिका रानी॥ ३५॥ मलार॥ सुनरी सयानी त्रिय रूसिवेको नेमलियो पावस दिनन कोउ ऐसोहै करतरी। दिशिदिशि घटा उठी मिलिरी पियासों रूठी निडर हियो है तेरो नेक न डरतरी। चलिएरी मेरी प्यारी मोको मान देनहारी प्राणहूते प्यारेपति धीर न धरतरी। सूरदास प्रभु तोहिं दियो चाहै हित चित हँसि क्यों न मिलै तेरो नेम है टरतरी॥३६॥सेजराचि पचि साज्यो सघन कुंजनिकुंज चित चरणन लाग्यो छतियां धरकि रही। हाहाचल प्यारी तेरो प्यारो चौंकि चौंकि परै पातकी खरक पिय हियमें खरकरही॥ वात न धरत कान तानति है भौंहवान तऊ न चलति वाम अंखिया फरक रही। सूरदास मदन दहत पिय प्यारी सुनि ज्यों ज्यों कह्यो त्यों त्यों वरु उतको सरकिरही॥ ३७॥ तूतो मोसों बात न कहति माई चलौगी कहांते। काहेको गहरु कीजै बिन थर कहा लीजै दीजै जाइ उत्तर मैं आईहौं जहांते॥ अनोखी मानिनी नई यह पाहन पूतरी भई बैनन बदति और जरति नहाते।आई हौं शपथ खाइ जात न परत पाँइ सूरदास प्रभु नवल पहाते॥३८॥सारंग॥ उतते वे पठवत इतते ए नाहिं मानत हौं तौ दुहुनि बिच चकडोरी कीनी। क्रोध भेष मुख सुदेश नैनन छवि नकहि आवै आतुरह्वै उठिधाइ रावरेलीनी॥ तामरस लोचन हाव भाव विन करै मानै नमानिनी मान रंगभीनी॥सूरजप्रभु राइ शिरोमणि आपुहि चलि देखौ क्योंन नायका नवीनी॥३९ हो पिय रीझि आइ गइही मान छुडावन पिय रीझि आइ। ऐसी छवि राजत है मोपै सोवरणीनहिं जाइ॥ आपुन चलिए वदन देखिए जौलौं रहै निठुराइ। सूरश्याम प्यारी अति राजति रावरीय दुहाइ॥४०॥कल्याण॥ मैं तुम्हैं हँसत खेलत छांडिगई अब न्यारे अनबोले रहे दोऊ।इत तुम रूखे ह्वै

रहे गिरिधर उत अनमनी अंचल उरमाई मुख जंघ लगाइ रही ओऊ ॥ नीची दृष्टि करी धरणी नखनि करोवति एहो पिया तवहीं एक एक घुंघट तन चिते रही आहि कहाहो करो अब सोऊ। सूरदास प्रभु प्यारो आको भरिजाइ लीजे छोडो छोडो कहन देहु और नमानै कोऊ४१॥ईमन॥अजहूँ रैनि तीन यामहैजू काहेको हरवरात श्यामजू मैंतो वाकी प्रकृति,लिए कैहों वात जोपै रिस देखि हौंतो घरिक लागि है तिहारी प्यारी लाडिली वामहैजू॥पैज किए जाति ताहि अवलिए आवतिहौं मेरेतौ तिहारे सुख सुख है याते कौन काम हैजू। सुनहु सूरज प्रभु अवके मनाइ ल्याउँ वहुरि रुठाय हौ जू तौ मेरी राम राम है जू॥४२॥ सारंग॥जहां बैठे माधौ तहां तू बुलाई राधे यमुना निकट शीतल छहिआं। आछी नीकी लागति कुसुँभिसारी गोरे तन परम चतुर चलि हरि पहिआं ॥ दूती एक गई मोहन पै जाइ कह्यो यह पिय पहिआं। सूरदास सुनि चतुर राधिका श्याम रैनि बृंदावन महिआं ॥४३॥सूही॥झूमक सारी तनगोरेहो॥जगमग रह्यो जराइ को टीको छविकी उठत झकोरेहो॥ रत्न जडितके सुभग तरौना मनहु जात रवि भोरेहो॥दुलरीकंठ निरखि पिय इकटक दृगभए रहे चकोरे हो॥सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन को रीझि रीझि तृणतोरेहो४४ईमन॥ विरसकीजै नभामिनी रस में रिस की वात। हों पठई तोहिंलैन साँवरे तोहिं विनु कछु न सोहात॥हाहाकरति तेरे पायँत परतिहौं छिन छिन निशि घटिजात। सूरश्याम तेरो मग जोवत अति आतुर अकुलात ॥४५॥ विलावल॥ उठ राधे कत रैनि गँवावै। महिसुत गति तजि जलसुत गति ले सिंधुसुता पति भवन न भावै॥ अलि वाहनको प्रीतम वाला तावाहन रिपु ताहि सतावै । सो निवारि चलि प्राणपियारी धर्म सुनहि मति भाव न पावै॥ शैलसुता सुत वाहन सजनी तारिपु तामुख शब्द सुनावै । सूरदास प्रभु पंथ निहारत तोहिं ऐसो हठ क्यों वानि आवै॥४६॥विहागरो॥उत्तर न देत मोहनी मौन ह्वै रहीरी सुनि सब बात नैकहु नमटकीरी। अवधौं चलैगी कव रजनी गईरी सव शशि वाहन धरनी वै देखि लटकीरी॥ सूरसखि जाइ वलि राधिका कुँअरि चालि आजु छवि नीकी तेरे आछे लीलपटकीरी॥४७॥ सारंग॥ जिनि हठ करहु सारँग नैनी। सारँग सजि सारँग पर सारँग ता सारँग पर सारँग बेनी॥ सारँग रसन दशन पुनि सारँग सारँग सुत दृग निरखी पैनी॥ सारँग कहौ सुकौन विचारो सारँग पति सारँग रचि मैनी॥ सारँग सदनहिले जु वरनगई अजहुँ न मानति गति भई रैनी। सूरदास प्रभु तुव मग जोवै तू अंधकरिपु तारिपु सुखदैनी॥४८॥विहागरो॥सर्वरी सर्व विहानी तोहिं मनावति राधारानी॥शुक्र उदय होन लाग्यो जागे तमचुर ढरिआई जु मृगानी। प्रफुलित कमल गुंजार करत अलि पहफाटी कुमुदिनि कुँभिलानी॥सूरश्याम वन मुरछि परेहैं माननिवारो मोपरक्यों झहरानी४९॥ विहागरो॥ श्यामा प्यारी वोलन लागे तमचर घटि गई रजनी। अरी वै मनमोहन ब्रजनायक ठाढे सजनी॥ ठाढे हैं हरि कुंज द्वारे ललित वेणु बजाइ हो।श्रवण सुनत कैसे रहत कैसे तोहिं गेह सुहातहो। तुम कुँअरि वृषभानुकी कछु नेह प्रीति नजानहू। कहि पठई हरि तोहिं काहेन चित्त में कछू आनहू॥ नंदनंदन कह्यो ऐसे सुंदरी ह्यां आइहो॥और नाहिं कछु काज वनमें नेक मधुर सुरगाइहो। सूर प्रभुहि विचारि मनमें प्रीति सों उरलाइए । यहे पुनि पुनि मैं कहति राधिका मन वंछित फल पाइए॥५०॥केदारो॥मोहन तेरे अधीन भएरी इति रिस कवते कीजतरी गुण आगरी नागरी॥तेरे अनउत्तर सुनि सुनि श्याम हँसि हँसि देत नैक चितै इत भाग आगरी॥तेरोई भाग सुहाग तेरोई अनुराग तेरेही माथे रतिरी तू सुन रूप उजागरी॥सूरदास प्रभु तेरो मग जोवत तुही तुही रट लागी जैसे मृगिनी भूली वागरी५१॥नट॥कौन कुमति आईरी जो कह्यो न मानति। छांडे मान सुन

बात सयानी कत हरि सों हठ ठानति ॥ यह निशि वृथा विहाय पियाविन सोच नहीं उरआनति। वोउच श्याम श्याम दामिनिको मनो शरद ऋतु जल घटत न जानति ॥ धतुप कलाससही सब सिखि कै भई सयानी गानति।सूर सुंदरी आपुही कहा शर संधानति ॥५२॥ तू सुन कान दैरी मुर ली ध्वनि तेरे गुण गावैं श्याम कुंज भवन । सन्मुख ठाढे ह्वै ताहीको अंक भरत तेरे तनु परसे ज्यों आवतु पवन।।तेरो स्वरूप आनि उर अंतर नैन मूँदि निकसन कहत न करत गवन।सूर दास प्रभुके तू तन मन रमि रही रोम रोम प्रति याहीते नाम पायो राधारवन॥५३॥केदारो॥प्यारी है प्रीतम आरति करतु । तुम्हरे काजे कुँवरि राधिका मेरे पांइनि परतु॥वरही मुकुट लुढत अवनी पर नाहिन निज भुज भरतु।वारंवार रहटके घट ज्यों भरि भरि लोचन ढरतु॥अति आधीन मीन ज्यों जल विनु नाहिन धीर धरतु । सूर सुजान सखी सुन तुम विनु मन्मथ पावक जरतु॥५४॥सारंग॥ मृगनैनी तू अंजन दै । नवल कुंज कालिंद सुता तट पीको सर्वसु लै ॥ सोभित तिलक मृगमद रुचि शुचि भुव वंक चितै ॥ हाटकघाटै सुधा पियनको नागिनि लट लटकै । नैन निरखि अँग अंग निरखियो अनख पिया जुतजै ॥ वादर वसन उतारि वदनयो चंद्रा जों न छपै । खंजन मीन अंजन दै सकुचे कविसो काहि गनै॥सूरश्यामको वेगि दरश देहु काम मदन जुडहै॥५५॥नट॥ राधे कत रिस सरस तई। तिष्ठति जाइ वारवारानि पै होति अनीतनई॥नित तुव जलनि सिंधुसुत मान त मृगमद श्याम दई । जल थल खगनि सुमन गुरु दोऊ द्विज दुति किरन भई ॥ विरहत कुंज विलासन पद्मिनि सकुच न सेत कई। दुखी दुरे फल त्राहि विरहिनी को अति अपराध वई ॥ अव तुम जाहु निकुंज भामिनी नातरु करत खई।परसै सूर चतुर चिंतामणि विपुल विलास मई ॥५६॥ देवगंधार ॥ मानिनि मान तक्यो न कह्यो । प्रथम श्याम मन चोरि नागरी अब क्यों मान गह्यो ॥ जानति कहारीति प्रीतमकी वन जन जोग मह्यो । रुद्रवीर रवि शेष सहसमुख तिनहु न अंत लह्यो ॥ बैठे नवल निकुंज मंदिरमें सो रसजात वह्यो । सूरदास सखि मोहन मुख निरखहु धीरज नाहिं रह्यो ॥५७॥ नट ॥ कुंजभवनमें ठाढे देखो अँखि यन भारि तबमैं जाऊंगी वालि। मोपै नदेख परे खरे द्रुमडार गहे अकेले नैक तू ठाढीहो ढिग चालि ॥ तेरोरी वदन प्रफु लित अंबुज हारि जूके नैनामैं देखे अति आतुर अलि । सूरदास नँदनंदन प्यारे नैक नकीजै हाहा दूरिकरोमानै मिलि॥५८॥केदारो॥तेरे मानिवेहु तेरी माननि कोइ लागत ऐसेहि रहिए जोलौं लालहि लै आऊं। औरनकी हासी खेल तिहारी रुषुय माय विरसमें यह रस नैनन आनि देखाऊं ॥ उलटि पियपै जाउ नौतम चोप वढाउ सोरह कलाको शशि कुँहुँ विगसाऊं। सूरदास प्रभु गिरिधरन सोंहिलिमिलिवेको यह सुख रूप अनूपम पाऊं॥५९॥विहागरो॥कहत श्याम सों जाइ मनावो मेरे कहे न मानैजू। कहा रही मौन घालि न कहूं अनुमानैजू ॥ कहा मनमें घालि बैठी भेदमैं नाहिं लखि सकी। आप ह्यां वह वहां बैठे जात आवतही थकी ॥ नैकहू जो कह्यो मानै कोटि भांति न मैं कही। हहाकरि मनुहारि करि करि सुनतही अति रिस गही ॥ कहा बैठे चले वनि है आपहू नहिं मानिहो। तुम कुँवर घरहीके वाढे अव कछू जिय जानिहो ॥ वेगि चलिए अनख जैहै तुम इहां उह वहां जराति है। वाके जिय कछु और ह्वैहै कपट कारि हठ धरतिहै ॥ राधिका अति चतुर जानौ जाइ ता ढिगही रहौ। कहा जो मुख फेरि बैठी मधुर मधुर वचन कहौ ॥ सूरप्रभु अव बनै नाचे काछ जैसो तुम कछयो। कहियत गुण प्रवीनहै राधा क्रोध हीमें विष भछयो॥६०॥ सुनि यह श्याम विरह भरे। वारंवारहि गगन निहारत कबहूं होत खरे ॥ मानिनी नहिं मान मोच्यो

दूसरी निशि आजु । तब परे मुरछाइ धरणी काम कर्यो अकाजु ॥ सखिन तब भुजगहि उचाए कहा बावरे होत । सूर प्रभु तुम चतुर मोहन मिलो अपने गोत ॥६१॥ बिलावल सूही॥ श्याम चतुरई कहाँ गँवाई । अब जाने घरके बाढ़ेहो तुम ऐसे कहा रहे मुरझाई ॥ विना जोर अपनी जांघनके कैसे सुख कियो चाहत । आपुन दहत अचेत भए क्यों उत मानिनि मन काहे दाहत ॥ उहँई रहो कहैंगी तुमको कतहूं जाइ रहे बहुनायक । सूरश्याम मनमोहन कहियत तुमहो सबही गुणके लायक ॥ ६२ ॥ रामकली ॥ तब हरि रच्यो दूती रूपागए जहाँ मानिनी राधा त्रिया स्वांग अनूप ॥ जाइ बैठे कहत मुख यह तू इहाँ बन श्याम । मैं सकुचि तहाँ गई नाहीं फिरी कहि पति बाम ॥ सहज बातें कहत मानों अब भई कछु ओर । तू इहां वे वहाँ बैठे रहत एकहि ठौर ॥ कहौ मोसों कहा उपजी वे रटत तुव नाम । सुनतिहैं कछु वचन राधा सूर प्रभु वनधाम ॥ ६३ ॥ राधेतें अति मान कर्यो । यह कहि हरि पछितात मनहि मन पूरब पाप पर्यो ॥ पहिली अपनी कथा चलायो जब त्रिय भेष धर्यो । तबतेहि रूप अनूप सुमुखि सुनि त्रिभुवन चित्त हर्यो । मोहे असुर महामद माते सुर मुख अमृत भर्यो । शिव गण सहित समेत महामुनि को व्रतते न टर्यो॥तातनकी छबि निरखि सूर शिव छत ज्यों ज्ञानगर्यो। जेहि जार्यो जग कामसु माधो तेरे हठ जात जर्यो ॥ ६४ ॥ बिहागरो ॥ इतो श्रम नाहिन तबहूं भयो । धरणीधर विधि वेद उधार्यो मधुसों शत्रुहयो ॥ द्विजनृप कियो दुसह दुखमेट्यो बलिको राजलयो ।त्रियवपु धर्यो असुर सुर मोहे को जग जो नद्र्यो ॥ जानो नहीं कहा यारसमें जेहि शिरसहज नयो॥सूर सुबल अब तोहिं मनावत मोहिं सब बिसरि गयो॥६५॥मल्लार ॥ समुझरी नाहिन नई सगाई ।सुन राधिके तोहिं माधोसों प्रीति सदा चलिआई॥ जब जब मान कियो मोहनसों विकल होत अधिकाई । विरहानल सब लोक जरततहं आपु रहत जलसांई ॥ सिंधु मथ्यो सागर बल बांध्यों रिपुरणजीति मिलाइ॥ अब सो त्रिभुवननाथ नेहवश वन बांसुरी बजाइ ॥ प्रकृति पुरुष श्रीपति सीतापति अनुक्रम कथा सुनाइ । सूर इतीरसरीति श्यामसोंतें ब्रजबसि बिसराइ॥६६॥राधिका तजि मान मया करु । तेरे चरणशरण त्रिभुवनपति मेटि कल्प तू होहि कल्पतरु ॥ जिनके चरण कमल मुनि वंदत सो तेरो ध्यान धरै धरणाधर । अहो बावरी कहा तें कीन्हो प्रीतम पठै दियो बैरनि घर ॥ तुम नागरि वै श्री नागर वर तुम सुंदरि वै श्रीसुंदरवरनि हरि तो दुख हरत सबनको तू वृषभानु सुता हरिको हर ॥ जो झुकि कछुक कह्यो चाहतिहो उनहि जानि सखि मोहीं सों लर । तबही सूर निरखि नैननभरि आयो उघरि लाल ललता छर॥६७॥बिलावल॥श्याम चतुरई जानतिहौं॥एगुण तुम अजहूं नहिं छांडो इन छंदनिमें मानतिहौं ॥ तुम रसवाद करन अब लागे जे सबतेउ पहिचानातिहौं ॥ वे बातें अब दूरि गई जू ते गुणगुणगुणिगानतिहौं ॥ यह कहि बहुरि मान गहि बैठी जियही जिय अनुमानतिहौं सूरकरो जोइ जोइ मन भावै इहे बात कहि भानतिहौं ॥ ६८ ॥ बिहागरो ॥ यह कहि बहुरि मान कियो । रिसनि धर धर होति बाला योग नेम लियो ॥ कहति मन मन बहुरि मिलिहौं अब नकरौं विलास । ध्यान धरि विधिको मनावै लेति उरध उसास ॥ त्रियाको जिनि जन्म पाऊं जिनिकरै पतिनारि । जनम तौ पाषाण मांगों सूर गोद पसारि ॥ ६९ ॥ बिलावल ॥ श्याम चले पछिताइकै अति कीन्हो मान । व्याकुल रिस तन देखिकै सब गयो सयान ॥ बैठे शीशनवाइकै बिन धीरज प्रान । दूती तुरत बोलाइकै पठई देआन ॥ विरहाके वश हरिपरे त्रियकियो अनुमान । धीरधरो मैं जातिहौं करिये कछु ज्ञान ॥ सावधान करिकै गई दूतिका सुजान । सूर महा वह

मानिनी मानो पाषान ॥ ७० ॥ धनाश्री ॥ प्यारी अंश परायो देरी । मेरी सीख सुन रसिकराधिका मनमें न्याउ चितैरी ॥ आप आपनी तिथिवाई दुहि अचवत अमरसवैरी । हर सुरेश सुर शेष समुझि जिय क्यों प्रभु पान करैरी ॥ वह झूठो शशि जानि वदन विधु रच्यो विरंचि इहैरी । सौंप्यो सुपत विचारि श्यामहित सुतूँ रही लटि लैरी ॥ जाकी जहां प्रतीति सूर सो सर्वस तहां सचैरी । सिंधु सुधानिधि अर्पि अबहिं उठि विधु पुनि नहीं पचैरी॥ विहागरो ॥७१॥ राधिका हरि अतिथि तुम्हारे। रति पति अशन काल गृह आए उठि आदर करि कहे हमारे ॥ आसन आधी सेज सरकिदै सुख पैहै पद हरषि पखारे । अर्घ्यादिक आनंद अमृतमें ललित लोल लोचन जलधारे ॥ धूप सुवास ततक्षण वश करि मन मोहत हँसि दीप उजारे । वचन रचन भ्रुव भंग अवर अंग प्रेम मधुर रस परसि निन्यारे ॥ उचित केलि कटु तिक्त त्यागि पट अमल उलटि अंकम हठिहारे । नख छत छार कसाई कुच गृह चुंबन सापि समर्पि सवारे ॥ अधर सुधा उपदंशसीक शुचि विधु पूरण मुखवास सचारे । सूर सुकृत संतोषि श्याम को वहुत पुण्य यह व्रत प्रतिपारे ॥ ७२ ॥ धनाश्री ॥ अब मोहिं जानिए सो कीजे । सुन राधिका कहत माधो यों जो बूझिए दंड सो लीजे ॥ उर उर चापि बाँधि भुज बंधन नखनाराच मर्मतकि दीजे । भौंह चढ़ाइ रिसाइ दशन दसि अधर सुधा अपने मुख पीजे ॥ जिनि करै विलंब भामिनी सुरससोई करौ जेहि गात पसींजे । ग्रंथि गुणनि गहि गूढ गांठि दै छुटै न कबहूं श्रम जल भींजे ॥ सुन सखि सुमुखि पाँइ लागतिहौं दंपति अरस परस तनु छीजे । सूरश्याम सँग रस मिलि विलसहु जीवन सफल इहै सुख लीजे ॥ ७३ ॥ गुंडमलार ॥ गह्यो दृढ मान वृषभानु वारी । दुलै वरु स्वर्ग सुरपति सहित सुरनसों दुलै कंचन मेरु रहि निहारी ॥ रैनि रवि उठै वासर चंद्र होइ वरु दुलै सबनखत यह होइ भाषै । धरणि पलटै सिंधु मर्यादको तजै शेष शिर दुलै नाहिं माननाषै ॥ बाँझ सुत जनै उकठे काठ पल्लवै विफल तरु फलै विन मेघ पानी । सूर प्रभु यह सुनौ वरु अचल चल थकै मनहि मन दूतिका कहति वानी ॥ ७४ ॥ कान्हरो ॥ दूती यह अनुमान करै । कासों कहौं सुनै को मेरी कैसे कह्यो परै ॥ हरि पठई मोको आतुर करि यह जिय सोच करै । कैसे वचन कहौं या आगे यह अनुमान करै ॥ चतुर चतुरई फवै न यासों सुनि रिस अतिहि करै । सूर सहजही मान मनाऊँ जो यह कबहुँ करै ॥ ७५ ॥ मानलीला ॥ मलार ॥ ॥ मान मनायो राधा प्यारी । दहियत मदन मदननायकहो पीर पीरते न्यारी ॥ तू जुझुकतहै और रूसने अब कहि कैसे रूषी । विनही शिशि रतमक तामसते तुव मुख कमल विदूषी ॥ सुनियत विरद रूप रसनागारि लीन्ही पलटि कछूषी । तेरे हती प्रेम संपति सखी सो संपति केहिं मूषी । उन तन चितै आप तन चितवहु अहो रूपकी राशी । पिय अपनो नाहोइ तऊ ज्यों ईश सेइए कासी ॥ तुमतौ प्राण प्राण वल्लभके वै तुव चरण उपासी । सुनिहै कोऊ चतुर नारि कत करत प्रेमकी हासी ॥ ज्यों ज्यों मौन भई तुम उनके वाढी आतुरताई । कान्ह आन वनितारति सुनि सुनि जिय बैठी निठुराई ॥ हिए कपाट जोर जडिताके वोलत नहीं बुलाई । हा राधा राधा रट लागी चित चातकी कन्हाई ॥ जौपै मानत भाँवरि नाहीं भाँवरि मान नहोई । हियते वादि प्रेम रति वतिहौ अंत भाव तो सोई ॥ जो गौरी पिय नेह गरवतौ लाख कहै किन कोई । काहू लियो प्रेम परचो वह चतुर नारिहै सोई ॥ कत होरही नारि नीची करि देखत लोचन झूले । मानहु कुमुद रूठि उडपति सों किए धर्म मुख फूले ॥ वैतो हित वृषभानु नंदिनी सेवत यमुना कूले । तेरे तनक मान मोहनके सबै सयानप भूले ॥ अहो इंदु वदनी सुन सजनी

कत पलकन पल जोरे। तुव मुख दरश आशके प्यासे हरिके नयन चकोरै॥ तेरे बल भामिनी वदत नहिं उपजत काम हिलोरे। सुनियत हते चतुर नागरते तनक मान भये भोरे॥ तब दूती फिरि गई श्यामपै श्याम वहां पगधरिए। जेहि हठतजै प्राणप्यारी सो जतन सवारै करिए॥ वे वैसे तुम ऐसे वैसे कहो काजका सरिए। कीजै कहा चाव अपनी कत इहां मसूसन मरिए॥ अपनी चोप आप उठि आए ह्वैरहे आगे ठाढे। भूलि गयो सब चतुर सयानप हुते जो वहु गुण गाढे॥ डोलत नहिं बोलत न बुलाए मनहुँ चित्र लिखि काढे। परचो नकाम नारि नागरसों हैं घर हीके वाढे॥ निवह्यो सदा औरहीको हठ यह जो प्रकृति तुम्हारी। आपुनही अधीन ह्वै ठाढे देखि गोवर्धन धारी॥ प्राणहि पियहि रूपनो कैसो सुन वृपभानु दुलारी। कहूं न भई सुनी नाहिं देखी रहे तरँग जल न्यारी॥ रिस रूसनो मिलन पलकनको अति कुसुंभरंग जैसो। रहै न सदा छुटत छिन भीतर प्रात ओस तृण तैसो॥ वे हैं परम मलीन किए मन उठि कहि मोहन वैसे। घर आए आदर न चूकिए बैठी दूध अचैसे॥ वेतो भँवर भावते वनके और वेलिके तोपी। कीजै मान मदन मोहनसों वात कहैं हँसि नोपी॥तुम जानहु की लाल तुम्हारो तुमहि उनहि है ऐसी। याहीते तुम गर्व भरीहो वेठाढे तुम वेसी॥जोवन जल वर्षाकि नदी ज्यों चारि दिनाको आवै। अंत अवधिहीलों नातो जो कोटिक कलह उठावै॥ वल्लभको वल्लभको मिलिवो तुमहि कौन समुझावै। लै चलि भवन भावतेहिं भुजगहि कोकहि गारि दिवावै॥ झुकि ठेली ह्यांते रिस हाती कौने सिखे पठाई। लै किन जाहि भवन अपने ह्यां लरन कौनसों आई॥कांपति रिसन पीठि दै बैठी सहचारि और बुलाई। कछु सीरी कछु ताती वाणी कान्हहिदेत दोहाई॥ कवहुँकलै धरि दर्पण मोहन ह्वै रहे आगे ठाढो। इत नागरी उतहि वै नागर इन बातनको चाढो॥ वड़े वडाईको प्रतिपालैं वडो वडाई छीजै। ताके वडी वडी शरणागत वैर वडे सों कीजै॥ तू वृपभानु वडे की वेटी तेरे ज्याए जीजे। रावहु वैर हिए गहि मोसों वैरिहि पीठि न दीजै॥ भामिनि और भुअंगिनि कारी इनके विपहि डैरए। रावेहूं विरचे सुखनाहीं भूलि न कवहुँ पत्यैए॥ इनके वश मन परे मनोहर वहुत जतन करि पैए॥कामी होइ काम आतुर तेहि कैसे कै समुझैए॥ जे जे प्रेमछके में देखे तिनहि न चातुरताई। तेरे मान सयान सखी तोहिं कैसेंकै समुझाई॥ वहुरो भए सह चरी मोहन ताकें अपनी घातें। लागे काम सखीके धोखे कहत कुंजकी वातैं॥ सुधिकरि देखि रूसनो उनको जव खाई हाहातैं। आप पीर परपीर न जानति भूली जोवन मातैं॥ कवहुँ न भयो सुन्यो नाहिं देख्यो ततुते प्राण अवोले। होत कहा हे आलसहू मिस छिन घूंघट पट खोले॥ पावति कहा मानमें तूरी कहा गँवावतिहै हँसि वोले। कालिहि प्राणनाथ तुम प्यारी फिरिहो कुंजनि डोले॥ कहा रही अति क्रोध हिए धरि नेक न दयादयानी।प्रगट्यो जानि मदनमोहन ततु वात वात अधिकानी॥ हितकी कहे अनख लागति है समुझहु भले सयानी। मनकी चोप मान कीजतु कह थोरेही गरवानी॥ रही मूँदि पटसों हठि भामिनि नैक न वदन उघारै। हरि हित वचन रसाल कठिन पाहन ज्यों दून उतारै॥ धरे ग्रीव पट सन्मुख ठाढे नेक न कोप निवारै। जा आधीन देव सुर नर मुनि सो हीनता पुकारै॥ खन गावै खन वैन वजावै कमल भृंगकी नाहीं। खन पाँयन तन हाथ पसारै छुवन नपावै छाहीं॥ खन खन लेहि वलाइ वामकी लालच करि ललचाही। कहै आनकी आन सोंहदे खन खन हाहा खाही॥ कवहुँक निकट वैठि कुसमावलि अपने कर पहिरावै।जोइ जोइ वात भावतिहि भावै सोइ सोइ वात चलावै॥ जितहि जितहि रुखकरै लडैती तितही आपुन आवै।

नाचत जाके डर त्रिभुवन तेहि नेकहु मान नचावै ॥ जिन नैनन देखत सुख भूले ते दुख नैन समोवै । जो मुख सकल सुख निको दाता सो मुख नेक न जोवै ॥ जेहि लिलाट त्रिभुवनकोटीको सो पाँइन तन सोवै । राजहि जाहि सनक अरु शंकर विरंचै ताहि विगोवै ॥ एते मान भए वश मोहन बोलत कटुक डराई । दीपक प्रेम क्रोध मारुत छिन परसत जिनि बुझिजाई ॥ ताते करि हारि छल दूतीको कहत बात सकुचाई । कपटी कान्ह पत्याहिं न राधे तोहिं वृषभानु दोहाई ॥ पठई मोहिं दई उरमाला जहां कहूं रति मानी । हौं बहराइ इतहि आईरी आली तोहिं डरानी ॥ काहेको रूसनो वद्यो है मोसों कहो कहानी । नवनागर पहिचानि राधिका यह छल अधिक रिसानी॥जनिए कहां कौन अपराधिनि आनि कान है लागी। सुनि सुनि उठी सुंदरी के जिय प्रगट कोपकी आगी ॥ यद्यपि रसिक रसाल रसीली प्रेम पियूषन पागी । किती दई शिख मंत्र साँवरे तउ हठ लहरि न जागी ॥ काहिए कहा नंदनंदन सों जैसे लाड लड़ाई । कौन न भई मानिनी उनसों जेते मान मनाई ॥ नवनागर तबहीं पहिचाने नागरि नागरताई । इन छँद बंदनि छँदै पैए प्रेम न पायो जाई ॥ हारे बल अबलासों मोहन तजत नपाणि कपोलै । मानहुँ पाहनकी प्रतिदासी नैक न इत उत डोलै ॥ इन घोसानि रूषनो कराति हौ करिहौ कबहिं कलोलै । कहा दियो पढि शीश श्यामके खैंचि आपनो सोलै ॥ तोहिं हठ परचो प्राणवल्लभ सों छूटत नहीं छुड़ाए । देखहु मुराछि परचो मनमोहन मनहु भुअंगिनि खाए ॥ काहेको अपराध लेतिहै करति कामको भायो । नैक निरखि उठि कुँअरि राधिका जो चाहति है ज्यायो ॥ बहुरौ लियो जगाइ मनोहर युवतिन जतन बनायो । विरहताप बरदाप हरनको सरस सुगंध चढायो ॥ जिते करे उपचार मनहुँ तनु जरत मांझ घृत नायो । कामअग्नि ते बिना कामिनी कहि कौने सच पायो ॥ जिनके हित तू त्रिभुवन गाई ठकुरानी करि पूजी । आनँद अंग संग सुख विलसत वनना यक ह्वै कूंजी ॥ अनुदिन काम विलास विलासिनि वै अलि तू अंबूजी । ऐसे पिय सों मानकरतिहै तोसीं मुग्ध न दूजी ॥ मेरो कह्यो मानती नाहिन ह्यां अरु कौन कहै गो । राखत मान तिहारो मोह न ऐसी कौन सहैगो ॥ जानहुगी तब मानहुगी मन जब तनु मदन दहैगो । करतिहो मान मदन मोहनसों मानै हाथ रहैगो ॥ नख लिखि कह्यो जाहु तईंई उठि जाके हाथ बिकाने । राचे रहत रैनि दिन मोहन हरद चून ज्यों साने ॥ मुख मेरो है मान मनावत मन अंतहि रुचि माने । गावत लोग विरद सांचोई हरिहित कौन सिराने ॥ तुम मम तिलक तुमहिं मम भूषण तुमहि प्राण धन मेरे । हौं सेवक शरणागत आए जानहु जतन घनेरे॥ तेरी सों वृषभानु नंदिनी एक गांठिसों फेरे। हित सों वैर नेह अनहित सों इहै न्याव है तेरे ॥ पर धन रवन दवन दारुन द्रुम डोलनि कुंजन माहीं । चारन धेन फेन मथि पीवन जीवन रोकत खाहीं ॥ डासन कांस कामरी ओढन बैठन गोपसभाही । भूषण मोर पयूषन मुरली तिनके प्रेम कहाही ॥ प्रेम पतंग परै पावक में प्रेम कुरंग बँधेसे । चातक रटै चकोर न सोवै मीन बिना जल जैसे ॥ जहां मान तहां मान मनायो प्रेम न गानिये ऐसे । प्रेम मांझ जो करहि रूषनो तिनहि प्रेम कहि कैसे ॥ कांपत रिसन पीठि दै बैठी मणि माला तनहेरचो॥निरखि आप आभास सयानी बहुरि नैन मुख फेरचो॥लिए फिरत उरमाँझ दुराए जानत लोग अँधेरो। एते मान भावती तौ कत मान मनावत मेरो ॥ तेरीसों आभास तिहारो यहां और को जोहै॥लै दर्पण मणिधरचो पांइतर देखिदुहुनिमें कोहै ॥ लघु अपराध दासको त्राषै ठाकुरको सब सोहै । निरखि निरखि प्रतिविंव उहै तनु नैन नैन मिलि मोहै॥ नैक मोहिं मुसकात

जानि मन मोहन मन सुख आन्यो। मानो दव द्रुम जरत आश भयो उनयो अंवर पान्यो ॥ जो भाई सो सौंह दिवाई तव सूधे मन मान्यो। दियो तमोर हाथ अपने करि तव हरि जीवन जान्यो ॥ हँसिकरि कह्यो चलौ हरिकुंजन हौं आवतिहौं पाछे । लकुटी मुकुट पीत उपरैना लालकाछनी काछे ॥ गोदोहनकी वेर जानि सँग लिए बछरुवा आछे। जो न पत्याहु जाहु मुरली धर हमहि तुमहि है साछे ॥ सघनकुंज अलि पुंज तहाँ हरि किशलय सेज वनाई । आतुर जानि मदन मोहन तनु कामकेलि चलि आई ॥ हँसेगोपाल अंकभरि लीनी मनहुँरंक निधि पाई। रति विपरीति प्रीति पियप्यारी वर्णत वरणि नजाई॥ आलिंगन चुंवन परिरंभन दियो सुरति रस पूरो । छिटकिरही श्रमवूंद वदन पर अरु पांइन खुभि चूरो॥मुखके पवन परस्पर सुखवत गहे पानि पिय जूरो। बूझत जानी मन्मथ चिनगी फिरि मनों दियो मरूरो॥आलस मगन वदन कुँभिलानो वाला निर्वल कीन्हीं । थकित जानि मनमोहन भुजभरि प्रिया अंक भरि लीन्हीं ॥ गोरे गात मनोहर सोहर रज फुलेलसों कंचुकि भीन्हीं । मनु मधु कलस श्यामताईकी श्यामछापसी दीन्हीं ॥ इत नागरी नवल नागर उत भिरे सुरति रणसोऊ । नैन कटाक्षवाण असिवर नख वरपि निदाने दोऊ टूटेहारं कंचुकी दरकी घाइल मुरे नकोऊ । प्रगट्यो तेज तरनि पदवीकी लाज लजाने दोऊ ॥ यहि डर रहत पीतांबरवोढे कहा कहौं चतुराई। भोरचो काम प्रेमहू भोरचो भुरई वैस भुराई ॥ पति अरु प्रिया प्रगट प्रतिविंवत ज्यों जल दर्पणझाई । अव जिनि कहै हिएमें कोहै वहुरि परी कठिनाई ॥ करजोरे विनती करैं मोहन कहो पाँइ शिरनाऊं । हौं सेवक निज प्राण प्रियाको यह काहि पत्र लिखाऊं ॥ तेरी सों वृपभानुनंदिनी अनुदिन तुव गुण गाऊँ । अव जिन मान करहि मोसों हो इहै मौज करिपाऊँ ॥ हँसिकरि उठि प्यारी उरलागी मान मैन दुखपायो । तुम मन देहु आन वनिता तो मैं मन काहि लगायो ॥ लै वुलाइ उरलाइ अंक भरि पाछिलो दुख विसरायो । श्याम मानहै प्रेम कसौटी प्रेमहि मान सहायो ॥ छूटे वँद छूटी अलकावलि मरगजतनके वागे । अंजन अधर भाल जावक रँग पीककपोलन पागे ॥ विनु गुन माल पीठि गडिकंकन उपटि उठे उर लागे। रसिक राधिकाके सुखको सुख लूट्यो श्याम सभागे ॥ नवल गोपाल नवेली राधा नये नेह वश कीन्हे। प्राणनाथ सों प्राणपियारी प्राण लटकि सो लीन्हे॥विविध विलास कला रसकी विधि उभै अंग परवीनो॥ अति हित मान मानतजि मानिनि मनमोहन सुखदीनो ॥श्रीराधा कृष्ण केलि कौतूहल श्रवण सुनें जे गावें। तिनके सदा समीप श्याम नितही आनंद वढावें ॥ कवहुँ न जाहि जठर पातक जिनको यह लीला भावै । जीवन मुक्ति सूर सो जगमें अंत परमपद पावै ॥७६॥ गुंडमलार ॥ राधिका वश्य करि श्याम पाए । विरह गयो दूरि जिय हरप हारिके भयो सहस मुख निगम जिनि नेति गाए ॥ मान तजि मानिनी मैनको वल हरचो करत तनुकंतके त्रास भारी । कोक विद्या निपुण श्याम श्यामा विपुल कुंजगृह द्वार ठाढे मुरारी ॥ भक्तहित हेतु अवतार लीला करत रहत प्रभु तहां निज ध्यान जाके। प्रगट प्रभु सूर व्रजनारिके हित वँधे देत मनकाम फल संग ताके ॥ ७७ ॥हिंडोरलीलाको सुख॥श्रीकृष्ण राधिका गोपिन संग झूलहिंगे ॥ रागमारू॥

वृंदावन श्यामलघन नारि संग सोहैजू। ठाढे नवकुंजनतर परमचतुर गिरिधर वर राधा पति अरस परस राधा मनमोहैजू ॥ नीपछाँह यमुनतीर व्रजललना सुभगभीर पहिरे अंग विविध चीर नवसत सव साजै। वार वार विनय करति मुख निरखति पाँइ परति पुनि पुनि कर धरति हराति पियके मन काजै ॥ विहँसति प्यारी समीप घनदामिनि संग रूप कंठ गहति कहति कंत झूल

नकी साधा। यमुना पुलिन अतिही पुनीत पिय इहां हिंडोर रचौ सूरज प्रभु हँसति कहति व्रज तरुनी राधा॥७८॥ राग़ी मल्लारि॥ हिंडोरे हरि सँग झूलिएहो अरु पियको देहिं झुलाय। गई बीति ग्रीषम शरद हितु ऋतु सरस वर्षा आय॥ अब इहै साध पुरावहू हो सुनहूँ त्रिभुवन राई। गोपांगना गोपालजू सों कहति गहि गहि पाई॥ गढनहार हिंडोरनाको ताहि नलेहु बोलाई। वन धनानि कोकिल कंठ निरखत करत दादुर सोर। घनघटा पीरी श्वेतवगपंगति निरखि ये नभ ओर॥ तैसिए दमकति दामिनी तैसोइ अंमर घोर। तैसोई रटत पपीहरा बिच तैसोई बोलत मोर॥ तैसिएँ हरी हरी भूमि हुलसाति होति नहिं रुचि थोर। तैसिए रंग सुरंग बिधिवधू लेति है चितचोर॥ तैसिए नन्हीं बूंदनि वरषतु झमकि झमकि झकोरि। तैसिए भरि सरिता सरोवर उमँगिं चली मति फोरि॥ सुनि विनय श्रीपति विहँसि बोले विश्वकर्मा श्रुति धारि। खचि खंभ कंचनके राचे पाचे राजति मरुवा मयारि। पटुली लगे नग नाग बहु रंग बनी डाँडी चारि। भँवरा भवै भजि केलि भूले नागरनाऽगरि नारि॥ पहरि चुनि चुनि चीर चुहि चुहि चूनरी बहु रंग। काटि नील लहँगा लाल चोली उबटि केसरि अंग॥ नवसात सजि नई नागरी चली झुंड झुंडनि संग॥ मुख श्याम पूरण चंदको मनो उमँगि उदाधि तरंग। तहँ त्रिविध मंद सुगंध शीतल पवन गवन सुभाइ। उर उडत अंचल उघरि मुख मिलि नैन नैन लगाइ॥ तैसो यमुना पुलिन परम पुनीत सब सुखदाइ। तैसिए गोपी कंठ लगावति मोहनऽमोहन राइ॥ गिरिराज धारन गोपिकन सों करत कौतुक केलि॥ झूलत झुलावत कंठ लावत बढी आनँद बेलि॥ कबहुँ रहसत मचत लै सँग एक एक सहेलि। झकझोरि झमकत डरत प्यारी प्रीतम अंकम मेलि॥ तेहि समय सकुची मनोजकी छवि जक्यो धन शर डारि। अमर विमानन सुमन बरषत हरषि सुर सँग नारि॥ मोहे सुर गण गंधर्व किन्नर रहे लोक विसारि। सुनि सूरश्याम सुजान सुंदर सबन के हितकारि॥७९॥ सारंग॥ सुरंग हिंडोरना माई झूलत श्यामा श्याम। दोयखंभ विश्वकर्मा बनाए काम कुंद चढाइ। हरित चूनी जटित नग सब लाल हीरा लाइ॥ बहुत विद्रुम बहुत मुक्ता ललित लटके कोर। बहुरंग रेसम वरुह वरुहा होत राग झकोर॥ श्याम श्यामा संग झूलत सखी देति झुलाय। सबै सरस शृंगारकीने रूप वरणिन जाइ। लालसारी नील लहँगा श्वेत अँगिया अंग। रोमावली नहिं मनो यमुना त्रिवालि तरल तरंग॥ कहूं यूथनि युवाति ठाढीं कहूं ठाढे ग्वाल। कहूं तरुणी गीत गावैं कहुँ करैं सब ख्याल॥ कहूं दादुर कहूं चातक कहूं बोलैं मोर। चहूं ओर चितै चकोरहि गए देखिरी इहि ओर॥ दशन दाडिऽमदमाकि विकसी हँसी जब मुसुकाइ। दमकि दामिनि निरखि लज्जित बहुरि गई छिपाइ॥ मीन खंजन कंज मानो उडत नाहिन भोर। बिंबके ढिग कीर बैठे गहत नाहिन ठौर। देखि सखी उरोज कंचन शंभु धरयो बनाय। नहिं होहिं श्रीफल सुंदरीके कमलकली सोहाय॥ बीच मुक्ताहार मिलि सुरसरी जनु उतरी धाय। वार चकई पार चकवा दिनहु मिलत न आय॥ लखि लंक कह्यो न जाय सखिरी अंग देखिरि चारु। भृंग भ्रमभ्रम बनगयो कटि गयो केहरि हारु॥ चालदेखि मराल लज्जित गए सरतजि गेह। यह अनुमानके अभिमानगज शिर अजहुँ डारत खेह॥ राग रागिनी सँचि मिलाई गावैं सुघर गुंडमलार। सुहवी सारंग टोडी भैरवों केदार॥ मालवाई राग गौरी अरु आसावरी राग। कान्हरो हिंडोल कौतुक तान बहु विधि लाग॥ देखि सखिरी एक अचरज राहु शशि इक ठोर। उडत अचल लपटि बेनी दपट झपटे मोर॥ कनक जटित जराइ बीरे कवि जो उपमा पाइ। सूर शशि है एक ब्रजमें मनो ऊगे तीनो आय॥ ८०॥ मलार॥ यमुना पुलिनहि रच्यो रंग सुरंग हिंडोरनो। रमत राम श्याम संग ब्रजबालक सुख पावत हँसि बोलनो। द्वै खंभ कंचन

के मनोहर रत्नजडित सुहावनो। पटली विच विद्रुम लागे हीरालाल खचावनो॥ सुंदर डाँडी चुनी वहुत लायो कोटिकमदन लजावनो। मरुवा मयारि पिरोजालाल लटकत सुंदर सुढिर ढरावनो मोतिनहिं झालरि झूमका राजत विच नीलमणि वहुभावनो। पंच रंग पाट कनक मिलि डोरी अतिही सुवर वनावनो। स्फटिक सिंहासन मध्य राजत हाटक सहित सजावनो॥हीरालाल प्रवाल पिरोजा पंगति वहु मणि पचित पचावनो। मनो सुरपुर तेहि सुरपति पठइ दियो पठावनो॥ विश्व कर्मा सुतिहार श्रुतिधरि सुलभ सिलप दिखावनो। तेहि देखे त्रय ताप नाशै ब्रजवधूमन भावनो॥सुनि श्यामा नवसत सँग सखीलै वरसाने तेहि आवनो।जव आवत वलराम देख्यो मधु मंग ल तन हेरनो। तव मधु मंगल कहि ग्वाल सों गैयाहो भैया फेरनो॥ उठे संकर्षण करि शृंग वेणु ध्वनि धौरी काजरी धेनु टेरनो॥ गैया गई वगराइ सघन वृंदावन वंसीवट यमुनातट घेरनो। पहिरे चीर सुही सुरंग सारी चुहचुहु चूनरी वहु रंगनो॥ नील लहँगा लाल चोली कसि उवटि केसरि सुरंगनो। नवसत साज शृंगार नागरि मरिगमय भूषण मंगनो॥ सादर मुख गोपाल लालको चित्त चकोर रस संगनो। श्यामा श्याम मिले ललिता दिहि सुख पावत मनमोहनो॥ गावत मलारी सुराग रागिनी गिरिधरन लाल छवि सोहनो। पचरंग वरन पाटहि पवित्रा विच विच फोंदा गोहनो॥ नाचति सखी संगीत परस्पर पहिरि पवित्रा सोहनो॥ माथे मोर मुकुट चंद्रिका राजहि वृंदा वैजंती माल कंज प्रसावनो।कुंडल लोल कपोलनके ढिग मानो रवि प्रकाश करावनो॥ अधर अरुण छवि कोटि व्रज दुति शशि गुण रूप समावनो। मणिमय भूषण कंठ मुक्तावलि देखत कोटि अनंग लजावनो॥ सखि हरपि झूले वृषभानु नंदिनी सोभित सँग नँद लालनो। मणिमय नूपुर कुनित कंकन किंकिनी झनकारनो॥ ललिता विशाखा व्रजवधू झुलावै सुरुचि सार सारको सारनो। गौर श्यामल नील पीत छवि मानोंघन दामिनि संचारनो॥ तैसोइ नन्हीनन्ही वूदनि वरपै मधुर मधुर ध्वनि घोरनो।जैसीही हरी हरी भूमि हुलसावनी मोर मरालसुख होत न थोरनो॥ जहाँ त्रिविध मंद सुगंध शीतल पवन गवन सुहावनो। तहँ विहरत उठत सुवासु उडत मधुप सुहावनो॥ चढि विमानन सुरसुमन वरपैं जैजें ध्वनि नभ पावनो। श्यामा श्याम विह रत वंदावन सुरललना ललचावनो॥ शुक शेप शारदा नारदादि विधि शिध ध्यान नपावनो॥सूर श्याम सुप्रेम उमग्यो हरि यश सुलीला गावनो॥८१॥गुंडमलार॥हिंडोरनो माई झूलत गोकुलचंद।संग राधा परमसुंदरि सवन करत अनंद॥ द्वैखंभ कंचनके मनोहर रतनजडित सुरंगावनी चारि डाँडी परम सुंदर निरखि लज्जितअनंग॥ पटली पिरोजा लाल लटकत झूमका वहुरंग। मरुवेति माणिक चुनीलागी विचविच हीरा तरंग॥ कल्पद्रुम तर छांह शीतल त्रिविध मंद समीर। वर लता लटकहि भार कुसुमनि परसि यमुनानीर॥ हंस मोर चकोर चातक कोकिला अलि कीर। नवनेह नवल किसोर राधा नवल गिरिधर धीर॥ ललिता विसाखा देहिं झोटा रीझि अंग नसमाति। अति लाडिली सुकुमारि डरपति श्याम तन लपटाति॥गौर श्यामल अंग मिलि दोउ भए एकहि भांति। नील पीतदुकूलदुति घन दामिनी दुरि दुरि जाति॥ कुंज पुंज झुलाय झुल वत सहचरी चहुँओर। मनो कुमुदिनि कमल फूले निरखि युगल किसोर॥ ब्रजवधू तृण तोरि डारति देति प्राण अकोर। जनसूरजको ब्रजवास दीजै नागर नंद किसोर॥८२॥ रागी श्रीहठी॥ हिंडोरे झूलत श्यामा श्याम। व्रजयुवती मंडली चहुंघां निरखत विथाकित काम॥ कोउ गावति कोउ हरपि झुलावति कोउ पुरवति मन साध। कोउ संगमचति कहति कोउ मचिहौं उपजो

रूप अगाध ॥ कोउ डरपति हाहाकरि विनवति प्यारी अंकमलाय । गाढे गहाति पियहि अपने कर पुलकित अंग डरायण ॥ अब जिनि मचो पांय लागतिहौं मोको देहु उतारि । यह सुनि हँसत मचत अति गिरिधर डरत देखि अतिनारि ॥ प्यारी टेरि कहत ललितासौं मेरीसों गहि राषि । सूर हँसति ललिता चंद्रावलि कहा कहति पियभाषि ॥ ८३ ॥ रागरामगिरी ॥ हिंडोरना माई झूलतहै गोपाल । संगराधा परमसुंदरि चहूंघां ब्रजबाल ॥ सुभग यमुना पुलिन मोहन रच्यो रुचिर हिंडोर । लाल डाडी स्फटिक पटुली मणिन मरुवा घोर ॥ भँवरा मयारिनि नील मर कंत खचे पांति अपार । सरल कंचन खंभ सुंदर रच्यो काम श्रुतिहार ॥ भांति भांतिन पहिरि सारी तरुणी नवसत अंग । सुंदरी वृषभानुतनया नैन चपल कुरंग ॥ हँसति पिय सँगलेति झूमक लखति श्यामलगात । मनो घनमें दामिनी छबि अंगमें लपटात ॥ कबहुँ पुलकित कबहुँ डरपति हँसतिं निरखंति नारि । कबहुँ देति झुलाइ गोपी गावहीं नवनारि ॥ सूर प्रभुके संगको सुख वरणि कापैजाइ । अमर वर्षत सुमन अंबर विविध अस्तुति गाइ ॥ ८४ ॥ रागमलारी ॥ यमुना पुलिन रच्यो हिंडोर । घोष ललना संग तरुणी तरुण नवल किसोर ॥ एक सँगलै मचत मोहन एक देत झुलाय । एक निरखति अंग माधुरि एक एक उठि गाय ॥ श्यामसुंदर गोपिकागण रही घेरि बनाय । मनो जलदको दामिनी गण चाहति लेन लुकाय ॥ नारि सँग बनवारि गावत कोकिला छबि थोर । डुलत झूलत मुकुट शिरपर मनों नृत्यत मोर ॥ सुभग मुख दुहुँ पास कुंडल निरखि युवती भोर । चक्रवाक चकोर लोचन करि रही हरि ओर ॥ थकित सुरललना सहित नभ श्याम निरखि विहार । हरषि सुमन अपार बरषत मुखहि जैजैकार ॥ कहत मन मन इहै बांछा भए नवन द्रुमडार । देह धारि प्रभु सूर विलसत ब्रह्म पूरण सार ॥ ८५ ॥ केदारो ॥ हिंडोरने हरि सँग झूलन आई । पचरंग बरन पाटको डडिया अतिहीं वानक सौंजु बनाई ॥ झूलति युवति नंदललना सँग एकै बैस इकदाई । सूरदास प्रभु मोहन नागर आपुन झूलि झुलाई ॥ ८६ ॥ ईमन ॥ झूलन आई रंग हिंडोरे । पचरंग बरन कुसुभीसारी पहिरे कंचुकी सौंधे बोरे ॥ मुक्तामाल ग्रीवतेलर छूटी छविके उठत झकोरे । सूरदास प्रभु मेरो मन हरि लीन्हों चपल नयनकी कोरे ॥ ८७ ॥ विहागरो ॥ ललना झूलत रंग हिंडोरे । सोभा तनु श्याम गोरे । नील पीत पट घनदामिनिडोरे । सोभा सिंधु मन बोरे ॥ गोपी जन चहुंओरे ॥ नैननसोंनैन जोरे ॥ झुलवंति थोरे थोरे । पवन गवन आवे सोंधेकी झकोरे ॥ तन मन वारौं छबि पर तृणतोरे । सूरदास प्रभु चित चोरे इक अंग मोरे ॥ सुन मुरलीकी घोरैं सुरवधू शीश ढोरैं ॥ ८८ ॥ रागमलार ॥ झूलत श्याम श्यामा [illegible] निरखि दंपति अंग सोभा लजित कोटि अनंग ॥ मंद त्रिविध बयारि शीतल अंग अंग सु[illegible] उडत सुवासु सँग गण रहे मधुकर बंध ॥ तैसिये यमुना सुभग जहां रच्यो रंग हिंडोर । तैसिये ब्रजवधू बनि हरि चितै लोचन कोर ॥ तैसोई बृंदाविपिन घन बनकुंज द्वारविहार। विपुल गोपी विपुल वनगृह रवन नंदकुमार ॥ नित्य लीला नित्य आनँद नित्य गान मंगल सूर सुर मुनि मुखन स्तुति धन्य गोपी कान्ह ॥ ८९ ॥ मलार ॥ हिंडोरे हरि सँग झूलहि घोष कुमारि ॥ ब्रजवधू विधि क्यों न कीनी कहति सब सुरनारि ॥ मरुवा लगे नगललित लीला सुविधि शिल्प सँवारि । वज्रकी कीलैं लगीं सुटि सुभग शोभा कारि ॥ खंभ जंबूनदि सुविद्रुम रची रुचिर मयारि । मनु सुता रविको दिखावति भुज भुज युगल पसारि ॥ मणिलाल माणिक जटित भँवरा सुरंग रंगरसार । शुक शेष नारद शारदा उपमा कहै को पार ॥ डाँडी खचि पचि पांच मर्कत मय पांति सुढार ॥ उवत

रथरविते धसी यमुन धरे विविधार ॥ विविधार धारा धसी अधक्यों स्फटिक पटुली संग। वहिनि कसि तिरछी वीच ह्वै मिलि गगनते जनु गंग। ढिग जरित भरि मंजीर इत उत चरण पंकज रंग। प्रतिबिंव झलमल झलक मिलि सरस्वती आनि विनंग॥वनमहल के द्वारे रच्यो नव रंग रंग हिंडोर। मनो कोटि मन्मथ मोद मोहन तरुणी तरुण किसोर ॥ बदन तन चित चोरि चितवत झलक लोचन कोर।शरद विधु मधु लुब्ध को मनु उडि उडि मिलत चकोर॥उडि मिलत तहां चकोर अति छबि ललित चलित सुचैन। मनु अंवुज वासको संग मिलि मधुकर ऐन ॥ झमकि झमकि लेति दै झुमडी मचै रुचि कैन। गावति सुकंठ राग राग्नी नागरि गिरिधर ॥कीजित सैन ॥ कनक नूपुर कुनित कंकन किंकिनी झनकार। तहाँ कुँवरि वृषभानुकी सँग सोहै नंदकुमार॥ नील पीत दुकूल साँवल गौर अंग विकार। मानहु नौतन घन घटा में तडित तरल अकार ॥ अनमेष दृग दिए देखेही मुख मंडली वरनारि। मानहुँ शृंगार नवीन तरुप्रति रची कंचन वारि ॥ हँसि हावभाव कटाक्ष घूंघट गिरत लेति सम्हारि। मनु हरन मुनि सोभा सुलैरति काम डाराति वारि ॥ अधऊरध झमकि झकोर इत उत झलक मोतिन माल। ऋतु समै सावन जानि मानौ वगपांति उड़त विसाल ॥ श्रीशीश फूल अमोल तरिवन तिलक सुंदर भाल। सारी सुरंग मिलिनील लहँगा सोभित कंचुकी लाल ॥ मन मुदित मोदित मानिनी मुख माधुरी मुसुकानि। ढर हरति ढराति हिंडोर डाँडी डराति धरि दुहुं पानि ॥ उर उडत अंचल छोर छवि दुति पीतपट फहरानि। कहै सूर सो उपमा नहीं कहुँ नेति निगमहु गानि ॥ ९० ॥ मलार ॥ गोपी गोविंदके हिंडोरे झूलन आय। रंगमहलमें जहँ नंदरानी खेलति सावनी तीज सुहाय ॥ श्रीखंड खंभ मयारि सहित सु सुमर मरुवा वनाइ। तापर किंतिक जू भ्रमत भँवरा डाँडी जटित जराइ ॥ हेम पटुली मध्य हीरा पूजि रोचन लाइ।सखी विविध विचित्र राग्नी मलारी मंगलगाइ॥नंदलाल पावसकाल दामिनि नागरी नव संग। बोलत जु दादुर अरु पपीहि कराति कोकिल रंग ॥ तहँ वरहा नृत्यत वचन मुख दुति अलिचकोर विहंग। वलि भाइ सहित गोपाल झूलत राधिका अर्धंग ॥ जलभरित सरवर सघन तरिवर इंद्र धनुष सुदेश। घनश्याम मध्य सफेद वग जुरि हरित महि चहुँ देश ॥ गगन गर्जत वीजु तरपति मधुर मेह असेश। झूलहि ते विह्वल श्याम श्यामा शीश मुकुलित केश ॥ ताटंक तिलक सुदेश झलकत खचित चूनी लाल। अकृत विकृत वदन प्रहसित कमल नैन विसाल ॥ करजु मुद्रिका किंकिनी कटि चाल गजगति वाल। सूर मुररिपु रंग रंगे सखी सहित गोपाल ॥ ९१ ॥ सुहवराग ॥ झूलत सुंदर युगल किसोर। नँदनंदन वृषभानुनंदिनी पियत सुधारस नयन चकोर ॥ भ्रुकुटी वक्र धनुष श्रीशोभित तिलकभाल मनो सायक जोर। मंद मंद मुसुकात श्याम घन निरखत करत कटाक्षन ओर ॥ अंजनको पति रंजन लागे राजत अधरन दशन तमोर। मृगमद आड वने करकंकन मोतिन हार शृँगार न डोर ॥ लियो शिरते पट्ट झटकि मनोहर उघरि गए कुच कलस कठोर। सूर सु निरखि भएवश प्रीतम तव प्यारी सां करत निहोर ॥ ९२ ॥ अध्याय ॥३४॥विद्याधर शापमोचन वृंदावनविहार शंखचूडदानववध वर्णन ॥ बिलावल ॥ नंद सब गोपी ग्वाल समेत। गए सरस्वतीके तट एक दिन शिव अंविका पूजा हेत ॥ पूजा करत सकल दिन वीत्यो होइ गई तहँ सांझ। व्रजवासी सव श्रमित होइकैं सोइरहे वनमांझ ॥ अर्ध निशा इक उर्ग आयकै लपटि गयो नँदपाइ। चौंकि परचो दुखपाइ पुकारचो हाहा कृष्ण छुडाय ॥ ग्वालन मिलि श्रीकृष्ण जगाए छुवत पाँइ अहि दीनो छोड। विद्याधरको रूप धारि

कह्यो नाथ करैको तुमरी होड ॥ सब देवनके देव तुमहि हो मैं देख्यो अब तुमको जोई ॥ ऋषि अंगिरा शाप मोहिं दीन्हों भयो अनुग्रह सोई ॥ हरिआज्ञाको पाय नाय शिर गयो आपने लोक। सूरदास हरिके गुण गावत व्रज आए व्रजलोग ॥ ९३ ॥ जागो मोहन भोर भयो वदन उघारि श्याम तुम देखो रविकी किरनि प्रकाशकियो । संगी सखा ग्वार सब ठाढे खेलत हो कछु खेलन यो । आँगन ठाढी है कुँअरि राधिका उनको कहा दुराइ लयो ॥ हँसि मोहन मुसुकाय कह्यो कबहूँ वृषभानुके गेहगयो। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको सर्वसुलै हरि आपु दयो॥ ९६ ॥ मैं हरिकी मुरली वनपाई। सुनै यशुमति सँगछांडि आपनो कुँवरजगाइ दैनहों आई ॥ सुनतहि वचन विहँसि उठि बैठे अंतर्यामी कुँवर कन्हाई । इहके संग हुती मेरी पहुँची दे राधे वृषभानु दोहाई। मैं नाहिन चितलाय निहारो चलौ ठौर सब देहुँ बताई॥ सूरदास प्रभु मिलि अंतर्गति दुहुँन पढी एकै चतुराई ॥ ९४ ॥ कान्हरो ॥ विहरत कुंजन कुंजविहारी । बग शुक विहंगपवन थकि थिर रह्यो तान अलापत जब गिरिधारी ॥ सरिता थकित थकित द्रुमवेली अधर धरति मुरली जब प्यारी। रवि अरु शशि देखो दोउ चोरन संका गहि तब वदन उघारी ॥ आभूषण सब साजि आपने थकित भई व्रजकी कुलनारी।सूरदास स्वामीकी लीला अब जोवै वृषभानु कुमारी९५ गुंडमलार ॥ गगन उठी घटाकारी तामें बगपंगति न्यारी न्यारी। कान्ह कृपाकरि देखिये सुरचापकी छबि बरन बरन रँगधारी ॥ बीच बीच दामिनी कौंधति जनु चंचल नारी । विटबाहर गृह गृह प्रति दुरिजाति आवति विकल मदनकी जारी ॥ वन वरुही चा तकरटै द्रुम द्रुति सघन संचारी। सूरश्याम हित जानिकै तब काम कोविद निजकर कुटी सँवारी ॥ ९६ ॥ सारंग ॥ अद्भुत कौतुक देखि सखीरी श्रीवृंदावन में होडपरीरी। उत घन उदित सहित सौदामिनि इतहि मुदित राधिका हरीरी ॥ उत बगपांति सोभित इत सुंदर धामविलास सुदेश खरीरी । वहां घन गर्जे इहां ध्वनि मुरली जलधर उत इत अमृत भरीरी ॥ उतहि इंद्रधनु इत वनमाला अति विचित्र हरिकंठ धरीरी। सूरसात प्रभु कुँवरि राधिका गगनकी सोभा दूरि करीरी ॥ ९७ ॥ सोरठ ॥ नवल नागरि नवल नागर किसोर मिलि कुंजकोमल कमल दलन सेज्या रची । गौर साँवल अंग रुचिर तापर मिले सरसमणि मृदुल कंचन खची॥ सुरनीमी बंधुहित पिय मानि पियके भुजनमैं कलहमोरुणमची। सुभग श्रीफल उरोज पाणि परसत रोषहू करि गर्व द्दग भाग्य भामिनि चली ॥ कोक कोटि करभ सरसिकहारि सूरज विविध कल माधुरीकिमपी नाहिन बची। प्राण ये मन रसिक ललिता धी लोचन चषकि पिवति मकरंद सुखराशि अंतर सची ॥ ९८ ॥ नट ॥ राधे जलसुत कर जुधरे। अतिही अरुण अधिक छबि उपजाति तजतहंस सगरे ॥ चुगत चकोर चले हैं सन्मुख झझके रहे खरे । तब मुसिकाय वृषभानुनंदिनी दोऊ मिलि झगरे ॥ रवि अरु शशि दोऊ एकै रथ सन्मुख आनि अरे। सूरदास प्रभु कुंजविहारी आनँद उमगि भरे॥ ९९ ॥ ॥ कान्हरो ॥ श्यामा वदन देखि हरि लाज्यो। यहै अपूर्व जानि जिय लघुता खीन इंदु एही दुख भाज्यो ॥ क्रीडत कुंज अटा रजनी सुख प्रेम मुदित नवसत अँग साज्यो। विधु लक्षण जानत सुर नर सब मृग मद तिलक लाज्यो ॥ विथकित रथ चाकित अवलोकित सुंदरि सँग हरि राज विरा ज्यो। विस्मय मिटी शशि पेषि समीपहि काहि अब सूर उभै हरि गाज्यो॥२३००॥विलावल॥कंदुक केलि करत सुकुमारी।अतिहि सूक्ष्म कटि तट आई जिमि विशद नितंव पयोधर भारी॥अंचल चंचल फटी कंचुकी विलुलत वर कुच सटी उघारी। मानो नव जलद बंधुकीनेविधु निकसी नभ कस

ली अन्यारी॥तरल तिलक ताटंक निकट तट उभय परस्पर सोभ शृँगारी।जलरुह हंस मिले मनो नाचत व्रजकौतुक वृषभानुदुलारी ॥ मुक्तावलिको हार लोलगति तापर लटपटात लटकारी। तामें सोलर मनो तरंगिनि निशिनायक तम मोचनहारी ॥ अरु कंकन किंकिणि नूपुर छवि निशापान सम द्युति रति नारी।श्रीगोपाल लाल उरलाई वलि वलि सूर मिथुन कृत भारी॥१॥नट॥ देखे चारि कमल इकसाथ। कमलहि कमल गहे लावति है कमलहि मध्य समात ॥ सारंगपर सारंग खेलतहै सारंगही सों हँसि हँसि जात। सारंग श्याम औरहू सारंग सारंग सों करै बात॥ अरि सारंग राखि सारंगको सारंग गहि सारंगको जात। तौ लै राखि सारंग सारंगको सारंगलै आऊ वा हाथ॥सोई सारंग चतुरानन दुर्लभ सोई सारंग शंभु मुनि ध्यात। सेवत सूरदास सारंगको सारंग ऊपर वलि वलि जात॥२॥नट॥ हरि उर मोहनी वेलि लसी।ता ऊपर उरग ग्रसित तव सोभित पूरन अंश शशी॥चापति कर भुज दंड रेख गुन अंतरबीच कसी।कनक कलस मधुपान मनौ कर भुजनि उलटि धसी॥तापर सुंदर अंचर झाप्यो अंकित दंशतसी। सूरदास प्रभु तुमहिं मिलत जनु दारिव विगरि हँसी ॥ ३ ॥कान्हरो॥ मोहनी मोहनकी प्यारी।रूप उदधि मथिकी विधि हठि पचि रची युवति न्यारी॥चंपक कनक कलेवरकी द्युति शशि न वदन समतारी।खंजरीट मृग मीनकी गुरुता नैनन सबै निवारी ॥ भ्रुकुटी कुटिल सुदेश सोभित अति मनहु मदन धनुधारी। भाल विशाल कपोल मधुप छवि नाशा जिज मदगारी ॥ अधर विंब वंधूप निरादर दशन कुंद अनुहारी । परमरसाल श्याम सुखदायक वचनन सुनि पिकहारी ॥ कुँवरी अहि जनु हेमखंभ लगि ग्रीव कपोत विसारी। बाहु मृणाल जु उरज कुंभ गज निम्ननाभि शुभगारी ॥ मृग नृप खीन कटि राजत जंघा युगल सरस भारी। अरुण रुचिर जु विडाल रसन सम चरणतलीललितारी ॥ एक समय करपर धरि मुक्ता ग्रसै न मराल विचारी । सारंगमत्त जानि मानगहि भए जुविपिन वसारी ॥ जहँ तहँ दृष्टि परति तहँ अरुझत भरि नहिं जात चितारी।सूरदास प्रभु रस वश कीन्हे अंग अंग सुखकारी ॥ ४ ॥नट॥ उरपर देखियतहैं शशि सात। सोवत हुती कुँवरि राधिके चौंकिपरी अधरात॥ खंड खंड होइ गिरे गगनते वास पतिनके भ्रातकै बहु रूप किए मारगते दधिसुत आवत जात॥विधु विहुरे विधु किए शिखंडी शिवमें शिवसुत जात। सूरदास धारैको धरणी श्याम सुनो यह बात॥५॥ बिलावल ॥ आजु वन राजत युगल किसोर। दशन वसन खंडित मुखमंडित गंड तिलक कछु थोर ॥ डगमगात पग धरत सिथिलगति उठे कामरस भोर।रतिपति सारँग अरुण महाछवि उमँगि पलक लगे भोर ॥ श्रुति अवतंस विराजत हरि सुत सिद्ध दरश सुतवोर। सूरदास प्रभु रस वश कीन्ही परी महारण जोर ॥६॥ राजत युगल किसोर किसोरी। प्रातसमय देखियत ग्रीवा भुज श्याम सिथिल आलस गति गोरी ॥ रहे उघाटि बलहीन विलासिनि वरणौ कहा मदन रँग वोरी। मनो अंग अंग सुख फल के हित द्युति वसंत मारुत झकझोरी ॥ शशिमुख सखी श्याम लोचन छवि प्रगटत मिलत उभय पद कोरी। मनु रवि देखि हरषि कछु सकुचत निरखत युवति लेत चित चोरी ॥ थकित सुमन दृग अरुन उनीदे कुरप कटाक्षि करत सुरि थोरी। खंजन मृग अकुलात घात उर श्याम व्याध वाँधे रति डोरी ॥ नील अलक ताटंक अंकदै श्याम गंडऊ पढि तव छोरी । मनहु शेप मधुसर कूरमज्वा काढत उभय रूपधरि तोरी ॥ कोमल कठिन कपोल अमल अति तहँ उपटित क्रीडार हरद रोरी। मदनकोश पर शैल सचारी छाप ताप मोचन मधु घोरी ॥ नैन वैन कर चरण चिकुर चल सिथिल उभय श्रम स्वेदन चोरी । मनु सेना संग्राम मध्यते प्रीति अमी दै ज्याइ वहोरी

थाके रंग रणकी छवि छाजत हारि मानि नहिं रहत निहोरी। सूर सुभट दोउ खेत न छांडत मनहु आइ ठाढे दल जोरी॥७॥सारंग॥ देखो माधौ राधा की रतासुरत समै संतोष न मानत फिरि फिरि अंक भरत॥ मुखके अनिल सुखावत श्रमजल यह छवि मनहि हरत। मानहु कामअग्नि निर्ज्वाला भई ज्यों ज्वाला फेरी करत॥ द्रुतिय प्रेमकी राशि लाडिली पलकन बीच धरत। सूर श्याम श्यामा सुख क्रीडत मनसिजपाँइ परत॥८॥ सारंग॥ नैननको फल सुफल राधिका प्यारी। श्रमजल भरत वृंद वदन मृदु अरविंद प्रसेद मकरंद अलि अलकै अनुसारी॥ नैन मेचक रेख अधर रंग विशेष नासिका जलज मनहुँ गुंजारी। भौंह मन्मथ धनुष पूरि त्रिभुवन विजय तिलक तीक्षण श्रीमंत सार सारी॥ताटंक द्रुति छुटि केश विथुरी लटैं घट कुबेरतर उदित उजियारी। गंड सूक्ष्म इंदु मानहु दिनकर द्वंद सकुचे सतदल सूछकै निवारी॥ दशनहीरकी पांति विच विच मुस काति वरणि नजात मृदुवचन किलकारी। विमल मुक्तमाल लसत उच्चकुचन पर मदन महादेव मनो दई है लचारी॥दोऊ वसत एक ठौर काज निविसत भोर विरुद्ध त्यागि बात बनी अति भारी॥ कमल विकच करनावली मुद्रिका वलय पुट भुज वेलि शुकचारी॥स्कंध वेनी धरे मान मनसिज हरे श्रीगुंजमध्य कुंज सुरंग सारी॥निम्ननाभी लेस कटि अति सुदेश बनी अधार जंघनि अति भारी॥मनहु मन्मथ अजित कारि हरिहि देत होत नाद किंकिणि झनकारी। अति विशद गुरुनितंब चौर बांधे कोउ नाहिंन सम तारी॥मंदगति युगल पटलपर अमल पद्म पानि पटतरन तुम्हारी॥अभिमान पूरन वंक सूर प्रभु यदपि थकितभये गिर निरखि गिरिधारी॥ओट निरखै सखी मनहुँ चित्रत लिखी युक्ति संयोगपर जाहि बलिहारी॥९॥ रागकेदारो॥ नागरताकी राशि किशोरी॥वन नागर कुलमूल साँवरो वरवशकियो चितै मुख मोरी॥ रूप रुचिर अँग अंग माधुरी विनभूषण भूषित व्रजगोरी। छिन छिन कुशल सुगंध अंगमें कोकरभसर सिंधु झकोरी॥चंचल रसिक मधुप मोहन मन राखे कनककमल कुच कोरी। प्रीतम नैन युगल खंजन खग बांधे विविध नितंबन डोरी॥ अवनी उदर नाभि सरसी में मनहु कछुक मादक मधुरोरी। सूरदास पवित सुंदर वर सींव सुदृढ निगमनि की तोरी॥१०॥ ॥ केदारो॥ आजु तनु राधा सज्यो शृँगार। नीरज सुत सुववाहनको भख श्याम अरुण रँग कौन विचार॥ मुद्रापति अचवन तनयासुत उरहि वनावहि हार। गिरिसुत तिन पति विवस करनको अक्षत लै पूजत रिपुमार॥ पंथपिता आसन सुत शोभित श्यामघटा वग पंक्ति अपार। सूरदास प्रभु अंश सुता तट क्रीडत राधा नंदकुमार॥११॥ ललित॥ देख सखी सायक बल जोर। बीस कमल परगट देखियतहै राधा नंदकिसोर॥सोरहकला सँपूरण मोह्यो व्रज अरुणोदय भोर। तामें सखि द्वै कमल लागिरहे चितवत चारि चकोर॥ मनु मन मल द्वै गजराज अरे हैं कोटि मदनभै भोर। सूरदास बलि बलि या छविकी अलकनकी झकझोर॥१२॥ सारंग॥ मोरनके चंद वा माथे वने राजत रुचिर सुदेशरी। वदन कमल ऊपर अलिगण मानो घुंघरवारे केशरी॥ भौंह धनुष दृगवान चपल अति भाल तिलक जनु वानरी। भोरहोत रवि अंधकारको कियो उरध संधानरी॥ मणिगण जडित मनोहर कुंडल राजत लोल कपोलरी। कालिंदीमें रवि प्रति विंबित चंचल पवन अडोलरी॥ सुभग नासिका मुक्ता शोभित झलमलात छवि होतरी। भृगुसुत मानो अमल विमल सखि घनमें किए उदोतरी॥ अरुण अधर सु श्रमित मुख बोलत ईषद कछु मुसुकातरी। मानहु सुपकविंवते प्रगटत रस अनुराग चुचातरी॥ दशनदमक दामिनि सी चमकति सोभा कहत न आवैरी। याहीते दाडिम उर विगासित तिनकी सम नहिं पावैरी॥ चिवुक चारु मर्कत मणि

दुति सखी राजति त्रिवली ग्रीवरी । मानहु सत तीनि रेखा करि कामरूपकी सीवरी ॥ उन्नत विसाल हृदय राजतहै तापर मुक्ताहाररी । मानहु साँवर गिरिते सरिता अध आवत द्वै धाररी ॥ भुज भुजंग मनु चंदन चरचित करगहि मुख धरि वंसरी । मानहु सुधा सरोवरके ढिग कुंजत युग कल हंसरी ॥ कंचन वरन पीत उपरैना सोभित साँवर अंगरी । मानहु आवत आगे पाछे निशि वासर इक संगरी ॥ नाभि सरोज सुधा सरसी जनु त्रिवली सिढी वनाइरी । व्रजवधु नैन मृगी आतुरह्वै अति प्यासी ढिग आइरी ॥ कटि प्रदेश सुंदर सुदेश सखि तापर किंकिणि राजैरी । अति नितंब जंघन सोभितहै देखत मृगपति लाजैरी ॥ पीन पिंडुरिया साँवल सीरी चरणाम्बुज नखला लरी । मंद मंद गति वो आवतिहै मत्त दुरदकी चालरी ॥ सूरदास सर्वसहि निरंतर मनमोहन अभिरामरी । वृंदावनमें विहरत दोऊ मम प्रभु श्यामा श्यामरी॥१३॥ देखि हरिजूके नैननकी छवि । इहै जानि दुखमानि मनहु अंबुज सेवत रवि ॥ खंजरीट अति वृथा चपलता गये वन मृगजल मीन रहे दवि । तहँउ जानि तनु तजत जवहि कछु पटतरदे वे कहत कुकवि ॥ इन्हसे येइ पचिहारि रही हौं आवै नहीं कहत कछू फवि । सूर सकल उपमा जोरही यों ज्यों होइ आवै कहत होमत हवि १४॥ गूजरी ॥ किसोरी देखत नैन सिरात । वलि वलि सुखद मुखारविंदकी चंद्रविंदु दुरिजात ॥ अवमोचन लोचन रतनारे फूले ज्यों जलजात । राजत निकट निपट श्रवणनके पिशुन कहत मनवात ॥ गौर लिलाट पाट पर सोभित कुंचित कच अरुझात । मानो कनक कमल मकरंदहि पीवत अलिन अघात ॥ नकवेसरि वंसीके संभ्रम भौंह मीन अकुलात । मनु ताटंक कमठ घूंघट डर जालवाझि अकुलात । श्यामकंचुकी मांझ सांझ फूले कुच कलस नसमात । मानहु मत्त गयंद कुंभनि पर नील ध्वजा फहरात ॥ नखशिखलौं रस रूप किसोरी विलसत साँवल सुकृतगात । यहसुख देखत सूर अवर सुख उडे पुराने पात॥१५॥वसौ जु मेरे नैननमेंए जोरी।सुंदरश्याम कमलदल लोचन सँग वृपभानु किसोरी ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल पीतांवर झकझोरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको का वरणौंमाति थोरी ॥ विलावल ॥शंखचूड तेहि अवसर आयो । गोपी हुतीं प्रेमरस माती तिन ताको कछु शुद्धि न पायो ॥ चल्यो पराइ सकल गोपीलै दूरिगयो तव उन सुधि आयो । को यह लिये जात कहां हमको कृष्ण कृष्ण कहि कहि गोहरायो॥गोपी टेर सुनत हरि पहुँचे दानव देखि डरायो ।मुष्टिका मारि गिराइ दियो तेहि गोपिन हर्ष वढायो॥मणि अमोल ताके शिरताही दिये हलधरही आयो ।सूर चले वनते गृहको प्रभु विहँसत मिलि समुदायो॥१६॥सोरठ॥सोई सुख नंद भाग्यते पायो । जो सुख ब्रह्मादिकको नाहीं सोइ सुख सुरभी वछ वृंदावन सोइ सुख यशुमति गोदखिलायो॥सोइ सुख ग्वालन टेरि सुनायो सोइ सुख यमुनाकूल कदमचढि कोप कियो काली गहि ल्यायो ॥ सुखही सुख डोलत कुंजनमें सव सुखनिधि वनते व्रजआयो।सूरदास प्रभु सुखसागर अति सोइ सुख शेप सहस मुख गायो ॥ ॥१७॥विलावल॥ कौन परी नँदलालहिं वानि । प्रातससै जागनकी विरियां सोवतहै पीतांवर तानि ॥ मात यशोदा कवकी ठाढ़ी दधि ओदन भोजन लिये पान । तुम मोहन जीवनधन मेरे मुरली नेकु सुनावहु कान ॥ संग सखा व्रजवाल खरे सव मधुवन धेनु चरावन जान ॥ यह सुनि श्रवण उठे नँदनंदन वंसी वेणु माँग्यो मृदुआन ॥ जननी कहति लेहु मनमोहन दधि ओदन घृत आन्यो सानि । सूर सु वलि वलि जाउँ वेणुकी जिहि लगि लाल जगे हितमानि १८॥ अध्याय॥३५॥ विलावल॥ भोर भयो जागो नँदनंद । तात निशि विगत भई चकई आनंद मई तरनिते चंद्र

भयो मंद॥तमचर खगरोर अलि करैं तव सोर वेगि मोचन करहु शुभगल फंद।उठहु भोजन करहुशिशु खौरि उतारि धरहु जननी प्राति देहु रूप निजफंद॥त्रियन दधि मथन करहिं मधुर ध्वनि श्रवण सुनि कृष्ण गुण विमल यश करत आनंद। सूर प्रभु हरिनाम उधारत जगजीवन गुण कौन देखिछकित भयो छंद॥१९॥बिलावल॥जागिए गोपाल लाल ग्वाल द्वार ठाढेरैनि अंधकार गयो चंद्रमा मलीन भयो तारा गण देखियत नाहिं तराणि किरणि वाढे॥मुकुलित भए कमल जाल गुंज करत भृंगमाल प्रफुलित वन पुहुप डार कुमुदिनि कुँभिलानी। गंधर्व गुण गान करत स्नान दान नेम धरत हरत सकल पाप वदत विप्र वेद वानी॥ बोलत नंद वार वार मुख देखैं तुव कुमार गाइन भई बड़ीवार वृंदाव न जैबे। जननी कहति उठो श्याम जानत जिय रजनि ताम सूरदास प्रभु कृपालु तुमको कछु खैबे॥२०॥रसोई वर्णन॥ भोजन भयो भावते मोहन। तातोइ जेइ जाहु गो गोहन॥खीर खांड खीचरी सँवारी। मधुर महेरि सो गोपन प्यारी॥ राइ भोग लियो भात पसाई। मूंग ढरहरी हींग लगाई सदमाखन तुलसी दैतायो। घिरत सुवास कचोरा नायो॥ पापर वरी अचार परम शुचि। अदरख अरु निबुवन ह्वै है रुचि॥सूरन करि तरि सरस तरोई। सोमि सींगरी छमाकि झोरई॥ भरता भँटा खटाई दीनी। भाजी भली भाँति दश कीनी॥ साग चना सँग सब चौराई। सोवा अरु सरसों सरसाई॥ वथुवा भली भाँति रचि राँध्यो। हींग लगाइ राइ दधि साँध्यो॥ पोई पर वर फाँग फरी चुनि। टेंटी टेंट सछोलि कियो पुनि॥ कुंदुरु और ककोरा कौरे। कचरी चार चचे डा सौरे॥ बने बनाई करेला कीने। लोन लगाइ तुरत तलिलीने॥ फूले फूल सहींजन छौंके। मनरुचि होइ नाजुके औके॥ फूल करील कली पाकर नम। फली अगस्त्य करी अमृत सम॥ अरु यहि अँबिली दई खटाई। जेवत षटरस जात लजाई॥ पेठा बहुत प्रकारन कीने। तिनसों सबै स्वाद हरि लीने॥ खीरा राम तरोई तामें। अरुचि नरुचि अंकुर जिय जामें॥ सुंदर रूप रतालू रातो। तरि करि लीन्हो अबहीं तातो॥ ककरी कचरी अरु कचनारचो। सुरसनिमो ननि स्वाद सँवारचो॥ कैयो भांति केरा करि लीने। दे करवँदा हरादि रँग भीने॥ वरवरील अरु वरा वहुत विधि। खारे खाटे मीठे हैं निधि॥ पानौरा राइता पकोरी। उभकौरी मुँगछी सुठि सौं री॥ अमृत इड हर है रस सागर। वेसन सालन अधिको नागर॥ खाटी कढ़ी विचित्र बनाई। बहुत वार जेंवत रुचि आई॥ रोटी रुचिर कनकवेसन करि। अजवाइनि सैंधौ मिलइ धरि॥ अवहिं अगाकरि तुरत बनाई। जे भाजि भाजि ग्वालन सँगखाई॥माँडे माँडि दुनेरो चुपरे। वह घृत पाइ आपुहीउखरे॥ पूरि सपूरि कचौरी कौरी। सदल सुउज्ज्वल सुंदर सौरी॥ लुचई ललित लापसी सोहै। स्वाद सुवासु सहज मनमोहै॥ मालपुआ माखन मथि कीन्हे। ग्राह ग्रसित रवि सम रँग लीन्हे॥ लावन लाडू लागत नीके। सेव सुहारी घेवर घीके॥ गोझा गूंदे गाल मसूरी। मेवा मिलै कपूरन पूरी॥ शशिसम सुंदर सरस अँदरसे। ऊपर कनी अमी जनु वरसे॥ बहुत जलेब जलेबी बोरी। नाहिन घटत सुधाते थोरी॥ देखत हरष होत है समी। मनहु बुदबुदा उपजत अमी॥ फेनी घुरि मिसि मिली दूधसँग। मिश्री मिश्रित भई एक रँग॥ साज्यो दही अधिक सुखदाई। ता ऊपर पुनि मधुर मलाई॥ खोवा खोइ औटिहै राख्यो। सुहै मधुर मीठे रस चाख्यो॥ वासौंधी सिखरनि अति सोधी। मिलै मिरच मेटत चकचौंधी॥ छाँछ छवीली धरी धुगारी। झरहैं उठत झारकी न्यारी॥इतने जतन यशोदा कीन्हें। तव मोहन बालक सँग लीन्हें॥ बैठे आइ हँसत दोउ भैया। प्रेम मुदित परसातिहै मैया॥

थार कटोरा जरित रतनके ॥ भरि सब बासन विविध जतनके। पहिले पनवारो परसायो। तब आपुन कर कौर उठायो॥ जेंवत रुचि अधिको अधिकैया । भोजनहूं बिसरति नाहिं गैया ॥ शीतल जल कपूर रस रचयो। सोमोहन निज रुचि करि अचयो॥ महरि मुदित नित लाड लडावै । ते सुख कहा देवकी पावै ॥ धारि तुष्टी झारी जल ल्याई। भरचो चुरूखरिका लै आई ॥ पीरे पान पुराने बीरा। खातभई द्युति दातनि हीरा॥ मृगमद कन कपूर कर लीने । बाँटि बाँटि ग्वालनको दीने ॥ चंदन और अरगजा आन्यो । अपने कर बलके अँग बान्यो ॥ तापाछे आपुनहूं लायो। उबरचो बहुत सखन पुनि पायो॥ सूरदास देख्यो गिरिधारी । बोलिदई हँसि जूठनि थारी॥ यह जेवनार सुनै जो गावै। सो निज भक्ति अभय पद पावै॥२१॥विलावल॥रामकली ॥ भोजन करत मोहनराइ। हरषि मुखतन देत मोहन आपु लेत छडाइ ॥ देखहीं मुख नंदको तब आनँद उर नसमाइ। निरखि प्रभुकी प्रगट लीला जननि लेति बलाइ॥ नंदनंदन नीर शीतल अचै उठे अघाइ। सूर जूठन भक्तपाई देव रहे लुभाइ॥२२॥विलावल॥देख सखी व्रजते बनआवत।रोहिणिसुत यशुमति सुतकी छवि गौर श्याम हरि हलधर गावत॥ नीलाँबर पीताँबर ओढे यह सोभा कछु कही नजात। युगल जलद युग तडित मनहुँ मिलि अरस परस जोरतहैं नात॥ शीश मुकुट मकराकृत कुंडल झलकै विविध कपोलहिं भाँति मनहुँ जलद युग पास युगल रवि तापर इंद्र धनुषकी कांति॥ कटि कछनी कर लकुट मनोहर गोचारन चले मन उनमानि । ग्वाल सखा बिच श्रीनँदनंदन बोलत वचन मधुर मुसुकानि॥ चितै रहीं व्रजकी युवती सब आपुसहींमें करत विचार । गोधन वृंदलिए सूरज प्रभु वृंदावन गए करत विहार ॥ २३ ॥ ग्वाल वचन श्रीकृष्ण मति ॥ गौरी ॥ छवीले मुरली नेक बजाउ । बलि बलि जात सखा यह कहि कहि अधर सुधारसप्याउ ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ वृंदावन दुर्लभ प्रेम तरंग । नाजानिये बहुरि कबह्वैहै श्याम तुम्हारो संग ॥ विनती करहिं सुबल श्रीदामा सुनहु श्याम दै कान । जा रसको सनकादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान॥ कब पुनि गोप भेष व्रज धरिहौं फिरिहौं सुरभिन साथ। कब तुम छाक छीनिकै खैहो हो गोकुलके नाथ॥ अपनी अपनी कंध कमरिया ग्वालन दई डसाइ। सौंह दिवाइ नंदबाबाकी रहे सकल गहिपाइ॥ सुनि सुनि दीन गिरा मुरलीधर चितए मुख मुसकाइ । गुणगंभीर गोपाल मुरलि कर लीन्हो तबहिं उठाय ॥ धरिकर वेनु अधर मन मोहन कियो मधुर ध्वनि गान । मोहे सकल जीव जल थलके सुनि वारचो तन प्रान ॥ चपलनयन भ्रुकुटी नाशापुट सुनि सुंदर मुखवैन । मानहु नृत्यक भाव दिखावत गति लिये नायक मैन॥ चमकत मोर चंद्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल। मानहु कमलकोशरस चाखत उड़िआए अलिमाल॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत ऐसी सोभा देत । मानहु सुधासिंधुमें क्रीडत मकर पानके हेत ॥ उपजावत गावत गतिसुंदर अनाघातके ताल । सरबस दियो मदन मोहनको प्रेम हरषि सब ग्वाल॥ सोभित वैजंती चरणनपर श्वासा पवन झकोरि । मानहु ग्रीव सुरसरी बहि आवत ब्रह्मकमंडलु फोरि॥ डुलति लता नहिं मरुत मंदगति सुनि सुंदर मुख वैन। खग मृग मीन अधीन भए सब कियो यमुन जल सैन॥ झलमलात भृगुकी पदरेखा सुभग साँवरे गात। मानो षट्विधु एकै रथ वैठे उदय कियो अधरात ॥ बांके चरण कमल भुज बांके अवलोकनि जु अनूप । मानहु कल्पतरोवर विरवा आनि रच्यो सुरभूप ॥ आयसु दियो गुपाल सबनको सुखदायक जियजान । सूरदास चरणनरज मांगत निरखत

रूपनिधान॥२४॥ सारंग ॥रीझत ग्वालरिझावत श्याम।मुरलि बजावत सखन बोलावत सुबल सुदामा लैलै नाम ॥ हँसत सखा सब तारी दैदै नाम हमारो मुरली लेत । श्याम कहत अब तुमहु बोला वहु अपने करते ग्वालन देत ॥ मुरली लैलै सबै बजावत काहूपै नहिं आवै रूप। सूरश्याम तुम्हरे हि मुख बाजत कैसे देखो राग अनूप॥२५॥ टोडी ॥हरि बराबरि वेणु कौन बजावै।जगजीवन विदित मुनिनाचन वेणु सो बजावै चतुरानन पंचानन सहसानन ध्यावै ॥ ग्वाल बाल लिए यमुना कछु वच्छ चरावै। सुर नर मुनि अखिल लोक कोउ न पार पावै ॥ तारन तरन अगणित गुण निगम नेति गावै ॥ तुमको यशुमति आँगन अपने दैकरताल नचावै । सूरदास प्रभु कृपाधाम हैं भक्तन वश्य कहावै ॥२६॥ अथ परस्पर गोपिका वचन विरह अवस्था ॥ टोडी॥मुरली सुनत देहगति भूली। गोपी प्रेम हिंडोरे झूली ॥ कबहूं चकृत होहिं सयानी। श्वेदचलै द्रवै जैसे पानी ॥ धीरज धरि इक इक हि सुनावहि । यह काहिकै आपुहि बिसरावहि ॥ कबहूं सुधि कबहूं बिरसाई। कबहूं मुरली नाद समाई ॥ कबहूं तरुणी सब मिल बोलैं। कबहूं रहैं धीर नहिं डोलैं ॥ कबहुँ चलैं कबहूं फिरि आवैं। कबहुँ लाज तजि लाज लजावैं ॥ मुरली श्याम सुहागिनि भारी। सूरदास कहत ऐसी ब्रजनारी ॥२७॥ विहागरो ॥ अधर धरि मुरली श्याम बजावत। सारंग गौरी नट नारायण करि कै गौरी सुरहि सुनावत ॥ आपु भए रस वश ताहीके औरन वश करवावत । ऐसो को त्रिभुवन जल थलमें जो शिर नंहीं धुनावत ॥ सुभग मुकुट कुंडल मणि श्रवणन देखत नारि न भावत। सूरदास प्रभु गिरिधर नागर मुरली धरन कहावत ॥ २८ ॥ सारंग ॥ अधर रस मुरली सौतिन लागी। जा रसको षटरूप वपु कीन्हो सोरस पीवत सभागी ॥ कहां रही कहँते इह आई कौने या हि बोलाई। सूरदास प्रभु हमपर ताको कीने सवति बजाई ॥२९॥ केदारो ॥मुरली मोहनी भई।करी जु करनि देव दनुजनि प्रति वह विधि फेरि ठई॥वह पय निधि इन ब्रज सागर मथि प्याइ पियूष नई। सिंधु सुधा हरि वदन इंदुकी इह छल छीनि लई॥आपु अचै अचवाइ सप्तसुर कीन्हे दिग विजई।एकहि पुट उत अमृत सूर इत मदिरा मदन मई ॥३०॥जोपै मुरलीको हित मानौ॥तौ तुम बार बार ऐसे कहि मनमें दोष न आनौ। वासर श्याम विरह अहि ग्रासित हूजत मृतक समान। लेति जिवाय मंत्र सुरस कही कराति नडर अपमान ॥ निज संकेत खिलावाति अजहूं मिलवाति सारँग पानि। शरद निशा रसरास करायो बोलि बोलि मृदुवानि ॥ परकृत शील सुकृत उपमा रमि तासों यो कत कहिए। परमानंद सूरदास क्यों मेटि कृत न्याइ इतो दुख सहिए॥३१॥मलार॥अधर मधु कतक मुई हम राखि। संचित किए रही शर घासो सकी न सकुचनि चाखि॥ शशि सहि शीत जाइ यमुनातट दीनवचन दिन भाषि। पूजि उमापतिको वर पायो मनही मन अभिलाषि॥ सोइ अब अमृत पीवति मुरली सबहिनके शिरनाखि। लिए छँडाइ निडर सुनि सूरज धेनु धूरिदै आँखि॥३२॥ नट ॥सखीरी माधोहि दोष न दीजै। जो कछु करि सकिये सोई या मुरलीको अब कीजै॥ बार बार बन बोलि मधुर ध्वनि अति प्रतीति उपजाइ। मिलि श्रवणन मनमोहि महारस तनकी सुधि बिसराइ॥मुख मृदु वचन कप ट अंतर गति हम यह बात न जानी। लोक वेद कुल छाँडि आपनो जोइ जोइ कही सुमानी ॥ अजहूं वहै प्रकृति याके जिय लुब्धक संग जु साधी। सूरदास क्योंही करुणा मय परति नहीं आरा धी॥३३मुरली तो यहआहिबांसकी॥बाजत श्वास परत नहिं जानति भई रहति पिय पासकी॥चेतनको चितहराति अचेतनि भूखी डोलत मासकी॥सूरदास सब ब्रजवासिन सों लियें रहति है गासकी॥३४॥ जादिनते मुरली कर लीन्ही।तादिनते श्रवणन सुनि सुनि सखि मनकी बात सबै लै दीन्ही॥लोक वेद

कुल लाजकानि तजि मर्याद वचन मिति कीन्हीं।तबही ते तनु सुधि बिसराई निशि दिन रहति गोपाल अधी न्हीं॥शरद सुधानिधि शरद अंश ज्यों सींचत अमी प्रेमरस भीनी।ता ऊपर शुभदरश सूरप्रभु श्रीगोपाल लोचन गति छीनी॥३४॥मुरली भई आजु अनूप। अधर बिंब बजाय करधरि मोहे त्रिभु वन भूप॥ देखि गोपी गाइ गाइन देखि गृह बन कूप। देखि मुनिजन नाग चंचल देखि सुंदर रूप॥ देखि धरणि अकाश सुर नर देखि शीतल धूप। देखि सूर अगाध महिमा भए दादुर चूप॥३५॥ कान्हरो॥ मुरलिया मोको लागत प्यारी। मिली अचानक आइ कहांते ऐसी रही कहांरी॥ धनिया-के पितु मात धन्य यह धन्य धन्य मृदु बोलनि। धन्य श्याम गुण गुणिकै ल्याये नागरि चतुर अमोलनि॥ इह निर्मोल मोल नहिं याको भली न याते कोई। सूरदास याको पटतर को तौ दीजै जो होई॥३६॥ गौरी॥मोहन मुरली अधर धरी।कंचन मणि मय खचित रचित अति कर गिरि धरन परी॥ औघरतान बंधान सरस सुर अरु रस उमँगि भरी। आकर्षत मन तन युवतिन के नग खग बिवस करी॥ पिय मुख सुधा विलास विलासिनि सुरत सँगीत समुद्र तरी। सूरदास त्रैलोक विजययुत दर्प मीन पति गर्व हरी॥३७॥ केदारो॥ मुरली श्यामके कर अधरबिंब रमी। लेति सर्वसु युवति जनको वदन बिंदुत अमी॥ पिवति न्यारे गर्व मारे नेकु नाहीं नमी। बोलि शब्द सुसप्तसुर मिल नाग मुनि गति दमी॥ महाकठिन कठोर आली बांस वंशजु जमी। सूर पूरण परसि श्री मुख नैक नाहीं झमी॥३८॥मलार॥ बांसुरी विधिहूते प्रवीन।कहिए काहि आहि को ऐसो कियो जगत आधीन॥ चारि वदन उपदेश विधाता थापी थिर चरनीति। आठ वदन गर्जति गर्वीली क्यों चलिए यह रीति॥ विपुल विभूति लई चतुरानन एक कमल करि थान। हरिकर कमल युगल पर बैठी बाढ्यो यह अभिमान॥ एकबेर श्रीपतिके सिखये उन लियो सब गुण गान। इनके तौ नंद-लाल लाडिलो लग्यो रहत नितकान॥ एक मराल पीठि आरोहन विधि भयो प्रबल प्रशंस। इन तौ सकल विमान किए गोपीजन मानस हंस॥ श्रीवैकुंठनाथ उर वासिनि चाहत जापद रेन। ताको मुख सुखमय सिंहासन करि बैसी यह ऐन॥ अधर सुधा पी कुल व्रत टारयो नहीं साखि श्रमताग। तदपि सूर या नंदसुवनको याही सों अनुराग॥३९॥ सारंग॥ वंसी बैर परी जु हमारी। अधर पियूप अंश तिनहींको इन पियो सब दिन निज २ प्यारी॥ इकधौं हरि मन हरति माधुरी दूजे वचन हरत अन्यारी। वांस वंश हरि वेध महाशुभ अपने छेद न जानत कारी॥ सुन्यो सुपति जानी व्रजको पति सो अपनाइ लियो रखवारी। सुने अनित सूरज प्रभु केरी अधर गोपाल जे अपने धारी॥४०॥ मलार॥ जब जब मुर लिके मुख लागत। तब तब श्याम कमलदल लोचन नखशिखते रस पागत॥ बातन कहत रहत टेढेहोइ बाँह अलिंगन मानत। भ्रुकुटी अधर बिंब नाशा पुट सूधो चितवन त्यागत॥ पल इक माँह पलटसो लीजत प्रगट प्रीति अनागत।सूरदास स्वामी बंसी वश मुरछि निमेष नजागत॥४१॥ ॥ बंसीबचन-मलार॥ ग्वालिनी तुम कत उरहन देहु। पूछहु जाइ श्याम सुंदरको जिहि विधि जुरयो सनेहु॥ बारेहीते भई बिरत चित तज्यो गाँउ गुणगेह। एकहि चरण रहीहो ठाढी हिम ग्रीषम ऋतुमेह॥ तज्यो मूल शाखा सो पत्रनि सोच सुखानी देहु। अगिनि शूलाकत मोरयो न अंग मन विकट बनावत वेहु॥ बकती कहा बांसुरी कहि कहि करि करि तामस तेहु। सूरश्याम इहि भाँति रिझैके तुमहु अधर रस लेहु॥४२॥मलार॥ज्यों ज्यों मुरलिहि महत दियो। त्यों त्यों निदरि श्याम कोमल तन वदन पियूप पियो॥ रोके रहति पाणि पल्लव पुट होत नकछू

वियो। वैठति अधरन पीठ परमरुचि सकुचन नाहिं हियो ॥ जान्यो जग रति पति शिव जारयो सो यह सूर जियो। विधि मर्याद मेटि इन जो जो रुचि आयो सो कियो॥४३॥सारंग ॥ इन मुरली कछु भलो न कीन्हों। अधर सुधा सरवर सुहमारो आपुन पियो अरु औरन दीन्हों ॥ विरुधे द्रुम तृण सोलसतिलतट पूजति गौरि भयो तनु छीनो।सो मधु सूरज परसि कुटिल चित सवहिनके देखत हरि लीनो॥४४॥ अथ श्रीकृष्ण ब्रज आवन ॥ गौरी॥नटवर भेष धरे ब्रज आवत। मोर मुकुट मकराकृत कुंडल कुटिल अलक मुखपर छवि पावत॥भ्रुकुटी विकट नैन अति चंचल यह छवि पर उपमा इक धावत। धनुष देखि खंजन विवि डरपत उडि नसकत उठिवे अकुलावत ॥ अधर अनूप मुरलि सुर पूरत गौरी राग अलापि बजावत। सुरभीबृंद गोप बालक सँग गावत अति आनंद बढावत॥ कनक मेखला कटि पीतांबर नृत्यत मंद मंद सुर गावत। सूर श्याम प्रति अंग माधुरी निरखत ब्रजजनके मन भावत॥४५॥कान्हरो॥ ब्रज युवती सब कहत परस्पर बनते श्याम बने ब्रज आवत। ऐसी छवि मैं कबहुँ नपाई सखी सखी सों प्रगट देखावत ॥ मोर मुकुट शिर जलजमाल उर कटि तट पीतांबर छवि पावत। नव जलधर पर इंद्रचाप मानो दामिनि छवि वलाक घन धावत ॥ जेहि जु अंग अवलोकन कीन्हों सो तन मन तहँहीं विरमावत। सूरदास प्रभु मुरली अधर धरे आवत राग कल्याण बजावत ॥ ४६ ॥ रागगुण सारंग ॥ मेरे नयन निरखि सचुपावैं । बलि बलि जाउँ मुखाविंदकी वनते पुनि ब्रज आवैं ॥ गुंजाफल अव तंश मुकुटमणि वेणु रसाल बजावैं । कोटि किरणि मुखमें जो प्रकाशत उडुपति वदन लजावैं ॥ नटवर रूप अनूप छबीलो सबहिनके मनभावैं। सूरदास प्रभु चलन मंदगति विरहिन ताप नशावैं ॥ ४७ ॥ गौरी ॥ बलि बलि मोहन मूरतिकी बलि बलि कुंडल बलि नैन विसाल। बलि भ्रुकुटी बलि तिलक विराजत बलि मुरली बलि शब्द रसाल ॥ बलि कुंडल बलि पाग लटपटी बलि कपोल बलि उर वनमाल। बलि मुसुकानि महामुनि मोहत बलि उपरैना गिरिधर लाल ॥ बलि भुज सखा अंग पर मेले बलि कुलही बलि सुंदर चाल । बलि काछनी चोलनाकी बलि सूरदास बलि चरण गोपाल॥४८॥ जैतश्री ॥ सुंदर सांवरे हो तैं चित लियो चुराइ। संगी सखा सांझके समये निकसे द्वारे आइ ॥ देखि अद्भुत रूप तेरे रहे नयन उर छाइ । पाग ऊपर गोसमावल रंग रंग राचि बनाइ ॥ अति सुंदर शुक नासिका राजत लोल कपोल। रत्न जडित कुंडल ज्यों झलकत करन कपोल ॥ कटि तट काछ विराजई पीतांबर छवि देत ।अमृत कमल मुख भाषई तन मन वशकरलेत ॥ भौं हैं धनुष दुइ वरुनि मनों मदन शरसाँध। जाहि लगे सोइ जानै संग लेत बलि बांध ॥ अंग अंग पर बलिगई मुरली नेक बजाइ। सुनि पावैं सचु गोपिका सूरदास बलिजाइ॥४९॥ बिलावल ॥ श्याम कछु मोतनहीं मुसुकात । पीतांबर पहिरे चरण पाँवरी ब्रजवीथिनमें जात ॥ अति बुधि वंदि चंद नखशिखलौं सोंधे भीने गात । अलकावली अधर मुख वीरा काध कमल कर दिशहि फिरावत॥ धन्यभाग्य ब्रजके जो सखीरी धन्य धन्य उनके जननी तात। धन्य जे सूरदास प्रभु निरखत अति भूखे लोचन न अघात५०॥अडानो॥श्यामसुंदर आवै वनते बने आजु देखि देखि नैन रीझे। शीशमुकुट डोल श्रवणकुंडल लोल भ्रुकुटी धनुष नैन खंजनझीझे ॥ दशन दामिनि ज्योखिझे उर परमाल मोती ग्वाल बाल सब आवैं रँगभीजे । सूर प्रभु श्याम राम संतनके सुखद धाम अंग अंग प्रति छवि निरखिजीजै५१॥कान्हरो॥ विराजतरी वनमाल गरे हरे हरि आवत वनते। पुहुपनिसों लाल पाग लटकि रहीरी वाम भागसों छवि टरत न मनते ॥ मोर मुकुट शिर श्रीखंड गोरज

मुखपर मंडित नटवर रहे भेपधरे आवत छविते। सूरदास प्रभुकी छवि व्रजललना निरखि थकित तन मन न्यवछावरि करति आनंद वरते ॥ ५२ ॥ गौरी ॥ व्रजको देखि सखी हरि आवत । कटि तट सुभग पीतपट राजत अद्भुत भेप बनावत ॥ कुंडलतिलक चक्र रज मंडित मुरली मधुर वजावत । हँसि मुसुकानि नेक अवलोकनि मन्मथ कोटि लजावत ॥ पीरी धोरी धुमरी गोरी लैले नाम बोलावत । कबहूं गान करत अपने रुचि करतल ताल वजावत ॥ कुसुमित दाम मधुप कल कुंजत संग सखा मिलि गावत । कबहुँक नृत्यकरत कौतूहल सप्तक भेद दिखावत ॥ मंद मंदगति चलत मनोहर युवतिन रस उपजावत । आनँदकंद यशोदानंदन सूरदास मनभावत॥५३॥ गौरी॥कमलमुख सोभित सुंदर वेनु। मोहनराग वजावत गावत आवत चारैं धेनु॥ कुंचितकेश सुदेश वदनपर जनु साज्यो अलिसैनु।सहि न सकति मुरली मधु पीवति चाहत अपनो ऐनु ॥ भ्रुकुटि मनो कर चाप आपलै भयो सहायक मैनु । सूरदास प्रभु अधर सुधा लगि उपज्यो कठिन कुचैनु ॥५४॥ केदारो॥ नैनन निरखि हरिको रूप । मन बुद्धिदै सुख चितै माई कमल अयन अनूप॥कुटिल केश सुदेश अलिगण नैन शरद सरोज।मकरकुंडल किरणिकी छवि दुरत पियत मनोज ॥ अरुन अधर कपोल नाशा सुभग ईपद हास । दशन दामिनि जलद नवशशि भ्रुकुटि वदन विशाल॥अंग अंग अनंग जीति रुचिर उर वनमाल।सूर सोभा हृदय पूरण देत सुख गोपाल॥५५॥ केदारो ॥ हरिको वदन रूपनिधान । दशन दाडिम वीजराजत कमलकोशसमान ॥ नैन पंकज रुचिर द्दगदल चलन भौंहन वान । मध्यश्याम सुभद्रमानो अलिः वैठो आन ॥ मुकुट कुंडल किरनि करननि किय किरनकी हान । नासिका मृगतिलक ताकत चिवुक चित्त भुलान । सूरके प्रभु निगमवाणी कौन भांति वखान५६॥नट॥ माधोजूके वदनकी सोभा । कुटिल कुंतल कमल प्रतिमनों मधुपरस लोभा ॥ भ्रुकुटि इमि नवकंज पारस सदृशचंचल मीन । मुकुट कुंडल किरनि रवि छवि परस विगसित कीन ॥ सुरभिरेणु पराग रंजित मुराले ध्वनि अलिगुंज । निरखि सुभग सरोज मुदित मराल सम शिशुपुंज ॥ दशन दामिनि वीच मिलि मनो जलद मध्य प्रकाश । गावत निगम वाणी नेति क्यों कहि सकै सूरजदास॥५७॥नट॥देखिरी देख मोहन वोर ।श्याम सुभग सरोज आनन चारु चित्त चकोर ॥ नील तनु मनु जलदकी छवि मुराले सुर घनघोर । दशन दामिनि खसत वसननि चितवनी झकझोर ॥ श्रवण कुंडल गंड मंडल उदित ज्यों रवि भोर । वरहि मुकुट विशाल माला इंद्रधनु छवि थोर॥वनधातु चित्रित भेप नटवर मुदित नवल किसोर। सूरश्याम सुभाइ आतुर चितै लोचनकोर ५८॥कल्याण॥ माधोजूके तनुकी सोभा कहत नाहिं वनि आवै । अचवत आदर लोचन पुट दोउ मनु नहिं तृपिता पावै॥सघन मेघ अति श्याम सुभग वपु तडित वसन वनमाल॥शिर शिखंड वनधातु विराजत सुमन सुरंग प्रवाल॥कछुक कुटिल कमनीय सघन अति गोरज मंडित केश । अंवुज रुचिर पराग पर मानो राजत मधुप सुदेश ॥ कुंडल लोल कपोल किरिणि गण नैन कमल दल मीन । अधर मधुर मुसकानि मनोहर करत मदन मन हीन प्रति प्रति अंग अनंग कोटि छवि सुनसखी परम प्रवीन।सूर दृष्टि जहँ जहँ पर तितही तहीं रहति है लीन॥५९॥रामकली॥ इहै कोऊ जानेरी । वाकी चितवनि में कि चंद्रिका किधौं मुरली माझ ठगोरी। देखत सुनत मोहि जा सुर नर मुनि मृग और खगोरी ॥ अरी माई जवते दृष्टि परे मन मोहन गृह मेरो मन न लग्योरी।सूरश्याम विनु छिन नरहौं मेरो मन उन हाथ पगोरी॥६०॥कल्याण॥लालके रूप माधुरी नैनन निरखी नेक सखीरी । मनसिज मन हरनही साँवरो सुकुमार राशि नख शिख

अंग अंग निरखि सोभाकी सींव नखीरी। रंगमगी शिरसुरंग पाग लटकि रही वामभाग चंपकली कुटिल अलक बिच बीच खरखीरी॥ आयत दृग अरुण लोल कुंडल मंडित कपोल अधर दशन दीपतिकी छबि क्योंहूं न जात लखीरी। उभय उदय भुज दंड मूल पीन अंशसानुकूल कनक मेखला दुकूल दामिनी धर खीरी॥ उर पर मंदार हार मुकुता लर वर सुढार मत्त द्विरद गति त्रियनिकी देह दशा कर खीरी। मुकुटित वे नवकिसोर वचन रचन चितके चोर माधुरी प्रकाश अनूप मंजरी चखीरी। सूरश्याम अति सुजान गावत कल्यान तान सपत सुरन कल इते पर मुरलिका वरषीरी॥६१॥गौरी॥ढोटा कौनको इहरी। श्रुति मंडल मकराकृत कुंडल कनककंठ दुलरी॥ घन तन श्याम कमल दल लोचन चारु चपल तुलरी। इंदुवदन मुसुकानि माधुरी अकलन अलिकुलरी॥ उर मुक्ताकी माल पीतपट मुरली सुर गौरी। पगनूपुर मणि जडित रुचिर अति कटि किंकिणि रवरी॥ बालक वृंद मध्य राजत हैं छबि निरखत भुलरी। सोइ सजीवन सूरदासकी महरि रहे उररी॥६२॥ गौरी॥ इह ढोटा नंदको है री। नहीं जानति वसति ब्रजमें प्रगट गोकुलरी॥धरचो गिरिवर वामकर जेहि सोई है यहरी। दैत्य सब इनही सँहारे आपु भुजबलरी॥ब्रज घरनि जो करत चोरी खात माखनरी। नंद घरनी जाहि बांध्यो अजिर ऊखलरी॥ सुरभिगणलिए वनते आवत सबइ गुण इनरी।सूरप्रभु ए सबहि लायक कंस डरे जिनरी॥६३॥यशुमतिको सुत इहै कन्हाइ। इनहिं गोवर्द्धन लियो उठाइ॥ इंद्र परचो इनहींके पाँइ। इनहीकी ब्रज चलत बडाइ॥ वकी पिवावन इनहीं आई। योजन एक परी मुरझाई॥ इनहि तृणाले गयो उडाइ। पटक्यो द्वार शिला पर आइ॥ केशी सुर इनहीं संहारचो। अघा वकासुर इनहीं मारचो॥ श्याम बरन तनुपीत पिछौरी। मुरली राग बजावत गौरी॥ देखि रूप चकृत भई बाला। तनुकी सुधि न रही तेहि काला॥ सूरश्याम को जानति नीके। मगन भई पूँछत सुख जीके॥६४॥ गौरी॥ आवत वनते सांझ देखे मैं गायन माझ काहूको ढोटारी एक शीश मोर पखिआं। अतिसी कुसुम जैसे चंचल दीरघ नैन मानों रसभरी जो लरति युगल झखिआं॥ केसरि की खौरि किए गुंजा वनमाल हिय उपमा नकहि आवै जेती तै नाखिआं॥ राजत पीत पिछौरी मुरली बजावै गौरी ध्वनि सुनि भई वौरी रही पलक अँखिआं॥चल्यो न परत पग गिरिपरी सूधे मग भामिनि भवन ल्याई करगहे कखिआं॥ सूरदास प्रभु चित्त चोरि लियो मेरे जान और न उपाव दाँव सुनौ मेरी सखियां॥॥६५॥देवगंधार॥इक दिन हरि हलधर सँग ग्वालन।प्रातचले गोधनवन चारन॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत।कोउ सिंगी कोउ नाद सुनावत॥ खेलत हँसत गए वन महियां।चरन लगीं जित कित सब गैया॥हरि ग्वालन मिलि खेलन लागे।सूर अमंगल मनके भागे॥६६॥अध्याय॥ ३६॥ वृषभासुर वध केशी हेतु॥ सोरठ॥ यहि अंतर वृषभासुर आयो। देखे नंदभुवन बालक सँग इहै घात है पायो। गयो समाइ धेनुपति ह्वैकै मनमें दाउँ विचारे। हरि तबहीं लखि लियो दुष्टको डोलत धेनु विडारे॥ गैयां विडरि चलीं जित तितको सखा जहां तहां घेरैं। वृषभ शृंगसों धरणि उकासत बल मोहन तन हेरैं॥ आवत चल्यो श्यामके सन्मुख निदरि आपु अँग सारी। कूदि परचो हरि ऊपर आयो कियो युद्ध अति भारी॥ धाइ परे सब सखा हाँक दे वृषभ श्यामको मारचो। पाउँ पकरि भुजसों गहि फेरचो भूतल माँह पछारचो॥ परचो असुर पर्वत समान ह्वै चकित भए सब ग्वाल। वृषभ जानिकै हम सब धाए यह कोऊ विकराल॥ देखि चरित्र यशोमति सुतके मन में करत विचार। सूरदास प्रभु असुर निकंदन संतन प्राण अधार॥६७॥गौरी॥धन्य कान्ह धनि धनि ब्रज आए। आजु सबनि धरिके यह खातो धनि तुम हमहि बचाए॥ यह ऐसो तुम अतिहि

तनकसे कैसे भुजन फिरायो। पलकहि मांझ सबनके देखत मारचो धरणि गिरायो ॥ अबलों हम तुमको नहिं जान्यो तुमहिं जगत प्रतिपालक ।सूरदास प्रभु असुर निकंदन व्रज जनके दुख दालक॥६८॥कल्याण॥ आवत मोहन धेनुचराए। मोर मुकुट शिर उर वनमाला हाथ लकुट गोरज लपटाए॥ कटि कछनी किंकिणि ध्वनि बाजत चरण चलत नूपुर रवराए। ग्वाल मंडली मध्य श्याम घन पीतवसन दामिनिहि लजाए ॥ गोपसखा आवत गुण गावत मध्य श्याम हलधर छविछाए । सूरदास प्रभु असुर संहारचो व्रज आवत मन हर्ष बढाए॥६९॥ये गोरेणु रंजित आवतहैं मोहन लाल। श्याम सुभग तनु तडित बसन वग पंगति मुकहार वनमाल॥ गोपद रज मुख पर छवि लागति कुंडलनैन विसाल। बल मोहन वनते वने आवत लीने गेयांजाल॥ग्वालमंडली मध्य विराजत बाजत वेणु रसाल।सूरश्याम वनते व्रज आए जननि लिए अँकमाल॥७०॥कन्हरो॥तेरो माई गोपाल रणशूरो। जहँ जहँ भिरत प्रचारि पेजकरि तहीं परतहै पूरो ॥ वृषभरूप दानव इक आयो सो क्षणमाँह सँहारचो। पाँवपकरि भुजसों गहिवाको भूतलमाहँ पछारचो ॥ कहत ग्वाल यशुमति धनि मैया बडो पूत तैं जायो यह कोउ आदि पुरुष अवतारी भाग्यहमारे आयो॥चरण कमलपै वंदित रहिये अनुदिन सेवा कीजै।वारंवार सूर कहै प्रभुकी हरपि बलैया लीजै॥७१॥ सोरठ॥ यशुमति वार वार पछितानी।सुनि करतूत वृपभासुरकी जब ग्वाल कही मुखवानी॥गैयन भीतर आइसमान्यो कान्हहि मारन ताक्यो ।मैंनहिं काहूको कछु घाल्यो पुण्यनि करवरनाक्यो ॥ सुन यशुमतिमैया कत खीझत हरिके भाए ख्याल । पर्वत तूल देह धरिकैं पलकमें कियो विहाल ॥तुम्हरी रक्षाको यह नाहीं यह व्रजके रखवार। सूरदास मनमोह्यो सबको मोहन नंदकुमार॥७२॥सारंग॥ हमहि डर कौन कोरी मैया। डोलत फिरत सकल वृंदावन जाके मीत कन्हैया ॥जब जब गाढ परतिहै हमको तहँ करिलेत सहैया। जिरजीवहु यशुमति सुत तेरो हरि हलधर दोउ भैया ॥ इनतें बड़े और नहिं कोऊ इहि सब देत बडैया। सूरश्याम सन्मुख जे आए ते सब स्वर्ग चलैया॥७३॥ कान्हरो॥हँसि जननी सों वात कहत हरि देख्यो मैं वृंदावन नीके। अति रमणीक भूमि द्रुम वेली कुंज सघन निरखत सुखजीके॥ यमुनाके तट धेनु चराई कहत मात मनवीके । भूखमिटी वनफलके खाए प्यास यमुनजल पीके॥ सुनति यशोदा सुतकी वातें अति आनंद मगन तवहीके । सूरदास प्रभु विश्वभरनए चोर भए व्रजतन कदहीके ॥७४॥गोविंद गोकुलकी जीवनि मेरे।जाहि लगाइ रही तन मन धन दुख भूलत मुखहेरे॥ जाके गर्व वध्यो नाहिं सुरपति रह्यो सात दिन घेरे । व्रज हित नाथ गोवर्धन धारे सुभग भुजननख नेरे ॥ जाके यश ऋपि गर्ग वखान्यो कहत निगम निज टेरे । सोइ अब सूर सहित संकर्पण पाए जतन घनेरे॥७५॥अध्याय ॥ ३७॥ अथ केशीवध ॥ मारू॥असुरपति अति ही गर्वधरचो। सभामाँझ बैठो गर्जतहै वोलत रोप भरचो ॥ महामहा जे सुभट दैत्यबल वैठे सब उमराउ॥तिहूँभुवन भरि गमिहै मेरो मो सन्मुख को आउ । मो समान सेवक नाहिं मेरे जाहि कहौं कछु दाव॥ काहि कहों को ऐसो लायकहै ताते मोहिं पछिताव। नृपतिराइ आयसु दे मोको ऐसो कवन विचार । तुम अपने चित सोचत जाको असुरनके सरदार॥ जो करि क्रोध जाहि तन ताकों तिनकोंहै संहार । मथुरापति यह सुनि हरपित भयो मनहि धन्यो अतिभार॥ श्वेतछत्र फहरात शीशपर ध्वज पताक बहुवान। ऐसो को जो मोहिं न जानत तिहूँ भुवन मेरी आन ॥ असुर वंशजे महाबली सब कहो काहि ह्यां जान । तनकतनकसे महर ढोटौना करि आवे विन प्रान॥ यह कहि कंस चितै केशीतन कह्यो जाइ करि काज। तृणावर्त शकटा अरु पूतना उनके कृत सुनि लाज॥ताते कछु हैहै यों जानत धरि आनै ज्योंवाज। छलकै

बलकै मारु तुरतही लै आवहु अब आज ॥ अतिगर्वित ह्वै कह्यो असुरभट कितिक बात यह आ हि। कहमारौं जीवत धरिलावों एक पलकमें ताहि ॥ आज्ञापाइ असुर तब धायो मनमें यह अव गाहि। देखौंजाइ कौन वह ऐसे कंस डरतहै जाहि ॥ मायाचरित करि गोपपुत्र भयो ब्रजसन्मुख गयो धाइ। बल मोहन ग्वालन बालक सँग खेलत देखेजाइ ॥ धाइ मिल्यो कोउ रूप निशाचर हलधर सैन बताइ। मन मोहन मनमें मुसुकाने खेलत फलनि जनाइ ॥ द्वै बालक बैठारि सयाने खेल रच्यो ब्रजखोरि। और सखा सब जुरि जुरि ठाढे आपु दनुज सँगजोरि ॥ फलको नाम बुझावन लागे हरि कहि दियो अमोरि। कंधचढे जिमि सिंह महाबल तुरतहि वीच मरोरि ॥ तब केशी ह्वै बरवपु काछ्यो लैगयो पीठि चढाइ। उतरि परे हरि ताऊपर ते कीन्हों युद्ध अघाइ ॥ दाउँ घाउ सब भांति करतहै तब हरि बुद्धि उपाइ। एक हाथ मुख भीतर नायो पकरिकेश धरि जाइ॥ चहुँघा फेरि असुर गहि पटक्यो शब्द उठ्यो आघात। चौंकि पर्यो कंसासुर सुनिकै भीतर चल्योपरात ॥ यह कोइ नहीं भलो ब्रजजनम्यो याते बहुत डरात। जान्यो कंस असुर गहि पटक्यो नंदमहरके तात ॥ और सखा रोवत सब धाए आइ गई नर नारि। ग्वालरूपसँग खेलत हरिके लैगयो कांधे डारि ॥ धाए नंद यशोदा धाई नितप्रति कहा गुहारि। नाजानिये आहिधौं को यह कपट रूप वपुधारि ॥ यशुमति तब अकुलाइ परी गिरि तनुकी सुधि नरहाइ। नंदपुकारत आरत व्याकुल टेरत फिरत कन्हाइ॥दैत्य सँहारि कृष्ण तहां आए ब्रजजन मरत जिवाइ। दौरि नंद उर लाय लियो सुत मिली यशोदामाइ ॥ खेलत रह्यो संग मिलि मेरे लै उड़िगयो अकास। आपुनही गिरि पर्यो धरणिपर मैं उवर्यो तेहि पास ॥ उरडरात जिय बात कहत उहि आएहैं करिनाश। सूरश्याम घर यशुमति लैगई ब्रजजन मनहि हुलास॥७६॥ अथ भौमासुर वध ॥ बिलावल ॥ हरि ग्वालन मिलि खेलन लागे वनमें आँखिमुचाइ। शिशुहोइ भौमासुर तहाँ आयो काहू जान नपाइ ॥ ग्वालरूप होइ खेलन लाग्यो ग्वालनको लैजाइ चुराइ। धरै दुराइ कंदरा भीतर जानी बात कन्हाइ ॥ गुदी चांपिकै ताहि निपात्यो पर्यो धरणि मुरछाइ। सूरग्वालन मिलि हरिगृह आए देव दुंदुभी बजाइ ॥ ७७ ॥कान्हरो॥कहति यशोदा बात सयानी। भावी नहीं मिटै काहूकी कर्ताकी गति काहु न जानी ॥ जन्म भयो जबते ब्रज हरिको कहा कियो करि करि रखवानी। कहां कहांते श्याम नउवर्यो केहि राख्यो ता अवसर आनी ॥ केशी शकट अरु वृषभ पूतना तृणावर्त्तकी चलति कहानी। को मेरे पाछिताइ मरे अब अनजानत सब करी अयानी ॥ लै बलाइ छाती सों लाए श्याम राम हरषति नँदरानी। भूखे भए प्रात अधखातहि ताते आजु बहुत पछितानी ॥ रोहिणि तुरत न्हवाइ दुहुँनको भोजनको माता अतुरानी। ल्याइ परसि दुहुँनकी थारी जेवत बल मोहन रुचि मानी ॥ माँगि लियो शीतल जल अंचयो मुख धोयो चरणन लै पानी। वीरा खात देखि दोउ वीरा दोउ जननी मुख देखि सिहानी ॥ रत्न जटित पलका पर पौढे वरणि नजाइ कृष्ण रजधानी। सूरदास कछु जूठनि मांगत तब पाऊं कहि दीजै बानी ॥७८॥ ॥ बिलावल ॥ नित्यधाम वृंदावन श्याम। नित्य रूप राधा ब्रजवाम ॥ नित्य रास जल नित्य विहार। नित्य मान खंडिता भिसार ॥ ब्रह्मरूप एई करतार। करन हरन त्रिभुवन संसार ॥ नित्य कुंज सुख नित्य हिंडोर। नित्यहि त्रिविध समीर झकोर ॥ सदा वसंत रहत जहँ बास। सदा हर्ष जहँ नहीं उदास ॥ कोकिल कीर सदा तहँ रोर। सदा रूप मन्मथ चित चोर ॥ विविध सुमन वन फूले डार। उन्मत मधुकर भ्रमत अपार ॥ नव पल्लव वन सोभा एक। विहरत हरि सँग सखी अनेक ॥ कुहूकुहू कोकिला सुनाइ। सुनि सुनि नारि भईं हरषाइ ॥ बार बार सो हरिहि सुनावति।

ऋतुवसंत आयो समुझावति ॥ फागुचरित रस साध हमारे। खेलहिं सवमिलि संग तुम्हारे ॥ सुनि सुनि सूरश्याम मुसकाने।ऋतुवसंत आयो हरपाने॥७९॥वसंत लीला॥रागवसंत॥राधे जुआजवरणो वसंत।मनहुँमदन विनोद विहरत नागरी नवकंत॥मिलत सन्मुख पाटल पटल भरत मान जुही।वेलि प्रथम समाज कारण मेदिनी कुच गुही॥ केतकी कुच कलस कंचन गरे कंचुकि कसी। मालती मद चलित लोचन निरखि मृदु मुख हँसी॥विरह व्याकुल मेदिंनी कुल भई वदन विकास। पवन परिमल सहचरी पिक ज्ञान हृदय हुलास॥उत सखा चंपक चतुर अति कुंद मनो तनमाल॥मधुप मणि माला मनोहर सूर श्रीगोपाल॥८०॥वसंत॥ऐसो पत्र पठायो ऋतुवसंत।तजहु मान मानिनि तुरंत ॥ कागजनवदल अंवुज पात।देति कलम मसि भवँरसुगात ॥ लेखनि काम वाणके चाप।लिखि अनंग कसि दीनी छाप ॥ मलयाचनपठयो विचारि। वाचलल पिक सव नेहु नारि ॥ सूरदास क्यों होई आन । भाज हरि गोपी तजी सयान ॥ ८१ ॥ वेगि चलहु पिय चतुर सयानी। समय वसंत विपिन रथ हय गज मदन सुभट नृप फौज पलानी ॥ चहुँ दिश चांदनी चमू चली मनहु प्रशंसित पिक वर वानी। धीर समीर रटत वन अलिगण मनहुँ कामकर मुरलि सुठानी ॥ कुसुम शरासन वान विराजत मनहु मानगढ अनु अनुभानी। सूरदास प्रभुकी वेई गति करहु सहाय राधिका रानी॥८२॥वसंत॥ देख्यो श्री वृंदावन कमल नयन। मनु आयो है मदन गुण गुदर दयन ॥ १ ॥ भए नवद्रुम सुमन अनक रंग। प्रति ललित लता संकुलित संग ॥ करधरे धनुप कटि कसि निखंग। मनौ वने सुभट साजि कवच अंग ॥ २ ॥ जहां वान सुमति है मलय वात। अति राजत रुचिर विलोल पात ॥ धपि धाय धरत मन तुरे गात। गति तेज वसन वाने उडात॥ ३ ॥ कोकिल कुंजल है हँस मोर। रथ शैल शिला पदचर चकोर॥ वर ध्वज पताक तरसार केरि निर्झरनिसान डफ भँवर भेरि ॥ ४ ॥ सूरदास इमि वदत वाल । करिकाम कृपण सवक्रोधकाल हँसि चितय चारु लोचन विशाल। तेहि अपने करि थपिए गोपाल ॥५॥८३॥ वसंत ॥ राजत तेरे वदन शशिरी। किरनि कटाक्ष वाण वरसावे भौंह कलंक कमान कसीरी ॥ पीन पयोधर सवन उन्नत अति तापर रोमावली लसीरी। चक्रवाक खग चोच पुटीते मनुसे निवल मंजीर खसीरी ॥ ज्यों नाभी सर एकनाल नव कनक कमल विवि रहे चसीरी। सूरज श्री गोपाल पियारी मेरी न अधतम धरा धसीरी॥८४॥कोकिल वोली वन वन फूले मधुप गुंजारन लागे। सुनि भयो भोर रोर वंदिन को मदन महीपति जागे ॥ तिन दूने अंकुर द्रुम पल्लव जे पहिले दवदागे। मानहुँ रति पति रीझि याचकन वरन वरन दए वागे ॥ नई प्रीति नई लता पुहुप नए नए नयन रस पागे । नए नेह नवनागरि हरपति सूर सुरंग अनुरागे ॥८५॥देख्यो श्री वृंदावन खेलहि गोपाल॥सव वनि ठनि आई ब्रजकी वाल ॥ नववल्ली सुंदर नव तमाल। नव कमल महा नव नव रसाल ॥ अपने कर सुंदर रचित माल। अवलंवित नागर नंदलाल ॥ नवकेसरि नव अरगजा घोरि। छिरकाति नागरि कहां नवकिसोरि॥नवगोप वधू राजही संग। गजमोतिन सुंदरि लसित मंग ॥ गोपीन ग्वाल सुंदर सुदेप। छिरकत सुगंध भये ललित भेप॥नँदनंदन के भ्रुवविलास॥आनंदित गावत सूरदास॥८६॥ पिय देख्यो वन छवि निहारि। वार वार यह कहति नारि ॥ नव पल्लव वहु सुमन रंग। द्रुम वेली तनु भयो अनंग ॥ भँवरा भँवरी भ्रमत संगायमुन कराति नाना तरंग॥ त्रिविध पवन मनहरप दयन सदावहत नविरहत चयन॥सूरज प्रभु करि तुरग नयन।चले नारि मन सुखद मयन॥८७॥आयो पिय आयो ऋतुवसंत।दंपति मन सुख विरहिनि न अंत॥फागु खिलावहु संग कंत। हाहा करि करि तृण

गहै दंत॥तुरत गए हरिलै मनाय।हरषि मिले उर कंठ लाय।दुख डारचो तुरतहि भुलाय।सोसुख दुहुँके उर नमाय॥ऋतुवसंत आगमन जानि।नारिन राखो मानवानि॥ सूरदास प्रभु मिले आनि। रसराख्यो रतिरंग ठानि॥८८॥आयो जान्यो हरि ऋतुवसंत।ललना सुख दीन्हो तुरंत॥ फूले वरन२ सुमन पलास।ऋतुनायक सुखको विलास ॥ संगनारि चहुँ आस पास। मुरली अमृत करत भास॥ श्यामाश्याम विलास एक।सुखदायक गोपी अनेक॥ तजतनहीं काहू छनेक । अकल निरंजन विविध भेक॥ फागुरंग रस करत श्याम।युवतिन पूरन करन काम॥ वासरहू सुख देत याम।सूरश्याम वहु कंत वाम॥८९॥ देखत नव ब्रजनाथ आजु अति उपजतु है अनुराग।मानहु मदन वसंत मिलै दोउ खेलत फूले फाग॥ झांझि झालरिनि झरिनिसा डफ भँवर भेरि गुँजार। मानहु मदन मंडली रचिपुर वीथिनि विपिन विहार॥ द्रुम गण मध्य पलाश मंजरी मुदित अग्नि की नाई।अपने अपने मेरनि मानो उनि होरी हरषि लगाई॥ केके काग कपोत और खग करत कुलाहल भारी।मानहुँ लैलै नाउ परस्पर देत दिवावत गारी॥कुंज कुंज प्रति कोकिल कूजति अति रस विमल वढ़ी।मानो कुलवधूनि लज्जाभय गृह गृह गावति अटानि चढी॥ प्रफुलित लता जहाँ जहँ देखत तहाँ तहाँ अलि जात।मानहु सवहिनमें अवलोकत परसत गणिकागात॥ लीन्हें पुहुप पराग पवनकर क्रीडत चहुँ दिशधाइ। रस अनरस संयोग विरहिनी भरि छांडति मनभाइ॥ वहुविधि सुमन अनेक रंगछवि उत्तम भांति धरे।मानो रतिनाथ हाथसो सवही लैलै रंगभरे॥ और कहालगि कहौं कृपानिधि वृंदाविपिन विराज।सूरदास प्रभु सब सुख क्रीडत श्याम तुम्हारे राज॥९०॥ सुंदर वर संग ललनाहो विहरत वसंत समय ऋतु आइ।सकल शृंगार वनाइ ब्रजसुंदरि कमलनयनपै लाइ॥ सरित शीतल वहत मंदगति रवि उत्तर दिशि आयो। अति रसभरी कोकिला वोली विरहिनि विरह जगायो॥ द्वादश वन रतनारे देखियत चहुँ दिशकेसू फूले।मौरे अंवुवा और द्रुम वेली मधुकर परिमल भूले॥ इत श्रीराधा उत श्रीगिरिधर इत गोपी उत ग्वाल॥खेलत फागु रसिक ब्रजवनिता सुंदर श्यामतमाल॥स्वावासाखि जवारा कुमकुमा छिरकत भरि केसरि पिचकारी॥उडत गुलाल अवीर जोरतव विदिशदीप उजियारी॥ताल पखावज वीन वाँसुरी डफ गावत गीत सुहाए॥रसिक गोपाल नवल ब्रजवनिता निकासि चौहटे आये॥झूमि झूमि झूमक सव गावति वोलति मधुरी वानी। देति परस्पर गारि मुदितमन तरुनी वाल सयानी॥ सुरपुर नर पुर नाग लोकपुर सवही अति सुखपायो।प्रथम वसंत पंचमी लीला सूरदास यशगायो॥९१॥सुंदरवर संग ललना विहरी वसंत सरस ऋतुआई।लैलै छरी कुँवरि राधिका कमलनयन परधाई॥ द्वादश वन रतनारे देखियत चहुँदिश केसूफूले। मौरे अँवुवा और द्रुम वेली मधुकर परिमल भूले॥ सरिता शीतल वहत मंदगति रवि उत्तरदिशिआयो।प्रेम उमंगि कोकिला वोली विरहिनि विरह जगायो॥ताल मृदंग वीन वाँसुरि डफ गावत मधुरी वानी॥देत परस्पर गारि मुदितह्वै तरुणी वाल सयानी॥ सुरपुर नरपुर नागलोक जल थल क्रीडारस पावै।प्रथम वसंत पंचमी वाला सूरदास गुणगावै॥९२॥ खेलत नवल किसोर किसोरी। नँदनंदन वृषभानु तनय चित लेत परस्पर चोरी॥ औरौ सखी जलज विग सोभित सकल ललित तनु गावति होरी। तिनकी नख शोभा देखतही तरनि नाथहूकी मति भोरी॥ एक गोपाल अवीर लिए कर इक चंदन इक कुमकुमा रोरी। उपरा उपर छिरकि रस सर भरि वहु कुल क्रीडा परमिति फोरी॥ देति अशीश सकल ब्रज युवती युग युग अविचर जोरी।सूरदास उपमा नाहिं सूचत जो कछु कहो सुथोरी॥९३॥श्रीहरि॥तेरे

आवैंगे हरि आजु खेलन फागुरी । सगुन सँदेशोहो सुन्यो तेरे आँगन बोलै कागुरी ॥ मदन मोहन तेरे वश माई सुनि राधे वडभागुरी । वाजत ताल मृदंग झांझ डफ का सोवै उठि जागुरी ॥ चोवा चंदन और कुमकुमा केसरि लै पैयां लागुरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको श्रीराधा अचल सुहागुरी॥९४॥हो आजु नंदलाल सों खेलोंगी सखी होरी॥ललिता विशाखा अंगन लिपावो चौक पुरावो तुमरोरी ॥ मलयज मृगमद केसरिलै माथि माथि भरो कमोरी । नवसत साजि शृँगार करौ सब भरि भरि लेहु गुलालहि झोरी ॥ ज्यों उडुगणमें इंदु विराजत सहेलिन मध्य राधिका गोरी । इक गोरी इक साँवरी हो इक चंचल इक भोरी ॥ वरजति सखी वरज्यो नाहिं मानै लै पिचकारी दौरी । उन रंगलै पिय ऊपर डारचो पियहो रंगमें वोरी ॥ ब्रह्मा इंद्र देवगण गंधर्व वरषे वहुत वाटिका खोरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको चिरजीवो राधावर जोरी॥९५॥रागमालकौशिक॥नागर रसिक अरु रसिक नागरी । वलि वलि जाउँ देखि अव दंपति प्रमुदित लीला प्रथम फागरी ॥ राधा दधि मथन करति अपने गृह प्रवल धारि सुकर पागरी । तव हरि उठि आए औचानक उससिशशी चसढरित गागरी । लै उसास अंजरि भरिलीनो विदुराते दधि जुअनूपम आगरी ॥ अति उमगित श्याम घन छिरके मनु वग पांति विछुरि गई मागरी ॥ मोहन मुसकि गही दौरत में छूटि तनी छंदरहित घाघरी । जनु दामिनि वादरते विमुख वपु तरपित तक्षण लई तलागरी ॥ आनंदित परम दंपति ऐसे पटने परस परत दागरी । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणिका वरणौं व्रज युवति भागरी॥९६॥ रागी वंगाली॥श्रीमदनमोहन जू मति डारौ केसरि पिचकारी । दधिही मथन जाहुँ यमुनाजल हो मोहन तुम कुंज विहारी ॥ मर्म न गुरुजन पुरजन जानैं नाहिं या वृंदावनकी नारी । सासु रिसाय लरै मेरी ननदी देखैं रंग देहिं मोहिं गारी ॥ मुरली माहिं वजावत गावत वंगाली अधर चुवत अमृत वनवारी । मुदित पियत संतन सुखकारी पूरव खचित तेहि गिरिधारी॥ मृदु मुसुकानि युवति मन मोहत हो हरि माखन चोर मुरारी । सूरदास प्रभु दोउ चिरजीवो श्रीव्रजनाथ वृषभानु दुलारी॥९७॥धमारि॥ ठाढी देखी नंद दुआरेहो सुंदरि एक दह्यो लिये । वाढीहो प्रीति ललना गिरिधरसों गुरुजन सवहिन विसरि दिये ॥ नयनन कज्जल नासिका वेसरि मुखत मोर अति राज्य । ढार सुढार वन्यो जाको मोती रहत अधर मुख छाज्य ॥ कटि लहँगा पहुँची वंध अँगिया फुँदना वहु विधि सोहै । तरन जराव जरी जाकी जेहरि हंसचाल मृग मोहै ॥ कंचन कलस भराय यमुनजल मोतियन चौक पुराये । मनहु कछौना हंसन कैसे चुगन सरोवर आए ॥ तुमतौ कहावतहो नँदनंदन सारँग वुद्धि है थोरी । सूरदास प्रभु नंदके लालकी वनीहो छवीली जोरी ॥९८॥ कान्हरो ॥ हरि सँग खेलत हैं सव फाग । यहि मिस करत प्रगट गोपी उर अंतरको अनुराग ॥ सारी पहिरि सुरंग कसि कंचुकी काजर दैदै नैन । वनि वनि निकसि निकसि भई ठाढी सुनि माधोके वैन ॥ डफ वांसुरी रुंज अरु महुआरि वाजत ताल मृदंग । अति आनंद मनोहर वाणी गावत उठत तरंग ॥ एक कोध गोविंद ग्वाल सव एक कोध व्रजनारि । छांडि सकुच सव देति परस्पर अपनी भाई गारि ॥ मिलि दश पांच अली वलि कृष्णहि गहि लावति उचका

रागमालकौशिक वीणाहाटककंकणेचद्धतीपद्माक्षिपद्मानना वक्त्रकैरवपद्मकोमलसमंशास्त्रेपरंपंडिता ॥मालश्रीसाखिसंयुतात्रिभुवने गीतार्थं पुंसामिया भूपालीसहितामिग्रायकरुणामाकुर्वतीश्रीहटी ॥ १ ॥ श्यामांगःपीतवासामधुरिपुगलनोवंशवाद्यस्त्रिभंगीरत्नानां कंठमालोविरचिततिलकः कुंकुमैर्भालमध्ये ॥ रागोयंमालकौशीमचरतिशिशिरेकंठदेशेजनानां मायः सूर्योदयादोःस्वरानिचयविदां तुष्टयेभूपतीनाम् ॥

य। भरि अरगजा अबीर कनक घट देति शीशते नाय ॥ छिरकति सखी कुमकुमा केसरि भुरकति वंदन धूरि। सोभित हैं मनो शरद समय घन आएहैं जल पूरि॥दशहू दिशा भयो परि पूरण सूर सुरंग प्रमोद।सुरवनिता कौतूहल भूलीं निरखति श्याम विनोद॥९९॥आसावरी॥यमुनाकेतट खेलति हरि सँग राधा सहित सब गोपीहो। नंदको लाल गोवर्धन धारी तिनके नख मणि ओपी हो ॥ चलहु सखी जैये तहां छिन जियरा नरहायहो। वेणु शब्द मन हरिलियो नाना राग बजाइहो ॥ सजल जलद तनु पीतांबर छवि करमुख मुरली धारी हो । लटपटी पाग बने मनमोहन ललना रही निहारिहो ॥ नैन सैन सों नैन मिले करसों कर भुजा ठये हरि ग्रीवाहो । मध्यनायक गोपाल विराजत सुंदरताकी सींवाहो ॥ करत केलि कौतूहल माधव मधुरी वाणी गावैहो। पूरणचंद्र शरदकी रजनी संतन सुख उपजावैहो ॥ सकल शृंगार कियो व्रजवनिता नख शिख लोभलटा नीहो। लोक वेद कुल धर्म केतकी नेक न मानत कानी हो ॥ बलि जाउँ बलके वीर त्रिभंगी गोपिनके सुखदाईहो। सकल व्यथा जु हरी या तनुकी हरि हँसि कंठ लगाईहो। माधव नारि नारि माधवको छिरकत चोवा चंदनहो ॥ ऐसो खेल मच्यो उपरापरि नँदनंदन जगवंदनहो। ब्रह्मा इंद्र देव गण गंधर्व सबै एक रस बरषैहो । सूरदास गोपी वड भागी हरि सुख क्रीड़ा करषैहो॥२४००॥गौरी॥ मानो व्रजते करभी चली मदमातीहो। गिरिधर गजपै जाइ ग्वारि मदमातीहो ॥ कुल अंकुश मान्य नहीं मदमातीहो । अवगाहै यमुना नदी मदमातीहो। करति तरुनि जलकेलि ग्वारि मदमातीहो ॥ चहुँ दिशते मिलि छिरकही मदमातीहो। वृंदावन वीथिनि फिरै मदमातीहो ॥ संग मदन गजपालि ग्वारि मदमातीहो। कवहुँ नैन कर दै मिलै मदमातीहो ॥ तैसीये गजगति चाल ग्वारि मदमातीहो। नागवेलि सलकी चरै मदमातीहो ॥ मादक मांझ कपूर ग्वारि मदमातीहो॥ सुगंध पुढे श्रवणन चुवै मदमातीहो। मंडित मांग सिंदूर ग्वालि मदमातीहो ॥ केसरि लाए तानिकै मदमातीहो। घुंघरू घंट घुमाइ ग्वालि मदमातीहो ॥ ऊपर कुच युग घंटसों मदमातीहो। मुक्तामाल तुराइ ग्वालि मदमातीहो ॥ अंग अंग छिरकै श्यामको मदमातीहो। कुमकुम चंदन गारि ग्वारि मदमातीहो ॥ सूरदास प्रभु क्रीडहीं मदमातीहो। सँग गोकुलकी नारि ग्वारि मदमातीहो॥१॥ काफी॥ खेलत अति रसमसे रँगभीनेहो। अति रसकेलि विशाल लाल रँगभीनेहो ॥ जागत सब निशिगत भई रँगभीनेहो। भले कान्ह भले आए प्रातलाल रँगभीनेहो। बोलत बोल प्रतीतिके रँग भीनेहो ॥ सुंदर श्यामल गात लाल रँग भीनेहो। अति लोहित दृगरँगमगे रँग भीनेहो ॥ मानो भोर भए जलजात लाल रँग भीनेहो। पिये अधर मधुपान मत्त रँग भीनेहो ॥ कहत कहूँकी कहूँ वा लाल रँग भीनेहो। केश सिथिल वरवेश सिथिल रँगभीनेहो॥शशि मुख सिथिल जँभात लाल रँगभीनेहो॥चाल सिथिल भुवभाल सिथिल रँग भीनेहो ॥ अंग अंग अलसात लाल रँगभीनेहो । सकुचतहो कत लाडिले रँगभीनेहो ॥ दुरत न उर नख गात लाल रँगभीनेहो। सूरदास प्रभु नँद किसोर रँगभीनेहो॥बहुनायक विख्यात

वंगाल्याभातियस्याअलिकपटलकेशीतरशिनिंतांतं भर्तुःसंततिहंत्रीमलयजरचितंसर्वदेहेमलेपम् ॥ शुक्लंवासोदधत्यात्यतरुणतनुमदालस्यमत्तेभगत्यायुष्माकंसामुदेस्ताद्धुवजनहृदयानन्दकर्ताकटाक्षः १.॥वस्त्रज्योतिसमानसुंदररदारत्नान्वितेकुंडलेवाह्वोर्मुक्तिकरत्नहारहृदयस्तत्कुंडलेकर्णयोः॥नानापुष्पसुवासवासिततनुःपीतांशुकैरावृतःसंगीतेनविचक्षणोदिविषदांसंमोहनाकानरः॥रागकानर ॥ १ ॥ श्यामांगीमुकुरंकरेणदधतीहारंगलेमौक्तिकताटंकान्वितकर्णकंकणकरादिव्यांबरैःसंयुता॥रंभायाघनकाननेषुरमतीत्वध्यापयंतीशुकमासावर्यं पिकिन्नैररपिसुरैर्गीतानिशांतेदिवि ॥ राज्ञीआसावरी ॥

लाल रँगभीनेहो॥२॥ गौरी ॥ गोकुल सकल ग्वालिनीहो घर घर खेलैं फागु मनोरा झूमकरो । तिन में श्रीराधा लाडिलीहो जिनको अधिक सुहाग मनोरा झूमकरो ॥ १ ॥ झुंडनि मिलि गावति चलीं हो झूमक नंददुवार मनोरा झूमकरो । आजु परव हँसि खेलोहो मिलि संग नंदकुमार मनोरा झूमकरो ॥ २ ॥ रसिकराइ सुंदर वरहो श्रीराधा जिन प्राण मनोरा झूमकरो । मोहन दरश दिखावहू हो डरहु तो नंदकी आन मनोरा झूमकरो ॥ ३ ॥ प्रगट प्रीति गोकुल भईहो अव कैसे करत दुराव मनोरा झूमकरो । हम न दरश विन जीवहीं हो कोउ कछु करहु उपाव मनोरा झूम करो ॥ ४ ॥ यशुमति सुत चित चुभि रहीहो वह तुमही मुसुकान मनोरा झूमकरो । अव न अनंत रुचि उपजैहो सहजपरी यह वानि मनोरा झूमकरो ॥ ५ ॥ दुरत श्याम धरि पाएहो राधा धाय भरी अँकवारि मनोरा झूमकरो । कनक कलस केसरि भरीहो लै धाईं व्रजनारि मनोरा झूमकरो ॥ ६॥भरहु भरहु सखि श्यामहीं हो पीत पिछोरी पाग मनोरा झूमकरोदेह गेह सुधि विसरी हो नँदनंदन अनुराग मनोरा झूमकरो ॥ ७ ॥ छूटे केश कंचुक वंदहो टूटे मोतिन माल मनोरा झूमकरो ॥ चोवा चंदन अरगजाहो उड़त अवीर गुलाल मनोरा झूमकरो ॥ ८ ॥ करकट ताल बजावहीं हो छिरकत सव व्रजनारि मनोरा झूमकरो । हँसि हँसि हरि पर डारहींहो अरुन नयन फुलवारि मनोरा झूमकरो ॥ ९॥ सुर नर मुनि कौतुक भूलेहो आनँद वरषैं फूल मनोरा झूमकरो । गगन विमान नछायोहो झेहनसूझे सूर मनोरा झूमकरो ॥ १० ॥ सूर गोपाल कृपा विनुहो यह रस लहै न कोइ मनोरा झूमकरो । श्रीवृषभानु किसोरी हो श्याम मगन मन होइ मनोरा झूमकरो॥११॥३॥सारंग॥ आलीरी नँदनंदन वृषभानु कुँवरिसों वाढ्यो अधिक सनेह । दोऊ दिशिपै आनँद वरषत ज्यों भादौंको मेह ॥ सव सखियां मिलि गई महरिपै मोहन मांगो देहु । दिना चारि होरीके औसर वहुरि आपनो लेहु ॥ झुकि झुकि परति है कुँवरि राधिका देति परस्पर गारि । अव कहा दुरे साँवरे ढोटा फगुवा देहु हमारि ॥ हँसि हँसि कहति यशोदा रानी गारी माति कोउ देहु । सूरदास श्याम के वदले जो चाहो सो लेहु ॥४॥ टोडी ॥ या गोकुल के चौहटे रंग भीजी ग्वालिनि । हरि सँग खेले फाग नैन सलोनरी रंग राची ग्वालिनि ॥ डरति न गुरुजन लाज नैन सलौनरी रंग राची ग्वालिनि । दुंदुभिवाजैं गहगहे रंगभीजी ग्वालिनि ॥ नगर नगर कोलाहल होईं नैन सलोनरी रंगराची ग्वालिनि । उमह्यो मानुप घोषयों रंग भीजी ग्वालिनि ॥ भवन रह्यो नहिं कोइ नैन सलोनरी रंग राची ग्वालिनि । डफ वाँसुरी सुहावनी रंग भीजी ग्वालिनि ॥ ताल मृदंग उपंग नैन सलौन रंग राची ग्वालिनि । झांझ झालरी किन्नरी रँग भीजी ग्वालिनि ॥ आउ झवर मुहचंग नैन सलोनरी रंगराची ग्वालिनि । उतहि संग सव ग्वाल लिए रंगभीजी ग्वालिनि ॥ सुंदर नंदकुमार नैन सलोनरी रंगराची ग्वालिनि । उत श्यामा नव योवना रँगभीजी ग्वालिनि ॥ अंवुज लोचन चारु नैन सलोनरी रंगराची ग्वालिनि । केसूके कुसुम निचोइके रँगभीजी ग्वालिनि ॥ भरैं परस्पर आनि नैन सलोनरी रंगराची ग्वालिनि । चोवा चंदन अरगजा रँगभीजी ग्वालिनि ॥ कुमकुम वंदन सानि नैन सलोनरी रँगराची ग्वालिनि । रत्न जटित पिचकारिआं रँगभीजी ग्वालिनि ॥ करालिए गोकुलनाथ नैन सलोनरी रँगराची ग्वालिनि । छिरकहिं मृगमद कुमकुमा रँगभीजी ग्वालिनि ॥ जो राधेके साथ नैन सलोनरी रँगराची ग्वालिनि । सुरंगपीतपट रँग रह्यो रँगभीजी ग्वालिनि ॥ सुभग सांवरे अंग नैन सलोनरी रँगराची ग्वालिनि । नीलवसन भामिनिवनी रँगभीजी ग्वालिनि ॥ कंचुकी कुसुम सुरंग नैन सलोनरी रँगराची ग्वालिनि । अरुणनूतपल्लवधरे

रँगभीजी ग्वालिनि ॥ कूजित कोकिल हंस कीर नैन सलोनरी रँगराची ग्वालिनि। अति नृत्य करत अलि कुल मिले रंग भीजी ग्वालिनि ॥ आनंद अधीर नैन सलोनरी रँगराची ग्वालिनि ॥ चढिविमान सुर देखहीं रंगभीजी ग्वालिनि । देहदशा विसराइ नैन सलोनरी रंगराची ग्वालिनि ॥ राधारासिक रसज्ञहो रँगभीजी ग्वालिनि।सूरदास बलिजाइ नैन सलोनरी रँगराची ग्वालिनि॥५॥ गौरी ॥खेलत हो हो हो हो होरी अतिसुख प्रीति प्रगट भई उत हरि इतहि राधिका गोरी।हो हो हो हो होरी बाजत ताल मृदंग झांझ डफ विच विच बाँसुरी ध्वनि थोरी ॥१॥ गावत दैदै गारि परस्पर उत हरि इत वृषभानु किसोरी । मृगमद साखजवाद कुमकुमा केसरि मिलै मिलै मथि घोरी ॥२॥ गोपी ग्वाल लाल सब समूह गुलाल उडावत मत्त फिरैं रतिपति मनो धौरी । भरति रंग रति नागरि राजति मानहु उमँगि बिलावल फोरी ॥ ३ ॥ छुटिगई लोकलाज कुलसंका गनत न गुरु गोपिनको कोरी । जैसे अपनेमें रमतेमें चोरभोर निरखत निशिचोरी॥४॥ उन पटपीत किए रँग राते इन कंचुकी पीत रँग बोरी । रही न मन मर्याद अधिक रुचि सहचरी सकति गांठि गहि जोरी ॥ ५ ॥ वरणी नजाइ वचन रचना राचि बहु छबि झक झोरा झक झोरी सूरदास शारदा सुसरलमति सो अवलोकि भूमि भई भोरी॥६॥६॥ गूजरी ॥ ब्रजकी वीथिन वीथिन डोलत । मदन गोपाल सखा सँग लीने हो हो हो लै बोलत॥ताल मृदंग वीन डफ बाँसुरी बाजत गावत गीत । पहिरे वसन अनेक बरन तनु नील अरुन सित पीत ॥ सुनि सब नारि निकसि ठाढी भई अपने अपने द्वार । नवसत साजे प्रफुलित आनन जनु कुमुदिनी कुमार ॥ चपल नैन अति चतुर चारु तुम जनु फुलवारी लाई । देखतही नँदनंद परमसुख मिलत मधुप लौं धाई ॥ राखत गहि भुज बल चहुँ दिशि जुरि अति रिस मुँह अकुलात । मानहु कमल कोश अलि अंतर भँवर भ्रमत वन प्रात॥छांडति भरि भायो अपनो करि राजत अंग विभाग।मानहुँ उडि वचलेहैं अलि कुल आश्रित अंग पराग ॥ अंतर कछु नरह्यो तेहि अवसर अति आनंद प्रमाद । मानहु प्रेम समुद्र सूर सुख लै उपटित मर्याद ॥७॥ ऊंचोसो गोकुल नगर जहँ हरि खेलत होरी । चल सखी देखन जाहिं पिया अपनेकी चोरी ॥ बाजत ताल मृदंग और किन्नरकी जोरी । गावति दै दै गारि परस्पर भामिनि भोरी ॥ बूका सुरंग अबीर उड़ावत भरि भरि झोरी । इत गोपिनको झुंड उतहि हरि हलधर जोरी ॥ नवल छबीले लाल तनी चोलीकी तोरी । राधाचली रिसाइ ढीठ सों खेलैकोरी ॥ खेलतमें कैसो मन सुनहु वृषभानु किसोरी । सूरसखी उर लाइ हँसाति भुजगहि झकझोरी॥८॥ रागपूरवी ॥ ऐसीको खेलै तोसोंहोरी । बार बार पिचकारी मारत तापर बांह मरोरी॥ नँदबाबाकी गऊ चरावो हमसों करो बरजोरी । छाक छीनि खातहै ग्वालनकी करतरहे माखन दधि चोरी ॥ चोवा चंदन और अरगजा अबिर लिये भरि झोरी । उडत गुलाल लाल भए बादर केसरि भरीहै कमोरी ॥ श्रीवृंदावनकी कुंजगलिनमें गावो मुरली राधा गोरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको चिरजीवो यह जोरी॥९॥ सारंग ॥ निकसि कुँवर खेलन चले रँग हो हो होरी।मोहन नंदकुमार लाल रँग हो हो होरी॥कंचन माट भराइकै रँग हो हो होरी । सोंधेभरी कमोरी लाल रँग हो हो होरी ॥ झांझ ताल सुरमंडरे रँग हो हो होरी। बाजत मधुर मृदंग लाल रँग हो हो होरी॥तिनमें परम सुहावनी रँग हो हो होरी। महुवरि बाँसुरी चंग लाल रँग हो हो होरी॥खेलत रँगीले लालजू रँग हो हो होरी।गए वृषभानुकी पौरि लाल रँग हो हो होरी॥जे ब्रजहुती किसोरि लाल रँग हो हो होरी । ते सब आई दौरि लाल रँग हो होहोरी।सखियन सुख देखनकारने रंग हो हो होरी।गांठि दुहुँनकी जोरि

लाल रँग हो हो होरी॥ जोपै फगुवा दियो न जाय रँग हो हो होरी। श्रीराधाजूके लागो पाँइ लाल रँग हो हो होरी॥यह सुख सबके मनवसो रँग हो हो होरी। सूरदास बलि जाइ लाल रँग हो हो होरी॥ ॥ १० ॥ सारंग ॥ करलिए डफहि बजावे होहो सनाक खेलार होरीकी । संग सखा सब बनि बनि आवत छवि मोहन हलधर जोरीकी ॥ १ ॥ ताल मृदंग बजावत गावत आवत ध्वनि मुरली थोरीकी।लाल गुलाल समूह उडावत फेटकसे अबीर झोरीकी॥खेलत फाग करत कौतूहल मत्तफिरे मन्मथ धौरीकी। बरन बरन शिरपाग चौतनी कछिकाटि छवि चंदन खौरीकी ॥ २ ॥ उतहि सुनाति वृषभानु सुता लेय तरुनी बोलि सब दिन थोरीकी। नीलांबर कंचुकी सुरंगतनु अति राजाति राधा गोरीकी ॥ मनो दामिनि घन मध्य रहति दुरि प्रगट हँसानि चितवनि भोरीकी। नखशिख सजि शृंगार ब्रज युवती तनडडिया कुसुमी बोरीकी ॥३॥ पानभरे मुख चमकत चौका भालदिये वेंदी रोरीकी। कनक कलस कोटिक भरि लीन्हे भरिफूले रंग रंग घोरीकी ॥ युवति वृंद ब्रजनारि संगले जाइ गहानि ब्रजकी खोरीकी। घरघरते धुनि सुनि उठि धाई जे गुरुजन पुरजन चोरी की ॥ ४ ॥ हाथनलै भरि भरि पिचकारी नानारंग सुमन तोरीकी ॥ कोउ मारति कोउ दाँउ निहाराति अरस परस दौरा दौरीकी॥ उताहि सखा कर जेरी लीन्हें गारी देहि सकुच तोरीकी। इताहि सखी कर वांस लिए विच मारु मची झोरा झोरीकी ॥ ५ ॥ पाछे ते ललता चंद्रावलि हरि पकरे भुजभरि कौरीकी। ब्रजयुवती देखतहीं धाई जहाँ तहाँ सब चहुँ ओरीकी ॥ इक पट पीतांबर गहि झटक्यो एक मुरलि लई कर मोरीकी। इक मुखसों मुख जोरि रहति इक अंक भरति रति पति ओरीकी६॥तब तुम चीरहरे यमुनातट सुधि बिसरे माखन चोरीकी।अब हम दाँव आपनो लेहैं पाँयपरो राधागोरीकी ॥ अपने अपने मन सुख कारण सब मिलि झकझोरा झोरीकी । नीलांबर पीतांबर सों लै गांठिदई कसिके डोरीकी ॥ ७ ॥ कनक कलस केसरि भरि ल्याई डारिदियो हरिपर ढोरीकी। अति आनंद भरी ब्रजयुवती गावति गीत सबै होरीकी॥ अमर विमान चढ़े सुख देखत पुहुपवृष्टि जैध्वनि रोरीकी। सूरदाससो क्योंकर वरणै छविमोहन राधाजोरीकी ॥८॥ ११ ॥ रागिनी श्रीहठी ॥ हरि सँग खेलन फागु चली। चोवा चंदन अगर अरगजा छिरकति नगर गली ॥ राती पीरी अँगिया पहिरे नउतम झूमक सारी । मुखतमोर नैनन भरिकाजर देहि भावती गारी ॥ ऋतुवसंत राति आगमनायक यौवन भार भरी । देखनरूप मदन मोहनको नंददुआर खरी ॥ कहि नजाइ गोकुलकी महिमा घर घर गोकुल माहीं । सूरदास सो क्योंकरि वरणै जो सुख तिहुँ पुर नाहीं ॥१२ ॥ राग गौरी ॥ ठाढो हो ब्रजखोरी ढोटा कौनको। लटिहि लकुट त्रिभंगी एकपद मनो मन्मथ गौनको। मोर मुकुट कछनी कसेरी पीतांबर काटि सोभ । नैन चलावे फेरि कैरी निरखि होत मनलोभ ॥ भौंहमरोरे मटकिकैरी यमुना रोकत घाट । चितै मंद मुसुकाय कैरी जियकरि लेय उचाट ॥ हँसत दशन चमकाय कैरी चकचौंधीसी होति । बगपंगति नवजलद मेरी उरमाला गजमोति ॥ कर पिचकारी रत्न जरतरी तकि तकि छिरकत अंग। केसूके कुसुम निचोय कैरी अरु केसरिको रंग॥ फेंट गुलाल भराइ कैरी डारंत नैनन ताकि । एते पर मन हरत हैरी कहा कहौं गति वाकि ॥ पुनि हाहा करि मिलतु हैरी अरु नाना रंग बनाय । नंदसुवन के रूपपररी जन सूरदास बलिजाय१३॥श्रीहठी सांवरो ढोटा काहैरी माई जाके वारिजनैन विशाल।

श्यामोबाहुचतुष्टयेनसहितःपीतांबरस्ताक्ष्यंगः शार्ङ्गयोविदधातिबाणसहितंशंखंचचक्रंगदाम् ॥ वामांगेरमणीयुतःप्रियतमःश्री विष्णुवत्सर्वदा सारंगोमबवान्वितैःसुरगणैःसंस्तूयमानोनरैः ॥ १ ॥ सारंग ॥

अधर धरे मुख मुरली बजावत गावत श्रीरागरसाल॥ मंद मंद मुसकानि सरोज मुख सोभा वरणी न जाइ। बाँकी भौंहें तिरछी चितवनि चितवत लियो चुराइ॥ अति लोने सोनेसे कुंडल कौने रचे हो सँवारि। मनो काम किल फंद बनाए फंदाहे मीन ब्रजनारि॥ शिर पगिया वीरा मुख सोहै सरस रसीले बोल। अति आधीन भई ब्रजवनिता वश कीने विनमोल॥ कहा करौं देखे विनु सजनी कल न परै पलप्रान। ग्वालन संग रंग भरयो भावत गावत आछी तान॥ ताते और कौन हितु मेरे सखिचालि नेकुदिखाय। मदनमोहन जूकी चरण रेणु पर सूरदास बलि जाय॥१४॥नटनारायण॥ खेलत श्याम फाग ग्वालन संग।एक गावत एक नाचत एक करत बहु रंग॥बीन मुरज उपंग मुरली झांझ झालरि ताल।पढत होरी बोलि गारी निरखिकै ब्रजबाल॥कनककलसन घोरि केसरि करलिये ब्रजनारि। जबहिं आवत देखि तरुनिन भजत दै किलकारि॥ दुरि रही इक खोरि ललिता उत ते आवत श्याम। धरे भरि अँकवारि औचक धाय आय ब्रजवाम॥ बहुत ढीठो दै रहेहो जानवी अब आजु।राधिका दुरि हँसति ठाढी निरखि पिय मुख लाजु॥लियो काहू मुरली करते कोउ गह्यो पटपीत। शीश बेनी गूथि मांग पारि लोचन आजि करी अनीति॥ गए करते झटकि मोहन नारि सब पछिताति। शीश ध्वनि कर मीजी बोलति भली लैगए भांति॥ दाँव हम नाहिं लेन पायो बसन लेती लाल। सूर प्रभु कहाँ जाउगे अब हमपरी यह ख्याल॥१५॥काफी॥ मोहन गए आजु तुम जाहु दाँव हम लेहिंगीहो।लालन हमहि करे जे हाल उहै फल देहिंगीहो॥आजुहि दाँव आपनो लेती भले गएहो भागि। हाहा करते पाँइन परते लेहु पीतांबर मांगि॥ वेनी छोरत हँसत सखा सँग कहत लेहु पट जाइ। सौंह करतहो नंदबबाकी अपनी विपति कराइ॥ जोमैं लेहुँ पीतांबर अवहीं कहा देहुँगे मोहि। इत उत युवती चितवन लागीं रही परस्पर जोहि॥ एक सखा हरि त्रिया रूपकरि पठै दियो तिन पास। गयो तहां मिलि संग त्रियनके हँसति देखि पटवास॥ मोहिं देहु राखौं दुरायके श्यामहि जिनि लै देहु। लियो दुराय गोद में राख्यो दाँव आपनो लेहु॥ पीतांबर जिनि देहु श्यामको यह कहि चमक्यो ग्वाल। सूरश्याम पट फेरत करसों चकित निरखि ब्रजबाल॥१६॥ चकित भई हरिकी चतुराई।हमहिं छली इन कुँअर कन्हाई॥कहा ठगोरी देखत लाई।धिरवातिहै कहि भली बनाई॥एक सखी हलधर वपु काछ्यो।चली नीलपट ओढे आछ्यो॥श्याम मिलन ताको तहां आए।अग्रजकानि चले अतुराए॥मिले साँकरी ब्रजकी खोरी। ढूंकीरहीं जहाँ तहँ गोरी॥गह्यो धाइ भुज दोउ लपटानी। दौरि परीं सब सखी सयानी॥ निरखि निरखि तरुनी मुसकानी। एक निलज इकरहीं लजानी॥ कहारही करि सँकोच दिवानी। अब इनकी जिनि राखौ कानी॥ गारि नारि सब देहिं सुहानी। नंदमहरलों जाति बखानी॥ सूरश्याम उतरयो मुखवानी। गई लिवाइ जहाँ राधारानी॥ १७॥ धनाश्रीमलार॥ छैल छबीले मोहना जाके घुंघरवारे केशरी। मोरमुकुट कुंडल लखें करि लीन्हो नटवर भेषरी॥राखें भौंह मरोरिकैरी सुंदरनैन विशाल। निरखि हँसनि मुसकानि कीरी अतिहि भई बेहाल॥ कीर लजावनि नासिका अधरबिंबते लाल। दशन चमक दामिनिहू तेरी श्याम हृदय वनमाल॥ चिबुक चित्तके हरनहैरी राजत ललित कपोल। मारग गहि ठाढो रहैरी अरु बोलत मीठे बोल॥ चंदन खौरि विराजैरी श्यामलभुजा सुचार। ग्वालसखा सब सँग लिएरी वह करत गुलालन मार॥ इक भाजत इक भरत हैरी कुसुमवरन रँग घोरि। सोंधेकी चमची भलीरी खेलत ब्रजकी खोरि॥ सुनत चलीं सब धाइ कैरी वै देखन नंदकुमार। फाग साँझसी ह्वैरहीरी उड़ि उड़ि गगन अपार॥ मिलि तरुनी जहाँ जाइकैरी जहाँ विरहत फागु गोपाल। सूरश्याम सुख देखिकैरी विसरयो तनु तेहि काल॥ १८॥ गौरी॥ घर घरते सुनि गोपी हरिमुख

देखन आई। निरखि श्याम ब्रजनारि हरषि सब निकट बुलाई ॥ सुनति नारि मुसकाय बांस लीन्हे करधाई। ग्वालन जेरी हाथ गारिदै त्रियन सोहाई ॥ शिलानाम ग्वालिनी अचानक गहे कन्हाई। सखिन वोलावति टेरि दौरि आवहुरी माई ॥ एक सुनत गई धाइ वीस तीसक तहाँ आई। टूटिपरीं चहुँपास घेरि लीन्हो वलभाई ॥ इक पट लीन्हो छीनि मुरलिआ लई छिंडाई। लोचन काजर आंजि भाँति सो गारीगाई ॥ जवहिं श्याम अकुलात गहति गाढ़े उर लाई। चंद्रावलिसों कह्यो गूंथि कच सौंह दिवाई ॥ हाहाकरिए लाल कुँअरिके पाँय छुआई। यह सुख देखत नैन सूरजन वलि वलि जाई ॥ १९ ॥ काफी ॥ ललना प्रगट भए गुण आजु त्रिभंगी लाल ऐसे होजू । रोकत घाट वाट गृह वनहूं निवहति नहिं कोउ नारि । भली नहीं यह करत सांवरे हमदेहैं अब गारि ॥ फागुन में तो लखत नकोऊ फवाति अचगरी भारि । दिनदशगए दिना दश औरे लेहु साध सब सारि ॥ पिचकारी मोको जिन छिरको झरकि उठी मुसकाइ । सासु ननद मोको घर वैरिनि तिनहि कह्यो कहाजाइ ॥ हाहाकरि कहि नंददोहाई कहा परी यहवानि । तासों भिरहु तुमहि गोलायक इह हेरनि मुसकानि ॥ अनलायक हमहैं की तुमहो कहो न वात उघारि। तुमहूं नवल नवल हमहूं हैं बड़ी चतुरहो ग्वारि॥ यह कहि श्याम हँसि वाला हँसी मनही मन दोउ जानी । सूरदास प्रभु गुणन भरे हो भरन देहु अब पानी ॥ ॥२०॥ काफी ॥ अरी माई मेरो मन हरि लियो नंदके ढुटोना । चितवनमें वाके कछु टोना ॥ निरखत सुंदर अंग सलोना। ऐसी छवि कहूं भई न होना ॥ कालिहरहे यमुना तट जौना । देख्यो खोरि सांकरी तौना ॥ वोलत नहीं रहत वह मौना । दधिलै छीनि खात रह्यो दौना ॥ घर घर माखन चोरत जौना। वाटन घावनदेत है घौना ॥ खेलत फाग ग्वाल सँग छौना। मुरली वजाइ विसरावत भौना ॥ मो देखत अवहीं कियो गौना । नटवर अंग सुभसजे सजौना ॥ त्रिभुवन में वश कियो न कौना। सूरनंद सुत मदन लजौना ॥ २१ ॥ माईरी मोहन मूरति साँवरो नँदनंदन जेहि नावरो। अवहिं गए मेरे द्वारह्वै रहत कहत ब्रजगाँवरो ॥ मैं यमुना जल भरि घर आवति मोहिं करि लागो तावरो। ग्वालसखा सँग लीन्हे डोलत करत आपनो भावरो ॥ यशुमतिको सुत महर ढुटौना खेलत फागु सुहागरो। सूरश्याम मुरली ध्वनि सुनरी चित न रहत कहुँ ठांवरो ॥ २२ ॥ अरी माई सांवरो सलोनो अति नंद कुँअररी। चंदनकी खौरि भाल भौंह है जब रैरी ॥ कुंतल कुटिल छवि राजत झवरैरी । लोचन चपल तारे रुचिर भवरैरी ॥ मकर कुंडल गंड झलमल करैरी । मनहु मुकुर विच रवि छवि वरैरी ॥ नासिका परम लोनी विंवाधर तरैरी। तहां धरै मुरली सो नाना रंग झरैरी ॥ यमुनाके तीर ग्वाल संगहि विहरैरी। अवहीं मैं देखि आई वंसीवट तरैरी ॥ पिचकारी करालिए धाइ अंग धरैरी। नैनन अवीर मारै काहूसों नडरैरी॥वातन हरत मन रांगह्वै ढरैरी। सूरजको प्रभु आली चितते न टरैरी ॥ २३ ॥ नँदनंदन आली मोहि कीन्ही बावरी। कहा करौं चित क्योंहूं रहत न ठाँवरी ॥ विरहत हरि जहां तहां तुहु आवरी । निशिहूं वासर आली मोको उहइ चावरी ॥ यमुना जल भरन जाइ इहै कारि दाँवरी। गुरुजन पुरजनसों और न उपावरी ॥ काफी रागिनी मुख गावै मुरली वजाइरी। ध्वनि सुनि तनु भूली अतिही सुहाइरी ॥ चंदन कपूर चूरि फेंटन भराइरी। सोंधे भरि पिचकारी मारत है धाइरी ॥ आतुर ह्वै चलिरी और जाइ किनि जाइरी। चित न रहत ठौर और न सोहाइरी ॥ मिलि प्रभु सूरजको सकुच गँवाइरी। लाजडारि गारि खाइ कुल विसराइरी ॥२४॥कल्याण॥ खेलत हरि ग्वालसंग फागु रंग भारि।एक मारत एक नारत

एक भाजत एक गाजत एक धावत एक पावत एक आवत मारि ॥ एक हर्षत एक लरखत एककरत घाताहिको लोचन गुलाल डारि सोंधे ढरकावै । एकफिरत संग संग एक एक न्यारे २ विहरत टरत दाँव दीबेको वै ज्यों नहिं पावै॥ एकगावत एकभावत एकनाचत एकराचत एककरत मृदंगताल गति जति उपजावै । एकवीणा एककिन्नर एकमुरली एकउपंग एकतुंमर एक रबाब भांति सो दुरावै ॥ एक पटह एक गोमुख एक आवझ एक झालरी एक अमृत कुंडली एक एक डफ एक करधारे। सूरज प्रभु बल मोहन संग सखा बहु गोहन खेलत वृषभानु पौरि लिए जात टारे ॥ २५ ॥ सावेरी ॥ सुनतही वृषभानु सुता युवती सब बोलाई । आए बलराम श्याम आए तजि काम वाम धामते आतुरसात नव बनाई ॥ हरषत सब ग्वाल वाल अरस परस करत ख्याल एक मारत एक भाजत राजत वह जोरी।उतते निकसी कुमारि संग लिए विपुल नारि कोउ कोउ नव योवन भरि कोउ कोउ दिन थोरी॥इत उत मुख दरश भए पिय पूरन काम कियो मानो शशि उदय भयो आनंदित चकोरी । उतजेरी धरे ग्वाल बांसन इत परी मार यह छबि नहिं वार पार सोर झोर झोरी॥ उत होरी पढत ग्वार इत गारी गावति ए नंद नाहिं जाए तु म महरि गुणनभारी। कुलटी उनते कोहै नंदादिक मनमोहै बाबा वृषभानुकीवै सूर सुनहु प्यारी॥ ॥ २६ ॥ काफी ॥ श्रीराधा मोहन रंग भरेहो खेल मच्यो ब्रजखोरी। नागरि संग नारि गण सोहैं श्याम ग्वाल सँग जोरी ॥ हरिलिए हाथ कनक पिचकारी सुरंग कुमकुमा घोरी । उतहि माट कंचन रँग भरिलै आई तिरिया जोरी ॥ आतुरह्वै धाई उत नागरि इत बिचले सब ग्वाल। घेरि लई गहि खोरि साँकरी पकरे मदन गोपाल ॥ गह्यो धाइ चंद्रावलि हँसिकै कह्यो भलेहो लाल। जिनि बलकरौ रहौ नेक ठाढे जुरि आई ब्रजबाल ॥ आई हँसति कहति हरिएई बहुत करतहैं गाल। क्यों जू खबरि कहौ यह कीन्ही करत परस्पर ख्याल ॥ काहू तुरत आइ मुख चूम्यो करसों छुयो कपोल। कोउ काजर कोउ वदन माडती हर्षहिं करहिं कलोल॥ कोउ मुरली लै लगी बजावन मनभावन मुखहेरि । किनहूं लियो छोरि पटु कटिते वारति तनपर फेरि ॥ श्रवणनलागि कहति कोउ बातें बसन हरे तेइ आपु। कालि कह्यो करिहौ कहा मेरो प्रगट भयो सो पापु ॥ कोउ नयनन सों नयन जोरिकै कहति नमोतन चाहौ। अवहीं तुम अकुलात कहाहौ जानहुगे मनलाहौ॥ घेरि रही सरघाकी नाहीं करति सबै मनलह। इक बूझति इक चिबुक उठावति वशपाए हरिनाह॥ पीतांबर मुरली लई तबहीं युवती स्वांग बनाइ । देखत सखा दूरि भए ठाढे निरखत श्यामल जाइ॥ नखछत छाप बनाय पठाए जानि मानि गुणयेहु। सूरश्याम हमको जिनि बिसरौ चिह्न इहै तुम लेहु ॥ २७ ॥ गुंडमलार ॥ खेलत रंग रह्यो एक ओर ब्रजसुंदरि एक ओर मोहन। बरन बरन ग्वालबने महर नंद गोप जने एक गावत एक नृत्यत एक रहत गोहन ॥ बजावत मृदंग ताल अरस परस करै विहार सोभाको बरनी पार एक एक दै सोहन कनक लकुट करन लिए धाए सब हरषि हिए एक ब्रजललना सूरज प्रभु मन मन मिलि भोंहन ॥ २८॥सारंग॥ हो हो हो हो होरी करत फिरत ब्रजखोरी। मोहन हलधर जोरी सुवननंद कोरी ॥ ग्वाल सखा सँग ढोरी लिए अबीर कर झोरी ॥ मारि भजत जेहि जोरी दावलेत दौरी। एक गावति है धमारि एक एकन देति गारि गोरी। दई सबन लाज डारि बाल पुरुष तोरी ॥ सोंधे अरगजाकी च मची जहां तहां गलिन नोरी। बीच एक एक ऊंच नीच करत रंगझोरी ॥ एक उघटत एक नृत्यत एक तान लै तोरी। उपजाइ एक दै करताल हरषि गावति है गौरी ॥ सूरदास प्रभुको सुख

निरखि हरपि होरी। सुरललना सुरनसहित थिथकति भई बौरी ॥ २९ ॥ रागनंदन ॥ वृंदावन परम सोहावनो राधे खेलैं फागुवारे कन्हैया। मोहन बँसिया बजावैलाननदी यमुनाके तीर वारे कन्हैया ॥ श्रवण सुनत सब धावैंही झोरिन भरे अबीर वारे कन्हैया। उरमोतिनकी मालारी पहिरे रातुल चीर वारे कन्हैया ॥ व्रजवधू सब सुंदरि श्रवणन झनकै नीर वारे कन्हैया। चोवा चंदन अरगजा छिरकै सकल शरीर वारे कन्हैया ॥ एकतो राधा सुंदरी दुसरे परी अबीर वारे कन्हैया। सांकरि खोरि या व्रजकी हो भई चोवाकीही लवारे कन्हैया ॥ वृंदावनके कुंजन भई दोउ दिश भीर वारे कन्हैया। यहि विंधि होरी खेलही गावै निशि दिन सूर वारे कन्हैया ॥ ३० ॥ धमारि ॥ प्यारी नँदनंदन वृपभानु कुँवरि सों खेलत रंग रह्यो। उडत गुलाल कुमकुमा मानो अंवर आली छाइ रह्यो ॥ अलि सुत युग वरण्यो वंकट छवि जलसुत अधर लह्यो। खंजन मीन मुक्ताहल राजत मनों रविरथ खैंचिरह्यो ॥ हँसि मुसकात सहज स्वारथको रमनिहि रूप थह्यो। दारौं दरनि अरुन अति सोभा मनु शशि ग्रहण गह्यो ॥ गोपी ग्वाल सिमटि सब सुंदरि सज्यो शृँगार नह्यो। वरपत कंचन नीर कुसुमजल मनो घनगरजि रह्यो ॥ सखिश्यामा श्याम सबै सुखदाई सुखसागर सगरो। सूरदास प्रभु मिल्यो हो कृपाकरि जिन्हि हृदये विसरो ॥ ३१ ॥ सारंग ॥ हो हो होरी खेलैं रंग सों व्रजराज कुँवर वृपभानु पौरी। सुनि मुरली डफ ताल वेणु चढि अटा अटारी दौरि दौरी ॥ जो प्यारी न्यारी छवि सों देखति जलधरको छवि अपार। घनघटा अटा मंद छटकै दै उदित चंद्र वादर विदार ॥ सो प्यारे की हितू हतीते झकझोरो खेटक झक झांकवार। भौंहैं मंद भेद भाव हरपै रंग अपार ॥ इक प्यारी चंदन घसि छिरकै एक लिए लाला गुलाल। इक प्यारी केसरि छिरकति है भनत सूर चालि गति मराल ॥३२॥ विलावल ॥ खेलत मोहन फागु भरे रँग ॥ डोलत सखा समूह लिए सँग ॥१॥ नंदरायसों विनती कीनी। श्याम एककी आज्ञा लीनी ॥ अगणित तव पिचकारी गढाये। कंचन रतन बनाये पाये॥२॥ मन सहसक केसरि लैदीनो। अमित सुगंध अरगजा लीनो ॥ गोपिन वैठि औसेरकीनो। गाइ चरावनको सँग दीनो ॥३॥ तब अनंत सखा अरु गन साजे। सकल सँवारि संग लिए वाजे ॥ घर घर ध्वजा पताका वानी। तोरन वारन वासर ठानी॥४॥ अरन पचासक अबीर सवारे। वीथिन छिरकि तहां विस्तारे॥मोहन चरन धरत तहँ आवै॥ द्वारे जुरि युवती मिलि गावै॥५निरखि भरनको सब मिलि धावै।मोहन इतते सखा सिखावै॥नाहिं गात वस्तर नाहिं राखे।भरि नीके करि मुख कछु भापे॥६॥बैठे जहां गोप सब राजें।आवत देखि सबै उठि भाजें ॥ मोहनपै कोउ जान न पावै ॥ महा मत्त गजवरज्यों धावै ॥ ७ ॥ सब मिलि बोलत होहो होरी। छिरकत चंदन वंदन रोरी ॥ एक घोस गोपी जुरि आय। घरही में घेरे हरि जाय ॥८॥ इक भीतर इक रही दुआरे। एकजाइ लागी पिछवारे ॥ एक इहां चहुँ दिशते घेरे। एक पैठि मंदिर में हेरे॥९॥एक लिए कर कमल विराजे। परसै किरणि कोटि शशि भ्राजे ॥ एकलिए शिरसौंधे गागरि। फेंट अबीर भरे बहु नागरि ॥१०॥ सारी सुभग काछ सब दिये। पाटंवर गाती सब हिये ॥ एकन जाइ दुरे हरि पाये। सैन देइ राधिका वताये ॥ ११ ॥ कराति कुलाहल हरि गहि लाई। फूली ज्यों निधनी धन पाई ॥ एक गहे कर दोऊ हरिके। हलधर देखि उतहिको सरके ॥ १२ ॥ केसरि अरु गुलाल मुखलायो। पूरनचंद्र उदयकरि आयो ॥ पीत अरुण रँगनाये शिरते। चली धातु मानो सांवर गिरिते ॥१३॥ एक भरे पिचकारी ताके। देत श्रवणमें नंदललाके ॥ व्रजजन सकल सुधारस पीते। ऐसी भाँति

पहर दुइ बीते ॥ १४ ॥ देखी निकट राधिका प्यारी । तब हरिलीला और विचारी ॥ तब हरि जाइ दुरे उपवनमें । सँगलगी नायका कुंज सदनमें ॥ १५ ॥ करत कुलाहल ब्रजकी नारी । देखत चढे कदंम विहारी ॥ कबहुँक मुरली मधुर बजावैं । श्रवण सुनत जितही तित धावैं ॥ १६ ॥ जब हरि जानि निकटही आए । डरते तब हरि रहे लुकाए ॥ कुंज कुंज कोकिल ज्यों टेरैं । श्रवणनाद भृंगी त्यों हेरैं ॥ १७ ॥ कबहूं फिरि आपुसमें खेलति । सकल सुगंध परस्पर मेलति ॥ झुके वचन कहती विनपाये । कहाति कछू राधिका लगाए॥१८॥करनि लाज वरवनु भे जैसे । जाइ डोलति वन वनमें तैसे ॥ तब हरि भेष धऱ्यो युवतीको । सुंदर परम भावतो जीको ॥ १९ ॥ सारी कंचुकि केसरि टीको । करि शृंगार सब फूलनहीको ॥ कर राजति गेंदुक नोलासी । छूटी दामिनिसी ईषदहासी ॥ २० ॥ सकल भूमि वन सोभा पाइ । सुंदरता उमँगी नसमाय ॥ ता सोभा ब्रजनारी सोही । रही ठगीसी रूप विमोही ॥ २१ ॥ एक कहति हरि कैसे नैना । एक कहति वैसेई वैना ॥ बूझति एक कौनकी नारी । विधिकी सृष्टि नहीं तू न्यारी ॥ २२ ॥ तब हरि कहत सुनहु ब्रजबाला । बोलति हँसि हँसि वचन रसाला ॥ हम तुम मिलि खेलहिं सब जानति । राधा आली मोहिं पहिचानति ॥२३॥ होंहूँ संग तिहारे खेली । जानति होहूँ जान सहेली ॥ अवहीं कीरति महरि पठाई । राधा इकली खेलन आई ॥ २४ ॥ अब एक बात कहौं होजीकी । हों जानाति हौं हरिही पीकी ॥ सघन विपिन ऐसे कहाँ पावहु सब मिलि एक संग जिनि धावहु ॥ २५ ॥ सुनहु सोर कत रहिहे नेरे । कोटि करौ पावहु नहिं हेरे ॥ ह्वैह्वै न्यारी न्यारी डोलहु । तनक मूंदि कर मुख जिनि बोलहु ॥२६॥ जाइ अचानकही गहि ल्यावहु । सखी एक ज्यों त्यों करि पावहु ॥ राधाको भुज गहिकै लीनी । ऐसे सबको द्वैद्वै कीनी ॥ २७ ॥ मौन किए प्रवेस कियो वनमें । हरिको रूप राखि निज मनमें ॥ और सखी खोजति सब कुंजनि । राधा हरि विहरत सुख पुंजनि ॥ २८ ॥ राधा आवति देखि अकेली । तब फिरि बहुरिस बैठि सकेली ॥ तब बूझति वृषभानु दुलारी । सखी संगकी कहाँ विसारी ॥ २९ ॥ अति गह्व र में जाइ परी हम । सूर्य न सूझत भयो निशातम ॥ ताठाहरतेहों भई न्यारी ॥ फिरि आई डरपी हों भारी ॥३०॥पुहुप वाटिका हो फिरि आईमुकुट पीठिते हो इतआई॥ता ठाहर जो ठाढे पावहिं चलौ जाइ धाइ गहि लावहि ॥३१॥ नारी बात सुनतहीं धाईघेरिलिए कोकिल सुरगाई॥जाहु कहाँ व अकेले पाये । सकल सुगंध शीशते नाये॥३२॥एकरूप माधुरी निहारहि । एक कटाक्षनयनशर मारहि ॥ एक सुमन लै ग्रंथितमाला । सोभित सुंदर हृदय विशाला ॥ ३३ ॥ खेलत आए पुलिन सुहाए । बैठे तहँ मंडली बनाए ॥ मोहन नव शशि मध्य विराजे । देखि सूर कोटिक छवि छाजे ॥ ३४ ॥३३॥[काफी]॥ खेलत फागु कुँवर गिरिधारी । अग्रजअनुज सुबाहु श्रीदामा ग्वाल बाल सब सखा अनुसारी ॥ इत नागरि निकसीं घर घरते दै आगे वृषभानु दुलारी । नवसत साजि ब्रजराज द्वार मिलि प्रफुलित बदन भीर भई भारी ॥ दुंदुभि ढोल पखावज बाजत डफ मुरली रुचिकारी । मारत बांस लिए उन्नत कर भाजत गोप प्रियनिसों हारी ॥ एक गोप इक गोपी कर गहि मिलिगए हलधरसों भुजचारी । मिटिगई लाज सम्हार न कुच पट बहुत सुगंध दियो शिरढारी ॥ बांह उचाइ कहतहो हो हो लै लै नाम देत प्रभु गारी ।

इतहि राधिका निकसि यूथते सन्मुख पिय छांडति पिचकारी ॥ इक गोपी गोपाल पकरि कर चली आपने मेर उसारी । आंजति आंखि मनावति फगुवा हँसाति हँसावति दै करतारी ॥ सुर विमान नभ कौतुक भूले कोटि मनोज जाइ बलिहारी । सूरदास आनंदसिंधु में मगन भए ब्रजके नर नारी॥३४॥काफी॥नँदनंदन वृपभानु किसोरी राधा मोहन खेलत होरी। श्रीवृंदावन अतिहि उजागर वरन वरन नवदंपति भोरी॥एकन करहै अगर कुमकुमा एकनकर केसरिले वोरी॥एक अर्थ सों भाव दिखावति नाचति तरुनि बाल वृध भोरी ॥ श्यामा उतहि सकल ब्रजवनिता इतहि श्याम रस रूप लह्योरी । कंचनकी पिचकारी छूटति छिरकति ज्यों सचुपावै गोरी ॥ अतिः ग्वाल दधि गोरस माते गारी देत कहो न करोरी । करत दुहाई नंदराइकी लै जुगयो कलवल छल जोरी ॥ झुंडनि जोरि रही चंद्रावलि गोकुल में,कछु खेल मच्योरी। सूरदास प्रभु फगुवा दीजे चिरजीवो राधा बर जोरी॥३५॥श्रीहठी ॥श्यामा परवशपरी हो विकाय मोहनके खेलत रस रह्योहो । खेलन चले करत अतिं तरकै मारत पीक पराइ। पेलि चली यौवन मदमाती अधर सुधारस प्याइ॥ इत लिए कनक लकुटिया नागरि उत जेरी धरेग्वार । इत है रंग रँगीली राधा उत हैं श्री नंदकुमार ॥ १ ॥ खेलत में रिस नाकरि नागरि श्यामहि लागी चोट । मोहन है अति माधुरी मूरति राखिये अंचल वोट॥ मारि डगै जव फिरि चली सुंदरि वेनी तुरे शुभ अंग । मनहु चंदके वदनसुधाको उडि उडि लगत भुअंग ॥ २ ॥ रुंज मुरज डफ झांझ झालरी यंत्र पखावज तार। मदन भेरि अरु राइ गिरी गिरि सुर मंडल झनकार ॥ एक जुआई आन गाँवते सुंदर परम सुजान । यह ढोटा धौं आहि कौनको मारत मनसिज बान ॥ ३ ॥ यमुनाकूल मूल बंसीवट गावत गोप धमारि । लैलै नाम गाउँ वरसानो देत दिवावत गारि ॥ खेलिफागु मिलिकै मनमोहन फगुवा दियो मँगाय । हरपित भई सकल ब्रजवनिता सूरदास बलिजाइ॥४॥३६॥ नटनारायण॥ हो हो हो हो लै लै वोलैं। गोरस केरी माते डोलैं ॥ ब्रजके लरिकनि सँग लिए डोलैं। घर घर केरी फरके खोलैं॥ गोपी ग्वाल मिले इक सारी। वचत नहीं विन दीने गारी ॥ आनि अचानक अँखियां मींचैं। चंदन वंदन ऊपर सींचै जो कोइ जाइ रहे घर वैसी । करि वरि आइ तहांऊं पैसी ॥ हाथन लिए कनक पिचकारी। तकितकि छिरकत मोहन प्यारी ॥ कुमकुम कीच मची आति भारी । उडत अबीरनरँगी अटारी ॥ अति आनंद भरे सब गावैं। नाना गाति कौतुक उपजावैं ॥ मोहन गहि आने मिलिधाय। फगुवा हमको देहु मँगाय ॥ भागत कुसुम हार उर टूटे । पीतांवर गोहन दै छूटे ॥ सोभा सिंधु बढ्यो अतिभारी। छवि पर कोटि काम बलिहारी ॥ सूरदास प्रभु करि रस होरी ॥ वरणौं कहां लगि मोमति थोरी ॥३७॥श्रीहठी॥ नागरि राधा पै मोहन लेआयहो॥लोचन आंजि भाल वेंदीके पुनि पुनि पाँइ परायहो ॥ वेनी गूंथि मांग शिरपारचौ वधू वधू कहि गाइहो । प्यारी हँसति देखि मोहन मुख युवती वने वनाइहो ॥ श्याम अंग कुसुमी नई सारी अपने कर पहिरायहो॥कोउ भुज गहाति कहति कछु कोऊ कोउ गहि चिवुक उठाइहो॥कोउ कपोल छुवै कहति लाल अति कोउ मुख मुखहि मिलाइहो । एक अधर गहि सुभग अँगुरिअन वोलत नहीं कन्हाइहो॥नीलांवर गहि खूंट चूनरी हँसि हँसि गांठि जुराइहो॥युवती हँसाति देति करतारी भयो श्याम मन भायहो॥कनक कलस अरगजा घोरिकै हरिके शिर ढरकायहो । श्रीवृंदावन अद्भुत होरी कहत कही नहिं जाइहो॥नंदसुनत हँसि महरि पठाई यशुमति धाई आइहो। पटमें बाँध्यो श्याम छुडायो सूरदास वलिजायहो३८॥विलावल॥सोंधेकी उठत झकोर मोहन रंगभरे। चोवा चंदन अगर कुमकुमे सोंधे

माठभरे ॥ रतन जडित पिचकारी करगहे बालखरे। भरि पिचकारी प्रेमसों डारी सो मेरे प्राणहरे॥ सब सखियन मिलि मारग रोक्यो जब मोहन पकरे । अंजन आंजि दियो आंखिनमें सो हाहाकरि उबरे॥फगुवा बहुत मँगाइ साँवरे करजोरे अरज करे।धनि धनि भाग सूर प्रभु ताके जाके संग बिहरे३९ रागटोड़ी॥ग्वाल हँसे सुख हेरिकै अति बने कन्हाई॥हलधरकोलिए टेरि आजु अति बने कन्हाई॥होहो करि करि कहतिहै अति बने कन्हाई ॥ रहे चहूंघा हेरि आजु अति बने कन्हाई ॥ ऐसेहि चलिए नंदपै अति बने कन्हाई ॥ बलकी सौंह दिवाइ आजु अति बने कन्हाई॥ भुजा गहे तहां लैगए अति बने कन्हाई ॥ वह छवि वरनी नजाइ आजु अति बने कन्हाई ॥ इत युवती मन हरतिहै अति बने कन्हाई॥ उतहि चले कौ भोर आजु अतिबने कन्हाई ॥ और सखी आई तहां अति बने कन्हाई ॥ करि करि नयन चकोर आजु अति बने कन्हाई ॥ महरहँसे छवि देखिकै अति बने कन्हाई॥ सुनि जननी तहां आय आजु अतिबने कन्हाई ॥ हँसि लीन्हो उरलाइकै अतिबने कन्हाई ॥ आनँद उर नसमाय आजु अतिबने कन्हाई ॥ कछुक खिझी कछु हँसि कह्यो अति बने कन्हाई ॥ किन यह कीन्हो हाल आजु अतिबने कन्हाई ॥ लेति बलैया वारिकै अतिबने कन्हाई॥ ए ऐसिय ब्रजबाल आजु अति बने कन्हाई ॥ रंगरंग पहिरावनि दई अतिबने कन्हाई ॥ युवतिन महर बुलाय आजु अति बने कन्हाई ॥ यह सुख प्रभुको देखिकै अतिबने कन्हाई ॥ सूरदास बलि जाइ आजु अति बने कन्हाई ॥४०॥ रागकल्याण ॥ ब्रजराज लडैतो गायहो मनमोहन जाको नाउँ। खेलत फाग सुहागवनी रंग भीजि रह्यो सबगाउँ ॥ ताल पखवाज बाजहीहो डफ सहनाई भेरे। श्रवण सुनति सब सुंदरी वै झुंडन आयहो घेरे ॥ इतहि गोप सब राजहीं हो उत सब गोकुल नारि। अति मीठी मन भावती हो वै देहिं परस्पर गारि ॥ चोवा चंदन छिरकहीं हो उड़त अबीर गुलाल। मुदित परस्पर खेलहीं हो हो हो हो लै बोलत ग्वाल ॥ सब गोपिन मिलि हलधर पकरे छाँडे पाँइ लगाइ। दाऊ आजु भले बने जू आए आंखि अँजाइ ॥ बहुरि सिमटि ब्रजसुंदरी मिलि पकरे गोकुलनाथ। नव कुमकुम मुख माँडिकै रचि बेनी गूंथी हो माथ ॥ तब नंदरानी बीच कियो बहु मेवा दिये मँगाय । पटभूषण पहिराइ सबनको निरखि सूर बलि जाइ ॥४१॥रागगौरी॥ ग्वालिनि जोवन गर्व गहेली। राधे के सँग कदम सहेली॥१॥कुमकुम उबटि कनक तनु गोरी। अंग सुगंध चढाय किसोरी ॥ दक्षिण चीर तिपा को लहँगा। पहिरि विविध पट मोलन महँगा ॥२ ॥ कुँवरी कुसुम मांग मोतिअन मनु। केसरि आड लिलाट भ्रुकुटि धनु ॥ कज्जल रेख नैन अनिआरे। खंजन मीन मधुप मृग हारे ॥ ३ ॥ श्रवणन कुंडल रवि सम ज्योती । नकवेसरि लटकैं गजमोती ॥ दशन अनार अधर विंब जानो। चिबुक चारु मूंद्यो मधु मानो ॥ ४ ॥ कंठ कपोत मुक्तावलि हार। जनु युग गिरि बिच सुरसरी धार॥ कुच चकवा मुख शशि भ्रम भूले। बैठे विधुरि दुहूँ अनुकूले ॥ ५ ॥ करकंकण चूरो गजदंती । नख मणि माणिक मेटति दंती ॥ नाभि हृदय तनु हाटक वरनी। कटि मृगराज नितंबिनि तरनी ॥ ६ ॥ कदली जंघ चरण कल नूपुर। गवन मराल करत धरणी पर ॥ भूषण अंग सजे सत नोरी। गावति फागु नंदकी पौरी॥७॥

आलिंगंयस्सवक्षः ममदशुभवनंकुंकुमोद्भूतरागैरास्तेमौलौकिरीटंमणिगुणरचितेकुंडलेकर्णयोःतः ॥ गौरांगः शुक्लवासाःकमलकरतलेतालतूर्य्यंद्विवंद्यं धृंधृंधीधीतियुग्मान् मुरजभवरसः पातुवेलावलोयम् ॥ विलावल

वीणावामकराग्रकेण्दधतीतालैतथादक्षिणे मुक्ताहारललाटमध्यतिलकंनेत्रालयेकज्जलम् ॥ लेपंचंदनकर्दमेनरचितंचित्रांवरंनूपुरौ । तांबूलंकरमोहिनीचमनेसष्टोडीचमुक्तावली ॥ रागटोडी ॥

सुनि सुंदर वर वाहिर आए । हलधर ग्वाल गोपाल बोलाए ॥ इकतन ग्वाल एकतन नारी । खेल मच्यो ब्रजके विचभारी ॥ ८ ॥ कुमकुम चंदन अरगजा घोरी । हाथन पिचकारी लैदौरी ॥ गोपी गोप भए झकझोरे । अंचल गांठि परस्पर जोरे ॥ ९ ॥ उड़त गुलाल अरुन भए अंमर । कुमकुम कीच मची धरणी पर ॥ चंग मृदंग बांसुरी वाजे । पकरत एक एक भरि भ्राजे॥९॥ राधा मिलि इक मंत्र उपायो । हलधर अपनी भीर बुलायो ॥ कानलागि श्यामहि सखु झायो । संकर्षण गहि श्यामहि ल्यायो ॥ १० ॥ हरि जूके हाथ गहे चंद्रावलि । कज्जल लै आई सं झावलि ॥ ललिता लोचन आंजन लागी । चंद्रावलि मुरली लै भागी ॥११ ॥ इक लै लावति हृद य कपोलनि । इक लै पोंछति ललित पटोलनि ॥ इक अवलंबन इक अवलोकित । चुंवन दान देति इक दंपति॥१२॥मगन भई अपु वपु न सँभारति। लालन भुज अपने उर धारति॥गुरुजन संत सबै मिलि देखे। तिनहुँको तरुनी तृण वर लेखे ॥ १३ ॥ एक कहै पियको मुख माडौ। एक कहै फगुवा लै छाडौ । वाम लियो पटपीत छुडाई ॥ राधा राखति कृष्ण वडाई ॥ १४ ॥ ॥ १४ ॥ सिमटे सखा छोडावन आए । उन लियो ढेल न मोहन पाए ॥ वाँसन मार मची कल आडे । ग्वालटिके पग एक न छांडे ॥ १५ ॥ बल कियो वीच ग्वाल समुझाए। मोहन मेवा मोल मँगाए ॥ फगुवालै लालन छिटकाए। हँसत गोपाल ग्वाल तहां आए ॥ १६ ॥ तब मोहन हलधर पकराए । करहु तरुनि अपने मनभाए ॥ नाक नयन मुख कज्जल लायो। केसरि कलस हलधर शिरनायो ॥ १७ ॥ वहुत भरे वलराम सवन गहि । धौलागिरि मानो धातु चली वहि ॥ न्हान चले यमुनाके कूल । गोपी गोप भए अनुकूल ॥ १८ ॥ जोरस वाढ्यो खेलत होरी। शारदका वरणै मति भोरी॥सूरदास सो कैसे गावै। लीलासिंधु पार नहिं पावै ॥१९॥४२॥ गौरी ॥ गारी होरी देत दिवावत । व्रजमें फिरत गोपिकन गावत॥दूध दहीके माते डोलैं। काहेन हो हो हो हो बोलैं । वगलनमें दावे पिचकारी । बाँधत फेटैं पाग सँवारी । रुकि गए वाटनि नारे पंडे । नवकेसरिके माट उलेडे । छज्जनते छूटति पिचकारी । रँगि गई वाखरि महल अटारी ॥ नानारंग गए रँगि वागे । वलदाऊ इतउत ह्वै भागे ॥ न्हान चले यमुनाके तीर । मनमोहन हल- धर दोउ वीर॥सूरदास प्रभु सब सुखदायक॥ दुर्लभ रूप देखिवे लायक॥४३॥ रागिनी श्रीहठी ॥ऋतु वसंतके आगमहि मिलि झूमकहो।सुखसदन मदनको जोर मिलि झूमकहो॥१॥कोकिल वचन सोहा वनो मिलि झूमकहो।हित गावत चातक मोर मिलि झूमकहो॥वृंदावन तरुतमाल मिलि झूमकहो। सव फूलि रही वनराय मिलि झूमकहो॥२॥जहां नेवारी सेवती मिलि झूमकहो । बहु पाडर विपुल गँभीर मिलि झूमकहो ॥ खुझो मरवो मोगरो मिलि झूमकहो । कुल केतकी करनि करील मिलि झूमकहो ॥ ३ वेलि चमेली माधवी मिलि झूमकहो। मृदु मंजुल वकुल तमाल मिलि झूम कहो ॥ नववल्ली रस विलसही मिलि झूमकहो । मनो मुदित मधुपकी माल मिलि झूमकहो ॥४॥ ताल पखावज वाजही मिलि झूमकहो। विच डफ मुरलीकी घोर मिलि झूमकहो ॥ चलहु तहां आली जाइए मिलि झूमकहो । जहाँ खेलत नंद किसोर मिलि झूमकहो ॥५॥ यूथनि यूथनि सुंदरी मिलि झूमकहो। जिनि जोवत लजत अनंग मिलि झूमकहो ॥ चोवा चंदन अरगजा मिलि झूम कहो । मथिलै निकसी एक संग मिलि झूमकहो ॥ ६ ॥ प्रति अँग भूपण साजिकै मिलि झूम कहो। लिये कनक कलस भरि रंग मिलि झूमकहो ॥ जाइ परस्पर छिरकहीं मिलि झूम

मुकारत्नसुवर्णवज्ररचितेसिंहासनेसंस्थितश्छत्रशोभितमन्तकेपरिजनैः संवीज्यतेचामरैः ॥ तांबूलंवदनेसुगंधितवपुः कंठेपुमुक्तावली कल्याणोविशदांशुकः कमलदृक्कल्याणदोभूभुजाम् ॥ १ ॥ रागकल्याण ॥

कहो ॥ ७ ॥ इतते गईं ब्रज सुंदरी मिलि झूमकहो । उतते मोहन नवलन अहीर मिलि झूमकहो ॥ बांस धरे जेरी धरी मिलि झूमकहो । बिच मार मची भई भीर मिलि झूमकहो ॥ ८ ॥ एक सखी निकासि झुंडते मिलि झूमकहो । तिनि पकरि लई हरि हाथ मिलि झूमकहो ॥ बहुरि उठीं दशबीस मिलि झूमकहो । धरिलिये आय ब्रजनाथ मिलि झूमक हो ॥ ९ ॥ इक पट पीतांबर गह्यो मिलि झूमकहो । एक मुरली लई छिडाय मिलि झूमकहो ॥ एक मुख माँडहि कुमकुमा मिलि झूमकहो । एक गारीदै उठी गाइ मिलि झूमकहो ॥ १० ॥ प्यारी कर काजर लियो मिलि झूमकहो । हँसि आँजति पियकी आँखि मिलि झूमकहो ॥ यहि विधि हरिको घेरि रहीं मिलि झूमकहो । ज्यों घेरिरही मधुमाखि मिलि झूमकहो ॥ ११ ॥ अब तो घात भलीबनी मिलि झूमकहो । तब चीर हरे जलभीतर मिलि झूमकहो । सोपरी हँसा हम सारि हैं मिलि झूमकहो । सुनि लेहु ललन बलवीर मिलि झूमकहो ॥ १२ ॥ अब हम तुमहिं न गाइहैं मिलि झूमकहो । मुसकात कहा यदुराय मिलि झूमकहो ॥ की हमसों हाहाकरौ मिलि झूमकहो । की परहु कुँवरिके पाँइ मिलि झूमकहो ॥ १३ ॥ बंकविलोकनिमन हरो मिलि झूमकहो । ठगि तुमहिं रही ब्रजबाल मिलि झूमकहो ॥ फगुवा बहुत मँगाय दियो मिलि झूमकहो॥मधु मेवा मधुर रसाल मिलि झूमकहो॥१४॥कहि मोहल ब्रजसुंदरी मिलिझूमकहो॥ तब धाय धरे बल घेरि मिलि झूमकहो॥संक सकुच सब छाँडिकै मिलि झूमकहो । चहुँपास रही मुखहेरि मिलि झूमकहो ॥ १५ ॥ कनक कलस भरि कुमकुमा मिलि झूमकहो । धरि ढारि दिये शिर आनि मिलि झूमकहो॥ चंदन वंदन अरगजा मिलि झूमकहो । सब छिरकति करति न कानि मिलि झूमकहो ॥१६॥ खेलि फागु अनुराग बढ्यो मिलि झूमकहो । फिरि चले यमुनजल न्हान मिलि झूमकहो ॥ द्वितिया बैठि सिंहासने मिलि झूमकहो । दोउ देत रत्न माणिदान मिलि झूमकहो ॥ १७ ॥ यहि विधि हरिसँग खेलहीं मिलि झूमकहो । गण गोकुलनारि अनंत मिलि झूमकहो ॥ सूर सबनको सुख दियो मिलि झूमकहो । रामि रसिक राधिक कंत मिलि झूमकहो ॥ १८ ॥४४॥ रागिनी काफी ॥ मनमोहनललनामनहरचो ॥ गृहगृहते सुंदरि चलीं देखन ब्रजराज कुमार । देखिवदन विथकित भई बैठी हैं सिंहदुआर ॥ डिमिडिमी पटह ढोल डफ वीणा मृदंग उपंग चंग तार । गावत प्रीति सहित श्रीदामा वाढ्यौ है रंग अपार ॥ १ ॥ इत राधिका सहित चंद्रावलि ललिता घोष अपार । उत मोहन हलधर दोउ भैया खेलमच्यो दरबार ॥ रत्नजटित पिचकारी करलिये छिरकति घोषकुमारि । मदनमोहन पिय रसमातेहैं कछुअन अंग सँभारि ॥२॥ मोहनप्यारी सैनदै हलधर पकराए जाय।आपुन हँसत पीतपट मुखदै आएहो आंखि अँजाय॥बहुरि सिमिटि ब्रजसुंदरी मनमोहन पकरेजाय।अधरपान रस कराति पियारी मुरली लई छिडाय॥३परिवा सिमिटिसकल ब्रजवासी चले यमुनजल न्हान।वारिकुँवारिपर पट नंदरानी देतिविप्रन बहुदान॥द्विती यपाट सिंहासन बैठे चमरछत्र शिरढार।सूरज प्रभु पर सकल देवता वरषत सुमन अपार॥४॥४५॥ ॥ श्रीहठी ॥ श्यामसंग खेलनचली श्यामा सब सखियनको जोरि । चंदन अगर कुमकुमा केसरि बहुकंचन घट घोरि ॥ खेलत मोहन रंग भरेहो लाल प्यारो सुंदर सब सुखराशि ॥ १ ॥ फूलनके गेंदुक नवला साजि कनक लकुटिआ हाथ । जाय गही ब्रजखोरि राधिका कोटिक युवती साथ ॥ उतते हरि आए जब खेलत हो हो होरी संग । कानपरी सुनिए नाहीं बहुबाजत ताल मृदंग ॥२॥ पैहिले सुधि पाई नहीं तब घिरे सांकरी खोरि । अब हलधर उलटहु काहे तुम धावहु ग्वाल

जोरि ॥ धरत भरत भाजत राजत गेंदुक नवला सन मार । रसन वसन छूटत नसँभार टूटतहै उरहार ॥ ३ ॥ जब मोहन न्यारे करि पाए पकरे चहुँदिशघेरि । बोलहुजू अब आनि छुड़ावे बल भैयाको टेरि ॥ आजु हमारे वश परेहो जैहौ कहाँ छिड़ाइ । की बल छूटहु आपने की यशुमति माय बोलाइ ॥४॥ एक गहे कर एक फेंट गहि पीतांबर लियो छिडाय । राधा हँसति दूरि भई ठाढी सखियन देति सिखाय ॥ एक श्रवणमें कहि कछु भाजति एक भराति अँकवारि । एक निहाराति रूप माधुरी एक अपुनपो वारि ॥ ५ ॥ एक चिबुक गहि वदन उठावाति हमतन लाल निहारि । एक नैनकी सैन मिलावति एक उठति दै गारि ॥आई झूमि सकल ब्रजवनिता हरि देखी चहुँ ओर । राधा दृष्टि परे विनु मोहन तलफत नैन चकोर ॥ ६ ॥ हरि तब अपने करवरसों घूंघट पट कीनो दूरि । हँसत प्रकाश भयो चहुँ दिशते सुधा किरानि भरि पूरि ॥ आँखि दिखाव तहो जु कहा तुम करिहौ कहा रिसाय । हम अपनो भायो करि लैहैं छुवहु कुँवरिके पाय ॥ ७ ॥ तब तुम अंबर हरे हमारे कीन्हे कौन उपाय । अवतौ दाउँ परचो धरि पाए छाँडहिं तुमहिं नगाय॥ मुखकी कहति सबै झूठी मनहीं मन बहुत सनेहु । कूटि करैंगे बलभैया अब हमहि छांडि किनि देहु ॥ ८ ॥ तुम जो फगुवा दैहो कहा चलि बोलहु सांचे बोल । की हमसों हाहा करिए की देहु श्रीदामा ओल ॥ हाँसि हँसि कहत सहत सबहीकी आभूषण अब लेहु । नासाको मुक्ता अरु मुरली पीतांबर मेरो देहु ॥ ९ ॥ एक बनाइ देति वीरी कर वल्लभ छुवति कपोल । धन्य धन्य वडभाग सवहिके वश कीने विनुमोल ॥ उड़त गुलाल अवीर कुमकुमा छविछाई जनु सांझ । नाहीं दृष्टि परत राधा मुख चंद्र नीलांबर मांझ ॥१०॥ खेलि फाग अनुराग बढचो घर मची अर गजा कीच । ब्रजवनिता कुमुदिनी कुसुमगण हरि शशि राजत बीच ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि ब्रज वीथिनि डोलति घर घर द्वार । सदा वसंत वसत वृंदावन लता लटकि द्रुम डार ॥ ११ ॥ देखि देखि सोभा सुख संपति यह जिय कराति विचारि । ब्रजवनिता हम किन न भई यों कहति सकल सुरनारि ॥ फागु खेलि अनुराग बढायो सबके मन आनंद । चले यमुन स्नान करनको सखा सखी नँदनंद ॥१२॥ दुष्टन दुख संतन सुखकारन ब्रजलीला अवतार । जय जय ध्वनि सुमन न सुर वर्षत निरखत श्याम विहार ॥ युगल किसोर चरण रज मांगौं गाऊं सरस धमार । श्री राधा गिरिवर धर ऊपर सूरदास बलिहार ॥१३॥४६॥ रागनटनारायण॥ खेलत फागु कहत हो होरी । उत नागरी समाज विराजति इत मोहन हलधरकी जोरी॥१॥बाजत ताल मृदंग झांझ डफ रुंज मुरुंज बांसुरी ध्वनि थोरी । श्रवण सुनाइ गारिदै गावति ऊंची तान लेति प्रियगोरी ॥ कोटि मदन दुरि गयो देखि छवि तेउ मोहे जिन्हहूं माति भोरी । मोहन नँदनंदन रस विथकित कोहू दृष्टि जात नाहिं मोरी ॥ २ ॥ कुमकुम रंग भरी पिचकारी उत्तम छिरकति नवल किसोरी । यहि विधि उमँगि चल्यो रँग जहँ तहँ मनु अनुराग सरोवर फोरी ॥ कबहुँक मिलि दश बीसक धावति लेति छिंडाइ मुरलि झकझोरी। जाइ श्रीदामा लै आवत तब दैमानिनि बहुभांति पटोरी॥३॥भमिकर आन अवी र उडावत गोविंद निकट जाय दुरि चोरी । मनहु प्रचंड पवन वश पंकज गगन धूरि सोभित चहुँ ओरी ॥ कनककलस कुमकुम भरि लीन्हो कस्तूरी मिलिकै घसिघोरी । खेल परस्पर कीच मची घर अधिक सुरंग भई ब्रजखोरी ॥ ४ ॥ ग्वाल वाल सब संग मुदित मन जाय यमुनजल न्हाइ हिलोरी । नए वसन आभूषण पहिरत औरन देत पीतांबर छोरी ॥ द्विज समाज समेत करत द्विज तिलक दूव दधि रोचन रोरी । सूरश्याम विप्रन वंदीजन देत रतन कंचनकी बोरी॥५॥४७॥

रागसारंग ॥बनी रूप रंग रस राधिका ताते अधिक बने ब्रजनाथहो । ललिता अरु चंद्रावली मिलवन्यो छबीलो साथहो ॥ ताल पखावज बाजही सँग डफ मुरलीकी घोर हो नंदद्वार औसर रच्यो दोऊ राजत नवल किसोरहो ॥ एककोंध ब्रजसुंदरी एककाध ग्वाल गोविंदहो॥सरस परस्पर गावहीं दैनारि गारि बहु वृंदहो॥आवहुरी हम दुरिरहैं बलभद्र कृष्णगहि देहिहो॥लोचन उनके आँजहीं अधरनको रस लेहिं हो ॥ शीलानाम ग्वालिनी तेहि गहे कृष्ण धपि धाइहो । उपरैना मुरलीलई मुख निरखि हरषि मुसकाइहो ॥ गहे कृष्ण अचानक राधिका रही कंठ भुजलाइहो । मनके सब सुख भोगए जब परसे यादवरायहो ॥ दई कोटि कलस भरि वारुनी वहुत मिठाई पानहो । राधा माधव रस रह्यो सब चले यमुनजल न्हानहो ॥ द्वितिआ सकल समाज सो पट बैठे आनंद कंद हो । दान देति ब्रजसुंदरी नगभूषण नव निधि नंदहो॥ बनवीथिनि भरी पुर गली उमग्यो रंग अपा रहो॥सूर सु नभ सुर थकि रहे निरखत प्राण अधारहो ४८ रागसारंग॥करत यदुनाथ जलधि जल केलि॥ अवलनकर लिए अंबुज अमृत किए दिये नव नव सुख खेलि । जो राजत तिहिकाल लाल ललनारसाल रसरंग मानहु न्हात मदन ध्वजानि सजनी गज गजनी गज संग ॥ श्रवत सलिल शिव विदित अलक मिवराहु वदन विधुदमत । मनहुँ पानकरि भोजन सो अलि जु पिक बल रस बमत॥ध्वनिन करत सिंधुउतरन धरत तरंग रह्यो ढहिराइ॥पूजे कृष्णउजागर सागर बैरागर पहिराइ॥ भवत गवन यों नंदसुवन तब निकसि चढे रथ कूल । निरखत वरषत कुसुम त्रिदशजन सूर सुमति मनफूल ॥ ४९ ॥ रागवसंती ॥ यदुपति जलक्रीडत युवतिन सँग । सागर सकुचत तजीत रंग ॥ षोडससहसदशअष्ट नारि । तिनमें अति सोभित श्रीमुरारि ॥उडुगण समेत शशिसिंधवारि । मनु पुनि आयो चितहित विचारि ॥ मृगमद मलयज केसरि कपूर । कुमकुमा कलित छत अगर चूर ॥ जलताकि परस्पर छपत दूर । मनु धनुष निपुण संग्राम शूर ॥ चलत चारु कलवलय चीर । अरु जलद वृंद छतभित समीर ॥ वदन निकट कच चुवत नीर । मनु मधुप निकर ध्यावत नधीर ॥ जहँ नारदादि मुनि करत गान। जग पूरित हरि यश सुर वितान । सुर सुमन सुघन वर्षत विमान । जै सूर प्रभू सब सुखनिधान॥५०॥ सारंग ॥ रवितनयाको सलिल गंभीर आवहुरे मिलि न्हाइये । यहँ अति श्रम गँवाइ देहको पुनि अपने घर जाइये ॥ जानत हौ ब्रजवेगि विदाह्वै सूरज विमुख जाइ चितए५१॥कल्याण॥यमुनातैं हो बहुत रिझायो । अपनीसौंह दिए नंददोहाई ऐसो सुख मैं कबहुँ न पायो ॥ मिले मातु पितु बंधु सजन सब सखन संग वन विहरन आयो । अज अनंत भगवंत धरणिधर सुवस कियो प्रिय गान सुनायो ॥ होंभयों प्रसन्न प्रेम हित तेरे कलिमल हरे जु यह जल न्हायो॥अब जिय सकुच कछू माति राखहु माँगि सूर अपने मन भायो५२॥राशीविलावल॥ श्यामा श्याम खेलत दोउ होरी । फागुमच्यो अति ब्रजकी खोरी ॥ १ ॥ इतहि बनी वृषभानु किसोरी । सँग ललिता चंद्रावलि जोरी ॥ ब्रजयुवती सँग राजति भोरी । बनि शृंगार श्रीराधा गोरी ॥ २ ॥ उतहि श्याम हलधर दोउ जोरी । वारौं कोटिकाम छवि थोरी ॥ ग्वाल अबीरनकी लिए झोरी । सुरंग गुलाल अरगजा रोरी ॥ ३ ॥ गावति सबै मधुर सुर गोरी । तानलेति दैदै

मालाकंकणकुंडलैः कनकलैराभूषिता भायशः सम्यग्दाडिमबीजदंतरुचिभिः संस्पर्द्धमानाभृशम् ॥ ईषद्धास्यमुखी कठोरकुचकारक्तांबरं बिभ्रती वासंतीवरलोललोचनचलल्लोलानतावर्तते ॥ राशीवासंती॥नेत्रेकज्जलरंजितेतितिलतेनासाग्रमुक्ताफलम् भालेभातिसुकुंकुमस्यतिलकं गौरांगचित्रांबम् ॥ वेणीचंपककेतकीसुकुसुमैसार्द्धकरेवीटिकां नानासौरभगंधितासखिलवपुर्वेलावली योषिता ॥ बिलावल ॥

झक झोरी ॥ राधा सहित चंद्रावलि दौरी । औचक लीनी पीत पिछौरी ॥ ४ ॥ देखतिही लेगई अजोरी । डारिगई शिरश्याम ठगोरी ॥ ग्वालदेत होरीकी गारी । वैर कियो हमसों तुम भारी ॥५॥ हँसति परस्पर यौवनवोरी । लै आई हरि पीत पिछोरी ॥ वात करति मन मुरली कोरी । अधरन ते नाहिं टारत जोरी ॥ ६ ॥ भली करी सव हम तुम सोरी सावधान अव होहु कह्योरी ॥ श्याम चितै राधा मुख ओरी । नैन चकोर चंद्र दरश्योरी ॥ ७ ॥ पियको प्रिय मोहनी लगाय । इहि अंतर गोपी हँसि धाय ॥ गह्यो हरपि भुज ललिता धाय । गई श्यामकी सव चतुराय ॥ ८ ॥ मनमाने सव करति वड़ाय । राधा मोहन गाँठि जुराय ॥ करत सवै रुचिकी पहुनाय । नंदमहरको गारी गाइ ॥ ९ ॥ फगुवा हमको देहु दिवाय । पचरँगसारी वहुत मँगाय ॥ लीन्ही जो जाके मन आय । तुरत सवै युवती पहिराय ॥ १० ॥ खेलत फागु रह्यो रसभारी । वृद्ध किसोरि वाल अरु नारी ॥ अति श्रम जानि गए जलतीरा।ग्वाल ग्वालि हलधर हरि वीरा॥परम पुनीत यमुनजल रासी ॥ क्रीडत जहां व्रह्म अविनासी ॥ धन्य धन्य सव व्रजके वासी । विहरतहैं हरि सँग करि हांसी ॥१२॥ जलक्रीडात रुणिन मिलि कीनो । व्रज नर नारिनको सुख दीनो ॥ करि स्नान चले व्रजधाम । करे सवनके पूरण काम ॥ १३ ॥ जो सुख नंद यशोदा पायो । सो सुख नाहीं प्रगट वतायो ॥ सुरवनितन यह साध विचारैं । कैसे हरि सँग हमहु विहारैं ॥ १४ ॥ धन्य धन्य ए व्रजकी वाला । धन्य धन्य गोकुलके ग्वाला ॥ सूरश्याम जनके सुखदायक । भुव प्रगटे हरि हलधर भायक ॥ १५ ॥ ५३ ॥ गौरी ॥ कछु दिन व्रज औरो रहो हरि होरीहै । अव जिनि मथुरा जाहु अहो हरि होरी है ॥ १ ॥ सव सुखको फल फागु अहो हरि होरीहै ॥ प्रगट करौ यह जानिकै हरि होरी है । अंतरको अनुराग अहो हरि होरी है ॥ २ ॥ गनहु द्विज दिन शोधिकै हरि होरी है । भूपति ह्वैहै काम अहो हरि होरी है॥ शशि रेखा शिर तिलक दे हरि होरी है॥ सवकोऊ करै प्रणाम अहो हरि होरी है ॥३॥ कनक सिंहासन वैठिहैं हरि होरी है।युवतिन के उर आनि अहो हरि होरी है ॥ घूंघट आत पतानि अहो हरि होरी है॥४॥तीज तिहूं दिश प्रगट है हरि होरी है।अपनी आनन रेख अहो हरि होरी है॥सुनि पग मग डफ डिमि डिमी हरि होरी है॥सोइकरि हैं सव देश अहो हरि होरी है ॥५॥चौथि चहूं दिश जानिहै हरि होरीहै । यह अपनी इकरीति अहो हरि होरी है॥मैं जो कहो पिय निजल अंहो हरि होरी है॥छांडि सकुच कुलनीति अहो हरि होरी है६ पांचै परमिति परिहरै हरि होरी है । चली सकल इकचाल अहो हरि होरी है॥नारि पुरुष सादर करैं हरि होरी है॥वचन प्रीति प्रतिपालि अहो हरि होरी है॥७॥छाठे छरागरसरागिनी हरि होरी है। ताल तान वंधान अहो हरि होरी है॥चटुल चारु रतिनाथके हरि होरी है॥सीखत होइ औधान अहो हरि होरी है ॥ ८ ॥ सुनि वातैं सव सजग होइ हरि होरी है । सवन मतो मतो एक अहो हरि होरी है ॥ नृप जो कहो सव कोउ करै हरि होरी है । कोराखि है विवेक अहो हरि होरी है ॥ ९ ॥ आठैं सुनि सव साजि भए हरि होरी है । राजाकी रुचि जानि अहो हरि होरी है ॥ करहु क्रिया तैसी सवै हरि होरी है । आयसुमाथे मानि अहो हरि होरी है ॥ १० ॥ नौमी नवसत साजिकै हरि होरी है । उर सुगंध उपहार अहो हरि होरी है ॥ मनहु चली है मायकै हरि होरीहै । मनसिज भवन जोहार अहो हरि होरी है ॥ ११ ॥ दशै दशै दिशि शोधिकै हरि होरीहै । वोलेहो नाराय अहो हरि होरी है ॥ काज करहु रुचि आपनी हरि होरी है । आवहु काज सिराय अहो हरि होरी है ॥ १२ ॥ सुनि आयसु एकादशी हरि होरी है । वोले सव शिरनाइ अहो

हरि होरी है ॥ गजजीतहु बल आपने हरि होरीहै। ज्ञान वैराग छँडाय अहो हरि होरी है ॥ १३ ॥ देखि भले सुभट आपने हरि होरी है। दियो द्वादशघोष विचारि अहो हरि होरीहै ॥ करहु क्रिया तैसी सबै हरि होरी है। होइ निशंक नर नारि अहो हरि होरी है ॥ १४ ॥ ढोल भेरि डफ बांसुरी हरि होरी है। बाजैं पटह निसान अहो हरि होरी है ॥ मिलहु लोकपति छाँडिकै हरि होरी है। नाहिं उबरिवो निदान अहो हरि होरी है ॥ १५ ॥ रथ औचक बरात साजैं हरि होरीहै। खरन भए असवार अहो हरि होरी है ॥ धूरि धातु रंग घट भरे हरि होरी है। धरे यंत्र हथियार अहो हरि होरीहै ॥१६॥ जहां तहां सैन्याचली अहो हरि होरीहै। मुक्तकाछ शिरकेश अहो हरि होरी है॥आपौ पर समुझै नहीं हरि होरी है। राजा रंक अवेस अहो हरि होरी है ॥ १७ ॥ जे कबहूं देखे नहीं हरि होरी है। कबहुँ न सुनी न कान अहो हरि होरी है ॥ तिन्ह कुलनारि निडरभई हरि होरी है। लागे लोग परान अहो हरि होरी है ॥ १८ ॥ भस्मभरैं अंजन करैं हरि होरी है। छिरकैं चंदन वारि अहो हरि होरी है ॥ मर्यादा राखैं नहीं हरि होरी है। कटिपट लेहिं उतारि अहो हरि होरी है ॥ १९ ॥ जहां सुनहिं तप संयमी हरि होरी है। धर्म धीर आचार अहो हरि होरीहै ॥ छेकहिं तहीं निशंक होइ हरि होरी है। पकरहिं तोरि किंवार अहो हरि होरी है ॥ २० ॥ शठ पंडित वेश्यावधू हरि होरी है। सब निकसीं एकै सारि अहो हरि होरीहै ॥ तेरसि चौदसि दिवस द्वै हरि होरी है। जबजीते जगझारि अहो हरि होरी है ॥ २१ ॥ पून्यो प्रगटी प्राणपति हरि होरी है। दुरे मिले पा लागि अहो हरि होरी है ॥ जहां तहां होरी जरै हरि होरी है। मनहुँ मवासे आगि अहो हरि होरी है ॥ २२ ॥ सब नाचहिं गावहिं सबै हरि होरी है। सबै उडावहिं छार अहो हरि होरी है ॥ साधु असाधु न समुझहीं हरि होरीहै। बोलहिं वचन विकार अहो हरि होरी है ॥ २३ ॥ अति अनीति मितिदेखि कै हरि होरीहै। परिवा प्रगटी आनि अहो हरि होरी है ॥ विमल बसन तनु साजहीं हरि होरी है। मर्यादाकी कानि अहो हरि होरी है ॥ २४ ॥ आवतही आदर करैं हरि होरी है। हँसि जोरहिं उठि हाथ अहो हरि होरी है ॥ वरन धर्म मिति राखहीं हरि होरी है। कृपाकरो रतिनाथ अहो हरि होरी है ॥ २५ ॥ सुनि विनती ऋतुराजकी हरि होरी है। प्रभु समुझे मनमाहँ अहो हरि होरी है ॥ जाय धर्म अपने रहो हरि होरी है। वसो हमारी बाँह अहो हरि होरी है ॥ २६ ॥ और कहां लौं बरनिए हरि होरी है। मनसिज के गुणग्राम अहो हरि होरीहै ॥ सुनहु श्याम या मासमें हरि होरीहै। किये जु कारण काम अहो हरि होरीहै ॥ २७ ॥ सूररसिक मणि राधिका हरि होरीहै। कहि गिरिधरसों बात अहो हरि होरीहै ॥ श्याम कृपा करि ब्रजरहो हरि होरीहै। वरजति मधुवन जात अहो हरि होरीहै ॥ २८॥५३॥

॥ राग जयजयवंती ॥ माई फूले फूले हो फूलत श्रीराधे कृष्ण झूलत सरसरसही फूलडोल। फूले फूले फूल जोरत फूले निमिषनहीं मोरत संतन हितही फूल डोल ॥१॥ फूल स्फटिक खँभ रचित कंचनही फूल खचित सरस रही फूल डोल। पटुली नवरतन पचित हीरालाल मोती फूल जटित संतन हितही फूल डोल ॥ २ ॥ मरुवा मयारि सुठि ढरिरोल प्रवाल पिरोजा झूमका चहुँ ओल सरस रसही फूल डोल। डाँडी हेम हीने चारु गोल चुनी नहीं फूल लगे लोल संतन हितकी फूल डोल ॥ ३ ॥ फूले श्रीवृंदावन अनुकूल सघनलता सब फूले फूल सरस रसही फूल डोल॥ फूले श्रीयमुनाकूल विविध तरंगरंग फूले फूल संतन हितही फूलडोल ॥ ४ ॥ फूलेहीन चंपक चारु चमेली फूले मलयज लवंगलता वेलि सरस रसही फूल डोल। फूले वेल निवारी फूल

ए लि फूले मरुवो मोगरो सेवती फूल वेलि संतन हितही फूलडोल ॥ ५ ॥ तहाँ हीन अंवा मौरेहै फूले जहां निवुवा सदाफल फूले सरस रस फूलडोल। तहाँ कमल केवरो फूले जहाँ केतकी कनेरं फूले संतन हितही फूलडोल ॥६॥ फूली माधवी मालती रेलि फूलेही मधुप करत हैं केलि सरसरसही फूलडोल । फूले फलेहैं आनँद वेलि फूले पिवत सुमन रस पेलि संतन हितही फूलडोल ॥ ७ ॥ फूलनके सोंधेवार मानो मधुप छवि अपार सरस रसही फूलडोल।फूलनहोके हिऐहैं हार सुरसरी मानो धरेही धार संतन हितही फूलडोल ॥ ८ ॥ माथे मुकुटहै रचित फूल फलनकीहै वेनी शीशफूल सरस रसही फूलडोल । फूलनहीकेहैं बेंदी भाल फूलनके सब नख शिख शृंगार संतन हितही फूलडोल ॥ ९ ॥ फूलेहैं हो धेनु धाम सब ग्वाल वाल फूलेहैं हो नंदजूके लाल सरस रसही फूलडोल । फूली गोपी हीन तरुन वृद्धवाल फूली करतिहैं नाना विधि ख्याल संतन हितही फूलडोल ॥१०॥ फूली रोहिणी यशोमति रानी फूलीहै देवि हरिही रजधानी सरस रसही फूलडोल । फूलेहैं नंद संकर्षन सुखमानी फूल गोकुलही प्राणी संतन हितही फूलडोल ॥ ॥ ११ ॥ फूलेही वजावैं डफ ताल मृदंग वजै महुवरि महुचंग सरस रसही फूलडोल ॥ फूले वजावैं बाँसुरी सुरसंग वजावैं अमृत कुंडली उपंग संतन हितही फूलडोल ॥ १२ ॥ फूले बजावैं क़िन्नरी यंत्र तार गति सुर मंडल झनकार सरस रससहीं फूलडोल । फूले वजावत गिरि गिरी गार मदन भेरि घहराइ अपार संतन हितही फूलडोल ॥ १३ ॥ फूलेहि न वजावें रुंज मुरुंज फूलेबजावैं झांझि झालरी पुंज सरसरसही फूलडोल। फूले सुर वजावैं दुंदुभी घोर गुंज कूंजत मोर मराल कोकिल कुंज संतन हितही फूलडोल ॥ १४ ॥ देखि डोल ब्रजजन सब फूले गोपी झुलावति गिरिधर झूले सरस रसही फूलडोल। फूलेहो मुदित मनोहर फूले रसिकानि रासेक शिरोमणे फूले संतन हितही फूलडोल ॥ १५ ॥ फूली हरपि परस्पर गावैं होहोरी वोलति मीठे वोल वोलावैं सरस रस फूलडोल। फूलीं प्रमुदित मनोहर भावें कमलनयनको लाड लडावें संतनहितही फूलडोल ॥१६॥ फूली चोवा चंदन वंदन रोरी केसरि मृगमद माथि माथि घोरी सरस रसही फूलडोल। फूली छिरकति नवलकिसोरी अवीर गुलाल भरें सब झोरी संतन हितही फूलडोल ॥ १७ ॥ फूली नाचति वृद्ध वाल यौवन भोरी फूले ग्वाल ग्वालिनि यूथ यूथनि जोरी सरस रसही फूलडोल। फूले करत कुलाहल तिहुँपुर खोरी फूलेहैं नरनारि किसोरी संतन हितही फूलडोल ॥ १८॥ फूले फगुवा मँगाय दियो रसराख्यो पट भूपण पहिराय रह्यो नहीं काष्यो सरस दिशही फूलडोल। फूले हरि हँसि हँसि अमृत भाष्यो फूलेहो जो जैसे तैसे सबको मनराख्यो संतन हितही फूलडोल ॥१९॥ फूलेहिन नारद करतहो गान फूले हैं ऋषि मुनि शिव धरत ध्यान सरसरसही फूलडोल॥ फूलेहो वीणा वजावत हरि यश वखान मार्‍योकंस उग्रसेनकी फिरे आन संतन हितही फूलडोल ॥ २० ॥ फूलेहि न कहत हरि सुनि कह्यो जाय तुरतही मोहिं तुम लेहु बोलाय सरस रसही फूलडोल। फूल्योहिन जवानोमे असुर आय नदी यमुनामैंही देहुँ वहाय संतन हितही फूलडोल ॥ २१ ॥ फूलहिं न उग्रसेन शिरछत्र धराय फूले मथुरा नरनारि आनँद देहु वढाय सरसरसही फूलडोल । फूले हि न पितु मातु मिल्यो म्यतवधाय दुसह दुख विसराउ सुख देहु जाय संतनहितही फूलडोल ॥ २२ ॥ फूलेहि नमुनि सुनि ज्ञान हरपाय

* धत्तेश्यामलकंचुचूचकगलेमुक्तावलीमंशुकं शोणाभंवरकंकणानिकरयोः पादद्वयोर्नूपुरौ चंद्रास्यामदविह्वलासकरुणां भाषां भृशं भापती चैषा रामगिरी दिनांतसमये रामेण गीता पुरा ॥ रामगिरी ॥

सकल भूमि ब्रजरतन छाय सरसरसही फूलडोल । फूलेहैं त्रिदशपति सुर शची सहिताय नभचढि विमान फूले सुमन वरषाय संतन हितही फूल डोल ॥ २३ ॥ फूलेहि न हरषत हो ऋषिराय फूले विदाभये मुनि वैकुंठ सिधाय सरसरसही फूलडोल । फूले हरषि हरषि हरिको यशगाय फूले पूँछत सुर मुनि कछु कह्यो नजाय संतन हितही फूलडोल ॥२४॥ फूल्योहि न पढो पढावै सुनै सुनावै वसि वैकुंठ परमपदपावै संतन हितही फूल डोल । सूरदास प्रभु कैसे करिगावै लीलासिंधु पार नहिं पावै संतनहितही फूल डोल॥२५॥५४॥रागीरामगिरी॥हरि पिय तुम जिनि चलन कहो । यह जिनि मोहिं सुनावहु बलिजाउँ जिनि जिय गहनि गहो ॥ जब चलिहो तबही कहियो अब जिनि उरहिदहो।औरहु जन्म प्राण मिलतहैं पुनि तुम मिलत नहो।जानि एई जिय तानि मन सुख अबकी बेररहो ॥ यह सुनि सूरदासको लालच कबहूं जिनि उमहो॥५५॥रागकल्याण॥श्रीगोकुलनाथ विराजत डोल।संग लिए वृषभानु नंदिनी पहिरे नील निचोल॥कंचन खचित लाल मणि मोती हीरा जटित अमोल । झुलवहिं यूथ मिले ब्रज सुंदरि हरषति करति कलोल॥खेलति हँसति परस्पर गाव ति होहो बोलति मीठे बोल । सूरदास स्वामी पियप्यारी झूलतहैं झक झोल॥५६॥कल्याण॥श्रीझूलत नँदनंदन डोल । कनक खंभ जराय पटुली लगे रतन अमोल ॥ सुभग सरल सुदेश डाँडी रची विधना गोल।मनो सुरपति सुरसभातें पठै दियो हिंडोल॥जबहिं झंपाति तवहि कंपति विहँसि लगति डरोल । त्रिदशपति सजि चढि विमानन निरखि दै दै ओल ॥ थके मुख कछु कहि न आवै सकल मख कृत झोल । सखी नवसत साजि लीन्हे कहत मधुरे बोल ॥ थक्यो रतिपति देखि यह छवि इंद्र भयो भ्रम भोल । सूर यह सुख गोप गोपी पियत अमृत कलोल ॥५७॥गौरी॥ डोलत देखि ब्रजवासी फूलैं । गोपी झुलावैं गोविंद झूलैं॥नँदनदन गोकुल में सोहै॥ मुरली मनोहर मन्मथ मोहैं ॥ कमल नयनको लाड लडावै । प्रमुदित गात मनोहर गावै॥रसिक शिरोमणि आनँद सागर। सूरदास मन मोहन नागर ॥५८॥ इति फागु क्रीडा समाप्त॥अध्याय ॥३८॥अथ अक्रूर प्रस्ताव कथा वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ फागु रंग करि हरि रसराख्यो । रह्यो नमन युवतितके काख्यो॥ सखा संग सबको सुख दीनो । नर नारी मन हरि हर लीनो ॥ जो जेहिभाव ताहि हरि तैसे । हितको हित कंटकको नैसे॥ महरि नंद पितु मातु कहाए । तिनहींके हित तनु धरि आए ॥ युग युग यह अवतार धरत हरि । हरता करता विश्व रहे भरि ॥ धरणी पाप भार भई भारी । सुरन लिए सँग जाइ पुकारी ॥ त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी । राखि लेहु मोहिं शरन उबारी ॥ राजसरीति सुरन कहि भाषी । भए चंद्र सूरज तहां साखी ॥ क्षीरसिंधु अहि शयन मुरारी । प्रभु श्रवणन तहाँ परी गुहारी ॥ तब जान्यो कमलाके कंता । दनुज भार पुहुमीमें मंता ॥ सिंधु मध्य वाणी परकाशी । भुव अवतार कह्यो अविनाशी ॥ मथुरा जन्मि गोकुलहि आये । मात पिता सुत हेतु कहाए ॥ नारद कहि यह कथा सुनाई । ब्रज लोगन सुख दियो कन्हाई ॥ नंद यशोदा बालक जान्यो । गोपी कामरूप करि मान्यो ॥ प्रथम पिवत पय बकी विनाशी । तुरत सुनत नृप भए उदासी ॥ यहि अंतर बहु दनुज संहारे । यहि अंतर लीला बहुधारे ॥ को माया कहि सकै तुम्हारे । बाल तरुन सुख न्यारे न्यारे ॥ धन्य धन्य ए ब्रजके वासी । वशकीन्हे जिनि ब्रह्म उदासी ॥ अकल कला निगमहु तेन्यारे ॥ तिन युवती बन बननि विहारे ॥ आज्ञाइहै मोहिं प्रभु दीन्हो । यह अवतार जबहि भुव लीन्हों ॥ दैत्य दहन सुरके सुखकारी ।अब मारो प्रभु कंस प्रचारी ॥ यह सुनि हँसे सुरनके नाथा।जब नारद गाई यह गाथा ॥ श्रीमुख कह्यो जाइ समुझावहु । नृप आयसु

करि मोहिं बोलावहु ॥ अंजलजोरि राज्य मुनि हरपे । कृपावचन तिनसों हरि वरषे ॥ तुरत चल नारद नृपवासा । इहै बुद्धि मन करत प्रकासा ॥ संकर्षण हृदय प्रगटाई । जो वाणी ऋषिगाइ सुनाई ॥ आदिपुरुप अज्ञात विचारी । शेपरूप हरिके सुखकारी॥ हरिअंतर्यामी जगताता ।अनुज हेतु जग मानत नाता॥ इहै वचन हलधर कहिभाष्यो।सुनि सुनि श्रवण हृदय हरिराख्यो ॥ तुमज नमे भुवभार उतारन । तुमहो अखिललोकके तारन ॥ तुम संसार सारके सारा । जल थल जहाँ तहाँ विस्तारा ॥ तव हँसि कह्यो भ्रातसों वानी । जो तुम कहत वात मैं जानी ॥ कंसनि कंदन नाम कहाऊं । केशगहौं पुहुमी घिसटाऊं ॥ यहि अंतर मुनि गए नृपपासा । मनमारे मुख करे उदासा॥हरपि कंस मुनि निकट बोलाए।आदर कर आसन बैठाए।कैसो मुख क्यों ऋपिमनमारे। कह चिंता जिय वढ़ी तुम्हारे॥ नारद कह्यो सुनो होराउ । कहा बैठे कछु करहु उपाउ ॥ त्रिभुवनमें तुम सरि को ऐसो । देख्यो नंद सुवन व्रज जैसो ॥ करत कहा रजधानी ऐसी । यह तुमको उपजी कछु जैसी ॥ दिन दिन भयो प्रवल वह भारी। हम सव हितकी कहैं तुम्हारी ॥ तव गर्वित नृप बोले वानी। कहा वात नारद तुम गानी ॥कोटिदनुज मोसरि मो पासा।जिनको देखि तरणितनु त्रासा ॥ कोटि कोटि तिनके सँगयोधा । को जीवै तिनके तनु क्रोधा ॥ मल्लनके गुण कहा वखानो। जिनके देखत काल डरानो ॥ कोटि धनुर्द्धर संतत द्वारे। वचै कौन तिनके हुँहँकारे ॥ एक कुवलिया त्रिभुवनगामी। ऐसेऔरैं कितिकहैं नामी ॥ ग्वालसुतनकी कहा चलावहु। यह वाणी कहि कहा सुनावहु ॥ प्रजालोग व्रजके सव मेरे। सेवा करत सदा रहैं नेरे ॥ ताते सकुचतहौं उनकाजा । बालक सुनत होइ जिय लाजा॥ भली करी यह वात सुनाई। सहज बुलाइलेउँ दोउ भाई॥और सुनहु नारद मुनि मोसों। श्रवणन लागि कहौं कछु गोसौं। केतिक बात बलराम कन्हाई। मोदेखत अति काल डेराई ॥ आजु कालि अव उनहिं बोलाऊं । कहि पठऊं व्रज सहित मँगाऊं॥ और प्रजा व्रज आनि वसाऊं। अपने जियकी खुटक मिटाऊं॥ तिनपर क्रोध कहामैं पाऊं । रंगभूमि गजचरण रुँदाऊं॥ मेरे सम सरिको वहनाहीं। यह सुनिकै नारद मुसकाहीं ॥ सत्य वचन नृप कहत पुकारे । अव जाने उनि तौ तुम मारे ॥ यह कहि मुनिवैकुंठ सिधारे । त्रिभुवन में को वलहि तुम्हारे ॥ कंसपरयो मन इहै विचारा। रामकृष्ण वध इहै खँभारा॥ दनुज हृदय हरि इहै उपायो । नारद कही सुनत जिय आयो ॥ अव मारौं नहिं गहर लगाऊं। मथुरा जहां तहां वलछाऊं॥ धकधकात जिय वहुरि सँभारै। क्यों मारौं सो बुद्धि विचारै ॥ सूरज प्रभु अविगति अविनाशी। कंसकाल यह बुद्धि प्रकाशी॥५९॥कान्हरो॥ अहो नृप द्वै अरि प्रगट भए।वसे नंद गृह गोकुल थानक दियो सुदिन नगए॥ तुमहूं को दुख वहुत जनमको रथ मारग आरोए। तादिनते शिशु सप्त देवकी तेरेही कर सोए॥जो पारिराज काज सुख चाहै वेगि बोलाइ न लीजै। हारि जीति दोउनकी विधि यह जैसे होइ सोइ कीजै ॥ ऐसी कहि वैकुंठ सिधारे कष्ट निसाविकराय। सूरश्याम कृतकी वे इच्छा मुनि मन इहै उपाय॥६०॥सोरठ॥नृपति मन इहै विचार परो।क्यों मारौं दोउ नंद ढोटोना ऐसी अरनि अरो॥ कवहुँक कहत आपु उठि धावों यहै विचार करो। सात दिवसमें वधी पूतना यह गुनि मनहिं डरो ॥ पुनि साहस जिय जिय करि गर्वो ताको काल सरो। सूरश्याम वलराम हृदयते नेकनहीं विसरो ॥६१॥सारंग ॥ मथुराके निकट चरति हैं गाई। दुष्टकंस भय करत मनहि मन ज्यों ज्यों सुनै कृष्ण प्रभुताई॥ शीश धुनै नृप रिसन मनै मन वहुत उपाइ करै। घर बैठेहि दशन अधरन धरि चंपै श्वास भरै ॥ नारद गिरा सम्हारी पुनि पुनि शिर धुनि आपु सरै । कालरूप देवकी नंदन

प्रगट भयो वसुधा माहीं । कासों कहौं सूर अंतरकी सुफलकसुतको वचन चही ॥६२॥ रागसोरठ ॥ महर ढोटौना शालिरहे । जन्महिते अपड़ाव करत हैं गुणिं गुणि हृदय कहे ॥ दनुजसुता पहिले संहारी पयपीवत दिन सात । गयो प्रतिज्ञा करि कागासुर आइ गिरचो मुख छात ॥ तृणा शकट छिनमें संहारे केशी हतो प्रचारि । जे जे गए बहुरि नाहिं देखे सबहिन डारे मारि ॥ ज्यों त्यों करि इन दुहुँन संहारौं बात नहीं कछु और । सूर नृपाति अति सोच परो जिय यहै करत मनदौर ॥६३॥ ॥ रामकली ॥ नंदसुत सहज बुलाइ पठाऊं । श्याम राम अति सुंदर कहियत देखन काज मँगाऊं ॥ जैहै कौन प्रेमकरि ल्यावै भेद नजानै कोइ । महर महरि सों हितकरि ल्यावै महाचतुर जो होइ ॥ इहि अंतर अक्रूर बुलायो अति आतुर महाराज।सूरचलौ मनसोच बढ़ायो कौनहै ऐसो काज॥६४॥ ॥धनाश्री॥अति आतुर नृप मोहिं बोलायो । कौन काज ऐसो अटक्यो है मन मन सोच बढायो॥आतुर जाइ पँवरि भयो ठाढो कहो पँवरिआ जाइ । सुनत बुलाइ महलई लीनो सुफलकसुत गयो धाइ ॥ कछु डर कछु जिय धीरज धारै गयो नृपतिके पास । सूर सोच मुख देखि डेरानो ऊरध लेत उसास ॥६५॥ मारू ॥ सोच मुख देखि अक्रूर भरमे । माथकरनाइ करजोरि दोऊ रहे बोलि लीन्हो निकट वचन नरमे ॥ आपुही कंस तहां दूसरो कोउ नहीं त्रास अक्रूर जिय कहा कैहै । नृपति जिय सोच जान्यो हृदय आपने कहत कछु नहीं धौं प्राणलैहै ॥ निकट बैठारि सब बात तेई कही गए जे भाषि नारद सवारैं । सूर सुत नंदके हृदय शालत सदा मंत्र यह उनहिं अब बनै मारैं॥६६॥सुनो अक्रूर यह बात सांची करौ आजु मोहिं भोरते चेत नाहीं । श्याम बलराम यह नाम सुनि ताम मोहिं काहूं पठावहुगे जाइ तिनहि पाहीं ॥ प्रीति करि नंदसों सहज बातैं कहै तुरत लै आइ दुहुँ नृपति बोले । देखिवेकी साध बहुत सुनि गुण विपुल अतिहि सुंदर सुने दोउ अमोले ॥ कमल जबते उरग पीठि ल्याए सुने वैहैं बकशीश अब उतहि दैहैं । सूर प्रभु श्याम बलरामको डर नहीं वचन इनके सुनत हरषपैहैं ॥६७॥सोरठ॥ यह वाणी कहि कंस सुनाइ । तब अक्रूर हिए भयो धीरज डरडारचो विसराइ ॥ मन मन कहत कहा चित बैठी सुनि सुनि वैसी बानी । अपनो काल आपुही बोल्यो इनकी मीचु तुलानी ॥ हरषि वचन अक्रूर कहे तब तुरत काज यह कीजै । सूर जाहि आयसु करि पाऊं भोर पठै तेहि दीजै ॥ ६८ ॥बिलावल॥ तब अक्रूर कहत नृप आगे धन्य धन्य नारद मुनि ज्ञानी। बडे शत्रु ब्रजमें दोउ हमको सुनहु देव नीकी चित आनी॥महाराज तुम सरि को ऐसो जाते जगत यह चलत कहानी।अब नहिं बचै क्रोध नृपकीन्हो जैहै छनकि तवा ज्यों पानी ॥ यह सुनि हर्ष भयो गर्वानो जबहिं कही अक्रूर सयानी।कालि बुलाई सूर दोउमारौं बार बार यह भाषत बानी॥६९॥इहै मंत्र अक्रूरसों नृप रैनि विचारी । प्रात नंदसुत मारिहौं यह कह्यो प्रचारी ॥ करि विचार युग यामलौं मंदिरहि पधारे । कह्यो जादु अक्रूरसों भए आलस भारे ॥ तुरत जाइ पलका परचो पलकनि झपकानो । श्याम राम स्वपने खडे तहां देखि डरानो ॥ अति कठोर दोउ कालसे भरम्यो अति झझक्यो । जागि परचो तहँ कोउ नहीं जियही जिय सुसक्यो ॥ चौंकि परचो सँग नारिके रानी सब जागीं । उठीं सबै अकुलाइकै तब बूझन लागीं ॥ महाराज झझके कहा सपने कह संके । सूर अतिः व्याकुल भए घर घर उर दंके ॥ ७० ॥ ॥ कंस स्वप्न भ्रमः ॥ महाराज क्यों आजुही स्वप्ने झझकाने । पौढे जबहीं आनिकै देखे बिलखाने ॥ कहा सोच ऐसो परचो ऐसे भूमीको । काकी सुधि मनमें रही कहिए अपजीको ॥ रानी सब व्याकुल भईं कछु भेद न पावैं । तब आपुन सहजहि कह्यो वह नहीं जनावैं ॥ सावधान करि पौरिआ प्रति

हार जगायो। सूरत्रास बल श्यामके नाहिं पलक लगायो ॥७१॥ नंदस्वप्न भ्रमः ॥ बिलावल॥ उत नंदहि स्वप्नो भयो हरि कहूं हिराने। बल मोहन कोउ लै गयो सुनिकै बिलखाने ॥ ग्वाल बाल रोवत कहैं हरितौ कहुँ नाहीं। संगहि सँग खेलत रहे यह कहि पछिताहीं॥दूत एक सँग लै गयो बल राम कन्हाई। कहा ठगोरीसी करी मोहनी लगाई ॥ वाहिके दोउ ह्वै गए हम देखत ठाढे। सूरज प्रभु वै निठुरह्वै अतिही गए गाढे ॥७२॥सोरठ॥ व्याकुल नंद सुनतहैं बानी। धरणीमुरछिपरे अति व्याकुल विवसयशोदारानी॥व्याकुल गोप ग्वाल सब व्याकुल व्याकुल व्रजकी नारी॥व्याकुल सखा श्याम बलके जे व्याकुल अति जियभारी॥ धरणी परत उठत पुनि धावत इहि अंतर नंदजागे। धकधकात उर नैन श्रवत जल सुत अँग परसन लागे॥ सुसुकत सुनि यशुमति अतुराई कहा म हर भ्रम पायो। सूर नंदघरनीके आगे यह भ्रम नहीं सुनायो ॥ ७३ ॥ कंसकथावदत ॥ कल्याण ॥ एक याम नृपको निशि धुगवत भई भारी। आपुनहूं जायो संग जागीं सब नारी ॥ कबहुँ उठत बैठत पुनि कबहूं सेज सोवै। कबहुं अजिर ठाढेह्वै ऐसे निशि खोवै॥वारवार जोतिकसों घरी बूझि आवै। एक जाइ पहुँचै नहीं और एक पठावै॥जोतिक जिय त्रास पऱ्यो कहा प्रात करिहै।सूर क्रोध भऱ्यो नृपति काके शिरपरिहै ॥ ७४ ॥ व्याकुल टेरे निकटि बूझै घरी बाकी। एक एक छिन याम याम ऐसी गति ताकी ॥ को जैहै व्रजको मन करै केहि पठाऊ। जासों कहि नंदसुवन आजुही मगाऊ॥ अब नहिं राखौं उठाइ वैरी नहिं नान्हो । मारौं गजपै रुँदाइ मनहि यह अनुमान्हो ॥ पठऊं तौ अक्रूरहिको ऐसो नहिं कोऊ। सूर जाइ गोकुलते ल्यावै ढिग दोऊ॥७५॥ बिलावल ॥ अरुणोदय उठि प्रातही अक्रूर बोलाए । आपु कह्यो प्रतिहारसों इक सुनि शतधाये ॥ सोअत जाइ जगायकै चलिए नृप पासा। उहै मंत्र मन जानिकै उठि चले उदासा॥ नृपति द्वारही पै खरो देखत शिर नायो। कहि खवासको सैनदै शिरपाव मँगायो॥ अपने कर करिकै दियो सुफलकसुत लीन्हों । लै आवहु सुत नंदके यह आयसु दीन्हों॥ मुख अक्रूर हर्षित भयो हृदय बिलखानो। असुरत्रास अति जिय पऱ्यो कह कहै सयानो॥ तुरतहि रथ पलनाइकै अक्रूरहि दीन्हों । आयसु शिरपर मानिकै आतुरह्वै लीन्हों ॥ विलम करौ जिनि नेकहूं अबहीं व्रजजाहू। सूर काजकरि आवहू जिनि रैनि बसाहू७६॥बिलावल॥ कंस नृपति अक्रूर बोलायो। बैठि एकांत मंत्र दृढ कीनों राम कृष्ण दोउ बंधु मँगायो॥ कहूँ मल्ल कहुँ गजदे राखे कहूं धनुप कहुँ वीर । नंदमहरको बालक मेरे कपंत रहत शरीर॥ उनहि बुलाइ बीचही मारौं नगर न आवन पावैं। सूर सुनत अक्रूर कहत नृप मन मन मौज बढावैं॥७७॥ कल्याण॥तुम बिन मेरे हितू नकोऊ। सुन अक्रूर पुरत नृप भाषित नंदमहर सुत ल्यावहुँ दोऊ॥ सुनि रुचि वचन रोम हरषित गात प्रेमपुलकि मुख कछू नबोल्यो । यह आयसु पूरब सुकृत वश सो काहूपै जाहि नतौल्यो॥ मौन देखि परिहँसि नृप भीनो मनहुँ सिंह गो आय तुलानो। वहि क्रम विनु द्वैसुत अहीर के रे कातर कत मन संकानो॥ आयसु पाइ सुष्ट रथ कर गहि अनुपम तुरंग साजि धृत जोह्यो। सूरश्यामकी मिलनि सुरति करि मनुनिधरन धन पाइ विमोह्यो ॥७८॥अक्रूर वचन कंससों ॥ बिलावल॥सुनहु देव इक बात जनाऊं। आय सु भयो तुरत लै आवहु ताते फिरिहि सुनाऊं॥ बल मोहन वनजात प्रातही जो उनको नहिं पाऊं। रैहौं आजु नंद गृह बसिकै काल्हि प्रात लै आऊं॥ यह कहि चल्यो नृपतिहू मान्यो सुफलसुतक रथ हांक्यो। सूरदास प्रभु ध्यान हृदय धरि गोकुल तनको ताक्यो॥७९॥ अक्रूर गोकुल गमन ॥ टोडी॥ सुफलक सुत मन पऱ्यो विचारा।कंस निवंश होइ हत्यार॥डगर मांझ रथ कीन्हों ठाढो।सोच पऱ्यो

मन मन अति गाढो॥ मंत्रकियो निशि मेरे साथ। मोहिं लेन पठयो ब्रजनाथ॥ गज मुष्टिक चाणूर निहारचो। व्याकुल नयन नीर दोउ ढारचो॥ अति बालक बलराम कन्हाई। कहा करों नाहिं कछू बसाई। कैसे आनि देउँमैं जाई। मो देखत मारे दोउभाई॥मारे मोहिं बंदि लै बोलै। आगेको रथ नैक नठेलै॥ सूरदास प्रभु अंतर्यामी। सुफलकसुत मन पूरणकामी॥८०॥ कल्याण॥ सुफलकसुत हृदय ध्यान कीन्हो अविनाशी। हरन करन समरथ वै सब घटके वासी॥ धन्य धन्य कंसहि कहि मोहिं जिनि पठायो। मेरो कारि काज मीच आपुको बोलायो॥यह शुणि रथ हांकि दियो नगर परचो पाछे। कछु सकुचत कछु हरषत चल्यो स्वांग काछे॥बहुरि सोच परचो दरश दक्षिण मृगमाला। हरष्यो अक्रूरसूर मिलिहो गोपाला॥८१॥ अक्रूर शकुन परीक्षा॥ टोडी॥ दक्षिण दरश देखि मृगमाला। अति आनंद भयो तेहि काला॥बहु दिनके मेटो जंजाला। यहि वन मिलिहो मोहिं गोपाला॥श्याम जलद तनु अंग रसाला। ता दरशनते होउँ निहाला। बहुदिनके मेटो जंजाला। मुख शशि नैन चकोर बिहाला।तनु त्रिभंग सुंदर नंदलाला।विविध सुमन हृदय शुभमाला।सारसहूते नैन विशाला। निहचै भयो कंसको काला॥ सूरज प्रभु त्रिभुवन प्रतिपाला॥८२॥ आसावरी॥ दाहिने देख मृगन की मालहि। मनो इन शकुन अवहीं यहि बन इन भुजभरि भेंटो गों गोपालहि॥ निरखि तनु त्रिभंग पुलक सकल अंग अंकुर धरनि जिमि पाँय पावस कालहि। परिहों पाँयन जाय भेंटिहैं अंक मलाइ मूलते जमी ज्यों वेली चढति तमालहि॥ परस्परमानंद सींचिकै कामना कंद करिहैं प्रगटा प्रीति प्रेम प्रवालहि॥वचन रचन हास सुमन सुख निवास कराहि फलीहै फल अमोघ रसालहि। स्फुरित शुभ सुवाहु लोचन मन उछाहु फूलिकै सुकृत फल फली तेहि कालहि॥ निगम कहत नेति शिव न सकत चोति सूर सुहृदय लगाइ लैहों ता दयालहि॥८३॥कान्हरो॥आजु वे चरण देखिहौं जाय।जे पद कमल प्रिया श्रीउरसे नेक न सके भुलाइ॥ जे पद कमल सकल मुनि दुर्लभ मैं देखों सतिभाव। जेपद कमल पितामह ध्यावत गावत नारद जाव॥ जेपद कमल सुरसरी परसे तिहूं भुवन यश छाव। सूरश्याम पद कमल परसिहौं मन अति बढ्यो उराव॥८४॥ आजु जाइ देखिहौं वै चरण। शीतल सुभग सकल सुखदाता दुखह दवन दुखहरण॥ अंकुश कुलिश कमल ध्वज चिह्नत अरुण कंजके रंग। गउ चारत वनजाइ पाइहौं गोप सखनके संग॥ जाको ध्यान धरत मुनि नारद शिव विरंचि अरु ईश। तेई चरण प्रगट करि परसों इन कर अपने शीश॥ देखि स्वरूप रहि न सकिहौं रथते धैहौं धरधाइ। सूरदास प्रभु उभय भुजा धरि हँसि भेटिहैं उठाइ॥८५॥नट॥ जब शिर चरण धरिहौं जाइ। कृपा करि मोहिं टेकि लेहैं करन हृदय लगाइ॥ कुशल अंग पुलकित वचन गदगद मनहि मन सुखपाइ। प्रेम घट उच्छलित ह्वैहैं नैन अंश बहाइ॥कुशल बूझत कहि न सकिहौं वार वार सुनाइ। सूर प्रभु गुण ध्यान अटक्यो गयो पंथ भुलाइ॥८६॥ विलावल॥ मथुराते गोकुल नहिं पहुँचे सुफलकसुत को सांझ भई। हरि अनुराग देह सुधि विसरी रथ वाहनकी सुरति गई॥ कहां जात किन मोहिं पठायो कोहों मैं यहि सोच परचो। दशहूं दिशा श्याम परिपूरण हृदय हरष आनंद भरचो॥ हरि अंतर्यामी यह जानी भक्तवछल वानो जिनको। सूर मिले जो भाव भक्तके गहर नहीं कीन्हों तिनको॥८७॥ कल्याण॥ वृंदावन ग्वालन सँग गैयन हरि चारै। अपने जनहेत काज ब्रजको पग धारै॥ यमुनाकरि पार गाय श्याम देत हेरी। हलधर सँग सखा लए सुरभी गण घेरी॥ धेनु दुहुन सखन कह्यो आपु दुहन लागे। वृंदावन गोकुल बिच यमुनाके आगे॥ भक्त हेतु श्रीगोपाल यह सुख उपजायो। सूरज प्रभु को दरशन सुफलक सुत पायो॥८८॥

॥ कल्याण ॥ सुफलक सुत हरि दरशन पायो रहि न सक्यो रथपर सुख व्याकुल भयो उहै मन भायो॥ भूपर दौरि निकट हरि आयो चरणन चित्त लगायो। पुलक अंग लोचन जलधारा श्रीगृह शिर परसायो। कृपासिंधु करि कृपा मिले हँसि लियो भक्त उर लाइ। सूरदास यह सुखसो जानै कहौं कहा मैं गाइ ॥८९॥ गुंडमलार ॥ हरषि अक्रूर हरि हृदय लायो। मिले तेहि भाव जो भाव चित वनि चित्त भक्त वत्सल नाम तो कहायो ॥ कुशल बूझत प्रसन्न वचन अमृत रस श्रवण सुनि पुलक अंग भंग कीन्हों। चितै आनन चारु बुद्धि उर विस्तार दनुज अव दलौं यह ज्वाव दीनों भेदही भेद सब दई वाणी कही तुरत बोले हेतु इहै वाके। सूर संग श्याम वलराम अक्रूर सहनिपट अति प्रेमके पंथ थाके ॥९०॥ विलावल ॥ श्याम इहै कहिकै उठे नृप हमैं वोलाये। अतिहि कृपा हमपर करी जो कालि मँगाए ॥ संग सखा यह सुनतही चकृत मनकीन्हो। कहा कहत हरि सुनतहीं लोचन भरि लीन्हो॥ श्याम सखन मुख हेरिकै तब करी सयानी। कालि चलौ नृप देखिए संका जिय आनी ॥ हर्ष भए हरि यह कहे मन मन दुखभारी। सूर संग अक्रूरके हरि व्रज पग धारी ॥९१॥ रामकली ॥ अति कोमल वलराम कन्हाई। दुहुँनि गोद अक्रूर लिए हँसि सुमनहुते हरुवाई ॥ ग्वाल संग रथ लीन्हें आए पहुँचे व्रज की खोरी । देखत गोकुल लोग जहांतहँ नंद उठे सुनि सोरी ॥ निशि सपनेको तृपित भए अति सुन्यो कंसको दूत। सूर नारि नर देखनधाए घर घर सोर अकूत ॥९२॥ गुंडमलार ॥ कंस नृप अक्रूर व्रज पठाए। गए आगे लेन नंद उपनंद मिलि श्याम वलराम उन हृदय लाए॥ उतरि संदन मिल्यो देखि हरष्यो हियो सोच मन यह भयो कहाँ आयो। राजके काजको नाम अक्रूर यह किधौं कर लेनको नृप पठायो। कुशल तोहि बूझि लै गए व्रज निजधाम श्याम वलराम मिलि गए वाको ॥ चरण पखराइकै सुभग आसन दियो विविध भोजन तुरत दियो ताको॥ कियो अक्रूर भोजन दुहुँन संग लै नर नारि व्रज लोग सवे देखै। मनो आए संग देखि ऐसे रंग मनहि मन परस्पर करत मेषै॥ सारि जेवनार अचवनके भए शुद्ध दियो तंमोर नँद हर्ष आगे । सेज वैठारि अक्रूरसों जोरिकर कृपा करी तव कहन लागे॥ श्याम वलरामको कंस वोले हेतसों नंदलै सुतन हम पास आवैं । सूर प्रभु दरशकी साध अतिही करत आजुही कह्यो जिनि गहरु लावैं॥९३॥ कान्हरो ॥ सुन्यो व्रज लोग कहत यह बात। चकृत भए नारि नर ठाढे पांच न आवे सात ॥ चकित नंद यशुमति भई चकृत मनही मन अकुलात। दैदै सैन श्याम वलरामहि सवै वुलावत जात॥ पारब्रह्म अविगति अविनाशी माया रहित अतीत। मनों नहीं पहिचानि कहूंकी करत सवै मनभीत । वोलत नहीं नेक चितवत नाहिं सुफलकसुतसों पागे। सूर हमहि नृपहित करि वोले इहै कहत ताआगे॥९४॥ विहागरो ॥ व्याकुलभए व्रजके लोग। श्याम मन नहिं नेक आनत ब्रह्म पूरण योग ॥ कौन माता पिता कोहै कौन पति कोनारि। हँसत दोउ अक्रूरके सँग नवल नेह विसारि॥ कोउ कहति यह कहां आयोक्रूर याको नाम। सूर प्रभु लै प्रात जैहै और सँग वलराम॥९५॥ गोपिकाविरहअवस्थावर्णन ॥ चलन चलन श्याम कहत कोउ लेन आयो नंद भवन भनक सुनी कंस कहि पठायो॥ व्रजकी नारि गृहविसारि व्याकुल उठिधाईं । समाचार वूझनको आतुरह्वै आईं ॥ प्रीति जानि हेतु मानि विलखि वदन ठाढी। मानहु वै अति विचित्र चित्र लिखित काढी ॥ ऐसी गति ठौर ठौर कहत न वनि आवै । सूर श्याम विछुरे दुख विरह काहि भावै ॥९६॥ कान्हरो ॥ चलत जानि चितवत व्रज युवती मानहु लिखी चितेरे। जहां सु तहां यकटक मग जोवत फिरत न लोचन कोरे ॥ विसरि गई गति भांति देहकी सुनत नश्रवणन टेरे।

मिलि जु गये मनोपय पानी है निवरत नहीं निवेरे ॥ लागे संग मतंग मत्तज्यों घिरत न कैसेहु घेरे । सूर प्रेम अंकुर आशा जिय दै नहिं इत उत हेरे ॥ ९७ ॥ सारंग ॥ सब मुरझानीरी चलिवेकी सुनत भनक । गोपी ग्वाल नैन जल ढारत गोकुल हेरयो मूदचनक इक ॥ यह अक्रूर कहांते आयो दाहन लाग्यो देह दनक । सूरदास स्वामीके बिछुरत घट नहिं रैहैं प्राणतनक॥९८॥रामकली॥अनलते विरह अग्नि अति ताती॥माधो चलन कहत मधुवनको सुने तपै अतिछाती॥न्याइहि नागरि नारि विरहवश जरत दिया ज्यों बाती । जे जरि मरे प्रगट पावक परि तेत्रिय अधिक सुहाती ॥ ढारति नीरनयन भरि भरि सब व्याकुलता मद माती । सूर व्यथा सोई पै जानै श्याम सुभग रँगराती ॥९९॥ आसावरी ॥ श्यामगए सखि प्राण रहैंगे । अरसपरस ज्यों बातैं कहियत तैसेहि बहुरि कहैंगे ॥ इंदुवदन खग नैन हमारे जानति और चहैंगे । वासर निशि कहुँ होत नन्यारे बिछुरन हृदय सहैंगे॥एक कहौ तुम आगे वाणी श्याम न जाहि रहैंगे॥सूरदास प्रभु यशुमति को तजि मथुरा कहा लहैंगे॥२५००॥मलार ॥हरि मोसों गौनकी कथा कही । मन गह्वर मोहिं उतर न आयो हौं सुनि सोचिरही ॥ सुन सखी सत्यभावकी बातैं विरह वेलि उलही । करवत चिह्न कहै हरि हमकों ते अब होत सही ॥ आजु सखी सपनेमैं देख्यो सागर पालि ढही । सूरदास प्रभु तुम्हरो गवन सुनि जलज्यों जाति वही ॥१॥ मारू ॥ बहुत दुख पैयतुहै यह बात । तुम जु सुनतहौ माधो मधुवन सुफलकसुत सँग जात ॥ मनसिज व्यथा दहति दावानल उपजीहै या गात । सूधौ कहौ तब कैसे जीहैं निज चलिहौ उठि प्रात ॥ जोपै यहै कियो चाहतहै मीचु विरह शरघात।सूरश्याम तौ तब कत राखी गिरिकरलै दिनसात२॥अक्रूरवचन॥रामकली देख अक्रूर नर नारि बिलख्यो । धनुभंजन यज्ञहेत बोले इनहि और डर नहीं सबन कहि सँतोख्यो महरि व्याकुल दौरि पाँइ गहि लैपरी नंद उपनंद सँग जाहु लैकै । राजको अंशलिखि लेउ दूनो देउँ मैं कहा करौं सुत दुहुनि देकै ॥ कहति ब्रजनारि नैननननीर ढारिकै इननको काज मथुरा कहाहै । सूर नृप क्रूर अक्रूर क्रूरै भयो धनुष देखन कहत कपटी महाहै ॥३ ॥ यशोदा विनय अक्रूरमति सारंग ॥ मेरे कमलनयन प्राणते प्यारे । इनको कौन मधुपुरी बैठत राम कृष्ण दोऊ जन वारे । यशुदा कहै सुनहु सुफलकसुत मैं पयपान जतन करिपारे ॥ ए कहा जानहिं सभा राजकी ए गुरुजन विप्रौ न जुहारे॥मथुरा असुर समूह वसतहैं करकृपाण योधा हथियारे॥ सूरदास स्वामी एल रिका इन कब देखे मल्ल अखारे॥ब्रजवासिनके सरवस श्याम । रेअक्रूर क्रूर बडवारे जीको जी मोहन बलराम ॥ अपनो लाग लेहु लेखो करि जे कछु राज अंशका दाम । और महरलें संग सिधारे नगर कहा लरिकनको काम ॥ संतत साध परम उपकारी सुनियत बडो तुम्हारो नाम ॥ यशोदा वचन सखी मति॥५॥ मलार॥सखीरी हो गोपालहि लागी । कैसे जियें वदन बिन देखे अनुदिन खिन अनुरागी ॥ गोकुल कान्ह कमल दल लोचन हरि सबहिनके प्राण । कौन न्याव अक्रूर कहतहै कहै मथुरा लै जान ॥ तुम अक्रूर बडेके ढोटा अति कुलीन मतिधीर । बैठत सभा बडे राजनके जानतहो परपीर ॥ लीजे लागु यहांते अपनो जो कछु राजको अंश । नगर बोलि ग्वालनके लरिका कहा करैगो कंस ॥ मेरे तो रामै धन माई माधोई सब अंग । बहुरि सूरहौं कापै मांगों पैठि पराए संग ॥६॥रामकली ॥ मेरो माई निधनीको धन माधो । वारंवार निरखि सुख मानत तजत नहीं पलआधो ॥ छिन छिन परसत अंग मिलावत प्रेम प्रगटहै लाधो । निशि दिन सुचंद्र चकोरकी छबि जनु मिटै नदरशकी साधो ॥ करिहै कहा अक्रूर हमारो दैहै प्राण अगाधो । सूर श्याम

घनहीं नाहिं पठऊं अवहिं कंस किन बांधो ॥७॥ सारंग ॥ मनहु प्रीति अति भई पातरी। अनुज सहित चले राम हमारे कमल नैन देखौं मिलि न जातरी ॥ अरस परस कछु समुझत नाहीं या व्रजपोच भलोकी वातरी। कंचन काँच कपूर कपट खरी हीरा सम कैसे पोति विकातरी ॥ वे दोउ हंस मानसरवरके छीलरे क्षुद्र मलीन कैसे न्हातरी । सूरश्याम मुक्ताफल भोगी कोरति करत ज्वारिकन खातरी ॥८॥ सोरठ॥ नहिं कोई श्यामहि राखै जाइ।सुफलक सुत वैरी भयो मोको कहति यशोदा माइ ॥ मदन गुपाल विना घर आँगन गोकुल काहि सुहाइ । गोपी रही ठगीसी ठाढी कहा ठगोरी लाइ ॥ सुंदर श्याम राम भरि लोचन विन देखे दोउ भाइ । सूर तिनहि लै चले मधुपुरी हृदय शूल वढाइ ॥९॥ सोरठ ॥ यशोदा वार वार यों भाषे । है कोई व्रजहितू हमारो चलत गोपालहि राखै॥कहा काज मेरे छगन मगनको नृप मधुपुरी वुलायो।सुफलकसुत मेरे प्राण हतनको कालरूप ह्वै आयो ॥ वरु ए गोधन हरौ कंस सव मोहिं वंदि लै मेलो। इतनेही सुख कमल नैन मेरी अँखियन आगे खेलो ॥ वासर वदन विलोकत जीवों निशि निज अंकम लाऊं। तेहि विछुरत जो जीवों कर्मवश तौ हँसि काहि वोलाऊं ॥ कमल नैन गुण टेरत टेरतही अधर वदन कुह्मिलानी।सूर कहा लगि प्रगट जनाऊं दुखित नंदजूकीरानी१०यशोदावचन श्रीकृष्णप्रति ॥सोरठ ॥ गोपालराइ केहि अवलंवो प्राण । निठुर वचन कठोर कुलिशसे कहत मधुपुरी जान ॥ क्रूर नाम गति क्रूर मति काहेको गोकुल आयो । कुटिल कंस नृप वैरजानिकै हरिको लेन पठायो ॥ जिहि मुख तात कहत व्रजपति सों मोहिं कहतहै माइ । तिहि मुख चलन सुनत जीवतिहौं विधिसों कहा वसाइ ॥ को कर कमल मथानी धरिहै को माखन अरि खैहै। वर्षत मेघ वहुरि व्रजऊपर को गिरिवर कर लै है ॥ हों वालि वलि इन चरण कमलकी इहईरहो कन्हाई।सूरदास अवलोकि यशोदा धरणि परी मुरझाई॥११॥ मोहन इतनो मोहिं चित धरिये।जननी दुखित जानि कै कवहूँ मथुरागमन न करिये ॥ यह अक्रूर क्रूर कृत रचिकै तुमहिं लेन है आयो । तिरछे भए कर्म कृत पहिले विधि यह ठाट वनायो॥वारवार जननी कहि मोसौं माखन मांगत जौन। सूर तिन्हीं लेवेको आए करिहौं सूनो भौन॥१२॥गूढ॥ सुफलक सुतके संगते कहुं हरिहोत नन्यारे ॥ वार वार जननी कहै मोहिं तज्यो दुलारे ॥ कहा ठगोरी यहि करी मेरे वालक मोह्यो । हाहाकरि करि मरतिहौं मोतन नहिं जोह्यो ॥ नंदकह्यो परवोधिकै सँग मैं लै जैहौं । धनुपयज्ञ देखराइकै तुरतहि लै ऐहौं ॥ घर घर गोपनसों कह्यो कर भार जुरावहु । सूर नृपतिके द्वार को उठि प्रात चलावहु॥१३॥नंदवचनयशोदाप्रति ॥ मलार॥भरोसो कान्हकोहै मोहिं।सुन यशोदा कंस भयते तू जनि व्याकुल होहि॥पहिले पूतना कपट करि आई स्तननि विप पोहि।वैसी ज्यों प्रवल दुदिनके वालक मारि देखावत तोहि॥अघ वक धेनु तृणावर्त केशी को वल देख्यो जोहि।सातदिवस गोवर्धन राख्यो इंद्र गयो द्रपुछोहि ॥ सुनि सुनि कथा नंदनंदनकी मन आयो अवरोहि। सूरदास प्रभुजो कहिएक छु सो आवै सव सोहि ॥१४॥विलावल॥ यशुमति अतिंही भई वेहाल। सुफलकसुत यह तुमहि वूझिए हरतहौ मेरो वाल ॥ ए दोउ भैया व्रजकी जीवन कहति रोहिणी रोई । धरणी गिरति दुरति अति व्याकुल कहि राखत नहिं कोई ॥ निठुरभए जवते यह आयो घरहू आवत नाहिं। सूर कहा नृप पास तुम्हारो हम तुम विनु मरिजाहिं ॥१५॥ सोरठा॥कन्हैया मेरी छोह विसारी। क्यों वलराम कहत तू नाहीं मैं तुम्हरी महतारि ॥ तव हलधर जननी परवोधत मिथ्या यह संसारी । ज्यौं सावनकी वेलि प्रफुल्लिकै फूलतिहै दिनचारी॥ हम वालक तुमको कहा सिखवैं कहूं तुमहि तें जात॥

सूर हृदय धीरज अवधारो काहेको बिलखात॥१६॥ सोरठ॥यह सुनि गिरी धरणि झुकि माता। कहा अक्रूर ठगोरी लाई लिए जात दोउ ताता॥ विरध समय की हरत लकुटिया पाप पुण्य डर नाहीं। कछू नफा तुमको है यामें सोसो धोमन माहीं॥ नाम सुनत अक्रूर तुम्हारो क्रूर भए हौ आइ॥ सूर नंद घरनी अति व्याकुल ऐसेहि रैनि विहाइ॥१७॥गोपिकावचन परस्पर॥ रामकली॥सुनेहैं श्याम मधु पुरी जात। सकुचनि कहि न सकति काहू सों गुप्त हृदयकी बात॥ संकित वचन अनागत कोऊ कहि जु गई अधरात। नींद न परै घटै नहिं रजनी कब उठि देखौं प्रात॥ नँदनंदन तो ऐसे लागे ज्यों जल पुरइन पात। सूरश्याम सँगते बिछुरत हैं कब ऐ हैं कुशलात॥१८॥ सारंग॥ सुने नंदलाल मधुपुरी जात। सकुचाति कहि न सकति काहू सों गुप्त हृदय की बात॥ सकुत वचन अनागत सखीरी कोऊ कहि जु गयो अधरात। रजनी घटै न सूर प्रकाशे कब उठि देखौं प्रात॥उर धकधकी तबहिंते लागी अगम जनायो सीरे गात॥सूरदास स्वामी के चलिबे ज्यों यंत्री बिनु यंत्र सकात१९प्रभात कथा वदत॥ सखा वचन॥ राग भैरव॥भोर भयो ब्रजलोग नको॥ग्वाल सखा सखि व्याकुल सुनिकै श्याम चलतहैं मधुबनको॥सुफलकसुत स्यंदन पलनावत देखैं तहां बलमोहनको॥यह सुनि घर घरते उठि धाई नंदसुवन मुख जोवनको॥रोरि परी गोकुलमें जहँ तहँ गाइ फिरत पय दोहनको॥सूर बरबस कर भार सजावत महरचलत हरि गोहनको२०रामकली चलनको कहियतहैरी आजु॥अबहीं गई श्रवण सुनि आई करत गमनको साजु॥कोउ एक कंस कपट कर पठयो कछु सँदेश दै हाथ॥सोले चल्यो हमारी जीवननिधिको अपने साथ॥अब यह शूल न जाति समुझि सहि रही हिए कारि लाज॥धीरज अवधि आशदै जननिहि जात चले ब्रजराज॥करिये बिनती कमलनयन सों सूर समो पहिचान॥कौने कर्म भयो दुखदारुण रहत न मेरो कान२१चलत हरि धृग जु रहत ए प्रान। कहां वह सुख अबसहौं दुसह दुख उर कारि कुलिश समान॥कहां वह कंठ श्याम सुंदर भुज कराति अधर रस पान॥अचवत नमन चकोर सुधा विधु देखहु मुख छवि आन॥जाको जग उपहास कियो तब छाँड्यो सब अभिमान॥सूर सुनिधि हम तेहैं बिछुरत कठिनहै करमनिदान२२कल्याण हौं सावँरे के संग जैहौं। होनी होइ सुहोइ उभै लै हठ यश अपयश कहूं नडरैहौं॥ कहा रिसाइ करैगो कोऊ जो रोकि है प्राण ताहि दैहौं। देहौं छांडि राखिहौं यह ब्रत हरि हितु बीज्र बहुरिको वैहौं॥कारिहौं सूर अजर अवनी तन मिलि अकास पिय भौन समैहौं॥ बायवीज वापी जलक्रीडा तेज मुकुर मुख लेहौं॥२३॥यहि अंतर एक सखी आइ हरिके गवनको सँदेश वदति॥ राग कल्याण॥श्याम चलन चह त कह्यो सखी एक आई॥बलमोहन रथ बैठे सुफलकसुत चढन चहत यह सुनि चकित भईं बिरहदौं लगाई॥धुकि धुकि सब धरणि परीं ज्वाला झरलतागिरीं मनो तुरत जलद वरषि सुरति नीर परसी॥ धाईं सब नंद द्वार बैठे रथ दोउ कुमार यशुमति लोटति भुवपर निठुर रूप दरसी॥कौन पिता कौनमा ता आपु ब्रह्म जगधाता राख्यो नहीं कछू नाता नैक नेह माहीं॥आतुर अक्रूर चढे रसना हरि नाम रटे सूरज प्रभु कोमल तनु देखि चैन नाहीं॥२४॥ गोपीवचन मोहनप्रति राग॥सारंग॥ बिनती एक सुनौ श्रीश्याम। चलन नदेत चलो चाहत मन चलन कहौ सो सुनिए श्याम। तुम सर्वज्ञ सकल घट व्यापक जीवन पद सबके विश्राम। संतत रहत कहत ढीठोदै करते सब सोवत सुखधाम॥ वाहर सरल प्रीति गोपिनको लिए रहत लैलै गुणग्राम। सूरदास प्रभु सकल सुखदाता तिनते न्यारेन ग्राम॥२५॥ सारंग॥बिनु परवहि उपराग आजु हरि तुमहै चलन कह्यो। को जानै उहि राहु रमापति कतहै शोधलह्यो॥वैतकिचुनित नीच नैनन मिलि अंजन रूप रह्यो। विरह संधि बलपाइ

मैनअति है तिय वदन गह्यो ॥ दुसह दशन मनो धरत श्रमित अति परसे परकतसह्यो । देखो देव अमृत अंतरते ऊपर जात वह्यो ॥ अब यह शशि ऐसो लागत ज्यों विन माखनाहि मह्यो । सूरसकल गुणपति दरशन विनु मुखछवि अधिक दह्यो ॥२६॥धनाश्री॥ मिलि किन जाहु वटाऊनाते। नंद यशोदाके तुम बालक विनती करतिहौं ताते ॥ तुम्हरी प्रीति हमारी सेवा गनियत नाहिन काते । रूपदेखि तुम कहा भुलाने मीत भए वनयाते ॥ तुम विछुरत घनश्याम मनोहर हम अवला सरघाते । कहा करौं जु सनेह नछूटे रूप ज्योति गई ताते ॥ जब उठि दान माँगते हँसिकै संग गात लपटाते । सूरदास प्रभु कौन प्रबलरिपु बीचपरचौ धौं जाते ॥२७॥ हरिकी प्रीति उरमाहिं करकै । आय क्रूर लैचले श्यामको हितनाहीं कोउ हारिकै ॥ कंचनको रथ आगे कीन्हो हरिहि चढाएवरकै। सूरदास प्रभु सुखके दाता गोकुल चले उजरकै॥२८॥सारंग॥ सब ब्रजकी सोभा श्याम । हरिके चलत भई हम ऐसी मनहु कुसुम निरमायल दाम ॥ देखियतहौ तुम क्रूर विषमके से सुनियतहौ अक्रूरहि नाम। विचरतिहो न आन गृह गृहको तेसिसुलायक नृपको कह काम॥२९॥ यशोदाविलाप॥विलावल॥ गोपालहि राखहु मधुवन जात। लाजगए कछु काज नसरिहै विछुरत नँदके तात ॥ रथ आरुढ होत वलि गई होइ आयो परभात ॥ सूरदास प्रभु बोलि न आयो प्रेमपुलकि सब गात॥३०॥मोहन नैक वदन तन हेरो॥राखो मोहिं नात जननीको मदन गुपाल लाल मुख फेरो। पाछे चढो विमान मनोहर वहुरो यदुपति होत अँधेरो । विछुरत भेट देहु ठाढेह्वै निरखोघोष जन्मको खेरो ॥ माधो सखा श्याम इन कहि कहि अपने गाइ ग्वाल सब घेरो । गए न प्राणसूरता औसर नंद जतन करि रहे घनेरो३१॥अथ श्रीकृष्णमथुरागमनहेतु अक्रूर साथ॥सोरठ॥जवहीं रथ अक्रूर चढे। तब रसना हरि नाम भाषिकै लोचन नीर वढे ॥ महरि पुत्र कहि सोर लगायो तरु ज्यों धरनि लुटाइ । देखति नारि चित्रसी ठाढी चितए कुँवर कन्हाइ ॥ इतनेहि में सुख दियो सबनको मिलि हैं अवधि वताइ।तनक हँसे मनदे युवतिनको निठुर ठगोरी लाइ।वोलत नहीं रहीं सब ठाढी श्याम ठगी ब्रजनारी।सूर तुरत मधुवन पगधारे धरणीके हितकारी॥३२॥विहागरो॥चलत हरि फिरि चितये ब्रज पास।इतनेहि धीरज दियो सबनको अवधि गएदै आश।नंदहि कह्यो तुरत तुम आवहु ग्वालसखा लै साथ । माखन मधु मिष्टान्न महरलै दियो अक्रूरके हाथ ॥ आतुर रथ हाँक्यो मधुवनको ब्रजजन भए अनाथ । सूरदास प्रभु कंस निकंदन देवन करनि सनाथ ॥३४॥नटी ॥ रहीं जहां सो तहां सब ठाढी । हरिके चलत देखिअत ऐसी मनहुँ चित्र लिखि काढी ॥ सूखेवदन श्रवत नैननते जल धारा उरवाढी । कंधनि वाँहधरे चितवति द्रुम मनहु वेलि दवडाढा ॥ नीरस करि छाँडी सुफलक सुत जैसे दूध विन साढी । सूरदास अक्रूर कृपाते सही विपति तनु गाढी ॥ सारंग ॥ चलतहु फेरि न चितए लाल । रथ वैठे दूरते देखे अंबुजनैन विशाल ॥ मीडत हाथ सकल गोकुल जन विरह विकल वेहाल । लोचन पूरि रहीं जल महियाँ दृष्टि परी जो काल ॥ सूरदास प्रभु फिरिकै चितयो अंबुज वैन रसाल॥३५॥विलावल॥विछुरे श्रीब्रजराज आजु तौ नैननते परतीति गई। उठि नगई हरिसंग तवहिं ते ह्वै नगई सखी श्याममई ॥ रूपरसिक लालची कहावत सो करनी कछु वै नभई । साँचे कूरकुटिल ए लोचन व्यथा मीन छवि मानो छीनि लई ॥ अब काहे जल मोचत सोचत समौगए ते शूलनए।सूरदास याहीते जडभये इन पलकनही दगादए॥३६॥सखी वचन परस्पर धनाश्री॥ केतिक दूरि गयो रथमाई।नँदनंदनके चलत सखीहे तिनको मिलन नपाई॥एक दिवशहों द्वार नंदके नहीं रहति विनु आई । आजु विधाता मति मेरी गई भौनकाज विरमाई ॥

जब हरि ऐसो ख्याल करत है काहु न बात चलाई। अजही बसतविमुख भई हरिसों शूल न उरते जाई॥सूरदास प्रभु बिनु ब्रज ऐसो एको पल नसोहाई॥३७॥मलार॥सखीरी वह देखौ रथजात।कमल नैन काँधे पर न्यारो पीत वसन फहरात॥ लई जाइ जब ओट अटनकी चीरन रहत कृषगात। छत्र पत्र ध्वज कनकदलमानों ऊपर पवन विहात॥ मधु छुडाइ सुफलकसुतलैगए ज्यों माषी भयहीन। सूरदास प्रभु बिनु देखियत है सकल विरह आधीन॥३८॥ सारंग॥ पाछेही चितवन मेरे लोचन आगे परत न पाँइ। मनलै चली माधुरी मूरति कहाकरौं ब्रजजाइ॥ पवन नभई पताका अंबर भई नरथके अंग। धूरि न भई चरण लपटाती जाती वहँलौं संग॥ ठाढी कहा करौं मेरी सजनी जिहि विधि मिलहिं गोपाल।सूरदास प्रभु पठे मधुपुरी मुरझिपरी ब्रजबाल॥३९॥ नट॥ तबःन विचारीरी यह बात। चलत न फेंट गही मोहनकी अब ठाढी पछितात॥ निरखि निरखि मुख रही मौनह्वै थकित भई पलपात। जब रथ भयो अदृष्ट अगोचर लोचन अति अकुलात। सबै अजान भई वहि औसर धिगहि यशोमति मात। सूरदास स्वामीके बिछुरे कौडी भरि न बिकात॥४०॥सारंग॥अब वै बातैंईह्याँ रही।मोहन मुख मुसकाइ चलत कछु काहू नहीं कही॥ सखी सुलाज वश समुझि परस्पर सन्मुख सबै सही॥ अब वै शालतिहैं उरमाहियां कैसेहु कढति नहीं॥ त्यों ज्यों सलिल करनको सजनी काहेको फिरति वही। हरि चुंबक जहां मिलहि सूर प्रभु मो लैजाउँ तही॥४१॥रागनट॥ मेरी वज्रकी छाती बिदरि करि नहिं जाति।हरिहि चलत चित वत मग ठाढी पछिताति॥ विद्यमान विरह शूल उर में जुसमाति। आवनकी आश लागि अब धिही पत्याति॥ प्रेमकथा प्रगट भई शरद रासरति। प्राणनाथ बिछुरे सखी जीवत नलजति॥ एकै पै सुरति रही वदन कमल कांति। ज्यों ठग निधिहि हरत कीरंचक गुरदै केहू भांति। इमि फिरि मुसकानि सूर मनसागाई माति।चितवनि मन मादक भई जागत अकुलाति॥४२॥गौरी॥आजु रैनि नाहिं नींद परी। जागत गनत गगनके तारे रसनारटत गोविंद हरी॥ वह चितवन वह रथकी बैठन जब अक्रूरकी बाँह गही चितवत रही ठगी सी ठाढी कह न सकति कछु काम दही॥इतने मान व्याकुल भई सजनी आरज पंथ हुते बिबिडरी। सूरदास प्रभु जहा सिधारे कितिक दूरि मथुरा नगरी॥ ४३॥रागसारंग॥ हरि बिछुरत फाट्यो न हियो।भयो कठोर वज्रते भारी रहिकै पापी कहा कियो॥ घोरि हलाहल सुनरी सजनी औसर तेहि न पियो। मन सुधि गई सँभारति नाहिं न पूरो दाँव अक्रूर दियो॥ कछु न सुहाइ गई सुधि तबते भवन काज को नेम लियो। निशि दिन रटत सूरके प्रभु बिनु मरिवो तऊ न जात जियो॥४४॥अडानो॥सुदर वदनरी सुखसदन श्याम को निरखि नैन मन थाक्यो। वारक इन वीथिनह्वै निकसे मैं दूरि झरोखनि झांक्यो॥ उन कछु नैक चतुरई कीनी गेंद उछारि गगन मिस ताक्यो। वारों लाज भई मोको वैरनि मैं गँवारि मुख ढाक्यो॥ कछु करिगए तनक चितवनिमें याते रहत प्रेम मद छाक्यो।सूरदास प्रभु सर्वसुलै गए हँसत हँसत रथ हाँक्यो॥४५॥सारंग॥ अरी मोहिं भवन भयानक लागे माई श्याम बिना।देखहिं जाइ काहि लोचन भरि नंद महरके अँगना॥ लैजुगए अक्रूर ताहिको ब्रजके प्राणधना।कौन सहाय करै घर अपने मेटै विधिन घना॥ काहि उठाइ गोद करि लीजै करि करि मनमगना। सूरदास मोहन दरशन बिनु सुख सपति सपना॥४६॥ मलार॥ सब कोउ कहत गोपाल दोहाई।गोरस बेचन गई बबाकी सो हों मथुराते आई॥ जबते कह्यो कंस सों मनमोहन जीवत मृतक करि लेखो।जागत सोवत आश देवनकी कृष्ण कला सब देखो॥करत ओघ प्रजा लोग सब नृपतिके संक न मानी।

टकुराईतकियो गिरिधरकी सूरदास जनजानी४७॥यशोदा विलाप ॥ धनाश्री॥है कोइ ऐसी भांति देखावे। किंकिणि शब्द चलत ध्वनि रुनु झुनु ठुमक ठुमक गृह आवै॥कछुक विलाप वदनकी सोभा अरुन कोटि गति पावे। कंचन मुकुट कंठ मुक्तावलि मोरपंखछविछावे। धूंसर धूरि अंग सँगलीने ग्वाल वाल सँगलावे।सूरदास प्रभु कहाति यशोदा भाग्य वड़ेते पावै४८॥सोरठ ॥ मनोंहो ऐसेही मरिजैहों। इहि आंगन गोपाल लालको कवहुँककंनियां लैहों॥ कवे वह मुहुरों देखौंगी कव वैसो सचुपैहों। कवमोपै माखन माँगैंगे कव रोटी धरि देहों॥ मिलन आश तनु प्राण रहतहैं दिन दश मारग चैहों।जो न सूर कान्ह आइ है तौ जाइ यमुन धँसि लैहों४९अध्याय॥ ३९ ॥ तथा ॥ ४० ॥ अक्रूर दरशन माप्त हेतु तथा श्रीकृष्ण स्तुतिवर्णनं ॥ गुंड मलार ॥मनही मन अक्रूर सोच भारी। जननी दुःखित करि इनहि मैं लै चल्यो भई व्याकुल सवै घोषनारी॥ अतिहि ए वालहैं भोजन नवनीतके जानि लीन्हें जात दनुज पासा। कुवलियामल्ल मुष्टिक चाणूरसे कियो मैं कर्म यह अति उदासा॥ फेरि लैजाउँ व्रज श्याम वलरामको कंसलै मोहि तव जीवमारै। सूरपूरण ब्रह्म निगम नाहीं गम्य तिनहि अक्रूर मन यह विचारै॥५०॥इहै सोच अक्रूर परयो।लिए जात|इनको मैं मथुरा कंसहि महाडरयो॥धृग मो को धृग मेरी करनी तवहीं क्यों नमरयो॥ मैंदेखों इनको अवहातिहै अति व्याकुलह रयो। यहि अंतर यमुना तट आए स्नान दान कियो खरचो। सूरदास प्रभु अंतर्यामी भक्त संदेह सरयो॥ ॥५१॥ धनाश्री ॥ सुफलकसुत दुख दूरि करयो। यमुना तीर कियो रथठाढो आपुहि प्रगट हरयो॥ तिनहि कह्यो तुम स्नान करौ ह्यां हमहिं कलेऊ देहु। भूख लगी भोजन करिहैं हम नेम सारि तुम लेहु। तवलौं नंद गोप सव आवैं संग मिले सव जैहैं॥ सूरदास प्रभु कहतहैं पुनि पुनि तव अति ही सुख पैहैं॥५२॥ गुंडमलार ॥ सुनत अक्रूर यह वात हरषे। श्याम वलरामको तुरत भोजन दियो आपु स्नानको नीर परषे॥ गए कटिनीरलौं नित्य संकल्प करि करत स्नान इकभाव देख्यो। जैसोई श्याम वलराम श्रीस्यन्दन चढे वहै छवि कुँवर सर मांझ परख्यो॥ चकृत मनभयए कवहुँ तीर पुनि जल निराखि धोप अक्रूर जिय भयो भारी ॥ सूर प्रभु चरित में थकित अतिही भयो तहां दरशे नित स्थल विहारी ५३॥ कान्हरो ॥ कमल पर वज्र धरति उर लाइ। राजतिरमा कुंभरस अंतर पति निज स्थल जलसाइ॥ वैनतेइ संपुट सनकादिक चतुरानन जय विजय सखाइ। औस र वाग विसारद हाहा जित गुण गाइ॥ कनक दंड सारंग विविध रव कीरति निगम सिद्ध सुर धाइ। तिनके चरण सरोज सूर अव किए गुरु कृपा सहाइ॥५४॥धनाश्री॥हरषअक्रूर हृदय नमाइ। नेम भूल्यो ध्यान श्याम वलरामको हृदय आनंद मुख कहि नजाइ॥ ब्रह्म पूरण अकल कलाते रहित ए हरता करता समर्थ और नाहीं। कहा वपुरो कंस मिट्यो तव मन संस करत है गंस निर्वंशजाही। हांकि रथ चढि चल्यो विलम अव कहा प्रभु गयो संदेह अक्रूर जीको।नंद उपनंद सँग ग्वाल वहुभारलै आइ सदनहि मिले सूर पीको५५॥ अक्रूर श्रीकृष्ण स्तुति॥ राग कल्याण ॥ वार वार श्याम राम अक्रूरहि गानै। अवहीं तुम हरष भए तवहीं मन मारि रहे चले जात रथहि वात वूझत हैं वाने॥ कहो नहीं सांची सो हमसों जिनि गोपकरौ सुनिकै अक्रूर विमल स्तुति मानै। सूरज प्रभु गुण अथाह धन्य धन्य श्रीप्रियानाह निगमनको अगाध सहसानन नहिं जानै॥५६॥ विलावल ॥ वारवार मोसों कहा वूझत तुमहौ पूरण ब्रह्म गुसाँई॥ तुम हर्ता तुम कर्ता एकै तुमहो अखिल भवनके सांई॥ कहामल्ल चाणूर कुवलिया अव जिय त्रास नहीं तिननैको सूरदास प्रभु कंस निपातहु गहरु नकीजे अव वैसेनको ॥ ५७ ॥ राग धनाश्री ॥ बूझतहैं अक्रूर

हि श्याम। तरनि किरनि महलनि पर झाई इहै मधुपुरी नाम॥श्रवणन सुनत रहत जाको नित सो दरशन भए नैन। कंचनकोट कंगूरनकी छबि मानहु बैठे मैन॥उपवन बन्यो चहूंवा पुरके अतिही मोको भावत।सूरश्याम बलरामहि पुनि पुनि करपल्लवनि देखावत ॥ ५८ ॥श्रीकृष्णवचन अक्रूर मति ॥ कल्याण॥बार बार बलरामको मधुपुरी बतावत ॥छज्जे महलन देखिके मन हरष बढावत॥जन्मथान जिय जानिकै ताते सुख पावत।वन उपवन छाये सघन रथ चढे जनावत॥नगर सोर अकनत सुनत अतिरुचि उपजावत।सुनत शब्द घरियारके नृप द्वारबजावत॥बरन बरन मंदिर बने लोचनठहरावत। सूरज प्रभु अक्रूरसों कहि देखि सुनावत॥५९॥अक्रूरवचन श्रीकृष्णमति॥कल्याण॥श्रीमथुरा ऐसीआजुबनी। देखहु हरि जैसे पति आगम सजति शृँगारधनी ॥ मानहुँ कोटि कसी कटिकिंकिणि उपवन वसन सुरंग। भूषण भवन विचित्र देखियत सोभित सुंदर अंग ॥ सुनत श्रवण घरिआर घोर ध्वनि वायन नूपुर बाजत। अति संभ्रम अंचल चंचलगति धामन ध्वजा विराजत ॥ ऊंच अटनपर छत्रन की छबि शीशन मानो फूली।कनक कलस कुच प्रगट देखिअत आनँद कंचुकि भूली॥विद्रुम फटिक पची परदा छबि लालरंध्रकी रेख। मनहुँ तुम्हारे दरशन कारण भूले नैन निमेष ॥ चितदै अव लोकहु नँदनंदन पुरी परम रुचिरूप। सूरदास प्रभु कंस मारिकै होहु यहांके भूप॥ ६० ॥ मथुरा हरषित आजु भई। ज्यों युवतीपति आवत सुनिकै पुलकित अंग मई ॥ नवसत साजि शृँगारबनी सुंदरि आतुरपंथ निहारति। उड़त ध्वजा तनु सुरति विसारे अंचल नहीं सँभारति॥ उरल प्रगट महलनपर कलसा लसति पास बनसारी।ऊंचे अटनि छाजेकी सोभा शीश उचाइ निहारी॥जालरंध्र इकटक मग जोवति किंकिणि कंचनदुर्गे। वेनी लसति कहाै छबि ऐसी महलन चित्रे उर्गे॥ बाजत नगर बाजने जहँ तहँ और बजत घरिआर। सूरश्याम वनिता ज्यों चंचल पगनूपुर झनकार॥ ६१ ॥गुंडमलार॥नगरके पास जब श्याम आए। देखि रथ चढे बलराम अरु श्यामको गए अक्रूर तिन लए आए॥कंसके दूत जहां तहांते देखिकै गए नृप पास आतुर सुनाए। उठ्यो झिझकारि कर ढाल खड्गहि लिए रंग रण भूमिके महल बैठ्यो ॥ कुवलियामल्ल मुष्टिक चाणूरसो होहु तुम सजग कहि सबन ऐंठ्यो। एक पठवत एक कहत है आइकै एक सों कहत धौं कहां आए। सूर प्रभु शहर पैठार पहुँचे आइ धनुषके पास जोधा रखाए॥६२॥ पुरनारि श्रीकृष्ण सोभापरस्पर वदति॥धनाश्री॥मथुरा पुरमें सोर पर्यो। गर्जत कंस वंश सब साजे मुखको नीर हर्यो ॥ पीरो भयो फेफरी अधरन हृदय अतिहि डर्यो। नंदमहरके सुत दोउ सुनिकै नारिन हर्ष भर्यो॥इंदु वदन नव जलद सुभग तनु दोउ खग नैन कह्यो॥सूरश्याम देखत पुर नारी उर उर प्रेम भर्यो॥६३॥रामकली॥रथपर देखि हरि बलराम। निरखि कोमल चारु मूरति हृदय मुकुता दाम ॥ मुकुट कुंडल पीतपट छबि अनुज भ्राता श्याम। रोहिणी सुत एक कुंडल गौरतनु सुखधाम ॥ जननिकैसे धर्यो धीरज कहति सब पुरवाम। बोलि पठये कंस इनको करै धौं कहा काम ॥ जोरि कर विधि सों मनावति अशीशैंदै नाम। न्हात बार न खसै इनको कुशल पहुँचैं धाम ॥ कंसको निर्वंश ह्वै है करत इन पर ताम। सूर प्रभु नंद सुवन दोऊ हंसबाल उपाम॥६४॥कल्याण॥देखरी आजु नैन भरि हरिजूके रथकी सोभा। योग यज्ञ जप तप तीरथव्रत कीजतहै जेहि लोभा॥ चारु चक्र मणि खचित मनोहर चंचल चमर पताका॥ श्वेत छत्र मनो शशि प्राची दिशि उदय कियो निशि राका॥ घन तन श्याम सुदेश पीत पट शीश मुकुट उर माला। जनु दामिनि घन रवि तारागण प्रगट एकही काला॥ उपजत छबि कर अधर शंख मिलि सुनियत शब्द प्रशंसा। मानहु अरुण कमल मंडल में कूजत हैं

कलहंसा।मदन गोपाल देखियत हैं सब अब दुख सोक बिसारी। पैठे हैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो इहाँ सिधारी॥ आनंदित चित जननि तात हित कृष्ण मिलन जिय भाए। सूरदास यदुकुल हित कारण अब माधो मधुपुरी आए॥६५॥मल्हार॥ वेदेखो आवतहैं ब्रजते वने वनमाली। घन तन श्याम सुदेश पीतपट सुंदर नैन विशाली॥ जिनि पहिले पलना पौढे पय पीवत पूतना दाली। अघ बक वच्छ अरिष्ट केशी मथि जलते काढचो काली॥ जिन हति शकट प्रलंब तृणा वृत इंद्र प्रतिज्ञा टाली। एते पर नाहिं तजत अघोडी कपटी कंस कुचाली॥ अब विधु वदन विलोकि सुलोचन श्रवण सुनतही आली। धन्य सुगोकुल नारि सूर प्रभु प्रगट प्रीति प्रतिपाली॥६६॥भैरव॥ एई माधो जिन मधु मारेरी। जन्मतही गोकुल सुखदीन्हो नंददुलार बहुत सारेरी॥ केशी तृणावर्त्त वृषभासुर हती पूतना जब वारेरी। इंद्रकोप वर्षत गिरि धारचो महाप्रबल ब्रजके टारेरी॥ वल समेत नृपकंस बोलाए रचे रंग अति भारेरी। सूर अशीश देति सब सुंदरि जीवहिं अपनीमाँ प्यारेरी॥६७॥बिहागरो॥ भए सखि नैन सनाथ हमारे। मदनगोपाल देखतही सजनी सब दुखसोक बिसारे॥ पठएहैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो इहां सिधारे। मल्लयुद्ध प्रति कंस कुटिल मति छल करि इहां हँकारे॥ मुष्टिक अरु चाणूर शैलसम सुनियतहैं अतिभारे। कोमल कमल समान देखियत ये यशुमतिके वारे। ह्वै यह जीति विधाता इनकी करहु सहाय सवारे।सूरदास चिरजीवहु युग युग दुष्टदलै दोउ नंददुलारे॥६८॥अथ दूसरी लीला अक्रूरकी।रागमारू॥यमुनातट आइ अक्रूर अन्हाए। श्याम वलरामको रूप जलमें निरखि बहुरि रथ देखि आचरज पाए॥ किधौं यह प्रति बिंब जलमें देखत किधौं निजरूप दोउहैं सुहाए। चकृत होइ नीर में बहुरि बुडकी दई सहित सुता सिंधु तहां दरशपाए॥ दोउ करजोरि करि विनय बहुविधि करी लियो जब रूप तब प्रभु दुराई। निकसिके नीरते तीर आयो बहुरि ताहि ढिगबोलि बोले कन्हाई॥ कहा तुम और देखत हुते तात तुम कह्यो सब जगत तुमही भुलायो। गति तुम्हारी नजानै कोऊ तुम बिना राख प्रभु राख मैं शरण आयो॥ हरि कह्यो चलौ मथुरापुरी देखिए सहित अक्रूर पुनि तहां आए। सूर प्रभु कियो विश्राम सब निशि तहां बोधि अक्रूर निजघर पठाए॥६९॥अध्याय॥ ४१॥ श्रीकृष्ण मथुरापुर आगमन हेतु॥राग भैरव॥ भोरभयो जागे नँदनंदन। नंदराइ निरखत मुख हरषे पुनि आए सब ग्वाल॥ देखि पुरी अति परम मनोहर कंचनकोट विशाल।कहन लगे सब सूर प्रभू सों होहु इहां भूपाल॥७०॥राग पराज॥ हरि वल सोभितयो अनुहार।शशि अरु सूर उदैभए मानों दोऊ एकहि वार॥ग्वाल वाल सँग करत कौतूहल गवनपुरी मंझार। नगर नारि सुनि देखन धांई रतिपति गेहबिसार॥ उलटि अंग आभूषण साजत रही नदेह सँभार।सूरदास प्रभु दरश देखिकै भई चकृत विचार॥७१॥राग धनाश्री॥ वे देखो आवत दोऊ जन। गौर श्याम नट नील पीत पट जनु दामिनी मिलीघन॥ लोचन बंक विशाल चितै हरत हो सबके मन। कुंडल श्रवण कनक मणि भूषित जडितलाल अतिलोल मीन तन॥चंदन चित्रविचित्र अंग शिर कुसुम सुवास धरे नँदनंदन।बलि बलि जाउँ चलहि जेहि मारग संग लगाइ लेत मधुकर गन॥धन्य सुभूमि जहां पगधारे जीतहि गे रिपु आजु रंगरन। सूरदास वै नगर नारि सब लेत बलाइ वारि अंचल सन॥ ७२ ॥ अथ रजकवध हेतु ॥ रामकली ॥नृपति रजक अंबर नृप धोवत। देखे श्याम राम दोउ आवत गर्व सहित तिन जोवत॥आपुसहीमें कहत हँसत हैं प्रभु हृदय यह शालत।तनक तनकसे ग्वाल छोहरन कंस अबहिं बधि घालत॥तृणावर्त प्रभु आहि हमारो इनहीं मारचो ताहि।बहुत अचगरी यहि करि राखी प्रथम मारिहैं याहि॥जाको नाम श्याम सोइ खोटो तैसेइ

हैं दोउ वीर । सूर नंद बिनु पुत्र कहाए ऐसे जाए हीर॥७३॥ बिलावल ॥अंतर्यामी जानिके सब ग्वाल बोलाए । परखि लिए पाछेनको तेऊ सब आए ॥ सखा वृंद लै तहां गए बूझन तेहि लागे । नृपति पास हम जाहिंगे अंबर कछु मांगे ॥ हँसे श्याम मुख हेरिकै धोवत गरवानो । मारत मारत सातके दोउ हाथ पिरानो ॥ अबहीं दैहैं आइकै कछु हम लै रैहैं । पहिरावन जो पाइहैं सो तुमहूं देहैं ॥ की पहिलेही लेहुगे हम इहै विचारे । देहु बहुत गुण मानिहैं आधीन तुम्हारे ॥ मार मार कहि गारि दै धृग गाइ चरैया । कंसपासह्वै आइए कामरी वोढैया॥ बहुरि अरसते आनिकै तब अंबर लीजो । अरस नामहै महलको जहां राजा बैठे । गारी देदै सब उठे भुज निजकर ऐंठे ॥ पहिरावनको जुरि चले पैहो मल्लनसों । सूर अजाके भोगए सुनि लेहु नमोसों॥७४॥ बिलावल ॥हम माँगतहैं सहज सों तुम अति रिसकीन्हों।कहा करैं तो जाहिंगे जो तुम हमाहैं न दीन्हों॥रिस करियतक्यों सहज हो भुज देखत ऐसे । करि आए नट स्वांगसे मोको तुम वैसे ॥ हमाहैं नृपति सों नातहै ताते हम मागे । बसन देहु हमको सबै कहैं नृपके आगे ॥ नृप आगे लौं जाहुगे वीचहि मरि जैहो । नेक जीवनकी आशहै ताहू विनह्वैहौ ॥ नृप काहेको मारिहै तुमहीं अब मारत । गहर करत हमको कहा मुख कहा निहारत ॥ सूर दुहुँनमैं मारिहौं अति करत अचगरी । वसत तहां बुधि तैसिये वह गोकुल नगरी ७५ रागबिलावल ॥ श्याम गह्यो भुज सहजही क्यों मारत हमको।कंस नृपतिकी सौंहहै पुनि पुनि कही तुमको ॥ पहुँचा करसों गहिरहे जिय संकट मेल्यो । डारि दियो ताहि शिलापर बालक ज्यों खेल्यो ॥ तुरत गयो उड़ि स्वर्गको ऐसे गोपाला । जन्म मरनते रहि गयो वह कियो निहाला॥रजक भजे सब देखिकै नृप जाइ पुकारचो।सूर छोहरन नंदके नृपसेठिहि मारचो७६ गौरी॥ यह सुनिकै नृप त्रास भरचो । सवन सुनाइ कही यहवाणी इह नँदनंद कह्यो ॥ मारो श्याम राम दोउ भाई गोकुल देउ बहाइ । आगे दैकै रजक मरायो स्वर्गहि देहु पठाइ ॥ दिन दिन इनकी करौं बड़ाई अहिर गए इतराइ । तौ मैं जो वाही सों कहिकै उनकी खाल कढाइ। सूर कंस इह करत प्रतिज्ञा त्रिभुवननाथ कहाए॥ ७७ ॥ बिलावल ॥ रजक मारि हरि प्रथमही नृप वसन लुटाए । रंग रंग बहु भाँतिके गोपन पहिराए ॥ आए नगर लगारको सब बने बनाए॥इकटक रही निहारिकै तरुणिन मनभाए ॥ जैसी जाके कल्पना तैसे हि दोउ आए । सूर नगर नर नारिकै मन चित्त चोराए॥७८॥एइ वसुदेवके दोउ ढोटा।गौर श्याम नट नील पीत पट कल हंसनके जोटा ॥ कुंडल एक काम श्रुति जाके श्रीरोहिणिको अंश। उर वनमाल देवकीको सुत जाहि डरतहै कंस ॥ लै राखे ब्रज सखा नंद गृह बालक भेष दुराइ। सम बल बैस विराट मैनसे प्रगट भएहैं आइ ॥ केशी अघ पूतना निपाती लीला गुणनि अगाध । सूरश्याम खलहरन करन सुख अभयकरन सुरसाध॥७९॥ रामकली ॥ येइ कहियत वसुदेव कुमार। कंसत्रास मनमात पठाए कीन्हे नंददुलार ॥ प्रथम पूतना इनहि निपात काग मरत उठि भाज्यो। शकटा तृणा इनहिं संहारचो काली इनहि निवाज्यो॥ अघा बका संहारन एई असुर संहारन आए । सूरज प्रभु हित हेतु भावकै यशुमति बाल कहाए८०॥ रागनट ॥वैहैं रोहिणीसुत राम।गौर अंग सुरंग लोचन प्रलय कैसे ताम ॥ एक कुंडल श्रवणधारी दोत दरशीग्राम । नील अंबर अंगधारी श्याम पूरणकाम ॥ महा जे खल तिनहुँ ते अति तरतहै एक नाम । ब्रह्म पूरण सकल स्वामी रहे ब्रजनि शिधाम ॥ ताल वन इन बच्छ मारचो ब्रह्म पूरणकाम । सूर प्रभु आकरषि ताते संकर्षणहै नाम८१ ॥ रामकली ॥ एहैं देवकीसुत श्याम । मुकुट शिर शुभ श्रवण कुंडल करत पूरणकाम॥ महा जे खल

तिनहुँते अति तरतहैं इक नाम॥ब्रह्मपूरण सकल स्वामी रहे व्रज वसिधाम॥नंद पितु माता यशोदा बाँधे ऊखल दाम। लकुट लैलै त्रास कीन्हो करचो इन परताम॥ताहि मान्यो हेतु करि इन हँसति व्रजकी वाम। सूर धनि नँद धन्य यशुमति धन्य गोकुल ग्राम॥८२॥ अध्याय॥ ४२॥ हरि धनुष भूमि आगमन कूवरी उद्धार॥ रागमारू॥ धनुपशाला चले नंदलाला॥ सखा लिए संग प्रभु रंग नाना करत देव नर कोउ न लखहि कत व्याला। नृपति के रजकसों भेंट मगमें भई कह्यो दे वसन हम पहर जाहीं। वसन ए नृपतिके जासुके प्रजा तुम ए वचन कहत मन डरत नाहीं॥ एकही मुष्टिका प्राण ताके गए लए सब वसन कछु सखन दीन्हें। आइ दरजी गयो बोलि ताको लयो सुभग अंग सजत उन विनय कीन्हें। यों सुदामा कह्यौ गेह मम अति निकट कृपाकरि तहां हरिचरणधारी॥ धोइ पद कमल सों अहार आगे धरी भक्ततासु सब काज सारी। लिए चंदन बहुरि आनि कुबिजा मिली श्याम अँग लेप कीयो बनाई॥ रीझि तेहि रूप दियो अंग सूधो कियो वचन शुभ मानि निज गृह पठाई। पुनिं गए तहाँ जहां धनुप बोले सुभट हौस मन जिनि करौ वन विहारी॥ सूर प्रभु छुअत धनु टूटि धरणी परचो शोर सुनि कंस भयो भ्रमत भारी॥८३॥ दूसरी लीला धनुषयज्ञकी विस्तार वदत॥ गुंडमलार॥ श्याम बलराम गए धनुपशाला। लियो रथते उतरि रजक मारचो जहां कंदराते निकसि सिंह बाला॥ नंद उपनंद सँग सखा एक थल राखि दोऊ बने आवैंहिं वीर जोटा। असुर सैना खड़े देखिकै वे डरे धनुष चहुँ पास रिपु घुटा घोटा॥ घेरिलीन्हें श्याम बलरामको तहां बोलि सब उठे हरि धनुप तोरो। सूर तुमको सुनै भुजानि बलचंड अति हँसत हरि करचो यह वैर जोरौ॥८४॥ विहागरो॥ हमको नृप यहि हेतु बोलाए॥ कहां धनुप कहँ हम अति बालक कहि आचर्य सुनाए॥ ठाढे शूरवीर अवलोकत तिनसों कहौ न तोरैं। हमसों कहौ खेल कछु खेलैं यह कहि कहि मुख मोरैं॥कंस एक तहां असुर पठायो इहै कहत वह आयो॥वैने धनुप तोरे अब तुमको पाछे निकट बोलायो॥बालक देखि गहन भुज लाग्यो ताहि तुरतही मारचो। तोरिकै दंड मारि सब योधा तब बल भुजा निहारचो॥जाके अस्त्र तिनहि तेहि मारचो चले सामुही खोरी। सूर सुकुवरी चंदन लीन्हें मिली श्यामको दौरी॥८५॥धनाश्री॥ प्रभु तुमको चंदन मैं ल्याई॥ गह्यो श्याम कर कर अपनेसों लिए सदनको आई॥ धूप दीप नैवेद साजिकै मंगल करे विचारी। चरण पखारि लियो चरणोदक धनि धनि कहि दैत्यारी॥ मेरो जनम कल्पना ऐसी चंदन परसौं अंग। सूर श्याम जनके सुखदायक बधे भाव रजु रंग॥८६॥गुंडमलारी॥ कुवरी नारि सुंदरी कीन्ही। भावमें वास विन भाव नहिं पाइए जानि हृदय हेतु मानि लीन्ही॥ग्रीव कर परसि पग पीठि तापर दियो उर्वसी रूप पटतरहि दीन्ही। चित्त वाके इहै श्याम पति मिलैं मोहिं तुरत सोई भई नहिं जात चीन्ही॥ताहि अपनी करी चले आगे हरी गए जहां कुवालिया मल्ल द्वारचो। बीच माली मिल्यो दौरि चरणन परचौ पुहुपमाला श्याम कंठ धारचो॥ कुशल प्रसन्ननि कहे तुरत मन काम लहि भक्तवत्सल नाम भक्त गावैं। ताहि सुखदे चले पौरिही ह्वै खरे सूर गजपालसों कहि सुनावैं॥८७॥ अध्याय॥ ४३॥ कुवलियाहस्ती वा मुष्टिक चाणूर वध॥कान्हरो॥ सुनहु महावत बात हमारी॥द्वारेखड़े रहेहैं कवके जिनि रे गर्व करै जिय भारी॥ न्यारो करि गयंद तू अजहूं जान देहिका अंकुशमारी। सूरदास प्रभु दुष्टनिकंदन धरणी भार उतारनकारी॥८८॥ गुंडमलार॥ बार बार संकर्पण भाषत वारन वनि वारन करि न्यारो। वारन छाँडि देत किन हमको तू जानत मतंग मतवारो॥बाहर खडे बात सुन मेरी त्रिभुवनपति जिनि जानै बारो। वादिहि मरिजैहै पलभीतर कहे देत नहिं दोप हमारो॥

बात सुनत रिस भरचो महावत तुमहि कहा इतनो रे गारो । वादत वड़े शूरकी नाँईं अबहिं लेतहौं प्राणतुम्हारो॥वारनहीं करौं वारन सहित फटकिहौं वावरेबात कहि मुख सँभारो॥वादि मरिजाइगो वारन हिं छोडि दे वदत वलराम तोहिं वारवारो॥बात मेरी मान गर्व बोलै कहा काल किनि देखि इतरात कारो॥वाम कर गहि शुंडि डारिहौं अमरपुर हांकदै तुरत गजको हँकारे ॥ वाजसों टूटि गजराज हां कत परचो मनो गिरि चरण धरि लपकि लीन्हें॥वारि बांधे वीर चहुँधा देखतही वज्र सम थाप वल कुंभ दीन्हो॥कूक पारचो लपकि घींच गज डरचो मनु गंडमधि रंध्र झरवो सुखानो॥क्रोध गजपालके ठटाकि हाथी रह्यो देत अंकुश मसकि कहा सकानो॥वहुरि तातो कियो डारि तिनपर दियो आय लपटे सुतहु नंद केरे॥सूरप्रभु श्याम बलराम दोउ इतै उत वचिकरि नाग इत उतहि टेरे ८९॥ गुंडमलार॥ क्रोध गजराज गजपाल कीन्हो । गरजि घुमरात मद मार गंडनि श्रवत पवन ते वेग तेहि समै ची न्हो ॥ चक्र सों भ्रमत चकृत भए देखि सब चहुंधा देखिए नंद ढोटा । चमकि गए वीर सब चका चौंधी लगी चितै डरपे असुर घटा घोटा ॥ नील अंवर धौल वरन वलराम वनि पीत अंवर श्याम अंग सोभा॥सूर प्रभु चरित पुर नारि देखति खड़े महल पर आशिपा देत लोभा॥९०कहत हलधर कह्यो मानि मेरो॥अखिल ब्रह्मण्ड के नाथ हैं ह्याँ खरे गज मारि जीव अब लेहुँ तेरो॥यह सुनत रिस भरचो दौरिवेको परचो सूंडि झटकत पटकि कूक पारचो । घात मन करत लै डारि हौं दुहुँनि पर दियो गज पेलि आपुन हँकारचो ॥ लपकि लीन्हो धाइ दबकि उर रहे दोउ भ्रम भयो गजहि कहाँ गए वैधौं॥अरचो दे दशन धरनी कढे वीर दोउ कहत अबही याहि मारै कैधौं॥खेलि हैं संग दै हाँक ठाढे भए श्याम पाछे राम भये आगे॥उतहि वै पूंछ गहि जात ए शुंडि ह्वै फिरत गज पास चहुं हँसन लागे॥नारि महलन खरीं सबै अतिही डरीं नंदके नंद गज दोउ खिलावैं॥सूर प्रभु श्याम वलराम देखति तृषित बचैं इक वेर विधि सों मनावैं॥९१खेलत गज सँग कुँवर श्याम बलराम दोऊ॥क्रोध द्विरद व्याकुल अति इनको रिस नैक नहीं चकृत भए योधा तहँ देखत सब कोऊ ॥ श्याम झटकि पूंछ लेत हलधर कर शुंडिदेत महल महल नारि चरित देखति यह भारी । ऐसे आतुर गोपाल चपल नै न सुखरसाल लिए करन लकुट लाल मनो नृत्यकारी॥सुरगण व्याकुल विमान मन मन यह करत ज्ञान बोलत यह वचन अजहुं मारचो नहिं हाथी । सूरज प्रभु श्याम राम अखिल लोकके विश्राम सुर पूरन काम करन नाम लेत साथी ॥ ९२ ॥ सोरठ ॥ तब रिस कियो महावत भारी । जो नहिं आजु मारिहौं इनको कंस डारिहै मारी ॥ अंकुश राखि कुंभ पर करष्यो हलधर उठे हँकारी॥ धायो पवनहुते अति आतुर धरणी दंत खँभारी॥तब हरि पूंछ गह्यो दक्षिण कर कबुक ओर शिरवारी पटक्यो भूमि फेरि नहिं मटक्यो लीन्हें दंत उपारी॥दुहुँ कर द्विरद दशन इक इक छविसों निरखति पुर नरनारी॥सूरदास प्रभु सुर सुखदायक मारचो नाग पछारी९३॥दूसरी लीला हस्तिवध॥रागमारू॥नवल नँदनंदन रंगद्वार आए । तडितसे पीतपट काछनी कसे कटि खौर चंदन किये मुख सुहाए ॥ निरख्यो रूप जिन भयो सोइ सोइ मगन मातु पितको पुत्र भाव आयो । ब्रह्मपूरण मुनिन परम सुंदर त्रियन कालके रूप सुभटन जनायो ॥ मातुलको देखि हरि कह्यो यों विहँसि करि पंथते टारि गजको महावत । दियो फटकार उन धारि अभिमान मन शुंडते दौरि गह्यो ताहि आवत ॥ दंत युग विवि युगचर भीतर निकसि युग करन पूँछको गह्यो जाई । महाकरि सिंह भेटत महाउरगको महाबल गरुड़ ज्यों गहत धाई ॥ कबहुं लैजात उत इतै ल्यावत कबहुँ भ्रमत व्याकुल भयो मतुल भारी । गयंद ज्यों गेंदको पटकि हरि भूमिसों दंत दोउ लये निजकर उपारी ॥ भभकिकै दंतते

रुधिर धारा चली छींट छबि वसन पर भई भारी । केसरि चीर पर अबीर मानों परयो खेलते फागु डारयो खिलारी ॥ मातुल तजि प्राणसो गयो निर्वाणको सिद्ध गंधर्व जैजै उचारैं । देखि लीला ललित सूरके प्रभुकी नारि नर सकल तनप्रान वारैं॥९३॥नट॥नवल नँदनंदन रंगभूमि आए। संग बलराम अभिराम शशि सूरज्यों निरखि अपन छबि सो सोहाए ॥ द्वार गजराज देखि पीतपट कटि कसत मंद मृदु हँसत अति लसत भारी ॥ कह्युन कहि परति तव जवहि फिरि हेरिकै छवीली पति आसवारी । गर्वको गिरि मनो चलत पाँइन तैसें कुवलया प्रबल रिस सहित धायो ॥ बालक मूस ज्यों पूंछ धरि खेलिए तैसे हरि हाथ हाथी गिरायो । गहि पटकि पुहुमि पर नैक नहीं मटकटियो दंत मनु मृणालसे ऐंचि लीन्हें ॥ कंधधरि चले दोऊ वीर नीके वने निरखि पुरजन धन प्राण वारि दीन्हें । शैलसे मल्ल वै धाइ आए शरन कोऊ भूले लागे तव गोड पर थरथराने ॥ कंसके प्राण भयभीत पिंजरा जैसे नव विहंगम तैसे मरत फरफराने । मधुपुरीकी युवति सब कहति अतिरति भरी देखोरी देखौ अंग अंगकी लोनाई ॥ सुनत श्रवणन रही देखोरी तेई सही मधुर मूरति सुरतिपति न पाई । धन्यराधा केलि वृंदावन कुंज हैं सभागी ॥ सबै देखौ हेली धौं माई हम अभागी ॥ धन्य व्रजबाल नंदलाल गिरिधरनको नित्य निरखति रहति प्रेम पागी । अवलसों अवल भए सवलसों सबल भए ललितसों ललित तनु प्रकाशी ॥ सूर प्रभु ज्ञान करि ध्यान करि जिन जैसी लई मानि मात पितु दुख दूरि डारे विनाशी॥९४ ॥ विलावल ॥ देखोरी आवत वै दोऊ । मणि कंचनकी राशि ललित अति यह उपमा नहिं कोऊ॥ किधौं प्रात मानसरवर तेहि उडि आए दोउ हंस।इनको कपट करै मथुरापति तौ ह्वैहै निर्वंस॥जिनके सुने करत पुरुषारथ तेई हैं की और । सूर निरखि यह रूप माधुरी नारि करत मनडौर॥९५॥कान्हरो॥सजनी येई हैं गोपाल गोसाँई।नंदमहरके ढोटा जिनकी सुनियत वहुत बडाई।नैनन रूप निरखि देखौ वडभाग परमसुख निधि पाई।चंद्र चकोर मेघ चातकलौं अवलोको मनलाई॥सुंदरश्याम सुदेश पीतपट भुज चंदन चरचित कीन्हें । नटवर भेप धरे मनमोहन गज युग दशन कंध धरि लीन्हें॥नूपुर चारु चरण कटि किंकिणि वनमाला उर पर सोहै । कर कंकण मणि कंठ मनोहर सोको युवति जौन मनमोहै॥ परमरुचिर मणि कंठ किरन गनि कुंडल मुकुट प्रभा न्यारी । विधुमुख मृदु मुसकानि अमृत सम सकल लोक लोचन प्यारी ॥ सत्य शील संपन्न सुमूरति सुर नर मुनि भक्तन भाए । सूरदास प्रभु दुष्टविनाशन गोकुलते मथुरा आए ॥९६॥विलावल॥ एई सुत नंद अहीरके॥मारयो रजक वसन सब लूटे संग सखा बलवीर के ॥ कांधे धरि दोऊ जन आए दंत कुवलिया धीरके । पशुपति मंडल मध्य मनो मणि क्षीरधि नीरधि नीरके ॥ उडि आए तजि हंस मात मनो मानसरोवर तीरके । सूरदास प्रभु ताप निवारण हरन संत दुख पीरके ॥९७॥ कल्याण ॥ हँसत हँसत श्याम प्रबल कुवलया मारयो । तुरत दांत लिए उपारि कंधनपर चले धारि निरखति नर नारि मुदित चकृत गज संहारयो॥अतिही कोमल अजान सुनत नृपति जिय सकान तनु विनु जनु भयो प्राण मल्लनिपै आए । देखतही सांकि गए कालगुण विहाल भए कंस डरन घेरि लिए दोउ मन मुसुकाए ॥ असुर वरी चहूँ पास जिनके वस भुव अकास मल्लनपै आए न करि गांस नास व्रह्मको विचारै । सबै कहत भिरहु श्याम सुनत रहत सदा नाम हारि जीति घरहीकी कौन काहि मारै ॥ हँसि वोले श्याम राम कहा सुनत रहे नाम खेलनको हमहि काम वालक सँग डोलै । सूर नंदके कुमार यहहै राजस विचार कहा कहत वार वार प्रभु ऐसे वोले ॥ ९८ ॥ रंगभूमि आए अति नंदसुवन वारे । निरखति व्रजनारि नेह उरते

न विसारे ॥ देखोरी मुष्टिक चाणूरन इनि हकारे । कैसे ये बचैनाथ सांस ऊरध डारे ॥ रजक धनुष जोधा हति दंतगज उपारे । निर्दय इह कंस इनहिं चाहतहै मारे ॥ कहां मल्ल कहां अतिहि कोमल ए भारे ॥ कैसी जननी कठोर कीन्हें जिन न्यारे । वार वार इहै कहति भरि भरि दोउ तारे । सूरज प्रभु वल मोहन डरते नहिं टारे॥९९॥गुंडमल्लार॥बोलि लीन्हों कंस मल्ल चाणूरको कहारे करत क्यों विलम कीन्हों । वंश निर्वंश करि डारिहौं छिनकमें गारि दैदै ताहि त्रास दीन्हों ॥ शत्रुनहीं जानि रहे अवलौं वैठि जन आपनेको मारिडारौं । द्विरदको दंत उपठाय तुम लेतहै उहै वल आजु काहेन सँभारौं ॥ भली नहिं करी तुम राखि राख्यो उनहि इहै कहि तुरत वाको पठायो । कछु क्रोध कछु त्रास कछु सोच कछु सोक करें साहस रंगभूमि आयो । परस्पर कहि सवन नृपति त्रास्यो मोहिं सुनहुरे वीर अवलोचन मान्यो ॥ की मारौ की मारिडारियो दुहुँनिको होइ सो होइ यह कहत रान्यो । निरखि दोउ वीर तनुडरे मनहि महान इहै वुधि करै ज्यों नाश कीजै । लखति पुरनारि प्रभु सूर दोउ मारिहै कहति हैं नृपतिपै सुयश लीजै ॥ १०० ॥ धनाश्री ॥ कहति पुर नर नारि यह मन हमारे । रजक मारचो धनुप तोरि द्वै खंड करे हत्यों गजराज त्यों इन हु मारे ॥ तृषित अति नारि सबै मल्ल ज्यों ज्यों कहै लरत नहिं इयाम हम संग काहे । परस्पर मत करत मारिडारौं इनहिं लखत ए चरित दुहुं निमिष न चाहे ॥ कहा ह्वैहै दई होन चाहति कहा अवहि मारत दुहुन हमहि आगे । सूर करजोरि अंचल छोरि विनवै वचैं ए आजु विधि इहै मांगें॥ ॥ रागकल्याण ॥ देखौरी मल्ल इनहि मारनकों लौरैं । अतिही सुंदर कुमार यशुमति रोहिणि वार विलखाति यह कहति सवै लोचन जलढोरैं ॥ कैसेहुं ए वचैं आजु पठए धौं कौन काज निठुर हियो वाम ताको लोभही पठाए । एतौ वालक अजान देखौ उनके सयान कहाकियो ज्ञान इहां काहेको आए ॥ कहा मल्ल मुष्टिकसे चाणूर शिला भंजन कहत भुजा गहि पटकन नंद सुवन हरपैं । नगर नारि व्याकुल जिय जानत प्रभु सूर श्याम गर्व हतन नाम ध्यान करि करि वै वरपैं ॥ श्रीकृष्णवचन मल्लप्रति ॥ गुंडमल्लार ॥ सुनौं हो वीर मुष्टिक चाणूर सव हमहि नृप पास नहिं जान देहौ । वैरि राखे हमहि नहिं बूझे तुमहि जगत में कहा उपहास लैहो ॥ सवै कैहैं इहै भली मति तुम यहै नंदके कुंवर दोउ मल्ल मारे । इहै यश लेहुगे जान नहिं देहुगे खोजही परे अव तुम हमारे ॥ हम नहीं कहैं तुम मनहि जो यह वसी कहतहौं कहा तौ करै तैसी॥सूर हम तन निरखि देखिए आपुको वात तुम मनहो यह वसी नैसी ॥२॥ तोडी ॥ जवही इयाम कही यह वानी । यह सुनिकै युवती विलखानी ॥ मल्लन करचो हमहि तुम देषो । अपनो वल अपनो तनु पेषो ॥ चितए मल्ल नंद सुत क्रोधा । काल रूप वज्रांगी जोधा ॥ भुजा ऐंठि रज अंग चढ़ायो । गांस धरे हरि ऊपर आयो ॥ इयाम सहज पीता म्वर वांधे॥हलधर निरखत लोचन आधे॥तव चाणूर कृष्णपर धायो॥भुजभुज जोरि अंग वलपायो॥ प्रथम भए कोमलतन ताको । शिथिल रूप मनमें लस वाको॥तव चाणूर गर्व मन लीन्हों । दुर्गप्रहार कृष्णपर कीन्हों॥फूलहुते अति श्रम करि मान्यो॥तिहि अपने जिय मारचो जान्यो॥हरप्यो मल्ल मारि भयो न्यारो । कहनलग्यो मुख अहिर विचारो ॥ हँसत इयाम जव देखठ ठाढे । सोच परचो तव प्राणनि गाढ़े॥फिरि फिरि कहि हरि मल्ल हुकारचो । मनों कंदरते सिंह पुकारचो ॥ हांक सुनत सवकोउ भुलान्यो । थरथराइ चाणूर सकान्यो ॥ सूरइयाम महिमा तव जान्यो । निहचै मीचु आपनो आन्यो॥३॥ धनाश्री ॥ भिरचो चाणूर सों नंदसुत वांधिकटि पीत पट फेट रण रंग राजैं॥द्वि रद दंत कर कलित अरु भेष नटवर ललित मल्ल उर साल्हि तल ताल वाजैं ॥ पीन भुजलीन जे

लखि रंजित हृदय नीलघन शीत तनु तुंग छाती। देखि रही भेप अति प्रेम नर नारि सब वदाति ताजि भीर रति रीति राती॥मत्त मातंग बल अंग दंभोलि दल काछनी लाल गजमाल सोहै। कमल दलनैन मृदुवैन वंदित वदन देखिसुरलोक नरलोक मोहै॥ वाहुसों वाहु उर जानु सों चरण धरि प्रगट पेलैं। धमकदै घूंघरानि भीउभय बंधुजन सुभट पद पाणिधरनिधरति मेलैं॥ चित्तसों चित्त मनबंधु मनबंधुसों दृष्टिसों दृष्टि धरि शिर चपैया। जानि रिपुहानि तजिकानि यदुराजकी बबकि उठि फूलि वसुदेवरैया॥ ऐसेही राम अभिराम सुरशेप वपुगहि व मुष्टिक महामल्ल मारचो। तोरि निज जनक उरकेशगहि कंसनर सूर हरि मंचते दुष्टडारचो॥४॥राग भैरौं॥ इयाम बलराम रंगभूमि आए। बली लखौ रूप सुंदर परम देखियो प्रवल वल जानि मनमें सकाए॥ कह्यो गजकुवलिया हयो भयो गर्व तुम जानि परिहै भिरत सँग हमारे। कालसों भिरैं हम कौन तुम वापुरे पै हृदय धर्म रहियो विचारे॥श्याम चाणूर वलिवीर मुष्टिकभिरे शीशसोंशीश भुज भुज मिलावैंविउनै गहत वे दौरि उनको गहत करत वल छल नहीं दांव पावैं॥ धरि पछारचो दोउ वीर दुहुन मल्लको हरपि कह्यो सुर ए नंद दोहाई।सूर प्रभु परस लहि लह्यो निर्वान तेहि सुरन आकास जैजैत ध्वनि सुनाई ॥५॥गुंडमलार॥ गह्यो कर श्याम भुजमल्ल अपने धाइ झटकि लीन्हो तुरत पटकि धरनी।भटक अति शब्दभयो खुटक नृपके हिए अटक प्राणन परचो चटक करनी॥ लटकि निर्खन लग्यो मटक सब भूलिगयो हटक ह्वैकै गयो गटकि शिलसो रह्यो मीचु जागी॥मुष्टकौ गद मरदिकै चाणूर चुरकुट करचो कंसको तुकंप भयो भई रंगभूमि अनुरागरागी। मल्ल जेजे रहे सबै मारे तुरत असुर जोधा सबै तेउ संहारे॥धाइ दूतन कह्यो मल्लकोउ नहिं रहे सूर वलराम हरि सब पछारे॥६॥ अध्याय ॥ ४४ ॥कंसवध उग्रसेन राजहेतु॥ कल्याण॥ मारे सब मल्ल नंदके कुमार दोऊ। कोट सबन भूलिगए हांकदेत चकृत भए लपकि लपकि हए तुरत उबरचो नाहिं कोऊ॥जोधा चितवतहि मरे हहरि हहरि धरनि परे ज्वालाज्यों जरे डरे सबभए विनप्राना। तारागन लिपितहोत जैसे दिन प्रकाश यह सुनि नृप भए निराश रह्यो नाहिं ज्ञाना॥ गलवल सब नगर परचो प्रगटे यदुवंशी। द्वारपाल इहै कही जोधाकोउ बचे नाहिं कांधे गजदंत धरे सूर ब्रह्म अंशी॥ ७ ॥ गुंडमलार ॥ नंदके नंद सब मल्लमारे निदरि पौरिया जाय नृपपै पुकारे॥ सुनत ठाढो भयो हांक तिनको दयो दनुज कुल दहन तातन निहारे। सुभट बोले सबै आइहै पुनि कबै मारिडारे सबै मल्ल मेरे। अचगरी करि रहे बचन एई कहे डर नहीं करत सुतहि अहिर केरे॥ रंग महलनि खरचो कहारे तुम कह्यो ढाल कर खड्ग तहांते चलावै। जिवत अब जाहुगे बहुरि करिहौ राज नहीं जानत सूर कहि सुनावै॥८॥राग धनाश्री॥ भलेरे नँदके छोहरा डर नहीं कहा जो मल्लमारे निचारे। वारही वारदै हांकये गए कहां आपने सम असुरते हँकारे॥ पौरि गाढौ करौ द्वार वीरनि कहे आप दल कारि मुख उदय गारिदैकै। वहुरि घर जाहुगे धेनु दुहि खाहुगे जानदेहौं तुमहिं प्राणलैकै॥ कोऊ नहींरे वहांलौ दयावंत कहा पग द्वैक धरनि हरि सन्मुख आए। चकृत ह्वैकै गयो मीच दरशन भयो कहारे मीच यह कहि सुनाए॥ इयाम वलरामको नाम लैलै कहत मीच आई लेन तुमहिं बाजै। सूरप्रभु देखि नृप क्रोध पुरी घरी कस्यो कटिपीतपट देव राजै॥ ९ ॥ मारू ॥ कंध दंत धरि डोलंत रंगभूमि वलहरि। उज्ज्वल साँवल वपु सोभित अंग फिरत फरि॥ द्वारे पैठत कुंजर मारचो डु-काय धरनी डारचो। मुष्टिक चाणूर शिलपसौ शील संहारचो॥ जिहिं ज्यों जीय रूप विचाऱ्यो तसोई रूप धाऱ्यो। देवकी वसुदेव जीयको संताप निवाऱ्यो॥ मल्लसुभट परे भगार कृष्णको

परिसाने। देखि यह पराक्रम तब कंस जिय विलखाने॥ दुःखदलन अभय दान करै करन दाने। जो जिहि जबहिं कहैं सबै गोवर्धन राने॥ कंस सुनि अचेत भयो बजनलगे बाजा। कहि अशीश गगन उठे सिद्ध सुरसमाजा॥ सुभट रहे देखतही रोके दरवाजा। सूरनंदनंदन गए जहाँ कंस राजा॥१०॥ मारू॥ नवल नंद नंदन रंगभूमि राजै। श्यामतन पीतपट मनों घनमें तडित मोरके पंख माथे विराजै॥ श्रवण कुंडल झलक मनों चपला चमकि दृग अरुण कमल दलसे विशाला। भौंह सुंदर धनुष बाण सम शिर तिलक केश कुंचित सोभित भृंगमाला॥ हृदय वनमाल नूपुर चरणलोल चलत गजचाल अतिबुद्धि विराजै। हंस मानो मानसर अरुन अंबुज सुथल निरखि आनंद करि हरषि गाजै॥ कुवलिया मारि चाणूर मुष्टिक पटकि वीर दोऊ कंध गजदंत धारैं। ढाल तरवारि आगे धरी रहिगई महलको पंथ खोजत न पावत॥ लातके लगत शिरते गयो मुकुट गिरि केश धरि लेचले हरषि सावंत। चारिभुज धारि तेहि चारु दरशन दियो चारि आयुध चहुँ हाथ लीन्हें॥ असुर तजि प्राण निर्वाण पदको गयो विमलगति भई प्रभुरूप चीन्हें। देखि यह पुहप वर्षाकरी सुरन मिलि सिद्ध गंधर्व जैधुनि सुनाई॥ सूर प्रभु अगम महिमा न कछु कहि परत सुरनकी गति तुरत असुर पाई॥११॥ मारू॥देखि नृप तमकि हरि चमकि तहांई गए दमकि लीन्हों गिरहबाज जैसे। धमकि मार्‍यौ घाउ गुमकि हृदय रह्यो झमकि गहिकेश लै चले ऐसे॥ ठेलि हलधर दियो झेलि तब हरि लियो महलके तरे धरणी गिरायो। अमर जय ध्वनि भई धाक त्रिभुवन भई कंस मार्‍यौ निदरि देवरायो॥ धन्य वाणी गगन धरणि पाताल धनि धन्यहो धन्य वसुदेव ताता। धन्य अवतार सुर धरनि उपकारको सूर प्रभु धन्य बलराम भ्राता॥१२॥ विलावल॥ जयजय ध्वनि तिहुँलोक भई। मार्‍यो कंस धरणि उद्धार्‍यो ओक ओक आनंद मई॥ रजक मारिकै दंड विभंज्यो खेल करत गज प्राण लियो मल्ल पछारि असुर संहारे तुरत सबनि सुरलोक दियो॥ पुर नर नारीको सुख दीन्हों जो जैसो फल सोई लह्यो॥ सूर धन्य यदुवंश उजागर धन्य धन्य ध्वनि घुमरि रह्यो॥१३॥ गुंडमलार॥ हरष नर नारि मथुरा पुरीके। सोच सबको गयो दनुज कुल सब हयो तिहुँ भुवन जै जयो हरष कूबरी के॥ निदरि मार्‍यो कंस प्रगट देखत सबै अतिहि दिन अलपके नंद भए ढोटा। नैन दोऊ ब्रह्मसे परम सोभातसे भक्तको जैसे शुभ हंस जोटा॥देवदुंदुभी बजी अमर आनंद भए पुहुप गण बरषही चैन जान्यो। सूर वसुदेव सुत रोहिणी नंद धनि धनि मिल्यो भुव भार अखिल जान्यो॥१४॥ रामकली॥ निदरि तुरत मार्‍यो कंस देवनाथा। निदरि मार्‍यो असुर पूतना आदिते धरणि पावन करी भई सनाथा॥ लोक लोकन विदित कथा तुरतही गई करन स्तुतिहि जहां तहां आए। देवदुंदुभि पुहुप वृष्टि जै ध्वनि करै दुष्ट यह मारि सुर पुर पठाए॥ केश गहि करषि यमुना धार डारिदै सुन्यो नृपनारि पति कृष्ण मार्‍यो। भई व्याकुल सबै हेतु रोवन लगीं मरनको तुरत ज्योहत विचार्‍यो॥गए तहां श्याम बलराम बोधी सबै कहति तब नारि तुम करी नैसी। नृप सुनहु वाम इह काम ऐसोई रह्यो जानि यह बात क्यों कहति ऐसी॥ मरति काहे कहा तुमहिको यह भई जानि अज्ञान तुम होति काहेसूर नृपनारि हरि वचन मान्यो सत्य हरष है श्याम सुख सबनि चाहे॥१५॥ ॥ कल्याण॥ रानिन परबोधि श्याम महलद्वारे आए। कालनेमि वंश उग्रसेन सुनत धाए॥ झुकि चरणन पर्‍यो आइ त्राहि त्राहि नाथा। बहुतै अपराध परे छिनहुमें सनाथा॥महाराज कहि श्रीमुख लियो उरलाई। हमको अपराध क्षमहुँ करी हम ढिठाई॥ तबहीं सिंहासन पाँउ उग्रसेन धारेौछत्र

शिर धराइ चमर अपने करढारे ॥ ठाढ़े आधीन भए देव देव भाषै । अपने जनको प्रसाद सारी शिर राखै ॥ मोकों प्रभु इती कहा विश्वंभर स्वामी । घट घटकी जानतहो तुम अंतर्यामी ॥ तौ नृप कहत कहा तुमको यह केती।सेवा तुम जेती करी पुनि देहौ तेती॥रजक धनुप गज मल्लन कंस मारि काजा।सूरज प्रभु कीन्हो तव उग्रसेन राजा॥१६॥ बिलावल॥ उग्रसेनको दियो हरि राज । आनंद मगन सकल पुरवासी चमर ढुरावत श्रीव्रजराज ॥ जहां तहां ते यादव आए डरे डरे जे गए पराइ । मागध सूत करत सव स्तुति जै जै जै श्री यादवराइ ॥ युग युग विरद इहै चलि आयो भए वलिके द्वारे प्रतिहार । सूरदास प्रभु अज अविनाशी भक्तन हेतु लेत अवतार॥१७॥ बिलावल ॥ मथुरा लोगनि वात सुनी यह उग्रसेनको राज दियो । सिंहासन बैठारि कृपाकरि आपु हाथ सों चमर लियो ॥ मात पिताको संकट हरिहैं देवन जै ध्वनि शब्द सुनायो । रानी सबै मरत ते राखीं उनते प्रभु नाहिं और वियो ॥ अवहिं सुनी वसुदेव देवकी हरपित ह्वैहै दुहुनि हियो । सूरदास प्रभु आइ मधुपुरी दरशनते पुरलोग जियो॥रामकली॥मथुराके लोगन सुखपाए। नटवर भेप काछनी काछे नँदनंदन सँग अक्रूर के आए ॥ प्रथमहि रजकमारि अपनेकर गोपवृंद पहिराए। तोरि धनुप लीला नटनागर तव गजखेल खिलाए॥रंगभूमि मुष्टिक चाणूर हति भुजवल तार वजाए । नगरनारि देहिं गारि कंसको अजगुत युद्ध वनाए ॥ वरपहिं सुमन अकाश महाध्वनि देव दुंदुभी वजाए । चढि चढि अमर विमान परमसुख कौतुक अंमर छाए ॥ कंस मारि सुरराज काज करि उग्रसेन शिरनाए। मात पिता वंदिते छोरिहैं सूर सुयश गुणगाए॥१९॥रामकली॥मथुरा घर घरनि यह वात। रजक धनुप गज मल्लमारे तनकसे नँदतात ॥ धन्य माता पिता धनि वह धन्य धनि वह राति। जव लियो अवतार धरणी धनि धन्य धनि सो भाति॥हंसकेसे जोट दोऊ असुर कियो निपात। सूर जोधा सबै मारे कहा जानत घात२०॥अध्यायः॥ ४५ ॥ वसुदेवदर्शन कुबिजा गृह आगमन नंदविदा गुरुपुत्र हेतुः ॥

सुन्यो वसुदेव दोउ नंद सुवन आए। त्रियासों कहत कछु सुनति हैरी नारि रातिहू सुपन कछू ऐसे पाए ॥ गए अक्रूर तिहि नृपाति माँगे वोलि तुरत आए आनि कंस मारे। कहा पिय कहत सुनिहै वात पौरिया जाय कैहे रहौ मष्टधारे ॥ दिये लोचन ढारि नारि पाति परस्पर कहा हम पाप करि जन्म लीन्हों । सात देखत वधे एक व्रज दुरिवच्यो इते पर वांधि हम पंगु कीन्हों ॥ मारि डारै कहा वंदिको जीवनधृग मीच हमको नहीं मनन भूल्यो । मरै वह कंस निर्वंस विधना करै सूर क्योंहू होइ निर्मूल्यो॥२१॥जैतश्री॥इहै कहत वसुदेव त्रिया जिनि रोवहु हो । भाग्य विवस सुख दुःख सकल जग जोवहु हो ॥ जलदीन्हे कर आनि कहत मुख धोवहु नारी । कहियतहै गोपाल हरन दुख गर्वप्रहारी ॥ कवहुँ प्रगट वै होइँगे कृष्ण तुम्हारे तात । आजु कालिह हरि आइहैं यह सपनेकी वात ॥ अंवं जिनि होहि अधीर कंस यम आइ तुलानों । देखत जाइ विलाइ झार तिनुका करि जानो ॥ ऐसो सपनो मोहिं भयो त्रिया सत्यकरि मानि । त्रिभुवनपतिं तेरे सुवनहैं तोहिं मिलैंगे आनि ॥ यहि अंतर हरि कह्यो मात पितु कहां हमारे । तहां लैगए अक्रूर श्याम वलराम पधारे ॥ वज्र शिला द्वारे दियो दरशन ते गयो छूटि । सहज कपाट उघरिगए ताला कूंची टूटि ॥ जो देखे वसुदेव कुँवर दोउ काके ढोटा ए आए । दरश दियो तेहि प्रेम प्रथम जो दरश दिखाए ॥ धाइ मिले पितु मातको यह कहि मैं निजुतात । मधुरे दोउ रोवन लगे जिनि सुनि कंस डरात ॥ तुरत वंदिते छोरि कह्यो मैं कंसहि मारयो । योधा सुभट संहारि मल्ल कुवलया पछारयो ॥ जिय अपने जिनि डरकरौ मैं सुत तुम पितु मात । दुख विसरौ अव सुख करौ अव काहे

पछतात ॥ निहचै जननी जानि कंठधारि रोवन लागी । तब बोले बलराम मातु तुमते को भागी ॥ बारबार देवै कहै कबहूं गोद खिलाए नाहिं । द्वादश बरस कहांरहे मात पिता बलि जाहिं ॥ पुनि पुनि बोधत कृष्ण लिखो नाहिं मेटै कोई । जोइ जोइ मनकी साध कहौ मैं करिहौं सोई । जे दिन गए सु ते गए अब सुख लूटहु मात ॥ तात नृपति रानी जननि जाके मोसों तात । जो मन इच्छा होइ तुरत देओं मैं करिहौं ॥ गगन धरणि पाताल जात कतहू नहिं डरिहौं । मात हृदयकी जब कही तब मन बढ्यो आनंद॥महर सुवन मैं तौ नहीं मैं वसुदेवको नंद।राजकरौ दिन बहुत जानिको कहैं अब तुमको॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि देहुं मथुरा घर घरको । रमा सेवकिनी देउँ करि करजोरैं दिन याम॥अब जननी दुख जिनि करौ करौ जु पूरन काम।धनि यदुवंशी श्याम चहुं युग चलत बड़ाई । शेषरूप मैं राम कहत नहि बात बनाई॥सूरज प्रभु दनु कुल दहन हरन करन संसार ॥ ते पाए सुत तुमहि करि करौ जु सुख विस्तार ॥२२॥ देवगंधार ॥ मेरे माथे राखो चरन । दीन दयालु कंस दुखभंजन उग्रसेन दुखहरन ॥ परम मुदित वसुदेव देवकी गई पाइन परन । मेरो दोष मेटि करुणा करि लैचल गोकुल धरन ॥ ते जन पार भए मनमोहन जे आए तुव शरन । आए सूरदासके जीवन भवजल नवका तरन ॥ रामकली ॥ तब वसुदेव हरषित गात श्याम रामहि कंठ लाए हरषि देवै मात । अमर देव दुंदुभि शब्द भयो जैजैकार ॥ दुष्टदलि सुख दियो संतन ए वसुदेवकुमार । दुखगयो बहि हरष पूरन नगरके नर नारि ॥ भयो पूरव फल सँपूरन लह्यो सुत दैतारि। तुरत विप्रन बोलि पठए धेनु कोटि मँगाइ।सूरके प्रभु ब्रह्म पूरण पाइ हरषे राइ॥२३॥काफी॥ आजुहो निसान बाजै वसुदेव राइकै । मथुराके नर नारि उठे सुखपाइकै ॥ अमर विमान सब कहैं हरषाइकै । फूले मात पिता दोऊ आनंद बढाइकै ॥ कंसको भँडार सब देत हैं लुटाइकै । धेनु जे संकल्प राखीं लई ते गनाइकै ॥ ताँबे रूपे सोने साजि राखीं वैं बनाइकै । तिलक विप्रन बंदि दई वै दिवाइकै । मागध मंगन जन लेत मनभाइकै ॥ अष्टसिद्धि नवनिधि आगे ठाढी आइकै । सब पुर नारि आई मंगलन गाइकै ॥ अंबर भूषण पठै दई पहिराइकै । अखिल भुवन जन कामना पुराइकै पुर जन धनु देतहैं लुटाइकै ॥ सूर जन दीन द्वारे ठाढो भयो आइकै । कछू कृपाकरि दीजै मोहूकौं दिवाइकै॥२४॥ यज्ञ उपवीतउत्सव ॥ बिलावल॥बिसऱ्यो कुल व्यवहार विचार। हरि हलधर को दियो जनेऊ करि षटरस जेवनार ॥ जाके श्वास उसास लेतमें प्रगटभए श्रुति चार । तिन गायत्री सुने गर्गसों प्रभु गति अगम अपार ॥ विधिसों धेनु दई बहु बिप्रन सहित सर्व लंकार । यदुकुल भयो परम कौतूहल जहां तहां गावत नरनार ॥ मातदेवकी परम मुदितह्वै देत निछावर वारंवार । सूरदासकी इहै अशीशहै चिरंजीवो दोउ नंदकुमार ॥२५॥ धनाश्री ॥ आजु परम दिन मंगल कारी । लोक लोक को टीको आयो मुदित सकल नर नारी ॥ शिव सुरेश शेष औरबहुको गनै चतुरानन करतारी । हरकर पाट बंध नेवछावरि करत रतन पटसारी॥ बाजत ढोल निसान शंख रव होत कुलाहल भारी ।अपने अपने लोक चले सब सूरदास बलिहारी ॥२६॥बिलावल॥ जब यदुपति कुल कंसहि माऱ्यो । तिहूँ भुवन भयो सोर पसाऱ्यो ॥ तुरत माचते धरनि गिरायो । ऐसेहि मारत विलम न लायो ॥ केश गहे पुहुमी घिसटायो । डारि यमुनके बीच बहायो ॥ जा कंसहि तिहुं भुवन डराई । ताकों माऱ्यो हलधर भाई ॥ जाके धनुष टकोरत हाथा । आसन छांडि भजे सुरनाथा ॥ मारत ताहि बिलंब न कीन्हों । उग्रसेनको राजस दीन्हों ॥ जैहो जै वसुदेव कुमारा । जै हो जै तुम नंद दुलारा ॥ सुर देवी देवै धनि मैया । धन्य

यशोमति त्रिभुवनपति धैया ॥ धन्य अक्रूर मधुपुरी लाए । सुर अंमर जे जे ध्वनि गाए ॥ दनुज वंश निरवंश कराए । धरनी शिरते भार गँवाए ॥ मात पिता वंदिते छोराए । यह वाणी सुरलोकनि गाए ॥ जो जैसे तैसे तेहि भाए । सूरज प्रभु सबको सुखदाए॥२७॥ धनाश्री ॥ मथुरा दिन दिन अधिक विराजे । तेज प्रताप राइ केशोको तीनिलोक पर गाजे ॥ कोटिक तीरथ पग पग जाके मधु विश्रात विराजे । करि स्नान प्रात यमुनाको जियत मरत भै भाजे॥श्रीविट्ठल विपुल विनोद विहारन व्रजको वसिवो छाजे । सूरदास सेवक उनहीको कहत सुनत गिरिराजे॥२८॥ कंस मारि सुरकारज किए । माता पिता वंदिते छोराए दुख बिसरयो आनंद दिए ॥ उग्रसेनको धाइ मिले हरि अभय अचल करि राज्य दियो । असुर वंश निरवंश छिनकमें ऐसो नहिं कोउ और वियो ॥ मिली कूबरी चंदन लैके ऐसेहि हरिको नाम लियो । सुनहु सूर नृप पास जाति हे बीच सुकृति अति दरश दियो॥२९॥ रामकली॥ कूबरी पूरव तपकरि राख्यो । आए श्याम भवन ताहिकि नृपति महल सब नाख्यो ॥ प्रथमहि धनुष तोरि आवतहैं बीच मिली यह धाइ । तेहि अनुराग वश्य भए ताके सो हित कह्यो नजाइ ॥ देवकाज करि आवन कहिगए दीन्हों रूप अपार । कृपादृष्टि चितवतही श्रीभई निगम न पावत पार ॥ हमते दूरि दीनके पाछे ऐसे दीनदयाल । सूर सुरन करि काज तुरतहीं आवत तहां गोपाल॥३०॥ कियो सुरकाज गृह चले ताके । पुरुष अरु नारिको भेद भेदा नहीं कुलिन अकुलीन आवत हो काके ॥ दास दासी श्याम भजनते हूजिए रमा सम भई सो कृष्ण दासी । मिली वह सूर प्रभु प्रेमचंदन चरचिके मनो कियो तप कोटि कासी ॥३१॥ ॥ रामकली ॥ भक्त वछल श्रीयादव राई । गेह कूवरीके पगधारे जाति पांति विसराई ॥ पूरव भाग मानि तिन अपने चरण गही उठि धाइ । सुरति रही नहिं गेह देहकी आनँद उर नसमाइ ॥ प्रभु गहि बांह पास बैठारी सो सुख कह्यो नजाइ । सूरदास प्रभु सदा भक्तवश रंक न गनहि न राइ ॥ ३२ ॥ रागनट ॥ कुविजा सदन आए श्याम । कृपा करि हरि गए प्रथमहि भई अनूपम वाम ॥ प्रीतिके वश दीनबंधु सुभक्तवत्सल नाम । मिली मारग मलय लैकरि भए पूरण काम ॥ उर्वसी पटतरहि नाहीं रमाकें मनताम । सूर प्रभु महिमा अगोचर वसे दासी धाम ॥३३॥ धनाश्री॥कुविजा हरिकी दासी आहिजिसे आपु भाजि गोकुलरहे तैसे राखी ताहि॥रूप रतन दुराइहो राख्यो जैसे नली कपूर।जैसे छाप अमोल रतन भरि कह जानै जो क्रूर॥वैसेहि रही कूबरीदासी अविनाशी की आहि॥सूरदास प्रभु कंस मारिके लई आनि तिहि चाहि॥३४॥ मथुराके नर नारि कहैं।कहा मिली कुविजा चंदनलै कहा श्याम तेहि कृपा चहे ॥ कहा तपस्या करि यह राख्यो जहां तहां पुर इह चहे । कछु नहिं कहि आवत हरि देखी इहै कह्यो प्रभु हेत वहे । तबहिं कृपाकरि सुंदरि कीन्ही यह महिमा मोहि कहत न आवे । सूरदास भाग कूबरीको कौन ताहि को पटतर पावे ॥ ३५ ॥ कुविजासी भागिनिको नारी । कंसहि चंदन लिए जातही बीच मिले ताको देतारी ॥ हरि करि कृपा करी पटरानी कुविज मिटायो डारि । इहई बात मधुपुरी जहँ तहँ दासी कहत डरत जिय भारि ॥ कुविजा कहत न भूल्यो कोऊ ताहि उठत देंदें सब गारि । सुनहु सूर रानी सुनि पावै त्रास होत जिन मारै डारि॥३६॥ धनाश्री॥कुविजा तो बडभागी है॥करुणाकरि हरि जाहि निवाजी आपु रहे तहँ राजी है ॥ पूरव तप फल विलसन लागी मनके भाव पुरावति है । जे जे मथुरा नर नारिन मुख बानि रह्यो जहँ तहँ जे जे है॥दैत्य विनाशि तुम तहां आए यह लीला जानै पै वैसूरदास प्रभु भावहिके वश मिलत कृपाकें अति सुख देवै॥३७॥ श्रीशुकदेव वचन राजा प्रति ॥ रामकली॥हरिकी कृपा

जापर होइ। ताहि कछु यह बहुत नाहीं हृदय देखो जोइ॥कहा संशय करत याको कितिकहै यह बात। असुर सैन्य सँहारि डारे भक्तजनसों नात ॥ हरन करन समरथ येईहैं कहौं बारंबार। सूर हरिकी कृपाते खल तरिगए संसार॥३८॥कंसवधलीला दूसरी ॥ बिलावल॥कृष्ण कृपा सबहीते न्यारी॥कोटि करै तप नहीं मुरारी ॥ भाव भजन कुबिजा भई प्यारी। दनुज भाव बिनु मारे डारी॥ प्रथमहि रजक मारि पुरआए। धनुषयज्ञ कहँ कंस बोलाए॥तोरिकै दंड वीर सब मारे। हित कुबिजा के धाम सिधारे॥ रूपराशि निधि ताको दीन्हों। आवन कह्यो गमन तब कीन्हो॥ तहां कुवलिया राख्यो द्वारे। जात श्याम बलराम विचारे ॥ माली मिल्यो माल पुहुप लैकै। लीन्हों कंठ श्याम अति रुचिकै॥मनकामना तुरत फल पायो॥कोटि कोटि मुख स्तुति गायो॥आतुर गयो कुवलिया पासा। सूरज चंद्र धराणि परगासा॥ बालक देखि महावत हरष्यो। कान्ह पूंछ धरि तुछकरि परष्यो॥ कौतुक करि मतंग तब मारयो। गहि पटक्यो तनु नेक न टारयो॥ दुहुँन एक इक दंत उपारयो। जहां मल्ल तहँको पग धारयो॥ देखत रूप त्रास जिय आन्यो। मन मन काल आपनो जान्यो॥ तब कोमल दरशे यदुराई। तुरत गए आगे सब धाई॥ मारे मल्ल एक नाहिं उबरयो। पटकत धरणि नृप श्रवणन धुमरयो॥ क्रोध सहित तब कंस प्रचारयो॥ताहि प्रगटि तुरतहिं तेहि मारयो॥ अमर नाग नर कहि कहि भाखै॥सदा आपने जनको राखै॥ राजा उग्रसेन कहवाए॥मात पिता वंदिते छोराए॥ इतने काज किए हरि नीके। कुबिजा प्रेम बँधे हरि हीके॥ आतुर हरि ताके गृह आए। रानिन बोधि महल नाहिं भाए॥ चितवत मंदिर भए अवासा। महल महल लाग्यो मणि पासा॥ जबहिं सुने कुबिजा हरि आए। पाटम्बर पांवडे डसाए॥ कुबिजा ते भई राजकुमारी। रूप कहा कहौं कृष्ण पियारी॥ टेढी जे हरि सूधी कीन्हीं। लक्षण अंग अंग प्रति दीन्हीं॥ राजा हरि कुबिजा पटरानी। मथुरा घर घर सबही जानी ॥ गोप सखा यह सुनत न माने। त्रासहि में सब रहत सकाने॥मारयो कंस सुनत सबसके। बलमोहन आए नाहिं दके॥ व्रजते चले भए षट यामा। व्याकुल महरि होति लैनामा॥प्रजा जानि मन मन डरपाही॥कैसे बल मोहन व्रज जाहीं॥ यहि अंतर हरि आए तहँई। नंद गोप सब राखे जहँई॥ नृप उद्धव अक्रूरहि लीन्हों॥ तहां गवन प्रभु सूरज कीन्हों॥३९॥ बिलावल॥ यदुवंशी कुल उदित कियो॥कंस मारि पुहुमी उद्धारी सुरन कियो निर्भय हियो॥घर घर नगर अनंद बधाई मन वंछित फल सबनि लह्यो। निगड तोरि मिलि मात पिता को हरष अनल करि दुखहि दह्यो॥ उग्रसेन मथुरा करि राजा ऐसे प्रभु रक्षक जनको। कहुँ जनमें कहुँ कियो पान पय राखि लेत भक्तन पनको ॥ आपुन गए नंद जहँ बासा हलधर अग्रज संग लिए। सूर मिले नंद हरषवंत ह्वै व्रज चालि है अति हरष हिए ॥ ४० ॥ अरस परस सब ग्वाल कहैं। जब मारयो हरि रजक आवतही मन जान्यो हम नाहिं निबहैं॥ वैसो धनुष तोरि सब योधा तिन मारत नहिं बिलम करयो। मल्ल मतंग तिहूंपुर गामी छिनकाहि में सो धरणि परयो ॥ वैसे मल्लनि दाँव बिसारे मारि कंस निरवंश कियो। सुनहु सूर येहैं अवतारी इनते प्रभु नहिं और बियो॥ ४१॥ नंद गोप सब सखा निहारत यशुमति सुतको भावनही । उग्रसेन वसुदेव उपंगसुत सुफलकसुत वैसे संगही। जबहीं मन न्यारो हरि कीन्हों गोपन मन इह व्यापि गई। बोलि उठे यहि अंतर मधुरे निठुर ज्योति जो ब्रह्ममई ॥ अति प्रतिपाल कियो तुम हमरो सुनत नंद जिय झझकि रहे। सूरदास प्रभुकी लीला यह वसुदेवसों की मोसों वचन कहे ॥ ४२ ॥ बिलावल॥ काहि कहत प्रतिपाल

कियो । मोसों कहत होहि जिनि ऐसी नैन ढरत नाहिं भरत हियो ॥ संकितनंद विरसवानी सुनि विलम करत कहा क्यों न चलैं । कंसमारि रजधानी दीन्ही व्रजते बहुरी आनि मिलैं ॥ मनहीं मन ऐसी उपजावत वै उत ब्रह्म ब्रह्म दरसी।सूर पिताको मात कौनके रहत सवन में वै परसी॥४३ तब बोले हरि नंदसों मधुरे करि बानी । गर्गवचन तुमसों कही नाहिं निहचै जानी ॥ मैं आयो संसारमें भुवभार उतारन । तिनको तुम धनि धन्यहौ कीन्हों प्रतिपारन ॥ मात पिता मेरे नहीं तुमते अरु कोऊ । एक बेर व्रजलोगको मिलिहौ सुनौ सोऊ ॥ मिलन हिलन दिनचारिको तुम तो सब जानौं । मोको तुम अति सुखदियो सो कहा बखानौं ॥ मथुरा नर नारी सुनैं व्याकुल व्रजवासी।सूर मधुपुरी आइकै ये भए अविनासी ॥४४॥ टोडी ॥ निठुर वचन जिनि कहौ कन्हाई । अतिही दुसह सह्यो नहिंजाई ॥ तुम हँसिकै बोलत ए बानी । मेरे नयन भरत है पानी ॥ अब ए बोल कबहुँ जिनि बोलौ । तुरत चलौ व्रज आँगन डोलौ ॥ पंथ निहारत यशुमति ह्वैहै । तुमविन मोको देखि सुखैहै ॥ तब हलधर नंदहि समुझावत । कछु करि काज तुरत व्रज आवत ॥ जननि अकेली व्याकुल ह्वै है । तुमहिं गए कछु धीरज लैहै ॥ बहुत कियो प्रतिपाल हमारो । जाइ कहां उरध्यान तुम्हारो ॥ व्याकुल होन जननि जिनि पावै । बार बार कहि कहि समुझावै ॥ व्याकुल नंद सुनत ए बानी । डसि मानौं नागिनी पुरानी ॥ व्याकुल सखा गोप भए व्याकुल । अंतकदशा भयो भय आकुल॥सूरश्याम मुख निरखत ठाढे॥मानौं चितेरे लिखि सब काढे ॥४५॥ राग सोरठ ॥ गोपालराइ हौं न चरन तजि जैहौं । तुमहिं छांडि मधुवन मेरे मोहन कहा जाइ व्रज लैहौं ॥ कैहौं कहा जाइ यशुमतिसों जब सन्मुख उठि ऐहै । प्रातसमय दधि मथत छाँडिकै काहि कलेऊ दैहैं ॥ बारह वर्ष दयो हम ठाढो यह प्रताप विनुजाने । अब तुम प्रगट भए वसुदेव सुत गर्गवचन परमाने॥ कत हम लागि महारिपु मारे कत आपदा विनासी । डारि नदियो कमल करते गिरि दवि मरते व्रजवासी ॥ बासर संग सखा सब लीन्हें टेरि न धेनु चरैहौ । क्यों रहि हैं मेरे प्राण दरश विनु जब संध्या नाहिं ऐहौ ॥ अब तुम राज्य करौ कोटिक युग मातपिता सुख देहौ । कबहुँक तात तात मेरे मोहन या मुख मोसों कैहौ ॥ ऊरध श्वास चरण गति थाक्यो नैनननीर न रहाइ । सूरनंद विछुरेकी वेदन मोपै कहिय न जाइ ॥४६॥ बिलावल ॥ वेगि व्रजको फिरिये नंदराइ।हमहिं तुमहिं सुत तातको नातो और पर्यो है आइ ॥ बहुत कियो प्रतिपाल हमारो सो नहिं जीते जाइ।जहां रहैं तहँ तहां तुम्हारे डारौ जिनि बिसराइ॥माया मोह मिलन अरु विछुरन ऐसेही जगजाइ।सूरश्यामके निठुर वचन सुनि रहे नयन जल छाइ ॥४७॥ नट ॥ यह सुनि भए व्याकुल नंद । निठुर वाणी कही जब हरि परि गए दुखफंद ॥ निरखि मुख मुख रहे चकृत सखा अरु सब गोप । चरित ए अक्रूर कीन्हें करत मन मन कोप ॥ धाइ चरणन परे हरिके चलहु व्रजको श्याम । कंस असुर समेत मारे सुरनके कारि काम ॥ मोचि वंदन राजदीनों हर्ष भए वसुदेव । सूर यशुमति विनु तुम्हारे कौन जाने देव ॥ ४८ ॥ राग सोरठ ॥ नंद विदा ह्वै घोप सिधारौ । विछुरन मिलन रच्यो विधि ऐसो यह संकोच निवारौ ॥ कहियो जाइ यशोदा आगे नैन नीर जिनि ढारौ । सेवा करी जानि सुत अपने कियो प्रतिपाल हमारो ॥ हमैं तुम्हे कछु अंतर नाहीं तुम जिय ज्ञान विचारौ । सूरदास प्रभु यह विनती है उर जिनि प्रीति बिसारौ ॥ ४९ ॥ राग सोरठ ॥ मेरे मोहन तुमहिं विना नहिं जैहौं । महरि दौरि आगे जब ऐहै कहा ताहि मैं कैहौं ॥ माखन मथि राख्यो ह्वैहै तुम हेतु चलौ मेरे बारे । निठुर भए मधुपुरी आइकै काहे असुरन मारे ॥ सुख पायो वसुदेव देवकी अरु सुख सुरन

दियो। यहै कहत नँदगोप सखा सब विदरन चाहत हियो ॥ तब माया जडता उपजाई ऐसो प्रभु यदुराई । सूर नंद परबोधि पठावत निठुर ठगोरी लाई ॥ ५० ॥ नट ॥ नंदहि कहत हरि ब्रज जाहु । कितिक मथुरा ब्रजाहि अंतर जिय कहा पछिताहु ॥ कहा व्याकुल होत अतिहीं दूरिहूं कहुँ जात । निठुर उरमें ज्ञान वरत्यो मानि लीन्हों बात ॥ नंद भए कर जोरि ठाढे तुम कहे ब्रज जाउ । सूर मुख यह कहत वाणी चित नहीं कहुँ ठाउ ॥५१॥बिलावल॥ तुम मेरी प्रभुता बहुत करी । परम गँवार ग्वाल पशुपालक नीच दशालै उच्चधरी ॥ रोग दोष संताप जनमके प्रगट तही तुम सबै हरी । अष्ट महासिधि और नवो निधि कर जोरे मेरे द्वार खरी ॥ तीनिलोक अरु भुवन चतुर्दश वेद पुराण नसही परी । सूरदास प्रभु अपने जनको देत परमसुख घरी घरी ॥ ॥५२॥ रामकली ॥ उठे कहि माधौ इतनी बात । जेते मान सेवा तुम कीन्हीं बदलो दयो नजात॥पुत्र हेतु प्रतिपाल कियो तुम जैसे जननी तात । गोकुल वसत खवावत खेलत दिवस न जान्यो जात॥ होहु विदा घरजाहु गुसाईं माने रहियो नात । ठाढो थक्यो उतर नहिं आवै लोचन जल नसमात॥ भए बलहीन खीन तनुकंपित ज्यों बयारि वशपात।धकधकात मन बहुत सूर उठि चले नंद पछिता त ॥५३॥रागनट॥ फिरिकरि नंदन उत्तर दीन्हों।रोम रोम भरिगयो वचन सुनि मनहुँ चित्र लिखि कीन्हों॥ यहतो परंपरा चलि आई सुख दुख लाभ अरु हानि।हम पर बचा मया करिए रहियो सुत अपनो जिय जानि ॥ को जलपै काके पल लागे निरखि वदन शिरनायो । दुखसमूह हृदय परि पूरण चलत कंठ भरि आयो ॥ अध अध पद भुव भई कोटि गिरि जौलगि गोकुल पैठो । सूरदा स अस कठिन कुलिशहुते अजहुँ रहत तनु बैठो ॥५४॥रागधनाश्री॥चले नंद ब्रजको समुहाइ।गोप सखा हरि बोधि पठाए सबै चले अकुलाइ ॥ काहू सुधि नरही तबकी कछु लटपटात परे पाँइ। गोकुल जात फिरत पुनि मधुवन मन पुनि उतहि चलाइ ॥ विरह सिंधुमें परे चेत विनु ऐसेहि चले वहाइ।सूरश्याम बलराम छाँडिकै ब्रज आये नियराइ ५५॥भैरव॥बार बार मग जोवति माता।व्याकुल विन मोहन बल भ्राता ॥ आवत देखि गोप नंद साथा। विवि बालक विनु भई अनाथा ॥ धाई धेनु वच्छा ज्यों ऐसे । माखन विना रहैं धौं कैसे ॥ ब्रजनारी हरषित सब धाई । महरि जहां तहँ आतुर आई ॥ हरषित मात रोहिणी धाई । उर भरि हलधर लेहुँ कन्हाई ॥ देखे नंद गोप सब देखे। बल मोहनको तहां न पेखे॥आतुर मिलन काज ब्रजनारी।सूर मधुपुरी रहे मुरारी५६॥अथ नंद ब्रजआगमन यशोदा वचन नंद मति ॥ सोरठ ॥ नंदहि आवत देखि यशोदा आगे लैनगई । अति आतुर गति कान्ह लैनको मनआनंद भई ॥ कहां नवनीत चोर छांडे मेरे देखत नारिनई । तेहि खन चोष सरोवर मानों पुरइनि हेम मई ॥ गर्ग कथा तब कहि जु सुनाई सो अब प्रगट भई । सूर मोहिं फिरि फिरि आवत गहि झगरत नेतरई ॥५७॥कल्याण॥ श्याम राम मथुरा तजि नंद ब्रजाहि आए।बार बार महरि कहति जनम धृग कहाए ॥ कहूं कहति सुनी नहीं दशरथकी करनी । यह सुनि नंद व्याकुल ह्वै परे मुरछि धरनी ॥ टेरि टेरि पुहुमी पराति व्याकुल ब्रजनारी । सूरज प्रभु कौन दोष हमको जु विसारी॥५८॥सारंग॥ उलटि पग कैसे दीन्हों नंद । छाँडे कहां उभय सुत मोहन धृगजीवन मति मंद ॥ कै तुम धन यौवन मदमाते कै तुम छूटे वंद । सुफलक सुत वैरी भयो हमको लै गयो आनँदकंद।राम कृष्ण विन कैसे जीजै कठिन प्रीतिके फंद । सूरदास प्रभु भई अभागिनि तुमविनु गोकुलचंद५९॥मलार॥दोउ ढोटा गोकुलनायक मेरे।काहे नंद छांडि तुम आए प्राणजीवन सब केरे॥ तिनके जात बहुत दुखपायो रौरि परी यहि खेरे। गोसुत गाइ फिरतहैं दहदिश बने चरित्र न थोरे॥

प्रीति नकरी राम दशरथकी प्राण तजे विन हेरे।सूरनंदसों कहति यशोदा प्रबल पाप सब मेरे।६०
॥ विहागरो ॥ यह गति करत नंद नहिं छाजी। हरि विन विकल भयो नगयो मरि कुल कुठार जननी कतलाजी॥राम कृष्ण ताजि गोकुल आए छतियां क्षोभरही क्यों साजी । कहा अकाज भयो दशर थको लइ जुगयो अपनी जगवानी॥वातैंपै रहि रहति कहनको सब जग जात कालकी खाजी। सूर यशोदा कहति सुधृग मति जो गिरिधरन विमुखह्वै भाजी॥६१॥सोरठ॥यशोदा कान्ह कान्हकै बूझै। फूटि नगई तिहारी चारो कैसे मारग सूझै॥इक ततु जरोजात विन देखे अब तुम दीने फूका यह छ तियाँ मेरे कुँवर कान्ह विनु फटि नगए द्वैटूक॥धृग तुम धृग वै चरण अहोपति अधवोलत उठिधाए। सूरश्याम विछुरनकी हमपैं देन वधाई आए ॥ ६२ ॥ नंदहरि तुमसों कहा कह्यो। सुनि सुनि निठुर वचन मोहनके क्यों करि हृदय रह्यो ॥ छाँडि सनेह चले मंदिर कत दौरि नचरन गह्यो । फाटि नगई वज्रकी छाती कत यहि शूल सह्यो ॥ सुरति करत मोहनकी बातैं नैनन नीर बह्यो। सुधि नरही अति गलित गात भयो जनु डसिगयो अह्यो ॥ कृष्ण छांडि गोकुल कत आए चाखन दूध दह्यो। तजे न प्राण सूर दशरथलौं हुतौ जन्म निबह्यौ ॥ ६३ ॥ मेरो अति प्यारो नँदनंद । आए कहां छांडि तुम उनको पोचकरी मतिमंद ॥ वल मोहन दोउ पीड नयनकी निरखतही आनंद। सरवर घोप कुमोदिनि ब्रजजन श्याम वदन विनचंद ॥ काहे नपाँइ परे वसुदेवके घालि पाग गरे फंद।सूरदास प्रभु अवके पठवहु सकल लोक मुनिवंद६४॥ अथनंदवचन यशोदामति॥ रामकली ॥ तव तू मारिवोई करति । रिसनि आगे कहि जो आवति अवलै भांडे भरति ॥ रोसकै कर दाँवरी लै फिरति घर घर धरति । कठिन हिय करि तव जो बांध्यो अव वृथा करि मराति ॥ नृपति कंस बुलाइ पठयो वहुतकै जिय डरति।इह कछू विपरीत मोमन मांझ देखी परति।होनहारी होइहै सोइ अव यहां कत अरति।सूर तव किन फेरि राखे पाइ अव केहि पराति ॥ ६५॥ यशोदा वचन नंदमति ॥ अडानो ॥ कहा ल्यायो ताजि प्राणजीवनधन । रामकृष्ण कहि मुरछि परी धर यशोदा देखत लो गन ॥ विद्यमान हरि वचन श्रवणसुनि कैसे गए न प्राणछूटि तन । सुनि यह कथा दशरथकी तऊ नहिं लाज भई तेरे मन॥मंद हीन अति भयो नंदअति होत कहा पिछताने छिन छिन। सूर नंद फिरि जाहु मधुपुरी ल्यावहु सुत करि कोटि जतन ॥६६॥ समूहब्रजलोग वचन ॥ केदारो ॥कहो नंद कहां छाँडे कुमार। कैसे प्राण रहे सुत विछुरत पूछैं गोपी ग्वार ॥ करुणा करै यशोदा माता नैन न नीरवहै असरार। चितवत नंद ठगेसे ठाढे मानो हारचो हेम जुआर॥मुरली नाहिं सुनिअत ब्रजमें सुर नर मुनि नहिं करतह्वै वार।सूरदास प्रभुके विछुरेते कोऊनहीं झांकते द्वार॥६७॥ अथ ग्वालवचन रागनट ॥ ग्वालन कही ऐसी जाइ। भए हरि मधुपुरी राजा वड़े वंश कहाइ ॥ सूत मागध वदत विरदहि वरणि वसुद्यो सात । राजभूपण अंग भ्राजत अहीर कहत लजात ॥ मात पितु वसुदेव देवै नंद यशुमति नाहिं । यह सुनत जल नैन ढारत मीजि कर पछिताहिं ॥ मिली कुबिजा मलै लैकै सो भई अरधंग । सूर प्रभु वशभए ताके करत नानारंग ॥६८॥ अथ गोपीवचन कुबिनामति परस्पर तरक वदत॥ गौरी ॥ कुबिजा मिली कहो यह वात । मात पिता वसुदेव देवकी मन दुख सुख हरपात ॥ सुंदरि भई अंगपरसतहीं करी सुहागिनि भारी । नृपति कान्ह कुबिजा पटरानी हँसति कहति ब्रजनारी ॥ सौतिशाल उरमें अतिशाल्यो नखशिख लौं भहरानी। सूरदास प्रभु ऐसेई माई कहति परस्पर वानी ॥६९॥ कल्याण ॥ कुबिजाको नाम सुनत विरह अनल जूडी। रिसन नारि झहरि उठी क्रोध मध्य बूडी ॥ आवनकी आश मिटी ऊरध सब श्वासा।

कुविजा नृप दासी हम सबकरी निरासा ॥ लोचन जलधार अगम विरहनदी वाढी । सूरश्याम गुण सुमिरत बैठी कोउ ठाढी ॥७०॥ धनाश्री ॥ कुविजा श्याम सुहागिनि कीन्ही । रूप अपार जाति नहिं चीन्ही॥ आपु भए पति वह अरधंगी । गोपिन नाव धरचो नवरंगी ॥ वै वहु रवन नगरकी सोउ।तैसोइ संग वन्यो अब दोउ॥एक एकते गुणन उजागर । वह नागरि वैतौ अतिनागर॥वह जोइ कहत श्याम सोइ मानत।निशिदिन वाके गुणहि वखानत॥जानि अनोखी मनहि चोरावै । सूर प्रभू अब नहिं व्रज आवै ॥७१ ॥ रामकली ॥ कुविजा नई पाई जाइ । नवल आपुन बनी हवेली नगर रही खेलाइ ॥ दास दासी भाव मिलिगयो प्रेमते भए एक । निठुर ह्वै सखी गए हमते जानि साह अनेक ॥ लैन जब अक्रूर आयो तुरत लाग्यो कान । नई कुविजा उन सुनाई सूर प्रभु मन मान॥७२॥ धनाश्री ॥ कैसेरी यह हरि करिहै । राधाको तजिहैं मनमोहन कहा कंस दासी धरि है ॥ कहा कहति वह भई रानी वै राजा भए जाइ वहां । मथुरा वसत लखत नहिं कोऊ को आयो को रहत कहां ॥ लाजवेचि कूवरी विसाही संग न छांडत एक घरी । सूर ताहि परतीति नकाहू मनसि हात यह करनि करी॥७३॥कुविजा नाहिं तुम देखीहै । दधिवेचन जब जाति मधुपुरी मैं नीके करि पेखी है ॥ महल निकट मालीकी वेटी देखत जेहि नर नारि हँसैं । कोटि वार पीतरि ज्यों डाहौ कोटिवार जो कहा कसै ॥ सुनि यह ताहि सुंदरी कीन्ही आपु भए ताको राजी । सूर मिलै मन जाहि जाहिसों ताको कहा करै काजी ॥७४॥ कोटि करो तनु प्रकृति नजाइ । ए अहीर वह दासी पुरकी विधिना जोरी भली मिलाइ ॥ ऐसेनको मुख नाव न लीजे कहा करौं कहि आवत मोहिं । श्यामहि दोष किधौं कुविजाको इहै कहौ मैं बूझति तोहिं ॥ श्यामहि कहा दोष कुविजाको चेरी चपल नगर उपहास । टेढी टेकि चलत पग धरणी यह जानै दुख सूरजदास ॥७५ ॥ नट ॥ हरिही करी कुविजा ढीठ । टहल करती महल महलनि अब संग वैठी पीठ ॥ नेकही मुँहपाइ भूली अति गई इतराइ । जात आवत नहीं कोऊ इहै कहै पठाइ॥वे दिना गए भूलि तोको दिवस दशकी वात। सूर प्रभु दासी लोभाने व्रज वधू अनखात ॥ ७६॥ नट॥ देखो कूबरीके काम । अब कहावत पाटरानी बडे राजा श्याम ॥ कहत नहिं कोउ उनहि दासी वै नहीं गोपाल । वै कहावत राजकन्या वै भए भूपाल॥पुरुष केरी सबै सोहै कूबरी केहि काज।सूर प्रभुकी कहा कहिए वेचि खाई लाज॥७७ यह सुनि हमहिं आवति लाज । जाय मथुरा कंस मारचो कूवरीके काज ॥ लोग पुर में वसत ऐसेइ सबन इहै सोहात । कबहुँ कोऊ कहत नाहीं श्याम आगे वात ॥ कहा चेरी नारि कीन्ही कहा आपुन होत । तुम बडे यदुवंश राजा मिले दासी गोत ॥ अजहुँ कहै सुनाइ कोई करै कुविजा दूरि।सूरडाहनि मरत गोपी कूबरीके झूरि ॥७८॥ विलावल ॥ कंस वध्यो कुविजा के काज । और नारि हमको न मिली कहुँ कहा गँवाई लाज ॥ जैसे काग हंसकी संपाति लहसुन संग कपूर । जैसे कंचन कांच बरावरि गेरू काम सिंदूर ॥ भोजन साथ शूद्र ब्राह्मणके तैसोइ उनको साथ । सुनहु सूर हरि गाइ चरैया तौ भए कुविजा नाथ ॥७९॥ गौरी ॥ भामिनि कुविजासों रँग राते।राजकुमारि नारि जो पवते तौ कवहिन अंग समाते ॥ रीझे जाइ तनक चंदन लै मधुवन मारग जाते । ताकी कहा बडाई कीजै ऐसे रूप लुभाते ॥ ए अहीर वह कंसकी दासी जोरी करी विधाते । व्रजवनिता त्यागी सूरज प्रभु बूझी उनकी वाते॥८०॥ आसावरी ॥ वै कहा जानैं पीर पराई।सुंदर श्याम कमल दल लोचन हरि हलधरके भाई ॥ मुख मुरली शिर मोर पखैआ बन बन धेनु चराई । जे यमुना जलरंग रँगे हे ते व्रजहूं नहिं तजत कराई ॥ उहँई भूले देखि कूबरी हम सब गए विसराइ । सूर

चातकी बूंद भई हो हेरत हेरत रही हिराइ ८१॥जैतश्री॥सखीरी काके मीत अहीर।काहेको भरि भरि ढारति हौ इन नैन राहके नीर॥ आपुन पियत पियावत दुहि दुहि इन धेनुनके क्षीर। निशि वासर छिन नाहिं विसरतहै जो यमुनाके तीर॥ मेरे हियरे दौं लागतिहै जारत तनुकी चीर। सूरदास प्रभु दुखित जानिकै छांडि गए वे पीर॥८२॥अथ श्यामरंगको तरक वदति॥ मलार॥ सखीरी श्याम सबै इक सार। मीठे वचन सुहाये वोलत अंतर जारनहार॥ भवर कुरंग काग अरु कोकिल कपटिनकी चटसार। कमल नयन मधुपुरी सिधारे मिटि गयो मंगलचार॥ सुनहु सखीरी दोप न काहू जो विधि लिखो लिलार। यह करतूति इन्हैकी नाई पूरव विविध विचार॥ उमगी घटा नापि आवै पाव सप्रेम की प्रीति अपार।सूरदास सरिता सर पोपत चातक करत पुकार८३॥राग मलार॥सखीरी श्याम कहा हितु जानै।कोऊ प्रीति करै कैसेहूँ वे अपनो गुण ठानै॥देखो या जलधरकी करनी वरषत पोपै आनै।सूरदास सरवस जो दीजै कारो कृतहि न मानै॥८४॥सारंग॥ तिनहि न पतीजैरी जे कृतही न मानै ज्यों भँवरा रस चाखि चाहिकै तहां जाइ जहां नवतन जानै॥कोयल काग पालि कहा कीन्हों मिले कुलहि जब भए सयाने। सोई घात भई नंदमहरकी मधुवन तेजो आने॥ तबतो प्रेम विचार न कीन्हों होत कहा अबके पछिताने। सूरदास जे मनके खोटे अवसर परे जाहिं पहिचाने॥८५॥धनाश्री॥ तवते मिटे सब आनंद। या व्रजके सब भाग संपदा लैजु गए नँदनंद॥ विह्वल भई यशोदा डोलत दुखित नंद उपनंद। धेनु नहीं पय श्रवति रुचिर मुख चरति नाहिं तृण कंद॥ विषम वियोग दहत उर सजनी बाढिरहे दुखदंद। शीतल कौन करैरी माई नाहिं इहां हरिचंद॥रथ चढि चले गहे नाहिं काऊ चाहिरही मतिमंद। सूरदास अब कौन छोड़ावै परे विरहके फंद॥८६॥कान्हरो॥ अब वह सुरति होत कत राजनि। दिनदश रहे प्रीति करि स्वारथ हित रहे अपने काजनि॥ सबै अजान भए सुनि मुरली वधिक कपटकी वाजनि। अब मन थक्यो सिंधुके खग ज्यों फिरि फिरि शरन जहाजनि॥ वह नातो ता दिनते टूटचो सुफलकसुत मगभाजनि। गोपीनाथ कहाइ सूर प्रभु मार तहो कत लाजनि॥८७॥गौरी॥ व्रजरी मनो अनाथ कियो। सुनरी सखी यशोदानंदन सुख संदेह दियो॥ तव हम कृपा श्यामसुंदरकी कर गिरि टेकि लियो। अरु प्रति गाइ वच्छ ग्वालनको जल कालिंदी पियो॥ यह सब दोप हमहि लागत है विछुरत फटचो नहियो। सूरदास प्रभु नँदनंदन विनु कारण कौन जियो॥८८॥केदारो॥ अब तो हैं हम निपट अनाथ। जैसे मधु तोरेकी माखी त्यों हम विनु व्रजनाथ॥ अधर अमृतकी पीर मुई हम बालदशाते जोरि। सो छिडाय सुफलक सुत लैगयो अनायासही तोरि॥ जौलगि पानि पलक मीडत रही तौलगि चलि गए दूरि। करि निरंध निवहै दै माई आंखिन रथ पदधूरि॥ हम निशि दिन करि कृपणकी संपति कियो नकबहूं भोग।सूर विधाता लिखि राखी वह कुविजाके मुख भोग८९॥अथ नंद यशोदा वचन परस्पर॥ रामकली॥ इक दिन नंद चलाई वात। कहत सुनत गुण राम कृष्णके ह्वै आयो परभात॥ वैसेहि भोर भयो यशुमतिको लोचन जल नसमात। सुमिरि सनेह विहरि उर अंतर ढरि आवत ढरिजात॥ यद्यपि वै वसुदेव देवकी हैं निज जननी तात। वार एक मिलि जाहु सूर प्रभु धाइहूनके नात॥९०॥गौरी॥ चूक परी हरिकी सिवकाई। यह अपराध कहांलौं कहिए कहि कहि नंदमहर पछिताई॥ कोमल चरण कमल कंटक कुश हम उनपै वनगाइ चराई। रंचक दधिके काज यशोदा वाँधे कान्ह उलूखल लाई॥ इंद्र कोप जानि व्रज राखे वरुन फांस मान मेरी निठुराई। सूर अजहुँ नातो मानत है प्रेमसहित करै नंद दोहाई॥९१॥ रागसोरठ॥ हरिकी एकौ वात नजानी। कहौ कंत कहा

तज्यो श्यामको अतिहि विकल पूछति नँदरानी ॥ अब ब्रज सूनो भयो गिरिधर विनु गोकुल मणि विलगानी । दशरथ प्राण तज्यो छिन भीतर विछुरत सारंगपानी ॥ ठाढी रही ठगोरी डारी बोलत गदगद वानी । सूरदास प्रभु गोकुल तजि गए मथुराही मनमानी ॥९२॥ सारंग ॥ लै आवहु गोकुल गोपालहि । पाँइन परिकै बहु विनती करि बालि छलि वाह रसालहि॥ अबकी वार नैक देख रावहु यहि ब्रज नंद आपने लालहि । गाइन गनत ग्वाल गोसुत सँग सिखवत वेणु रसालहि॥यद्यपि महाराज सुख संपाति कौन गिने मोती मणि लालहि । तदपि सूर वे छिन न तजतहैं वा घुंघुँचीकी मालहि॥९३॥ सोरठ ॥सराहों तेरो नंद हियो । मोहन सों सुत छांडि मधुपुरी गोकुल आनि जियो॥ कहा कहौं मेरे लाल लडैते जव तू विदा कियो । जीवन प्राण हमारे ब्रजको वसुदेव छीनि लियो॥ कह्यो पुकारि पार पचिहारी वरजत गमन कियो । सूरदास प्रभु श्याम लाल धन लै परहाथ दियो ॥९४॥विलावल॥ यद्यपि मन समझावत लोग।शूलहोत नवनीत देखि मेरे मोहनके मुखयोग ॥ निशि बासर छतियाँ लै लाऊं बालक लीला गाऊं । वैसे भाग वहुरि फिरि ह्वैहैं मोहन मोद खवाऊं ॥ जाकारण मुनि ध्यान धरैं शिव अंग विभूति लगावै । सो वालकलीला धारि गोकुल ऊखल साथ बँधावै ॥ विदरत नहीं वज्रको हृदय हरि वियोग क्यों सहिए । सूरदास प्रभु कमल नैन विनु कौने विधि ब्रज रहिए॥९५॥कान्हरो॥ नंदब्रज लीजै ठोंकि वजाइ । देहु विदा मिलि जाहिं मधुपुरी जहँ गोकुलके राइ । नैनन पंथ गयो क्यों सूझ्यो उलटि दियो जब पाइ ॥ रघुपति दशरथ सुनीहै पर मरिवे गुण गाइ ॥ भूमि मशान विदित ए गोकुल मनहु धाइ धाइ खाइ । सूर दास प्रभु पास जाहिं हम देखैं रूप अघाइ॥९६॥सोरठ॥ माईहौं किन संग गई । हो ए दिन जानतही बूडी लोगनकी सिखई॥मोको वैरी भए कुटुंब सब फेरि २ ब्रज गाडी । जो हौं कैसेहु जान पावती तौ कत आवत छांडी ॥ अबहौं जाइ यमुनजल वहिहौं कहा करौं मोहिं राखी । सूरदास वा भाइ फिरतहौं ज्यों मधुतोरे माखी ॥९७॥मलार॥ हौं तौ माई मथुराही पै जैहौं । दासी ह्वै वसुदेव राइकी दरशन देखत रैहौं ॥ राखि राखि एते दिवस मोहिं कहा कियो तुम नीको । सोऊ तौ अक्रूर गए ले तनक खिलौंना जीको ॥ मोहिं देखिकै लोग हँसैंगे अरु किन कान्ह हँसै । सूर अशीश जाइ देहौं जिनि न्हातहु वार खसै ॥९८॥सारंग॥ पंथी इतनी कहियो बात । तुम विनु इहां कुँवर वर मेरे होत जिते उतपात॥ वकी अघासुर टरत नटारे बालक वनहिं नजात । ब्रजपिंजरी रूँधि मानो राखे निकसनको अकुलात॥गोपी गाइ सकल लघु दीरघ पीत वरण कृश गात । परम अनाथ देखियत तुम विनु केहि अवलंबिये प्रात॥कान्ह कान्ह कै टेरत तबधौं अब कैसे जिय मानत । यह व्यवहार आजुलौं है ब्रज कपट नाट छल ठानत॥दशहूं दिशिते उदित होतहै दावानलके कोट॥आँखिन मूँदे रहत सन्मुखहै नाम कवचदै ओट ॥ ए सब दुष्ट गते अरिजेते भट एकही पेट । सत्वर सूर सहाइ करौ अब समुझि पुरातन हेट॥९९॥सारंग॥ कहियो श्यामसों समुझाइ।वह नातो नहिं मानत मोहन मनौ तुम्हारी धाइ ॥ एक बार माखनके काजे राखे मैं अटकाइ । वाको विलग मानो जिनि मोहन लागत मोहिं वलाइ ॥ वारहि वार इहै लवलागी गहे पथिकके पाँइ । सूरदास या जननीकों जिय राखौ वदन देखाइ ॥ २७०० ॥ विलावल ॥ यद्यपि मन समुझावत लोग । शूल होत नवनीत देखि मेरे मोहनके मुखयोग ॥ प्रातकाल उठि माखन रोटी को विनमांगे देहै । अब उहि मेरे कुँवर कान्हको छिन छिन अंकम लैहै ॥ कहियो पथिक जाइ घर आवहु रामकृष्ण दोउ भैया । सूरश्याम कत होत दुखारी जिनके मोसी मैया ॥ १ ॥ रामकली ॥ मेरो कहा करतु ह्वैहै । कहियहु

जाइ वेगि पठवहिं गृह गाइनिको द्वैहै ॥ दीजै छाँडि नगर वारी सव प्रथम चोरि प्रतिपारो। हमहूं जिय समुझें नाहिं कोऊ तुम तदि हितू हमारो॥ आजुहि आजु कालिह कालिहहि करि भलो जगत यश लीन्हों। आजहुँ कालिह कियो चाहत हो राज्य अटल करिदीन्हों ॥ परदा सूर वहुत दिन चलती दुहूँहुनि फवती लूटि।अंतहु कान्ह आयहो गोकुल जन्म जन्मकी चूटि॥२॥संदेशो देवकीसों कहियो। होंतो धाइ तुम्हारे सुतकी मया करति रहियो ॥ यद्यपि टेव तुम जानत उनकी तऊ मोहिं कहि आवे। प्रातहि उठत तुम्हारे कान्हको माखन रोटी भावै ॥ तेल उवटनो अरु तातो जल ताहि देखि भजिजाते।जोइ जोइ मांगत सोइ सोइ देती क्रम क्रम करि करि न्हाते॥सूर पथिक सुनि मोहिं रैनि दिन वढ्यो रहत उरसोच। मेरो अलक लडैलो मोहन ह्वैहै करत सँकोच ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ मेरो कान्ह कमलदल लोचन। अवकी वेर वहुरि फिरि आवहु कहालगे जिय सोचन॥ यह लालसा होत जिय मेरे वैठी देखतरैहौं । गाइचरावन कान्हकुँवरसों भूलि न कवहूं कैहौं॥ करत अन्याय न वरजों कवहूं अरु माखनकी चोरी। अपने जियत नैन भरि देखौं हरि हलधरकी जोरी॥ एक वेर ह्वैजाहु इहाँलों अनत कहूँके उत्तर।चारिहु दिवस आनि सुखदीजे सूर पहुनई सूतर ॥४॥ अथ पंथीवाक्य देवकी प्रति ॥ आसावरी ॥ हौं इहां गोकुलहीते आई। देवकी माई पाँइ लागति हौं यशुमति इहां पठाई॥ तुमसों महरि जुहार कह्यो है कहहु तौ तुमहिं सुनाऊं । वारक वहुरि तुम्हारे सुतको कैसेहुँ दरशन पाऊं ॥ तुम जननी जग विदित सूरप्रभु हौं हरिकी हितधाइ। जो पठवहु तौ पाहुन नाते आवहि वदन दिखाइ ॥५॥ सारंग ॥ जो परि राखतहौ पहिंचानि । तौ अव कै वह मोहन मूरति मोहिं देखावहु आनि ॥ तुम रानी वसुदेव गेहनी हौं गँवारि व्रजवासी। पठै देहु मेरो लाड़ लड़ैतो वारों ऐसी हाँसी ॥ भली करी कंसादिक मारे सव सुरकाज किये। अव इन गैयन कौन चरावै भरि भरि लेत हिये॥खान पान परिधान राजसुख जो कोउ कोटि लडावै। तदपि सूर मेरे वारे कन्हैया माखनही सचुपावै ॥६॥ सोरठ ॥ मेरे कुँवर कान्ह विनु सव कछु वैसेहि धर्‌यो रहै। को उठि प्रात होत लै माखन कोकर नेत गहै ॥ सूने भवन यशोदा सुतके गुनिगुनि शूलसहै। दिन उठि घेरतहीं घर ग्वारिनि उरहन कोउ न कहै ॥ जो व्रजमें आनंद हो तो मुनिमन साहु नगहै। सूरदास स्वामी विनु गोकुल कौंडीहू नलहै ॥७॥ अथ गोपीविरह अवस्था परस्परवर्णनं॥सारंग॥ चलत गुपालके चले। यह प्रीतमसों प्रीति निरंतर है ना अरधपले ॥ धीरज पहिल करी चलिवे की जैसी करत भजे। धीर चलत मेरे नैनन देखे तिहिछिन अंशहले ॥ अंश चलत मेरी वलयन देखे भए अंग सिथले। मनचलि रह्यो हुतो पहिलेही सवै चले विमले ॥ एक न चलै अव प्राण सूर प्रभु असलेउ सालसले ॥ मलार ॥८॥ लोग सव कहत सयानी वातें। सुनतहि सुगम कहत नाहिं आवत वोलि जाइ नहिं ताते॥पहिले अग्नि सुनत चंदनसी सती वहुत उमहे। समाचार ताते अरु सीरे पाछे जाइ लहै ॥ कहत फिरत संग्राम सुगम अति कुसुमलता करिवार। सूरदास शिरदेत शूरमा सोइ जानै व्यवहार ॥ ९ ॥ वातनि सव कोइ जिय समुझावे । किहि विधि मिलनि मिलें वै माधौ सो विधिकोउ न वतावै ॥ यद्यपि जतन अनेक रचि विधि सारि अशन विरमावे। तदपि हठी हमारे नैनन और न देखो भावै ॥ वासर निशा प्राणवल्लभ तजि रसना और न गावै। सूरदास प्रभु प्रेमहि लगिकै कहिये जो कहि आवै॥१०॥ नट ॥ सव मिलि करहु कछू उपाव।मार मारन चढेउविरहिनि करहु लीनो चाव ॥ हुताशन ध्वज उमँगि उन्नत चलेउ हरि दिशवाउ। कुसुम शर रिपुनंद वाहन हरपि हरपित गाउ ॥ वारि भव सुत तात नावरि अव न करिहौं काउ। वार अवकी प्राण

प्यारी विजय सखा मिलाउ ॥ रुचि वाचारनमान कीजै सोई किन वहि जाउ। सूर प्रभुकी शरन रहिहौं सकल त्रिभुवन राउ ॥११॥ सारंग ॥ करिगए थोरे दिनकी प्रीति। कहां वह प्रीति कहां यह बिछुरन कहां मधुवनकी रीति ॥ अबकी बेर मिलौ मन मोहन बहुत भई विपरीति। कैसे प्राण रहत दरशन बिन मनहुँ गए युगवीति ॥ कृपा करहु गिरिधर हम ऊपर प्रेम रह्यो तनु जीति। सूर दास प्रभु तुम्हरे मिलन बिना भई भुसपरकी भीति ॥१२॥धनाश्री॥प्रीति करि दीनी गरे छुरी।जैसे ब धिक चुगाइ कपटकन पीछे करत बुरी ॥ मुरली अधर चंप कर कापा मोर मुकुट लट वारि। बंक विलोकनि लगी लोभ सम सकति नपंख पसारि ॥ तरफत छाँडि गए मधुवनको बहुरि न कीनी सार।सूरश्याम सुख संग कलपतरु उलटि नबैठी डार ॥१३॥मलार॥देखिमाधौकी मित्राई। आई उघरि कनक कलईसी दैनिज गए दगाई ॥ हम जानै हरिहितू हमारे उनके चित्त ठगाई ॥ छाँडी सुरति सबै ब्रजकुलकी निठुर लोग भए माई ॥ प्रेम निबाहि कहा वै जानैं साँचे अतिही राई। सूरदास बिरहिनी विकलमति करमीजै पछिताई॥१४॥एकहि बेरदई सब टेरी।तब कत डोरि लगाइ चोरि मनु मुरली अधर धरि टेरी ॥ बाट घाट बीथी ब्रज वर बन संग लगाए फेरी। तिनकी यह करि गए पलक में पारि बिरहदुख बेरी ॥ जो पारि चतुर सुजान कहावत कहीं समु झियो मेरी।बहुरि न सूर पाइ हौ हमसी विनदामनकी चेरी ॥१५॥ नट ॥ अबतौ ऐसेई दिन मेरे।क हा करौं सखि दोष न काहू हरिहित लोनन फेरे॥ मृगमद मलय कपूर कुमकुमा एसब संतत चेरे। मादप वन शशि कुसुम सकोमल तेउ देखियत जुकरेरे ॥ बन बन बसत मोर चातक पिक आपुन दिए बसेरे। अब सोइ वकत जाहि जोइ भावै वर जे रहत न मेरे ॥ जे द्रुम सींचि सींचि अपने कर कियो बढाय बडेरे। तिन सुनि सूर किसल गिरि वर भए आनि नैन मग घेरे ॥ १६ ॥ ॥सारंग॥विनु गोपाल वैरिनि भई कुंजैं।जे वै लता लगत तनु शीतल अब भई विषम अनलकी पुंजैं॥ वृथा बहुत यमुनातट खगरो वृथा कमलफूलनि अलि गुंजैं।पवन पानि घनसारि सुमन दै दधिसुत किरिन भानु भै भुंजैं॥एऊधो कहियो माधो सों मदन मारि कीन्हीं हम लुंजैं। सूरदास प्रभु तुम्ह रे दरशको मग जोवत अँखियन भई धुंजैं ॥१७॥कान्हरो॥करकपोल भुज धरि जंघापर लेखति माई नखन की रेखनि। सोचति विचार करति वैसी भाँति धरति ध्यान मदन मुख भेजनि ॥ नैन नीर भरि भरि जु लेत है गोपी धृग दिन जात अलेखनि । कमल नैन माधो मधुपुरी सिधारे जाके गुणन जाने सहसफन शेषनि ॥ अवधि छुडाइ सुनीरी सजनी क्यों जीवहि निशिदामिनि देखनि। सूरदास प्रभु चटक गए ज्यों नाना विधि नाचत नट पेखनि ॥१८ ॥कान्हरो॥ सोचति राधा लिखति नखनमें वचनन कहत कंठ जलतास। छतिपर कमल कमल पर कदली पंकज कियो प्रकाश ॥ तापर अलि सारंग पर सारंग प्रति सारंग रिपुलै कियो वास । तहां अरिपंथ पिता युग उदितवारि ज विविध रंग भजो अभास॥ सारंग मुखते परत अंबुढरि मन शिव पूजति तपति विनास।सूरदास प्रभु हरि विरहा रिपु दाहत अंग दिखावत वास१९॥नट॥ मैं सब लिखिसोभा जु बनाई।सजल जलद तन वसन कनक रुचि उर बहुदाम रुराई॥उन्नतकंध कटि खीन विशद भुज अंग अंग प्रति सुखदाई। सुभग कपोल नासिका नैन छवि अलक लिहित धृतपाई॥जानति हीय हलोल लेख करि ऐसेहि दिन विरमाई।सूरदास मृदु वचन श्रवणको अति आतुर अकुलाई॥२०॥गौरी॥सुरति करि वहांकी बात रोइ दियो। पंथी एकु देखि मारगमें राधा बोलि लियो॥ कहिधौं बीर कहांते आयोहम जुप्रणाम कियो ॥ पालागों मंदिर पगु धारौ सुनि दुख यान त्रियो।गद गद कंठ हियो भरि आयो वचन कह्यो नदियो॥ सूरश्याम अभिराम ध्यान मन भर भर लेत हियो२१॥मलार॥ कहियो पंथिक जाइ हरिसों मेरो मन

अटको नैननके लेखे । इहै दोष दैदै झगरतहै तब निरखत मुख लगी क्योंन मेखे ॥ कैतो मोहि बताय दवकियो लगी पलक जडजाके पेपे । ते अब अब इनपै भरि चाहत विधि जोलिखे दरशन सुख रेखे ॥ यहिविधि अनुदिन जुरति जतनकरि गनत गए अँगुरिन अवसेखे । सूरदास सुनि इनि झगरनिते नहिं चित घटत वदन विन देखे॥२२॥ इमन ॥ नाथ अनाथनकी सुधि लीजे ।गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सव दीन मलीन दिनहि दिन छीजे ॥ नैन सजल धारा बाढ़ी अति बूडत व्रज किन करगहि लीजे । इतनी विनती सुनहु हमारी वारकहू पतियाँ लिखि दीजे ॥ चरणकमल दरशन नवनौका करुणासिंधु जगत यशलीजै।सूरदास प्रभु आशमिलनकी एकवार आवन व्रज कीजै॥२३ ॥ सारंग ॥ दिशिआति कालिंदी अतिकारी । अहो पथिक कहियो उन हरिसों भई विरहज्वरजारी । मनु पर्यकते परी धरणिधुकि तरंग तलफ नित भारी॥तट वारू उपचार चूरजल परी प्रसेद पनारी। विगलित कच कुच कास कुलिन पर पंकजु काजल सारी ॥ मनमें भ्रमरते भ्रमत फिरतहै दिशिदिशि दीन दुखारी । निशिदिन चकई वादि वकतहै प्रेममनोहर हारी । सूरदास प्रभु जोई यमुनगति सोइ गति भई हमारी॥२४॥परेखो कौन वोलको कीजै॥नाहरि जाति नपांति हमारी कहा मानि दुख लीजे । नाहिन मोर चंद्रिका माथे नाहिंन उर वनमाल ॥ नहिं सोभित पुहपनके भूषण सुंदर श्यामतमाल । नंद नंदन गोपी जन वल्लभ अब नहीं कान्ह कहावत ॥ वासुदेव यादव कुलदीपक वंदीजन वरभावत । विसरचो सुख नातो गोकुलको और हमारे अंग ॥ सूरश्याम वह गई सगाई वा मुरलीके संग २५॥ बटाऊ होहिं नकाके मीत॥संगरहत शिरमेलि ठगौरी हरत अचानक चीत । मोहे नैन रूप दरशनके श्रवण मुरलिका गीत ॥ देखतही हरिले जु सिधारे बांधि पछोरी पीत । याहीते झुकाति इहै मग चितवति सुख जुभए विपरीत ॥सूरदास वरु भली पिंगला आशा तजि परतीत॥२६॥ मलार ॥ कहा परदेशी को पतियारो। पीछेही पछितादि मिलहुगे प्रीति बढाइ सिधारो ॥ ज्यों मृगनाद नादके वींधे लाग्यो वान विसारो । प्रीतिके लिए प्राण वश कीनो हरि तुम यहै विचारो ॥ वलि अरु वालि सुपनखा वापुरी हरिते कहां दुरायो । सूरदास प्रभु जानि भलेहो भरचो भरायो डरायो ॥२७॥ मलार ॥ कहा परदेशीको पतिआरो । प्रीति वढाय चले मधुवनको विछुरि दियो दुखभारो ॥ ज्यों जलहीन मीन तरफत ऐसे विकल प्राण हमारो । सूरदास प्रभुके दरशन बिनु ज्यों बिनु दीपक भौन अँधियारो ॥२८॥ ॥आसावरी॥ सखीरी हरिको दोष जनि देहु । ताते मन इतनो दुख पावत मेरोई कपट सनेहु ॥ विद्यमान अपने इननैननि सूनो देखति गेहु । तदपि सखी व्रजनाथ विना उर फटि नहोत वडवेहु॥ कहि कहि कथा पुरातन सजनी अव जिन अंतहि लेहु । सूरदास तन योवकरौंगी ज्यों फिरि फागु न मेहु॥२९॥ मलार॥अब कछु औरहि चाल चली॥मदनगोपाल विना या तनुकी सबै वात बदली ॥ गृह कंदरा समान सेज भई चाहि सिंहहू थली । शीतल चंद्र सुतौ सखि कहियत तिनहूं अधिक जली ॥ मृगमद मिलय कपूर कुमकुमा सींचति आनि अली। एकन फुरत विरह ज्वरते कछु लागति नाहिं भली॥वह ऋतु अमृत लता सुनि सूरज अब विपफलनि फली। हरि विधु मुख नाहिं नाहिं नै फूलति मनसा कुमुद कली३०॥सारंग॥इहि वेरिया वनते व्रज आवते।दूरहि ते वह वैन अधर धरि वारंवार वजावते॥कवहुँक काहू भाँति चतुर चित अति ऊंचे सुरगावते।कवहुँक लैलै नाम मनोहर धवरी धेनु बुलावते॥इहि विधि वचन सुनाय श्याम घन मुरछे मदन जगावते।आगम सुख उपचार विरह ज्वर वासर ताप नशावते ॥ रचि रचि प्रेम पियासे नैनन क्रम क्रम वलहि वढावते। सूरदास

स्वामी तिहि अवसर पुनि पुनि प्रगट करावते ॥३१॥ सारंग॥ नाहिं विसरति वह रति ब्रजनाथ। हौं जुरही हठि रूठि मौन धरि सुखही में खेलत इक साथ॥ पचिहारे मैं मनायो नमानौं आपुन चरण छुए हरि हाथ। तब रिस धरि सोई उत मुख करि झुकि झाँक्यो उपरैना माथ॥ रह्यो न परै सुप्रेम आतुर अति जानी रजनी जात अकाथ। सूरश्यामहौं ठगी महा निशि पढि जुसुनाए प्रातके गाथ ॥३२॥बिलावल॥ माधौ इतने जतन तब काहे को किए। अपने जान जानि नँदनंदन अनेक भयनसों राखि लिए॥ अघ बक वृषभ वच्छ वधनते व्याकुल जीति दावानलहि पिए। इंद्र मान मेटि गिरिकरधरि छिन छिन प्रति आनंद हिए॥ हरि विछुरत की पीर नजानी वचन मानि हम वादि जिए। सूरदास अब वा लालन विन कहा न सहत एकठिन हिए॥ ३३॥ गौरी॥ यह कुमया जो तबहीं करते। तौ कत इन ये जिवत आजु लौं या गोकुलके लोग उवरते॥ केशी तृणावर्त वृषभासुर कहौ कौनके मारे मरते। धूम प्रलंब व्याल दावानल हरि विन वर जिहिनिघाइनि वरते॥ शंखचूडवक बकी अघासुर पतिवरुनकौनते डरते। सूरश्याम तौ घोप कहातौ जो तुम इती निठुराई धरते॥ ३४॥ मलार॥ हरि हम तब काहेको राखी। जब सुरपति ब्रज वोरन लीनो दियो क्यों न गिरि नाखी॥ अवलौं हमारी जगमें चलती नई पुरानी साखी। सो क्यों झूठो होय सखीरी गर्ग कथा सो भाषी॥ तो हमको होती कत यह गति निशि दिन वर्षत आषी। सूरदास यों भई फिरत ज्यों मधु दूहेकी माषी॥ ३५॥ हरिजू वै सुख बहुरि कहां। यदपि नैन निरखत वह मूरति फिरि मन जात तहां॥ मुख मुरली शिर मोरपंखवने उर घुघुचनि कोहारु। आगे धेनु रेनु तनु मंडित चितवनि तिरछी चारु॥राति दिवस अँग अँग अपने हित हँसि मिलि खेलत खात।सूर देखि वा प्रभुता उनकी कही न आवै बात ॥३६॥ सारंग॥ मधुवन तुम क्यों रहत हरी। विरह वियोग श्याम सुंदरके ठाढी क्यों न जरी॥ तुमहौ निलज न लज्जा तुमको फिर शिर पुहुपधरी। सुसा सियार अरु वनके पखेरू धृग धृग सबन करी॥ कौनकाज ठाढी रही वनमें काहे न उकठपरी। कपट हेतु कियो हरि हमसे खोटे होहिं खरी॥ गोविंदगुण उरते नहिं विसरत रचि रचि कुसुम भरी। विन देखे वा नँदनंदनको फिरि फिरि फिरि नफिरी॥ जब वे मोहन वेणु बजावत शाखाटेक खरी। मोहे थावरु अरु जड जंगम मुनि गन ध्यान टरी॥ विछुरत हियो वलि मोहनके केउ न कल्याण करी। सुख संपति विछुरी मोहनकी फल फूलनसों करी॥ नैननते विछुरे नँदनंदन चितते नहीं टरी। सूरदास प्रभु विरह दवानल नखशिखलौं पसरी॥३७॥ केदारो॥ जो सखी नाहिंनै ब्रजश्याम। वर्षत होत पल सम अब सुयुग वरयाम॥ उहै गोकुल लोग वेई उहै यमुनाठाम। उहै गृह जिहि सकल संपति वनभयो सोइ धाम॥ उहै रति पति अछत मुरा रिहि लैन सकतो नाम। सूर प्रभु विनु अब कलेवर दहन लागे काम॥३८॥ जैतश्री॥ हरि नमिले नमाईरी जनम ऐसेही लागो जान। चितवत मग दिवस निशा जात युग समान॥ चातक पिक वचन सखी सुनि न परतकान। चंदन अरु चंद किरनि मानो अनेक भान॥ भूषण तनु पोत तज्यो रन आतुर त्रान। भीषमलौं सहत मदन अर्जुनके वान॥ सोषति तनुसेज सूर चले न चपल प्रान। दक्षिण रवि अवधि अटक इतनी जिय आन॥३९॥ सारंग॥ अब योहीं लागे दिन जान। सुमिरत प्रीति लाज लागतिहै उर भयो कुलिश समान॥ लोचन रहत वदन विनु देखे वचन सुने विनु कान। हृदय रहत हरि पान परस विन छिदितनमनसिज वान॥ मानो सखी रहे नाहिं मेरे वै पाहिले तनु प्राण। विधि समेतरचि चले नंदसुत विरह व्यथादै आन॥ विधि वछहरे और

पुनि कीन्हे वैसेई बेत बिपान। सूरदास ऐसी ए कछु यह समुझतहैं अनुमान॥४०॥धनाश्री॥ ऐसो कोऊ नाहिंनै सजनी जो मोहनै मिलावै। वारक बहुरि नंदनंदनको यहाँलौं लै आवै॥ पाँइन पर विनती करि मेरी यह सब दशा सुनावै। निशि निकुंज निशि केलि परमरुचि रास रंगकी सुरति करावै॥और कौनहूं बातकी सकुच न सब विधिकी उपजावै। पुनि पुनि सूर इहै करि हरिसों लोचन जरतबुझावै॥४१॥केदारो॥बहुरव्यो देखिवो वहिभांति।अशन बांटत खात बैठे बालकनकीपाँति॥ एकदिन नवनीत चोरत होंरही दुरिजाइ।निरखि मम छाया भजे मैं दौरि पकरे धाइ॥ पोंछि कर मुख लिए कनियां तबगई रिसिभागि। वह सुरति जियजाति नाहीं रहो छाती लागि॥ जिनि घरनि वह सुख बिलोक्यो तेलगत अवखान। सूर बिनब्रजनाथ देखे रहत पापी प्रान॥४२॥रामकली॥ मरियत देखिवेकी होसनि। जिनि सतकल्प पलक बरजाते अबसु रही दुखमोसनि॥ पलकभरेकी ओट नसहती अब लागे दिनजान।इतनेहू पर बिन साखन घर घट निकसत नहिं प्रान॥यदपि मोहिं बहुतै समुझावत सकुचन लीजतु मानि।अंतर हेर जरत बिन देखे कौन बुझावै आनि। कुविजा पै आवन क्यों पावत अब तो परि है जानि॥लीन बडी यहऊकी सब बात पाछिली ते सब गानि। आए सूर दिना द्वैतौ कहा तौ मानिवो समोसो।कोटि बेर जल औटि सिरावै तऊ कहापाति लौसौ४३ ॥सारंग॥ जिय हिय हौंसे बिच जे रही।सुनरी सखी श्याम सुंदर हँसि बहुरि न बांह गही॥अब वह दिवसबहुरि कब ह्वैहै ऐसे जानि संगही।कहां कान्ह कहारी अब हम कौन बयारि बही॥कासों कहौं कहत नहिं आवै कहत परै न कही॥ जो कछु हुती हमारे हरिके हरिके संग निवही।अपने कहतहि हलुकी लागै गोविंद गुणनदही। सूरदास काटे तरुवर ज्यों ठाढी रटत रही॥४४॥जैतश्री॥ कहा लौं मानौं अपनी चूक। बिन गोपाल सखीरी यह छतियां ह्वै न गई द्वैटूक॥ तन मन धन यौवन ऐसे भए भुअंगमको फूक। ह्रदय जरत है दावानल ज्यों कठिन बिरहकी ऊक॥ जाकी मणि शिरते हरि लीनी कहा कहत अति मूक।सूरदास ब्रजवास बसी हम मनो दाहिनोसूक॥४५॥मलार॥ भलो ब्रजभयो धरणिते स्वर्ग। तब इन पर गिरि अब गिरि पर ए प्रीति किधौं यह दुर्ग॥सुरवासुर छलबोलवरी गढ अत्र अवधि मिति खूटी।प्रिय पति विरह मदन गढ घेरच्यो एकौ अलग न टूटी॥ नैन तडाग श्रवण मूरति मठ यंत्र सकत बरवानी। रास केलि घन पौंरिकोटमनु देखि अमर रजधानी॥ गोरंभन गोपाल गरजनिघन धूमि दुंदुभिन रोकी। कंटक रोम कगूरनि प्रति मनो अपनी अपनी चौकी॥ चढत त्रिभंगी सौंज साजि सत नही पल आखी। देखहु सूर सनेह श्यामको गगन मंडल हम राखी॥४६॥सखीरी हरि बनि हरि दुख भारी।सिंहको सुत हर भूपण ग्रासि सोइ गति भई हमारी॥ शिखर बंधु अरि क्योंन निपारत पुहुप धनुपैक विशेप। चक्षु श्रवा उर हार ग्रसी ज्यों छिन द्वितिया वपुरेप॥ घटसू अशन समै सुत आनन अमी गलित जैसे मेत। जलधर ज्योम अंबुकन मुंचत नैन होड बदि लेत॥ द्विजपाति प्रभु मिळि आनि मिलावहु हरि सुत आरति जानि। जैसे हरि कर बंध प्रगट भए हरी आरती मानि॥ पट आनन बाहन कानन मे घन रजनीसहाबासी। सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणिसुनि चातक पिक त्रासी॥४७॥ रागसोरठ॥ कहा दिन ऐसेही जैहैं। सुन सखिमदनगोपाल अबकिन ग्वालन संग रैहैं॥ कबहूं जात पुलिन यमुनाके बहुविहार विधि खेलत। सुरतहोत सुरभी सँग आवत बहुत कठिन करि झेलत॥ मृदु मुसुकानि आनि राखो पिय चलत कह्योहै आवन। सूर सो दिन कबहूं तौ ह्वैहै मुरली शब्द सुनावन॥ ४८ मलार॥ श्याम सिधारे कौने देश। तिनको कठिन करेजो सखीरी जिनको पिय परदेश॥ उन

ऊधो कछु भली नकीन्ही कौन तजनको वेस। छिन विनु प्रान रहत नहिं हरिविनु निशिदिन अधिक अँदेस ॥ अतिहि निठुर पतियां नहिं पठई काहू हाथ सँदेश। सूरदास प्रभु यह उपजतहै धरिए योगिनिवेस ४९॥ मलार ॥गोपालहि पावौं धौं केहि देश। शृंगी मुद्रा कनक खपरले करिहौं योगिनि भेस॥ कंथा पहिरि विभूति लगाऊं जटा बधाऊं केश । हरि कारण गोरखहि जगाऊं जैसे स्वांग महेश॥ तन मन जारों भस्म चढाऊं विरहिन गुरु उपदेश। सूरश्याम विनु हमहैं ऐसी जैसे मणि बिन शेश ॥५०॥ केदारो ॥ फिरि ब्रज आइए गोपाल।नंद नृपति कुमार कहिहैं अब न कहिहैं ग्वाल ॥ मुरलिका सुर सप्त दिशि दिशि चले निसान बजाइ। दिग्विजयको युवति मंडल भूप परिहैं पाइ॥ सुरभीसिन सुसखा भट सँग उठैगी खुररेनु। आवत पत्र मयूर चंद्रिकाल सतिहै रवि ऐनु॥ सदस पति मधुकरनि करवर मदन आयसु पाइ। द्रुम लता वन कुसुम बानकु वसन कुटी बनाइ सकल खग गण पैक पायक पँवरिया प्रतिहार।समै सुख गोविंद ब्रजको कहत सूर विचार ॥५१॥ जैतश्री॥फिरिकै वसो गोकुलनाथ।अब न तुमहिं जगाय पठवैं गोधननके साथ॥वरजैं न माखन खात कबहूँ दह्यो देत लुढाय। अब नदेहिं उराहनो यशुमतिहि आगे जाइ ॥ दौरि मादन दोहिंगी लकुटी यशोदा पानि। चोरी नदेहिं उघारि कै अवगुण कहिहैं आनि ॥ कहिहैं न चर णन देन जावक गुहन वेनी फूल। कहिहैं न करन शृंगार कबहीं वसन यमुना कूल॥ करिहैं न कबहीं मान हम हठि हैं न माँगत दान। कहिहैं न मृदु मुरली बजावन करन तुमसों गान॥ देहु दरशन नंदनंदन मिलनहूंकी आश।सूर हरिके रूप कारन मरत लोचन प्यास॥५२॥ जैतश्री ॥ हरिसों प्रीतम क्यों विसराहि । मिलन दूरि मन बसत चंद्रपर चितचकोर पछिताहि॥ जलमें रहहि जलहि ते उपजहि जलही बिन कुँभिलाहि। जलतजि हंस चुगै मुक्ताफल मीन कहाउ ड़िजाहि॥ सोइ गोकुल गोवर्धन सोई सोइ किन करहि अब छाहि। प्रगट नप्रीति करै परदेशी सुख केहि देश समाहि॥ धरणी दुखित देखि बादर अति वर्षाऋतु वरषाहि । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिन दुख क्यों हृदय समाहि ॥ ५३ ॥ बारक जाइबो मिलि माधो। को जानै तनु छूटि जाइगो शूलरहै जिय साधो॥ पहुनेहु नंद बबाके आवहु देखिलेउँ पल आधो। मिलेही में बिपरीति करी विधि होत दरशको बाधो ॥ सो सुख शिव सनकादि नपावत सोसुख गोपिन लाधो। सूरदास राधा विलपतिहै हरिको रूप अगाधो॥ ५४ ॥ अथ नैनमस्थांतुपद ॥ मलार ॥ वारकनैनहूं मिलि जाहु । कमलनैन घनश्याम राधिकाहि परसत जो न पत्याहु ॥ जानतहौ कर कमल विरोधी वरन विरोधी बाहु । शशिमुख शत्रु पयोधर गिरि अति तहां तुम क्यों वसमाहु ॥ गज गति मंद मराल विरोधी हेम सुरुचि रिपु दाहु । जंघ कदलि कटि सिंह विरोधी न्यायनिरखि सकुचाहु॥ नीन्हिलहे चितचोरि सकलअँग एकै सुपत नशाहु। तदपि सूर उनकी रुचि राखहु कत अधिकै वडराहु॥५५॥ सारंग ॥ नैननको मत सुनो सयानी। निशिदिन तपति सिरात नकबहूं यद्यपि उमँगि चलत पटपानी॥ होंउपचार अमित आनत उर खल भयो लोक लाज कुलकानी। कछु नसोहाइ दही दरशन दौ वारिज वदन मंद मुसुकानी॥ रूप लकुट अभिमान मनहु उलटी उन मांझ समानी। आरज पथ गुरु ज्ञान कुपित कुरि सूरज विकल समानी ॥५६॥ मलार ॥ सखी इन नैनन ते घन हारे। विनही ऋतु वरषत निशि वासर सदा मलिन दोउ तारे ॥ ऊरध श्वास समीर तेज अति सुख अनेग द्रुमडारे। दिशन सदन करि वसे वचन खग दुखपावसके मारे ॥ ढुरि ढुरि बूंद परत कंचुकि पर मिलि अंजन सों कारे । मानों परमकुटी शिवकीन्हीं विवि मूरति धरि न्यारे॥ सुमिरि सुमिरि गर्जत जल छांडत अंशु सलिलके धारे।

बूडत व्रजहि सूरको राखै विनि गिरिवर धर प्यारे॥५७॥नैना सावन भादौं जीने। इनही विषे आनि राखे मनो समुदनिहूंजलरीते॥ वै झरलाय दिनाह्वै उघरत ए भूलि न मारग देत। वै वर्षत सवके सुख कारण ए नँदनंदन हेत॥ वे परिमान पुजे दह मानत ए दिन धारन तोरत। यह विपरीति होति देखति हो विना अवधि जग वोरत॥ मेरे जीव ऐसी आवत भइ चतुराननकी सांझ। सूर विन मिले प्रलय जानिवो इनहीं दिवसनि सांझ॥५८॥ निशि दिन वरषतु नैन हमारे। सदा रहत वर्षाऋतु हमपर जवते श्याम सिधारे॥ नैन अंजन न रहत निशि वासर कर कपोल भए कारे॥ कंचुकि पट सूखतनाहिं कवहूँ उर विच वहतपनारे। ऐसे सलिल सवै भई काया पल न जात रिसटारे। सूरदास प्रभु गोकुल बूडत काहेन लेत उवारे॥५९॥सारंग॥नैनन नाधौहै झर। ऊंचे चढि टेरत अति आतुर सुरकहि गिरिधर गिरिधर॥ फिराति दशन ज्यों झष सूखे सर। कौन कौनकी दशा कहौं सुन सव व्रज तिनते पर॥ निशि दिन कलमलात सुन सजनी शिरपर गाजत मदन अर। सूरदास प्रभु रही मौनह्वै कहि न सकति मैनके भर॥ ६०॥ अति रस लंपट मेरे नैन। तृप्ति न मानत पिवत कमल मुख सुंदरता मधु वैन॥ दिन अरु रैनि दृष्टि रसना रस निमिष न मानत चैन। सोभा सिंधु समाइ कहांलौं हृदय सांकरे ऐन॥ अव यह विरह अजीरण ह्वैकै वमिलाग्यो दुख देन।सूर वैदव्रज नाथ मधुपुरी काहि पठाऊं लैन॥६१॥केदारो॥ हरि दरशनको तरसत अँखियां। झांकति झपति झरोखा बैठी कर मीडत ज्यों मखियां॥ विछुरी वदन सुधानिधि रिसते लगत नहीं पल खियां। इकटक चितवति उडिपन सकति जनु थकित भई लखि साखियां॥ वार वार शिर धुनाति विसूरति विरह ग्राह जनु भखियां। सूर स्वरूप मिले ते जीवहि काढि किनारे नखियां॥६२॥ सारंग॥ लोचन व्याकुल दोऊ दीन। कैसे रहैं दरश विन देखे विधु चकोर ज्यों लीन॥ विवरन भए खंज जो दाधे वारिज ज्यों जल हीन। श्याम सिंधु सों विछुरि परे हैं तरफरात ज्यों मीन॥६३॥ज्यों रतिराज विमुख भृंगीको छिनु छिनु वाणी हीन। सूरदास प्रभु विन गोपालही कत विधनै एई कीन॥ महा दुखित दोउ मेरे नैन। जादिनते हरि चले मधुपुरी नेकु नकवहूं कीनो सैन॥ भरे रहत अति नीर न निघटत जानत नाहिं दिन रैन। महादुखित अतिही भ्रम माते विन देखे पावत नाहिं चैन॥ जोकवहूं पलकौ नहिं खोलत चाहन चाहत मूरति मनै।छाँडत छिन में एजो शरीरहि गाहिकै व्यथा जात हरि लैन॥ रसना इहई नेम लियो है और नहीं भाषों मुख वैन। सूरदास प्रभु जवते विछुरे तवते सव लागे दुख दैन॥६४॥ अँखियां करतिहैं अति आर। सुंदर श्याम पाहुनेके मिसि मिलि न जाहु दिनचार॥ वाँहथकी वायसहि उडावत कव देखौं उनहार। मैंतो श्याम श्याम कै टेरति कालिंदीके करार॥ कमल वदन ऊपर दुइ खंजन मानो बूडत वार।सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश विनु सकैं न पंख पसार ६५धनाश्री॥लोचन लालच ते नटरैं।हरि मुखए रंग संग विधे दाधौ फिरैं जरैं॥ज्यों मधुकर रुचि रच्यो केतकी कंटक कोटि अरैं। तैसोई लोभ तजत नाहि लोभी फिरि फिरि फिरी फिरै॥मग ज्यों सहत सहज सरदारन सन्मुख ते नटरैं॥जानत आहि हते तनु त्यागत तापर हितहि करै।समुझि न परै कवन सच पावत जीवत जाइ मरै। सूर सुभट हठ छांडत नाहीं काटो शीश लरै॥६६॥सारंग॥लोचन चातक जीवो नहिं चाहत। अवध गए पावसकी आशा क्रम क्रम करि निरवाहत॥ सरिता सिंधु अनेक अवर सखी विलसत पति सजन सनेह। ए सव जल यदुनाथ जलद विनु अधिक दहत है देह॥ जवलगि नाहिं वरपत व्रज ऊपर नौघन श्याम शरीर।तौ इह तृषाजाय क्यों सूरज आनि वोसके नीर ६७॥ मलार॥ नैनन

नैननकी सुधि लीजे । गोपी गाइ ग्वाल गोसुत सब दीन मलीन दिनहि दिनछीजे ॥ नैन सजल जलधार बढे अति बूडत ब्रजकिन करगहि लीजे । इतनी विनती सुनहु हमारी वारकहू पतिआं लिखि दीजै ॥ चरण कमल दरशन नव नौका करुणासिंधु जगत यश लीजे । सूरदास प्रभु आश मिलनकी एकबार आवन ब्रजकीजै ॥६८॥ केदारो ॥ मेरे नयना विर हकी बेलि वई । सींचत नीर नैनके सजनी मूल पताल गई ॥ विकसत लता सुभाइ आपने छाया सघन भई । अब कैसे निरुवारौं सजनी सब तन पसरि छई ॥ को जानै काहूके जियकी छिन छिन होत नई । सूरदास स्वामीके विछुरे लागे प्रेम झई ॥६९॥ देवगंधार ॥ ब्रज वसि काके बोल सहौं । इह लोभी नैननके काजे परवश भई जो रहौं ॥ विसरि लाज गई सुधि नाहिं तनुकी अवधौं कहा कहौं । मेरे जियमें ऐसी आवत यमुना जाइ बहौं ॥ एक वन ढूंढि सकल वन ढूँढ्यो कबहुँ न श्याम लहौं॥सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको इह दुख अधिक सहौं॥७०॥ केदारो ॥ नैना अब लागे पछितान । विछुरत उमँगि नीर भरि आई अब न कछू अवसान ॥ तब मिलि मिलि कत प्रीति बढावत अब सो भई विषवान ॥ तबतौ प्रीति करी उत्तर होइ समुझी कछु न अजान । अब इह काम दहत निशि वासर नाहीं मेरे नाम ॥ भयोविदेश मधुपुरी हमको क्योंहू होत नजान ॥ अति चटपटी देखि वे चाहत अब लागी अकुलान । सूरदास प्रभु दीन दुखित ए लै नगए सँग प्रान॥ ७१॥ आसावरी ॥ हो तादिन कजरा मैं देहों । जादिन नँदनंदनके नैनन अपने नैन मिलैहौं ॥ सुनरी सखी इहै जिय मेरे भूलिन और चितैहौं।अब हठ सूर इहै व्रत मेरो कौंकिरषै मरि जैहौं७२॥ ॥ मलार ॥ उपमा नैनन एक रही । कविजन कहत कहत सब आए सुधि करि नाहिं कही काहिं चकोर विधु मुख विन जीवत भँवर नहीं उडिजात । हरि मुख कमल कोश विछुरेते ढाले कत ठहरात ॥ अघा वधिक व्याधह्वै आये मृगसम क्यों न पलात । भाजि जाहि वन सघन श्याममै जहां न कोऊ घात ॥ खंजन मनरंजन नहोहिं ए कबहीं नहीं अकुलात । पंख पसारि नहो छिन चपला गति हरि समीप मुकलात ॥ प्रीति प्रेम नहोहि कौन विधि कहिए झूठेही तनु आडत सूरदास मीनता कछू एक जल भरि कबहुँ नछांडत॥ ७३॥गौरी॥कहा इन नैननको अपराध।रसना रटत सुनत यश श्रवण इतनी अगम अगाध ॥ भोजन किये विनु भूख क्यों भाजै विनखाए सब स्वाध । इकटक रहत छुटत नाहिं कबहूँ हरि देखनकी साध ॥ ये दृग दुखी विना वह मूरति कहो कहा अब कीजे । एक वेर ब्रज आनि कृपाकरि सूर सोदरशन दीजै ॥ ७४॥ मलार ॥ चित वतही मधुवन तन जात । नैननि नींद परति नाहिं सजनी सुनि सुनि बात मन अकुलात ॥ अब ए भवन देखिअत सूनो धाइ धाइ हमको ब्रजखात । कवन प्रतीति करैं मोहनकी जेहि छाँडे निज जननी तात ॥ अनुदिन नैन तपत दरशन को हरदी समान देखिअत गात । सूरदास स्वामीके विछुरे ऐसे भए हमारे धात॥७५ ॥ मलार ॥ देखसखी उतहै वह गाँउ।जहां वसत नँदलाल हमारे मोहन मथुरा नाउँ ॥ कालिंदीके कूल रहतहैं परम मनोहर ठाउँ । जो तनुपंख होइ सुन सजनी आजु अबहिं उडिजाउँ।होनो होउ होउ सो अबहीं यहि ब्रज अन्न नखाउँ ॥ सूरदास नँदनंदनसों रति लोगन कहा डराउँ ७६॥ गौरी ॥ मथुराके द्रुम देखिअत न्यारे।वहां श्याम हमारे प्रीतम चितवत लोचन हारे ॥ कितिक बीच संदेहु दुर्लभ सुनियत टेर पुकारे। तुव गुण सुमिरि सुमुरि हम मोहन मदन बान उरमारे । तुमविन श्याम सबै सुख भूलो गृह बन भए हमारे सूरदास प्रभु तुमरे दरश विनु रैनि गनत गए तारे ॥७७॥स्वप्न दर्शन वर्णनं ॥ रागकेदारो ॥ जबते विछुरे

कुंजविहारी। नींद नपरै घटै नहिं रजनी व्यथा विरह ज्वर भारी ॥ हों उठि सखी आँगनह्वैआई जगमगि रही जियारी।श्रवणशब्द सुहाइ नसखीरी यमचातक द्रुमडारी॥उरते सखी दूरि करु हारहि कंकन धरहु उतारी।सूरदास प्रभु विनु अतिव्याकुल कारि वह जतन जुहारी ॥ ७८ ॥नट॥ सुपनहुमें देखिये जो नैननि नींद परै। विरहिनि ब्रजनाथ विन कहि कौन उपाइ करै ॥ चंदमंद समीर शीत ल सेज सदा जरै। कहा करौं कौनी भांति मरौं मन न धीरज धरै ॥ वहुत उपाइ करै विरहिनि कछु नचाव सरै।सूर शीतल कृष्णविन कहौ कौन ताप हरै ७९॥सारंग॥इतनी दूरि गोपालही कवहुँ न मिलि आई। कहिए कहा दोपदीजै किहि अपनीही जडताई ॥ सोवत महा मनो सुपने सखि अवधि निधन निधि पाई। गनतहि आनि अचानक कोकिल उपवन वोलि जगाई ॥ जो जागों तो कहा उठि देखों विकल भई अधिकाई। क्रिसलै कुसुम नव नूत दशहु दिश मधुकर मदन दोहाई॥ विछुरत तनु नाम ज्यों हठि तिहि छिन गई नहीं सगुमाई। समुझि नपरी सूर दोहेदिन हरि हँसि कंठ लगाई ॥८०॥ धनाश्री ॥तवहीं जे इह हेति कहा। जहां वै श्याम मदन मूरति चल मोहिं लवाइ तहां॥कुटिल अलक मकराकृत कुंडल सुंदर नैन विशाल। अरुन अधर नासिका मनोहर तिलक तरनि शशिभाल ॥ दशनज्योति दामिनि ज्यों दमकति वोलत वचन रसाल। उर विचित्र वनमाल वनी जनु कंचन लता तमाल ॥ घन तन पीत वसन शोभित अति अलिके वलै पराग।विपुल वहू अति कृत परिरंभन मनहुँ मराए द्रुमनाग। सोवतिही सुपने महि सोचति सत्य जानि जिय जागी। सूरदास प्रभु प्रगट मिलनको चातक ज्यों लवलागी ॥ ८१ ॥ मलार ॥ सुपने हरि आएहो किलकी। नींदजो सौति भई रिपु हमको सहि नसकी रति तिलकी ॥ जो जागों तो कोऊ नाहीं रोके रहति नहिलकी। तव फिरि जरनि भई नख शिखते दिआवात जनु मिलकी। पहिली दशा पलटि लीनींहै त्वचा त्वचाकि तनु पिलकी। अव कैसे सहिजात हमारी भई सूर गति सिलकी ॥८२॥ कान्हरो ॥ मैं जान्योरी आए हैं हरि चौंकि परेते पछितानी। इते मान तन तलफत वहिते जैसे मीन तट विन प्रानी ॥ सखी सुदेह ते जरति विरह ज्वर तनु पुनि पुनि नाहिं प्रकृत्यो आनी। कहा करौं अपथि भई मिलि वढी व्यथा दुख दुहरानी॥ पठवो पथिक सव समाचार लिखि विपति विरह वपु अकुलानी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश विना कैसे घटत कठिन कामी ॥८३॥ मलार ॥ ज्यों जागो तो कोऊ नाहीं अंत लगी पछितान।हौं जानौ सँचि मिले माधो भूली यहि अभिमान ॥ नींद माहिं मुरझाई रहिहो प्रथम पंच संधान । अव उर अंतर मेरी माई सपने छुटी छलिवान ॥ सूर सकत जैसे लछिमन तन विह्वल होइ मुरझान। ल्याउ सजीवन मूरि श्यामको तौ रहिहैं ए प्रान ॥ ८४॥ कल्याण ॥ हरि विछुरन निशि नींद गईरी। वन प्रिय वरह शिली मुख मधुपति वचननिहौं अकुलाईरी ॥ वह जु हुती प्रतिमा समीपकी सुख संपति दुरंतजईरी। ताते भर हरि सुनरी सजनी सेज सलिल दृगनीरमईरी ॥ अवऊ अधार जु प्राण रहत हैं इनिवशहिन मिलि कठिन ठईरी। सूरदास प्रभु सुधारस विना भई सकल तनु विरह रईरी ॥ ८५ ॥ केदारो ॥ वहुरचो भूलि न आंखि लगी। सुपनेहूँके सुख न सहिसकी नींद जगाइ भगी ॥ वहुत प्रकार निमेष लगाए छूटि नहीं शठगी।जनु हीरा हरि लिए हाथते ढोल वजाइ ठगी ॥ कर मीडति पछिताति विचारति इहि विधि निशाजगी। वह मूरति वह सुख दिखरावै सोई सूर सगी ॥८६॥धनाश्री॥ अव सखी नींदौ तो गई। भागी जिय अपमान जानि जनु सकुचनि ओट लई ॥ अति रिस अहनिशि कंत किए वश

आगम अटक दई। सुपनेहू संयोग सहाति नहिं सहचरी सौति भई ॥ कहतहि पोच सोच मनहीं मन करत न बनति खई। सूरदास तनु तजै भले बनै विधि विपरीति ठई ॥८७॥नट॥पियकी बात सुनाहि किन प्यारी। जो कछु भयो सो कहिहौं तुम सन होहु सखिनते न्यारी॥तव वियोग सोकतै उपज्यो काम देह तनु जारी। भेषज अधर सुधाहै तुमपै चलिदै व्यथा निवारी ॥ कठिन परे जु कुशल रिपु पूछै मनकी कहा विचारी॥सूरदास प्रभु हृदय है तेरे मानहु सार पुछारी॥८८॥ मलार ॥ हमको सुपनेहू में सोच। जादिनते बिछुरे नँद नंदन इह तादिनते पोच॥मनो गोपाल आए मेरे गृह हँसि करि भुजा गही। कहा करौं वैरिनि भई निद्रा निमिष न और रही ॥ ज्यों चकई प्रतिबिंब देखिकै आनंदे पिय जानि॥सूर पवन मिलि निठुर विधाता चपल कियो जल आनि॥८९॥विहागरो॥ हरि बिनु वैरिन नींद बढ़ी। हो अपराधिनि चतुर विधाता काहे को बनाइ गढी ॥ तन मन धन यौवन सुख संपति विरहा अनल दढी॥नँदनंदनको रूप निहारत अहनिशि अटाचढी॥ जेहि गोपाल मेरे वश होते सो विद्या न पढी॥सूरदास प्रभु हरि न मिलैं तौ घरते भली मढी ॥९०॥ मलार॥सुनहु सखी ते धन्य नारि॥जो अपने प्राणवल्लभकी सपनेहु देखति है अनुहारि॥कहा करौं चलत श्यामके पहिलेहि नींद गई दिन चारि॥देखि सखी कछु कहत न आवै झींखि रही अपमानन मारि॥जादिन ते नैनन अंतर भयो अनुदिन अति बाढति है वारि॥मनहुँ सूर दोउ सुभग सरोवर उमँगि चले मर्यादा डारि॥९१॥मलार॥हमको जागत रैनि विहानी॥कमल नैन जगजीवनके सखी गावत अकथ कहानी॥ विरह अथाह होत निशि हमको विनु हरि समुदसमानी। क्यों करि पावहि विरहिन पारहि विन केवट अगवानी ॥ उदित सूर चकई मिलाप निशि अलि जो मिलै अरविंदहि। सूर हमैं दिन रात दुसह दुख कहा कहैं गोविंदहि ॥ ९२ ॥ मोको माई यमुना जल होइ रही। कैसे मिलौं श्याम सुंदरको वैरिनि बीच बही॥ केतिक विच मथुरा औ गोकुल आवत हरि जो नही । हम अबला कछु मर्म न जान्यो चलत न फेंट गही ॥ अब पछितात प्राण दुख पावत जात न बात कही। सूरदास प्रभु सुमिरि सुमिरि गुण दिन दिन शूल सही॥९३॥धनाश्री॥नैन सलोने श्याम हरि कब आवहिंगे। वै जो देखत राते राते फूलन फूलेडार॥हरि बिन फूल झरीसी लागत झरि झरि परत अँगार॥ फूल बिनन ना जाउँ सखीरी हरिविन कैसे फूल । सुनरी सखी मोहिं राम दोहाई लागत फूल त्रिशूल ॥ जबते पनिघट जाउँ सखीरी वा यमुनाके तीर। भरि भरि यमुना उमडि चलत है इन नैनन के नीर ॥ इन नैननके नीर सखीरी सेज भई घरनाव। चाहतहौं ताहीपै चढिकै हरिजी के ढिगजाव॥ लाल पियारे प्राण हमारे रहे अधर पर आइ। सूरदास प्रभु कुंजविहारी मिलत नहीं क्यों धाइ ॥९४॥ मलार ॥ बहुरो गोपाल मिलै सुख नेह कीजै। नैनन मग निरखि वदन सोभा रस पीजै ॥ मदन मोहन हृदय उर आसन दीजै। परै न पलक आंखिनके देखि देखि जीजै ॥ मान छांडि प्रेम भजन आपनो करि लीजै। सूर सोई सुभग नारी जासों मन भीजै॥९५॥ केदारो ॥ सखीरी हरि आवैं केहि हेत। वै राजा तुम ग्वाल बुलावत इहै परेखो लेत॥अब शिरछत्र कनक राजत है मोरपंख नहिं भावत। सुनि ब्रजराज पीठिदै बैठत यदुकुल विरद बुलावत॥ द्वारपाल अति पौर विराजत दासी सहस अपार। गोकुल गाइ दुहत दुख गोयो सूर भए एवार ॥९६॥मलार॥ चलतन माधौकी गही बाहैं। बार बार पछिताति सबहितें इहै शूल मनमाहैं ॥ घर बन कछु न सुहाइ रैनि दिन मनहुँ मृगी दौ दाहै । मिटति न तपति बिना घनश्यामहि कोटि घनी छन छाहै ॥ बिलपति अति पछिताति मनहि मन चंद्र गहे जनु राहै। सूरदास प्रभु दूरि सिधारे दुख

कहिए केहि पाहै ॥ ९७ ॥ सारंग ॥ मनकी मनही मांह रही । जब हरि रथ चढि चले मधुपुरी सब अज्ञान भही ॥ मति बुधि हरी परी धरणी पर अति बेहाल खरी । अंकुश अलक कुटिल भए आशा ताते अवधि वरी ॥ ज्यों विनु मणि अहि मूक फिरतहै यों विधि विधि विपरीत धरी । मनतौ रह्यो पंथ सूरज प्रभु माटी रही धरी ॥ ९८ ॥ मेरो मन वैसै सुरति करै । मृदु मुसुकानि नैक अवलोकनि हृदयेते नटरै ॥ जब गोपाल गोधन सँग आवत मुरली अधर धरै । मुखके रेणु झारि अंचल सों यशुमति अंग भरै ॥ संझा समय चोपकी डोलन वह सुधि क्यों विसरै । सूर दास प्रभु दरशन कारण नैनन नीर ढरै ॥९९॥ आसावरी ॥ जाको मन लाग्यो नँदलालहि ताहि और क्यों भावैहो । जैसे मीन दूधमें डारै जल विनु सच नहिं पावैहो ॥ अति सुकुमार डोलत अंगनही परि काहू नजनावैहो । जैसे सरिता मिलै सिंधुको उलटि प्रवाह न आवैहो ॥ ऐसे सूर कमल लोच न विनु मन नहिं अनत लगावैहो ॥२८००॥सारंग॥ कहां लौं रखिए मन विरमाई।इकटक शिव धरे नैन लागत श्यामसुता सुत धन आई ॥ हर वाहन दिव वास सहोदर तिहि माति उदित मुरछि मुहि जाई । गिरिजापति रिपु नख शिख व्यापत वंश सुधा पिय कथा सुनाई ॥ विरहिनि विरह आपु वश कीन्हें लेउ कमल जिमि पाइ छुआई । वेगि मिलौ सूरके स्वामी उदधितनया पति मिलिहै आई॥१॥ मारू ॥ कमल नैन अपने गुनन मन हमारो वाध्यो॥लागत तो जानो नहिं विषम वाण साध्यो॥ कठिन पीर वाँध्यो शरीर मारि गयो माई । लागत तो जानो नाहिं अवसहो न जाई॥ मंत्र तंत्र जेतिक करौं तउ पीर नताई । हैकोउ उपचार करै कठिन दरद माई ॥ कैसेहुँ नंदलाल पावों नेक मिलौं धाई । सूरदास प्रेम फंद तोरो नहिं जाई ॥२॥ सोरठ ॥हरि हमसों करीरी माई मीन जलकी प्रीति । इतनी दूरि दयालु माधौ गई अवधि व्यतीति ॥ तलफिकै उन प्राण दीनों प्रेमकी परतीति । नीर निकट न पीर जानी व्यर्थ गयो वपु वीति ॥ चलत मोहन कहो हमसों आइहैं रिपुजीति । सूरवा ब्रजनाथके जिय सबै उलटी रीति ॥३॥ धनाश्री ॥ मति कोई प्रीतिके फँग परै। सादर संत देखि मन मानो पेखै प्राण हरै ॥ या पतंग कहा करम कीन्हों जीवको त्याग करै । अपने मरवेते नडरतहै पावक पैठि जरै ॥ भौंकरत नहीं ताहि निपाते केतिक प्रेम धरै । सारंग सुनत नाद रस मोह्यो मरिवेते नडरै ॥ जैसे चकोर चंद्रको चाहत जल विन मीन मरै । सूर प्रभुसों ऐसे करि मिलिए तौ कहो कानसरै॥ ४ ॥सारंग॥ प्रीति करि काहू सुख न लह्यो॥प्रीति पतंग करी दीपकसों आपै प्राण दह्यो ॥ अलिसुत प्रीति करी जलसुत सों संपति हाथ गह्यो । सारंग प्रीति करी जो नाद सों सन्मुख वान सह्यो ॥ हम जो प्रीति करी माधौ सों चलत नकछू कह्यो । सूरदास प्रभु विनु दुख दूनो नैनन नीर वह्यो ॥ ५ ॥ मलार ॥ प्रीति तौ मरनऊ न विचारै ॥ प्रीति पतंग ज्योति पावकज्यों जरत नआपु सँभारै॥प्रीति कुरंग नाद स्वर मोहित वधिक निकट ह्वै मारै। प्रीति परेवा उडत गगनते गिरत न आपु सँभारै ॥ सावन मास पपीहा वोलत पिय पिय कारि जो पुकारै । सूरदास प्रभु दरशन कारन ऐसी भांति विचारै ॥ ६ ॥ जिन कोउ काहूके वश होहि । ज्यों चकई दिनकर वश डोलति मोहिं फिरावत मोहि ॥ हमतौ रीझि लटूभई लालन महाप्रेम तिय जानि । वंध अवंध अमति निशिवासर को सरझावति आनि ॥ उरझे संग अंग अंग प्रति विरह वेलिकी नाई । मुकुलित कुसुम नयन निद्रा तजि रूप सुधा सियराई ॥ अति आधीन हीन मति व्याकुल कहा लौं कहों वनाइ । ऐसी प्रीति करी रचना पर सूरदास वालिजाइ ॥७॥नट॥ दिनही दिन को सहै वियोग । यह शरीर नाहिन मेरो सखी इहै विरह ज्वर योग ॥ रचि सूक

कुसुम सुगंध सेज सजि वसन कुमकुमा वोरीनलनी दलनि दूरि कारि उनते कंचुकिके बंद छोरि ॥ बन बन जाइ मोर चातक पिक मधुवन टेरि सुनाई।उदित चंद चंदन चढ़ाइ उर त्रिविध समीर बहाई ॥ रटि सुख नाम श्याम सुंदरको तोहिं सुनाइ सुनाई।तो देखत तनु होमि मदन मुख मिलौ माध वहि जाई ॥ सूरदास स्वामी कृपालु भए जानि युवति रस रीति । तिहि छिन प्रगट भए मनमोहन सुमिरि पुरातन प्रीति ॥८॥ धनाश्री ॥ बहुरि न कवहूं सखी मिलैं हरि । कमल नयन के कारण सजनी अपनो सो जतन रही बहुतै कारि ॥ जेइ जेइ पथिक जात मधुवन तन तिनहुँ सों व्यथा कहति पाँइनि पारि । काहू न प्रगट करी यदुपति सों दुसह दुरासा गई अवधि टारि ॥ धीर न धरति प्रेम व्याकुल चित लेत उसास नीर लोचन भरि । सूरदास तनु थकित भई अब कृष्ण विरह सों पर नसकति मरि ॥९॥ पावस समय वर्णनं ॥ मलार ॥ ब्रजते पावस पै न टरी । शिशिर वसंत शरद गत सजनी बीती औधिकरी ॥ उनै उनै घन वरषत चष उर सरिता सलिल भरी । कुमकुम कज्जल कीच बहै जनु कुचयुग पारिपरी ॥ ताहूमें प्रगट विषम ग्रीषम ऋतु इतयो ताप मरी । सूरदास प्रभु कुमुद चंद्र बिनु विरहा तरनि जरी ॥ १० ॥ अब वर्षा को आगम आयो । ऐसे निठुर भयो नँदनंदन संदेशा न पठायो ॥ बादर घोर उठे चहुँ दिशते जलधर गरजि सुनायो । एकै शूल रही मेरे जिय बहुरि नहीं ब्रजछायो ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत कोकिल शब्द सुनायो । सूरदासके प्रभु सों कहियो नैनन है झरलायो ॥ ११ ॥ माईरी एमेघ गाजैं । मनहुँ काम कोपि चढो कोलाहल कटक बढ्यो बरहा पिक चातक जैजै निसान बाजैं ॥ बरन बरन बादर बनाए तब जगज बिराजै । दामिनि करवार करनि कंपत सब गात उरनि जलधर समेत सेन इंद्र धनुष साजै ॥ ऐसे अभिलाष धीर विगत विरत ते न लाजै । अवलनि अकेली करि अपने कुलनिति विसरी अवधि संग सकल सूर भहराइ भाजै ॥ १२ ॥ ब्रजपर बदरा आए गाजन । मधुवनको पठए सुन सजनी फौजमदन लग्यो साजन ॥ ग्रीवारंध्र नैन चातकजल पिक मुखबाजे बाजन । चहुँदिशते तनु विरहा घेरो अब कैसे पावतु भाजन ॥ कहियत हुते श्याम परपीरक आए शंकरके काजन । सूरदास श्रीपतिकी महिमा मथुरा लागे राजन ॥ १३ ॥ देखियत चहुँदिशते घनघेरो । मानोमत्त मदनके हथियन बलकारि बंधन तोरो॥श्याम सुभगतनु चुअत गंड मद बरषत थोरे थोरे । रुकत नपौन महावतहूपै मुरत न अंकुशमोरे ॥ बल वेनी बल निकासि नयन जल कुच कंचुकि बंद वोरे । मानों निकसि बगपांति दांत उर अवधि सरोवर फोरे ॥ तबतेहि सुभै आनि ऐरापति ब्रजपतिसों करजोरे । अब सुनि सूर कान्हके हरि विन गरत गात जैसे वोरे॥१४॥ ब्रजपर साजि पावस दल आयो । धुरवा धुंधि बढी दशहूँ दिशि गर्जिनिसान बजायो ॥ चातक मोर इतर पै दागन करत अवाजैं कोयल । श्याम घटा गज अशन वाजि रथ चित बग पांति सजोयल ॥ दामिनि कर करवार बूंद शर इहि विधि साजे सैन ॥ निधरक भयो चल्यो ब्रज आवत अग्र फौज पति मैन ॥ हम अबला जानि कै तुम बल कहौ कौन विधि कीजै । सूरश्याम अबके इहि ओसर आनि राखि ब्रज लीजै ॥ १५ ॥ सखीरी पावस सैन पलान्यो।पायो बीच इन्द्र अभिमानी हरि विन गोकुल जान्यो ॥ दशहु दिशा सों धूम देखियत कंपति है अति देह । मनहु चलत चतुरंग चमून भ वाढ़ी है खुर खेह ॥ बोलत मोर शैल द्रुम चाढि चढि बग जु उडत तरु डारैं । मनु सहना फहराइ फिरावत भाजन कहत पुकारे ॥ गर्जत गगन गयंद गुंजरत अरु दादुर किलकार । सूरदास प्रभु अपने ब्रजकी काहेन करत सँभार ॥ १६ ॥ बदरिआ बधन विरहिनी आई। मारुत मोर करत

चातक पिक अरु नग शिखर सुहाई॥ नदिया सुचर संदेश क्यों पठऊ वाट तृणनहू छाये॥इक हम दीन हती कान्हर विनु औ इन गरजि सुनाए । सूनो घोप वैर तकि हमसों इंद्र निसान बजाए । सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि होति हमारे घाए॥१७॥ वरु ए वदराऊ वर्पन आए।अपनी अवधि जानि नँदनंदन गरजि गगन घन छाए ॥ कहियतहै सुरलोक वसत सखी सेवक सदा पराए। चातक पिककी पीर जानिके तेउ तहांते धाए॥ तृणकिए हरित हरपि वेली मिलि दादुर मृतक जिवाए। साजे निवड निडत न सिंचि सजि पंछिनहू मन भाए॥ समुझत नहीं चूक सखी अपनी वहुतै दिन हरि लाए।सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि मधुवन वासि विसराए॥१८॥ बहुरि हरि आवहिंग किहि काम।ऋतु वसंत अरु ग्रीपम वीते अव वादर भए श्याम।तारे गनत गनत के सजनी वीते चारौ याम। औरौ कथा सबै विसराई लेत तुम्हारो नाम॥छिन अंतर छिन द्वारे ठाढी अरु सूखतिहै घाम।सूरश्याम तादिनते विछुरे अस्ति रहीके चाम।१९।किधौं घन गर्जत नहिं उनदेशनि। किधौं हरि हरपि इंद्र हठि वरजे कैधौं दादुर खाए शेपनि। किधौं उहि देशन गवन गम छांडे घरनिन बूंद प्रवेसनि चातक मोर कोकिला उहिवन वधिकन वधे विशेपनि॥ किधौं उहि देश वालनहि झूलति गावति सखिन सुदेशनि। सूरदास प्रभु पथिक न चलही कासों कहौं सँदेशनि॥ ॥२०॥ देखोमाई श्याम सुरति अव आवै। दादुर मोर कोकिला वोलै पावस अगम जनावै॥ देखि घटा घनचाप दामिनी मदन शृंगार वनावै। विरहनि देखि अनाथ नाथ विन चढि चढि व्रजपर आवै॥ कासों कहौं जाइ कोइ हरिपै यह वसुदेवसुनावै। सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि व्रजवनिता सचपावै॥२१॥ तुह्मारो गोकुलहो व्रजनाथ। घेरचोहै आरि चतुरंगिनिलै मन्मथ सेना साथ॥ गर्जत अतिगंभीर गिरा मन मैगल मत्त अपार। धुरवा धूरि उडत रथ पायक घोरनकी खुरतार। चपला चमचमाति आयुध वग पंगति ध्वजा अकार। परत निसाननिघाव तमाकि धनु तरपत जिहि जिहि वार। मारैं मार करत भट दादुर पहिरे वहु वरन सनाह। हरे कवच उघरे देखियत मनो विरहनि घाली आह॥ करै तो गात अंग चातक पिक कहत भाजि जिनि जाहु। उरनि उरनि वे परत आनि वे जोधा परम उछाहु॥ भयो अहंकार सुभार सूरि वास काति रही उरशालि। हम कत हाथ परे नाहीं गहि रहि नढाल संभालि॥ अति घायल धीरज दुवाहिभा तेज दुर्जन दालि। टूक टूक ह्वै सुभट मनोरथ आने झोली घालि॥ निशि वासरकै विग्रह आयो अति संकेतहि घाउ। कापै करौं पुकार नाथ अब नाहिंन तुम विनु ठाँउ॥ नंदकुमार श्याम घन सुंदर कमल नैन सुखधाम। पठवहु वेगि गोहार लगावन सूरदास जिहि नाम॥२२॥ ऐसे में नसूध्यो करै अति निठुराई धरै उनै उनै घटा देखो पावसकी आईहै। चहुँ दिश घोर मोर लागीहै मदन रोर पिककी पुकार उर आरसी लगाईहै॥ दामिनिकी दमकनि बूंदनिकी झमकनि सेजकी तलफ कैसे जीजियत माईहै। लागेहैं विसारे वान श्याम विनु युग याम घायल ज्यों घूमैं मनो विपहर खाईहै॥ मिटै न जियको शूल जातहै यौवन फूल घरी घरी पल पल विरह सताई है।जगतके प्रभु विनु कल नपरे छिनु ऐसे पापी पिय तोहिं पीर न पराईहै॥२३॥ ऐसो जो पावस ऋतु प्रथम सुरति करि माधोजू आवहि। वरन वरन अनेक जलधर अति मनोहर भेप। तिहि समय सखी गगनसोभा सवहि ते सुविशेप॥उडत खग वग वृंद राजत रटत चातक मोर।वहुल विधि विधि रुचि वढावत दामिनी घनघोर॥ धरनि तृण तनु रोम पुलकित पिय समागमजानि। द्रुमनि वरवल्ली वियोगिनि मिलतिहै पहिचानि॥ हंस शुक पिक सारिका अलि गुंज नानानाद।

मुदित मंडल भेक भेकी निगत विहंग विषाद॥कुटज कुमुद कदंब कोविद कनक आरि सुकंजकि तकी करवीर वेलउ विमल बहुविधि मंत॥सघनदल किलकाल अंकृत सुमन सुकृत सुवास।निकट नैन निहारि माधो मन मिलनकी आस।मनुज मृग पशु पक्षि परमित और अमित जुनाम। सुमिरि देश विदेश परिहरि सकल आवहिं धाम॥ यहै अवधि उपाउ सोचति कछु नपरै विचार। कौन हित ब्रजवास विसरचो नीक नंदकुमार॥ परम सुहृद सुजान सुंदर ललित गति मृदुहास। चारु कुंडल लोल ललसित सुकमल विमल विशाल॥ वैनवर बहु विधि वजावन गोप शिशु चहुँपास सुदिन कब जब देखवी वन बहुत बाल विशाल॥ वार वारस विरहिनी अति विरह व्याकुल होति। वात वेग विलोल ज्यों अलिदीन दीपक ज्योति॥ सुनि सँदेश हम हृदय सूरदास करि पर तीति। दरश दै दुख दूरि कीजै प्रेमकी यह रीति॥२४॥मलार॥आजु घनश्यामकी अनुहारि। उनइ आए साँवरेते सजनी देखि रूपकी आरि॥इंद्रधनुष मानो पीत वसन छवि दामिनि दशन विचारि। जनु वगपांति माल मोतिनकी चितवत हितहि निहारि॥ गर्जत गगन गिरो गोविंद मिसु सुनत नयन भरे वारि।सूरदास गुण सुमिरि श्यामके विकल भई ब्रजनारि॥२५॥कैसेकै भरिहैंरी दिन साव नके।हरितभूमि भरे सलिल सरोवर मिटे मग मोहन आवनके।दादुर सोर मोर चातक पिक निशहि निशासुर पावनके। अब घन घुमडि उमडि दामिनि रूप मदन धनुष धरि धावनके॥ पहिरि कुसुमासारी कंचुकी तनु झुंडनि झुंडनि गावनके। सूरदास प्रभु दुसह घटत क्यों सोक त्रिगुण शिररावनके॥२६॥केदारो॥ हरिसुत पावक प्रगट भयोरी।मारुतसुत बंधौप्राति प्रोहित ताप्राति पालन छांडि गयोरी।हरसुत वाहन अशन सनेही सो लागत अँग अनल मयोरी।मृगमद स्वाद मोद नहिं भावत दधिसुत भानसभान भयोरी।वारिजसुत प्रतिक्रोध कियो सखी मेटि दकार सकार लयोरी। सूरदास विनु सिंधुसुतापति कोपि समर कर चाप लयोरी॥२७॥मलार॥ऐसे वादर तादिन आये जा दिन श्याम गोवर्धन धारचो।गरजि गरजि घन वरषन लागे मनो सुरपति निज वैर सँभारचो॥ सबै संयोग जुरेहै सजनी हठि करि घोष उजारचो।अब को सात दिवस राखैगो दूरि गयो ब्रजको रखवा रचो॥जब बलराम हुते था ब्रजमें काहू देवं न ऐसो डारचो। अब यह भूमि भयानक लागै विधिना बहुरि कंस अवतारचो॥ अब इह सुरति करैको हमारी या ब्रज कोऊ नाहिं हमारचो। सूरदास अति विकल विरहिनी गोपिन पिछलो प्रेम सँभारचो॥ २८॥ जो पै नंदसुवन ब्रज होते। तो पै नृप पावस सुनि विंनती कहत नडरती सोते॥ अब हम अबल जानिकै सखीरीहैं गरवरथ जोते। हमपर गरजि गराजि पठवत लेत न सकल सवोते॥ सूरदास प्रभु शैलधरन विनु कहा सबै अब तोते॥२९॥ इहां नाहिन नंदकुमार। इहै जानि अजान मघवा करी गोकुलआर॥ नैन जलद निमेष दामिनि आंसु वर्षत धार। दरश रवि शशि दुत्यो धीरज श्वास पवन अकार॥ उरज गिरिमै भरन भारी अगम काम अपार। गरजि विकल वियोग वाणी हरति अवधि अधार॥ पथिक मथुरा जाइ हरि सों बात कहैं विचार। शत्रुसेन सुधाम घेरचो सूर लगहु गुहार॥३०॥मानो माई सवन इहै है भावत।अब वहि देश नंदनंदन कहँ कोउ न समो जनावत॥धरत नवनै नवपत्र फूल फल पिक वसंत नहिं गावत। मुदित नसरसरोज अलि गुंजत पवन पराग उड़ावत॥ पावस विविध वरन बरबादर उडिनाहिं अंबर छावत। चातक मोर चकोर सोर करि दामिनि रूप दुरावत॥ हमपर सकल कोपकरि सजनी हठिकरि बलहि बढावत। सूरश्याम परपीर नजानत कत सर्वज्ञ कहावत॥३१॥ सखी कोई नई बात सुनि आई।इह ब्रजभूमि सकल सुर

संपति सोमदन मिलिक करिपाई ॥ घनदामिनि बगपांति मनोवै बरषे तडित सुहाई । बोलत बगनिकेत गरजै अति मानो फिरत दोहाई ॥ गोकुल मोर चकोर मधुप शुक सुमन समीर सोहाई। चाहत वास कियो वृंदावन विधिसों कछु नवसाई ॥ सकत न जानत लागत सूनो कोउ हुते बल वीर कन्हाई।सूरदास गिरिधर विन गोकुल कौन कौन करिहै ठंकुराई॥३२॥ बहुरि वन बोलन लागे मोर । करसंभार नंदनंदनकी सुनि बादरको धार ॥ जिनको पिय परदेश सिधारो सो तियपरी निठोर । मोहिं बहुत दुख हरि बिछुरेको रहत विरहको जोर ॥ चातक पिक चकोर पपीहा ए सबही मिलिचोर।सूरदास प्रभु वेगि नमिलहू जनम परतहै वोर॥३३॥यहि वनमोर नहीं एकामवान। विरह खेद धनु पुहुप भृंग गुन करिल तरैया रिपुसमान॥ लयो घेरि मनो मृग चहुँ दिशते अचूक अहेरी नाहिं अजान । पुहुपसेन घन रचित युगल तनु क्रीडत कैसो वन निधान ॥ महामुदित मन मदन प्रेमरस उमँगि भरे मैं मैनजानि । इहि अवस्था मिले सूरदास प्रभु वदरचोनानागैद जीवनदान ॥३४॥ आजु वन मोरन गायो आइ।जबते श्रवण सुन्यो सुन सखिरी तवते रह्यो नजाइ॥ ब्रजते बिछुरे मुरली मनोहर मनहुँ व्याल गयो खाइ । औषध वेद गरूरियो हरि नाहिं मानै मंत्र दोहाइ॥चातक पिक दुखदेत रैनि दिन पियपियवचन सोहाइ।सूरदास प्रभुतौ पैजीवहि जौ मिलिहै हरि आइ ॥३५॥ शिखिन शिखर चढि टेर सुनायो । विरहिनि सावधानह्वै रहियो साजि पावस दल आयो ॥ नव बादल बानैत पवन ताजी चढि चुटकि दिखायो।चमकत बीजु शैलकर मंडित गरजि निसान बजायो ॥ दादुर मोर चातक पिकके गण सब मिलि मारू गायो । मदन सुभट करबाण पंचलै ब्रजतन सन्मुख धायो ॥ जानि विदेश नंदको नंदन अवलन त्रास दिखायो।सूरश्याम पहिले गुण सुमिरिहि प्राण जात विरमायो ॥ ३६ ॥ हमारे माई मोरवा वैर परे । घन गर्जत वरज्यो नाहिं मानत त्यों त्यों रटत खरे ।। कारि करि पंख प्रगट हरि इनको लैलै शीश धरे । ताही ते मोहन विरहिनिको एऊ ढीठ करे ॥ को जानै काहेते सजनी हमसों रहत अरे । सूरदास परदेश वसे हरि एवनते नटरे॥३७॥कोउ जाइ वरजौ वोलत मोरनि । टेरति विरह छितुन रह्यो परै सुनि दुख होत करोरनि ॥ रटत पपीहा छिनु नरहाई होत विरहकी रोरनि । चमकत चपल चहूँ दिश दामिनि अंमर घनकी घोरनि ॥ वर्षत बूंद वाण से लागत विरहाशरके जोरनि । चंद्र किरन नैनन भरि पीवत नाहिंन तृप्ति चकोरनि ॥ मन्मथ पीर अधिक तनु कंपित ज्यों मृग केहरि कोरनि । सूर दास तोही पर वाचिवो मिलि हौ नंद किसोरनि॥३८॥ सारंग ॥ अहोरे विहंगम वनवासी । तेरे बोल तरजनी बाढत श्रवन सुनत नींदउनासी॥कहा कहौं कोउ मानत नाहीं इक चंदन औ चंद परासी । सूरदास प्रभु ज्यों न मिलैंगे लेहौं करवत कासी ॥३९॥सारंग श्यामहि सुरति कराइ।पौढेहोहिं जहां नँद नंदन ऊंचे टेर सुनाइ॥ गये ग्रीषम पावस ऋतु आई सब काहू चितचाइ । तुम विनु ब्रजवासी ऐसेजीवैं जों करिया विननाइ ॥ तुम्हरो कह्यो मानिहैं मोहन चरण पकरि लैआइ । अवकी वेर सूरके प्रभुको नैनन आनि देखाइ ॥ ४० ॥ मलार ॥ सखीरी चातक मोहिं जिआवत । जैसेहि रैनि रटति हौं पिय पिय तैसेही वह पुनि२ गावत ॥ अतिः सुकंठ दाहु प्रीतमको तारुजीभ मनलावत। आपुन पीवत सुधारस सजनी विरहिनि वोलि पिआवत ॥ जो ए पंछी सहाय न होते प्राण बहुत दुख पावत । जीवन सफल सूर ताहीको काज पराए आवत॥४१ ॥ सारंग ॥ चातक न होइ कोउ विरहिनि नारि। अजहूं पिय पिय रजनि सुरति करि झूठेहि मांगत वारि॥अति कृपगात देखि सखी याको अहनिशिवाणी रटत पुकारि । देखौ प्रीति वापुरे पशुकी आन जनम मानत नाहिं हारि ॥

अब पति बिनु ऐसो लागत यह ज्यों सरवर सोभित बिनवारि । त्योंही सूर जानिए गोपी जोन कृपा करि मिलहु मुरारि॥४२॥आसावरी ॥ अब मेरीको बोलै साखि । कैसे हरिके संग सिधारे अब लौं यहु तनु राखि ॥ प्राण उदान फिरत ब्रजको थिनि अवलोकनि अभिलापि । रूप रंग रस रास परानो वचन न आवै भाषि ॥ सूर सजीवन मूरि मुकुंदहि लै आईही आँखि। अब सोइ अंज न देति सुरुचि करि जिहि जीजै मुख चाखि॥४३॥मलार॥बहुत दिन जीवो पपीहा प्यारो॥वासर रैनि नावलै बोलत भयो विरह ज्वर कारो॥आपु दुखित परदुखित जानि जिय चातक नाउँ तुम्हारो । देखो सकल विचारि सखी जिय बिछुरनको दुख न्यारो॥जाहि लगै सोई पै जानै प्रेम बाण अनियारो॥सूरदास प्रभु स्वाति बूंद लगि तज्यो सिंधु करि खारो४४हौंतो मोहनके विरहजरीरे तूकत जारतारे पापीतू पंखि पपीहा पिउ पिउ पिउ अधराति पुकारत॥सब जग सुखी दुखी तू जल बिनु तऊ न तनुकी बिथहि बिचा रत।कहा कठिन करतूति न समुझति कहा मृतक अवलनि शर मारत॥तू शठ बकत सतावत काहू होत उहै अपने उर आरत। सूरश्याम बिनु ब्रज पर बोलत हठि अगिलेऊ जनम बिगारत४५॥नट॥ जो तू नेकहू उडि जाहि । कहा निशि वासर बकत बन बिरहिनी तनु चाहि ॥ बिधिः वचन सुदेश बाणी इहां रिझवत काहि । पति बिमुख पिक पुरुष बसुलौ एतौ कहा रिसाहि ॥ नाहिनै सुख सुनत समुझत विकल विरह व्यथाहि । राखि यहु तनवा अवधिलों मदन मुख जिनि खाहि तु ॥ हूतो तनु दग्ध खलखि फिरि कहा समुहाहि।करि कृपा ब्रज सूर प्रभु बिनु मौनि मोहिं बिसाहि४६ ॥ सारंग ॥ कोकिल हरिको बोल सुनाउ । मधुबनते उपठारि श्यामको इहि ब्रज लैकरि आउ ॥ जाजस कारण देत सयाने तन मन धन सब साजु । सुयश बिकात बचनके बदले क्यों न बिसाहत आजु ॥ कीजै कछु उपकार परायो यहै सयानो काज । सूरदास पुनि कहा यह औसर बन बसंत ऋतुराज ४७ सुनरी सखी समुझि शिख मेरी।जहां बसत यदुनाथ जगतमणि वारक तहां आउ दै फेरी ॥ तू कोकिला कुलीन कुशल मति जानत व्यथा बिरहिनी केरी । उपवन बैसि बोलि बरबानी वचन सुनाय हमहि करि चेरी ॥ कहियो प्रगट सुनाय श्यामसों अवला आनि अनंगरिपु घेरी तोसी नहीं और उपकारिनि यह बसुधा सब बुधि करि हेरी ॥ प्राणनके बदले न पाइयत सेंति बिकाय सुयश की ढेरी । ब्रजलै आउ सूरके प्रभुको गाऊंगी कलकीरति तेरी ॥ ४८ ॥ मलार ॥ अब इह बरषो बीति गई । जिनि सोचहु सुखमान सयानी भली ऋतु शरद भई ॥ प्रफुलित सरज सरोवर सुंदर नवविधि नलनि नई । उदित चारु चंद्रिका अवर उर अंतर अमृत मई ॥ घटी घटा सब अभिन मोह मद तमिता तेज हई । सरिता संयम स्वच्छ सलिल जल फाटी काम कई ॥ हे शारधा सँदेश सूर सुनि करुणा कहि पठई । यह सुनि सखी सयानी आई हरि रति अवधि दई ॥४९॥ मारू ॥ शरद समैहू श्याम न आए।को जानै काहेते सजनी कहुँ बिरहिनि बिर माए ॥ अमल अकास कास कुसुमिन क्षिति लक्षण स्वाति जनाए । सर सरिता सागर जल उज्ज्वल अलिकुल कमल सुहाए ॥ अहि मयंक मकरंद कंद हति दाहक गरल जिवाए । त्रिय सब रंग संग मिलि सुंदरि रचि सचि सींच सिराए ॥ सूनी सेज तुषार जमत चिरहास चंदन बाए।अवलहि आश सूर मिलिवेकी भए ब्रजनाथ पराए॥५०॥ अथ चंद्र मति तरकवदति ॥ कान्हरो॥छूटि गई शशि शीतल ताई । मनु मोहिं जारि भसम कियो चाहत साजत मनो कलंक तनु काई॥याहीते श्याम अकास देखिये मानो धूम रह्यो लपटाई । ता ऊपर दौदेत किरनि उर उडुगण कउनै चढि इत आई ॥ राहु केतु दोउ जोरि एक करि कहि इहि समै जरावहि पाई । ग्रसेतेन पचि

जात पापमें कहत सूर विरहिनि दुखदाई॥५१॥ केदारो यह शशि शीतल काहेते कहियत।मीनकेत अंबुज आनंदित ताते ताहित लहियत ॥ विरहिनि अरु कमलनि त्रासत कहुँ अपकारी रथनहिं यत । सूरदास प्रभु मधुवन गौने तो इतनो दुखसहियत ॥५२॥ करधनु लिए चंद्रहि मारि।तव तोपै कछु वै न सिरैहै जव अतिज्वर जैहै तनुजारि ॥ सूहरवाइ जाइ मंदिरचढि शशिसन्मुख दर्पण विस्तारि । ऐसी भांति बुलाइ मुकुर महि अति वल खंड खंड करिडारि ॥ सोई अवधि निकट आईहै चलैंतेही जो दई मुरारि।सूरसो विनय कराति हिमकरसों अव तू उदो छाँडि दिनचारि॥५३॥ ॥ सारंग ॥ हरको तिलक हरि विनु दहत । वै कहियत उडुराज अमृतमैतजि स्वभाव मोंहि वहनि वहत ॥ कत रथ थकित भयो जु पश्चिम दिशि ग्राह ग्रसित जैसे ग्रहन ग्रहत । छयो न छीन होत सुन सजनी भूमि भवनरिपु कहा वसत ॥ जाको ध्यान धरतिहौं दधिसुत मणिं महेशजैसे रहनि रहत । सूरदास प्रभु तुम्हारे मिलन विना प्राणतजति यह नाहिनै सहत॥५४॥ मारू ॥या विन होव कहा यह सूनो । लैकिन प्रगट कियो प्राचीदिशि विरहिनिको दुखदूनो॥सव निरदै सुर असुर शैल सखि सापर सर्प समेत । काहु नकृपाकरी इतननिमें त्रियतन वन दौ देत ॥ धन्य कहूं वर्षा रवि तमचर अरु कमलनको हेतु । युग युग जीवै जर वापुरी मिलै राहु अरु केतु । चितै चंद्र तन सुरति श्यामकी विकलभई व्रजवाल।सूरदास अजहूं इहि औसर काहे नमिलत गुपाल॥५५॥दूरि न करहि वीनको धारिवो । रथ थाक्यो मानो मृग मोहे नाहिन कहूँ चंद्रको टरिवो । जामें वीती सोई जानै कठिन सुप्रेम पाशको परवो।प्राणनाथ संगहुते विछुरे रहत न नैन नीरको झरिवो।चंदन चराचि तनु दहत मलयानिल श्रवण विरहानल जरिवो । सूर सुकौल नैनके विछुरे झूंठो सव जतन निको करिवो॥५६॥केदारो॥ विधु वैरी शिरपर वसै निशि दिन परई।हरि सुर भान सुभट विना यहि को वशकरई ॥ गगन शिखर उतरै चढै गर्वै जिय धरई । किरनि सकति भुज भरिहनै उरते न निकरई॥उडु परिवार पिशुन सभा अपयशहि न डरई॥सोइ परपंच करे सखी अवला ज्यों वरई । घटै वढै यहि पापते कालिमा न टरई॥सूरदुष्ट समुझावही त्यों त्यों जिय खरई॥५७॥ मलार ॥कोऊ वरजोरी या चंद्रहि । अतिही क्रोध करत हम ऊपर कुमुदिनि कुल आनंदहि ॥ कहाकहौं वर्पारवि तमचर कमलवलाहक कारे। चलत नचपल रहत थिरकै रथ विरहिनिके तनुजारे ॥ नीदत शैल उदधि पन्नग को श्रीपति कमठ कठोरहि । देति अशीश जरा देवीको राहु केतु किनि जोरहि । ज्यों जलहीन मीन तनु तलफति ऐसी गति व्रजवालहि । सूरदास प्रभु आनि मिलावहु मोहन मदन गुपालहि ॥५८॥ अव हारि कौनसों रति जोरी।काके भए कौनके ह्वैहैं वधे कौनकी डोरी।त्रिता युग इक पत्नी व्रत किए सोऊ विलपति छोरी । शूपनखा वन व्याहन आई नाक निपाति वहोरी ॥ पय पीवत जिन हती पूतना श्रुति मर्यादा फोरी । वहुतै प्रीति वढाइ महरिसों वहुरौ नाचितयो उन ओरी ॥ आरजपंथ छिंडाय गोपिकन अपने स्वारथ भोरी । सूरदास कारि काज आपनो गुढी डोरि ज्यों तोरी ॥ ५९ ॥ अव या तनुहि कहो कहा कीजै।सुनरी सखी श्याम सुंदर विन वाँटि विपम विष पीजै॥कै गिरिए गिरि चढि सुनि सजनीकै शीश शंकरहि दीजै॥कै दहिएदारुण दावानल जाइ यमुन धसि लीजै ॥ दुसह वियोग विरह माधोको दिनही दिनही छीजै । सूरश्याम प्रीतम विनु राधे सोचि सोचि जिय जीजै॥६०॥ भोपाली ॥ हमहि कहा सखी तनके जतनकी अव या यशहिं मनोहर लीजै । सकल त्रास सुख याही वपुलैं छांडि दियेते कछू न छीजै ॥ कुसुमित सेज कुसुम सर सरवर हरिके प्राण प्राणपति जीजै । विरह थाह व्रजनाथ सवनदै निधरक सकल

मनोरथ कीजै ॥ सवन कहत मन रीस रिसाए नाहिंन वसाय प्राण तजि दीजै । सूर सुपति सों चराचि चतुरई तुम यह जाइ बधाई लीजै॥६१॥रागकेदारो॥ जियहि क्यों कमलनि कादौंहीन।जिनसों प्रीति हुतीरी सुनु सखी तिनहूँ विछुरि दुखदीन ॥ सागर कूल मीन तरफतहैं हुलसि होत जल दीन । श्याम वारि विधि लई विरद तजि हम जु मरति लव लीन ॥ शशि चंदन अरु अंभ छांडि गुण वपु जु दहत मिलि तीन।सूरदास प्रभु मौन सबै ब्रज विन यंत्री विन वीन॥६२॥सारंग॥वैसी सारंग करहि लिये । सारंग कहत सुनत वे सारंग सारंग मनहि दिये ॥ सारंग पथिक वैठि वह सारंग सारंग विकल हिये । सारंग धुकि सारंग परे सारंग सारंग क्रोध किए ॥ सारंगहै भुज करहि विराजत सारंग रूप किए । सूरदास मिलहीं वे सारंग तौ परि सुफल जिये॥६३॥ मलार ॥ सो सुनियतहैरी द्वै माह । इतने महि सब तात समुझिवी चतुर शिरोमणि नाह ॥ आवन कह्यो बहुत दिन लाए करी पाछिली गाह । हमहिं छांडि कुबिजा मन बांध्यो कौन वेदकी राह ॥ एते पर संतोष न मानत परे हमारे डाह।सूरदास प्रभु पूरो दीजै दिन दश मानी साह ॥६४॥सारंग॥ ऐसो सुनियत है द्वै साव न । उहै शूल फिरि फिरि शालत जिय श्याम कह्यो हो आवन ॥ तव कत प्रीति करी अव त्या गी अपनो कीनो पावन । यह सुख सखी निकसि तजि जइये जहां सुनिए नावन ॥ एकहि वेर तजी मधुकर ज्यों लागे नेह वढ़ावन । सूर सुरति क्यों होति हमारी लागी नीकी भावन॥६५॥ कान्हरो ॥ काहेको पिय पियहि रटतहो पियको प्रेम तेरो प्राण हरैगो । काहेको लेति नयन जल भरि भरि नयन भरेते कैसे शूल टरेगो ॥ काहेको श्वास उसास लेतिहो वैरी विरहको दवा जरै गो ॥ छाल सुगंध सेज पुहुवावलि हारु छुए ते हियहारु जरैगो ॥ वदन दुराइ वैठि मंदिरमें वहुरि निशापति उदय करैगो। सूरसखी अपने इन्ह नैननि चंद्र चितै जिनि चंद्र जरैगो॥६६॥ सारंग ॥अव हरि हमको माईरी मिलत नाहिंन नैकु । नित उठि जाइ प्रातलै वनसँग आगे पाछे चलिन सकति सखी डग एकु ॥ बाँहा जोटी कुसुम चुनत दोउ द्रुमतन मेरे उर लागि एक दिन नख एक । रसन दशन धरि भरि लिए लोचन तोरन लयि सुधर बरषे एक ॥ लावत हृदय खोंचि पुरतपट फरुहु रि लेत परिजन रेक । अव कोउ सोहै वसु सूर प्रभु कौन अधिक जिहि परिवेक ॥६७॥ मलार ॥ हो कछु बोलति नाहीं लाजनि । एक दांईं मारि मरिवो पै मरिवो नंदनंदनके काजनि ॥ तजि ब्रजवाल आपनो गोकुल अब भाए सुखराजनि । कागज लिखिपातियां नाहिं पठवत पायो जियको माजनि ॥ जे गृह देखि परमसुख होतो बिन गोपाल भए भाजन । कासों कहौं सुनै कोई दुख दूरि श्यामसों साजन ॥ कारी घटा देखि धुरवा जनु विरह लयो करता जतु । सूरदास नागर बिन अब यह कौन सहै शिर गाजनु ॥६८॥ रागगौरी ॥ वहुदिन ऐसोई हतोरी।ह्वै जाते मेरे आंगन में मोहन चरच ऐसोरी ॥ बालदशाकी प्रीति निरंतर परी रहतही ठोरी । राधा राधा नँदनंदन मुख लागि रहो तिहि सोरी ॥ वेणु पाणि गहि मोको सिखावत मोहन गावन गौरी । सूरदास श्याम सारंग तजि वहु सुख वहुरि न भोरी ॥६९॥ सारंग ॥ गौरि पूतारिपु तासुत आए प्रीतम ताहि ननारे । शिव विरंचि जाके दोउ वाहन तिन हरे प्राण हमारे ॥ मोहिं बरजत उठि गमन कियो उठे, स्वाद लुवध रसाल । कुंती नंद तात सुख जोवत अरु वारत अतिचाल ॥ उगवै सूर छुटैवै वंधन तौ विरहिनि रति मानै । इहि विधि मिले सूरके स्वामी भक्त होइ सो जानै ॥७०॥ गौरी ॥ माधो जू दरशनकी औसेरि । लै जुगए मनसंग आपने वहुरि न दीन्हों फेरि॥तुम्हरे भवन नहीं भावै मनु जनु राखै ओठे रि । कमलन यो हम हरी हेम अति कासों कहैं दुख टेरि ॥ तुम बिछुरे सुख कबहुँ न पायो सव

जग देखति हेरि । सूरदास सब नातो ब्रजको आए नंद निवेरि ॥ ऋतु बसंत कोकिल कत कूजहि मदन संकली खेरि ॥७१॥ आसावरी ॥ सखीरी विरहा यह विपरीत । विरहिनी वासु क्यों करै पावसकाल प्रतीत ॥ नित नवला नवसत साजिकै अरु वह भावकराखी । ना जानौं नृपति प्राणपति कहां हैं रुचि आंखी ॥ सूरदास गोपालकी सब अवधि गई व्यतीत । बहुरि कब देखिवो मुख तुम्हारो यह नीत ॥ ७२ ॥ बिलावल ॥ तौऊ तौ गोपाल आहिं गोकुल बासी । ऐसी बातैं बहुतै कहि कहि लोग करत हैं हाँसी ॥ मथि माथि सिंधु सुरन कर पोषी शंभु भए विषुआसी । इमि हति कंस राज औरै दयो चाहिलई इक दासी॥विसरो सूर विरह दुख अपनो अब चली चाल औरासी । ऐसे विहंगम प्रीति निधि देखि प्रगट नपरखी खासी॥७३॥ सारंग ॥ उन ब्रजदेव नेकु चितु करते । कछु जिए आश रहति विधिवश बहुरहु फिरि २ मिलते ॥ कहा कहिए हरि सब जानत हैं या तनुकी गति ऐसी । सूरदास प्रभुताहि सुरुचिं मिलि नातरु हम गरवैसी ॥७४॥बिलावल ॥ श्यामतौ दीरे मधुवनियां । अपने हाथ पोहि पहिरावत कान्ह कनकके मनियां ॥ बहुरि गोकुल काहेको आवत भावत नवजोवनियां । सूरदास प्रभु वाके वशपरि अबहरि भए चिकनियां॥७५॥देखोरी धौं लोग चतुर मधुवनको।बादत नहीं गोविंद विमोहै गुणजानौ माधौको॥ जब हरि गमन करौ मधुवनको छांडो हेतु सबनको ।सूरदासप्रभु वेगि मिलावो गोविंद प्यारो निज प्राणनिको॥७६॥धमार॥कहोरी जो कहिवेकी होई।प्राणनाथ विछुरेकी वेदन और नजानै कोई॥ज्यों२ अधर सुधारस लैलै मगन रही सुख जोई । जो रस शिव सनकादिक दुर्लभ सो रस बैठी खोई ॥ कहा करौं कछु कहत नआवे सुखसपना भयो सोई । हमसों कठिन भए कमलापति काहि सुनावो रोई ॥ विरह व्यथा अंतरकी वेदन सो जाने जेहि होई । सूरदास सुख मूरि मनोहर लैजो गयो मनगोई॥७७॥ सारुत॥ विछुरेरी मेरे बालसँघाती । निकासि नजात प्राणएपापी फाटतनाहिं वज्रकी छाती ॥ हों अपराधिन दही मथतिही भरियौवन मदमाती । जोहों जानति हरिको चलिवो लाज छाँडि सँगजाती ॥ ढरकत नीर नैनभरि सुंदर कछु नसोहात दिवस अरु राती । सूरदास प्रभु दरशन कारन सब सखिअन मिलि लिखी जो पाती॥७८॥ मलार ॥ हरि परदेश बहुत दिन लाए । कारी घटा देखि बादरकी नैननीर भरि आए ॥ वीरवटाऊ पंथी हो तुम कौन देशते आए । इह पाती हमरी लै दीजो जहां साँवरे छाए ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत सोवत मदन जगाए । सूर दास गोकुलते विछुरे आपुनभए पराए॥७९॥हमारे हिरदै कुलसे जीत्यौं । फटत नसखी अजहुँ उहि आशा वरप दिवस परिवीत्यौं ॥ हमहूँ समुझि परी नीकेकरि यह आशा तनुरीत्यो । बहुरिन जीवन मरन सों साझो करी मधुपकी प्रीत्यो ॥ अबतौ बात घरी पहरन सखी ज्यों उदवसकी प्रीत्यों । सूरश्याम दासी सुख सोवहु भयो उभयमनचीत्यों॥८०॥सारंग॥एकदिवस कुंजन मैं माई । नाना कुसुम लैलै अपने कर दिए मोहिं वह सुरति नजाई ॥ इतनेमें घन गर्जि वृष्टिकरि तनु भीज्यो मोभई जुडाई । कंपत देखि उढाइ पीतपट लैकरुणामैं कंठ लगाई ॥ कहँ वह प्रीति रीति मोहनकी कहाँ अवधौं एते निठुराई । अब बलवीर सूरप्रभु सखीरी मधुवन वसि सब रति विसराई ॥ ८१ ॥ कान्हरो ॥ हों जानो मोको सखी माधो हितुहै कियो । अति आदर आतुर अलि ज्यों मिलि मुख मकरंद पियो ॥ वरु वह भली पूतना जाको पय सँग प्राण गयो । मनु मधु अचै निपट सूने तन यह दुख अधिक दयो ॥ देखि अचेत अमृत अवलोकनि चले जु सींचि हियो । सूरदास प्रभु वा अधार ते अबलौं परत जियो ॥८२॥ सारंग ॥ या गतिकी माई को जानै । पंकज

सों पंकज गहि सींचे ए कवहूंन निदानै ॥ शिवनृप अरु सनकादिक कपि मुनिराई पर रति रंगमानै । करिहारी वह लोभ निसोए जु रहत इकततानै ॥ बपु विचारि अवगनि इनते भाव कुचित यह ठानैं । सूरदास प्रभु शिशु लीलामै नावी रौनि जु बानै ॥ ८३ ॥ नाहिनै ब्रजनंद कुमार । परमचतुर सुंदर सुजान सखी या तनुको प्रतिहार ॥ रूप लकुट लिएही रहते अलि अनु दिन नैननि द्वार । तादिनते डर भौन भयो सखी शिवरिपुको संचार ॥ दुख आवन कछु अटक न मानत सूनो देखि अगार । अंशु उसास जात अंतरते करत न कछू विचार ॥ निशानिमेष कपाट लगे बिन शशिभूषतसतसार।सूर प्राणलटि लाज न छांडत सुमिरि अवध आधार ॥८४॥ मलार ॥ ऐसो जो हरि आवहिं गे । निरखि निरखि वह मदन मनोहर नैन बहुत सुख पावहिं गे ॥ तैसिए श्याम घटा घनघोरनि बिच बग पंति दिखावहिं गे । तैसेई मोर पिक करत कुलाहल हरषि हिं डोलना गावहिंगे ॥ तैसीए दमकति दामिनी अरु मुरली मलार बजावहिंगे । अवकै चलते जानि सूर प्रभु सब पहिले उठि धावहिंगे ॥८५॥ रामकली॥ ब्रज कहा खोरी छत अरु अछत एकरख अंतर मिटत नहींकोउ करहु कोरी ॥ बालकही अभिलाषनि लीला चकृत भई कुललाज छोरी ॥ विरुध विवेक गोपरस परि करि विरहसिंधु मारत ते बोरी ॥ यद्यपि हो त्रयलोक के ईश्वर परसि दृष्टि चितवति न वहोरी । सूरदास प्रभु प्रीति रीति कतते तुम सब अब रहे तोरी॥८६॥सारंग॥ हरि मोको हरि भषु कहि जुगयो । हरि दरशत हरि मुदित हरि ब्रज हरि जुलयो ॥ हरिरिपु तारिपु पतिको सुत हरि बिनु प्रजारि दहे । हरिको तात परस उर अंतर हरि विन अधिक बहे ॥ हरि तनया सुधि तहाँ वदति हरि अभिमानन ढायो । अब हरि दवन दिवा कुविजाको सूरदास मन भायो॥८७॥सारंग॥ हरि बिनु कौन सों कहिए । मनसिज व्यथा जारति अरनिलों उर अंतर दहिए॥ कानन भवन रैनि अरु वासर कहूं न सच लहिए । मूके भये यज्ञके पशुलौं कोलौं दुख सहिए ॥ कबहुँक उपजै जियमें ऐसी जाइ यमुन वहिए । सूरदास प्रभु कमल नैन बिन कैसे ब्रजमें रहिए॥ ॥८८॥मारू॥किते दिन हरि देखे बिनवीते।एकौ फुरत न श्याम सुंदर विन विरह सबै सुखजीते ॥ मदन गोपाल बैठि कंचनरथ चिते किए तनुरीते । सुफलकसुत लैगए दगादै प्राणनहींके प्रीते बहुरि कृपालु घोष कब आवहिं मोहन राम समीते । सूरदास प्रभु बहुरि कृपाकरि मिलहु सुदामा मीते ॥८९॥सारंग॥ कान्हधों हमसों कहा कह्यो । निकस्यो वचन सुनाइ सखीरी नाहिन परतु रह्यो मैं मतिहीन मर्म नाहिं जान्यो भूली मथत मह्यो । अब कहा करों घोष वासि सजनी दूत दूरि निवह्यो॥सबै अजान भई तेहि औसर काहू रथ नगह्यो । सूरदास प्रभु वृथा लाज करि दुसह वियोग सह्यो ॥९०॥नट॥ ग्वालिनी छांडि देखि रहु खरचो । तेरे विरहिनि व्याकुल भवन काज विसरचो कर पल्लव उडुपति रथ खैंच्यो मृगपति वैर करचो।पंखी पाति सबही सकुचाने चातक अनगभरचो । सारंग सुर सुनि भयो वियोगी हिमकर गर्व टरचो । सूरदास सापर सुतहित पति देखत मदन हरचो॥९१॥ सारंग ॥ विरह भरचो घर अंगन कौने।दिन दिन वाढत जात सखीरी ज्यों कुरखेतके डारे सोने ॥ तब वह दुख दीनो जब बांधे ताहूको फल जानि । निजकृत चूक समुझि मनहीं मन लेत परस्पर मानि ॥ हम अबला अति दीन हीन मति तुमहीहो विधियोग । सूर वदन देखतही अहुठै या शरीरको रोग॥९२॥मलार॥ जोपै कोउ माधो सों कहै । तो यह व्यथा सुनत नँदनंदन कत मधुपुरी रहै ॥ पहिलेही सब दशा बतावै पुनिकर चरण गहै । यह प्रतीति मेरे चित अंतर सुनत न प्रेम सहै ॥ यहै सँदेश सूरके प्रभुको को कहि यशहि लहै । अबकी बेर दयालु दरश दे

यह दुख आनि दहै ॥९३॥ सारंग ॥ माधो छांडिवे पहिचानि। तवते विरह कुटिल या गोकुल कीनो है विजु खानि ॥ तनु गिरि जानि आनि अवनी डर इहि उड भीतरहे । गमन कान्ह क्षण क्षण तु काम शशि किरनि कुदार गहे॥ रेणु अंजन जल नैन द्वार ह्वै रह्यो हृदय भरि पूरि । निकसत नाहीं पापरतन ज्यों गयो श्याम सँग दूरि ॥ तुमसों बात और अलि भाषे उलटि ध्यान वपुजीत्यो । द्वै नृप लरत जाइ इंद्रीगत कहो सूरको नीत्यो ॥९४॥ नट ॥ मेरे मन इतनी शूलरहीवै बतियाँ छतियाँ लिखि राखी जे नंदलाल कही ॥ एक दिवस मेरे गृह आए हौंहीं मथत दही । राति मांगत मैं मान कियो सखी सो हरि गुसा गही ॥ सोचाति आति पछिताति राधिका मुर्छित धरणि ढही । सूरदा स प्रभुके विछुरे ते व्यथा न जात सही॥९५॥ मलार ॥ हरि इते दिन लाए । आवन कहि गए अजहुँ न आए॥ चलत चितैं मुसुकायके मृदु वचन सुनाये तेई ढँग मोदक भए न धीरन हरि तन छूछे कारि छिटकाये॥ मोहन यदुनाथके गुण जानि न पाए। मनहु सूर घनश्याम सुंदर बहुरि न चरण दिखाए॥ ॥९६॥ यह दुख कौन सों कहों । जोइ बीताति सोइ कहति सयानी नित सब शूल सहों ॥ जे सुख श्याम संग सबकीने गहि राखे इहि गात । ते अब भए शीत या तनुको शाखा ज्यों द्रुम पात ॥ जो हुती निकट मिलनकी आशा सोतो दूरि गई । यथा योग ज्यों होत रोगिया कुपथी करत नई ॥ यह तनु त्यागि मिलन यों वनि है गंगासागर संग । अब सुनं सूर ध्यान ऐसो है श्याम राम इक रंग ॥९७॥ सारंग ॥ हम शरघात ब्रजनाथ सुधानिधि राखे बहुत जतन करि सचि सचि। मन मुख भरि भरि नैन ऐनह्वै उरप्रति कमल कोशलौं खचि खचि ॥ सुभग सुमन सब अंग अमृतमय तहां तहां राखति चित रचि रचि ॥ मोहन मदन स्वरूप सुयशरस करत सुगुप्त प्रेमरस पचि पचि । सूरसुदास पीयूष लागि रस पठयो नृपति तेउ गए वचि वचि । अब सोई मधु हरयो सुफलक सुत दुसह दाह जो उठत तन तचि तचि ॥९८॥ जबते नंदलाल चले काहू मुरली न बजाई । उन विना जिय कठिनपीर निकसिहू नजाई । वृंदावनमें भूलि काहू सारंगौ न गाई ॥ गोपिन कठिनहिए तरकि हू नजाई । सूरदास प्रभुकी लीला ऊधो कछु पाई ॥९९॥ सारंग ॥ माई वैदिना येदेह अछत विधना जो आनैरी । श्यामसुंदर रंग रंग युवति वृंद ठानैरी ॥ यद्यपि अक्रूर मूल परमगति पढ़ावैरी। प्राणनाथ कमल नैन बाँसुरी बजावैरी॥ सोइ कहा कहौं कहत कठिन कहै कौन मानैरी । सूरसो नंद प्रेम पीर विरही मिले जानैरी ॥ २९०० ॥ सबकोउ कहत सयानी वातै । समुझि नपरत बूझि नहिं आवत कही जात नाहिं तातै ॥ पहिले जानि अग्नि चंदन सी सती वहुत उमहै । समाचार ताते औ सीरे आगे जाय लहै ॥ कहत फिरत संग्राम सुगम अति कुसुममाल करवार । सूरदास शिरदेत शूरमा सोइ जाने व्यवहार ॥ १ ॥ गूजरी ॥ कुँवरिको वैरागी वैराग । पलटति वसन कराति निशिचोरी वपु विलसत भई जाग ॥ वेसरि वेहमूंदि मृगमद मथि नख उर धुकधुकी खेद कीनी । चलत चरण चित गयो गलित झिर स्वेद सलिल भैभीनी ॥ छूटी भुजबल फूटी वलय कर छटि लरफटी कंचुकी छीनी । मनहुँ प्रेमकी परनि परेवा याही से पढिलीनी ॥ अवलोकत इहि भांति रमापति जानौं अहिमणि छीनी । सूरदास प्रभु कही न जाइ कछु हौं जानी मति हीनी ॥२॥ मलार ॥ हरिको मारग दिन प्रति जोवति । चितवति रहति चकोर चंद्र ज्यों सुमिरि सुमिरि गुण रोवति ॥ पतिआं पठवत मसि नहिं खंडित लिखि लिखि मानहु धो वति । भूषण दिननिशिनीद हिरानी एकौ पलनहिं सोवति ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश विनु वृथा जनम सुख खोवति ॥ ३ ॥ बिलावल ॥ अंतर्यामी कुँवर कन्हाई । गुरु गृह पढत हुते जहां विद्या

तहां ब्रजकी सुधि आई ॥ गुरुसों कह्यो जोरि कर दोऊ दक्षिणा कहौ सो देउँ मँगाई । गुरुपत्नी कह्यो पुत्र हमारो मृतक भयो सो देहु जिवाई ॥ आनि दिए गुरुसुत यमपुरते तब गुरुदेव अशीश सुनाई । सूरदास प्रभु आइ मधुपुरी ऊधो को ब्रज दियो पठाई ॥ ४ ॥ अध्याय ॥ ॥ ४६ ॥उद्धवब्रजआगमनहेतु ॥ नट ॥ यदुपति जानि उद्धव रीति। जिहि प्रगट निज सखा कहियत करत भाव अनीति । विरहदुख जहां नाहिं जानत नहीं उपजै प्रेम । रेखनरूप मन वरन जाके यहिधरयो वह नेम॥त्रिगुणतनु कारि लखत हमको ब्रह्ममानत और । विना गुण क्यों पुहुमि उधरै यह करत मन डौर ॥ विरहरसके मंत्र कहिए क्यों चलै संसार । कछु कहत यह एक प्रगटत अतिभरयो अहंकार ॥ प्रेमभजन ननेकु याके जाइ क्यों समुझाइ। सूर प्रभु मन इहै आनी ब्रजहि देउँ पठाइ॥५॥ नट ॥ इह अद्योत दरशीरंग । सदा मिलि यकसाथ वैठत चलत वोलत संग॥ बात कहत नवनत यासों निठुर योगी जंग । प्रेम सुनि विपरीत भाषत होतहै रसभंग ॥ सदा ब्रज को ध्यान मेरे रासरंग तरंग सूर वह रस कहौं कासों मिल्यो सखा भुरंग॥नट॥संग मिलि कहौं का सों बात । यह तो कथत योगकी बातैं जामें रस जरिजात ॥ कहत कहा पितु मात कौनको पुरुष नारि कहा नात । कहा यशोदासीहै मैया कहा नंद समतात ॥ कहा ब्रज भानुसुता सँगको सुख यह वासर वह प्रात । सखी सखा सुख नहीं त्रिभुवनमें नहि वैकुंठ सुहात ॥ वै बातैं कहिए केहि आगे यह गुनि हरि पछिताते । सूरदास प्रभु ब्रजमहिमा कहि लिखी वदत वलभ्रात॥६॥ धनाश्री ॥ कहां सुख ब्रजको सो संसार । कहां सुखद वंसीवट यमुना यह मन सदा विचार ॥ कहां वनधाम कहां राधा सँग कहां संग ब्रजवाम । कहां रसरास वीच अंतर सुख कहां नारि तनु ताम॥कहां लता तरु तरु प्रति झूलनि कुंजरबन धाम । कहा विरह सुख विनु गोपिन सँग सूरश्याम ममकाम ॥सखा हमको मिले ऊधो वचननमारत ताम ॥ भावभजन विना नाहीं सुख कहां प्रेम अरु योग । काग हंसहि संग जैसो कहां दुख कहां भोग । जगतमें यह संग देखो वचन प्रति कहै ब्रह्म । सूर ब्रजकी कथा सो कहै यह करै जो दंभ॥७॥कान्हरो॥हंस कागको संग भयो॥ कहां गोकुल कहां गोप गोपिका विधि यह संग वयो ॥ जैसे कंचन कांच संग ज्यों चंदन संग कुगंधि । जैसे खरी कपूर दोउ एक सम यह भई ऐसी संधि ॥ जलविनु मीन रहत कहुँ न्यारे यह सो रीति चलावत । जब ब्रजकी बातैं यहि कहियत तबहिं तबहिं उचटावत ॥ याको ज्ञान थापि ब्रजपठऊं और न याहि उपाव । सुनहु सूर याको वन पठऊं यहै वनैगो दाव॥८॥धनाश्री ॥ याहि और कछु नहीं उपाइ । मेरो प्रगट कह्यो नहिं वदिहै ब्रजही देउँ पठाइ ॥ गुप्तप्रीति युवतिनकी कहिकै याको करौं महंत । गोपिनको परवोधन कारण जैहै सुनत तुरंत ॥अति अभिमान करेगो मनमें योगिनकी इह भांति । सूरश्याम यह निहचै करिकै बैठतहै मिलि पांति॥९॥जबहीं यह कहौंगो वाहि॥मोहिं पठवत गोपिकनपै हरष ह्वैहै ताहि॥योगको अभिमान करिहै ब्रजहि जैहै धाइ॥कहैगो मोहिं श्याम मानत करौं यह चतुराइ॥आइ गए तेहि समय ऊधो सखा कहि लियो वोलि । कंध धरि भुज भए ठाढे करत वचननि ठोलि ॥ बार बार उसास डारत कहत ब्रजकी बात । सूर प्रभुके वचन सुनि सुनि उपँगसुत मुसकात ॥ धनाश्री ॥ हरि गोकुलकी प्रीति चलाई । सुनहु उपँगसुत मोहिं न विसरत ब्रजवास सुखदाई॥१०॥यह चित होत जाउँ मैं अवहीं यहां नहीं मन लागत।गोपी ग्वाल गाइ वन चारण अति दुख पायो त्यागत ॥ कहा माखन रोटी कहां यशुमति जेवहु कहि कहि प्रेम । सूरश्यामके वचन हँसत सुनि थापत अपनो नेम ॥११॥ रामकली॥यदुपति लखो तेहि मुसकात । कहत हम मन रहे

जोइ सोई भई यह वात ॥ वचन परकट करन कारण प्रेमकथा चलाइ। सुनहु ऊधो मोहिं व्रजकी सुधि नहीं विसराइ ॥ रैनि सोवत दिवस जागत नहींहै मन आन । नंद यशुमति नारि नर व्रज तहां मेरो प्राण। कहत हरि सुनि उपँगसुत यह कहतहौं रसरीति । सूर चितते टरत नाहीं राधिकाकी प्रीति॥१२॥सखा सुन एक मेरी वात। वह लता गृह संग गोपिन सुधकरत पछितात॥ विधि लिखी नहिं टरत कैसेहु यह कहत अकुलात । हँसि उपँगसुत वचन बोले कहा हरि पछितात ॥ सदा हित यह रहत नाहीं सकल मिथ्या जात । सूर प्रभु यह सुनहु मोसों येकही सों नात ॥ १३ ॥ जब ऊधो यह वात कही। तव यदुपति अतिही सुख पायो मानी प्रगट सही॥ श्रीमुख कह्यो जाहु तुम ब्रजको मिलो जाइ व्रजलोग। मोविन विरह भरी व्रजवाला जाइ सुनावहु योग ॥ प्रेम मिटाइ ज्ञान परवोधहु तुमहो पूरण ज्ञानी। सूर उपँगसुत मन हरपाने यह महिमाइन जानी॥१४॥ गौरी ॥ ऊधो तुम यह निहचै जानो। मन वच क्रम मैं तुमहि पठावत व्रजको तुरत पलानो ॥ पूरण ब्रह्म अकल अविनाशी ताके तुमहो ज्ञाता। रेख न रूप जाति कुल नाहीं जाके नहिं पितु माता॥यह मत दै गोपिनको आवहु विरहन मनमें भापति।सूर तुरत तुम जाय कहौ यह ब्रह्म विना नहिं आसति॥१५॥सारंग॥ऊधो तुम वेगही व्रजजाहु। सुरति संदेश सुनाइ मेटो वल्लभनि को दाहु॥ काम पावक तुलित मनमे विरह श्वास समीर। भस्म नाहिन होन पावत लोचन नके नीर॥ आजुलौं इहि भांतिहै वा कछुक श्वास शरीर । एते पर विना समाधानहि क्यों धरै त्रियधीर ॥ वार वार कहा कहों तुमसों सखा साधु प्रवीन। सूर सुमति विचारिए जिहि जियै जल विनुमीन ॥ १६ ॥ धनाश्री ॥ ऊधो व्रजको गमन करो। हमहि विना विरहिनी गोपिका तिनके दुखहि हरो ॥ योग ज्ञान परवोधि सवनको ज्यों सुख पावे नारि। पूरण ब्रह्म अलख परचै करि मोहिं विसारै डारि ॥ सखा प्रवीन हमारे तुमहौ तुमते नहीं महंत । सूर श्याम कारण यह पठवत ह्वै आवैंगे संत ॥ १७ ॥ नट॥ ऊधो मन अभिमान वढायो । यदुपति योग जानि जिय सांचो नयन अकास चढ़ायो ॥ नारिन पै मोको पठवत है कहत सिखावन योग। मन ही मन अपकरत प्रशंसा यह मिथ्या सुख भोग ॥ आयसुमानि लियो शिर ऊपर प्रभु आज्ञा पर मान। सूरदास प्रभु गोकुल पठवत मैं क्यों कहौं कि आन ॥१८॥ कान्हरो॥ तुम पठवत गोकुलको जैहौं। जो मानि हैं ब्रह्मकी वातैं तौ उनसों मैं कैहौं ॥ गदगद वचन कहत मन प्रफुलित वार वार समुझैहौं। आजुइ नहीं करौं तुवकारज कौनकाज पुनि लैहौं ॥ यह मिथ्या संसार सदाई यह कहि कै उठि ऐहौं। सूर दिना द्वै व्रजजन सुखदै आइ चरण पुनि गैहौं ॥ १९ ॥ केदारो ॥ सुन सखा हित प्राण मेरे नाहिनै सम तोहिं। कैसेहूं करि उऋणकीजो व्रजवधुनते मोहिं॥त्याजि ये मैं रतन दीन्हों वृथा गोपकुमारि। सालोक्य सामीप्य नासारोपिता भुजचारि ॥ अंगरही साजो चितासों संधि नहीं तनु ज्ञान। सोई तुम उपदेशहु जो लहैं पद निर्वान॥ जौन अवकै कृतकरैं तो होइहौं ऋण दास। सूर गाइ चराइहौं ह्वै फेरि वासि व्रजवास ॥२०॥ विहागरो ॥ तुरत व्रजजाहु उपँगसुत आजु। ज्ञान वुझाइ खवरि दै आवहु एक पंथ द्वै काजु ॥ जवते मधुवन को हम आए फेरि गयो नाहिं कोई। युवतिन पै ताहीको पठवै जो तुम लायक होई॥ एक प्रवीन अरु सखा हमारे जानी तुम सारि कौन। सोइ कीजो जैसे व्रजवाला साधन सीखै पौन ॥ श्रीमुख श्याम कहत यह वाणी ऊधो सुनत सिहात। आयसु मानि सूरप्रभु जैहौं नारि मानि हैं वात ॥२१॥ गौरी ॥ ऊधो व्रज जिनि गह रु लगावहु। तुम व्रजनारि जानि मन सकुचत कहिधौं योग सुनावहु ॥ वाणी कहत समुझि वै लेहैं

कही हमारी मानो। विरहदाह यह सुनत बूझि है मानहु अनलहि पानौ ॥ अवहीं जाहु विकल सब गोपी योग वचन कहिपोषौ। सूर नंद बाबा जननी यशोमतिको वेगिजाइ संतोषो॥२२॥सोरठ॥हल धर कहत प्रीति यशुमतिकी। कहा रोहिणी एतनपावै वह बोलन वह हितकी॥ एक दिवस हरि खेलत मोसँग झगरो कीन्हो पेलि। मोको दौरि गोदकरि लीनो इनहिं दियो करटेलि॥ नँद बाबा तब कान्ह गोदकरि खीझन लागे मोको।सूर श्याम न्हान्हो तेरो भैया छोह न आवत तोको॥२३॥ रामकली॥यशोमति करती मोको हेत।सुनत ऊधो कहत वनत न नैनभरि भरि लेत॥दुहूंको कुशला त कहियो तुमहि भूलत नाहिं। श्याम हलधर सुत तुम्हारे और कौन कहाहिं॥ आइ तुमको धाइ मिलि हैं कछुक कारज और। सूर हमको तुमहिं बिन सुख नहीं है कहुँ ठौर॥२४॥विहागरो॥ श्याम कर पत्री लिखी बनाइ। नंदबाबासों विनती करी करजोरि यशोदामाइ॥ गोप ग्वाल सखन गहि मिलि मिलि कंठ लगाइ। और ब्रजनर नारि जेहैं तिनहि प्रीति जनाइ॥ गोपिकनि लिखि योग पठयो भाउ जान नजाइ। सूरप्रभु मन और यह कहि प्रेम लेत दृढाइ॥ २५॥ उपँगसुत हाथदई हरिपाती यह कहियो यशुमति मैयासों नहिं विसरत दिन राती॥कहत कहा वसुदेव देवकी तुमको हमहैं जाए। कंस त्रास शिशु अतिहि जानिकै ब्रजमें राखि दुराए॥ कहै बनाइ कोटि कोउ बातैं कहि बलराम कन्हाई।सूरकाज करिकै कछु दिनमें बहुरि मिलैंगे आई॥२६॥बिलावल॥ ऊधो इतनो कहियो जाइ। हम आवैंगे दोऊ भैया मैया जिनि अकुलाइ॥ याको विलग बहुत हम मान्यो जब कहि पठयो धाइ।वह गुण हमको कहा विसरिहै बड़े किये पय प्याइ॥ और जु मिल्यो नंद बाबासों तब कहियो समुझाइ। तौलों दुखी होन नहिं पावैं धवरी धूमरि प्याइ॥ यद्यपि यहाँ अनेक भांति सुख तदपि रह्यो नाजाइ। सूरदास देखो ब्रजवासिन तबहीं हियो सिराइ॥२७॥आसावरी॥ ऊधो जननी मेरी को मिलिहौ अरु कुशलात कहोगे। बाबा नंदहि पालागन कहि पुनि पुनि चरण गहोगे॥ जादिनते मधुवन हम आए शोध न तुमही लीनोहो। दैदै सौंह कहोगे हित कारि कहा निठुराई कीन्होहो॥यह कहियो बलराम श्याम अब आवैंगे दोउ भाईहो। सूर कर्मकी रेख मिटै नाहिं यहै कह्यो यदुराईहो॥२८॥ केदारो॥विधनाइहै लिख्यो संयोग। जो कहांते मधुपुरी आए तज्यों माखन भोग॥ कहां वै ब्रजके सखा सब कहां वै मथुरा लोग। देवकी वसुदेव सुत सुनि जननि कैहै सोग॥ रोहिणी माता कृपा करि उछँग लेती रोग। सूर प्रभु सुख यह वचन कहि लिखि पठायो योग॥२९॥ गौरी॥ पाती लिखि ऊधो कर दीन्ही।नंद यशुदहि हेतु कहि दीजौ हँसि उपंग सुत लीन्ही॥ मुख वचनन कहि हेतु जनाये तुमहौ हितू हमारे। बालक जानि पठै नृप डरते तुम प्रतिपालन हारे॥ कुबिजा सुन्यो जात ब्रज ऊधो महलई लियो बोलाई। हाथन पाति लिखी राधाको गोपिन सहित बड़ाई॥ मोको तुम अपराध लगावत कृपा भई अन्यास। झुकत कहा मोपर ब्रजनारी सुनहु न सूरजदास॥३०॥मलार॥ हमपर काहेको झुकत ब्रजनारी।साझे भागनहीं काहूको हरिकी कृपा निरारी॥ कुबिजा लिखो संदेश सबनको अरु कीनी मनुहारी। हौंतौ दासी कंसराइकी देखो हृदय विचारी॥ फलन मांझ ज्यों करुई तोमरी रहत घुरेपर डारी। अबतौ हाथ परी यंत्रीके बाजत राग दुलारी॥३१॥ गौरी॥ ऊधो ब्रजहि जाहु पालागौं।यह पाती राधाकर दीजौ यह मैं तुमसों मांगौं॥ गारीदेहि प्रात उठि मोको सुनत रहत यह वानी। राजाभये जाइ नँदनंदन मिली कूबरी रानी॥ मोपर रिस पावत काहेको बराजि श्याम नाहिं राख्यो। लरिकाईते बांधति यशुमति कहा जु माखन चाख्यो॥ रजुलै सबै हजूर होति तुम सहित सुता वृषभान।

सूर श्याम बहुरो ब्रज जैहें ऐसे भए अजान ॥ ३२ ॥ धनाश्री ॥ ऊधो यह राधासों कहियो । जैसी कृपा श्याम मोहिं कीन्हीं आपु करत सोइ रहियो ॥ मोपर रिस पावत वे कारण मैंहौं तुम्हरी दासी ॥ तुमहीं मनमें गुणिधौं देखो विन तप पायो कासी ॥ कहां श्यामकी तुम अर्धंगिनि में तुम सरकी नारी ॥ सूरज प्रभु को यह नबूझिए क्यों न वहाँलौं जारीं ॥ ३३ ॥ सारंग ॥ ऊधो जाइ कहियो राधिकाही तुम इतनी सी वात । आवन दिए कहो काहेको फिरि पाछे पछितात ॥ अब दुखमानि कहाधौं करिहौं हाथ रहैगी गारी ॥ हमें तुम्हें अंतरहै जेतो जानतहैं बनवारी ॥ एतो मधुप सवैरस भोगी जहाँ जहाँ रसनीको जो रस खाइ स्वाद करि छाँडे सोरस लागत फीको । एक कुँवर हरि हरयो हमारो जगतमांझ यशलीनो । ताको कहा निहोरो हमको मैत्रिभंग करि दीनो ॥ तुम सब नारि गँवारि अहीरी कहा चातुरी जानों । राखिनसकी आपुवशके तब अब काहे दुखमानों । सूरदास प्रभुकीए वातें ब्रह्म लखैं नाहिं पारै । जाके चरण पाइके कमला गति आपनी विसारै ॥ ३४ ॥ केदारो ॥ सुनियत ऊधो लये सँदेशो तुम गोकुलको जात । पाछे करि गोपिनसों कहियो एक हमारी वात ॥ मात पिताको नेह समुझिके श्याम मधुपुरी आए । नाहिन कान्ह तुम्हारे प्रीतम ना यशुमतिके जाए ॥ देखोवूझि आपने जियमें तुम माधो कौने सुखदीने । ए वालक तुम मत्त ग्वालिनी सबै मुंड करि लीने ॥ तनक दही माखनके कारण यशुदा त्रास दिखावै । तुम हँसि सब बांधनको दौरी काहू दया न आवे ॥ जो वृषभानुसुता उनकीनी सो सब तुम जिय जानों । ताही लाज तज्यो ब्रजमोहन अब काहे दुख मानो ॥ सूरदास प्रभु सुनि सुनि वातें रहे श्याम शिरनाए । इत कुविजा उत प्रेम गोपिको कहत न कछु बनि आए ॥ ३५ ॥ विहागरो ॥ ऊधो जात ब्रजहि सुनेदेवकी वसुदेव सुनिकै हृदय हेत गुने ॥ आपुसे पाती लिखी कहि धन्य यशुमति नंद । सुत हमारो पालि पठयो अति दियो आनंद ॥ आइके मिलि जात कवहुँ न श्याम अरु बलराम । इहाँ कहति पठाइ देहें तवहि तनु विनवाम ॥ वाल सुख सब तुमहिं लूट्यो मोहिं मिले कुमार । सूर यह उपकार तुमते कहत वारंवार ॥ ३६ ॥ बिलावल ॥ तब ऊधो हरि निकट बुलायो । लिखि पाती दोउ हाथ दई तेहि ए मुख वचन सुनायो ॥ ब्रजवासी जावत नारि नर जल थल द्रुम वन पात । जो जेहिविधि तासों तैसेही मिलि अरस परस कुश लात ॥ जो सुख श्याम तुमहिते पावत सो त्रिभुवन कहुँ नाहिं । सूरदास प्रभुदे सोंह आपनी समुझत हौं केनाहिं ॥ ३७ ॥ सारंग ॥ पहिले प्रणाम नंदराइसों । ता पीछे मेरो पालागन कहियो यशुमति माइसों ॥ वार एक तुम वरसानेलों जाइ सबै सुधि लीजो । कहि वृषभानु महरसों मेरो समाचार सब दीजो ॥ श्रीदामा आदि सकल ग्वालनको मेरेहित भेटिवो । सुख संदेश सुनाइ सवनको दिन दिनको दुख मेटिवो ॥ मित्र एक मन वसत हमारे ताहि मिले सुखपाइहो । करि करि समाधान नीकी विधि मोहिको माथो नाइहो ॥ डरियहु जिनि तुम सघन कुंजमें हैं तहँ के तरु भारी । वृंदावन मति रहति निरंतर कवहुँ न होत निनारी ॥ ऊधो सों समुझाइ प्रगट करि अपने मनकी वीती ॥ सूरदास स्वामी सों छल सों कही सकल ब्रज प्रीती ॥ ३८ ॥ कही हरि ऊधो सों ब्रज प्रीति वोलै चले योग गोपिन को तहां करन विपरीति ॥ तुरत अंक भरि रथहि चढायो विनय कह्यो करि ताहि ॥ विरहा जाल मेटि गोपिनको आवहु काज निवाहि ॥ लै रज चरण शीश वंदन करि ब्रज रैहों दिन द्वैक ॥ सूरज प्रभु श्रीमुख कहि पठवत तुम विनु रहौं न नैक ॥ ३९ ॥ गौरी ॥ गहर जानि लावहु गोकुल जाइ ॥ तुमहिं विना व्याकुल हम ह्वै हैं यदुपति करी चतुराइ ॥ अपनोई रथ तुरत मँगायो दियो तुरत परनाइ । अपने अंग आभूषण करि करि आपुनही पहिराइ ॥ अपनो मुकुट पीतांवर अपनो देत

सबै सुख पाये। सूरश्याम तदपि उपंगसुत भृगुपद एक बचाये ॥४०॥ बिलावल ॥ ऊधो चले श्याम आयसु सुनि ब्रज नारिनको योग कह्यो। हरिके मन यह प्रेम लहैगो वहतो जिय अभिमान गह्यो ॥ आतुर चल्यो हर्ष मन कीन्हे कृष्ण महंत करि पठै दियो। स्यंदन उहै श्याम सब भूषण जानि परै नंदसुवन वियो ॥ युवती कहा ज्ञान समुझैंगी गर्ग वचन मन कहत चल्यो। सूर ज्ञानको मान बढाये मधुवनके मारगहि मिल्यो॥४१॥बिलावल॥जबहिं चले ऊधो मधुवनते गोपिन मनहिं जनाइ गई। वार वार भौंरा लगै कानन कछु दुख कछु हिय हर्ष भई॥जहँ तहँ काग उड़ावन लागीं हारि आवत उडि जाहि नहीं।समाचार कहि जबहिं सुनावत उड़ि बैठत सुनि अनत कहीं॥सखी परस्पर यह कह बातैं आजु श्यामकै आवत हैं।किधौं सूर कोई ब्रज पठयो आजु खबरिकै पावत हैं॥४२॥आजु कोउ नीकी बात सुनावै। कै मधुवनते नंद लाडिले कै व दूत कोउ आवै ॥ भौंरा इक चहुँ दिशते उडि उडि कान लाग कछु गावै।उत्तम भाषा ऊंचे चढि चाढि अंग अंग सगुनावै ॥ सूरदास कोऊ ब्रज ऐसो जो ब्रजनाथ मिलावै॥४३॥धनाश्री॥तू तो उडहि नहीं रे कागा।जो गोपाल गोकुलको आवैं तो ह्वै है बडि भाग ॥ दधि ओदन भरि दोनो देहौं अरु अंचलकी पाग। मिलिहौं हृदय सिराइ श्रवण सुनि मेटि विरहके दाग ॥ जैसे मात पिता नाहिं जानत अंतरको अनुराग। सूरदास प्रभु करैं कृपा तब जबते देह सुहाग॥४४॥कल्याण॥ मथुराते निकसि परे गैल मांझ आइ उहै मुकुट पीतांबर श्याम रूप काछे। भृगु पद एक वंचित उर और अंग आछे ॥ ज्ञानको अभिमान किए मोको हारि पठयो। मेरोई भजन थापि माया सुख झवयो ॥ मधुवनते चल्यो तबहिं गोकुल नियरान्यो॥ देखत ब्रज लोग श्याम आयो अनुमान्यो॥राधा सों कहति नारि काग सगुन टेरो ॥ मिलि हैं तोहिं श्याम आजु भयो वचन मेरो ॥ वैसोइ रथ देखति सब कहति हरष वानी। सूरज प्रभुसे लागत तरुनी मुसकानी ॥ ४५ ॥ अध्याय ॥४७॥ भँवरगीत ॥ राग बिलावल ॥ राधेहि सखी बतावतरी। वैसोई रथ लखौं सेतमें को उतहीते आवतरी॥चढिआयो अक्रूर जाहिपर स्यंदन ब्रज तन धावतरी। वैसोइ ध्वजा पताका वैसोइ घर घर सवन सुनावतरी ॥ कोउ कहै श्याम कहाति को ऐहै ब्रजतरुनी हरषावतरी। सूरश्याम जेहि मग पगधारे तेहि मारग दरशावतरी ॥४६॥सारंग॥ है कोउ वैसीही अनुहारि मधुवन तनते आवत सखीरी देखहु नैन निहारि ॥ माथे मोर मुकुट कटि किंकिणि पीतवसन रुचि चारि।सूरदास प्रभु विन सब ऐसी जैसे मीन विन वारि॥४७॥कल्याण॥ वैसोइ रथ वैसोइ कोउ आवत उतहिते।झुरि झुरि सब मराति विरह गोपी जनकीते।देखोरी मुकुट झलक कुंडलकी ओभा। वैसोई पटपीत अंग सुंदर अतिसोभा ॥ आएरी नंदसुवन राधा हरषानी। सूर मरत मीन तुरत मिले अगम पानी ॥४८॥नट॥ देखत हरषभई ब्रजनारी। वै निहचै आए वनवारी॥जो जैसे सो तैसे धाई। घर घर लोगन सुने कन्हाई ॥ रथहीतन सब निरखनलागे। सपनेको सुख लूटत आगे ॥ कृपाकरी आए गोपाल। गोपिन जानी विरह विहाल॥ ज्योंही ज्योंरथ आतुर आवै। त्योंही त्योंहीं पट फहरावै। सूर भई सुख व्याकुल नारी।प्रेमविवस आनँद उर भारी॥४९॥बिलावल॥घर घर इहै शब्द पर्‍यो।सुनत यशुमति धाइ निकसी हर्षिताहि यो भर्‍यो॥नंद हर्षित चले आगे सखा हर्षत अंग।झुंड झुंडन नारि हर्षत चली उदधि तरंग॥गाइ हर्षत पय श्रवत थन हुं करत गउ बाल। उमँगि अंगन मात कोऊ विरध तरुन अरु बाल॥ कोउ कहत बलराम नाहीं श्याम रथपर एक। कोउ कहति प्रभु सूर दोऊ रचित बात अनेक ॥५०॥बिलावल॥ सुने ब्रजलोग आवत श्याम।जहां तहांते सबै धाई सुनत दुर्लभ नाम। मानो मृगी वन जरति व्याकुल तुरत वरष्योनीर ॥ वचन गदगद प्रेम व्याकुल

धरत नहिं मनधीर ॥ एक एक पल युग सबनको मिलनको अतुरात । सूर तरुनी मिलि परस्पर भईहर्षितगात ५१॥ धनाश्री ॥ नंदगोप हर्षितह्वै गए लेन आगे । आवत बलराम श्याम सुनत दौरि चली वाम मुकुट झलक पीतांबर मन मन अनुरागे । निहचै आए गोपाल आनंदित भई बाल मिट्योविरह जंजाल जोवत तेहिकाल । गदगद तनु पुलक भयो विरहाको शूल गयो कृष्णदरश आतुर अति प्रेमके वेहाल ॥ रथ ज्योंज्यों निकट भयो मुकुट पीत वसन नयो मनमें कछु सोच भयो श्याम किधौं कोउ । सूरज प्रभु आवतहैं हलधरको नहीं लखत झंखति कहति तो होते संग वीर दोउ॥५२॥आसावरी॥आजु कोइ श्यामकी अनुहारी।आवत उत उमँगे सुनि सबही देखिरूपकी वारी ॥ इंद्रधनुषसे उर वनमाला चितवत चित्तहरैमनो हलधर अग्रज मोहनके श्रवणन शब्दपरै । गई चली निकट न देखे मोहन प्राणकिए बलिहारी । सूरसकल गुण सुमिरि श्यामके विकल भई ब्रजनारी॥५३॥ विलावल ॥कोउ माई आवत है तनु श्याम । वैसे पट वैसे रथ बैठनि वै भूषण वै दाम ॥ जो जैसे तैसे उठि धाई छांडि सकल गृह काम । पुलक रोम गद्गद तेहि छिन सोभित अंग अभिराम । इतने बीच आइ गए ऊधो रहीं ठगी सब वाम ॥ ज्यों निधि पाइ गँवाइ हाथते भई व्याकुल तनुताम।सूरदास प्रभु कत आवत हैं बसे कूबरी धाम ॥५४॥उमँगि ब्रज देखनको सब धाए। एकहि एक परस्पर बूझति जनु मोहन दूलह आए ॥ सोई ध्वजा पताका सोई जा रथ चढि ता दिवस सिधाए । श्रुति कुंडल अरु पीत वसन स्रक वैसोई साज बनाए ॥ जाइ निकट पाहिचान्यों ऊधो नयन जलज जलछाए।सूरज श्याम मिटी दरश आशा नूतन विरह जगाए॥५५॥जबहिं कहो ए श्याम नहीं । परी मुरछि धरणी ब्रजबाला जो जहां रही सुतहीं ॥ सपनेकी रजधानी ह्वैगई जो जागी कछु नाहीं । बारबार रथ वोर निहारहिं श्याम विना अकुलाहीं ॥ कहा आय करिहैं ब्रज मोहन मिली कूवरी नारी । सूर कहत सब ऊधो आए गई श्याम शरमारी॥५६॥ रामकली ॥ तरुणी गई सब विलखाइ । जबहिं आए सुने ऊधो अतिहि गई झुराइ ॥ परीं व्याकुल जहां यशुमति गईं तहां सब धाइ । नीर नयनन बहत धारा लई पोंछि उठाइ ॥ एक भई अब चलौ मारग सखा पठयो श्याम । सुनो हरि कुशलात ल्यायो महरि सों कहैं वाम ॥ जबहिंलौं रथ निकट आयो तबहुँ ते परतीति । वह मुकुट कुंडल पीतांबर सूर प्रभु अंगरीति ॥५७॥ विलावल ॥ भली भई हरि सुरति करी । उठौ महरि कुशलात बूझिये आनँद उमँगि भरी ॥ भुजा गहे गोपी परबोधत मानहु सुफल घरी । पाती लिखि कछु श्याम पठायो यह सुनि मनहि ढरी ॥ निकट उपंगसुत आइ तुलाने मानो रूप हरी । शूरश्यामको सखा इहैरी श्रवणन सुनी परी ॥५८॥ धनाश्री ॥ निरखति तब ऊधो सुख पायो । सुंदर सुलज सुवंश देखियत याते श्याम पठायो ॥ नीके हरि संदेश कहैगो श्रवण सुनत सुख पैहै । यह जानति हरि तुरत आय हैं एकहि हृदय सिरै है ॥ घेरि लिए रथ पास चहूंघा नंद गोप ब्रजनारी । महर लिवाइ गए निज मंदिर हरपित लियो उतारी ॥ अरघ देत भीतर तेहि लीन्हों धनि धनि दिन काहि आजु । धनि धनि सूर उपंगसुत आए मुदित कहत ब्रजराजु॥५९॥अथ नंदवचनउद्धवमति॥मलार॥कबहिं सुधि करत गोपाल हमारी । पूंछत नंद पिता ऊधो सों अरु यशुदा महतारी॥बहुते चूकपरी अनजानत कहा अबके पछिताने॥वासुदेव घर भीतर आए मैं अहीरकै जाने॥पाहिले गर्ग कह्यो हुतो हमसों संग देत गयो भूली॥सूरदास स्वामीके बिछुरे राति दिवस भैशूली ॥६०॥अथ उद्धववचन ॥ सारंग॥कह्यो कान्ह सुन यशुमति मैया॥आवहिंगे दिन चारि पांचमें हम हलधर दोउ भैया॥मुरली वेत विषाण देखिये शृंगी वेर सवेरौ । लैजिनिजाइ चुराइ राधिका कछुक

खिलौना मेरो॥जादिनते तुम्हसों बिछुरे हम कोउ न कहत कन्हैया।भोरहि नाहिं कलेऊ कीनो सांझ न पयपीयो नावैया॥कहत न बन्यो संदेशो मोपै जननि जितो दुख पायो।अब हमसों वसुदेव देवकी कहत आपनो जायो ॥ कहिए कहा नंदवावासों वहुत निठुर मन कीनों । सूर हमहि पहुँचाइ मधुपुरी बहुरो शोध नलीनों ॥६१॥ पुनः नंदवचन ॥ सारंग ॥ हमते कछु सेवा न भई । धोखे धोखे रहे धोखही जाने नाहिं त्रिलोक मई ॥ चरणपकरि करि विनती करिवो सब अपराध क्षमाकीवे । ऐसो भाग होइगो कबहूं श्याम गोदमें लीवे ॥ कहै नंद आगे ऊधोके एकवेर दरशन दीवे । सूरदास स्वामी मिलि अबकै सबै दोष गत कीवे॥६२॥अथ सखावचन ॥ बिलावल॥भली बात सुनियत है आज। कोऊ कमलनयन पठयो है तन बनाइ अपनो सो साज ॥ पूँछत सखा कहो कैसे हैं अब नाहीं कछु करते लाज । कंसमारि वसुदेव गृह आए उग्रसेनको दीन्हों राज ॥ राजा भए ज्ञानही गयो सुख सुरभी सँग वन गोप समाज । अब सुनु सूर करै को कौतुक ब्रजमें नाहिंवसत ब्रजराज॥६३॥ ॥ अथ ब्रज नर नारीवाक्य ॥ सारंग ॥ वैसोइ रथ वैसोइ सब साज । मानहुँ बहुरि विचारि कछू मन सुफलकसुत आयो ब्रज आज ॥ पहिलेइ गमन गयो लै हरिको परम सुमति राखो रतिराज । अजहुँ कहा कीयो चाहतहै याते अधिक कंसको काज ॥ व्याध जो मृगन वधत सुन सजनी सो शर काढि संग नाहिं लेत । यह अक्रूर कठिनकीना इहि ये इतनो दुख देत ॥ ऐसे वचन बहुत विधि कहि कहि लोचन भरि सींचत उरगात । सूरदास प्रभु अवधि जानिकै चलीं सबै पूँछन कुश लात॥६४॥रामकली॥ब्रज घर घर सब होत वधाए।कंचन कलस दूब दधि रोचन महरि महर वृंदावन आए ॥ मिलि ब्रजनारि तिलक शिरकीनो करि प्रदक्षिणा पास । पूँछत कुशल नारि नर हरपत आए सब ब्रजवास ॥ सकसकात तन धकधकात उर अकबकात सब ठाढे । सूर उपंगसुत बोलत नाहीं अतिहिरदै ह्वै गाढे॥६५॥ सखीवचन गोपीमति ॥ धनाश्री ॥ आजु ब्रज कोऊ आयो हैं । कैधौं बहुरि अक्रूर क्रूरह्वै जियत जानि उठिधायो है ॥ मैं देख्यो ताको रथ ठाढो तुम सखी शोधन पायो है । कैकरि कृपा दुखित जानिकै हरिसंदेश पठायो है ॥ चलीं मिलि सिमिटि सखी पूछनको ऊधो दरश दिखायो है । तब पहिंचानि प्रभुको भृत कमल जोरि शिरनायो है ॥ हरिहैं कुशल कुशल है तुमहूं कुशल लोग जेहि भायो हैहै वह नगर कुशल सूरज प्रभु करि सुदृष्टि जहां छायो है ॥ ॥ ६६ ॥ धनाश्री ॥ देख्यो नंद द्वार रथ ठाढो । बहुरि सखी सुफलकसुत आयो पर्‍यो सँदेह जिय गाढो ॥ प्राण हमारे तबहिं गयो लै अब किहि कारण आयो । मैं जानी यह बात सत्यकै कृपाकरन उठि धायो ॥ इतने अंतर आनि उपंगसुत तिहि क्षण दरशन दीन्हों । तब पहिंचानि जानि प्रभुको भृतु परम सुचित मन कीन्हों ॥ तब परणाम कियो अति रुचि सों अरु सबही कर जोरे । सुनियत हुते तैसई देखे सुंदर सुमति सुभोरे ॥ तुम्हरो दरशन पाइ आपनो जन्म सफल करि मान्यो । सूर सुऊधो मिलत भए सुख ज्यों खग पायो पान्यो॥६७॥धनाश्री॥ बोलक इनहूको सुनि लीजे । कैसी उठनि उठै धौं ऊधो तैसे उत्तर कीजे ॥ यामें कछू खर चियतु नाहीं अपनो मतो नदीजै । कहिरी सखी भगाए किहि उर चलहु जाइ सुख छीजै ॥ द्वै कर जोरि भईं सन्मुख ठाढी वचन कहो त्यों जीजें । सूर सुमति सोई दीजे हरि वदन सुधारस पीजे ॥ ६८ ॥ नट ॥ ऊधो कहो हरि कुशलात । कहो आवन किधौं नाहीं बोलिए सुख वात ॥ एक छिन युग जात हमको विन सुने हरि प्रीति । आइ आपै कृपाकीनी अबकहो कछु नीति ॥ तब उपंगसुत सबनि बोले सुनौ श्रीमुख योग । सूर सुनि सब दौरि आई हटकि

दीनो लोग॥६९॥ अथ उद्धव वचन॥सारंग॥ गोपी सुनहु हरि कुशलात।कंस नृपको मारि छोरचो आप नो पितु मात॥ बहुत विधि व्यवहार करि दियो उग्रसेनहि राज। नगर लोग सुखी वसतहैं भए सुरनके काज॥ वे इह पाती मुझे लिखि मुख कह्यो कछू संदेश। सूर निर्गुण ब्रह्म धरिकै तजहु सकल अँदेश॥७०॥ केदारो॥ गोपी सुनहु हरि संदेश।गए संग अक्रूर मधुवन हत्यो कंस नरेश॥रज क मारचो वसन पहिरे धनुष तोरे जाइ। कुवलया चाणूर मुष्टिक दई धरणि गिराइ॥ मात पितुके वंदि छोरे वासुदेव कुमार। राज्य दीन्हों उग्रसेनहि चमर निज करढार॥ कह्यो तुमको ब्रह्म ध्यावो छांडि विषै विकार। सूर पाती दई लिखि मोहिं पढौ गोपकुमार॥७१॥अथ पाती वचन अवस्था॥सारंग॥ पाती मधुवन हीते आई। सुंदर श्याम कान्ह लिखि पठई आइ सुनोरी माई॥ अपने अपने गृह ते दौरीं लै पाती उरलाई। नैनन निरखि निमेष न खंडित प्रेम व्यथा न बुझाई॥ कहा करौं सूनो यह गोकुल हरि विन कछु न सोहाई। सूरदास प्रभु कौन चूकते श्याम सुरति बिसराई॥ ७२॥ निरखत अंक श्याम सुंदरके वार वार लावत लै छाती।लोचन जल कागज मसि मिलि करि ह्वै गई श्याम श्याम जूकी पाती॥ गोकुल वसत नंदनंदनके कवहुँ वयारि न लागी ताती। अरु हम उती कहा कहैं ऊधो जव सुनि वेणु नाद सँग जाती॥ प्रभु कै लाड वदति नाहिं काहू निशि दिन रसिक रास रस राती। प्राणनाथ तुम कवहुँ मिलहुगे सूरदास प्रभु वाल संघाती॥ ७३॥ पातीमधुवनते आई। ऊधो हरिके परम सनेही ताके हाथ पठाई॥ कोउ पूछत फिरि फिरि ऊधोको आपुन लिखी कन्हाई। वहुरो दई फेरि ऊधोको तव उन बाँचि सुनाई। मनमें ध्यान हमारो राखो सूरदास सुख दाई॥७४॥मारू॥ लिखि आई ब्रजनाथकी छाप।ऊधो बाँधे फिरत शीश पर देखे आवै ताप॥उलटी रीति नंदनंदनकी घरि घरि भयो संताप। कहियो जाइ योग आराधैं अविगत अकथ अमाप॥ हरि आगे कुबिजाअधिकारिनि को जीवै इहि दाप। सूर सँदेश सुनावन लागे कहौं कौन यह पाप॥७५॥मलार॥ कोउ ब्रज बाँचत नाहिंन पाती। कत लिखि लिखि पठवत नँदनंदन कठिन विरहकी कांती॥नैन सजल कागज अति कोमल कर अँगुरी अतिताती। परसै जरै विलोकै भीजै दुहूँ भाँति दुख छाती॥ क्यों ए वचत सुअंक सूर सुनि विरह मदन शरघाती। मुख मृदु वचन विना सींचे अव जिवहि प्रेम रस माती॥काहेको लिखि पठवत कागर।मदन गोपाल प्रगट दरशन विनु क्यों राखहि मन नागर॥ ऊधो योग कहा लै कीवो विनु जल सूखो सागर। कहिधौं मधुप सँदेश सुचितदै मधुवन श्याम उजागर॥सूरश्याम विनु क्यों मन राखौं तन योवनके आगर॥७६॥ ॥धनाश्री॥ ऊधो कहा करैंलै पाती। जवनहिं देख्यो गुपाल लालको विरह जरावत छाती॥ जान तिहीं तुम मानति नाहीं तुमहूँ श्याम सँघाती। निमिष निमिष मोविसरत नाहीं शरद सुहाई राती॥ यह पाती लैजाहु मधुपुरी जहां वसैं श्याम सुजाती। मन जु हमारे उहांलैगए काम कठिन शरघाती॥ सूरदास प्रभु कहा चहतहै कोटिक वात सुहाती। एकवेर मुख वहुरि दिखा वहु रहैं चरण रजराती॥७७॥ मलार॥ ॥सँदेशन मधुवन कूपभरे। अपने तौ पठवत नँद नंदन हमरे फिरि नफिरे॥ जेइ जेइ पथिक हुते ब्रजपुरके वहुरि नशोधकरे। कै वह श्याम सिखाय प्रबोधे कै वह वीचमरे॥ कागजगरे मेघ मसि खूटी शर दौलागि जरे। सेवक सूर लिखैते आधो पलक कपाट अरे॥७८॥ मलार॥ आए नँदनंदनके नैव।गोकुल मांझ योग विस्तारचो भली तुम्हारी जेव॥ जव वृंदावन रास रच्यो हरि तवहिं कहा तुम हेव। अव यह ज्ञान सिखावन आए भस्म अधारी सेव॥ अवलनको लै सो ब्रत ठान्यो जो योगनिको योग। सूरदास ए सुनत नजीवहि

आतुर विरह वियोग॥७९॥सारंग॥यहि अंतर मधुकर इक आयो॥निज स्वभाव अनुसार निकट होइ सुंदर शब्द सुनायो। पूँछन लागीं ताहि गोपिका कुविजा तोहिं पठायो। कीधौं सूरश्याम सुंदरको हमैं सँदेशोल्यायो॥८०॥ मलार ॥मधुकर कहा यहां निर्गुणगावहि। एप्रिय कथा नगरनारि नसों कहहि जहां कछु पावहि॥ जिनि परसहि अब चरन हमारे विरहताप उपजावहि। सुंदर मधु आनन अनुरागी नैनन आनि पिलावहि॥जानति समैं नंद नंदनको और प्रसंग चलावहिं॥हम नाहिंन कमलासी भोरी करि चातुरी मनावहिं॥ अति विचित्र लरिकाकी नाईं गुरदेखाइ बौरावहि। ज्यों अलि कि तव सुमन रसलै तजि जाइ वहुरि नहिं आवहि॥नागर रति पति सूरदास प्रभु किहि विधि आनि मिलावहि ८१विलावलमधुप तुम कहौ कहांते आएहो॥जानतिहौं अनुमान आपने तुम यदुनाथ पठायेहौ॥वैसही वरन वसन तनु वैसे वै भूषण सजिलाएहो। लै सरवसु सँग श्याम सिधारे अब कापर पहिराएहो॥ अहो मधुप एकै मन सबको सुतौ उहां लै छाएहो। अब यह कौन सयान बहुरि ब्रज जाकारण उठि आएहो॥मधुवनकी मानिनी मनोहर तहीं जाहु जहाँ भाएहो। सूर जहां लौं श्याम गातहौ जानि भले करि पायेहो॥८२॥ गौरी ॥ मधुकर जो हरि कही सो कहिए। तब हम अब इन हीकी दासी मौन गहे क्यों रहिए॥ जो तुम योग सिखावन आए निर्गुण क्यों करि गहिए। जो कछु लिखो सोइ माथेपर आनि परे सब सहिए॥ सुंदर रूप लाल गिरिधरको विनु देखे क्यों लहिए। सूरदास प्रभु समुझी एकै रस अब कैसे निरवहिए॥८३॥ ऊधो वचन॥धनाश्री॥ सुनहु गोपी हरिको संदेश। करि समाधि अंतर्गति ध्यावहु यह उनको उपदेश॥ वै अविगति अविनाशी पूरण सब घट रह्यो समाइ। निर्गुण ज्ञान विनु मुक्ति नहींहै वेद पुराणन गाइ॥ सगुण रूप तजि निर्गुण ध्यावो इक चित इक मनलाइ। यह उपाव करि विरह तरो तुम मिलैं ब्रह्म तब आइ॥ दुसह सँदेश सुनत माधोको गोपी जन विलखानी। सूर विरहकी कौन चलावै बूडत मन विन पानी॥८४॥ गोपीवचन॥ मलार॥ मधुकर हमही क्यों समुझावत। वारंवार ज्ञान गीता ब्रज अवलनि आगे गावत॥नँदनंदन विनु कपट कथाए कत कहि रुचि उपजावत। सृक चंदन जो अंग क्षुधारत कहि कैसे सुखपावत॥ देखि विचारतही जिय अपने नागरहो जु कहावत। सब सुमनन पर फिरी निरख करि काहेको कमल बँधावत॥ चरण कमल कर नयन कमल वर इहै कमल वन भावत।सूरदास मनु अलि अनुरागी केहि विध हो वहरावत॥८५॥मलार॥रहुरे मधुकर मधु मतवारे कौन काज या निर्गुण सों चिरजीवहु कान्ह हमारे॥ लोटत पीत पराग कीच में नीचन अंग सम्हारे। वारंवार सरक मदिराकी अपसर रटत उघारे॥ द्रुम वेली हमहूं जानतहो जिनकेहो अलि प्यारे। एक वास लै कै विरमावत जेते आवत कारे॥ सुंदर वदन कमलदल लोचन यशु मति नंद दुलारो।तन मन सूर अर्पि रही श्यामहि कापै लेहि उधारे॥८६॥मधुकर कौन देशते आए। ब्रजवाते अक्रूर गए लै मोहन ताते भए पराए। जानी सखा श्याम सुंदरके अवधि बांधन उठि धाए। अंग विभाग नंद नंदनके यहि स्वामितहे पाए॥ आसन ध्यान वाइ आराधन अलिमन चित तुम ताए। अति विचित्र सुवुद्धि सुलक्षण गुंजयोग मतिगाए॥ मुद्रा भस्म विषान त्वचा मृग ब्रज युवतिन मनभाए। अतसी कुसुम वरन मुरली मुख सूरज प्रभु किन ल्याए॥८७॥मधुकर काके मीत भए। त्यागे फिरत सकल कुसुमावलि मालति भोरे लए॥ छिनुके विछुरे कमल रतिमानी केतकि कत विधए। छांडि देहु नेहु नहिं जान्यो लै गुण प्रगट नए॥ नूतन कदम तमाल वकुल वट परसत जनम गए। भुज भरि मिलनि उड़त उदासहै गत स्वारथ

समए। भटकत फिरत पात द्रुम वेलिन कुसुम करंज भए॥ सूर विमुख पद अंवुज छाँडे विपैनि विप वर छए॥८८॥जैतश्री॥ मधुकर काके मीत भए। दिवस चारि करि प्रीति सगाई रसलै अनत गए॥ डहकत फिरत आपने स्वारथ पाखंड अग्र दए॥ चाडसरै पहिंचानत नाहिंन प्रीतम करत नए। मुंडउ वांटि मेलि वौराए मन हरि हरि जुलए। सूरदास प्रभु दूत धर्म ढिग दुखके वीज वए॥ ८९॥सारंग॥ मधुकर हम नहोहिं वै वेली। जिनभजि तजि तुम फिरत और रँग करत कुसुमरस केली॥ वारेते वर वारि वढी है अरु पोपी पिय पानि। विनु पिय परस प्रात उठि फूलत होति सदा हित हानि॥ ए वेली विरहा वृंदावन उरझी श्याम तमाल। पुहुपवास रस रसिक हमारे विलसत मधुप गोपाल॥ योग समीर धीर नाहिं डोलत रूप डार ढिगलागी। सूर परागनि तजति हिएते श्रीगुपाल अनुरागी॥ ९०॥ मधुकर कहा पढी यह रीति। लोक वेद श्रुतिपंथ रहित सव कथा कहति विपरीति॥ जन्मभूमि व्रज सखी राधिका केहि अपराध तजी। अतिकुलीन गुणरूप अमित सुख दासी जाइ भजी॥ योगसमाधि वेद गुण मारग क्यों समुझै युगवारि। जो पै गुण अतीत व्यापकहै तोहिं कहाहै प्यारि॥ रहि अलि ढीठ कपट स्वारथ हित तजि वहुवचन विशेपि मन क्रम वचन वचाति यहि नाते सूरश्याम तन देखि॥९१॥मलार॥ मधुकर काहेको गोकुल आए। हम वैसीही सच अपनेमें दूने विरह जगाए॥ हम जानतिहैं जिनहि पठाए श्याम सँदेशो ल्याए। जन्म जन्मके दूत तिरोवन कोनाहिं लार लगाए॥ कहा करहि कहा जाहि सखीरी हरिविनु कछु न सोहाए। जन्म सुफल सूर तिनको जो काज पराए धाए॥ ९२॥ मलार॥ आए माई दुर्गश्यामके संगी। जे पहिले रँग रँगे श्यामरँग तिनहीकी वुधिरंगी॥ हमरी उनकीसी मिलवतहो ताते भए विहंगी। सूधी कहै सवन समुझावत ते सांचे सरवंगी॥ औरनको सरवसु लै मारत आपुन भए अभंगी। सूर सुनाम शिलीमुख जे पीवैं घन कवच उपंगी॥९३॥सखी वाक्य परस्पर मलार॥हैकोऊ मधु वनते आयो। सुनो सुमति सव सखी सयानी हितकरि कान्ह पठायो॥जा मोहन विछुरन ते गोकुल इतै दिवस दुख पायो। सोइहि कमलनैन करुणामय हृदही मांझ वतायो॥ जो जहुँ योगी जतन करतहै नेकहु ध्यान न आयो। सो यह परमउदार मधुप व्रज वीथिन मांझ वहायो॥ अतिकृपालु आतुर अवलनिको व्यापक अंग गहायो। समुझि सूर सुख होत श्रवण सुनि नेति जुनिगमन गायो। ॥९४॥ सारंग॥ परी पुकार द्वार गृह गृहते सुनहु सखी इक योगी आयो। पवन सधावन भवन छोडावन नवल रिसाल गोपाल पठायो॥आश अवध परम ऊरध जो तिनहि कहा हितल्यायो। कनक वेलि कामिनि व्रजवाला योग अग्नि देवेको धायो॥भवभय हरन असुर मारन हित काल मधु पुरी आयो॥ व्रजमें यादव एकौ नाहीं काहेको उलटो सुयश हँरायो॥ सुथल श्याम धाम में वैठो मृत अधिकार जनायो। सूर विसारि प्रीति सांवरे भली चतुरता जगत हसायो ॥९५॥सारंग॥ देन आए ऊधो मत नीको। आयोरी मिलि सुनहु सयानी लिए सुयशको टीको॥तजन कहत अंवर आभूपण गेह नेह सुतहीको। अंग भस्म करि शीश जटाधरि सिखवत निर्गुण फीको॥ मेरे जान इहै युवति नको देत फिरत दुख पीको। ता शरापते भए श्याम तन तउ न गहत डर जीको॥ जाकी प्रकृति परी जिय जैसी सोच न भली वुरीको॥जो लगि सूर व्याल डसि भाजै सुख नाहिं होत अमी को॥९६ ॥नट॥ऊधो तनक सुयश हरिको श्रवणन सुनि। कंचन काँच कपूर कररस सम दुख सुख गुण औ गुन॥नाम उनको सुनि गृह कुटुंवतजि जाइ वसत परकानन॥परमहंस विहंग देखतहि आवत भिक्षा माँगन॥ वालकपनको राउ संहारचो लोकलाज डरडारी। शूपनखाकी नाक निवारचो त्रिय वश

भए मुरारी॥बलिसों बांधि पताल पठायो कीन्हें यज्ञनि आई। सूर प्रीति जानी ते हरिकी कथा तजी नहिं जाई॥९७॥सोरठ॥ऊधो श्याम सखा तुम सांचे।की करिलियो स्वांग बीचहिते वैसेहि लागत कांचे जैसी कही हमहि आवतही औरन कहि पछिताते।अपनो पति तजि और बतावत सोहिं मानि कछु खाते। तुरत गमन कीजै मधुवनको इहां कहा यह ल्याए। सूर सुनत गोपिनकी वाणी ऊधो शीशनवाए ॥९८ ॥नट॥ऊधो वेगि मधुवन जाहु।हम विरहिनी नारि हरि बिन कौन करै निवाहु॥तहीं दीजै मुरपरैना नफो तुम कछु खाहु॥जो नहीं ब्रजमें विकानो नगर नारी साहु।सूर वै सब सुनत लैहैं जिय कहा पछिताहु ॥९९॥धनाश्री॥ ऊधो और कछू कहिबे को।मनमाने सोऊ कहि डारौ पालागें हम सुनि सहिबे को॥ यह उपदेश आजुलौं ऐसो कानन सुन्यो नदेख्यो। निरपत पटे कटुक अति जीरन चाहत मम उर लेख्यो ॥ निशि दिन वसत नेकहू न निकसत हृदय मनोहर ऐन। याको इहां ठौर नाहिंन है लै राखों जहां चैन ॥ ब्रजवासी गोपाल उपासी हमसों बातैं छांडि। सूर योग धन राखु मधुपुरी कुबिजा के घर गाडि॥३०००॥नट॥जाहु जाहु ऊधो जानेहौ पहिचानेहौ। जैसे हरि तैसे तुम सेवक कपट चतुरई सानेहौ ॥ निर्गुण ज्ञान कहा तुम पायो कौने सिखै ब्रज आनेहौ। यह उपदेश देहु लै कुबिजहि जाके रूप लुभानेहौ ॥ कहां लगि कहौं योगकी बातैं बांचत नैन पिराने हौ । सूरदास प्रभु हमपर खोटी तुमतौ बारहवानेहौ ॥१॥ गौरी ॥ ऊधो जाहु तुमहि हम जाने। श्याम तुमहिं ह्यां को नहिं पठए तुमहौ बीच भुलाने ॥ ब्रजनारिन सों योग कहतहौ बात कहत न लजानें। बडे लोगन विवेक तुम्हारे ऐसे भए अयाने ॥ हमसों कही लई हम साहिकै जिय गुणि लेहु सयाने। कहा अबला कहा दिशा दिगंबर मष्टकरौ पहिचाने ॥ सांच कहौ तुमको अपनी सों बूझति बात निदाने । सूर श्याम जब तुमहिं पठायो तब नेकहु मुसकाने ॥ २॥ रागगौरी ॥ कहति कहा ऊधोसों तुम बौरी। जाको सुनत रहे हरिके ढिग श्याम सखा यह सोरी॥ कहा कहति रीमैं पत्याति नहिं सुनि तुही कहा बनावति। हमको योग सिखावन आए यह तेरे मन आवति॥करनी भली भलेई जाने कुटिल कपटकी बानी। हरिको सिखाव नहीं रीमाई इह मन निहचै जानी॥कहां शशी रस कहां योगधर इतने अंतर भाषत।सूर सबै तुम भई बावरी याकी पति कहा राखत॥३॥ ॥ कान्हरो ॥ ऐसेही जन धूत कहावत।मोको एक अचंभो आवत यामें वै कछु पावत।बचन कठोर कहत कहि दाहत अपनो महत गवाँवत। ऐसिउ प्रकृति परी कान्हाको युवतिन ज्ञान बतावत ॥ आपुन निलज रहत नख शिखलौं एतेपर पुनिगावत । सूर करत परशंसा अपनी हारेहु जीति कहावत ॥ ४ ॥ मलार ॥ ऐसे जन बेसरम कहावत। सोच विचार कहूँ इनके नहिं कहि डारत जो आवत ॥ अहिके गुण इनमें परिपूरण यामें कछू न पावत। लघुता हलत महति करियो हँसि नारिन योग बतावत॥ब्रजमें हीन भए अब जैहै अनतहु ऐसेहि गावत॥५॥कान्हरो॥प्रकृति जो जाके अंग परी। श्वान पूँछको कोटिक लागे सूधी कहुँ नकरी ॥ जैसे सुभक्ष नहीं भक्ष छांडै जन्मत जौन घरी। धोए रंग जात नहिं कैसेहु ज्यों कारी कमरी॥ ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी। सूर होइ सोहोइ सोच नहिं तैसेहैं एऊरी ॥ ६ ॥सारंग॥ ऊधो होहु आगे ते न्यारे। तुमहि देखि तन अधिक जरतहै अरु नैननके तारे ॥ अपनो योग सैंति धरि राखो यहां देत कत डारे। सो को जानत अपने मुखहै मीठे ते फल खारे॥ हमरे गिरिधरके जु नाम गुण बसे कान्ह उरबारे। सूरदास हम सबै एक मत ए सब खोटे कारे॥ ७ ॥ कल्याण ॥ जाहु जाहु आगेते ऊधो पति राखति हौं तेरी। काहे को अब रोष दियावत देखति आंखि बरत हैं मेरी॥ तुम जो

कहतहौ संत हैं गोविंद कहियत है कुविजा उन घेरी। दोऊ मिले तैसेई तैसे वह अहीर वै कंसकी चेरी ॥ तुम सारिखे वसिष्ठ पठाए कहिए कहा बुद्धि उनकेरी। सूरश्याम वह सुधि विसराई गावत हैं ग्वालन सँग हेरी ॥ ८ ॥ सारंग ॥ समुझि नपरत तुम्हारी ऊधो। ज्यों त्रिदोष उपजे जक लागत बोलति वचन न सूधो ॥ आपुनको उपचार करौ कछु तव औरन शिष देहु । वडो रोग उपज्यो है तुमको भौन सवारे लेहु ॥ वहां भेषज नाना विधिको अरु मधुरिपुसे हैं वैद। हम कातर डरपत अपने शिर यह कलंक है कैद ॥ सांची वात छाँडिकत झूठी कहौ कौन विधि सुनही। सूरदास मुकुताहल भोगी हंस ज्वारिको चुनही ॥ ९ ॥ सोरठ ॥ हम अलि गोकुल नाथ अराध्यो। मन वच क्रम हरिसों धरि पतिव्रत प्रेम योग तप साध्यो ॥ मात पिता हित प्रीति निगम पंथ तजि दुख सुख श्रमनाख्यो। मानापमान परम परितोषन सुस्थल थिति मन राख्यो ॥ सकुचासन कुल शील करपि करि जगत वंद्य कर वंदन। मौन पवाद पवन आरोधन हित क्रम काम निकंदन ॥ गुरुजन कानि अग्नि चहुँ दिशिनभ तरनि ताप विनु देखे। पिवत धूम उपहास जहां तहँ अपयश श्रवण अलेषे ॥ सहज समाधि विसारि वपुकरी निरखिनिमेष नलागत। परमज्योति प्रति अंग माधुरी धरत इहै निशि जागत ॥ त्रिकुटी संग भ्रूभंग तराटक नैन नैन लगि लागे। हँसनि प्रकाश सुमुख कुंडल मिलि चंद्र सूर अनुरागे॥मुरली अधर श्रवणध्वनि सो सुनि शब्द नहद करि कानै। वरषत रसरुचि वचन संग सुख पद आनंद समानै ॥ मंत्र दियो मनजात भजन लगि ज्ञान ध्यान हरिहीको॥सूर कहौ गुरु कौन करै अलि कौन सुनै मत फीको१० ॥ धनाश्री ॥ ऊधो हम आजु भई वडभागी। जिन अँखियन तुम श्याम विलोके ते अँखिया हम लागी ॥ जैसे सुमन वास लै आवत पवन मधुप अनुरागी। अति आनंद होतहै तैसे अंग अंग सुखरागी। ज्योंदर्पणमें दरशन देखत दृष्टि परम रुचि लागी ॥ तैसे सूर मिले हरि हमको विरह व्यथा तनु त्यागी॥११॥सारंग॥विलग जिनि मानौ हमारी वात।डरपत वचन कठोर कहत मति विनु पानी उड़िजात ॥ जोकोउ कहै जरै कछु अपने फिरि पाछे पछितात। जो प्रसाद तुम पावत ऊधो कृष्णनामलै खात॥मन जो तिहारो हरि चरणन तर चलत रहत दिनप्रात।सूरश्यामते योग अधिकहै कासों कहि आवै यह वात॥१२॥सारंग॥अलिहौं कैसे कारि कहौं हरिके रूपके रसहि।अपने तनमें भेद वहुत विधि रसना नजानै इन नैनके दसहि। वार वार पछताति इहै कहि कहाकरौं जो विधि नवसहि॥विनुवाणी ए उमँगि सजलहोइ सुमिरि सुमिरि वा सगुणयशहि।जे देखत ते वचन रहितहैं जिनहि वचन दरशन देसहि।सूर सकल अंगनकी इहगति क्यों समुझावै छपद पसहि ॥१३॥सारंग॥ सूको जेहि नाहिन सचुपायो वल गोपालके राज। ऊधो इहै संपदा हरिकी आवै सवकेकाज ॥ धनुष तोरि गजमारि मल्ल मथि किए निडर यदुवंश। इन औरन अमरन सुख दीनो करपि केश शिरकंस ॥ कुविजहि रूपदियो यदुनंदन मालीको हित काम। उग्रसेन वसुदेव देवकी आने अपने धाम ॥ दीनदयालु दयानिधि मोहन है हमरे इह आस। सूरश्याम हरिहैं जुकृपाकरि इन नैननकी प्यास॥१४॥धनाश्री॥मधुकर कहिए काहि सुनाउ। हरि विछुरत हम किते सहेहैं जिते विरहके घाउ॥ वरु माधो मधुवनही रहते कत यशोदाके आए । कत प्रभु गोप वेषव्रज धरिकै कत ए सुख उपजाए ॥ कत गिरिधरचो इंद्र मद मेट्यो कत वन रास वनाए। अव कहा निठुर भए अवलनिको लिखि लिखि योग पठाए ॥ तुम परमप्रवीन सवै जानतहो ताते इह कहि आई ॥ अपनीको चालै सुनि सूरज पिता जननि विसराई ॥१५॥उद्धव वचन ॥ धनाश्री॥ जानि करि वावरी जिनि होहु ! तत्त्व

भजै ऐसी ह्वैजैहौ ज्यों पारस परसे लोहु ॥ मेरो वचन सत्य करि मानहु छांडो सबको मोहु। जो लगि सब पानी कूचुपरी तौलगि स्तुति द्रोहु ॥ अरे मधुप बातैं ए ऐसी क्यों कहि आवत तोहि। सूर सुवस्तुहि छांडि अभागे हमहिं बतावत खोहि॥१६॥गोपी वचन ॥ सारंग॥कहिवे जीय न कछु शक राखो। लावा मेलि दए हैं तुमको बकत रहो दिन आखो ॥ जाकी बात कहो तुम हमसों सोधो कहौ को कांधी।तेरो कहो सो पवन भूस भयो वहो जात ज्यों आंधी ॥ कत श्रम करत सुनतको इहां है होत जो वनको रोयो। सूर इते पर समुझत नाहीं निपट दई को खोयो ॥ १७ ॥ सारंग ॥ मधुकर भली सुमति मति खोई। हांसी होन लगी है ब्रजमें योगहि राखहु गोई ॥ आतम ब्रह्म लखावत डोलत घट घट व्यापक जोई। चापे काख फिरत निर्गुण गुण इहां गाहक नहिं कोई॥ प्रेम कथा सोई पै जानै जामें वीती होई। अति रस एतो कहा कोइ जानै बूझि देखावै ओई ॥ बडो दूत तू बडी उमरको बड़िए बुद्धि बडोई।सूरदास पूरो दै षटपद कहत फिरतहो सोई॥१८॥धनाश्री॥ मधुपकहि जानत नाहिंन बात।फूंकि फूंकि हियरो सुलगावत उठि किन इहांते जात॥जेहि उर बसत यशोदा नंदन तेहि निर्गुण क्यों समात।कत डोलत भटकत पुहुपनको पान करत किनपात ॥ यद्यपि बहु वेली वन विहरत वसत जाइ जलजात।सूरदास अब मिलवन आए मौन किए कुशलात॥१९॥ मधुकर छांड अटपटी बातैं। फिरि फिरि बार बार सोइ सिखवत हम दुख पावत जातैं ॥ हम दिन देत अशीश प्रात उठि बार खसोमत न्हातै। तुम निशि दिन उर अंतर सोचत ब्रज युवतिनकी घातै॥पुनि पुनि तुमहिं कहत कत आवै कछुक सकुचहै नातै।सूरदास श्याम रंग राचे फिरि न चढै रंग रातै ॥ २० ॥मलार॥ क्यों मन मानत है इन बातन। पाये जानि सकल सुनि मधुकर जे गुण सांवरे गातन ॥ प्रथम प्रेम निशिहू नतजत अब सकुचतहैं जल जातनि। निरस जानि निकट नहिं आवत देखि पुराने पातनि ॥ सुनियत कथा कान कोकिलकी कपट रंगकी रातनि। निशि दिन श्रम सेवा कराइ उठि अंत मिले पित मातनि ॥ तब ब्रज वसत वेणु रव ध्वनि करि वन बोली अधरातनि॥अति रति लोभ तजत नहिं इक क्षण पठै सकत नहिं प्रातनि ॥ बालि जीति जिन बलि बंधन किए लुब्धक कैसी हातनि।को पतियाइ सुधौं कहि सूरज संकर्षणके भ्रातनि॥ ॥ २१ ॥ सारंग ॥ उलटी रीति तिहारी ऊधो सुनै सु ऐसी कोहै। अल्प वयस अबला अहीरि शठ तिनहिं योग कत सोहै ॥ कचखुविआँधरि काजर कानी नकटी पहिरै वेसरि । मुडली पटिया पारि सँवारै कोढी लावै केसरि ॥ वहिरी पतिसों बातैं करै तो तैसोई उत्तर पावै। सोगति होइ सबै ताकी जो ग्वारिनि योग सिखावै ॥ सिखई कहत श्यामकी बतियां तुमको नाहीं दोषु । राजकाज तुमते नसरैगो काया अपनी पोषु ॥ जाते भूलि सबै मारगमें इहां आनि कहा कहते। भली भई सुधि रही सूर तौ मोह धारमें वहते ॥ २२ ॥ सारंग ॥ राखो सब इह योग अटपटो ऊधो पाँइ परौं। कहां रस रीति कहां तनु शोधन सुनि सुनि लाज मरौं ॥ चंदन छांडि विभूति वतावत यह दुख क्यों न जरौं। नासा कर गहि योग सिखावत वेसरि कहां धरौं ॥ सगुण रूप रहत उर अंतर निर्गुण कहा करौं। निशि दिन रटना रटत श्याम गुण काकरि योग मरौं ॥ मुद्रा न्यास अंग अँग भूषण पतिव्रतते नटरौं।सूरदास याही व्रत मेरे हरि मिलि नाहिं विछुरौं॥२३॥ सारंग ॥ मधुकर हम अयान मति भोरी। जानें तेइ योगकी बातैं जेहैं नवल किसोरी ॥ कंचनको मृग कवने देख्यो किन बांध्यो गहि डोरी। बिनही भीत चित्र किनकीनो किन नभहठ करि वा ल्यो झोरी ॥ कहिधौं मधुप वारि मथि माखन काढि जो भरो कमोरी। कहो कौन पै कढो जाइ

कन वहुत सरास पछोरी ॥ सवते ऊंचो ज्ञान तुम्हारो हम अहीरि मति थोरी । सूरज कृष्ण चंद्रको चाहत अँखिआं तृपित चकोरी॥२४॥अथ नेत्र अवस्थावर्णनं ॥ धनाश्री॥ अँखिआं हरि दरशनकी भूखी । अव कैसे रहति श्याम रंग राती ए वातैं सुनि रूखी॥अवधिं गनत इकटक मग जोवत तव ए इत्यों नहिं झूखी । इते मान इहियोग सँदेशन सुनि अकुलानी दूखी ॥ सूर सकत हठ नाव चलावत ए सरिता हैं सूखी । वारक वह मुख आनि देखावहु दुहिपै पिवत पतूखी॥२५॥ धनाश्री ॥ अँखियाँ हरि दरशनकी प्यासी । देख्यो चाहत कमल नैनको निशि दिन रहत उदासी ॥ आए ऊधो फिरि गए आंगन डारि गए गर फांसी । केसरिको तिलक मोतिनकी माला वृंदावनको वासी॥काहूके मनकी कोउ नजानत लोगनके मनहासी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको जाइ करवत ल्यों कासी ॥ २६ ॥ धनाश्री ॥ नैनन उहै रूप जो देख्यो । तौ ऊधो यह जीवन जगको साँचहु सफल करि लेख्यो ॥ लोचन चपल चारु खंजन मन रंजन हृदय हमारे। सुरंग कमल मीन मनोहर श्वेत अरुन अरुकारे॥ रत्न जडित कुंडल श्रवणनवर गंड कपोलनि झाई । मनु दिनकर प्रतिविंव मुकुरमहँ ढूँढत यह छवि पाई ॥ मुरली अधर विकट भौंहैं करि ठाढी होनि त्रिभंग । मुक्तमाल उर नील शिखरते धसी धरणि जनु गंग ॥ और वैस को कहे वरणि सव अंग अंग केसरि खौर । देखे वनै कहत रसना सों सूर विलोकत और ॥२७॥धनाश्री॥ नैनन नंदनंदन ध्यान।तहांलै उपदेश दीजै जहां निर्गुण ज्ञान ॥ पानि पल्लव रेख गनि गुनि अवधि विविध विधान । एते पर कहि कटुक वचनन हते जैसे प्रान ॥ चंद्रकोटि प्रकाश मुख अवतंस कोटिक भान । कोटि मन्मथ वारि छविपर निरखि दीजत दान ॥ भ्रुकुटी कोटि कोदंड रुचि अवलोकनि संधान । कोटि वारिज वक्र नयन कटाक्ष कोटिक वान । मणि कंठहार उदार उर अतिशयवन्यो निर्मान । शंख चक्र गदाधरै कर पदुम सुधा निधान ॥ श्याम तनु पटपीतकी छवि करै. कौन वखान । मनहु नृत्यत नील घनमें तडित देती मान । रासरसिक गुपाल मिलि मधु अधर करती पान । सूर ऐसे श्याम विनको यहां रक्षक आन ॥२८॥ गूजरी ॥ ऊधो इन नैनन नेम लियो । नँदनंदन सों पतिव्रत राख्यो नाहिंन दरशवियो ॥ चंद्र चकोर चित्त चातक जलधर सों वधो हियो । ऐसेहि इन नैनन गोपाल हि इकटक प्रेम दियो ॥ आयो पुहुपज्ञानलेएहग मधुपन रुचि न कियो । हरिमुख कमल अमीरस सूरज चाहत उहै पियो॥२९॥ कान्हरो ॥ ऊधो जू नैनन यह व्रत लीन्हें।स्वाति विना ऊपर सव भरियत ग्रीव रंध्र मत कीन्हों ॥ मुरली गरज तात मुकुतातन मेघ ध्यान जल हीनो। वरुए प्राण जाहिं ऐसेही वयन होय क्यों हीनो ॥ तुम आए लै योग शिखावन सुनत महादुख दीन्हो। कैसे सूर अगोचर लहिए निगम न पावत चीन्हो॥३०॥सारंग॥ जवते सुंदरवदन निहारचो। तादिनतें मधुकर मन अटक्यो वहुत करी निकरै न निकारचो ॥ मात पिता पति वंधु सजन जन तिनहूको कहिवो शिरधारचो । रही नलोकलाज मुख निरखत दुसह क्रोध फीटो करि डारचो ॥ ह्वैवो होइ सुहोइ कर्मवश अव जीको सव सोच निवारचो । दासी सूरदास परमानंद भलो पोच अपनो न विचारचो॥ ३१ ॥ हरिमुख निरख निमेप विसारे । तादिनते ए भए दिगंवर इन नैननके तारे ॥ तजी सील सव सास ससुरकी लाज जनेऊ जारे । घर घुंघुट छाँडो वन वीथिनि अहनिशि रहत उघारे ॥ सहज समाधि रूप रस इकटक करत नटकते टारे । ताके वीच विघ्न करिवेको मातु पिता पचिहारे ॥ कहत सुनत समुझत मन महिआँ ऊधो वचन तुम्हारे । सूरदास ए हटक नमानत लोचन हठीहमारे ॥३२॥ केदारो ॥ नैनन निपट कठिन व्रत ठानी । जा

दिनते बिछुरे नँदनंदन तादिनते नहिंनैक सिरानी । पलक नलावत रहत ध्यान धरि वारंवार ढुरावत पानी । लाल गोपाल मिले ऊधो मैं कर्महीन कछुओ नहिंजानी । समुझि समुझि उन हार श्यामकी अति सुंदर वर सारंग पानी । सूरदास ए मोहि रहे अति हरिमूरति मनमांझ समानी ॥३३॥सारंग॥ ऊधो क्यों राखोंए नैननि । सुमिरि सुमिरि गुण अधिक तपतहैं सुनत तुम्हारे वैनानि ॥ एजु मनोहर वदन इंदुके शारद कुमुद चकोर । परम तृषारत सजल श्यामघन तनके चातकमोर ॥ मधु मराल युगपदपंकजके गति विलास जलमीन । चक्रवाक द्युति मन दिनकरके मृग मुरली आधीन ॥ सकल लोक सूनो लागत है विन देखे वहरूप । सूरदास प्रभु नँदनंदनके नखशिख अंग अनूप ॥३४॥ धनाश्री ॥ और सकल अंगनते ऊधो अँखिआँ बहुत दुखारी । अधिक पिराति सिराति न कबहूं अनेक जतन करि हारी ॥ चितवत मग मुनि मेष नमिलवत विरह विकल भई भारी । भरिगई विरह वाइ माधोके इकटक रहत उघारी॥अलि आली गुरुज्ञान सलाका क्यों सहि सकति तुम्हारी । सूर सुअंजन आंजि रूप रस आरति हरौ हमारी ॥ ३५ ॥ रामकली ॥ ऊधो इननैनन अंजन देहु । आनहु क्यों न श्यामरँग काजर जासों जुरयो सनेहु ॥ तपति रहति निशि वासर मधुकर नहिं सुहात वन गेहु । जैसे मीन मरत जल विछुरत कहा कहौं दुख एहु ॥ सब विधि वानि ठानि करि राख्यो खरी कपूरको रेहु । वारक श्याम मिलावहु सूर सुनि क्यों न सुयश यश लेहु॥३६॥ मलार ॥ नैना नाहिं नैये रहत । यदपि मधुप तुम नंद नँदनको निपटहि निकट कहत ॥ हृदय माँझजो हरिहि बतावत सीखो नाहिं गहत । अधपरही संदेश अव धिको उलटे उलटि गहत ॥ परी जु प्रकृति प्रकट दरशनकी देखोइ रूप चहत । सूरदास प्रभु विन अवलोके सुख कोई न लहत ॥३७॥ पूरण ताए नैन पुरे । तुम पुनि कहत श्रवण हहिं समुझत दुख अति मरत विसूरे ॥ ए अलि चपल मोद रस लंपट कटु संदेश कथत कत कूरे । कहां मुनि ध्यान कहां ब्रज वासिन कैसे जात कुलिश करचूरे ॥ हरि अंतर्यामी सब बूझत बुद्धि विचार सुवचन समूरे । वे हरि रत्न रूप सागरके क्यों पाइए खनावत धूरे ॥ देखि विचारि प्रगट सरिता सर शीतल सजल स्वाद रुचि रूरे । सूर स्वाति की बूंद लगी जिय चातक चित लागत सब झूरे ॥३८॥मलार॥ ऊधो अँखिआँ अति अनुरागी।इक टक मग जोवति अरु रोवति भूले हु पलक नलागी ॥ विन पावस पावसऋतु आई देखतहैं विदमान। अबधौं कहा कियो चाहतहैं छांडहु निर्गुण ज्ञान ॥ सुनि प्रिय सखा श्यामसुंदरके जानतु सकल सुभाइ । जैसे मिले सूरके स्वामी तैसी करहु उपाइ॥३९॥विहागरो॥ मधुकर सुनो लोचन बात । रोकि राखी अंग अंगन तऊ उडि उडि जात ॥ जो कपोत वियोग व्याकुल जाति है ताजि धाम । जात योहग फिरि न आवत विना दरशन श्याम ॥ मूंदि नैन कपाट पटदै उभै घूंघट ओट । स्वाति सुत ज्यों जातिकी तहुँ निकसि मणि नग फोट ॥ श्रवण सुनि यश रहत हरिको मन रहत हरि ध्यान । रहति रसना नाम रटि रटि कंठ करि गुण गान ॥ कछुक दियो सुहाग इनको तो सबै ए लेत । सूरदास प्रभु विना देखे नैन चैन नदेत ॥४०॥ सारंग॥ मधुकर ए नैना पै हारे।निरखि निरखि मग कमल नयनके प्रेम मगन भए भारे । तादिनते नींदौ पुनि नाशी चौंकि परति अधिकारे ॥ सपने तुरिए जागत पुनि वोई वसत जो हृदय हमारे।यह निर्गुण लै ताहि बतावो जो जानै याकी सारै॥सूरदास गोपाल छांडिकै चूसे टेटा खारे॥४१॥धनाश्री॥अँखिआँ अबलागीं पछितान । जब मोहन उठि चले मधुपुरी तब क्यों दीनो जान॥पंथ न चलै सँदेश न आवै धीरज धरै न प्रान॥ जादिनके विछुरे नँदनँदन अंग अंग लागे वान । ऊधो अब तुम जाइ सुनाव हु आवहि सारंग पानि । सूरदास चातक भई गोपी

अंतर्गीतकी जानि॥४२॥जितश्री॥कमल नैन कान्हरकी सोभा नैननि ते नटरै॥ऊधो आए योग सिखा वनको जंजाल करै॥ जब मोहन गाइनलै आवत ग्वालन संग घरै। बलदाऊ अरु संग सखा मिलि कहो कैसे विसरै॥ बंसीवट यमुनातट ठाढे मुरली अधर धरै। सुख समूह विनोद जे कीन्हे को तेहि धरनि धरै॥ ब्रजवासी सब भये उदासी को संताप हरै। सूरदासके प्रभु विनु ऊधो को तनु तप्त हरै॥ ४३॥ नट॥ सुंदर श्यामके सँग आँखि। प्रथम ऊधो आनिदै हम सगुन डारैं नाखि॥ द्वै तीन सप्त अनंग तजे श्रुति स्मृति कही जुभाषि। हृदय विद्या ज्ञान धरम सुलोचननि अभिलाषि॥ जहां जहांकी केलि पियहरि सोई सर चकई पांखि। हारि हेरि अहेरि या हरि रही झुकि झखि झांखि॥ कमल कुमुदनि इंदु उडुगन मिलन सूरज सापि। राति ज्यों अक्रूर दिन आलि मदन दह मधु मापि॥४४॥मलार॥ सखीरी मथुरा में द्वै हंस। वै अक्रूर ए ऊधो सजनी जानत नीके ग्रंस॥ ए दोउ नीर खीर निरवारत इनहि वधायो कंस। इनके कुल ऐसी चलि आई सदा उजागर वंस॥ अब इन कृपा करी ब्रज आए जानि आपनो अंस। सूर सुज्ञान सुनावत अवलनि सुनत होत मतिभ्रंस॥४५॥ सारंग॥ मानो दोउ एकहि मते भए। ऊधो अरु अक्रूर वधिक मति ब्रज आखेट ठए॥ वचन पासि विधए मृग माधो उन रथ नाइ लए। इनहि एहेरि मृगी सब सायक ज्ञान हए॥ योग अग्निकी दवा देखियत चहुँ दिश लाइ दए॥४६॥ मानो भरे दोउ एकहि सांचे। नख शिख कमलनयनकी सोभा एकै भृगुपद वांचे॥ दारुजात कैसे गुण इनमें ऊपर अंतर श्याम। हमको है गजदंत प्रचारित वचन कहत नहिं काम॥ एई सब असित देह धरे जेते ऐसेई सब जानि। सूर एकते एक आगरे वा मथुराकी खानि॥४७॥ सबै खोटे मधुवनके लोग। जिनके संग श्याम सुंदर सखी सीखे सब अप योग॥ आए हैं कहियत ब्रज ऊधो युवतिनको लै योग। आसन ध्यान नैन मूंदे सखि कैसे कटै वियोग। हम अहीरि इतनी का जानैं कुविजासों संयोग। सूर सुवैद कहालै कीजै कहे न जानै रोग॥४८॥नट॥ मधुवनके लोगन को पतिआइ। मुख औरै अंतर्गति औरै पतिआं लिखि पठवत जो बनाइ॥ज्यों कोइलखत काग जिवाए भक्ष अभक्ष खवाइ। कुहुकुहानि सुनि ऋतु वसंतकी अंत मिले कुल अपने जाइ॥ ज्यों मधुकर अंबुज रस चाख्यो बहुरि न बूझी बातैं आइ। सूर जहां लगि श्यामगातहै तिनसे कतकीजे सगाइ॥४९॥माईरी मधुपनकी यह रीति। निरखि जानि तजत छिन भीतर नवल कुसुम रस प्रीति॥ तिनहूँके संगिनको कैसे चित आवति परतीति। हमहिं छाँडि विरमाहिं कुविजा सँग आए न रिपुरण जीति॥ जिनि पतियाहु मधुर सुनि बातैं लागे करन समीति। सूरदास श्यामसंग ऐसो ज्यों भुसपरकी भीति॥५०॥ मलार॥ मधुवनके सब कृतज्ञ धर्मीले। अति उदार परहित डोलतहैं बोलत वचन सुसीले॥ प्रथम आइ गोकुल सुफलकसुत लै मधुरिपुहि सिधारे। उहां कंस इहां हम दीननिको दूनो काज सँवारे॥ हरिको सिखै सिखावन हमको अब ऊधो पगधारे। उहां दासी रतिकी कीरतिके इहां योग विस्तारे॥ अब तेहि विरह समुद्र सबै हम बूडी चहत नही। लीला सगुन नावही सुनु अलि तेहि अवलंब रही॥ अब निर्गुण हि गहैं युवती जन पारहि कहो गईको। सूर अक्रूर छपदके मनमें नाहिन त्रास दईको॥ ५१॥ ॥ धनाश्री॥ अब नीके कै समुझि परी। जिनि लगि हुती बहुत उर आशा सोऊ बातनि वरी॥ वै सुफलक सुत ए सखी ऊधो मिली एक परिपाटी। उनतौ वह कीन्ही तब हमसों ए रतन छँडाइ गहावत माटी॥ ऊपर मृदु भीतर से कुलिशसम देखतके अति भोरे। जोइ जोइ आवत वा मथु

राते एक डार केसे तोरे ॥ यह सखी मैं पहिले कहि राखी असित न अपने होहीं। सूर कोटि जो माथो दीजै चलत आपनी गोहीं ॥ ५२ ॥ ऊधो प्रेम रहित योग निरस काहेको गायो। हम अबलनिको निठुर वचन कहे कहा पायो ॥ जिन नैनन कमलनैन मोहन मुख हेरचो। मूदनते नैन कहत कौन ज्ञान तेरचो ॥ तामें सुनि मधुकर हम कहा लेन जाहीं । जामें प्रिय प्राण नाथ नंदनँदन नाहीं ॥ जिनके तुम सखा साधु बात कहो तिनकी। जीवत कहि प्रेम कथा दासी हम उनकी ॥ अविनाशी निर्गुण मत कहा आनि भाख्यो । सूरदास जीवन प्रभु कान्ह कहा राख्यो॥५३॥सारंग॥ जिनि चालहि आलि बात पराई। नहिं कोउ सुनै न समुझत ब्रज में नई कीरति सब जात हिराई ॥ जाने समाचार सुखपाए मिलि कुलकी आरति बिसराई। भले ठौर बसि भली भई मति भले ठौर पहिंचानि कराई ॥ मीठी कथा कटुकसी लागति उपजतहै उपदेश खराई। उलटे न्याउ सूरके प्रभुके वहेजात माँगत उतराई ॥५४॥ धनाश्री ॥ ऊधो योग सिखावन आए अब कैसे धीरज धरौं। जोरि जोरि चित जोरि जुरीनो जोरी जोरिन जानौ ॥ पहिलो योग कहा भयो ऊधो अब यह योग डिढानो ॥ उन हरि हमसों प्रीति करी जो जैसे मीन अरु पानी । तलफि तलफि जिय निकसन लागे पापी पीर नजानी॥निशि बासर मोहिं पलक नलागै कोटि जतन करि हारी। ज्यों भुवंग तजि गयो केचुली सो गति भई हमारी ॥ एकदिवस हरि अपने हाथन करन फूल पहिराए। ते मोहन माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पठाए ॥ वेनी सुभग गुही कर अपने चरणन जावक दीनो। कहा कहौं वा श्यामसुंदर सों निपट कठिन मन कीनो ॥ तुम जो वसत हो मथुरा नगरी हम जो वसत या गाँव। ऊधो हरिसों यों जाइ कहियो प्राण तजहि या ठाँव ॥ प्रीतम प्यारे प्राण हमारे रहे अधरपर आइ।सूरदास हरिजीके आगे कौन कहै दुखजाइ॥५५॥जैतश्री॥ ऊधो योग सिखावन आए। शृंगी भस्म अधारी मुद्रा दै यदुनाथ पठाए ॥ जो पै योग लिखो गोपिनको कत रसरास खिलाए। तबहीं क्यों नज्ञान उपदेशो अधर सुधारस प्याए ॥ मुरली शब्द सुनत वनगवनी पति सुत गृह विसराए। सूरदास सँग छांड स्वामिको हमहिं भले पछिताए ॥ ॥५६॥धनाश्री॥बहुत दिन गए ऊधो चरण कमल बिनु देखे। दरशनहीन दुखित दिनही दिन छिन छिन विपति विशेषे॥रजनी अति प्रेम पीर वन गृह मन धरै न धीर।वासर मग जोवत उर सरिता भए नैनके नीर॥जोलौंही अवधि आश सोइ गानगति घाटे रही श्वास। अति वियोग विरहिन तनु तजिहै कहि सो सूरज दास ॥५७॥ऊधोवचन ॥ धनाश्री॥ज्ञान बिना कहुँ वै सुख नाहीं। घट घट व्यापक दारु अग्नि ज्यों सदा बसै उर माहीं ॥ निर्गुण छांडि सगुणको दौरति सोचि कहौ किहि पाहीं। तत्त्व भजौ ज्यों निकट न छूटै त्यों तनुके सँग छाहीं॥तिनके कहो कौन बस पायो जे अवलौं अवगाहीं। सूरदास ऐसे कर लागत ज्यों कृषि कीन्हें पाहीं॥५८॥सोरठ॥ऊधो प्यारे कही सो बहुरि नकहिए। जो तुम हमैं जिवायो चाहत अनबोले होइ रहिए ॥ प्राणहमारे घात होत हैं तुमरे भावै हाँसी। या जीवन ते मरन भलो है करवत लेवो कासी ॥ पूरवप्रीति सँभारि हमारे तुमको कहन पठायो। हमतौ जरि बरि भस्म भए तुम आनि समसान जगायो ॥ कैहरि हमको आनि मिलावहु कै ले चलिए साथे। सूर श्याम बिन प्राण तजत हैं बनै तुम्हारे माथे ॥ ५९ ॥ धनाश्री ॥ रे मधुकर कहा सिखावन आयो। एतो नैन रूप रस राचे कह्यो नकरत परायो ॥ योग युक्ति हम कछुव न जानैं नाकछु ब्रह्म ज्ञानो । नवकिसोर मोहन मृदुमूरतिता सों मन उरझानो॥भली करी तुम आए ऊधो देखो दशा बिचारी। दाइ उपाइ मिलाइ सूरप्रभु आरति हरहु हमारी॥६०॥कल्याण ॥ मधुकर कहा

कियो अब चाहत । ए सब भई चित्रकी पुतरी सून शरीरहि डाहत ॥ हमसों तोसों वैर कहा अलि श्याम अजा भयो राहत । झारि झूरि मनतो तू लै गयो बहुरि पयारहि गाहत ॥ अवतौहै मारुत को गहिवो कासस मूकी लैहै । सूरज जो उन हमहि हते तू अपनो कीयो पैहै॥६१॥केदारो॥ऊधो तुम अपनो जतन करो । हितकी कहत कुहितकी लागत इहां बेकाज अरो ॥ जाइ करो उपचार आपनो हों जुदेत शिप नीकी।कछु वै कहत कछु कहि नहिं आवत ध्वनि देखत नहिं नीकी ॥ साधु होइ ताहि उत्तरदीजै तुमसों मानी हारि । यह जिय जानि नंदनंदन तुम इहां पठाए ढारि ॥ मथुरा गहौ वेगि इन पाँइन उपज्योहै तनुरोग । सूर सुवैद वेगि ढोहो किन भए मरनके योग ॥६२॥ नट ॥ कह्यो तुम्हारो लागत काहे । कोटिक जतन कहौ जो ऊधो हम नवहाकिहैं वाहे ॥ काहेको अपने जीमेंरी तू सतलै मनलाहे । यह भ्रमतौ अवहीं भाजि जैहै ज्यों पयारके गाहे ॥ काशीके लोगनलै सिखयो जे समझे या माहे।सूरश्याम विरहत ब्रजभीतर जीजतुहै सुखचाहे ६३॥सारंग ॥ आप देखि पर देखिरे मधुकर तब औरन सिख देह । वीतैगी तवहीं जानोगे महाकठिनहै नेह ॥ मन जु तुम्हारे हरि चरणनहै तन लै गोकुल आयो । नँदनंदनके संग के विछुरे कहि कौने सचपायो ॥ गोकुल रहो जाहु जनि मथुरा झूठो माया मोहु।गोपी कहैं सूर सुन ऊधो हमसे तुमहूं होहु ॥६४॥ तू अलि कहा परचो कहि पैडे।ब्रज तू श्याम अजा भयो हमको इहऊ वचत नवेंडे ॥ यह उपदेश सेतहू भाए जो चढि कहौ वरैडे । राजाति जतन यशोदा नंदहि हृदय मांझ सब मैंडे ॥ छांडि राजमारग यह लीला कैसे चलहि कुपैडे।या आदर पर अजहूं वैठो टरत न सूरपलैडे ॥६५॥सारंग॥ घरहीके वाढेहो रावरे नाहिन मीत वियोग वशपरे अनव्योगे अलिवावरे। अधरसुधा मुरलीकी पोपे योग जहर कत प्यावेरे ॥ अवला कहीं योग हम जानैं ज्यों जल सूखे नावरे ॥ वरु मरिजाइ चरै नहिं तिनका सिंहको इहै सुभाइरे॥जानत सूरदास कठहरियो तजि अनत न ठावँरे॥६६॥सारंग॥ तुम अलि कासों कहत बनाई । विनु समुझे हम फिरि बूझतिहैं वारक बहुरौ गाई ॥ किहिधौं गमन कीन्हों स्यंदनचढि सुफलकसुतके संग ॥ किहि विधि रजक लिए नानापट पहिरे अपने अंग॥ किहि हति चाप निदरि गज निजवल किहि वल मल्ल मथिजाने । उग्रसेन वसुदेव देवकी किहि वनिगडते आने । तू काकीहै करत प्रशंसा कौने घोप पठायो ॥ किहिमातुल हति कियो जगत यश कौन मधुपुरी छायो ॥ माथे मोर मुकुट उरगुंजा मुखमुरली कलवाजै । सूरदास यशुदानँद नंदन गोकुल कान्ह विराजै॥६७॥सारंग ॥ हमको हरिकी कथा सुनाउ । ए आपनी ज्ञानगाथा अलि मथुराही लै जाउ ॥ वै नर नारि नीके समुझेंगी तेरो वचन वनाउ । पालागौं ऐसी इन वातनि उनहीं जाइ रिझाउ ॥ जो शुचि सखा श्याम सुंदरको अरु जियअति सतिभाउ । तो वारक आतुर इन नैनन वह मुख आनि देखाउ ॥ जो कोउ कोटिकरै कैसेहू विधि विद्या व्योसाउ । तो सुन सूर मीनको जलविनु नाहिन और उपाउ ॥६८॥भोपाली॥ ऊधो हरि विनु ब्रज रिपु बहुरि जिये।जे हमरे देखत नँदनंदन हति हति हुते सो दूरि किये ॥ निशिको रूप वकी वनि आवत अति भयकरत सुकंपहिए । तापहते तनु प्राण हमारे रविहू छिनक छँडाइ लिए ॥ उर ऊंचे उसास तृणावर्ततिहि सुख सकल उड़ाइ दिए ॥ कोटिक काली समकालिंदी परसत सलिल नजात पिए ॥ वन वकरूप अवासुर समघर कतहू तौन चितै सकिए ॥ केशी कठिन कर्म कैसो विन काको सूर शरन तकिए ॥६९॥ सोरठ ॥ ऊधो तुम ब्रजकी दशा विचारो । ता पाछे यहं सिद्धि आपनी योगकथा विस्तारो ॥ जाकारण तुम पठए माधो सो सोचो जियमाहीं । कितोकवीच विरह परमारथ जानत

हौ किधौं नाहीं ॥ तुम परवीन चतुर कहियतहौ संतन निकट रहतहौ । जल बूडत अवलंब फेनको फिरि फिरि कहा गहतहौ ॥ वह मुसकानि मनोहर चितवन कैसे उरते टारौं । योग युक्ति और मुक्ति परमनिधि वा मुरलीपै वारौं । जिहि उर कमलनैन जु वसतहैं तिहि निर्गुण क्यों आवै । सूरदास सो भजन वहाऊं जाहि दूसरो भावै ॥ आसावरी ॥ ऊधो कहांकी प्रीति हमारे । अजहूँ रहत तन हरिके सिधारे ॥ छिदि छिदि जात विरह शर मारे । पुरि पुरि आवत अवधि विचारे ॥ फटत न हृदय सँदेश तुम्हारे । कुलिशते कठिन धुकत दोउ तारे ॥ वर्षत नैन महा जलधारे । उरपाषाण विदरत नविदारे ॥ जीवन मरन दोउ दुखभारे । कहियत सूर लाज पतिहारे ॥७०॥ सारंग ॥ ऊधो इतनो मोहिं सतावत । कारी घटा देखि वादरकी दामिनि चमकि डरावत॥हिम सुतापतिको रिपु व्यापै दधिसुत रथ न चलावत।अंबूखंडन शब्दसुनतही चितचकृत उठि धावत॥ कंचनपुरपति को जो भ्राता ते सब बलहि न आवत । शंभूसुतको जा वाहनहै कुहकै असल सला वत ॥ यद्यपि भूषण अंग बनावत सोइ भुजंग होइ धावत। सूरदास बिरहिन अतिव्याकुल खगपति चढ़ि किन आवत॥७१॥ धनाश्री॥ हमको तुमबिन सबै सतावत । लखौन मधुप चतुर माधोसों तुमहूं सखा कहावत ॥ ताको ततु हरिहरचो दीनसों कुल सर्वागतदीनी । सोइ मारत करि वार पार करि हमको कानन कीनी ॥ सिंधुते काढ़ि शंभुकर सौंप्यो गुनहगारकी नाईं । सोशशि प्रगट प्रधान कामको चहुँदिश देत दोहाई ॥ अमरनाथ अपराध क्षमाकरि तवहिं भोग मुकरायो । प्रात इंद्र कोपित जलधरलै ब्रजमंडल पर छायो॥ पूंछ पूंछ सरदार सखनके इहिविधि दई बड़ाई । तिन अतिबोल झोल ततु डारचो अनल भँवरकी नाईं । पंछ छोरि अलिसूझ पंछधरि तिनहूं कोपि जनायो । पत्यो जो रेख ललाट और सुख भेटि दुकार बनायो। कौन कौनको विनय कीजिए कहि जेतिक कहि आई । सूरश्याम अपने याब्रजकी इहिविधि कान कटाई॥७२॥ नट ॥ ऊधो यहु हित लागत काहे । निशदिन नैन तपत दरशनको तुम जु कहत हृदयमाहे ॥ पलक नपरत चहूंदिश चितवत बिरहानलके दाहे ॥ इतनी आरति काहे नमिलही जो पर श्याम इहां है । पालागौं ऐसेही रहनदे अवधि आशजलथाहे । जिनि वोरहि निर्गुण समुद्रमें पुनि पाई बिनचाहे ॥ उपजि परी जासों तिहि अंग अंग सो अंग वनै निबाहे।सूरकहा लै करै पपीहा एते सर सरिताहे ॥७३॥ मलार॥ ह्यांतुम कहत कौनकी बातैं । सुन ऊधो हम समुझत नाहीं फिरि बूझतिहैं तातैं ॥ को नृप भयो कंस किन मारचो को वसुदेव सुत आहि । ह्यां यशुदासुत परममनोहर जीजतुहै मुख चाहि ॥ नितप्रति जात धेनु वनचारन गोप सखनके संग । वासरगत रजनी मुख आवत करतनैन गति पंग॥को अविनाशी अगम अगोचर को विधि वेद अपार । सूर वृथा बकवाद करत कत इहिब्रज नंदकुमार ॥ ७४ ॥ ऊधो हरि काहेके अंतर्यामी । अजहुँ नआइ मिले इहि औसर अवधि बतावत लामी ॥ कीन्हीं प्रीति पुहुप सुंडाकी अपने काजके कामी । तिनको कौन परेखो कीजै जे हैं गरुड़केगामी ॥ आई उघरि प्रीति कलईसी जैसी खाटी आमी । सूर इते पर खुनसनि मरियत ऊधो पीवत मामी॥७५॥ मधुकर वह जानी तुम सांची। पूरणब्रह्म तुम्हारो ठाकुर आगे माया नाची ॥ यह इहि गाउँ नसमु झत कोऊ कैसो निर्गुणहोत। गोकुल वाट परे नँदनंदन उहै तुम्हारो पोत ॥ को य शुमाति ऊखलसों बाँध्यो को दधि माखन चोरे । कै ए दोऊ रूख हमारे यमला अर्जुन तोरे ॥ को लै वसन चढचो तरु शाखा मुरली मन औ करषै । कै रसरास रच्यो वृंदावन हरषि सुमन सुर वरषै॥ज्यों डाक्यों तब कत विन बूडे काहे को जीभ पिरावत।तव जु सूर प्रभु गए क्रूरलै अब क्यों

नैन सिरावत॥७६॥ कान्हरो॥ निर्गुण कौन देश को वासी। मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै बूझति सांच न हांसी॥ कोंहै जनक कौन है जननी कौन नारि को दासी। कैसो वरन भेप है कैसो केहि रस में अभिला सी॥ पावैगो पुनि कियो आपनो जोर करैगो गासी। सुनत मौन ह्वै रह्यो वावरो सूर सबै मति नाशी॥ ॥७७॥ कल्याण॥ ऊधो हम हरि कत विसराए। एक दिवस वृंदावन भीतर करकरि पत्र डसाए॥ सुमि रि सुमिरि गुण गाऊं श्यामके नैन सजल ह्वै आए। पलकको विछुरे किते दिन वीते प्रीतम भए पराए॥ शीतल पंथ जोवति हम निंशि दिन कित विरहिनि विरमाए। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन विना मदनकी ताप सताए॥ ७८ ॥ अथ गोपी कुविजा प्रति तरकवदति ॥ धनाश्री ॥ ऊधो अब चित भए कठोर। पूरव प्रीति विसारी गिरिधर नौतन राचे और॥ जन्म जन्म की दासी तुम्हारी नागर नंद किसोर। प्रीतिके वाण लगाए मधुकर निकरि गए दोउ ओर॥ जब हरि मधुवनको जु सिधारे धीरज धरत न ढोर। सूरदास चातक भई गोपी कहां गए चित चोर॥७९॥ मलार ॥ ऊधो हमहिं न जान्यो श्यामहि। सेवा करत करी कछु औरै गई जाति कुल नामहि॥ तन मन चोरि प्रीति जो जोरत कौन भलाई तामहि। ते कहा जानैं पीर पराई लुब्धक अपने कामहि॥ अंतहु सूर सोई पै प्रगटै होइ प्रकृति जो जामहि। नागरि नारि रतिकेरति नागर रचे कुविजा वा महि॥८०॥ गौरी ॥ मधुकर उनकी वात हम जानी। कोऊ हुती कंसकी दासी कृपाकरी भई रानी॥ कुविजा नाउँ मधुपुरी वैठी लै सुवास मन मानी। कुटिल कुचील जन्मकी टेढी सुंदर करि घर आनी॥ अव वह नवल वधू ह्वै वैठी व्रजकी कहत कहानी। सूरश्याम अव कैसे पैयै जासों मिली सयानी॥८१॥ मलार॥ वरु उन कुविजा भलो कियो। सुनि सुनि समाचार ए मधुकर अलिक जुडाव त हियो॥ जाको हरि मन हरयो रूपकरि हरयो सुपुनि नदियो। तिन अपनो मनहरत न जान्यो हँसि हँसि लोग जियो॥ सूरतनक चंदन चढ़ाय उर श्री सर्वस जुपियो। और सकल नागरि नारिन को दासी दाँव लियो॥८२॥ केदारो॥ ऊधो अब कछु कहत न आवै। शिरपर सौति हमारे कुविजा चा मके दाम चलावै॥ कछुक मंत्र करयो चंदनमें ताते श्यामहि भावै। आपनही रँग रची साँवरो शुक ज्यों वैठि पढावै। दासी हुती असुर दैयतकी अब कुलवधू कहावै॥ त्यों नटनी कर लिए लकुटिया कपि ज्यों नाच नचावै॥ टूट्यो नातो या गोकुलको लिखि लिखि योग पठावै॥ सूरदास प्रभु हमहिं निदरि दाधेपर लोन लगावै॥८३॥ कान्हरो॥ सुनि सुनि ऊधो आवत हांसी। कहां वै ब्रह्मादिकके ठाकुर कहां कंसकी दासी॥ इंद्रादिककी कौन चलावै शंकर करत खवासी। निगम आदि वंदीजन जाके शेष शीशकेवासी॥ जाके कमला रहत निरंतर कौन गनै कुविजासी॥ सूरदास प्रभु दृढकरि वांधे प्रेम पुंजिका पासी॥८४॥ मलार॥ तवते वहुरि दरश नाहिं दीन्हों॥ ऊधो हरि मथुरा कुविजाघर इहै नेम व्रत लीन्हों॥ चारिमास वर्षाके लीन्हे मुनिहु रहत इकठौर। दासी धाम पवित्र जानिकै नाहिं देखत उठि ओर॥ व्रजवासी सव ग्वाल कहत हैं कत व्रज छाँडि गए। सूर सगुनई जात मधुपुरी निर्गुण नामभए॥ ८५ ॥ जैतश्री ॥ कुवरीको न्याउरी जासों गोविंद वोलै। जिनसों कृपाकरी नँदनंदन सो काहेन ऐंडी डोलै॥ कारो कारो कुटिल अति कान्हर अंतर ग्रंथि न खोलै। हम वौरी वकवाद करत हैं वृथा आरति यह जो लै॥ प्रीति पुरातन पारी उनसों नेहकसोटी तोलै। सूरश्याम उपहास चल्यो व्रज आप आपने टोलै॥८६॥ कामगँवारी सोच परयो॥ रूपहीन कुलहीन कूवरी तासों मन जो ढरयो॥ उनको सदा स्वभाव सलिलको खेरनी खंडझरयो। सकुचो नहीं जानि ऊंचो ततु उमँगति भन पसरयो॥ फेरे फिरत असुर दासकि जनु जडमांड भरयो।

सूरदास गोपाल रसिकमणि अकरन करन कऱ्यो ॥८७॥मलार॥ काहेको गोपीनाथ कहावत। जुपै मधुप हरि हितू हमारे काहेन गोकुल आवत ॥ सुपनेकी पहिंचानि जीयमहि हमहिं कलंक लगा वत। जो परि कृष्ण कूवरिहि रीझे तो सोई किन नाम धरावत॥ज्यों गजराज काजके औसर औरै दशन देखावत। ऐसे हम कहिवे सुनवेको सूर अनत विरमावत ॥ ८८ ॥ कहिअत कुविजा कृष्ण नेवाजी। छुवत अटपटी चाल गई मिटि नवसत कंचुकी साजी ॥ मिलीजाइ आगे दरवाजे चंदन देत ठगी करि बाजी। वांधो सुरति सुहाग सवनको हरि मिलि प्रीति उपराजी ॥ सुफल भयो पछिलो तप कीन्हों देखि स्वरूपकामरति भाजी। जगतके प्रभु वश किए सूर सुनि सवहि सुहा गिनिके शिरगाजी ॥८९॥ रागसारंग॥ ऊधो जाके माथे भागु। अवलन योग सिखावन आए चेरिहि चपरि सोहागु ॥ आए वचन योगकी वेली काटि प्रेमकी वाग। कुविजहि करि आए पटरानी हमहिं देत वैराग ॥ लौंडीकी डौंडी वाजी जग वढ्यो श्याम अनुराग। कुविजा कमलनैन मिलि खेलत वारहमासी फाग ॥ मिल्यो सोहायो साथ श्यामको कहाँ हंस कहां काग। सूरदास प्रभु ऊख छांडिकै चतुर चचोरत आग॥९०॥गौरी॥ ऊधोजू जाइ कहो दूरि करैं दासी। नागर नर जीव विचारे करत हैं सब हाँसी॥हिम कांच हंस काग खरि कपूर जैसो॥कुविजा अरु कमलनैन संग वन्यो ऐसो॥जातिहीन कुलविहीन कुविजा कान्ह दोऊ॥जो ऐसिनके संग लागै सूर तैसो सोऊ॥९१॥मलार॥ ऊधो कहा हमारी चूक॥वै गुण अवगुण सुनि सुनि हरिके हृदय उठतिहै कक॥वेही काज छांडि गए मधु वन हम घटि कहाकरी॥तन मन धन आतमा निवेदन सोउ न चितहि धरी॥रीझे जाइ सुंदरी कुविजहि यहि दुख आवै हाँसी॥यद्यपि कूर कुरूप कुंदरस तद्यपि हम व्रजवासी॥ एते ऊपर प्राणरहतहैं घाट कहहु कहाकहिए॥पूरव कर्मालिखे विधि अक्षर सूर सबै सो सहिए॥९२॥मलार॥अलि हमहिं कान्हको इहै परेखो आवै॥तव वह प्रीति चरण जावक शिर अव कुविजा मनभावै॥तव कत पाणि धरो गोवर्धन कत व्रजपतिहि छँडावै। अब वह रूप अनूप कृपाकरि नैनन क्यों न देखावै ॥ तव कत वेन अधर धरि मोहन लैलै नाम बुलावै। अरु कत लाड लडाइ राग रस हँसि हँसि कंठ लगावै ॥ जेहि सुख संग समीप राति दिन तेहि क्यों योग सिखावै। जेहि मुख अमृत पिऊं रसनाभरि तेहि क्यों विषहि पिआवै ॥ करमीडति पछिताति मनहिमन क्रम क्रम करि समुझावै। सोइ सुनि सूरदास अव विरहिनि यहि दुख दुख अतिपावै॥९३॥सोरठ॥ मेरे जिय इहै परेखो आवै। सरवस लूटि हमारो लीनो राजकूवरी पावै ॥ तापर एक सुनोरी अजगुत लिखि लिखि योग पठावै॥सूर कुटिल कुविजा के हितको निर्गुण वेद सुनावै॥९४॥रागमलार॥ ऊधो आवै इहै परेखो। जव वारे तव वैसी मिलनीकी वडे भए इह देखो ॥ योग यज्ञ तप नेम दान व्रत इहै करत तव जात। क्योंहुँ वालसुत वढ़ै कुशलसों कठिन मोहकी वात ॥ करि निज प्रगट कपट पिक कीराति अपने काज लगिधीर। काज सरे दुखगए कहोधौं का वायसकी पीर॥जहँ जहँ रहहु राज्यकरौ तहँ तहँ लेहु कोटिको भार। इहै अशीश सूर प्रभु सों कहि न्हात खिसै जिन वार॥९५॥मलार॥ हरि व्रज कवहिं कह्योहो आवन। वेगि सुवचन सुनाइ मधुपजी मोहिं व्यथा विसरावन ॥ हौं यह वात कहा जानों प्रभु जात मधुपुरी छावन। पछिली चूक समुझि उर अंतर अव लागी पछितावन ॥ सव निशि सूर सेज भई वैरानि शशि सीखो तनुतावन। अव यह कर चक अंगनि ऊपर है दशहू दिशिवनसावन ॥९६॥ सारंग॥ तुम्हरी प्रीति किधौं तरवारि। दृष्टिधार धरि हती जुपहिले घायल सब व्रजनारि॥ गिरी सुमारखेत वृंदावन रणमानी मनहारि। विह्वलविकल सभा रति छिन छिन वदन सुधानिधि वारि ॥ अब यह

कृपा योग लिखि पठए मनासिज करी गुहारि । कछु इक शेष बच्योहै सूरप्रभु सोउ जिनि डारहु मारि ॥९७॥सारंग॥ कहौ तो जो कहिवेकी होई।प्राणनाथविछुरेकी वेदन जानत नाहिंनकोई॥जो हम अधर सुधारस लैलै रही मदन गति भोई । कहाकहौं कछु कहत नआवै तन मन रही समोई ॥ विरह व्यथा वेदन उर अंतर जामें वीतै जानै सोई । सूरदास शिव सनकादिक लोभा सो हम वैठे खोई॥९८॥ नट ॥ ऊधो तुम ब्रजमें पैठ करी।लैआएहौ नफा जानिकै सबै वस्तु अकरी॥हम अहीर माखन माथि वेचैं सबन टेक पकरी।इह निर्गुण निर्मोलकी गठरी अव किन करत धरी॥यह व्यापार वहां जो समातो हुती वडी नगरी । सूरदास गाहक नाहिं कोऊ दिखिअत गरे परी ॥९९॥ धनाश्री ॥ ऊधो योग ठगौरी ब्रज न विकै है । मूरीके पातनके वदले को मुक्ताहल दैहै । यह व्यापार तुम्हारो ऊधो ऐसेहि धरयो रहि जैहै । जिन पै ते लै आए ऊधो तिनहिके पेट समैहै ॥ दाख दाडिमकत कटुक निवौरी को अपने मुखखैहै।गुणकरि मोहिं सूर साँवरेको निर्गुणही निवहै ॥३१००॥सारंग॥ मीठी वातनमें कहा लीजै । जोपै वै हरि होंहि हमारे करन कहै सोइ कीजै ॥ जिन मोहन अपने कर कानन कर्णफूल पहिराए। तिन मोहन माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पठाए ॥ एकदिवस वेनी वृंदावन रचि पचि विविध वनाई । ते अव कहत जटा माथेपर वदलो नाम कन्हाई ॥ लाइ सुगंध वनाइ अभूषण अरु कीनी अर्धंग । सोवै अव कहि कहि पठवतहैं भस्म चढावन अंग ॥ कहा करौं दूरि नंदनंदन तुम जो मधुप मधुपाती॥सूरनहोइ श्यामके मुखको जाहु न जारहु छाती ॥१॥ ॥ सारंग ॥ ऊधो भूलि भले भटके । कहत कही कछु वात लडैते तुम ताही अटके ॥ देखौं सकल सयान तिहारो लीने छरि फटके । तुमहि दियो वद्राइ इतेको वै कुविजासों अटके ॥ लीजो योग सँभारि आपनो जाहु तहीं तटके । सूरश्याम तजि कोउ नलैहै या योगहि कटुके ॥२॥ नट ॥ ऊधो तुमहौ निकटके वासी । यह निर्गुण लै ताहि सुनावहु जे मुडिया वसैं कासी ॥ मुरली अधर सकल अंग सुंदर रूप सिंधुकी रासी । योगकटोरे लिए फिरतहौ ब्रजवासिनकी फासी ॥ राज कुमार भले हम जानै घरमें कंसकी दासी । सूरदास यदुकुलहि लजावत ब्रजमें होतहै हांसी ॥३॥ ॥ सारंग ॥ ऊधो तुम जो निकटके वासी । यह परमारथ वूझि कहौ किन नाम वडोकी कासी ॥ योग ज्ञान ध्यान अवराधन साधन मुक्ति उदासी । नाम प्रकार कहा रुचि मानहिं जो गोपाल उपासी ॥ परमारथी जहां लौं जेते विरहिनिके दुखदाई । सूरदास प्रभु रँगे प्रेमरँग जारौ योग सगाई ॥४॥ मल्लार ॥मधुप विराने लोग वटाऊ। दिनदशरहे आपने कारण तजिगए मिले नकाऊ॥ प्रीतम हरि हमको सिधि पठई आयो योग अगाऊ । हमको योग भोग कुविजाको उहिकुल यहै सुभाऊ ॥ जान्यो योग नंदनंदनको कीजै कौन उपाऊ। सूरश्यामको सर्वसु दीन्हौं प्राण रहैंकी जाऊ ॥५॥ दिन दिन प्रीति देखिअत थोरी । सुनहु मधुप मधुवन वसि मधुरिपु कुल मर्यादा छोरी॥ गोकुलके माणि त्रिभुवन नायक दासीसों रति जोरी । तापर लिखि लिखि योग पठावत विसरी माखनचोरी ॥ काको मान परेखो कीजै वँधी प्रेमकी डोरी । सूरदास विरहिनि विरहाजारि भई सांवरी गोरी ॥ ६ ॥ आसावरी ॥ जादिनते गोपाल चले। तादिनते ऊधो या ब्रजके सव सुभाइ वदले ॥ घटे अहार विहार हर्ष हितु सुख सोभा गुणगान । उतलतेज सव रहित सकल विधि आरति असम समान ॥ वाढी निशावलय आभूषण उर कंचुकी उसास । नैननजल अंजन अंचलप्रति आवत अवधिकी आस ॥ अव यह दशा प्रगटके तनुकी कहवी जाइ सुनाइ। सूरदास प्रभुसों कीवो जिहि वेगि मिलहि अव आइ॥७॥ गौरी ॥ हमारी ऊधो पीर न हरिविनजाइ।

जो सोऊंतौ मोहिं हरिमिलैं ऊधो जागौ देइ अतिदाइ ॥ कमलनैन मधुपुरी सिधारे हमहुँन संग लगाइ। अब यह व्यथा कौन विधि भरिहैं कोऊ देइ बताइ ॥ उदमद यौवन आनि ठाढ़िके कैसे रोको जाइ।सूरदास स्वामीके मिलिवे तनुकी तपत बुझाइ॥ ८ ॥ मलार ॥ गोपालहि वारेहोंकी टेव। जानति नहीं कहांते सीखे चोरोंके छल छेव ॥ तव कछु दूध दह्यो ले खाते करिरहती हौं कानि। कैसे सही परत अव मोपै मनमाणिकही हानि ॥ ऊधो नँदनंदनसों कहियो राजनीति समुझाइ। राजहुभए तजत नहिं लोभहि गुतनहीं यदुराइ॥बुद्धि विवेक अरु वचन चातुरी पहिले लई चुराइ सूरदास प्रभुके गुण ऐसे कासों कहिए जाई ॥९॥ सारंग ॥ विसरत क्यों गिरिधरकी वातैं। अवधि आश लगि रह्यो मधुप मन ताजि नगयो घट तातैं ॥ हरिके विरह छीनभई ऊधो दोउ दुखपरे सँघाते। तनरिपुकाम चित्त रिपु लीला ज्ञानगम्य नाहिं याते॥श्रवण सुन्यो चाहत गुणहरिको जोवै कथा पुराते। लोचन रूप ध्यान धरचो निशि दिन कहो घटैको काते ॥ ज्यों नृप प्राणगए सुत अपने विरचि रह्यो जो जाते। सूर सुमति तोही पै उपजै हरि आवैं मथुराते॥१०॥मलार॥ ऊधो कुलिश भई यह छाती। मेरे मन रसिक लग्यो नँदलालहि झपत रहत दिन राती ॥ ताजि व्रज लोग पिता अरु जननी कंठ लाइ गए काती। ऐसे निठुर भए हरि हमको कवहुँ न पठई पाती ॥ पिय पिय कहत रहै जिय मेरो होइ चातककी जाती। सूरदास प्रभु प्राणहि राखहु होइ करि बूंद सेवाती॥११॥ गौरी ॥ हम तौ कान्हकेलिकी भूखी । कहा करौं ले निर्गुण तुम्हरो विरहिनि विरह विदूखी ॥ कहिए कहा इहै नाहिं जानत कहो योगही योग। पालागौं तुमसे अपने पुर वसत वापुरे लोग॥चंदन अभरन चीर चारु वरु नैकु आपु तनु कीजै॥दंड कमंडलु भस्म अधारी तौ युवतिन कहँ दीजै। इहै देखि दृष्टि धौं गोपिन क्यों धौं दृढ व्रत पायो। सूरदास यदुनाथ मधुपको प्रेमहि पढन पठायो ॥१२॥ गौरी ॥ तुमहि मधुप गोपाल दुहाई। कवहुँक श्याम करत इहांको मन कैधौं चित सुध्यो विसराई ॥ हम अहीरि मतिहीन वावरी हटकतहू हठि करहिं मिताई । उइ नागर मथुरा निर्मोही अँग अँग भरे कपट चतुराई ॥ सांची कहहु देख श्रवणन सुख छांडहु छिआ कुटि लहु चिताई।सूरदास प्रभु विरदलाज धरि मेटहु इहांके लोग हँसाई॥१३॥अथ उद्धव वचन ॥ विहागरो ॥ गोपी सुनहु हरि संदेश।कह्यो पूरण ब्रह्म ध्यावो त्रिगुण मिथ्याभेस॥मैं कहों सो सत्य मानहु त्रिगुण डारो नाष।पंचत्रिय गुण सकल देही जगत ऐसो भाष॥ज्ञान विनु नर मुक्ति नाहीं यह विषै संसार। रूप रेख न नाम कुल गुण वरण अवर नसार॥मात पितु कोउ नाहिं नारी जगत मिथ्या लाइ।सूर सुख दुख नाहिं जाके भजो ताको जाइ॥१४॥सारंग॥ऐसी वात कहौ जिनि ऊधो।नँदनंदनकी कान करत न तो आवत आखर मुखते सूधो ॥ वातनही उडि जाहि और ज्यों त्यों हम नाहिंन काची। मन क्रम वचन विशुद्ध एकमत कमल नैन रँगराची ॥ सो कछु जतन करौ पालागौं मिटै हृदयको शूल। मुरली धरे आनि दिखरावो बाढै प्रीति दुकूल॥इनही बातन भए श्याम तनु अजहुँ मिला वतहो गढि छोलि।सूर वचन सुनि रह्यो ठग्योसो वहुरि न आयो वोलि ॥ १५॥सोरठ॥ फिरि फिरि कहा वनावत वातैं।प्रातकाल उठि देखत ऊधो घर घर माखन खातैं।।जिनकी वात कहतहौ हमसों सोहै हमसों दूरि। इहां न निकट यशोदा नंदन प्राण सजीवन मूरि॥वालक संग लिए दधि चोरत खात खवावत डोलत। सूर शीश नीच्यो क्यों नावत अव काहे नहिं बोलत॥१६॥सारंग॥फिरि फिरि कहा सिखावत मौन। वचन दुसह लागत अलि तेरे ज्यों पजरे पर लौन ॥ सींगी मुद्रा भस्म अधारी अरु आराधन पौन। हम अवला अहीर शठ मधुकर धरि जानहिं कहि कौन ॥ यह मत

जाइ तिनहिं तुम सिखवहु जिनही यह मत सोहत । सूर आजलौं सुनी न देखी पोत पूतरी पोहत॥ ॥१७॥केदारो॥ रहि रहि देख्यो तेरो ज्ञान।सुफलकसुत सर्वसुरस लैगयो तू करन आयो ज्ञान॥वृथा कत अपलोकलावत कहत यह उपदेश । उरपिकोतर होहु जानिन कहत वैन वलेस ॥ योगमत अति विशद कीरति होहि वांछित काम । सदा तनु प्रताप भरेहैं वे पुरुष तुम धाम॥हम चरत कंज सुवास लै लै जीवति ऐसीरीति । कहत तिन सन धूम घोटहु नाहिं चाहत प्रीति॥अजहुँ नाहिंन कहि सिरानो यह कथाको छेव।सूर धोखो तनकहै हम देखि लीन्ही सेव॥१८॥ धनाश्री ॥ ऊधोजी हमहि नयोग सिखैए । जेहि उपदेश मिलै हरि हमको सो व्रत नेम बतैए ॥ मुक्ति रहो घर वैठि आपने निर्गुण सुनत दुख पैए । जिहि शिरकेशकुसुम भरि गूदे तेहि कैसे भसम चढैए ॥ जानि जानि सब मगन भएहैं आपुन आपु लखैए । सूरदास प्रभु सुनहु नवाविधि बहुरि कि या व्रज अइए ॥१९॥ मलार॥ हम तो तबहीं ते योग लियो।जबहींते मधुकर मधुकनको मोहन गवन कियो॥ रहित सनेह सरोरुह सबतन श्रीखंड भस्म चढाए । पहिरि मेखला चीर चिरातन पुनि पुनि फेरि सिआए ॥ श्रुति ताटंक नैन मुद्रावलि औधि अधार अधारी । दरशनभिक्षा माँगत डोलत लोचन पत्र पसारी॥ बांधो वेणु कंठ शृंगी पिय सुमिरि सुमिरि गुण गावत।कर वर वेत दंड उर उर तन सुनत श्वान दुख धावत॥गोरख शब्द पुकारत आरत रस रसना अनुराग । भोग भुगति भूलेहु भावनहिं भरी विरह वैराग ॥ भूलीभई फिरति भ्रम श्रमके वन वीथिनि दिन राति । वारक आवत कुटुंब यात्राहै सोऊ नसोहाति ॥ परम गुरू रतिनाथ हाथे शिर दियो प्रेम उपदेश । चतुर चेटकी मथुरानाथसों कहियो जाइ आदेश ॥ भोगीको देखहु या व्रजमें योग देन जेहि आए । देखी सिद्धि तिहारे सिद्धकी जिनि तुम इहां पठाए ॥ सूर सुमति प्रभु तुमहिं लखायो हमरे सोई ध्यान । अलि चलि औरै ठौर देखावहु अपनो फोकट ज्ञान ॥२०॥मलार॥ ऊधो कारि रहीं हम योग । कहा एतौ वाद ठानै देखि गोपी भोग ॥ शीश सेली केश मुद्रा कनक वीरी वीर । विरह भस्म चढ़ाइ वैठीं सहज कंथा चीर ॥ हृदय सींगी टेर मुरली नैन खप्पर हाथ । चाहते हरि दरश भिक्षा दई दीनानाथ ॥ योगकी गति युक्ति हमपै सूर देखो जोइ । कहत हमको करन योग सो योग कैसो होइ ॥२१॥ऊधो योग तबहिंते जान्यो । जादिनते सुफलकसुतके सँग रथ व्रजनाथ पलान्यो॥तादिनते सब छोह मोह गयो सुत पितु हेतु भुलान्यो । तजिमाया संसार तर्के जिय व्रज वनिता व्रत ठान्यो ॥ नैन मूंदि मुख मौनरही धारि तनु तपतेज सुखान्यो । नँदनंदन मुरली मुख पर धरि उहै ध्यान उर आन्यो ॥ सोइ रूप योगी जेहि भूले जो तुम योग वखान्यो । ब्रह्म उपाचि मुए ध्यान कर तही अंत उनहिं पहिंचान्यो ॥ कहौ सुयोग कहालै कीजै निर्गुणही नहिं जान्यो । सूर उहै निज रूप श्यामको है मन माहँ समान्यो२२॥सारंग॥ए अलि कहा योगमें नीको।तजि रसरीति नंदनंदनको सिखवत निर्गुण फीको॥देखति सुनति नाहिं कछु श्रवणनि ज्योति ज्योति करि धावति।सुंदर श्याम कृपालु दयानिधि कैसे हो विसरावति॥सुनि रसाल मुरलीकी सुर ध्वनि सुर मुनि कौतुक भूले।अपनो भुजा ग्रीव पर मेलो गोपिनके मन फूले॥लोककानि कुलके भ्रम छाँडे प्रभु सँग घर वन खेली । अब तुम सूर सिखावन आए योग जहरकी वेली२३॥गौरी॥ऊधो योग कहत हो कहा योग किये।श्याम सुंदर कमल नयन वसो मेरे जिये ॥ योग युगति साधिकै जे तप योगिनि योग सिरायो । ताहूको फल सगुण मूरती प्रगटहि दरशन पायो ॥ मकराकृत कुंडल छवि राजित लोल कपोलै । मोर मुकुट पीत वसन बाँसुरी करवोलै ॥ ऐसे प्रभु गुणनिधान दरश देखि जीजै । राम श्याम निधि

पियूष नयनन भरि पीजै॥जाको अयन जल मे तेहि अनल कैसे भावै।सूरज प्रभु गुणनिधान निर्गुण क्यों गावै॥२४॥ मलार ॥ मधुकर श्याम हमारे ईश। तिनको ध्यान धरैं निशि वासर औरहि नवै नशीश॥ योगिन जाइ योग उपदेशहु जिनके मन दश बीस। एकै चित एकै वह मूरति पलन लगे दिन तीस ॥ काहेको निर्गुण ज्ञान गनत हो जित तित डारत खीस। सूर हृदय में बसत निरंतर त्रिभुवन पति जगदीस॥२५॥ सोरठ ॥योगकी गति सुनत मेरे अंग आगि वई।सुलगि सुलगि हम जरतिही तुम आनि फूँकि दई ॥ भोग कुविजा कूबरी सँग कौन बुद्धि भई। सिंह भष तजि चरत तिनुका सुनी बात नई॥ध्यान धरत नटरत मूराति त्रिविध ताप तई।सूर हरिकी कृपा जापर सकल सिद्धिमई ॥२६॥ मलार ॥ मधुकर रह्यो योगलौं नातौ।कतहि बकत बेकाम काजबिन होहि न ह्यांते हातौ ॥ जब मिलि मिलि मधुपान कियौहौ तबतू कहिधौं कहातौ । अब आयो निर्गुण उपदेशनसो नहिं हमहिं सुहातो ॥ काचेगुण ज्यों तनुले वैधौ लै वारिजको तातो। मेरेजानि गह्यो चाहतहौ फेरिकि मैगलमातो । यह लैदेहु सूरके प्रभुको आयो योग जहातौ ॥ जब चाहिहै तब मांगिपठैहै जोकोउ आवत जातो ॥२७॥ सारंग ॥ ऊधो योग किधौं यह हाँसी । कीनी प्रीति हमारे ब्रजसों दई प्रेमकी फाँसी ॥ तुमहो बडे योगके पालक संगलिए कुविजासी। सूरदास सोईपै जानै जाउर लागै गाँसी॥२८॥मारू॥योग विधि मधुबन सिखिअहिजाइ । मन वच क्रम शपथ सुनि ऊधो संगहि चलौ लिवाइ ॥ सब आसन रेचक अरु पूरक कुंभक सीखेपाइ। बिन गुरुनिकट संदेशन कैसे यह औगाह्यो जाइ ॥ हम जो करत देखिहैं कुविजहि तेई करव उपाइ। श्रृद्धा सहित ध्यान एकहि सँग कहत जाउ यदुराइ ॥ सूर सु प्रभुकी जापर रुचिहै सो हम करिहैं आइ। आज्ञा भंग करैं हम क्योंकर जो पतिव्रत न नशाइ॥२९॥धनाश्री॥ योग संदेशो ब्रजमें लावत। थाके चरण तुम्हारे ऊधो बार बारके धावत ॥ सुनिहै कथा कौन निर्गुणकी रचि पचि बात बनावत। सगुन सुमेर प्रगट देखियत तुम तृणकी ओट दुरावत ॥ हम जानत परपंच श्यामके बातनहीं बौरावत। देखी सुनी न अबलगि कबहूं जल मथि माखन आवत॥ योगी योग अपार सिंधुमें ढूंढेहूं नहिं पावत। इहां हरि प्रगट प्रेम यशुमतिके ऊखल आप बँधावत ॥ तुम चुपकरिरहौ ज्ञान ढकि राखो कतहो विरह बढ़ावत। नंदकुमार कमलदल लोचन कहिको जाहि नभावत॥काहेको विपरीत बात कहि सबके प्राण गँवावत। सोहं सकित सूर अबलनिको जिहि निगम नेति यशगावत ॥३०॥ अथ मन अवस्थावर्णनं ॥ मलार ॥ मधुकर कहि कैसे मन गानै। जिनके एक अनन्य व्रत सूझै क्यों दूजो उर आनै ॥यहुतौ योग स्वाद अलि ऐसो पायसुधा खरिसानै। कैसे धौं यह बात पतिव्रत सुनि शठ पुरुष बिरानै ॥ जैसे मृगिअन ताकि बधिक दृग करकोदंड गहि तानै।हिंसाकरि पोषत तन मन सुख शिरअपराध नआनै ॥ बडे विचित्र कुविजाके रँगरंगे हम निर्गुण लिखि ठानै॥ सूरश्याम निर्गुण रति मानी मधुप प्राण जिनि छानै॥३१॥मलार॥कहांलौं राखैं हिय मनधीर।सुनहु मधुप अपने इन नैनन अनदेखे बलवीर॥घर आँगन न सुहात रैनि दिन बिसरे भोजन नीर।दाहत देह चंद्र चंदनहै अरु वह मलय समीर॥पुनि पुनि उहै सुरति आवति चित चितवत यमुनातीर।सूरदास कैसे बिसरतहै सुंदर श्याम शरीर॥३२॥ केदारो ॥ बिनहरि क्यों राखैं मनधीर। एकबेर हरि दरश देखावहु सुंदर श्याम शरीर ॥ तुम जो दयालु दयानिधि कहियत जानतहो परपीर। बिछुरे प्राणनाथ ब्रज अबहीं कत हम कत यदुवीर।मत अपयश आनहु शिर अपने कठिन मदनकी पीर।सूरदास प्रभु मिलन कहत हैं रवितनयाके तीर॥३३॥ नट ॥ मेरो मन अनत कहा सचुपावै। जैसे उडि जहा

जको पंछी उडि जहाज पर आवै॥जिहि मधुकर अमृत रस चाख्यो क्यों करीलफल भावै।सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै॥३४॥सारंग॥मनतो मथुराही जो रह्यो।तवको गयो वहुरि नहिं आयो गहे गुपाल गह्यो॥ राख्यो रूप चुराइ निरंतर सो हरि शोधु लह्यो । आए और मिलावन ऊधो मनदै लेहु मरयो॥ निर्गुण साटि गुपालहि माँगत क्यों दुख जात सह्यो । यह तनु यहि आधार आजुलगि ऐसीही निवह्यो॥ सोई लेत छुडाइ सूर अव चाहत हृदय दह्यो ॥३५॥ सारंग॥ कहा भयो हरि मथुरा गए। अव अलि हरि कैसे सुखपावत तनुदोउ भांति भए ॥ इहां अटक अति प्रेम पुरातन वहां आति नेह नए। उहां सुनियत नृप भेप इहां दिन देखिअत वेणुलए॥कहा हाथ परयो शठअक्रूरके यह ठग ठाटठए। अव क्यों कान्ह रहत गोकुल विन योगनके सिखए॥ राजा राज्यकरौ गृह अपने माथे छत्र दए। चिरंजीव रहौ सूर नंदसुत जीजत मुख चितए॥३६॥ अपनीसी कठिन करत मन निशि दिन। कहि कहि कथा मधुप समुझावत तदपि न रहत नंद नंदनविन॥ श्रवणसँदेश नयन वरषत जल मुख वतियां कछु और चलावत! अनेकभांति चित धराति निठुरता सवतजि सुरति उहै जिय आवत॥ कोटिस्वर्ग सम सुखउ न मानत हरि समीप समता नाहिं पावत। थकित सिंधु नौकाके खग ज्यों फिरि फिरि फेरि वहै गुणगावत॥ जेजे वात विचारत अंतर तेइ तेइ अधिक अनल उर दाहत । सूरदास परिरहि नसकत तन वारक वहुरि मिलेहै चाहत॥३७॥मधुकर ह्यां नाहिंन मन मेरो।गयो जु संग नंदनंदनके वहुरि नकीन्हौं फेरो॥उन नैनन मुसकानि मोललै कियो परायो चेरो। जाके हाथ परयो ताहीको विसरयो वास वसेरो। को सीखै ता विनु सुन सूरज योगजकाहू केरो । मंदो परयो सिधाउ अनतलै यही निर्गुण मत तेरो॥३८॥मुक्तिआनि मंदेमो मेली। समुझि सगुन लै चले न ऊधो यह तुमपै सव पूजी अकेली॥कै लैजाहु अनतही वेचो कै लेराख जहाँ विपवेली॥याहि लागि को मरै हमारे वृंदावन चरणनसों ढेली॥ धरे शीश घर घर डोलतहो एकै मति सव भई सहेली। सूरदास गिरिधरन छवीलो जिनकी भुजा कंठगहि खेली॥३९॥ऊधो मनतौ एकै आहि।लै हरिसंग सिधारे ऊधो योग सिखावत काहि॥ सुनि शठनीति प्रसून रस लंपट अवलनिकी वांचाहि।अव काहेको लोन लगावत विरह अनलके दाहि॥ परमारथ उपचार कहतहो विरह व्यथाहै जाहि। जाको राजरोग कफ वाढ़त दह्यो खवावत ताहि॥ अवलगि अवधि अलंवन करि करि राख्यो मनहि सवाहि। सूरदास या निर्गुण सिंधुहि कौन सकै अव गाहि॥४०॥ऊधो मन न भए दशवीस।एक हुतोसो गयो श्यामसँग को अवराधे ईश॥इंद्री सिथिल भई केशोविन ज्यों देही विन शीश।आशा लगी रहत तनु श्वासा जीजो कोटि वरीस॥तुमतौ सखा श्याम सुंदरके सकल योगके ईश।सूरदास वा रसकी महिमा जो पूँछै जगदीश॥४१॥ ऊधो जो मन होत वियो।तो तुम्हरे निर्गुण को दीजै सो विधना न दियो॥ एक जु हुतो मदन मोहनकी सो छवि छीनि लयो॥ अव वा रूपराशि विनु मधुकर कैसे परतु जियो। जो तुम कह्यो सोई शिर ऊपर सूरश्याम पठयो। नाहिन मीन जीवत जल वाहर जो घृत में सजियो॥४१॥ ऊधो यह मन और न होई। पहिलेही चढि रह्यो श्यामरंग छूटत नहिं देख्यो धोई॥ कै तुम वचन वडे अलि हमसों सोई कह जो मूल। करतकेलि वृंदावन कुंजन वा यमुनाके कूल॥ योग हमहिं ऐसो लागत ज्यों तो चंपेको फूल। अव क्यों मिटत हाथकी रेखें कहौ कौन विधि कीजै। सूरश्याम मुख आनि देखावहु जेहि देखे दिन जीजै॥ ४३॥ मधुकर मो मन अधिक कठोर। विगसि नगए कुंभ काचेलौं विछुरत नंद किसोर॥ प्रेम वनिज कीन्हो हुतो नेहनफा जियजानि। ऊधो अव उलटी भई प्राणपूजिमें हानि॥

जो हम प्रीति रीति नहिं जानति तौ ब्रजराज तजी। हमरे प्रेम नेमकी ऊधो मिलि रसरीति लजी॥ हमते भली जलचरी वपुरी अपनो नेम निवाह्यो। जलते विछुरि तुरत तनु त्यागयो तउ कुल जलको चाह्यो॥ अचरज एक भयो सुन ऊधो जल विन मीन रह्यो। सूरदास प्रभु अवधि आश लगि मन विश्वास गह्यो॥ ४४॥ मलार॥ मधुकर ए मन विगरि परे। समुझत नहीं ज्ञानगीताको हरि मुसुकानि अरे॥ हरिपद कमल विसारत नाहिंन शीतल उर सचरे। योग गँभीर अंध कूपन सों ताहि जु देखि डरे॥बालमुकुंद रूपरसराते ताते वक्रपरे। सूधे नहोहिं श्वान पूँछ ज्यों कोटिक वैद मरे॥ हरि अनुराग सुहाग भरि अमीके गागररे। सूरदास प्रभु ऐसी रहनदे कान्ह वियोग भरे॥ ४५॥ इहि उर माखन चोर गडे। अब कैसे निकसत सुनु ऊधो तिरछे ह्वै जो अडे॥ यदपि अहीर यशोदानंदन कैसे जात छडे। वहां यादवपति प्रभु कहियत है हमैं न लगत बड़े॥ को वसुदेव देवकी नंदन को जाने को बूझे। सूर नंद नंदनको देखति और नकोई सूझे॥ ४६॥केदारो॥ मनमें रह्यो नाहिंन ठौर। श्रीनँदनंदन अछत कैसें आनिये उर और॥ चलत चितवत द्योस जागत सपने सोवत राति। हृदयते वह मदन मूरति छिन न इत उत जाति॥ कहत कथा अनेक ऊधो लोग लोभ दिखाइ। कहाकरौं मन प्रेमपूरण घट न सिंधु समाइ॥ श्यामगात सरोज आनन ललित गति मृदुहास। सूर इनके दरशको बल मरत लोचन प्यास॥ ४७॥ सारंग॥ मधुकर श्याम हमारे चोर। मन हरिलियो तनक चितवनि में चपल नैनकी कोर॥ पकरे हुते और उर अंतर प्रेम प्रीतिके जोर। गए छँडाइ तोरि सब बंधन देगए हँसनि अकोर॥ औझकि परी रैनि सो वीती दूत मिल्यो मोहिं भोर। सूरदास प्रभु सर्वसु लूट्यो नागर नवल किसोर॥ ४८॥ अली अब ब्रजनाथ कछू करौ। जाकारण ये देहधरी है तिहिके लेखेपरौ॥प्रथमहि अर्पिदियो हम सर्वसु एविरहिनि योहीजरौ॥ कोटि मुक्तिवारौं मुसकनि पर योग वापुरो सरो। सूर सगुन बाँटि दियो गोकुलमें अब निर्गुणको वोसरो॥ ताकी छटा छार कंठहरिया जो ब्रजजा नों दूसरो॥ ४९॥ ऊधो भलीकरी गोपाल। आपुनपै हरि आवत नाही विरमि रहे यहि काल॥ चंदन चंदहुते तव शीतल कोकिल शब्द रसाल। अब समीर पावक सम लागत सब ब्रज उलटी चाल॥ हार चीर कंकन कंटक भए तरनि तिलक भए भाल। सेज सिंधु ग्रह तिमिर कंदरा सर्प सुमन भएमाल॥ हमतो न्याय इतौ दुखपावैं ब्रजवासि गोपी ग्वाल। सूरदास स्वामी सुखसागर भोगी भँवर मृणाल॥५०॥मलार॥ हमको इती कहा गोपाल।नंदकुमार कमलदल लोचन सुंदर बाहु विशाल॥ इक ऐसीही विरहरही लटि विन घनश्याम तमाल। तापर अलि पठएहैं सिखवन अबलन उलटी चाल॥ लोचन मूंदि ध्यान चित चितवनि धरि आसन मृगछाल। वौसहि जाइ जरे परचूनो दूनो दुख तिहि काल॥ डारि नदिए कमल करते गिरि दवि रहती ब्रजबाल। सूरश्याम अब यह न बूझिए विछुरि करी वेहाल॥ ५१॥ जब वह सुरति होतिहै वात। सुनो मधुप या वेदनकी रति मन जानै कै गात॥ रहत नहीं अंतर अति राखे कहत नहीं कहिजात। भई रीति हठि उरग छछूँदरि छांडे बनै नखात॥ एकहि भांति सदा या ब्रजमें वीततहैं दिन रात। सूरदास प्रभुके मिलि विछुरन समुझि समुझि पछितात॥५२॥ सारंग॥यह बात हमारे कौन सुनैं॥जिन चाह्यो हरि रूप सुरति करि भूलि अंगारनिको चुनै॥ इहां सेवनको ठौर न देखति ताते सुनि मनमें गुनै। कैसुक विरह बयार पैनकी बैठे ठानेको धुनै॥ तब उन भांतिन लाड लडाए अब बूझिए न यह उनै। बालि छांडिकै सूर हमारे अब नरवाईको लुनै॥ ५३॥ ऊधो कहिए काहि सुनाइ।

हरि बिछुरे हम जिती सहतहैं तिते विरहके घाइ ॥ वरु माधो मधुवनहीं रहते कत यशुमतिके आए। कत प्रभु गोपवेष ब्रजधारचो कत ए सुख उपजाए ॥ कत गिरि धरचो इंद्र प्रणमेव्यो कत वनराशि वनाए। अव कह निठुर भए अवलनिपर लिखि लिखि योग पठाए ॥ तुम परवीन सबै जानतहौ ताते यह कहि आई। आपन कौन चलावै सूर जिन मात पिता बिसराई॥५४॥ नट ॥ ऊधो बात कही नहिं जाइ। मदन गोपाल लालके बिछुरे प्राण रहे मुरझाइ ॥ जव स्यंदन चढि गमन कियो हरि फिरि चितए गोपाल। तबहीं परम कृतज्ञ सबै सुठि संग लगी ब्रजवाल॥ अब यह और सृष्टि विरहनकी बकत बाइ बौरानी। तिनसों कहाहोत फिरि उत्तर तुमहो पूरण ज्ञानी ॥ अब सो साधन घटका कीजै को उपजै परतीति। सूरदास कछु वरणि न आवै कठिन विरहकी रीति ॥ ५५ ॥ सारंग ॥ मधुकर जो तू हितू हमारो। पिवहि नरे यह वदन सुधारस छांडि योग जलखारो ॥ सुन शठ नीति सुरभि पय दायक क्यों वलेति हल भारो। जे भय भीत होहिं शृंग देखे क्यों व छुवहि अहि कारो ॥ निजकृत समुझि वेणु दशनन हति धाम सजत नाहिं हारो। तावल अछत निशा पंकज भ्रम दल कपाट नाहिं टारो॥ रे अलि चपल मूढ रस लंपट कतहि बकत वेकाज। सूरश्याम छवि क्यों बिछुरति है नख शिख अंग विराज॥५६॥ विलावल॥ तुम्हारी प्रीति ऊधो पूरव जनमकी अब जु भए मेरे तनहुके गरजी। बहुत दिनन विरमि रहे हौ संगते विछोहि हमहिं गए बरजी ॥ जादिनते तुम प्रीति करीही घटति न बढति तूलि लेहु नरजी। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन विना तनु भयो ब्योंत विरह भयो दरजी॥५७॥ सारंग॥ हमहिं बोल बोले की परतीति। सुनु ऊधो हम नाहिंन जानत तुम्हरे गाँवकी रीति। हमरे प्रीतम तुम जो लैगये आवन कह्यो रिपु जीति। तुम्हारी बोलनि कौन पतीजे ज्यों भुस परकी भीति ॥ आवन अवधि वदी हरि हमसों सोऊ दिन गए वीति। सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि सुमिरि पुरातन प्रीति॥५८॥ ॥सारंग॥ऊधो जो तुम हमहिं सुनायो।सो हम निपट कठिनई हठ करि या मनको समुझायो॥युक्ति जतन जीति योग अंगहू गहि अपथ पंथ लै आयो। भटकि भ्रम्यो वोहित के खग ज्यों पुनि पुनि हरि जीपै आयो ॥ हमको सबै अहित लागत है तुम अतिहितहि जनायो। सर सरिता जल होम किएते कहा अग्नि सचुपायो॥अब सोई उपाउ उपदेशो जिहि जिय जाइ जिवायो।वारक मिले सूरके स्वामी कीजहु अपनो भायो ॥ ५९ ॥ मलार ॥ ऊधो हरि कहिये प्रतिपालक। जे रिपु तुम पाहिले हति छांडे बहुरि भए मम शालक ॥ अघ बक बकी तृणावर्त केशी ए सब मिलि ब्रज घेरत। सूनो जानि नंदनंदन बिनु बैर आपनो फेरत ॥ अरु अपने परिहास मेटनको इंद्र रह्यो करि घात। सत्वर सूर सहाय करैको रही छिनककी बात ॥ ६० ॥ कल्याण ॥ ऊधो तुम जानत गुप्त हि यारी। सबकाहूके मनकी बूझो बांधो मूढ फिरो ढिग वारी ॥ पीत ध्वजा उनकी मन रंजन लाल ध्वजा कुबिजा विविचारी। यशकी ध्वजा श्वेत ब्रजबाँधे अपयशकी ऊधो पै कारी॥वैतो प्रेम पुंज मनरंजन हमतो शीश योग व्रतधारी। सूर शपथ मिथ्या लँगराई ए बातें ऊधो की प्यारी ६१ ॥ मलार ॥ श्याम अब न हमारे। मथुरागए पलटि से लीन्हें माधो मधुप तुम्हारे ॥ अब मोहिं आवत पतु पछतावो कैसे वै गुण जात बिसारे। कपटी कुटिल काग और कोकिल अंत भए उडि न्यारे ॥ करि करि मोह मगन ब्रजवासी प्रेम प्रतीति प्राण धन वारे। सूरश्यामको कौन पत्यैहै कुटिलगात तनु कारे ॥ ६२ ॥ अथ श्यामरंग तर्क वदति ॥ धनाश्री ॥ मधुकर कहा कारेकी न्याति। ज्यों जल मीन कमल मधुपनको छिन नहिं प्रीति खटाति ॥ कोकिल

कपट कुटिल वायस छाले फिरि नाहिं वह वन जाति । तैसेही रसकेलि रस अचयो बैठि एकही पांति ॥ सुत हित योग यज्ञव्रत कीजतु बहुविधि नीकी भांति । देखहु अहि मन मोह मयाताजे ज्यों जननी जनि खातिं ॥ तिनको क्यों मन विषमें कीजै अवगुणलौं सुखसाति । तैसे सूर सुने यदुनंदन वजी एकरस तांति ॥६३॥ धनाश्री ॥ श्याम सखी कारेहू में कारे । तिनसों प्रीति कहाकहि कीजै मारग छांडि सिधारे ॥ लोक चतुर्दश विभव कहतहै पटुः पत्र जल न्यारे । सर वरत्यागि विहंग उडे ज्यों फिरि पाछे न निहारे ॥ तव चितचोर भोर व्रजवासिन प्रेम नेम व्रत टारे। लै सर वसनहि मिले सूरप्रभु कहिअत कुलट विचारे ॥ ६४ ॥ नट ॥ ऐसे नंदराइके वारे । इतनिन जानि पतियाहु सखीरी जितनेहैं तनुकारे ॥ खेलत रंग संग वृंदावन निमिष नहोत निनारे । पहिले सुख दारुणभए हमको देइ जग एदुखभारे ॥ उर ऊपर भीजत सारंग रिपु नैन नीर वहुढारे । सूर दास प्रभु वेगि मिलहु किम टरत नहीं गुणटारे॥६५॥सारंग॥मधुकर यह कारेकी रीति । मनदे हरत परायो सरवस करै कपटकी प्रीति ॥ ज्यों षटपद अंबुजके दलमें वसत निशारतिमानि । दिनकर उए अनत उडिवैठे फिरि न करत पहिचानि ॥ भवन भुजंग पिटारे पाल्यो ज्यों जननी जियतात । कुल करतूति जाति नाहिं कवहूँ सहज सु डसि भजिजात ॥ कोकिल काग कुरंग श्याम घन हमाहिं नदेखेभावै । सूरदास अनुहारि श्यामकी छिनु छिनु सुरति करावै॥६६॥मलार॥मधुकर देखि श्यामतनु तेरो । या मुखकी सुनि मीठी बातैं डरपतुहै मनमेरो ॥ कतए चरण छुअत रसलंपट वरजतही वेकाज।परसत गात श्रवत कुच कुंकुम यहउ करी कछुलाज ॥ बुधि विवेक वल वचन चातुरी सरवस चितै चुरायो । ऐसो धौं उन कहा विचारो जालगि तू व्रजआयो ॥ अव कहि कहि आशा गावतहो हम आगे एगीत । सूर इते परि द्वार कहाहै जो परि त्रिगुण अतीत॥६७॥ मलार ॥ मधुप तुम दिखियतहो अतिकारे । कालिंदीतट पार वसतहो सुनियत श्याम सखारे ॥ मधुकर चिकुर भुअंग कोकिला अवधिनहीं दिनटारे । वै अपने मुखहीके राते जियत उहै उनिहारे ॥ कपटी कुटिल निठुर निर्मोही दुखदै दूरि सिधारे । वारक वहुरि कवहुँ आवहुगे नैननिं साधनि वारे ॥ उनकी सुनै सुआपु विगोवै चितचोरत वटपारे । सूरदास प्रभु क्यों मनमानै सेवक करत ननारे॥६८॥सारंग॥भूलतहौ कत मीठी वातनि।एतो अलि उनहीके संगी चंचल चित्त सांवरे गातनि वै मुरली ध्वनि जगमन मोहत इनकी गुंज सुमन मधुपातनि । एषटपद वै द्वैपद चतुर्भुज काहूभां ति भेदनहिं भ्रातनि ॥ वै नव निशि मानिनि गृहवासी ए अव शतनिशि नवजल जातनि । वै उठि प्रात अनत मन रंजत ए उडिकरत अनत रसरातनि ॥ स्वारथी निपुण सब रस भोगी जिनि पतिआहु विरह दुख दातनि । वे माधव ए मधुप सूर कहि दुहुँमे नहिंन कोउ घटि घातनि॥ ६९ ॥ मलार ॥ विलग मतिमानो ऊधो प्यारे । वह मथुरा काजरकी उवरी जे आवैं तेकारे ॥ तुम कारे सुफलकसुत कारे कारे मधुप भवारे। तिनहूँमांझ अधिक छवि उपजत कमलनैन मणिपारे।मानो नीलमाट में वोरे लै यमुना जुपखारे।ताग़ुणश्याम भई कालिंदी सूरश्याम गुणन्यारे ॥७०॥ऊधो तुम सब साथी भोरे । मेरे कहे विलगु मानहुगे कोटि कुटिल लै जोरे ॥ वै अक्रूर क्रूर कृत जिनके रीते भरे भरे गहि ढोरे । आपुन श्याम श्याम अंतर मन श्यामकाममें वोरे ॥ तुम मधुकर निर्गुण निज नीके देखे फटकि पछोरे। सूरदास कारणके संगी कहा पाइयत गोरे॥ ७१ ॥भोपाली॥ ऊधो हम दूवरी वियोग । प्रीतम हुते सोउ गए मधुवन रहे वटाऊ लोग ॥ जो तुम बूझो व्यथा हमारी कहे बनै तुम आगे। देह विहार शृंगार नभावै मनतरसै

हरि काजै॥कारीघटादेखि अँधियारी सारंग शब्द नभावै।दिवस रैनि मोहिं विरह सतावै कब गोपाल घरआवै। सूरदास स्वामी मनमोहन अब करि गए अनाथ। मन क्रम वचन वहांई बसतहैं जहां बसत यदुनाथ॥७२॥ सोरठ॥ ऊधो यह हरि कहा करयो। राजकाज चित दियो सांवरे गोकुलक्यों विसरयो॥ कत गिरिधरयो इंद्र मद मेटयो कत वै सुख उपजाए। अब कह निठुर भए अवलनि पर लिखि लिखि योग पठाये॥ परमप्रवीन सकल विधि सुंदर ताते यह कहिआवत। हमरी कहा चलै सुन सूरज मात पिता विसरावत॥७३॥ नट॥ यदपिमैं बहुते यतनकरे। तदपि मधुप हरि प्रिया जानिकै काहू न प्राणहरे॥ सौरभ युत सुमनन लै निजकर संतत सेज धरे। सन्मुख सहति दरश शशि सजनी तिहिहुं न अंग जरे॥ मधुकर मोर कोकिला चातक सुनि सुनि श्रवणभरे। सादरह्वै निरखति रतिपति दृग नैक न पलक परै॥ निशिदिन रटत नंदनंदनको उरते छिन नटरे। अति आतुर गुणसहित चमू साजि अंगन सरस चिरे॥ जानत नहीं कौन गुण यहितन जाते सब विडरे। सूरदास सकुचन श्रीपतिकी सुभटन बल विसरे॥७४॥केदारो॥जिहिदिन तजी ब्रजकी भीर।कहो ए अलि लेखि तुमसों सखा सुंदर धीर॥ काम नृप शशि नेव अवलनि दूत दुर्ग समीर। सजै सेना विपुल बादर वदत वंदीकीर॥ लता लघु जतु कुसुम कर सर कली कोटि तुणीर। वरुनवान वसंत करलै वधतहै आमीर॥ मध्य द्रुमहै फूल मानो कवच कंचनचीर॥ करि कुंभ कुंजर विटप भारी चमर चारु मयीर। चमू चंचल चंचल नाहिन रहीहै पुर तीर॥ समर मारुहु कीटकी रट सहत त्रिय आधीर। जन्म जातक व्याध व्यापक कहो कासों पीर॥ सूर रसिक शिरोमणिहि विन जलत यमुना नीर॥७५॥ कान्हरो॥ हरि बिछुरनकी शूल नजाई। बलि बलि जाउं मुखारविंदकी वह मूरति चित रही समाई॥ एक समय वृंदावन महियां गहि अंचल मेरी लाज छिडाई। कबहुँक रहसि देत आलिंगन कबहुँक दौरि बहोरत गाई॥ वैं दिन ऊधो विसरत नाहीं अंबर हरे यमुनतट जाई। सूरदास स्वामी गुण सागर सुमुरि सुमिरि राधे पछिताई॥ ७६॥ नट॥ मोहन माँग्यो अपनो रूप। यह ब्रज बसत अचे तुम वैठी ताविन उहां निरूप॥ मेरोमन मेरो अलि लोचन लै जु गये धुपि धूप। हमसों वदलो लेन उठिधाए मनो धारिकर सूप॥ अपनो काज सँवार सूर सुनि हमहिं बतावत कूप। लेवा देइ धराधर में है कौन रंक को भूप॥ ७७॥ सारंग॥ पठवत योग कछू जिय लाजन। तव ज्यों जतन तंत्र मृग मोहत अब कपटरूपकी बाजन॥ जिय गहि लई कूरके सिखए मोह होत कहुँ राजन। सब सुधि परी वचन कन ढोए ढके रहो मुखभाजन॥ यह नृपनीति रह्यो कौनेहु युग नेह होत जस आनन। ताहू तजी सुरति नहिं आवति दुखपाए जन माजन॥ करि दासी दुलहिनि भयो दूलह फिरत व्याहके साजन।सूर बडे भुव भूप कंस हते वा कुबिजाके काजन॥७८॥ ॥ मलार॥ संदेशनि विरह व्यथा क्यों जाति। जबते दृष्टिपरी वह मूरति कमल वदनकी कांति॥ अवतो जिय ऐसी बनिआई कहो कोउ केहु भांति। जोइ वह कहै सोई सो तुनो सखी युगवर रैनि विहाति॥ जौलौं न भेंटौं भुजभरि हरिको उर कंचुकी न सोहाति। सूरदास प्रभु कमलनयन विनु तलफति अरु अकुलाति॥ ७९॥ मलार॥संदेशनि क्यों निघटाति दिन राति।कबहुँक श्याम कमलदल लोचन कब मिलि हैं उहि भांति॥ खंजरीट मृग मीन सबै मिलिं उपमाको अकुलाति। बार बार मैं बरजाति ग्वालनि अपने मारग जाति॥ सहस भांति अर्पितकी रन सब एकौ चित न समात। सूरदास प्रभु संततहितते कहे सुनत नहिं बात॥८०॥गोपालहि लै आवहू मनाइ। अवकी

वेर कैसेहु करि ऊधो करि छल वल गहिपाइ ॥ दीजो उनहि सुसारि उरहनो संधि संधि समुझाइ। जिनहिं छांडि वटिआ महँ आए ते विकल भए यदुराइ ॥ तुमसों कहा कहोंहों मधुकर बातैं वहुत बनाइ। वहियां पकरि सूरके प्रभुकी नंदकी सोंह दिवाइ॥८१॥केदारो॥ ऊधो श्याम इहां लै आवहु। ब्रजजन चातक मरत पियासे स्वाति वूंद वरषावहु ॥ इहँते जाहु विलंब करहु जिनि हमरी दशा जनावहु। घोषसरोज भए हैं संपुट होइ दिनमणि विगसावहु ॥ जो ऊधो हरि इहां न आवहिं तो हम वहाँ बुलावहु । सूरदास प्रभु हमहिं मिलावहु तव तिहुँ पुर यश पावहु ॥ ८२ ॥ कहहु कहा हमते विगरी।कौने न्याइ योग लिखि पठए हम सेवा कछु ऐ नकरी॥पाखंड प्रीति करी नँद नंदन अवधि अधार हुतीसो टारी॥मुटा जटा ऊधौ लै आए ब्रजवनिता पहिरो सगरी॥जाति स्वभाउ मिटै नाहिं सजनी अंतत उवरी कुबरी। सूरदास प्रभु वेगि मिलहु किनि नातरु प्राण जात निकरी॥८३॥ केदारो ॥विरही कहालौं आपु सँभारै। जवते गंग परी हरि पगते वहिवो नहीं निवारै ॥ नैननते विछुरी भौंहैं भ्रम शशि अजहूँ तनु गारे । रोमते विछुरी कमल कंठ भए सिंधुभए जरि छारे॥ वैनते विछुरी विधि अवधि भई वेदहिको निरवारे। सूरदास जाके सव अंग विछुरे केहि विद्या उपचारे॥८४॥मलार॥ वहुत दिन गए माई हरि दरशन विनु देखे। गनताहि गनत गई सुनि सजनी कर अँगुरिनकी रेखे ॥ अव इहि विरह अगर जो करी हम विसरी नैन निमेषै। होड परति सुनि सूरदास जनि पारहु उनहींके लेखे ८५॥ धनाश्री ॥ ऊधो भली भई अव आए। विधि कुलाल कीने काचे घट ते तुम आनि पकाए॥ रँगदीनो हो काम श्याम लै अंग अंग चित्र वनाए। याते गरे न नैन मेह ते अवधि अटापर छाए॥ ब्रजकरि अंवा योगईधन सम सुरति आगि सुलगाए ॥ फूंक उसास विरह पर जारनि संग ध्यान दर शशि अराए॥ भरे सँपूरण कलश प्रेम जल छुअन नकाहू पाए।राजकाजते गए सूर प्रभु नँदनंदन करलाए॥८६॥मलार॥ ऊधो भली करी इहां आए। तुम देखे जनु माधो देखे दुख त्रय ताप नशाए॥ नंद यशोदाको नातो नछूटत वेद पुराणन गाए। हम अहीरि तुअहीर लाख दश का भयो निर्गुण गाए॥तव यहि घोष खेलावहु खेलहु ऊखल भुजा बँधाए। सूरदास प्रभु इहै शूल जिअ वहुरि न दरश देखाए॥ ८७ ॥ मधुकर कहि मधुवनकी रीति। राजाहैं यदुनाथ तिहारे कहा चलावत नीति ॥ निशिलों करत दाह दिनकर ज्यों हुतो सदा शशिशीति। पूरव पवन कहो नहिं मानत गयो सहज वपु जीति॥ कंसकाज कुविजाके मारचो भई निरंतर प्रीति। सूर विरह ब्रज भलो न लागत जहीं व्याहु तहीं गीति ॥८८॥ केदारो ॥ हरि विनु नाहिंन परतरहो । उत गिरि दुर्गम इतहि दव दारुण क्यों दुख जात सहो ॥ उठत विरहधूम पावक जारि वरि वाउ वहो। हरि नागनि फिरि फूंक प्रजारनि पलकनि हृदय दहो॥ यद्यपि घृत लै आयो ऊधो योग सँदेश कहो। तद्यपि भस्म नहोत सूर सुनि चलत गुपाल चहो॥८९॥मलार॥माधोजी नैक देखाई देहु॥जो यातनमें ताके वदले जो चाहो सो लेहु॥भूली फिरत ठगीसी तवते विनु वलमाति गुण गेहु। जवते इन अपराधी नयनन वरजत कियो सनेहु ॥ कहियो जाइ मधुप पालागौं विरह कियो तनु गेहु। रहत आश सुनि सूर दरशके निशि दिन इहै सँदेहु॥ ९०गौरी॥यहि ब्रज होइहै कव हरिको आवन।नीकेकै वचन सुनाउ मधुप मोहिं विरह व्यथा विसरावन॥ हों इहवात कहा जानों प्रभु जात मधुपुरी छावन।अपनी चूक मानि उर अंतर अव लागी दुखपावन॥ अह निशि सूरज घरी भईहो तनु श्वासै शशि तावन । या ब्रज करषि आग्नि उर ऊपर रहो दुसह घन सावन९१सारंग ऊधो जो हरि आवें तो प्राणरहै। आवत जात उलटि फिरि वैठत जीवत औधि गहै॥

जव उइ दामन ऊखल बाँधे वदन नवाइ रहेो।सुभि जुरही नवनीत चोर छवि क्यों भूलति ज्ञानकहै॥ तिनसों ऐसी क्यों कहि आवति जो कुल त्रास सहै। सूरश्याम गुणरसनिधि तजिकै क्यों घटि नीर वहै॥९२॥उद्धववचन॥नट॥जबलागि ज्ञान हृदय नहिं आवै।तोलगि कोटि जतन करै कोऊ विन विवेक नहिं पावै॥ विना विचार सबै सुपनोसो सो मैं देख्यों जोई। नाना दारु बसै ज्यों पावक प्रगट मथेते होई॥ तुम इक कहत सकल घट व्यापक अरु सवहीते नीरे। नख शिखलों तनु जरत निशादिन निकासि करत किन सीरे॥ बातें कहत सबै सांचीसी मुँह में लेहो तुरसी। सूर सो ओषध हमहिं वतावत ज्यों पितज्वर पर गुरसी॥९३॥गोपीवचन॥सारंग॥ तुम जो कहत हरि हृदय रहतहैं। कैसे होइ प्रतीत मधुप सुनि ए इतनी जु सुनतहैं॥ वासर रैनि कठिन विरहागिन अंतर प्राण दहत हैं। प्रजरि प्रजरि मनु निकसि धूम अति नैनन नीर वहतहैं॥ कठिन अवज्ञा होत देह दुख मर्यादा न गहतहैं। कहे व क्यों मानै मन सूरज ए बातें जु कहतहैं॥९४॥ सारंग॥ जोपै हृदय माँझ हरी। तोपै इती अवज्ञा उनपै कैसे सही परी॥ तब दावानल दहन नपायो अब याहि विरह जरी। उरते निकसि नंद नंदन हम शीतल क्योंनकरी॥ दिनप्रति इंद्र नैन जल वरपत घटत न एक घरी। अतिही शीत भीत भीजत तनु गिरि कर क्यों न धरी॥ कर कंकन दर्पण लै देखो इहि अति अनख मरी।क्यों जीवहिं सुयोग सुनि सूरज विरहिनि विरह भरी॥९५॥सारंग॥तुम घट हीमो श्याम वताए। लीजै सँभारि सकल सुख अपने रास रंग जे पाए॥ जो समदृष्टि आदि निर्गुण पद तो कत चित्त चोराए। मोहन वदन विलोकि मानि रुचि हँसि हरि कंठ लगाए॥ हम मतिहीन अजान अल्प भवमति तुम अनभौ पद ल्याए। सूरदास तेहि वनिज कवन गुण मूलहु मांझ गवाँए॥९६॥ ॥ सारंग ॥ इनि वातनके मारे मरियत। निर्गुण ज्ञान मधुपलै आए विनि गोपाल कैसे निशि तरियत॥ सबै अटपटी कहरे मधुकर सुनि देखो मधुवनकी रीति। कौन हाल हमरे ब्रजवतित जानत नहीं विरहकी रीति॥बुझी अगिनि बहुरो सुलगाई अंतर्गति विरहानल जारत। सूरदास स्वामी सुखसागर मिलि काहेन तनु ताप निवारत ॥९७॥ नट ॥ बातें कहत बनाइ बनाइ। रंचक विरह हुते यह गोकुल मधुकर मेट्यो आइ॥ कमलनैनकी मोहन लीला रहति रहीं गुण गाइ। वोछी पूँजी हरै ज्यों तस्कर रंक मरै पछिताइ॥ भली करी हमको लै आए पठये योग सिखाइ। सूरदास स्वामी यह घाली निर्गुण कथा सुनाइ ॥ ९८ ॥ केदारो ॥ ऐसो योग न हमपै होई। सुनिकै वचन तुम्हारो ऊधो नैना आवत रोई॥ कुटिल कुंतल मुकुट कुंडल रही छवि छवि पोई॥ सूर प्रभु विन प्राण रहै नहिं कोटि करै किन कोई ॥ ९९ ॥ सारंग ॥ मधुकर कह्यो संदेश सिधारो। विनु उपदेश सहजही योगी सुधारि रह्यो ब्रजसारो॥ जाको ध्यान धरत गौरीपति योग युक्ति करिहारो। सो हरि वसत सदा हृदयमें नेक टरत नहिं टारो॥इह उपदेश आपनो ऊधो राखोढाँप सवारो। सूरश्याम जानत भले जिय की जो निज हितू हमारो॥ ३२०० ॥सारंग॥ ऊधो हमैं कहा समुझावहु। पशु पंछी सुरभी ब्रजकी सब देखि श्रवण सुनि आवहु॥तृण न चरत गोपिवत न सुतपै ढूंढत वन वन डोलैं। अलि कोकिल देआदि विहंगम भीत भयानक बोलैं॥ यमुनाभई श्याम श्याम विनु अंध छीन जे रोगी। तरुवर पत्र वसन न सँभारत विरह वृक्ष भए योगी॥ गोकुलके सब लोग दुखितहैं नीर विना ज्यों मीन। सूरदास प्रभु प्राण नछूटत अवधि आशमें लीन॥१॥ नट॥ ऊधो अवधि आशगई। योगकी गति सुनत मेरे अंग आगि वई॥ धरत हृदय नटरत मूरति तिहूंताप तई। हम सुलगि सुलगि उठतही तुम फूंकि आनि दई॥ सिंह गज

तजि चरत तृणते सुनत वात नई । अब भोग कुबिजा सुंदरीसों कौन बुद्धि दई ॥ नैन नीर प्रवाह सरिता ज्वाल जाल छई । सूर प्रभुकी कृपा जाको सकल सिद्धि भई॥२॥हमसों उनसों कौन सगाई । हम अहीर अवला व्रजवासी वै यदुपति यदुराई ॥ कहाभयो जुभए नंदनंदन अव इह पदवी पाई । सकुच नआवत घोष वसतकी तजि व्रजगए पराई ॥ ऐसे भए वहां यादवपति गए गोप विसराई । सूरदास यह व्रजको नातो भूलिगए वल भाई ॥३॥ सोरठा॥ हरि निर्मोहियासों प्रीति कीनी काहेन दुख होई । कपटकी करि प्रीति कपटी लै गयो मन गोई ॥ सींचिआ मजीठ जैसो निकट काटी पोई ।हमारे मनकी सोई जानै जामें वीती होई ॥ कालवदन ते राखिलीन्ही इंद्रगर्वजे खोई । सूर गोपिन ऊधो आगे डहकि दीन्हो रोई॥४॥ ऊधो तुम यह मत लै आए । इक हम जरैं खिझावन आए मानो सिखे पठाए ॥ तुम उनके वे नाथ तुम्हारे प्राण एक इक सारे। मित्रके मित्र सजनके सज्जन ताते कहत पुकारे ॥ रे सुन मूढ़ जरत अवलनिको परदुख तू नहिंजानै । निपट गँवार होइ जो मूरख सो तेरी बातैं मानै । हम रुचिकरी सूरके प्रभुसों दूजो मन नसुहाई ॥ उलटि जाहि अपने पुरमाहीं वादिहि करत लराई॥५॥मारू॥ हरि मुख देखही परतीति। जो तुम कोटि भांति परवोधो योग ध्यानकी रीति ॥ नहिंनैं कछू सयान ज्ञान में इह नीके हम जानै । कहो कहा कहिए वा प्रभुसों कैसे मनमें आनै ॥ इह मन एक एक वह मूरति भृंगी कीट समानै । सूरशपथदै ऊधो पूंछो इहि व्रज कौन सयानै ॥६ ॥ ऊधो वात तिहारी को सुनै । हरिपदपंक जमन मधुकर गह्यो मन विनवात कछू नवनै । योग युक्तिको वडो विस्तारहै ऐसे ठौर नहिं अपने । व्रजवासिन को इतनो हियोहै कृष्णलेत संकोच वनै ॥ तहां जाउ जहां वैठे योगी इहां कामरस रहौ धनै । हम अहीर कृष्णमदमाती मुखसों क्यों मित्रपनै ॥ जो तुम जानत तत्त्व कृपाला मौन रहौ तुम घर अपने । घर घर फिरत लेव लेव नाहीं वस्तुको मोल हनै । भूख न प्यास नींदगई हरिविनु पति सुत गृहकी कौन तनै ॥ माया और छूटगए यमुना अधिक कहालौं योग वनै । सोहरि प्राण प्राणते वल्लभ मोहनलीलाहै अकनै । आवत है कछु कह्यो सूरप्रभु नहिंतौ रहौ तुम मौन वने ॥ ७ ॥ मलार ॥ वातनको परतीति करै । को अव कमलनयन मूरति तजि निर्गुण ध्यानधरै ॥ जो मत वेद कहत युगवीते रूप देख विन जाने । सोमति मूढ कहत अवलनिसों नाहिं सो हृदय समाने॥जो रस काज देव मुनि चिंतत ध्यान पलक नहिं आवत । सोइ रस सूर गाइ ग्वालन सँग मुरली लैकर गावत ॥८॥ सारंग ॥ नहीं हम निर्गुणसों पहिचानि । मन मन सार स्वरूप सिंधुमें आपनो हम सानि ॥ यद्यपि अलि उपदेशत ऊधो पूरण ज्ञान वखानि । चित चुभिरही मदन मोहनकी जीवन मृदु मुसुकानि ॥ जुरचो सनेह नंदनंदनसों तजि परमिति कुलकानि । छूटत सहज नसूर प्रभु दुख सुखहि लाभ करिहानि ॥ ९ ॥ ऊधो जाइ वहुरि सुनि आवहु कहा कह्यो है नंदकुमार । इह नहोइ उपदेश श्यामको कहत लगावन छार॥ निर्गुण ज्योति कहा उनपाई सिखवत वारंवार। कालिहि करत हुते हमरे अंग अपने हाथ शृँगार ॥ व्याकुलभई गोपालहि विछुरे गयो गुन ज्ञानसँभार । ताते जो भावै सो वकतहो नाहिन दोष तुम्हार ॥ विरह सहनको हम सरजी है पाहन हृदय हमार। सूरदास अंतर्गति मोहन जीवन प्राण अधार ॥ १० ॥ अलि तुम योग विसरि जनि जाहु । वांधो गाँठि छूटि परिहै कहूं वहुरि वहां पछिताहु ॥ ऐसी वस्तु अनूपम मधुकर मन जिनि जानहु और। व्रजवनिताके नाहिं कामको है तुम्हरे पैठौर ॥ जो हितु करि पठए मनमोहन सो

हम तुमको दीन्यो। सूरदास ज्यों विप्र नारि पर करहि वंदना कीन्यो ॥ ११ ॥ ज्ञान योग अब लनि अहीरिसों कहतन आवै लाज। ऊधो सखा श्यामके कहियत पठए होवे काज ॥ जालायक जो बात होइ सो तैसिये तासों कहिये। विना नाद संगीत सुधानिधि मूढहि कहा सुनइये ॥ हम जानीजु विचार पठाए सखा अंग परवीन। सुखदैहैं मोहन कहि बतियां करत योग आधीन ॥ मुरली अधर मोरके पांखें जिन इह मूरति देखि। सोव कहा जानै निर्गुणको सोहै भीति चित्र अवरेखि ॥ पालागौं तुम बड़े सयाने अनबोलेही रहियो। सिखये योग सूरके प्रभुको उनहींसों फिरि कहियो ॥१२॥ धनाश्री ॥ ऊधौ काहेको भक्त कहावत। जोपै योग लिखि पठयो हमको तुमहु नभस्म चढावत ॥ सींगी मुद्रा भस्म अधारी हमहीको कहा सिखवत। कुविजा अधिक श्यामकी प्यारी ताहि नहीं पहिरावत॥ यहतौ हमको तवहिं न सिखयो जवते गाइ चरावत। सूरदास प्रभुको कहियो अब लिखि लिखि कहा पठावत१३॥नट॥ ऊधो न हम विरहिनि न तुम दास। कहत सुनत घट प्राण रहतहैं हरि तजि भजहु अकास ॥ विरही मीन मरै जल विछुरे छांडि जीवनकी आस। दासभाव नहिं तजत पपीहा वरुसहि रहत पियास ॥ पंकज परम कमल में विरहत विधि कियो नीर निरास। राजिवरविको दोप न मानत शशिसों सहज उदास ॥ प्रगट प्रीति दशरथ प्रति पाली प्रीतमको वनवास। सूरश्याम सों पतिव्रत कीन्हों छांडि जगत उपहास ॥ १४॥ ऊधो विनती सुनो इक मेरी। तवके विछुरि गए नँद नंदन कामके दली घेरी ॥ देखो हृदय विचारि तुमहिं अब प्रीति रीति सब केरी। जहां जाकी निधि तहां सब सौंपै ज्यों मृगनाद अहेरी। वै दशमास रतन रस वसते शशि विन रैनि अँधेरी।सूरदास स्वामी कब आवैं वास करन व्रजफेरी॥१५ ॥ सारंग ॥ मधुकर कहा प्रवीनि सयाने। जानत तीनि लोककी महिमा अवलनि काज अयाने ॥ जे कच कनक कचोरा भरि भरि मेलत तेल फुलेल। तिन केशनको भस्म चढावत टेसू केसे खेल ॥ जिन केशन सवरोगहि सुंदर अपने हाथ विनाइ। तिनको जटा कहा नीकीहैं कहु कैसे काहि आइ ॥ जिन श्रवणन ताटंक खुभी औ करनफूल खुटिलाऊ। तिन श्रवणन कश्मीरी मुद्रा लै लै चित्र झुलाऊ। भालतिलक अंजन चख नासा वेसरि नथमें फूली। ते सब तजि अलि कहत मलनमुख उज्ज्वल भस्म खुली ॥ जिहि मुख गीत सुभाषित गावत कहति परस्पर गास। ता मुख मौन गहे क्यों जीजै छूटत ऊरध श्वास ॥ कंठ सुमाल हार मुक्ताके हीरा रत्न अपार। ताहू कंठ वाँधिवे कारण सींगी योग शृंगार ॥ कंचुकि छीन छीन पटसारी चंदन सरस सुछंद। अब कंथा एकै आति गुदरी क्यों उपजी मतिमंद ॥ ऊधो ऊधो सब पालागैं देखो ज्ञान तुम्हारो। सूर सुप्रभु मुख फेरि देखिहैं चिरजीजै कान्ह हमारो ॥१६॥ हमतो दुहूं भांति फल पायो। जो गोपाल मिलैं तौ नीको नातो जगत यश गायो ॥ कहा हम या गोकुलकी गोपी वरणहीन घटि जाति। कहँ वै श्रीकमलाके वल्लभ मिलि वैठी इकपांति। निगम ज्ञान मुनि ध्यान अगोचर सो भए घोप निवासी। ता ऊपर अब कहौ देखिधैं मुक्ति कौनकी दासी ॥ योग कथा ऊधो पालागौं नाकहु वारंवार। सूरश्याम तजि और भजै जो ताकी जननी छार ॥१७॥ मारू ॥ मोहिं अलि दुहुँ भांति फल होति। तव रस अधर लेत जो मुरली अव भइ कुविजा सौति ॥ तुम जो योग मत सिखवन आए भस्म चढावन अंग। इन विरहिनि में कहूं तू देखी सुमन गुहाए मंग ॥ कानन मुद्रा पहिरि मेखला धरैं जटा योग अधारी। इहां तरल तरिवना काके अरु तन सुखकी सारी ॥ परम वियोगानि रटत रैनि दिन धरि मनमोहन ध्यान।तुमतौ चलौ वेगि मधुवनको जहां योगको ज्ञान

निशिदिनजीजतु है या ब्रजमें देखि मनोहर रूप। सूर योग लै घर घर डोलौ लेहु लेहु ज्यों सूप॥ १८॥नट॥जोपै अलि मथुराहू लै जाहु।आरति हरौ श्रवण नैननकी मेटहु उरके दाहु॥बुधि बल वचन जहाज बांह गहि विरह सिंधु अवगाहु।पार लगावहु मधुरिपुके तट चंद्र तज्यो जनु राहु॥देखहु जाइ रूप कुबजाको सहि नसकत यहु घाहु। जीवन जनम सफल करि लेखहिं सूर सबन उत्साहु॥१९॥ लै चल ऊधो अपने देश। मदन गोपाल मिलन मन उमह्यो। कौन बसै इह यदपि सुदेश॥ वह मूरति मेरे हृदय बसत है मुरली अधर पुट कुंतल केश। कुंडल लोल तिलक मृगमद रचि गावत नृत्यत नटवर वेस॥कहा करौं मोपै रह्यो न जाई छिन सब सुखदायक बसत विदेश। सूरज श्याम मिलन कब ह्वै है दूरि गमन ब्रजनाथ नरेश॥२०॥विहागरो॥ ऊधो लै चलुरे लै चलुरे। जहां बसैं सुंदर श्याम बिहारी लैचलुरे तहां लै चलुरे॥आवन आवन कहि गए ऊधो करि गए हमसों छलुरे॥हृदय की प्रीति श्यामजी जानत केतिक दूरि गोकुलरे॥ आपन जाइ मधुपुरी छाए वहां रहे हिलि मिलिरे। सूरदास स्वामीके बिछुरे नैन नीर परवलुरे॥२१॥ सारंग॥ गुप्त मतेकी बात कहौ जानि काहूके आगे। कै हम जानैं कै तुम ऊधो इतनी पावहिं मांगे॥ एक बेर खेलत वृंदावन कंटक चुभि गयो पांइ। कंटक सों कंटक लै काढ्यौ अपने हाथ सुभाइ॥ एकदिवस विहरत वन भीतर मैं जु सुनाई भूख। पाके फल वै देखि मनोहर चढे कृपाकरि रूख॥ ऐसी प्रीति हमारी उनकी बसते गोकुल बास। सूरदास प्रभु सब बिसराई मधुवन कियो निवास॥२२॥ मलार॥ ऊधो कत ए बातैं चाली। कछु मीठी कछु मधुरी हरिकी वै अंतर सब शाली॥ तब ए वेली सींचि श्याम वन अपनी करि प्रतिपाली। अब ए वेली सूखत हरि बिनु छाँडि गए वनमाली॥ जबहीं कृपाहुती यदुपतिकी रहसि रंग रसरास सुखाली। सूरदास प्रभु तब नमुई हम जिवहिं विरहकी जाली॥२३॥ ॥ नट॥ ऊधो इहै विचार गहो। कैतन गए भलो मानै मन कैहारि ब्रज आइ रहो॥ कानन देह विरह दौ लागी इंद्री जीव जरै। बूझि श्याम घन प्रेम कमल मुख मुरली बूंद परै॥ चरण सरोवर माहिं मीन मन रहत एक रसरीति। तुमनिर्गुण वश तामें डारत सूर कौन यह नीति॥२४॥ ऊधो हम लायक शिखदीजे। यह उपदेश अग्निते तातो कहो कौन विधि लीजे॥ तुमही कहो इहां इतनन महि सीखनहारी को है। योगी यती रहित मायाते तिनहीं यह मत सोहै। कहा सुनत विपरीति लोकमहि यह सब कोई कैहै॥ देख्यो धौं अपने मन सबकोइ तुमही दूषण देहै। मृक चंदन वनिता विनोदरस क्यों विभूति वपु माजे। सूरदास सोभा क्यों पावत आंखि आंधरी आंजे॥२५॥ धनाश्री॥ ऊधो हम लायक हमसों कहो। बात विचारि सोहाती कहिये कै अन बोलै ह्वै रहो॥ भली कहै तुमको अतिसोभा अरु सबही पाइलहो। यह विपरीति बूझिए तुमको कंधजूवसुरभिनहो॥ एते पर पुनि पुनि शिषवतहौ योगरत्न दृढकरि गहो। सूर कहैं अलि पूरो दीजै निपटहि बातनि मतिवहो॥२६॥सारंग॥ कबहूं वै ऊधो बात कहो।तजहु सोच मिलिहैं नँदनंदन हितकारि दुखनिदहो॥ तुम हरि समाधानको पठए हमसों कहन सँदेश। अधिक आनि आरत उपजाई कहि निर्गुण उपदेश॥ इक अति निकट रहत अरु निजयुत जानत सकल उपाई। सोइ करहु जिहि पावहिं दरशन छाँडहु अगम सुभाई॥हम किंकरी कमललोचनकी वशकीनी मृदुहास। सूरदास अब क्यों बिसरतहै नखशिख अंग विलास॥२७॥ मलार॥ सब जलतजे प्रेमके नाते। चातक स्वाति बूंद नाहिं छाँडत प्रगट पुकारत ताते॥ समुझत मीन नीरकी बातैं तजत प्राण हठिहारत। जानि कुरंग प्रेम नहिं त्यागत यद्यपि व्याध शरमारत॥ निमिष चकोर नैन नहिं

लागत शशि जावत युग वीते। ज्योति पतंग देखि वपु जारत भए नप्रेम घटरीते॥कहिअलि क्यों विसराति वे बातैं सँग जो करी ब्रजराजै। कैसे सूरश्याम हम छाँडैं एक देहके काजै॥ २८॥ ऊधो जो हरि हितू तुम्हारे। तो तुम कहियो जाइ कृपाकरि एदुख सबै हमारे॥ तनु तरुवर उर श्वास पवनमें विरह दवा अतिजारे। नहिं सिरात नाहिं जात छारह्वै सुलगि सुलगि भए कारे॥ यद्यपि प्रेम उमँगि जल सींचे वरप वरपि घनहारे। जो सींचे यहिभांति जतन करि तो एते प्रतिपारे॥ कीर कपोत कोकिला चातक वधिक वियोग बिडारे। क्यों जीवैं यहिभांति सूरप्रभु ब्रजके लोग विचारे॥२९॥धनाश्री॥ हमैं तो इतनोहीं सों काजु।कैसेहूं अलि कमलनैनको ब्रज लैआवहु आजु॥ और अनेक उपाव तुह्मारे सकल करहु सुखराजु। कैसेहैं निवहत अबलनपै कठिन योगके साजु॥ नख शिख सुभग श्यामघन तनको दरशनहरति विथाजु। सूरदास मन रहत कौनविधि वदन विलोकनि बाजु॥ ३०॥ अब हरि कौनके रसगीधे। सकत नहीं निरवारि ऊधो शशि वदरी ज्यों वीधे॥वरतहीननवलडुलाई तजी सकल कुलकानि।अंधकरि छांडी भए गहिल वान फून लकुट विनपानि॥ जतन घुरि निर्गुणभए सब नरकी अभिलाप विना चरणसरोज देखै॥३१॥कान्हरो॥ हरि ठाकुर लोगन सों मधुकर कहो काहेकी प्रीति। ज्यों कीजै तो होइ जलधर रविकी ऐसी रीति॥ जैसे मीन कमल चातकही ऐसे दिन गए वीति। तरफत जरत पुकारत निशिदिन नाहिन कछु इहां नीति॥ मनहठ परचो कमंध जोधालौं हारेहु नाहीं जीति। रुकत नप्रेम समुद्र सूर वल वारूहीकी भीति॥ ३२॥ सारंग॥ को गोपाल कहांके वासी कासोंहि पहिचानि। तुम संदेश कौनके पठये कहत कौनके आनि॥ अपनी चोप मधुप उड़ि बैठत भोर भले रसजानि। पुनि वह वेलि बढो कै सूखो ताहि कहा हितहानि॥ प्रथम वैन मनहरचो अहिरनको राग रागिनी ठानि। पुनि वह वधिक विश्वासघाती हनत विषम शरतानि॥ पय प्यावत पूतना विनाशी छले जु वलिसे दानि। शूपनखा ताडका निपाती सूरदास यह वानि॥ ३३॥ मलार॥ मधुकर कौन मनायो मानै। अविनाशी हरि अंग तुम्हारो कहा प्रीति रस जानै॥ सिखवहु जाइ समाधि योग रस जे सब लोग सयाने। हम अपने ब्रज ऐसेहि रहिहैं विरह वाइ वौराने॥ जागत सोवत स्वप्नदिवस निशि रहि हैं रूप परवानै। वारक वाल किसोरी लीला सोभा समुद्र समानै॥ जिनके तन मन प्राण सूर सुनि मुख मुसकानि विकानै। परीजू पयनिधि अलप बूंद जल सुपुनि कौन पहिचानै॥ ३४॥ सारंग॥ हरिसुत सुत हरिके तनु आहि। इहांको कहै कौनकी बातें ज्ञान ध्यान सुमिरौं को काहि॥कोमुख ममरतास युवतीको को जिनि कंस हते। हमरे तो गोपति सूं अधिपति वनिता औरनते॥ मोरज रंध्र रूप रुचिकारी चितै चितै हरिहोत। कबहुँक करनी समेतिले नैक नमानैं सोत॥ तारिपु समै संग शिशु लीन्हें पयआवत तनु पोप। सूरदास स्वामी मनमोहन कंत उपजावत दोप॥ ३५॥ अब हरि और भए माई इतनी दूरि। मधुकर हाथ सँदेशो पठयो चतुर चातुरी पूरि॥ रूपराशि सो सवै गुण परमिति श्याम सजीवन मूरि। तिनसों कहत मनहिमन समुझहु हैं सबही भरि पूरि॥ इक सुनि सूर ऐसेहि यातनको रही विरह झंक झूरि। तापर छपद कियो चाहत हैं कोइलाहूते धूरि॥ ३६॥ कान्हरो॥ कहा जानै कोऊ परपीर। नँदनंदनके विछुरे सखीरी जैसी सही शरीर॥ कहि कहि कथा मधुप समुझावत मनराखहु धरि धीर। नैन मीन कैसे सचपावत विनदरशन हरिनीर॥ योग समाधि कहा हम जानैं ब्रजवासिनी अहीर। सोइ कीजै जो मिलै सूरप्रभु भव ऋतु रंगनितीर॥ ३७॥ हम त्रिय मृतक

जीवत शशिसाखी । तुम अलि रवि हित कमल विशेषी हरे विफल मधुमाखी ॥ मुरली अधर सुधाध्वनि सुनि सुख संच्यो श्रवण दुआर । मधुहारी अक्रूर वधिक मुख अवधि लगाई छार ॥ मनको विरह नैन कहा जानै श्रुति मत तुही सुनावे । सूर भस्म अंग लगी कुटिलता तरु योगै गुणगावै ॥ ३८ ॥ रामकली ॥ हमारी सुरति लेत नहिं माधो । तुम अलि सब स्वारथके गाहक नेह नजानत आधो ॥ निशिलों मरत कोश अभ्यंतर जोहित कहो सुथोरी । भ्रमत भोर सुख ओर सुमनसंग कमल देत नहिं कोरी ॥ राकारास मास ऋतु जेती रजनि प्रीति नाहिं थाही । वैस संधि सुख तजी सूर हरि गए मधुपुरी माही ॥ ३९ ॥ धनाश्री ॥ कैसे जीवें ऊधो हरि परदेश रहे । गरजि गरजि घन वरषन लागे नदियां नार वहे ॥ कहि पठवो मधुपुरी सखीरी मेरेहोतो चरण गहे । वासर गए निहारत मारग चातक रैनि डहे ॥ कासों कहौं तपत मन निशि दिन को इह पीर लहे । हमहूं किन ले जाहि सूर प्रभु को ब्रज दुखहि सहे ॥ ४० ॥ हरि हम काहेको योग विसारी । प्रेम तरंग बूडत ब्रजवासी तरत श्याम सोइ हारी॥रिपु माधव पिक वचन सुधाकर मरुत मंद गति भारी । सहि न सकत अति विरह त्रास तनु आगि सलाकनि जारी ॥ ज्यों जल थाके मीन कहा करै तेउ हरि मेलि अडारी । विजय अधोमुख लेन सूर प्रभु कहिअहु विपति हमारी ॥ ४१ ॥ जो पै इहै हुती उनके मन । तो तब कमल नयन हम कारण कहा किये ब्रज एते जतन ॥ विष जल व्याल वरुन वर्षानल अनेक अशुभ हति राखे । संतत संग रहत काहू मिस निठुर वचन नहिं भाषे ॥ उन विपदानि कुंचित जो करते कछुअ न जीव सराहती । विधि वश नाउँ बहुरि फिरि मिलती एतो विलंब कत सहती ॥ कहिये कहा जो सब जानतहै यातनुकी गति ऐसी । सूरदास प्रभु हित सुचित्त कै वेगि प्रगट की वी तैसी ॥ ४२ ॥ मोहनसों मुख बनत न मोरे । जिन नैनन मुखचंद्र विलोक्यो जात तरणि नहिं जोरे ॥ मुनि मन मंडन योग कर्म ऋतु मंदिर भार सहत कहि कोरे । बनत नहीं द्वै कमलके बंधन कुंजर क्यों वरहत विनु तोरे लीलांबुज तनु लील वसन मणि चितयो न जात धूमके भोरे । सूरदास जे कमलके विरही चंप कवन लागत चित थोरे ॥४३॥सोरठ॥ विलग हम मानैं ऊधो काको।तरसत रहे वसुदेव देवकी नहिं हितु मात पिताको ॥ काको मात पिता को काको दूध पियो हरि जाको । नंद यशोदा लाड लडा यो नाहिन भयो हरि ताको ॥ कहिवो जाइ बनाइ बात यह को हितहै अबलाको । सूरदास प्रभु प्रीति है कासों कुटिल नीच कुबिजाको॥४४॥उघरि आये कान्ह कपटकी खानि।सरवस हरो बजाय वाँसुरी अब छांडे पहिचानि॥ जिन पय पियत पूतना मारी दालत करी न हानि।वलि छलि बांधि पताल पठाये नैक नकीनी कानि ॥ जैसे वधिक अधिक मृग बिधवत राग रागिनी ठानि । अवध आश परतीति ओटदै हनत विषम शरतानि॥जैसे नाट सरुट रतन उर ते तुम ऊधो अति जानी । सूरदास प्रभुके जिय भावै आय सुमाथे मानी॥४५॥सारंग॥जीवन मुख देखेको नीको।दरश परस दिन राति पाइअत श्याम पिआरे पीको ॥ सुनो योग केहि काम हमारे जहां ज्यान है जीको । नैन मूंदिकै मृतक देखि वर मधुप ध्यान पोथीको ॥ आछे सुंदर श्याम हमारे और जगत सब फीको खाटी मही कहा रुचि मानो सूर खवैया घीको॥४६॥मधुकर को मधुवन रहियो।काके कहे सँदेशो ल्य।ये किन लिखि लेखि दयो॥को वसुदेव देवकी नंद को को यदुवंश उजागर । इहां तिन्हसों प हिचानि न काहू फिरि लेइ जैए कागर।गोपीनाथ राधिका वल्लभ यशुमति सुवन कन्हाई । दिन प्रति लेत दान वृंदावन दूनी रीति चलाई॥मधुकर हो तुम भले सयाने कहत औरकी और।सूर सुपथ का

हू वहिकायो के भूली यहि ठौर॥४७॥इहां तुम कहत कौनकी बातें। विना कहे हम समुझत नाहीं फिरि फिरि बूझति तातें॥को नृपभयो कंस किन मारचो को वसुदेव सुत आहि॥इहां यशुमति सुत परम मनोहर जजितहै मुखचाहि॥ दिन उठि जात धेनु बन चारन गोप सखनके संग। वासरगत रजनी मुख आवत करत नैन गति पंग॥को परिपूरण को अविनाशी को विधि वेद अपार॥सूर विरथ बकवाद करतहो यहि ब्रज नंदकुमार॥४८॥गूजरी॥डसीरी माई श्याम भुअंगम कारे॥चितवनि फिरि मुसकानि महाविष लागत ज्यों शरडारे॥तंत्र न फुरै मंत्र नहिं लागै चले गुणी गुणहारे॥प्रेमप्रीतिकी व्यथा तप्त तनु सो मोहिं डारत मारे॥ भली भई तुम आए ऊधो वंददे चले हमारे। आनहुँ वेगि गारुरी गोविंदहि जो यहि विषहि उतारे॥ आवति लहरि मदन विरहाकी को हरि वेद हकारे। सूरदास गिरिधर जो आवहिं हम शिर गारुड टारे॥४९॥केदारो॥नेह नहोइ पुरानोरे अलि॥जलप्रवाह ज्यों सोभासागर नित नव तन ब्रजनाथ इहांवलि॥ जीवतहै आनंद रूप रस विन प्रतीतिको मीन चढ़ोथलि। अमी अगाध सिंधु सार विहरत पीवत हुनअघात इतेजलि॥दिन दिन बढ़त नीर नलिनी ज्यों श्यामरंग में नैनरहे पलि॥सूर गोपाल प्रीति जिय जाके छूटत नाहिंन नेह सती सलि॥५०॥धनाश्री॥ अपने सगुन गोपाल माई यहविधि काहे देति। ऊधोकी इनि मीठी बातनि निर्गुण कैसेलेति॥ धर्म अर्थ कामना सुनावत सब सुख मुक्ति समेति। काकी भूख गई मनलाडू सो देखहु चितचेति। जाको मोक्ष विचारत वर्णत निगम कहतहै नेति। सूरश्याम तजिको भुस फटकै मधुप तुम्हारे हेति॥५१॥हमरी सुधिहु भूलि अलि आए॥अब कछु कान्ह कहत औरै हैं समुझि सखा गुणगाए॥निज स्वारथ रसरीति समुझि उर विकल निमेष नचाहे। कहतहि सुगम सबै कोउ जानत कठिन हेतु निरवाहे॥अब परतीति वातकी मानै कहतहैं श्यामपराए। कबलौं चलै कपटको नातो सूर सनेह बनाए॥५२॥मधुकर हम सब कहा करैं॥पठए हो गोपाल हेतुकरि आयसुते नटरैं॥रसना उर वारौं ऊधो पर इहि निर्गुणके साथ। यहपै नेकु विलगु जिनि मानौं अँखिआं नाहिंन हाथ॥ कवनभांति गुण कहौं तिहारे हितको धीर धरावो॥महा विचित्र नीर विनु नौका विन जलमीन जिआवो॥ सेवाहीन अपूरव दरशन कब आवहुगे फेरि॥सूरदास प्रभुसों यों कहियो केलापोष संग उवरी वेरि॥५३॥ गौरी ॥ए अलि जन्म कर्म गुणगाए॥हम अनुरागी यशुमति सुतकी नीरस कथा वहाए॥कैसे कर गोवर्धन धारचो कैसे केशी मारचो। कालीदमन कियो कैसे अरु बकको वदन विदारचो॥ कैसे नंद महोत्सव कीनो कैसे गोपी धाए। पटभूषण नानाभांतिनके ब्रजयुवतिन पहिराए॥ दधि माखनके भाजन कैसे गोप सखा लैधाए। वनको धातु चित्र अंग कीनो नाचत भेष सुहाए। तबते कछु न सुहाइ कान्ह विनु युग सम वीतत याम। सूर मरहिंगी विरह वियोगिनि रटि रटि माधो नाम॥ ५४॥ नट॥ मधुप आए योग गथलै दुख अरु हांसीकोसहै। कान मुद्रा भस्म कंथा मृगतुचा आसन डहै॥ कान्हतौ वै निठुर कहिए सखा तिनके रावरे। जरे ऊपर लोन लावहि कौहै उनते बावरे॥श्यामके गुण हम जुजाने मानु बाँधे नल कियो। संग खेलि खवाइ अपने सोचतो इतनो दियो॥ एकदिन वैकुंठवासी रास वृंदावन रच्यो। सोइ स्वरूप विलोकि माधो आइ इन विधि तनु खच्यो॥ शरद यामिनि इंदुराका लाज तजि कुंजनि गई। बाँसुरीको शब्द सुनिकै वधिककी मृगिनी भई॥ मुरलीहै मदनमूरति मोमन हृदय रमिरई। याहीते हम जगत जानी वेद मेटो दृढभई॥ मंदमति हम कर्महीनी दोष काहि लगाइए। प्राणपति सों नेहवांध्यो कर्म लिख्यो सो पाइए॥ हम नजानै जन्म ऐसो रैनिको सपनो भयो। अंजुरिन जल

घटत जैसे तैसही यातन गयो ॥ भेदिआ सों भेद कहिवो छेदिभो छाती परो। अंतनाहिंन और आवै एसुख सब कुविजा करो॥ योग जप तप ध्यान पूजा इहतो हृदय नआवई। सुधारस जेहि स्वाद चाख्यो तिनहि और न भावई॥ ज्ञान दृढ तप ध्यान पूजा हरिचरण जिनके हिए। विमुख हैं जे सूरस्वामी फल कहा तिनके जिए॥५५॥ उद्धववचन ॥ मलार॥ वै हरि सकल ठौरके वासी। पूरण ब्रह्म अखंडित मंडित पंडित मुनिन विलासी॥ सप्तपाताल अध ऊर्ध्व पृथ्वीतल जल नभ वरुन वयारी। अभ्यंतर दृष्टी देखनको कारणरूप मुरारी॥ मन वुधि चित अहंकार दशेन्द्रिय प्रेरक थमकारी। ताके काज वियोग विचारत ये अबला ब्रजनारी॥ जाको जैसोरूप मनरुचे सो अपवश करिलीजै। आसन वैसन ध्यान धारणा मन आरोहण कीजै॥ षटदल अष्ट द्वादशदल निर्मल अजपा जाप जपाली। त्रिकुटी संगम ब्रह्म द्वार भिदि यो मिलिहै वनमाली॥ एकादशगीता श्रुति साखी जिहि विधि मुनि समुझाए। ते सँदेश श्रीमुख गोपिनको सूर सुमधुप जनाए॥५६॥ अथ गोपी वचन ॥ कर्णाटी ॥ देखिरे प्रेमप्रगट द्वादश मीन। ऊधो एक वार नंदलाल राधिका बनते आवत सखिही सहित गिरिधर रसभीन। गए नव कुंज कुसुमनिकेपुंज अलि करैं गुंज सुख हमदेखिभई लवलीन॥ षट उडुगण षटमणिधर राजत चौवीसधात केहि चित्रकीन। षट इंदु द्वादशपतंग मनो मधुप मुनि खग चौअन माधुरी दशपीन॥द्वादश विंवाधर सो वानवे वज्र कन मानो षटदामिनि षट जलजहँसिदीन। द्वादशधनुष द्वादशैविष्का मनमोहन षटै चिवुक चिह्न चित चीन॥ द्वादशव्याल अधोमुख झूलत मधुमानो कंजदल सो वीसद्वै वंसीन। द्वादशै मृणाल द्वादश कदली खंभ मानो द्वादश दारिम सुमन प्रवीन॥ चौवीस चतुष्पद शशि सौवीस मधुकर अंग अंग रस कंदनवीन।नील नीलै मिलि घटा विविध दामिनि मनो षोडश शृंगार सोभित हरिहीन॥फिरि फिरि चक्र गगनमे अमी वतावत युवती योग मौनकहुँ कीन। वचन रचन रसरास नंदनंदन तें वही योग पौन हृदये लवलीन॥ नंद यशोदा दुखित गोपी गाय ग्वाल गोसुत सब मलिन गात दिनही दिन दुखिन।बकी बका शकटा तृण केशी वच्छ वृषभ रासभे आलि विनु गोपाल इनि वैर कीन॥उद्धव यहां मिलाइ परैं पाँय तेरे सूरप्रभु आरति हरैं भई तनुछीन॥५७॥गौरी॥मधुकर ल्याए योग सँदेशो॥भली श्याम कुशलात सुनाई सुनतहि भयो अँदेशो॥आशरही जिय कबहुँ मिलैकी तुम आवतही नाशी॥ युवतिनि कहत जटा शिर बांधौ तौ मिलिहैं अविनाशी॥ तुमको जिन गोकुलहि पठाए ते वसुदेव कुमार। सूरश्याम हमते कहुँ न्यारे होत न करत विहार ॥ ५८ ॥ मलार ॥ मधुकर वादि वचन कत बोलै। आपुन चपल चपलके संगी चपल चहूँ दिश डोलै॥ इन वातनको कौन पत्यैहै अंतर कपट न खोलै। कंचन कांच कपूर कटुखरी एकहि सँग क्यों तोलै॥ अब अपनीसी हमहि दिखावत मति भूलहु यहु जोलै। सूरश्याम विन रटत विरहिनी विरह दाग जनि छोलै॥ ५९ ॥ नट ॥ ऊधो सुनत तिहारे वोल। ल्याये हरि कुशलात धन्य तुम घर घर पारचो गोल॥ कहन देहु कहा करै हमारो वरु उठि जैहै झोल। आवतही याको पहिचान्यो निपटहि ओछो तोल॥ जिनकेसोच नहीं कहिवेको ए बहुगुणनि अमोल। जानी जात सूर हम इनकी वतचल चंचल लोल॥ ६० ॥ ॥ धनाश्री ॥ मीठी वात हमारे आगे वारवार अलि कहा सुनावहु। हमहिं खिझाइ आपु पति खोवत यामें कहौ कहा तुम पावहु॥कहौ नजाइ नगर नारिनसो वै सुनिहैं तिनको समुझावहु। ब्रजवासिनी अहीरिनि विरहिनि तिन आगे तुम काहे गावहु ॥ लोचन गए श्याम सँगही वडे चतुर तौ वो नहीं बुलावहु। सूर चकोर चंद्र दरशन तजि कैसे जीवैं तरनि दरशावहु॥ ६१ ॥ धनाश्री ॥

मधुकर कहा करन ब्रजआए। योग ज्ञान हमको परबोधन हरितौ नहीं पठाए ॥ जामुख मुरली धरि अद्भुत सुर गाइ बजाइ रिझावत । तेहि मुख श्याम कहैंगे ऐसे यह तौ तुमहि बनावत॥ अंग अंग आभूषण अपने कर करि हमहिं बनावै । सूरदास प्रभु कैसे तुमकर कंथा जोरि पठावै ॥ ६२ ॥ कहा कहतरे मधुमतवारे। आयो धाइ योग उपदेशन प्रेमभजन गहिडारे ॥ जेहि मुख सुधा श्याम रस अचवत अब पीवै जल खारे। यहअक्रूरहितें अतिखोटो डारतिहौ अहिकारे॥ हम जान्यो यह श्याम सखाहै यहतौ औरै न्यारे।सूरकहा याके मुख लागत कौन याहि अवगारे६३ रेअलि कासों कहत बनाइ। बिन समुझे फिरि फिरि बूझतहै चारक बहुरो गाइ॥कौने गमन कियो स्यंदनचढ़ि सुफलकसुतके संग। किन बधिरजक लिए नानापट पहिरे अपने अंग ॥ केहि हति चापि निदरि गज मारयो केहि बल मल्ल मथिभाने। उग्रसेन बसुदेव देवकी केहि बानि गड़हति आने॥ काकी करत प्रशंसा निशि दिन कौने घोष पठाए। केहि मातुल बधि लियो जगतयश कौन मधुपुरी छाए॥माथे मोर मुकुट उरगुंजा मुख मुरली कल गाजै।सूरदास यशोदानंदन गोकुल सदा विराजै६४सारंग॥तैंअलि कहा पढी यह नीति।लोग वेद श्रुति ज्ञान रहित सब कहत कथा विप रीति ॥ जन्म भूमि ब्रज जननि यशोदा केहि अपराध तजे।अति कुल निर्गुण रूप जो अति सुखदासी जाइ भजे॥योगसमाधि मूढ मुनि मारग क्यों समुझें हम ग्वारी।जो वै गुण अतीत व्यापकता तौ हम काहे न्यारी॥रहि मधु ढीठ कपट स्वारथहित जिय येवचन विरोपै। मन क्रम वचन बचाति वा नाते सूर श्याम तनु धोपै६५॥ सारंग ॥ मधुकर जाहि कहो सुनि मेरो। पीत वसन तनु श्याम जालकी राखत परदा तेरो ॥ यहि ब्रजको उपदेशन आयो कत जोरहो करि डेरो। एते मान यह सखी महाशठ छांडत नाहिंन खेरो॥ ऐसी बात कहो तुम तिनसों होइ जो कहिबे लायक। इहां यशोदा कुँअर हमारे छिनु छिनु प्रति सुखदायक॥ ज्यों तू पुहुप पराग छांडिकै करहि ग्राम वशबास। तौ हम सूर इहै करि देखहिं निमिष नछांडहिं पास॥ ६६ ॥ रामकली ॥ऊधो मौनै साधि रहे। योग कहि पछितात मन मन बहुरि कछु नकहे॥ श्यामको यह नहीं बूझे अतिहि रह्यो खिसाइ। कहा मैं कहि कहि लजानो नैन रह्यो नवाइ॥ प्रथमही कहि बचन एकै लियो गुरु करि मानि। सूर प्रभु मोको पठायो इहै कारण जानि॥ ६७॥ कल्याण ॥ कहा न कीजै अपने काजै। अब दिन दश ऐसो करि देखो जो हरि मिलैं योगके साजै ॥ माथे जटा पहिरि उर कंथा लावहु भस्म अंग मुख माजै। सींगी बजाइ पहिरि मृगछाला लोचन मूंदि रहो किन आजै ॥ सन्मुख ह्वै शर सहो सयानी नाहिंन वचन आजुके भाजै। योग विरहके बीच परम दुख मरियतुहै यह दुसह दुराजै॥ ऊधो कहै सत्य करि मानो वर्षा बदत पंचमी गाजै। ज्यों यमुना जल छांडि सूर प्रभु लीन्हे वसन तजी कुललाजै॥ ६८॥ सारंग ॥ ऊधो कहा माति दीनो हमहिं गोपाल। आवहुरी सखी सब मिलि सोचैं जो पावैं नँदलाल ॥ घर बाहरते बोलि लेहु सब जावदेक ब्रजबाल। कमलासन बैठहुरी माई मूंदहु नैन विशाल ॥ पटपद कही सोऊ करि देखी हाथ कछू नाहिं आई। सुंदर श्याम कमलदल लोचन नेकु न देत दिखाई ॥ फिरि भई मगन विरहसागरमें काहुहि सुधि नरही। पूरण प्रेम देखि गोपिनको मधुकर मौन गही॥ कछु ध्वनि सुनि श्रवणन चातककी प्राणपलटि तनु आए। सूरसो अबके टेरि पपीहै विरही मृतक जिवाए॥६९॥सारंग॥ मधुकर भलेही आए वीर। दुर्लभ दरशन सुलभ पाए जानिहो परपीर ॥ कहत वचन विचारि विनवहु शोधि हो मनमाहिं प्राणपतिकी प्रीति ऊधो हैकि हमसों नाहिं। कौन तुमसों कहै मधुकर कहन योगी नाहिं।

प्रीतिकी कछु रीति न्यारी जानिहो मनमाहिं। नैन नींद नपरै निशि दिन विरह डाढी देह। कठिन निर्दय नंदके सुत जोरि तोरो नेह॥कौन तुमसों कहै मधुकर गुप्त प्रगटित वात। सूरके प्रभु क्यों वनै ज्यों करै अवलाघात॥७०॥सारंग॥ ऊधो तैं कत चतुर कहावत। जेनाहिं जानै पीर पराई है सर्वज्ञ जनावत॥ जो पै मीन नीरते विछुरे को करि जतन जियावत। प्यासे प्राण जातहैं जल विनु सुधा समुद्र वतावत॥ हम विरहिनी श्यामसुंदरकी तुम निर्गुणहिं वचावत। योग भोग रस रोग सोग सुख जाने जगत सुनावत॥ एदृग मधुप सुमन सव परिहरि कमल वदन रसभावत। सोवत जागत स्वप्न रैनि दिन वह मूरति मोहिं भावत॥ कहि कहि कपट सँदेशन मधुकर कत वकवाद वढावत। कारो कुटिल निठुर चित अंतर सूरदास कवि गावत॥ ७१॥ मधुकर समना ऐसो वैरन। अहो मधुप निशि दिन मारियतु है कान्ह कुअँर अवसेरन॥ चित चुभि रही मनोहर मूरति चपल दृगनके हेरन। तन मन लियो चुराइ हमारो वा मुरलीकी टेरन॥ कहत न वनै कांध कामरि छवि वन गैयनकी घेरन। वरणि न जाइ सुभग उर सोभा पीतांवरकी फेरन॥ तुम प्रवीन हरि हमाहिं वतावत अगहि गहत भट भेरन। नंदकुमार छांडिको लैहै योग दुखनकी टेरन॥ जहां न परम उदार नंदसुत मुक्त परो किन झेरन।सूर रसिक विनुको जीवतिहै निर्गुण कठिन करेरन॥७२॥बिलावल॥काहेको रोकत मारग सूधो।सुनहु मधुप निर्गुण कंटकते राजपंथ क्यों रूधो।कै तुम सिखै पठाए कुविजा कही श्याम घन जीधो।वेद पुराण स्मृति सव ढूंढो युवतिन योग कहूँ धो।ताको कहा परेखो कीजै माँगत छाँछ न दूधो।सूरमूर अक्रूर गयोलै व्याज निवेरत ऊधो॥७३॥सारंग॥ मधुकर समुझि कहो किन वात।काहेको हियरा सुलगावत उठि न इहांते जात।जेहि उर वसत यशोदा नंदन निर्गुण कहा समात।कत भटकत डोलत कुसुमनि सँग तुम कित पातन पात। यद्यपि सकल वेलिं वन विहरत जाइ वसत जलजात। सूरदास ब्रज मिलवत आए दासीकी कुशलात॥ ७४॥ धनाश्री ॥तुमतो अपनेही सुख झूठे। निर्गुण छवि हरि विनुको पावै ज्यों आँगुरी अँगूठे॥ निकट रहत पुनि दूरि वतावत होरस माहँ अपूछे। दुइ तरंग दुइ नाव पाँव धरि ते कहि कवनन मूठे॥ हमसों मिले वर्ष द्वादश दिन चारिक तुमसों टूटे।सूर आपने प्राणन लैलै ऊधो सेलें रूठे॥७५॥मलार॥ऊधो वूझति है अनुमान। देखिअत नाहिं जतन जीवेको इत विरहा उत ज्ञान॥ इतहि चंद्र चंदन समीर मिलि लागत अनल निधान। उत निर्गुण अवलोकन मनको कठिन विरोधी प्रान॥ इत भूषण भै करत अंगको सव निशि जागि विहान। उत कहुँ सुनत समाधि कछू नहिं गूढ कठिनको जान॥ दुसह दुराइ विपत्ति वियोगहि नृप वडे दोउ समान।को राखै सूरज यहि अनसर कमल नैन विन आन॥७६॥ सारंग॥ मधुकर राख योगकी वात।कहि कहि कथा श्याम सुंदरकी शीतल करि सव गात।जेइ निर्गुण गुण हीन गनै गो सुनि सुंदरि अलसात। दीरघ नदी नाउ कागरकी को देखो चढिजात॥ हम तन हेरि चितै अपनो पट देखि पसारहि लात।सूरदास वा सगुण वासिकै कैसे कल्पा विहात॥७७॥मलार॥ योगसों कौने हरि पाए। निज आज्ञा तप कियो विधाता कव रस रास खिलाए।योग युक्ति शंकर आराधी परम तत्त्व नवलाए।भुज धरि ग्रीव कवहिं नँदनंदन हिलि मिलि कल सुर गाए।वगदालभ्य महाऋषि कवहूँ तृण छाया नकराए। वर्षत दुखित जानि मन मोहन कव गिरिवर कर छाए॥ अति तप पुंज विप्र दुर्वासा दूर्वा तृण नित खाए। चक्र सुदर्शन तपत महामुनि कव मुख अनल समाए॥ वहु तप कियो मार्कंडे द्विज आय सिंधु भर माए। सप्तकल्प वीती कव काहि

हारि वरुणपाशमो ल्याए ॥ भक्त विरह कातर करुणामय वेद निरंतर गाए । कोहै योग सुनत इह ऊधो सूरश्याम मनभाए॥७९॥ मलार॥ हमारे कौन वेदविधि साधै।बटुवा झोरी दंड अधारी इतनेन को आराधै ॥ जाको कहूँ थाह नहिं पइअत अगम अपार अगाधै । गिरिधर लाल छबीलेको यह कहा पठायो पाधै॥सुनु मधुकर जिन सर्वस चाख्यो सो अबक्यों सचुपावत आधै।सूरदास मणिश्याम छांडिकै घुंघुचि गांठिको बांधै॥८०॥ जिहितनु गोकुलनाथ भज्यो।ऊधो हरि बिछुरत ते विरहिनी सोतनु तबहिं तज्यो ॥ अब या औरै सृष्टि विरहकी वकत वाइ बौरानी । तिनसों उत्तर कहा देतहौ तुमतो पूरण ज्ञानी ॥ जब स्यंदन चढ़ि गमन कियो हरि फिरि चितयो गोपाल । तबहीं परम कृतज्ञ प्राणसँग उठिलागे तेहिकाल ॥ अब औसात घटत कहि कैसे उपजी मन परतीति । सूरदास कछु कहत नआवै कठिन विरहकी रीति८१॥ गौरी॥मधुप वार वार काहेको और कथा कहत। प्रभुकी प्रतीत गए नाहिंन कछु रहत ॥ पवन तेज अरु आकास पृथ्वी अरु पान्यो । तामें ते नंदनँदन कहा घालि सान्यो ॥ कमलनैन श्याम सुंदर कौने नहिंभावै । ताको तू गुप्तकरै आनै कछु गावै ॥ सूरसो नंद प्रभु दयालु लीला वपुधारी । निर्गुणते सगुणभए संतन हितकारी ॥८२॥ ॥ सारंग ॥ कहिये तासों जो होइ विवेकी । तुमतो अलि उनहींके संगी अपनीगौंके टेकी ॥ ऐसीको ठाली वैसीहै तोसों मूँड चढ़ावै ॥ झूठी बात तुसीसी बिन कन फटकत हाथ न आवै ॥ अजहूं लौं अंगहु नहिं छाँड़त यह मूरखमतिभोरे । मन क्रम वचन सूर अभ्यंतर नँदनंदन हितमोरे ॥८३॥ कहिये तासों जो होइ विवेकी । एतो अलि उनहीके संगी अपने बातके टेकी ॥ ऐसीबात कहो तुम उनसों जो नहिं जानै बूझै । सूरदास नँदनंदन बिनु देखे और नसूझै ॥८४॥ कान्हरो ॥ ऊधो निर्गुण कहत हो तुमही धौं नेहु । सगुणमूरति नंदनंदन हमहि आनियदेहु ॥ अगमपंथ परमकठिन गमन तहां नाहिं । सनकादिक भूलि फिरे अवला कहां जाहिं ॥ पंचतनु परमकान्ह अपर कैसे जानी । मन वच करि कर्मरहित वेदहुकी बानी ॥ कहिए जो निवहिवे अकथन कहुँ सोही । सूर श्याम मुख सुचंद्रलीनी युवतिमोही ॥ ऊधो सूधे नेकु निहारो । हम अवलनिको सिखवन आए सुनो सयान तिहारो ॥ ८५ ॥ निर्गुण कहो कहा कहियतहै तुम निर्गुण अतिभारी । सेवत सगुण श्यामसुंदरको मुक्तिलही हम चारी ॥ हम सालोक्यस्वरूप सरो ज्यो रहत समीप सहाई सो तजि कहत औरकी औरै तुम अलि बडे अदाई॥हम मूरख तुम बड़े चतुरहो बहुत कहा अब कहिए वेही काज फिरत भटकत कत अब मारग निज गहिए॥अहो अज्ञान कतहि उपदेशत ज्ञानरूपहमहीं । निशिदिन ध्यान सूर प्रभुको अलि देखति जित तितहीं॥८६॥ऊधो कोउ नाहिंन अधिकारी ॥ लै नजाहु यह योग आपनो कत तुम होत दुखारी ॥ यहतो वेद उपनिपदको मत महापुरुष व्रतधारी । हम अवला अहीरि व्रजवासिनि देख्यो हृदय विचारी ॥ कोहै सुनत कहत कासोंहो कौन कथा अनुसारी।सूरश्याम सँगजात भयो मन अहि कांचुली उतारी॥८७ ॥ केदारो ॥ ऊधो राखिए यह बात । कहतहो अनगढिन अनहद सुनत हो चपिजात ॥ योग अलि कूष्मांड जैसो अजा मुख नसमात । वाउ वार नभापिए कोउ अमृत ताजे विष खात ॥ नैन प्यासे रूप जलके दिये नाहिंन अघात।सूर प्रभु मनहरचो जबलौं तौलगि तनु कुशलात॥८८॥ ॥ सारंग ॥ ऊधो औरै कथा कहो । तजिये ज्ञान सुनत तावत तनु वराहि मौन रहो ॥ रुचि द्रुम प्रीति रीति नैनन जल सींचि ध्यान झर लागी । ताके प्रेम सुफल सुनि श्रावत श्याम सुरँग अनुरागी ॥ ग्रीषम अलि आए उपजी व्रज कठिन योग रवि हेरो । वन मुरझात सूरको राखै

महानेह विन तेरो ॥ ८९ ॥ सोरठ ॥ कै तुमसों छूटैं लरि ऊधो कै रहिए गहि मौन । इक हम जरैं जरे पर जारत बोलहु वकुची कौन ॥ एक अंग मिलें दोऊ कारे काको मन पतिआए । तुमसी होइ सो तुमसों वोलै लीने योगहि आए ॥ जा काहूको योग चाहिए सो लै भस्म लगावै । जिन उर ध्यान नंद नंदनको तहँ क्यों निर्गुण भावै ॥ कहो सँदेश सूरके प्रभुको यह निर्गुण अधियारो । अपनो बोयो आप लोनिये तुम आपहि निरुवारो ॥९०॥ केदारो॥ कहा रस वरिआईकी प्रीति । जो नगडै उर अंतर ऊधो भुसपर कीसी भीति॥ नैन वैन अरु हृदय मिलत तव बाढत प्रेम प्रतीति । एदोउ हंस होत जब सन्मुख लेत मनहिं मन जीति ॥ ऊधो यहै संदेशो कहियो मधुवन कैसी रीति । सूरदास सोई जन जानै गई जनु हिमही वीति ॥ ९१ ॥ मलार ॥ जोपै इहै प्रीतिकी बात । तौ ऊधो तुम निकट रहत कत निरखि सवारे गात ॥ वात कहत भरिलेत नैनजल सुरति करत अकुलात । जो घट घट हरि रहत निरंतर तौ कतहि मधुपुरी जात ॥ सगुण प्रीति ऐसी प्रतिपालत दुखित होत तनुगात । तुम निर्गुणसों प्रीति करनको सूर समुझि पछितात॥९२॥ सारंग॥ ऊधौजानि मधुवन तन देखो । कछुक दिवस औरो ब्रज वसिकै जन्म सफल करि लेखो ॥ कहा जाइ लेइहो ह्वाँ जामें राजकाजकी वात । बालकिसोर कुमार निरखि मुख घर घर माखनखात॥तुम निर्गुण नित कहत निरंतर निगम नेति यह नीति । प्रगट रूप मदमत्त नयन क्यों छाँडैं दरशन प्रीति ॥ शिव विरंचि सनकादिक मुनि मन संतन जाको धावत । सूरदास प्रभु गोप सुतन सँग गोधन वृंद चरावत ॥ ९३ ॥ मलार ॥ ऊधो जीवन धन हम पैए । सोइ होइ जो रचो विधाता और नदोष लगैए ॥ कीजै कहा कहत नहिं आवै सोचि हृदय पछितैए । मोहनसों वर कुविजा पायो हमको योग वतैए॥आज्ञा होइ सोइ पै कीजै विनती इहै सुनैए । सूरदास प्रभु तृषा बढी अति दरशन सुधा पियैए ॥ ९४ ॥ केदारो ॥ ऊधो खरी जरी हरिके शूलनकी । कुंज किलोल किये वनही वन सुधि विसरी उन बोलनकी ॥ अरु यह प्रीति कहँलौं वरणौं या यमुना जल कूलनकी ॥ वह छबि छाके अतिहैं दोऊ लोचन वाहि गहि झूलनकी । सूरदास प्रभु दरशन दीजै अरु लीजै अनकूलनकी॥९५॥ सारंग ॥ हरि विनु यह विधिहै ब्रज रहियत । पर पीरहि तुम जानत ऊधो तातें तुमसों कहियत ॥ चंदन चंद्र किरनि पावक सम मिलि मिलिहै तन दहियत । जागत याम जात युगयामिन जतन नहीं निरवहियत ॥ वासरहू या विरह सिंधुको कैसेहु पार न लहियत । फिरि फिरि वहइ अवधि अवलंबन बूडत ज्यों तृणगहियत ॥ एक जु हरि दरशनकी आशा तालगि यहु दुख सहियत । मन क्रम वचन शपथ सुन सूरज और नहीं कछु चहियत ॥ ९६ ॥ हरि विनु यह विधिहै ब्रजजीजतु । पंकज वरषि वरषि उर ऊपर सारंग रिपु जल भीजतु ॥ वायस अजा शब्द की मिलवनि याही दुख तनु छीजतु। चंद्र चौथ जात गोपिनको मधुप परखि यश लीजतु।ताराप ति अरिके शिर ठाढी निमिष चैन नहिं कीजतु । सूरदास प्रभु वेगि कृपाकरि प्रगट दरशमोहिं जीजतु ॥ ९७ ॥ हमारे धन जीवन कृष्णमुकुंद । परमउदार कृपानिधि कोमल पूरण परमानंद ॥ निठुर वचन सुनि फटतु हियो यो रहुरे अलि मतिमंद । ब्रज युवतिनको सुगम जनावत योग युक्ति सुखद्वंद ॥ यहुतौ जाइ उनै उपदेशो सनकादिक स्वच्छंद । वारक हमैं दरश देखरावो सूरश्याम नँदनंद ॥ ९८ ॥ सारंग ॥ वै वातैं यमुनातीरकी । कवहुँक सुरति करतहैं मधुकर हरन हमारे चीरकी ॥ लीने वसन देखि ऊँचे द्रुम रवकिचढनि वलवीरकी । हम ठाढी जलमाहिं गुसांई खरी जुडाई नीरकी ॥ दोऊ हाथ जोरिकै मांगो दोहाई नंद अहीरकी । सूरदास प्रभु सब सुखदात

जानत हैं परपीरकी ॥ ९९ ॥ धनाश्री ॥ अब हरि क्यों बसैं गोकुल गवई । वसत नगर नागर लोगनमें नई पहँचानि भई ॥ इक हरि चतुर हुते पहिलेही अब वहुतै उन गुरु सिखई । हम सब गवँगँवारि जानि जड अधपर छांडि दई ॥ ऊधो मुख जोवत कुबिजाको ब्रजवनिता सब विसरि गई । याहीते चतुर सुजान सूर प्रभु औ ए ग्वाली सँग न लई॥२३००॥ गौरी॥ प्रेम न रुकत हमारे बूते । किहि गयंद बाँध्यो सुन मधुकर पद्मनालके काचे सूते ॥ सोवत मनसिज आनि जगायो पठै सँदेश श्यामके दूते । विरह समुद्र सुखाइ कवन विधि किरचक योग अग्निके लूते ॥ सुफलक सुत अरु तुम दोउ मिलिलै जैये मुक्ति हमारे हूते । चाहति मिलन सूरके प्रभुको क्यों पतियाहिं तुम्हारे धूते ॥ १ ॥ मलार ॥ वै गोपाल गोकुलके वासी । ऐसी बातैं बहुतै सुनि सुनि लोग करत हैं हाँसी ॥ मथि मथि सिंधु सुधासुर पोपे शंभुभए विप आसी । इमि हति कंसराज औरहिंदै आपु चले हैं दासी ॥ विसरचो हमहिं विरह दुख अपनो सुनत चाल ऐरासी । जैसे ठग विलोकि गुप्त निधि प्रगट नपरखै फांसी ॥ आरजपंथ छुडाइ गोपिका कुल मर्यादानाशी । आप करत सुख राज सूर प्रभु हमैं देत दुख गासी ॥ २ ॥ धनाश्री ॥ इह कछु नाहिंन नेह नयो । अहो मधुप माधव सों इह ब्रज विधिते पहिल भयो ॥ वीज मन माली मदन चुर आल वाल वयो । प्रेमपय सींचो पहिलही सुभग जीवरि दयो ॥ इते श्रम तन श्यामसुंदर विरवा विमल बढ्यो । मुरली मुख छवि पत्र शाखा दृग दुरेफ चढ्यो॥कमल ताजि तनु रचत नाहीं आकको आ मोद । सूर जो गुण वचन परसत विन गोपाल विनोद ॥ ३ ॥ मलार ॥ ऊधो अब यह समुझि भई । नँदनंदनके अंग अंग प्राति उपमा न्याइ दई ॥ कुंतल कुटिल भँवर भामिनि वर मालति भुरै लई । तजत न गहरु कियो तिन कपटी जानि निराश गई॥आनन इंदु वरन संपुट ताजि कर खेते न नई । निर्मोही नवनेह कुमुदिनी अंतहु हेम मई ॥ तन घन सजल सेइ निशि वासर रटि रसना छिजई । सूर विवेक हीन चातक मुख बूँदै तौन श्रई ॥४॥ सारंग ॥ ऐसो माई एक कोदको हेतु । जैसे वसन कुसुंभरंग मिलिकैं नेक चटक पुनि श्वेत॥जैसे करनि किसान वापुरो नौनौ वाहै देत । एतेहू पर नीर निठुर भयो उमँगि आपुही लेत ॥ सब गोपी पूछहिं ऊधो को सुनियो वात सुचेत । सूर दास प्रभु जनते विछुरे ज्यों कृत राई रेत ॥५॥ सारंग ॥ मुख देखेकी कौन मिताई । जैसे कृपणहि दीन माँगनो लालच लीने करत वडाई ॥ प्रीतम सो जो रहै एक रस निशि वासर बढि प्रेम सवा ई । चितमहि और कपट अंतर्गति ज्यों फल खीर नीर चिकनाई ॥ तब वह करी नंदनंदन आलि वन वेली रसरास खिलाई । अब यह कितहीदूरि मधुपुरी ज्यों उड़ि भँवर वेलि ताजि जाई ॥ योग सिखाए क्यों मन मानै क्यों व ओसकन प्यास बुझाई । सूरदास उदास भई हम पाखंड प्रीति उघरि निज आई ॥ ६ ॥ मलार ॥ मधुकर मन सुनि योग डरै । तुमहूँ चतुर कहावत अतिही इतनी न स मुझि परै ॥ और सुमन जो अनेक सुगंधिका शीतल रुचि जो करै । क्यों तुमको कहि वनै सरै ज्यों और सवै अनरै ॥ दिनकर महाप्रताप पुंज वर सवको तेज हरै । क्यों न चकोर छाँडि मृग अंकहि वाको ध्यान धरै॥उलटोइ ज्ञान सकल उपदेशत सुनि सुनि हृदय जरै। जंबू वृक्ष कहो क्यों लंपट फलवर अंवु फरै ॥ मुक्ता अवधि मराल प्राणमै अवलगि ताहि चरै । निघटत निपट सूर ज्यों जल विनु व्याकुल मीन मरै ॥ ७ ॥ आसावरी ॥ ऊधो योग योग हम नाहीं । अवला सार ज्ञान कहा जानैं कैसे ध्यान धराहीं॥ते ये मूंदन नैन कहत हैं हरि मूरति जामाहीं॥ ऐसे कथा कपटकी मधुकर हमते सुनी न जाहीं ॥ श्रवण चीर अरु जटा वधावहु ए दुख कौन

समाहीं ॥ चंदन तजि अंग भस्म बतावत विरह अनल अति दाहीं । योगी भरमत जेहि लगि भूले सोतोहै अपु माहीं । सूरश्याम ते न्यारे न पल छिन ज्यों वटते परछाहीं ॥ ८ ॥ मलार ॥ ऊधो कहिए बात सोहुती । जाहि ज्ञान सिखवन तुम आए सो कहो ब्रजमें कोहुती ॥ अंतहु सिखवन सुनहु हमारी कहियत बात विचारी । फुरत न वचन कछू कहिवेको रहे वैन सो हारी ॥ देखियतहै करुणाकी मूरति सुनियतहै परपरिक । सोइ करौ जो मिटै हृदयको दाहु परै उरसीरक ॥ राजपंथते टारि बतावत उज्ज्वल कुचल कुपैडो । सूरदास सो समाइ कहांलौ अजावदनमें कुम्हैडो ॥ ९ ॥ सारंग ॥ हमतो नंदघोषके वासी । नाम गोपाल जाति कुल गोपक गोप गोपाल उपासी॥ गिरिवरधारी गोधनचारी वृंदावन अभिलासी । राजानंद यशोदा रानी जलनदी यमुनासी ॥ मीत हमारे परममनोहर कमलनयन सुखरासी । सूरदास प्रभु कहौं कहांलौं अष्टसिद्धि नवनिधि दासी॥१०॥ सारंग ॥गोकुल सब गोपाल उपासी । जो गाहक साधनको ऊधो ते सब बसत ईशपुर कासी॥यद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि तऊ रहति चरणन रसरासी । अपनी शीतलता नहिं तजई यद्यपि विधु भयो राहु गरासी ॥ किहि अपराध योग लिखि पठवत प्रेमभक्तिते करत उदासी॥सूरदास सो कौन विरहिनी मांगि मुक्ति छाँडै गुणरासी॥११॥ मलार ॥ब्रज जन सकल श्यामव्रतधारी । विना गोपाल और जेहि भावत ते कहिहैं व्यभिचारी ॥ योग मोट शिरबोझ आनि तुम कतधौं घोष उतारी । इतनिक दूरि जाहु चलि काशी जहां विकतहै प्यारी ॥ यह संदेश सुनैको मधुकर अतिमंडली अनन्य हमारी । जो रसरीति कही हरि हमसों सो क्यों जाति विसारी॥महामुक्तिकोऊ नहिं वाँछै यदपि पदारथ चारी । सूरदास स्वामी मनमोहन मूरति की बलिहारी॥१२॥ धनाश्री ॥कहांलौं कीजै बहुत बडाई । अति अगाध मन अगम अगोचर मनसो तहाँ नजाई ॥ जाके रूप नरेख वरन वपु नाहिन संगत सखा सहाई । ता निर्गुण सों नेह निरंतर क्यों निवहैरी माई ॥ जल विन तरंग भीति विन लेखन विन चेतहि चतुराई । था ब्रजमें कछु नहीं चाहहै ऊधो आनि सुनाई ॥ मन चुभि रह्यो माधुरी मूरति अंग अंग उरझाई । सुंदर श्याम कमलदल लोचन सूरदास सुखदाई॥१३॥नट॥ऊधो कछुक समुझि परी॥तुम जु हमको योग ल्याए भली करनी करी ॥ इक विरह जरि रही हरिके सुनत अतिही जरी । जाहु जिनि अब लोन लावहु देखि तुमही डरी॥योगपाती दई तुम कर बडे चतुर हरी॥सूरदास स्वामीके रँग राचि कहांधरैं गठरी ॥१४॥कान्हरो॥कहत अलि तेरे मुख बातौ॥कमलनयनकी कपट कहानी सुनत भयो तनुतातौ॥कत ब्रजराज काज गोकुलको सबै किए गहिनातौ॥तब नहिं निमिष वियोग सहति उर करत काम नहिं हातौ॥मधुवन जाइ कान्ह कुविजा संग माति भूलहु सुधिसातौ॥ज्यों गज यूथ नेक नहिं विछुरत शरद मदन मदमातौ । सूरश्याम विन हम सब अवला यातन कहाँ समातौ ॥१५॥ धनाश्री ॥तुम अलि कमलनयनके साथी । देखतभले काजको जैसे होत धूमके हाथी ॥ सुंदरश्याम गंड मद लंकृत सम श्रम जलकन छाजै । योग ज्ञान दोउ दशन भोग रद करनी कुंभ विराजै॥जब शिशुहुते कुमार असुर हति याते प्रीतम जाने । अब भए जाइ विवस दासीके ब्रजतें प्रगट पराने ॥ करिकै कपट तुच्छ विद्यावश भगन करत अँग भटज्यों । सूर अवधि पढि मंत्र सजीवन मरिजीवति हैं नटज्यों ॥१६॥ सारंग ॥ ऐसो सुनियत द्वै वैशाखा॥जानत हौं जीवन काहेको जतन करौ जो लाख॥ मृगमद मिलै कपूर कुमकुमा केसरि मलया खाख । जरति अग्निमें ज्यों घृत नायो तनु जरिहै है राख ॥ ता ऊपर लिखि योग पठावत खाहु नींब तजि दाख । सूरदास ऊधोकी बतियां उडि

उड़ि बैठी खात ॥१७॥ नट ॥ जानी ऊधोकी चतुराई । वार वार तुम कहत अध्यातम पावत कौन वडाई ॥ जो तुम कहत अगाध अगोचर हरिरस तजो नजाई । वाहर भीतर ध्यान सगुन विनु सुनियत दूरि भलाई।सूरदास प्रभु विरहजरी हैं विनु पावक दौ लाई॥१८॥सारंग॥जानी अलि ऊधो चतुराई । ब्रजमंडलकी दशा देखिकै कथा सबै विसराई ॥ परमप्रिया पथ देखन पठए कहि गति योग वनाई । इनको आन भाव विछुरनके लै वाजनि हम लाई ॥ कहा कह्यो हरि कहा सुन्यो इनि कहि लीला सुखगाई । यद्यपि विविध वडे यदुकुलके नेक नवढी वडाई ॥ गुणमहि मंत्र सदा श्रीपतिके मुक्तिपुरी अब गाई । नहिं देखी ब्रजवनकी लीला सूरश्याम लरिकाई ॥ १९ ॥ मलार ॥ इहिविधि पावस सदा हमारे । पूरब पवन श्वास उर ऊरध आनि जुरेत कठारे ॥ वादर श्याम श्वेत नयननमें वरपि आँसु जलढारे । अरुन प्रकाश पलक दुति दामिनि गर्जन नाम पिय्यारे ॥ चातक दादुर मोर प्रगट ब्रज वसत निरंतर धारे । ऊधो ए तबते अटके जब श्याम रहे हिततारे ॥ कहिए काहि सुनैं कत कोऊ या ब्रजके व्यवहारे । तुमहींसों कहिकै पछितानी सूर विरहके धारे ॥ २० ॥ ॥ केदारो ॥ जौपै कोऊ मधुवनहूँलों जाइ । पतियां लिखौ श्यामसुंदरको कंकन देहौं ताहि ॥ नयननीर सारंग रिपु भीजत युग सम रैनि विहाइ । अव यह भवन भयो पावक सम हरि विन मोहिं नसुहाइ ॥ पछिली प्रीति कहा भई ऊधो मिलते वेणु वजाइ । सूरदास प्रभु वेगि मिलहु किन पुनि कहा करोगे आइ ॥ २१ ॥ विलावल ॥ ऊधो कोकिल कूजत कानन । तुम हमको उपदेश करतहो भस्म लगावन आनन ॥ औरो सींगी सखी संगलै टेरत चढे पपानन । वहुरो आइ पपीहा केमिस मदन दहत निज वानन ॥ हमतौ निपट अहीरि वावरी योग दीजिए जानन । कहा कथत मासीके आगे जानत नानी नानन ॥ तुमतौ हमहिं सिखावन आए मुक्ति होइ निर्वानन । सूरमुक्ति कैसे पूजतिहै वा मुरलीके तानन ॥ २२ ॥ सारंग ॥ ऊधो हरिके अवरै ढंग । जहां न अनंग रस रूप नेहको तहाँ दई गति जो अनंग ॥ आपु विपमता तजि दोऊ सम भै वानक ललित त्रिभंग । मानों मरिचि देखि तनुभूली भूपथ सुरभि सुरंग ॥ तजे कुसुमकर कंटक वन भ्रमि नहि कामो भ्रूभंग । कनकवेलि सतदल शर मंडित दृढ तर लता लवंग ॥ श्यामा सदन विसारि भजे पुर चंचल नारि पलंग ॥ ते सुख वहुत वहुत पावहिंगे जे करिहैं अँगसंग । काकेहोहिं जो नहिं गोकुलके सूरज प्रभु श्रीरंग॥२३॥आसावरी॥ऊधो हम दोउ कठिन परी । जो जीवैं तो मुनि जड ज्ञानी तनु तजि रूप हरी ॥ गुण गावैं तौ शुक सनकादिक धाय लीला फरी । आशा अवधि विचारिहैं तौ धर्म न ब्रज सुंदरी ॥ सखीमंडली सब जो सयानी विरहा प्रेम भरी । सोक समुद्र तरिवेको नौका जे मुख मुरली धरी ॥ निशि वासर निरंकुश अति वड मातो मदन करी । ढाहत धाम सूर प्रभु चितवत गमन करैं कैसेरी ॥ २४ ॥ केदारो ॥ ऊधो सुनिहो वात नईसी । प्रेमवानिकी चोट कठिनहै लागी होइ कहो कत ऐसी ॥ तुमहिं विचारि कहा कहि दीजे हो आनि कहत रे जैसी । जानै कहा वाँझ ब्यावर दुख जातक जनहि नपीरहै कैसी ॥ हम वावरी नआनि वौराववत कहत न तुम्हैं वूझिए ऐसी । सूरदास न्याइ कुबिजाको सरवसु लेइ हमारो वैसी ॥ २५ ॥ यशोमति॥वचन केदारो ॥ ऊधो उदित भई सब दुखकी करनी । ब्रजवेली सब सूखन लागीं वात कही नँदघरनी ॥ कमल वदन कुँभिलात सवनके गौवन छांडी तृणके चरनी । सुख संपति री वीति गयो सब नीकी लागीरी अलि अनजलकी झरनी॥देखोचारो चंद्रमुख शीतल विन दरशन क्यों मिटती जरनी । सुत सनेह समुझति सु सूरप्रभु फिरि फिरि यशुमति परती धरनी ॥ २६ ॥

॥ सारंग ॥ ऊधो पूंछति ते बावरी। गोकुल तजो कुँवारि कारण नेह नहोति जो रावरी॥जैसो बीज बोइए तैसो लुनिए लोग कहत सब बावरी। सूरदास प्रभु पारस परसै लोहो कनक बराबरी॥२७॥ ॥गौरी॥ मधुकर देखो दीनदशा। इतनी बातैं तुमसों कहतिहैं जो तुम श्यामसखा॥ जे कारेते सबै कुटिलहैं मृतगनके जोहता। तुम बिरहिनी बिरह दुख जानत कही यह गूढ़ कथा॥ मन वशभयो श्रवण सुनि मुरली कुंजनि कुंज बसी। अबतौ एक नभए सूर प्रभु घर बन लोग हँसी॥ २८॥ सारंग॥जैसोकियो तुम्हारे प्रभु अलि तैसो भयो ततकाल। ग्रंथित सूत धरत तोहिं ग्रीवा जहांधरते बनमाल॥ टेरि देत श्रीदामा द्रुम चढ़ि सरस वचन गोपाल। ते अब श्रवण अक्रूर प्रमुख सब कहत कंस कुशलात॥ कोमल नील कुटिल अलकावलि रेखी राजत भाल। ऐसे शर त्यागे सुन सूरज फंदा न्याइ मराल॥२९॥मलार॥विरचि मन बहुरि राचो आइ।टूटी जुरै बहुत जतननिकरि तऊ दोष नाहिं जाइ॥ कपट हेतुकी प्रीति निरंतर नोथि चोखाई गाइ। दूध फाटि जैसे भइ कांजी कौन स्वाद करि खाइ॥ केरा पासि ज्यों बेरि निरंतर हालत दुख दैजाइ। स्वाति बूंद जैसे परे फनिक मुख परत विषैह्वैजाइ॥एती केती तुमरी उनकी कहत बनाइ बनाइ। सूरदास दिगंवर पुरते रजक कहा व्योसाइ॥ ३०॥ ऊधो तुमहो अति बडभागी। अपरस रहत सनेह तगाते नाहिंन मन अनुरागी॥ पुरइनि पात रहत जल भीतर तारस देह नदागी। ज्यों जल माँह तेलकी गागरि बूंदन ताको लागी॥ प्रीतिनदी महँ पाँव न बोरचो दृष्टि नरूप परागी। सूरदास अबला हमभोरी गुरचेंटी ज्यों पागी॥ ३१॥ धनाश्री॥ हमते हरि कबहीन उदास। रास खिलाइ पिआइ अधररस क्यों बिसरत ब्रजबास॥ तुमसों प्रेमकथाको कहिवो मनहु काटिवो घास। बाहिरो तान स्वाद कहा जानै गुंगो खात मिठास॥ सुनरी सखी बहुरि हरि ऐहैं वहसुख बढ़ै बिलास।सूरदास ऊधो हमको अब भए तेरहोमास॥३२॥तेरो बुरो न कोई मानै। रसकी बात मधुप नीरससुनि रसिक होइ सो जानै॥ दादुर बसै निकट कमलनके जन्म न रस पहिचानै।अलि अनुराग उडत मन बांध्यो कही सुनत नाहिं कानै॥ सरिता चली मिलन सागरको कूल सबै द्रुम भानै। कायर बकै लोभते भागै लरै सो सूर बखानै॥ ३३॥ हम सब जानत हरिकी घातैं। तुम जो कहत वो राज्य करत नाहिं जानत हौ कछु कातैं॥ मारे कंस सुरन सुख दीनो असुर जरे पिरपातै। उग्रसेन बैठारि सिंहासन लोग कहत कुलनातै॥ तपते राज राजते आगे तुम सब समुझत बातै। सूरश्याम यहि भांति सयाने हमहींको बदुसातै॥ ३४॥ नट॥ ऊधौ है तू हरिके हितको। हम निर्गुण तबहीं ते जान्यो गुणभेद्यो जब पितुको॥समुझहु नेक श्रवण दै सुनिए प्रगट बखानो नितको।रत्नघट कहु क्यों निकसै विनुगुन बहुतै वितको॥पूरणतातो तबही बूडी संग गए लैचितको। हमतौ खगहि सूर सुनि षटपद लोक बटाऊ हितको॥३५॥ काफी॥ आयो घोष बड़ो व्यापारी। लादि पेषि गुणज्ञान योगकी ब्रजमें आनि उतारी॥ फाटक दैकै हाटक भागत भोरो निपट सुधारी। धुरहीते खोटो खायोहै लिये फिरत शिरभारी॥ इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अमारी। अपनो दूध छाँडिको पीवै खारे कूपको बारी॥ ऊधो जाहु सबेरे ह्यांते वेगि गहर जानि लावहु। मुख माँगो पैहो सूरज प्रभु साहुहि आनि देखावहु॥३६॥धनाश्री॥ऊधो योग कहा है की जतु।ओढिअतहै की डासिअतहै कीधौं कहियत। कीधौं जु पतीजतु॥ की कछु भलो खेलवना सुंदरिकी कछु भूषण नीको। हमरे नंदनंदन जो चहिअत जीवन जीवन जीको। तुम जो कहत हरि निगम निरंतर निगम नेति हैं रीति।प्रगट रूपकी राशि मनोहर क्यों छांडे प्रतीति।गाइ चरावन गए घोषते

अबहीं है फिरि आवत। सोई सूर सहाय हमारे वेणु रसाल बजावत॥३७॥ मलार॥ मधुकर जानो ज्ञान तिहारो। जाने कहा राजलीलाकी अंत अहीर विचारो ॥ एक भली हम सबै सयानी एक सयानी सों मनमानो। लाज लए प्रभु आवत नाहीं है जो रहे खिसिआनो ॥ लै आवो हम कछू न कैहैं मिलिहैं प्राणपियारे।व्याहो बीस धरो दश कुविजा अंतहु श्याम हमारे॥ सुनरी सखी कहूं नहिं कहिए माधो आवन दीजे। सूरदास प्रभु आनि मिलै जो हांसी करि करि लीजे ॥३८॥ मधुकर तुमही श्याम सखाई।पालागौं यह दोष बकसियो सन्मुख करत ढिठाई ॥ कौने रंक संपदा बिलसी सोवत सपने पाई। धाम धुआँको कहो कवनकै कवनै धाम उठाई ॥ अरु कनके माला कर अपने कौने गूंथ बनाई। कहि कागजकी तरनी कीन्हे कौन तरयो सरजाई ॥ किन अकासते तोरि तुरैआ आनि धरी घरमाई।और कौन अबलन ब्रतधारयो योग समाधि लगाई ॥इहि उर आनि रूप देखेकी आगि उठै अगिआई । सुन ऊधो तुम फिरि फिरि आवत यामें कौन बड़ाई ॥ सूरदास प्रभु ब्रज युवतिनको प्रेम कह्यो नहिं जाई ॥३९॥ गौरी ॥ मनकी मनहीं मांझ रही । कहिए जाइ कौनपै ऊधो नाहिंन परत कही ॥ अवधि अधार आश आवनकी तन मन व्यथासही । चाहति हुती गोहारि जितहिते तितहिते धार वही ॥ अब इन योग सँदेशन सुनि सुनि विरहिनि विरह दही। सूरदास अब धीर धरहि क्यों मर्यादा न लही ॥४० ॥ गौरी तुमहिं दोष नहिं हम अति बोरी। रूप निरखि दृग लागेहैं ढोरी ॥ चित चोराइ लियो मूरति सोरी।सुभग कलेवर कुमकुम खोरी॥गुंजमाल उर पीत पिछोरी। यहिते जो नेकुल बुधि योरी ॥ गहत सोइ जो समात अकोरी। सूरश्याम सों कहियो एक ठोरी। यह उपदेश सुनहि ते ओरी ॥ ४१ ॥ नट ॥ श्याम तुम ठगसों प्रीति करी। काटे नाक पछोरे पूँछत ताते सब सुधरी ॥ ह्यां ऊधो काहेको आए कौनसी अटक परी। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन विनु सब पाती उघरी ॥ ४२ ॥ सारंग॥ ऊधो बनत न राज भयो। नए गोपाल नई कुविजावनी नौतन नेह ठयो ॥ नए सखा जोरे यादवकुल अरु नृपकंस हयो। नव तन नारि नए पुर कीन्हो तिन अपनाइ लयो ॥ विसरे रास विलास कुंज सब अपनी जात गयो। सूरदास प्रभु बहुत बटोरी दिन दिन होत नयो ॥ ४३ ॥ अब तुम कापर कपट बनावत। नाहिंन कंस कान्ह नहिं गोकुल को पठवत कहा आवत ॥ जिन मोहन बंसी वारिजकारि सुख तन सींचि बढायो।सो पुनि ऊधो कर कारनको योग कुठार पठायो॥इतनो तो मानुषही जाने जिनकेहै मति थोरी। घोखेही बिरवा लगाइकै काटत नाहिं वहोरी॥ वै प्रवीन ऊधो अति नागर जानि परस्पर प्रेम। कैसेकै पठवत वै आवत टारनको हित नेम॥स्वर्गहु गए कंस अपराधी परयो हमारे खोज। दृष्टिते टारि ध्यानहुते टारत बाऊ सबको चोज ॥ विद्यमान आए जे छल करि तिन अपनो फल पायो।ह्यांहै हृदय सूरश्यामजी बनत न स्वांग बनायो ॥ ४४ ॥ अपने स्वारथके सब कोऊ। चुपकरि रहो मधुप सुन लंपट तुम देखे अरु ओऊ॥जो कछु कहो कह्यो चाहतहो कारि निरवारो सोऊ। अब मेरे मन ऐसी पटपद होवे होहु सुहोऊ ॥ तब कत रास रच्यो वृंदावन ज्यों ज्ञानी हूतोऊ । लीने योग फिरत युवतिनमें बडे सुपथ तुम दोऊ॥ छुटिगयो मान परेखोरे अलि हृदय हतो बहु जोऊ। सूरदास प्रभु गोकुल विसरो चित चिंतामणि खोऊ ॥ ४५ ॥ नट॥ कहत कत परदेशीकी बात । मंदिर अरध अवधि बदी हमसों हरि अहार चलिजात ॥ शशि रिपु बरप सूर रिपु युगवर हर रिपु किए फिरे घात । मघपंचक लैगए श्याम वन आइ बनी यह बात ॥ नक्षत्र वेद ग्रह जोरि अर्ध करि को बरजै हम खात । सूरदास प्रभु तुम

हि मिलनको कर मीडत पछितात ॥ ४६ ॥ मलार ॥ ऊधो जानी न हरि यह बात। बैठे रथ पर चढे भोरही हँसत मधुपुरी जात ॥ सुफलकसुत मिलि ढँग ठान्यो है साधे विषमन घात । जेत क बडे धर्मध्वजा नामी संग प्रेम पथ पात ॥ यदुकुल में दोउ संत सबै कहैं तिनके ए उतपात। एकन हरे प्राण गोकुलके या पर योग कुशलात ॥ यद्यपि सूर प्रताप श्यामको दानव दूरि दुरात। तद्यपि भवन भावनहिं ब्रज विनु खोजो दीपै सात ॥ ४७ ॥ हम आलि कैसेकै पतिआहि । वचन तुम्हारे हृदय न आवत क्योंकर धीर धराहिं ॥ वपु आकार भेप नहिं जाको कौन ठौर मन लागे। हौं करिरही कंठमें मनिआ निर्गुण कहा रसहि ते काज । सूरदास सगुणमिलि मोहन रोम रोम सुखराज ॥ ४८ ॥ मलार ॥ मधुकर जानतहैं सबकोऊ। जैसे तुम अरु सखा तिहारे गुणन आगरे दोऊ॥ सुफलकसुत कारे नख शिखते कारे तुम अरु वोऊ। सरवस हरन करत अपनेसुख कोउ कितो गुणहोऊ ॥ प्रेम कृपण थोरे वित वपुरी उवरत नाहिन सोऊ। सूर सनेह करै जो तुमसों सो पुनि आपु विगोऊ॥ ४९ ॥ मधुकर तुमरसलंपट लोग। कमलकोशनित रहत निरंतर हमहिं सिखावत योग ॥ अपने काज फिरत बन अंतर निमिष नहीं अकुलात। पुहुप गए बहुरौ बल्लिनके नेक निकट नहिं जात ॥ तुम चंचल अरु चोर सकल अंग वातनको पतिआत । सूर विधाता धन्य रचे एइ मधुप साँवरे गात॥५०॥सारंग॥मधुप रावरीये पहिंचानि। वासर समय अनत उठि बैठत पुहुपनकी तजि कानि॥ वाटिका वहु विपिन जिनके एकवे कुम्हिलानि। तहां अगणित फूल फूले कौन ताके हानि ॥ काम पावक जरत छाती लोन लायो आनि। योग पाती हाथ दीनी विष लगायो सानि॥शीशकी मणिहरी जाकी कौन जामें बानि॥निठुरहौ तुम सूरके प्रभु ब्रज तज्यो यह जानि ॥ ५१ ॥ को कहिहै हरिसों बात हमारी॥यहतौ हम तवते जिय जानी जवते भए मधुप अधिकारी ॥ एकै प्रकृति एकई तवगाति जे मनसिज असिताहिक्यों भावै। प्रगटे नित नवकंज मनो हर ब्रजकी सरक करन कत आवै ॥ कुटिल खीन चंपक चंचल मति सवही ते जुनिनारी। ताअ लिकी संगति बसि मधुपुरी सूरदास प्रभु सुरति विसारी॥५२॥ मधुकर तुम अति चतुर सुजान जे पहिले मनरँगे श्यामरँग अव नचढ़ै रँग आन ॥ ए दोऊ लोचन विराटके विधि किये एक समान। भेद चकोर कियो ताहूमें विधु प्रीतम रिपुभान ॥ विरहा भेद भयो पालागौं तुमहौ पूरण ज्ञान। दादुर जलविन जिवै पवन भख मीन तजै हठिप्रान॥वारिजवदन नैन मेरे षटपद कव करिहैं मधुपान। सूरदास गोपिन परतिज्ञा छुवहिं न योग विरान॥५३॥ऊधो विरहो प्रेम करै।ज्योंबिन पुट पट गहत नरंगको रंगनरसै परै॥ज्योंधर देह वीज अंकुर गिरि तौ सतफरनि फरै। ज्यों घट अनल दहत तन अपनो पुनि पय अमी भरै ॥ ज्यों रण शूर सहत शर सन्मुख तो रवि रथहि ररै। सूर गोपाल प्रेम पथ चलि कारि क्यों दुख सुख न डरै ॥ ५४ ॥ मलार ॥ मधुकर प्रीति किए पछितानी। हम जान्यो ऐसेहि निवहैगी उन कछु औरै ठानी ॥ वा मोहनको कौन पतीजै वोलत मधुरी वानी। हमको लिखि लिखि योग पठावत आपु करत रजधानी ॥ अवतो सेज सुहाइ न हरि विन चितवत रैनि विहानी। जबते गमन कियो मधुवनको नैनन वरषत पानी ॥ कहियो जाइ श्याम सुंदरको अंतर्गतिकी जानी। सूरदास प्रभु मिलिकै बिछुरे ताते भई दिवानी ॥ ५५ ॥ हमरे हरि हारिलकी लकरी। मन क्रम वचन नंदनंदन उर यह दृढ़ करि पकरी॥जागत सोवत स्वप्न दिवस निशि कान्ह कान्ह जकरी। सुनत हिए लागत हमैं ऐसो ज्यों करुई ककरी ॥ सुतौ व्याधि हमको लै आए देखी सुनि न करी। यह तौ सूर ताहि लै सौंपौ जिनके मन चकरी ॥ ५६ ॥ सारंग ॥ बात

हमारी मानो जौतो। आवन कह्यो हुतो हमजीवाति ताते उनही कौतो॥एक बोलकै लीन्हे सोई अपनी खोई देवाति। ताते खरी मरत इहि ठाहर वाही वचनहि सेवति॥ इतनो कह्यो करो धरि राखो योग आपनो घरको। पैज खैंचि मेटन आए हो तनक उजारो खरको॥ नँदनंदन लै गए हमारी सब ब्रज कुलकी ऊब। सूरश्याम तजि औरे सूझै ज्यों खेरे की दूब॥ ५७॥ मलार॥ श्याम मुख देखेही परतीति। जो तुम कोटि जतनकरि सिखवहु योग ध्यानकी रीति॥ नाहिंन कछू सयान ज्ञान महि यह हम कैसे मानै। कहो कहा गहिए अनुभवको कैसे उरमें आनै॥ एही मन इक इक वह मूरति भृंगी कीट समानै।सूर शपथदै पूँछो ऊधो यह ब्रज लोग सयाने॥५८॥ सारंग॥ हरिहैं राजनीति पढिआए। समुझी बात कहत मधुकरसे समाचार सब पाए॥ पहिलेही अति चतुर हुते अरु गुर सब ग्रंथ दिखाए। बाढी बुद्धि कहत युवतिनको योग सँदेश पठाए॥ आगेहूके लोग भलेहो परहित डोलत धाए। अब अपने मन फेरि पाइहैं चलत जो होहिं पराए॥ ते क्यों नीति करैं आपुन जिन औरन अपथ छुड़ाए। राजधर्म सुनि इहै सूर जिहि प्रजा नजाहिं सताए॥ ॥ ५९ ॥ बारक मिलत कहाहै होत। इतनेहुँ मान कहा उहि कुबिजा पाएहैं परिपोत॥ इतनिक दूरि भए कछु औरै बिसरचो गोकुल गोत। कैसे जियहि वदन बिनु देखे बिरहिन बिरहिनि सोत॥ आए योग देन अबलनिको सुरभिकंठ वृष जोत। सूरदास प्रभु तौ पै जीवहिं देखहिं मुखकी द्योत॥ ६०॥ मलार॥ मधुकर नाहिंन काज सँदेशो। इहिब्रज कौने योग लिख्यो है कोटि जतन उपदेशो॥ रविके उदय मिलन चकईको शशिके समय अँदेशो। चातक क्यों वन वसत बापुरो बधिकहि काज बधेसो॥ नगर आहि नागर बिनु सूनो कौन काज बसिवेसो। सूर स्वभाव मिटै क्यों कारे फनिकहि काज डसेसो॥ ६१॥ ऊधो हम वह कैसे मानैं। धूत धौल लंपट जैसे हरि तैसे और न जानैं॥ सुनत सँदेश अधिक तनु कंपत जानि कोउ डर तहाँ आनै। जैसे बधिक गँवहिते खेलत अंत धनुहिया तानै। निर्गुणवचन कहहु जनि हम सों ऐसी करति न कानै॥ सूरदास प्रभुकीहौं जानों और कहै औरै कछु ठानै॥६२॥मलार॥ ऊधो अब कछु कही नजाइ। रानीभई कूबरीदासी कापै बरणीजाइ॥ जोइ जोइ मंत्र कहत कुबिजाहि सोइ सोइ लिखत बनाइ। अंत अहीर प्रीति दासीसों मिटत न सहज सुभाइ॥ छुटत नही गुण अवगुणजाको कीजै कोटि उपाइ।सूर सुभाइ तजै नहिं कारो जो कीजै कोटि उपाइ॥६३॥मलार॥नदलेको बदलो लैजाहु। उनकी एक हमारी दोइ तुम बड़े जनैओ आहु॥ तुम अलि जानि अतिः भोरे संसारो चाहत दाव अपनी बेर मुकुरकै भागत हिए चौगुने चाव॥ अब तुम सालि बँधो तहाँ जाई काहेको पाछितहु। सूरदास वह न्याउ निबेरहु हम तुम दोऊ साहु॥६४॥ मलार॥ ऊधोजी यहि ब्रज बिरह बढे। घर बाहर सरिता सर वन उपवन देखहु द्रुमन चढे॥ दिन अरु रैनि सधूम भवनके दिश दिश तिमिर मढे। द्वंदकरत आति प्रवल बलीबल जीवन अनल उढे॥ जरि नाहिं भई भसम तेही छिन जब हरि वचन रढे। सूरदास विपरीति विधाते यहितनु फेरि ठढे॥ ६५॥ ऊधो जो तुम बात कही। ताको कछुअ न उत्तर आवै समुझि बिचारि रही॥ पालागौं तुमही बूझतहौं तुमपर बुधि उमही। कैसे शीतल होइ पवन जल पिए वियोग दही॥ कुबिजासों पढि तुमहि पठाए नागर नवल लही। अब जोई पद देहि कृपाकरि सोइ हम करैं सही॥ बिछुरत बिरह अग्नि नाहीं जरी नैनन जलन वही। अब सुनि शूल सहति सब सूरज कुलमर्याद ढही॥६६॥ योग मिटि पतिआहू व्योहारु॥ मधुवन वासि मधुरिपु सुनु मधुकर छाँडे ब्रज आभारु॥ धरणीधर गिरिधर कर धरिकै मुरली धर

सुखसारु। अब लिखि योग सँदेशो पठवत व्यापक अगम अपारु॥ हाँसी अरु दुख सुनहु सखी सुं श्रवण दशा संचारु। सूर प्राणतन तजत नयाते सुमिरि अवधि आधारु॥६७॥ सारंग ॥मधुकर जो हारि कही सो करो। राजकाज चित दियो सांवरे गोकुल क्यों विसरो॥ जेजें घोष रहे हम तेहिलों संतत सेवा कीनी। वारक कबहुँ उलूखल बांधे उहै बाँधि जियलीनी॥ जो हमसों काटे करें ब्रज नायक बहुतै राजकुमारी। तौ एई नंद कहा मिलिहैं और यशोमतिसी महतारी॥ गोवर्धन कहुँ गोप वृंद सचु कहा गोरस सच पैवो।सूरदास अब सोई करिए बहुरि गोकुलहि ऐवो॥६८ सोरठ॥ऊधो हरि यह कहा विचारी।सदा समीप रहत वृंदावन करत विहार विहारी॥ एकतौ रंग रचे कुबिजाके विसरि गए सबनारी।कछु इक मंत्र कियो उन दासी तेहिं विनोद अधिकारी॥दिन दश और रहौ तुम इहां देखो दशा विचारी। प्राण रहतहैं आशा लागे कब आवैं गिरिधारी॥तुमतौ कहत योगहै नीको कहो कवन विधि कीजै।हम तन ध्यान नंदनंदनको निरखिनिरखिसो जीजै सुंदर श्याम कंठ वैजंती माथे मुकुट विराजै। कमल नैन मकराकृत कुंडल देखतही भव भाजै॥याते योग न आवे मनमें तू नीके करि राखि। सूरदास स्वामीके आगे निगम पुकारत साखि॥ ६९॥ विहागरो॥ मधुकर बहुरि न कबहुँ मिलैं हरि। कमल नयन मिलवेके कारण अपनो सो जतन रही बहुतै करि॥ जेजे पथिक जात मधुवनको तोहि सों व्यथा कहति पँयन परि। कहे न प्रगट करौ यदुपति सों दुसह दोषकी अवधि गई ढरि॥ धीर न धरत प्रेम व्याकुल मन लेत उसास नीर लोचन भरि। सूरदास तनु थकित भयो अति इह वियोग सायर नसकत तरि॥ ७०॥ सारंग॥ मधुकर अब भयो नेह विरानी। बाहर हेत हातो कहवावत भीतर काज सयानी॥ ज्यों शुक पिंजर माहँ उचारत ज्यों ज्यों कहत बखानी। छूटतही उडि मिले अपुन कुल प्रीत न पल ठहरानी॥यद्यपि मन नहिं तजत मनोहर तदपि कपटी जानी। सूरदास प्रभु कवन काजको माखी मधु लपटानी॥ ७१॥ सोरठ॥ हरिते भले सुपति सीताको। जाके विरह जतन ए कीने सिंधु कियो नीताको॥ लंका जारि सकल रिपु मारे देखतही सुखताको। दूत हाथ उन लिखि जो पठयो ज्ञान कह्यो गीताको॥ तिनको कहा परेखो कीजै कुबिजाके मीताको। चढि चढि सेज सातहू सिंधू बिसरी जो चीताको॥ करि अति कृपा योग लिखि पठयो देखो डराइताको। सूरदास प्रभु हम कहा जानैं अब लोभी वनिताको॥ ७२॥ नट॥ ऊधो हम ब्रजनाथ विसारी। जबते गमन कियो मथुराको चितवत लोचन हारी॥ महाप्रलय तब काहेको राखी इंद्र त्रास भवटारी। छूटत नहीं त्रास हृदयते तब न मुई अब मारी॥ अवधि वदी हरि ते सब वीते आवन कहि जो सिधारी। सूरदास प्रभु कबधौं मिलैंगे लैगए प्राण हमारी॥ ७३॥ मलार॥ प्रीति उन देखनको उत जानत। तौ यों बात कहत अलि ऐसे व्यथा नहीं पहिचानत॥ जे गोपाल गृह गृह ब्रजमें ते चोर दूध दधि खात। ते अब दुखित देखि ब्रजवासिन निठुर भएते जात॥ सूर कुटिलता जे सुनियतहै लोग पुराणनि गावत। नख शिखलों विषरूप बसतपै मधुवन नाम कहावत॥ ७४॥ तू अलि बात नहीं कहि जानत। निर्गुण कथा बनाइ कहत नाहिं विरह व्यथा उर आनत॥ प्रफुलित कमल देखि उठि धावत सब कुल संग लिए। और सुमन सौ बंधु याचतहौ फाटि नजात हिए॥ चातक स्वाति बूंद जो ग्राहक सदा रहत इकरूप। कहा जानै दादुर जलपैरत सागर औ सम कूप॥ बात कहौ सहि ऐसी जासों जाके जिय तुम भावहु। सूर वचन जैसो उपदेशत तैसोही तुम पावहु॥ ७५॥ ॥ सारंग॥ कुटिल बिनु और न कांइ आवै। तौ ब्रजराज प्रेमकी बातैं ताके हाथ पठावै॥ प्रीति

पुरातन सुमिरि सांवरे सुरति सँदेशो दीनी। तैं अलि कहत औरकी औरै श्रुति मतिकी उर लीनी॥ येहो सखा कहे नहिं मानत गहे योगकी टेक। ऐसे सूर बहुत मधुवनमें कहा दोपहै एक॥ ७६॥ धनाश्री॥ बतिअन सबकोऊ समुझावै। ऐसो कोउ नाहिनै प्रीतम लै व्रजनाथ मिलावै॥ आयो दूत कपटको वासी निर्गुण ज्ञान बतावै। हमारे सखा श्याम मनोहर नैनन भरि न देखावै॥ ज्ञान ध्यानको मर्म नजाने चतुरहि चतुर कहावै। सूरदास सबै काहूको अपनो ही हित भावै॥ ७७॥ मलार॥ ऊधो क्यों बिसरत वह नेह। हमरे हृदय आनि नँदनंदन रचि रचिं कीन्हे गेह॥ एक दिवस गई गाइ दुहावन तहां जो वरषो मेह। लिये वोढाय कामरी मोहन निजकरि मान्यो देह॥ अब हमको लिखि लिखि पठवत है योग युक्ति तुम लेहु। सूरदास विरही क्यों जीवै कौन सयानप येहु॥ ७८॥ ऊधो नंदको गोपाल गिरिधर गयो तृण जो तोर। मीन जलकी प्रीति कीनी नाहिं निवही वोर॥ अबके जब हम दरश पावैं देहिं लाख करोर। हरिसों हीरा खोइकैहौं रहि समुंद्र डडोर॥ ऊधो हमारो कछु दोष नाहीं वै प्रभु निपट कठोर। हौं जपौं तुम नाम निशि दिन जैसे चंद्रचकोर॥ हम दासी बिनमोलकी ऊधो ज्यों गुड्डी वश डोर। सूरके प्रभु दरशदीजे नहीं मनसा और॥ ७९॥ सोरठ॥ ऊधो अबरै कान्ह भए। जबते यह व्रज छांडि मधुपुरी कुबिजा धाम गए॥ कै वह प्रीति रीति गोकुलवसि दुख सुख प्रीति निवाहत। अब इह करत वियोग देह द्रुम सुनत काम दव डाहत॥ जहां स्वारथ हरि गुण सांवरो निर्गुण कपट सुनावत। सूर सुमिरि व्रजनाथ आपने कत न परेखो आवत॥ ८०॥ मारू॥ ऊधो जो तुम हमहिं बतायो। सो हम निपट कठिनई करि करि या मनको समुझायो॥ योग याचना जबहिं अगहगहि तबहीं है सो ल्यायो। भटक पर्यो वोहितके खग ज्यों फिरि हरिहींपै आयो॥ अबकैतौ सोई उपदेशो जेहि जिय जाइ जिआयो। बारक मिलैं सूरके प्रभु तौ करौं आपनो भायो॥८१॥ धनाश्री॥ ऊधो मन मानेकी बात। दाख छोहारा छाँडि अमृतफल विषकीरा विषखात॥ जो चकोरको देइ कपूरकोउ तजि अंगारहि अघात। मधुप करत घरकोरे काठमें बँधत कमलके पात॥ ज्यों पतंग हित जानि आपनो दीपक सों लपटात। सूरदास जाको मन जासों सोई ताहि सुहात॥ ८२॥ सोरठ बातें कहत सयाने कीसी। कपट तिहारे प्रगट देखिअत ज्यों जलना ऐसीसी॥ होंतो कहति तिहारे हितकी एतेमो कत भरमति। छाइ बसाइ गए सुफलकसुत नेकहु लागी वारन। सूर कृपाकरि आए ऊधो तापर लगे टारन॥ ८३॥ बिलावल॥ ऊधो हम ऐसे गोपाल विनु। सबहींये जैसे हरु ओ तिनु॥ सोचत गनत जाइ यहि विधि दिनु॥युगनिशि होत हमहिं एकौ छिनु॥कहियो सूर संदेश श्याम तिनु। जिनि राखो प्रभु पोच वचन ऋनु॥ हरि कित भये व्रजके चोर। तुम्हरे मधुप वियोग उनके मदनकी झकझोर॥इक कमल पर धरैं गज रिपु एक कमल पर शशिरिपुजोर। दोऊ कमल एक कमल ऊपर जगो एकटक भोर॥इक सखी मिलि हँसति पूछति खैंचि करकी कोर। तज सुवाइ सु भखत नाहीं निरखि उनकी ओर॥ विरस रासनि सुरति करि करि नैन बहुजल तोरि तीन त्रिवली मनो सरिता मिली सागर छोर॥ पट रुंध अधरानि माल ऊपर अजयारिपुकी घोर। सूर अबलनि मरत ज्यावो मिलो नंदकिसोर॥८५॥सारंग॥मधुकरतोहिं कौनसों हेतु।जोपै चढत रँगतौऊपर त्यों पै होव श्यामता सेतु॥मोहन मणिनिडार मोलीते करि आए सुखप्रीति।अतिशठ ढीठ बसीठ श्यामको हमैं सुनावत गीति॥जो कारिख तनु मोटो चाहत तो कमल वदन तनु चाहि। सूर गोपाल सुधारसमें मिलि आवन संग समाहि॥८६॥ गूढ़॥ ऊधो सुनौ वृथा तनुतात।

पारधीमारि भाल क्यों काढे है उरझी हृदयगात॥ ऐसे वधिक मृगन मारनको माथे बांधे पात। सुंदरश्याम नाद वंसीके बँधी काम शर घात।यहतौ पीर विरहिनी जानै बहुत जियै दिनसात। सूर अबै न आपने जानै क्यों पूँछै कुशलात॥ ८७॥ नट॥ जौपै मोहि कृष्ण जिय भावहि। तो सुन मधुप यशोदानंदन अबहीं गोकुल आवहि॥ जिन नैनन मोहन मुख निरख्यो निशिदिन रूप विचारयो। ते नैना जो रहत सूनेगृह प्रीति न हृदय विदारयो॥जेहि तनु आसन शयन संग सुख हरि समीप रुचिमानी।जिहि तनु विरह न छूटत सुमिरि गुण नेकहु व्यथा न जानी॥जिनि श्रवणन सुनि वचन मनोहर मुरली कलमुखवाजति।तिन श्रवणन हरि सुनत मधुपुरी देतसँदेशनलाजति॥ अतिप्रचंड यह अंड महाभट जाहि सबै जग जानत। सोमदहीन दीनह्वै वपुको कोपि धनुष शर तानत॥सर सौरभ शशि अनिल त्रिविध गुण वैसिय प्रकृति निवाहत। विषम विरह निज जानि मानिमिति तौ या तनुहि नदाहत॥ बन विलास ब्रजबास रास रस देखि देखि दुख पावत। सूरदास बहुरौ वियोग गति कुकवि निलजह्वै गावत॥८८॥धनाश्री॥ अब हरि औरहि रगराचे।तुम सम सखा श्यामसुंदरके परम सयानप काचे॥ बालापनते निकट रहतही सुन्यो न एक पखानो। जैसे वास वसतहै कोऊ तैसो हो तुम सयानो॥ अरु अपने मुख तुम जु कहतहो प्रभु सबही भरिपूर। आवा गमन करतहौ कापै को लागत को दूर॥अरु उपमा पटतर लै दीजे ते सब उनहिंन लायक। जोपै अलख रह्यो चाहत तौ वादि भए ब्रजनायक॥ अरु जो जतन करहुगे हमको ते सब हमहिं अलेखैं। सूर सुमनसा तव सुख मानै कमलनैन मुख देखैं॥८९॥ मलार॥ हरिविनु जान लगे दिनहीं दिन। कैसेकै राखैं प्राण कान्ह विन॥करत जतन कतहि छिनही छिन। सिंह कैसे जीभ धरे हरे तृन जोपै नाहीं मानत प्रभुवचनऋन। तौ का कहिए सूरश्याम सिन॥९०॥ अब कोउ ऐसी बात कहो। छांडहु सकुच मिलहु नँदनंदन हितकरि दुखन दहो॥तुम प्रभु समाधानके कारण पठए कहन सँदेश। अधिक आय आरति उपजाई मेटहु विरह कलेश। इक तुम निकट रहत उनके अरुजानत सकल सुभाइ। सोई करहु प्रगट दरशनजेहि वेगि मिलैं यदुराइ॥ हम किंकिरी कमललोचनकी वशकीनी मृदुहास। सूरदासजी क्यों विसरतहैं नख शिख अंग प्रकाश॥९१॥ इहै प्रकृति परिआई ऊधो अनुदिन या मन मेरे। जो कोउ कोटि जतन करौ कैसेहुँ फिरत नहीं माति फेरे॥ जादिनते यशुदा गृह जनमे सुंदर यादवराई। तादिनते वा दरश परस विनु और न कछू सुहाई॥ क्रीडत हँसत कृपा अवलोकत छिन समान दिन जाते। परमतृप्ति सबही अँग होती लोचन पै न अघाते॥जागत सोवत स्वप्न श्याम घन सुंदर तनु अति भावै।सुकहि सूर ता कमलनयन विन बातन क्यों वनिआवै॥९२॥ ऐसी नियत हृदये माँह। याही में सब वात बूझवी चतुर शिरोमणि नाह॥ आवन कह्यो बहुत दिन लायो करी पाछिली गाह। हमहिं छांडि कुविजहि मन दीनों मेटि वेदकी राह॥ एते पर लिखि योग पठावत सिद्ध वतावत थाह। सूरश्याम अब ब्रज कित आवहु दिनदश मानहु साह॥९३॥यहि डर बहुरि न गोकुल आए।सुनरी सखी हमारी करनी समुझि मधुपुरी छाए॥ आधीरातके उठि बालक सब मोहिं जगैहै आइ। विन पह्लव वन बहुरि पठैहै मोहिं चरावन गाइ॥ सूने भवन जाइ रोकत हो अध चोरत नव नीत। पकरि यशोदा पै लइ जैहैं नाचहु गावहु गीत॥जानो मोहिं बहुरो बांधेगी कै तव वचन सुना इ। वैदुख सुमिरि सूर मनहीं मन बहुरि सहैको जाइ॥९४॥ ऊधो वेदवचन परमान। कमल मुख पर नैन खंजन निरखि है को आन॥ श्रीनिकेत समेत सब सुख रूप प्रगट निधान। अधर सुधा

पिशाइ बिछुरे पठै दीनो ज्ञान॥ए नहीं हैं कृपालु केशव एहैं हिए समान । निकरि क्यों न गोपाल बोलत दुखिन के दुखजान ॥ रूप रेख न देखिए तहां मूठ सुमिरि भुलान । इनहि दंड अड़ारि हरि गुण योगजान बखान ॥ वीतराग सुजान योगिन भक्त जनन निवास । निगमवाणी मेटि कहि क्यों सकै सूरजदास ॥ ९५ ॥ आवन आवन कहि गए पै ऊधो अजहूं नांहि आए । इतनी दूरि गोपाल सँदेशन मधुपन दये पठाए॥ चलत चितैं मुसकाइ कै मृदु वचन सुनाए । तेही ठग मोदक भए मनधीर नहरि तन छूछो छिटकाए ॥ जगमोहन यदुनाथके गुण जानिहुपाए । मनहु सूर यहि लाजते घनश्याम सुंदर वर बहुरि न चरण देखाए ॥९६॥ माधो मन मर्याद तजी । ज्यों गज मत्त जानि हरि तुमसों बात विचारि सजी ॥ माथे नहीं महावत सतगुरु अंकुश ध्यान कर टूटो । धावत अध अवनी आतुर तजि साकर सगुण सुछूटो ॥ इहै यूथ संग लए विहरत त्रिया काननहु माहिं । क्रोध सोच जल सों रतिमानी कामभक्ष हित जाहिं ॥ अयुत अधार नहीं कछु समुझत भ्रम गहि गुहारहै । सूरश्यामके हरि करुणामय कवनहि विरदु गहै॥ ९७ ॥ नट ॥ सखीरी पुरवानि ता हम जानी । याहीते अनुमान करतहैं पटपदसे अगवानी ॥अवतौ राज तहां सुनियतहै कुवि जासी पटरानी । प्रथम ग्वाल गाइन सँग रहते भए छाँछके दानी ॥ अर्ध निशा व्रजनारि संगलै वनवंसी लीला ठानी । मन हरिलियो बजाइ बाँसुरी अब होइ बैठे ज्ञानी ॥ महामल्ल मारत मन मोहन नाहीं समता आनी । सूरदास ए कलपतनैना कहै कौन अब वानी ॥९८॥ बिलावल ॥ जिन कोई वशपरो वरिआए । सरवस दियो आपनो उनको तऊ न कछू कान्हके भाए ॥ सहज समाधि रहत योगी ज्यों मुद्रा जटा विभूति लगाए । राजकरौ इह दान तिहारो जोपै देहु बहुत हरिध्याए ॥ ना जानौं अबभलो मानिहै ऊधो नाचे गाए।सूरदास प्रभु दरशन कारण मानो फिरत धतूराखाए॥ ॥९९॥ मलार ॥ जोपै कोउ विरहिनको दुखजानै । तो तजि सगुण साँवरी मूरति कत उपदेशै ज्ञानै कुमुद चकोर मुदित विधु निरखत कहा करै लै भानै ॥ चातक सदा स्वातिको सेवक दुखित होत विनपानै॥भवँर कुरंग काक कोयलको कविजन कपट बखानै।सूरदास जो सरवस दीजै कारे कृतहि न मानै ॥३४००॥मलार॥ श्यामविनु क्यों जीवैं व्रजवासी । इहि घट प्राण रहत क्यों ऊधो बिछुरे कुंजविलासी ॥ कुविजा वर पायो मोहनसों मनो तपकियो काशी।सूरश्यामको इहै परेखो इ क दुख दूजी हांसी॥१॥ गौरी ॥ ऊधो कैसे जीवैं कमलनैन विनु । तबतौ पलक लगत दुख पावत अब जो निरखि भरिजात अंग छिनु ॥ जो ऊजर खेरेके देवनको पूजै को मानै । तौ हम विनु गोपाल भए ऊधो कठिन प्रीतिको जानै ॥ तुमते होइ करो सो ऊधो हम अवला बलहीन । सूर वदन देखे हमजीवैं ज्यों जलभीतर मीन ॥२॥ धनाश्री ॥ लरिकाईको प्रेम कहो अलि कैसे छूटत । कहा करौं व्रजनाथ चरित अंतर्गति लूटत ॥ वह चितवन वह चाल मनोहर वह मुसुक्यानि मंद ध्वनिगावन । नटवर भेष नंदनंदनको वहविनोद जोबनको आवन॥चरणकमलकी सौंह करतहौं इह संदेश मोहिं विषसों लावत।सूरदास मोहिं पलक नविसरत मोहन मूरति सोवत जागत ॥ ३ ॥ उद्धव वचन धनाश्री ॥ यह उपदेश कह्योहै माधो । करि विचार सन्मुखह्वै साधो ॥ इंगला पिंगला सुषमना नारी । शून्य सहजमें बसहिं मुरारी ॥ ब्रह्मभाव करि मैं सब देखो । अलख निरंजन ही को लेखो ॥ पद्मासन इक मन चित ल्यावो । नैन मूंदि अंतर्गति ध्यावो ॥ हृदयकमलमें ज्योतिप्रकाशी । सो अच्युत अविगति अविनाशी ॥ यहिप्रकार विष मत्त मतरिये । योगपंथ क्रम क्रम अनुसरिए ॥ दुसह सँदेश सुनत व्रजबाला । मुरछि परी धरणी

वेहाला ॥ अरे मधुप लंपट अनिआई । यह संदेश कत कहैं कन्हाई ॥ नंदभवनमें सदाविराजै नटवर भेप सदा हरि राजै ॥ रासविलास करैं वृंदावन । विच गोपी विच कान्ह श्यामवन ॥ अलि आयोहै योग सिखावन । देखिप्रीति लागे शिरनावन ॥ भवँरगीत जो दिन दिन गावै ॥ ब्रह्मानंद परमपद पावै ॥ सूर योगकी कथा वहाई । शुद्ध भक्ति गोपी जन पाई ॥ सांचो मतो जो जिहि विधि धावै । तैसो भाव हरि हिय भारि पावै ॥ ४ ॥ अथ गोपी वचन धनाश्री ॥ इहां हरि जी बहु क्रीडा करी । सोतो चितते जात न टरी ॥ इहां पय पीवत वकी संहारी । शकट तृणावर्त इहां हरि मारी ॥ वत्सासुरको इहां निपात्यो । वका अघा इहां हरिजी घातो ॥ हलधर मारयो धेनुकको इहां । देखोऊधो हत्यो प्रलंब जहां ॥ इहांते ब्रह्मा हमको गयो हरि । और किए हरि लगी न पलक घरि ॥ ते सब राखे संपाति नरहरि । तव इहां ब्रह्मा आय स्तुतिकरि ॥ इहां हरि काली उर्ग निकास्यो । लगेव जरावन अनल सो नाश्यो ॥ वस्त्र हमारे हरि जु इहां हरि । कहां लगि कहिए जे कौतुक करि ॥ हरि हलधर इहां भोजन किए । विप्रातियनको अति सुख दिए ॥ इहां गोवर्धन कर हरि धारयो । मेघ वारिते हमैं निवारयो ॥ शरद निशामें रास रच्यो इहां सो सुख हमपै वरण्यो जात कहां ॥ वृषभ असुर कों इहां संहारयो । भ्रुम अरु केशी इहां पछारयो ॥ इहँ हरि खेलत आंखि मुचाई । कहां लगि वरनैं हरिलीला गाई ॥ सुनि सुनि ऊधो प्रेम मगन भयो । लोटत धर पर ज्ञान गर्व गयो ॥ निरखत ब्रज भूमि अति सुखपावै । सूर प्रभूको पुनि पुनि गावै ॥ ५ ॥ धनाश्री ॥ ऊधो जो कारि कृपा पाउँ धरत हरि तौ मैं तुमहिं जनावों । मौन गहे तुम बैठि रहोहो मुरली शब्द सुनावों ॥ अवहिं सिधारे वन गोचारन हो वैठी यश गावों । निशि आगम श्रीदामाके संग नाचत प्रभुहि देखावों ॥ को जानै दुविधा संकोचमे तुम डर निकट नआवें । तव इह द्वंद्व वढै पुनि दारुण सखियन प्राण छोडावें ॥ छिन नरहैं नंदलाल इहां विनु जो कोउ कोटि सिखावै । सूरदास ज्यों मनते मनसा अनत कहूं नहिं धावै ॥ ६ ॥ पुनिउद्धववचन ॥ सारंग ॥ मैं ब्रजवासिनकी बलिहारी । जिनको संग सदाहै क्रीडत श्री गोवर्द्धन धारी ॥ किनहूके घर माखन चोरत किनहूंके संगदानी । किनहूंके संग धेनु चरावत हरिकी अकथ कहानी ॥ किनहूंके सँग यमुनाकेतट वंसी टेर सुनावत । सूरदास वलि वलि चरणनकी इह सुख मोहिं नित भावत ॥ ७ ॥ सारंग ॥ हों इहि मोरनकी वलिहारी । वलिहारी वा वांस वंशकी वंसीसी सुकुमारी । सदा रहतहै करज श्यामके नेकहु होत नन्यारी ॥ वलिहारी वा कुंजजातकी उपजी जगत उजियारी । सदा रहत हृदय मोहनके कवहूं टरत नटारी ॥ वलिहारी कुल शैल सर्व विधि कहत कालिंदि दुलारी । निशि दिन कान्ह अंग आली गण आपुनहूं भई कारी ॥ वलिहो वृंदावनके भूमिहि सोतो भागकि सारी । सूरदास प्रभु नांगे पाँयन दिनप्रति गैयाचारी ॥ ८ ॥ ॥ अथ गोपी वचन ॥ मारू ॥ अलि तुम जाहु फिरि वहि देश । चीर फारि करिहौं भगौंहौं शिखनि शिखि लवलेस । भाल लोचन चंद्र चमकनि कठिन कंठहि सेस ॥ नाद मुद्रा विभूति भारो करौं रावर भेस । वहां जाइ सँदेश कहियो जटा धारैं केश । कौन कारण नाथ छांडी सूर इहै अँदेश ॥ ॥ ९ ॥ मलार ॥ हमपर हेतु किए रहिवो । वा ब्रजको व्यवहार सखा तुम हरिसों सव कहिवो ॥ देखे जात अपनी इन अँखिअन या तनको दहिवो । वरनौं कहा कथा या तनुकी हिरदैकों सहिवो ॥ तव न कियो प्रहार प्राणनिको फिरि फिरि क्यों चहिवो । अव नदेह जरिजाइ सूर इन नैननको वहिवो ॥ १० ॥ अपने जिय सुरति किए रहिवो । ऊधो हरिसों इहै वीनती समो पाइ कहिवो ॥ चोंप वसतकी चूक हमारी कछू न चित गहिवो । परमदीन यदुनाथ जानिकै गुण विचारि

सहिवो ॥ अंवकीवेर दयालु दरशदे दुखकी राशि दहिवो । सूरश्याम हम कहैं कहाँ लग वचन लाज वहिवो ॥ ११ ॥ कल्याण ॥ यदुपतिको संदेश सखीरी कैसेकै कहौं । विनहीं कहे आपनेहि मनमें कबलग शूल सहौं ॥ जो कछु बात बनाऊं चितमें रचिं पचि सोचि रहौं । मुख आनत ऊधो तन चितवत नवहु विचार वहौं ॥ सो कछु सीख देहु मोहिं सजनी जाते धीर गहौं । सूरदास प्रभुके सेवकसों विनती कारि निवहौं ॥ १२ ॥ विलावल ॥ कर कंकनते भुज ठाढ भई ॥ मधुवन चलत श्याम मनमोहन आवन अवधि जु निकट दई ॥ जो अति पंथ मनावत शंकर निशि वासरमो गनत गई । पाती लिखत विरह तनु व्याकुल कागरह्वै गयो नीर मई । ऊधो मुखके वचनन कहियो हरिकी शूल नितप्रति नई । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको विरह वियोगिनि विकल भई ॥ १३ ॥ कल्याण ॥ कहियो मुख संदेश हाथलै दीजो पाती । समयपाइ ब्रजबात चलावी सुखही माँझ सुहाती ॥ हम प्रतीत करि सरवस अरप्यो गन्यो नहीं दिनराती । नँदनंदन यह जुगत नहोई लैजु रहे मनु थाती ॥ जो तव साधि दीजतौ कोऊ तो अब कत पछताती । सूरदासप्रभु मुकुर जानती तौ सँगलीन्हें जाती ॥ १४ ॥ धनाश्री ॥ ऊधो नँद नंदनसों इतनी कहियो । यद्यपि ब्रज अनाथ करि डारचो तदपि सुरति चित किये रहियो ॥ तिनकी तोर करहु जिनि हमसों एक वीसकी लाजानि वहिवो । गुण अवगुणन देखि नाहिं कीजतु दासन दासकी इतनी सहियो ॥ तुम विनप्राण त्याग हम करिहैं यह अवलंब न सुपनेहुलहियो । सूरदास प्रभु लिखिदे पठयो कहां योग कहां पियनंदहियो ॥ १५ ॥ नट ॥ ऊधो इतनी जाइ कहो । सबै विरहिनी पाँइ लागति हैं मथुरा कान्हरहो ॥ भूलिहु जिनि आवहिं यहि गोकुल तप्त रैनि ज्यों चंद । सुंदर वदन श्याम कोमलतनु क्यों सहिहैं नँदनंद ॥ मधुकर मोर प्रबल पिक चातक वन उपवन चढि बोलत । मनहुँ सिंहकी गर्ज सुनत गो वत्स दुखित तनु डोलत ॥ आसन भये अनल विष अहि सम भूषण विविध विहार । जित जित फिरत दुसह द्रुम द्रुम प्रति धनुष धरे मनुमार ॥ तुमहो संत सदा उपकारी जानतहौ सव रीति । सूरदास ब्रजनाथ बचै तौ ज्योंनहिं आवै ईति ॥ १६ ॥ मलार ॥ मधुकर इतनी कहियहु जाइ । अति कृश गात भईए तुम विनु परमदुखारी गाइ ॥ जलसमूह वरषति दोउ आँखैं हूँकाति लीने नाउँ । जहां तहां गोदोहन कीनों सूंघति सोई ठाउँ ॥ परति पछार खाइ छिनहीं छिन अति आतुरह्वै दीन । मानहु सूर काढिडारीहै वारि मध्यते मीन ॥ १७ ॥ नट ॥ तुम विनु हम अनाथ ब्रजवासी । इतनो सँदेश कहियो ऊधो कमलनैन विनु त्रासी ॥ जादिन ते तुम हमसों विछुरे भूख नींद सव नासी । विह्वल विकल कलहू न परत तनु ज्यों जल मीन निकासी ॥ गोपी ग्वाल वाल बृंदावन खग मृग फिरत उदासी । सवई प्राण तज्यो चाहतहैं को करवत को कासी ॥ अंचर जोरे करत वीनती मिलि वेको सवदासी । हमरो प्राणघातह्वै निवरैं तुम्हरे जाने हासी ॥ मधुकर कुसुम न तजत सखीरी छाँडिसकल अविनाशी । सूरश्याम विन यह वन सूनो शशि विनु रैनि निरासी ॥ १८ ॥ धनाश्री ॥ सवै करति मनुहारि ऊधो कहियो हो जैसे गोकुल आवै । दिन दश रहे सुभली कीन्ही अव जनि गहरु लगावै ॥ नहिंन सोहात कछू हरि तुम विनु कानन भवन न भावै । धेनु विकल सो चरत नहीं तृण वछा न पीवन धावै ॥ देखत अपनी आंखि तुमहिं तन और कहा वात न समुझावैं ॥ सूरदास प्रभु कठिन हीन तन कत अब वै ब्रजनाथ कहावैं ॥ १९ ॥ गौरी ॥ ऊधो हरि वेगहि देहु पठाइ । नंदनंदन दरशन विनु रटिमरौं ब्रज अकुलाइ ॥ मातु यशुमति सहित ब्रजपति परे धरणिमुरझाइ । अति विकल तनु

प्राणत्यागत करै कछु गति आइ॥ सकल सुरभी यूथ दिनप्रति रुदति पुर दिश धाइ। जहांजहां दुहि वन चराई मरति तहां बिललाइ॥ परमप्यारी शरद राधिका लई गृह दुख छाइ। तजत चक्र नवक्र चखविनु करै कोटि उपाइ॥ योगपदलै देहु योगिहि हमहिं योग मिलाइ। मधुप बिछुरे वारि मीनहि अनत कहा सोहाइ॥ आजु जेहि विधि श्याम आवैं कहो तेहिविधिजाइ। सूरदास विरह ब्रज जन जरत लेहु बुझाइ॥ २०॥ जैतश्री॥ अति मलीन वृषभानु कुमारी। हरिश्रम जल अंतर तनु भीजे तालालच मधु आवत सारी॥ अधोमुख रहति ऊरध नाहिं चितवति ज्यों गथहारे थकित यूथ अरी। छूटे चिहुर वदन कुम्हिलाने ज्यों नलिनी हिमकरकी मारी॥ हरि सँदेश सुनि सहज मृतक भई एक विरहिनि दूजे अलिजारी। सूरश्याम विन यों जीवितिहै ब्रजवनिता सब श्यामदुलारी॥ २१॥ सारंग॥ ऊधो देखेही ब्रजजात।जाइ कहियो श्याम सों यों विरहके उतपात॥ नैनन कछू न सूझई अरु श्रवण कछू नसोहात। श्याम विन सब ब्रजहि सूनो दुसह सर वन घात॥ आइवौ तौ आइधौं हरि बहुरि शरीर समात। सूरप्रभु पछिताहुगे तुम अंतहू गए गात॥२२ मलार॥ हरिजीसों कहियो हो जैसे गोकुल आवहिं। दिन दशरहे भली कीनी वहा अब जिनि गहर लगावहिं॥नाहिंन कछू सुहात तुमहिं विनु कानन भवन नभावहि।वाल विलख मुख गौ न चरति तृण वछ पय पियन न धावहि॥ देखत अपनी अँखिअन ऊधो हम कहि कहा जनावहिं। सूरश्याम विन तपत रैनि दिन मिले भलेहि सचुपावहिं॥ २३॥ विहागरो॥ ऊधो तुमहिं श्यामकी सौंहै। मुख देखत कहियो तुम उनसों जित तित लगी मदनकी दौंहै॥ जो मन योग जुगुति आराधै सो मनतो सबको उनपैहै। जैसे वसन तजतहैं पंगन सोगति कान्ह करी हमकोहै॥ हम वावरी त्यों नचलि जान्यो ज्यों जग चलत आपनी गोंहै। सूरदास कपटी चित माधो कुविजा मिलि कपटी की खोंहै॥२४॥ केदारो॥ ऊधो एक मेरी बात। बूझियो हर वाइ हरिस्यों प्रथम कहि कुशलात॥ तुम जो इह उपदेश पठायो आनि योग मन ज्ञान। सत्यहू सब वचन झूंठो मानिये मन न्यान॥और ब्रज कहि दूसरोहू सुन्यो कहा बलवीर।जाहि बरजन इहां पठयो करि हमारी पीर॥आपु जबते गए मथुरा कहत तुमसों लोग। सहजही तादिवसते हम भूलियो भय भोग॥ प्रगट पति पितु मात प्रभु जन प्राणतुम आधीन। ज्योंचकोरहि संग चकोरी चित्तचंदहि लीन॥ रूप रसन सुगंध परसन रुचि न इंद्रिन आन॥ होति हौंस न ताहि विषकी कियो जिन मधुपान। ह्वैगयो मन आपुही सब सगुन तगुन गणईश। ज्ञानकी अज्ञान ऊधो तृणतोरि दीजै शीश॥ बहुत कहा कहैहि केशो राइ परम प्रवीन। सूर सुमत न छाडिहै जहां जीवत जल विन मीन॥२५॥सारंग॥मधुकर कहियो सुचित सँदेशो। समै पाइ समुझाइ श्यामसों हम जिय बहुत अँदेशो॥ एक वार रसरास हमारे मुरली मनजो हरेसो। तव उन वेणु बजाइ बोलाई अब निर्गुण उपदेशो॥ और वार उनि योग जुगतिको भेद नकहो परेसो। तव पतिव्रत तुम करन कहत अब उखरो ज्ञान गडेसो॥ और कहालौं हम कहैं ऊधो अबलनको दुख ऐसो। सूरदास इन पर हँसि मरियतु कुविजाके सब कैसो॥२६॥ पुनः ऊधो वचन॥ रागनट॥अब अति चकित वंत मन मेरो।आयो हों निर्गुण उपदेशन भयो सगुनको चेरो॥ मैं कछु ज्ञान कह्यो गीताको तुमहि नपरहो नेरो। अति अज्ञान जानिकै अपनो दूतभयो उनकेरो॥ निज जन जानि हरि इहां पठायो दीनो बोझ घनेरो।सूर मधुप उठि चले मधुपुरी बोरि योगको बेरो॥ ॥२७॥ गोपीवचन॥ केदारो॥ ऊधो तिहारे मैं चरणनलागौं वारक यहिब्रज करियो विभावरी। निशि न नींद आवै दिवस नभोजन भावै चितवत मगभई दृष्टि झावरी॥ एकश्याम विन कछू नभावै

रटत फिरत जैसे बकत बावरी। या वृंदावन सघन श्याम बिनु तहां यमुना बहै सुभग सांवरी लाज नहोति उहै चालिजाति चलि नसकति आवै विरह तावरी। सूरदास प्रभु आनि मिलावहु ऊधो कीरति होइ रावरी॥२८॥ अथयशोमति संदेशउद्धवमति ॥ धनाश्री ॥ऊधो तिहारे पाँइ लागतिहौं कहियो श्यामसों इतनी बात इतनी दूर वसत क्यों बिसरे अपनी जननी तात॥जादिनते मधुपुरी सिधारे श्याम मनोहर गात। तादिनते मेरे नैन पपीहा दरश प्यास अकुलात॥जहां खेलनको ठौर तुम्हारे नंद देखि मुरझात॥जो कवहूं उठिजात खरिकलौं गाइ दुहावन प्रात॥दुहत देखि औरनके लरिका प्राण निकसि नाहिं जात। सूरदास बहुरो कब देखों कोमल कर दधिखात॥२९॥ मलार ॥ तब तुम मेरे काहेको आए। मथुरा क्यों नरहे यदुनंदन जोपै कान्ह देवकी जाए॥ दूध दहां काहेको चोरयो काहेको बन गाइ चराए। अघ अरिष्ट काली नहिं काढ्यो विष जलते सब सखा जिआए। सूरदास लोगनके भोरए काहे कान्ह अब होत पराए॥३०॥ सोरठ॥ ऊधो हम ऐसे नाहिं जानी। सुतके हेत मर्म नहिं पायो प्रगटे सारँगपानी॥ निशि बासर छातीसों लाई बालकलीला गाइ। ऐसे कबहूं भाग होहिंगे बहुरो गोद खेलाइ॥ को अब ग्वाल सखा संग लीन्हे सांझ समै ब्रज आवै। को अब चोरि चोरि दधि खैहै मैया कवन बोलावै॥ विंदरत नाहिं वज्रकी छाती हरि वियोग क्यों सहिए। सूरदास अब नँदनंदन बिनु कहो कौन विधि रहिए॥३१॥ धनाश्री ॥ ऊधो जो अब कान्ह न ऐहैं।जिय जानो अरु हृदय विचारो हम अतिही दुख पैहैं॥ पूँछो जाइ कवनको ढोटा तब कहा उत्तर दैहैं॥ खायो खेले संग हमारे याको कहां वतैहैं॥ गोकुल अरु मथुराके वासी कहां लौं झूठे कैहैं। अब हम लिखि पठयो चाहत हैं उहां पत्त नाहिं पै हैं॥इन गायन चरवो छाँडो है जो नाहिं लाल चरै हैं॥इतने पर नाहिं मिलत सूरप्रभु फिरि पाछे पाछितैहैं॥३२॥सारंग॥ तवते छीन शरीर सुभाहु॥आधो भोजन सुबल करतहै ग्वालनके उर दाहु॥ नंद गोप पिछवारे डोलत नैनन नीर प्रवाहु। आनँद मिट्यो मिटी सब लीला काहु न मन उतसाहु॥ एक वेर बहुरो ब्रज आवहु दूध पतूखी खाहु॥सूर सुपथ गोकुल जो बैठहु उलटि मधुपुरी जाहु॥३३॥नट॥कहियो यशुमतिकी आशीश॥जहाँ रहो तहां नंदलाडिलो जीवो कोटि वरीस॥मुरली दई दोहनी घृत भरि ऊधो धरि लई शीश। इह घृत तौ उनहीं सुरभिनको जो प्यारी जगदीश॥ ऊधो चलत सखा मिलि आए ग्वाल बाल दश बीश। अबके इहां ब्रज फेरि बसावो सूरदासके ईश॥३४॥ अथ सखा वचन ॥ बिलावल॥ ऊधो देखतहो जैसे ब्रजवासी। लेत उसास नैन जल पूरित सुमिरि सुमिरि अविनासी॥ भूलि न उठत यशोदा जननी मनो भुअंगम डासी। छूटत नहीं प्राण क्यों अटके कठिन प्रेम की फासी॥ आवत नहीं नंद मंदिरमें बछ्यो फिरत पनियासी प्रेमनमिले धेनु दुर्बल भई श्याम विरहकी त्रासी॥ गोपी ग्वाल सखा बालक सब कहूं न सुनियत हासी। काहे दियो सूर सुख में दुख कपटी कान्ह लवासी॥३५॥उद्धववचन ॥ सारंग॥धन्य नंद धन यशुमति रानी। धन्य कान्ह प्रकटे सुखदानी॥ धन्य ग्वाल धन्य धन्य जेहि गोद खेलाए। धन्य ब्रज भूमि धन्य वृंदावन जहां अविनाशी आए॥ धन्य धन्य सूर आजु हमहूं जो तुम सब देखे आए॥३६॥ अथ दूसरी लीला॥भवँर गीत ॥ गोपी वचन आसावरी ॥ छंद त्रिभंगी॥ हरि रथ रतन जर्यो अनूप दिशाते आवै। जेहि मग कृष्ण गयो तेहि मगते दर्शावै॥ वै मगते आवै सखन बोलावै देखो नैन विचारी। मुकुट कुंडल तनु पीत बसन कोउ गोविंदकी अनुहारी॥ वैतो भूपण परखन लागीं तब लगि निअरे आए। ऊधो जिय जानी मन कुँभिलानी कृष्ण संदेश पठाए॥१॥चली

चली पूछें कछु बातैं।कहि कहि ऊधो हरि कुशलातैं॥छंद॥कहि कुशलातैं सांचीबातैं आवन कह्यो हरि नाथै। के गरवाने राजसभा अब जीवत हम न सुहाथै॥ ठाढी तनुकांपै टेरै झांकै वार वार अकुलाइ। अब जिय कछू कपट जिन राखो बूझैं सौंह दिवाइ॥ २॥ कहो ऊधो तुम क्यों व्रज आए।तब हँसि कह्यो हम कृष्ण पठाए॥ छंद॥ कृष्ण पठाये तो व्रज आए कहत मनोहर वानी। सुनहु सँदेशो तजहु अँदेशो हो तुम चतुर सयानी॥ गोप सखा जिय हिय जिन राखो अविगत है अविनासी। मोहन माया वैर नदावा सब घट आपुनिवासी॥ ३॥ ऊधो जिन इह कहो तुम प्रभुकी प्रभुताइ। सुनि जिय अंगहि वह्यो रिसि सही न जाइ॥ रिस सही ना जाइ अंगहि वह्यो अति इह तुमरी चतुराइ दासी कुविजा सेजकी संगत कवन वेद मति पाइ॥ तुमहू भली कहनको आए हमको भली सुवानी। जो कछु वस्तु देखिअत नैननसो क्यों नहिं मनमानी॥ ४॥ गोविंदकी वाणी सब कोइ जानी। परवश भई कहत अब सोई मानी॥ ॥ छंद॥ सब कोइ जानै क्यों मनमानै अब नकछू कहि आवै। जो कछु कुविजाके मनभावै सोइ सोइ नाच नचावै॥ वाको न्याउ दोष सब हमको कर्मरेखको जानै। गोरस देखि जो राख्यो गाहक विधिनाकी गति आनै॥ ५॥ ऊधो कमलनयनसों कहियो जाइ। एक बेर व्रज देखो आइ॥छंद॥ जिहके प्रीति निरंतर मनमें सो मन क्यों समुझावै। शंकर ब्रह्मशेष अरु सुरपति कोउ हरि दर शनपावै॥ वैसे राज विलास कोलाहल घर घर माखन हरई।सूरदास प्रभु मिलत बहुत सुख विरह श्वास कत जरई॥ ६॥ ३७॥ उद्धव वचन॥ भैरव॥ मैं तुमपै व्रजनाथ पठायो। आतमज्ञान सिखावन आयो॥ आपुहि पुरुष आपुही नारी।आपुहि वानप्रस्थ ब्रह्मचारी॥ आपुहि पिता आपुही माता। आपुहि भगिनि आपुही भ्राता॥ आपुहि पंडित आपुहि ज्ञानी। आपुहि राजा आपुहि रानी॥ आपुहि धरती आपु अकासा। आपुहि स्वामी आपुहि दासा॥ आपुहि ग्वाल आपुही गाइ। आपुहि आप चरावन जाइ॥ आपुहि भवँरा आपुहि फूल। आतमज्ञान विना जगमूल॥ राव रंक दूजा नहिं कोई। आपहि आप निरंजन सोई॥ इहि प्रकार जाको मनलागै। जरा मरनसे भवभय भागै॥ योगसमाधि ब्रह्म चित लावहु। ब्रह्मानंद तबहिं सुख पावहु॥ ७॥ गोपी उद्धवमति उत्तर॥ योगी होइ सो योग बखानै। नौधाभक्ति दास रति मानै॥ भजनानंद अली हम प्यारो। ब्रह्मानंद सुख कौन विचारो॥ वतियां रचिपचि कहत सयानी। अँखियाँ हरिके रूप लोभानी॥ व्यावर विथा न वंझा जानै। विन देखे कैसे रतिमानै॥ पुनि पुनि पुनि वोही सुधि आवै।कृष्णरूप विन और नभावै॥ नवकिसोर जेहि नैन निहारयो। कोटि योग वा छविपर वारयो॥ शीश मुकुट कुंडल वनमाला। क्यों विसरैं वे नैन विशाला॥ मृगमद मलय अलक घुंघुरारे। उन मोहन मन हरे हमारे॥ भ्रुकुटी कुटिल नासिका राजै। अरु न अधर मुरली कल वाजै॥ दाडिम दशन दामिनि दुति सोहै मृदु मुसुकान जो तन मन मोहै। चंद्रझलक कंठ मणि मोती। दूर करत उडुगणकी ज्योती॥ कंकन किंकिणि पदिक विराजै। गजगति चाल नूपुर कल वाजै। वनके धातु चित्र तनुकिए। श्रीवत्स चिह्न राजत अतिहिए॥ पीतवसन छवि वरनि न जाई। नखशिख सुंदर कुँवर कन्हाई॥ रूपराशि ग्वालनको संगी। कब देखैं वह ललित त्रिभंगी॥ जोतू हितकी बात बतावै। मदन गोपालहि क्यों न मिलावै॥ ८॥ उद्धववचन॥ जाके रूप वरन वपु नाहीं। नैन मूँदि चितवो चितमाहीं॥ हृदय कमलमें ज्योति विराजै। अनहद नाद निरंतर बाजै॥ इडा पिंगला सुषमन नारी सहज सुतामें वसै मुरारी॥ माता पिता न दारा भाई।

जल थल घट घट रह्यो समाई ॥ इहि प्रकार भव दुख सरितरहू । योगपंथ क्रम क्रम अनुसरहू ॥ ॥ ९ ॥ उत्तर गोपिका ॥ हम ब्रजबाल गोपाल उपासी । ब्रह्मज्ञान सुनि आवै हासी ॥ ब्रजमे योगकथा तैं ल्यायो । मनो कुबिजा कूबर माँह दुरायो ॥ इयाम सों गाहक पाइ देखायो । सो माधो तुम हाथ पठायो ॥ हम अबलाठगी अलप अहीरी । वहां भलो ठग्यो कंसकी चेरी । राम जन्म सीता जो दुराई । भली भई कुबिजा वधूपाई ॥ तब सीता वियोग दुखपायो । अब कुबिजा पाइ हियो सिरायो॥इह नीरस ज्ञान कहा लै कीजै । योगमोट दासी शिर दीजै ॥१०॥ उद्धववचन ॥ वै परब्रह्म अच्युत अविनाशी । त्रिगुणरहित प्रभु धरै नदासी ॥ नहिं दासी ठकुराइनकोई । जहां देखो तहां ब्रह्म है सोई॥अपने औरै ब्रह्महि जानो । ब्रह्म बिना दूजो नहिं मानो॥११॥ गोपिकावचन ॥ खरे करव अलियोग सँवारो । भक्त विरोधी ज्ञान तुम्हारो ॥ कहा होत उपदेशे तेरे । नैन सुवस नाहीं अलि मेरे ॥ हरिपथ जोवै छिन छिन रोवै । कृष्णवियोगी निमिष नसोवै ॥ नँदनंदनको देखेजीवै । योग पंथ याते नहिं पीवै ॥ जब हरि आवैं तब सचपावै । मोहन मूरति कंठ लगावै ॥ दुःसह वचन हमैं नहिंभावै ॥ इह योग कथा वोढ़े कि बिछावै॥१२॥ उद्धववचन ॥ ऊधो कहि कहि धनि ब्रजबाला । जिनके सर्वस मदनगोपाला ॥ मैं जो कही सो आवन नपाई । तुमरे दरशभक्ति निजमाई ॥ तुम मम गुरु मैं दास तिहारो । भक्ति सुनाइ जगत निस्तारो भवँर गीत जो सुनै सुनावै । प्रेम भक्ति गोपिनकी पावै ॥ सूरदास गोपी बडभागी । हरि दरशनकी ढवरी लागी ॥ १३ ॥ ३८ ॥ अथ दूसरी लीला भँवरगीत ॥ गोपीवचन जैतश्री ॥ ऊधोको उपदेश सुनो किन कानदै । निर्गुणसँदेशो श्याम पठायो आनदै ॥ कोउ आवत वोहि वोर जहां नंदसुवन पधारे । सरस वेणुध्वनि होहि मनो आए ब्रजप्यारे ॥ धाये सब गलगाजिकै ऊधो देखे जाइ । लै आए ब्रज राज गृह आनंद उर न समाइ ॥ अर्घ्य आरती तिलक दूब दधि माथेमें दीनी। कंचन कलस भराइ और पारि कर्मा कीनी ॥ गोपभीर आंगन भई जुरि बैठे इकजाति । जलझारी आगे धरे पूँछत हरि कुशलाति ॥ कुशल क्षेम वसुदेव कुशल देवै कुबिजाऊ । कुशल क्षेम अक्रूर कुशल नीके बलदाऊ ॥ पूंछि कुशल गोपालकी रहे सकल गहि पाँइ । प्रेम मगन ऊधो भए पेखत ब्रजके भाइ ॥ मनमे ऊधो कहैं ऐसी बूझिए न गोपालहि। ब्रजके हेतु बिसारि योग सिखवैं ब्रजबालहि ॥ इनकी प्रीति पतंगलौं जारतहै सब देह । वे हरि दीपक ज्योति ज्यों नैक नउनके नेह ॥ तब ऊधो करलै लिखी हरिजूकी पाती । पढ़ी परत नहिं नैक रहे गंभीर करि छाती ॥ पाती बांचि नआवई रहे नयन जल पूरि । देखि प्रेम गोपीनके ऊधो ज्ञान गर्व गयो दूरि ॥ फिरि इत उत वहराइ नीर नैननके शोधे । ठानी कथा प्रबोधि तबहिं फिरि गोप समोधे ॥ जो व्रत सुनि वर ध्यानहीं पावहिं नर अवतार । ते व्रज सिखैं गोपिका देहिं विषय विसार । सुनि ऊधोके वचन रही नीचे कै तारे । मानो मांगति सुधा आनि व्यालनि विषजारे ॥ हम अवला कहा जानई योग युक्तिकी रीति । नँदनंदन व्रत छांडिकै को लिखि पूजै भीति ॥ अगमते अगह अपार आदि अविगत है सोऊ । आदि निरंजन नाम ताहि रंजै सब कोऊ ॥ नयन नासिका अग्रहै तहां ब्रह्मको वास । अविनाशी विनशैनहीं सहज ज्योति परगास॥ऊधो जो पग पानि नहीं ऊखल क्यों बांधे । नयन नाशिका मुख नचोरि दधि कौने खाधे । तब जो खिलायो गोदमें बोलि तोतरे वैन ।ऊधो ताको बतावही जाहि न सूझै नैन ॥ माया अनित्य अधारी ता लोचन दुइनापे । ज्ञान नयन अनंत ताहि सूझै परगापे ।

बूझो निगम बोलाइकै कहैं भेद समुझाइ। आदि अंत जाको नहीं कौन पिता को माइ। ऊधो घर लागे अरु घूर कहो मन कहा धावै। अपनो घर परिहरै कहोको घूर बतावै॥ मूरख यादव जातिहैं हमहिं सिखावहिं योग। हमसों भूली कहतहै हम भूली किधौं लोग॥ प्रेम प्रेमते होइ प्रेमते परहै जीए। प्रेम बंधो संसार प्रेम परमारथ लहिए। एकै निश्चय प्रेमको जीवनमुक्ति रसाल। सांची निश्चय प्रेमको जिहिरे मिलैं गोपाल॥ ऊधो कहि सतभाव न्याय तुम्हारे मुखसांचे। योगप्रेम रस कथा कहो कंचनकी कांचे॥ जाके परहै हूजिए गहिए सोई नेम। मधुप हमारी सों कहो योग भलो किधौं प्रेम॥ सुनि गोपीके वयन नेम ऊधोके भूले। गावत गुण गोपाल फिरत कुंजनमें फूले॥ खन गोपी के पाँइ परै धन्य सोइहै नेम। धाइ धाइ द्रुम भेटई ऊधो छाके प्रेम॥ धनि गोपी धनि ग्वाल धन्य सुरभी वनचारी। धनि इहां पावन भूमि जहां गोविंद अभिसारी॥ उपदेश न आये हुते मोहिं भयो उपदेश। ऊधो यदुपतिपै चले धरे गोपकी भेष॥ भूले यदुपति नाव कहो गोपाल गोसाई। एक वार ब्रजजाहु देहु गोपिन देखराई॥ वृंदावन सुख छांडिकै कहां वसेहो आइ॥ गोवर्धन प्रभु जानिकै ऊधो पकरे पाँइ। ऊधो ब्रजको प्रेम नेम वरणो सब आई। उमग्यो नैनन नीर बात कछु कह्यो न जाई॥ सूरश्याम भूलत भए रहे नैन जल छाइ। पोंछि पीतपट सों कह्यो भले आए योग सिखाइ३९॥ इति भवँरगीत॥ अध्याय॥ ४८॥ अथ उद्धव मथुरा आए श्रीकृष्णप्रति वदति॥ सारंग॥ ऊधो जब ब्रज पहुँचे जाइ। तबकी कथा कृपाकरि कहिए हम सुनिहैं मन लाइ॥ बाबानंद यशोदा मइया मिले वनहि कीनाइ। कबहूं सुरति करत माइनकी किधौं रहे विसराइ॥ गोपसखा दधिखात भात वन अरु चाखते चखाइ। गऊ बच्छ मुरली सुनि उमडत अबहि रहत केहि भाइ॥ गोपिन गृह व्योहार विसारे सुख सन्मुख सुखपाइ। पलकवोट निमि पर अन खाती यह दुख कहा समाइ॥ एक सखी उनमें जो राधा जब हो इहँते गयो। तब ब्रजराज सहित सब गोपिन आगे ह्वै जो लयो॥ उतरे जाइ नंदबाबाके सबही शोधलह्यो। मेरी सों सांची कहु ऊधो मैया कछू कह्यो॥ वारंवार कुशल पूंछी मोहिं लै लै तुम्हरो नाम। ज्यों जल तृषा बढी चातक चित्त कृष्ण कृष्ण बलराम॥ सुंदर परम विचित्र मनोहर वह मुरली देइ घाली। लई उठाइ उरलाइ सूर प्रभु प्रीति आनि उरशाली॥ ४०॥ सुनिये ब्रजकी दशा गोसांई। रथकी ध्वजा पीतपट भूषण देखतही उठि धाई॥ जो तुम कही योगकी बातैं ते मैं सबै सुनाई। श्रवण मूंदि गुण कर्म तुम्हारे प्रेम मगन मनगाई॥ औरो कछू सँदेश सखी इक कहत दूरि लौं आई। हुतो कछू हमहू सों नातो निपट कहा विसराई॥ सूरदास प्रभु वनविनोद करि जो तुम गऊ चराई। ते गाय ग्वालन हेरी देय हेराति मानों भई पराई॥४१॥ सारंग॥ ब्रजके विरही लोग दुखारे। विन गोपाल ठगेसे ठाढे अति दुर्बल तनुकारे॥ नंद यशोदा मारग जोवत नित उठि सांझ सवारे। चहुँ दिशि कान्ह कान्ह करि टेरत अँसुवन वहत पनारे॥ गोपीगाइ ग्वाल गोसुत सब अतिही दीन विचारे। सूरदास प्रभु विन यों सोभित चंद्र विना ज्यों तारे॥४२॥ ॥ केदारो॥ हरिजी सुनो वचन सुजान। विरह व्याकुल छीन तन मन हीन लोचन प्रान॥ इहैहै संदेश ब्रजको माधो सुनहु निदान। मैं सबै ब्रज दीन देखे ज्यों विना निमान॥ तुम विना सोभा न ज्यों गृहविना दीप भयान। आसश्वास उसास घटमें अवध आशाप्रान॥ जगत जीवन भक्त पालन जगतनाथ कृपाल। करि जतन कछु सूरके प्रभु जो जीवै ब्रजवाल॥ ४३॥ जैतश्री॥ सुनहु श्याम वै सब ब्रजवनिता विरह तुम्हारे भई वावरी। नाहिंन नाथ और कहि आवत छांडि

जहां लगि कथा रावरी ॥ कबहुँ कहत हरि माखन खायो कौन बसैया कठिन गाँवरी । कबहुँ कहत हरि ऊखल बांधे घर घर ते लै चलौ दाँवरी ॥ कबहुँ कहत ब्रजनाथ बनगए जोवत मगभई दृष्टि झाँवरी । कबहुँ कहत वा मुरली महियाँ लै लै बोलत हमारो नाँउरी॥कबहुँ कहत ब्रजनाथ साथ ते चंद्र उग्यो है एहि ठाँवरी॥सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशबिनु अब वह मूरति भई साँवरी॥४४॥बिहागरो॥ हरि आए सो भली कीन्ही । मोहिं देखत कहि उठी राधिका अंक तिमिरको दीन्ही ॥ तनु अति कँपति विरह अति व्याकुल उरधुकधुकी खेद कीन्ही । चलत चरणगहि रही गई गिरि खेद सलिल भयभीनी॥छूटी तेहि भुज फूटी बलिया नलटूटी लरफटी कंचुकी झीनी । मानो प्रेमके परन परेवा याहीते पढि लीन्ही ॥ अवलोकति इहिभांति रमापति मानो छूटी अहिमणि छीनी । सूरदास प्रभु कहौं कहां लगि है अयान मतिहीनी॥४५॥मलार॥सुनोश्याम यहबात और कोउ क्यों समुझाय कहै। दुहुँदिशिकोरति विरह विरहिनी कैसेकै जो सहै । जब राधे तबहीं मुख माधो माधो रटतरहै । जब माधो होइजात सकल तनु राधा विरह दहै । उभयअग्र दौंदारु कीट ज्यों शीतलताहि चहै । सूर दास अति विकल विरहिनी कैसेहु सुख नलहै॥४६॥केदारो॥चितदै सुनो श्याम प्रवीन।हरि तुम्हारे विरह राधा मैं जु देखीछीन ॥ तज्यो तेल तमोल भूषण अंग बसन मलीन । कंकना करवाम राख्यो गढी भुजगहिलीन॥जब सँदेशा कहन सुंदरि गवन मोतन कीन।खसि मुद्रावलि चरन अरुझी गिरी धरनि बलहीन॥ कंठवचन नबोल आवै हृदय परिहसभीन । नैन जल भरि रोइ दीनो ग्रसित आपद दीन ॥ उठी बहुरि सँभारि भट ज्यों परम साहस कीन । सूर प्रभु कल्याण ऐसे जीवहि आशालीन ॥४७॥ भरि भरि लेत ऊरध श्वास । साँवरे ब्रजनाथ तुमबिनु दुखितपंचशरत्रास ॥ अमित पीर अधीर डोलत समर मीन बिलास । तेई सुख दुख भए दारुण मिलि गए रस रास ॥ निगम गुरुजन लोगन डरत जगकरत उपहास । सूरश्याम बिनु विकल विरहिनी मरत दरश विन प्यास ॥४८॥धनाश्री॥ उमँगि चले दोउ नैन विशाल । सुनि सुनि यह संदेश श्यामघन सुमिरि तुम्हारे गुण गोपाल ॥ आनन अम्बु उरजनिके अंतर जलधारा बाढी तेहिकाल । मनुयुगजलज सुमेर शृंगते जाइ मिले सम शशिहिसनाल ॥ भीजे बिय अंचर उर राजित तिनपर वर मुकुत नकी माल । मानौ इंदु आये नलिनी दल लंकृत अमी ओस कन जाल ॥ कहा वह प्रीति रीति राधासों कहां यह करनी उलटी चाल।सूरदासप्रभु कठिन कथनते क्यों जीवै विरहिनि बेहाल॥४९ मारू ॥तुम्हरे विरह ब्रजनाथ राधिका नैनन नदी बढी॥लीने जाति निमेष कूल दोउ एते यान चढी ॥ गोलकनाउ निमेष न लागत सो पलकनि बर बोरति । ऊरध श्याम समीर तरंग गिनि तेज तिलक तरु तोरति॥कज्जल कीच कुचील किए तट अंचर अधर कपोल।थकि रहे पथिक सुयश हित हरिके हस्त चरण मुख बोल॥नाहिंन और उपाय रमापति विन दरशन जो कीजै । अंशु सलिल बूड़त सब गोकुल सूर सुकर गहि लीजै॥५०॥मलार॥नैन घट घटत न एक घरी।कबहुँ न मिटत सदा पावस ब्रज लागी रहत झरी ॥ विरह इंद्र बरषत निशि बासर इहि अति अधिक करी । उरध उसास समीर तेज जल उर भुवि उमँगि भरी ॥ बूडति भुजारोमद्रुम अंबर अरु कुच उच्च थरी । चलि न सकत पथिक रहे थकि चंद्रकी चखरी ॥ सब ऋतु मिटी एक भई ब्रज महि यहि विधि उलटि धरी । सूरदास प्रभु तुम्हरे विछुरे मेटि मर्याद टरी॥५१॥केदारो॥देखी मैं लोचन चुवत अचेत। मनहुँ कमल शशि त्रास ईशको मुक्ता गनि गनि देत ॥ द्वार खडी इकटक मग जोवत ऊरध श्वास न लेत। मानहुँ मदन मिले चाहति है सुंचत मरुत समेत ॥ श्रवणन सुनत चित्र पुतरी लौं समुझावत

जित नेत। कहुँ कंकन कहुँ गिरी मुद्रिका कहुँ ताटंक कहुँ नेत ॥ मनहु विरह दव जरत विश्व सव राधा रुचिर निकेत।धुज होइ सूखिरही सूरज प्रभु वधी तुम्हारे हेत ॥५२॥ मलार॥ नैननि होड वदी वरषासों। राति दिवस वरसत झर लाए दिन दूरी कर खासों ॥ चारि मास वरषे जल खूटे हारि समुझ उनमानी॥एतेहू पर धार न खंडित इनकी अकथ कहानी॥ एते मान चढाइ चढी अति तजी पलककी सीवामैं जानी दिन दिन उन मानो महाप्रलय की नीव॥ तुमपै होइ सो करहु कृपा निधि ए ब्रजके व्यवहार। अवकी वेर पाछिले नाते सूर लगावहु पार॥५३॥ गौरी ॥ ब्रजते द्वै ऋतु पैनगई। ग्रीषम अरु पावस प्रवीन हरि तुम विनु अधिक भई॥ उरध उसास समीर नैन घन सव जल योग जुरे। वरषि प्रगट कीन्हे दुख दादुर हुते जु दूरि दुरे ॥ तुम्हरो कठिन वियोग विषम दिन कर सम उदो करै।हरि पद विमुख भए सुनु सूरज को इहि ताप हरै॥५४॥कान्हरो॥नाहिन कछु सुधि रही हिए। सुनो श्याम वै सखिहि राधिकाहि युगवाति जतन किए ॥कर कंकन कोकिला उड़ावत विनमुख नामलिए॥ सैन सूचना नखनि नितं किसलय श्रवणन शवदविए ॥शशिसंका निशि जाल निके मग वसन वनाइ सिए।दिशि दिशि शीत समीरहि रोकत अंचर वोट दिए ॥मृगमद मलै परस तनु तलफत जनु विष विषम पिए। जो न इते पर मिलहु सूर प्रभु तौ जानी विजए ॥५५॥ गौरी ॥ कहाँलौं कहिए ब्रजकी वात । सुनहु श्याम तुम विनु उन लोगन जैसे दिवस विहात ॥ गोपी गाइ ग्वाल गो सुत वै मलिन वदन कृषगात। परमदीन जनु शिशिरहि मीहत अंवुज गत विनपात। जाकहुँ आवत देखिदूरते सव पूछति कुशलात। चलन नदेत प्रेम आतुर उर कर चरणन लपटात पिक चातक वन वसन न पावहि वाइस वलिहि नखात ॥ सूरश्याम संदेशनके उर पथिक न उहि मग जात॥५६॥ मलार ॥ ब्रजकी कही नपरातिहै वातैं। गिरितनयापाति भूषण जैसे विरहजरी दिनराते ॥ मलिन वसन हरिहित अंतगंति तनु पीरो जनु पाते। गदगदवचन नैन जल पूरित विलख वदन कृषगाते ॥ मुक्तो तात भवनते विछुरै मीन मकर विललाते। सारंगरिपु सुत सुहृदपति विना दुखपावति वहु भांते ॥ हरिसुरभषन विना विरहाने छीनभईतनुताते । सूरदास गोपिन पर तञ्ञा मिलहु पहिलके नाते॥ ५७॥ कल्याण ॥ रहति रैनि दिन हरि हरि हरि रट। चितवति इकटक मग चकोर लौं जवते तुम विछुरे वागर नट॥ भरि भरि नैन नीर ढारतिहै सजल करति अति कंचु किके पट।मनहुँ विरहकी ज्वरता लगि लियो नेम प्रेम शिव शीशसहसघट॥जैसे यवके अग्र ओसकन प्राणरहत ऐसे अवधिहिके तट। सूरदास प्रभु मिलौ कृपाकरि तेदिन कहे तेउ आए निकट ॥ ॥५८॥ सारंग॥दिनदश घोष चलहु गोपाल। गाइनके अवसेर मिटावहु लेहु आपने ग्वाल॥ नाचत नहीं मोर तादिनते वोले नवर्षाकाल। मृग दुवरे तुम्हारे दरश विनु सुनत न वेणु रसाल॥ वृंदावन हरचो होत नभावत देखो श्याम तमाल। सूरदास मइया अनाथहै घरचलिए नँदलाल। ॥ ५९॥ सोरठ ॥ ऊधो भलो ज्ञान समुझायो। तुमसों अव कहा कहतैहैं मैं काहि कहा पठायो ॥ कहवावतहौ वडे चतुरपै वहां नकछु कहिआयो। सूरदास ब्रजवासिनको हित हरि हिय मांझ दुरायो॥ ६०॥ सारंग ॥ मैं समुझाई अति अपनोसो । तदपि उन्हैं परतीति न उपजी सवै लखो सपनोसो ॥कह्यो तुम्हारो सवै कहीमैं और कछू अपनी। श्रवणन वचन सुनतहैं उनके जो घटमाँह अकनी ॥ कोइ कहै वात वनाइ पचासक उनकी वात जो एक। धन्य धन्य जो नारी ब्रजकी विन दरशन इहि टेक॥ देखत उमग्यो प्रेम यहांके धरी रही सव रोयो। सूरश्याम हौं रहौं ठगोसो ज्यों मृगचाकौ भोयो ॥ ६१ ॥ वातैं सुनहु तौ श्याम सुनाऊं। वै उमगी जलनिधि तरंग ज्यों तामें थाह

नपाऊं ॥ कौन कौन को उत्तर दीजै ताते भग्यो अगाऊं । वे मारे शिर पटिया पारे कंथा काहि उढाऊं ॥ एक अँधेरो हियेकी फूटी दौरत पहिर खराऊं । सूर सकल पट दरशन वैहैं बारहखरी पढाऊं ॥ ६२ ॥ सुनि लीन्हों उनहींको कह्यो । अपनी चाल समुझि मनहीं मन गुनि अरगाइ रह्यो ॥ अवलनि सों कही पारि जापै बात तोरि कानि कानि । अनबोले पूरो दै निवह्यो वहुत दिन नको जानि।जानि बूझि कैहो कत पठयो शठ बावरो अयानो । तुमहूं बूझि वहुत बातनको वहां जाहु तौ जानो।मैंतो भूलि ज्ञानको आयो गयउ तुम्हारे ठौलेसूर पठावनहीकी वोरी रह्यो जु गजसों लीले ६३ ॥मलार ॥ हो हरि वहुत दाँउदै हारचो।आज्ञा भंग होइ क्यों मोपै वचन तुम्हारो प्यारचो॥हारि मानि उठि चल्यो दीनह्वै जानि आपुन पै कैदु । जानिलेहु हरि इतनेही में कहा करैनी मनको वैदु उत्तर को उत्तर नहिं आवत तव उनहीं मिलि जातु। मेरी किती बात ब्रह्माको अर्ध वचन में मातु। अपनो चाल समुझि मनहीं मन चल्यो वसीठी तोरि । सूर एकहू अंग नकाची मैं देखी टकटोरि॥ ॥ ६४ ॥ कहिवे में न कछू सकराखी । बुधि विवेक उनमान आपने मुख आई सो भाषी ॥ हौं मरि एक कहौं पहरकमें वै छिनमांझ अनेक। हारि मानि उठि चल्यो दीनह्वै छाँडि आपनी टेक ॥ हौं पठयो कत कौनै काजे शठ मूरख जो अयानो । तुमहिं बुझावहु ते बातनकी वहां जाहु तौ जानो ॥ श्रीमुखकी सिखई ग्रंथो कत ते सब भई कहानी। एककहोइ तौ उत्तर दीजै सूर सुमठी उभानी ॥ ६५ ॥ सोरठ ॥ माधोजी मैं योगको बोझाभरचो । श्याम उन मुख विधु वचन सुधारस सुनि सुनि कछु न कह्यो ॥ तौलौं भार तरंग मो उदधि सखी लोचन उमह्यो । तुम जो कह्यो ज्ञानको मारग सो बातैं जो वह्यो ॥ मोहिं आश्चर्य एक जो लागत तौ कैसे जात सह्यो । सूर दास प्रभु सखा सयानो लै भुज बीच गह्यो ॥ ६६ ॥ नट ॥ कोऊ सुनत न बात हमारी। कहा मानै योग युक्ति यादवपति प्रगट प्रेम व्रजनारी ॥ कोऊ कहति इंद्र जव वरषो टेकि गोवर्धन लेत । कोउ कहति हरि गए कुंजवन शीश धाम वे देत॥ कोऊ कहत नागकारे सुनि गए हरि यमुनातीर। कोउ कहैं गए अघासुर मारन संगलिए बलवीर ॥ कोउ कहैं ग्वाल वाल सँग खेलत वनमें जाइ लुकाने । सूर सुमिरि गुणमाथे तुम्हारे कोउ कह्यो नामानै ॥ ६७ ॥ सारंग ॥ हरि तुम्हैं वारंवार सँभारै । कहहु तौ सब युवतिनके नाम कहो जे हितसों उरधारै॥ कबहुँक आँखि मूँदिकै चाहाति सब सुख अधिक तिहारे । तब प्रसिद्ध लीला सँग विहरत अवचित डोर विहारे ॥ जाको कोऊ जेहि विधि सुमिरै सोउ तेही हित मानै । उलटीरीति सबै तुम्हरेहै हमतौ प्रगट कहिजानै ॥ जो पतिआंहो तुम पठवत लिखि बीच समुझि सब पीउ । सूरश्याम हैं पलक धाममें लखि चित कत विललाउ ॥ ६८ ॥ माधोजू कहा कहौं उनकी गति । देखत वनै कहत नहिं आवै परम प्रतीति तुमते रति ॥ यद्यपि हो पडमास रह्यो ढिग लही नहीं उनकी मति। कासों कहौं सबै एकै बुधि परवोधी मानै नाहीं अति ॥ तुम कृपालु करुणामय कहियत ताते मिलत कहा क्षति । सूरश्याम सोईपै कीजे जाते तुम पावहु पति ॥ ६९ ॥ तुम्हारोइ चित्र बनाउ कियो । तब को इंदु सम्हारि तुरतही मनासिज साजि लियो ॥ व्रति गहि युग अंगुलीके बीच उन भरि पानि पियो। पुरप्रति करति लेखको प्रारंभ तबहिं प्रहार कियो ॥ वै पथ विकल चकित अति आतुर भर्मतहेतुदियो । भृति विलंबि पृष्टिदै श्यामा श्यामै श्याम वियो ॥ या गति पाइ रही राधा अव चाहाति अमृत पियो।सूरदास प्रभु प्राति उलटि परी है कैसे जात जियो७०॥केदारो॥अब जिनि बाँधि वेहि उराहु । दूध दधि माखन मनोहर डारि देहु अरु खाहु ॥ सदा बैठे घोप रहियो वन न दैहै जा

न। पलकहू भरि दुख न दैहै राखि है ज्यों प्रान॥ सब तिहारो कहे करिहैं वचन माथे मानि। परम चतुर सुजान इते मांझ लीजो जानि॥ अब न कौनो चूक करिहैं यह हमारे बोल। किकिरि निकी लाज धरि ब्रज सुवस करहु निटोल॥ समुझि निज अपराध करनी नारि नावति नीचि बहुत दिनते वरति हैं कै आंखि दीजै सीचि॥ मनसि वचन अरु कर्मना कछु कहति नाहिंन राखि। सूरप्रभु यह बोल हृदय सातराजा साखि॥७१॥सारंग॥ कहत नवनै ब्रजकी रीति। नाथमम शठ कोप ष्यो भयो देखि उनकी प्रीति॥युवति वल्लभ कत कहावत करत सकल अनीति॥मोहि तौ यह कठिन औरो क्यों करिहै परतीति॥सुनौ धौं दै कान अपनी लोक लोकनि कीति। सूर प्रभु अपनी खचाई रही निगमन जीति॥७२॥नट॥ परम वियोगिनी सब ठाढी। ज्यों जल हीन दीन कुमुदिनि वन रवि प्रकाशकी डाढी॥जिहि विधि मीन सलिल ते विछुरे तिहि अति गति अकुलानी॥सूखे अधर कहि न आवै कछु वचन रहित मुखवानी॥ उन्नत श्वास विरह विरहातुर कमवदलन कुम्हिलानी। निंदतिनैन निमेष छिनहि छिन मिलन कठिन जिय जानी॥ विनु बुधि वल विचित्र कृत शोभित चलि न सकी पचिहारी॥सूरदास प्रभु अवधि गयो नतो प्राण तजत ब्रजनारी॥७३॥मारू सब ब्रज घर घर एकै रीति। ज्यों कुरुखेत गडेको सोनो त्यों प्रभु तुम्हरी प्रीति॥ वै सब परम विचित्र सयानी अरु सबही जग कीति। उनको ज्ञान सुनतही शठ भयो ज्यों बहु दिनकी भीती॥ एकै गहन धरी उन हठ करि मेटि वेद विधि नीति॥गोपवेष निज सूर श्याम ले रही विश्व वरजीति॥ ॥७४॥केदारो॥ ब्रजजन दुखित अति तनु छीन॥रटत इक टक चित्र चातक श्याम घन तन लीन॥ नाहिं पलटत वसन भूषन हगन दीपक तात। मलिन वदन विलखि रहत जिमि तरनि हीन जलजात॥ कहन जो तुम कहेउ सो रति मति पच्यो करि उपदेश। धरत नलनी बूंद ज्यों जल वचन नाहिं परवेश॥ धरे मुरली मोर चंद्रिका पीतपट वनमाल। रही वह छवि एक अंगनि लपट श्याम तमाल॥ दिवस वितवति सकल जन मिलि कथति गुण वलवीर। रैनि उडुपति निरखि तलफति मीन ज्यों जल तीर॥ हौंहो करुणानाथ बंधो कहेउ ऊधो गहि पाइ। सूर प्रभु अब दरश दै करि लेहु मरती आइ॥ ७५॥ सारंग॥ तबते इन सबहिन सचुपायो॥जबते हरि संदेश तुम्हारो सुनत तवारो आयो॥फूले व्याल दुरेते प्रगटे पवन पेट भरि खायो॥फूचो यश मूचोको चरणन तेहु तौ सब विसरायो॥ निकसि कंदराहूते केहरि शिरपर पूंछ हिलायो। गह्वरते गजराज आइ अंगही गर्व वढायो॥ऊंचे वैसि विहंगम भामै शुक वनराइ कहायो। किलकि किलकि कुल सहित आपनो कोकिल मंगल गायो॥ अब जिनि गहर करोहो मोहन जो चाहतहौ ज्यायो। सूर बहुरिह्वैहै राधाको सब वैरिनिको भायो॥ ७६॥ धनाश्री॥ आजु विरहिनी विरह तुम्हारे कैसो रटतरही। चारि याम निशि तुम्हरोई सुमिरन और न बात कही॥ वासर कथा कठिन मन करि करि क्रम क्रम व्यथासही। संध्या शशि देखि उठि चली जब अंकन रहत गही॥ मृगमद मलय कुमकुमा उरजल सरिता सेज वही। ते क्यों शीतल होहिं सूर प्रभु पिय जू विरहदही॥ ७७॥ सारंग॥ कान्ह तुम्हारी विकल विरहिनी विलपति विरह वियोग। अति आरत न सम्हारत तन मन इकटक लोम गयोग॥ कतर मिलो लोचन वरषत अति दुखमुखके छवि रोयो। राहु केतु मानौ मीडि विधु आंक छुटावत धोयो॥ अवला कहा योग मत जानै मन्मथ व्यथाविंयो। सूरदास क्यों नीर चुवतहै नीरस वसन निचोयो॥ ७८॥ सोरठ॥ माधोजू सुनो ब्रजको प्रेम। बूझि मैं षटमास देख्यो गोपिकनको नेम॥ हृदयते नहिं टरत उनके श्याम नाम सुहेत। अँसुव सलिल प्रवाह उर मनौं

अरध नैनन देत ॥ चमर अंचल कुच कलस मनो पाद्य पाणि चढाइ । प्रगट लीला देखि उनकी कर्म उठती गाइ ॥ देह गेह सनेह अर्पण कमल लोचन ध्यान । सूर उनको भजन देखत फीको लागत ज्ञान ॥ ७९ ॥ माधोजू सुनिये ब्रज व्यवहार । मेरो कह्यो पवनको भुसभयो गावत नंद कुमार ॥ एक ग्वालि गोसुतह्वै रेंगति एक लकुट कर लेति । एकग्वालि मंडलीकरि बैठति छाँक वांटिकै देति ॥ एक ग्वालि नटवत बहुलीला एक कर्मगुण गावति । बहुत भाँति करि मैं समुझाई नैक न उरमें आवति ॥ निशि वासर याही ढँग सब ब्रज दिन दिन नवतनु प्रीति । सूर सकल फीको लागतहै देखत वह रँगरीति ॥ ८० ॥ मलार ॥ वातैं बूझति यों बहरावति । सुनहु श्यामवै सखी सयानी पावसऋतु राधहि न सुनावति ॥ घन गर्जत मनु कहत कुशलमति कूंजत गुहा सिंह समुझावति । नाहिं दामिनि द्रुम दवा शैलचढि फिरि वयारि उलटी झर धावति ॥ नाहिंन मोर वकत पिक दादुर ग्वालमंडली खगन खिलावत । नाहिं नभ वृष्टि झरना झर ऊपर बूंद उचटि आवत ॥ कवहुँक प्रगट पपीहा वोलत कहि कुवेप करतारि वजावत । सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन विन सो विरहिनि इतनो दुख पावत ॥ ८१ ॥ नट ॥ नैकहु काहू सोच न कीन्हों । सुन ब्रजनाथ सबनके अवगुण मिलि मिलिहै दुखदीन्हो ॥ ऋतुवसंत अनसमै अधममति पिकसहाउ लै धावत । प्रीतम संग नजानि युवती रुचि बोलेहु वोल न आवत॥सदा शरदऋतु सकल कलालै सन्मुख रहत जन्हाइ । सो सितपच्छ कुहू सम वीतत कवहुँ नदेत देखाइ॥त्रिविध समीर सुमन सौरभ मिलि मत्त मधुपगुंजार । जोइ जोइ रुचै सु कियो वांधि वल तजि मन सकुच विचार ॥रतिपति अति अनीति कीवे कोटिधूमध्वजमानो॥लैकर धनुष चितै तुम्हरो मुख अब बोलै तब जानौ ॥इहि विधि सवन वीन पायो ब्रज काढत वैर दुरासी । सूरदास प्रभु वेगि मिलहु अब पिसुन करत सब हाँसी॥८२॥सारंग॥ सबते परम मनोहर गोपी । नँदनंदनके नेह मेह जिनि लोक लीक लोपी ॥ वरि कुविजाके रंगहि राचे तदपि तजी सोपी। तदापि न तजै भजै निशि वासर नैकहून कोपी ॥ ज्ञानकथा की मथि मन देखो ऊधो वहुधोपी । टेरति घरी छिन नैक नअँखिया श्यामरूप रोपी ॥ जे तिहि तिहि हरिके अवगुणकी ते सबई तोपी । सूरदास प्रभु प्रेम हेम ज्यों अधिक ओप ओपी ॥ ८३ ॥ सारंग ॥ मोमन उनईको भयो। परचो प्रभु उनके प्रेमको समै तुमहूं बिसरि गयो ॥ तुमसों सपत करि गयो माधव वेगि कह्योहो आवन । तिनहिं देखि वैसोई ह्वै गयो लग्यो उनहि मिलि गावन ॥ समुझि परी पटमास वीतेते कहां हुतो हों आयो॥सूर अनकही दै गोपिनसों श्रवण मूँदि उठिधायो॥ ८४॥रागगंधार॥उनमें पांचो दिन जो वसिए।नाथ तुम्हारी सों जिय उपजत फेरि अपनो यों कसिए॥ वह विनोदलीला वह रचना देखेही वनिआवै । मोको कहा बहुरि वैसे सुख वडभागी सो पावै । मनसा वचन कर्मना अवहैं कहत नहीं कछु राखी । सूर काढि डारचो ब्रज ते ज्यों दूध मांझते माखी॥८५॥ सोरठ ॥ माधोजू मैं अतिही सचुपायो । अपनोजानि संदेश साजिकरि ब्रजमेंमिलन पठायो ॥ क्षमाकरो तो करों वीनती उनहि देखि जो आयो । सकल निगम सिद्धान्त जन्मकर श्याम उन सहज सुनायो ॥ नहिं श्रुति शेष महेशप्रजापति जो रस गोपिन गायो । कथा गंग लागी मोहिं तेरी उह रस सिंधुउमहायो ॥ तुम्हरी अकथ कथा तुम जानौ हमैं जिन नाथ विसरायो सूरश्याम सुंदरि इह सुनि सुनि नैनन नीर वहायो८६॥ मलार ॥ जोपै प्रभु करुणाके आलै । तौ कत कठिन कठोर होत मन मोहिं बहुत दुखशालै ॥ वहो विरदकी लाज दीन पति करि सुदृष्टि देखो । मोसों वात कहत किन सन्मुख कहा अवनि अवलेखो ॥ निगम कहत वशहोत भक्तिते

सोऊहै उन कीनी। सूर उसाँस छाँडि हाहा ब्रज जल अँखिया भरिलीनी॥८७॥ मारू ॥ सुन ऊधो मोहिं नेक न विसरत वै ब्रजवासी लोग। तुम उनको कछु भली न कीनी निशि दिन दियो वियोग॥ यदपि वसुदेव देवकी मथुरा सकल राज सुखभोग। तदपि मनहिं बसत बंसीबट ब्रज यमुना संयोग॥ वै उत रहत प्रेम अवलंबन इतते पठयो योग। सूर उसास छांडि भरि लोचन बढ्यो विरहज्वर सोग॥ ८८॥ ऊधो मोहि ब्रज बिसरत नाहीं। बृंदावन गोकुल तन आवत सघन तृणनकी छाहीं॥ प्रात समय माता यशुमति अरु नंद देखि सुखपावत। माखन रोटी दह्यो सजायो अतिहित साथ खवावत॥ गोपी ग्वाल बाल सँग खेलत सबदिन हँसत सिरात। सूरदास धनि धनि ब्रजबासी जिनसों हँसत ब्रजनाथ॥३४८९॥

इति श्रीसूरसागरदशमस्कन्ध पूर्वार्धसमाप्त॥

श्रीः ।

अथ

सूरसागर ।

दशमस्कन्धोत्तरार्धः ।

जरासंध आगमन द्वारकाहेतु ॥

॥राग मारू॥ श्याम बलराम जव कंस मारचो।सुनि जरासंध वृत्तान्त अस सुतासे युद्ध हित कटक अपनो हँकारचो॥जोरिदल प्रबल सो चल्यो मथुरापुरी सुन्यो भगवान जवनिकट आयो। तव दुहूं वीर दल साजिकै आपनो नगरते निकसि रणभूमि छायो॥दुहुँदिश सुभट वांके विकट अति जुरे मनो दोउ दिश घटा उमाडि आई॥सूरप्रभु सिंहध्वनि करत जोधा सकल जहां तहां करन लागे लराई॥१॥ ॥रागमलार॥ मानहु मेघघटा अति गाढ़ी। वरषत बाण बूंद सेनापति महानदी रण वाढ़ी॥जहां वरन वरन वादर वानैत अरु दामिनि कारि करिवार।उडत धूरि धुंरवा धुर दीसत शूल सकल जलधार॥ गर्जनि पणव निसान शंखरव हय गज हींस चिकार।प्रगटत दुरत देखियत रविसम द्वै वसुदेवकुमार कुंजर कूल रमित अतिराजत तहँ शोणित सलिल गंभीर। धनुप तरंग भँवर स्यंदन पग जलचर सुभट शरीर ॥ उड़त ध्वजा पताक छत्र रथ तरुवर टूटत तीर। परमानिसंक समर सरिता तट क्रीडत यादव वीर॥ सूने किये भुवन भूपतिके सुवस किए सुरलोक। छिनक मध्य हरि हरचो कृपाकरि उन सवहिनके सोक ॥ आनंदे मधुवनके वासी गई नगर की रोक। जरासंधको जीति सूर प्रभु आये अपने वोक॥ २ ॥ अध्याय ॥ ५१ ॥ कालयवनदहन॥मुचुकुंद उद्धार॥राग सारंग ॥ वार सत्रह जरासंध मथुरा चाढ़िआयो । गयो सो सवदिन हार जात घर वहुत लजायो॥ तव खिसिआइकै कालयमन अपने सँग ल्यायो । हरिजी कियो विचार सिंधुतट नगर वसायो ॥ उग्रसेन सव कुटुमलै ता ठौर सिधायो। अमरपुरीतें अधिक सुख तहँ लोगन पायो॥कालयमन मुचुकुंद सों हरि भस्म करायो। वहुरि आइ भरमाइ अचल सव ताहि जरायो ॥ जरासंध वहँते वहुरि निज देश सिधायो। श्याम राम गये द्वारका सूरज यशगायो॥ ३ ॥ अथ द्वारका प्रवेश॥कल्याण ॥ देखरी आजु नैन भरि हरिजूके रथकी शोभा । योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रत कीजतहै जेहि लोभा॥ चारु चक्र मणि खचित मनोहर चंचल चमर पताका। श्वेतछत्र मनो शशि प्राची दिशि उदै कियो निशिराका ॥ घन तन श्याम सुदेश पीतपट शीशमुकुट उरमाला। जनु दामिनि घन रवि तारागण प्रगट एकही काला ॥ उपजत छविकर अधर शंखमिलि सुनियत शब्द प्रशंसा। मानहुआसन कमल मंडलमें कूजतहै कलहंसा ॥ मदन गोपाल

देखियतहै अब सब दुख शोक विसारी। बैठे हैं सुफलकसुत गोकुल लेन जो वहाँ सिधारी॥ आनंदित चित जननि तात हित कृष्ण मिलन जिय भाए। सूरदास दुहुँ कुल हित कारण अब माधो मधुपुरी जुआए॥४॥ अध्याय ॥ ५२ ॥ द्वारकाकी सोभा ॥ कल्याण ॥ दिन द्वारावति देखन आवत। नारदादि सनकादि महामुनि ते अवलोकि प्रीति उपजावत ॥ विद्रुम स्फटिक पची कंचन खचि मणिमय मंदिर बने बनावत। जितनेतर नर नारि उपर खग सबहिनको प्रतिबिंब दिखावत॥ जल थल रंग विचित्र बहुत विधि अवलोकत आनंद बढावत। भूलि रहे अति चतुर चितै चित कौन सत्य कछु मर्म न पावत॥ वन उपवन फल फूल सुभगसर शुक सारिका हंस पारावत। चातक मोर चकोर वदत पिक मनहु मदन चटसार पढावत॥ धाम धाम संगीत सरस गति वीणा वेणु मृदंग बजावत। अति आनंद प्रेम पुलकित तनु जहां तहां यदुपति यशगावत॥ निशि दिन रहत विमान रूठ रुचि सुरवनितानि संग सब आवत। सूरश्याम क्रीडत कौतूहल अमरन अपनो भवन न भावत॥ ५॥ सारंग॥ श्रीमनमोहन खेलत चौगान। द्वारावती कोट कंचनमें रच्यो रुचिर मैदान॥ यादव वीर वराइ बटाई इक हलधर इक आपै ओर। निकसे सबै कुँअर असवारी उच्चैःश्रवाके पोर॥लीले सुरंग कुमैत श्याम तेहि परदे सब मन रंग। वरन अनेक भांति भांतिनके चमकति चपलावेग॥ जीन जराइ जु जगमगाइ रहे देखत दृष्टि भ्रमाइ। सुर नर मुनि कौतुक सबै लागे इकटक रहे लुभाइ॥जबहीं हरिलै चले गोइ कुदासौ लाइ। तबहीं औचकही वेल हलधर पाइ॥कुँअर सबै घेरे फेरे फेरत छुडत नहिंनै गुपाल। बलै अछत छल बल करि सूरदास प्रभु हाल॥६॥ रुक्मिणीपत्रिका आवन॥ बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणारविंद उर धरो॥ हरि सुमिरण जब रुक्मिणि कर्‍यो। हरि करि कृपा ताहि तब बर्‍यो॥ कहौं सो कथा सुनो चितलाई। कहै सुनै सो रहै सुखपाई॥ कुंदनपुरको भीषम राई। विष्णुभक्तिको तामन चाई॥ रुक्म आदि ताके सुत पांच। रुक्मिणि पुत्री हरिरँग राच॥ नृपति रुक्मसों कह्यो सुनाई। कुँवरि योग्यवर श्रीयदुराई॥ रुक्म रिसाइ पितासों कह्यो। सुनि ताको अंतर्गत दह्यो॥ रुक्म चँदेरी विप्र पठायो। व्याहकाज शिशुपाल बुलायो॥ सो वरात जोरि तहां आयो। श्रीरुक्मिणिके जिय नहिं भायो॥ कह्यो मेरोपति श्रीभगवान। उनही बरो के तजो परान॥भीषम सुता रुक्मिणी वाम। सूरजपति निशि दिन वहनाम॥७॥ कान्हरो॥ द्विजपातियाँ दे कहियो श्यामहिं। कुंदनपुरकी कुँवरि रुक्मिणी जपति तुम्हारे नामहि॥ पालागौं तुम जाहु द्वारावति नँदनंदन के ग्रामहिं। कंचन चीर पटंबर देही करकंकनजे नामहिं॥यह शिशुपाल मजैत श्रीदीनबंधु ब्रजनाथ कबै मुखदेखिहौं। कहि रुक्मिणि मनमाहँ सबै सुखलेखिहौं॥ गावहिं सब सहचरी कुँआरि तामसकरि हेर्‍यो॥सब दिन सुखसाथिनी आज कैसे मुख फेर्‍यो॥ मेरे मन कछु औरहै तुम कछु गावति और। प्राण तजौंगी आपनो देखि असुर शिरमौर॥तिहूँलोकके धनी मनी तुमहीकी सोहै॥सत्यकीर्ति औ पुरुषहि समरथ सब मोहै॥ पर पुरुषारथ काग हंसनिके घर आवै। कामधेनु खरुलेइ काल अमृत उपजावै॥ कुटुंब वैर मेरे परे वरनि वरे शिशुपाल। करनि सिंह तुम्हरी धरी कैसे चपै शृगाल॥ भुवन चतुर्दश राज सकल सुर नर मुनि देवा। करजोरे शशि सूर पवन पानी करैं सेवा॥ अबहीं औरकी और होति कछु लागै बारा। तातें मैं पाती लिखी तुम प्राणअधारा॥ कटहि भूख औ नींद जीवनहौं जानति नाहीं। अनदेखे वे नैन लगे लोचन पथवाहीं॥ कै यदुपति लै आवहू करों प्राणलगि घाउ। वाजै शंख जानिहौं सांची आयो यादवराउ॥ जो मांगौ सो देउँ लेहु माधो सँग आए। कोटि

यज्ञफल होइ पिता वहि दरशनपाए ॥ रोइ रुक्मिणी यों कह्यो धरो पाणिमें माथ । यह पाती लै पिता दीजियो प्राणनाथके हाथ॥विप्रभवन रथ चल्यो चलत तब बार न लाई । छपनकोटिके मध्य राजतहैं यादवराई ॥ छाँडि सकुच पातीदई तब पूंछी कुशलात । जानि चीन्ह पहिचानि कुँअरमन फूले अंग नमात ॥ आपुन झारी मांगि विप्रके चरण पखारे । इती दूरि श्रम कियो राज द्विज भए दुखारे॥पाती बांचन आवई मांग्यो तुरत विमान॥लोचन भरि भरि आवही मानहुँ कर जल पान॥ लीन्हों विप्रचढ़ाइ बोलि बलसों कहि सारा॥सकल सभा जियजानिकसे साजे हथिआरा॥कहहु नाथ कहां आवहीं कियो कौन पर छोहु॥भीषमकें रुक्मिणिहरण सावधान सब होहु॥आवत देख्यो विप्र जोरिकर रुक्मिणिधाई॥कहा कहेगो आनि हिए धकधकी लगाई॥विप्रआनि मालादए कहे कुशलके बैन॥कुँवरि पतियारो तबकियो जब रथ देख्यो नैन॥गए कंचुकि बंद टूटि लूटि हृदयसोपाइ॥करति मनहिंमन सेव निकट रथ दयो देखाइ॥ तिंहूलोकके कंतहौ हों दासी प्रभु जानि। रुक्मिणिविनती करतिहै लाजहि आपुहि मानि ॥ बैठि असुर सब सभा रुक्मसों मतौविचारचो । आयो सुन्यो अहिर मनों यहिकाल हँकारचो ॥ गाइ चरावन ग्वालहै आयो मुजरा देन । देखहुढीठो दूरिते आयो भातहि लेन ॥ सब दल होहु हुसियार चलहु मठ घेरहिं जाई । परपंचीहैं कान्ह कछू मति करै ढिठाई ॥ कुँअरि गौरि पाँयनपरी मन वांछित फल जानि । हौं यदुपति वर पाइहौं वदन धरौं दोउ पानि॥गौरि कहै सुन कुँअरि पाँय मेरे जिनि लागहि॥कहा कुटुंबके बैन नैन श्रीमति बैरागहि । आधो श्रीवृषभानुको आधो दीन्हों तोहिं॥राज सोहाग बढो सबै कहा निहोरो मोहिं॥अब गावहु करि सगुण बोलि मुख अमृत बानी । दूलह श्रीनंदलाल दुलहिनी रुक्मिणि रानी॥याको जननी दीजियो करत सखिन सों नेह । हौं यदुपति घर जाति हौं जाको है यह देह॥अंबर बाणी भई सजल बादर दल छाए । देव तेतीसो कोटि जो यज्ञ तमासे आए ॥ हरन रुक्मिणी होत है दुहू ओर भई भीर। अति अघात कछु नाहिन सूझत वज्र चालिहि ज्यों नीर ॥ लागे रुक्म गोहारि संग शिशुपाल न छोड़े छांडहि बान विशाल युद्ध ऐसोको बोडै । चक्र धरे हरि आवहीं सुनि असुरन जिय गाज । टेरि कह्यो शिशुपालसों कीजो कंकन लाज ॥ सकल सैन संहारि रुक्म हलधर गहि लीन्हो । आगे इहि सों काम रुक्मिणी सों प्रण कीन्हो ॥ सात शिखा शिर राखिकै तब बूझी कुशलात । कंचनराजको काज सँवारचो भूपनड को यह काज ॥ नगर बधाई बाजि नाथ बहुतै सुखमान्यो । पूरण कीन्हों नेह रुक्मते सत्यहि जान्यो ॥ कंकन छोरचो द्वारका बाज्यो अनंद निसान । भुक्ति मुक्ति न्यवछावरी पाई सूर सुजान ॥ ८ ॥ कान्हरो ॥ पतियां दीजै श्याम सुजानहि । मुख संदेश बनाइ विप्र ज्यों प्रभु न ढीठ करि मानहि ॥ श्रीहरि योग्य रुक्मिणी लिखितं विनती सुनहि प्रभु धरि कानहि । बांचत वेगि आइवो माधव जात धरे मेरे प्रानहि॥समुझत नहीं दीन दुख कोऊ सिंह भखहि शृगालके पानहि । मणि मर्कट कर देत मूढमति मृगमद रजमें सानहि ॥ कबलगि सहौं दुःख दरश दीन भई मीन विना जलपानहिं । सूरदास प्रभु अधर सुधाघन वरपिदेहु जियदा नहिं ॥ ९ ॥ सारंग ॥ द्विज कहिवी हरिसों समुझाइ । सकत शृगाल सिंहको भोजन दुर्बल देखिकै छीने खाइ ॥ परमित गए लाज तुमहींको हांसिनि व्याहि काग लै जाइ । काहेको नेम धर्म व्रत कीन्हो माघमास जलशीत अन्हाइ ॥ श्वान संग सिंहिनि रति अजगुत वेद विरुद्ध असुर करै आइ । सूरदास प्रभु वेगि न आवहु प्राणगए कहा लेहौ आइ ॥ १० ॥ द्विज कहियो यदुपति सन बात । वेदविरुद्ध होत कुंदनपुर हंसको अंश कागलै परात॥ जिनि हमरो अपराध विचारो कन्या

लिख्यो मेटि गुरुतात । ताते यह द्विज वेगि पठायो नेम धर्म मर्यादा जात ॥ तनु आत्मा सम पिंत तुम कहँ पाछे उपजि परी यह बात । कृष्णसिंह बलि धरी तिहारी लेवेको जंबुक अकुलात॥ कृपाकरहु उठि वेगि चढहु रथ लग्न समै आवहु परभात । सूरदास शिशुपाल पानि गहै पावक जारि करौं तनुघात ॥ ११ ॥ धनाश्री ॥ हौं प्रभु जन्म जन्मकी चेरी । भीषम भवन रहतहौं मैं ज्यों लुब्धक असुर सैन्य मिलि घेरी ॥ प्रातकाल शिशुपाल कालते यदुपति आवैं वेगि सवेरी । कछु विपरीति बात नहिं आवै उपजी प्रीति ग्राह गज केरी । सूरदास प्रभु कृष्णप्रीति विनु प्राणविना तनु लागत पेरी ॥ १२ ॥ मारू ॥ द्विज वेग धावहु कहि पठावहु द्वारकाते जाइ । कुंदनपुर एक होत अजगुत बाघ घेरी गाइ ॥ दीनह्वैकरि करहुँ विनती पाती दीजहु जाइ । रुक्म वरवस ब्याहि देहै गनै पितहि न माइ ॥ लग्न लै जु वरात साजी उनत मंडप छाइ । पैज करि शिशुपाल आए जरासंध सहाइ ॥ हंसको मैं अंशराख्यो काग कत मँडराइ । गरुडवाहन कृष्ण आवहु सूर बलि बलि जाइ ॥१३॥ अथ द्विजसंदेश कृष्णमति वदत॥राग आसावरी॥ बाल मृगीसी भूली आँगन ठाढी । नवल विरहिनी चित चिंता बाढी ॥ तुम्हारो पंथ निहारै स्वामी । कबहिं मिलहुगे अंतर्यामी ॥ मंडपपुर देखे उर थरथर करै । मनु चहुँदिशि दौ लागी धीरज तन न धरै ॥ अपने विवाहके दुंदुभी सुनि सुनि । चकृत मन मानो महासिंह ध्वनि ॥ सखिनकी माल जाल जिय जानति । व्याधरूप शिशुपालहि मानति ॥ सूरदास युगभरि वीततछिनु । हरि नवरंग कुरंग पीव विनु ॥ १४ ॥ अध्याय ॥ ५ ॥ कुंदनपुर श्रीकृष्णगए ॥ सारंग ॥ सुनत हरि रुक्मिणिको संदेश । चाढ़िरथ चले विप्रको संगलै कियो न गेह प्रवेश ॥ वारंवार विप्रको पूंछत कुँअरि वचन सो सुनावत । दीन वचन करुणानिधान सुनि नयननीर भरिआवत॥कह्यो हलधरसों आवहु दललै मैं पहुँचतहौं धाई॥सूरप्रभू कुंडिनपुर आए विप्रनू जाइ सुनाई॥१५॥कुँअरि सुनि पायो अतिआनंदन । मनहीं मनहिं विचारक रत इह कब मिलिहैं नँदनंदन ॥ हार चीर पाटंवर देकरि विप्रहि गेह पठायो॥ पै इह भेद रुक्मिणी निज मुख काहू कहि न सुनायो ॥ हरि आगमन जानिकै भीषम आगे लेन सिधायो । सूरदास प्रभु दरशण कारण नगर लोग सब धायो ॥ आसावरी ॥ १६ ॥ देख रूप सब नगरेक लोग । वारंवार अशीश देत सब यह वर बन्यो रुक्मिणी योग ॥ जो कछु चतुराई विधनामों जानत युगरस रीति । तौ अजहूं लौं राजसुतापाति हरिह्वैहै शिशुपालहि जीति ॥ जो राजा कौतुक चलिआए ते मुख निरखि कहतहैं बात । परत न पलक चकोर चंद्रलौं अवलो कत लोचन अकुलात ॥ मनसाको हीता जगजविन सुंदर वर वसुदेवकुमार । सूरदास जाके जिय जैसी हरिकीन्हें तैसो व्यवहार॥१७॥ सखी वचन रुक्मिणी मति सूही ॥ विलावल ॥ सोच सोच तू डार उठि देख दीनदयालु आयो । निरखि लोचन प्रणत मोचन कुँवरि फल वांछो सो पायो ॥ सुनत भइ अकुलाइ ठाढी ज्यों मृतक विधि दै जिवायो । चढि सदन वह वदन की छवि परखि दीनो दव बुझायो ॥ ले वलाइ सुकर लगायो निरखि मंगलचार गायो । नैन आरति अर्घ्य आंसू पुहुप तन मन धन चढायो । जानि हौं व्रजनाथ जियकी कियो सो जो तुम बतायो । अपहरन पुन वरन वंश हरि जानि हौं केहि योग भायो ॥ भक्तके वश भक्तवत्सल विदुर सातोसाग खायो ॥ मुदित ह्वैगई गौरि मंदिर जोरि कर वहु विधि मनायो ॥ प्रगट तेहि छिन सूरके प्रभु बांह गहि कियो वाम भायो । कृपासागर गुणन आगर दासि दुख दीनहि विहायो१८॥ रुक्मिणी हरन ॥ आसावरी॥ रुक्मिणी देवी मंदिर आई । धूप दीप पूजा सामग्री अली संग सब ल्याई ॥ रखवारीको वहुत महाभट

दीन्हे रुक्म पठाई । ते सब सावधान भए चहुँ दिश पंछी इहाँ न जाई ॥ कुँवरि पूजि गौरी विनती करि वरदेहु यादवराई । मैं पूजा कीन्ही या कारण गौरी सुनि मुसुकाई ॥ पाइ प्रसाद अंबिका मंदिर रुक्मिणि वाहेर आई । सुभट देख सुंदरता मोहे धरणि गिरे मुरझाई ॥ यहिअंतर यादवपति आए रुक्मिणि रथ वैठाई । सूरप्रभू पहुँचे अपने घर तव सवहिन सुधिपाई॥१९॥ आसावरी॥ याहीते शूल रही शिशुपालहि । सुमिरि सुमिरि पछताति सदा वह मान भंगके कालहि॥दुलहिनि कहति दौरि दीजहु द्विज पाती नंदकेलालहि।वर सुवरात वुलाइ वडे हित मनसि मनोहर वालहि ॥ आये हरपि हरन रुक्मिणि रिस लगी दनुज उर शालहि । सूरज दास सिंह वलि अपुनो लीनी दलकि शृगालहि॥२०॥ अध्याय ॥ ५४ ॥ श्रीकृष्ण रुक्मिणीविवाह॥सोरठ ॥ श्याम जव रुक्मिणि हरि लै सिधाये । सुनि जरासंध शिशुपाल धाए ॥ शालवदंतवंक्र वना रसीको नृपति चढे दलसाजि मानो रविहि छाए । सांगकि झलक चहुँदिशा चपला चमकि गजगर्ज सुनत दिग्गज डेराए ॥ श्याम वलराम सुधिपाइ सन्मुख भये वाणवर्पा करन लगे सारे । रुक्मिणी मैं कियो श्याम धीरज दियो वानसों वान तिनके निवारे ॥ राम हल मूशल संभारि धायो वहुरि विपुलरथ औ सुभट सव संहारे॥रुंड पर रुंड धुकि परे धरि धरणिपर गिरत ज्यों संग कर वज्रमारे ॥ जरासंध जीवते भजो रणखेतते शाल दंतवक्र या विधि पराई । प्रातके समै ज्यों भानुके उदयते भलैं होइ जात उडगन नशाई॥गह्यो भगवान शिशुपालको जीवते ताहि सों वचन याविधि उचारे । रुक्मिणी लिये मैं जात तुम देखतहि पै नहीं हरष कछु मन हमारे ॥ पुरुपको भाजिवेते मरनहै भलो जाइ सुरलोक द्वारे उघारे । पुरुपको हार अरु जीत दोउ होतहै हर्ष अरु सोच नाहिं चित्तधारे ॥ वीजवोइये जोइ अंतलेनिये सोइ समुझि यहवात नहिं चित्त धरई । करन कारण महाराजहैं आपही तिनहिं चित राखि नित धर्म्म करई ॥ वहुरि भगवान शिशुपालको छाँडिदियो गयो निज देशको सो खिसाई । शस्त्र धनु छाँडिकै भाजि नरपतिगये यादवनहेत हरिदै लुटाई॥रुक्म यह सुनि चल्यो सौंह करि नृपनपै श्याम वलरामको वांधि ल्याऊं। आइ इहां कह्यो शिशुपाल सो मैं नहीं आपनो वल तुम्हैं अव दिखाऊं ॥वाण वर्पा लग्यो करन याभांति कहि कृष्णज्यो तिनहिं मगमें निवारयो॥ आपने वाणको काटि ध्वज रुक्मके असुर औ सारथी तुरत मारयो ॥ रुक्मभूपरयो उठि युद्धहरिसों करयो हरिसकल शस्त्र ताके निवारे। वहुरि खिसिआइ भगवानके ढिगचल्यो ज्यों चलत पतंग दीपक निहारे॥ खड्गलै ताहि भगवान मारनचले रुक्मिणी जोरिकर विनयकीयो । दोप इन कियो मोहिं क्षमा प्रभु कीजिए भद्रकारि शीश जिवदान दीयो ॥ राम अरु यादवन सुभट ताके हते रुधिरके नहर सरिता वहाई । सुभट मनो मकर अरु केश सेवार ज्यों धनुप त्वच चर्म कूरम वनाई ॥ वहुरि भगवानके निकट आये सकल देखिकै रुक्मको हँसेसारे । कह्यो भगवानसों कहा यह कियो तुम छाँडिवो हुतो या भलो मारे ॥ मरेते अप्सरा आइ ताको वरति भाजिहैं देखि अव गेह नारी । रुक्मिणी सों कह्यो सोच नाहिं कीजिए होतहै सोइ जो होनिहारी ॥ रुक्म शिरनाइ या भांति विनती करी वुद्धि मर्म तुम्हरो नहीं जान्यो । ब्रह्म तुम अनंत तुम तुमहिं कारण करण मैं कौन भांति तुम्हको पहिचान्यो ॥ दीन वंधु कृपासिंधु करुणाकर सुनि विनय दयाकारि ताहिको छाँडि दीन्हा। वहुरि निज नगरपैठ्यो न सो लाज करि वनहि तिन आपनो वास कीन्हो ॥ आइ भीपम दियो दाइज ता ठौर वहु श्याम आनंद सहित पुर सिधाये। सुनत द्वारावती मारु उतसों भयो सूरजन मंगलाचार गाये ॥ २१ ॥

॥ आसावरी ॥ देखहिं दौरि द्वारकावासी । सुनत सकल पुर जीत रुक्मिणी लै आए यदुपति अविनासी ॥ लेति वलाइ करत नवछावरि वलि भुज दंड कनक अति त्रासी । नर नारीके नैन निरखि करि चातक तृपित चकोरी प्यासी ॥ कर आरती कलस लै धाई चीन्हि न परति कुलवधू दासी। देश देश भयो रहसि सूर प्रभु जरासंध शिशुपालकी हांसी २२॥ धनाश्री॥आवहुरी मिलि मंगल गावहु। हरि रुक्मिणिहि लिये आवत हैं इह आनँद यदुकुलहि सुनावहु ॥ बांधो वंदनवार मनोहर कनक कलस भरि नीर भरावहु । दधि अक्षत फल फूल परमरुचि अंगन चंदन चौक पुरावहु ॥ कदली यूथ अनूप कुशल दल सुरंग सुमन लै मंडल छावहु । हरद दूव केशर मग छिरकौ भेरी मृदंग निसान वजावहु ॥ जरासंध शिशुपाल नृपतिते जीतेहैं उठि अर्घ्य चढ़ावहु । वल समेत तनु कुशल सूर प्रभु हरि आये आरती सजावहु॥२३॥ विवाह वर्णन ॥ विलावल ॥ छंद त्रिभंगी ॥श्रीयादवपति व्याहन आया।धन्य धन्य रुक्मिणि हरि वर पाया॥छंद॥हरि श्याम घन तन परमसुंदर तड़ित वसन विराजई । अँग अंग भूपण सुरस शशि पूरणकला मानो भ्राजई ॥ कमल मुखकर कमल लोचन कमल मृदुपद सोहही । कमल नाभिः कमल सुंदर निरखि सुर मुनि मोहही ॥ १ ॥ सुधा सरोवर छिटकि अनूपम । ग्रीव कपोत मनो नाशा कीरसम॥ छंद ॥ कीर नासा इंद्र धनु भू भँवर से अलकावली । अधर विद्रुम वज्रकन दाडिम किधौं दशदशनावली ॥ खौर केशरि अति विराजत तिलक मृदमदको दियो । कामरूप विलोकि मोह्यो वास पद अंवुज कियो ॥ २ ॥ वसुदेवनंदन त्रिभुवन मनहरन । मुकुट तरुन मनो मकर कुंडल श्रवन॥ छंद ॥ मुकुटकुंडल जडित हीरा लाल सोभा अतिवनी । पन्ना पिरोजा लागे विच विच चहुंदिशिलटकत मनी ॥ सेहरो शिर पर मुकुट लटक्यो कंठमाला राजई । हाथ पहुँची वीर कानग जरित मुंदरी भ्राजई ॥ ३ ॥ उर वैजंतीमाल सोभा अतिवनी । चरणन नूपुर कटतट किंकिनी ॥छंद॥ किंकिनी कट चरन नूपुर शब्द सुंदर कुंजही । कोकिला कल हंस वाल रसालते नहिं पुंजही ॥ तुरई वाजनि वीना ताजनि चपल चपला सेहरी । जीन जरित जराव वागहि लगे सव मुकुतासरी ॥ ४ ॥ चढ़ि यदु नंदन वनित वनाइकै । साजि वरात चले यादव चाइकै ॥ छंद ॥ चले साजि वरात यादव कोटि छप्पन अतिवली । उग्रसेन वसुदेव हलधर करत मन मन अति तली॥ शंख भेरि निशान वाजहिं नचहिं शुद्ध सोहावनी । भाट बोलैं विरद नारी वचन कहैं मन भावनी ॥ ५ ॥ सुरपति आयो संगहै शची।शुद्धमुहूरत चौरी विधिरची ॥ छंद ॥ रची चौरी आपु ब्रह्मा जरित खंभ लगाइकै । इंद्र सुरदारानि सहित वैठे तहां सुखपाइकै ॥ चौक मुक्ताहल पुरायो आइ हरि वैठे तहां । निरखि सुर नर सकल मोहे रहिगए जहँके तहां ॥ ६ ॥ कुंअरि रुक्मिणी कमला अवतरी । शशि पोडस कला सोभा तनुधरी ॥छंद॥ कुंअरि शशि पोडसकला शृंगार करि ल्याई अली। विविध विधि कियो व्याह विधि वसुदेव मन उपजी रली ॥ सुर पुहुप वरसैं हरपिकै गंधर्व किन्नर गावहीं । शारदा नारद आदिसुयश उच्चार जयति सुनावहीं ॥ ७ ॥ विप्रगणउ दिए वहु युगुति सुरति करि । किए अयाची याचक जन वहुरि॥छंद॥वहुरि निज मंदिर सिधारे करी सुभद्रा आरती । देवकी पीवो वार नीरददई अशीशा भारती ॥ युवा युवती खेलाइ कुल व्यवहार सकल कराइवो । जनन मन भयो सूर आनँद हरपि मंगल गाइवो ॥८॥सारंग॥ तोसों गारि कहा कहिदीजै हो यदुनंदन। जग वपु नाउँ कौनको लीजै हो यदुनंदन ॥छंद॥ वपु जगत काको नाउँ लीजै हो यदुज्ञाति गोत न जानिए। गणरूप कछु अनुहारि नाहीं का वखान वखानिए ॥ सव शोधि रह्यो नशोधपायो विन सुने का

कीजिए। वलिजाउँ यादवपति तुम्हारी गारिका कहि दीजिए॥ तेरी मैया सब जग खोयो। सोको जो बल न विगोयो ॥ छंद॥ सोको जो नवल कारि वियोगो फिरत निशि वासर वनी। शिरश्वेत पट कटि नील लहँगा लाल चोली विनतनी ॥ कछु मंद मुख मुसुकाइ सुर नर नाग भुज भीतर लए। वलिजाउँ यादवपति तुम्हारी माया कुल विनु तुम किए॥ कछु कहि न जाइ गति ताकी। नित रहत मदनमद छाकी॥ नित रहत मन्मथ मदहि छाकी निलज कुच झांपत नहीं। तव देखि देखि जु छयल मोहित विकलह्वै धावत तहीं॥ इक परत उठत अनेक अरुझत मोह अति मनसा मही। यहि भांति कथा अनेक ताकी कहत हू नपरै कही ॥ वहतौ नित नवतनु रतिजोरै। चित चितवनिही मँहहैचोरै ॥ छंद॥ अति चतुर चितवनि चित चुरावति चलत धर धीर न धरै। फिरि चमक चोप लगाइ चंचल तनहिं तव अंतर करै॥ कछु भौंहकी छवि निराखि नैननि सुको जन व्रतते टरै। इहि भांति चतुर सुजान समधिनि सकति रति सवसों करै॥इनहीभूलिरहे सव भोगी।वशकीने ब्राह्मणजे योगी॥ छत्रपति केतेकहौं और अग जग जीव जल थल गनत सुनत न सुधि लहौं॥ ते परमआतुर काम कातुर निरखि नित कौतुक नए। यहि भांति समधिन संग निशिदिन फिरत भ्रम भूले भए॥ अव तुमहो परम सयाने। तुम ठाकुर सव जगजाने ॥ छंद॥ ठाकुर सवनके कृपानिधि हरि सुयश सव जग गाइए। या लोकके उपहास आपुन ताहि वरजि मिटाइए ॥ कहि एकहि भल पांच माधो और अनत न सूझिए। सुनि सूरश्याम सुजान इहिकुल अव न ऐसी कीजिए॥२४॥ अध्याय॥ ५५॥ प्रद्युम्नजन्म॥ विलावल॥ प्रद्युम्न जन्म शुभघरी होऊ। काम अवतार लीन्हो विदित वात यह तासु सम तूल नाहिं रूप दोऊ ॥ पृथ्वीपर असुर शंवरभयो अति प्रवल तिन्ह उदधि मांह तेहि डारि दीन्हों। मक्षलियो भक्ष सो भक्ष गह्यो असुर तव कौनसों लेइकै भेट कीन्हो॥ मक्षके उदरते वाल परकटभयो असुर मायावती हाथ दीन्हो। कह्यो तेहि काम पर माण नारद वचन सुमिरि अति हर्षसों ताहि लीन्हो ॥ भयो जव तरुण तव नारि तासों कह्यो रुक्मिणी मात हरि तात तेरो। नाम ममरति विदित वात जानत जगत कामतुअ नाम पुनि पुरुष मेरो॥ असुरको मार परिवारको देहि सुख देउँ विद्या तोको मैं वताइं। विना विद्या असुर जीत सकही नहीं भेदकी वात सव कहि सुनाई॥ प्रद्युमन सकल विद्या समुझि नारिसों असुर सों युद्ध मांग्यो प्रचारी। काटि करवारि लियो मारि ताको तुरत सुरन आकास जयध्वनि उचारी॥ वहुरि आकास मधि जाइ द्वारावती मात मनमोद अतिही वढायो। भयो यदुवंश अति रहसमानो जन्म भयो सूर जन मंगलाचार गायो॥२५॥अध्याय॥ ५६॥ मणिहेतु सत्यभामा जाम्ववती विवाह॥ सारंग॥ हरिदर्शन सत्राजित आयो। लोगन जान्यो आवत आदित हरिसों जाइ सुनायो॥ हरि कह्यो रवि न होइ सत्राजित मणि है ताके पास। रवि प्रसन्न होइ दीन्ही ताको यह ताको परकाश॥ आइ गयो सोऊ तेहि अवसर तेहि हरि कह्यो सुनाइ। यह मणि अति अनुपम है सो सुनि रहि न सक्यो ललचाइ॥ येक दिन ताते अनुज सो मांगी ले गयो अखेट क काजा। ताको मारि सिंह मणि लै गयो सिंह हत्यो रिछराजा॥ ऋच्छराज वह मणि तासों लै जाम्ववतीको दीन्ही।प्रसमन को विलंव भयो तव सत्राजित सुध लीन्ही॥जहां तहांको लोग पठा ये काहू खोज न पायो। सूरदास सत्राजित भ्रमसों चोरी हरिहि लगायो॥२६॥अध्याय॥ ५७॥ शत धन्वा वध अक्रूर संवाद॥ सोरठ॥ शुकदेव कहत सुनहु हो राजा। ज्ञानी लोभ करत नहिं कवहूं लोभ

विगारत काजा ॥ करिकै लोभ अमृत जो पीवै विष समान सो होई। विष अमृत होइ जाइ लोभ विन यह जानत जन कोई ॥ एकसमय यदुपति औ हलधर पंडव गृह पग धारी। शतधन्वा अरु सुफलकसुत मिलि कीन्हों मंत्र विचारी ॥ सत्राजितको हति मणि लीजै ज्यों जानै नहिं कोई। ऐसो समय वहुरि फिरि नाहीं पाछे होइ सो होई ॥ निशि अँधेयारी जाइ शतधन्वा मारि ताहि मणि ल्यायो। फैलगई यह वात नगर सव तव मनमें पछितायो ॥ सतभामा करि सोक पिताको यदुपति पास सिधाई। शतधन्वा करत करी सो हरिसों कहि समुझाई ॥ सुनि यदुपति हलधर उठि धाये वेग विलंव न लाई। लैहैं वैर पिता तेरेको जैहै कहां पराई ॥ तव मणि डारि अक्रूर पास वह मिथिलापुरको धायो। शत योजन मग एक दिवसमें तुरंग जाइ पहुँचायो ॥ द्वारावति पैठत हरि सों सव लोगन खवरि जनाई। मिथिलापुरी जाइ तिन मारचो पै मणि वहां न पाई॥तव हरि कह्यो हत्यो विन दूषण हलधर भेद वतायो। वहां जाइ खोज तुम कीजो द्वारावति धरि आयो ॥ हलधर रहे गदायुध सीखन हरि द्वारावति आये। सतभामा मन हरष भयो जव समाचार सव पाये। सुफलकसुत मनहीं मन संकुच्यो करों कहा अवकाजा।देत न वनै वनै नहिं राखत उर डेरात उठि भाजा॥सव यादव मिलि हरिसों इह कह्यो सुफलकसुत जहां होइ। अनावृष्टि अतिवृष्टि होति नहिं इह जानत सवकोइ ॥ कीजै दोष क्षमा अव ताको हरि तव ताहि वुलायो। कहो कहा कहिए अव तुमसों तिन शिर नीचो नायो ॥ पुनि कह्यो मणि सतभामाको दै याते भय भयो तोहीं। मणि वनदै वहुरोहि तेहींदेइ कह्यो लोभ नहिं मोहीं। लोभ भलो नाहीं दूनो पुर लोभ किये तप जाई। सूर लोभ कीनो सो विगोयौ शुक यह कहि समुझाई ॥ २७ ॥

अध्याय ॥ ५८ ॥ पंचपटरानीका विवाह श्रीकृष्ण सों भया॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरो सव कोई। हरि हरि सुमिरत सव सुख होई ॥ हरि हरि सुमिरचो है जिन जहां॥हरि तेहि दरशन दीन्हों तहां ॥ हरि सुमिरन कालिन्दी कीन्हो। हरि वहां जाइ दरश तेहि दीन्हों ॥ पाणिग्रहण पुनि ताको कीन्हो॥ सवै भांति ताको सुख दीन्हो ॥ हरिहि मित्रविंदा चित ध्यायो। हरि तहां जाइ विलंव नलायो ॥ करि विवाह ताही लै आयो। तासु मनोरथ सकल पुजायो ॥ हरि चरणन सीता चित दीन्हों। ताको पिता परण यह कीन्हो ॥ सात वैल इह नाथै जोइ। सीता व्याह ताहि सँग होइ ॥ हरि तहां जाइ तासु प्रण राख्यो। धन्य धन्य सव काहू भाष्यो ॥ ताके पिता व्याह जव कियो। दाइज वहु प्रकार पुनि दियो ॥ वहुरो भद्रा सुमिरो हरी। गये पास तव विलम न करी ॥ ऐसेही त्रिभुवनपति राई। ताके मनकी आश पुराई ॥ वहुरि लछमना सुमिरन कीन्हां। ताहि स्वयंवरमें हरि लीन्हों॥पांचौ वारि व्याह घर आये॥सूरदास यश मंगल गाये॥ २८ ॥ द्वारका प्रवेश शोभा वर्णन ॥ राग मलार ॥ देखो माई हरिजूके रथकी शोभा। योग यज्ञ तप कठिन कर्म्म सव कीजत है जिहि लोभा ॥ चारु चक्र मणि पानि विराजत चंचल चमर पताका। श्वेत छत्र मनु शशि प्राचीदिशि प्रगट्यो रजनी राका ॥ उपजत छवि कर अधर शंख निश सुनियत दुष्ट प्रशंसा। मानहु अरुन कमल मंडलमें कूजतहैं कलहंसा ॥ श्यामसुंदर सुदेश पीतपट शीश मुकुट उरमाला। जनु घन दामिनि रवि तारागण उदित एकही काला ॥ आनंदित सुत वंधु जननि पितु कृष्ण मिलन पिय भावै।सूरदास प्रभु द्वारकावासिनि प्राणनाथ हियभावै॥२९॥ अध्याय ॥ ५९ ॥ भौमासुर वध ॥ नृप कन्या मोक्ष॥सुरतरु आगमन॥षोडससहस्र रानी विवाह॥राग गौरी ॥ सतभामासों इती वात जवते न कहीरी। किितक कठिन सुरतरु सूप्रनकी या कारणतू रूठि रहीरी॥परमुख सुख जना उनदीने विन काजेदि

श देह दहीरी । अपनीसों सुनि सतभामातातैं मैं मन बच यह सुधि न लहीरी॥सूनो निपट अकेलो मंदिर चंद्रकला जनु राहु गहीरी । तुववियोगकी पीर कठिन अति सुकहि सूर क्यों जाति सहीरी ॥ ३० ॥ आसावरी ॥ रटत कृष्ण गोविंद हरि हरि मुरारी । भक्त भयहरन असुर अंतकारी ॥ पटदश सहस कन्या असुर वंदि में नींद अरु भूख अहनिशि विसारी । प्रीति तिनकी सुमिरि भए अनुकूल हरि सत्यमामा हृदय यह उपाई ॥ कल्पतरु देखिवेकी भई साध मोहिं कृपाकरि नाथ ल्यावहु देखाई । सत्यभामा सहित बैठि हरि गरुडपर भौमासुर नगर गए तुरत धाई। एकही वान पाषानको कोट सब हुतो चहुँओर सो दियो ढहाई।गरुड चहुँपास के नाग लियो निगल जल वरषिके अग्नि ज्वाला बुझाई ॥ करे हरि शंखध्वनि जग्यो तव असुर सुनि कोपकरि भवन ते निकस धायो। देखिके गरुडको लगो ता हृदय दव कठिन त्रिशूल तव गहि चलायो ॥ असुर शिर टेक तव कह्यो निज नृपतिसों नाहिं तिहुँ भुवन कोउ सम तुम्हारे । युद्धको करत छाजत नहीं है तुम्हें सुनो महाराज इह चाहत हमारे ॥ कियो तव युद्ध वन क्रोध होइ श्याम सों हरि कह्यो गरुड याहति प्रचारी। गरुड सुनि धाइ गह्यो जाइ ताको तुरत नैनहू शीश डारे प्रहारी॥तासु पुत्रन वहुरि युद्ध हरिसों कियो मारते सोऊ कादर डेराने । असुर काटि काटि परे कोऊ उठि उठि लरे कोउ डर डर विदिश दिश पराने ॥ तव असुर अग्नि जलवान डारन लग्यो तासु माया सकल हरि निवारी।असुरके तनहिको लग्यो कलपन तुरंग गज उडि चले लागी वयारी॥असुर गजरूढ होइ गदा मारे फटकि श्याम अंग लागि सो गिरैं ऐसे । वालके हाथते कमल अमल नाल युत लागि गजराज तन गिरत जैसे ॥ आप जगदीश सव शीश ता असुरकी मारि त्रिशूल सोइ काट डारे। छाँडिसो प्राण निर्वाणपदको गयो सुर पुहुप वर्षि जै जै उचारे ॥ पृथ्वीगहि पाइ माला कुंडल छत्र लै जोरि कर वहुरि विनती सुनाई। नाथ मम पुत्रको दीजिये परमगति हरि कह्यो पुत्रको मुक्ति पाई ॥ वहुरि गये तहां कन्याहुती सव जहां निरखि हरि रूप सो सव लुभाई। चरणही लागि वडभाग लखि आपने कृपाकरि हरि सो निजपुर पठाई ॥ वहुरि गयो इंद्रपुर इंद्र रह्यो पाँइपर कलपतरु वृक्ष तासों मँगाई।त्रिदशपति मोति अरु रत्न कुंडल दई वृक्ष लै आप निज पुरी आई॥वहुरि वहु रूप धारि गए हरि सवन घर व्याह करि सवनकी आशपूरी।सवनके भौन हरि रहहिं सव रैन दिन सवनसों नेक नाहिं होत दूरी ॥ सवनको पुत्र दशदश कुँअरि एक एक दै सक लको धर्म गृह किए सिखाई । कोटि ब्रह्मांड नायक सो वसुदेव सुत सूर सोई नँदनंदन कहाई ॥ ॥ ३१ ॥ अध्याय ॥ ६० ॥ रुक्मिणीभक्ति परीक्षा ॥ राग विलावल ॥ भक्तवत्सल हरिभक्त उधारन । भक्त परीक्षाके हित कारन ॥ रुक्मिणिसों वोले सति भाई । हम जानी तुमरी चतुराई ॥ राउ चंदेरीको शिशुपाल । जाको सेवत सव भूपाल ॥ तासों तेरी भई सगाई । तैं पाती क्यों हमहिं पठाई ॥जाति पाँति उन सम हम नाहीं । हम निर्गुण सव गुण उनपाहीं ॥ उन सम नाहिं हमरी ठकुराई। पुरुष भले ते नारि भलाई ॥ निःकंचन जिनमें ममवासा । नारि संगमें रहौं उदासा॥ जो कहै मोहिं काहे तुम्ह ल्याये । ताको उत्तर द्यों समुझाये॥कुंडिनपुर वहु भूपति आये । तिनके हृदय गर्वसों छाये ॥ वरजोरी मैं तोहिं हरिल्यायो । उनके मनके गर्व नशायो ॥ इह सुनि रुक्मिणि भई वेहाल । जानि परयो नाहिं हरिको ख्याल॥ लै उसांस नैन जलढारे।मुखते वचन न कछुक उचारे॥ ताकी दशा देखि हरिजानी। इन्ह मम भक्ति भली पहिचानी॥ हँसि वोले तव शारँगपानी। प्राणप्रिया तुम क्यों विलखानी ॥ मैं हांसीकरि वात चलाई। तुम्हरे मन इह सांची आई ॥ आंसू

पोंछि निकट बैठारी । हँसी जानि बोली तब प्यारी ॥ कहां तुम त्रिभुवनपति गोपालाकहां बापुरो नर शिशुपाल॥कहां चंदेरी कहां द्वारावती । जाके सरवर नहीं अमरावती ॥ तुम अमर वह जनमें मरै।मूरख उन तुम सरवर करै॥तुमसन और नहीं यदुराई । यहीजानि मैं शरणनआई ॥ इह सुनि हरि रुक्मिणिसों कह्यो । ज्यों तुम मोको चितपर चढ्यो ॥ त्योंही हम चित चाहत तुमकों । नाहिं अंतर कछु हमसों तुमसों।यदुपतिकों यह सहज सुभाउ।जो कोउ भजै भजहितेहिभाउ॥जो इह लीला हितकरि गावै।सूरसो प्रेम भक्तिको पावै ॥३२॥अध्याय ॥६१॥ प्रद्युम्न विवाह रुक्मकालिंग राजावध ॥ रागमारू

श्याम बलरामको सदा गाऊं । यही मम यज्ञ जप इहै तप नेम व्रत यहै मम प्रेम फल यही पाऊं ॥ श्याम बलराम प्रद्युम्नके व्याह हित रुक्मके देश जबहीं सिधाये।कलिंगको राउ अरु रुक्म बलभद्र सों कपट करि सारि पासाखिलाये ॥ दांव बलरामको देखि उन छल कियो रुक्म जीत्यो कहन लगे सारे। देववाणी भई जीतभई रामकी ताउपै मूढ़ नाहीं सँभारे ॥ कलिंगको राउ करि हँसी लाग्यो करन बन बसन हार कहा खेल जानो । सभाके लोगहू लगे हाँसी करन राम तब हृदयमें क्रोध आन्यो ॥ रुक्म औ कलिंगको राउ मार्‍यो प्रथम बहुरि तिनके बहुत सुभट मारे । सूर प्रभु राम बलराम रणजीत भये प्रद्युम्न व्याहि निजपुर सिधारे ॥ ३३ ॥ अध्याय ॥ ६२ ॥ऊषा अनिरुद्ध विवाहवर्णन ॥ रागमारू ॥ कुँवर तन श्याम मानो कामहै दूसरो सपनेमें देखि ऊषा लोभाई। चित्ररेखा सकल जगतके नृपनकी छिनिकमें सुरति तब लिखि देखाई॥निरखि यदुवंशको रहस मनमें भयो देखि अनिरुद्धसों युद्ध माड्यो। सूर प्रभु ठटी ज्यों भयो चाहै सोत्यों फांसि करि कुँअर अनिरुद्ध बांध्यो ॥३४॥ अनिरुद्धव्याह ॥ अध्याय ॥ ६३ ॥ मारू ॥ श्याम बलराम यह सुनत धाये। आइ नारद कह्यो द्वारका नाथसों बाणासुर चोर अनिरुद्ध बँधाये॥छोहनी दुइदशहुतो हरि सँग कटक जातही नगर ताको लुटायो । देखि यह असुर सन्मुख भयो श्यामके रुद्र निज सैन लै तहां आयो ॥ रुद्र भगवान अरु बान सांबुक भिरे राम कुंभाड मांडी लराई । सैनपति कोपि प्रद्युम्नसों भिर्‍यो सांतुकुंकर दोऊ भिरन धाई ॥ तेज भगवानको पायजलावन लगे असुर दल चल्यो सबही पराई। रुद्र तब कोपि करि अग्नि वरपाकरी श्याम जल वर्षि डार्‍यो बुझाई ॥ पुनि महादेव जो बाण संधान लियो आप भगवान ताको प्रहार्‍यो।देखि यह युद्ध सुर असुर चकृतभये लख्यो तबबाण जो रुद्र धार्‍यो ॥ बाण तब आइ भगवान सन्मुख भयो बाण वर्षा करन लग्गो भारी।येकहू बाण आयो नहरिके निकट तब गह्यो धनुष सारंगधारी ॥ एकही बाण संधान रथके तुरंग ध्वजा अरु धनुष सब काटि डारी।शंखको शब्दकरि लियो असुर तेज हरि ध्वनि रही फैल नभ पृथ्वीसारी ॥ देखि यह असुरकी मातुधाई नगन तुरत भगवानके निकट आई । नगन त्रिय वे जगत नाहिन कह्यो जानि इह हरि रहे मुख फिराई ॥ असुर यह घात तकि गयो रणते सटकि विपतिज्वर दियो तब शिवपठाई । सतज्वर युद्धकरि कियो विह्वल तिसे तिन तबहिं आइ विनती सुनाई ॥ प्राणदाता तुहीं स्थल छूछिमतुही सर्वआत्मा तुही धर्मपालकाज्ञान तुही कर्म्म तुही विश्वकर्मा तुही अनंत शक्ति प्रभु असुर शालक ॥ संपत्ति अरु विपतिको मिलि चलै प्रभु तहां जहां नहिं होइ सुमिरन तिहारो । करत दंडवत मैं तुम्हैं करुणाकरन कृपाकरि ओर मेरे निहारो सुनत यह वचन हरि कह्यो अब मौन करि कृपाकरि तोहिं परवीर धारी संपति अरु विपतिको भय नहोइहै तिसे सुनै जो यह कथा चित्तधारी ॥ विपति ज्वर कह्यो शिरनाइ हरिको तुरत बाणासुर बहुरि रणभूमि आयो । चक्रपरिहार हरि कियो ताको निरखि रुद्र

शिरनाइ तव कहि सुनायो ॥ प्रगट तुम कपट तुम तुमहि सब आत्मा निकारचो । अग्नि रुद्र कतिहारी।बुद्धि विधि चंद्रमा मन अहंकारमें धारि चरण रोम तू पृथ्वी सारी शीश आकास अरु श्रवण दशहूं दिशा इंद्र करलोक नृप वपु तिहारो वाण जगदीश मोंहि जान मईसतुम राखितेहि अव नाथ हाथचारो।विहंसि जगदीश कह्यो रुद्र जो तोहिंभजै तहां मैं जाउँ यह प्रण हमारो।कियो प्रह्लाद कुल अभै मैं पर्थ महिवाण कियो अमर भाषे तिहारी।करै जो सेव तुम्हरी सो मम सेवहै विष्णु शिव ब्रह्म ममरूप सारी ॥ वाण अभिमान मन माँह धारचो हुत्यो योंविदित हाथ ताते सँहारी । रुद्र अरु वान अनिरुद्ध सन्मान करि तुरत भगवानके निकट ल्याये । वहुरि ऊपा दई व्याह दाइज सहित करै सुमिरनतिसे भै नहोई । कह्यो जो व्यास शुकदेव भागवतमें कही अब सूर जन गाइ सोई॥३५॥ अध्याय ॥ ६४ ॥ नृग राजा उद्धार ॥ राग सारंग ॥ अविगाति गति जानी न परै । राईते पर्वत करि डारै राई मेरु करै ॥ नृगराजा नित सहस गऊदै करत हुत्यो जलपान । नृगते गिरगिट कीन्हे ताको कोकरि सकै वखान ॥ कूपमाहिं तेहि देखि बालकन हरिसों कह्यो सुनाई।कृपानिधान जानि अपनोजन आये तहँ यदुराई ॥ अंधकूपते काढि वहुरि तेहि दरशनदै निस्तारा । सूरदास सब तजि हरि भजिये जव कव करै उधारा॥३६॥अध्याय ॥ ६५ ॥ भलभद्र वृंदावन आये ॥ विलावल ॥श्याम रामके गुण नित गावों । श्याम रामहीसों चितलावों ॥ एक वार हरि निज पुर छये । हलधरजी बृन्दावन गये । यह देखत लोगन सुखपाये । जान्यो राम श्याम दोउ आये ॥ नंद यशोमति जव सुधिपाई । देह गेहकी सुरति भुलाई ॥ आगे ह्वै लेवेको धाए । हलधर दौरि चरण लपटाए ॥ वलको हित करि गले लगाये । दै अशीश वोले ताभाये ॥ तुमतो भली करी बलराम । कहांरहे मनमोहन श्याम ॥ देखी कान्हरकी निठुराई । कवहूं पातीहू न पठाई ॥ आपुजाइ वहांराजा भए । हमको विछुरि वहुत दुखदये ॥ कहो कवहुँ हमरी सुधि करत । हमतो उन विनु बहुदुख भरत ॥ कहाकरैं वहां कोउ नजात । उनविनु पल पल युगसम जात ॥ यहि अंतर आए सव ग्वार । वैठे सवन यथा व्यवहार ॥ नमस्कार काहूको कियो । काहूको भर अंकम लियो ॥ गोपी जुरीं मिलीवन आई । अतिहित साथ अशीश सुनाई ॥ हरि करि सुध सुधि वुधि विस राई।तिनको प्रेम कहो नहिं जाई ॥ कोउ कहै हरि व्याही वहु नार । तिनके वढ्यो वहुत परिवार॥ उनको इह हम देत अशीस। सुखसों जीवैं कोटि वरीस॥कोऊ कहैं हरिहि नहिं चीन्हो । विन चीन्हें उनको मन दीन्हो॥निश दिन रोवत हमैं विहाइ।कहो कहा हम करैं उपाइ॥कोउ कहै इहां चरावत गाइ। राजाभये द्वारका जाइ ॥ काहेको वे आवैं इहां।भोग विलास करत नित उहां॥ कोउ कहै हरि रीत सव तई।और मित्रनको सव सुख दई॥विरह हमारो कहां रहि गये। जिन हमको अतिही दुख दयो ॥ कोउ कहै जे हरिजीकी रानी।कौन भांति हरिको पतियानी॥कोउ कहै चतुर नारि जो होई। करिहै नहीं निवारो सोई॥कोउ कहै हम तुम क्यों पतिआई।उनको हित कुल लाज गवाँई।हरि कछु ऐसो टोना जानत।सवको मन अपने वश आनत ॥ कोउ कहै हम हरि सव विसराइ।कहा कहैं कछु कह्यो न जाइ॥हरिको सुमिरि नयनजल ढारे।नेक नहीं मन धीरज धारे।।इह सुनि हलधर धीरज धार। कह्यो आइहैं हरि निरधार॥जव वल इह संदेश सुनायो । तव कछु इक धीरज मन आयो॥वलि तहँ रहे वहुरि दुइ मास । व्रजवासिनसों करत विलास ॥ सवसों मिलि पुनि निजपुर आये। सूरदास हरिको गुणगाये॥३७॥ सारंग ॥ वारुणी वल घूमे लोचन विहरत वन सचुपाए।मनहु महा गजराज विराजत करनि यूथ संग छाए ॥ मुकुलित केश सुदेश देखिअत नीलवसन लपटाये।

भरि अपने कर कनक कचोरा पीवति प्रियहि चुखाए ॥ हँसत रिसात बुलावत बरजत तरसत भौंह चढ़ाए । उदित मुदित उठि चलत डगमगत अनुज सुरति जिय आये ॥ इंद्र धनुष भुव चाप अधिक छवि वर वनितनके भाये । सर्वस रीझि देत अपने रस सूरश्याम गुणगाये॥३८॥सारंग॥ वारुनी बलराम पियारी। गौतम सुता भगीरथ वीवर सबहिनते सुंदरि सुकुमारी ॥ ग्रीवा बाहु गला रन गाजत सुखसजनी सतिभाय सवाँरी ॥ संकर्षणके सदा सुहागिनि अति अनुराग भाग बहुभारी ॥ वसुधा धर जु वाम गिरिराजत भ्राजति सकल लोक सुखकारी । प्रथम समागम आनँद आगम दूलह वर दुलहिनी दुलारी ॥ रतिरस रीति प्रीति परगटकारि राम काम पूरणप्रति पारी। सूर सुभाग उदित गोपिनके हरिजू रति भेटे हलधारी॥ ३९ ॥ कालिंदी सुन कह्यो हमारो। बोली वेगि चलहि वन विहरत न्हाहिं शरीर भयो श्रम भारी॥ अतिही सतरहोइ जिनि सरिता छोड़ि गर्व या गुणकोगारो । आपनि सौंह कृष्णकी कानी राखतहौं यश मान तुम्हारो ॥ इतहु महातम मोहिं देखावत भवँरतरंग प्रवाह पसारो । इन खुनसन गोपाल दोहाई हल करि खैंचि करों नदि नारो ॥ शिव विरंचि सनकादि सकल मुनि बोलवचनको ऊधो टारो । सूर सुभद्र श्यामके मैयहि निपट नदी जानत मतवारो ॥ ४० ॥ यमुना आइगई वलदेव । जो तुम कोहौं सौंह करिहौं संतत सादर सेव ॥ सुर नर मुनि जन गन गंधर्व ए सब बचननके देव । सूर भनो यह मातु करतहौ अवलंबनकी टेव ॥ ४१ ॥ कालिंदीहै हरिकी प्यारी । जैसे मोपै श्याम करतहैं तैसी तुम करहु कृपानिनारी ॥ यमुना यशकी राशि चहूं युग यम जेठी जगकी महतारी।सूर कछू जिय जिनि दुखपायो कहा करौं यह टेव तिहारी४२॥रामकली॥ श्री यमुनाजी तिहारो दरश मोहिं भावै । वंशीवटके निकट वसतहो लहरनिकी छवि आवै ॥ दुखह रनी सुखदेनी श्रीयमुना प्रातहिं जो यशगावै।मदनमोहनजूकी अधिक पियारी पटरानीजू कहावै ॥ वृंदावनमें रास विलासै मुरली मधुर वजावै।सूरदास दंपति छवि निरखत विमल विमलयशगावै ४३॥

अध्याय ॥ ६६ ॥ पुंडरीकउद्धार ॥ बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोय । हरिके शत्रु मित्र नहिं दोय॥ज्यों सुमिरै त्योंहींगतिहोइ । हरि हरि हरि सुमिरहु सबकोइ॥ पुंडरीक काशीको राइ । हरिको सुमिरै वैर सुभाइ ॥ अहनिशिरहै एहिलवलाई । क्यों करि जीतौं यादवराई ॥ द्वारावती तिन दूत पठायो। ताको ऐसे कहि समुझायो ॥ चारि भुजा मम आयुधधारा । वासुदेव मैंही निरधारा ॥ योंहींकह्यो यदुपतिसों जाई । कपट तजौं की करो लराई ॥ दूतआइ हरिसों सब कह्यो । हरिजी तेहि यह उत्तर दयो॥जोतैंकहीं सो हम सब जानी ।पुंडरीककी आयु सिरानी॥कहो जाइ करैं युद्ध विचार । सांच झूठ होइहै निरुआर ॥ दूत आइ निजनृपहिं सुनायो। तब उन मनमें युद्ध ठहरायो॥ जहां तहांते सबन बुलाइ । तब लगि यदुपति पहुँचे आइ ॥ पुंडरीक सुनि सन्मुख आयो । पांच क्षोहनी दल सँग ल्यायो॥सैना देखि अस्त्र सँभारी ।यदुपतिके लोगन पर डारी॥हरि कह्यो तू अजहूं संभारी ।सांच झूठ जिय देख विचारी ॥ ताकी मृत्यु आइ निअरानी । जो हरि कही सो मन नहिं आनी ॥ यदुपति तब निज चक्र संभारयो । ताकी सैना ऊपर डारयो ॥ऐसे हैं त्रिभुवनपति राई । जाकी महिमा देवन गाई॥कोऊ भजो काहू परकारा । सूरदास सो उतरै पारा॥४४॥ अध्याय ॥ ६७ ॥

द्विविद सुतीक्ष्ण वध ॥ मारू ॥ द्विविद करि क्रोध हरि पुरी आयो । नृप सुदक्षिण जरयो जरी बारा णसी धाइ धावन जबहिं यह सुनायो ॥ द्वारका माँह उत्पात बहुभांति करि बहुरि रैवत अचल गयो धाई । तहाँहू देखि बलरामकी सभाको करन लागो निडर ह्वै ढिठाई ॥ लख्यो बलराम

यह सुभटवंत है कोऊ हल मुशल शस्त्र अपना सँभारयो। द्विविद लै शालवृक्ष सन्मुख भयो फुरत करि राम तनु फेंकि मारयो॥ राम दल मारि सो वृक्ष चुरकुट कियो द्विविद शिर फटगयो लगत ताके। बहुरि तरु तोरि पाषाण फटकन लग्यो हल मुशल करन परहार बांके॥ वृक्ष पाषाणको जब वहां नाश भयो मुष्टिका युद्ध दोऊ प्रचारी। रामकी मुष्टिका लगे गिरयो सो धरणिपर निकसि गयो प्राण सुधि बुधि बिसारी॥ सुरन आकास से पहुप वर्षाकरी करि नमस्कार जैजै उचारे। देवता गये सब आपने लोकको सूर प्रभु राम निजपुर सिधारे॥४५॥ अध्याय॥ ६९॥ सांब विवाह॥ आसावरी॥ श्याम बलराम को सदा गाऊंश्याम बलराम बिनु दूसरे देवको स्वप्नहू माहिं नाहिं शीशनाऊं॥श्याम सुनि सांव गयो हस्तिनापुर तुरत लक्ष्मणा जहां स्वयंवर रचायो।देखते सबनके ताहि बैठारि रथ आपने देशको पलटि धायो॥ कर्ण दुर्योधनादिक लियो घेरि तेहि कर्ण ढिग आइ बहुबाण मारे।सांब तेहि काटि निज बाण संधान करि तुरँग रथ नाश करि सब संहारे॥हतेउ पुनि सारथी एकही बाण करि परयोसो धरणि गिरिसुधि बि सारी।एक इक बाण भेज्यो सकल नृपनपै मानो सब साथ कीन्हे जोहारी॥देखि यह सुरन धनिधन्य सबहिन करयो पुनि करण अश्वरथके संहारी। सांबपै कोप करि बैठारि रथ आपने सुभट सब हस्तिनापुर सिधारी॥ आइ नारद कही तुरत भगवान सों चले भगवान हलधर बोलाई। कह्यो मैं जाइकै ल्याइहौं सांबको कौरवन सों सदा हित हमारे। प्रीति की रीति समुझाइ कै नतरु मैं एकही मुशल सबको सँहारो। जाइ बलराम भेटे सकल कौरवन बहुरि तिन सबन पुनि कहि सुनायो। सांवसों चूक जो भई बालक हुतो तुम्हैं नहिं बूझिये जो बँधायो॥ कह्यो दुर्योधन अति कोप तेहि दोष नहिं दोष सब लगे पुर गये हमारे। जो मने कियो सन्मान निज सभामें बहुरि इन ओर हित करि निहारे। जाम्बवंत सुता सुत कहां मम सुता बुधि वंत पुरुष यह सब संभारै। अरु सदा देत यादवसुता कौरवन कहत अब बात बल सुनि विचारै॥ कह्यो बलराम यह सांवसुत श्यामको रुद्र विधि रेणु जाकी न पावैं। इंद्र सुर सकल दरबार ठाढे रहैं सिद्ध गंधर्व गुण सदा गावैं॥ बहुरि करि कोप हल अग्र पर वक्र धर कटक भेदरर चाहत डुबायो।कौरवन मिलि बहुरि भांति विनती करी दोष तिनको द्विजन मिलि क्षमायो।।सांबको लक्ष्मिना सहित ल्याये बहुरि दियो दाइज अगिन गिनन जाई। सूर प्रभु राम बलराम अतुल कौ तुहल नीके कर आनंद निज पुरी आई॥४६॥ अध्याय॥७०॥ नारदसंशय द्वारका आगमन॥ धनाश्री॥ हरि की लीला देखि नारद चकृत भये। मन यह करत विचार गोमती तर गये॥ अलख निरंजन निर्विकार अच्युत अविनाशी।सेवत जाहि महेश शेष सुर माया दासी॥ धर्म्म स्थापन हेतु पुनि धारयो नर अवतार। ताको पुत्र कलत्रसों नहिं संभवत पियार॥ हरिके षोड़श सहस रहैं पतिव्रतानारी। सबसों हरिको हेत सबै हरि जीकी प्यारी॥ जाके गृह दुइ नारि होंइ ताहि कलह नित होइ। हरि विहार केहि विधि करत नैनन देखों जोइ॥ द्वारावति ऋषि पैठ भवन हरि जू के आयो। आगे होइ हरि नारि सहित चरणन शिरनायो॥ सिंहासन बैठारि कै प्रभु धोये चरण बनाइ। चरणोदक शिर धारि कह्यो कृपाकरी ऋषिराइ॥ तब नारद हँसि कह्यो सुनो त्रिभुवनपति राई। तुम देवनके देव देतहो मोहिं बडाई॥ विधि महेश सेवत तुम्हैं मैं बपुराकेहिमाहीं। कहत तुम्हैं ब्राह्मण देवता यामे अचरज नाहीं॥ और गेह ऋषि गये तहां देखे यदुराई। चमर ढोरावत नारि करत दासी सेवकाई॥ ऋषिको रूपे

देखि हरि बहुरि कियो सन्मान । उहँऊते नारद चले करत ऐसो अनुमान ॥ जागृह में मैं जाउँ श्याम आगेही आवत । ताते छांडि सुभाव जाउँ अब कैसे धावत ॥ जहां नारद श्रम करि गये तहां देखे घनश्याम । पालनहू क्रीडा करत करजोरे खडीं वाम ॥ नारद जहाँ जहाँ जाइँ तहाँ तहाँ हरिको देखै । कहुँ कछु लीला करत कहूं कछु लीला पेखै ॥ योहीं सब गृहमें गये भयो न मन विश्राम । तब ताको व्याकुल निरखि हँसि बोले घनश्याम ॥ नारद मनकी भर्म तोहिं यतनो भरमायो । मैं व्यापक सब जगत वेदचारो मुख गायो ॥ मैं कर्ता मैं भुक्ता मोहिं विनु और नकोइ । जो मोको ऐसो लखै ताहि नहीं भ्रम होइ ॥ बूझो सब घर जाइ सबै जानत मोहिंयोंहीं । हरिकी हमसों प्रीति अनत कहूँ जात न क्योंहीं ॥ मैं उदास सबसों रहों इह मम सहज सुभाइ । ऐसो जानै मोहिं जो ममनाया नरचाइ ॥ तब नारद करजोरि कह्यो तुम अज अनंत हरि । तुमसे तुम विन द्वितिय कोउ नाहीं उत्तमसुर ॥ तुम माया तुम कृपा विनु सकै नहीं तरिकोइ । अब मोको कीजै कृपा ज्यों न बहुरि भ्रम होइ ॥ ऋषि चरित्र मम देखि कछू अचरज मतिमानो । मोते द्वितिया और कोऊ मनमाहिं न आनो ॥ मैं ही कर्ता मैहीं भुक्ता नहिं यामें संदेहु । मेरे गुण गावत फिरौ लोगनको सुख देहु ॥ नारद करि परणाम चले हरिके गुण गावत । बारबार उरहेत ध्याइ हृदयमें ध्यावत ॥ इह लीला करि अचरजकी सूरदास कहिगाइ । ताको जो गावै सुनै सो भवजल तरिजाइ४७॥ अध्याय ॥ ७१ ॥ भगवान हस्तिनापुर चले जरासंध वधहेतु ॥

॥ राग मारू ॥ चले हरि धर्म्मसुअनके देश । वंदित जन भूभार उतारन काटन वंदी कठिन नरेश ॥ जब प्रभु जाइ शंखध्वनि कीनी ठाढ़े नगर प्रवेस । सुनि नृपवधू सकल उठिधाईं डारि चरण रजुकेश ॥ शीशनाइ करजोरि कह्यो तब नारद सभा सहेस । तत्क्षण भीम धनंजयमाधो धन्य द्विजनको भेस ॥ पहुँचे जाइ राजगिरि द्वारे धुरे निसान सुदेश । यांच्यो जाइ अतिथि रूप ह्वै आशिश युद्धनरेश ॥ जरासंधको युद्ध अथरबल रहत नक्षत्रीलेस । सूरश्याम दिन सात बीत तिन तोरिव काटि कलेस ४८॥ कान्हरो ॥ राजरवनि गावत हरिको यश । रुदन करत सुतको समुझावति राखति श्रवणन प्यार सुधारस ॥ तुम जिनि जीव डरहुरे बालक कृपासिंधुके शरन सदावसु । ताजे जिय सोच तात अपनेको करि प्रतीति निश्चय ह्वै है हँसु॥ जिन प्रभु जनकसुता प्रण राख्यो अरु रावणके शीश सकल नशु। सोई सूर सहाय तुम्हारो मोचन गोप गयंद महापशु ॥४९॥

॥ धनाश्री ॥ इहां और कासों कैहौं गरुड़गामी । दीनबंधु दयासिंधु अशरन शरन सत्य सुखधाम सर्वज्ञ स्वामी ॥ इन जरासंध मदअंध मम मान मथि वांधि विनु काज बल इहां आने । भए आरूढ अति क्रोध जिनि गिरि गुहा रहत भृंगी क्रीट ज्यों त्रासमाने ॥ नाहिनै नाथ जिय सोच धन धरणिको मरनते अधिक यह दुख सतावै । भृत्यकी रीति तजि होत मागध सकल नाथ जिनि दमत उद्वेग पावै ॥ मधु कैटभ मथन मुर भौम केशी भिदन कंस कुल काल अनुसाल हारी । जानि युगजूपमें भूपतद्रूपता बहुरि करिहै कलुष भूमि भारी ॥ वदत नृप दंत भैभीत उर मीरता सुनत हरि सूर सारथि बोलायो । भयो आरूढ़ तकि ताहि उत्तर दियो जाइ सुखदेहु याहेतुआयो॥५०॥ अध्याय ॥ ७२ ॥ जरासंधवध ॥ रागमारू ॥ कंसखलदलन रनराम रावणहतन सँहारी । दीन दुखहरन गज मुक्तकारी॥ नृपति चहुंदेशके बंदी जरासंधुके रैनि दिन रहत जिय दुखित भारी॥ सुनै यदुनाथ इह बात तब पथिकसों धर्मसुत के हृदय यह उपाई । राजसूयज्ञको कियो आरं भषैं जानिकै नाथ तुमको सहाई । भीम अर्जुन सहित विप्रको रूपधरि हारि जरासंधसों युद्ध

माँग्यो । दियो उनपै कह्यो तुम कोऊ क्षत्रिआ कपटकारि विप्रको स्वांग स्वांग्यो ॥ हरि कह्यो भीम अर्जुन दोऊ सुभट ये कृष्ण मैं देखि लोचन उघारी । वचन जो कही प्रतिपाल ताको करो कै सभा मांह सत जाहु हारी ॥ पार्थ अरु तुम समर्थ सम युद्धको भीमसों उन यह कह सुनाई । वीस औ सप्तदिनयों गदायुद्धकियो दोउ बलवंत कोउ लियो नजाई॥श्याम तृणचीर देखराय दियो भीमको भीम तव हार्षि ताको संहारचो। जराजरासंधको की सांधि । जोरचो हुत्यो भीम ता संधको चीर डारचो । नृपनको छोरि सहदेवको राज्यदियो देव नर सकल जैजै उचारचो । सूर प्रभु भीम अर्जुन सहित तहांते धर्मसुत देशको पुनि सिधारचो ॥५१॥ अध्याय ॥ ७३ हस्तिनापुरआये ॥ रागसारंग॥ जीत्यो जरासंध वंदि छोरी।युगल कपाट विदारि वाटकरि लतनि जुही संधियोरी॥विषम जाल बल वांधि व्याधलौं नृप खग अवलि बटोरी । जनु सुअहेरो हाति यादवपति गुहापींजरी तोरी ॥ निकसे देत अशीश एकमुख गावत कीरति कोरी । जनु उडचले विहंगम कोगन कटी कठिन पग डोरी॥ मिटिगए कलह कलेश कुलाहल जनु करि वीती होरी।सूरदास प्रभु अतुलित महिमा जोकछु कह्य सो थोरी॥राग मारू॥जीत्यो जीत्यो हो यदुपति रिपु दल मारचो।तउन तजत हठ परम शठ नाजानै। कुबुद्धि जड कै वारहे विदारचो ॥ वरवरमूढा उठि खेलत वालक सुठि आनितइधन दौरि दौरि संचारचो।ऐसे इहु नृप नर सकल सकेंलि घरकेसाककरन ह्रद रस वकुल जारचो॥कह्यो नकाहूको करै वहुरि वहुरि अरै एकही पाइदै इक पग पकरि पछारचो।सूरस्वामी अति रिस भीमकी भुजाके मिस व्यौतत वसन ज्यों सुत तन फारचो॥५२॥समूह राजा विनती ॥ विलावल॥जांहि कहा अपराध भरे। तुम माता तुम पिता जगतगुरु तुमही सहोदर बंधु हरे ॥ वसन कुचील देह अति दुर्बल उमँगि प्रेम जल सिथिल भरे । राजा सबै वंदिते छोडे आइ कृष्णके पाँइ परे ॥ सावधान करि विदा दई हरि उठे कमल कर शीशधरे।सूरदास प्रभु तुम्हरी कृपाते भवसागरके मांझ तरे५३॥ अध्याय ॥७४॥ पांडवयज्ञ शिशुपालगति ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरो सवकोइ । शत्रु मित्र हरि गिनत न दोइ ॥ जो सुमिरै ताकी गति होइ । हरि हरि हरि सुमिरो सव कोइ ॥ वैरभाव सुमिरचो शिशुपाल । तांहि राजसूमें गोपाल॥ चक्र सुदर्शन करि संहारचो । तेज तासु निज मुखमें डारचो ॥ भक्त भाव भक्तन उद्धारत । वैरभाव असुरन निस्तारत॥ कोऊ सुमिरो काहु प्रकार । सूरदास हरिनाम उधार॥५४॥ अध्याय ॥ ७५ ॥ पांडवसभा दुर्योधन क्रोध ॥ राग विलावल ॥ भक्तकाज हरि जित कित सारे। यज्ञराजसूमाहिं आपहरि सवके पाँइ पखारे ॥ अष्टनायका द्रुपदसुताकी करैं तहाँ सेवकाई दुर्यो धनय हरीति देखिकै मनमें रह्यो खिसाई ॥ भक्त संग हरि लागे डोलत भक्तवत्सल प्रभु भौरी। सब विधि काज करत भक्तनके गनत नहीं हम कोरी॥जीते जीतत भक्त आपनकी हारे हार विचारत । सूरदास प्रभु रीति सदा यह प्रणयुगयुग प्रतिपारत ॥ अध्याय ॥ ७६ ॥ तथा ७७ ॥ शाल्वद्वारका आक्रमण प्रद्युम्नशाल्व युद्ध शाल्व वध॥राग मारू॥ सुभट शाल्व करि क्रोध हरिपुरी आयो।हत्यो शिशुपालको राजसू मांह हरि धाइ धावन जवहिं इह सुनायो ॥ वृक्ष वन काटि महालात ढाहन लग्यो नगरके द्वार दीनां गिराई।सर्व पाषाणकी वृष्टि करि लोग पर पाइ अति पलक वीते जराई ॥ प्रद्युमन साँव रणनिकसि सन्मुख भये नंदनंदन सुनत तुरतधाई।तहाँ चारि देश दिश साजिदल मिलि सकल हाँकि रथ तुरंग ताठौर आई।सुमिरि गोपाल तव शाल्व मारचो फटकि प्रद्युमन वाण दिशते चलायो। मिट्यो अंधकार तव वाण वर्षा करी तुरंग रथ सारथी सो गिरायो॥ सैन्यके लोग पुनि वहुत घायल किये लरचो ध्वजा धारि धर परचो मुरछाई। शाल्व इह देखिकै चकृत सों होइ रह्यो शस्त्र के गहन

की सुध भुलाई॥ अस्त्र विद्या समर बहुरि लाग्यो करन कबहुँ लघु कबहुँ दीरघ सो होई।गुप्त कबहूँ कबहुँ प्रगट तेहि देखिकै धरती रहहि कबहुँ आकास सोई॥अग्नि कबहुँक बरखि बारि वर्षा करै प्रद्युमन सकल माया निवारी। शाल्व परधान उदमान मारी गदा प्रद्युमन मुरछित भये सुधि बिसारी॥ धर्मपति सारथी गयो एकांतलै उहां जब चेत है सुधि संभारी। खीझ कह्यो तिसे क्यों इहां ल्यायो मुझे मम पिता मातको लगै गारी॥ कहां कहि हैं मुझे राम भगवान सुनि नारि मम सुनत अति दुखित होई। मरे रण सुयश त्रैलोक सुख पाइये मंदमति तैं दोऊ बात खोई। धर्मपति कह्यो करि विनय मम सोक नहिं सारथी धर्म मोहि गुरू सिखायो मूर्च्छि त सुभटहो नहीं राखि ये खेतमें जानि यह बात मैं इहां ल्यायो॥ प्रद्युमन कह्यो जो भई सो भई अब बात नाहिं जिन्ह किसी सो सुनैये। ताहिदै शपथ करि आचमन यों कह्यो चलो रणभूमि अब वेगि जैये। आइ रणभूमिमें सवन धीरज दियो शाल्व रथ तुरंग चारो संहारे।छत्र ध्वज तोरि मारयो बहुरि सारथी देखि यह दूर कियो सुभट सारे॥हस्तिनापुर गये हते हरि पांडु गृह तहां ते चले यह बात जानी। शाल्वउत्पात कियो द्वारका मांह बहु हांकि रथ कह्यो सारंगपानी॥ सारथी पाय रुख दये सटकार हय द्वारकापुरी जब निकट आई। शाल्वके भटन लखि कटक भगवानको आपने नृपतिसों कह्यो जाई॥ सुनि सो भगवानके आइ सन्मुख भयो सारथी दौरि बर्छी चलाई। ताहि आवत निरखि श्याम निज सांगको काटिकरि शाल्वकी सुधि भुलाई॥ बहुरि तिन कोपि निज बाण संधानकरि धनुष भगवानको काटि डारयो। टूटते धनुषके शब्द आकाश गयो शाल्व निज जिय समुझि पुनि उचारयो॥ रुक्मिणीमांगि शिशुपालकी तुम हरी बहुरि तेहि राजसूमेंसंहारयो। जाइहौ अब कहां शिशु दाँव लेहौं इहां छांडितिजार आपा संभारयो॥ कह्यो भगवान सुनु शाल्व जे शूरनरते नहीं करत निज मुख बड़ाई। जंगमे शूर तिनको नहीं जानिये भाषि यह गदा ताको चलाई॥ गदाके लगतही गयो सो गुप्तहोइ धारि धावन रूप यह सुनायो। कह्यो वसुदेव जगदीश सुनु अस्त्रजे तुअ अछत शाल्व मोहिं बांधि ल्यायो। बहुरि करि कपट वसुदेव तहां प्रगट कियो कह्यो तिन नाथ मैं दुखित भारी। शाल्व करवारलै श्यामक देखते डारिदियो ताको शीशउतारी॥ कह्यो भगवान करि कपट इन यह कियो तासु माया तुरत हरि निवारी।भागि निज पुर चल्यो श्याम पहिलेहि पहुँचि पुनि गदा खैंचि ता शीश मारी। शाल्व कियो युद्ध बहु बेरलौं गदा की बहुरि हरि सांग ताको चलाई। लगत ताके गए प्राण वाके निकसि सुरन आकास दुंदुभि बजाई॥ शीश ताको बहुरि काटि करवालसों नगर सब समुद्र मों डारि दीन्हों। सूर प्रभु रहे ताठौर दिन और कछु मारि दंतवक्र पुर गवन कीन्हों॥८६॥ अध्याय॥ ७८॥ दंतवक्रपरमगति॥ मारू॥ हरि निकट सुभट दंतवक्रआयो। कह्यो शिशुपाल तुम राज सूमें हत्यो धनि सो यह हेत सुनि दरशपायो॥ भृत्य तुम हने संशय नहीं कछु हमैं दोउ विधिआइ प्रभु हित हमारी। जीवै तो राज सुखभोग पावै जगत मुये निर्वाण नीरस तुम्हारी॥बहुरि लै गदा प्रहार कियो श्यामपर लगे ज्यों लकुट अंबुज पभारी। हरि गदा लगत गये प्राण ताके निकसि बहुरि हरि निजवदन मांह धारी॥अनुज ताको बडो रथ लग्यो फिरन यों चक्रसों शीश ताको प्रहारयो। सूर प्रभु युद्ध भयो मुनि जन हरषिये सुर पुहुपवरषि जैजै उचारयो॥८७॥ अध्याय॥ ७९॥ वल्वल वध, रामतीर्थगमन॥ मारू॥ श्याम बलरामको सदा गाऊं। यही मम ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यही इहै स्नान फल इहै पाऊं॥ श्याम दंतवक्र अरु शाल्वको जीत करि करत आनंद निज पुरी

आये। राम गंगा और यमुना स्नान करि नीमषारण्य में जाइ न्हाये॥ सूत तहां कथा भागवतकी कहतहैं ऋषिअठासी सहस हुते श्रोता। रामको देखि सनूमान सवही कियो सूत नहिं उठ्यो निज जानि वक्ता॥ रामतेहि हत्यो तव सब ऋषिन मिलि कह्यो विप्र हत्या तुम्हैं लगी भाई।वाहिनिमित्त सकल तीर्थ स्नान करो पाप जो भयो सो सब नशाई॥ पुनि कह्यो ऋषिन दानव महा प्रबल इहां हमैं दुख देत सोई सदाई। ताहि जो हतौ तो होइ कल्याण तुम्हैं हम करैं यज्ञ सुखसों सदाई॥ राम दिन कइक ता ठौर अवरो रहे आइ वल्वल तहां दई देखाई। रुधिर औ माँसकी लगो वर्षा करन ऋषि सकल देखिकै गये डेराई। राम हलसों पकरि मूशलसों हत्यो तेहि प्राण तजि तिन सकल सुधि विसारी। सुरन आकासते पुहुप वर्षा करी ऋषिन आशीशदै जै ध्वनि उचारी॥ बहुरि वलभद्र परणाम करि ऋषिन्ह को पृथ्वी परदक्षिणाको सिधाये। प्रभु रची ज्योंहिं ज्यों होइ सो त्योंहिं यों सूर जन हरि चरित कहि सुनाये॥५८॥

॥ अध्याय॥ ८०॥ तथा ॥ ८१॥सुदामा दारिद्रभंजन॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणार्विंद उरधरो॥ विप्र सुदामा सुमिरे हरी। ताकी सकल आपदा टरी॥ कहौं सो कथा सुनो चितधार।कहै सुनै सो लहै सुखसार॥विप्र सुदामा परमकुलीन।विष्णुभक्त सो अति लवलीन॥ भिक्षा वृत्ति उदर नितभरै। निशिदिन हरि हरि सुमिरन करै॥ नाम सुशीला ताकी नारी। प्रतिव्रता अति आज्ञाकारी॥ पति जो कहै सो करै चितलाइ। सूर कह्यो इक दिन या भाइ॥

॥ विलावल ॥ कहि न सकति सकुचाति इक बात। कितीकदूरि द्वारका नगरी काहे न द्विज यदुपति लौं जात॥ जाके सखा श्यामसुंदरसे श्रीपति सकल सुखनके दात। उनके अछत आपने आलस काहे कंत रहत कृशगात॥ कहियत परम उदार कृपानिधि अंतर्यामी त्रिभुवन तात। द्रवत आपु देत दासनको रीझत हैं तुलसीके पात॥ छांडो सकुच बांधि पट तंदुल सूरज संग चलो उठि प्रात। लोचन सफल करौ प्रभु अपने हरि मुख कमल देखि विलसात॥५९॥

॥ रागनट ॥ श्रीकंत सिधारो मधुसूदनपै सुनियतहै वै मीत तुम्हारे। वाल सखाकी विपति विहंडन संकट हरन मुरारे॥ और जु अति आदर सुन्यो हम निज जन प्रीति विचारे। यद्यपि तुम संतोष भजतहौ दरश निकट सुखभारे॥ सूरदास प्रभु मिले सुदामे सब भांति सुख दै जुनारे॥६०॥विलावल॥ दूरिहते देखे वलवीर। अपने बाल सखा सुदामा मलिन वसन अरु छीन शरीर॥ पौढे हुते प्रयंक परम रुचि रुक्मिणि चमर डोलावत तीर। उठि अकुलाइ अगमने लीने मिलत नैनभरि आये नीर॥ तेहि आसन वैठारि श्याम घन पूंछी कुशल करौ मन धीर। ल्यायेहौ सुदेहु किन हमको अब कहा राखि दुरावत चीर॥दरशन परसि दृष्टि संभाषन रही नउर अंतर कछु पीर। सूर सुमति तंदुल चवातही कर पकरचो कमला भइ भीर॥

॥६१॥ धनाश्री॥ यदुपति देखि सुदामा आये। विह्वल विकल छीन दारिदवश करि प्रलाप रुक्मिणि समुझाये॥ दृष्टि परे ते दिये संभाषण भुजा पसारि अंक लै आये। तंदुल देखि वहुत दुख उपज्यो मांगु सुदामा जो मन भाये।भोजन करत गह्यो कर रुक्मिणि सोइ देहु जो मन न डुलावै। सूरदास प्रभु जब निधि दाता जापर कृपा सोइ जन पावै॥६२॥विलावल॥ ऐसी प्रीतिकी वलिजाउँ। सिंहासन तजि चले मिलनको सुनत सुदामा नाउँ॥ गुरुवांधव अरु विप्र जानिकै चरणन हाथ पखारे। अंकमाल दै कुशल बूझिकै अर्धासन वैठारे॥ अर्धंगी बूझत मोहनको कैसे हितू तुम्हारे। दुर्वलदीन क्षीन देखतिहौं पाँउ कहांते धारे॥ संदीपनके हम औ सुदामा पढे येक

चटसार। सूर श्यामकी कौन चलावै भक्तन कृपाअपार ॥६३॥ धनाश्री ॥ गुरु गृह जब हम वनको जात। तुरत हमारे वदते लकरी ये सब दुख निजगात ॥ एक दिवस वर्षा भई वनमें रहिगये ताही ठौर। इनकी कृपा भयो नहिं मोहिं श्रम गुरु आये भये भोर ॥ सो दिन मोहिं विसरत न सुदामा जो कीन्हों उपकार। प्रतिउपकार कहाकरौं सूर अब भाषत आप मुरार॥६४॥हरिको मिलन सुदामा आयो। विधि करि अरघ पाँवडे दीने अंतर प्रेम वढायो॥आदर वहुत कियो यादवपति मर्दन करि अन्हवायो। चोवा चंदन अगर कुमकुमा परिमल अंग चढायो ॥ पूरव जन्म अदात जानिकै ताते कछू मँगायो। मूठिक तंदुल बांधि कृष्णको वनिता विनय पठायो ॥ समदे विप्र सुदामा घरको सर्वसु दै पहुँचायो। सूरदास वलि वलि मोहनकी तिहूं लोक पदपायो ॥ ६५ ॥ वह सुधि आवत तोहिं सुदामा। जब हम तुम वनगए लकरियन पठए गुरुकी भामा॥ चपल समीर भयो तेहिरजनी भीजे चारो यामा। कांपत हृदय वचन नहिं आवै आए सत्वर धामा॥ तबहिं अशीश दई परसन ह्वै सफल होहु तुम कामा। सूरदास प्रभुको जो मिलन यश गावत सुर नर नामा॥६६॥ विलावल ॥ सुदामा गृहको गमन कियो। प्रगट विप्रको कछु न जनायो मनमें वहुत दियो॥ वोई चीर कुचील वोई विधि मोको कहा कियो। धरिहौं कहा जाइ त्रिया आगे भरि भरि लेत हियो॥ भयो संतोष भाव मनहीं मन आदर वहुत कियो। सूरदास कीन्हें करनी विन कोपति आइ वियो॥६७॥ सुदामा मंदिर देखि डरचो। शीशधुनै दोऊ करमींडै अंतर सांच परचो॥ ठाढी त्रिया मार्ग जो जोवै ऊंचे चरण धरचो।तोहिं आदरचो त्रिभुवनको नायक अव क्यों जात फिरचो॥इहां हुती मेरी तनिक मडैआ को नृप आनि छरचो। सूरदास प्रभु करि यह लीला आपद विप्र हरचो॥६८॥ देखत भूलि रह्यो द्विजदीन ढूंढत फिरै न पूंछन पावै आपुन गृह प्राचीन॥ किधौं देवमाया वौरायो किधौं अनतही आयो। तृणहुकी छाँह गई निधि मांगत अनेक जतन करि छायो॥ चितवत चकित चहूंदिशि ब्राह्मण अद्भुत रचना रीति। ऊंचे भवन मनोहर छाजा मणि कंचनकी भीति॥ पति पहिंचानि धसी मंदिरते सूर त्रिया अभिराम। आवहु कंत देखि हरिको हित पाउँ धारिये धाम॥६९॥ भूलो द्विज देखत अपनो घर। औरहि भांति रची रचना रुचि देखतही उपज्यो हृदयडर॥ कै यह ठौर छिनाइ लियो कहुँ आइ रह्यो कोऊ समरथ नर। कैहौं भूलि अनतखंड आयो यहु कैलास जहां सुनियत हर॥ वुधजन कहत दुवल घातक विधि सोह नआजु लह्यो यह पटतर। ज्यों नलनी वन छांडि वसी जल दाही हेम जहां पानी सर॥ जगजीवन जगदीश जगतगुरु अवि गति जानि भरचो। आवो चले मंदिर अपनेही कमलाकंत धरचो॥ ता पीछे त्रिय उतरि कह्यो पति चलिए घरहि गहे कर से कर। सूरदास यह सब हित हरिको रोप्यो द्वार शुभग तिकपलतर॥७०॥कहा भयो मेरो गृह माटीको। होतो गयो गुपालहि भेटन और खर्चतंडुल गांठीको॥विनु ग्रीवा कल सुभग न आन्यो होहुतो कमंडलु दृढ़ काठीको॥उनो वाँस गत वुन्यो खटोला काहूको पलंग कनक पाटीको॥ नौतन चीरे दिकुयुवतीपै भूषण हुते न लोहू माटीको। सूरदास प्रभु कहा निहोरों मानतुरंक त्रास टाटीको॥७१॥ धनाश्री ॥कहो कैसे मिले श्याम संघाती। कैसे गए सुकंत कौन विधि परसे हुते वस्तर कुचिलकुजाती॥ सुनि सुंदरि प्रतिहार जनायो हरि समीप रुक्मिणी जहाती। ऊभे मूठी लीनी तंदुलकी संपति संचित करीही थाती॥ सूर सुदीनवंधु करुणामय करत वहुत जो श्रीनरिसाती॥७२॥विलावल॥ ऐसे मोहिं और कौन पहिंचानै। सुन सुंदरी

दीनबंधु बिन कौन मिताई मानै ॥ कहां हम कृपण कुचील कुदरशन कहां वै यादवनाथ गुसाँई । भेटे हृदय लगाइ अंक भरि उठि अग्रजकी नाँई ॥ निज आसन बैठारि परमरुचि निजकर चरण पखारे । पूँछी कुशल श्याम घन सुंदर सब संकोच निवारे॥लीन्हे छोरि चीरते चाउर करगहि मुख में मेले । पूरव कथा सुनाइ सूरप्रभु गुरु गृह बसे अकेले ॥ ७३ ॥ रागधनाश्री ॥ हरि विन कौन दरिद्र हरै । कहत सुदामा सुन सुंदरि जिय मिलन नहरि बिसरै ॥ और मित्र ऐसे समया महँ कत पहिंचान करै । विपति परे कुशलात न बूझै बात नहीं बिचरै । उठिकै मिले तंदुल हरि लीने मोहन वचन फुरै । सूरदास स्वामीकी महिमा टारीनिधि नटरै७४और को जानै रसकी रीति।कहां हौं दीन कहां त्रिभुवनपति मिले पुरातन प्रीति । चतुरानन तन निमिष न चितवत इती राजकी नीति। मोसों बात कही हृदय की गए जाहि युगबीति ॥ बिनु गोविंद सकल सुख सुंदरि भुस पर कीसी भीति । हौं कहा कहों सूरक प्रभुके निगम करत जाकी कीर्ति॥७५॥गोपाल बिना और मोहिं ऐसो कौन सँभारै।हँसत हँसत हरि दौरि मिले सु उरते उर नहिं टारै ॥ छीन अंग जीरन वस्त्र दीन मुख निहारै । ममतन रज पथ लागी पीतपट सों झारै ॥ सुखद सेज आसन दीनों सुहथ पायँ पखारै । हरि हित हर गंग धरे पदजल शिरढारै ॥ कहि कहि गुरु गेह कथा सकल दुखनिवारै । न्याय निज वपु सूरदास हरिजी ऊपर वै वारै ॥ ७६ ॥ रागकेदारा ॥ दीन द्विज द्वारे आइ रह्यो ठाढो । नाम सुदाम कहत नाथ जो दुखी आहि अतिगाढो ॥ सुनतहि वचन कमलदल लोचन कमला दल उठि धाए । त्रिभुवन नाथ देखि अपनो प्रिय हितसों कंठ लगाए ॥ आदर करि मंदिर लै आने कनक पलँग बैठाए । कथा अनेक पुरातन कहि कहि गुरुके धाम बताए ॥ खइबेको कछु भाभी दीन्हों श्रीपति श्रीमुख बोले । फेंट ऊपरतें अंजुल तंदुल बलकरि हरिजूखोले ॥ दुइ मूठी तंदुल मुखमें ले बहुरो हाथ पसारयो । त्रिभुवन दैकारि कह्यो रुक्मिणी अपुनो दान निवारयो ॥ विदा कियो पहुँचे निजनगरी हेरत भवन न पायो।मंदिर रही नारि पहिंचान्यो प्रेम समेत बुलायो ॥ दीनदयालु देवकीनंदन वेद पुकारत चारो । सूर सु भेटि सुदामाको दुख हरि दारिद्र मिटारो ॥ ७७॥ श्रीकृष्ण द्वारका गमन हेतु पंथीमति ब्रजनारि वदति॥ मलार ॥ तबते बहुरि न कोऊ आयो । उहै जु एकवेर ऊधोसों कछु संदेशो पायो॥छिन छिन सुरति करत यदुपतिकी परत न मन समुझायो । गोकुलनाथ हमारे हितलगि लिखिहू क्यों न पठायो ॥ यहै विचार करहु धौं सजनी इतो गहर क्यों लायो।सूरश्याम अब वेगि नमिलहू मेघनि अंबर छायो७८॥गौरी॥बहुरयो ब्रज बात न चाली। वे हैं जु एक वेर ऊधो कर कमलनैन पाती दै घाली ॥ पथिक तुम्हारे पाँइन लागति मथुरा जाउ जहां वनमाली । कहियो प्रगट पुकार द्वार ह्वै कालिंदी फिरि आयो काली ॥ तबहूं कृपाहुती नँद नंदन रचि रचि रसिक प्रीति प्रतिपाली।माँगत कुसुम देखि ऊंचे द्रुम लेव उछंग गोद करि आली॥ जब वह सुरति होत उर अंतर लागति काम बाणकी भाली । सूरदास प्रभु प्रीति पुरातन सुमिरत उरह शूल अति शाली ७९ ॥धनाश्री॥ तुम्हरे देशका गरम सिखूटी । भूख प्यास अरु नींद गई सब हरि विन विरह लयो तनुटूटी ॥ दादुर मोर पपीहा बोले अवधि भई सब झूठी । हम अपराधिनि मर्म न जान्यो अरु तुमहूते तूटी ॥ सूरदास प्रभु कबहुँ मिलहुगे सखी कहत सब झूठी ॥ ८० ॥ अध्याय ॥ ८२ ॥ कुरुक्षेत्र यशोमति गोपी मिलन ॥ पथिक कहियो ब्रजजाइ सुने हरि जात सिंधु तट । सुनि सब अंग भये सिथिल गयो नहिं वज्रहियो फट ॥ नर नारी घर घर सबै इह करति विचारा । मिलिहैं कैसी भांति हमैं अब नंदकुमारा ॥ निकट वसत हुती अस कियो अब दूर पयाना । विना

कृपा भगवान उपाउ नसूर अपाना॥८१॥ गौरी ॥ हमारे श्याम चलन कहत हैं दूरी। मधुवन वसत आशहुती सजनी अव मरिहैं जु विसूरी ॥ कौने कहौं कौन सुनि आई किहि रुख रथकी धूरि। संगहि सवै चलौ माधवके नातौ मरिहौं रूरि ॥ दक्षिणदिशि यह नगर द्वारका सिंधुरह्यो जलपूरि। सूरदास प्रभु विनु क्यों जीवौं जात सजीवन मूरि ॥ ८२ ॥ गोपिका विरह ॥ धनाश्री ॥ नैना भये अनाथ हमारे। मदन गोपाल वहाँ ते सजनी सुनियत दूरि सिधारे ॥ वे जलहर हम मीन वापुरी कैसे जिवहिं निनारे। हम चातक चकोर श्यामघन वदन सुधानिधि प्यारे ॥ मधुवन वसत आश दरशनकी जोइ नैन मगहारे। सूरश्याम करी पिय ऐसी मृतकहुते पुनि मारे॥८३॥धनाश्री॥ अव निज नैन अनाथ भये। मधुवन हुते माधो सजनी कहियत दूरिगये ॥ मथुरा वसत हुती जिय आशा यह लागत व्यवहार। अव मन भयो भीमके हाथी सुपने अगम अपार ॥ सिंधुकूल इक नगर वतावत ताहि द्वारका नाउँ। यह तनु सौंपि सूरके प्रभुको और जन्मधरि जाउँ ॥ उती दूरते को आवैरी। जासोंसंदेश कहि पठऊं इहांते सो कहि कहन कहां पावैरी ॥ कंचनके वहुभवन मनोहर राजा रंक न तृण छावैरी। वहांके वासी लोगनको क्यों व्रजको वसिवो भावैरी ॥ सिंधुकूल इक देश वसतहै देख्यो सुन्यो न मन धावैरी। वहुविधि करत विलाप विरहिनी अनेक उपाय दुःख पावैरी॥कहा करौं कहां जाउँ सूरप्रभु कोहरि पियपै पहुँचावैरी॥८४॥ ॥ राग सारंग ॥ हौं कैसेके दरशन पाऊं। सुनहु पथिक वहिदेश द्वारका जो तुम्हरे सँग आऊं। वाहिर भीर वहुत भूपनकी वूझत वदन दुराऊं। भीतर भीर भोग भामिनिकी तेहिठां कौन पठाऊं ॥ वुधि वल युक्ति जतन करि वहिपुर हरि पियपै पहुँचाऊं। अव वन व्रसि निकुंजरसिक विन कौनहिं दशा सुनाऊं ॥ श्रमकै सूर जाउँ प्रभुपासहि मनमें भले मनाऊं। नवकिशोर मुख मुरली विना इन नैनन कहा देखाऊं ॥ ८५ ॥ नट॥ मानो विधि अव उलटि रचीरी। जानति नहीं सखी काहेते वही नतेजतचीरी॥ वूडि नमुई नीर नैननके प्रेम नप्रजरि पचीरी। विरह अग्नि अरु जलप्रवाहते क्यों दुहुँवीच वचीरी ॥ जो कछु सकल लोककी सोभा लै द्वारका सचीरी। वहां किवारिधि वडवानलमे रेतनआनि वचीरी॥ कहिये संकर्पणके भ्राता कीटनि कितनमचीरी। सूरश्याम या जग मोह्यो सोई मुख निरखि नचीरी ॥८६॥ मारू ॥ ओ नहीं माईको इतौ। सुनरी सखी संदेशदुर्लभ भए नैन थके मग जोइतो। गोकुल छांडि निवास सिंधु कियो प्राण जीवन धनसोइतौ ॥ द्वारावती कठिन अति मारग क्योंकरि पहुँचै लोइतो। मिटी मिलनकी आशअवधि गईव्रजवनिता कहि रोइतौ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको त्रिपति कहूं नहिं होइतो ॥८७॥ ॥ मलार ॥ ताते अव अति मरियत अपसोसनि ॥ ८७ ॥ मथुराहूते गए सखीरी अव हरि कारे कोसनि ॥ यहअचरज सुवडो मेरे जिय यह छांडनि वह योसनि। निपट निकाम जानि हम छांडी ज्यों कमानविन गोसनि ॥ इकु हरिके दरशन विनु मरियत अरु कुविजाके ठोसनि। सूर सुजरनि कहा उपजी जो दूरि होत करि वोसनि ॥ ८८ ॥ मारू ॥ जोपै लैजाइ कोऊ मोहिं द्वारका देश।संगत कै चलौं सजनी जटाहू करि केश ॥ वोलि धौं हर वाइ पूछहु आप नेरूमेस ॥ जैसही जो कहै कोऊ वनैं तैसे भेस॥यदपि हम व्रजनाथ युवती यूथनाथ नरेश।तदपि शशि कुमुदनी सूरज रची प्रीति परेस ॥ ८९ ॥ सारंग ॥ उघरि आयो परदेशी को नेह।तव जो सवै मिलेकान्ह करि भूलत ही अवलेहु। काहेको सखी अपनो सरवस हाथ पराये देहु॥लहियो महिमा भंग मथुरा छांडि जाइ समुद्र कियो गेहु ॥ कहा अव करौं अग्नि तनु उपजी वाढ्यो अतिहि संदेहु। सूरदास

विह्वल भई गोपी नैनन वर्षत मेहु ॥९०॥ मलार ॥ कैसेहै बनत इहि ब्रज हरिको आवन । कहियतहै मधुवनते सजनी कहूं कान्ह कियो दूरि गवन ॥ निकट वसत मतिहानि भई हम मिलिहूं न आई सुत्यागि भवन । अब अपने यदुकुल समेतलै दूरि सिधारे जीति जवन॥अगम सुपंथ दूरि दक्षिणदिशि तहँ सुनियत सखी सिंधुलवन।सूरदास तरसत मन निशि दिन यदुपाते लौंलैजाइ कवन ॥९१॥ ॥धनाश्री॥सुनियत कहुँ द्वारका बसाई । पश्चिम देश तीर सागर के कंचन कोट गोमती सों खाई ॥ पंथ न चलत संदेश न आवत उहां लगि नर कोऊ नहिं जाई शत योजन मथुरा हूते कहियत यह हम सुधि निगमहूपै पाई ॥ बन उपवनजमेन मंदिर छवि कोकिल कीर हंस ध्वनि लाई । द्वारपाल चातक द्रुम सुपचानि माँझ कोट निधि पाई ॥ घोष ग्वाल पशुपाल अधम कुल ईश एकको कौन सगाई । सूरश्याम ब्रजवास बिसारे बाबानंद यशोदा माई ॥ ९२ ॥ मारू ॥ उडुपति सों विनवति मृगनैनी।तुम कहियत उडुराज अमृत मय तजि सुभाउ वर्षत कत वहनी॥ उमयापति रिपु अधिक दहतहै हारि रिपु प्रीतम सूखत तौनी । छपा न छीन होत सुन सजनी भूमि डसन रिपु कहा दुरोनी ॥ श्याम संदेश विचार करतिहै कहांरहे हरि छाइ वछोनी । सूरश्याम विनु भवन भयानक जो अति रहति गोपालकी अवनी ॥९३॥ रागकेदारा ॥ दधिसुत जातिहो वहि देश । द्वारका में श्यामसुंदर सकल भुवन नरेश ॥ परम शीतल अमृतदाता करतहै उपदेश श्यामसुंदर वियोगिनीको लेहु यह संदेश । नंदनंदन जगतवंदन धरे नटवर भेष । काज अपनो सारि श्वामी रहे जाइ विदेश ॥ भक्त वत्सल विरद तुमरो मोहिं इह अंदेश।अबकी वेर तुम अपतो मिलहु कृपाकरि कहैं सूर सुदेश९४॥मलार॥ वीर बटाऊ पाती लीजो । जब तुम जाहु देश द्वारका हमरेइ लाल गोपालहि दीजो ॥ रंगभूमि रमणीक मधुपुरी वारि चढ़ाइ कहो दह कीजो । खारि समुद्र छाँडि क्रिनआवत निर्मलजल यमुनाको पीजो ॥ या गोकुलकी सकल ग्वालिनी देत अशीश बहुत युग जीजो । सूरदास प्रभु हमरेकोते नँदनंदनके पाँइ परीजो ॥ ९५ ॥ सारंग ॥ हौं तो आइ मिलत गोपालहि । सिंधु धरनि यह जुगुत न तेरी दुख दीनो ब्रजबालहि ॥ कहा करों पट नील पीत वर दुइते भये भुज चारि । बहु सुख कहा जु तव मन हो तो भेटत श्याम मुरारि ॥ संतत सूर रहत पति संगम सब जानति रुचिजीकी । तू क्यों नहीं धरति या भेषहि जोपै मुक्ति अतिनीकी ॥ ९६ ॥ मलार ॥ श्यामविन भई शरदनिशि भारी । हमैं छांडि प्रभु गये द्वारका ब्रजभूमि कैसे बिसारी ॥ निर्मल जल यमुनाको छाँड्यो सेवत समुद्र जल खारी । कहियो जाइ पथिक जैसे आवैं चरणनकी बलिहारी ॥ अबला कहा योग कर जानै ब्रजवासी जो विसारी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको रटत राधिका प्यारी॥९७॥ मलार ॥ ब्रजपर मदर करत है काम । कहियो पथिक जाइ श्यामसों राखहि आइ आपनो धाम ॥ जलधि कमान वारि दारूभरि तडित पलीता देत । गर्जन औ तर्पन मानो गो पहरकमें गढ़ लेत ॥ लेहु लेहु सब करत वंदिजन कोकिल चातक मोर । दादुर नगर करि जीवनढोवा अलग विलग चहुँ ओर ॥ ऊधो मधुप जसूस देखि कर कह्यो लुटाऊं धीरजपारन । राखिबे होइ तौ आनि राखिये सूर लोक निज जारन॥९८॥मलार ॥ ब्रजपर बहुरोलागे गाजन । ज्यों क्योंहू पति जात बडेकी मुख न देखावत लाजन ॥ चहुँदिशिते दल बादल उमडे सूने लागे बाजन । घोषके लोग कान्ह बल तिन अब जित कित लागे भाजन ॥ आपुन जाइ द्वारकाछाये लागे श्याम विराजन । सूरदास गोपी क्यों जीवै बिछुरे हरिजी साजन ॥९९॥ रागमारू ॥ अब मोहिं निशि देखत डरलागे । बारबार अंकुलाइ देहते निकसि

निकसि मन भागै ॥ प्राचीदिशा पेखि पूरण शशि ह्वै आयो तनतातो । मानहु मदन मदन विरहि निको करि लीनी रिसरातो ॥ भ्रुकुटी कुटिल कलंक चाप मानो अति रिसिसों शरसाधे । चहुँघा किरनि पसारे पासिनि हठिकर योगिनि बांधे ॥ सुनि शठसहै प्राणपति मेरो जाको यश जग जानै । सूरसिंधु बूडत ते राख्यो ताहू कृतहि नमानै ॥१००॥ रुक्मिणि वचन श्रीभगवान प्रति॥धनाश्री ॥ रुक्मिणि बूझतहै गोपालहिं । कहौ वात अपने गोकुलकी केतिक प्रीति व्रजवालहिं ॥ कहा देखि रीझे राधासों चंचल नैन विशालहिं । तव तुम गाय चरावन जाते उरधरते वनमालहिं ॥ इतनी सुनत नैन भरि आये प्रेमनंदके लालहि । सूरदास प्रभु रहे मौनह्वै घोप वात जनि चालहि ॥१॥ धनाश्री ॥ रुक्मिणि मोहिं निमेष न विसरत वै व्रजवासी लोग । हम उनसों कछु भली नकीनी निशि दिन मरत वियोग॥ यदपि कनकमय रची द्वारका सखी सकल संभोग। तदपि मन जो हरत वंसीवट ललिताके संयोग ॥ मैं ऊधो पठयो गोपिनपै देइ संदेशो योग । सूरदास देखि उनकी गति किन्ह उपदेशे योग ॥ २ ॥ मलार ॥ रुक्मिणि मोहिं व्रज विसरतु नाहीं । वा क्रीडा खेलत यमुनातट विमल कदमकी छाहीं । गोपवधूकी भुजा कंठ धरि विहरत कुंजन माहीं। अनेक विनोद कहांलों वरणौं मोमुख वरणिनजाइ ॥ सकल सखा अरु नंद यशोदा वे चितते न ट राहीं । सुत हित जानि नंद प्रतिपाले विछुरत विपाते सहाहीं ॥ यद्यपि सुखनिधान द्वारावति तउ मन कहुँ न रहाहीं॥सूरदास प्रभु कुंजविहारी सुमिरि सुमिरि पछिताहीं॥३॥धनाश्री॥रुक्मिणि चलहु जनम भूमि जाहीं॥ यदपि तुम्हारो हतो द्वारका मथुराके सम नाहीं ॥ यमुनाके तट गाइ चरावत अमृतजल अचवाहीं । कुंजकेलि अरु भुजा कंधधरि शीतल द्रुमकी छाहीं ॥ सरस सुगंध मंद मल यागिरि विहरत कुंजन माहीं॥जो क्रीडा श्रीवृंदावनमें तिहूंलोकमें नाहीं॥सुरभी ग्वाल नंद अरु यशु माति मम चितते नटराहीं॥सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि तिनकी सेवा कराहीं॥ ४॥ श्रीकृष्णकुरुक्षेत्रआव न सारंग॥व्रजवासिनको हेतु हृदय में राखि मुरारी । सव यादवसों कह्यो वैठिकै सभा मझारी॥वडो पर्व रविगहन कहा कहों तासु वड़ाई । चलौ सवै कुरुक्षेत्र तहां मिलि न्हैये जाई ॥ तात मात निज नारिलै हरिजी सव संगा । चलेनगरके लोग साजि रथ तरल तुरंगा ॥ कुरुक्षेत्रमें आइ दियो इक दूत पठाई । नंद यशोमति गोपी ग्वाल सव सूर वुलाई॥५ ॥ सखीवचन राधिकाप्रतिशकुनविचार ॥ सारंग ॥ वायस गहगहात शुभवाणी विमल पूर्वदिशिवोली । आजुमिलाओ श्याम मनोहर तू सुनु सखी राधिके भोली॥कुच भुज अधर नयन फरकत हैं विनहि वात अंचल ध्वज डोली। सोचनिवार करो मन आनँद मानो भाग्य दशा विधि खोली॥सुनत सुवचन सखीके सुखते पुलकित प्रेम तर कि गई चोली॥सूरदास अभिलाष नंदसुत हरपीं सुभग नारि अनमोली॥६॥केदारो॥माधवजी आवन हार भये । अंचल उडत मन होत गहगहो फरकत नैन खये ॥ देही देखि सोच जिय अपने चितवत सगुन दये । ऋतुवसंत फूली द्रुमवल्ली उलहेपात नये ॥ करति प्रतीति आपु आपुनते सवन शृँगार ठये॥सूरदास प्रभु मिलहु कृपाकरि अवधिहु पूजिगए ॥७॥श्रीभगवान दूत वचन नंद यशोमति माति॥ धनाश्री ॥ हौं इहां तेरेही कारण आयो । तेरीसों सुन जननी यशोदा हठि गोपाल पठायो ॥ कहा भया जो लोग कहतहैं देवकी माता जायो ॥ खान पान परिधान सवै सुख तैंहीं लाड लडायो । इतो हमारो राज द्वारका मो जी कछू नभायो ॥ जव जव सुरति होत उहि हितकी विछुर वच्छ ज्यों धायो ॥ अव वेहरि कुरुक्षेत्रमें आये सो मैं तुम्हैं सुनायो । सव कुल सहित नंद सूरजप्रभु हितकरि वहां वोलायो८॥राधिकावचन सखीप्रति॥सारंग॥राधा नैन नीर भरिआई॥कवधौं श्याम

मिलैं सुंदर सखी यदपि निकटहै आई॥कहाकरौं केहिभांति जाउँ अब पेषहि नाहिं तिन पाई।सूर श्याम सुंदर घन दरशेतनुकी ताप नशाई ॥९॥सखीवचनराधिकामति॥ केदारो॥अब हरि आइहैं जिन सोचै।सुन विधु मुखी वारि नयनन ते अब तू काहे मोचै ॥ सत्य जानि चित चेत आनि तू अब नख क्यों तनु नोचै।मदन मुरादि सँभारि सुमिरि सुख तुम समीपको वोचै।लै लेखनि मसि कारि कारि अपने लिखि संदेश छांडि संकोचै।सूर सुविरह जनाउ करत कित प्रवल मदन रिपु पोचै॥१०॥ गोपी संदेश श्रीभगवान मति ॥ सारंग ॥ पथिक कहियो हरिसों यह वात । भक्तवछल है विरद तिहारो हम सब किये सनाथ ॥ प्राणहमारे संग तुम्हारे हमहू हैं अब आवत । सूर श्याम सों कहत संदेशो नयनन नीर बहावत ॥११॥ कुरुक्षेत्र श्रीभगवान मिलन ॥ सारंग ॥ नंद यशोदा सब व्रजवासी । अपने अपने शकट साजिकै मिलन चले अविनाशी॥कोउ गावत कोउ वेणु वजावत कोउ उतावल धावत। हरि दरशन लालसा कारन विविध मुदित सब आवत ॥ दरशन कियो आइ हरि जीको कहत सपन की साँची । प्रेम मानि कछु सुधि न रही अंग रहे श्याम रंग राची ॥ जासों जैसी भांति चाहिये ताहि मिल्यो त्यों धाइ । देश देशके नृपति देखि यह प्राण रहे अरगाइ ॥ उमग्यो प्रेम समुद्र दशहुँ दिश परमिति कही न जाइ।सूरदास इह सुख सो जाने जाके हृदय समाइ॥१२॥कान्हरो॥तिरी जीवनि मूरि मिलहि किन माई । महाराज यदुनाथ कहावत तवहीं हुते शिशु कुँअर कन्हाई॥पानि परे भुज धरे कमल मुख पेषत पूरव कथा चलाई । परमउदार पानि अवलोकत हीन जानि कछु कहत न जाई ॥ फिरि फिरि अब सन्मुखही चितवति प्रीति सकुच जानी न दुराई।अब हँसि भेटहु काहि मोहिं निज जन वाल तिहारो हो नंद दोहाई ॥ रोम पुलकि गदगद तनु तिहि छिन जलधारा नैनन वरषाई । मिलि सुतात मात वंधू सब कुशल कुशल कारि प्रश्न चलाई॥आसन देइ वहुत कारि विनती सुत धोखे तब वुद्धि हेराई।सूरदास प्रभु कृपाकरी अब चितहि धरे पुनि करी वड़ाई॥१३॥ राग मलार ॥ माधव या लगि है जग जीजतु । जाते हरिसों प्रेम पुरातन वहुरि नयो कारि कीजतु ॥ कहँ रवि राहु भयो रिपु मति रचि विधि संयोग वनायो । उहि उपकार आज यहि औसर हारि दरशन सचुपायो॥कहां वसहिं यदुनाथ सिंधु तट कहँ हम गोकुल वासी । वह वियोग यह मिलनि कहां अब काल चाल औरासी॥ सूरदास मुनि चरण चरचि कारि सुरलोकानि रुचि मानी । तव अरु अब यह दुसह प्रमानी निमिषो पीर न जानी ॥१४॥ श्रीभगवान रुक्मिणि प्रत्युतर ॥ कान्हरो ॥ हरि जूसों वूझत हैं रुक्मिणि इनमें को वृषभानु किशोरी । वारेक हमैं देखावो अपने वालापनकी जोरी ॥ जाको हेतु निरंतर लीये डोलत व्रजकी खोरी।अति आतुर होइ गाइ दुहावन जाते पर घर चोरी ॥ रजनी सेज सु कारि सुमननकी नवपल्लव पुट तोरी । विन देखे ताके मन तरसै छिन वीते युग मोरी॥सूर सोच सुख कारि भरि लोचन अंतर प्रीति न थोरी।सिथिल गात मुख वचन फुरत नाहिं ह्वै जो गई मति भोरी ॥ ॥१५॥धनाश्री॥वूझति है रुक्मिणि पिय इनमें को वृषभानु किशोरी।नेक हमैं देखरावहु अपनी वालापनकी जोरी ॥ परमचतुर जिन कीने मोहन अल्प वैसही थोरी । वारेते जिहि यहै पढ़ायो वुधि वल कलविधि चोरी ॥ जाके गुणगनि गुथति माल कवहूँ उरते नहिं छोरी । सुमिरन सदा वसतहीं रसना दृष्टि न इत उत मोरी ॥ वह देखो युवति वृंद में ठाढी नीलवसन तनुगोरी । सूरदास मेरो मन वाकी चितवन देखि हरचोरी ॥ १६ ॥ मारू ॥ गोविंद परम कृपा मैं जानी । निगम जु कहत दयालु शिरोमणि सत्य सुनिधि वानी ॥ अब ये श्रवन वरन कर स्वारथ तुम जुदरश सुख दीनो । या फल योग सुकृत नाहिं समुझत दीन देखि हित कीनो ॥ यह दिन धन्य धन्य जीवन जस धन्य

भाग्य प्रभु पाये। शिव मुनि मन दुर्लभ चरणांबुज जनहि प्रगट परसाए ॥ हरषित सुजन सखा त्रिय बालक कृष्णमिलन जियभाये। सूरदास सकल लोचन जनु शशि चकोर कुलपाए ॥ १७ ॥ सारंग ॥ हरिजी इते दिन कहाँ लगाये। तबहिं अवधि मैं कहत न समुझी गनत अचानक आये ॥ भली करी जु अबहिं इन नैनन सुंदर चरण दिखाये। जानी कृपाराज काजहुँ हम निमिष नहीं विसराए ॥ विरहिनि विकल विलोकि सूरप्रभु धाइ हृदय करलाए। कछु मुसुकाइ कह्यो सारथि सुन रथके तुरंग छुराए ॥ १८ ॥ मलार ॥ हरिजू वै सुख बहुरि कहाँ। यदपि नैन निरखत वह मूरति फिरि मन जात तहां ॥ सुखमुरली शिरमोर पखौवा गर घुँघुँचनिको हार। आगे धेनु रेनु तनु मंडित चितवन तिरछी चाल॥राति दिवस अंग अंग अपने हित हँसि मिलि खेलत खात। सूर देखि वा प्रभुता उनकी कहि नाहिं आवै बात ॥ १९ ॥ धनाश्री ॥ रुक्मिणि राधा ऐसे बैठीं। जैसे बहुत दिननकी बिछुरी एक बापकी बेटी ॥ येक सुभाउ येकलै दोऊ दोऊ हरिको प्यारी। येक प्राण मन एक दुहुँनको तनु करि देखिअत न्यारी ॥ निज मंदिर लै गई रुक्मिणी पहुनाई विधि ठानी। सूरदासप्रभु तहँ पग धारे जहां दोऊ ठकुरानी ॥ २० ॥ धनाश्री ॥ राधा माधव भेट भई। राधा माधव माधव राधा कीट भृंग गति होइ जोगई ॥ माधव राधाके रंग राचे राधा माधव रंगरई। माधो राधा प्रीति निरंतर रसना कहिनगई ॥ विहँसि कह्यो हम तुम नाहिं अंतर यह कहि ब्रजपठई। सूरदास प्रभु राधा माधव ब्रजविहार नित नई नई ॥ २१॥ धनाश्री ॥ राधावचन सखी प्रति ॥ करत कछु नाहीं आजु बनी। हरि आए हौं रही ठगीसी जैसे चित्तधनी ॥ आसन हर्षि हृदय नहिं दीन्हो कमलकुटी अपनी। न्यवछावर उर अरघ न अंचल जलधारा जो बनी ॥ कंचुकी ते कुचकलस प्रगटह्वै टूटिनतरक तनी। अब उपजी अतिलाज मनहिमन समुझत निजकरनी ॥ मुख देखत न्यारेसी रहिहौं विनु बुधिमाति सजनी। तदपि सूर मेरी यह जडता मंगल मांझ गनी ॥ २२ ॥ भगवान वचन ब्रजवासी प्रति ॥ सारंग ॥ ब्रजवासिनसों कह्यो सबनते ब्रजहित मेरे। तुमसों मैं नाहिं दूररहतहौं सबहिनके नियरे ॥ भजै मोहिं जो कोइ भजौं मैं तिनको भाई। मुकुरमांह ज्यों रूप आपनो आपुन सम दरशाई ॥ यह कहिकै समदे सकल जन नयनरहे जल छाई।सूरश्यामको प्रेम कछू मोपै कह्यो नजाई॥२३॥सारंग॥ सबहिनते सबहे जन मेरो। जन्म जन्म सुन सुबल सुदामा निवह्यो इह प्रण मेरो ॥ ब्रह्मादिक इंद्रादि आदिदै जानत बलि वसि केरो। यक उपहास त्रास उठि चलते तजिकै अपनो खेरो ॥ कहा भयो जो देश द्वारका कीन्हों दूरि बसेरो। आपुनहीं या ब्रजके कारण करिहौं फिरि फिरि फेरो ॥ यहां वहां हम फिरत साधहित करत असाध अहेरो। सूर हृदय ते टरत न गोकुल अंग छुअतहौं तेरो ॥ २४ ॥ वचन ब्रजवासी॥ सारंग ॥ हमतो इतनेहीं सचुपायो। सुंदर श्याम कमलदल लोचन बहुरो दरश देखायो ॥ कहा भयो जो लोग कहतहैं कान्ह द्वारका छायो। सुनि यह दशा विरही लोगनकी उठि आतुर होइ धायो ॥ रजक धेनु गज कंस मारिकै किया आपनो भायो महाराज होय मातु पिता मिलि तऊ न ब्रजविसरायो ॥ गोपी गोप औ नंद चले मिलि प्रेम समुद्र बहायो। येते मान कृपाल निरंतर नैननीर ढरिआयो॥ यद्यपि राज बहुत प्रभुता सुनि हारि हित अधिक जनायो। वैसाहिं सूर बहुरि नँदनंदन घर घर माखन खायो॥२५॥अध्याय ॥ ८३ ॥ अष्टनायिका द्रौपदी प्रश्न॥राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि सुमिरहु दिनराति। नातरु जन्म अकारथ जाति ॥ सौबात नकी एकै बात। हरि हरि हरि सुमिरो दिन रात ॥ हरि कुरुक्षेत्र अन्हान सिधाये। तब सब

भूपति दरशन आये ॥ हरि तेहि सबको आदर कियो। भयो संतुष्ट सबहिनको हियो ॥ तब भूपहि हरिको शिरनाइ। करनलगे स्तुति या भाइ ॥ परमहंस तुम सबके ईश । वचन तुम्हारी श्रुति जगदीश ॥ तुम अच्युत अविगति अविनाशी। परमानंद सदा सुखरासी ॥ तुम तनु धारि हरचो भुवभार । नमो नमो तुम्हैं वारंवार ॥ पुनि रानी रानिनपै आई । द्रुपदसुता तब बात चलाई ॥ ज्यों करि भयो तुम्हारो व्याह । कहो सो तिनको मोहिं उत्साह ॥ कह्यो सबन्ह हरि अज अविनाशी । भक्तवच्छल सब जगत निवासी ॥ ना हमको नाहिं सुंदरताइ। भक्त जानिकै सब अपनाइ॥ व्याह सबनको ज्यों ज्यों भयो। बहुरो तिन्हते वहि त्यों कह्यो॥द्रुपदसुता सुनि मन हरपाई। कह्यो धन्य तुम धनि यदुराई॥ धन्य सकल पटरानी रानी। जिन वर पायो साराँगपानी॥ धन्य जो हरि गुण अह निशि गावै। सूरदास तिनकी रज पावै ॥२६॥ अध्याय॥ ८४ ॥ ऋषिस्तुति बिलावल॥ हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोई । बिनु हरि सुमिरन मुक्ति नहोई ॥ श्री शुक व्यास कह्यो यह गाई । सोइ अब कहौं सुनो चितलाई॥ सूरज गहन पर्व हरि जान। कुरुक्षेत्रमें आए न्हान ॥ तहां ऋपि हरि दरशन हित आये। हरि आगे होइ लेन सिधाये ॥ आसन दे पूजा हित करी । हाथ जोरि विनती उच्चरी ॥ दरश तुम्हारे देवन दुर्लभ। हमको भयो सो अतिही सुर्छभ ॥ यों कहि पुनि लोगन समुझायो । जैसे वेद पुराणन गायो ॥ हरि जीकी पूजै हरिजान। ताको होइ तुरत कल्यान ॥ गुरु पूजा बहु विधिसों कीजे । तीरथ जाइ दान बहु दीजे ॥ यह सब किये होइ फल जोइ। संत संगसो छिनमें होइ ॥ यह सुनिकै ऋपि रहे लजाइ। पुनि हरिसे बोले या भाइ॥ तुम सबके गुरु सबके स्वामी। तुम सबहिनके अंतर्यामी ॥ तुम्हैं वेद ब्राह्मण बखानत। ताते हमरी स्तुति ठानत ॥ हम सेवक तुम जगत उधार। नमो नमो तुम्हें वारंवार ॥ तुम परब्रह्म जगत करतारा। नरतनु धरचो हरनभूभारा ॥ सुरपूजा औ तीर्थ बतावत। लोगनके मतिको भरमावत ॥ तुम रूप हिं यहि भांति छिपायो। काठ मांह ज्यों अग्नि दुरायो ॥ वसुदेव तुमको जानत नाहीं। और लोग बपुरे किन माहीं॥ कोउ न मानत कोउ न जानत। कोऊ शत्रु मित्र कारि मानत॥सर्व अशक्ति तुम सर्व अधार। तुम्हैं भजै सो उतरै पार ॥ जैसे नींद नाहिं कोइ होय। बहुविधि सपना पावै सोय ॥ पै तेहि वहां नकछू सम्हार। केहि देखत को देखनहार ॥ त्यों जिय रहै विपैरस भोइ। तेहिके शुद्धि बुद्धि नहिं कोइ॥जापर कृपा तुम्हारी होइ। रूप तुम्हारो जानै सोइ॥घट घट मांह तिहारो वास। सर्व ठौर ज्यों दीप प्रकाश॥इह विधि तुमको जानै जोइ। भक्तिरु ज्ञानी कहिये सोइ ॥ नाथ कृपा अब हमपर कीजै। भक्ति आपनी हमको दीजै ॥ प्रेम भक्ति बिन कृपा नहोइ। सर्व शास्त्रमें देखे जोइ ॥ तपसी तुमको तपकरि पावै। सुनि भागवत गृही गुण गावै ॥ कर्मयोग करि सेवत कोई । ज्यों सेवै त्योंही गति होई ॥ ऋपि याहिविधि हरिके गुणगाइ। कह्यो होइ आज्ञा यदुराइ ॥ हरि तिनको पुनि पूजा करी । कीरति सकल जगत विस्तरी ॥ वेद पुराण सबनको सार । व्यास कह्यो भागवत विचार ॥ बिनु हरि नाम नहीं उद्धार। वेद पुराण सबनको सार ॥ सूर जानि यह भजो मुरार ॥ २७ ॥ अध्याय ॥ ८५ ॥ श्रीकृष्ण देवकी षट्पुत्र आनयन॥ रागविलावल ॥ श्रीगोपाल तुम कहो सोहोइ।तुमही कर्त्ता तुमही हर्त्ता तुम ते और नकोइ ॥ अबलों मैं तुमको नहिं जान्यों पुत्रभावकरि मान्यो । तुमहो देव सकल देवनके अब तुमको पहिचान्यो ॥ गुरुसुत आनि दिये तुम जैसे कृपाकरी यदुराई। ममसुतहूं जे कंस संहारे

ते प्रभु देहु जिवाई॥मेरे जिय यह बड़ी लालसा देखों नैनन जोई। दूध पिवाइ हृदयसों लावों पाछे होइ सोहोई॥ यह सुनि हरि पाताल सिधारे जहां हुते बलिराइ।करि प्रणाम बैठारि सिंहासन हितकरि धोये पाइ॥ तासों कह्यो देवकीके सुत षष्ट कंस जेमारे।नेक मँगाइ देहु ते हमको हैं वे लोक तुम्हारे॥ तहँते आनि दिये हरि बालक माता लाड़ लड़ाये।सूरदास प्रभु दरश परसकै ते वैकुंठ सिधाये॥२८

अध्याय॥ ८६॥ वेदस्तुति वर्णन॥ विलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो।हरि चरणार्विन्द उरधरो। हरिके रूप रेख नाहिं राजा। और हरि सम द्वितिआ न विराजा॥ अलखरूप हरि कह्यो नजाई। देवन कछु वेद उक्ति बताई॥ हरिजीके हृदय यह आई। देवन सबन निरूप देखाई॥ तीनलोक हरि करि विस्तार। ज्योति अपनि को कियो उजियार॥ जैसे कोऊ गेह सँवार।दीपक वारि करै उजिआर॥त्यों हरि ज्योति अपनी प्रगटाइ।घट घट में सोई दरशाइ॥तीन लोक सरगुण तनु जान्यो। ज्योति स्वरूप आपनो मान्यो॥ श्वासा तासु भये श्रुतिचार।कारि सो स्तुति या परकार॥ नाथ तुम्हारी ज्योति अभास। करत सकल जगमें परकाश॥थावर जंगम जहँ लों भयो॥ज्योति तुम्हारी चेतन कियो॥ तुम सब ठौर सबनते न्यारे। को लखि सकै चरित्र तुम्हारे॥ सो प्रकाश तुम साजे सदा। जीव कर्म्म कारि बंधन बधा॥ सर्वव्यापी तुम सब ठाहर। तुमहिं दूर जानत नर नाहर॥ तुम प्रभु सबके अंतर्यामी। विसारि रह्यो जिव तुमको स्वामी॥ तुम्हरी लीला अगम अपार।युग प्रमान कीन्हो व्यवहार॥तुम्हरी माया जगत उपाया। जैसेको तैसे मगलाया॥ अद्भुत सगुण चरित्र तुम्हारे। जो करिकै भुवभार उतारे॥ तेहिको समुझि सकत नाहिं जोइ। निर्गुण रूप लखै क्यों सोइ॥ नरतनु भक्ति तुम्हारे होइ। जीव तनुमें जिव आसरैसोइ। भक्ति करिये उतरिये पार।नमो नमो तुम्हैं वारंवार॥ शुक जैसे वेद स्तुति गाई। तैसेही मैं कहि समुझाई॥ जो पद स्तुति सुनै सुनावै। सूर सुज्ञान भक्तिको पावै॥ २९॥ रागविलावल॥ नमो नमस्ते वारं वार। मदन सुदन गोविंद मुरार॥ माया मोह लोभ अरु मान। ए सब त्रयगुण फांस समान काल सदा शरसाधे रहै। क्यों कारि नर तुव सुमिरन कहै॥तुम निर्गुण उदय निराकार। सूर अमर हम रहे वचिहार॥ तुमरो मर्म नजानै सार। नर वपुरो क्यों करै विचार॥ अरुण असित सित वपु उनहार। करत जगतमें तुम अवतार॥सो जगको मिथ्या कहिजाइ।जहां तरे तुमरे गुण गाइ॥ प्रेमभक्ति विनु मुक्ति न होइ। नाथ कृपाकरि दीजै सोइ॥और सकल हम देखों जोइ। तुम्हरी कृपा होइ सो होइ॥ इह तनुहै प्रभु जैसे ग्राम। यामें शब्दादिक विश्राम॥ अधिष्ठाता तुमहौ भगवान। जान्यो जगत न तुम स्थान॥ तुम श्वासाते पुहुमी नाथ। श्वासरूप हम लख्यो न वात॥कहा कहि तुम्हरी स्तुति करैं। वाणी नमो नमो उच्चरैं॥जगतपिता तुमहींहौ ईश।याते हम विनवत जगदीश॥ तुम सम द्वितिया और न आहि। पटतर देहिं नाथ हम काहि॥शुक जैसे वेद स्तुति गाई। तैसेही मैं कहि समुझाई॥सूर कह्यो श्रीमुख उच्चार।कहै सुनै सो तरै भवपार३०॥नारदस्तुति॥ राग धनाश्री॥ प्रभु तुअ मर्म समुझि नहिं परचो। जगसिरजत पालत संहारत पुनि क्यों बहुरि करचो॥ ज्यों पानीमें होत बुद्बुदा पुनि तामाहिं समाही।त्योंही सब जग कुटुम्ब तुमते पुनि तुम माहिं विलाही॥ माया जलधि अगाध महाप्रभु तरि नसकै तेहि कोई। नाम जहाज चढ़ै ज्यों कोई तुवपद पहुँचै सोई॥ पापी तरचो तरचो सबही सम प्रभुजी नाहीं तासु निवाही। काठ उतारत वारिवोहिमें नाम तुम्हारो ताही॥ पारस परसि होत ज्यों कंचन लोहपना मिटिजाई। त्यों अज्ञानी ज्ञानहिं पावत नाम तुम्हारे गाई॥ अमरहोत ज्यों संशयनाशे रहत सदा सुखपाइ। यातेहोत अधिक सुख

भक्तन चरण कमल चितलाइ ॥ थावर जंगम सब तुम आश्रित सनक सनंदन बानी । ब्रह्मा शिव स्तुति नसकैं करि मैं बपुरो केहिमाहीं ॥ योग ध्यान करि देखत योगी भक्तसदा मोहिं प्यारो ब्रजवनिता भज्यो मोहिं नारद मैं तोहि पार उतारो ॥ नारद ज्योंही स्तुति कीनी शुक त्यों कहि समुझाई । सूर प्रेम भक्तिकी महिमा श्रीपति श्रीमुखगाई ३१॥ अध्याय ॥ ८७ ॥ सुभद्राविवाह वर्णन ॥ बिलावल॥भक्तवछल श्रीयादव राई ।भक्तकाज हरि कृत सुखदाई॥अर्जुन तीरथ यात्रा सिधाये। फिरत फिरत द्वारावती आये ॥ सुन्यो विचार करत बलयेइ । दुर्योधनहिं सुभद्रा देइ ॥ तब अर्जुनके मन इह आई । याको मैं लैजाउँ दुराई ॥ भेपतापसीको तिन गह्यो । चारि मास द्वारावति रह्यो ॥ बल देवताको नेवत बुलायो । भोजन हेतु सो बल गृह आयो ॥ लख्यो सुभद्रा इह संन्यासी । राजकुँवर कियो भेप उदासी ॥ मेरे मनमें इह उत्साह । मेरो या सँग होहि विवाह ॥ इकदिन सो हरि मंदिरगई । वहां भेंट पारथसों भई ॥ देखि ताहि रथ ठाढोकियो । हरि दोउको चेहरो लिखिलियो॥धनुपबाण अपनो तब दियो । अर्जुन सावधान होइ लियो ॥ यह सुनिकै हलधर उठिधायो॥तब हरि अर्जुन नाम सुनायो॥ बल कह्यो जो तुम मन ऐसी आइ। तौ तुम क्यों कीन्हीं न सगाइ॥ हरि कह्यो अबहुँ बुलावहु ताहि । भली भांतिको करो बिवाहि ॥ तब बल पारथ तुरत बुलायो । शुद्ध मुहूरत लग्न धरायो ॥ करि विवाह अर्जुन घर आये । सूरदास जन मंगल गाये॥३४ ॥रागनट॥ विनती करत गोविंद गोसाईं। दे सबसौंज अनंत लोकपति निपट रंककी नाईं॥धरि धन धाम सजनक आगे श्याम सकुचि करजोरे । टहल योग इह कुँवरि सुभद्रा तुम सम नाहीं कोरे ॥ इतनी सुनत पंडुके नंदन कह जो यहै वचन प्रभु दीजै । सूरज दीनबंधु अब इहि कुल कन्या जन्म नकीजै॥३३॥अध्याय ॥ ८८ ॥ जनकदेवमिलाप परमारथ॥हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोई । रावरंक हरि गिनत नदोई ॥ जो सुमिरै ताकी गतिहोई । हरि हरि हरि सुमिरहु सब कोई ॥ श्रुतदेव ब्राह्मण सुमिरयो हरि ।ताकी भक्ति हृदय में धरी ॥ राउ जनक हरि सुमिरन कीन्हो । हरिजू सोउ हृदय धरि लीन्हो ॥ तब हरि ऋषिहि पथिक संग किये । तिनके देश प्रीति बश गये ॥ दोउ रूप हरि दोउनको मिले। तोपि तेहि पुनि निजपुर चले ॥ हरिजीको यह सहज सुभाव । रंक होइ भावै कोउ राव॥जोहितकरै ताहि हित करै सूरप्रभू नाहिं अंतर धरै३४॥रागकान्हरो ॥घरही बैठे दोऊ दास।ऋद्धि सिद्धि मुक्ति अभयपद दायक आइ मिले प्रभु हरि अनयास ॥ आये सुने श्याम उपवनमें भेटलई भुज परमसुवास ।चर्चित गात चंद्रमुख चितवत उर सरवर भयो कमल बिगास ॥ भूपति चमर विप्र कर वस्तर करत बाउ अति अंग हुलास।आनँद उमगि चल्यो नैनन जल सुरत देव द्विज नृप बहुलास॥जाको आसन ध्यान धरत मुनि शंकर शीशजटा दिग अंबर तास । कामदहन गिरि कंदर आसन वा मूरति की तऊ पिआस॥भक्तवछलता प्रगट करीहै भयो विप्र धरकर कलि ग्रास। सूरदास स्वामी सुमिरन बश अछत निरंजन सेवा पास ३५॥ अध्याय ॥ ८९ ॥ भस्मासुर वध ॥धनाश्री ॥ तेऊ चाहत कृपा तुम्हारी । जिनके बश अनमुख अनेक गन अनुचर आज्ञाकारी ॥ महादेव वर दियो असुरको जब उन निज तनु जारयो । शिवके शीशधरन लाग्यो कर शिव बैकुंठ सिधारयो ॥ विप्ररूप हरि कह्यो असुरसों इह वर सत्य नहोइ । शिर अपने परधरो असुरकर भस्म होइ गयो सोइ ॥ शिव कैलास गये स्तुतिकरि आनँद उपज्यो भारी । सूरदास हरिको यशगायो श्रीभागवत अनुसारी ॥३६॥ अध्याय ॥ ९० ॥ भृगुपरीक्षा अर्जुन निजरूप दर्शन ॥ शंखचूड पुत्रल्यावन ॥ बिलावल ॥ हरिसों ठाकुर और न जनको।तिहूं लोक भृगुजाइ आइ कह्यो या विधि

सब लोगनको। ब्रह्मा राजसगुण अधिकारी शिवतामस अधिकारी। विष्णु सत्य केवल अधिकारी विप्रलात उरधारी॥ मुख प्रसन्न शीतल सुभाउ नित देखत नैन सिराइ। इह जियजानि भजो सबकोई सूरप्रभू यदुराइ॥ ३७॥ बिलावल॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणाविंद उरधरो॥हरि इकदिन निज सभा मँझार। बैठे हते सहित परिवार॥ अर्जुनहूं ता ठौर सिधाये। शंखचूड तब वचन सुनाये॥द्वारावती बसत सब सुखी। मही एक अह अरु निश दुखी॥ मेरे पुत्र होतहैं जबहीं। अंतर्ध्यान होत सो तबहीं॥ अर्जुन कह्यो द्वारका माहीं। ऐसो कोउ धनुधारी नाहीं॥ जो तुअ सुतकी रक्षाकरै। अरु तेरो पर दुःख परिहरै॥ मैं तुअ सुतकी रक्षाकरों। अरु तेरो इह दुःख परिहरों॥ यह प्रतिज्ञा जो न निवाहों। तौ तनु अपनो पावक दाहों॥ विप्र कह्यो तुम श्यामकि राम। कै प्रद्युम्न अनिरुद्ध अभिराम॥अर्जुन कह्यो मैं उनमें नाहीं। पैहों उनके दासन माहीं॥अर्जुन है मेरो निजनाम। धनुष काम दियो मम आभिराम॥ तू निहचिंत बैठ गृहजाइ। सबै होय कछु मोसों आइ॥ पुत्र प्रसूति समय जब आयो। विप्र अर्जुनसों आनि सुनायो॥ अर्जुन तब शर पंजर कियो। पवन संचार रहन नहिं दियो॥ गृहको द्वारो राख्यो जहां। अर्जुन सावधान भयो तहां॥ब्राह्मण कह्यो समय अब भयो।अर्जुन धनुष बाण तब गह्यो॥बालक ह्वै भयो अंतर्ध्यान। अर्जुनह्वै रह्यो चकृत समान॥ विप्र नारि तब गारी दई। लख्यो प्रतिज्ञा कहा होइ गई॥ तैं पुरुषा रथ कहां ते पायो। मिथ्याही कहि वाद बढ़ायो॥ हरिसों दुःख अबकहिहौं जाई। अर्जुन कह्यो तासों याभाई॥ तेरे सुतको मैं अब ल्याऊं। तेरो सब संताप नशाऊं॥ अर्जुन तिहूंलोक फिरि आयो। ऐसो बालक कहूं नपायो॥ अर्जुन वीर स्यात तन आए। हरि अर्जुनसों वचन सुनाए॥ तुम्ह बालक काहीं नहिं राख्यो। सो वृत्तांत हमैं तुम भाष्यो॥ कह्यो जो मैं प्रतिज्ञा करी। सो मोसों पूरण नहिंपरी॥बालक होत कौन लैगयो। सोमोको कछु ज्ञान नभयो॥ मैं देख्यो तेहि त्रिभुवन जाइ। पै ताकी कहुँ सुधि नहिं पाइ॥ विप्रकाज प्रभु अब तुम करो। नातरु मोको जानो मरो॥ हरि रथ पर अर्जुन बैठाइ। पहुँचे लोकालोकहि जाइ॥ उहहूंते जब आगे धाई। दारुक हरिसों वचन सुनाई॥ अंधकार मग नहिं दरशाइ। याते रथ नहिं सकत चलाइ॥ चक्र सुदर्शन आगे कियो। कोटिकरवि परकाशित भयो॥ तब हरि अर्जुन पहुँचे तहां। गतिनाहीं काहूकी जहां॥ तहां जाइ देख्यो इक रूप। तासम और न द्वितिय स्वरूप॥ नैन निरखि चकृत होइ गये। मन वाणी दोऊ थकिरये॥ कहिवे योग होइतौ कहै। तहां कछू आकारनलहै॥शयन नाग फन मुकुट स्थान। नैन प्रभा मानो कोटिकभान॥ हरि अर्जुन कियो निरखि प्रणाम। सुन्यो तहां एक शब्द अभिराम॥ तुम्हरे हेतु चरित्र यह कियो। बोझ पृथ्वीको हरबो भयो॥ आवहु अब तुम अपने धाम। पूरण भये सुरनके काम॥ दशोपुत्र ब्राह्मणके दीन्हें। हरि अर्जुन प्रणाम तब कीन्हें॥ नहिं जान्यो मैं कहां सिधायो। और यहां मैं कैसे आयो॥ हरि अर्जुनको निज जन जान। लैगये तहां न जहां शशि भान॥ निजस्वरूप अपनो दरशायो। जोकछु देख्यो बानहिंपायो॥ ऐसे हैं त्रिभुवनपति राई। कहा सकै रसना गुणगाई॥ ज्यों शुक नृपसों कहि समुझायो। सूरदास ताही विधि गायो॥ ३८॥

इति श्रीभागवतेमहापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे सूरसागरे सूरदासकृते–संपूर्ण॥शुभमस्तु॥

श्रीः ।

अथ

सूरसागर.

एकादशस्कन्ध ।

॥ रागनटनारायण ॥ तुम्हरो वचन न मेट्योजाइ । प्राणनाथ कृपाल परमगुरु सुजान यादवराइ ॥ कहत पठवन बद्रिका मोहिं गूढ़ज्ञान सिखाइ । सकुच साहस करत मनमें चलत परत नपाँइ॥पता काके दंडलौं मन लेत संग लगाइ । कहा करौं चित चरण सन्मुख बसण सदृश उड़ाय॥मेरही या हृदयकी हरि कठिन सकल उपाइ । सूर सुनत जु गयो तवहीं खंड खंड नशाइ॥ १ ॥ रागसारंग ॥ हरिसों हौं कहा कहौं । प्रभु अंतर्यामी सब जानत यह सुनि सोचि रहौं ॥ बिनु बुधि मनुज देह दयानिधि क्यों करि लै निबहौं । समुझि आपनी करनी गोसाईं काहे न शूल सहौं ॥ मैं यह ज्ञान छली ब्रजबनिता दियो सुक्यों न लहौं । प्रकट पाप तनुताप सूरप्रभु केहिपर हठहि गहौं ॥ ॥ २ ॥ रागनट ॥ कैसे करि आवत श्याम इती । मन क्रम वचन और नहिं मेरे पदरज त्यागि हिती ॥ अंतर्यामी यहौ न जानत जो मो उरहि बिती । ज्यों कुजुवारि रस बींधि हारि गथु सोचतु पटकि चिती ॥ रहत अवज्ञा होइ गुसाईं चलत न दुखहि मिती । क्यों विश्वास कराहिगो कौरौ सुनि प्रभु कठिन क्रिती ॥ इतर नृपति जिहि उचत निकट करि देत न मूठि रिती । छुटत नअंश सुनितहि कृपिणके प्रीति नसूर रिती ॥ ३ ॥ रागकेदार ॥ क्यों करि सकौं आज्ञा भंग । करुणामय पद कमल लालच नाहिंन छूटत संग ॥ यह रजायसु होत मोसन कहत बदरी जान । कहा करौं मम पाप पूरण सुनि न निकसत प्रान ॥ मैं अपराधी ब्रजवधू सों कहे वचन विप तूल ॥ मोहिं तजि अवर को वियसहै ऐसे शूल ॥ अब न जो तुम जाहु ऊधो मिटै युग भृत रीति ॥ हौं जु तेरी सकल जानत महा मोसन प्रीति॥सकल ज्ञान प्रबोधि उनसों कहि कथा समुझाइ । यादवनको प्रलय सुनि वे मरहिंगी अकुलाइ ॥ अति विषाद सुहृदय करि करि उठि चल्यो है दीन । सूर प्रभु तू कृपासागर किनभयों हौं मीन ॥४॥ रागबिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरणारविंद उर धरो ॥ नारायण जब भये अवतार । कहों सो कथा सुनो चितधार ॥ धर्म पिता अरु मूरति माई । भये नारायण सुत तेहि आई ॥ बदरीकाश्रम रहे मुनि जाइ । योग अभ्यास समाधि लगाइ ॥ उनके और कामना नाहीं । सुख पावे त्रिभुवन मन माहिं ॥ सुरपति देखत गयो डेराइ । कामसैन सँग दियो पठाइ ॥ ऋतुवसंत फूली फुलवाइ । मंद सुगंध बयार बहाइ ॥ करत गान गंधर्व सुहाइ । नृत्य भली अप्सरा देखाइ ॥ काम बाण पांचों संधाने । नारायण ते मनहिं न आने ॥ तब तिन सबन तहां भय पायो । कह्यो इन्द्र हमें कहां पठायो॥तब नारायण आंख उघारी।उन सबकी कीन्हीं मनुहारी॥तुम कछु मनमें भय मति

धरो।अभय हमारे आश्रम करो॥दोष तुम्हारो है कछु नाहिं। तुमहिं पठायो है सुरनाहिं॥ इन्द्रहुको कछु दूषण नाहीं। राजहेतु डरपत मन माहीं॥ उन कर जोर वनिती उचारी। नारायण हरि हरि बनवारी॥ उधरत लोग तुम्हारे नाम। क्यों करि मोह सकै तुम काम॥ जे न शरण प्रभु तुम्हरे करैं। तिनको अंत राइ हम करैं॥ और संभारि मनोरथ धरैं। ते सब हमको अहनिशि डरैं॥ कहूं पुत्र मोह उपजावै। कहूं त्रियाके रूप लोभावै॥ भूख प्यास होइ कबहुँ संतापै। ऐसे विधि हम उनको व्यापैं॥ जो कोउ तुम्हरे शरन नआवै। सुख संसार सकल विसरावै॥ तासों हमरो कछु नवसावै। होय चेत सो तुमपै आवै॥ नारायण तहां प्रगट करी। इन्द्र अपसरा सो भगिरी॥सहस अप्सरा सुंदर रूप। येक येकते अधिक अनूप॥काम देखि चकृत होइ गयो।रूपअवनि हम देख्यो नयो॥कौन जितै सबही इन माहिं। इन सम इन्द्र लोक कोउ नाहिं॥ तब नारायण आज्ञा करी। इनमें लेहु एक सुन्दरी॥पुनि प्रणाम हरिको तिन कीन्हीं नाम उर्वसी इक उनलीनी॥सो सुरपतिको दीन्हीं जाइ।कह्यो सकल वृत्तांत सुनाइ॥पुनि भयो नारायण अवतार।सूर कह्यो भागवत अनुसार॥५॥ हंस अवतार वर्णन ॥ राग विलावल॥हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो।हरि चरणाविंद उर धरो॥हरि ज्यों धरयो हंस अवतार। कहौं सो कथा सुनो चितधार॥सनकादिक ब्रह्मा पै गये। नमस्कार कर पूँछत भये॥ किधौं विषय को चित गहि रह्यो। की विषही में चितको गह्यो॥नीर क्षीर ज्यों दोउ मिलि गये। न्यारे होत न न्यारे कये॥ हमतो जतन करी बहु भाइ। तुम अब कहो सो करैं उपाइ॥ ब्रह्माको उत्तर नहिं आयो। तब सनकादिक गर्व बढ़ायो॥ ज्ञान हमारो अतिशय जोइ। ब्रह्म रह्यो निर उत्तर होइ॥ ब्रह्मा हरिपद ध्यान लगाय। तब हरि हंस रूप धरि आय॥ सबहिन रूप देखि सुख पायो। सबहिन उठिकै माथो नायो॥ सनकादिकन कह्यो या भाइ। हमको दीजै प्रभु समुझाइ॥ को तुम क्यों करि इहां पधारे। परमहंस तब वचन उचारे।यह तो प्रश्न योग है नाहीं। एकइ आतम हम तुम माहीं॥जो तुम देह देखिकै पूछे। तोहू प्रश्न तुम्हारे छूंछे॥ पंचभूत ते सब तनु भए। कहा देखिकै तुम भ्रमि गए॥ यह कहि उनको गर्व निवारयो। बहुरो या विधि वचन उचारयो॥ विषय चिंता दोऊहै माया। दोऊ चपरि ज्यों तरुवर छाया॥ तरुवर डोलै डोलै सोइ। त्यों जिव लगि चित चेत नहोइ॥ बहुरि चित चेत विषे तनु जोवे। चित्त विषय संयोग तब होवै॥ ऐसी भांति रहे दोउ गोइ। तिन्हें न्यारे करि सकै न कोइ॥ ज्यों सुपने में सुख दुख जोइ। जानि सत्य राखै चित लोइ॥ जब जागै तब मिथ्या जानै। ज्ञानी इनको नित यों मानै॥ विषय चित्त दोऊ भ्रम जानो। आतमरूप सत्य करि मानो॥ श्रवणादिक में चित्त लगावहु। प्रेम सहित मम रूपहि ध्यावहु॥ ऐसे करत विषयहू होइ। अरु मम चरण रहै चित गोइ॥ जो ऐसे विधि साधन करै। सो सहजहि मम पद अनुसरै॥ और जो बीचहि तनु छुटि जाय। तौलै जन्म भक्त गृह आय॥ वहां हू प्रेम भक्ति को थान। पावै मेरो परम स्थान॥ सनकादिकनसों कहि यह ज्ञान। परम हंस भये अंतर्ध्यान॥ जो यह लीला सुनै सुनावै। सूर सो प्रेम भक्तिको पावै॥ ६॥

इति श्रीमद्भागवते एकादशस्कंधे श्रीसूरसागरे सूरदासजी कृत सम्पूर्णम्॥

श्रीः ।

अथ

सूरसागर.

द्वादशस्कन्ध ।

राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणार्विंद उर धरो॥ शुकदेव हरि चरण न शिरनाइ । राजासों बोल्यो या भाइ॥ कहौं हरि कथा सुनो चितलाइ । सूर तरो हरिके गुणगाय॥ १॥ बौद्धावतार वर्णन ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणार्विंद उरधरो॥ बौद्धरूप जैसे हरि धारचो। अदिति सुतनको कारज सारचो॥ कहौं सो कथा सुनो चित धार॥ कहै सुनै सो तरै भवपार॥ असुर एक समय शुक्र पै जाइ। कह्यो सुरन जीतैं केहि भाइ॥ शुक्र कह्यो तुम जग विस्तरो। करिकै यज्ञ सुरनसों लरो॥ याही विधि तुमरी जय होइ॥ या विनु और उपाय न कोइ॥ असुर शुक्रकी आज्ञा पाइ। लागे करन यज्ञ वहु भाइ॥ तव सुर सव हरि जू पै जाइ। कह्यो वृत्तांत सकल शिरनाइ॥ हरिजू तिनको दुःखित देख। कियो तुरत सेवरिको भेप॥ असुरन पास वहुरि चलि गए । तिनसों वचन ऐसी विधि कए॥ यज्ञ माहिं तुम पशुन यों मारत। दया नहीं आवत संहारत॥ अपनो सो जीव सवको जानि। कीजै नहिं जीवनकी हानि॥ दया धर्म पाले जो कोइ। मेरी मति ताकी जय होइ॥ यह सुन असुरन यज्ञ त्यागि। दया धर्म मारग अनुरागि॥ या विधि भयो बुद्ध अवतार। सूर कह्यो भागवत अनुसार॥ २॥ भविष्य कल्की अवतार वर्णन ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणार्विंद उरधरो॥ हरि करिहैं कलंकि अवतार । जेहि कारण सो कहौं चितधार॥ कलिमें नृप होइ हैं अन्याई। कृपि आइहैं सव लेहैं वरिआई॥ झूठे नरसों लेहिं अंकोर। लावहि सांचे नरको खोर ॥ प्रजाधर्मरत होइ नर कोइ । वरन धर्म न पहिंचानै सोइ॥ दूरि तीर्थन श्रम करि जाहिं । जहां रहैं तहां लख्यो न ताहिं ॥ जाके गृहमें प्रतिमा होइ। तिन तजि पूजै अनतै सोइ॥ ब्राह्मण पूंछे जान्यो जाइ । संन्यासी फिरै भेप वनाइ॥ गृही न अपनो धर्म पहिंचानै। उन नहिं आए को सन्मानै ॥ दया सत्य संतोप नशाइ । दया धर्मकी रीति विलाइ॥ फल सुधर्मको जानै सोइ । पै सुधर्मको करै न कोइ ॥ पापनको फल चाहै नाहीं। अहनिशि पाप करतही जाहीं॥ वर्षा समै न वर्षा होइ। विना अन्न दुख पावै लोइ॥ दान देहिं तो यशके काज। कालि न होइ पृथ्वीपति राज॥ मन इन्द्रिय वश करैं न लोग। ज्यों त्यों कीन्हों चाहैं भोग॥ शत सम्वत आयुः कुल होइ। सोऊ जीवै विरला कोइ॥ नृप ऐसे आयुदा पाइ। पृथ्वी हित नित करैं उपाई॥ पृथ्वी देखि तिन हांसी करही। ऐसो को जो मो पर रहही॥ मन्वंतर लगि कियो जेहि राज। तेऊ नृप गय मोहिं त्याज॥ पृथु से पृथ्वीपति जग भए । तेऊ नृप छांडि मोहि गए॥ तुच्छ आयु परिश्रम करत। आपु आपुमें लरि लरि मरत ॥ इनहिं देखि मोहिं हांसी आवत। इनको इतनी समुझि न आवत॥ सतयुग सत त्रेता जग करते । द्वापर पूजा मनमें धरते॥ कलियुग एक वड़ो उपकार। जो हरि कहै सो उतरै पार॥ कलिमें पाप करै नित लोइ। कहांलगि करिये अंत नहोइ॥ हरि हरि कहत पाप पुनि जाइ। पवन लागि ज्यों रूइ

उड़ाइ ॥ अजामेल सुत हित हरि भाष्यो। यमदूतनते तेहि हरि राख्यो ॥ कलिमें राम कहे जो कोइ।निश्चय भव जल तरिहै सोइ॥जबलगि बढै अधर्म अपार।रहै विष्णुजसधर्म सत हार ॥ तागृह संभल कलंकी होइ।करै संहार दुष्ट नर लोइ॥पृथ्वी अकास तहां रहिजाइ।राजदेहि जो कुंभ बैठाइ॥ समदृष्टि होवे सब लोइ। दुष्ट भाव मन धरै नकोइ ॥ यों होइहै कलंकि अवतार। कलिमें राम नाम आधार ॥ शुक नृप सों कह्यो जा परकार। सूर कह्यो ताही अनुसार ॥ ३ ॥राजा परीक्षित हरिपद प्राप्ति वर्णन ॥ राग बिलावल। हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणाविंद उरधरो ॥ बिनु हरिभक्ति मुक्ति नहिं होइ।कोटि उपाय करौ किन कोइ॥रहट घरी ज्यों जग व्यवहार।उपजत विनशत वारंवार॥ उत्पति प्रलय होत जा भाइ। कहौं सुनो सो नृप चितलाइ ॥ राजा प्रलय चतुर्विधि होइ। आवत जात चहूं में लोइ ॥ युग परलय तो तुमसों कही। तीन और कहिवे को रही ॥ चतुर्युगी बीतैं एकहत्तर। करै राज तब लगि मन्वतर ॥ चौदह मौन ब्रह्मा दिन माहिं। वीतत तासों कल्प कहाहिं ॥ रात होइ तब परलय होइ। निशि मर्यादा दिन सम होइ ॥ प्रात भए जब ब्रह्मा जागै। बहुरो सृष्टि करन को लागै ॥ दिन सौ तीन साठ जब जाहिं। सो ब्रह्माको वरष कहाहिं ॥ वर्ष पचाश परारध गए। प्रलय तीसरी या विधि लए ॥ बहुरो ब्रह्मा सृष्टि उपावै। जब लौं परारध दूजो आवै ॥ शत संवत भये ब्रह्मा मरै। महाप्रलय नित प्रभुजू करै ॥ माया माहिं नित्य ले पावै। माया हरिपद माहिं समावै ॥ हरिको रूप कह्यो नहिं जाइ। अलख अखंड सदा इक भाइ ॥ बहुर जब हरिकी इच्छा होइ। देखै माया के दिशि जोइ॥ माया सब तबहीं उपजावै। ब्रह्मा सों पुनि सृष्टि उपावै ॥ अब्रह्न प्रलय सदा पुनि होइ। जन्मै मरै सवाई लोइ ॥ हरिको भजै सो हरि पद पावै।जन्म मरन तेहि ठौर न आवै ॥ नृप मैं तोहिं भागवत सुनायो। और तो हिय माहिं बसायो॥मुक्ति माहिं संशय नहिं कोइ। सुने भागवत मैं सोइ होइ॥सप्तम दिवस आजु है राउ। हरि चरणाविंद चित लाउ। इह अछेद अभेद अविनाशी। सर्व गति अरु सर्व उदासी ॥ दृष्टिहि दृष्टि सोइ दृष्टि टारि। काको दीखै को दिखहारि ॥ हरि स्वरूप सों रतिहि विचारि। मिथ्या तनुको मोह पसारि ॥ नृप कह्यो तनुको मोह न कोइ। याको जो भावै सो होइ ॥ मोहिं अब सर्व ब्रह्म दरशावै। तक्षक भय मनमें नहिं आवै ॥ तुम प्रसाद मैं पायो ज्ञान। छूटि अमिथ्या देह अभिमान ॥ अब मैं गहि हरिपद अनुराग। करिहौं मिथ्या तनुको त्याग ॥ शुक जान्यो नृपको जो ज्ञान। आज्ञा ऊँकरि कियो पयान॥ तक्षक नृप शरीरको डस्यो। तब तनु तजि हरि पदमें बस्यो ॥ सूत शौनकनि कहि समुझायो। मैंहूता अनुसार सुनायो ॥ अंत समय हरिपद चित लावै। सूरदास सो हरिपद पावै ॥ ४ ॥ जन्मेजय कथा ॥ राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरणाविंद उर धरो ॥ जन्मेजय जब पायो राज। एकबार निज सभा बिराज ॥ पिता वैर मनमें सो विचार। विप्रनसों यों कह्यो उचार ॥ मोको तुम अब यज्ञ करावहु। तक्षक कुटुंब समेत जरावहु ॥ विप्रन सेत कुली जब जारी। तब राजा तिनसों उच्चारी ॥ तक्षक कुल समेत तुम जारो। कह्यो इन्द्र निज शरन उबारौ ॥ नृप कह्यो इन्द्र सहित तेहि जारौ। विप्रनहूं इह मतो विचारो ॥ आसतीक तेहि अवसर आयो। राजासों यह वचन सुनायो ॥ कारण करनहार भगवान। तक्षक डसन हार मति जान ॥ बिनु हरि आज्ञा द्वितिय न बात। कौन सकै काहू संताप ॥ हरि जो चाहे त्योंहीं होइ। नृप तामें संदेह नकोइ ॥ नृपके मन यह निश्चय आयो। यज्ञ छांड़ि हरिपद चितलायो ॥ सूत शौनकनि कहि समुझायो। सूरदास त्योंहीं करिगायो ॥ ५ ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वादशस्कंधे श्रीसूरसागरे श्रीसूरदासकृतसम्पूर्ण ॥

इति श्रीसूरसागर सम्पूर्ण ॥